भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०१
पंजीकरणसंख्या टैक/एच आर/49/रोहतक/99 ☎ ०१२६२-४०७२२

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र रोहतक

प्रधानसम्पादक : प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक :- डा० सुदर्शनदेव आचार्य

वर्ष २८ अंक ७ ७ जनवरी, २००१ वार्षिक शुल्क ६०) आजीवन शुल्क ६००) विदेश में १० पौंड एक प्रति १-२५

चारित्रिक गुणों के सागर : अशफाक उल्ला खां

❑ मनोहर पुरी

सदैव साक्षात् त्रिवेणी ही बहती रही अमर शहीद अशफाक उल्ला खा वारसी "हसरत" के जीवन मे। भले ही उनकी सरस्वती २७ वर्ष की अल्पायु मे ही लुप्त हो गई परन्तु उनकी गगा-यमुना की पवित्र धाराओ के प्रति हम आज भी नतमस्तक हैं। आज देश जिस स्वतन्त्रता और प्रगति की गगा यमुना से प्रवाहमान है उसकी प्राणवायु अशफाक सरीखी सरस्वती के बलिदान से ही अनुप्रमाणित है। अशफाक उल्ला खा एक खुदापरस्त मुसलमान थे और मातृभूमि के प्रति अपना धर्म निभाने के लिए सदैव तत्पर रहे। देश प्रेम के सामने उन्होने दुनियावी प्रेम-याचना को सहज ही ठुकरा दिया जो कि किसी भी सुन्दर और स्वस्थ युवा के लिए दुरूह कार्य होता है। भारत माता की गोद के सामने उन्हे अपनी मा की गोद बहुत छोटी लगी। वतनपरस्ती के सामने मजहबपरस्ती नहीं टिक पाई तो देश प्रेम के सामने उन्होने शारीरिक प्रेम को नहीं टिकने दिया और भारत माता के प्रति कर्त्तव्य उनकी अपनी मा के प्रति कर्त्तव्य पर भारी पडा।

अशफाक के पूर्वज पठान थे जो पेशावर से आकर शाहजहापुर, उत्तर प्रदेश मे बस गए थे। यहीं पर उनका जन्म २२ अक्तूबर, १९०० को हुआ। वे श्री मुहम्मद शफीक उल्ला खा और श्रीमती मजहर उलनिसा बेगम की पाचवीं और अन्तिम सतान थे। उनके तीन भाई और एक बहिन थी। सबसे बडे भाई मुहम्मद शफी उल्ला खा, मझले मुहम्मद रियासत उल्ला खा उर्फ लल्लू खा एव उनसे छोटे मुहम्मद शहनशाह खा उर्फ मुन्नू खा एव बहिन परवरिश बानो थी। अशफाक घर मे अच्छू खान कहलाते थे। आखिरी औलाद होने के कारण उन्हे पूरे परिवार का बेहद लाड-दुलार मिला। अशफाक आजाद तबियत के शरारती बच्चे के रूप मे मोहल्ले भर मे प्रसिद्ध थे। शरीर से बलिष्ठ होने के कारण अपने से बडे बच्चो को भी अक्सर पीट दिया करते थे। पर उनकी मा पैसे इत्यादि देकर शिकायत करने वाले बच्चो को मना लेती थी। उनकी मा का परिवार और मोहल्ले मे खासा दबदबा था। अशफाक कट्टर मुसलमान, हिन्दू मुस्लिम एकता एव देश प्रेम के समर्थक थे। उनके मन मे प्रवाहित इन तीनो धाराओं ने उनके भावी जीवन को दिशा दी और वे अग्रेजी सरकार को उखाड फैंकने के कार्य मे जुट गए। इसके लिए उन्होने हिन्दू-मुस्लिम दोनो को एक साथ मिलकर अग्रेजो से लोहा लेने की प्रार्थना की। वे मानते थे कि दोनो ही भारत माता के बेटे हैं फलत उन्हें मिलजुल कर सद्भाव के साथ रहना चाहिए। उन्हें हिन्दू-मुस्लिम एकता का जीवत प्रतीक माना जाता है।

अशफाक का ननिहाल एक सम्पन्न और समृद्ध खानदान था। माता की ओर के लोग अधिकतर सरकारी ओहदो पर थे। उनके नाना मुहम्मद अबुल हसन खान साहब अग्रेजपरस्त होने के कारण अग्रेजो के लिए जासूसी भी करते थे। अशफाक इसके लिए जीवन भर शर्म महसूस करते रहे। उन्हे दोस्तो के सामने इसके लिए लज्जित होना पडता था परन्तु उस समय तो अति हो जाती जब उन्हें कहा जाता कि तुम वतन के गद्दारो की औलाद हो। क्रान्तिकारी दल के कई सदस्य पडित रामप्रसाद बिस्मिल को यह समझाते रहे कि मुसलमान होने के कारण अशफाक पर भरोसा न किया जाये परन्तु बिस्मिल इसके लिए कभी तैयार नहीं हुए। इस तथ्य को हमेशा अनदेखा किया गया कि उनके पिता साहब मुहम्मद शफीकउल्ला खा भले ही सब-इन्स्पेक्टर थे, उनके पूर्वजों ने अग्रेजो के विरोध मे झण्डा उठाने वालो का पूरी तरह से साथ दिया था। एक जगह अशफाक ने लिखा है कि, "मैंने अपनी कुर्बानी से इस धब्बे को जो १८५७ में मेरे ननिहाल के बुजुर्गों ने अस्मते वतन (वतन की पवित्रता) पर लगाये थे, अपने खून से वह भी नौजवान के मासूम खून से धो डाला। क्या इस खानदान का इसको कुफ्फारा (प्रायश्चित) समझा जा सकता है। अशफाक मानते थे कि उनके बलिदान के बाद उनकी नस्लो पर कोई उगली नहीं उठायेगा और उनके बुजुर्गों की गलतियों को भी नए सिरे से याद नहीं किया जाएगा। वे चाहते थे कि लोग उनके बुजुर्गों को अशफाक के पूर्वजो के रूप में याद करे और आने वाली नस्लो को अशफाक की कुर्बानी के साथ जोडा जाये। उनका मत था कि अपने परिवार के कारनामों पर गर्व करते हुए कुछ न करने की अपेक्षा स्वय कुछ कर दिखाना चाहिए। अपने चरित्र के तीन रगो के विषय मे अशफाक ने लिखा है, "मैं दादा की तरफ से कौम परस्त और ननिहाल की तरफ से अग्रेज परस्त पैदा हुआ, मगर मा का खून कमजोर था, इसलिए वतनी आजादी का जज्बा ताकतवर रहा और वतन प्यारे वतन के लिए आज मैं मौत के तख्ते पर खडा हू।"

इतना होने पर भी अशफाक को अपने ही लोगो के रवैये पर काफी रज था। देशवासियो से उन्हे तब भी शिकायत थी और शायद आज भी हो। उन्होने जेल मे इस पर एक शेर कहा था जो उनके जन्मदिन की सौवीं वर्षगाठ अर्थात् आज के हालात पर भी बहुत सटीक है–

मर मिटा आप पर कौन आपने यह भी न सुना।
आपकी जान से दूर आपसे शिकवा है मुझे।

अशफाक उल्ला खा शाहजहापुर के नौजवान थे जिन पर लोगो की निगाहे जमे बिना नहीं रह सकती थीं। उनका कद बहुत अच्छा और भरा हुआ था और उनका रग गौरा और खिला हुआ था। उनका सीना बहुत चौडा और कमर पतली थी। कमर और सीने के अनुपात मे वे सिंह के समान दिखाई देते थे। उनकी पेशानी चौडी और उभरी हुई थी और आखो मे हमेशा एक खुशनुमा चमक रहती थी। अशफाक तैराकी, घुडसवारी और निशानेबाजी मे प्रवीण तथा हॉकी और क्रिकेट के अच्छे खिलाडी थे। यह अशफाक के आकर्षक व्यक्तित्व, मीठी वाणी और शिष्टाचार का परिणाम था कि हर मिलने वाला उनका प्रशसक हो जाता था और लडकिया उन्हे चाहने लगती थीं। उनका चरित्र इतना ऊचा था कि उस पर न तो कोई दाग लग सका और न ही उन्होने किसी दूसरे का चरित्र दागदार बनाया। एक बार जब वे राजस्थान मे भूमिगत थे जो एक हिन्दू क्रान्तिकारी अर्जुन के घर पर पनाह लिए हुए थे। इस परिवार से उन्हें काफी स्नेह मिला था। उस परिवार की एक कन्या उन पर आसक्त हो गई परन्तु अशफाक ने बहुत ही शालीनता के साथ उस लडकी के प्रेम निवेदन को अस्वीकार ही नहीं किया उसे वास्तविकता से अवगत करा कर अपने लिए सम्मान भी अर्जित किया। बाद मे जब उन्हें फासी की सजा सुनाई तो वह सदमे को सहन न कर सकने के कारण बीमार पड गई और बच नहीं पाई। इसी प्रकार दिल्ली मे एक इजीनियर साहब की युवा पुत्री को अशफाक भा गये। उसने अपनी नौकरानी के हाथ एक पत्र भिजवाया जिसका उत्तर उन्होने शिष्टाचारवश दे दिया और साथ ही यह भी समझाया कि सम्बन्ध बढाने की नादानी न करे। उन्होने तो अपने लिए आजादी की दुल्हन का चुनाव किया हुआ था जिसे ब्याहने के लिए फासी की घोडी पर सवार होना आवश्यक था। अन्तत घोडी पर सवार होने का दिन १९ दिसम्बर, १९२७ आ पहुचा। अशफाक ने अपने लिए खास तौर से मगवाए गए नए कपडे पहने। उन कपडो पर इत्र छिडककर और कुरानशरीफ का बस्ता कधे पर टागकर कलमा पढते हुए खुशी-खुशी फासी के तख्त की तरफ चल दिये। तख्ते पर चढने के पहले अशफाक ने उसका चुम्बन किया और फिर लटकती हुई रस्सी की ओर देखकर बोले-

मेरी महबूबा मुझे मालूम था कि

(शेष पृष्ठ सात पर)

लोक-परलोक विचार

सप्तम-विचार—(खाली हाथ ही लौटेंगे ?)

❑ शिवप्रसाद उपाध्याय, आर्यसमाज होशियारपुर (पंजाब)

(गताक से आगे)

राजा कहने लगा—'भाई ! इस समय मैं घोर सकट मे पडा हू। मेरे जीवन-मरण का सवाल है। मेरे मरने पर मेरी ही नहीं राज्य की भी बडी हानि होगी। मैं तुझे आधा राज्य देता हू, मुझे इच्छानुसार भरपेट पानी पिलादे।' राजा ने कहार को उसी समय आधा राज्य दे दिया। कहार ने भी राजा को भर पेट पानी पिला दिया साथ ही उस बचे हुए पानी से राजा को नहाकर स्वस्थ कर दिया। पश्चात् वह कहार अपने गाव चला गया।

इधर राजा सोच मे पड गया—'आधा राज्य गया सो गया, लेकिन मैं अपने सिपाहियो मे शस्त्र विद्या के बारे मे अपनी धाक कैसे जमा सकूगा ? मेरा बींधा गया जानवर जीवित ही क्यो भाग सका ? यह मेरा बडा अपमान है।' ऐसा सोचकर राजा पुन उस मृग के पीछे दौड पडा। मृग बहुत ही आगे निकल चुका था। राजा भूखा और थका हुआ तो था ही, पहले ही खून की उल्टिया तो कर ही रहा था। ऊपर से सूर्य और भी तपा रहा है और नीचे से रेत तो अगारे का काम कर रहा। उस दौडते हुए राजा को ठण्डा पानी पीने से सर्द-गर्मी की बीमारी लग गई। राजा कुछ दूर जाकर मूर्छा खाकर गिर पडा। अब तो सारा होश-हवाश उड गया।

ठीक उसी समय वहा पर एक गाव से दूसरे गाव को एक डाक्टर जा रहा था। रास्ते मे डाक्टर ने राजा को उस हालत मे बेहोश पडा देखा। डाक्टर ने झट राजा को होश के इजेक्शन लगा दिए, तो राजा को थोडी देर मे होश हो गया। देखा तो कोई डाक्टर मेरा इलाज कर रहा है। डॉक्टर ने राजा को कह दिया—'राजन् ! आप पहले ही जीवन को छोड जानेवाले थे मैंने कृपा करके आपको होश मे लाया। पर आप इसी अवस्था मे ही दो चार दिन पडे रहोगे, चल-फिर नहीं सकोगे। दो चार दिनो के बाद यहीं पर पडे-पडे अवश्य ही मर जाओगे। परन्तु मेरे पास एक बहुमूल्य सजीवनी दवाई है, जो मरते हुए को स्वस्थ कर सकती है। मैं आपको वह दवाई देकर पहले जैसा ही स्वस्थ भी कर सकता हू। पर एक शर्त अवश्य है—दवाई बहुत ही महत्त्वपूर्ण है, साथ ही बहुत ही मूल्यवाली है। ऐसी सजीवनी दवाई संसार मे और किसी के पास मे भी नहीं होगी। यदि आप अपना आधा राज्य मुझे दे, तो मैं अवश्य ही आपको दूसरा जन्म दे सकता हू, आप स्वस्थ होकर आज ही अपने घर पहुच सकते हो।'

डॉक्टर की बात सुनकर राजा सोच मे पड गया—'आधा राज्य तो मैं पहल ही कहार को दे चुका हू। आज मैं सैनिकों से भी अपमानित होगया। ईश्वर को भी शायद यही मजूर था कि मुझे राज्य से हाथ धोना पडे। राज्य न सही। मैं जीवित होकर कम से कम अपने बाल-बच्चो को आशीर्वाद तो दे सकू। जितना अपमान होना था वह होगया। राज्य भी गया। **'भूमौ स्थितस्य पतनाद् भयमेव नास्ति।'**

पहले से ही भूमि मे पडे हुए के लिए पतन का क्या भय ? अब मेरा क्या बिगडना रहा ? आज यह डॉक्टर मेरा आधा राज्य लेकर मुझे स्वस्थ कर देता है, तो मैं सन्यास लेकर भी लोकोपकार कर सकता हू। इसी राज्य के बन्धन मे ही क्यो बधा रहू।'

'जीवन्नरो भद्रशतानि पश्येत्।'

जीता हुआ आदमी सैकडो शुभ कार्यों को देख सकता है। जीवन का मूल्य आधे राज्य से भी कई गुणा अधिक है। जीता रहूगा, तो नये-नये आविष्कार, नये-नये चेहरे देखने को मिलेगे। मुझे सत्सग, स्वाध्याय, आत्मचिन्तन का मौका भी मिलेगा। जिससे जन्म-मरण के चक्र से भी छूटा जासकेगा।'

ऐसा सोचकर राजा ने उस डॉक्टर के नाम अपना बचा हुआ आधा राज्य भी हस्ताक्षर करके दे दिया। राजा सजीवनी दवाई खाकर स्वस्थ होगया।

तो सज्जनो ! मैं कह रहा था—यह धन-सम्पत्ति, राज्यैश्वर्य क्या है ? सारा का सारा एक घडे पानी का खेल। उधर कवि जी ने तो पहले ही कह दिया था—'धनानि भूमौ' यह धन-सम्पत्ति साध्य नहीं है, साधन है। भूमि की वस्तु भूमि में ही रहेगी। हमे इस विषय में और भी गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिए। हम कई बार सम्पत्ति की प्राप्ति के लिए आग-बबूले हो जाते हैं। यहा तक कि इस धन-सम्पत्ति के बहाने अपने पराये बन जाते हैं। पिता पुत्र मे ठन जाती है। भाई-भाई आपस मे काट-मार करने लग जाते हैं। हमने अपने जीवन के मूल्य को नहीं समझा। जीवन के रहस्य को नहीं जाना। कई बार सम्पत्ति के पीछे जीवन के साथ खिलवाड किया जाता है। धन-सम्पत्ति, राज्य वैभव के लालच ने ही पाण्डवो को दर-दर का भिखारी बना दिया। मुझे इस विषय मे एक और घटना याद आ रही है—

राजा सिन्धुल मृत्यु-शय्या पर पड गए थे। उनकी धरोहर एक ही पुत्र भोज था। वह बहुत ही छोटा शिशु था। ऐसी स्थिति मे राजा सिन्धुल ने अपने सगे भाई मुञ्ज से कहा—'भाई ! अभी भोज छोटा बालक है, वह राज्य नहीं कर सकेगा। जब तक वह योग्य नहीं होता, तब तक इस राज्य का काम आप ही चलाते रहो। भोज के योग्य होने पर यह राज्य उसे सौंप देना। भोज की अच्छी प्रकार शिक्षा-दीक्षा का प्रबन्ध कर देना।' ऐसा कहकर राजा सिधुल स्वर्ग सिधार गये।

राजा सिन्धुल की आज्ञानुसार मुञ्ज भोज को शिक्षा-दीक्षा के लिए गुरुकुल मे भेजकर स्वय राज्य करने लगा। राजा होते ही मुञ्ज की हकूमत चारो ओर चलने लगी। राजसी ठाठ-बाठ, रहन-सहन, खान- पान मे सन्नद्ध रहने क कारण उसे राजगद्दी के प्रति मोह बढने लगा। इस बात से राजा मुञ्ज चिन्तित रहने लगा कि—'भोज के बडे होने पर मुझे यह राज्य लौटाना होगा, मेरा राजसी ठाठ-बाट जाता रहेगा, मुझे एक साधारण मनुष्य के समान अपना जीवन बिताना होगा। यही भोज मेरे राजा बने रहने मे बाधक बना हुआ है। मैं इस काटे को समय में ही क्यो न उखाड फेंकू, जिससे यह राज-पाट मेरे पास ही बना रहे।'

उधर भोज गुरुकुल मे शुक्लपक्ष के चन्द्रमा की भान्ति बढने लगा। पढाई लिखाई मे चारो ओर ख्याति प्राप्त करने लगा। उसकी शारीरिक, मानसिक, आत्मिक सब प्रकार की उन्नति उत्तरोत्तर बढने लगी। इस बात का समाचार राजा मुञ्ज को बार-बार मिलने लगा। उससे राजा मुञ्ज और भी चिन्तित होगया। राजा मुञ्ज ने जल्दी ही अपने मन्त्री वत्सराज को आदेश दिया कि—'तुम जल्दी ही जाकर किसी तरीके से भोज को मारकर उसका सिर मेरे पास ले आओ।'

मन्त्री वत्सराज ने भी गुरुकुल में जाकर भोज को बहका-फुसला कर एक तरफ ले जाकर राजा का सदेश सुनाया और कहा— 'तुम्हें मारकर तुम्हारा सिर राजा के पास हाजिर करना है, तुम्हारी कोई आखिरी इच्छा हो, तो कह सकते हो।' ऐसा मन्त्री का आदेश सुनते ही भोज ने तुरन्त पास मे ही पडा हुआ एक पत्ता ले लिया और अपनी जाघ से खून निकालकर उस खून से राजा के नाम एक संदेश-उस पत्ता मे लिखकर कहा—'मन्त्री जी ! यह पत्र राजा मुञ्ज को दे देना, मेरी यही अन्तिम इच्छा है।' राजा के आदेशानुसार आप जो चाहे सो करे।'

मन्त्री वत्सराज बहुत ही धार्मिक, बुद्धिमान् और सहृदय व्यक्ति था। उसने उस समय बहुत ही सोच-समझ से काम चलाया। भोज को नहीं मारा। किसी मरे हुए व्यक्ति का एक सिर लेकर राजा मुञ्ज के पास हाजिर हुआ। भोज का सिर लेते हुए मुञ्ज ने मन्त्री से पूछा—'मन्त्री जी ! भोज ने मरते समय कुछ कहा तो नहीं ? मन्त्री ने उस समय झट वह भोज का संदेश-पत्र राजा को दिया। राजा ने वह सदेश-पत्र पढा। वह पत्र इस प्रकार था—

मान्धाता स महीपति कृतयुगा-लकार भूतो गत,
सेतुर्येन महोदधौ विरचित क्वासौ दशास्यान्तक.।
अन्ये चापि युधिष्ठिरप्रभृतयो याता दिव भूपते !
नैकेनापि सम गता वसुमती मुञ्ज ! त्वया यास्यति।।

सत्ययुग के अलकार स्वरूप राजा मान्धाता जो सम्पूर्ण पृथिवी का प्रशासन करते थे, वे अब यहा कहा हैं ? जिस राजा राम ने गहन समुद्र मे पुल बाधा था, जिसने पराक्रमी रावण का वध किया था, वह राम आज कहा हैं ? जिन पाण्डवो को महान् धनुर्धारी कहकर ससार मुक्तकण्ठ से प्रशसा करता है, वे युधिष्ठिर आदि पाण्डव कहा चले गए ? ऐसे-ऐसे महान् सम्राट इस ससार से विदा हुए पर उनके साथ भी यह पृथिवी नहीं गई। हे महाराज मुञ्ज ! ऐसा लगता है, कि इस पृथवी को तू अवश्य साथ लेकर जाएगा, इसलिए तू अपने भतीजे का सिर माग रहा है।' (क्रमश)

कैसी थी मनु और दशरथ की अयोध्या

(श्री वेदव्रत शास्त्री, आचार्य प्रिंटिग प्रेस, रोहतक)

सुदीर्घकाल से रामजन्मभूमि अयोध्या चर्चा का विषय बनी हुई है। आकाशवाणी और समाचारपत्रो में इसकी चर्चा किसी न किसी रूप मे होती ही रहती है। इसको लेकर साम्प्रदायिक तनाव और झगडे भी होते रहते हैं। अब यह चर्चा भारत के सर्वोच्च न्यायालय तक भी पहुच चुकी है। अयोध्या मे आक्रमणकारी बाबर ने भी एक मस्जिद का ढाचा खडा कर दिया था। वह भी कुछ वर्षो से अति विवादास्पद बन गया है। उसी को लेकर इस वर्ष भारत की लोकसभा एक सप्ताह तक ठप्प रही, कोई भी कार्यवाही नहीं होसकी।

ससार के प्रथम प्रशासक और विधिवेत्ता महर्षि मनु द्वारा बसाई गई यह महानगरी अयोध्या कैसी थी, इसका वर्णन आदिकवि महर्षि वाल्मीकि ने अपने रामायण महाकाव्य के बालकाण्ड के पञ्चम सर्ग में २० श्लोको द्वारा किया है। पाठको के ज्ञानवर्धन के लिये मैं रामजन्मभूमि अयोध्या का वर्णन महर्षि वाल्मीकि के ही शब्दो में प्रस्तुत करता हू-

तदिद वर्तयिष्याव: सर्वं निखिलमादित ।
धर्मार्थकामसहित श्रोतव्यमनसूयया ।।१।।

अब हम उक्त आख्यान का आदि से लेकर समाप्तिपर्यन्त वर्णन करते हैं। इस धर्म अर्थ काम और मोक्षदायक रामायण महाकाव्य को असूया को छोडकर ध्यानपूर्वक सुनना चाहिये।

कोसलो नाम मुदित स्फीतो जनपदो महान्।
निविष्ट· सरयूतीरे प्रभूतधनधान्यवान्।।२।।

आर्यावर्तान्तर्गत कोसल नाम से प्रसिद्ध एक बहुत बडा जनपद था जो सरयू नदी के किनारे बसा हुआ था। वह प्रचुर धन-धान्य से सम्पन्न सुखी और समृद्धिशाली था।

अयोध्या नाम नगरी तत्रासील्लोकविश्रुता।
मनुना मानवेन्द्रेण या पुरी निर्मिता स्वयम्।।३।।

उसी जनपद मे मानवेन्द्र मनु द्वारा बनाई एव बसाई हुई ससार प्रसिद्ध अयोध्या नाम की नगरी थी।

आयता दश च द्वे च योजनानि महापुरी।
श्रीमती त्रीणि विस्तीर्णा सुविभक्तमहापथा।।४।।

वह महापुरी अयोध्या १२ योजन (४८ क्रोश ७२ मील १०० किलोमीटर) लम्बी और ३ योजन (१२ क्रोश, १८ मील २५ किलोमीटर) चौडी तथा विस्तृत राजमार्गों से सुशोभित थी।

राजामार्गेण महता सुविभक्तेन शोभिता।
मुक्तपुष्पावकीर्णेन जलसिक्तेन नित्यश ।।५।।

विभागपूर्वक सुन्दर बना हुआ महान् राजमार्ग उस पुरी की शोभा बढा रहा था। उस राजमार्ग पर प्रतिदिन जल का छिडकाव किया जाता था और जिस पर सदा फूल खिले रहते थे।

ता तु राजा दशरथो महाराष्ट्रविर्वधन ।
पुरीमावासयामास दिवि देवपतिर्यथा।।६।।

उसमे महान् राष्ट्र को बढानेवाला राजा दशरथ ऐसे रहता था जैसे इन्द्रलोक मे इन्द्र निवास करता था।

कपाटतोरणवर्ती सुविभक्तान्तरापणाम्।
सर्वयन्त्रायुधवतीमुषिता सर्वशिल्पिभि ।।७।।

वह पुरी बडे-बडे फाटक और किवाडो से सुशोभित थी। उसके भीतर पृथक् पृथक् बाजार थे। वहा सब प्रकार के यन्त्र और आयुध सचित थे। उस पुरी मे सभी प्रकार के शिल्पी=कारीगर रहते थे।

सूत-मागधसम्बाधा श्रीमतीमतुलप्रभाम्।
उच्चाटालध्वजवती शतघ्नीशतसकुलाम्।।८।।

स्तुतिपाठक सूत और वशावली बखान करनेवाले मागध वहा पर भरे हुये थे। वह पुरी धनधान्य से पूर्ण थी। उसकी शोभा वा प्रभा की कहीं तुलना नहीं थी। वहा ऊची-ऊची अट्टालिकायें थीं, जिन पर ध्वज फहराते थे। सैंकडो तोपो से वह पुरी व्याप्त थी।

वधूनाटकसघैश्च सयुक्तां सर्वत पुरीम्।
उद्यानाम्रवणोपेता महतीं शालमेखलाम्।।९।।

उसमें बहुतसी स्त्रियों की नाटकमडलिया थीं जो नृत्य और अभिनय करती थीं। उस नगरी के चारो ओर उद्यान तथा आम के वन थे। लम्बाई चौडाई की दृष्टि से वह पुरी बहुत विशाल थी और साल के बडे-बडे वृक्ष सब ओर से उसे घेरे हुये थे।

दुर्गगम्भीरपरिखा दुर्गामन्यैर्दुरासदाम्।
वाजिवारणसम्पूर्णां गोभिरुष्ट्रै. खरैस्तथा।।१०।।

उसके चारों ओर गहरी खाई खुदी हुई थी, जिसमे प्रवेश करना या लाघना अत्यन्त कठिन था। वह नगरी दूसरो (शत्रुओ) के लिये सर्वथा दुर्गम एव दुर्जेय थी। घोडे, हाथी, गाय-बैल, ऊट तथा गधे आदि उपयोगी पशुओ से वह पुरी भरी-पूरी थी।

सामन्तराजसघैश्च बलिकर्मभिरावृताम्।
नानादेशनिवासैश्च वणिग्भिरुपशोभिताम्।।११।।

कर देनेवाले सामन्त नरेशो के समुदाय उसे सदा घेरे रहते थे। विभिन्न देशो के निवासी व्यापारी उस पुरी की शोभा को बढाते थे।

प्रासादै रत्नविकृतै पर्वतैरिव शोभिताम्।
कूटागारैश्च सम्पूर्णामिन्द्रस्येवामरावतीम्।।१२।।

वहा के महलों का निर्माण नानाप्रकार के रत्नों से किया गया था। वे गगनचुम्बी प्रासाद पर्वतो के समान दिखाई देते थे। उनसे उस पुरी की बडी शोभा होरही थी। बहुसख्यक कूटागारो (स्त्रियो के क्रीडाग्रहों) से परिपूर्ण वह नगरी इन्द्र की अमरावती के समान जान पडती थी।

चित्रामष्टापदाकारा वरनारीगणायुताम्।
सर्वरत्नसमाकीर्णा विमानगृहशोभिताम्।।१३।।

उस नगरी की शोभा विचित्र थी। उसके महलो पर सोने की चित्रकारी कीगई थी। श्रेष्ठ सुन्दर विदुषी नारियो के समूह उसकी शोभा बढाते थे। सब प्रकार के रत्नो से भरी-पूरी तथा विमानगृह=सप्तमजिले प्रासादो से सुशोभित थी।

गृहगाढामविच्छिद्रा समभूमौ निवेशिताम्।
शालितण्डुलसम्पूर्णामिक्षुकाण्डरसोदकाम्।।१४।।

पुरवासियो के घरो से उसकी आबादी इतनी घनी होगई थी कि कहीं थोडासा भी अवकाश दिखाई नहीं देता था। उसे समतल भूमि पर बसाया गया था। वह नगरी साठी चावलो से भरपूर थी और वहा का जल इतना मीठा था मानो गन्ने का रस हो।

दुन्दुभीभिर्मृदङ्गैश्च वीणाभि पणवैस्तथा।
नादिता भृशमत्यर्थं पृथिव्या तामनुत्तमाम्।।१५।।

ससार की वह सर्वोत्तम नगरी दुन्दुभी, मृदग, वीणा पणव आदि वाद्यो की मधुरध्वनि से अत्यन्त गूजती रहती थी।

विमानमिव सिद्धाना तपसाधिगत दिवि।
सुनिवेशितवेश्मान्ता नरोत्तमसमावृताम्।।१६।।

देवलोक मे तपस्या से प्राप्त सिद्धो के विमान की भाति उस पुरी का भूमण्डल मे सर्वोत्तम स्थान था। वहा के सुन्दर महल सुनियोजित बहुत अच्छे ढग से बनाये और बसाये गये थे। उनके भीतरी भाग बहुत ही सुन्दर थे। बहुत से श्रेष्ठ पुरुष उस पुरी मे निवास करते थे।

ये च बाणैर्न विध्यन्ति विविक्तमपरापरम्।
शब्दवेध्य च वितत लघुहस्ता विशारदा ।।१७।।

बिगडे हुये जिन जगली पशुओ को बाणो द्वारा राजा तथा मन्त्री आदि नही मार सकते उनको शीघ्र शस्त्र चलाकर शब्दवेधी बाण द्वारा मारनेवाले योद्धा वहा बसते थे।

सिहव्याघ्रवराहाणा मत्ताना नदता वने।
हन्तारो निशितै. शस्त्रैर्बलाद् बाहुबलैरपि।।१८।।

और वन मे मदमस्त होकर चिघाडनेवाले सिह व्याघ्र तथा वराह आदि को तीक्ष्ण शस्त्रो से तथा अपने बाहुबल से मारनेवाले योद्धा भी वहा पर थे।

तादृशाना सहस्रैस्तामभिपूर्णां महारथै ।
पुरीमावासयामास राजा दशरथस्तदा।।१९।।

ऐसे हजारो महारथियो तथा अन्यान्य अनेक गुणयुक्त पुरुषो से पूर्ण उस पुरी मे राजा दशरथ निवास करते थे।

तामग्निमद्भिर्गुणवद्भिरावृता
द्विजोत्तमैर्वेदषडङ्गपारगै ।
सहस्रदै सत्यरतैर्महात्मभि-
र्महर्षिकल्पैर्ऋषिभिश्च केवलै ।।२०।।

वह अयोध्यापुरी अग्निहोत्री, गुणवान्, छ अङ्गो सहित वेदो के पारगत द्विजोत्तम तथा हजारो विद्यार्थियो को वेदविद्या पढानेवाले, सत्यपरायण, महर्षिकल्प महात्मा और केवल मन्त्रार्थद्रष्टा ऋषियो से पूर्ण थी।

ऐसी थी महाराजा मनु द्वारा बसाई गई और महाराजा दशरथ द्वारा पालित पोषित अयोध्या नगरी, जिसमे दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र कोसल्यानन्दन श्री रामचन्द्र जी ने चैत्र मास की शुक्लपक्ष की नवमी तिथि के दिन जन्म ग्रहण किया था।

स्वामी श्रद्धानन्द : जीवनगाथा

--रामरख आर्य, गुजरानी (भिवानी)

एक महान् आत्मा श्रद्धानन्द की गाथा गाते हैं।
श्रद्धा से श्रद्धानन्द बने यह हम समझाते हैं।।

१ पजाब प्रान्त मे तलवन एक ग्राम है बहुत अच्छा।
उस ग्राम की पुण्य भूमि पर ही जन्मा था वह बच्चा
नानकचन्द था नाम पिता का मा थी सुखबाई।
चारो ओर बच्चे के जन्म से खुशिया थीं छाई।
बट रही मिठाई खुशियो के सब दीप जलाते हैं।
श्रद्धा से .

२ जन्मपत्री बनवाई पण्डित घर पर बुलवाए।
रख दिया नाम बचपन मे मुशीराम वो कहलाए।
सब रीति-रिवाज पौराणिक करते दादा परदादा।
वही पुराणी परम्परा और वही मर्यादा।
घर मे ब्राह्मण मन्त्र बोलकर हवन रचाते हैं।
श्रद्धा से

३ बालक सुन्दर सबकी आखो का तारा।
दादा-दादी बूआ मा को लगता अति प्यारा।
पालन पोषण होता है, यू बीत रहा बचपन।
शुक्ल पक्ष की तरह बढ रहा वह बालक निश-दिन।
गली मोहल्लेवाले भी लाड लडाते हैं।
श्रद्धा से

४ फिर पढना और लिखना कर दिया अक्षर ज्ञान खुशी।
अ-आ-क-ख-ग की शिक्षा देने लगे गुरु।
गुरुजी प्रश्न करते उत्तर ठीक दिया करता।
जो भी सुनता पढता जल्दी याद किया करता।
विद्यालय मे ऐसे गुरुजी पाठ पढाते हैं।
श्रद्धा से

५ उनके पिताजी सरकारी दफ्तर मे कर्मचारी।
बार-बार बदली से मुसीबत पढने मे भारी।
कभी बनारस की बदली कभी हो सहारनपुर की।
कभी बरेली नानकचन्द को चिन्ता है घर की।
अब तलवन से परिवार को अपने पास बुलाते हैं।
श्रद्धा से

६ कुछ वर्षों के बाद जनेऊ देदिया बालक को।
परमपिता को याद किया दुनिया के मालिक को।
छोड बरेली बदली होकर आते काशी मे।
तीर्थ और यात्रा होते बारहमासी मे।
पूजा-पाठ मे रखते थे विश्वास सभी भाई।
ये देख-देख के मुन्शीराम के मन मे भी आई।
एक शिव की पिण्डी घर पर ही ले आते है।
श्रद्धा से

७ काशी शहर में शोर मचा एक जादूगर आया।
उस जादूगर ने जादू का यहा जाल फैलाया।
मुन्शीराम की माता को जब इसकी खबर लगी।
दरवाजा बन्द करके माता सारी रात जगी।
उस जादूगर की सुन-सुन लोग सभी चकराते हैं।
श्रद्धा से

८ यह जादूगर दयानन्द था ब्रह्मचारी बका।
हनुमान बन फूकी पापो की लका।
मृतश्राद्ध और मूर्तिपूजा का खण्डन करते।
निराकार और वेद की विद्या का मण्डन करते।
भ्रम का भूत झूठ की देवी और गगा माई।
चार वेद छ शास्त्रो मे ये कहीं नहीं पाई।
वह जादूगर दयानन्द यह बात बताते है।
श्रद्धा से

९ पढते-पढते थोडी उम्र मे शादी ठहराई।
चाव उमग मे मात-पिता सब बहने और भाई।
शिव देवी एक सुन्दर लडकी रूप निराला है।
मुन्शीराम दुल्हा बन उसको ब्याहयानेवाला है।
धूमधाम से मात-पिता फिर ब्याह रचाते हैं।
श्रद्धा से

१० शादी के बाद दोनों को पिताजी साथ मे रखते हैं।
देते प्यार पिताजी इतना कभी ना थकते हैं।
मुन्शीराम पढते हैं कालेज बास बरेली में।
वहा रहना सहना ठाठ से एक हवेली मे।
थानेदार की ड्यूटी नानक वहा निभाते है।
श्रद्धा से

११ मुन्शीराम को अंग्रेजी भाषा लगती प्यारी।
करी वकालत पास बने बैरिस्टर सरकारी।
शिवदेवी पत्नी के साथ मे प्यार से रहते हैं।
आज्ञाकारिणी देवी को ना तू तक कहते हैं।
इस तरह प्यार से अपना सारा समय बिताते हैं।
श्रद्धा से

१२ मन मे सोचा नहीं रहू मैं गोरो का नौकर।
थोडे दिन के बाद नौकरी को मारी ठोकर।
इसके बीच बरेली आए दयानन्द स्वामी।
कहते लोग नास्तिक उनकी करते बदनामी।
सच्ची बात दयानन्द कहते ना घबराते है।
श्रद्धा से

१३ थानेदार नानक की ड्यूटी वहा लगाई थी।
युक्तिपूर्ण बात समझ मे उसको आई थी।
अपने बेटे मुन्शीराम को घर जाकर बोले।
साधु के दर्शन करले कल तू मेरे साथ होले।
ना कोई झूठ कपट छल करता ना कोई जादू है।
सस्कृत में भाषण करता सच्चा साधु है।
बेटा बोला क्या करने मैं वहा पर जाऊगा।
सस्कृतवाले को तो ना शीश झुकाऊगा।
मैने बहुत देखे है ऐसे छलकपटी जोगी।
बुगले भगत हजारो फिरते हैं नकली योगी।
कहा एक बार-देखो तो तुम चलकर के बेटा।
बात करो उस साधु से तुम मिलकर के बेटा।
पिता की मानी बात पुत्र सुनने को जाते हैं।
श्रद्धा से

१४ बुरी सगत के कारण बिगडी जीवन की आदत।
शराब, मास और अडे खाने जैसी पडगी लत।
जिसके कारण दुबले-पतले और कमजोर हुए।
ईश्वर से मुह मोड नास्तिक उनके तौर हुए।
जीवन की हर आशा को यू दोष दबाते हैं।
श्रद्धा से

१५ अब दर्शन करके बाल यति की सुन-सुन के बाणी।
मुन्शीराम का पत्थर दिल होग्या पानी-पानी।
ब्रह्मचर्य का तेज ऋषि के चेहरे पर छाया।
यह देख-देख के मुन्शीराम का मस्तक चकराया।
इतने बल और तेज का कारण समझ न पाते हैं।
श्रद्धा से

१६ श्रद्धा बढने लगी एक सच्चे सन्यासी मे।
इनका खाना-पीना देख करू तलाशी में।
सुबह-सुबह स्वामी से जाकर मुन्शीराम मिले।
भ्रमण करने निकले तो वे साथ-साथ निकले।
योगिराज के पीछे अपने कदम बढाते हैं।
श्रद्धा से

१७ इस घटना से मुन्शीराम जी होगये वैरागी।
त्याग-भावना हृदय मे दिन प्रतिदिन जागी।
मात-पिता की आज्ञापालन करते थे सेवा।
सेवा करनेवाले हमेशा पाते है मेवा।
सभा सस्थाओ मे मुन्शी भाग लिया करते।
जो भी ड्यूटी लगती पूरा काम किया करते।
सेवाभाव से मुन्शीराम दिल मे बस जाते हैं।
श्रद्धा से

१८ जालन्धर मे अपनी निजी वकालत करते हैं।
सार्वजनिक हो काम कदम वे पहले धरते हैं।
मत-पन्थो की बात सुनी कुछ पड गये उलझन मे।
सत्यार्थप्रकाश पढा तो शान्ति हुई मन मे।
आर्यसमाज मे धीरे-धीरे जाना हुआ शुरु।
सिद्धान्तो को जीवन मे अपनाना हुआ शुरु।
लाहौर समाज मे जाके अपना नाम लिखाते हैं।
श्रद्धा से

१९ आर्यसमाजी बनने पर नानक नाराज हुए,
पूजा कौन करेगा व्याकुल बे-अन्दाज हुए।
हाय हमारे देवी देवता कहा पर जायेगे।
बेटा हुआ नास्तिक ठाकुर जी क्या खायेगे।
मुन्शीराम तो ठाकुर जी से नाक चढाते हैं।
श्रद्धा से

२० गाव के लोग विरोधी दुश्मन भाईचारा है।
करदो अलग कौम से धर्म बनाया न्यारा है।
कब चिन्ता करनेवाले थे मुन्शीराम इसकी।
कितना जोर लगाओ मरजी जैसी हो जिसकी।
पिता की मौत हुई वैदिक सस्कार कराते हैं।
श्रद्धा से

२१ नारी शिक्षा के बारे मे बहुत विचार किया।
कई पाठशालाए खोल नारी उद्धार किया।
चारो ओर अखबारो मे धूम मचाई थी।
लाहौर जालन्धर मे भी पूरी धूम मचाई थी।
परवाह नहीं राह मे कितने सकट आते हैं।
श्रद्धा से

२२ बने आदर्श शामिल होकर काग्रेस मे वो।
काम किया तो फैल गये थे पूरे देश मे वो।
घूम-घूम कर अपना सारा प्यारा वतन देखा।
अग्रेजो के कारण अपना घोर पतन देखा।
राजनीति मे भी अपना कुछ समय लगाते हैं।
श्रद्धा से

२३ मुन्शीराम ने मासिक एक पत्रिका निकाली थी।
उर्दू में 'सद्धर्म' नाम की वह निराली थी।
जगह-जगह चौराहो पर प्रचार किया करते।
अडे-मास शराब छुडा उद्धार किया करते।
शहर गाव कस्बो मे जाकर धूम मचाते हैं।
श्रद्धा से

२४ लेखराम से मिले गुरुदत्त जीवन मे साथी।
उनके जीवन से भी अच्छी प्रेरणा मिल जाती।
कुछ दिन मे पत्नी भी नाता तोडकर चली गई।
पीछे दो लडके दो लडकी छोड़कर चली गई।
पैंतीस वर्ष की आयु थी उस वक्त दिवाने की।
सलाह बहुत लोगों ने दी शादी करवाने की।
ब्रह्मचर्य से रहूगा शादी नहीं करवाते हैं।
श्रद्धा से

२५ गुरुकुल खोला जाय निश्चय मन मे धार लिया।
चन्दा इकट्ठा करने का अब बना विचार लिया।
कापी झोली ठाके अपने घर से निकल पडे।
पहुचे मुम्बई कलकत्ता जो शहर थे बडे-बडे।
कोई पाच कोई ग्यारह पन्द्रह भी लिखवाते हैं।
श्रद्धा से

२६ हरद्वार कनखल पहुचे जहा गाव कागडी है।
देखा तो एक लम्बी चौडी खाली जमीन पडी है।
गहरे पेड खडे थे चारों और अन्धेरे है।
हाथी घूम रहे थे चीते शेर बघेरे है।
गुरुकुल का बाग वहा पर मुशीराम लगाते हैं।
श्रद्धा से

२७ कोई ना बच्चा आना चाहता गुरुकुल के द्वारे।
अपने दोनो लाल बुलाए आखो के तारे।
गुरुकुल होगया चालू ऐसे मेहनत रग लाई।
वानप्रस्थ ले ऋषियों की मर्यादा अपनाई।
गुरुकुल की भूमि पे ओ३म् झण्डे लहराते हैं।
श्रद्धा से

२८ अपनी सारी सम्पत्ति और जितने प्लाट पडे।
आर्यसमाज को दान दिए जितने घर महल खडे।
बने महात्मा मुन्शीराम जी वैरागी त्यागी।
फिर सन्यास लेने की उनके मन मे लगन लागी।
ले सन्यास आप ही श्रद्धानन्द कहलाते है।
श्रद्धा से

२९ रोल्ट एक्ट का आन्दोलन भारत मे चला भारी।
आन्दोलन के कारण जनता घबराई सारी।
जलूस निकाला दिल्ली में श्रद्धानन्द स्वामी ने।
तान ली सगीन वहां अग्रेज हरामी ने।
सीना तान के खडे ना पीछे कदम हटाते हैं।
श्रद्धा से

३० फिर भारत मे खूब चला शुद्धि का चक्कर।
स्वामी जी ने लेनी पडती ईसाइयों से टक्कर।
मुसलमान श्रद्धानन्द पे विश्वास किया करते।
अग्रेजो से डरते उनका सहारा लिया करते।
एक बार अपनी जामा मस्जिद में बुलवाते हैं।
श्रद्धा से

३१ जामा मस्जिद के मिम्बर पे जा व्याख्यान दिया।
मुसलमान भाइयो को भी वेदो का ज्ञान दिया।
वेद ज्ञान हिन्दू का ना मुसलमान ईसाइयो का।
है अधिकार इसमे बराबर सारे भाइयो का।
शुद्ध करने का बीडा स्वामी वहा उठाते हैं।
श्रद्धा से

३२ इस शुद्धि के चक्कर से सब घबराए मुल्ले।
सदियो से जो बन्द पडे थे दरवाजे खुल्ले।
हाथ उठाकर दुआ मागते हाय खुदा अल्ला।
चारो तरफ से साधु खाली कर देगा पल्ला।
मारो काटो इसको सारे यू चिल्लाते है।
श्रद्धा से

३३ दिल्ली के एक समाज में स्वामी कर आराम रहे।
चारपाई पर लेटे थे ले ओ३म् का नाम रहे।
अब्दुल रसीद नाम का मूर्ख लडका आया।
अन्दर आकर पानी पीने का बहाना लाया।
गोली मारी स्वामी को ऐसा लाया मौका।
रामरख कातिल घर मे बडके यू कर गया धोखा।
देकर के बलिदान अमर पद को पा जाते हैं।
श्रद्धा से

२३ दिसम्बर १९२६ में यह बलिदान हुआ
वीर शहीद होकर के आर्य जाति की शान हुआ।

१८वां श्री घूडमल प्रहलादकुमार आर्य साहित्य पुरस्कार विद्यामार्त्तण्ड स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती को भेंट

अठारहवें श्री घूडमल प्रहलादकुमार आर्य साहित्य पुरस्कार के अन्तर्गत विद्यामार्त्तण्ड स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती को शाल ओढाने के पश्चात् स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती और सार्वदेशिक सभा के कार्यकर्त्ता प्रधान स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती।

हिण्डौन सिटी। आर्यसमाज हिण्डौन सिटी का अठारहवा श्री घूडमल प्रहलादकुमार आर्य साहित्य पुरस्कार सन् २००० के लिए विद्यामार्त्तण्ड स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती को उनके द्वारा लिखित सर्वस्व ग्रन्थमाला व ९५ से अधिक पुस्तको के प्रकाशन के लिए गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली मे अभिनन्दन समारोह के अन्तर्गत प्रदान किया गया। इसके अन्तर्गत आपको अभिनन्दन-पत्र प्रभाकरदेव आर्य हिण्डौन-रमेशकुमार दिल्ली द्वारा, शाल-स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती-सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधिसभा के कार्यकर्त्ता प्रधान स्वामी सुमेधानन्द द्वारा, स्मृतिचिन्ह-शोधकर्त्ता वैदिकविद्वान् प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु अबोहर द्वारा तथा ग्यारह हजार रुपये की राशि आचार्य हरिदेव द्वारा भेट की गई।

स्वामी दीक्षानन्द को अनेको सस्थाओं के प्रतिनिधियों ने फूलमालाओं से लाद दिया। अपने सम्मान के उत्तर में स्वामीजी ने कहा-यह मेरा नहीं अपितु देवदयानन्द की परम्परा का सम्मान है।

–प्रभाकरदेव आर्य, मंत्री,
श्री घूडमल प्रहलादकुमार आर्य ट्रस्ट,
हिण्डौन सिटी

स्वामी दयानन्द की शिक्षाओं पर आचरण

मण्डी डबवाली। आर्यसमाज मण्डी डबवाली द्वारा चार दिवसीय वैदिक सत्सग व आर्य महासम्मेलन का आयोजन बडी धूमधाम से किया गया। इस अवसर पर उद्‌गीथ साधना स्थली, डोहर, हिमाचल प्रदेश से पधारे आचार्य ब्रह्मचारी आर्यनरेश "वैदिक प्रवक्ता" तथा आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक प० सतपाल 'पथिक' अमृतसर निवासी ने अपने उपदेशो व भजनों का न टूटनेवाला ताता सा बाध दिया। इस आयोजन में स्थानीय जनसमुदाय के अतिरिक्त आर्यसमाज, फतेहाबाद, सिरसा, कालावाली, रामामण्डी, गाव लोहगढ तथा सगरिया से भारी सख्या मे आर्य भाई-बहनो ने भाग लेकर इसे पंजाब, हरयाणा व राजस्थान के सामूहिक सम्मेलन का स्वरूप दे दिया।

आचार्य नरेश ने भारी जनसमुदाय को सम्बोधित करते हुए कहा कि आजका मनुष्य मोहमाया के जाल मे फसकर भगवान् की उपासना को भी भूल बैठा है। वह मानसिक रूप से विचलित होरहा है। यह सब वैदिक व्यवस्था के पालन न करने का ही दुष्परिणाम है। उन्होंने लोगो को आर्य सामाजिक वैदिक धर्म अपनाने की सलाह देते हुए कहा कि जब तक हमारा समाज स्वामी दयानन्द सरस्वती जी को दिखाए मार्ग पर नहीं चलेगा, समाज का उद्धार सम्भव नहीं है।

प० सत्यपाल 'पथिक' जी ने अपने ईश्वरभक्ति पूर्ण समाजसुधारक, रूढि-विनाशक व ओजस्वी भजनो द्वारा श्रोताओं को भावविभोर किया। उनके भजनों को सुनकर भारी सख्या में श्रोताओ ने अपने जीवन की अनेक बुराइयों को छोडने का सकल्प लिया।

इस अवसर पर मच सचालक डा० अशोक आर्य ने दोनो विद्वानो की विशद साधना का परिचय श्रोताओ को दिया। अन्त मे श्री सन्तोषकुमार दुआ जी ने विद्वानो व श्रोताओ का धर्म मे आस्था रखते हुए अपने अमूल्य समय मे से धर्म हेतु समय निकालने का कार्यक्रम की सफलता मे सहयोगी होने के लिए सबका धन्यवाद किया।

–डा० अशोक आर्य, आर्य निवास,
मित्र विहार, मण्डी डबवाली (हरयाणा)

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

आर्य उपप्रतिनिधि सभा जेवर (यू०पी०)	६-८ जनवरी, २००१
आर्यसमाज औरंगाबाद मित्रोल (फरीदाबाद)	६ से ११ फरवरी २००१
गुरुकुल झज्जर का वार्षिकोत्सव	२४-२५ फरवरी, २००१

–डॉ० सुदर्शनदेव आचार्य, वेदप्रचाराधिष्ठाता

वेदप्रचार

आर्यसमाज मेन बाजार नारायणगढ जिला अम्बाला की ओर से नारायणगढ के निकट लगते ग्रामों मे श्री ज्ञानेश्वर भारतीय यमुनानगर महोपदेशक तथा श्री खेलसिह जी भजन महोपदेशक रानीमाजरा (यमुनानगर) के माध्यम से वेदप्रचार सम्पन्न कराया जिसका विवरण निम्नलिखित है-

(१) २८-११-२००० को ग्राम बणौंदी, (२) २९-११-२००० को बरौली, (३) ३०-११-२००० को हुसैनी, (४) १-१२-२००० को फिरोजपुर, (५) २-१२-२००० को उज्जल, (६) ३-१२-२००० को खानपुर राजपूता, (७) ४-१२-२००० को ठड्यो, (८) ५-१२-२००० को बरौल्ली (९) ६-१२-२००० को रत्तेवाली, (१०) ७-१२-२००० को टोका, (११) ८-१२-२००० को असगरपुर, (१२) ९-१२-२००० को झडा, (१३) १०-१२-२००० को सालेहपुर, (१४) ११-१२-२००० को ठसका तथा १५-१२-२००० को ग्राम लाहडपुर मे वेदप्रचार सम्पन्न हुआ। गाववासियो ने बडे धैर्यपूर्वक, गम्भीरतापूर्वक तथा बडे उत्साह से वेदप्रचार श्रवण किया।

–सुरेन्द्रकुमार, मत्री, आर्यसमाज,
मेन बाजार, नारायणगढ,
जिला अम्बाला (हरयाणा)

वार्षिक उत्सव तथा यज्ञ

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर का वार्षिक उत्सव २४ २५ फरवरी २००१ ई० शनिवार रविवार को मनाया जायेगा। इस अवसर पर अनेक आर्यनेता और राजनेताओ को निमन्त्रित किया गया है।

१२ फरवरी सोमवार से ऋग्वेद पारायण महायज्ञ होगा जिसकी पूर्णाहुति २५ फरवरी को प्रात काल सम्पन्न होगी।

नववर्ष का शुभारम्भ ?

–**महावीरसिंह**, प्राध्यापक, प्रेमनगर, रोहतक

वैदिक ज्योतिष कालगणना के अनुसार सृष्टि सम्वत् १९६०८५३०१०० चल रहा है। इतने वर्षो से जो कालगणना चल रही है उसमे चैत्र के मास की शुक्ल प्रथमा तिथि को ही नववर्ष की गणना चली आरही है जो कि वास्तव मे सूर्य पृथिवी चन्द्र आदि की गति अनुसार तथा ऋतु अनुसार उचित है उसे कोई नकार नहीं सकता। हमारे पूर्वजों, ऋषि-मुनियों राजा-महाराजाओ व्यापारियो तथा साधारणजनो तक मे भी आज तक नववर्ष चैत्र से ही माना जारहा है। थोडा बहुत अन्तर चन्द्र व सौर वर्ष का तो कुछ क्षेत्रो मे है। कुछ वर्गो मे दिवाली के बाद नए खाते आरम्भ किए जाते हैं लेकिन ऐसा नहीं है कि चैत्र से नववर्ष को नकारा जाता हो क्योकि पृथिवी की मुख्य उपज व ऋतुए चैत्र मे ही परिवर्तित होती हैं। हमारे यहा यह उक्ति सर्वसाधारण मे भी प्रचलित है कि चैत्र से नया रक्त सचरित होता है। वैज्ञानिक भी मानते हैं कि प्राय कर मैदानी क्षेत्रो मे वनस्पति व जीव-जन्तुओ मे नवकोशिकाओं का निर्माण चैत्र से ही आरम्भ होता है। उत्तरी व दक्षिणी ध्रुवों में सूर्य के उत्तरायण व दक्षिणायन में जाने से परिवर्तन आता है अत वहा सूर्य के पूरी तरह अयन मे पहुचने पर जीव-जन्तु व वनस्पति में परिवर्तन आता है लेकिन उत्तरी व दक्षिणी ध्रुवो का अधिकाश भाग तो हिमाच्छादित ही रहता है। वहा सूर्य का प्रकाश कम पहुचता है। यह विशेष अध्ययन व खोज का विषय है कि वहा चैत्र मास में क्या परिवर्तन होता है लेकिन यह तो निश्चित है ही कि पृथिवी के मैदानी क्षेत्रो में दोनो ध्रुवो को छोडकर चैत्र मास की पहली तिथि ही नववर्ष के रूप मे मानना उचित है। अप्रैल जो चैत्र मे ही लगभग पडता है। पूरे विश्व मे अप्रैल से ही नए खाते, बजट, नए प्रवेश व लेन-देन का कार्य चल रहा है यह तो उचित माना जा सकता है लेकिन उसे ही नववर्ष न मानकर पहली जनवरी को नववर्ष मानना बिल्कुल ही मूर्खतापूर्ण कृत्य है। यह भेडचाल है जिसे छोडने की आवश्यकता है। आज विज्ञान ने कितनी उन्नति करली है फिर भी पता नहीं सारी दुनिया यह नववर्ष की गुलामी क्यों ढो रही है ? इसका आधार है जूनियस द्वितीय की विशाल क्षेत्र पर विजय होने पर उस द्वारा इस दिन को प्रतिवर्ष मनाया जाना। इस दिन को महीनो के दिनो मे तथा महीनो मे भी घटत-बढत करके वर्ष का पहला दिन घोषित किया गया। जूनियस के नाम पर ही इस महीने का नाम भी जुनियरी या जेनुअरी रक्खा गया। जहा जहा के क्षेत्रो मे जूनियस और परवर्ती लोग कब्जे करते गए, वहीं जनवरी को नववर्ष के रूप मे प्रचलित करते गए। आज भी यह परम्परा चल रही है। आज के वैज्ञानिक युग मे भी एक वर्ष मे दो-बार नववर्ष मनाया जारहा है। एक पहली जनवरी को और दूसरा पहली अप्रैल को। पहली अप्रैल को ऋतु परिवर्तन, नए अन्न आने के कारण नए लेखे-जोखे बनाने, नई योजनाए लागू करने आदि के कारण उचित माना जा सकता है लेकिन बिना सोचे ही पहली जनवरी को नववर्ष मानना व परस्पर बधाई देना भेडचाल है। विद्वानो बुद्धिजीवियो वैज्ञानिको को इस परम्परा को छोडना चाहिए तथा जनसाधारण को भी इसे छोडने वे लिए प्रेरित करना चाहिए। इसके साथ सामाजिक सगठनों को चैत्र प्रतिपदा को ही नववर्ष मानने व बधाई पत्र आदि बाटकर तथा मौखिक रूप से भी बधाइया उसी दिन परस्पर आदान-प्रदान करनी चाहिए तथा इसके लिए सुन्दर भावनाओ व शुभकामनाओयुक्त वाक्यो या वेदमन्त्रो के भाग लिखकर प्रकृति के ऋतु अनुसार प्राकृतिक, फसलो, अन्नो, शिशुओ विशेष पक्षियो, गौ, अश्व आदि पशुओ के चित्रो सहित उत्तम आकर्षक रगीन उपहार देने लेने चाहिए। ये पत्र अनिवार्य रूप से सस्कृत, हिन्दी या मातृभाषाओं में ही छपवाने चाहिए, क्योंकि यदि हम अग्रेजी में इन्हे छपवाएंगे तो अपनी भाषा की घटोतरी होगी तथा हमारे अन्दर आत्महीनता बढेगी। स्वाभिमान मृत होजाएगा। सस्कृति का ह्रास होगा। अत सभी भारतीय नागरिकों, उद्योगपतियों, व्यापारियों, शिक्षकों, चिकित्सकों व छात्रो आदि सभी वर्गों को चाहिए कि वे चैत्र मे ही नववर्ष मनाने की परम्परा डाले तथा निज भाषा में ही पत्र छपवाए या निज भाषा के ही बधाई पत्र ले।

वर्ष २०००

निकल गया 'नाज' दो हजार का साल।
गुजर गया है यह इन्तजार का साल।।
मची रही है जहां-तहां हल-चल।
वाक़ई! था यह इन्तशार का साल।।

वर्ष २००१

साले-नौ की है मुन्तजर खलक्त।
साल-ए-नौ करें सभी स्वागत।।
दो हजार एक लाए खुशियों को।
साल-ए-नौ पर हो रब की सद रहमत।।

–**नाज सोनीपती**

भण्डारी जी को भ्रातृशोक

गुरुकुल झज्जर के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री फत्तहसिह जी भण्डारी के बडे भाई श्री सरदारसिह जी का ३० दिसम्बर को देहान्त होगया। उनकी अन्त्येष्टि मे गुरुकुल झज्जर के सचालक, सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधिसभा के प्रधान श्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती, आचार्य विजयपाल जी तथा गुरुकुल के ब्रह्मचारियो ने भाग लिया।

स्व० सरदारसिह जी आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता थे। आर्यसमाज द्वारा चलाये गये हिन्दी आन्दोलन आदि मे सक्रिय भाग लिया तथा जेल भी काटी।

आर्यसमाज पटासनी तथा गुरुकुल झज्जर परिवार दिवगत आत्मा की सद्गति एव शोक सन्तप्त परिवार को धैर्य प्रदान की प्रभु से प्रार्थना करता है।

१० जनवरी २००१ ई० को पटासनी गाव मे शान्तियज्ञ किया जायेगा। –**वेदव्रत शास्त्री, प्रधान गुरुकुल झज्जर**

शोक समाचार

१ श्री सत्यपाल आर्य सभाभजनोपदेशक के छोटे भाई श्री मुनेशकुमार गाव नगला दुहेला जिला मुजफ्फरनगर का २० वर्ष की आयु मे बीमार होने के कारण आकस्मिक निधन होगया। परमात्मा दिवगत आत्मा को सद्गति तथा उनके परिवार को इस वियोग को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

२ श्री कन्हैयालाल आर्य स्वतन्त्रता सेनानी गाव मलिकपुर जिला झज्जर का दिनाक १४ दिसम्बर २००० को ८८ वर्ष की आयु में निधन होगया। वे आर्यसमाज के कार्यो पे बहुत सहयोग देते थे। परमात्मा दिवगत आत्मा को सद्गति तथा उनके परिवार को इस वियोग को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। –**सभामन्त्री**

पृष्ठ १ का शेष– चारित्रिक गुणों के सागार..........

निकाह के लिए तू मेरा इन्तजार कर रही है। लो मैं आगया और हम दोनो अब इस तरह मिलेगे कि कोई हमे जुदा नहीं कर सकेगा।" अशफाक के गले मे फासी की रस्सी डाली गई। खुदा का नाम लेते हुए वह क्रातिवीर खुशी-खुशी फंदे पर झूल गया और सिद्ध कर गया कि–मुसलमान भी तो भारत-माता की सतान हैं।

फैजाबाद की जेल मे अशफाक उल्ला खा का वह शेर गूजता रहा जो मरने के कुछ समय पहले उन्होने पढा था–

तंग आकर हम भी उनसे जुल्म के बेदाद से।
चल दिए सूए अदम जिन्दाने फैजाबाद से।।

अशफाक को गुलामी से सख्त नफरत थी। देश प्रेम की भावना उनके अन्दर कूट-कूटकर भरी हुई थी। देश के लिए वे कुछ भी कर गुजरने को तैयार रहते थे। वह हमेशा सोचते थे कि–

इलाही वह भी दिन होगा,
जब अपना राज देखेंगे,
जब अपनी ही जमीं होगी
और अपना आसमां होगा।

देश की आजादी के लिए जब वे क्रान्तिकारियो के कारनामो के किस्से पढते तो उनके खून मे उबाल आजाता था। वे किसी भी शर्त पर क्रातिकारियो के साथ जगे आजादी मे हिस्सा लेने को बेताब थे। अन्तत १९२१ मे वे क्रान्तिकारियों के दल में शामिल होकर पडित रामप्रसाद बिस्मिल के दाहिने हाथ बन गए। ९ अगस्त १९२५ को उन्होने काकोरी काड मे बढ-चढकर भाग लिया और इस्पात की तरह मजबूत बदन की बदौलत खजाने के सन्दूक को तोडने मे सफल हुए। अशफाक मजबूत इरादेवाले और स्पष्ट बात करनेवाले व्यक्ति थे। उनके चरित्र का सबसे उज्ज्वल पक्ष उनकी अनुशासनप्रियता और विचारो की स्वतन्त्रता का था। जब उनके हीरो पडित रामप्रसाद बिस्मिल ने रेलगाडी से सरकारी खजाना लूटने की योजना बनाई तो अशफाक ही एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे जिन्होने इस बात का विरोध किया। ऐसा कार्य न करने के लिए उन्होने कई तर्क भी प्रस्तुत किए परन्तु जब दल के अन्य सदस्यो के अति उत्साह के कारण सरकारी धन लूटने की योजना स्वीकार करली गई तो उन्होने पूरी मुस्तैदी से सौंपे गए हर काम को पूरा किया। दल एव नेता के अनुशासन पर कहीं भी आच नहीं आने दी। सरकारी खजाने को लूटने के विरोध में उन्होने कहा कि, "ट्रेन रोककर सरकारी खजाना लूट लेने के कारण क्रान्तिकारी दल और ब्रिटिश सरकार मे सीधा टकराव पैदा होजाएगा, जो अभी तक नहीं है। सरकारी खजाना लूटने के कारण वह सरकार को एक खुली चुनौती हो जाएगी और सरकार अपनी पूरी ताकत हमे मिटाने के लिए लगा देगी। ऐसी हालत में हम लोग अपनी आजादी की लडाई को और आगे बढाने के पहले ही खत्म होजायेगे और हमारा मकसद पूरा नहीं होगा। इसलिए मेरा विचार है कि हम लोग पहले अपनी बुनियाद को पुख्ता करे और फिर मौका पाकर हुकूमत से सीधा टकराने की बात सोचे। मैं यह भी साफ कर देना चाहता हू कि मेरे कहने का यह मतलब न लिया जाये कि मैं इस योजना से पीछे हटना चाहता हू या डरता हू। अगर मेरी बात न मानी गई और यह काम हाथ में लिया गया तो मैं पूरे जोश के साथ उसमे हिस्सा लूगा।" इतिहास गवाह है कि उन्होने अपने एक-एक शब्द को सही कर दिखाया और उनकी भविष्यवाणी भी बिल्कुल सत्य सिद्ध हुई। अशफाक ने तीनो युगो की त्रिवेणी मे गोते लगाए। वे भूतकाल से प्रताडित भविष्यद्रष्टा थे इसलिए उन्होने वर्तमान को पूरी तरह से अपनी मुट्ठी मे बद रखा। भविष्य सुधारने के लिए उन्होने भूतकाल के दाग धब्बो को उतारने का सफल प्रयास किया और वर्तमान को अपने आदर्शो के साथ भरपूर जिया। काकोरी काड के बाद एक वर्ष तक अशफाक पुलिस की हिरासत से बचते रहे और एक दोस्त के विश्वासघात के कारण ८ नवम्बर, १९२६ को दिल्ली मे गिरफ्तार हुए। मुकदमा चलने पर उन्हे दोहरी फासी की सजा सुनाई गई और १९ दिसम्बर १९२७ को फैजाबाद जेल मे उन्हे फासी पर लटका दिया गया।

जिस दफ्तर मे अशफाक काम कर रहे थे, उसका इजीनियर शायर-मिजाज था। जब उसे मालूम पडा कि उसके दफ्तर का एक बाबू भी शायरी करता है तो वह अशफाक को अपने साथ मुशायरो मे भी ले जाने लगा। अशफाक के कारण इजीनियर साहब का रूतबा बढता गया। इजीनियर साहब ने खुश होकर अशफाक का वेतन बढा दिया। शायर के रूप मे अशफाक को अच्छी ख्याति मिली। वह इजीनियरिग के काम को भी समझने लगे और उनके मन मे खुद इजीनियर बनने का विचार पैदा हुआ। उसके लिए प्रशिक्षण प्राप्त करना आवश्यक है। उन्होने तय किया कि वह अफगानिस्तान होते हुए रूस पहुचकर वहा इजीनियररिग की शिक्षा प्राप्त करेगे। अफगानिस्तान पहुचने के लिए पासपोर्ट आदि बनवाने की गरज से अशफाक उल्ला खा दिल्ली पहुच गये। यहा पर वे एक मुसलमान सहपाठी मित्र के घर पर ठहरे। इस मित्र ने पुरस्कार के लालच मे उन्हे गिरफ्तार करवा दिया। एक दगाबाज ने अपने ही मित्र को पुलिस के हवाले कर दिया।

परिवार के लोगों की परवाह न करते हुए उन्होंने अग्रेजी सीखी और भावी पीढी को अधिक से अधिक शिक्षा ग्रहण करने का आग्रह किया। अशफाक ने एक जगह लिखा है, "जैसे ही हमने अग्रेजी शुरू की हमारे खानदान के लोगो मे खलफिशार (झगडा) शुरू होगया। चूंकि फिजाये खानदान मे अजीब किस्म के जरासीम (कीटाणु) मौजूद थे। इल्म (शिक्षा) से उन्हें नफरत, हाथ पैर हिलाने से दुश्मनी और अग्रेजी पढने को कुफ्र समझा जाता था। उनका मानना था कि अग्रेजी किताब को हाथ लगाने से हाथ अपवित्र हो जाता है। गरज यह है कि परिवार मे एक भी शख्स ग्रेजुएट नहीं बन पाया। चुनाचे मेरा भी यही हाल हुआ। इस बीच तुर्कों और ईसाइयो में जग छिड गई। बस फिर क्या था लोगो को प्रोपागेन्डे का मौका मिल गया। अग्रेजी दुश्मनो की जुबान थी– मुझे भी नफरत होने लगी।" अशफाक की पढाई में जो बाधाये उनके अपने व्यवहार और पारिवारिक वातावरण से आई इसका उन्हे हमेशा अफसोस रहा और उन्होने भावी पीढी से उस पर गौर करने को तथा उनसे परहेज करने की गुजारिश की।

मातृभूमि की ही तरह अशफाक को अपनी मा से बहुत अधिक लगाव था। परिवार मे सबसे छोटा होने के कारण भी उन्हे मा का पूरा लाड दुलार मिला था। उन्हे अपने पठानी रक्त पर भी बहुत गर्व था। काकोरी काड की सुनवाई के दौरान अग्रेजो ने कई मुस्लिम अफसरो के माध्यम से उन्हे सरकारी गवाह बनने का लालच दिया परन्तु वह टस से मस नहीं हुए। अन्त मे ब्रह्मास्त्र के रूप मे उनकी मा श्रीमती मजहर उलनिसा बेगम को भेजा गया। भावनाओं मे डूबे आसुओ से तरबतर मा फासी की सजा पाये बेटे के सम्मुख खडी होकर बोली कि तू अगर मेरी बात नहीं मानेगा तो मैं तुझे अपना दूध नहीं बख्शूगी। दृढ निश्चयी बेटे का उत्तर था, "अम्मी अगर आप नहीं बख्शेगी तो आपकी मर्जी मगर मादरे वतन, भारत माता अपना दूध जरूरी बख्श देगी। उनका मत था कि काकोरी काण्ड मे मैं अकेला मुसलमान मुस्लिम हू। यदि मैं सरकारी गवाह बन गया तो पूरी कौम बदनाम होजायेगी। उन्हे पहला मुसलमान शहीद होने पर भी बहुत गर्व था। अशफाक दिन रात मातृभूमि के विषय मे ही विचार करते रहते थे। उन्होने कहा भी है–

जब तक कि तन में जान रगों में लहू रहे।
तेरा ही जिक्र या तेरी ही जुस्तजू रहे।।

फासी घर से प्रसिद्ध क्रान्तिकारी नलिनी दीदी को लिखे अपने अंतिम पत्र मे अशफाक ने लिखा, "दीदी, मैं मरने जा रहा हू– वस्तुत अमरत्व प्राप्त करने जा रहा हू। आप मुझे भूलेगी नहीं, विदा दीजिए और याद रखिए कि मैं वीरगति प्राप्त कर रहा हू।" यह पत्र उस जिन्दादिली और श्रेष्ठ चरित्र के धनी इसान के जीवन के प्रवाह की उस त्रिवेणी का प्रतीक है जो मानवोचित सवेदना, मौत की दहलीज पर चरित्र की दृढता और उनकी स्थिरता के रूप मे सतत बहती रही।

सभा द्वारा निम्नलिखित साहित्य पर विशेष छूट

पुस्तक का नाम	वास्तविक कीमत	रियायती कीमत
पजाब का हिन्दीरक्षा आन्दोलन	१००-००	८०-००
प्रो० शेरसिह एक प्रेरक व्यक्तित्व	२०-००	१०-००
नैतिक शिक्षा भाग-९	४-००	२-००
नैतिक शिक्षा भाग-१०	४-००	२-००
शराबबन्दी शका-समाधान	१-००-	१-००
हैदराबाद सत्याग्रह मे हरयाणा का योगदान	३०-००	१५-००
प० गुरुदत्त विद्यार्थी जीवन-चरित्र	२-५०	२-००
दी वीजडम ऑफ ऋषीज	७२-००	५०-००
सरफरोशी की तमन्ना	२०-००	५-००
आर्यसमाज क्या है ?	१०-००	५-००
आदर्श धातु रूपावली	५-००	३-००
दी वेदाज	१-००	१-००
टेन प्रिंसिपल आफ आर्यसमाज	१-००	१-[illegible]
प० जगदेवसिह सिह सिद्धान्ती जीवन चरित्र	१५-००	५-००
श्रीमद्दयानन्द-प्रकाश	५०-००	२५-००

नोट – डाक या वी०पी०पी० द्वारा पुस्तके मगवाने का खर्च [illegible] होगा।

–मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, [illegible] रोड, रोहतक

श्रद्धानन्द ने मिस्टर गांधी को महात्मा गांधी बनाया

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह

कानपुर। स्वामी श्रद्धानन्द ने मोहनदास कर्मचारी गाधी के कार्यो को देखकर उन्हे सर्वप्रथम महात्मा गाधी कहकर सम्बोधित किया। इसके बाद तो मिस्टर गाधी को ससार ने महात्मा गाधी के रूप मे ही जाना।

उपरोक्त विचार केन्द्रीय आर्यसभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने आर्य कन्या इण्टर कॉलेज गोविन्द नगर कानपुर के प्रागण मे आयोजित स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किये। श्री आर्य ने आगे कहा कि मनुष्य अपने कर्मो द्वारा ही पहचाना जाता है। मनुष्य के सेवा कार्य ही उसकी जीवन गाथा को प्रचारित करते रहते हैं। स्वामी श्रद्धानन्द का वास्तविक स्मारक तो गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय एवम् शुद्धि आन्दोलन है। लोगो को स्वामी श्रद्धानन्द से प्रेरणा लेकर अपने को परिवार तक ही सीमित न रखकर समाज सेवा मे भी बढ-चढकर भाग लेना चाहिए। यही मानव जीवन की सार्थकता है।

समारोह का सचालन श्रीमती राजजीत पाल ने किया और प्रधानाचार्या श्रीमती वीनस शर्मा जी ने आगन्तुको को धन्यवाद दिया। समारोह मे छात्राओं के भी सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये।

—बाल गोविन्द आर्य, मन्त्री, आर्यसमाज गोविन्द नगर, कानपुर

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न

रोहतक। आर्य केद्रीय सभा रोहतक के तत्त्वावधान मे आज शिवाजी कालोनी आर्यसमाज मदिर मे स्वामी श्रद्धानन्द का ७४वा बलिदान दिवस मनाया गया।

इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यवाहक प्रधान एव पूर्व सासद स्वामी इन्द्रवेश भी मौजूद थे। उन्होने विस्तारपूर्वक स्वामी श्रद्धानन्द की जीवनी व उनके त्याग, बलिदान का वर्णन करते हुए कहा कि वर्तमान गुरुकुल प्रणाली को चलाने वाले वे ही थे। उन्होने अपनी वकालत को त्याग करके अपनी सारी जमीन जायदाद बेचकर गुरुकुल कागडी की स्थापना की जो बाद मे भारतीय स्वतन्त्रता सग्राम मे भाग लेने वाले क्रातिकारियो की कर्मस्थली बनी। मोहनदास कर्मचन्द गाधी को महात्मा गाधी बनाने वाले स्वामी श्रद्धानन्द ही थे। एकमात्र प्रथम हिन्दू हुए हैं जिन्हे जामा मस्जिद की मिम्बर से भाषण देने का गौरव प्राप्त हुआ है। उन्होने शुद्धि आन्दोलन व शिक्षा सस्थाओ का निर्माण करके देश में एक नई जान फूकने का कार्य किया। आर्य केंद्रीय सभा रोहतक के तत्त्वावधान मे आयोजित इस समारोह के मुख्य अतिथि दिल्ली के केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान डॉ० शिव कुमार शास्त्री थे। उन्होने स्वामी जी के बारे मे उद्गार प्रकट करते हुए कहा कि भय के सामने उन्होने कभी सिर नहीं झुकाया। मरने का डर उनमे नहीं था। वे सच्चे आस्तिक ईश्वरवादी आदमी थे। वे वीर के समान जिये और वीर के समान ही मरे। उनके बलिदान का वर्णन करते हुए डॉ० शिवकुमार शास्त्री ने कहा कि २३ दिसम्बर, १९२६ को एक धर्मांध मुसलमान अब्दुल रशीद ने पिस्तोल की गोली से मार डाला। उनकी मृत्यु का समचार सुनकर महात्मा गाधी के मुख से निकला कि शानदार जीवन का शानदार अत।

नामकरण संस्कार पर यज्ञ

दिनाक ११-१२-२००० को सेठ श्री रामकुमार आर्य के निवास स्थान दीवान कालोनी महेन्द्रगढ मे उनकी नवजात सुपोत्री के नामकरण सस्कार के उपलक्ष्य पर यज्ञ का आयोजन स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती प्रधान यति मण्डल दक्षिणी हरयाणा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

यज्ञ का कार्य प० इन्द्रमुनि आर्य पुराहित धर्मप्रचार मन्त्री यतिमण्डल दक्षिणी हरयाणा तथा महन्त आनन्दस्वरूप दास सन्त कबीर मठ सोहला एव प्रधान आर्यवीर दल महेन्द्रगढ ने करवाया।

यजमानो का स्थान श्री सुन्दरलाल आर्य ने अपनी पत्नी श्रीमती पूनम आर्य के साथ ग्रहण किया यज्ञमानो के अतिरिक्त अन्य सात पुरुषो को भी यज्ञोपवीत धारण करवाये।

इसके पश्चात् स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती ने सस्कार विधि के आधार पर बालिका का नाम मुस्कान रखते हुए १६ सस्कारो पर विस्तार से चर्चा की।

अन्त मे सभी आगन्तुको का सेठ श्री फूलचन्द आर्य ने धन्यवाद करते हुए प्रसाद भी वितरण किया, तथा पचास रुपये आर्य प्रतिनिधि सभा को दान स्वरूप दिये।

—प्रो० राजेशकुमार आर्य

सत्यार्थप्रकाश निबन्ध प्रतियोगिता २००१

सर्वसामान्य को सूचित किया जाता है कि श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर द्वारा आयोज्य सत्यार्थप्रकाश निबन्ध प्रतियोगिता २००१ हेतु निबन्ध प्राप्ति की अन्तिम तिथि ३१ दिसबर, २००० से बढाकर १५ जनवरी, २००१ कर दी गई है। लेखक बन्धु 'महर्षि दयानन्द के राजधर्म विषयक चिन्तन (सत्यार्थप्रकाश के छठे समुल्लास के आलोक मे) विषय पर १५ पृष्ठ के अपने निबन्ध न्यास के पते पर १५ जनवरी, २००१ तक भेज सकते हैं।

प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान पाने वाले प्रतिभागियो को प्रमाण-पत्र एव क्रमश रुपये ३१००, २१०० व १५०० की राशि से, मुम्बई मे २३ से २६ मार्च मे आयोज्य अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर पुरस्कृत किया जायेगा। १०० रुपये के पाच सात्वना पुरस्कार भी दिये जायेगे।

—अशोक आर्य, संयोजक, निबन्ध प्रतियोगिता
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राज०)

आर्यसमाज बड़ा बाजार मुंशी सदरूद्दीन लेन कलकत्ता का निर्वाचन

प्रधान–श्री चान्द रतन रम्माणी, कार्यकर्ता प्रधान–श्री खुशहालचन्द्र आर्य, उपप्रधान–श्री दीनदयाल गुप्ता, श्री अरुण कुमार गुप्ता, आनन्द देव आर्य, मत्री–श्री नरेश कुमार गुप्ता, सयुक्त मत्री–श्री राजेश कुमार जैसकल, कोषाध्यक्ष–श्री रामेश्वरदयाल सर्राफ, प्रचारमन्त्री–श्री रमेश कुमार अग्रवाल।

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया का ३९वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया जोकि दिल्ली से जयपुर जाते हुए लगभग १२० कि मी की दूरी पर बहुत ही रमणीय स्थान पर स्थित है, का ३९वा वार्षिकोत्सव २४,२५, २६ नवम्बर २००० को समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। समारोह से एक सप्ताह पूर्व चतुर्वेद पारायण यज्ञ आचार्य विश्वपाल जी के ब्रह्मत्व मे आरम्भ हुआ जिसकी पूर्णाहुति रविवार दिनाक २६-११-२००० को प्रात १०-३० बजे हुई। इस वर्ष दिल्ली से सम्मिलित होने के लिये लगभग १६ बसे और ८-१० कारें ऋषिभक्तो की दाधिया पहुची और यज्ञ की पूर्णाहुति मे सम्मिलित हुई। यज्ञ के उपरान्त प्रातराश हुआ और उसके तुरन्त बाद आर्य महासम्मेलन गुरुकुल के प्रधान श्री गुरुदत्त तिवारी जी की अध्यक्षता मे आरम्भ हुआ। इस समारोह के मुख्य अतिथि डॉ० वी कुलवन्त रीज डी ए वी पब्लिक स्कूल्स करनाल जोन हरयाणा थे। गुरुकुल की कन्याओ द्वारा सास्कृतिक कार्यक्रम जिसमे भाषण एव भजनो का विशेष कार्यक्रम था, प्रस्तुत किया गया।

कन्या गुरुकुल के मन्त्री श्री रामनाथ सहगल ने कहा कि पिछले कुछ वर्षो से गुरुकुल की बहुत उन्नति हुई है, शिक्षा का स्तर ऊचा हुआ है और इस गुरुकुल की कन्याये महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय की परीक्षाओ में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय आती हैं और सभी कन्याये प्रथम अथवा द्वितीय श्रेणी मे उत्तीर्ण होती हैं।

श्री अजय सहगल ने कहा कि मुझे गुरुकुल कागडी का वह युग स्मरण हो रहा है, मैंने एक पुस्तक मे पढा है कि [illegible] इस गुरुकुल की स्थापना स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी ने की थी और गुरुकुल क वार्षिकोत्सव पर हजारो की सख्या मे ऋषि भक्त पधारते थे और गुरुकुल की सेवा करते थे।

मुख्य अतिथि के रूप मे पधारे हुए डॉ० वी कुलवन्त जी ने कहा कि मैं जब ६ वर्ष का था तो इस गुरुकुल मे इस क्षेत्र की भूमि में जन्म लेने के कारण शिक्षा प्राप्त करने आया था, उसके बाद मैं आज लगभग ४० वर्ष बाद आया हू और मुझे गुरुकुल की स्थिति शिक्षा आदि देखकर प्रसन्नता हो रही है, परन्तु मुझे गुरुकुल के प्राचार्या एव प्रबन्धको से यह आग्रह करना है कि आज का युग कम्प्यूटर का युग है इसलिए हमे इसके शिक्षा स्तर को और ऊचा उठाना होगा। मुझसे जो भी गुरुकुल के लिए सहयोग होगा मैं हमेशा सहयोग के लिए तत्पर रहूगा।

गुरुकुल के प्रधान श्री गुरुदत्त तिवारी जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे पधारे हुए सभी ऋषि भक्तो का धन्यवाद प्रकट करते हुए कहा कि हम इस गुरुकुल के शिक्षा स्तर को बहुत ऊचा लेजायेगे।

—मन्त्री, आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया (अलवर)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन . ४६८७४, ५७७७४) मे छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष . ४०७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १
पंजीकरणसंख्या टैक/एच आर/49/रोहतक/99 ☎ ०१२६२-४०७२

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सर्वहितकारी
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र रोहतक
प्रधानसम्पादक : प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक :- डा० सुदर्शनदेव आचार्य
वर्ष २८ अंक ८ १४ जनवरी, २००१ वार्षिक शुल्क ६०) आजीवन शुल्क ६००) विदेश में १० पौंड एक प्रति १-२५

वर्ष, मास, तिथि, नक्षत्र, ऋतु, राशि, अयन, एवं कालचक्र रूप सौर मण्डल का परिचय–

सौर मकर संक्रान्ति-पर्व का महत्त्व एवं रहस्य

❑ सुखदेव शास्त्री, महोपदेशक, दयानन्दमठ, रोहतक (हरयाणा)

आर्यो के आदि देश भारत के प्राचीन ऋषि-मुनियो ने राष्ट्र मे बनाये जाने वाले प्रत्येक पर्व को वेदो मे आए उसके महत्त्व के आधार पर मनाने का निश्चय एव प्रावधान किया था। उन्होने लाखों वर्षो से मनाए जाने वाले, श्रावणी उपाकर्म, दीपावली, विजयदशमी, होली ... पर्वो को मुख्यता प्रदान की थी। इनके अतिरिक्त अन्य भी पर्व त्यौहार भी किसी महत्त्व को मानते हुए मनाये जाते हैं। अनेक तिथिया अमावस्या, पूर्णमासी तथा वर्षभर मे त्यौहारो की भरमार रहती है। भारत पर्व-तिहारो का देश है। यहा जेठ की तपती गर्मी में भी "निर्जला एकादशी" का व्रत रक्खा जाता है। अनेक राष्ट्रीय महापुरुषो के जन्मदिन भी मनाए जाते हैं। जैसे रामनवमी, श्री कृष्णजन्माष्टमी। देश के स्वतन्त्र होने पर १५ अगस्त, २६ जनवरी भी सरकारी तौर पर मनाये जाते हैं। ये सभी पर्व राष्ट्र के सभी निवासियो को आपस मे मिलजुलकर उल्लासपूर्वक मनाये जाने चाहिए। इससे राष्ट्र मे एकता की शक्ति बढेगी।

यहा राष्ट्र मे कुछ ऐसे भी साम्प्रदायिक लोग हैं जो इन पर्वो को महत्त्व नहीं देते। वे रहते यहा हैं पर्व-त्यौहार मनाते हैं विदेशों के। वे खाते यहा का हैं, गीत गाते हैं परदेश के। जैसे अभी २५ दिसम्बर और १ जनवरी मनाया गया। १ जनवरी हमारा नया वर्ष नहीं है। किन्तु आज भी राष्ट्र मे अग्रेजी दासता की जडे जनता मे मजबूत हैं। अपने विक्रमीय सम्वत् को तो कोई जानता ही नहीं है। अत आओ ! सौर मकर सक्रान्ति के पर्व पर वेदो से सम्बन्धित मानकर विचार करे।

अथर्ववेद के काण्ड आठ मे, सूक्त ९ में मन्त्र २५ व २६ मे कुछ प्रश्न किये गए हैं, २५वे मन्त्र मे प्रश्न ये हैं– **"को नु गौ क ऋषि किमु धाम का आशिष । यक्ष पृथिव्यामेकवृदेकर्तु कतमो नु स ।।"**

प्रश्न यह है कि–'वह महान् "गौ" सबका चलानेवाला, इस ब्रह्माण्डरूपी रथ को खींचनेवाला "बैल" कौन है ? और इस चराचर की ऋषि-द्रष्टा, एकमात्र अध्यक्ष कौन है ? इन सबको धारण करनेवाला क्या है ? सब पदार्थो पर शासन करनेवाली, सबको नियम मे रखनेवाली शक्तिया कौन-सी हैं ? पृथिवी पर एकमात्र वरण करने और पूजन योग्य, एकमात्र ऋतु के साथ सवत्सर रूप काल, सब पदार्थो को परस्पर सगति कराने और व्यवस्थित करने वाला, वह भी कौन-सा है ? इन प्रश्नो का उत्तर देते हुए अथर्ववेद के २६वें मन्त्र मे कहा है–

एको गौ एक ऋषिरेक धामैकधाशिष । यक्ष पृथिव्यामेकवृदेकर्तुर्नाति रिच्यते ।।

वह एक परमात्मा ही इस चराचर को चलाने वाला एकमात्र महावृषभ है। वही एकमात्र सर्वाध्यक्ष है। वही सबका धारण करनेवाला, सबका आश्रित है। वह नियामक शक्तिया भी ब्रह्ममय है। पृथिवी पर सबसे श्रेष्ठ एकमात्र सबका प्रेरक प्राणरूप, व्यवस्थित करनेवाला वही एक परमात्मा है। उससे बढकर दूसरा कोई और नहीं।

इस प्रकार वह परमात्मा ही इस सारे सौर मण्डल का होता बनकर वर्ष, मास, तिथि, नक्षत्र, ऋतुराशि, उत्तरायण व दक्षिणायन रूप कालचक्र का सचालक है। इन सबमें वह परमात्मा यथासमय परिवर्तन एव परिवर्धन करता रहता है। इस सौर मण्डल के कालचक्र का सचालक परमात्मा है। इस कालचक्र का विशेष ज्ञान एव उपदेश ऋग्वेद मण्डल १, सूक्त १६४, मन्त्र ४८ में दिया गया है।

**द्वादशप्रधयश्चक्रमेकं त्रीणि नभ्यानि क उ तच्चिकेत।
तस्मिन्त्साकं त्रिशता न शङ्कवोऽर्पिता षष्टिर्न चलाचलास ।।**

प्रस्तुत मन्त्र का अर्थ महर्षि यास्क ने अपने ग्रन्थ निरुक्त मे अध्याय ४, पाद ४, पृष्ठ सख्या ३०२ पर इस प्रकार से किया है–**एक चक्रम्**-सवत्सर रूपी एक चक्र है, जिसमे **द्वादशप्रधय** -बारह महीने १२ परिधिया हैं, **त्रीणि नभ्यानि**-तीन ऋतुए तीन नाभिया हैं **तत् क उ चिकेत**-उस चक्र को कौन पूर्णतया जानता है ? **तस्मिन् साकम्**- उस चक्र मे एक साथ, **त्रिशता शङ्कव न**-शकुवो की तरह ३००, **षष्टि**-और ६० अहोरात्र, **अर्पिता** -लगे हुए हैं, **चलाचलास** -जो सदा चलायमान रहते हैं। सवत्सर (वर्ष) के ३६० दिन होते हैं। यहा दिन और रात को मिलाकर गिनने से वर्ष ३६० दिन का होता है। इस विषय का विस्तार करते हुए महर्षि यास्क ऋग्वेद म० १, सू० १६४, मन्त्र ११ को पुन लिखते हैं–

**द्वादशार न हि तज्जराय वर्वर्ति चक्र परिद्यामृतस्य।
आपुत्रा अग्ने मिथुनासो अत्र सप्तशतानि विशतिश्च तस्थु ।।**

अर्थात् ... परि-सूर्य के चारों ओर पृथिवी के प्रदक्षिणा करने पर, **द्वादशारम्**-बारह महीनोवाले, आरो से युक्त, **ऋतस्य चक्र**-सवत्सरकाल का चक्र, **वर्वर्ति**-निरन्तर घूमता है। **न हि तत् जराय**-वह कालचक्र कभी क्षीण नहीं होता। **अग्ने** ! हे विद्वान् ! अत्र-इस सवत्सर चक्र मे, **सप्तशतानि विंशति न मिथुनास पुत्रा** -७२० अहोरात्र रूपी दो पुत्र, **आतस्थु** -आश्रित हैं। ... भाव इतना है कि पृथिवी सूर्य की प्रदक्षिणा करती है, उससे महीने तथा दिन रात आदि काल की उत्पत्ति होती है। यह वैज्ञानिक सिद्धान्त इस मत से विदित होता है। सवत्सर के दिन और रात ये दो यमक पुत्र हैं। ३६० दिन और ३६० रात्रिया। दिन और रात मिलकर ७२० हुये। मन्त्र का सरल अर्थ इतना ही है कि यह परमात्मा द्वारा सचालित कालचक्र कभी जीर्ण-शीर्ण नहीं होता। यह नियमित गतिवाला है। इस वर्तमान सृष्टि के चार अरब, बत्तीस करोड वर्ष तक यह नियमित रूप से गतिवाला रहेगा। इसके बारह मास रूप बारह चक्र हैं और दिन-रात रूपी ७२० पुत्र हैं। इसी १६४वे सूक्त का १२वा मन्त्र भी देखिये–

'पञ्चपाद पितर द्वादशाकृति दिव आहु'

इस मन्त्र मे आये **'पञ्चपादम्'** शब्द का अर्थ महर्षि दयानन्द, क्षण मुहूर्त प्रहर दिवस, पक्ष करते हुए काल के भेदो का उल्लेख करते हैं।

महर्षि जी ने सत्यार्थप्रकाश मे **'क्षण'** की परिभाषा करते हुए लिखते है कि 'जितनी देर मे परमाणु पलटा खाता है, उसको क्षण करते हैं। उसी प्रकार समय निर्धारण के उत्तरोत्तर सयोग से घडी, पल, विपल या घण्टा, मिनट सैकिण्ड का मान स्थापित किया गया है। अत इस वर्ष या सवत्सर चक्र मे बारह प्रधि-आरे हैं। महर्षि यास्क **'प्राधे'** की व्युत्पत्ति करते हुए लिखते हैं–**'प्रधि. प्रहितो भवति प्रहित प्रश्लिष्य चक्रे निहित'** अर्थात् जो सयुक्त करके चक्र मे सस्थापित है। इसी मानदण्ड के अनुसार १२ घण्टे का एक दिन अथवा २४ घण्टे का एक अहोरात्र होता है। सात दिन का एक सप्ताह पन्द्रह दिन का एक पक्ष ज्योतिषशास्त्र मे बताया गया है। ३० दिन का एक मास १२ मासो का एक वर्ष।

अब बारह मासो का विवरण भारतीय ज्योतिषशास्त्र की परम्परानुसार कुछ नक्षत्रो से सम्बन्धित करते हुए देते हैं–

१ चैत्र-चित्रा नक्षत्र से सम्बन्ध। २ वैशाख-विशाखा नक्षत्र से सम्बन्ध। ३ ज्येष्ठ-ज्येष्ठा नक्षत्र से सम्बन्धित। ४ आषाढ-आषाढानक्षत्र से सम्बन्ध। ५ श्रावण-श्रवणा नक्षत्र से। ६ भाद्रपद-भाद्रपदा से। ७ आश्विन-अश्विनी से। ८ कार्तिक-कृत्तिका से।

(शेष पृष्ठ २ पर)

लोक-परलोक विचार

सप्तम-विचार—(खाली हाथ ही लौटेंगे ?)

❑ शिवप्रसाद उपाध्याय, आर्यसमाज होशियारपुर (पजाब)

(गताक से आगे)

आज राजा मुञ्ज इस नाशवान् ऐश्वर्य के लिए क्या कर बैठा है ? उसने यह भी नहीं सोचा कि मेरा भाई सिन्धुल भी इसे नहीं ले गया, तो मैं इसे कैसे ले जाऊगा ? उसने इसकी नश्वरता अस्थिरता और वास्तविकता पर कुछ विचार किया ही नहीं। आज उस पर राजगद्दी का ही भूत सवार है। इस पत्र को पढते ही राजा मुञ्ज बेहोश होकर पृथ्वी पर धडाम से गिर गया। कुछ देर मे होश आई, तो वह पागलो की भांति चिल्लाने और पुकारने लगा कि—'मेरा पुत्र भोज कहा है ? उसे ले आओ।' वह बहुत ही पश्चात्ताप करने लगा, तो मन्त्री वत्सराज ने सारा रहस्य बताकर पश्चात् भोज को उसके पास लाकर दे दिया।

जब मनुष्य धन-सम्पत्ति और राज्यैश्वर्य को ही सब कुछ समझने लगता है, तो उस समय वह सचमुच विवेकहीन होकर अन्धा हो जाता है। तो सज्जनो ! यह धन-सम्पत्ति हमारी नहीं है। भौतिक है, भूमि मे ही रहने वाली है। यह साथ जाने वाली नहीं है। इसलिए तो वेदमन्त्र ने हमे सचेत करते हुए पहले ही कह दिया—

ईशावास्यमिद सर्वं यत्किच जगत्या जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुजीथा मा गृध कस्य स्विद्धनम् ।। यजु० ४०-१

इस दृश्यमान ससार मे जड चेतन जो कुछ भी है सबका सब ईश्वर का है। यह तो पहले से ही ईश्वर के द्वारा काबू किया हुआ है। उसी ने सभी पदार्थों मे पहले ही अपना सम्पूर्ण अधिकार जमा रखा है। परन्तु ईश्वर के द्वारा काबू कर रखने का मतलब यह नहीं, कि वह स्वय इसका भोक्ता है। वह इस का भोक्ता नहीं है। इसका भोक्ता तो आप और मैं हैं। मन्त्र मे कितनी साफ-साफ बता दी है-'तेन त्यक्तेन भुजीथा' वह परमात्मा इस ससार का अधिकपति होता हुआ भी स्वय इसका भोग नहीं करता। वह इस सब जीवो के लिये अपने अधीनस्थ पदार्थो को देता है। उस परमात्मा के द्वारा दिए गए पदार्थो का हमे भी त्यागपूर्वक ही भोग करना चाहिए।

जिसका अपना वैभव है, वह भोक्ता नहीं है, वह तो त्यक्ता है और जो भोक्ता है या भोगना चाहता है वैभव उसका नहीं है। ऐसी स्थिति मे दोनो ही इस वैभव के त्यागी हुए। वास्तव मे यह वैभव सबका साझा है। इसमे परमेश्वर का अधिकार जरूर है, पर वह इसका भोग नहीं कर सकता। साझी वस्तु की इज्जत करना ही त्यागपूर्वक भोग करना है। यही सबका परम कर्त्तव्य है। साझी वस्तु मे अनधिकार चेष्टा की जाए, तो उसका परिणाम भयकर सिद्ध होगा। इसलिए तो वेदमन्त्र के आखिर मे सभी को मार्मिक शब्दो मे कह दिया। '**मा गृध कस्य स्विद्धनम्**' लालच मत करो, यह धन को किसी और का ही है।

तुम्हारे जैसे भोक्ता यहा हजारो आए और हजारो चले गए परन्तु इस ससार के वैभव का कुछ भी नहीं बिगडा। हा यदि इसको अपना मानकर इसी के पीछे पडे रहोगे, तो तुम्हारा सम्पूर्ण जप-तप, स्वाध्याय-सत्सग, आत्मचिन्तन सब कुछ छूट जाएगा। अपना सम्पूर्ण बल-विवेक खो जाएगा न यह हाथ लगेगा, न तुम्हारी बल-बुद्धि ही साथ देगी। ऐसी अवस्था मे महती विनष्टि होगी।

सज्जनो ! कवि का भाव, वेद मन्त्र का सन्देश यही है कि—'**धनानि भूमौ**' धन-सम्पत्ति भूमि की वस्तु है, भूमि मे ही रह जायेगी। इस वैदिक सदेश पर विश्वास किया जाए। इन बातो के ऊपर विशेष रूप से विचार करके तद्वत् आचरण करने से ही हमारा कल्याण हो सकेगा। **इत्योम्।**

भजन

तू है सच्चा पिता, सारे ससार का, ओ३म् प्यारा।
तू ही तू ही है रक्षक हमारा।।

चॉद सूर्य सितारे बनाए, पृथ्वी आकाश पर्वत सजाए।
अन्त आया नहीं, तेरा पाया नहीं, पारवारा, तू ही

पक्षीगण राग सुन्दर हैं गाते, जीव जन्तु भी सिर हैं झुकाते।
उसको ही सुख मिला, तेरी राह पर चला, जो कि प्यारा, तू ही ..

पाप पाखण्ड हमसे छुडाओ, वेदमार्ग पर हमको चलाओ।
लगे भक्ति मे मन, करे सध्या हवन, विश्व सारा, तू ही. .

अपनी भक्ति मे मन को लगाना, कष्ट सारे हमारे मिटाना
दुःखिया कगालो का, और धनवालो का, तू सहारा, तू ही .... .

पृष्ठ १ का शेष— **सौर मकर संक्रान्ति पर्व..........**

९ मार्गशीर्ष-मृगशिरा से। १० पौष-पुष्य से। ११ माघ-मघा से। १२ फाल्गुन-फाल्गुनी नक्षत्र से सम्बन्धित है। इन बारह मासों की नक्षत्रों समेत सत्यता सार्वभौमिक है। अथर्ववेद के अनुसार नक्षत्र २८ होते हैं। उनमे कुछो को छोडकर लिखा गया है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के सृष्टिविद्याविषय मे ऋतुओ के बारे मे यजुर्वेद के ३१-१४ के मन्त्र '**यत्पुरुषेण हविषा देवा०**' अर्थात् परमात्मा ने उत्पन्न किया है। जो यह ब्रह्माण्ड रूप यज्ञ है इसमे वसन्त ऋतु अर्थात् चैत्र और वैशाख घृत के समान हैं। ग्रीष्म ऋतु जो ज्येष्ठ और आषाढ इधन है। श्रावण और भाद्रपद वर्षा ऋतु। आश्विन और कार्तिक शरद् ऋतु। मार्गशीर्ष और पौष हेमन्त ऋतु। माघ और फाल्गुन शिशिर ऋतु कहलाती है। यह इस यज्ञ मे आहुति है। इस प्रकार दो-दो महीनो मे एक ऋतु होती है। यजुर्वेद के अध्याय २४, मन्त्र ११ में भी छ ऋतुओ का विषय वर्णन किया गया है, वहा देख ले।

राशिया १२ होती हैं। जैसे—१ मेष, २ वृष, ३ मिथुन, ४ कर्क, ५ सिह, ६ कन्या, ७ तुला, ८ वृश्चिक, ९ धनु, १० मकर, ११ कुम्भ, १२ मीन। आकाशस्थ प्रत्येक नक्षत्र की आकृति 'राशि' कहलाती है। जब पृथिवी एक राशि से दूसरी राशि मे सक्रमण करती है तो उसको 'सक्रान्ति' कहते हैं। छ मास तक सूर्य क्रान्तिवृत्त से उत्तर की ओर उदय होता रहता है और छ मास तक दक्षिण की ओर निकलता रहता है। प्रत्येक छ मास की अवधि का नाम 'अयन' होता है। सूर्य के उत्तर की ओर उदय की अवधि को 'उत्तरायण' और दक्षिण की ओर उदय की अवधि को 'दक्षिणायन' कहते हैं।

इसे ऐसे समझ लीजिए—सूर्य २३ जून से २२ दिसम्बर तक छ महीनो तक दक्षिणायन मे रहता है और २३ दिसम्बर से २२ जून तक छ मास तक उत्तरायण मे रहता है। सूर्य उत्तरायण काल मे अपनी रश्मियो से जल आकर्षण करके उन्हे अन्तरिक्ष मे धारण करता रहता है और जब वह दक्षिणायन की ओर जाने लगता है तभी वर्षा ऋतु आरम्भ होती है। दक्षिणायन मे रात्रि बढती जाती है और दिन घटता जाता है। सूर्य की मकर राशि की सक्रान्ति से उत्तरायण और कर्क राशि की सक्रान्ति से दक्षिणायन शुरू होता है। सूर्य के तेज प्रकाश के कारण उत्तरायण का विशेष महत्त्व माना जाता है। इन दोनो की चर्चा अथर्ववेद के काण्ड ८, सूक्त १, मन्त्र १७ मे भी की गई है—'**षडाहु शीतान् षडु मास उष्णान् ऋतु नो ब्रूत यतमोऽतिरिक्त**' अर्थात् इन छ मासो को शीत कहते हैं और छ ही मासो को उष्ण कहते हैं तो बताओ, इनमे कौन बडा है ? आगे मन्त्र मे उत्तरायण को ही उष्ण होने के कारण बडा महत्त्व दिया गया है। पितामह भीष्म भी तो उत्तरायण काल मे ही ससार से विदा हुए थे। उत्तरायण सुखदायक है, इसलिए ही उत्तरायण के आरम्भ दिवस पर मकर की सक्रान्ति को ही अधिक महत्त्व दिया गया है। मकर सक्रान्ति के २२ दिन पूर्व धनुराशि के ७ अश, २४ कला पर उत्तरायण होता है। आज १४ जनवरी २००१ को मकर सौर सक्रान्ति का महापर्व धूमधाम से मनाना चाहिये। यह थोडा-सा सक्रान्ति पर्व के विषय मे महत्त्व व रहस्य लिखा। अलमति विस्तरेण।

कैसे मनाये—प्रार्थना उपासना के मन्त्रो व स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण के मन्त्रोच्चारण पश्चात् बृहद् यज्ञ करें। यजुर्वेद अध्याय १४, मन्त्र २७ तक व यजु० अ० १५, मन्त्र ५ तक मन्त्रो से विशेष आहुतिया दे। तिलो के बने लड्डू खावे, तिल के तेल का प्रयोग करे। तूल, रूई, रिजाई से जाडा दूर करे। नई बहुवे अपने जेठ, देवर, स्वसुरो को कम्बल भेट मे दे और आशीर्वाद ले। यज्ञ हवन के पश्चात् शान्तिपाठ। भारतमाता की जय। महर्षि दयानन्द की जय। **ओ३म् शम्।**

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद में स्वामी श्रद्धानन्द जी बलिदान उत्सव पर

गुरुकुल को उन्नत करने का आर्यनेताओं का आह्वान

फरीदाबाद २६ दिसम्बर २००० (केदारसिंह आर्य द्वारा) श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा सचालित गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ मे स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान उत्सव श्रीमती विमला महता सचालक दयानन्द शिक्षण सस्थान एवं प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इससे पूर्व गुरुकुल की यज्ञशाला में गुरुकुल के अध्यापक श्री ओमप्रकाश जी शास्त्री द्वारा यज्ञ करवाया गया। यजमानों को आशीर्वाद देने के पश्चात् उत्सव की कार्यवाही का सचालन गुरुकुल के मत्री श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री ने प्रभावशाली ढग से किया। आरम्भ में श्री खेमसिंह, चतरसिंह तथा श्री वीरेन्द्रसिह बेधडक ने स्वामी श्रद्धानन्द जी की बलिदान गाथा के भजन सुनाये।

श्री सत्यदेव जी गुप्त आर्यनेता फरीदाबाद ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धाजलि देते हुए उपस्थित सभा के अधिकारियों को सुझाव दिया कि स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा इस गुरुकुल को उन्नत करने के लिए उन द्वारा रह गये अधूरे कार्यों को पूरा करने हेतु वेदप्रचारक तैयार करने चाहिए। इस कार्य मे स्थानीय आर्यसमाजों की ओर से पूरा सहयोग मिलेगा। महिला आर्यप्रचारक प्रो० राजकरणी आर्या ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के शानदार कार्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उस समय महात्मा मुशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) आर्यसमाज मे सम्मिलित नहीं हुए परन्तु आर्यसमाज ही स्वामी श्रद्धानन्द में सम्मिलित होगया था। क्योकि आर्यसमाज की गतिविधिया उन द्वारा ही सचालित होती थीं। वे सभी आन्दोलनो तथा समाज सुधार के कार्यों मे सबसे पूर्व मैदान मे कूद पडते थे और निर्भीकता से नेतृत्व करते थे। कुमारी ज्योति आर्या ने ओजस्वी भाषण मे स्वामी श्रद्धानन्द के अमर बलिदान की चर्चा करते हुए कहा कि पुन भारतवर्ष को उन जैसे बलिदानी वीर की तुरन्त आवश्यकता है। उन्होंने इसी गुरुकुल मे रहकर स्वतन्त्रता सेनानियो को तैयार किया था।

सभा द्वारा ही सचालित गुरुकुल कुरुक्षेत्र के युवा प्राचार्य श्री देवव्रत जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को स्वामी दयानन्द जी के पश्चात् ऐतिहासिक युगपुरुष बताते हुए कहा कि स्वामी दयानन्द जी को अत्यधिक वेदप्रचार कार्यों मे निरन्तर व्यस्त रहने के कारण गुरुकुलो की स्थापना का अवसर न मिल सका। उनके इस स्वप्न को साकार करने का श्रेय स्वामी श्रद्धानन्द जी को प्राप्त हुआ। उन्हे इस महान् कार्य के लिए महान् कष्ट उठाने पडे। गुरुकुल कागडी की स्थापना करने के लिए उन दिनो ३० हजार रु० सग्रह करना आज ३० लाख रुपये से अधिक राशि बनती है। गुरुकुल गंगा के साथ जहां भयंकर जगल था, वहा कोई माता-पिता अपने बच्चो को खतरे मे डालना नहीं चाहते थे। परन्तु महात्मा मुशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) ने अपने दोनो पुत्रों को दाखिल किया। गुरुकुल के सचालन हेतु जालन्धर की अपनी कोठी को बेच डाला। जालन्धर मे भारत के इतिहास में कन्याओ को पढाने के लिए कन्या विद्यालय जालन्धर तथा कन्या गुरुकुल देहरादून खोला। भैंसवाल, झज्जर तथा मटिण्डू आदि गुरुकुल खोले। आज इस महान् कार्य को स्वामी ओमानन्द जी कर रहे हैं। आज हरयाणा मे २५ गुरुकुल चल रहे हैं। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ को स्वामी श्रद्धानन्द जी के समयवाला गुरुकुल बनाने के लिये इसकी त्रुटियो को दूर करना होगा।

सभा के मन्त्री प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को महान् तपस्वी, परोपकारी तथा आर्यसमाज के उच्चकोटि के नेता बताते हुए कहा कि उनका जन्म एक पुलिस अधिकारी के घर मे हुआ। ऋषि दयानन्द के दर्शन करने तथा उनसे शका समाधान करने का अवसर मिला। २३ वर्ष की अवस्था मे दुर्गुणो को छोडकर अपने जीवन को सुधार कर अन्यो के जीवनों को सुधारा। गुरुकुलों की स्थापना करके ऋषि दयानन्द के आदेश की पालन की। वहा नवयुवको को तपस्या की भट्ठी मे डालकर जीवित बम बनाये। वे स्वय तपस्वी, राष्ट्रभक्त, हिन्दीप्रेमी, निडर तथा हिन्दू मुस्लिम एकता के प्रतीक थे। आर्य जाति की रक्षा के लिए वे शहीद हुए।

प्रो० शेरसिह जी उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एव गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के परिद्रष्टा ने इस अवसर पर बोलते हुए कहा कि आज स्वामी श्रद्धानन्द जी का ७४वा बलिदान दिवस उन द्वारा स्थापित गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ मे मनाया जारहा है। स्वामी जी आर्यसमाज के आदर्श नेता थे। आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के लिए उन्होने तन, मन तथा धन से सेवा की थी। स्वतन्त्रता आदोलन मे स्वयं सक्रिय रहे तथा गुरुकुल के ब्रह्मचारियो को तैयार किया। धनसग्रह हेतु गुरुकुल में स्वय तथा ब्रह्मचारियो ने एक समय भोजन किया। उन्होंने शुद्धि कार्य करने के साथ दलितोद्धार का भी कार्य किया। गुरुकुल कुरुक्षेत्र की भाति गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में भी आवश्यक सुधार करना होगा। यह स्वामी जी को सच्ची श्रद्धाजलि होगी। सभा को अगले वर्ष उत्सव से पूर्व पूरी शक्ति के साथ इसमे सुधार करना चाहिए।

सभा के कार्यकर्ता प्रधान स्वामी इन्द्रवेश ने अपने भाषण मे स्वामी श्रद्धानन्द को भारत के इतिहास में प्रमुख महापुरुष बताया। गुरुकुल उनके स्मारक हैं। अत सभा विशेषकर गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ को एक आदर्श शिक्षण सस्थान बनाना चाहती है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए स्वामी ओमानन्द जी, प्रो० शेरसिह जी, स्वामी अग्निवेश जी आदि आर्यनेताओं के निर्देशन में प्रो० शेरसिह जी के प्रस्तावानुसार हम गुरुकुल में आवश्यक सुधार करके आर्यसमाज के प्रचार तथा प्रसार करने का प्रमुख केन्द्र बनाने का भरसक प्रयास कर रहे हैं। सभा के अतरग सदस्य एव जिला गुडगाव के वेदप्रचार मण्डल के अध्यक्ष भक्त मगतूराम जी आर्य जो दानी भी हैं, को इसका मुख्याधिष्ठाता बनाया गया है। उन्होंने इसका कार्यभार सम्भाल लिया है। हमे आशा है कि अगले वर्ष के स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस से पूर्व इसका स्वरूप बदल जायेगा। इस कार्य के लिए स्वामी इन्द्रवेश ने उपस्थित नरनारियों तथा गुरुकुल प्रेमियो से अपील करते हुए कहा कि वे इस गुरुकुल को उन्नत करने के लिए जिस प्रकार का भी सहयोग दे सकें, अवश्य देकर स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धाजलि देकर अपने कर्तव्य का पालन करे। आज नवयुवक पथभ्रष्ट होरहे हैं। उन्हे गुरुकुल मे पढाकर आदर्श नागरिक बनावे। प० शिवलाल जी ने गुरुकुल क्षेत्र के ग्रामों में स्वामी श्रद्धानन्द जी के आदेशानुसार वैदिक धर्म का प्रचार तपस्या करके किया था। आर्यसमाज इस प्रकार के प्रचारक को सदा स्मरण रखेगा। गुरुकुल कुरुक्षेत्र की भांति इन्द्रप्रस्थ गोशाला मे अधिक से अधिक किलो दूध देनेवाली गौ रखी जावेगी।

आर्यसमाज के प्रभावशाली वक्ता स्वामी अग्निवेश जी ने प्रो० शेरसिह जी के प्रस्ताव का समर्थन करते हुए कहा कि अब गुरुकुल के दिन फिरेंगे। हमें गुरुकुल के नये मनोनीत मुख्याधिष्ठाता भक्त मगतूराम जी से पूरी आशा है कि ये इस गुरुकुल को हराभरा तथा रमणीक स्थान बनाकर स्वामी श्रद्धानन्द जी की पवित्र भूमि से कुछ भूमाफियो द्वारा किये गये अवैध कब्जो को छुडवाकर आजाद करवायेंगे। ये भूमि तीन मास के अन्दर गैरो से मुक्त करवाने का यत्न करेंगे। इस महान् कार्य मे हम सभी इन्हे पूरा सहयोग देंगे। यहा आधुनिक गुरुकुल चलाना है तथा वैदिक विद्वान् तैयार करने होगे। मैंने ससारभर का भ्रमण किया है। अनेक देशो मे वैदिक धर्म के प्रचार की माग होने लगी है। हमे टेलीविजन पर इण्टरनेट के चैनल पर वेदो तथा सत्यार्थप्रकाश आदि ऋषि ग्रन्थो का प्रचार करना चाहिए। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ दिल्ली के समीप है। अत यहा अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन करना चाहिए। यहा स० भक्तसिह, रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर, सुभाषचन्द्र बोस आदि क्रान्तिकारी गुरुकुल के तहखाने मे रहकर स्वतन्त्रता आन्दोलन चलाते रहे। हमे अपने बलिदानियो को स्मरण रखना चाहिए। आर्यजनता को आगामी समारोह पर १० हजार की सख्या मे सम्मिलित होने की आज से ही तैयारी करनी चाहिए।

श्री रणवीर जी शर्मा पुलिस अधीक्षक फरीदाबाद ने स्वामी श्रद्धानन्द को अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा कि मुझे आज पहली बार गुरुकुल देखने का अवसर मिला है। यह महान् सन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द की तप स्थली रही है। यह ऐसा स्थान जो पहाड पर आर्यो का किला है, उन द्वारा बनाई गई कई करोड़ों की सम्पत्ति को आज लुटेरे लूट रहे हैं। मैं गुरुकुल के सचालको को विश्वास दिलाता हू कि इस पवित्र भूमि को जो लूटने मे लगे हैं, इसका प्रमाण मिलने पर उनके अवैध कब्जो को छुडवाने का पूरा प्रयत्न करूगा। हमे सच्चाई का ही सहारा लेना होगा। हमारी स्वामी जी को यही श्रद्धाजलि है। मैं गुरुकुल की रक्षा हेतु दिनरात तैयार रहूगा।

चौ० धर्मचन्द जी सभा अन्तरग सदस्य एव गुरुकुल के पूर्व मुख्याधिष्ठाता ने स्वामी श्रद्धानन्द को श्रद्धाजलि देते हुए कहा कि स्वामी जी महान् तपस्वी, परिश्रमी तथा चरित्रवान् सन्यासी थे। हमें उनका अनुसरण करना चाहिए। मुझे उन द्वारा स्थापित इस गुरुकुल की सेवा करने का कुछ अवसर मिला है। जब गुरुकुल १९९१ मे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अधिकार मे आया। इसका सचालन करने के लिए पूरा समय देनेवाले १० हजार रु० मासिक वेतन पर भी व्यक्ति नहीं मिले। उस समय के प्रधान प्रो० शेरसिह जी के आदेश पर मैंने मुख्याधिष्ठाता पद पर अवैतनिक रूप मे दिनरात कार्य किया। गुरुकुल के कोष मे एक रुपया भी नहीं था। बिजली तथा पानी के बिल साढे तीन लाख रुपए से अधिक का भुगतान करना शेष था। सभा से उधार धनराशि लेकर कार्य आरम्भ किया। गुरुकुल की छत पर रात्रि को सोना पडा। मेरे साथ श्री केदारसिह आर्य भी सहयोग देते रहे। प्रतिदिन ३-४ बार गुरुकुल के किरायेदारो से सम्पर्क करके किराया प्राप्त किया। गुरुकुल की सम्पत्ति की रक्षा का पूरा यत्न किया गया।

गुरुकुल के नये मुख्याधिष्ठाता भक्त मगतूराम जी ने उत्सव मे पधारने तथा सहयोग देनेवालो का हार्दिक धन्यवाद करते हुए कहा कि मैं चौ० धर्मचन्द जी की भांति गुरुकुल की समस्याओ का समाधान करने के लिए तन, मन तथा धन से अवैतनिक रूप मे सेवा करूगा। प्रो० शेरसिह जी के प्रस्ताव को क्रियात्मक रूप दिया जायेगा। गुरुकुल के ब्रह्मचारियो के भोजन के लिए अन्नसग्रह तथा गोशाला मे दूध देनेवाली गौओ की चारा आदि की व्यवस्था करके सभी ब्रह्मचारियो को दूध पिलाकर बलवान् बनाया जायेगा। गुरुकुल की सम्पत्ति पर अवैध कब्जे छुडवाने के कार्य को प्राथमिकता दी जायेगी। सभी का सहयोग चाहिए।

अन्त मे समारोह की अध्यक्षा बहन विमल मेहता ने कहा कि जिला फरीदाबाद के आर्यसमाजो के सहयोग से गुरुकुल को उन्नत करने का प्रयत्न करूगी। महिलाओं की ओर से भी पूरा सहयोग दिया जायेगा।

सम्पादकीय—

मकर-संक्रान्ति (संकरात)

भारतीय सस्कृति मे पर्वों का विशेष महत्त्व है। सस्कृत भाषा मे 'पर्व' पद उत्सव एव उल्लास का वाचक है। एक वर्ष मे अनेक पर्वो का विधान किया गया है जिनमे मकर-सक्रान्ति भी एक महत्त्वपूर्ण पर्व है। यह सम्पूर्ण भारतवर्ष मे समान रूप से मनाया जाता है। इस पर्व का सम्बन्ध पृथिवी-भ्रमण से है। जिस परिधि मे पृथिवी भ्रमण करती है उसे 'क्रान्ति वृत्त' कहते हैं। इस क्रान्ति वृत्त के १२ भाग हैं जिन्हे राशि कहते हैं। राशियो के नाम आकाश मे विद्यमान नक्षत्रो की आकृति विशेष के आधार पर रखे गए हैं। मेष (भेड), वृष (बैल), मिथुन (स्त्री-पुरुष का जोडा), कर्क (केकडा), सिह (शेर), कन्या (लडकी), तुला (तराजू), वृश्चिक (बिच्छू), धनु (धनुष), मकर (मगरमच्छ), कुम्भ (घडा), मीन (मछली) ये राशि १२ हैं। पृथिवी जब एक राशि से दूसरी राशि मे जाती है, तब उसे सक्रान्ति कहते हैं। जब पृथिवी मकर राशि मे सक्रमण करती है, तब उसे मकर सक्रान्ति कहते हैं।

सूर्य अपने स्थान मे गति करता है और पृथिवी उसके चारो ओर गति करती है। पृथिवी की गति के कारण सूर्य छह मास पर्यन्त पृथिवी क्रान्तिवृत्त से उत्तर मे और छह मास दक्षिण में उदय होता है। इसे ही उत्तरायण और दक्षिणायन कहते हैं। उत्तरायण में दिन बडे और रात्रि छोटी होती हैं। दक्षिणायन मे दिन छोटे और रात्रि बडी होती हैं। मकर सक्रान्ति से उत्तरायण का आरम्भ होता है। उत्तरायण काल मे मकर, कुम्भ, मीन, मेष, वृष और मिथुन ये छह राशिया रहती हैं। कर्क सक्रान्ति से दक्षिणायन आरभ होता है। इसमे कर्क, सिह, कन्या, तुला और वृश्चिक और धनु ये छह राशिया हैं।

मकर सक्रान्ति उत्तरायण की आरम्भक है और उत्तरायण काल मे प्रकाश अधिक और अन्धकार कम होता है। इसलिए मकर सक्रान्ति का विशेष महत्त्व है। यह अन्धकार को छोडकर प्रकाश की ओर बढने की प्रेरणा देता है। यह असत्य को छोडकर सत्य की ओर तथा मृत्यु को छोडकर अमृत की ओर चलने के लिए प्रेरित करती है। इसलिए प्राचीनकाल से यह मकर सक्रान्ति का पर्व मनाया जाता है।

वैदिक साहित्य में उत्तरायण को देवयान कहते हैं। देव का अर्थ विद्वान् है। विद्वान् लोग इस उत्तरायण काल में ससार से प्रस्थान की कामना करते हैं। प्रकाश बहुल समय में प्राण विसर्जन से देवलोक मे जाने की भावना रखते हैं। भीष्मपितामह शर-शय्या पर उत्तरायण की प्रतीक्षा करते रहे और उन्होंने उत्तरायण आने पर ही प्राणों का परित्याग किया।

मकर सक्रान्ति के अवसर पर शीत का साम्राज्य होता है। ग्रीष्म ऋतु निर्धनों के लिए दु खदायक नहीं होती किन्तु शीत ऋतु निर्धनों के लिए बहुत कष्टदायक होती है। वे मकान और वस्त्र आदि के अभाव मे बहुत दु खी रहते हैं। ऐसी अवस्था मे धनवान् जनो का यह कर्तव्य बनता है कि वे निर्धनो की वस्त्र आदि से सहायता करे। इस पर्व पर सम्पन्न लोग दीन-दु खी जनो की सहायता करते हैं और धन को शुद्ध करते हैं। धन दान से शुद्ध होता है। वैद्यकशास्त्र मे बाह्य शीत निवारण के लिए तूल (रूई) और आन्तरिक शीत निवारण के लिए तिल के सेवन का विधान किया जाता है। इसलिए शीतकाल मे आहार मे तिल का प्रयोग उत्तम है। तिल स्निग्ध और उष्ण होने से शीतकाल मे विशेष लाभकारी है। तूल से रिजाई आदि आच्छादन बनते हैं, जो शीत के निवारक हैं। सम्पन्न आर्यजन इनका दीनजनो मे वितरण भी करते हैं।

वर्षभर मे छोटे और बडे लोगो के पारस्परिक व्यवहार में कटुता आना सम्भव है। मकर सक्रान्ति के दिन छोटे बडो को मनाते हैं और पारस्परिक रोष का निवारण करके प्रेम को बढाते हैं। सास और बहू का कलह लोक में प्रसिद्ध है। हरयाणा प्रान्त में आज के दिन बहू सास का वस्त्र आदि दान से मान करती है और सास बहू को आशीर्वाद देती है। इससे वर्षभर का मनमुटाव दूर होजाता है तथा स्नेह एव प्रेम का वातावरण आरम्भ होता है।

सक्रान्ति से एक दिन पूर्व हरयाणा में 'लोढी' के नाम से पर्व मनाया जाता है। इसमे बच्चे बडों से पैसो के रूप में लोढी मागते हैं और उनसे रेवडी आदि तिलमय मधुर पदार्थ लेकर मिलजुलकर खाते हैं। इसे अगले दिन आनेवाली सक्रान्ति की सज्जा कहा जा सकता है।

यह पर्व आर्यजनों को यह प्रेरणा देता है कि वे अन्धकार से प्रकाश की ओर बढें। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करें। वे धन-ऐश्वर्य से सम्पन्न हों तथा दीन दुखियों की सेवा एव रक्षा करे। उत्तम आहार-विहार से सदा पुष्ट रहें। पारस्परिक व्यवहार मे राग-द्वेष आदि रोगों से रहित होकर परस्पर सदा प्रसन्न रहें। बडों का सम्मान रक्खें तथा छोटों के प्रति स्नेह भाव का परित्याग न करें। ससार में प्रेममय वातावरण का विस्तार करें। **—सुदर्शनदेव आचार्य**

शान्तियज्ञ सम्पन्न

दिनाक २ जनवरी २००१ को गाव नठेडा में श्रीमती मूरतीदेवी धर्मपत्नी श्री सोहनलाल जी ठेकेदार का निधन होगया जिसका शान्तियज्ञ श्री भगवान्सिह जी आर्य कोसली, उपाध्यक्ष वेदप्रचार मण्डल के ब्रह्मत्व में तथा दीनदयाल सुधाकर प्रचारमत्री के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ।

यज्ञ में पधारे सज्जनो ने दिवंगत आत्मा को भावभीनी श्रद्धाजलि दी। मैंने यज्ञ पर आये महानुभावो से निवेदन किया कि हमारे ऋषि-महर्षि बहुत ही दूरदर्शी थे अत मानव वृत्तियो को सात्त्विक रखने के लिए इसके सभी अच्छे-बुरे, शुभाशुभ कर्मों को यज्ञ के साथ जोड दिया है। भारत जैसा पारिवारिक और सामाजिक व्यवहार विश्व की किसी भी सस्कृति मे देखने को भी नहीं मिलेगा इसलिए हमने इस श्रेष्ठतम कर्म के लिए व्यवधान नहीं करना चाहिए।

यज्ञ के ब्रह्मा श्री भगवान्सिह जी आर्य ने शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम को सम्पन्न किया और आगन्तुको को प्रसाद वितरित किया। इत्योम् शम्।

—दीनदयाल सुधाकर प्रचारमत्री, वेदप्रचार जिला मण्डल, रेवाडी
मु०पो० जुड्डी (हरयाणा) १२३३०२

सभा द्वारा निम्नलिखित साहित्य पर विशेष छूट

पुस्तक का नाम	वास्तविक कीमत	रियायती कीमत
पजाब का हिन्दीरक्षा आन्दोलन	१००-००	८०-००
प्रो० शेरसिह एक प्रेरक व्यक्तित्व	२०-००	१०-००
नैतिक शिक्षा भाग-९	४-००	२-००
नैतिक शिक्षा भाग-१०	४-००	२-००
शराबबन्दी शका-समाधान	१-००-	१-००
हैदराबाद सत्याग्रह मे हरयाणा का योगदान	३०-००	१५-००
प० गुरुदत्त विद्यार्थी जीवन-चरित्र	२-५०	२-००
दी वीजडम ऑफ ऋषीज	७२-००	५०-००
सरफरोशी की तमन्ना	२०-००	५-००
आर्यसमाज क्या है ?	१०-००	५-००
आदर्श धातु रूपावली	५-००	३-००
दी वेदाज	१-००	१-००
टेन प्रिंसिपल आफ आर्यसमाज	१-००	१-००
प० जगदेवसिह सिह सिद्धान्ती जीवन चरित्र	१५-००	५-००
श्रीमद्दयानन्द-प्रकाश	५०-००	२५-००

नोट - डाक या वी०पी०पी० द्वारा पुस्तके मगवाने का खर्च स्वय क्रेता का होगा।
—मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक

हिन्दी सत्याग्रही का स्वर्गवास

श्री सूरजभान पुत्र चौ० मामचन्द ग्राम मोरखेडी जिला रोहतक का ८-१-२००१ साय स्वर्गवास होगया। उनकी आयु ८४ वर्ष की थी। वह प्रख्यात वक्ता जानेमाने आर्यनेता श्री राममेहर एडवोकेट के मामा जी थे और उनके साथ हिन्दी सत्याग्रह मे रोहतक व फिरोजपुर जेल मे रहे। गाव मे प० बस्तीराम व पृथ्वीसिह बेधडक आदि के प्रचार कराने मे सहयोग देते रहे। मुसलमानो ने हसनगढ की थली मे एक गाय मार दी थी। पता लगते ही गाव से जवानो को लेकर गाय मारनेवालो को पकड लिया। उनको बुरी तरह से पीटा और उन्हे पकडकर गाव मे ले आए। हसनगढ के मुसलमान, हसनगढ के बनियो को लेकर साथ आए और आगे से गाय न मारने की प्रतिज्ञा करवाई। उनकी स्मृति मे शांतियज्ञ गाव मोरखेडी में १९-१-२००१ को प्रात ८-३० बजे होगा। **—राममेहर एडवोकेट**

जीवन में वैदिक धर्म की व्यावहारिकता

प्राचीनता एव आधुनिकता के विषय में वैदिक धर्म की व्यावहारिकता एव आधुनिक जीवन का तुलनात्मक अध्ययन किया जाये अथवा अन्तरमन में आत्मचिन्तन करें तो आधुनिक जीवन एवं वैदिक धर्म की व्यावहारिकता में कोई खास अन्तर नहीं है। अपितु बाहरी नजर से देखा जाये तो खानपान, वेशभूषा, रहन-सहन में प्राचीन काल की अपेक्षा इस समय आधुनिक युग मे काफी कुछ बदलाव आया है।

यदि हम वैदिक धर्म की व्यावहारिकता का आन्तरिक दृष्टिकोण अपनाकर वर्तमान आधुनिक जीवन के व्यवहार एव अमल में लाये तो वैदिक धर्म की व्यावहारिकता आधुनिक जीवन के जीने में बिल्कुल भी बाधक नहीं है। जैसा कि कहावत भी है कि "जैसी दृष्टि वैसी वृष्टि" अर्थात् जैसी व्यक्ति की सोच होती है वैसे ही व्यक्ति के विचार बनते हैं। व्यक्ति के यदि विचार बढिया हों तो व्यक्ति की जीवनशैली भी अच्छी होती है और यदि व्यक्ति के विचार बढिया न हों तो उसका जीवन स्तर भी बढिया नहीं होसकता। किसी कवि ने बहुत सुन्दर लिखा है कि–

जब उठते हैं विचार तो उठता है आदमी।
जब गिरते हैं विचार तो गिरता है आदमी।।

वैदिक धर्म की व्यावहारिकता क्या है ? यह बहुत ही सोचने और विचाने का विषय है। काश ! हम यह जान पायें कि वैदिक धर्म की व्यावहारिकता का वास्तविक महत्त्व क्या है तो हमें आधुनिक जीवन में वैदिक जीवन पद्धति की व्यावहारिक शैली को बनाने मे कोई कठिनाई नहीं होगी और वर्तमान आधुनिक जीवन में वैदिक धर्म की व्यावहारिकता के आधार पर एक बहुत अच्छा जीवन जीने की शैली मिल सकती है।

आज वैदिक धर्म अथवा उसकी व्यावहारिकता का वास्तविक स्वरूप आम तौर पर लोगो को पता ही नहीं है। सच्चाई यह है कि बहुत थोडे लोग हैं जिन्हें धर्म के विषय में जानकारी है। आज वर्तमान समय में आमतौर पर हर एक व्यक्ति के जो धर्म के विषय मे विचार हैं, वे हिन्दू, मुस्लिम, सिख और ईसाई के रूप हैं, जिनका धर्म के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। ये अलग-अलग कुछ लोगों के मत-पन्थ व समुदाय तो होसकते हैं, परन्तु धर्म नहीं हैं। क्योंकि धर्म तो एक ही होता है, अनेक नहीं। आज धर्म अनेक मानने की वजह से ही हमे वैदिक धर्म के व्यावहारिक जीवन जीने मे मुश्किले पैदा होती हैं। किन्तु जिसे धर्म के सच्चे स्वरूप का ज्ञान है, उसके लिए वैदिक धर्म की व्यावहारिकता एव आधुनिक जीवन परस्पर इस प्रकार सहयोगी होते हैं, जैसे व्यक्ति के दोनों हाथ परस्पर एक दूसरे के लिए सहयोगी होते हैं। वैदिक धर्म एक सनातन आचरण पद्धति है जिसे आज भी अपने जीवन में आधुनिकता के साथ आचरण मे लाने की महती आवश्यकता है। धर्म एक धारण करने की चीज है, जिसे मनुष्य को हर एक काल में धारण करना चाहिए। चाहे वह प्राचीनकाल हो अथवा आधुनिक जीवन का समय हो। यह हर अवस्था में धारण करना चाहिए। जो व्यवहार मुझे अपने लिए पसन्द नहीं है, वह व्यवहार किसी के साथ नहीं करना चाहिए। इसी का नाम धर्म को धारण करना कहलाता है।

हम यदि आधुनिक जीवन मे वैदिक धर्म की व्यावहारिकता सनातन अर्थात् प्राचीन पद्धति को लागू करना चाहते हैं तो किसी को कोई अच्छा मार्ग प्रशस्त करने अथवा उपदेश देने की बजाय वह व्यवहार अथवा आचरण पहले स्वय पर लागू करे या फिर जिसे अच्छा मार्ग बताना है तो पहले उसकी मानसिकता को अच्छे मार्ग में चलने के योग्य बनाना चाहिए। उदाहरण के तौर पर एक नौकर बहुत ही अच्छे आचरणवाला व्यक्ति है। जो अपने रिश्वतखोर, बेईमान, गरीबों पर शोषण करनेवाले मालिक को भी एक अच्छे रास्ते पर चलाने का सपना देखता है और नौकर अपने मालिक को अपना समझकर उसे अच्छी सीख देता है किन्तु मालिक नौकर की अच्छी सीख नहीं सुनना चाहता। बल्कि मालिक यह चाहता है कि नौकर सौ-दो सौ ज्यादा ले ले मगर कोई उपदेश न दे, क्योकि मालिक के मन मे नौकर के प्रति केवल मात्र नौकर की ही भावना है। जबकि नौकर अपने मालिक के प्रति मालिक के अलावा एक अपनत्व भाव भी सजोए हुए है। इस स्थिति में नौकर को चाहिए कि वह अपने मालिक के विचारो मे एक ऐसा परिवर्तन लाए कि मालिक भी अपने नौकर को नौकर के अलावा उसे अपना हितैषी भी मान सके। जब तक दोनों परस्पर एक-दूसरे को अपना नहीं मानेगे तब तक नौकर अपने मालिक को चाहते हुए भी उसे सीख नहीं सिखा सकता। अगर प्रयास करने पर भी अभिमानवश मालिक उसे अपना मानने को तैयार नहीं है तो नौकर को चाहिए कि अपने मालिक को उपदेश अथवा अच्छी सीख देने के बजाय उन बातो को वह स्वय अपने जीवन मे धारण करे।

इस उदाहरण से स्पष्ट होता है कि जैसे मालिक और नौकर का सम्बन्ध एक आधुनिक (सासारिक) जीवन है और दोनो का एक-दूसरे के प्रति इन्सानियत का व्यवहार करना ही एक वैदिक (सनातन) धर्म की व्यावहारिकता है।

अत आधुनिक जीवन को वैदिक धर्म की व्यावहारिकता के साथ समन्वय करदे अथवा वैदिक (सनातन) जीवन पद्धति को वर्तमान जीवन पद्धति के साथ जोडकर जीने का प्रयास करे तो आधुनिक जीवन मे वैदिक धर्म की व्यावहारिकता सार्थक सिद्ध होसकती है।

आचार्य रामसुफल शास्त्री,
वैदिक प्रवक्ता आर्यसमाज हासी (हिसार)

दयानन्दमठ का सोलहवां वैदिक सत्संग समारोह सम्पन्न

रोहतक। आर्यसमाज की छावनी कहे जाने वाले दयानन्दमठ रोहतक का सोलहवा वैदिक सत्सग दिनाक ७-१-२००१ को बडी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस सत्सग के सयोजक श्री सन्तराम आर्य ने बताया कि यह सत्सग सामाजिक कुप्रथाओ, धार्मिक अन्धविश्वासों, छुआछूत, अशिक्षा, अन्याय एव शोषण के बारे में वैदिक धर्म की मान्यताओं का प्रचार करने हेतु चलाया जा रहा है। उन्होने विस्तार से चर्चा करते हुए बताया कि ७ जनवरी रविवार सन् २००१ को प्रात ९ बजे यज्ञ प्रारम्भ हुआ तथा १० बजे सम्पन्न हुआ। यज्ञ के उपरान्त (यज्ञशेष) प्रसाद बाटा गया। इस बार सत्सग का भण्डारा आर्यसाज ग्राम टिटौली की तरफ से किया गया था। प्रसाद के बाटने की शुरुआत श्री दयानन्द शास्त्री व श्री वीरेन्द्र शास्त्री के कर-कमलो से हुई। फिर टिटौली ग्राम की आर्यसमाज की युवा शाखा 'सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्' के प्रमुख कार्यकर्ताओ श्री नरेश कुमार, अजयसिंह, दिनेश कुमार आर्य व नरदेव आदि ने सभी को प्रसाद वितरण किया। इसके बाद १०-३० बजे से भक्ति सगीत प्रारम्भ हुआ। दो छोटी सी बालिकाओ के बाद बहिन दयावती प्राध्यापिका के दो भक्ति रस के गीत हुये। महाशय झावेराम व शेरसिह मकडौली ने 'व्यवस्था को कैसे-कैसे ठीक किया जा सकता है' इस तर्ज पर भजन गाया। फिर युवा विद्वान् गायक सार्वदेशिक आर्ययुवक परिषद् उत्तर प्रदेश शाखा के प्रचार मन्त्री श्री शकर मित्र वेदालकार ने सभी श्रोताओ को मन्त्रमुग्ध सा कर दिया। इसके बाद मा० देवीसिह के भजन तथा फिर ११-०० बजे से १२-०० बजे तक आज के सत्सग के विषय 'धारणा-ध्यान व समाधि' पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यकर्ता प्रधान एव दर्शनो के प्रसिद्ध विद्वान् स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज का व्याख्यान हुआ। स्वामी जी ने सभी लोगो से आह्वान किया कि आज सभी धारणा करके जाये कि आर्यसमाज की विचारधारा के प्रचार-प्रसार हेतु समय देगे। जो भी व्यक्ति जिस भी स्थान पर कार्य कर रहा है वह वहीं समय देना प्रारम्भ करे।

श्री सन्तराम आर्य ने आगे बताया कि इस बार के सत्सग की मुख्य विशेषता यह थी कि २८ दिसम्बर से ६ जनवरी, २००१ तक दस दिवसीय 'ध्यान-योग शिविर' इसी दयानन्द मठ में चलता रहा। इस शिविर की व्यवस्था एव सयोजन का कार्य जहा आचार्य सन्तराम ने सम्भाली, वहीं इसमे प्रशिक्षण एव अध्यक्षता की जिम्मेवारी स्वय स्वामी इन्द्रवेश जी ने सभाली। लगभग पचास पुरुष व महिलाओ ने लगातार कडाके की सर्दी के बावजूद भाग लेकर लाभ उठाया। प्रवचन के बाद १२-३० बजे से १-०० बजे तक सबने मिलकर ऋषि लगर मे भोजन का आनन्द लिया। शान्तिपाठ के बाद समारोह सम्पन्न हुआ।

निवेदक **रविन्द्र कुमार आर्य**, कार्यालय मन्त्री, दयानन्दमठ, रोहतक

सुशीला नैयर नहीं रहीं

नागपुर। देश की पहली महिला मत्री और जानीमानी गाधीवादी नेता सुशीला नैयर का कल वर्धा स्थित उनके आवास पर निधन हो गया। वह ८६ वर्ष की थीं।

बहन जी के नाम से अपनो के बीच लोकप्रिय डॉ० नैयर का स्वास्थ्य कुछ दिनो से खराब चल रहा था। कल उनके स्वास्थ्य मे और गिरावट आयी और रात मे उनका निधन हो गया। डॉ० नैयर कस्तूरबा गाधी हैल्थ सोसाइटी की अध्यक्षा और सेवाग्राम स्थित महात्मा गाधी चिकित्सा विज्ञान सस्थान की निदेशक भी रहीं।

उन्होने 'कस्तूरबा वाइफ ऑफ गाधी', 'सत्याग्रह एट वर्क', 'इण्डिया अवेक्ड प्रिपेयरिग फार स्वराज एण्ड फाइनल फाइट फार फ्रीडम' और 'वनमाला पारिख के साथ हमारा बी ए नवजीवन' नामक पुस्तके भी लिखीं। वह कई चिकित्सकीय सस्थानो और शाति समितियो की प्रतिनिधि थीं।

प्रो० शेरसिंह जी द्वारा शोक संवेदना

अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् के अध्यक्ष प्रो० शेरसिह जी ने नशाबदी परिषद् की पूर्व अध्यक्षा सुशीला नैयर के निधन पर शोक प्रकट करते हुए कहा कि नैयर जी ने सारी आयु समाजसुधार के कार्यो मे लगादी। शराबबन्दी आन्दोलन के लिए उन्होने विशेष भूमिका निभाई। उन्हे भारत में प्रथम महिला मन्त्री बनने का गौरव प्राप्त हुआ है। उनके छोडे गए शेष कार्यो को पूरा करना सच्ची श्रद्धाजलि होगी। –सभामन्त्री

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

आर्य महोत्सवगाव आसन जिला रोहतक (स्व० श्री केवलराम आर्य की १०वीं पुण्यतिथि पर)	२१ जनवरी २००१
आर्यसमाज नेहरू ग्राउड फरीदाबाद	२३ से २८ जनवरी २००१
आर्यसमाज औरगाबाद मित्रोल (फरीदाबाद)	६ से ११ फरवरी २००१
गुरुकुल झज्जर का वार्षिकोत्सव	२४-२५ फरवरी २००१
विशाल आर्य महासम्मेलन सोनीपत	४ मार्च २००१

–**डॉ० सुदर्शनदेव आचार्य**, वेदप्रचाराधिष्ठाता

स्वामी स्वतन्त्रानन्द एक युग-पुरुष

दयानन्दमठ रोहतक। आर्यसमाज की छावनी एव मुख्य गतिविधियो के केन्द्र दयानन्दमठ, रोहतक में आर्यसमाज के क्रान्तिकारी एव वीर संन्यासी स्वतन्त्रानन्द जी का १२३वा जन्मदिवस स्वामी इन्द्रवेश जी की अध्यक्षता मे ७ जनवरी, २००१ रविवार को धूमधाम से मनाया गया। उनका जन्म सम्वत् १९३४ मे पौष मास की पूर्णिम को (तदनुसार सन् १८७७ ई० मे) ग्राम मोही जिला लुधियाना (पजाब) मे सरदार भगवान् सिह के घर हुआ था। वैसे तो जिल लुधियाना ने इतिहास रचा है। लेकिन आर्यसमाज के लिये भी अनेक महापुरुषो को जन्म दिया है। आर्यसमाज के क्रान्तिकारी नेता, स्वतन्त्रता आन्दोलन के अगुआ पजाब केसरी डी ए वी लाहौर व हिसार के प्रमुख प्रवक्ता लाला लाजपत राय, आर्यसमाज के शास्त्रार्थ समर एव आर्य गौरव स्वामी व्रतानन्द जी महराज का जन्म भी लुधियाना मे ही हुआ था। लेकिन आर्यसमाज में जो स्थान स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी ने लिया वह अनुकरणीय एव प्रेरणाप्रद है। स्वामी जी का बचपन का नाम केहरसिह था। केहरसिह का अर्थ है सिहों का सिह। बाद मे सन् १९५७ वि० को फिरोजपुर जिले के पखनड ग्राम मे स्वामी पूर्णानन्द जी से सन्यास की दीक्षा ली। स्वामी जी के पिता सेना के अधिकारी थे उन्होंने उनके लिये नायब तहसीलदार की नौकरी की व्यवस्था करवा दी। लेकिन स्वामी जी ने समाज मान्यताओ के विपरीत जहा पहली सन्तान को शूरवीर होती है ऐसी मान्यता है उन्हे किसी भी अधिकारी व सेनापति बनने की बजाय महर्षि दयानन्द के बताये रास्ते को चुना तथा वैदिक विचारधारा के प्रचार-प्रसार हेतु मठो की स्थापना की जिसमे दयानन्दमठ दीनानगर (गुरदासपुर) पजाब, दयानन्दमठ चम्बा (हिमाचल प्रदेश) तथा दयानन्दमठ रोहतक (हरयाणा) प्रमुख हैं। अब तीनो केन्द्र दीनानगर स्वामी सर्वानन्द, चम्बा मे स्वामी सुमेधानन्द जी तथा दयानन्दमठ रोहतक मे स्वामी इन्द्रवेश जी पीठासीन होकर इन केन्द्रो का सचालन कर रहे हैं। इनकी जन्म शताब्दी २२, २३ अक्तूबर सन् १९७७ ई० पैतृक गाव मोही मे मनाई गई थी। हैदराबाद जैसे आन्दोलनो के सर्वमान्य नेता के रूप मे कार्य किया। स्वामी जी निर्भीक एव लौहपुरुष थे। उनका देहान्त ३-४-१९५५ को ७८ वर्ष की आयु मे हैदराबाद मे हुआ। जब तक दयानन्दमठ जैसी सस्थाये आर्यसमाज के प्रचार का केन्द्र रहेगी स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी को हमेशा याद किया जाता रहेगा।

वैदिक काल में नारी

(ले० विश्वम्भरनाथ अरोडा, आर्यसमाज कृष्णनगर (दिल्ली)

वैदिक युग मे लोग धार्मिक प्रवृत्ति के थे। ईश्वरीय आदेशानुसार सन्ध्या, यज्ञ, तप, तपस्या, दान करते थे। वे ईश्वर की आज्ञा मे ही चलते रहे और इसलिए स्त्रियो पर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं था। पुत्रियो का खानपान, शिक्षा, विवाह स्वतन्त्र पुत्रो की भाति ही था। इस बारे मे जो वेदमाता की आज्ञाए थीं, उन्हीं का पालन होता था। परिणामत जहा बडे-बडे ऋषि-मुनि और विद्वान् हुए वहा अनेक विदुषिया (गार्गी, केतकी, मैत्रियी, कौसल्या, सुमित्रा केकयी, गान्धारी, कुंती आदि) भी हुई। स्त्रिया उस काल मे अपनी योग्यता का पूर्ण विकास करने मे बन्धनमुक्त थीं। उन पर वही सामाजिक प्रतिबन्ध थे जो मनुष्य पर थे। न तो उस समय परदा था न जहेज और न ही सती आदि प्रथाए। विधवाए नरकीय जीवन बिताने पर विवश नहीं की जाती थीं।

महर्षि दयानन्द ने 'सत्यार्थप्रकाश' के तीसरे समुल्लास मे लिखा है कि द्विज अपने घरो मे लडको का यज्ञोपवीत और कन्याओ का भी यथायोग्य सस्कार करके अपनी-अपनी पाठशाला मे भेज दे। विद्या पढाने का स्थान एकान्त देश मे होना चाहिए और लडको और लडकियों की पाठशाला दो कोस एक दूसरे से दूर होने चाहिए। सो सभी बच्चो को शिक्षित करना आवश्यक था। शिक्षा पूरी होने पर कन्या को स्वयवर रीति द्वारा अपना पति चुनने की आजादी थी। देखिए–

पत्नीवतो ग्रहाँ२ऽऋद्ध्यासम्। अह परस्तादहमवस्ताद्यदन्तरिक्ष तदु मे पिताभूत्।

अह७सूर्य्यमुभयतो ददर्शाहं देवाना परम गुहा यत्। यजु० ८/९

स्त्री पुरुष विवाह से पहले परस्पर एक दूसरे की परीक्षा कर लें और अपने समान गुण-कर्म-स्वभाव रूप बल अरोग्य पुरुषार्थ और विद्यायुक्त होकर स्वयवर विधि से विवाह करे।

उत्थाय बृहती भवोदु तिष्ठ ध्रुवा त्वम्।

मित्रैता तऽउखा परिददाम्यभित्याऽएषा मा भेदि। यजु० ११/६४

कन्या और वर एक दूसरे की परीक्षा कर ले। दोनो का जब विवाह का निश्चय होवे तभी मात-पिता और आचार्य आदि इन दोनो का विवाह करे। दोनो आपस मे भेद व व्यभिचार कभी न करे। अपनी स्त्री के नियम से पुरुष और पतिव्रता स्त्री होकर मिलकर चलें।

यथेदं भूम्या अधि तृणं वातो मथायति। एवा मथ्नामि ते मनो यथा मा कामिनी अस यथा मन्नापगा असः।। अथर्व० २/३०/१

विद्या समाप्ति पर ब्रह्मचारी अपने समान गुणवती कन्या को ढूंढे और कन्या भी अपने सदृश वर ढूढे। इस प्रकार विवाह होने से वियोग न होकर आपस में प्रेम बढता और आनन्द मिलता है।

ऊपर तीन वेदमन्त्र नमूने के तौर पर दिए हैं जिनसे पता लगता है कि वैदिक काल मे कन्याए अपने पति चुनने मे पूर्ण स्वतन्त्र थी। उन्हें कोई बेमेल, बेजोड़ अथवा किसी के एहसान के बदले विवाह करने पर बाध्य नहीं कर सकता था। वेदों में और अनेक मन्त्र ऐसे हैं परन्तु पत्रिकाओं में बडा लेख छापने हेतु स्थान सीमित है।

अथर्ववेद ७/३७/१ द्वारा वर वधू दोनों विवाह समय प्रतिज्ञा करते थे–

अभि त्वा मनुजातेन दधामि मम वाससा।
यथासौ मम केवलो नान्यासा कीर्तयाश्चन।।

विवाह में विद्वानो के बीच वस्त्र का गठी बंधन करके वर और वधू दृढ प्रतिज्ञा करे क पत्नी प्रतिव्रता और पति पत्नीव्रता होकर गृहस्थ आश्रम को प्रीतिपूर्वक निभावें।

विवाहोपरान्त पतिकुल मे कन्या का भव्य स्वागत होने का प्रावधान था। अथर्ववेद का सातवा, चौदहवा और अठारहवा कण्ड इस बारे मे और सुखी गृहस्थ हेतु पढने योग्य हैं।

विवाह के बाद भी वेदमाता ने जैसा कर्त्तव्य पत्नी का बताया वैसा पति का भी बताया। उदाहरण देखिए–

यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयते नः। उशतीरिव मातरः।। यजु० ११/५१

स्त्रियो को चाहिए कि अपने पतियो की प्रीतिपूर्वक सेवा करें। ऐसे ही पति भी अपनी स्त्रियो की सेवा करे और देखे–

शर्म वर्मैतदा हरास्यै नार्या उपस्तरे।

सिनीवालि प्रजायता भगस्य सुमतौ असत्। (अथर्व ११/२/२१)

पति और अन्य सब लोग वधू को गृहकार्य में सदा सहयोग देवे, जैसे योद्धा को कवच रणक्षेत्र मे सहाय देता है और सब पुरुष उस वधू के वीर ईश्वरभक्त सन्तान से सुख पावें। आप स्वय बताए कि कहीं भी स्त्री पुरुष की नाबराबरी की बात है क्या ? पति की अकाल मृत्यु पर शुद्र स्त्रिया दूसरा विवाह कर सकती थी और वैश्य, क्षत्रिय तथा ब्राह्मण स्त्रियां नियोग विधि (जो कि विवाह की भांति ही पवित्र बन्धन था और समाज द्वारा अनुमोदित था) से सन्तानोत्पत्ति करने या न करने मे स्वतन्त्र थी। याद रहे कर्ण, युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन आदि भी नियोग विधि से उत्पन्न हुए थे।

स्पष्ट है, प्रभु ने और वेदमाता ने स्त्री पुरुष को एक समान समझा। जब तक इन आदर्शो का पालन होता रहा तब तक उन्नति हुई और सुख, शाति व कल्याण हुआ।

भारत के मूल निवासी आर्य

दैनिक भास्कर के ६ नवबर के अक में 'घटनाचक्र' स्तम्भ मे 'आर्य हिन्दू का भारत का मूल निवासी बताना गलत' शीर्षक से श्री कमलेश्वर का लेख दृष्टिगोचर हुआ जिसमे लेखक महोदय का कथन है कि यद्यपि विदेशी लेखक तो अपने स्वार्थवश यह लिखते हैं कि "आर्य मध्य एशिया से भारत आये तथा आर्यो ने हडप्पा सस्कृति का उन्मूलन कर यहा अपना अधिकार कर लिया।" आपकी मान्यता है कि आर्य बाहर से तो आए थे किन्तु उन्होने हडप्पा पर आक्रमण नहीं किया तथा आपने बार-बार यही लिखा है कि आर्य बाहर से आये थे तथा मनघडन्त धारणा को सिद्ध करने के लिये श्री लोकमान्य तिलक, डा० सम्पूर्णानन्द तथा डा० राजाराम को कुतर्की बताया। जबकि आपका लेख ही कुतर्को तथा पूर्वाग्रहो का पुलिन्दामात्र है। आपने बार-बार लिखा है कि "आर्य बाहर से आये थे तथा उसे सघ परिवारवाले कैसे झूठा सिद्ध करेगे।" यद्यपि मेरा सघ से कोई भी सम्बन्ध नहीं है, फिर भी आप ही कहा सिद्ध कर सके हैं कि आर्य विदेशी थे। आपने कोई ऐतिहासिक दस्तावेज, शिलालेख तथा सिक्का, ताम्रपत्र या अन्य कोई भी ठोस प्रमाण इस धारणा को सिद्ध करने मे प्रस्तुत नहीं किया। हा दो-एक तर्क अवश्य दिए हैं, जिनके खोखलेपन को साधारण व्यक्ति भी जान सकता है।

(१) आपने लिखा—"आर्य कबीले कृषीधर्मी थे, खेत को जोतने के लिये उनके पास घोडे थे।" आप बनते तो इतिहासज्ञ हैं, किन्तु आपको इस साधारणसी व्यावहारिक बात का भी ज्ञान नहीं कि हल मे बैल जोते जाते हैं तथा घोडो से सवारी की जाती है। क्योंकि बैल के कधे शक्तिशाली होते हैं तथा घोडे की पीठ शक्तिशाली होती है तथा उपरोक्त आर्यो के पास आज की तरह बैल तथा घोडे दोनो ही थे।

(२) आपका कथन है कि आर्यो का हडप्पा पर आक्रमण का सिद्धान्त भी गलत है तथा आपने अपनी बात को सिद्ध करने के लिये यह तर्क दिया है कि "यूरोपीय परिवार की भाषाए (सस्कृत, लैटिन ग्रीक आदि) यह स्थापित करती हैं कि इन भाषाओ का उद्गम स्थल एक है।" उल्टा चोर कोतवाल को डाटै।" श्रीमान् जी इससे यह कैसे सिद्ध हुआ कि आर्य बाहर से आये ? इससे तो उलटा यह सिद्ध हुआ कि सस्कृत सबसे पुरानी भाषा है, लैटिन आदि भाषाए इसी से निकली हैं तथा आर्यो ने इराक आदि में तथा रूस आदि में पहुचकर सस्कृत तथा आर्यसभ्यता का प्रचार किया।

(३) मध्य एशिया तथा पूर्वी यूरोप का प्रमाण आगे लिखते हैं कि इराक मे आदि मानव कबीले का उदय हुआ तथा यह आर्य ही थे तथा यहीं से ये कबीले रूस तथा मिश्र को गए तथा एक कबीला बोलन तथा खैबर दर्रे को पार करता हुआ सिन्धु प्रदेश मे जाकर, सिन्धु घाटी मे बस गया। यहा आपकी स्थापना आपके लेख से ही कटती है। क्योंकि एक स्थान पर तो आप लिखते हैं कि इराक मे सर्वप्रथम जिस कबीले का उदय हुआ, वे आर्य थे तथा वे इराक से हडप्पा मे आए उस समय यहा नागर सस्कृति विकसित थी। अब आप बताइए कि आर्यो का कबीला आदिम था या हडप्पावालो का ? अत आपका कथन पागल प्रलाप के समान है।

आपने लिखा है कि आर्यो के बाहर से आने के ऐतिहासिक प्रमाण भी मिलते हैं, किन्तु आपने अपने लेख में शिलालेख आदि का एक भी ठोस प्रमाण नहीं दिया तथा फिर भी अपनी काल्पनिक धारणा को ऐतिहासिक प्रमाणो से युक्त लिखते जारहे हैं। जबकि यह धारणा अग्रेजो द्वारा प्रचारित है। क्या आपके किसी पूर्वज ने ही आर्यो को बाहर से आते हुये देखा या आपके पास कुछ ऐसे चित्रादि सग्रहीत हैं ?

(४) आगे लेख मे आपने फिर सघ परिवार का प्रलाप करते हुए लिखा कि इन्होने बैल की मूर्ति के टूटे अधोभाग को घोडा बताकर यह सिद्ध करने की कोशिश की है कि "आर्य भारत के मूल निवासी थे।" श्रीमान् जी इस बात से कोई अन्तर नहीं पडता कि यह घोडे की मूर्ति है या बैल की। क्योंकि घोडे तथा बैल तो आर्य अनार्य सभी पाल सकते हैं। क्योंकि ये दोनो ही जीवनोपयोगी हैं तथा इससे यह बात बिल्कुल भी सिद्ध नहीं होती कि आर्य बाहर से आये थे।

(५) आपने भारतीय विद्वान् श्री राजाराम तथा श्री एन झा को मनोरोगी लिखा है तथा विदेशी लेखक माईकेल विटजेल तया स्टीव फार्मर को विद्वान् लिखा है। इससे सिद्ध होता है कि आपकी आखो पर अग्रेजों की गुलामी का चश्मा चढा हुआ है या आप विदेशी कम्युनिस्टो या अग्रेजो के टुकडो पर पल रहे हैं या मनोरोगी हैं।

(६) आप बार-बार सघ परिवार का प्रलाप कर रहे हैं। आपको ज्ञात होना चाहिए कि "आर्य भारत के मूल निवासी थे"। यह स्थापना सर्वप्रथम स्वनामधन्य महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सघ के जन्म से बहुत वर्ष पहले की थी तथा उनकी स्थापना को कोई भी देशी-विदेशी लेखक खण्डित नहीं कर सका है। यदि आप दम्भ तथा लोभ को छोड़कर सच्चाई जानना चाहते हैं तो वह यह है कि "आर्य भारत के मूल निवासी हैं, कहीं बाहर से नहीं आये थे। आर्यान (ईरान) शब्द से यह बिल्कुल सिद्ध नहीं होता कि आर्य भारत मे मध्य एशिया से आये थे। उल्टा आर्य भारत से ईरान आदि देशो मे गए थे तथा वैदिक सस्कृति का प्रचार किया।

(७) आपने लिखा है कि "सघवाले हडप्पा मे प्राप्त नर्तकी की मूर्ति का सम्बन्ध आर्यसस्कृति से कैसे जोडेगे।' आपको ज्ञात होना चाहिए कि आर्यो के एक उपवेद का नाम गन्धर्ववेद है तथा गन्धर्व शब्द का अर्थ है गान तथा शास्त्रो मे गाने की परिभाषा **"वाद्यम् गानम् च नृत्यम् च त्रय सगीतमुच्यते"**। अर्थात् बजाना गाना तथा नृत्य तीनो मिलकर सगीत कहलाता है। आपने नर्तकी की मूर्ति को वेश्या माना है। जबकि नृत्य एक वैदिक कला है। अत आपका यह निष्कर्ष आपके मनोरोगी होने का पक्का प्रमाण है।

वैसे भी आर्यावर्त भारत का सबसे पुराना नाम था, इससे भी सिद्ध होता है कि आर्य ही यहा के मूल निवासी थे।

ईश्वर आपको सद्बुद्धि दे जिससे आप सत्य को स्वीकार कर सके तथा आपको इस प्रमत्तता से मुक्ति मिले।

—आनन्ददेव शास्त्री, प्राध्यापक आर्यनगर, झज्जर

शोक समाचार

(१) बहुत दु खी हृदय के साथ सूचित किया जाता है कि आर्यसमाज के युवा सन्यासी दयानन्दमठ दीनानगर के आचार्य पूज्यपाद स्वामी सदानन्द जी सरस्वती (ब्रह्मचारी जगदीश) की माता श्रीमती नानडी देवी जी का देहावसान १७-१२-२००० को हुआ। २३-१२-२००० को शनिवार के दिन दयानन्दमठ दीनानगर मे शोकसभा मनाई गई।

उनकी आत्मा की शान्तिके लिए यहा के ब्रह्मचारियों व अन्य सदस्यो ने तीन बार गायत्री महामत्र का उच्चारण करके पाच मिनट का मौनव्रत रखा तत्पश्चात् शान्तिपाठ के साथ सभा समाप्त हुई।

—सगतराम, मत्री वाक् वर्धनी सभा

(२) श्री भूपेन्द्रसिंह हुड्डा विधायक एव अध्यक्ष हरयाणा प्रदेश काग्रेस (आई) के बडे भाई कैप्टेन प्रतापसिह हुड्डा का गत दिनो दिल्ली मे स्वर्गवास होगया। वे आर्यसमाजी परिवार से सम्बन्ध रखते थे। १९६५ के भारत-पाक युद्ध मे उन्होने सक्रिय भाग लिया था। इनके पिता चौ० रणवीरसिह जी के हरयाणा सरकार मे मत्री होते हुये भी वे देश की सेवा के लिए सेवा मे भर्ती हुए।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा कैप्टेन प्रतापसिह के इस असामाजिक एव दु खद निधन पर शोकग्रस्त परिवार के प्रति हार्दिक सवेदना एव शोक प्रकट करती है तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि वह दिवगत आत्मा को सद्गति एव दु खी परिवार को इस असीम दु ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—आचार्य यशपाल, सोनीपत
अन्तरंग सदस्य आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

भजन (आर्यो का राज्य हो तो क्या हो ?)

टेक—यह सारी बिमारी है आर्यो के राज्य बिना।

आर्यो का राज्य हो तो कोई ना बिमारी हो।
राजा प्रजा रहे प्रेम से सुखी दुनिया सारी हो।
आज दु खी नर-नारी है आर्यो के राज्य बिना।।१।।

गुरुकुलो मे शिक्षा पावे पढकर सदाचारी हो।
ब्रह्मचर्य का पालन करे, बलकारी बलधारी हो।
यह नामर्दी सारी है आर्यो के राज्य बिना।।२।।

नशे विषय से दूर रहे शुद्ध शाकाहारी हो।
सन्ध्या-हवन करे प्रतिदिन, सच्चे ओ३म् पुजारी हो।
ये शराबी मासाहारी हैं, आर्यो के राज्य बिना।।३।।

दूध दही घी मक्खन खावे, सच्चे परोपकारी हो।
स्त्री-व्रत पुरुष होवे और पतिव्रता नारी हो।
ये गुण्डे व्यभिचारी हैं, आर्यो के राज्य बिना।।४।।

एक ईश्वर के भक्त बने सब सारी दूर ख्वारी हो।
मजहबी झगडे सब मिट जावे मोक्ष के अधिकारी हो।
ठग पण्डे पोप पुजारी हैं, आर्यो के राज्य बिना।।५।।

गोमाता के भक्त बने यहा दिलीप कृष्णमुरारी हो।
यहा राजा हो खुद गौ चरावे नदी दूध की जारी हो।
यहा चल रही आज कटोरी हैं, आर्यो के राज्य बिना।।६।।

विद्वानो का सत्कार हो, ऋषि-मुनि वेदाचारी हो।
जप तप धर्म कर्म को जाने, सच्चे ऋषि तपधारी हो।
ये मोडे मठधारी हैं, आर्यो के राज्य बिना।।७।।

आर्यो का राज्य होवे तो सच्चे न्यायकारी हो।
मनु का कानून भावे दुष्टो का दण्ड भारी हो।
ये डाकू चोर ज्वारी हैं, आर्यो के राज्य बिना।।८।।

भोजन भाव वेष और भाषा ये सब एकसारी हो।
नरनारी सब कमाके खावे, ना कोई बेरोजगारी हो।
ये चौपड ताश खिलारी हैं, आर्यो के राज्य बिना।।९।।

ईश्वरसिह की कथा भजन हो रगत न्यारी-न्यारी हो।
'नित्यानन्द' प्रचार करे, समझदार नर-नारी हो।
यह नकली प्रचारी हैं, आर्यो के राज्य बिना।।१०।।

—स्वामी नित्यानन्द के शिष्य मोहब्बतसिह आर्य,
आर्यनगर वाया-बाढडा जिला [illegible]

पं० आशाराम जी आर्य का महाप्रयाण

पं० आशाराम जी आर्य

आर्यसमाज आर्यनगर के पूर्व प्रधान प० आशाराम जी आर्य का दिनाक ११-१२-२००० (सोमवार) को ७६ वर्ष की आयु मे निधन होगया। वे लगभग दो-ढाई वर्ष कैंसर जैसी कष्टदायी बिमारी से पीडित रहे, परन्तु ईश्वर-इच्छा शिरोधार्य मानकर धैर्यपूर्वक कष्ट सहा और अन्त तक परमात्मा मे विश्वास बनाए रखा। उनका अन्तिम सस्कार पूर्ण वैदिक रीति से श्री आजादसिह जी 'मुनि' व गुरुकुल आर्यनगर के ब्रह्मचारियो ने करवाया।

उनका जीवन हम सबके लिए आदर्श व प्रेरणादायी था। बचपन मे ही उन्होने महाशय दलुराम जी व पूज्य स्वामी योगानद जी के सान्निध्य मे रहकर आर्यसमाज के सिद्धान्तो को अपना लिया था। महर्षि दयानन्द जी महाराज मे उनकी अगाध श्रद्धा थी। वे सारी आयु ऋषि ग्रन्थो व अन्य आर्षग्रन्थो का स्वाध्याय करते रहे। उन दिनो जब महाशय दलुराम जी गाव मे आर्यसमाज का प्रचार करवाया करते थे, तो आप उन्हे कन्धे से कन्धा मिलाकर सहयोग करते थे। कई बार विद्वानो तथा भजनोपदेशको को बुलाने के लिए आप स्वय दूर-दूर तक जाया करते थे। एक बार तो पूज्य स्वामी भीष्म जी (घरोडावाले) को उत्सव मे बुलाने के लिए आपको बहुत लम्बी यात्रा करनी पडी, यात्रा की तकलीफो के बावजूद उन्हे प्रचार की धुन सवार रहती थी।

गाव के आर्यसमाज मन्दिर को जब पक्का बनवाया जारहा था, तो चिनाई का लगभग सारा कार्य उन्होने स्वय किया, मन्दिर के मुख्य द्वार पर फूल-पत्तियो के डिजाइन आज भी उनकी गाथा गाते हैं, उनके हाथो मे वास्तुनिर्माण की ईश्वरप्रदत्त अद्भुत कारीगरी विद्यमान थी। गुरुकुल आर्यनगर के कमरो के निर्माण में भी उन्होने प्रारम्भ मे स्वामी देवानन्द जी के साथ बहुत कार्य किया।

सन् १९७८-७९ के लगभग जब गाव मे आर्यसमाज मन्दिर की गतिविधिया ठप्प पडी थीं, तब उन्होने गणमान्य व्यक्तियो से सलाह करके साप्ताहिक रविवारीय यज्ञ का कार्य किया। घर-घर से घी इकट्ठा करके तथा स्वय सामग्री व समिधाओ का इन्तजाम करके भगत नन्दराम जी व अन्य सहयोगियो को व बच्चो को साथ लेकर उन्होने बहुत वर्षो तक इस कार्य का सचालन किया। वे दैनिक सन्ध्या नियम से प्रात साय दोनो समय करते थे। काफी लम्बे समय तक सायकालीन सन्ध्या उन्होने आर्यसमाज मन्दिर मे बच्चो को सिखाई। उन दिनो घरो मे भी यज्ञ-हवन व पारिवारिक सत्सग कार्यक्रम चलाया। उत्सव को दौरान जो दान-चन्दा बचता था तथा अन्नसग्रह आदि करके आर्यसमाज मन्दिर के लिए उन्होने लाउड स्पीकर सैट, दो मजबूत तख्त, चारपाई बिस्तर, दरी-फर्श व सदूक आदि की व्यवस्था की। वे आय-व्यय का एक-एक पैसे का सही हिसाब रखते थे तथा आर्यसमाज के पैसे का सदुपयोग का बहुत ध्यान रखते थे। पूज्य प० आशाराम जी वर्षो तक आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा के प्रतिनिधि चुने जाते रहे।

आर्यसमाज के सिद्धान्तो पर उनकी अटूट आस्था थी, देश और समाज मे व्याप्त आडम्बर, धार्मिक प्रदूषण व बुराइयो से वे बहुत दु खी होते थे। मूर्तिपूजा के खण्डन मे बहुत दिलचस्पी लेते थे। एक बार तो गाव के पौराणिक मन्दिर के 'मूर्ति-प्राणप्रतिष्ठा समारोह' मे वे मूर्तिपूजा खण्डन के लिए शास्त्रार्थ के लिए खडे होगए थे।

उनके निधन से आर्यसमाज का एक देदीप्यमान सितारा अस्त होगया है। परमपिता परमात्मा दिवगत आत्मा को शान्ति और सद्गति प्रदान करे तथा शोकसतप्त परिवार को उनके वियोग का असहाय दु ख सहन करने की शक्ति के साथ उनमे आर्यसमाज और ऋषि की मान्यताओ के प्रति आस्थावान् बनाए रखे।

—**सीताराम आर्य,** सहमत्री आर्यसमाज आर्यनगर, जिला हिसार (हरयाणा)

वैदिक सत्संग एवं यज्ञ सम्पन्न

दिनाक ३१-१२-२००० को योगस्थली आश्रम महेन्द्रगढ में स्वामी शरणानन्द जी दडोली की अध्यक्षता मे वैदिक सत्सग एव यज्ञ का आयोजन किया गया।

यज्ञ का कार्य आचार्य शिवकुमार जी, गुरुकुल दडौली तथा प० इन्द्रमुनि जी आर्य पुरोहित धर्मप्रचार मन्त्री यतिमण्डल दक्षिणी हरयाणा ने करवाया।

यजमानो का स्थान प० जगदेव आर्य ने अपनी पत्नी सुनीता आर्या ग्राम बूढवाल के साथ ग्रहण किया यजमानो के अतिरिक्त १० पुरुषो को यज्ञोपवीत धारण करवाये।

अन्त मे स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती प्रधान यतिमण्डल दक्षिणी हरयाणा ने सभी आगन्तुको को सम्बोधित करते हुये बताया कि योगस्थली आश्रम में प्रत्येक मास के अन्तिम रविवार को जो वैदिक सत्सग की प्रथा चालू की है, वह आर्यसमाज के सिद्धान्तों की रक्षा करने के उद्देश्य से रखी गई है, जब आप सभी समय निकालकर तथा किराया खर्च करके यहा आते हैं, उसके लिए आपका धन्यवाद किया जाता है तथा प्रार्थना की जाती है कि यहा से प्रत्येक् बार आप कुछ सीखकर जाया करे और अपने अन्दर जो भी कोई दोष हो तो उसे त्याग कर जाया करे।

यहा उच्चकोटि के विद्वान् आते हैं, उनके अपनी शकाओ का समाधान भी कर लिया करे तथा घर मे प्रतिदिन सत्यार्थप्रकाश के स्वाध्याय से जीवन के वास्तविक लक्ष्य का ज्ञान प्राप्त होता है।

अन्त मे १०० रोगियों का उचित निदान करके स्वामी जी ने नि शुल्क दवाई वितरण की और प्रसाद वितरण किया।

—**मास्टर सुरेन्द्र आर्य,** कोषाध्यक्ष
आर्यवीर दल, महेन्द्रगढ

गृहप्रवेश यज्ञ

दिनाक ३०-१२-२००० को ग्राम जैनाबाद मे श्री रामकुमार आर्य के निवास स्थान पर गृहप्रवेश के लिए स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती प्रधान यतिमण्डल दक्षिणी हरयाणा की अध्यक्षता मे यज्ञ का आयोजन किया गया।

यज्ञ का कार्य प० इन्द्रमुनि जी आर्य पुरोहित धर्मप्रचारमत्री यतिमण्डल दक्षिणी हरयाणा तथा मास्टर वेदप्रकाश आर्य मण्डलपति आर्य वीर दल महेन्द्रगढ ने करवाया।

यजमानों का स्थान श्री रामकुमार आर्य ने अपनी पत्नी श्रीमती सुनीता देवी आर्या के साथ ग्रहण किया। यजमानों को यज्ञोपवीत धारण करवाये गये।

यज्ञ के पश्चात् स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती ने सबको सम्बोधित करते हुए बताया, प्रत्येक गृहस्थी को हमारे ऋषियो की महान् देन सस्कारविधि को अपनाना चाहिये, तर्कभाषा मे लिखा है—**सस्कारो हि गुणान्तराध्यानमुच्यते।** जिस प्रकार सुनार सोने को भट्ठी मे डालकर बार-बार पकाने से सोने को दोष रहित करके कुन्दन बना लेता है, इसी भाति मनुष्य को बचपन से ही सस्कारो की भट्ठी मे डालकर मानव का निर्माण किया जाता है, इन सस्कारो को ही हम कल्प कहते हैं, जो वेद के छ अगो मे दूसरा अग है। जैसे सस्कारविधि महर्षि दयानन्द जी द्वारा रचित कल्पज्ञान की पूरी शिक्षा देती है।

आज देश में लूटपाट, बलात्कार, हत्यायें तथा आत्महत्याये, ईर्ष्या-द्वेष अथवा भोगो के प्रति अति लालसा ने अशान्ति और विप्लव का ताण्डव नचा दिया है। यह सब हमारी सस्कार पद्धति को भुलाने से ही नव पीढी मे कुसस्कार जागृत हुये हैं, जब तक सस्कार पद्धति को नहीं अपनायेंगे, तब तक हमारा कल्याण नहीं होसकता।

अन्त मे, श्री रामकुमार जी खोला पूर्व डी एस पी ने सभी आगन्तुको का धन्यवाद किया और प्रसाद वितरण किया तथा ५०-०० रुपये आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को दानस्वरूप दिये।

—**रामनिवास आर्य,**
मन्त्री आर्यसमाज डहीना

शोक समाचार

आर्यसमाज गगायचा अहीर बीकानेर के सस्थापक म० हीरालाल के विशेष सहयोगी, आर्यसमाज के प्रचारक कविरत्न महाशय हट्टीसिह का स्वर्गवास दिनाक ३१ दिसम्बर २००० को होगया है। अन्तिम संस्कार गुरुकुल किसनगढ घासेडा के महात्मा धर्मवीर जी, आचार्य जी, ब्रह्मचारियों व आर्यविद्वानों द्वारा किया गया जिसमे इलाके व गाव के सैकडों लोग उपस्थित थे।

श्रद्धाजलि सभा व शान्तियज्ञ महादेव, जगदेव के निवास स्थान ग्राम गगायचा अहीर पर १२ जनवरी २००१ को आयोजित की गई।

—**मा० दयाराम आर्य,** मन्त्री आर्यसमाज गगायचा अहीर बीकानेर (रेवाडी)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ४६८७४, ५७७७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ४०७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ दूरभाष १, १६, ०८, ५३, १०१
पंजीकरणसंख्या टैक/एच.आर./४९/रोहतक/९९ ☎ ०१२६२ -४०७२२

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र रोहतक

प्रधानसम्पादक : प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक :- डा० सुदर्शनदेव आचार्य

वर्ष २८ अंक ६ २१ जनवरी, २००१ वार्षिक शुल्क ६०) आजीवन शुल्क ६००) विदेश में १० पौंड एक प्रति १-२५

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा की बैठक के महत्तवपूर्ण निश्चय

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरग सभा की बैठक दिनाक ११ जनवरी २००१ को सभाप्रधान स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में प्रात १०-३० बजे सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक में हुई। इस बैठक में मुख्य रूप से स्वामी इन्द्रवेश जी पूर्व सासद एव सभा कार्यकर्ता प्रधान, प्रो० शेरसिह जी पूर्व रक्षाराज्यमत्री, चौ० सूबेसिह जी सभा उपप्रधान पूर्व एस०डी०एम०, स्वामी सुमेधानन्द जी कार्यकर्ता प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली आदि सभा के अन्तरग सदस्यो एव विशेष आमन्त्रित सदस्यो ने भाग लिया। इस बैठक मे निम्नलिखित निश्चय किये गये–

१ आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक साधारण अधिवेशन दिनाक १८ मार्च २००१ को गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद मे होगा इसमे हरयाणा मे वेदप्रचार के कार्यक्रम को प्रभावशाली बनाने तथा अन्य समस्याओं के समाधान पर विचार किया जायेगा।

२ प० विश्वामित्र आर्य एव श्री शिवचन्द आर्य प्रचारक की अस्थाई नियुक्तिया स्वीकार की गई।

३ गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद का वार्षिक उत्सव १७-१८ मार्च २००१ को विशाल स्तर पर मनाया जाएगा। इससे पूर्व गुरुकुल की वर्तमान समस्याओं का समाधान करने का यत्न किया जावेगा और उत्सव में अधिक से अधिक उपस्थिति करने के लिए गुरुकुल के चारो ओर के ग्रामो मे यज्ञ तथा प्रचार किया जायेगा।

४ मुम्बई मे अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन २३ से २६ मार्च २००१ तक स्वामी ओमानन्द जी की अध्यक्षता मे धूमधाम से मनाया जाएगा। इसमे हरयाणा की आर्यसमाजो को अधिक से अधिक सख्या में पहुंचने का आह्वान किया गया तथा तैयारी के लिए सभा की ओर से ११ हजार धनराशि भेजी जावेगी। मुम्बई मे जाने तथा वापिस आने के लिए दिल्ली से स्पेशल रेल की व्यवस्था की जावेगी। हरयाणावासी जो इस महासम्मेलन में रेल द्वारा जाने के इच्छुक हों, वे अपने नाम पते (यदि फोन हो तो उसका नम्बर) सहित सभा कार्यालय सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक (फोन ४०७२२) के पते पर शीघ्र भेज देवें, जिससे उनकी सीटों का आरक्षण समय पर करवाया जासके।

५ सभा कार्यालय सिद्धान्ती भवन के साथ सभा की ओर से एक विशाल हाल बनाया जायेगा जिसमें हरयाणा के सभी आर्यसमाज के बलिदानियों के चित्र विवरण के साथ लगाये जावेंगे। इसी हाल में वैदिक पुस्तकालय की स्थापना की जावेगी।

सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामंत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से पानी के लिए आन्दोलन की तैयारी

रोहतक दिनाक ११-१-२००१ को सतलुज-यमुना लिक नहर नदी जलविवाद के सम्बन्ध में स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अध्यक्षता मे दोपहर बाद २ बजे सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक मे बैठक हुई। इस बैठक मे मुख्य रूप से सभा कार्यकर्ता प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी पूर्व सासद, प्रो० शेरसिह जी पूर्व रक्षा राज्यमंत्री, स्वामी सुमेधानन्द जी कार्यकर्ता प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली, श्री ओमप्रकाश बेरी पूर्व विधायक, राष्ट्रीय लोकदल हरयाणा के प्रदेश अध्यक्ष श्री बलबीरसिह ग्रेवाल, श्री हीरानन्द आर्य पूर्वमंत्री, श्री जगदीशराय कौशिक एडवोकेट हरयाणा निर्माण मोर्चा बहादुरगढ आदि अनेक प्रमुख आर्यनेता शामिल हुए।

बैठक मे प्रोफेसर शेरसिह ने प्रस्ताव रखा कि आर्यसमाज द्वारा चलाये जानेवाले आदोलन की तैयारी हेतु दक्षिणी हरयाणा के आठों जिला मुख्यालयों पर धरने देने एव प्रदर्शन करने चाहिए। इसके बाद भी सरकार कोई पग न उठाये तो हमें हरयाणा से पजाब जानेवाली जी०टी० रोड और रेलमार्ग रोको आदोलन करना चाहिए। बैठक मे दक्षिणी हरयाणा को पानी न मिलने पर भी चिन्ता प्रकट की गई और कहा गया कि दक्षिणी हरयाणा के हिस्से का १८ लाख एकड घनफुट पानी दक्षिण हरयाणा को मिलना ही चाहिए। उन्होने स्पष्ट करते हुए कहा कि हमारी लडाई भारत तथा पजाब दोनो सरकारो के साथ है। केन्द्र सरकार को पजाब तथा हरयाणा के मुख्यमन्त्रियो की बैठक बुलाकर शीघ्र इस समस्या का समाधान करना चाहिए। इस सम्बन्ध में प्रो० साहब ने प्रधानमत्री को लिखे पत्र का उल्लेख करते हुए बताया कि इसका उत्तर जलससाधन मत्री श्री अर्जुनदास सेठी ने देते हुए लिखा है कि केन्द्रीय सरकार ने इसका समाधान करने के लिए दो बार पजाब तथा हरयाणा के मुख्यमन्त्रियो की बैठक बुलाई गई किन्तु मुख्यमंत्री उपस्थित नहीं हुए। इस कारण बैठके स्थगित करनी पडी। इसका केस न्यायालय मे भी विचाराधीन है। परन्तु न्यायालय से बाहर समझौता करने से भी समाधान होसकता है।

श्री ओमप्रकाश बेरी पूर्व विधायक ने कहा कि सतलुज-यमुना लिक नहर हरयाणा की जीवन रेखा है। हरयाणा सरकार इस नहर को बनवाने की इच्छुक नहीं है। श्री ओमप्रकाश चौटाला मुख्यमत्री हरयाणा के उस ब्यान की निन्दा की जिसमे उन्होने एस०वाई०एल० नहर के बारे मे कहा था कि केस न्यायालय मे विचाराधीन है। अत हम कुछ नहीं कर सकते। परन्तु जलससाधन मत्री के पत्र से स्पष्ट है कि मुख्यमत्री का यह एक बहाना है। उनकी श्री बादल के साथ मित्रता मार्ग में रुकावट बनी हुई है और उनका श्री बादल के साथ गुप्त समझौता है। अत हमे मिलकर सामूहिक सघर्ष करके उन पर दबाव डालना होगा। जो भी दल हरयाणा मे सत्ता मे आया, उन्होने पानी लाने मे विशेष रुचि नहीं ली। इसी कारण राजनैतिक दलो पर जनता का विश्वास समाप्त हो रहा है। पजाब सरकार ने उग्रवादियो द्वारा नहर खोद रहे मजदूरो पर हमले करवाना आरम्भ कर दिया जिससे नहर की खुदाई रोक दी गई।

बैठक मे यह भी बताया गया कि हरयाणा की जनता की माग पर इसी कारण पूर्व प्रधानमन्त्री चन्द्रशेखर ने अपने प्रधानमन्त्री के शासनकाल मे सतलुज यमुना लिक नहर को सीमा सड़क सगठन द्वारा बनवाने की स्वीकृति दे दी थी। परन्तु बाद की सरकारो ने इस योजना को ठडे बस्ते में डालकर हरयाणा को हानि पहुंचाई है।

उपस्थित राजनैतिक दलो के नेताओं ने आर्यनेता स्वामी इन्द्रवेश के नेतृत्व मे सघर्ष समिति का गठन करके हरयाणा का हिस्से के पानी लाने हेतु सतलुज-यमुना लिक नहर के मुद्दे पर सभी दलों के सहयोग से सघर्ष का बिगुल बजा देना चाहिए। विचार-विमर्श के पश्चात् सघर्ष समिति के अध्यक्ष स्वामी इन्द्रवेश को तथा सयोजक श्री सत्यवीर शास्त्री गढी बोहर वाले को जो कि हरयाणा अध्यापक सघ के प्रधान भी रहे हैं, बनाया गया। २३ जनवरी को इस आन्दोलन की शुरुआत भिवानी से की जायेगी। श्री बलबीरसिह ग्रेवाल पूर्व विधायक एव श्री हीरानन्द आर्य पूर्व मत्री इसका सयोजन करेगे। इसी प्रकार ३१ जनवरी को श्री ओमप्रकाश बेरी पूर्व विधायक झज्जर मे, २ फरवरी को स्वामी इन्द्रवेश जी रोहतक मे तथा १५ फरवरी को श्रीरामधारी शास्त्री द्वारा जीन्द मे उपायुक्त कार्यालयो पर धरने व प्रदर्शन किए जायेगे। इसकी तैयारी के लिए जिलेवार समिति बनाई जावेगी। इन प्रदर्शनो तथा धरनो के पश्चात् आगामी कार्यवाही करने का कार्यक्रम सभी दलो की बैठक मे किया जावेगा।

चौ० सूबेसिह सभा उपप्रधान एव पूर्व उपमण्डल अधिकारी (नागरिक) ने पानी के मुद्दे पर महत्त्वपूर्ण योगदान देने पर प्रो० शेरसिह जी का धन्यवाद किया और भारत

(शेष पृष्ठ ७ पर)

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ सृष्टिसवत् १, ९६, ०८, ५३, १०१
पंजीकरणसंख्या टैक/एच आर/49/रोहतक/99 ☎ ०१२६२-४०७२२

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र रोहतक

प्रधानसम्पादक : प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक :- डा० सुदर्शनदेव आचार्य

वर्ष २८ अंक ६ २१ जनवरी, २००१ वार्षिक शुल्क ६०) आजीवन शुल्क ६००) विदेश मे १० पौंड एक प्रति १-२५

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा की बैठक के महत्त्वपूर्ण निश्चय

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरग सभा की बैठक दिनाक ११ जनवरी २००१ को सभाप्रधान स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता मे प्रात १०-३० बजे सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक मे हुई। इस बैठक में मुख्य रूप से स्वामी इन्द्रवेश जी पूर्व सासद एव सभा कार्यकर्ता प्रधान, प्रो० शेरसिह जी पूर्व रक्षाराज्यमत्री, चौ० सूबेसिह जी सभा उपप्रधान पूर्व एस०डी०एम०, स्वामी सुमेधानन्द जी कार्यकर्ता प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली आदि सभा के अन्तरग सदस्यो एव विशेष आमन्त्रित सदस्यो ने भाग लिया। इस बैठक मे निम्नलिखित निश्चय किये गये--

१ आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक साधारण अधिवेशन दिनाक १८ मार्च २००१ को गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद मे होगा इसमे हरयाणा मे वेदप्रचार के कार्यक्रम को प्रभावशाली बनाने तथा अन्य समस्याओ के समाधान पर विचार किया जायेगा।

२ प० विश्वामित्र आर्य एव श्री शिवचन्द आर्य प्रचारक की अस्थाई नियुक्तिया स्वीकार की गई।

३ गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद का वार्षिक उत्सव १७-१८ मार्च २००१ को विशाल स्तर पर मनाया जाएगा। इससे पूर्व गुरुकुल की वर्तमान समस्याओ का समाधान करने का यत्न किया जावेगा और उत्सव मे अधिक से अधिक उपस्थिति करने के लिए गुरुकुल के चारो ओर के ग्रामो मे यज्ञ तथा प्रचार किया जायेगा।

४ मुम्बई मे अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन २३ से २६ मार्च २००१ तक स्वामी ओमानन्द जी की अध्यक्षता मे धूमधाम से मनाया जाएगा। इसमे हरयाणा की आर्यसमाजो को अधिक से अधिक सख्या मे पहुचने का आह्वान किया गया तथा तैयारी के लिए सभा की ओर से ११ हजार धनराशि भेजी जावेगी। मुम्बई मे जाने तथा वापिस आने के लिए दिल्ली से स्पेशल रेल की व्यवस्था की जावेगी। हरयाणावासी जो इस महासम्मेलन मे रेल द्वारा जाने के इच्छुक हो, वे अपने नाम पतो (यदि फोन हो तो उसका नम्बर) सहित सभा कार्यालय सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक (फोन ४०७२२) के पते पर शीघ्र भेज देवें, जिससे उनकी सीटो का आरक्षण समय पर करवाया जासके।

५ सभा कार्यालय सिद्धान्ती भवन के साथ सभा की ओर से एक विशाल हाल बनाया जायेगा जिसमे हरयाणा के सभी आर्यसमाज के बलिदानियो के चित्र विवरण के साथ लगाये जावेगे। इसी हाल मे वैदिक पुस्तकालय की स्थापना की जावेगी।

सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामंत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से पानी के लिए आन्दोलन की तैयारी

रोहतक दिनाक ११-१-२००१ को सतलुज-यमुना लिक नहर नदी जलविवाद के सम्बन्ध मे स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अध्यक्षता मे दोपहर बाद २ बजे सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक मे बैठक हुई। इस बैठक में मुख्य रूप से सभा कार्यकर्ता प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी पूर्व सासद, प्रो० शेरसिह जी पूर्व रक्षा राज्यमत्री, स्वामी सुमेधानन्द जी कार्यकर्ता प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली, श्री ओमप्रकाश बेरी पूर्व विधायक, राष्ट्रीय लोकदल हरयाणा के प्रदेश अध्यक्ष श्री बलबीरसिह ग्रेवाल, श्री हीरानन्द आर्य पूर्वमत्री, श्री जगदीशराय कौशिक एडवोकेट हरयाणा निर्माण मोर्चा बहादुरगढ आदि अनेक प्रमुख आर्यनेता शामिल हुए।

बैठक मे प्रोफेसर शेरसिह ने प्रस्ताव रखा कि आर्यसमाज द्वारा चलाये जानेवाले आदोलन की तैयारी हेतु दक्षिणी हरयाणा के आठो जिला मुख्यालयो पर धरने देने एव प्रदर्शन करने चाहिए। इसके बाद भी सरकार कोई पग न उठाये तो हमे हरयाणा मे पजाब जानेवाली जी०टी० रोड और रेलमार्ग रोको आदोलन करना चाहिए। बैठक मे दक्षिणी हरयाणा को पानी न मिलने पर भी चिन्ता प्रकट की गई और कहा गया कि दक्षिणी हरयाणा के हिस्से का १८ लाख एकड घनफुट पानी दक्षिण हरयाणा को मिलना ही चाहिए। उन्होने स्पष्ट करते हुए कहा कि हमारी लडाई भारत तथा पजाब दोनो सरकारो के साथ है। केन्द्र सरकार को पजाब तथा हरयाणा के मुख्यमत्रियो की बैठक बुलाकर शीघ्र इस समस्या का समाधान करना चाहिए। इस सम्बन्ध मे प्रो० साहब ने प्रधानमत्री को लिखे पत्र का उल्लेख करते हुए बताया कि इसका उत्तर जलससाधन मत्री श्री अर्जुनदास सेठी ने देते हुए लिखा है कि केन्द्रीय सरकार ने इसका समाधान करने के लिए दो बार पजाब तथा हरयाणा के मुख्यमन्त्रियो की बैठक बुलाई गई किन्तु मुख्यमत्री उपस्थित नहीं हुए। इस कारण बैठके स्थगित करनी पडी। इसका केस न्यायालय मे भी विचाराधीन है। परन्तु न्यायालय से बाहर समझौता करने से भी समाधान होसकता है।

श्री ओमप्रकाश बेरी पूर्व विधायक ने कहा कि सतलुज-यमुना लिक नहर हरयाणा की जीवन रेखा है। हरयाणा सरकार इस नहर को बनवाने की इच्छुक नहीं है। श्री ओमप्रकाश चौटाला मुख्यमत्री हरयाणा के उस ब्यान की निन्दा की जिसमे उन्होने एस०वाई०एल० नहर के बारे मे कहा था कि केस न्यायालय मे विचाराधीन है। अत हम कुछ नहीं कर सकते। परन्तु जलससाधन मत्री के पत्र मे स्पष्ट है कि मुख्यमत्री का यह एक बहाना है। उनकी श्री बादल के साथ मित्रता मार्ग मे रुकावट बनी हुई है और उनका श्री बादल के साथ गुप्त समझौता है। अत हमे मिलकर सामूहिक सघर्ष करके उन पर दबाव डालना होगा। जो भी दल हरयाणा मे सत्ता मे आया, उन्होने पानी लाने मे विशेष रुचि नहीं ली। इसी कारण राजनैतिक दलो पर जनता का विश्वास समाप्त हो रहा है। पजाब सरकार ने उग्रवादियो द्वारा नहर खोद रहे मजदूरो पर हमले करवाना आरम्भ कर दिया जिससे नहर की खुदाई रोक दी गई।

बैठक मे यह भी बताया गया कि हरयाणा की जनता की माग पर इसी कारण पूर्व प्रधानमन्त्री चन्द्रशेखर ने अपने प्रधानमन्त्री के शासनकाल मे सतलुज यमुना लिक नहर को सीमा सडक सगठन द्वारा बनवाने की स्वीकृति दी थी। परन्तु बाद की सरकारो ने इस योजना को ठडे बस्ते मे डालकर हरयाणा को हानि पहुचाई है।

उपस्थित राजनैतिक दलो के नेताओ ने आर्यनेता स्वामी इन्द्रवेश के नेतृत्व मे सघर्ष समिति का गठन करके हरयाणा का हिस्से के पानी लाने हेतु सतलुज-यमुना लिक नहर के मुद्दे पर सभी दलो के सहयोग से सघर्ष का बिगुल बजा देना चाहिए। विचार-विमर्श के पश्चात् सघर्ष समिति के अध्यक्ष स्वामी इन्द्रवेश को तथा सयोजक श्री सत्यवीर शास्त्री गढी बोहर वाले को जो कि हरयाणा अध्यापक सघ के प्रधान भी रहे हैं, बनाया गया। २३ जनवरी को इस आन्दोलन की शुरुआत भिवानी से की जायेगी। श्री बलबीरसिह ग्रेवाल पूर्व विधायक एव श्री हीरानन्द आर्य पूर्व मत्री इसका सयोजन करेगे। इसी प्रकार ३१ जनवरी को श्री ओमप्रकाश बेरी पूर्व विधायक झज्जर मे २ फरवरी को स्वामी इन्द्रवेश जी रोहतक मे तथा १५ फरवरी को श्रीरामधारी शास्त्री द्वारा जीन्द मे उपायुक्त कार्यालयो पर धरने व प्रदर्शन किए जायेगे। इसकी तैयारी के लिए जिलेवार समिति बनाई जावेगी। इन प्रदर्शनो तथा धरनो के पश्चात् आगामी कार्यवाही करने का कार्यक्रम सभी दलो की बैठक मे किया जावेगा।

चौ० सूबेसिह सभा उपप्रधान एवं पूर्व उपमण्डल अधिकारी (नागरिक) ने पानी के मुद्दे पर महत्त्वपूर्ण योगदान देने पर प्रो० शेरसिह जी का धन्यवाद किया और भारत

(शेष पृष्ठ ७ पर)

लोक-परलोक विचार

अष्टम-विचार—(तो कोई भी साथ नहीं देगा ?)

❑ शिवप्रसाद उपाध्याय, आर्यसमाज होशियारपुर (पंजाब)

(गताक से आगे)

समुपस्थित सज्जनवृन्द ! हम सब मिलकर कल विचार कर रहे थे, कि यह सम्पूर्ण धन वैभव अन्त समय मे साथ नहीं जाएगा। मुझे किसी कवि का एक श्लोक याद आ रहा है–

आयुषि क्षणिकानि यौवनमपि प्रायो जराध्वसितम्।
सयोगा विरहावसानविरसा भोगा क्षणध्वसिन:।।
जानन्तोऽपि यथा व्यवस्थितमिद लोका: समस्त जगत्।
चित्र यद् गुरुगर्वभावितधिय: कुध्यन्ति माद्यन्ति च।।

हमारी आयु अत्यन्त अल्प है। क्षणिक है। हमारी जवानी भी प्राय बुढापे से ही ढकी हुई है। अर्थात् जवानी भी कुछ ही क्षण मात्र रहने वाली है। जो मेल-जोल का सयोग है, वह भी विरह आदि से व्याप्त है। ये भोग भी क्षण-विध्वसी हैं। यह बात रोज देखने मे आती है। ऐसा जानते हुए भी मोह मे फसा हुआ ससार, सासारिक लोग अत्यन्त गर्व से चूर-चूर होकर कभी तो बहुत क्रोध करते हैं और कभी अत्यन्त मस्त रहते हैं।

इस वैभव के पीछे राजा मुञ्ज ने क्या तमाशा कर डाला। इस वैभव ने पता नहीं कितनो से भाई-भाई का नाता तोडाया, कितनो से पिता, पुत्र, मा, बेटी, बहू आदि से नाता तोडाकर पृथक् कर दिया। यह इतिहास ही जानता है। मुझे एक समय की बात याद आ रही है–

दो राजपूत सगे भाई ऊट पर चढकर कमाने के लिए परदेश जारहे थे। रास्ते मे सामने से एक साधु निकला, वह भागा-भागा इधर आरहा था। वह डरता हुआ कहने लगा–'भाइयो ! आगे मत जाना, एक भयानक डायन बैठी हुई है। पास जाओगे तो वह तुम्हे खा जायेगी।' इतना कहकर वह साधु दौड गया। इधर भाइयो ने विचार कि–'वह साधु तो बूढा था इसलिए डरता था। हम तो जवान हैं। हमारे पास तलवार और बन्दूक भी हैं। इतना डरना था, तो घर से ही निकलते क्यो ? डायन हमारा क्या बिगाडेगी ?'

ऐसा विचार कर वे आगे बढे। कुछ दूर जाते ही उन्हे एक सोने की मोहरो वाली थैली मिली। ऊट से उतरकर गिनने लगे तो दस हजार मोहर थीं। दोनों कहने लगे–'वह साधु बडा चालाक था। हम लोगो को डायन का डर दिखाकर चला गया। उसने सोचा था कि कोई सवारी लाकर सोने की मोहर उठा ले जाऊ। वह अवश्य ही सवारी की खोज में भागा जा रहा है। यह तो बडा अच्छा हुआ कि हम उसके बहकावे मे नहीं आए।' दोनो भाई बडे प्रयत्न थे। अब उन्हे परदेश जाने की आवश्यकता नहीं रही। उनकी तकदीर खुल गई।

वे दिन भर के भूखे तो थे ही, अब घर तक भूखे लौटने मे असमर्थ थे। बडे भाई ने कहा–'भाई ! कुछ खाए-पीये बिना घर नहीं पहुचा जाएगा। गाव जाकर कुछ खाने को माग लाओ।' छोटा भाई गाव को चला गया। इधर दस हजार सोने की मोहर देखकर बडे भाई का मन ललचाया। वह विचारने लगा–'हाय ! इनका आधा हिस्स करना पडेगा।' लोभ पाप का बाप है। लोभ ने उसकी बुद्धि बिगाड दी। वह सोचने लगा–'बन्दूक भरकर रख लूगा, छोटे को आते ही दाग दूगा, यहा कौन देखेगा ? घर मे जाकर कहूगा–'कि छोटा भाई हैजे से रास्ते मे ही मर गया है।' मैं दु खी होकर लौट आया हू।'

उधर छोटे भाई की बुद्धि भी बिगड गई। उसने भी दस हजार पूरा लेना चाहा। उसने सखिया खरीदकर हलवे मे मिला लिया। वह सोचने लगा कि जाकर बडे को कहूगा कि–'भाई ! तुम पहले खाओ, मुझे तो गाव मे भी कुछ खाने को मिला है। मुझे अब भूख भी नहीं है। आपके खाने से बचा तो मैं भी खा लूगा। वह हलुवा खाते ही मर जाएगा। घर जाकर कहूगा कि–'बडा भाई हार्ट-अटैक होकर रास्ते मे ही मर गया है।" थोडी देर मे छोटा भाई हलुआ पूरी लेकर आया तो बडे भाई ने दनादन गोली मारकर भाई की हत्या कर डाली। उसे भूख तो जोर की लगी ही थी। वह जल्दी ही हलुआ पूरी खाने लगा। खाते ही थोडी देर मे वह भी वहीं पर ढेर हो गया।

सज्जनो ! हमने इस वैभव को नहीं पहचाना। हमे इसके साथ का बरताव नहीं आ रहा। दर-असल यह वैभव हमारा नहीं है। चाहे हम इसके साथ जितनी मोह-ममता जोडें, हमारा जीवन इसके लिए तो कुर्बान होजाएगा पर य हमारे साथ नहीं जाएगा। हमारा न होने का अर्थ यह नहीं कि हम इसका उपयोग ही न करें। वेद के उपदेशानुसार इसका त्यागपूर्वक भोग करे, तो यह हमारे जीवन में बडा ही सहायक सिद्ध होगा। क्योंकि हमारा जीवन भी तो इसी वैभव के सहारे टिका है।

आज हम सब मिलकर यह भी विचार करे कि यह धन वैभव 'भूमि की सपदा है भूमि मे ही रह जाएगी, तो कोई बात नहीं, पर हमारा सम्बन्ध इस धन-वैभव के अतिरिक्त और भी सासारिक जीवों के साथ भी तो है। क्या परलोक की यात्रा मे ये सहायक होगे ?

कोई भी प्राणी हमें न सता सके, घर की रखवाली और सुरक्षा के लिए घर में कुत्ता रखा है। हमारे घर में चूहे न लगें, इस उद्देश्य से बिल्ली भी पाल रखी है। खेती किसानी की सुविधा के लिए बैल पाले हुए हैं। दूध, दही, मलाई, मक्खन के प्रबन्ध वास्ते गाय और भैंस भी पाली हुई है। घर की शोभा बढाने के लिए तोता-मैना भी पाले हुए हैं। अनेक प्रकार की चिड़िया बढिया 'शोकेस' बनाकर इज्जत से रखी हुई हैं। इनके अतिरिक्त भेड़-बकरी आदि जानवर भी रखे हुए हैं। रोज इनको अच्छा खाना देकर प्यार से पाला जाता है। क्या अन्त के समय में ये साथ देंगे ? या इन्हे यों ही छोडकर जाना होगा ? जो सज्जनो ! कवि से उत्तर मिला– **'पशवो हि गोष्ठे'**

नहीं; कदापि नहीं। इनमे से एक भी पशु अन्त मे साथ नहीं देगा। चाहे वह जितना भी लाड प्यार से क्यो न पाला पोसा गया हो। ये जहा रह रहे हैं, वहीं रह जायेंगे, यहा तक कि आज के व्यवहार के अनुसार कहना हो तो ये कार, स्कूटर, मोटरसाइकिल, फ्रिज, कूलर आदि कोई भी अन्त में साथ नहीं जाएगा। जिनकी प्राप्ति के लिए जीवन भर जुटे रहे।

जब कवि के ऐसे उत्तर से मन को बहुत बडा धक्का लगा–'सह धन-वैभव साथ नहीं देगा, ये पालित पशु भी साथ नहीं देगे, तो हमारे पास और रहा भी क्या ? जब महाराजा युधिष्ठिर जी जुआ खेल रहे थे, जब वे सारा धन वैभव हार चुके थे, अब बाजी लगाने वास्ते उनके पास कुछ भी नहीं बचा तो उनका ध्यान झट द्रोपदी की ओर गया। यहा पर भी यही बात घटित हो रही है। कवि से पुन पूछा गया–'क्या मेरी भार्या अन्त मे मेरा साथ नहीं देगी ? जिसके साथ मैंने अपना सम्पूर्ण जीवन बिताया। विवाह के समय में अग्नि, ब्राह्मण और अनेक सज्जनो के समक्ष हाथ पकडते हुए कहा था–

गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं, मया पत्या जरदष्टिर्यथास ।
भगो अर्यमा सविता पुरन्धिर्मह्य त्वादुर्गार्हपत्याय देवा:।। ऋ० १०-८५-३६

हे वरानने ! मैं ऐश्वर्य और सुसतान आदि अनेक सौभाग्य के लिए तेरे हाथ को ग्रहण करता हू, तुम मुझ पति के साथ वृद्धावस्था तक सुखपूर्वक रहो। इस पर वधू भी कहती है–हे वीर ! मैं भी सौभाग्य की वृद्धि के लिए आपके हाथो को ग्रहण कर रही हू। आप मुझ पत्नी के साथ वृद्धावस्था पर्यन्त अनुकूल रहिये। आप और मैं आज से पति और पत्नी भाव को प्राप्त करते हैं। ऐश्वर्य युक्त न्यायकारी, जगदुत्पादक, सवितादेव और इस सभामण्डप मे उपस्थित माता, पिता, आचार्य सभी विद्वान् लोग हम दोनो को गृहस्थ के अनुष्ठान के लिए दे रहे हैं। आज से हम दोनो एक दूसरे के हाथ बिक चुके हैं। हम एक दूसरे से कभी पृथक् नहीं होगे।

ममेयमस्तु पोष्या मह्य त्वादाद् बृहपति ।
मया पत्या प्रजावत ! श जीव शरद शतम्।। अथर्व १४-१-५२

हे पापरहित वरानने ! उस बृहस्पति परमात्मा ने तुझको दिया है। इस जगज् मे तुम मेरा पोषण करने वाली बनो। मुझ पति के साथ तुम सौ वर्ष तक सुखपूर्वक जीवन धारण करो। इस पर वधू भी कहती है–हे भद्र वीर ! परमेश्वर की कृपा से आप मुझे प्राप्त हुए हैं। मेरे लिए आपको छोडकर ससार मे इष्ट देव और कोई भी नहीं होगा। आप मुझ पत्नी के साथ सौ वर्ष पर्यन्त आनन्द से प्राण धारण कीजिए।'

समञ्जन्तु विश्वेदेवा समापो हृदयानि नौ।
स मातरिश्वा स धाता समुदेष्ट्री दधातु नौ।। ऋ० १०-८५-४७

हे यज्ञशाला मे बैठे हुए देवो ! आप लोग यह विश्वास करें कि 'हम दोनो गृहस्थाश्रम में एकत्र रहने के लिए एक दूसरे को स्वीकार करे हैं। हम दोनों के हृदय जल के समान शान्त और मिले हुए रहेगे। जैसे प्राणवायु सबको प्रिय है, वैसे ही हम दोनो एक दूसरे के लिए प्रिय बनेगे। जैसे परमात्मा व्याप्त होकर ससार का धारण करता है, हम दोनों भी एक दूसरे को धारण करेगे।

(क्रमशः)

नया वर्ष तो वसन्त ऋतु चैत्र मास से लगता है
पौष जनवरी से ईसाइयों का अगला वर्ष लगता है

वेदादि शास्त्रों की मान्यता के अनुसार सृष्टि और प्रलयकाल को अहोरात्र की संज्ञा दी है जिसकी अवधि आठ अरब चौंसठ करोड होती है। इसमे सृष्टि और प्रलय का आधा-आधा काल होने से १४ मन्वन्तर की सृष्टि और १४ मन्वन्तर की प्रलय होती है। वर्तमान सृष्टि के ६ मन्वन्तर पूरे होकर अब ७वां वैवस्वत की २७ चतुर्युगी पूरे होकर अब २८वा कलयुग चल रहा है अर्थात् इस भोगभुक्त सृष्टि के आदिकाल से ही प्रतिवर्ष वसन्त ऋतु के प्रथम चैत्र मस की शुक्ला प्रतिपदा से ही नया वर्ष लगता आरहा है। यह वैदिक नियम न कभी बदला है और न कभी बदलेगा। जो अब मे अनुमान २ मास और २३ दिन और अगले बीतने पर ही चैत्र अमावस्या से अगले दिन ही अगला नया वर्ष सवत् २०५८ विक्रमी लग जाएगा। आज दैनिक जागरण आदि कई दैनिक पत्रो की सूचना से तथाकथित नया वर्ष लगने की हर्ष बधाइया दी गई हैं जो आदि अनन्त नित्यपरम्परा के नियम गुण ज्ञान वेद के अनुसार सर्वथा निराधार, मिथ्या तथा आर्ष मान्यता के विरुद्ध है। ईसाई मत के अनुसार जनवरी से लेकर दिसबर तक बारह मासो के काल्पनिक वर्ष की मान्यता तो २००० वर्ष से अल्पकाल की है इसलिए इस प्रथम जनवरी से ईसाइयो का अगला वर्ष तो भले ही कहले क्योंकि सन् २००० बीत चुका है तथा २००१ लग गया है परन्तु इसे नया वर्ष कहना सर्वथा भ्रामक तथा मिथ्या है।

वर्ष की ६ ऋतुए होती हैं। अब यह ५वीं ऋतु हेमन्त ऋतु का आधा ही काल गया है। अगले एक मास के बाद सर्दी कम होकर शिशिर ऋतु अर्थात् बूढी सर्दी या पतझड लग जाएगा। पुराने पत्ते पककर झडे बिना नए पत्ते कभी आ नहीं सकते। माघ मास की अमावस्या से उत्तरायण काल लगेगा उस दिन सूर्य उत्तर की ओर लौटना आरम्भ होकर दिन बढने और राते घटने लग जाने से सूर्य मे भी नया प्रकाश अधिक गर्मी बढ जाएगी। इसी नयेपन के कारण सूखे वृक्षो में परिवर्तन होकर बड, पीपल, आम, जामुन, पिलखन, गूलर आदि-आदि वृक्षों मे नई-नई चमकाती हुई नाभि गुलाबी, लाल रग की कोपल लगने लगेगी जिन्हे कुछ लोग तो खा भी लेते हैं। आषाढ की फसल का नया अन्न पक जाने से होलक (होले) नाम कहलाता है। होली के दहन पर होली का दहन पर्व भी मनाया जाता है। तब जाकर नया वर्ष लगता है।

वेद विरोधी नवीन मतवादी ईसाइयो द्वारा जनवरी से लगनेवाले अगले वर्ष को नया वर्ष कहना विद्याहीनता, अज्ञानता तथा हठ और दुराग्रही कहलाएगा जो वैदिक आर्ष आप्त विद्वानो को कभी भी मान्य नहीं। अत इसे ईसाई लोग तो काल्पनिक नया वर्ष अशुद्ध भावना से कहते हैं। परन्तु उन्हीं के पिछलगु हम आर्यावर्त के आर्य भी क्यो कहे। इसलिए मिथ्यावाद की इस हठ को छोडना ही वैदिक नित्य सत्य को अपनाना ही हितकर है। इस पहली जनवरी के दिन भारतीय आर्यो को हर्ष मनाना, हर्ष पत्र भेजना अविद्या तथा हानिकारक तमोगुण है। जो आर्यसमाजी भी ईसइयो की मान्यता के अनुकरण से जनवरी से ही नया वर्ष कहते हैं। उन्हे धिक्कार है। अन्धा अनुकरण करना अहितकर मूर्खता भी कहलाती है। परमात्मा करे हम सबको सद्बुद्धि प्राप्त हो।

—श्री निहालसिह आर्य परमार्थी, आर्यधाम, जसौर खेडी, बहादुरगढ (झज्जर) दि २८-१२-२०००

सुस्ती छोड़कर किसान गायें पालें, गोबर गैस प्लांट लगाएं

पिल्लूखेडा। गऊशाला धडौली मे मकर सक्रांति के उपलक्ष्य में आयोजित गऊमाता रक्षा महोत्सव में वक्ताओं द्वारा वर्तमान परिवेश मे गऊ के हो रहे अनादर व अत्याचार पर गहरी चिता व्यक्त की गई। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि योजना बोर्ड भारत सरकार के सदस्य सोमपाल शास्त्री थे, जबकि विशेष अतिथि जीव जतु कल्याण बोर्ड के अध्यक्ष गुमानमन लोढा थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता गऊशाला के प्रबधक आचार्य बलदेव ने की। अन्य शामिल होने वाले सैंकडो लोगो मे पूर्वमत्री हरिसिह सैनी प्रमुख थे।

मुख्य अतिथि सोमपाल शास्त्री ने इस गऊशाला मे रघुवीरसिह शास्त्री नस्ल विश्व गौ प्रदर्शनी भवन का उद्घाटन किया तथा गाव धडौली मे बनने वाले गऊ नस्ल सुधार परियोजना के सेटर का भी उद्घाटन किया। आसपास के गावो के लोग ट्रैक्टर-ट्रालियो मे चारा भरकर इस कार्यक्रम मे भाग लेने पहुचे थे। कार्यक्रम की शुरुआत से पूर्व हवन यज्ञ का आयोजन भी किया गया। श्री शास्त्री ने अपने भाषण मे इस अवसर पर गऊ को एक माता के रूप मे बताया और उन्होने हर घर मे गऊ पालने की अपील की। उन्होने कहा कि वे ४१ देशो मे भ्रमण कर चुके हैं और दूसरे देशो मे गाय की महानता व उसका प्रारूप भी देख चुके हैं। उन्होने कहा कि विदेशी भी गाय के दीवाने होते जा रहे हैं।

श्री सोमपाल शास्त्री ने गोबर के फायदे के बारे में समझाते हुए कहा कि यदि २० साल तक लगातार हरियाणा व पजाब के खेतो मे किसान रासायनिक खाद का इस्तेमाल करते रहे तो अन्न का एक दाना भी नहीं उग सकेगा। उन्होने ग्रामीणो से गोबर की खाद पर निर्भर रहने की अपील भी की। उन्होने कहा कि किसान आज सुस्त हैं। वे अपनी सुस्ती छोडकर गऊ पालें और गोबर गैस प्लाट लगाए।

—दैनिक भास्कर से साभार

भजन

टेक सारी योजना है बेकार जब तक ना इन्सान बने।

जब तक भारत की सरकार, चले ना वेद धर्मानुसार।
चाहे करलो यत्न हजार पूरा नहीं विधान बने।।

बाधो बाध निकालो नहर, बिजली लादो ग्रामो शहर।
बढता जागा बेरोजगार, जब तक नहीं किसान बने।।

सडक जहाज, रेल और तार, साईकिल लारी-मोटर कार।
सारे बेकार हैं हथियार, जब तक ना नौजवान बने।।

स्कूल, कॉलेज और हस्पताल, खोलो कितने ही हर साल।
बढते जायेगे बीमार, जब तक ना विद्वान् बने।।

मुर्गी और मछली पालो, कितने ही मास अण्डे खालो।
ना होगा देश सुधार, जब तक शुद्ध ना खान-पान बने।।

उस दिन पूरी होगी आश, पढेगे सत्यार्थप्रकाश।
होगा वेदो का प्रचार, पढकर ऋषि महान् बने।।

पढकर सस्कृत वाणी, बनेगे ऋषि-मुनि और ज्ञानी।
होगा भारत का बेडा पार, नित्यानन्द गुणवान बने।।

—श्री स्वामी नित्यानन्द के शिष्य मोब्बतसिह आर्य
आर्यनगर, गाया बाढडा हिला भिवानी

सभा द्वारा निम्नलिखित साहित्य पर विशेष छूट

पुस्तक का नाम	वास्तविक कीमत	रियायती कीमत
पजाब का हिन्दीरक्षा आन्दोलन	१००-००	८०-००
प्रो० शेरसिह एक प्रेरक व्यक्तित्व	२०-००	१०-००
नैतिक शिक्षा भाग-९	४-००	२-००
नैतिक शिक्षा भाग-१०	४-००	२-००
शराबबन्दी शका-समाधान	१-००-	१-००
हैदराबाद सत्याग्रह मे हरयाणा का योगदान	३०-००	१५-००
प० गुरुदत्त विद्यार्थी जीवन-चरित्र	२-५०	२-००
दी वीजडम ऑफ ऋषीज	७२-००	५०-००
सरफरोशी की तमन्ना	२०-००	५-००
आर्यसमाज क्या है ?	१०-००	५-००
आदर्श धातु रूपावली	५-००	३-००
दी वेदाज	१-००	१-००
टेन प्रिंसिपल आफ आर्यसमाज	१-००	१-००
प० जगदेवसिंह सिह सिद्धान्ती जीवन चरित्र	१५-००	५-००
श्रीमद्दयानन्द-प्रकाश	५०-००	२५-००

नोट ~ डाक या वी०पी०पी० द्वारा पुस्तकें मगवाने का खर्च स्वयं क्रेता का होगा।
—मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक

वेदानुकूल जीवन

वे तो वेद किसी विशेष धर्म, सम्प्रदाय रोगो के धर्म-ग्रन्थ न होकर सम्पूर्ण विश्व के धर्म (मार्गदर्शक) ग्रन्थ हैं। इनमे सिर्फ मानव की ही नहीं बल्कि प्राणी-मात्र की भलाई व हित की भावना निहित है। इसलिए इन चारों वेदों को किसी विशेष पुरुष या पुरुषो के द्वारा न मानकर ईश्वर प्रदत्त यानी अपौरुषेय माना जाता है। वेदों में वे सभी शिक्षाये आदेश व निर्देश उपलब्ध हैं जो मनुष्य को अपने जीवन पर्यन्त काम आते हैं यानी उसे किस प्रकार जीना चाहिए जिससे उसकी उत्तरोत्तर उन्नति व समृद्धि हो सके और उसका सम्पूर्ण जीवन सुखमय व शातिदायक बन सके। इतना ही नहीं साथ ही व्यक्ति को अपने परिवार, समाज राष्ट्र व विश्व के लोगो के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए जिससे सब जगह शान्ति स्थापित रह सके और परस्पर भ्रातृभाव बना रह सके और वह अपनी शारीरिक, मानसिक व आत्मिक उन्नति करता हुआ सब शिक्षाओ व मर्यादाओ का पालन करता हुआ अपने शुद्ध आचरण सद्व्यवहार तथा योग साधना के बल पर मनुष्य का जो अन्तिम लक्ष्य मोक्ष है, उसकी प्राप्ति कर सके।

वेदो मे व्यक्ति समाज व राष्ट्र की उन्नति व समृद्धि के लिए तो अनेक मन्त्र आये ही हैं साथ ही विश्व व प्राणी-मात्र के हित के लिये भी अनेकों मन्त्र आये हैं जिनमें इन तीन मन्त्रो को यहा प्रस्तुत करता हू।

'वसुधैव कुटुम्बकम्' सारा विश्व एक परिवार के समान है। 'माता भूमि पुत्रोऽहम् पृथिव्या' पृथ्वी हमारी माता है और हम सब उसके पुत्र हैं।

मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्। मित्रस्याह चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।। (य० ३६/१८)

सब प्राणी मुझे मित्र की दृष्टि से देखे और मैं सबको मित्र की दृष्टि से देखू।

अफसोस तो इस बात का है कि ऐसे उदात्त, पक्षपात रहित व उच्च विचारो वाले ग्रन्थ को माननेवाले 'सर्वे भवन्तु सुखिन' का पाठ पढने वाले और ऋषि मुनियों की सन्तान कहलानेवाले हम हिन्दू भाई, अपने ही वनवासी भाइयों को आज क्यो भूल गये कि उनकी सुध तक भी नहीं लेते यह एक विडम्बना नहीं तो क्या है ? हमारे वनवासी भाई अभाव व अशिक्षा के कारण अपना जीवन दुख व कष्टमयी स्थिति से गुजार रहे हैं, जिसके कारण वे ईसाई मिशनरियो के द्वारा दिये जा रहे लोभ, लालच व प्रलोभन मे फसकर उनको अपना धर्म परिवर्तन करना पड रहा है, जबकि वे सत्य, प्रेम, सहृदयता, साहस, ईमानदारी व अतिथि सेवा जैसे हिन्दुत्व गुणों से ओतप्रोत हैं। सिर्फ अर्थ व शिक्षा का अभाव ही उनको धर्म परिवर्तन के लिए विवश करता है।

हमारे राष्ट्रीय युग पुरुषपुरुषोत्तम श्रीराम ने वानर, कौल भील आदि वनवासी जातियों के सहयोग से, योगिराज श्रीकृष्ण ने ग्वाल-बालों के सहयोग से, महाराणा प्रताप व शेर शिवाजी भी जगली व पहाडी जातियो के सहयोग से बडी से बडी लडाइयो मे विजय प्राप्त कर सकते हैं तो क्या हम अपने वनवासी भाइयों को साथ लेकर अपने धर्म व जाति की रक्षा व उन्नति नहीं कर सकते तथा हमारी हिन्दुओ की अस्मिता जो आज खतरे मे है, क्या उसकी रक्षा हम नहीं कर सकते ? इसका उत्तर हमें उनके साथ बैठकर प्रेम व भ्रातृभाव स्थापित करके उनसे मिलजुलकर ही ढूढना पडेगा जिससे उनके दुखो व कष्टों को हम समझ सके और अपनी सम्पन्नता से उनको लाभान्वित कर सकें। यही सच्चा वैदिक (मानव) धर्म है जिसका हमे पालन करना चाहिए। इसके लिए हमको उनके बच्चों के लिए शिक्षा व दवाई का प्रबन्ध करना होगा, उनके अभावों को दूर करके उनके रहने, सहने, खाने, पीने की व्यवस्था करनी होगी और उनके जीवन को उनको मनुष्यधारा से जोडना होगा। साथ ही धार्मिक शिक्षा देकर सत्य सनातन वैदिक (हिन्दू) धर्म के महान् आदर्शों से अवगत कराना होगा तभी वे ईसाइयों व अन्य विधर्मियो के चगुल से बच सकेंगे, अन्यथा देश का भविष्य अन्धकार में सुनिश्चित है।

यहा यह बात बता देना अति आवश्यक है कि अंग्रेजों ने हिन्दुओ की सस्कृति व इतिहस का विनाश करने के लिए तथा हिन्दुओं मे फूट डालने के लिये अनेके प्रयत्न किये तथा चालें चलीं जिनमें देश के इतिहास को बदलवाना उनकी सबसे दूषित व घृणित चाल थी जो हिन्दुओं के अस्तित्व को कमजोर करने मे सबसे ज्यादा सहायक सिद्ध हुई। उन्होंने इतिहासज्ञों को लोभ, लालच देकर यह लिखवा दिया कि आर्य लोग तो मध्य एशिया से यानी बाहर से आये थे, जैसे कालान्तर में मुसलमान व अग्रेज आये हैं। भारत के आदिवासी तो यह वनवासी ही हैं जो आर्यों के आने से पहले यहा रहते थे। अग्रेजों ने हमारे ही वनवासी भाइयों को आदिवासी बतलाकर उन्हें भ्रमित तथा हमसे अलग करने की चाल चली जसमें वे काफी हद तक सफल भी हुए। उन्होंने इतिहास में लिखा दिया कि जंगलो व पहाडों में रहनेवाले वनवासी ही भारत के सही निवासी हैं। आर्यलोग तो बाहर से आकर आदिवासियों को अपने अस्त्रों-शस्त्रों के बल पर मार कर भगाया जिससे वे जगलों में जाकर छिपे और आर्य यहा के शासक बन बैठे। यह बिल्कुल सफेद झूठ और मनघडन्त बात है। महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' में सृष्टि की रचना के क्रम में स्पष्ट लिखा है कि आर्य ही इस भारत भूखण्ड पर सबसे पहले आकर बसे थे, उनसे पहले यहा कोई मनुष्य जाति नहीं रहती थी। इसलिए आर्यो ने इस भूखण्ड का नाम आर्यवर्त रखा जो सर्वविदित है। महर्षि दयानन्द के पश्चात् डॉ० सम्पूर्णानन्द जैसे अनेक विद्वानो व इतिहासज्ञो ने भी यह स्वीकार किया कि आर्य जो बाद में हिन्दू नाम से सम्बोधित होने लगे, वे ही यहा के आदिवासी हैं। महाकवि जयशंकर प्रसाद की इन पक्तियों से भी यही सिद्ध होता है—

किसी का हमने छीना नहीं, प्रकृति का रहा पालना यहा।
हमारी जन्मभूमि थी यहीं, कहीं से हम आये थे नहीं।।
वही है रक्त वही है देश, वही साहस है वैसा ज्ञान।
वही शान्ति वही शक्ति, वही हम दिव्य आर्य सतान।।

जिस प्रकार शहरों, कस्बों मे बसनेवाले हिन्दू हैं, वैसे ही जगलों में पहाडों में बसनेवाले वनवासी भाई भी हिन्दू ही हैं। इसलिए उनके पर्व, त्यौहार, रीति-रिवाज, देवी-देवताओं, विवाह-शादी सब कुछ तो हिन्दुओ जैसा ही है सिर्फ बहुत समय तक अज्ञान व अभावों से ग्रसित रहने के कारण उनमें भूत, प्रेत, गण्डा, डोरी, ताबीज व चमत्कार जैसे अन्धविश्वासों ने घर कर लिया है जिससे वे पिछड गये हैं और ईसाई मिशनरियां अपने देश के विधान में लिखा धर्मनिरपेक्षता तथा छद्म सेवाकार्य की आड में उनकी अशिक्षा तथा गरीबी का नाजायज फायदा उठाकर उनका धर्म परिर्वन कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में अब सब हिन्दू सामाजिक सस्थाओं का चाहे वे पौराणिक हों, आर्यसमाजी हो, सिख हों, जैन हों, बौद्ध हों, सभी का यही पावन कर्त्तव्य बन जाता है कि हम अपने वनवासी भाइयो को सब किस्म का सहयोग देकर उनको अपने साथ लेकर उनको मुख्य धारा से जोडते हुए एकजुट होकर भारत को उन्नत व समृद्धिशाली बनाने का भरसक प्रयत्न करें तभी हमारा प्यारा भारत जो अभी दयनीय स्थिति मे है वह सुदृढ व 'खुशहाल' बन सकेगा और तभी हम अपने देश के प्राचीन गौरवपूर्ण पद 'विश्वगुरु' को पुन: प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

—खुशहालचन्द्र आर्य,
१८०, महात्मा गांधी रोड (दोतल्ला), कलकत्ता

'ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत' के अनुसार ब्रह्मचर्य मृत्यु पर भी विजय करनेवाला होता है। मानसिक सुख शान्ति और दीर्घ जीवन का सर्वोपरि साधन ब्रह्मचर्य ही है।

एक प्रकार से पूर्ण स्वास्थ्य की नींव ही ब्रह्मचर्य है, उसके बिना स्वस्थ रहने की कल्पना ही व्यर्थ है। विद्याध्ययन में सफलता के लिए जिस बौद्धिक-तेजस्विता की आवश्यकता होती है, वह ब्रह्मचर्य के बिना कदापि संभव नहीं। आजकल प्रत्यक्ष देखा जा सकता है कि पढने की आयु में ब्रह्मचर्य का पालन न करनेवाले विद्यार्थी एकदम तेजहीन, दुबले, पतले, निर्बल, निरुत्साही, भुलक्कड और प्रतिभाहीन दिखाई देते हैं। इसलिए विद्यार्थी अवस्था में ब्रह्मचर्य का सर्वथा पालन करना नितान्त आवश्यक है। ब्रह्मचर्य से बुद्धि प्रखर होती है। एक बार पढा हुआ कभी भूलता नहीं कठिन से कठिन विषय को समझने में देर नहीं लगती और आनन-फानन में प्रश्नों का हल करने की शक्ति प्राप्त होती है। ब्रह्मचर्य से ही आकर्षक व्यक्तित्व और सुन्दर शरीर का निर्माण होता है।

ब्रह्मचर्य पालन से असीम कार्य शक्ति बढती है, इसका उदाहरण प्राचीन युग से आजतक जैसे दधिचि, परशुराम, हनुमान, भीष्मपितामह, महर्षि दयानन्द, आचार्य बिनोवा भावे आदि ने ब्रह्मचर्य का कठोर व्रत धारण कर समाजसुधार और धर्मरक्षा के लिए अनुकरणीय कर्म करके गये हैं। महात्मा गाधी जी को भी अन्त में महर्षि दयानन्द जी के जीवनचरित्र को पढने से ब्रह्मचर्य का ज्ञान हुआ और ब्रह्मचर्य का कठोर व्रत पालन किया। गाधी जी ने अपनी पुस्तक "आरोग्य की कुजी" में लिखा है।

आरोग्य की बहुत सी कुंजिया हैं और उनकी आवश्यकता है। परन्तु उन सबमे ब्रह्मचर्य मुख्य है। अच्छी हवा, अच्छी खुराक और अच्छे पानी से हम थोडा बहुत आरोग्य सपादन करते हैं, परन्तु जिस भाति हम जितना पैसा कमावें, और उतना ही खर्च करदें तो फिर हमारे पास क्या बच सकता है। मेरा अपना अनुभव भी इसी प्रकार है। एक रत्तीभर रति (सभोग) सुख के लिए, हम एक मनभर से विशेष अपना बल एक पल में खो बैठते हैं। तब हम निस्सत्त्व होजाते हैं। दूसरे दिन प्रात काल हमारा शरीर भारी रहता है। हमें चैन नहीं पडता, हमारा शरीर स्थिल हो जाता है। मन ठिकाने नहीं रहता।

ब्रह्मचर्य आश्रम की व्यवस्था आर्यधर्म की विशेषता है। अग्रेजी में ब्रह्मचर्य के लिए शब्द ही नहीं है। ब्रह्मचर्य आश्रम का लक्ष्य यह है कि मनुष्य जीवन को प्रारम्भ से ही अच्छा खाद मिले। जैसे वृक्ष को जब वह छोटा रहता है, तब उसे खाद की अधिक आवश्यकता होती है, बडा होने के बाद खाद देने से जितना लाभ है, उससे अधिक लाभ जब छोटा रहता है, तब देने से होता है। यही मनुष्य जीवन का हाल है। यह खाद अगर अन्त तक मिलता रहे तो अच्छा ही है। लेकिन बराबर नहीं मिले, तो कम से कम बचपन में तो बहुत आवश्यक है। हम बच्चो को दूध देते हैं, अगर उन्हे अन्त तक मिलता रहे तो अच्छा ही है। लेकिन बराबर नहीं मिले तो बचपन में तो मिलना ही चाहिए।

शरीर की तरह आत्मा और बुद्धि को भी जीवन के प्रारम्भकाल में अच्छी खुराक मिलनी चाहिए, इसलिए ब्रह्मचर्य रक्षा जीवन का आधार है।

—स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती
योगस्थली आश्रम, महेंद्रगढ

धार्मिक पर्व आदि पर प्रसारित : अप-संस्कृति (विकृति)

पर्व, त्यौहार और उत्सव किसी देश की सस्कृति, परम्परा तथा उसके जीवन दर्शन के परिचायक होते हैं। हमारे देश में वैदिक पर्व तो मनाये ही जाते हैं, महापुरुषों के जन्म दिन, विशिष्ट ऐतिहासिक घटनाओं तथा अनेक पुरा-कथाओ, पुरा-आख्यानों तथा जनश्रुतियों से जुडे पर्व-त्यौहार भी अत्यन्त समारोहपूर्वक मनाये जाते हैं। कुछ वर्ष पूर्व तक इन पर्वों तथा उत्सवों को मनाने में पूर्ण गरिमा, शालीनता, शिष्टता तथा लोक भावनाओं का सम्मान किया जाता था, किन्तु ज्यों-ज्यो सिनेमा, टी०वी० आदि का अधिकाधिक प्रचार हुआ पर्वों और त्यौहारों की शालीनता और मर्यादा गायब होती गई। इस प्रकार के आयोजनों में अपसंस्कृति के दूषित एव हानिकर विषाणु प्रविष्ट होने लगे तथा आज तो इनका रूप इतना विकृत होगया है कि इनमें निहित सास्कृतिक तत्त्व तथा भारतीयता के जीवन मूल्य सर्वथा नष्ट होगये हैं। इसके लिए सर्वप्रथम तो हम स्वय को ही दोषी ठहराते हैं, क्योंकि अर्धशती से अधिक समय हमें स्वतन्त्रता प्राप्त किये होगया, हमने अभी तक राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण नहीं किया और न अपनी पृथक् पहचान ही बनाई। केवल शासको के परिवर्तन से ही कोई स्वाभिमानी राष्ट्र सन्तोष का अनुभव नहीं करता। यदि स्वाधीनता प्राप्त करने के पश्चात् भी हम विदेशियो के अनुकरण करने को ही अपने कर्तव्य की इतिश्री समझते हैं और स्वदेश के गौरव, राष्ट्रीय चरित्र तथा स्वकीय अस्मिता के प्रति उपेक्षा धारण किये रहते हैं, तो इसे कोई शुभलक्षण नहीं कहेगा।

हमारे इन पर्वों और त्याहारो मे अपसंस्कृति तथा चरित्रहीनता के विषैले तत्त्व किस प्रकार प्रविष्ट होगये हैं, इसे कुछ उदाहरणों से समझा जासकता है। लोकमान्य तिलक ने महाराष्ट्र में गणेशपूजा तथा गणेश उत्सवों का आरम्भ एक विशिष्ट प्रयोजन के लिए किया था। वे चाहते थे कि सामूहिक गणेश पूजाओं से हिन्दूसमाज के विभाजित और विच्छिन्न घटकों में ऐक्य, परस्पर प्रेम भावना तथा सहयोग को बढावा मिले। आब्राह्मण शूद्रपर्यन्त, स्वय को आर्य (हिन्दू) कहनेवाला जनसमूह गणेशोत्सवों के द्वारा सगठन के सूत्र में बधें, एक दूसरे के सुख-दु:ख को पहचाने तथा जातीय एकता को सुदृढ करे। गणेश उत्सवों को प्रचलित करने के पीछे तिलक महाराज की यही भावना थी। गणेश समारोहों से उत्पन्न जनचेतना तथा जातीय ऐक्य मे हुई वृद्धि को अनुभव कर अंग्रेज सरकार ने तो अनेक बार इन्हें प्रतिबंधित भी किया किन्तु तत्कालीन महाराष्ट्र प्रजा ने इस उत्सव को अपना जातीय त्योहार माना और उसमें आनेवाली किसी भी बाधा को स्वीकार नहीं किया। गणेशोत्सव हमारी आजादी की लडाई का एक अभिन्न अग था।

महा हम इस विवाद को उठाना नहीं चाहते कि वैदिक देवता गणपति (अथवा ब्रह्मणस्पति) यजुर्वेद के २३वें अध्याय में और पौराणिक गौरी पुत्र, लम्बोदर, एकदन्त, चतुर्भुज, गजानन, मोदकप्रिय तथा मूषक वाहन रखनेवाले गणेश मे कोई साम्य है या नहीं। निश्चय ही आज हिन्दुओ के सभी धार्मिक कृत्यों मे प्रथम पूज्य विघ्नविनाशक गणपति या गणेश वैदिक देवता नहीं हैं। (द्रष्टव्य-डा सम्पूर्णानन्द रचित 'गणेश') इनकी पूजा अर्चना का विधान किसी श्रौत या स्मार्त कर्मकाण्ड विधायक ग्रन्थ मे नहीं मिलता, कुछ अर्वाचीन गृह्यसूत्र इसके अपवाद अवश्य हैं। तथापि लोकमान्य द्वारा प्रचारित गणेश उत्सवो का रूप आज कितना विकृत होगया है इसे भी भुलाया नहीं जासकता। प्रथम तो अनुकरणप्रिय हिन्दूसमाज ने गणपति उत्सव को महाराष्ट्र तक सीमित न रखकर उसे अन्य प्रान्तों तक विस्तरित कर दिया।

वस्तुत भारत में गणेश चतुर्थी (भाद्रपद शुक्ला चतुर्थी) का पर्व गणेश चतुर्थी में एक दिवसीय पूजा अर्चा तक ही सीमित था किन्तु महाराष्ट्र की देखादेखी उसे बढाकर दस दिन तक के विराट् आयोजन मे बदल दिया गया। अब प्रत्येक नगर के प्रत्येक मोहल्ले मे विशालकाय गणेश प्रतिमाए स्थापित की जाती हैं तथा पर्व की धार्मिक पहचान को भुलाकर प्रतिमाओं के सामने नृत्य गीत आदि के लुभावने किन्तु कामुक कार्यक्रम किये जाते हैं। चकाचौंध करनेवाली बिजली की रोशनी, बडे-बडे पण्डाल तथा लाउड स्पीकरो पर कानो के पर्दों को फोड देनेवाला, भीख प्रकारवाला पाप सगीत आज के गणपति पर्वो मे अनिवार्यत देखा जाता है। मोहल्ले के आवारा तथा गुण्डे टाइप के युवक कई दिन पहले ही गणेश उत्सव के लिए चदा एकत्र करने के लिए टोलीबद्ध अभियान चलाते हैं। इस चदे के लिए साम, दाम, दण्ड, भेद सभी प्रकार के साधन काम मे लाये जाते हैं। धनिको के बैठक गृहो मे बलपूर्वक प्रवेश कर उनसे जबरदस्ती चदा वसूलना, डरा धमकाकर यहा तक कि पिस्तौल दिखाकर व्यापारियों से मोटी रकम हथियाना और पर्व की अवधि में ही इस धन का अपव्यय (मदिरा पीने-पिलाने में) करना आज के गणेशोत्सवो की यही फलश्रुति है। शिवसेना का कार्य व्यापार पहले महाराष्ट्र तक ही सीमित था, अब यह पार्टी अन्य प्रान्तों मे भी अपना विस्तार कर रही है। फलत शिव सैनिको ने गणेशोत्सवो के आयोजन का दायित्व खुद ही ले लिया है।

इस आयोजनो मे धार्मिक कृत्य, पूजा-उपासना तो नाम मात्र की होती है अधिक जोर पण्डालो की सजावट तथा भव्य आयोजनों पर ही रहता है। विसर्जन के दिन बडी भीड को साथ लेकर प्रतिमाओ को नगर के किसी जलाशय मे प्रवाहित करने के लिए जब यह समूह चलता है तो आशका यही रहती है कि उत्तेजित वातावरण कहीं साम्प्रदायिक उपद्रव में न बदल जाये। अधिकारियो और पुलिस को अतिरिक्त सावधानी बरतनी पडती है, मैजिस्ट्रेटो की अतिरिक्त नियुक्ति की जाती है तथा कानून एव व्यवस्था को सभालने के अतिरिक्त पुलिस दल बुलाने पडते हैं। यदि सचमुच इन जुलूसो में भक्ति और अध्यात्म भावो की ही प्रधानता रहे तब तो उपद्रवो और दगो की आशका ही नहीं रहनी चाहिये। भारत का सिख समुदाय और जैनमतावलम्बी अपने गुरुपर्वों तथा महावीर जयन्ती के अवसर पर नगर कीर्तन निकालते हैं। इनमे भी भारी सख्या मे स्त्री-पुरुष, आबाल वृद्ध सभी सम्मिलित होते हैं किन्तु शायद ही कभी गुरुपर्व तथा महावीर जयन्ती के जुलूसो के कारण दगे भडके हो या उपद्रव हुए हो। फिर यह समस्या गणेश प्रतिमाओ के विसर्जन पर ही क्यो उत्पन्न होती है। इसके दो कारण हैं—इन जुलूसो मे भडकाने वाले नारे लगाये जाते हैं। विरोधी मत-सम्प्रदायवालो की भावनाओ पर चोट पहुचानेवाले जयघोष किये जाते हैं तथा उन गलियो और मार्गो से जुलूस को निकालने का आग्रह किया जाता है जहा जाने से अशान्ति उत्पन्न होने की आशका रहती है।

अब मिट्टी तथा कबाड से बनी विशालकाय प्रतिमाओं को जलाशयो में निमग्न करने के कारण होनेवाले जलप्रदूषण की चर्चा करे। तालाबो का जल तो इससे अपेय

ओ३म्

आर्य पर्वों की सूची

सन् २००१ ई० तदनुसार विक्रमी संवत् २०५७-५८

क्र०सं०	पर्व नाम	चन्द्र तिथि	सम्वत् तिथि	अंग्रेजी तिथि	दिवस
१	लोंहडी	माघ वदी ४	२०५७	१३-१-२००१	शनिवार
२	मकर सक्रान्ति	माघ वदी ५	२०५७	१४-१-२००१	रविवार
३	वसन्त पचमी	माघ सुदी ५	२०५७	२९-१-२००१	सोमवार
४	सीताष्टमी	फाल्गुन वदी ८	२०५७	१५-२-२००१	गुरुवार
५	**ऋषिपर्व** महर्षि दयानन्द जन्म दिवस	फाल्गुन वदी १०	२०५७	१७-२-२००१	शनिवार
६.	,, ,, शिवरात्रि (महर्षि दयानन्द बोधदिवस)	फाल्गुन वदी १३	२०५७	२१-२-२००१	बुधवार
७	लेखराम तृतीया	फाल्गुन सुदी ३	२०५७	२६-२-२००१	सोमवार
८	नवसस्येष्टि (होली)	प गुन सुदी १५	२०५७	९-३-२००१	शुक्रवार
९	आर्यसमाज स्थापना दिवस/ चैत्र शुक्लप्रतिपदा (नवसवत्सर)	चैत्र सुदी १	२०५८	२६-३-२००१	सोमवार
१०	रामनवमी	चैत्र सुदी ९	२०५८	२-४-२००१	सोमवार
११	वैशाखी	वैशाख वदी ६	२०५८	१३-४-२००१	शुक्रवार
१२	हरि तृतीया (हरयाली तीज)	श्रावण सुदी ३	२०५८	२३-७-२००१	सोमवार
१३	**वेदप्रचार समारोह** श्रावणी उपाकर्म (रक्षाबधन)	श्रावण सुदी १५	२०५८	४-८-२००१	शनिवार
१४	,, ,, ,, ,, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	भाद्र वदी ८	२०५८	१२-८-२००१	रविवार
१५	विजयदशमी (सिद्धान्ती जयन्ती)	आश्विन सुदी १०	२०५८	२६-१०-२००१	शुक्रवार
१६	गुरुवर स्वामी विरजानन्द दण्डी दिवस	आश्विन सुदी १२	२०५८	२८-१०-२००१	सोमवार
१७.	महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस (दीपावली)	कार्तिक वदी १४	२०५८	१४-११-२००१	बुधवार
१८	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	अगहन सुदी ९	२०५८	२३-१२-२००१	रविवार

विशेष टिप्पणी—आर्यसमाजें इन पर्वों को उत्साहपूर्वक मनाये। देशी तिथियो मे घट-बढ होने से पर्व तिथि मे परिवर्तन होसकता है।

—**सभामंत्री**

होता ही है, जलाशयो की भव्यता तथा सौन्दर्य भी नष्ट होता है। सरकार भी इस परिस्थिति मे मूकदर्शन बनी रहती है। यदि वह जनसाधारण के हित को ध्यान मे रखकर कहीं बदिश लगाये तो धर्म पर आघात होने की दुहाई दी जाती है। नतीजतन आप प्रतिवर्ष गणेश प्रतिमा विसर्जन के अवसर पर होनेवाले साम्प्रदायिक उपद्रवो, धन-जन की हानि तथा साम्प्रदायिक सौहार्द के ह्रास के समाचार पढते हैं।

जो स्थिति देश में गणेशोत्सवों मे प्रविष्ट अपसस्कृति ने पैदा की है। बगाल मे मनाये जानेवाली दुर्गापूजा के समारोहो मे तो यह विकृति बहुत पहले ही आगई थी। आश्विन के नवरात्रो की दुर्गापूजा बग समाज का एक धार्मिक सास्कृतिक तथा जातीय पर्व है जो शताब्दियो से मनाया जाता रहा है। मार्कण्डेय पुराणान्तर्गत दुर्गा सप्तशती के प्रकरण मे दुर्गापूजा का मूल देखा जाता है। यद्यपि हम पुराण वर्णित आख्यानो की आपात रमणीय, कथित वैज्ञानिक अथवा मन कल्पित रूपकात्मक व्याख्या करने के पक्ष मे नहीं हैं, किन्तु वर्षों पूर्व स्वर्गीय पुरुषोत्तमदास टण्डन द्वारा की गई सप्तशती मे वर्णित दुर्गा के असुर सहार के उपाख्यान की व्याख्या हमे रुचिकर लगी। टण्डन जी ने बताया था कि जब समाज मे आसुरी शक्तियो की वृद्धि हो जाती है, जनसामान्य को दानवीय प्रवृत्तियो के दुष्टजनो का मुकाबला करने मे कठिनाई महसूस होती है तो समाज के विचारशील लोगो का यह कर्तव्य होजाता है कि वे इन दुष्ट प्रवृत्ति के लोगो का सामूहिक प्रतिकार करे। इसके लिए उन्हे अपने वैयक्तिक मतभेद तो भुलाने पडते ही हैं एक-एक व्यक्ति अपनी विशिष्ट शक्तियो क्षमताओ तथा गुणो को एकरूपता देता है जिससे ऐसी शक्ति का निर्माण होता है जो असुर समूह का विनाश कर समाज मे सुखचैन और शान्ति का प्रसार करती है। इसी तथ्य को समझाने के लिए सप्तशती के लेखक ने विभिन्न देवताओ (इन्द्र, वरुण, अग्नि आदि) द्वारा अपने-अपने आयुधो को देवी को प्रदान करना तथा इस समग्र सचित, सामूहिक शक्ति के द्वारा दुर्गा द्वारा शुम्भ, निशुम्भ, रक्तबीज, महिष जैसे दानवो का दलन करना रूपकशैली मे वर्णित किया है।

टण्डन जी के मतानुसार सप्तशती की दुर्गा मानव मे अथवा प्राणिमात्र के सभी शक्तियो, गुणो, प्रवृत्तियो तथा मनोवृत्तियो का एकीभूत आधारभूत तत्त्व है। इसे ही पुराणकार ने 'विष्णुमाया' तथा 'योगमाया' आदि शब्दो से अभिहित किया है **'या देवी सर्वभूतेषु'** से आरम्भ होनेवाले श्लोको मे प्राणियो की चेतना तथा समस्त प्रवृत्तियो का आधार इसी देवी (यह परमात्मा का ही नाम है—द्रष्टव्य सत्यार्थप्रकाश का प्रथम समुल्लास) को कहकर उस सर्वविधात्री अचिन्ता, अपरिमेय, सनातन सत्ता को भूयोभय नमस्कार किया गया है। पुराणो के आख्यानों मे यदि इस प्रकार के गूढ तत्त्वो की उपस्थिति स्वीकार भी की जाये, तथापि यह कहना निरपवाद होगा कि स्थूलता से प्यार करनेवाले, बाह्याडम्बर और आडम्बर को गले लगानेवाले हिन्दुओ ने अपने दर्शन, अध्यात्म और धर्म के गूढ तत्त्वो को कभी समझा ही नहीं।

दुर्गापूजा के औचित्यानौचित्य की चर्चा न भी करें तो इतना कहा जा सकता है कि बग समाज मे विशेषत तथा भारतीय हिन्दू समाज में प्रचलित यह दुर्गार्चन अत्यन्त विकृत होचुका है। कलकत्ता मे दुर्गापूजा के चार दिन भयकर ध्वनिप्रदूषण, वायुप्रदूषण तथा चरित्रप्रदूषण के दिन बन जाते हैं। हजारो पूजा पण्डालो को सजाने मे तो लाखो रुपये व्यय होते ही हैं, वैसा ही कानफोडू सगीत ध्वनिविस्तारक यत्रो से प्रसारित होकर समीप के वृद्धों, रोगियो तथा अध्ययनरत छात्रों की नींद हराम कर देता है। शासन और पुलिस भी धर्म के नाम पर आयोजित किये जानेवाले आडम्बरो को प्रतिबधित करने मे अशक्यता अनुभव करती है। देवी महिषासुर मर्दनी की पूजा अर्चा तो नाममात्र ही होती है। इतना अवश्य है कि प्रतिमा-निर्माताओ की बन आती है। वे कुछ दिनो मे पर्याप्त धन उपार्जित कर लेते हैं। अपसस्कृति के अन्य तत्त्व तो यहा भी यथावत् मौजूद रहते हैं। दुर्गा विसर्जन के समय होनेवाले उपद्रव तथा अपात्र आयोजको द्वारा डरा धमकाकर चदा वसूलना आदि अब सामान्य बाते हो गई हैं। यदि दुर्गापूजा मे ये दोष नहीं आये होते तो दुर्गापूजा बगाली लोगो का एक शालीन सास्कृतिक तथा भद्रता के मूल्यो को प्रोत्साहित करनेवाला आदर्श पर्व था। बगाली भद्र लोग इस पर्व पर दीपावली के पर्व की ही भाति हर्ष, उल्लास तथा प्रमोद से स्वय को प्रफुल्लित अनुभव करता था। सद्गृहस्थ नवीन, वस्त्र आभूषण तथा मिष्टान्नो को तो खरीदते ही हैं पठनशील बगाली इस अवसर पर विमल मित्र, शकर, ताराशकर बद्योपाध्याय आदि बगला कथाकारों की रचनाओ को क्रय करना भी नहीं भूलते। यह एक अच्छी बात है कि बगाल के अलावा अन्य नगरों प्रान्तो मे बसे प्रवासी बगाली दुर्गापूजा के पर्व को परम्परागत ढग से मनाकर अपनी सास्कृतिक विरासत को जीवित रखे हुए हैं।

बगाल की दुर्गापूजा के उत्सवो मे जो विकृति आई, कमोबेश गुजरात मे नवरात्रो के अवसर पर दुर्गा पण्डालो में होनेवाले गरबा नृत्यों ने वही बुराई पैदा कर दी है। गुजरात से भिन्न अन्य किसी प्रान्त में नवरात्र के अवसर पर मौहल्लों मे पण्डाल बनाकर दुर्गापूजा की प्रथा कभी नहीं रही। शक्तिपीठो और देवी मंदिरों मे भक्तगण यथाश्रद्धा पूजा अर्चा करते थे। शाक्त मतानुयायी अपने घरो पर ही पूरे नौ दिन तक दुर्गा प्रतिमा की पूजा, सप्तशती पाठ, अष्टमी के दिन सप्तशती के श्लोको का विनियोग करते हुए हवन याग आदि किये जाते थे। नवरात्रो के अन्तिम दिन पशुबलि की भयकर निर्मम तथा अनुमाषी प्रथा तो नेपाल तथा बगाल के अतिरिक्त यत्र तत्र कुछ अन्य शाक्त स्थलों में आज भी प्रचलित है। गुजरात की गरबा नृत्यपरम्परा तो अब नाममात्र की रह गई है। अन्य प्रान्तो में भी गुजरात के गरबों के अनुकरण पर मोहल्लो के सार्वजनिक स्थलो पर पूजा पण्डाल बनाकर इस किस्म के नृत्यगीत किये जाते हैं। गरबों के नाम पर नौजवान लडके वासनोत्तेजक, अश्लील हावभाव प्रदर्शक अभिनय करते हुए शराब के नशे मे चूर हो, सह नृत्यागनाओ के अस्पृश्य अगो के स्पर्श की कामनावाले होकर जो अभद्र तथा नारकीय दृश्य उपस्थित करते हैं वह वर्णन की सीमा मे नहीं आता है। इन गरबो के लिए युवतिया विशेष प्रकार के भडकीले वस्त्र सिलवाती हैं जिनकी पारदर्शिता, अंग-प्रत्यगों की झलक दर्शकों (अधिक सही अर्थ में रसिकजनों) तक पहुचा देती है। गरबों के आश्रम में दुर्गास्तुति का एकाध भजन तो नाममात्र के लिए ही होता है, किन्तु फिल्मी संगीत की मादक धुनों पर जो गरबे या डांडिया रास किया जाता है वह रात्रि के निशेष होने तक अनवरत चलता रहता है और इसी बीच प्रणयी युगल को अभिसार के अवसर 'देवीकृपा' या 'दैवीकृपा' से उपलब्ध होते रहते हैं।

आधुनिक विकृत मनोवृत्ति के परिचायक इन धार्मिक पर्वों की यह कलक गाथा आधुनिक भारतीय मानस की रुग्ण मानसिकता की परिचायक तो है ही, धर्म के नाम पर उत्पन्न कल्मष, अपावनता, अश्लीलता तथा अभद्रता का चरम निदर्शक भी है।

डा० भवानीलाल भारतीय,
८/४२३ नन्दनवन, जोधपुर (राजस्थान)

आर्यसमाज मल्हारगंज इन्दौर का शताब्दी समारोह सम्पन्न

महर्षि दयानन्द इन्दौर दो बार आये थे

आर्यसमाज मल्हारगज, इन्दौर के शताब्दी समारोह मे विशाल जनसमूह

आर्यसमाज मल्हारगंज, इन्दौर का शताब्दी समारोह २६, २७ तथा २८ नवम्बर, २००० को समाज के भवन-परिसर मे अत्यन्त भव्यता के साथ मनाया गया। इस आर्यसमाज की स्थापना माघ शुक्ल ४, मगलवार सवत् १९४४ विक्रमी तद्नुसार १७ जनवरी १८८८ को ब्रह्मचारी नित्यानन्द तथा स्वामी विश्वेश्वरानन्द के कर-कमलो द्वारा की गई थी। इसकी स्थापना से पूर्व महान् क्रान्तिकारी वेदोद्धारक तथा स्वतन्त्रता के उद्घोषक महर्षि दयानन्द जी इदौर में दो बार पधार चुके थे। महाराजा तुकोजीराव द्वितीय के विनम्र अनुरोध एव आमन्त्रण पर महर्षि दयानन्द प्रथम बार २९-११-१८८१ को इन्दौर पधारे थे। संयोगवश महाराजा किसी अत्यावश्यक शासकीय कार्य से दिल्ली चले गये। महर्षि यहा २-३ दिन उपदेश देकर मुम्बई चले गए। इसके कुछ समय पश्चात् स्वामी जी पुन सन् १८८२ मे इन्दौर आये तथा यहा प्राय एक सप्ताह तक महाराजा तुकोजीराव होलकर के अतिथि के रूप मे रुके और इन्दौर की जनता को अपने उपदेशो से उपकृत करते रहे। इसके पश्चात् स्थानीय भक्तो ने १७ जनवरी १८८८ को इस आर्यसमाज की स्थापना वैदिक धर्म के प्रचार हेतु की।

इस शताब्दी से पूर्व महर्षि दयानन्द के इंदौर आगमन की शताब्दी सन् १९८२ मे मनाई जा चुकी है। आर्यसमाज मल्हारगज के शताब्दी समारोह के अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के कार्यकारी प्रधान स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती, डॉ० वागीश जी विद्याभास्कर, डॉ० ओमदत्त जी मेरठ, डॉ० सजयदेव जी हरयाणा तथा श्रीमती पुष्पा जी भजनोपदेशिका रेवाडी पधारे। समस्त प्रतिनिधियो का स्वागत माननीय न्यायाधिपति श्री वीरेन्द्रदत्त जी ज्ञानी ने उद्बोधन द्वारा किया। माननीय ज्ञानी जी ने अपनी मधुर एव ओजस्वी वाणी में अपना स्वागत भाषण पढा। समारोह मे आये समस्त विद्वानो एव प्रतिनिधियो का स्वागत माननीय न्यायाधिपति प० वीरेन्द्रदत्त जी ज्ञानी ने अपने उद्बोधन द्वारा प्रदेश एव प्रान्तेतर प्रतिनिधियो के प्रति आभार प्रकट किया।

इस शताब्दी समरोह मे भाग लेने हेतु मध्यभारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा भोपाल के प्रधान श्री गौरीशकर जी कौशल तथा मत्री सभा श्री भगवानदास जी अग्रवाल, गुरुकुल होशगाबाद के प्रतिनिधि तथ म प्र एव बरार आर्य प्रतिनिधि सभा के मत्री श्री लक्ष्मीनारायण जी भार्गव पधारे थे। उल्लेखनीय है कि इस समारोह मे उज्जैन, देवास,धार, निमाड, खडवा, जामनगर आदि स्थानों से प्राय डेढ-दो हजार श्रद्धालुगण पधारे थे। इस प्रकार यह समारोह अत्यन्त भव्य रूप मे सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस सम्पूर्ण समारोह की सक्षिप्त किन्तु महत्त्वपूर्ण वार्ता आकाशवाणी इन्दौर द्वारा २-१२-२००० को 'नगर और नागरिक' के अन्तर्गत रात्रि मे प्रसारित की गई।

समारोह के चौथे दिन स्थानीय केन्द्रीय कारागार गृह में कैदियो मे धार्मिक और नैतिक जागरण हेतु यज्ञ और भजन के पश्चात् पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी एव वैदिक विद्वानो के उपदेश हुए। कारागार अधीक्षक श्री खन्नाजी ने आयोजन हेतु आभार प्रकट किया। जेल के कार्यक्रम का सचालन आर्यसमाज मल्हारगज की मत्री श्रीमती स्नेहलता हाण्डा ने किया। इस प्रकार यह शताब्दी समारोह अत्यन्त भव्यता और गरिमापूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ।

—स्नेहलता हाण्डा, मत्री
आर्यसमाज मल्हारगज इन्दौर

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न

दिनाक २४-१२-२००० को आर्य गर्ल्स सी०सै० स्कूल कालका में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। आर्यसमाज के मंत्री श्री सुरेन्द्रपाल शर्मा, प्रधान श्री महेन्द्रलाल गुप्ता जी, श्री रणधीरसिह चौधरी जी तथा अन्य सदस्यगणों ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के बारे में विचार व्यक्त किये। विद्यालय की छात्राओं तथा अध्यापिकाओ ने मनोहर भजन प्रस्तुत किये। —प्रधानाचार्या, आर्य कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, कालका

यज्ञ सम्पन्न

दिनाक ६-१-२००१ को ग्राम डहीना मे श्री रामनिवास आर्य के निवास स्थान पर स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती, प्रधान, यतिमण्डल दक्षिणी हरयाणा की अध्यक्षता मे यज्ञ का आयोजन किया गया।

यज्ञ का कार्य प० इन्द्रमुनि आर्य पुरोहित धर्मप्रचार मन्त्री यतिमण्डल दक्षिणी हरयाणा ने करवाया।

यजमानो का स्थान श्री रामनिवास आर्य कोषाध्यक्ष आर्यसमाज डहीना ने अपनी धर्मपत्नी श्रीमती सन्तोषदेवी आर्य के साथ ग्रहण किया। यजमानो को यज्ञोपवीत दिलाये गये तथा अन्य आठ स्त्री-पुरुषो को भी यज्ञोपवीत दिलाये। यज्ञ के पश्चात् श्री रामस्वरूप आर्य पूर्व प्रिंसिपल ने अपने विचार प्रकट करते हुए बताया कि यज्ञ की महिमा को वेदो मे श्रेष्ठतम बताया गया है अत हम सबको यज्ञ प्रतिदिन करना चाहिए।

अन्त मे श्री रामस्वरूप आर्य पूर्व प्रिंसिपल ने सभी आगन्तुको का धन्यवाद किया और सभी को प्रसाद वितरण किया तथा ५० रुपये आर्य प्रतिनिधि सभा को दानस्वरूप दिये।

—श्री अत्तरसिह आर्य, उपप्रधान आर्यसमाज डहीना

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

आर्यसमाज नेहरू ग्राउड फरीदाबाद	२३ से २८ जनवरी २००१
आर्यसमाज आर्य नगर जिला हिसार	२७ व २८ जनवरी, २००१
आर्यसमाज औरगाबाद मित्रोल (फरीदाबाद)	६ से ११ फरवरी २००१
गुरुकुल झज्जर का वार्षिकोत्सव	२४-२५ फरवरी २००१
विशाल आर्य महासम्मेलन सोनीपत	४ मार्च, २००१
अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, मुम्बई	२३ से २६ मार्च, २००१

—डॉ० सुदर्शनदेव आचार्य, वेदप्रचाराधिष्ठाता

पृष्ठ १ का शेष– आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा की..........

सरकार के जल ससाधन मन्त्री श्री अर्जुनदास सेठी के नाम पत्र लिखकर हरयाणा का पक्ष रखने का अधिकार देने का प्रस्ताव किया, जिसे सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया। श्री दयाकिशन गोच्छी ने हरयाणा के सभी राजनैतिक दलो का सहयोग लेने का सुझाव दिया। श्री जगदीशप्रसाद कोशिक एडवोकेट हरयाणा निर्माण मोर्चा के नेता ने कहा कि इस आन्दोलन की तैयारी के लिए ग्रामो तथा नगरो मे वाहनो मे लाउड स्पीकर बाधकर प्रचार करके जनमत तैयार किया जावे। इस कार्य मे हमारा दल पूरा सहयोग देगा। महाशय फतेहसिह भण्डारी गुरुकुल झज्जर ने मुख्यमन्त्री श्री चौटाला से मिलकर झज्जर मे पानी की कमी दूर करने की माग की परन्तु उन्होने शिष्टमण्डल की माग पर ध्यान नहीं दिया।

वेदप्रचार मण्डल जिला सोनीपत के अध्यक्ष महाशय प्रतापसिह आर्य ने कहा कि आन्दोलन मे पूरा सहयोग तन, मन तथा धन से दिया जावेगा और आन्दोलन मे पहले जत्थे मे मैं अपने सहयोगियो के साथ गिरफ्तारी दूगा।

श्री रामधारी शास्त्री सभा उपमन्त्री ने जिला जीन्द तथा कैथल की ओर से इस आन्दोलन की तैयारी हेतु पूरा समय देने का आश्वासन दिया। प्रमुख स्थानो पर नुक्कड सभाओ का आयोजन करने का सुझाव भी दिया। महाशय बलदेवसिह आर्य सेवानिवृत्त अध्यापक ने कहा कि अन्य सेवा-निवृत्त अध्यापको का सहयोग लेकर श्री सत्यवीर शास्त्री (गढी बोहर) के सयोजकत्व मे पूर्व अध्यापक आन्दोलन की भान्ति पूरा सहयोग दिया जावेगा।

सभा के मन्त्री प्रो० सत्यवीरसिह शास्त्री डालावास ने बैठक मे पधारे सभी नेताओ तथा कार्यकर्ताओं का धन्यवाद करते हुए कहा कि हरयाणा बनवाने मे आर्यसमाज का प्रमुख योगदान रहा है। इसी प्रकार हरयाणा की प्यासी धरती मे पानी लाने के परोपकारी कार्य मे आर्यजनता अग्रणी रहेगी। आपने हरयाणा के हितो की रक्षा के लिए सभी धार्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक दलो से सहयोग देने की अपील की।

अन्त मे सभा के कार्यकर्ता प्रधान स्वामी इन्द्रवेश पूर्व सासद ने उपस्थित कार्यकर्ताओ का आह्वान करते हुए कहा कि इस आन्दोलन की तैयारी के लिए सभी को अपने अपने क्षेत्रो मे प्रचार हेतु आज से ही जुट जाना चाहिए। हमे त्यागी तपस्वी आर्यनेता पूज्य स्वामी ओमानन्द जी का आशीर्वाद प्राप्त है। इनके नेतृत्व मे जो भी आन्दोलन किया गया उसमे सफलता मिली है। शराबबन्दी आन्दोलन का उल्लेख करते हुए कहा कि चौ० बसीलाल जी को आर्यजनता ने पूरा सहयोग दिया। उन्होंने मुख्यमन्त्री का पद सम्भालते ही शराबबन्दी लागू करदी, परन्तु थोडे समय के बाद शराब के माफियो के चक्कर मे फसकर पुन शराब खोलकर हरयाणा की जनता को धोका दिया। इसी कारणगत चुनाव मे जनता ने उन्हे नकार दिया।

आपने जोर देकर कहा कि हरयाणा की वीर जनता हरयाणा मे पानी लाने के लिए पूरी तैयारी के साथ सघर्ष करेगी। हरयाणा के साथ हो रहे इस भेदभाव तथा अन्याय को दूर कराने हेतु हमे सभी का सहयोग चाहिए।

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्दमठ रोहतक की अन्तरग सभा की बैठक दिनाक ११-१-२००१ के सर्वसम्मत निर्णयानुसार सभा से सम्बद्ध सभी आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि आर्यसमाज बड़ा बाजार, पानीपत के निम्नलिखित चार प्रतिनिधियों के नाम सभाविरोधी गतिविधियों के कारण सभा की प्रतिनिधि (मतदाता) सूची से काटे जाते हैं।

सभा के अनुशासन में न रहने तथा बोगस सभा से जुड़े रहने तक इन व्यक्तियों को सभा से सम्बद्ध कोई भी आर्यसमाज अपना प्रतिनिधि, अधिकारी तथा सदस्य न बनाए।

	नाम	पिता का नाम	सूची क्रमाक	सूची पृष्ठसख्या
१	श्री नवनीत सिंगला	श्री भविष्यचन्द्र	४०	१८/२०
२	श्री मेघराज आर्य	श्री खिल्लूराम	४१	
३	श्री कुलभूषण आर्य	श्री योगेश्वरचन्द	४२	
४	श्री वीरेन्द्र सिंगला	श्री रामानन्द आर्य	४३	

—प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामंत्री

यज्ञ सम्पन्न

दिनाक ५-१-२००१ को महेन्द्रगढ के चामधेड़ा रोड पर श्री बनवारीलाल सैनी के कृषिफार्म पर स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती प्रधान यतिमण्डल दक्षिणी हरयाणा की अध्यक्षता मे एक यज्ञ का आयोजन किया गया।

यज्ञ का कार्य प० इन्द्रमुनि आर्यपुरोहित धर्मप्रचार मत्री यतिमण्डल दक्षिणी हरयाणा तथा महन्त आनन्दस्वरूपदास सन्त कबीरमठ मोहला एव प्रधान आर्यवीर दल महेन्द्रगढ ने करवाया। यजमानो का स्थान श्री बनवारीलाल सैनी ने अपनी धर्मपत्नी श्रीमती शारदा के साथ ग्रहण किया। यजमानो के अतिरिक्त अन्य २० महिलाओ तथा १० पुरुषो को यज्ञोपवीत धारण करवाये गये।

अन्त में स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती ने अपने प्रवचनो मे बताया कि यज्ञोपवीत केवल सन्यासी को छोडकर अन्य सभी गृहस्थी, वानप्रस्थी तथा ब्रह्मचारी को धारण करना चाहिए। यज्ञोपवीत मे तीन तार होते हैं, जो तीन ऋणो से अनृण होने की याद दिलाते रहते हैं, पहला ऋण प्रभु को कभी मत भूलो, हमेशा याद रखो, दूसरा माता-पिता की सेवा, तीसरा ऋषियो के मार्गदर्शन पर चलना आदि हैं, इस पर कुछ महिलाओ ने अपनी शकाओ का निवारण करना चाहा।

प्रश्न—हमने गुरुनामा लेरखा है, क्या हम भी यज्ञोपवीत धारण कर सकते हैं?

उत्तर—स्वामी जी ने इस बात का उत्तर दिया—'**स एष पूर्वेषामपि गुरु कालेनानवच्छेदात्**' वैसे तो गुरुओ का गुरु जो कभी काल के बन्धन मे नहीं आता, वह परमपिता परमात्मा सभी का गुरु है, परन्तु जो हमे ईश्वरप्रदत्त ज्ञान का बोध कराये, पूर्ण विद्वान्, त्यागी, तपस्वी, योगी और वेदो के विद्वान् से हमे सन्मार्ग मिले, ऐसे पुरुषो को गुरु बनाना चाहिये, जिससे मनुष्य जीवन के वास्तविक लक्ष्य को प्राप्त कर सके, जिसका **श्रेष्ठ गुरु नाम गायत्री मन्त्र है**, इसलिए प्रत्येक **गृहस्थी को गायत्री मन्त्र** का जाप करना चाहिए, इसी को **गुरुमन्त्र** कहते हैं।

अन्त मे श्री वेदप्रकाश जी आर्य मण्डलपति आर्यवीर दल महेन्द्रगढ ने सभी आगन्तुको का धन्यवाद किया तथा प्रसाद वितरण किया और ५०/- रुपये आर्य प्रतिनिधि सभा को दानस्वरूप प्रदान किये।

—दिनेश सैनी, महेन्द्रगढ

सूचना—आर्य केन्द्रीय सभा करनाल

गत वर्षों की भाति इस वर्ष भी आर्य केन्द्रीय सभा करनाल द्वारा कर्णपार्क, निकट बस स्टैण्ड, करनाल मे विक्रमीसवत् २०५७ फाल्गुन कृष्णपक्ष दशमी से त्रयोदशी, ईस्वी सन् १७-२-२००१ से २१-२-२२१ तक महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव एव बोधोत्सव मनाया जारहा है। इस समारोह मे जिला करनाल की सभी आर्यसमाजे, आर्य शिक्षण सस्थाये, वेदप्रचार मण्डल, आर्यवीर दल, आर्य युवक परिषद्, श्रद्धानन्द अनाथालय आदि भाग ले रहे हैं। समारोह स्थल पर प्रतिदिन बृहद् यज्ञ का आयोजन किया गया है। इसमे गुरुकुल के ब्रह्मचारी एव ब्रह्मचारिणिया सस्वर वेदमन्त्रो का पाठ करेगे। समारोह के पहले दिन १७-२-२००१ को बाद दोपहर दो बजे महर्षि दयानन्द के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में विशाल शोभायात्रा निकाली जायेगी। इस अवसर पर प्रतिदिन वेदप्रवचन एव उपदेश होगे। इसके अतिरिक्त बालभाषण प्रतियोगिता, महिला सम्मेलन, गोरक्षा सम्मेलन, भारतीय सस्कृति सम्मेलन, वेद सम्मेलन आदि का भी आयोजन किया गया है, जिसमे श्री राजकिशोर जी (यमुनानगर), श्री रमेशचन्द्र जी (मुरादाबाद) आदि वैदिक विद्वान् भाग लेगे। इसमें आपको शिवरात्रि के अवसर पर व्यक्ति, समाज एव राष्ट्र के लिए जागृति का सच्चा सन्देश मिलेगा। कृपया सपरिवार पधारकर इष्टमित्रो सहित धर्म एव वेदप्रचार का लाभ उठाये। बाहर से आनेवाले सज्जनो के लिए आवास एव भोजन की विशेष व्यवस्था है।

—प्रो० चन्द्रप्रकाश आर्य, सयोजक, प्रेस एव प्रचार समिति
अध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, दयालसिंह कालेज, करनाल (हरयाणा)-१३२००१

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न

नरकेसरी, स्वतन्त्रता सग्राम के नेता स्वामी श्रद्धानन्द जी सरस्वती का बलिदान दिवस आर्यसमाज जामनगर द्वारा दिनाक २२ और २३ दिसम्बर को मनाया गया। इस अवसर पर जामनगर जिला के कन्या विद्यालयो की छात्राओ की विभिन्न विषयों पर भाषण प्रतियोगिताओ का आयोजन किया गया।

प० अरुण शास्त्री जी के ब्रह्मत्व मे बृहद् यज्ञ का आयोजन हुआ तथा उपदेशक महाविद्यालय टकारा के उपाचार्य प० रामदेव जी शास्त्री ने स्वामी श्रद्धानन्द को श्रद्धाजलि अर्पित करते हुये प्रासगिक प्रवचन किया तथा श्रीमती वरुणावेन शास्त्री एव श्रीमती कैलासवेन खन्ना ने प्रसगोचित गीत प्रस्तुत किये। विद्यालय की छात्राओ ने इस अवसर पर सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर उपस्थित जनसमुदाय का मन मोह लिया।

आदर्श विवाह

दिनाक ७-१-२००१ को श्री भल्लेराम आर्य, भूतपूर्व सैनिक, आर्यसमाज के कार्यकर्ता व समाजसेवी, निवासी गाव साघी, जिला रोहतक ने अपने इकलौते सुपुत्र श्री प्रदीपकुमार का विवाह स्वर्गीय डॉ० बलवीरसिंह सिन्धु गाव खाडा खेडी (हिसार) की सुपुत्री पूनम के साथ वैदिक परम्परा के अन्तर्गत आर्य पद्धति अनुसार श्री सहदेव शास्त्री के पौरोहित्य मे हुआ। वधू पक्ष की ओर से कोई दहेज लिए बिना विवाह सूत्र मे बाधते हुये दहेज लालसा का बहिष्कार करके, समस्त समाज के समक्ष एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। मद्य तथा अनावश्यक बारातियो के काफिले के भार से वधू पक्ष को अनावश्यक अपव्यय से बचाने की सामाजिक भावना के अन्तर्गत, वर पक्ष की ओर से आर्यसमाज साघी खाण्डा खेडी, अनाथालय रोहतक, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा रोहतक तथा गऊशाला खडवाली को परमार्थिक तौर पर एक सौ एक-एक रुपये प्रत्येक सस्थान को दानस्वरूप मे भेट किये गये। भागचन्द छातर विधायक उचाना, श्री धूपसिंह मलिक एस डी ओ हासी, श्री दिलबागसिंह भूतपूर्व सरपच खाण्डा खेडी तथा श्री राजवीर श्योराण जींद ने इस अवसर पर वर तथा वधू को आशीर्वाद दिया।

योगिराज स्वामी आत्मानन्द जी की जन्मशताब्दी मनाने का निर्णय

आर्यजगत् को यह सूचित करते हुए हर्ष होरहा है कि सयुक्त पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान व हिन्दी रक्षा आन्दोलन के नायक योगिराज स्वामी आत्मानन्द जी की जन्म शताब्दी एक समारोह के रूप मे मनाने का निर्णय लिया गया है। यह समारोह सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी ओमानन्द जी के सरक्षण मे आयोजित होगा।

समारोह की रूपरेखा बनाने के लिए एक आवश्यक बैठक दिनाक ११ फरवरी २००१ को प्रात ११ बजे श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय, यमुनानगर मे बुलाई गई है। स्वामी आत्मानन्द जी के सभी प्रशसको, सहयोगियो व शिष्यो (विशेषत स्नातक मण्डल) से प्रार्थना है कि वे इस सूचना को ही निमन्त्रण पत्र समझकर उक्त स्थान व समय पर अवश्य पधारे ताकि सभी की सहमति से कार्यक्रम को अन्तिम रूप दिया जाये।

—डा० गेन्दाराम आर्य, मन्त्री श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय, शादीपुर, यमुनानगर (हरयाणा)

शोक समाचार

श्रीमती राजकली धर्मपत्नी श्री गणेशदत्त आर्य मत्री आर्यसमाज ध्यागला जिला कुरुक्षेत्र का गत दिनो स्वर्गवास होगया। आप एक समाजसेवी एव अतिथि सत्कारप्रिय महिला थीं। परमात्मा दिवगत आत्मा को तथा उनके परिवार को इस वियोग को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—सभामंत्री

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा का चुनाव सम्पन्न

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक अधिवेशन ३१ दिसम्बर को सभा के प्रधान श्री स्वामी व्रतानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता मे हुआ। सभा के निर्वाचन अधिकारी श्री धनुर्धर महापात्र की देखरेख मे सर्वसम्मति से निम्न अधिकारियो का निर्वाचन हुआ—

प्रधान—श्री स्वामी व्रतानन्द जी सरस्वती, उपप्रधान—श्री स्वामी सुधानन्द जी सरस्वती एवं प० [illegible] शास्त्री, महामंत्री—श्री अनादि [illegible], उपमंत्री—श्री सुदर्शनदेवार्य और पद्मनाभ स्वाई, कोषाध्यक्ष—श्री तेजकरण ओझा।

—सुदर्शनदेवार्य, उपमंत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ४६८७४, ५७७७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष . ४०७२२) से प्रकाशित।

यज्ञ सम्पन्न

दिनाक ५-१-२००१ को महेन्द्रगढ के चामधेडा रोड पर श्री बनवारीलाल सैनी के कृषिफार्म पर स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती प्रधान यतिमण्डल दक्षिणी हरयाणा की अध्यक्षता मे एक यज्ञ का आयोजन किया गया।

यज्ञ का कार्य प० इन्द्रमुनि आर्यपुरोहित धर्मप्रचार मंत्री यतिमण्डल दक्षिणी हरयाणा तथा महन्त आनन्दस्वरूपदास सन्त कबीरमठ सोहला एव प्रधान आर्यवीर दल महेन्द्रगढ ने करवाया। यजमानो का स्थान श्री बनवारीलाल सैनी ने अपनी धर्मपत्नी श्रीमती शारदा के साथ ग्रहण किया। यजमानो के अतिरिक्त अन्य २० महिलाओ तथा १० पुरुषों को यज्ञोपवीत धारण करवाये गये।

अन्त में स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती ने अपने प्रवचनो मे बताया कि यज्ञोपवीत केवल सन्यासी को छोडकर अन्य सभी गृहस्थी, वानप्रस्थी तथा ब्रह्मचारी को धारण करना चाहिए। यज्ञोपवीत मे तीन तार होते हैं, जो तीन ऋणो से अनृण होने की याद दिलाते रहते हैं, पहला ऋण प्रभु को कभी मत भूलो, हमेशा याद रखो, दूसरा माता-पिता की सेवा, तीसरा ऋषियो के मार्गदर्शन पर चलना आदि हैं, इस पर कुछ महिलाओ ने अपनी शंकाओं का निवारण करना चाहा।

प्रश्न--हमने गुरुनामा लेरखा है, क्या हम भी यज्ञोपवीत धारण कर सकते हैं ?

उत्तर--स्वामी जी ने इस बात का उत्तर दिया-'स एष पूर्वेषामपि गुरु. कालेनानवच्छेदात्' वैसे तो गुरुओ का गुरु जो कभी काल के बन्धन में नहीं आता, वह परमपिता परमात्मा सभी का गुरु है, परन्तु जो हमे ईश्वरप्रदत्त ज्ञान का बोध कराये, पूर्ण विद्वान्, त्यागी, तपस्वी, योगी और वेदो के विद्वान् से हमें सन्मार्ग मिले, ऐसे पुरुषों को गुरु बनाना चाहिये, जिससे मनुष्य जीवन के वास्तविक लक्ष्य को प्राप्त कर सके, जिसका श्रेष्ठ गुरु नाम गायत्री मन्त्र है, इसलिए प्रत्येक गृहस्थी को गायत्री मन्त्र का जाप करना चाहिए, इसी को गुरुमन्त्र कहते हैं।

अन्त में श्री वेदप्रकाश जी आर्य मण्डलपति आर्यवीर दल महेन्द्रगढ ने सभी आगन्तुकों का धन्यवाद किया तथा प्रसाद वितरण किया और ५०/- रुपये आर्य प्रतिनिधि सभा को दानस्वरूप प्रदान किये।

—दिनेश बौकी, महेन्द्रगढ

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न

नरकेसरी, स्वतन्त्रता सग्राम के नेता स्वामी श्रद्धानन्द जी सरस्वती का बलिदान दिवस आर्यसमाज जामनगर द्वारा दिनाक २२ और २३ दिसम्बर को मनाया गया। इस अवसर पर जामनगर जिला के कन्या विद्यालयो की छात्राओ की विभिन्न विषयों पर भाषण प्रतियोगिताओ का आयोजन किया गया।

प० अरुण शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में बृहद् यज्ञ का आयोजन हुआ तथा उपदेशक महाविद्यालय टकारा के उपाचार्य प० रामदेव जी शास्त्री ने स्वामी श्रद्धानन्द को श्रद्धाजलि अर्पित करते हुये प्रासगिक प्रवचन किया तथा श्रीमती वरुणावेन शास्त्री एव श्रीमती कैलासवेन खन्ना ने प्रसगोचित गीत प्रस्तुत किये। विद्यालय की छात्राओं ने इस अवसर पर सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर उपस्थित जनसमुदाय का मन मोह लिया।

आदर्श विवाह

दिनाक ७-१-२००१ को श्री भल्लेराम आर्य, भूतपूर्व सैनिक, आर्यसमाज के कार्यकर्ता व समाजसेवी, निवासी गांव सांघी, जिला रोहतक ने अपने इकलौते सुपुत्र श्री प्रदीपकुमार का विवाह स्वर्गीय डॉ० बलवीरसिंह सिन्धु गाव खांडा खेड़ी (हिसार) की सुपुत्री पूनम के साथ वैदिक परम्परा के अन्तर्गत आर्य पद्धति अनुसार श्री सहदेव शास्त्री के पौरोहित्य मे हुआ। वधू पक्ष की ओर से कोई दहेज लिए बिना विवाह सूत्र में बांधते हुये दहेज लालसा का बहिष्कार करके, समस्त समाज के समक्ष एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। मद्य तथा अनावश्यक बारातियों के काफिले के भार से वधू पक्ष को अनावश्यक अपव्यय से बचाने की सामाजिक भावना के अन्तर्गत, वर पक्ष की ओर से आर्यसमाज सांघी खाण्डा खेडी, अनाथालय रोहतक, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा रोहतक तथा गऊशाला खडवाली को परमार्थिक तौर पर एक सौ एक-एक रुपये प्रत्येक सस्थान को दानस्वरूप में भेंट किये गये। भागचन्द छातर विधायक उचाना, श्री धूपसिंह मलिक एस.डी.ओ. हांसी, श्री दिलबागसिह भूतपूर्व सरपंच खाण्डा खेडी तथा श्री राजवीर श्योराण जींद ने इस अवसर पर वर तथा वधू को आशीर्वाद दिया।

शोक समाचार

श्रीमती राजकली धर्मपत्नी श्री गणेशदत्त आर्य मंत्री आर्यसमाज ध्यांगला जिला कुरुक्षेत्र का गत दिनो स्वर्गवास होगया। आप एक समाजसेवी एव अतिथि सत्कारप्रिय महिला थीं। परमात्मा दिवंगत आत्मा को तथा उनके परिवार को इस वियोग को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—सभामंत्री

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्दमठ रोहतक की अन्तरंग सभा की बैठक दिनाक ११-१-२००१ के सर्वसम्मत निर्णयानुसार सभा से सम्बद्ध सभी आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि आर्यसमाज बडा बाजार, पानीपत के निम्नलिखित चार प्रतिनिधियों के नाम सभाविरोधी गतिविधियों के कारण सभा की प्रतिनिधि (मतदाता) सूची से काटे जाते हैं।

सभा के अनुशासन मे न रहने तथा बोगस सभा से जुडे रहने तक इन व्यक्तियों को सभा से सम्बन्द्ध कोई भी आर्यसमाज अपना प्रतिनिधि, अधिकारी तथा सदस्य न बनाए।

	नाम	पिता का नाम	सूची क्रमांक	सूची पृष्ठसंख्या
१	श्री नवनीत सिगला	श्री भविष्यचन्द्र	४०	१८/२०
२	श्री मेघराज आर्य	श्री खिल्लूराम	४१	
३	श्री कुलभूषण आर्य	श्री योगेश्वरचन्द	४२	
४	श्री वीरेन्द्र सिगला	श्री रामानन्द आर्य	४३	

—डॉ० सत्यवीर शास्त्री [illegible], सभामंत्री

सूचना—आर्य केन्द्रीय सभा करनाल

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी आर्य केन्द्रीय सभा करनाल द्वारा कर्णपार्क, निकट बस स्टैण्ड, करनाल मे विक्रमीसवत् २०५७ फाल्गुन कृष्णपक्ष दशमी से त्रयोदशी, ईस्वी सन् १७-२-२००१ से २१-२-२२१ तक महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव एव बोधोत्सव मनाया जारहा है। इस समारोह में जिला करनाल की सभी आर्यसमाजें, आर्य शिक्षण संस्थायें, वेदप्रचार मण्डल, आर्यवीर दल, आर्य युवक परिषद्, श्रद्धानन्द अनाथालय आदि भाग ले रहे हैं। समारोह स्थल पर प्रतिदिन बृहद् यज्ञ का आयोजन किया गया है। इसमें गुरुकुल के ब्रह्मचारी एव ब्रह्मचारिणियां सस्वर वेदमन्त्रों का पाठ करेंगे। समारोह के पहले दिन १७-२-२००१ को बाद दोपहर दो बजे महर्षि दयानन्द के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में विशाल शोभायात्रा निकाली जायेगी। इस अवसर पर प्रतिदिन वेदप्रवचन एवं उपदेश होंगे। इसके अतिरिक्त बालभाषण प्रतियोगिता, महिला सम्मेलन, गोरक्षा सम्मेलन, भारतीय सस्कृति सम्मेलन, वेद सम्मेलन आदि का भी आयोजन किया गया है, जिसमें श्री राजकिशोर जी (यमुनानगर), श्री रमेशचन्द्र जी (मुरादाबाद) आदि वैदिक विद्वान् भाग लेंगे। इसमें आपको शिवरात्रि के अवसर पर व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र के लिए जागृति का सच्चा सन्देश मिलेगा। कृपया सपरिवार पधारकर इष्टमित्रों सहित धर्म एवं वेदप्रचार का लाभ उठायें। बाहर से आनेवाले सज्जनो के लिए आवास एव भोजन की विशेष व्यवस्था है।

—प्रो० चन्द्रप्रकाश आर्य, संयोजक, प्रेस एवं प्रचार समिति

अध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, दयालसिंह कालेज, करनाल (हरयाणा)-१३२००१

योगिराज स्वामी आत्मानन्द जी की जन्मशताब्दी मनाने का निर्णय

आर्यजगत् को यह सूचित करते हुए हर्ष होरहा है कि संयुक्त पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान व हिन्दी रक्षा आन्दोलन के नायक योगिराज स्वामी आत्मानन्द जी की जन्म शताब्दी एक समारोह के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया है। यह समारोह सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी ओमानन्द जी के संरक्षण में आयोजित होगा।

समारोह की रूपरेखा बनाने के लिए एक आवश्यक बैठक दिनांक ११ फरवरी २००१ को प्रात ११ बजे श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय, यमुनानगर में बुलाई गई है। स्वामी आत्मानन्द जी के सभी प्रशसकों, सहयोगियों व शिष्यों (विशेषत. स्नातक मण्डल) से प्रार्थना है कि वे इस सूचना को ही निमन्त्रण पत्र समझकर उक्त स्थान व समय पर अवश्य पधारें ताकि सभी की सहमति से कार्यक्रम को अन्तिम रूप दिया जाये।

—डा० [illegible] आर्य, मन्त्री श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय, शादीपुर, यमुनानगर (हरयाणा)

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा का चुनाव सम्पन्न

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक अधिवेशन ३१ दिसम्बर को सभा के प्रधान श्री स्वामी व्रतानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में हुआ। सभा के निर्वाचन अधिकारी श्री धनुर्धर महापात्र की देखरेख में सर्वसम्मति से निम्न अधिकारियों का निर्वाचन हुआ-

प्रधान-श्री स्वामी व्रतानन्द जी सरस्वती, उपप्रधान-श्री स्वामी सुधानन्द जी सरस्वती एव प० विशिकेशन शास्त्री, महामंत्री-श्री अनादि वेदसेवक, उपमंत्री-श्री सुदर्शनदेवार्य और पद्मनाभ स्वाई, कोषाध्यक्ष-श्री तेजकरण ओझा।

—सुदर्शनदेवार्य, उपमंत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ४६८७४, ५७७७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ४०७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०१
पंजीकरणसंख्या टैक/एच.आर./४९/रोहतक/९९ ☎ ०१२६२-४०७२२

प्रधानसम्पादक : प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक :- डा० सुदर्शनदेव आचार्य
वर्ष २८ अंक १० २८ जनवरी, २००१ वार्षिक शुल्क ६०) आजीवन शुल्क ६००) विदेश में १० पौंड एक प्रति १-२५

क्रान्तिकारी युगयोद्धा : दयानन्द सरस्वती

❑ डॉ० ज्वलन्तकुमार

ईसा की उन्नीसवीं शताब्दी के सबसे बडे धार्मिक विचारक, तार्किक और दार्शनिक वैदिक ऋषि स्वामी दयानन्द सरस्वती को अपने जीवन मे जिन तीन प्रबल शक्तियों का सामना करना पडा, वे थीं–(१) ब्राह्मण वर्ग, जिसने हिन्दू समाज मे अपने को सर्वोच्च स्थान पर प्रतिष्ठित कर लिया था। (२) ईसाई मिशनरियों का सगठित समूह जिसने हिन्दुओ के धर्मपरिवर्तन को अपना पवित्र कर्तव्य मान लिया था। (३) इस्लाम का सक्रिय हिन्दूधर्म विरोधी प्रचार अभियान, जिसे वे गोपनीय ढग से कभी-कभी खुले रूप मे बराबर चला रहे थे।

(१) स्वामी दयानन्द के समय मे हिन्दूधर्म की दशा यह थी कि वेदों और उपनिषदों की सीधी-सरल शिक्षाओं का स्थान आडम्बरो, अनगिनत देवी-देवताओं की पूजा, पशुओ की बलि, लम्बे समय तक चलनेवाले धार्मिक मेलों, जुलूसों, तीर्थयात्राओं, अनेकानेक मन्दिरों के मूर्तियों के सामने घण्टी, धूप, दीप, नैवेद्य तथा मन्त्रोच्चारण की पद्धतियों ने ले लिया था, जिसे इन्हें सुननेवाले तो क्या, इन्हे बोलनेवाले भी नहीं समझते थे। हिन्दूधर्म में ब्राह्मणों की एकछत्र सत्ता थी, उन्हे धार्मिक विषयों मे सर्वोच्च स्थान प्राप्त था। अन्य जातियो का कोई महत्त्व ही नहीं था। ब्राह्मण ईश्वर के प्रतिनिधि समझे जाते थे और बाकी लोगो को उनकी इच्छाओं के अनुसार चलना पडता था। विशाल हिन्दू समाज में उसी का वर्चस्व था, परम्पराओ और सामाजिक प्रथाओं का वही एक नियामक था। समस्त हिन्दू जीवन पद्धति, हिन्दूधर्म दर्शन और हिन्दू देवी-देवताओं के बारे मे वेदों तथा शास्त्रों के वचन नहीं अपितु ब्राह्मणो की बात ही प्रामाणिक थी। धर्म की व्याख्या लेकर हिन्दुओं के संस्कारो तथा विविध सामाजिक और आर्थिक पक्षो का भी ब्राह्मण ही एक अकेला नियन्ता था। हिन्दूधर्म मे तरह-तरह के कर्मकाण्ड रचे गये थे और इनका उपयोग ब्राह्मण अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए करते थे। पापों से मुक्ति और मृत्यु के पश्चात् सद्गति पाने के लिए उन्होने अनेक प्रकार के रहस्यपूर्ण विधि-विधानो को गढा था। इसके अलावा वेदो के अध्ययन पर ब्राह्मणों का एकाधिकार था। शूद्र वेदपाठ सुन नहीं सकता था। वेदपाठ सुनना उसके लिए जघन्य पाप था। अन्य जातिया वेदमन्त्र सुन सकती थीं पर वेद का अध्ययन उनके लिए भी वर्जित था। लेकिन क्या ब्राह्मणों को स्वयं भी वेदों का ज्ञान था ? बिल्कुल नहीं। उन्हें विविध अवसरों पर बोले जानेवाले वेदमन्त्र याद भर थे। वेदार्थ का विचार करना कौन कहे अधिकाश ब्राह्मणो को चारों वेदो के नाम भी मालूम नहीं थे। प्रचलित हिन्दूधर्म में मूर्तिपूजा और कठोर जातिप्रथा दो ऐसी चीजे थी जिन्होने हिन्दू समाज को ऐसे अन्धकार के गर्त में झोककर उसे टुकडो-टुकडों मे बाट दिया था। जा[illegible] हिन्दुओ के बहुमुखी विकास को अवरुद्ध कर [illegible] प्रत्येक जाति अनेक उपजातियों [illegible] हुई [illegible] ऐसे [illegible] में बटे समाज को किसी न कि[illegible] ही उसमे कितनी ही अच्छाइयाँ [illegible]।

(२) स्वामी दयानन्द के सम[illegible] ईसाई धर्मप्रचारकों की शक्ति भी बहुत बढ गई थी। हिन्दुओ की कठोर जातिप्रथा, बालविवाह, मूर्तिपूजा जैसी बुराइयों का उदाहरण देकर ईसाई प्रचारकों ने हिन्दू धर्म और हिन्दू सामाजिक सस्थाओ पर आक्रमण किया हुआ था। डॉ० अलेक्जेडर डफ के नेतृत्व मे पादरी लोग भारतीयों को ईसाई बनाने मे लगे हुए थे। उनका प्रचारकार्य विशेषरूप से कलकत्ता, मद्रास और बम्बई मे पूरे जोर पर था। भारतीयों को ईसाई बनाने की दिशा में पहले कदम के रूप मे देशी भाषाओ के मुकाबले अग्रेजी का वर्चस्व स्थापित करने का अग्रेजो की सरकार ने फैसला कर लिया था। डॉ० डफ और मैकाले के प्रभाव मे आकर लार्ड विलियम बेटिक की सरकार ने अग्रेजी साहित्य के प्रचार को ब्रिटिश सरकार का प्रमुख लक्ष्य निर्धारित किया। मिशनरियो ने अग्रेजी शिक्षा देने के लिए अनेक स्कूलो की स्थापना की। स्कूलों, कॉलेजो और विश्वविद्यालयो की स्थापना करके मिशनरियो ने भारत मे अग्रेजी शिक्षा प्राप्त भारतीयो का एक ऐसा वर्ग तैयार किया जो पाश्चात्य सस्कृति और विचारो से प्रभावित था। राजा राममोहनराय के नेतृत्व मे ब्रह्मसमाज ने आधुनिक यूरोप, विशेषरूप से इग्लैण्ड के आधुनिक सामाजिक आदर्शवाद को सराहना शुरू कर दिया था। इसका प्रभाव यह पडा कि अनेक भारतीयो ने अपने पूर्वजो के धर्म को छोडकर ईसाई बनना शुरू कर दिया। मिशनरियो ने राजा राममोहनराय तक को ईसाई बनाने की कोशिश की थी। ईसाई लोग अपने को भारतीयो से श्रेष्ठ समझते थे। मिशन स्कूलो मे बच्चो को बताया जाता था कि भारतीयो के ऊपर यूरोपियनो की श्रेष्ठता का कारण ईसामसीह की कृपा का प्रसाद है। ईसाई धर्मप्रचारक हिन्दूसमाज की बुराइयो की आलोचना करते हुए गर्व से बताता था कि उसका समाज इन अभिशापो से मुक्त है। ईसाई धर्मग्रन्थो की हिन्दू धर्मग्रन्थो से तुलना करते हुए वह यह बताता था कि प्रभु ईसा का मार्ग ही श्रेष्ठ है। वे वेदो की निन्दा करते हुए यह कहते थे कि उनमें केवल मूर्खतापूर्ण कर्मकाण्ड बताये गये हैं।

किन्तु भारतीय समाज ईसाई मिशनरियो के इस धर्म परिवर्तन अभियान के विरुद्ध था। हिन्दूधर्म छोडकर ईसाई बननेवाले व्यक्ति के बारे में यह समझा जाता था कि वह अपने पूर्वजो के धर्म से ही विमुख नहीं हुआ, बल्कि अपने पूरे समाज से विमुख होगया। ऐसा माना जाता था कि जो व्यक्ति ईसाई बनता है वह गोमास और मदिरा का भी सेवन करता है। आधुनिक शिक्षा से शिक्षित यूरोपीय वेशभूषा से मण्डित जो युवक ईसाई धर्म ग्रहण करते थे, वे अपने पूर्वजो (शकर, विष्णु, इन्द्र, प्रभृति देवो और कृष्ण) के आचरण से (जो पुराणो मे वर्णित हैं) अपने को हीनभावनाग्रस्त और लज्जित महसूस करते थे।

(३) इस्लाम ने भी हिन्दू धर्म पर जेहाद बोल रखा था। वह हिन्दूधर्म की आलोचना अत्यन्त कठोर भाषा मे करता था। वह मूर्तिपूजा तथा वैदिक और पौराणिक कर्मकाण्ड की निन्दा करता था। वे हिन्दुओ की जातीय व्यवस्था के भी उग्र आलोचक थे। मिशनरियो की भाति इस्लाम ने भी हिन्दुओं को मुसलमान बनाने का प्रयत्न जारी रखा था। छह-सात सौ वर्षो की इस्लामी शासको की नीतियो के कारण स्वामी जी के समय में मुसलमानो की आबादी देश मे दस करोड मे ज्यादा होगई थी। ईसाइयो के भारत आगमन से सैकडो वर्ष पूर्व इस्लाम के मुजाहिदीन भारत आ चुके थे। एक हाथ मे तलवार और दूसरे हाथ मे कुरान लेकर हिन्दुओ को मुसलमान बनाने का अभियान सम्पूर्ण भरत खण्ड (आर्यावर्त) मे आज के अफगानिस्तान पाकिस्तान, बागलादेश सहित भारत मे एक तिहाई मुस्लिम आबादी का आकार ले चुका था। स्वामी जी के समय मे हिन्दुओ और मुसलमानो का परस्पर वैमनस्य भी अग्रेजो की कुटनीति के कारण बहुत बढ चुका था (आगे चलकर इसकी परिणति भारत विभाजन के रूप मे हुई)। भारत सरकार के खुफिया विभाग की रिपोर्ट और गोपनीय सरकारी कागजातो से पता चलता है कि अग्रेजी हुकूमत मुसलमानो को हिन्दुओ को लूटने और गाली के लिए उकसाती थी।

स्वामी जी ने हिन्दूधर्म की तत्कालीन मान्यताओ तथा ईसाइयो और मुसलमानो की गतिविधियो को बहुत ही गहराई से देखा व समझा था। उन्होने अपने शास्त्रीय अध्ययन, वेदविद्या पर असाधारण अधिकार, योगनिष्ठ तपोमय जीवन और निष्कलक ब्रह्मचर्य शक्ति के बल पर उपर्युक्त तीन प्रबल विरोधी शक्तियो से अकेले ही लोहा लिया। गुरु विरजानन्द सरस्वती से प्राप्त आर्षग्रन्थो के

(शेष पृष्ठ सात पर)

लोक-परलोक विचार

अष्टम-विचार—(तो कोई भी साथ नहीं देगा ?)

❑ शिवप्रसाद उपाध्याय, आर्यसमाज होशियारपुर (पंजाब)

(गतांक से आगे)

इस तरह नाना प्रकार के प्रण करके पत्नी को अपना जीवन साथी बनाया था। अन्तिम समय मे वह मेरा साथ कैसे छोड सकेगी ? कवि ने कहा– **'भार्या गृहे'**

जितना मर्जी शोर करो, तुमने जैसा भी आपसी प्रण किया हो, परन्तु अन्त के समय मे वह तुम्हारा साथ नहीं देगी। ☞ हा इतना जरूर है कि तुम्हारे वियोग मे अपने को अकेली समझकर घर-द्वार मे बैठकर रो-रोकर वियोग की आसू बहा देगी, पर साथ नहीं जाएगी।

उस कवि से ऐसा रूखा उत्तर मिलने पर कवि जी से और आगे भी पूछा गया–महाराज ! धन-वैभव नहीं जाएगा, कोई बात नहीं, पशु-पक्षी नहीं जायेंगे तब भी कोई बात नहीं, पत्नी भी साथ नहीं जायेगी तब भी कोई बात नहीं, पत्नी भी साथ नहीं जाएगी यह भी सन्तोष कर लिया क्योंकि वह जन्म से साथी नहीं थी। परन्तु मेरे इष्ट-मित्र, सगे-सम्बन्धी तो अन्त मे साथ देते होगे ? जिनसे कि अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध रखा था, कभी उन्हे बहुत अच्छी वस्तु खिलाई-पिलाई थी, कभी बडी प्यारी चीज उन्हे भेंट की थी, कभी उनके साथ सैर-सपाटा किया करते थे, कभी उनके साथ गोप्य से गोप्य बात आदान-प्रदान करते थे, कभी उनके साथ तीर्थयात्रा, पिकनिक आदि जाया करते थे, वे मुझे बहुत प्यारा कहा करते थे, कोई तो मुझे आखो का तारा और आखो का अजन कहते थे। क्या वे सभी इष्ट-मित्र अन्त मे मेरा साथ नहीं देंगे ? तब कवि ने कह दिया–

'बन्धुजनश्श्मशाने'

भाई ! ये तुम्हारे बनाए हुए इष्ट-मित्र तुम्हारा पूरा साथ नहीं देगे। हां, ये लोग तुम्हारे पार्थिव शरीर को श्मशान घाट तक पहुचाने मे सहायता अवश्य करेंगे। वहा जाते ही कुछ तो अपनी ही व्यक्तिगत समस्या के ऊपर विचार करने लगेगे, कुछ लोग गप-शप में मस्त रहेगे। यहा तक कि कुछ लोग तो ऐसा भी कहेगे कि–"आज मैंने अमुक जगह पर जाने के लिए टिकट कटवाई थी, यहा यह स्यापा होगया। जानेवाला तो चला गया, उसका क्या शोक करना ? जल्दी आग लगाओ तो इस मुसीबत से छुटकारा हो। इस प्रकार बोलने लगेगे, परन्तु तुम्हारा साथ नहीं देंगे।

एक समय की बात है–किसी ब्रह्मज्ञानी, तत्त्ववेत्ता ऋषि के पास एक चेला ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति के लिए पहुचा। ऋषि ने भी योग्य समझकर उसे ब्रह्मज्ञान का उपदेश देना शुरू कर दिया। इस प्रकार गुरु चेले के वहा पर दो वर्ष व्यतीत हुए। योग्य ऋषि के पास रहने से चेले को भी ब्रह्मज्ञान का काफी अभ्यास होगया।

एक दिन ऋषि जी चेले को उपनिषद् का ज्ञान देते हुए पढा रहे थे–'भाई ! अन्त समय मे कोई भी साथ नहीं देता।' इस पर गुरु और शिष्य की बहस छिड गई। चेले ने कहा–"साथ कोई क्यो नहीं देता ? अभी-अभी छह-सात मास पहले जब मैं अत्यन्त अस्वस्थ होकर मृत्युशय्या मे पडा हुआ था उस समय डाक्टर ने घरवालो से कहा कि "इसे दो बोतल खून की चढेगी तो यह ठीक होजायेगा।" उस समय मेरी भाभी ने अपना खून देकर मुझे बचाया था। यह बात मैंने आपको पहले भी सुनाई थी। क्या वह असत्य बात थी ? आप कह रहे हैं कि अन्त मे कोई साथ नहीं देता।"

इस पर ऋषि ने कहा– आप जब तक जिन्दे थे तभी आप की भाभी ने आपको खून दिया था। जब आखिरी मौका होगा तो उस समय कोई भी आपका साथ नहीं देगा। आपने यदि इस बात की तसल्ली करनी हो तो तैयार होजाओ। आज ही एक नाटक रचते हैं। तुम अपने घर मे जाकर प्राणायाम के सहारे मरने का नाटक कर लेना। आखिरी श्वास लेते हुए मेरा नाम लेना कि मेरे गुरु जी को यहा ले आओगे तो शायद मैं बच सकू।' चेले ने वैसा ही किया। घर मे जाकर बीमार होने का बहाना बनाया। वह छटपटाता हुआ अनेक प्रकार की बेहोशी की उल्टी-सीधी बातें करने लगा। देखते-देखते थोडी ही देर मे प्राणायाम के सहारे उसने अपने प्राण बन्द कर लिये। वह मरता-मरता कह गया था कि 'यदि मेरे गुरु जी इस समय यहा होते, तो शायद मैं जी उठता।'

गुरु जी का नाम सुनते ही घरवाले जल्दी ही गुरु जी के पास पहुचे और ऋषि को सारा हाल सुनाने लगे। ऋषि जी भी तुरन्त ही उनके साथ हो लिये। ऋषि जी भी चेले के पास पहुचकर चेले के वियोग होने का दु ख मनाते हुए गहरा शोक प्रकट करने लगे। वे रोते-रोते घरवालो से कहने लगे कि 'यदि आप मे से कोई एक आदमी अपनी बलि देने को तैयार हो जाये तो शायद यह मेरा चेला और आपका पुत्र जी उठे।' ऋषि के ऐसे वचन सुनते ही सभी चुप होगये। सभी इसी सोच मे थे कि एक तो गया सो गया, यह साधु हमारे मे से दूसरे को भी भेजना चाहता है।'

सबसे पहले ऋषि ने उसके पिता को बलि होने को कहा। उसके पिता ने साफ इंकार करते हुए कहा–'मैं बलि नहीं होसकता। मेरा यह पुत्र गया सो गया। मैंने और बाकी बच्चे भी तो पालने हैं।' तब ऋषि ने उसकी माता से कहा कि–'अभी मैं दुरुस्त हूं, घर का सारा बोझ मेरे ऊपर ही पडा हुआ है। यदि मेरी बलि पर यह जी भी जाए, तो भी यह आपके पास ही तो रहता है। इसने मेरे कौन से काम में हाथ बटाने हैं। ऋषि ने उसके सभी भाई-बहनों से बलि के लिए बारी-बारी से कहा। उन सभी ने भी यही उत्तर दिया कि 'यह हमारा भाई जबसे उसकी शादी हुई तब से घर से निकलकर आपके ही पास चला गया था। अपने माता-पिता की सेवा हम करते हैं। घर का सारा काम हम ही चलाते हैं। हमारी उमर भी अभी छोटी है। ससार मे हमें अभी बहुत कुछ देखना है, सुनना है, जानना है। हमारे बलि होने का समय अभी थोड़ा ही आया है।' **(क्रमश:)**

स्व० पं० प्रकाशवीर शास्त्री का हिन्दी प्रेम

प्रकाशवीर शास्त्री ही वह व्यक्ति थे जिन्होंने अपनी धाराप्रवाह भाषण शैली से लोकसभा में हिन्दी को प्रस्थापित किया। एक समय था जब लोकसभा मे अग्रेजी का ही बोलबाला था। हिन्दी के भाषणों को कोई कुछ समझता नहीं था, परन्तु प्रकाशवीर शास्त्री ने अपनी हिन्दी भाषा में वक्तृत्व कला से यह सिद्ध कर दिया कि हिन्दी में जटिलतम विषयों को भी सटीक एवं स्पष्टता के साथ प्रकट किया जा सकता है। "प्रधानमत्री जी ने यह बात शास्त्री जी की स्मृति में प्रकाशित दो पुस्तको को लोकार्पण करते हुए कही।" अपनी यह बात पुष्ट करते हुए प्रधानमत्री जी ने कहा कि जब श्री अनन्तशयनम् अय्यगार लोकसभा के अध्यक्ष थे तब उनसे यह पूछा गया कि सदन मे सबसे अच्छा वक्ता कौन है। इसके उत्तर मे श्री अय्यगार ने ही हीरेन मुखर्जी और श्री प्रकाशवीर शास्त्री का नाम लिया था। अहिन्दीभाषी भी शास्त्री जी के भाषणों को ध्यान से सुनते थे तथा उन्हे पसन्द करते थे। प्रकाशवीर जी कभी उत्तेजित नहीं होते थे। वे अपने भाषणों मे बडी सयत एव नपे तुले शब्दो का प्रयोग करते थे। यदि वे प्रहार भी करते थे तो उससे शालीनता की सीमा मे चुभन पैदा करते थे।

प्रधानमत्री जी ने कहा कि प्रकाशवीर शास्त्री का नाम लेते ही उनके सामने एक शालीन, सयत और गरिमापूर्ण व्यक्तित्व उपस्थित होजाता है। मेरे उनके सम्बन्ध बडे आत्मीय और प्रगाढ थे। हम दोनो मे अच्छी पटती थी। उन्होने शास्त्री जी के साथ अपनी इजराइल यात्रा का उल्लेख करते हुए कहा कि हमारी यह यात्रा विशिष्ट थी, क्योंकि सत्तारूढ दल व सरकार को इससे प्रसन्नता नहीं थी। हमने अन्य अनेक मोर्चों पर भी साथ-साथ काम किया है। हमारे विचारो मे भी समानता थी।

हिन्दी के बारे मे प्रकाशवीर शास्त्री द्वारा किये गये प्रयासो की सराहना करते हुए प्रधानमत्री ने कहा कि सरकारी कार्यों मे यदि हिन्दी का कुछ प्रयोग है तो उसका श्रेय शास्त्री जी को ही है। हिन्दी के लिए किये गये उनके कार्य चिरस्मरणीय रहेंगे। हिन्दी के सम्बन्ध में उसके सरकारी कामकाज में कम प्रयोग पर प्रधानमंत्री ने अपनी वेदना भी प्रकट की उन्होंने कहा कि फाइलों मे मेरी हिन्दी टिप्पणियों का सही अग्रेजी अनुवाद करने में अधिकारियों को बड़ा समय लगता है तथा उन्हें परेशानी होती है। हिन्दी जानने एव पढनेवालों की सख्या बढ रही है पर प्रशासन में उसका अपेक्षित प्रयोग नहीं हो पारहा है।

प्रधानमत्री जी ने कहा कि प्रकाशवीर जी प्रखर राष्ट्रवादी थे। भारतीय सभ्यता, सस्कृति देश की अस्मिता और गौरव की रक्षा के लिए वे सदा सतर्क और सजग रहते थे। उनका भविष्य बडा ही उज्ज्वल था। हम समझते थे कि वे देश के लिए महत्त्वपूर्ण ऊचाइयों पर पहुचेगे, परन्तु रेल दुर्घटना में उनकी मृत्यु उनके मित्रों, परिचितों के लिए तथा विशेषत देश के लिए एक भारी आघात सिद्ध हुआ। उन्होंने शास्त्री जी के भाषणों को भी प्रकाशित करने का आग्रह किया।

वेद प्रतिष्ठान एवं प्रकाशवीर शास्त्री स्मृति ग्रथ समिति के अध्यक्ष डॉ० लक्ष्मीमल्ल सिघवी ने अपने भाषण मे शास्त्री जी की अन्तरतम से स्नेह भावना और सहजता का उल्लेख करते हुए कहा कि उन्हें सरस्वती देवी का वरदान प्राप्त था। उन्होने वेद के एक मत्र को पढते हुए कहा कि इसमे कामना की गई है कि ससद् मे अपने भाषणो से यह यश प्राप्त करें। शास्त्री जी ने ससद् में अपने भाषण निपुणता से यह यश स्वय अर्जित किया। डॉ० सिघवी ने कहा कि हमें तीन ऋणों मातृ ऋण, पितृ ऋण, और आचार्य ऋणों को चुकाने को कहा गया है, परन्तु मैं यह चौथा ऋण मानता हू, वह है, मित्र ऋण। हमने इन ग्रथों के द्वारा मित्र ऋण को चुकाने का प्रयास किया है।

इससे पूर्व वेद प्रतिष्ठान एव समिति के मत्री श्री रामनाथ सहगल ने जो मच सचालन कर रहे थे, वेद प्रतिष्ठान का तथा स्मृति ग्रथ के बारे मे विवरण दिया। उन्होने यह भी घोषणा की कि वेद प्रतिष्ठान शास्त्री जी के ससद् के भाषणो को भी दो खण्डो मे शीघ्र ही प्रकाशित करेगा।

इस अवसर पर प्रधानमत्री द्वारा ग्रन्थ के तीनो सम्पादकों–श्री दत्तात्रेय तिवारी, श्री अशोक कौशिक और श्री शिवकुमार गोयल व मुद्रक श्री राकेश भार्गव को शाल एव स्वर्णपदक प्रदान कर सम्मानित किया।

समारोह के अन्त में डी०ए०वी० के प्रधान 'पद्मश्री' श्री ज्ञानप्रकाश चोपडा जी ने प्रधानमत्री के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए अभ्यागतों का आभार प्रकट किया। उन्होंने प्रधानमत्री जी से प्रार्थना की कि अप्रैल में आर्यसमाज की स्थापना की १२५वीं वर्षगाठ सारे देश में मनाई जायेगी। उसमें हमारा मार्गदर्शन करें।

पुस्तक-समीक्षा

निरुक्तम् (यास्कप्रणीतम्)
सम्पादक विराजनन्ददैवकरणि
प्रकाशक आर्षसाहित्यसस्थानम्
श्रीमद्दयानन्दवेदार्षमहाविद्यालय
११९, गौतमनगरम्, नवदिल्ली-४९
मूल्यम् ६० रूप्यकाणि

१ शिक्षा, २ कल्प, ३ व्याकरण, ४ निरुक्त, ५ छन्द और ६ ज्योतिष। इन ६ वेदाङ्गो मे निरुक्त-वेदाङ्ग का चतुर्थ स्थान है। ६ अगो सहित वेद का पढना शास्त्रो मे परमधर्म माना गया है।

शिक्षा घ्राण तु वेदस्य मुख व्याकरण स्मृतम्।
छन्द पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।
ज्योतिषामयन चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।।

शिक्षाकारो ने निरुक्त वेदाग को श्रोत्र स्थानीय माना है। जिस प्रकार मनुष्य कान के विना कुछ भी श्रवणज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता उसी प्रकार वेदार्थ जानने के लिये निरुक्त का भी अतिमहत्त्व है।

निरुक्तकार स्वय कहते हैं कि–'**अथापीदमन्तरेण मन्त्रेष्वर्थप्रत्ययो न विद्यते**' (१।५।१) अर्थात् निरुक्तशास्त्र पढे विना मन्त्रार्थ का ज्ञान नहीं होता। आगे कहते हैं–'**तदिद विद्यास्थान व्याकरणस्य कार्त्स्न्यं स्वार्थसाधक च**'। अष्टाध्यायी महाभाष्यपर्यन्त सम्पूर्ण व्याकरणशास्त्र पढ लेने के पश्चात् भी निरुक्त पढने पर ही वैदिक व्याकरण की सम्पूर्णता मानी जाती है।

इसलिये आर्ष गुरुकुलो मे व्याकरण के पश्चात् निरुक्त पठन-पाठन की व्यवस्था है। इसे ही ध्यान मे रखकर श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय के आचार्य हरिदेव जी ने निघण्टुभाष्य निरुक्त का यह सुन्दर सस्करण प्रकाशित करवाया है। पुस्तक का आकार, कागज, छपाई आदि सब मनोहारी हैं।

विद्वान् सम्पादक श्री विरजानन्द दैवकरणि ने इसके सम्पादन मे पर्याप्त परिश्रम किया है। अनेक स्थानो पर टिप्पणिया लिखी हैं। निरुक्त मे आये डेढ हजार से भी अधिक वेदमन्त्र और ब्राह्मणग्रन्थ-वचनादि के आगे मूलग्रन्थ का पता लिखने का प्रयास किया है। इन पतो को कोष्ठक मे अथवा पादटिप्पणी मे देना चाहिये था, जिससे मूलग्रन्थ से पृथक् रहते और शास्त्र का स्वरूप भी यथापूर्व बना रहता।

ग्रन्थ के अन्त मे निरुक्त मे आये आख्यानो की सूची, उद्धृत आचार्य और विद्वानो की सूची, मन्त्रादि की वर्णानुक्रमसूची और निरुक्त मे व्याख्यात पदो की वर्णानुक्रमसूची, इन चार प्रकार की सूचियो ने इस ग्रन्थ के चार चाद लगा दिये हैं।

किन्तु निष्कलक तो चन्द्रमा भी नहीं माना जाता है। इस ग्रन्थ को भी अशुद्ध और अस्त-व्यस्त पाठो ने कलकित कर दिया है। अनेक स्थानो पर वाक्य और पक्तिया छूट गई हैं और कहीं-कहीं पर अधिक पद और वाक्य भी जोड दिये हैं। विराम और अर्धविराम चिह्नो के कारण भी अर्थ-विपर्यय होगया है। मन्त्रो के आगे दिये पतो मे भी अनेक स्थलो पर अशुद्ध प्रत्यय लिखे गये हैं। **उदाहरणार्थ छूटे हुये पाठ देखिये–**

पृष्ठ ४० पर 'आप्नोतीति दूराच्च' के मध्य मे छूट गया है–'आप्नोतीति **सत । विद्युत्तळिद्भवतीति शाकपूणि । सा ह्यवताळयति दूराच्च**' इसी पृष्ठ ४० पर 'अदानप्रज्ञा' के आगे '**वा**' छूट गया है। पृष्ठ ९९ पर 'अद्वेषस इति वा। पिशुनाय चरते' के मध्य मे '**किमीदिने। किमिदानीमिति चरते। किमिद किमिदमिति वा।**' पाठ छूट गया है। पृष्ठ १३० पर 'नावा सिन्धु' के पश्चात् '**सिन्धु नावा**' पद छूट गये हैं। पृष्ठ १३६ पर 'समाश्रितावन्योऽन्य' के पश्चात् '**नयतो वनुतो वा। मनुष्यमिथुनावप्येतस्मादेव मेथन्तावन्योऽन्यं नयत**' पाठ छूट गया है। पृष्ठ १९० पर दो पंक्तियो के पश्चात् '**अदितिर्दाक्षायणी**' पाठ छूट गया है। पृष्ठ २११ पर 'पितैषा' से पूर्व '**मध्यम**' पद छूट गया है।

अब अधिक पाठो का नमूना देखिये–

पृष्ठ १४२ पर 'वितर विकीर्णतरमिति वा विस्तीर्णतरमिति वा' के मध्य मे '**तीर्णतरमिति वा**' '**वा विस्तीर्णतरमिति**' व्यर्थ मे जोड दिये हैं। इसी प्रकार पृष्ठ १९४ पर 'प्रवर्धयते दीर्घमायु' के मध्य मे '**दीर्घयते**' पद जोड दिया है। पृष्ठ १९८ पर '**मध्यम**' के पश्चात् '**वायु**' और पृष्ठ २०९ पर '**कर्मभिरादित्य**' के पश्चात् '**उदयेन**' पद अधिक छपा है।

अस्त-व्यस्त पाठ–

पृष्ठ १८८ पर ९ पक्तियो का पाठ 'माध्यमिकान् पितॄन् मन्यन्ते।' के पश्चात् इस प्रकार छपना चाहिये–

'**अङ्गिरसो व्याख्याता। पितरो व्याख्याता। भृगवो व्याख्याता। अथर्वाणोऽथर्ववन्त। थर्वतिश्चरतिकर्मा, तत्प्रतिषेध। तेषामेषा साधारणा भवति।।**
अङ्गिरसो न पितरो नवग्वा अथर्वाणो भृगव सोम्यास। तेषां वय सुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम।।
अङ्गिरसो न पितर। नवगतयो नवीनगतयो वा। अथर्वाणो भृगव।'

निरुक्त पारायण मे दृष्टिगोचर हुये प्रमुख अशुद्ध-शुद्ध पाठ नीचे दिये जाते हैं–

पृष्ठ	अशुद्ध	शुद्ध
५	चितम सञ्चारी।	चितम सञ्चारि।
५	दिग्घस्तप्रकृतिर्दक्षिणो	दिग्घस्तप्रकृतिर्दक्षिणो
६	सीमात मर्यादात ।	सीमातो मर्यादात ।
६	ब्रह्म परिवृढ	ब्रह्म परिवृढ
७	ह्रदो ह्रदते शब्दकर्मणो ह्रादतेर्वा	ह्रदो ह्रादते शब्दकर्मणो ह्लादतेर्वा
८	बिभ्यस्यन्तोऽववाशिरे	बिभ्यस्यन्तो ववाशिरे
१२	यज्ञस्य समृद्ध	यज्ञस्य समृद्ध
१५	नैघण्टुकमिद देवतानाम्। अप्राधान्येन '	नैघण्टुकमिद देवतानाम। प्राधान्येन
१६	तत्वा यामीति।	तत्त्वा यामीति।
१६	विन्दुर्वट्य इति।	बिन्दुर्वट्य'इति।
१७	तैत्तिरीयारण्यके १० १० २३	तैत्तिरीयारण्यके १० १० ३
२१	वव्रिमौहते।।	वव्रिमौहत।।
२३	अधरोऽधोर अधो न	अधरोऽधोर। अधो न
२६	विवृध्या	विवृद्ध्या
३०	मभीक्षण	मभिक्षण
३१	क्रतु दाधिक्रा	क्रतु दधिक्रा
३१	न्वापनी फणत्।।	न्वापनीफणत्।।
३२	योजनानाचक्षते	योजनान्याचक्षते
३९	तद्वो	तद्दो
३९	सुवर्द्धयित्रा	सुवर्द्धयित्रा
४०	सा मा धीर	स मा धीर
४३	द्विभीयादा	दिवभीयादा
४६	षट।	षट्।
४८	अर्धो हरतेर्विपरीतात्,	अर्धं हरतेर्विपरीतात्,
४८	ऊर्दरमुदीर्ण	ऊर्दरमुद्दीर्ण
४९	मन्त्रमनसृत्य	मन्त्रमनुसृत्य
५५	स्यादाश्लाघाकर्मण।	स्यादश्लाघाकर्मण।
५८	शाश्वतिकमागात्	शाश्वतिकतमागात्
६७	इदमपीतर नाम	इदमपीतरन्नाम
७६	तैरविष्टो भवति।	तैराविष्टो भवति।
८२	अव्रदन्त	अव्रन्दत
८४	पातयन्युदक	पातयत्युदक
८५	स्वय हन्ति।	स्व हन्ति।
८९	तममङ्कुशादायत्	तममङ्कुशादायात्
९०	आशाम्य	आशाभ्य
९२	दभ्नोतीति।	दभ्नोतीति वा।
९३	असिन्वती असङ्खादन्त्य।	असिन्वती असङ्खादन्त्यौ।
१००	तृप्वयानु	तृप्ण्यानु
१०२	असुसमीरिता	असुसमीरिता
१०३	जोषमाणा भवत	जोषमाणा भवत
१११	न पापसो	न पापासो
११२	मघौ उदके	मघा उदके
११३	वत एतदाप्याययति	वात एतदाप्याययति।
११५	तैस्त्वा	तैष्ट्वा
११६	नौचाशाख	नैचाशाख
१२१	यथैत्	यथैतत्
१२७	दैवता स्तौति	दैवता स्तौति
१२८	अग्नी उच्यते	अग्नी उच्येते
१२८	सम्मानाद्धा	सम्माननाद्वा
१२८	कौषीतकी ब्राह्मणे	कौषीतकिब्राह्मणे
१२८	अग्निर्वै सर्वा देवता	अग्नि सर्वा देवता
१२९	जातवेदस्य	जातवेदस्या
१२९	कोष्ठस्योऽय	कोष्ठस्योऽय
१३०	सोमोऽददित्यर्थ	सोमो ददित्यर्थ
१३४	मानुषीभ्योऽदीदेतिति	मानुषीभ्यो दीदेदिति
१३६	तेषा यज्ञ	तेषा यज्ञ
१३९	सहसस्पुत्र	सहसस्पुत्र
१३९	सहसो यहो	सहसो यहुम्
१४०	ऋ० ५ ६ ८	ऋ० ५ ६० ८
१४३	ऋ० १० २११० ५	ऋ० १० ११० ५
१४३	माभिरेति। यज्ञे	माभिरेति यज्ञे।
१५०	प्रब्रुवाण यथास्य	प्रब्रुवाण। यथास्य
१५३	बहूना पिता	बहीना पिता
१५६	उरूकर	उरुकर
१५९	तमोरज।।	तमो रज।।
१५९	ग्राम न पृच्छसि	ग्राम न पृच्छसि।
१६२	दैव्यौ	देव्यौ
१६६	इन्छत्रूणा	इन्दञ्छत्रूणा
१७०	ऋ० १० ३ ४	ऋ० १० ३० ४
१७१	ऋ० १० १४३ १	ऋ० १० १४ १
१७१	ऋ० १६९ ५	ऋ० १ ६६ ९
१७३	घृतश्चुत तेभिर्नो	घृतश्चुत। तेभिर्नो
१७६	प्रज्ञावत्व	प्रज्ञावत्त्व
१८५	किरतेर्विकीर्णा मात्रा।	किरतेर्विकीर्णमात्रा।
१८७	ऋ० १११ ४	ऋ० १ ११० ४
१८७	अग्ने परि	अग्ने परि
१९४	इत्याख्यानाम्।	इत्याख्यानम्।
१९४	जायेताद्भ्योऽध्याप	जायेताद्भ्योऽध्यप
२०२	कृणुस्व।।	कृणुष्व।।
२०३	सुखचयकर	सुखाचयकर
२०३	तामनुसृत्य	तामनुसृत्य
२०७	समूढस्य	समूढमस्य
२०८	द्या रजश्च पृथु। महान्त लोकम्।	द्या रजश्च। पृथु महान्त लोकम्।
२१२	धियमतनिषथ।	धियमतनिषत।
२१६	पत्न्य उशाथ्यो	पत्न्य उशत्यो
२२२	देवा उच्यन्त।	देवा उच्यन्ते।

सम्पादक और प्रकाशक महाशयो से निवेदन है कि सभी अशुद्धियो का शुद्धिपत्र छपवाकर ग्रन्थ के आदि मे लगवा देवे और भविष्य मे ऐसी विशेष व्यवस्था करनी चाहिये जिससे शास्त्र विकलाग एव त्रुटित न हो जिससे पढने-पढानेवाले अभीष्टप्राप्ति मे सफल हो। एक शब्द **सम्यग्ज्ञात सुप्रयुक्त स्वर्गे लोके कामधुग्भवति।'**

—**वेदव्रत शास्त्री,** सम्पादक सर्वहितकारी

राज्यस्तरीय आर्य कार्यकर्ता सम्मेलन भिवानी में पारित प्रस्ताव

प्रस्ताव सख्या १ . दसवीं कक्षा तक सस्कृत लागू करने पर मुख्यमंत्री हरयाणा सरकार का धन्यवाद।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के अन्तर्गत आर्ययुवक समाज द्वारा दिनाक १०-१२-२००० को भिवानी मे आयोजित हरयाणा भर से आये युवको की यह सभा अनुभव करती है कि सस्कृत एक देवभाषा है जिसके द्वारा सभी प्रकार की विद्या को जाना जा सकता है और जिसका पढना-पढाना भारतीय सस्कृति के लिए अत्यावश्यक है। हरयाणा के मुख्यमत्री चौ० ओमप्रकाश चौटाला द्वारा सभी सरकारी स्कूलो मे दसवीं कक्षा तक सस्कृत भाषा के पठन-पाठन को अनिवार्य किया गया है। अत यह सभा सर्वसम्मति से मुख्यमत्री हरयाणा सरकार का धन्यवाद प्रस्ताव पारित करते हुए प्रार्थना करती है कि आगामी सत्र से सस्कृत को सभी विद्यालयो मे अनिवार्य करने के आदेश को प्रभावी ढग से लागू किया जाये।

प्रस्ताव सख्या २ दहेज विरोधी हस्ताक्षर अभियान

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के अन्तर्गत आर्य युवक समाज द्वारा दिनाक १०-१२-२००० को भिवानी मे आयोजित हरयाणा भर से आये युवको की यह सभा दहेज विरोधी हस्ताक्षर अभियान चलाने के लिए सभा प्रधान जी का धन्यवाद करती है तथा अनुभव करती है कि विवाह शादियो मे दिया जानेवाला दहेज नित प्रतिदिन अनेक कन्याओ का बलिदान ले रहा है। दहेज पाने की इस बढती मनोवृत्ति के कारण गरीब माता-पिता को अपनी पुत्रियो का विवाह करना एक समस्या बन गया है। लोग अज्ञानतावश दूल्हे को बेचने या खरीदने लगे हैं जो एक सामाजिक विकृति बन गई है। अत यह सभा आर्यसमाज की सभी सस्थाओ से आग्रह करती है कि दहेज के दानव को नष्ट करने के लिए एक आन्दोलन चलाया जाये। सभा सर्वसम्मति से निर्णय करती है कि दहेज के विरुद्ध जन जागरण करने के लिए १०,००० युवको को दहेज न लेने देने के प्रमाण पत्र पर हस्ताक्षर करायेगी तथा इस हस्ताक्षर प्रपत्र को डी ए वी कालेज प्रबन्ध समिति के माननीय प्रधान जी को भेट कर समस्त आर्य शिक्षण सस्थाओ और आर्यसमाज द्वारा दहेज विरोधी अभियान चलाने का आग्रह करेगी।

प्रस्ताव सख्या ३ बढती भ्रूणहत्या पर प्रतिबन्ध लगाया जाये।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के अन्तर्गत आर्य युवक समाज द्वारा दिनाक १०-१२-२००० को भिवानी मे आयोजित हरयाणा भर से आये युवको की यह सभा जनगणना से प्राप्त आकडो के आधार पर लडकियो की जन्म दर मे आई गिरावट को देखते हुए अनुभव करती है कि लडका और लडकी मे भेद करना प्राकृतिक न्याय के विरुद्ध है। अल्ट्रासाउण्ड पद्धति द्वारा लडकी होने के भ्रूण का ज्ञान होने पर माता-पिता द्वारा लडकी की जन्म से पहले ही हत्या करने की प्रवृत्ति की निन्दा करती है तथा इस प्रवृत्ति के दूरगामी दुष्परिणामो को रोकने के लिए सरकार से माग करती है कि अल्ट्रासाउण्ड से लडकी का पता लगाकर गर्भपात करने की प्रक्रिया पर कानून बनाकर प्रतिबन्ध लगाया जाये तथा ऐसे चिकित्सको व माता-पिता को कडा दण्ड दे जो लडकियो की गर्भावस्था मे ही हत्या कर देते हैं। सभा यह भी अनुभव करती है कि स्त्री पुरुष की गाडी के दो महत्त्वपूर्ण पहिये हैं इनमे से स्त्री रूपी पहिये के विनाश की प्रक्रिया से समाज की रचना खण्ड-खण्ड हो जायेगी जो एक भयानक दुराचार को जन्म देगी। अत इसे तुरन्त रोकना अनिवार्य होगा। इसलिए सभा के सर्वसम्मत निर्णय के अनुसार इस प्रस्ताव की प्रति भारत सरकार व हरयाणा सरकार को भेजकर आग्रह किया जाये कि इस राक्षसी प्रवृत्ति पर प्रतिबन्ध लगाया जाये।

प्रस्ताव सख्या ४—अश्लील विज्ञापनो व चित्रो पर प्रतिबन्ध लगाया जाए।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के अन्तर्गत आर्य युवक समाज द्वारा दिनाक १०-१२-२००० को भिवानी मे आयोजित हरयाणा भर से आये युवको की यह सभा अनुभव करती है कि नारी सम्मान की पात्र है विलासिता की नहीं अत यह सभा सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित कर दूरदर्शन पर आनेवाले उन सभी विज्ञापनो का कडा विरोध करती है जिसमे नारी को अश्लील अवस्था मे दिखाया जाता है। ऐसे सभी चलचित्रो व विज्ञापनो द्वारा बच्चों व युवाओ की मानसिक अवस्था पर विपरीत प्रभाव पडता है अत यह सभा सूचना व प्रसारण मन्त्रालय से माग करती है कि ऐसे अश्लील चित्रो को टी वी पर प्रसारित करने पर अविलम्ब रोक लगाकर समाज को पतन की ओर जाने से रोके।

यह सभा उन सभी समाचारपत्रो की निदा करती है कि जो अपने पृष्ठो पर नारी के अश्लील व अनावश्यक चित्र प्रकाशित करते हैं और माग करती है कि ऐसे गन्दे चित्र प्रकाशित करने की नीति पर प्रतिबन्ध लगाये तथा समाचारपत्रो को आह्वान करती है कि गन्दे चित्रो के स्थान पर वीरो व वीरागनाओ के चित्र प्रकाशित कर समाजोत्थान मे योगदान दे।

—डॉ० धर्मदेव विद्यार्थी, सयोजक

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मुम्बई

परिपत्र

मान्यवर !

सादर नमस्ते।

आपको विदित करते हुए हर्ष होता है कि आर्यसमाज स्थापना के १२५ वर्ष का विशाल कार्यक्रम दिनाक २३ मार्च से दिनाक २६ मार्च, २००१ तक (शुक्रवार से सोमवार) **अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन**, आयोजित किया गया है। समारोह की सफलता हेतु आपसे प्रार्थना है कि निम्न बातो का अवश्यमेव ध्यान रखने की कृपा करे एव अपने सभी पदाधिकारियो, सदस्यो तथा आर्यप्रेमी सज्जनो को, जो सम्मेलन मे आने को उत्सुक हैं, निश्चित रूप से अवगत कराने की कृपा करे।

१ कार्यक्रम स्थल रिक्लेमेशन मैदान, बान्द्रा पश्चिम, मुम्बई - ४०० ०५०

२ दिनाक २६ मार्च को चैत्र शुक्ला प्रतिपदा - आर्यसमाज स्थापना दिवस है।

३ प्रत्येक आगन्तुक को अपना नाम का पजीकरण कराना आवश्यक होगा। पजीकरण शुल्क रु० ५० प्रति व्यक्ति होगा। जो आर्यजन समारोह मे आ रे हैं वे इस राशि को डी डी या मनीआर्डर द्वारा **"आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई"** के नाम से कार्यालय के पते पर भेजने की कृपा करे।

४ पजीकरण दिनाक २३ फरवरी, २००१ तक कराने की कृपा करे ताकि निवास व्यवस्था तदनुकूल करने मे सुविधा हो सके।

५ भोजन-निवास पजीकृत व्यक्ति को भोजन व निवास हेतु कूपन-पुस्तिका दी जायेगी एव वे ही इसका नि शुल्क लाभ उठा सकेगे। ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ होने से यहा उस समय उष्णता का मौसम होगा।

६ आगमन की सूचना आपसे प्रार्थना है कि आप अधिक से अधिक सख्या मे आने का कार्यक्रम बनाकर हमे दिनाक २० फरवरी, २००१ तक सूचित करने की कृपा करे।

७ क) आपसे प्रार्थना है कि सम्मेलन के दौरान आप समस्त कार्यक्रमो मे उपस्थित रहे। ख) जो सज्जन मुम्बई दर्शन पर जाना चाहेगे उनके लिये हम विशिष्ट बस व्यवस्था दिनाक २७, २८ मार्च, २००१ को आयोजित करेगे। उन्हीं व्यक्तियो की व्यवस्था हो पायेगी जो रु० १५० प्रति व्यक्ति प्रतिदिन की अग्रिम राशि उनके नाम की सूची के साथ वहा २० फरवरी, २००१ तक भेजने की कृपा करेगे।

८ जो सज्जन सम्मेलन मे आ रहे हैं वे अपने सामान का विशेष ध्यान रखे एव सभी स्थानो पर जेब कतरो से सावधान रहे।

कृपया इस परिपत्र की जानकारी सभी तक पहुचाने की कृपा करे।

—कैप्टन देवरत्न आर्य, सयोजक-अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

जानकारी तथा आवश्यक कार्यवाही हेतु

सभा अपने अतर्गत आनेवाली समाजो को अपने साथ नामपट्ट, बॅनर्स, ओ३म् के झण्डे आदि लाने के लिए अवश्य सूचित करेगे ऐसी प्रार्थना है।

नोट कुछ आर्यजन किसी कारणवश पूर्व सूचना नहीं दे पायेगे, ऐसा हम अनुभव करते हैं। ऐसे समय पर आनेवाले व्यक्तियो की व्यवस्था तो होगी परन्तु उन्हे कुछ असुविधाओ को सहना पड सकता है। उसके लिए हम अग्रिम क्षमा प्रार्थी हैं। कृपया अपने मासिक या साप्ताहिक पत्र मे उक्त समाचार प्रकाशित कर अनुगृहित करे।

कार्यालय **अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन**

आर्यसमाज, विट्ठलभाई पटेल मार्ग, साताक्रुज (पश्चिम), मुबई-४०० ०५४

दूरभाष ६६०२०७५ - ६६११८३४ फैक्स ६६११८३४

श्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अध्यक्षता में

विशाल प्रदर्शन

सतलुज यमुना नहर जल विवाद

दिनांक ३१ जनवरी, २००१ बुधवार प्रातः ११ बजे
स्थान : उपायुक्त कार्यालय झज्जर

दिनांक : २ फरवरी, २००१ शुक्रवार प्रातः ११ बजे
स्थान : उपायुक्त कार्यालय रोहतक

आप अधिक से अधिक संख्या में पधारकर अपने-अपने जिले के प्रदर्शन को सफल बनायें। उपायुक्तों के माध्यम से हरयाणा सरकार को ज्ञापन दिया जायेगा।

निवेदक : सत्यवीर शास्त्री, (गढी बोहर) संयोजक

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, मुम्बई

दिनांक २३ मार्च से २६ मार्च, २००१

आर्य बधुओ,

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के सदर्भ मे निवेदन है कि मुम्बई जैसे महानगर मे आवास सम्बन्धी कठिनाइयो का सामना करना पड सकता है। अत इस सम्मेलन मे जो आर्य बधु भाग लेना चाहते हैं वे पूर्व से ही सभा मे अपना नाम अंकित करवा ले या सीधे मुम्बई से सम्पर्क कर आवास सुरक्षित करवाले ताकि व्यवस्था मे कोई कठिनाई न हो।

जो सज्जन रेल अथवा बस से चलना चाहेगे उनकी शीघ्रातिशीघ्र नाम व आयु के साथ धन जमा कराने पर ही व्यवस्था होगी।

अधिक सख्या मे भाग लेकर सम्मेलन को सफल बनाये।

—सभामत्री

दयानन्दमठ का सतरहवां वैदिक सत्संग

दयानन्दमठ रोहतक। आर्यसमाज की छावनी कहे जानेवाली सस्था दयानन्दमठ रोहतक का सतरहवा वैदिक सत्सग ४ फरवरी, २००१ रविवार को आयोजित किया जा रहा है। वैदिक सत्सग हर मीने के प्रथम रविवार को मनाया जाता है। इस सत्सग समारोह के सयोजक एव व्यवस्थापक श्री सन्तराम आर्य ने बताया कि यह सत्सग सामाजिक कुप्रथाओं धार्मिक अन्धविश्वासो, छुआछूत, अशिक्षा, अन्याय एव शोषण के बारे मे वैदिक धर्म की मान्यताओ का प्रचार-प्रसार करने हेतु प्रारम्भ किया गया है। उन्होने कहा कि जिन महानुभावो को आर्यसमाज के स्वरूप की जानकारी नहीं है वे अवश्य इस सत्सग के अवसर पर दयानन्दमठ रोहतक पहुचकर सगठन की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। यदि बहिने केसरिया रग का परिधान तथा आर्यबन्धु केसरिया रग की पगडी बाधकर समारोह मे भाग ले तो अति उत्तम रहेगा। इस समारोह की अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यकर्ता प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी करेगे।

सत्सग का विस्तार रूप प्रकट करते हुए श्री सन्तरा आर्य ने बताया कि इस बार प्रवचन का विषय 'महर्षि दयानन्द और शिवरात्रि' रखा गया है तथा वक्ता के रूप मे आमन्त्रित है डॉ० सुरेन्द्र कुमार जी। डॉ० साहिब इस समय महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक मे सस्कृत के प्रोफेसर हैं तथा प्रखर प्रवक्ता है। आप देश-देशान्तर मे वैदिक विचारधारा का प्रचार करते रहते हैं। श्री आर्य ने आगे बताया कि जहा आनेवाले मार्च महीने की २३, २४, २५ व २६ मार्च, २००१ को आर्यसमाज का १२५वा स्थापना दिस स्थापना स्थल मुम्बई मे मनाया जा रहा है वहीं दयानन्दमठ रोहतक के इस वैदिक सत्सग मे आर्यसमाज रूपी क्रान्तिकारी सगठन के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती का १७७वा जन्मदिवस पर विशेष चर्चा होगी तथा शिवरात्रि पर्व की महिमा एव वास्तविक स्वरूप पर प्रकाश डाला जायेगा। उन्होने बताया कि प्रात ९ बजे से यज्ञ मे सत्सग प्रारम्भ होता है जो १०-०० बजे तक चलता है। फिर यज्ञप्रसाद तथा ईश्वर भक्ति के गीतो का कार्यक्रम चलता है जो ११ बजे पूरा होगा। फिर ११ बजे से १२ बजे तक वैदिक प्रवचन होता है तथा १२ बजे से १ बजे तक ऋषि लगर मे सभी मिलाकर भोजन करते हैं। आइये हम सब मिलकर सत्सग का लाभ उठाये। निवेदक रविन्द्र आर्य, कार्यालय मन्त्री, दयानन्दमठ, रोहतक

शोक समाचार

रोहतक। वेदप्रचार मण्डल जिला जीन्द के प्रधान एडवोकेट श्री देशराज आर्य की धर्मपत्नी एव आर्यसमाज की सक्रिय एव जुझारू महिला श्रीमती शातिदेवी का निधन १३ जनवरी, २००१ शनिवार को होगया। बहिन शातिदेवी ने आज के वातावरण मे जिस गति पूरे परिवार को सुसस्कृत बनाया तथा आर्यसमाज के हर कार्य मे विशेष रुचि लेकर सहयोग किया वह सबके लिए अनुकरणीय है। उनका जन्म १५ अगस्त, १९३३ ई० मे हुआ था। उनक आयु ६७ वर्ष थी। २१-१-२००१ को पजाबी धर्मशाला नजदीक भारत सिनेमा, जीन्द मे दिवगत आत्मा की शाति के लिए प्रार्थना सभा रखी गई। इस अवसर पर शोकाकुल परिवार को सान्त्वना एव दिवगत आत्मा को श्रद्धाजलि देने आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकर्ता प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी, उपमन्त्री श्री रामधारी शास्त्री तथा सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के प्रदेश अध्यक्ष भी पहुचे।

निवेदक सन्तराम आर्य, प्रदेशाध्यक्ष, सार्व० आर्य युवक परिषद्, रोहतक

भण्डारी के ज्येष्ठ भ्राता की शोकसभा

आदरणीय श्री फतेहसिह जी भण्डारी अन्तरग सदस्य आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के ज्येष्ठ भ्राता श्री सरदारसिह जी की शोक सभा (शान्ति यज्ञ) १० जनवरी, २००१ को ग्राम पटासनी जिला झज्जर मे भावभीनी श्रद्धाजलि के साथ सम्पन्न हुई। श्री सरदारसिह जी ९४ वर्ष के थे। उनका सारा जीवन आर्यसमाज और देश की सेवा मे व्यतीत हुआ। वे श्री रामचन्द्र देहलवी और डॉ० मगलसेन के साथ हिन्दी सत्याग्रह मे सगरूर जेल मे भी रहे थे और उन्होने प्रो० शेरसिह जी के साथ राजनैतिक कार्यो मे बढ-चढकर भाग लिया था। उनकी शोक सभा मे गुरुकुल झज्जर के आचार्य विजयपाल जी 'योगार्थी', श्री जीवानन्द जी नैष्ठिक, महात्मा धर्मवीर जी गुरुकुल किशनगढ घासेडा, सेवानन्द जी नीरपुर, चौ० मनफूल भू०पू० स्पीकर, पूर्णसिह जी प्रधान आर्यसमाज झज्जर, धर्मसिह नादान झज्जर, ईश्वरसिह तूफान भजनोपदेशक ने श्रद्धाजलि अर्पित की। यज्ञोपरान्त भण्डारी जी ने विभिन्न सस्थाओ को दान दिया–

आदर्श गोशाला गुरुकुल झज्जर को ११०० रुपये, गुरुकुल किशनगढ घासेडा को ५०० रुपये, आर्यसमाज झज्जर को १०१ रुपये, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को १०१ रुपये, नीरपुर आश्रम को १०१ रुपये।

–अजयकुमार शास्त्री, गुरुकुल झज्जर

गांव खरकाली (नजदीक मधुबन) जिला करनाल में गुरुकुल स्थापित

दयानन्दमठ रोहतक। सार्वदेशिक युवक परिषद् जिला करनाल के अध्यक्ष श्री आचार्य यशवीर आजाद शास्त्री एम ए, पी-एच डी ने नववर्ष एव नई सहस्राब्दी के प्रथम सूर्योदय के समय अपने ही पैतृक गाव खरकाली जिला करनाल मे एक अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल खरकाली की आधारशिला रखवाई तथा आर्य महासम्मेलन आयोजित किया। सम्मेलन के मच का सचालन आचार्य यशवीर आजाद शास्त्री ने किया तथा सयोजक उनकी धर्मपत्नी श्रीमती वीरमती आर्या ने किया। इसमे अनेक विद्वानो एव सगठनो के प्रतिष्ठित लोगो ने भाग लिया।

सम्मेलन के अवसर पर मच से बोलते हुए सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के प्रान्तीय अध्यक्ष श्री सन्तराम आर्य ने उपस्थित युवा वर्ग का आह्वान किया कि वे अपने जीवन मे अन्धविश्वास, सामाजिक कुप्रथाओ को दूर करने के लिए अपने अन्दर सकल्प शक्ति जगाये तथा भावी पीढी के निर्माण हेतु गुरुकुलीय प्रणाली को सहयोग दे। श्री यशवीर शास्त्री ने बताया कि इस गुरुकुल का उद्देश्य भविष्य मे ऐसी युवा शक्ति का निर्माण करना होगा जिसमे प्राचीन और नवीन शिक्षा प्रणाली का समावेश हो।

–रविन्द्रकुमार आर्य

भजन– मा बापों से प्रार्थना

टेक : ओ मा बाप कहानेवालो औलाद बनाना सीखलो।

बच्चा पैदा तो जग मे हर एक जानवर करता है।
खाता-पीता सो जाता और डरता जीता-मरता है।
दुनिया मे देखो भालो, औलाद ।।१।।
यही काम किए तो जग मे पशु मनुष्य मे भेद नही।
वह नर पशुओ से गिर जाता पढे शास्त्र वेद नही।
यू जन्म लजानेवालो, औलाद ।।२।।
माता शत्रु पिता है बैरी, जो औलाद पढावे ना।
जैसे बगुला हस सभा मे बैठके शोभा पावे ना।
यू शर्मानेवालो, औलाद ।।३।।
समझो जहर पिलाता है जो प्यार करे सन्तान को।
लाड-प्यार से निर्भय होकर देते दु ख जहान को।
यू जहर पिलानेवालो, औलाद ।।४।।
हुक्का सिगरेट बीडी पीते कहीं पशु चरवाते हो।
साग सिनेमा दिखा-दिखाकर इन्हे बदमाश बनाते हो।
पीछे पछतानेवालो, औलाद ।।५।।
क्या दाता क्या शूरवीर क्या देशभक्त सन्तान करो।
कायर क्रूर कुकर्मी जनकर न दुनिया का नाज बिरान करो।
तादाद बढानेवालो, औलाद ।।६।।
बचपन में शादी कर करके ना इनको कमजोर करो।
'नित्यानन्द' कहे पछताओगे जल्दी इस पर गौर करो।
ओ सुनने-सुनानेवालो, औलाद ..... ।।७।।

–श्री स्वामी नित्यानन्द जी का शिष्य मोहब्बतसिंह आर्य

सार्वदेशिक आर्ययुवक परिषद् के बढ़ते कदम

–रविन्द्रकुमार आर्य

दयानन्दमठ, रोहतक। आर्यसमाज का युवा सगठन 'सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्' के सयोजकत्व मे तथा स्वामी इन्द्रवेश जी व स्वामी अग्निवेश जी महाराज द्वारा आहूत आर्यसामाजिक कार्यकर्ताओ की बैठक आर्यसमाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली मे बेहद सफल रही। इस बैठक मे सगठन की भिन्न-भिन्न इकाइयो के रूप मे कार्यरत अनेक प्रदेशो के जुझारू एव सघर्षशील साथियो ने दो दिन तक चिन्तन, मनन करने के बाद एक १५ सूत्रीय कार्यक्रम को अन्तिम रूप दिया। इसमे उन सभी बिन्दुओं को समायोजित करने का प्रयास किया गया है जिससे आर्यसमाज को पुन प्रखर प्रवक्ता के रूप मे प्रतिस्थापित किया जासके।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् की हरयाणा प्रान्तीय इकाई के अध्यक्ष श्री सन्तराम आर्य ने विस्तार से इस कार्ययोजना का ब्यौरा देते हुए बताया कि २१वीं शताब्दी के लिए आर्यसमाज को राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पूरी तेजस्विता से उभारने के लिए पिछले ३२ वर्षो से कार्यरत जुझारू युवा साथियो ने सकल्प लिया है कि आगामी अप्रैल-मई मे आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर १२५ जीवनदानी निम्नलिखित कार्यक्रम को लागू करने के लिए सर्वात्मना की आहुति देगे। श्री आर्य ने बताया कि जिन पन्द्रह बिन्दुओ को परिषद् ने लागू करने का निश्चय किया है वे इस प्रकार हैं–

(१) आर्यसमाज एक आध्यात्मिक, सास्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक मुद्दो पर वैचारिक आन्दोलन है, सकीर्ण अर्थो मे धार्मिक नहीं है, मात्र हिन्दुओ का एक सुधारवादी सम्प्रदाय नहीं है अपितु विश्व के समस्त सगठित धर्मो एव विचारधाराओ का प्रखर समीक्षक है।

(२) आर्यसमाज का कार्यक्षेत्र समस्त विश्व का मानव समाज है। विश्व मे विभिन्न राष्ट्रीयताओ मतमतान्तरो एव भाषाओ का प्रचलन है। इसलिये आर्यसमाज के प्रचार मे स्थानीय राष्ट्रीयता, स्थानीय भाषा व बोली एव सास्कृतिक प्रतीको की प्राथमिकता आवश्यक है। अत सभी स्थानीय जनसमूहो के प्रति समान आदर भाव से प्रचार शैली विकसित की जाये।

(३) दूसरो से जुडने के अथवा दूसरो को जोडने का तरीका वे तमाम मुद्दे होने चाहिये जिन पर हमारी परस्पर पूर्ण मतैक्यता (सहमति) हो। इन मुद्दो को सामाजिक सहकर्म का आधार बनाकर भिन्नता के मुद्दो पर सवाद स्थापित किया जाये। आचार-विचार भिन्नता के बावजूद मानवीय सम्बन्धो मे यथासम्भव मधुरता बनी रहे। कडवाहट अथवा हिसात्मक प्रतिरोध को हर तरीके से नकारा जाये। सहमति के मुद्दो के आधार पर जन-आन्दोलन चलाए। जन-आन्दोलनो के लिये अनेक मोर्चे खोले जाए जैसे साक्षरता, शाकाहार, नशाबन्दी, स्वभाषा, बालमजदूरी, बन्धुआ मजदूरी आदि। एक मोर्चे की जिम्मेदारी किसी एक व्यक्ति को दी जाए। वह मुख्यरूप से उसी कार्य के प्रति समर्पित रहे।

(४) वैदिक मान्यताओ पर आधारित तथा आर्यसमाज के दूसरे नियम मे परिभाषित परमेश्वर की ही उपासना को लक्ष्य निर्धारित कर व्यक्ति को दैनिक साधना मार्ग से राग-द्वेष रहित होकर समता मे स्थित होने की प्रेरणा दी जाये और सामाजिक न्याय की अवधारणा को पुष्ट करते हुए सामाजिक सघर्ष को तेज किया जाये। सामान्य परिस्थिति मे अपेक्षाकृत कमजोर को सशक्त करने का उपाय हो।

(५) आर्यसमाज के १० नियम अपने आपमे एक समतामूलक आस्तिक समाज की वैश्विक परिकल्पना को साकार करने के लिए पर्याप्त हैं। सामान्यरूप से इन १० नियमो को स्वीकार करनेवाले व्यक्ति को आर्यसमाज की सदस्यता दी जाये। उपनियमो तथा आचार-सहिता का बधन आर्यसमाज सगठन के वरिष्ठ पदाधिकारियो के लिए सीमित किया जाये।

(६) जिला, प्रान्त, राष्ट्र तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के आर्य सगठनो के प्रधानो के लिए पूर्णकालिक होना जरूरी होगा। पूर्णकालिक कार्यकर्ता एव प्रधान आदि की आर्थिक जिम्मेदारी संगठन उठाये और उन्हे सम्मानपूर्वक मानदेय प्रदान करे। (क्रमश)

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

आर्यसमाज गगाटेही जिला करनाल	२९ से ३१ जनवरी, २००१
आर्यसमाज औरगाबाद मित्रोल (फरीदाबाद)	६ से ११ फरवरी २००१
वेदप्रचार मण्डल बदरपुर क्षेत्र, नई दिल्ली	१७-१८ फरवरी, २००१
गुरुकुल झज्जर का वार्षिकोत्सव	२४-२५ फरवरी, २००१
गुरुकुल गदपुरी फरीदाबाद	२ से ४ मार्च, २००१
विशाल आर्य महासम्मेलन सोनीपत	४ मार्च, २००१
गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद	१७-१८ मार्च, २००१
अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, मुम्बई	२३ से २६ मार्च, २००१

–डॉ० सुदर्शनदेव आचार्य, वेदप्रचाराधिष्ठाता

शान्तियज्ञ व श्रद्धांजलि समारोह

आर्यसमाज गगायचा अहीर बीकानेर के सस्थापक म० हीरालाल के विशेष सहयोगी स्वर्गीय म० हट्टीसिंह का १२-१-२००१ को शान्तियज्ञ महात्मा च्यवनमुनि जी के ब्रह्मत्व में तथा श्री रामकर्ण, श्री जीवानन्द जी नैष्ठिक, महात्मा धर्मवीर जी के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुआ। उनके सुपुत्र महादेव व जगदेव अपनी धर्मपत्नियों सहित यजमान थे। यज्ञोपरान्त यज्ञ प्रसाद (हलवा) दिया गया।

तदुपरान्त श्री जीवानन्द जी नैष्ठिक की अध्यक्षता में सर्वप्रथम श्रीमती पुष्पा शास्त्री द्वारा श्रद्धाजलि अर्पित की गई। बहन पुष्पा जी ने आर्यसमाज सैक्टर ३ का व म० जयप्रकाश जी ने आर्यसमाज रेवाडी का शोक सन्देश पढकर सुनाया। फिर स्वामी व्रतानन्द जी मोहद्दीनपुर, राव लालसिह जी प्रधान गऊशाला बूढी बावल, श्री ओमप्रकाश जी स्वतन्त्रता सेनानी सुलोधा, मा० सत्यवीर जी लोधाणा, स्वामी प्रेमानन्द जी, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रचारक म० विश्वामित्र (लूखी), लाला कोटूराम जी रेवाडी, म० च्यवनमुनि जी नसोपुर, म० धर्मवीर जी, मा० भूपसिह जी व थानेदार सुजानसिह जी ने आर्यसमाज कोसली की तरफ से तथा मा० दयाराम ने आर्यसमाज गगायचा अहीर बीकानेर की तरफ से श्रद्धाजलि अर्पित की।

म० कवरपाल जी दोंगडा अहीर ने अपना श्रद्धाजलि सन्देश दिया व एक भजन भी गाया।

रोशनी ना दे किसी को, जो जले तिल-तिल नहीं।
वो दीप कहलाने के सचमुच, दोस्तो काबिल नहीं।।

स्वामी जीवानन्द जी नैष्ठिक ने सभी गुरुकुलो की तरफ से श्रद्धासुमन अर्पित किये व एक भजन भी गाया।

ये भावना बनाले, मत कर बुरा किसी का।
तू ओ३म् नाम गा ले, मत ध्यान धर किसी का।।

इसके बाद नैष्ठिक जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा रोहतक की बैठक का विवरण दिया जिसमे फैसला लिया गया कि सतलुज-यमुना लिक नहर के निर्माण के लिये सभी जिलो में सघर्ष समिति बनाई जाएगी। रोहतक मीटिग में नैष्ठिक जी ने रेवाडी व झज्जर इलाके की तरफ से पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया था।

अन्त मे महादेव व जगदेव की तरफ से ४० हजार रुपये का ट्रस्ट खोलने की घोषणा की जो वैदिक प्रचार के लिए कार्य करेगा। गुरुकुल किशनगढ घासेडा को ५०१ रुपये, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को १०१ रुपये, गऊशाला बूढी बावल को १०१ रुपये, गुरुकुल जसात (पटौदी) को १०१ रुपये, महात्मा च्यवनमुनि जी, स्वामी प्रेमानन्द जी, श्री जीवानन्द जी, व्रतानन्द जी, आर्यसमाज गगायचा अहीर इन सभी को १०१-१०१ रुपये दक्षिणा स्वरूप भेट दिये गये। शान्तिपाठ के बाद सभा का समापन हुआ। सभी आगन्तुको को ब्रह्मभोज करवाया गया।

म० जयप्रकाश द्वारा इस सभा का सचालन किया गया व महाशय जी का बनाया एक भजन गाया–

लिया देख जगत् का मेला, अब चलने की तैयारी है।

—मा० दयाराम आर्य,
मन्त्री आर्यसमाज गगायचा अहीर बीकानेर (रेवाडी)

शोक समाचार

श्री महीपाल आर्य सुपुत्र श्री हरपतसिंह गांव आसन का दिनांक ९-१-२००१ को ३२ वर्ष की आयु में बीमारी के कारण देहान्त होगया। वह म० जयपालसिंह आर्य सभा भजनोपदेश के चाचा के लडके थे। अपने पीछे एक लडका व दो लडकिया छोडकर गए। दिनांक १९-१-२००१ को शोकसभा में श्रद्धाजलि दी गई।

परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्‌गति व परिवार को दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करे। सभा को एक सौ एक रुपये का दान दिया गया।

—म० जयपाल सिंह आर्य, सभा भजनोपदेशक

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

क्रान्तिकारी धर्मयोद्धा..........

पाण्डित्य ने उन्हे हिन्दूधर्म के मूल वेदविद्या तक पहुचा दिया। चारों वेदो का पर्याप्त समय विचार-विमर्श करने के बाद ऋषि दयानन्द इस परिणाम पर पहुचे कि यदि भारतीय धर्म (वैदिक) को शुद्ध किया जा सके तो किसी विदेशी (ईसाई और इस्लाम) धर्म के लिए यहा कोई स्थान नहीं रह जाएगा। वेदों, उपनिषदो तथा गोतम, कणाद, कपिल, पतञ्जलि और व्यास के मौलिक दर्शनशास्त्रो से आलोकित दयानन्द के हृदय मे बाइबिल, कुरान और पुराणो के लिए कोई श्रद्धा नहीं बची। वेदों की ओर लौटो की उनकी तुमुल ध्वनि एक बारगी सम्पूर्ण आर्यावर्त में गूज गई। स्वामी जी के मन मे ऐसे लोगो और मत-मतान्तरो के लिए कोई स्थान नहीं था जिन्होने पिछले दो-तीन हजार वर्षों के दौरान भारतीय वैदिक धर्म के पतन मे (पौराणिक धर्म के रूप मे परिवर्तित होने मे) योगदान दिया था। स्वामी जी के गुरु ने उन्हे शिक्षा दी थी कि बहुत समय से भारतवर्ष मे वेदो की शिक्षा देना बन्द होगया है। जाओ, वेदो और वैदिक शास्त्रो की शिक्षा दो और उनके प्रकाश को उस अन्धकार को दूर करो, जिसे मिथ्या धर्मो (मत-मतान्तरो के अर्थ मे) ने फैलाया है अत दयानन्द ने वेदो के सन्देश को प्रचारित-प्रसारित करना प्रारम्भ कर दिया। इस प्रकार स्वामी जी द्वारा हिन्दू धर्म के सुधार आन्दोलन ने एक सकारात्मक रूप ग्रहण किया। वैदिक धर्म के बारे मे स्वामी जी के ओजस्वी प्रवचनो तथा शास्त्रार्थो ने दुधारी तलवार का काम किया। उसने जहा हिन्दूधर्म को अन्धविश्वासो के मकडजाल से मुक्त किया वहां ईसाइयो और इस्लाम मतावलम्बियों द्वारा धर्म परिवर्तन की वेगवती धारा को भी रोका। परमात्मा के इकलौता पुत्र होने तथा मुक्तिदाता और परित्राता के रूप मे हजरत ईसामसीह के व्यक्तित्व और कृतित्व पर स्वामी जी ने तार्किक आक्षेप किये। इस्लाम के अन्तिम पैगम्बर हजरत मोहम्मद साहब की जीवन शैली, जन्नत, दोजख और काफिरो के सन्दर्भ में कुरान की युक्तिशून्य आज्ञाओं की भी स्वामी जी ने खिल्ली उडाई। इसके साथ ही स्वामी जी ने ब्राह्मण धर्म को भी चुनौती दी। उन्होने उचित ही उद्‌घोष किया कि तीर्थयात्रा और गगास्नान का कोई धार्मिक महत्त्व नहीं है। देवी-मन्दिरो मे पशुबलि एक पापपूर्ण कृत्य है। वैष्णवों का महान् धार्मिक ग्रन्थ भागवत पुराण अनैतिक है। मूर्तिपूजा वेदसम्मत नहीं, एक धर्माडम्बर मात्र है, जिससे ईश्वरप्राप्ति का कोई सम्बन्ध नहीं है। यह जन्म-मरण चक्र से मुक्ति के मार्ग मे सीढी नहीं बल्कि एक गहरी खाई है जिसमे गिरकर जीवन व्यर्थ गवाता है।

दयानन्द के विचारो से ब्राह्मणो मे बडा क्षोभ व्याप्त हुआ और वे उनकी कटु आलोचना करने लगे। किन्तु ब्राह्मणों के आक्रमण से दयानन्द का आन्दोलन दब नहीं सका। स्वामी जी ने मूर्तिपूजा के साथ-साथ बहुदेववाद का भी प्रबल खण्डन किया। उन्होंने यह बताया कि वेद, दर्शन और उपनिषदो में परमेश्वर (ब्रह्म) में जिन गुणों का होना बताया जाता है, उन गुणों से युक्त केवल एक ही ब्रह्म है और वह सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है (आर्यसमाज का द्वितीय नियम)।

दयानन्द ने यह भी अनुभव किया कि ब्राह्मणो ने जो अपना गढ खडा कर लिया है, वही हिन्दूधर्म मे घुसी बुराइयो की जड है। अत उन्होंने बिना किसी लाग-लपेट के स्पष्ट सत्य बोलकर इस गढ की जडो को हिला डालने का सकल्प लिया। उन्होंने केवल जन्म के आधार पर प्राप्त ब्राह्मणो के अधिकार पर सवालिया निशान लगाये। जब ब्राह्मणो ने अपने अधिकारो को तर्कसगत बताने के लिए शास्त्रीय प्रमाण का सहारा लिया तो स्वामी जी ने स्वय ही मनुस्मृति का प्रमाण देकर यह सिद्ध किया कि ब्राह्मण को वेदो का ज्ञाता होना चाहिए और जो व्यक्ति इस स्तर तक नहीं पहुच पाता, वह ब्राह्मण कहलाने के योग्य नहीं है।

सन्दर्भ

(१) काशी मे एक दिन एक व्यक्ति ने वर्णव्यवस्था को जन्मगत सिद्ध करने के उद्देश्य से महाभाष्य का एक श्लोक प्रस्तुत किया–

विद्या तपश्च योनिश्च एतद् ब्राह्मण्यकारकम्।
विद्यातपोभ्या यो हीनो जातिब्राह्मण एव स ।।

अर्थ—ब्राह्मणत्व के तीन कारक हैं–(१) विद्या (२) तप (३) योनि। जो विद्या और तप से हीन है वह जात्या (जन्मना) ब्राह्मण तो है ही।

स्वामी जी ने इसके खण्डन मे मनु का यह श्लोक प्रस्तुत किया–

यथा काष्ठमयो हस्ती यथा चर्ममयो मृग ।
यश्च विप्रोऽनधीयानस्त्रयस्ते नाम बिभ्रति।।

(मनुस्मृति २।१५७)

अर्थ—जैसे काठ का कठपुतला हाथी और चमडे का बनाया मृग होता है। वैसे ही बिना पढा हुआ विप्र अर्थात् ब्राह्मण होता है। उक्त हाथी, मृग और विप्र ये तीनो नाममात्र धारण करते हैं। (तुलनीय सस्कारविधि, पृष्ठ ८५)। (देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय रचित स्वामी दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र भाग-२, पृ० ६०२, प्रथम सस्करण, १९९० विक्रमी)।

इस विषय में मनुस्मृति के अन्य प्रमाण भी द्रष्टव्य हैं–

योऽनधीत्य द्विजो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम्।
स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वय ।।

(मनुस्मृति २।१६८)

अर्थ—जो द्विज वेद को न पढकर अन्य शास्त्रो मे श्रम करता है, वह जीते जी अपने पुत्र-पौत्रो (वश) सहित शीघ्र ही शूद्रत्व को प्राप्त होजाता है।

शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम्।
क्षत्रियाज्जातमेव तु विद्याद्वैश्यात्तथैव च।।

(मनुस्मृति १०।६५)

अर्थ—(१) शूद्र ब्राह्मण होजाता है और ब्राह्मण शूद्र होजाता है। मनु के इस वाक्य का भी विचार करना चाहिए (ऋषिदयानन्द पूना प्रवचन, पृ० २०)।

(२) कर्मो के द्वारा ब्राह्मण शूद्र होवे और शूद्र भी ब्राह्मण होजावे। यही पुरानी रीति है। यदि ब्राह्मण दुश्चरित्र, मूर्ख और धर्महीन हो तो उसे शूद्र बना देना चाहिए और शूद्र यदि ज्ञानी, सच्चरित्र और धार्मिक हो तो उसे ब्राह्मण पद पर प्रतिष्ठित कर देना चाहिए (स्वामी दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र, भाग-१, पृ० २३१)।

रीडर सस्कृत विभाग,
रणवीर रणञ्जय महाविद्यालय,
अमेठी-२२७४०५ (उ०प्र०)

हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं के माध्यम से पढ़नेवाले युवकों के साथ होरहे अन्याय को दूर कराने के लिए निवेदन

प्रिय बंधु/बहन, सादर नमस्ते।

भारत सरकार का सघ लोक सेवा आयोग भर्ती के लिए, जो सैकडो, परीक्षाए लेता है उनमे से अधिकाश मे हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओ के माध्यम की अनुमति है। भारतीय प्रशासनिक सेवा (आई ए एस) की सर्वोच्च परीक्षा भी हिंदी माध्यम से दी जारही है। परन्तु ९-१० परीक्षाओ मे अभी भी अग्रेजी माध्यम तथा अग्रेजी का प्रश्नपत्र अनिवार्य है, जिनमे राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (एन डी ए) तथा सम्मिलित रक्षा सेवा (सी सी एस) की दो महत्त्वपूर्ण परीक्षाए भी हैं। इनमे क्रमश कक्षा बारह और बी ए उत्तीर्ण युवक बैठ सकते हैं तथा सरकार उन्हे उच्च श्रेणी के अफसर बनाने के लिए सेना के ट्रेनिंग कॉलेजो मे अपने खर्चे पर ट्रेनिंग देती है।

देश मे करोडो युवक हिंदी और दूसरी भारतीय भाषाओ के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करते हैं। अमीर घरो के मुट्ठीभर युवक ही महगे पब्लिक स्कूलो में अग्रेजी माध्यम से पढाई करते हैं। अग्रेजी की अनिवार्यता के कारण भारतीय भाषाओ से पढनेवाले प्रतिभाशाली युवक इन परीक्षाओ मे बैठने और सेना मे ऊचे अफसर बनने की सोच भी नहीं सकते। इस कारण युवको मे केद्र सरकार की इस भेदभावपूर्ण परीक्षा नीति के विरुद्ध भारी आक्रोश फैल रहा है।

पूर्व सेनाध्यक्ष जनरल मलिक के अनुसार सेना मे १३००० अफसरो की कमी है। इसका मुख्य कारण भी अग्रेजी अनिवार्यता है। क्योकि पब्लिक स्कूलो के ऐशोआराम में पले युवक सेना जैसी कठोर सेवा मे जाना नहीं चाहते। वे तडक-भडकवाली बहुराष्ट्रीय कपनियो में ही भागते हैं और मध्यम और निम्न मध्यम ग्रामीण वातावरण के प्रतिभाशाली तथा बलशाली युवको को अग्रेजी की अनिवार्यता बनाकर सरकार स्वय ही सैनिक अफसर बनने नहीं दे रही। ऐसे मे अफसरो की कमी तो रहेगी ही।

राजभाषा सघर्ष समिति ने इस अन्याय को दूर कराने के लिए पिछले वर्ष युवको मे हस्ताक्षर अभियान चलाया था। दिल्ली, हरयाणा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश, बिहार तथा दूरदराज के प्रदेशो-असम तक के लगभग १५००० युवको ने प्रधानमत्री को सम्बोधित एक प्रतिवेदन पर हस्ताक्षर करके हमारे पास भेजे हैं। इस अभियान को और प्रभावशाली बनाने के लिए अब हम बुद्धिजीवियो के हजारो पत्र प्रधानमत्री जी तक पहुचाना चाहते हैं।

लोकतत्र मे लोक शक्ति ही निरकुश शासन को प्रभावित कर सकती है। आप भारत के एक माननीय देशभक्त हैं। आप सहमत होगे कि सरकारी सेवाओ में भेदभाव असन्तोष को जन्म देता है। इस निरकुश भेदभाव को दूर कराने मे हम आपका निम्न प्रकार से सहयोग चाहते हैं-

(क) सलग्न पत्र पर हस्ताक्षर करके, पता लिखकर तथा टिकट लगाकर प्रधानमत्री जी को शीघ्र से शीघ्र भेजने की कृपा करे।

(ख) अपने मित्रो, सहकर्मियो छात्रो, नवयुवको, अभिभावको, सस्थाओं तथा राजनैतिक कार्यकर्ताओ से भी अधिक से अधिक पत्र भिजवाए।

(ग) अपने क्षेत्र के ससद् सदस्यो, विधायको तथा राजनैतिक दलो से मिलकर उन्हे इस मुद्दे की जानकारी दे।

(घ) इस निवेदन को सलग्न पत्र सहित पत्र-पत्रिकाओ मे प्रकाशित करे-कराए।

विशेष-(१) अपनी आवश्यकतानुसार पत्र की फोटो प्रति करा ले या पत्र/दूरभाष से सम्पर्क करके हमारे कार्यालय से मगा लेवे।

(२) आप जो भी कार्यवाही करे उसकी सूचना हमे अवश्य भेजे।

विश्वास है आपसे पूरा सहयोग मिलेगा। धन्यवाद सहित,

निवेदक

अश्विनीकुमार पाठक — अध्यक्ष ७१०१६३६
श्यामलाल — महासचिव ७०४७५४५
प्रो० जयदेव आर्य — जनसम्पर्क सचिव ७८६२४५३

राजभाषा संघर्ष समिति

ए-४/१५३, सैक्टर-४, रोहिणी, दिल्ली-११००८५ दूरभाष ७०४७५४५

संविधान में निष्ठा रखने की शपथ लेनेवाली सरकार के लिए क्या यह डूब मरने की बात नहीं है कि जिस हिंदी को संविधान में राजभाषा का पद दिया गया है, उस हिंदी भाषा के माध्यम से देश के प्रतिभाशाली युवक सरकार की भर्ती परीक्षाओं में भी न बैठ सकें।

सेवा मे, दिनाक

माननीय श्री अटलबिहारी वाजपेयी,
प्रधानमत्री,
भारत सरकार, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय रक्षा अकादमी तथा सम्मिलित रक्षा सेवा परीक्षाओं से अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त करके हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में परीक्षा देने की अनुमति देने का अनुरोध।

मान्यवर,

आप जानते हैं कि राष्ट्रीय रक्षा अकादमी तथा सम्मिलित रक्षा सेवा की परीक्षाओं मे अग्रेजी की अनिवार्यता एक प्रश्न तथा माध्यम के रूप मे यथावत् जारी है। इस अनिवार्यता के बने रहने से-(क) सविधान मे दिए गए अवसरो की समानता के अधिकार (ख) ससदीय राजभाषा समिति की राष्ट्रपति द्वारा स्वीकार की गई सिफारिशो (ग) रक्षा मत्रालय द्वारा बार-बार किये गये अनुरोधों (घ) राज्य सभा की आश्वासन समिति (जिसमें सब पार्टियों के सदस्य हैं) की मागों तथा (ड) सतीशचन्द समिति की सिफारिशों का सरासर उल्लघन होरहा है।

इसके कारण देश की रक्षा प्रणाली भी कमजोर होरही है। हमारी सेनाओ में लगभग १३००० अफसरो की कमी इसीलिए बनी हुई है, क्योंकि पब्लिक स्कूलों के अंग्रेजी में शिक्षित सुविधाभोगी युवा सेना के मुकाबले बहुराष्ट्रीय कम्पनियो की नौकरियों को वरीयता देते हैं और भारतीय भाषाओवाले प्रतिभाशाली युवको के दरवाजे स्वय आपकी सरकार ने बन्द कर दिये हैं।

आप स्वय इन परीक्षाओ मे हिंदी भाषा का विकल्प दिये जाने का समर्थन करते रहे हैं। आपने ससद् मे कहा था-"आज हिंदी क्षेत्रो के विद्यार्थी बिगड़े हुए हैं। वे विद्यार्थी इसलिए बिगड़े हैं कि उन्हे अपना भविष्य अधकारमय दिखाई दे रहा है। वे मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। अब अगर केद्र सरकार की परीक्षाओ मे अंग्रेजी अनिवार्य होगी तो केद्र की परीक्षाओ मे उनके लिए सफलता प्राप्त करना असभव होगा। अगर कोई हिंदी माध्यम से परीक्षा देना चाहता है तो हिंदी माध्यम से दे और जो अग्रेजी माध्यम से देना चाहता है, तो अग्रेजी माध्यम से दे, ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए।"

अत आप महानुभाव की सेवा मे निवेदन है कि रक्षा सेवा परीक्षाओ को हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओ के माध्यम से कराने के आदेश देने की कृपा करे ताकि अंग्रेजी की विषय तथा माध्यम के रूप मे अनिवार्यता समाप्त होसके। आशा है आप अपने कार्यालय में पिछले ढाई वर्षो से लटका कर रखी गई इस विषयक फाइल पर हस्ताक्षर करके करोडों युवको के साथ होरहे अन्याय को दूर करेगे।

पत्र की पावती भिजवा सके तो कृपा होगी।

शुभकामनाओ सहित,

पूरा पता - भवदीय

आर्यसमाज मन्दिर का उद्घाटन

आर्यसमाज कौल (कैथल) द्वारा आर्यसमाज मन्दिर का निर्माण कार्य का उद्घाटन २७-१०-२००० को हुआ। निर्माण कार्य के लिए बहन सविता धर्मपत्नी स्व० अशोककुमार ने ६५०००/- रुपये तथा ४०० गज जमीन दान मे दी। आर्यसमाज के कार्यकर्ताओ ने मिलकर दान एकत्र कर लगभग दो मास मे दो लाख रुपये की लागत से भवन का निर्माण कार्य किया। आर्यसमाज मन्दिर के भवन का उद्घाटन दिनाक ७-१-२००१ को हवन यज्ञ समारोह द्वारा स्व० लाला अशोककुमार के बेटे सुमित व उनकी माता सविता जी ने दीप जलाकर किया। यज्ञ के ब्रह्मा महाशय रणवीर आर्य प्रधान आर्यसमाज अमीन (कुरुक्षेत्र) थे। इस अवसर पर चौ० गुलाबसिह सरपच ग्राम कौल ने ११००/- रु० की राशि दी। डा० ताराचन्द आर्य प्रधान आर्यसमाज कौल ने सहयोग की अपील की। आर्यसमाज के मत्री ने मदिर निर्माण का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया तथा सभी दानी महानुभावो का धन्यवाद किया। **-महावीर आर्य,** मन्त्री आर्यसमाज कौल व सदस्य जिला परिषद् कैथल

शोक समाचार

सभा पटवारी श्री परसराम के भतीजे श्री प्रतापसिह गाव धनाना जिला सोनीपत निवासी का देहान्त १९-१-२००१ को ३८ वर्ष की आयु में हृदयगति रुक जाने से होगया। वे वन विभाग मे गार्ड के पद पर कार्यरत थे। परमात्मा उनकी आत्मा को सद्गति देवे तथा उनके परिवार को इस विकट दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा इस असीम दुख पर शोक प्रकट करती है। -सभामंत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ४६८७४, ५७७७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ४०७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ सृष्टिसवत् १, ९६, ०८, ५३, १०१
पजीकरणसख्या टैक/एच आर/49/रोहतक/99 ☎ ०१२६२-४०७२२

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र रोहतक

प्रधानसम्पादक :- प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामन्त्री   सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री   सहसम्पादक :- डा० सुदर्शनदेव आचार्य

वर्ष २८ अंक १५ ७ फरवरी, २००१ वार्षिक शुल्क ६०) आजीवन शुल्क ६००) विदेश में १० पौंड एक प्रति १-२५

नहर निर्माण की मांग को लेकर आर्यसमाज ने प्रदर्शन किया

नहर निर्माण की मांग को लेकर प्रदर्शन करते आर्यसमाजी

उपायुक्त को ज्ञापन देते स्वामी इन्द्रवेश

विवरण

- **स्वामी इन्द्रवेश ने राज्य सरकार पर दक्षिण हरयाणा के साथ भेदभाव का आरोप लगाया।**
- **आर्यसमाजियों ने जेल भरो आन्दोलन की चेतावनी दी।**

झज्जर, ३१ जनवरी। सतलुज-यमुना लिक नहर के निर्माण की मांग को लेकर यहा आर्यसमाज द्वारा धरने व प्रदर्शन का आयोजन किया गया। आर्यसमाज के बैनर तले सैकडो प्रदर्शनकारी दिल्ली गेट पर इकट्ठे हुए। यहा से सभी प्रदर्शनकारी मौन जुलूस के रूप मे चलकर जिला उपायुक्त कार्यालय तक पहुचे। वहा पूर्व सासद व आर्यसमाज के वरिष्ठ नेता स्वामी इद्रवेश ने ज्ञापन पढकर सुनाया।

पूर्व सासद ओम्प्रकाश बेरी ने प्रदर्शनकारियो को सम्बोधित करते हुये कहा कि सपर्क नहर निर्माण के अभाव मे राज्य के किसानों को प्रतिवर्ष करोडो रुपए का नुकसान होरहा है। श्री बेरी ने सरकार को चेतावनी दी कि यदि शीघ्र ही नहर बनाने की दिशा मे कोई सार्थक पहल न की गई तो आर्यसमाज जेल भरो आदोलन आरभ करेगा। आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने सक्षिप्त भाषण मे पानी के मुद्दे को लेकर चलाए जानेवाले आंदोलन के समर्थन की घोषणा की।

पूर्व केंद्रीय मत्री प्रो० शेरसिह ने पजाब के नेताओ पर जानबूझकर नहर निर्माण में रोड़ा अटकाने का आरोप लगाया। पूर्व सासद स्वामी इद्रवेश ने कहा कि राज्य की सभी सरकारे नहरी पानी के वितरण मे दक्षिणी हरयाणा के साथ भेदभाव करती रही हैं। सिरसा, हिसार जिलो मे नहरी पानी माह मे २१ दिन चलता है, जबकि दक्षिणी हरयाणा मे ४ दिन मे।

गुलाटी के माध्यम से राष्ट्रपति, प्रधानमत्री, राज्यपाल व मुख्यमत्री को भेजे गये ज्ञापन मे प्रधानमत्री अटलबिहारी वाजपेयी पर नहर निर्माण के मामले मे रुचि न लेने का आरोप लगाया है। ज्ञापन मे पजाब सरकार पर राजीव लौगोवाल समझौते की शर्तो का उल्लघन करने का आरोप लगाया है। समझौते मे निर्माण कार्य को १५ अगस्त १९८६ तक निपटाने, विवाद की स्थिति उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश की अध्यक्षतावाले ट्रिब्यूनल का निर्णय मानने की शर्त थी। ज्ञापन मे कहा गया है कि हरयाणा तो समझौते मे पक्ष न होते हुए भी शर्तें मान रहा है, किन्तु पजाब इसका उल्लघन कर रहा है। ज्ञापन में जोड नहर के निर्माण शीघ्र पूरा करने के लिए हरयाणा सरकार को आगे आने, उच्चतम न्यायालय मे लंबित मुकद्दमे का शीघ्र निपटारा करने, केन्द्र सरकार से हस्तक्षेप की माग की गई है। पूर्वमंत्री हीरानन्द आर्य, चौ० सूबेसिह पूर्व एस०डी०एम०, बलवीरसिह ग्रेवाल, प्रो० राजसिह तहलान, पूर्व विधायक उदयसिह दलाल, हरयाणा निर्माण मोर्चा के मीडिया सलाहकार जगदीशराय कौशिक भी इस धरने प्रदर्शन मे शामिल थे।

अपील

जैसा कि आप सभी को विदित है कि आर्यसमाज की स्थापना की १२५वीं वर्षगाठ के उलपक्ष्य मे मुबई आर्य प्रतिनिधि सभा ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान मे एक विशिष्ट आर्य महासम्मेलन मार्च मे बबई मे आयोजित करने का निश्चय किया था जो कि अत्यन्त अवसरानुकूल कार्य था। लेकिन दैवी विपदा से उत्पन्न अभूतपूर्व सकट ने और परिस्थिति को पूरी तरह बदलकर रख दिया है। इन परिस्थितियो मे सम्मेलन करना न उचित है न सम्भव।

गणतत्र दिवस के राष्ट्रीय पर्व की प्रभातवेला मे गत सदियो के इतिहास मे आये प्रबलतम विनाशकारी भूकम्प के कारण पूरा गुजरात भयकर त्रासदी मे फस गया है और उसके साथ सारा देश भी। ध्वस्त भवनो के मलबे के नीचे लाखो नर-नारी बच्चे और पशु दबे पडे हैं, यातायात सहित सभी सचार और सम्पर्क के साधन निष्क्रिय होगये। न बिजली, न पानी, न दवाई न अस्पताल और ना ही अपने घरो की सुरक्षा। केवल भारत ही नहीं समूचे विश्व के अनेक राष्ट्र तरह-तरह के साधन और उपकरण इस भयावह स्थिति से निपटने के लिए भेज रहे हैं। साथ ही प्रशिक्षित स्वयसेवको की टोलिया भी आचुकी हैं। ऐसी दशा मे देश के सम्मुख आये इस विकराल सकट की घडी मे आर्यसमाज अपनी परम्परागत आदर्श भूमिका न निभाए यह कभी हो नहीं सकता। देश के किसी भी भूभाग मे यह दुर्घटना घटी होती तो कर्तव्य की दृष्टि से आर्यो की भूमिका मे कोई अन्तर नहीं आनेवाला था। लेकिन भावुकता मनुष्य का स्वभाव है और यह सोचकर कि यह सकट गुजरात की उस पवित्र धरती पर आया है जिसने हमारे पथप्रदर्शक युगपुरुष महर्षि दयानन्द जैसे परोपकारी गुरुवर को जन्म दिया तो कृतज्ञता से मन और व्याकुल होजाता है। भुज और अहमदाबाद मे हुए विनाश के विषय मे समाचार पत्रो मे पर्याप्त जानकारी दी गई है। लेकिन मौरवी और टकारा की स्थिति भी उनसे भिन्न नहीं है। अत सभी अनुभव कर रहे हैं कि अब आवश्यकता इसी बात की है कि सम्मेलन को रद्द करके उसके निमित्त जुटाये जानेवाले समस्त धन व साधन से मौरवी-टकारा एव अन्य क्षतिग्रस्त क्षेत्रो के राहत कार्यो मे पूरी शक्ति से आर्यजन जुट जाए और इन राहत कार्यों का सयोजन और सचालन स्वय वहा आकर करे।

देशभर की आर्यसमाजो के नाम हमारी अपील है कि सब बढ-चढकर इस पवित्र यज्ञ मे योगदान करे। मैं और स्वामी इन्द्रवेश, प्रो० शेरसिह आदि महानुभाव शीघ्र ही भूकम्प पीडित क्षेत्रो की यात्रा के लिए निकलनेवाले हैं। स्वामी सुमेधानन्द जी वहा पहुच चुके हैं। राहत कार्यो का सचालन टकारा को मुख्य कार्यालय बनाकर किया जाना चाहिये।

आशा है सभी आर्यसमाज पूरी शक्ति लगाकर गुजरात की पीडित जनता के पुनर्वास और कष्टमुक्ति के कार्यक्रम को तन, मन धन से पूर्ण सहयोग देगे।

—**ओमानन्द सरस्वती,** प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली।

लोक-परलोक विचार

अष्टम-विचार—(तो कोई भी साथ नहीं देगा ?)

❑ शिवप्रसाद उपाध्याय, आर्यसमाज होशियारपुर (पंजाब)

(गताक से आगे)

अन्त मे ऋषि ने उसकी प्राणप्यारी श्रीमती से कहा—'बहू ! अब तू ही हिम्मत कर अपने प्राणप्रिय के लिये।' श्रीमती ने कहा—'महाराज ! आप यह क्या कह रहे हैं ? मेरे तो इस घर मे आये हुये अभी दो वर्ष भी नहीं हुए। मुझे क्या पता था कि इस घर में आते ही मेरे लिए यह मुसीबत खडी होगी और मुझे बलिवेदी पर चढना पडेगा।' महाराज ! यदि मेरी बलि से ये जी उठे, तो मुझे क्या मिलेगा ? फिर भी तो मैं इनके साथ नहीं रह सकूगी। क्योकि मेरी तो बलि हो ही जाएगी। मैं तो बेबस अपने मायके जाकर रहूगी या जीती रहूगी, तो दूसरी शादी भी रचा लूगी। इस समय अपनी बलि नहीं दे सकती।'

इस प्रकार ऋषि ने घर के सम्पूर्ण सदस्यो को बलि के लिये एक-एक करके पूछा, पर सभी से कोरा जवाब मिला। ऋषि का चेला प्राणायाम की अवस्था मे सभी की बात चुपके से सुन रहा था। उस समय ऋषि ने उस चेले को एक थप्पड मारकर जगाया, तो चेला झट से जी उठा। तब घर के सभी सदस्य बडे खुश हुए। ऋषि का बहुत-बहुत धन्यवाद करने लगे। ऋषि ने अपने चेले को आश्रम में लेजाकर सम्पूर्ण ब्रह्मविद्या पढादी। चेला भी समझ गया कि 'अन्त समय कोई भी साथ नहीं देता।'

तो प्रिय सज्जनो ! कवि जी कह रहे थे—'जना श्मशाने' इष्ट-मित्र, सगे-सम्बन्धीजन सभी श्मशान घाट तक जाने मे ही साथ देते हैं। अन्त मे तो साथ कोई नहीं देता।

कवि से आगे पूछा गया—'महाराज ! धन-सम्पत्ति, पशु, जगह-जमीन, पत्नी और इष्ट-मित्र कोई भी अन्त में साथ नहीं देते, तो बचा यह मेरा शरीर। क्या यह भी परलोक की महायात्रा मे साथ नहीं देगा ? इसके साथ मैं पूरी जिन्दगी रहा हू, बचपन मे माता-पिता ने इसकी बडी सावधानी से देखभाल की थी। इसको खूब बढिया चीजो से पाला-पोसा गया। इसे फल, मेवे, मलाई, मक्खन आदि से पुष्ट किया। हर दो-दो घटे के बाद इसे किसी न किसी वस्तु से पुष्ट किया जाता है। इसको खूब नहलाया। तेल मालिश की जाती है और कहीं थोडी बहुत चोट लगी, तो तुरन्त डाक्टर के पास जाकर इसका उपचार कराया जाता है। अनेक प्रकार की औषधि से इसे हर तरह से स्वस्थ रखने का प्रयत्न किया जाता है। क्या अन्त मे यह साथ नहीं देगा ? कवि ने कह दिया—'**देहश्चितायां परलोकमार्गे**।

'भाई ! इसके लिये आपने सब कुछ किया होगा, परन्तु यह भी तुम्हारे साथ जानेवाली वस्तु नहीं है। हा, इतनी बात जरूर है कि आपने इस देह की जो सेवा की है उसका मेवा यह अवश्य ही चुकाएगा। आपके परलोक के मार्ग मे श्मशान घाट तक जाकर चिता की अग्नि मे भस्म होजायेगा। आप के पीछे इतना त्यागभाव देखाएगा कि स्वय तो राख बनकर रह जाएगा परन्तु यह उसके बाद अन्त मे साथ नहीं दे सकेगा। क्योकि आपका पूर्णरूप से साथ देना इसके वश से परे की बात है।'

सज्जनो ! आज का तो समय होगया। पहले कहा गया था कि—'जीवात्मा को शरीर का मिलना भी उसके पल्ले कुछ पडना है' लेकिन उसके शरीर का भी हाल क्या है, सो हमने विचार कर ही लिया। आखिरकार यह राख की ढेर बनकर रह जाएगा। तो फिर हमारे पल्ले क्या रहा ? शायद इसके आगे भी विचार करने से हमे कुछ मिल सके तो बडी अच्छी बात होगी। इस विषय मे कल को और भी विचार करेगे। इत्योम् शम्।।

भजन

तेरी हीरे जैसी श्वासा, बातो मे बीती जाए रे।
बातो मे बीती जाए रे, घडियो मे बीती जाए रे।।

गगा-यमुना खूब नहाया, मिटा न मन का मैल।
घर धधो मे लगा हुआ है ज्यो कोल्हू का बैल।
तेरे जीवन की अभिलाषा, बातो मे।

किया न पौरुष कुछ भी न जग मे, दिया न कुछ भी दान।
तेरी मेरी करते-करते, निकल गये हैं प्राण।
यो पानी बीच पताशा, बातो मे।

पाप गठरिया सिर पर लादे, रहा भटकता रोज।
सुखस्वरूप आनन्द प्रभु की, की न कुछ भी खोज।
झूठा करता रहा तमाशा बातो मे।

कण-कण मे प्रति विन्दु-विन्दु मे, व्यापक प्रभु को जान।
सुपावन सुख पाना है तो, करले प्रभु का ध्यान।
तेरे जीवन की अभिलाषा, बातो मे।

आर्यसमाज भिलाई नगर में ऋग्वेद महायज्ञ एवं वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज भिलाई, जिला दुर्ग (छत्तीसगढ) का ४१वा वार्षिक महोत्सव एव ऋग्वेद महायज्ञ २१ दिसम्बर से २४ दिसम्बर २००० तक बडे हर्षोल्लास के वातावरण में मनाया गया। इस अवसर पर वैदिक विद्वान् आचार्य डॉ० सजयदेव जी (इन्दौर) के ब्रह्मत्व में 'ऋग्वेद महायज्ञ' भी हुआ। महायज्ञ मे गुरुकुल आश्रम आमसेना (उडीसा) के ब्र० सचिन, ब्र० कुणाल, ब्र० सजय एव आर्यसमाज भिलाई के पुरोहित प० उद्धवप्रसाद शास्त्री ने वेदपाठ किया। प्रतिदिन प्रात-सायं आचार्य डॉ० सजयदेव जी के प्रवचन तथा आर्य भजनोपदेशक प० सत्यपाल 'सरल' (देहरादून) एव श्री सेवकराम आर्य (दुर्ग) के भजन हुए। २३ दिसम्बर को रात्रि 'स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस' के अवसर पर कक्षा ९ से १२ तक की 'अन्तरशालेय वैदिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता' हुई।

अथर्ववेद महापारायण यज्ञ

आर्यसमाज भिलाई के उपप्रधान श्री सुदर्शन बहल के निवास पर 'पुत्र जन्मोत्सव' के उपलक्ष्य मे दिनाक ५ जनवरी से १२ जनवरी २००१ तक 'अथर्ववेद महायज्ञ' सुप्रसिद्ध युवा वैदिक विद्वान् आचार्य डॉ० सजयदेव जी (इन्दौर) के ब्रह्मत्व में अत्यन्त हर्षोल्लास के वातावरण में सम्पन्न हुआ। प्रतिदिन आचार्य डॉ० सजयदेव जी के विद्वत्तापूर्ण प्रवचन हुए, जिनका क्षेत्र की जनता पर बहुत प्रभाव पडा।

—**सतीशचन्द्र**, मत्री आर्यसमाज भिलाई नगर (छत्तीसगढ)

दयानन्द बोधरात्रि विशेषांक

आपके प्रिय सर्वहितकारी पत्र का दिनाक २१ फरवरी २००१ को दयानन्द बोधरात्रि विशेषाक प्रकाशित किया जा रहा है। अत लेखक महानुभाव महर्षि दयानन्द के जीवन और वैदिक सिद्धान्त-सम्बन्धी कविता, लेख आदि भेजने की कृपा करें। लेख पत्र के एक तरफ, सक्षिप्त एव सारगर्भित होने चाहिये।

—**सुदर्शनदेव आचार्य**, सह-सम्पादक

साधारण अधिवेशन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक साधारण अधिवेशन १८ मार्च २००१ को गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद मे होना निश्चित हुआ है। अत सभी आर्यसमाजो के अधिकारियो से निवेदन है कि वे अपने आर्यसमाज का वर्ष १९९९-२००० तथा २०००-२००१ का वेदप्रचार, दशाश तथा सर्वहितकारी शुल्क शीघ्र भेजने का कष्ट करे ताकि सभी प्रतिनिधियो को समय पर एजेण्डा भेजा जासके।

—**प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास**, सभामत्री

गायत्री यज्ञ

दिनाक १९-१-२००१ को श्री रामपत आर्य पूर्व डी०एस०पी० के निवासस्थान ग्राम नगली गोधा मे परिवार की शान्ति, समृद्धि, निरोगता एव ग्राम, क्षेत्र तथा राष्ट्रकल्याण के उपलक्ष्य मे गायत्री यज्ञ का आयोजन प० इन्द्रमुनि आर्य पुरोहित धर्मप्रचार मत्री यतिमण्डल दक्षिणी हरयाणा की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ।

यजमानो को स्थान श्री ओम्प्रकाश आर्य सपत्नी श्रीमती ब्रह्मादेवी आर्य ने किया। इसके पश्चात् प० इन्द्रमुनि आर्य पुरोहित ने शास्त्रो के आधार पर गायत्री रहस्य पर विस्तार से प्रकाश डालते हुये बताया कि गायत्री मन्त्र ही गुरुमन्त्र है। इसके उपरान्त जो गुरनामा या गुरुमन्त्र बतलाते हैं, वह सब भोली-भाली जनता को अन्धकार मे डालते हैं जो वेदविरुद्ध कर्म है। ससार को वेदमार्ग पर चलना चाहिये। यही एक मार्ग मोक्षप्राप्ति का है। ५०/- रु० सभा को दान दिया गया।

—**कप्तानसिंह आर्य**, गाव नगली गोधा (रेवाडी)

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

आर्यसमाज औरगाबाद मित्रोल (फरीदाबाद)	६ से ११ फरवरी २००१
वेदप्रचार मण्डल बदरपुर क्षेत्र, नई दिल्ली	१७-१८ फरवरी, २००१
गुरुकुल झज्जर का वार्षिकोत्सव	२४-२५ फरवरी, २००१
आर्यसमाज गोहाना (सोनीपत)	१ से ४ मार्च, २००१
गुरुकुल गदपुरी फरीदाबाद	२ से ४ मार्च, २००१
विशाल आर्य महासम्मेलन सोनीपत	४ मार्च, २००१
गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद	१७-१८ मार्च, २००१
अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, मुम्बई	२३ से २६ मार्च, २००१

—**डॉ० सुदर्शनदेव आचार्य**, वेदप्रचाराधिष्ठाता

गुजरात राहत कोष अपील

महर्षि दयानन्द एवं महात्मा गांधी की जन्मभूमि संकट में

२६ जनवरी २००१ को गुजरात मे आए भूकम्प से भुज, अहमदाबाद, महर्षि की जन्मभूमि टकारा का गुरुकुल भवन यज्ञशाला, गोशाला, गाधी जी की जन्मभूमि तथा अन्य क्षेत्रो मे जो भारी तबाही हुई है उसकी कल्पनामात्र से ही दिल काप उठता है। इस हादसे मे लाखो लोग काल का ग्रास बन गये, लाखो परिवार बेघर होगए, हजारों बच्चे अनाथ होगए और लाखो लोग घायल होगए हैं। वहा इस प्राकृतिक आपदा से पीडित लोग भोजन पानी, दवाइया, कपडे और आश्रय के लिए जूझ रहे हैं। प्राकृतिक आपदा को रोका तो नहीं जासकता लेकिन पीडित लोगो की सहायता करना हमारा सबसे बडा धर्म है। आज सारा राष्ट्र सकट की इस घडी मे गुजरात के लोगो के साथ है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अधिकारियो ने सहयोगियो से परामर्श करके निश्चय किया है कि 'गुजरात भूकम्प पीडित सहायता निधि' मे करोडो रुपये की आहुति दी जावे। गुजरातवासियो के परिवार के कल्याण के लिए हरयाणा प्रान्त के सभी वेदप्रचार मण्डल, आर्यसमाज, गुरुकुल, कालिज एव अन्य आर्यशिक्षण सस्थाए इस सहयोग यज्ञ मे अधिक से अधिक धनराशि बैंक ड्राफ्ट चैक या नकद आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को भेजे। यह राशि आयकर से मुक्त है।

सभाप्रधान स्वामी ओमानन्द जी महाराज ३१ जनवरी २००१ को लाखो रुपये का सामान कम्बल, औषधिया आदि लेकर गुरुकुल के ब्रह्मचारियो एव कार्यकर्ताओ के साथ टकारा के लिए प्रस्थान कर गए हैं। आर्यसमाज टकारा मे अपना मुख्य सहायता केन्द्र बनाकर मोरवी आदि सैकडो गावो मे सेवा का कार्य सम्भालेगा। देश-विदेश मे बैठे सभी भारतीयो से प्रार्थना है कि वे भारी सख्या मे गुजरात के भूकम्प पीडितो की सहायता के लिए धन की सहायता भेजे। दानियो के नाम सर्वहितकारी साप्ताहिक मे प्रकाशित किये जायेगे।

निवेदक

प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास	प्रो०शेरसिंह	स्वामी इन्द्रवेश	स्वामी ओमानन्द
सभामत्री	पूर्व रक्षाराज्यमत्री	कार्यकर्ता प्रधान	सभाप्रधान

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सभी पदाधिकारी अन्तरंग सदस्य एव कार्यकर्ता

'गुजरात भूकम्प पीड़ित सहायता निधि' में प्राप्त दानराशि

१	आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ रोहतक		२५,०००-००
२	श्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती, सभाप्रधान, गुरुकुल झज्जर		११,०००-००
३	श्री प्रो० शेरसिह पूर्व केन्द्रीय रक्षा राज्यमत्री १४ एम साकेत, नई दिल्ली		११,०००-००
४	गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, जिला फरीदाबाद		११,०००-००
५	श्री स्वामी इन्द्रवेश कार्यकर्ता प्रधान सभा दयानन्दमठ, रोहतक		११,०००-००
६	श्री चौ० सूबेसिह उपप्रधान सभा, ३४ विकासनगर, रोहतक		१,१००-००
७	श्री प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभामत्री ग्राम डालावास (भिवानी)		१,१००-००
८	श्री सत्यवीर शास्त्री ग्राम गढी बोहर, जिला रोहतक		५००-००
९	श्री केदारसिह आर्य, मुख्त्यारेआम सभा, दयानन्दमठ रोहतक		१०१-००
१०	श्री परसराम पटवारी सहायक मुख्त्यारेआम सभा, दयानन्दमठ रोहतक		१०१-००
११	श्री शेरसिह	कार्यालयाधीक्षक सभा „	१०१-००
१२	श्री ओमप्रकाश शास्त्री	सभागणक „	१०१-००
१३	श्री सत्यवान	सभालिपिक „	१०१-००
१४	श्री रघुवरदत्त	सभासेवक ,	५१-००
१५	श्री मुरलीधर	सभासेवक „	५१-००
१६	म० दरियावसिह भूतपूर्व पचायत अधिकारी ग्राम सापला जिला रोहतक		१०१-००

(क्रमश)

साहित्य-समीक्षा

१ **पुस्तक का नाम**—उगता सूर्य (खण्ड काव्य)

लेखक—चन्द्रप्रकाश द्विवेदी।

प्रकाशक—शाकुन्तलम् प्रकाशन, ९/५० शान्ति नगर, एटा

मूल्य—७५ रुपये।

इस पुस्तक मे प्रवेश, अध्ययन, ब्रह्मचर्य, श्रद्धा और समावर्तन नामक पाच सर्ग हैं। इन पाच सर्गो मे महर्षि की जीवनगाथा का काव्यमय भाषा मे बडी श्रद्धापूर्वक चित्रण किया गया है। रचना अति उत्तम है। समावर्तन सस्कार उसी ब्रह्मचारी का होता है जो कि गृहाश्रम का सेवन करता है। अत समावर्तन सर्ग नामक महर्षि के लिए विचारणीय है। साहित्य-प्रेमी आर्यजनो को यह पुस्तक एक बार अवश्य पढनी चाहिए।

—सुदर्शनदेव आचार्य

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को आयकर में छूट का प्रमाण-पत्र

No 228 21-A 2000-01 PRO 7188-94 *Office of the Commissioner of Income Tax Rohtak*

ORDER *Date 26 9 2000*

Sub Renewal of exemption u s 80-G of the Income Tax Act 1961

Certificate granted vide this office letter FNo 228(21-A) 90-91 PRO 1350 dated 3 5 1995 entitling exemption u s 80G of the Income-tax Act 1961 to donation made to Arya Partinidhi Sabha Haryana Dayanand Math Rohtak is hereby renewed for a further period of five years from 1 4 1997 to 31 3 2002 subject to the following conditions -

- *i) Receipts issued to the donors should bear the number and date of this order and should state clearly that this certificate is valid upto 31 03 2002 only*
- *ii) The income and expenditure account and balance sheet be submitted annually to the assessing officer having jurisdiction over the case*
- *iii) The amendments if any made to the trust deed should be intimated to this office immediately*
- *iv) If any further renewal is required, an application has to be made to the concerned Assessing Officer together with statement of accounts of income and expenditure*
- *v) Donations made to the trust will be eligible for deduction u s 80 of the I T Act 1961 in the hands donors subject to the limits and conditions prescribed in the said section and rules*

(S N Prasad)
Commissioner of Income Tax,
Rohtak

To -

This certificate does not confeer any right on the Trust Institution fund to claim exemption from Income-tax in its assessment The A O may seperately examine if the assessee is charitable within the meaning of section 2(15) of the Act and whether the conditions laid down by section 11,12, 12A(b) and 13 are satisfied

Copy to -

1. *Arya Pratinidhi Sabha Haryana Daya Nand Math, Rohtak (By Regd Post)*
2. *The Income Tax Officer, Ward-1, Rohtak He should verify and satisfy himself w r t the annual statement which will be submitted by the applicant that it continues to fulffill the conditions laid down u s 80-G and instructions issued by the Board from time to time*
3. *The secretary, Central Board of Direct Taxes New Delhi*
4. *The Director of Income Tax (RSP & PR), New Delhi*
5. *All Commissioners of Income Tax in H R Panchkula and N W R Chadigarh*
6. *All Assessing Officers in this charge*

(A K VERMA)
PUBLIC RELATION OFFICER,
FOR COMMISSIONER OF INCOME TAX,
ROHTAK

निमन्त्रण पत्र

वैदिक आश्रम पिपराली, जिला सीकर (राजस्थान)

के वार्षिकोत्सव के अवसर पर

राष्ट्रभृत यज्ञ एवं वैदिकधर्म सम्मेलन

दिनांक ९-१० व ११ फरवरी सन् २००१

सम्मेलन के आकर्षण एवं विशेष कार्यक्रम

१ देश के उच्चकोटि के साधु, महात्मा एव विद्वानो का सत्सग लाभ।

२ आध्यात्मिक, सामाजिक एव पारिवारिक जागृति हेतु विभिन्न विषयो पर प्रवचन।

३ उच्चकोटि के सगीतज्ञो द्वारा भजनो के माध्यम से भजन एव उपदेश।

४ राष्ट्र एव समाज की ज्वलन्त समस्याओ पर गम्भीर विचार-मथन।

५ विद्यार्थियो के शारीरिक एव बौद्धिक विकास हेतु महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर (हरयाणा) के ब्रह्मचारियो द्वारा आकर्षक व्यायाम प्रदर्शन जिसमे योगासन मल खम्बा गले से सरिया मोडना, छाती पर पत्थर तुडवाना लोहे की जजीर तोडना व दो जीपो को रोकना इत्यादि।

इस शुभ अवसर पर आप सपरिवार इष्ट मित्रो सहित सादर आमन्त्रित है।

निवेदक स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, अध्यक्ष

क्र० २९१२ २-२-२००१

पंजाब सभा के पूर्व महामन्त्री श्री अश्विनीकुमार शर्मा आर्य एडवोकेट का आर्यत्व

पजाब सभा के पूर्व महामन्त्री एव सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री श्री अश्विनीकुमार शर्मा आर्य एडवोकेट तथा उनके अन्य तीन आर्य साथियो द्वारा जालन्धर से प्रकाशित २०, २४ एव २७ जनवरी के परिपत्र पढने को मिले। इसमें हमारी सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती के विरुद्ध अनर्गल आरोप लगाए जा रहे हैं। मैं सभी आरोपो का स्पष्टीकरण न देते हुए केवल २७ जनवरी के परिपत्र पेज न० ३ पर छपे दो आरोपों के विषय मे ही स्थिति स्पष्ट कर रहा हू।

आरोप–१

"स्वामी ओमानन्द जी का दायित्व है कि वह आर्यसमाज को अनार्य लोगो के हाथो मे न सौपे नहीं तो आनेवाला समय उन्हे माफ नहीं करेगा।"

दिनाक २४ जनवरी के परिपत्र के पेज प० ३ पर श्री अश्विनीकुमार शर्मा आर्य एडवोकेट एव उनके तीन आर्य साथी लिखते हैं कि–

"२६-९-२००० को सभा महामन्त्री जी ने अपने पूज्य माता जी की अस्थिया गगा मे प्रवाहित करने के लिए हरिद्वार जाना था और डॉ० पसरीजा जी को पता था कि दो-तीन दिन महामत्री बाहर रहेगे। उनके पीछे षड्यन्त्र करके स्वामी ओमानन्द जी से एक तथाकथित पत्र सख्या ४/९ दिनाक २६-९-२००० झज्जर से जारी करवाकर ले आए और एक तथाकथित तदर्थ समिति बना दी गई तथा सभी आर्यसमाजियो को इस तदर्थ समिति से निकाल दिया गया। आर्यजगत् के प्रबुद्ध पाठक इसे पढकर समझ लेगे कि स्वामी जी ने किस प्रकार के तथाकथित आर्यसमाजियो को निकाला है। हरद्वार गगा मे अस्थिया प्रवाहित करनेवाली विधि सस्कारविधि पुस्तक के 'अन्त्येष्टि सस्कार' के प्रकरण मे कौन से पृष्ठ पर है ? गत नौ वर्षों से महामन्त्री बने हुए, किन्तु अब भूतपूर्व आर्य शर्मा जी को ही पता होगा।

आरोप–२

"आशा थी कि स्वामी ओमानन्द जी के सार्वदेशिक सभा मे आने से सभी प्रान्तो के झगडे समाप्त हो जायेगे, लेकिन पिछले दो वर्षो मे प्रान्तो मे झगडे और ज्यादा होगए हैं। इतना ही नहीं हरियाणा प्रान्त मे भी दो प्रान्तीय समानान्तर प्रतिनिधि सभाए काम कर रही हैं और स्वामी जी से निवेदन है कि सभी प्रान्तों के झगडे हल करवाए और उनका समाधान करे।"

पजाब मे शर्मा जी के महामन्त्री बनने के बाद से ही नौ वर्षों से दो सभाए चल रही थी। स्वामी जी ने दोनो को मिलाकर एक कर दिया किन्तु पूर्व आर्य महामन्त्री जी को यह स्वीकार नहीं था कि मेरे रहते पजाब में एक सभा बन जावे। अत दूसरी सभा स्वय गठित कर ली तथा महामन्त्री भी बन गए इसमे स्वामी जी का क्या दोष है ?

२० जनवरी के अक में झगडे करवाने का समाधान बतलाकर २७ जनवरी के अक मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान से निवेदन कर रहे हैं। वाह ! वकील जी आप भी खूब हैं।

जहा तक हरयाणा प्रान्त मे दो समानान्तर सभाओ की बात है हाईकोर्ट द्वारा १९९८ मे पानीपत मे हुए चुनाव के बाद हारनेवालो ने आपके तथा आपके दिल्ली मे बैठे आका के आशीर्वाद से बोगस सभा का गठन कर लिया। इस बोगस सभा का हरयाणा मे कोई अस्तित्व नहीं है।

कोर्ट ने हरयाणा की सम्पत्ति अपने नाम कराने की बोगस सभा की प्रार्थना को ठुकरा दिया है तथा रजिस्ट्रार फर्म एण्ड सोसायटीज हरयाणा चण्डीगढ ने उन्हे नोटिस दे रखा है कि आप अपना नाम बदलकर नया रजिस्ट्रेशन कराए।

पजाब सभा के पूर्व महामन्त्री आर्य शर्मा जी अपनी फाइल में इन दो तथ्यो को अकित कर भविष्य मे इस प्रकार की अनर्गल बातें न लिखें तो अच्छा रहेगा। शेष आरोपों के उत्तर देने की बात मे नवनिर्वाचित प्रधान श्री हरबशलाल जी शर्मा की आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब तथा सार्वदेशिक सभा के अधिकारियो पर छोडता हू।

–प्रो० सत्यवीर शास्त्री, डालावास, मन्त्री–आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

पुस्तक-समीक्षा

१ पुस्तक का नाम–**शिव विचार तरगिणी**
२ लेखक–**मा० शिवराम आर्य**, प्रभाकर, साहित्यरत्न, सिद्धान्तशास्त्री।
३ प्रकाशक–**मा० शिवराम आर्य**, प्रभाकर, सतनाली का बास, डा० सरहेती कला जिला–महेन्द्रगढ (हरयाणा)
४ मुद्रक–**आचार्य प्रिंटिग प्रेस**, दयानन्दमठ रोहतक
५ पृष्ठसख्या–२४६
६ मूल्य–३० रुपये।

"**शिव (श्रेष्ठ) विचार तरगिणी**" (विचारो की नदी) पुस्तक लिखकर लेखक 'गुरुजी' के नाम से विख्यात मा० शिवराम जी ने अपने '**यथा नाम तथा गुण**'वाली उक्ति को ही चरितार्थ किया है।

लेखक ने पुस्तक लेखन को अपने जीवन के, अध्यापनकाल के अनुभवो, निजी डायरी, साधु, सतो एव विद्वानों के प्रवचन, श्रेष्ठ पत्र-पत्रिकाओ को आधार बनाकर कर्त्तव्य-कर्म समझकर, गुरुओं के ऋण से अनृण होने का प्रयास बतलाया है।

स्वय अनृण होने के साथ समीक्षक की दृष्टि में लेखक ने पुस्तक के माध्यम से भावी पीढी को अपना ऋणी भी बना दिया है। पुस्तक अपने नाम के अनुरूप रोचक, ज्ञानवर्धक एवं अध्यात्म-सामग्री से युक्त है। इस शिव तरगिणी मे डुबकी लगाने के लिए श्रद्धालु को इलाहाबाद त्रिवेणी के महाकुम्भ में, हरद्वार, नासिक, उज्जैन या कुरुक्षेत्र (ब्रह्मसरोवर) जाने की आवश्यकता नहीं है। "**मन चगा तो कठौती मे गगा**"वाली उक्ति के अनुसार शिव गगा मे डुबकी लगाने का प्रबन्ध लेखक ने साधक के अध्ययन कक्ष मे ही कर दिया है।

पुस्तक मे मनुष्य की दशेन्द्रियो एव आर्यसमाज के दस नियमो के आधार पर दस सर्ग हैं–

सर्ग १ "अनमोल मोती" में ३०० मोती पिरोए हुए हैं।
सर्ग २ "काव्य कमल" मे २५० पखुडिया विकसित हैं।
सर्ग ३ "सस्कृत सुमन" मे १५२ सुमन पुष्पित हैं।
सर्ग ४ "उर्दू की बानगी" मे १०२ बानगिया विद्यमान हैं।
सर्ग ५ "प्रेरणास्रोत" में १०० स्रोत निर्झरित हैं।
सर्ग ६ "चटपटे चुटकले" मे ९० चुटकलों का चटपटापन है।
सर्ग ७ "घरेलू नुस्खे" में १०५ नुस्खे सुशोभित हैं।
सर्ग ८ "जानने/चिन्तन करने योग्य बाते" मे २० मननीय बाते हैं।
सर्ग ९ "कुछ विशिष्ट भजन, कविता (सैद्धान्तिक)" मे ४० भजन कविता गुम्फित हैं।
सर्ग १० "जिन पर हमे नाज है, जिनके हम ऋणी हैं।
(क) "साधु-सन्त, सन्यासी, देशभक्त, शहीद" मे १२ की जीवनी है।
(ख) "देशभक्त, उपदेशक, स्वतन्त्रता सेनानी" मे ११ जीवनवृत्त है।

इस भाग मे लेखक ने देशभक्त उपदेशको के रूप मे दादा बस्तीराम, स्वामी भीष्म, ठा० (चौधरी) तेजसिह तथा बाढडा, दादरी एव लोहारू क्षेत्र के स्वतत्रता सेनानियो महाशय मनसाराम त्यागी एव राजा महताबसिह पचगाव, नम्बरदार मगलाराम पटेल डालावास, श्री रामकिशन गुप्त (दादरी), श्री निहालसिह तक्षक भागवी, श्री बनवारीदास गुप्त मान्हेरू, भक्त बूजाराम बीसलवास (लोहारू) आदि की प्रेरणाप्रद जीवनियो का–

जिन्होने खून दिया, उनका कहीं नाम नहीं।
तख्त पर बैठकर, तुम इकलाबी बन बैठे।।

शेर के अनुसार हृदयग्राही चित्रण किया है। स्वास्थ्य ठीक न होते हुए भी लेखक का "**गागर मे सागर**" भरने का प्रयास स्तुत्य एवं प्रशसनीय है। पुस्तक विचारोत्तेजक, प्रेरणाप्रद, पठनीय एव मननीय है।

लेखक "गुरुजी" को शतश बधाई। सभी आर्यों विशेषतया बाढडा, दादरी एव लोहारू क्षेत्र के लोगो को अवश्य पढनी चाहिए। इस क्षेत्र मे गुरुजी के हजारो शिष्य हैं। समीक्षक के गाव डालावास मे भी आप हिन्दी अध्यापक रहे हैं। पुस्तक की भूमिका के लेखक डा० गुणपालसिह सागवान शीशवाला की आशाओ के अनुरूप–

"आज न सही, कल होगा इन्हीं का राज।
इलाही एक दिन वो भी आएगा, गाव का हर व्यक्ति जाग जाएगा।
हम शख नई क्रान्ति का बजायेगे, गाव के हर सोए व्यक्ति को जगायेंगे।"

–**प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास,** सभामत्री (प्रधान-सम्पादक)

साहित्य-समीक्षा

पुस्तक का नाम–निरुक्तम् (निघण्टुभाष्यम्)
लेखक–महर्षि यास्क। **सम्पादक**–विरजानन्द 'दैवकरणि'
प्रकाशक–आर्य साहित्य सस्थान, श्रीमद्दयानन्द वेद आर्ष महाविद्यालय
११९ गौतमनगर, नई दिल्ली-४९
मूल्य–६० रुपये।

निरुक्तशास्त्र वेद के छ अगो मे से एक है। महर्षि यास्क ने वैदिक शब्दो का सकलन करके उसका नामकरण 'निघण्टु' किया है और उसकी नैघुण्टुक, नैगम और दैवत नामक तीन भागो मे विभक्त करके जो व्याख्या की है उसी का नाम निरुक्त है। यह व्याकरण शास्त्र की सम्पूर्णता कहा जाता है।

विद्वान् सम्पादक प० विरजानन्द दैवकरणि ने कई मूलप्रतियों से मिलाकर इस ग्रन्थ का उत्तम सम्पादन किया है। इस ग्रन्थ को मूल रूप मे स्मरण करने के लिए यह पुस्तक अत्युत्तम है। इसे प्रत्येक निरुक्त शास्त्र के पाठक और छात्र को अपने पास रखना चाहिये और इसे स्मरण करना चाहिए।

विद्वान् सम्पादक का मत है कि इस ग्रन्थ से निरुक्त शास्त्र के जटिल-स्थलों के अर्थप्रकाश में बडी सहायता मिल सकती है। मूल को ठीक न समझने में भूल होती है।

–सुदर्शनदेव आचार्य

जनगणना और आर्यसमाज

आर्यजन सार्वदेशिक सभा के निर्णय का पालन करें

–श्री अश्विनीकुमार पाठक, केशवपुरम, दिल्ली

हमारे देश मे हर दस वर्ष बाद जनगणना होती है। आर्यसमाज की स्थापना १८७५ ई० में बम्बई नगर में हुई थी। उसके बाद १८८१ मे जनगणना होनी थी। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने ३१ दिसम्बर १८८० को आर्यसमाज मुलतान के मन्त्री मा० दयाराम वर्मा के पत्र के उत्तर मे जनगणना के बारे मे एक पत्र लिखा था जिसकी नकल नीचे लिख रहा हू।

मास्टर दयाराम जी

आनन्दित रहो,

विदित हो कि आपका पत्र आया हाल मालूम हुआ। आपने जो नक्शा मर्दुम शुमारी का लिखा है तो उसकी खानापुरी इस प्रकार करो–

मजहब फिरके मजहबी	=	वैदिक
असल कौम	=	आर्य
जात या फिरका	=	ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र
गोत्र या शाखा	=	जो अपना गोत्र है

और जिनको अपना गोत्र याद न हो वह अपना गोत्र काश्यप या पाराशर लिखा दे और यह सब समाजो तथा पजाब भर मे इसी प्रकार से लिख भेजे और हम यहा सब प्रकार से आनन्द मे हैं।"

आगरा, ३१ दिसम्बर १८८० ई०

हस्ताक्षर

दयानन्द सरस्वती

महर्षि दयानन्द ने जब यह पत्र लिखा अर्थात् १८८० ई० में केवल थोडी सी आर्यसमाजे स्थापित हुई थीं। कोई प्रान्तीय अथवा सार्वदेशिक सभा उस समय नहीं थी। यह मालूम नहीं है कि उस समय अर्थात् १८८१ में और उसके बाद की जनगणनाओ मे आर्यसमाज के लोग धर्म और जाति के खानो मे क्या लिखाते रहे हैं। वैसे जनगणना के समय सार्वदेशिक सभा आर्यो को उपरोक्त निर्देश तो देती रही है। कुछ लोगो ने मुझे बताया है कि जनगणना का स्टॉफ धर्म के खाने मे अपने आप ही हिन्दू लिख लेता है। सार्वदेशिक सभा इस बारे मे जनगणना के अध्यक्ष से पत्र व्यवहार करके निश्चय करे कि धर्म के खाने मे जो लोग वैदिक धर्म लिखाये तो वह भी लिखा जाये वैसे हम लोग हिन्दुओ से अलग नहीं हैं इसीलिए हिन्दुओ मे भी हमारी गिनती की जाये। जाति या खाना तो अब समाप्त कर दिया गया है। वैसे देखा जाये तो ससार मे वैदिक धर्म का अस्तित्व तो कागजो मे कहीं नहीं है। हम वैदिक धर्म की जय के नारे तो लगाते रहते हैं परन्तु सब सरकारी कागजों में अपना धर्म हिन्दू ही लिखाते रहते हैं इसलिए हमारे परिवार वैदिकधर्मी नहीं हैं। जिस तरह ईसाई, मुसलमान, सिख सबके परिवार उसी धर्म के माननेवाले हैं। ऐसे आर्यसमाज के नहीं हैं इसीलिए आर्यसमाज कमजोर हो रहा है। इधर तो पति-पत्नी, पुत्री-पुत्र सबके विचार अलग-अलग हैं। ऐसे आर्यसमाज कब तक चलेगा ? आजकल आर्य सदस्यो के परिवार आर्यसमाजो मे कठिनता से ४ अथवा ५ प्रतिशत ही आते होगे और नये व्यक्ति सदस्य बनते नहीं। इसलिए आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्सगो तथा अन्य उत्सवो मे हाजरी बहुत कम होती जारही है। अगर सभी सदस्य धर्म के खाने में वैदिक लिखवाते होते तो हम अपने परिवारों को मजबूर तो करते कि आर्यसमाज मे जाना वैदिकधर्मियो का कर्त्तव्य है। परन्तु अब तो यह सुनने मे आता है कि कुछ नवयुवक/नवयुवतिया साफ-साफ कह देते हैं कि हमारे अपने अलग-अलग विचार हैं हमारे माता-पिता आर्यसमाज में जाते हैं और वही आर्यसमाज के सदस्य हैं। ऐसी बाते सुनकर दुःख होता है परन्तु किया क्या जाये ? सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी ओमानन्द जी को भी मैंने पत्र लिखा है। जब तक व्यापक रूप से इस बारे में प्रचार नहीं होगा कि हम सभी कागजपत्रो मे धर्म के खाने मे **वैदिक धर्म** लिखाये तब तक आर्यसमाज की उन्नति होनी कठिन है। वैसे हम हिन्दू समाज से अलग नहीं हैं परन्तु हिन्दू तो कोई हमारा धर्म ही नहीं है। इसलिए सार्वदेशिक सभा ने १८ जून के सार्वदेशिक पत्र मे यह घोषणा कर दी है कि सब आर्यजन धर्म के खाने मे **वैदिक धर्म** ही लिखाये। इसका खूब प्रचार होना चाहिए।

सन्त वचन संग्रह

१. इन्द्रियों के गुलाम बनकर अपनी स्वतन्त्रता को मत खोइये, इसी जन्म मे अपने जन्मसिद्ध अधिकार ईश्वर के सान्निध्य को प्राप्त कर लीजिए।
२ यदि मनुष्य धनी होकर दानी नहीं, निर्धन होकर सन्तोषी नहीं, विद्वान् होकर नम्र नहीं, अशिक्षित होकर मितभाषी नहीं, मानव होकर प्रभु का भक्त नहीं तो निःसन्देह वह अपने दुर्भाग्य को ही परिपुष्ट कर रहा है।
३ जिसके जीवन में कोई सयम नहीं, उसका जीवन वायु के झोको से चलनेवाली बिना पतवार की नाव के समान है, जो बीच में ही डुबा देगी।

— सतलुज-यमुना सम्पर्क नहर मुद्दा —

आर-पार की लड़ाई के लिए आमदा है आर्य प्रतिनिधि सभा

रोहतक २ जनवरी। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने इस बात का सकेत दिया है कि सतलुज-यमुना सपर्क नहर (एस वाई एल) के मुद्दे पर अब वह आर-पार की लडाई लडेगी और तब तक शात नहीं बैठेगी जब तक कि प्रदेश को उसके हक का पानी नहीं मिल जाता।

सभा ने कहा है कि इस मुद्दे के हल के लिए किसी भी राजनैतिक पार्टी ने प्रयास नही किया और इसका प्रयोग सत्ता हासिल करने के लिए किया है।

प्रतिनिधि सभा के स्वामी इन्द्रवेश ने आज यहा दयानन्दमठ मे पत्रकार वार्ता को सम्बोधित किया और कहा कि सभा द्वारा इस सिलसिले मे जिला मुख्यालयो पर प्रदर्शन किये जारहे हैं और उपायुक्तो के माध्यम से ज्ञापन सौंपे जारहे हैं। कुछ जिलो मे फिलहाल ये कार्यक्रम होचुके हैं तथा बाकी मे जल्द ही होगे। उसके बाद भी अगर मुद्दा नहीं सुलझा तो आन्दोलन को और तेज करने के लिए प्रदेशभर मे डेढ महीने मे ५० हजार सत्याग्रही भर्ती किए जायेगे। उनके माध्यम से रेल रोको व जेल भरो आन्दोलन चलाए जायेगे और ससद का घेराव भी किया जायेगा।

इस अवसर पर पूर्व केन्द्रीय मत्री व हरयाणा रक्षावाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिह ने कहा कि उन्होने १८ अक्तूबर, १९९९ को प्रधानमन्त्री को पत्र लिखकर उनसे निवेदन किया था कि १९९० से सतलुज-यमुना सम्पर्क नहर का निर्माण कार्य रुका हुआ है, उसे शीघ्र चालू करके पूरा किया जाये। हरयाणा के दक्षिणी भाग के पाच जिलो को, जहा थोडी वर्षा होती है, रावी व्यास का पानी उसी नहर से मिलना है। पीने के पानी और सिचाई के अपने हिस्से के पानी की प्राप्ति पर इन जिलो की जनता का अधिकार है, वह उन्हे मिलना चाहिए। पत्र

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा सतलुज-यमुना सम्पर्क नहर के मुद्दे पर रोहतक में मौन जुलूस निकालते हुए।

प्राप्ति की सूचना भर मिली परन्तु भारत सरकार इस सम्बन्ध मे क्या करने जा रही है इसका जिक्र तक नहीं किया गया। इसके बाद आर्यनेताओ ने २२ दिसम्बर १९९९ को ससद भवन पर प्रदर्शन कर प्रधानमन्त्री को ज्ञान दिया था। परन्तु उन्हे कोई ठोस आश्वासन नहीं मिला। उसके बाद जींद और सासरौली की रैलियो मे निर्णय लिया गया कि इस मुद्दे को लेकर अब आन्दोलन करना ही होगा और उसके लिए तैयारी का आह्वान किया गया।

प्रो० शेरसिह जी ने कहा कि सतलुज-यमुना सम्पर्क नहर का निर्माण जो समझौते के अनुसार १५ अगस्त, १९८६ तक पूरा हो जाना चाहिए था, वह २००१ मे भी लटका हुआ है। उन्होने कहा कि वह चाहते हैं कि भारत सरकार पलायन की नीति छोडकर न्याय करने की हिम्मत जुटाये और प्रत्येक अवसर पर राष्ट्र पर अपना सब कुछ न्यौछावर करनेवाले हरयाणा प्रदेश को अविलम्ब न्याय दे। इस अवसर पर हरयाणा निर्माण मोर्चा के प्रेस सचिव जगदीश राय कौशिक, पूर्व विधायक ओमप्रकाश बेरी, रामधारी शास्त्री जनता पार्टी के प्रदेशाध्यक्ष राजसिह तहलान व सूबेसिह उपस्थित थे। बाद मे आर्य प्रतिनिधि सभा ने मौन जुलूस के माध्यम से उपायुक्त को ज्ञापन सौंपा जिसमे माग की गई कि भाखडा की नहरो के द्वारा रावी व्यास का ३५०० क्यूसेक पानी जो प्रदेश मे पहुच रहा है वह दक्षिणी हरयाणा के पाच जिलो की नहरो मे जाना चाहिए क्योकि यह नहरे रावी व्यास के ३८ लाख एकड फुट पानी के लिए बनी थीं। ऐसा न करने से जहा उत्तर और पश्चिम के जिलो की कुछ जमीन सेम के कारण बर्बाद होगी वहीं दक्षिणी जिलो को सूखे की स्थिति से जूझना पडेगा और पीने का पानी भी मिलना कठिन हो जायेगा। क्योकि वर्षा की कमी के कारण नलकूपो और कुओ का पानी भी बहुत नीचे चला गया है। उस पानी को इन जिलो मे पहुचाने के लिए अस्थाई व्यवस्था करनी पडेगी। वह न करनी पडे इसके लिए हरयाणा की जनता का सही नेतृत्व करके हरयाणा सरकार सतलुज-यमुना सम्पर्क नहर के काम को पूरा करवाने के लिए पूरी शक्ति लगाये। हरयाणा सरकार की यह जिम्मेदारी है कि समस्या का समाधान जल्द से जल्द निकाले।

ज्ञापन मे माग की गई है कि हरयाणा सरकार को उच्चतम न्यायालय मे केस दायर किए ६ वर्ष होनेवाले हैं और अभी तक उसकी कोई सुनवाई नहीं हो पाई। भारत सरकार और हरयाणा सरकार मिलकर उच्चतम न्यायालय मे इस मामले पर शीघ्र सुनवाई करने और निर्णय देने के लिए जोर डाले। ज्ञापन मे कहा गया है कि पजाब के राजनेताओ ने इसे चुनाव का मुद्दा बना लिया है। अत न्याय देने और लेने का काम हरयाणा सरकार और केन्द्र सरकार को करना है। एस वाई एल का काम पजाब पर न छोडकर दूसरी एजेंसियो द्वारा सम्पन्न करवाये और एक दशक से भी अधिक समय से लटकाये पानी के मामले का न्याय पूर्ण समाधान करवाया जाये। ज्ञापन की एक-एक प्रति राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री राज्यपाल व मुख्यमन्त्री को भी भेजी हुई है।

श्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अध्यक्षता में

विशाल प्रदर्शन

सतलुज-यमुना नहर जल विवाद

१ दिनांक — १२ फरवरी सोमवार प्रातः ११ बजे
स्थान — उपायुक्त कार्यालय भिवानी
२. दिनाक — १५ फरवरी वीरवर प्रातः ११ बजे
स्थान — उपायुक्त कार्यालय जीन्द
३. दिनांक — १६ फरवरी सोमवार प्रातः ११ बजे
स्थान — उपायुक्त कार्यालय रेवाडी

सभी जिला वेदप्रचार मण्डल, अन्य सस्थाएं एवं जिले की समस्त आर्यसमाज अधिक से अधिक सख्या में पधार कर अपने-अपने जिले के प्रदर्शन को सफल बनायें। उपायुक्तो के माध्यम से राष्ट्रपति, केन्द्र सरकार तथा हरयाणा सरकार को ज्ञापन दिया जायेगा।

निवेदक : सत्यवीर शास्त्री (गढ़ी बोहर) संयोजक
सतलुज-यमुना लिंक नहर संघर्ष समिति

शंका-समाधान

(रामेश्वरदयाल निडर, रेवाड़ी)

शंका

(१) क्या संन्यासी पुरोहित बनकर यज्ञ करवा सकता है ?

(२) क्या सन्यासी विवाह-सस्कार भी करवा सकता है ?

(३) ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी भगवा वेष मे क्यों हैं ?

(४) सकल्प करवाना, तिलक लगाना, मौली बाधना-बधवाना, धूप-दीप की थाली बनाकर उसे घुमाना, थाली में पैसे डलवाना क्या उचित है ?

(५) पूर्णाहुति के समय गोले की आहुति देना, क्या यह बलि का रूप नहीं है ?

समाधान

(१/२) **अध्ययनमध्यापन मजन याजन तथा।**
दान प्रतिगृहश्चैव ब्राह्मणानामकल्पयत्।। (मनु० १।८८)

इस मनु-प्रमाण से यज्ञ करना, कराना ब्राह्मण के कर्म हैं। वैदिक वर्णव्यवस्था के अनुसार यज्ञ करना, कराना गृहस्थ ब्राह्मणो का कर्तव्य है। आज वह वर्णव्यवस्था लोक मे प्रचलित नहीं है। अत आर्यसमाज के क्षेत्र मे जो भी यज्ञ कराने के योग्य होता है, लोग उससे यज्ञ करवा लेते हैं। **'यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म'** यज्ञ सर्वश्रेष्ठ कर्म है अथवा सब श्रेष्ठ कर्म यज्ञ कहाते हैं। श्रेष्ठ कर्म करने कराने में कोई दोष नहीं। वैदिक वर्णव्यवस्था के अनुसार गृहस्थ ब्राह्मण यज्ञ करावे। विद्वान् सन्यासी उन्हे उपदेश करे यह व्यवस्था उत्तम है। आपत्-काल में सन्यासी भी यज्ञ करावे तो कोई दोष नहीं है। क्योंकि **'आपत्तिकाले मर्यादा नास्ति'** आपत्काल मे मर्यादा का पालन करना सम्भव नहीं है।

यज्ञ मे चारो वेदो का ज्ञाता 'ब्रह्मा' होता है। ऋग्वेद का ज्ञाता 'होता' कहाता है। यजुर्वेद का विद्वान् 'अध्वर्यु' होता है। सामवेद का ज्ञाता 'उद्गाता' होता है। पुरोहित इन चारो से भिन्न है। यदि यज्ञ मे एक ही ऋत्विक् है तो वह पुरोहित कहाता है। यदि दो हैं तो एक पुरोहित और दूसरा ऋत्विक् होता है। यदि तीन हैं तो एक पुरोहित, एक ऋत्विक् और एक अध्यक्ष होता है। यदि चार हैं तो उनकी उपर्युक्त सज्ञाये होती हैं।

(३) सस्कारविधि (सन्यास-प्रकरण) के अनुसार ही आचार्य अपने शिष्य को काषाय (गेरुवे) वस्त्र प्रदान करता है। आर्यजगत् में ब्रह्मचारी और वानप्रस्थी लोग जो काषायवस्त्र धारण करते हैं वे लगता है कि सन्यास आश्रम की तैयारी कर रहे हैं।

(४) सकल्प करवाना आदि सब कर्म पौराणिक प्रभाव से आर्यजगत् मे प्रवेश कर रहे हैं। वे सब त्याज्य हैं। महर्षि ने सकल्प मन्त्र का ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका (वेदोत्पत्तिविषय) मे उल्लेख करके उसका ऐतिहासिक महत्त्व बतलाया है, वह किया जासकता है। महर्षि ने सस्कारविधि मे ऋत्विग्वरण लिखा है, वह करना चाहिये।

(५) महर्षि ने सस्कारविधि मे चार प्रकार के होम के द्रव्य लिखे हैं। जो कि सुगन्धित, पुष्टिकारक, मिष्ट और रोगनाशक भेद से चार प्रकार के हैं। 'गोला' पुष्टिकारक द्रव्यो मे एक है। अत इसकी यज्ञ मे आहुति दी जासकती है।

वेद मे बलिदान का निषेध नहीं है। 'बलिवैश्वदेव' एक वैदिक महायज्ञ है। हा! बलिदान का जो प्रचलित कुरूप है, यज्ञो मे पशु आदि की बलि देना, उसका **'गा मा हिसी'** आदि शब्दो मे प्रतिषेध किया गया है।

—**सुदर्शनदेव आचार्य**, वेदप्रचाराधिष्ठाता

ऋषि जन्मभूमि भूकंप से प्रभावित

पिछले दिनो गुजरात मे आये महाविनाशकारी भूकप से महर्षि दयानन्द जन्मभूमि परिसर टकारा भी अत्यत प्रभावित हुआ है। गोशाला सर्वथा ध्वस्त होगई है। परिसर का पुराना राजमहल और यज्ञशाला सर्वाधिक क्षतिग्रस्त हुए हैं तथा शेष सभी भवनो में दरारे पड गई हैं। परिसर के सभी निवासी तथा पशुधन सुरक्षित हैं अन्यथा नये-पुराने सभी भवन क्षतिग्रस्त होगये हैं।

टकारा ग्राम मे भूकप प्रभावित होने के कारण सभी ग्रामवासी अपने घरो को छोडकर ऋषि जन्मभूमि परिसर में एकत्रित हुए हैं। टकारा ट्रस्ट की ओर से सभी ग्रामवासियों के भोजन एव आवास की समुचित व्यवस्था की जारही है।

निवास के लिए टैंटों की व्यवस्था होरही है। जन्मभूमि परिसर मे २१ फरवरी को होनेवाले शिवरात्रि पर्व के लिए जो खाद्य सामग्री वहा एकत्रित की गई थी वह सब पीडित ग्रामवासियो के लिए दे दी गई है।

(साभार—दैनिक ट्रिब्यून ३१-१-२००१)

आर्यसमाज मिर्जापुर बाछोद (महेन्द्रगढ़) का चुनाव

प्रधान-श्री रामचन्द्र चौहान, उपप्रधान-श्री बाबूलाल यादव, मत्री-श्री लालचन्द यादव, उपमन्त्री-श्री मोरमुकुट यादव, कोषाध्यक्ष-श्री लालचन्द, पुस्तकालयाध्यक्ष-श्री रामावतार वर्मा, श्री रामचन्द्र चौहान, लेखानिरीक्षक-श्री कालुराम यादव, लेखासहायक-श्री हनुमानप्रसाद शर्मा, प्रचारमत्री-शिभुदयाल।

आधुनिक शिक्षा और ब्रह्मचर्य

आधुनिक शिक्षित कहते हैं कि इस प्रकार के कठिन ब्रह्मचर्य का पालन भला कैसे होसकता है ? यह केवल आदर्शवादियो की कल्पना मात्र है। ऐसे कठिन ब्रह्मचर्य के पालन से यदि कोई विशिष्ट लाभ है, तो उसकी प्राप्ति के लिये आजकल कोई प्रयत्न क्यो नहीं करता, जबकि आज के युग मे वैज्ञानिको ने ससार को विचित्र उपलब्धिया दी हैं और उनके आविष्कार के लिए अपना सारा जीवन कठिन तपस्या मे लगा दिया, बल्कि कितने ही आविष्कारो को सफल बनाने मे कई पीढियो ने जीवन समर्पित किया और उन योगियो की तरह मन को एकाग्र कर उस विषय मे ही समर्पित होगये। इसी प्रकार की और भी अनेक शकाए ये लोग करते हैं। ऐसी शकाओ का कारण हमारा गलत शिक्षण है। ऐसा गलत शिक्षण हमे शताब्दियो से दिया जारहा है, जिससे हम में गुलामी की भावना पनपती रहे, हम शरीर से दुर्बल, नि स्तेज मन से दु खी, दब्बू और निरुत्साही बने रहे। उसी शिक्षण का फल है कि ब्रह्मचर्य जैसे प्रत्यक्ष फलप्रद साधन पर भी हमे विश्वास नहीं है।

पाश्चात्य देशो मे मांस-मदिरा आदि उत्तेजक और वृष्य-आहार का सेवन अधिक होता है। उनमे पारलौकिक भावना भी नहीं है, अत वे भले ही ब्रह्मचर्य की आवश्यकता न समझते हों तथा वहा कुछ डाक्टर औषधियों के व्यवसाय को आगे बढाने के लिए लोगो को ब्रह्मचर्य से विमुख रखने की बात कहते हो, परन्तु सत्य को छुपाने की शक्ति उनमे भी नहीं है।

भारतीय शास्त्रो और वेदो के अध्ययन से पता चलता है कि भारत के महान् पुरुषो ने ब्रह्मचर्य का महत्त्व समझकर मनुष्यमात्र के लिए जन्म से २५ वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन करना आवश्यक बताया है। ब्रह्मचर्य के बल से उन्होने न केवल स्वास्थ्यलाभ ही किया था, अपितु अकाल मृत्यु को भी जीता था। जैसे–**मरण बिन्दु पातेन जीवन बिन्दुधारणात् । (ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत)**।

उसी का वह बल था हनुमान, लक्ष्मण, मेघनाद, भीष्मपितामह, शकराचार्य, गुरु नानकदेव, महर्षि दयानन्द और बिनोवा भावे जैसे विश्वविख्यात महापुरुषो की परम्परा ने ब्रह्मचर्य के प्रभाव मे शारीरिक और मानसिक शक्ति बढाकर समाज का कल्याण और देश की रक्षा की।

सिक्खो के गुरुओं ने सिक्खो मे ब्रह्मचर्य अर्थात् सयमी जीवन का प्रचार किया, जिससे सिक्ख जाति बहादुरी मे प्रसिद्ध होगई और थोडेसे सिक्खो ने सारे पजाब पर राज किया, किन्तु इसी जाति मे भोग लिप्सा के बढते ही जो दुष्परिणाम हुआ वह हम सभी लोगो के सामने है।

इतिहास की बात को छोडकर प्रत्यक्ष देखने मे आता है कि भारत मे साधुसमाज को देखे, साधारण भिक्षा करके प्रभुभक्ति मे रहते हुये ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं, जो गृहस्थी प्रतिदिन घी-दूध खाते हैं, उनसे अधिक निरोग, मजबूत और हट्टे-कट्टे मिलते हैं। स्त्रियो मे भी विधवाओ को देख सकते हैं, गृहस्थ जीवन मे सदा रुग्ण रहनेवाली स्त्रिया भी वैधव्य जीवन मे बिना दवा के रोगमुक्त होकर स्वस्थ होजाती हैं।

—**स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती**,
योगस्थली आश्रम, महेन्द्रगढ

मानव की पाषाणमय मूर्ति ?

आर्यजगत् के उद्भट विद्वान् नेता प० जगदेवसिह शास्त्री सिद्धान्ती की जन्मशताब्दी उनकी जन्मभूमि बहराणा (झज्जर) मे मनाई गई। वहा सिद्धान्ती भवन की यज्ञशाला मे उनकी एक पाषाणमय मूर्ति का भी अनावरण किया गया। इस विषय मे श्री रामेश्वरदयाल निडर रेवाडी तथा प० मदनलाल 2912 Freeborn Street Dowarte CA 910104 S A. का पत्र प्राप्त हुआ है कि किसी मानव की पाषाणमय मूर्ति बनाना और किसी स्थल विशेष पर लगाना वैदिक सिद्धान्त के विरुद्ध है। इसका उत्तर सर्वहितकारी के माध्यम से पहले कई बार दिया जाचुका है। वेद मे ईश्वर की प्रतिमा बनाने का निषेध है, क्योंकि वह निराकार है। निराकार की मूर्ति नहीं हो सकती है। मानव, पशु, पक्षी आदि साकार हैं, इनकी मूर्ति होसकती है और बनाई भी जारही है।

महर्षि दयानन्द ने राम और कृष्ण आदि की मूर्ति बनाकर और ईश्वर के स्थान पर उन्हे ईश्वर मानकर उनकी उपासना करने का निषेध किया है जो कि निम्नलिखित वेदमन्त्र के आधार पर है–

न तस्य प्रतिमाऽअस्ति यस्य नाम महद्यश· । हिरण्यगर्भ इत्येष मा मा हिसीदित्येषा यस्मान्न जात इत्येष. ।। (यजु० ३२।३)

महर्षि ने इस मन्त्र की पूर्ण व्याख्या यजुर्वेदभाष्य मे की है। वहा 'प्रतिमा' शब्द के परिमापक, सदृश, तोलनसाधन (तुला) प्रतिकृति (फोटो) आकृति (मूर्ति) ये अर्थ किये हैं और ईश्वर के विषय मे इनका प्रतिषेध किया है।

महर्षि ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका (ग्रन्थप्रामाण्याप्रामाण्यविषय) मे तथा सत्यार्थप्रकाश (समु० ११) मे भी ईस मन्त्र का आशय स्पष्ट किया है।

वेद मे निराकार ईश्वर की प्रतिमा का प्रतिषेध है, अत अर्थापत्ति प्रमाण से यह स्वय सिद्ध होजाता है कि साकार मनुष्य आदि की प्रतिमा बनाई जासकती है, इसमें वेद का कोई विरोध नहीं है।

हा ! जो भाई साकार की प्रतिमा के विरोधी हैं, उन्हे अपने प्रतिकृति (फोटो) भी नहीं बनवाने चाहिये। यह लोकव्यवहार मे सम्भव नहीं। अत सम्भव प्रमाण के विरुद्ध है।

जो आर्य भाई मानव की पाषाणमय मूर्ति के विरोधी हैं, वे कृपया इस सम्बन्ध मे कोई वेद का प्रमाण प्रस्तुत करे, जिससे उस पर विचार किया जासके।

—**सुदर्शनदेव आचार्य**, वेदप्रचाराधिष्ठाता

बलिदान/पुस्तकालय भवन के लिये दानी महानुभावों से अपील

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक मे सभा द्वारा एक विशाल बलिदान भवन/पुस्तकालय भवन का निर्माण कार्य आरम्भ होगया है। इस बलिदान भवन/पुस्तकालय भवन मे आर्यसमाज के बलिदानियो के चित्र विवरण के साथ लगाये जायेगे।

सभी दानी महानुभावो से प्रार्थना है कि इस पुनीत कार्य मे अधिक से अधिक धनराशि मनीआर्डर, चैक या बैंक ड्राफ्ट द्वारा अथवा नकद भेजकर पुण्य के भागी बने। जिन सज्जनो का पूर्व मे दान का वचन है वे भी अपना वचन शीघ्र पूरा करने की कृपा करे।

निवेदक

स्वामी ओमानन्द सरस्वती	**स्वामी इन्द्रवेश**	**प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास**
सभाप्रधान	कार्यकर्ता प्रधान	सभामत्री

वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, गुजरात

(एक स्पष्टीकरण)

आर्यवन विकास फार्म मे प्रस्तावित वानप्रस्थ साधक आश्रम के विषय मे हमारे पास देशभर से सैकडो पत्र आये हैं जिनमे जिज्ञासु महानुभावो ने निर्माणाधीन वानप्रस्थ आश्रम की प्रगति के विषय मे जानकारी चाही है।

इस विषय मे हमारा विनम्र निवेदन है कि सन् २००० के प्रारम्भ मे ही वानप्रस्थ के निर्माण का कार्य प्रारम्भ होगया था किन्तु किन्हीं वैधानिक बाधाओ के कारण आर्यवन विकास फार्म से हम विधिवत् रूप मे बारह एकड भूमि अधिग्रहण (Lease Deed Letter) नहीं कर पाये थे। अत हमने निर्माण का कार्य मध्य मे ही स्थगित कर दिया।

सरकारी तन्त्र तथा विधि-विधानो की अव्यवस्था से तो प्राय सभी व्यक्ति अच्छी तरह से परिचित ही हैं। सब कुछ सुव्यवस्थित होने पर भी छोटीसी किसी सामान्य बाधा के कारण सारा कार्य रुक जाता है। यही स्थिति वानप्रस्थ के निर्माण कार्य मे बनी थी।

हम सभी वानप्रस्थ आश्रम के शुभेच्छुक, हितैषी, दानदाताओ, कार्यकर्ताओ को इस सूचना के माध्यम से जानकारी दे रहे हैं कि आगामी दो मास मे भूमि अधिग्रहण सम्बन्धी पत्रक प्राप्त होते ही हम निर्माण का कार्य तीव्र गति से प्रारभ कर देगे।

—**ज्ञानेश्वर आर्य**, (प्रबन्धक न्यासी) तथा समस्त न्यासी गण
वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन रोजड, पो० सागपुर, जिला साबरकाठा, गुजरात

नोट—गुजरात मे आये भूकम्प मे आश्रम मे किसी प्रकार की हानि नहीं हुई है।

नामकरण संस्कार पर यज्ञ

दिनाक १८-१-२००१ को श्री मोतीराम आर्य के निवास स्थान ग्राम सिहोर मे उनके नवजात शिशु (सुपौत्र) के नामकरण-सस्कार के उपलक्ष्य मे यज्ञ का आयोजन प० इन्द्रमुनि आर्यपुरोहित धर्मप्रचार मन्त्री यतिमण्डल दक्षिणी हरयाणा की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। यजमान का स्थान श्री सतीशकुमार आर्य सपत्नी श्रीमती पकजदेवी आर्य ने किया। यज्ञोपरान्त प० इन्द्रमुनि जी ने सस्कार विधि के आधार पर बालक का नाम योगेशकुमार रखते हुए १६ सस्कारो पर विस्तार से प्रकाश डाला। ५०/- रुपये सभा को दानस्वरूप दिए गए।

—**मा० रामकंवार आर्य**, पूर्व अध्यापक ग्राम सिहोर

शराब, बीड़ी, सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, इनसे दूर रहें।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ४६८७४, ५७७७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ४०७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १,९६,०८,५३,१०१
पंजीकरणसंख्या टैक/एच.आर/49/रोहतक/99 ☎ ०१२६२-४०७२२

ओ३म् ... वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र रोहतक

प्रधानसम्पादक : प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक :- डा० सुदर्शनदेव आचार्य

वर्ष २८ अंक १२ १४ फरवरी, २००१ वार्षिक शुल्क ६०) आजीवन शुल्क ६००) विदेश में १० पौंड एक प्रति १-२५

परमेश्वर की उपासना

❑ स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा

जैसे परमेश्वर के गुण कर्म स्वभाव हैं, वैसे अपने भी करना ही परमेश्वर की स्तुति अर्थात् नाम स्मरण है। जैसे वह न्यायकारी है तो आप भी न्यायकारी होवे और जो केवल भाड के समान परमेश्वर के गुणकीर्तन करता जाता है और अपना चरित्र नहीं सुधारता, उसका स्तुति करना व्यर्थ है। उपासक को चाहिए कि सर्वदा सत्य शास्त्रो को पढे पढावे, सत्पुरुषों का संग करे और 'ओ३म्' इस एक परमात्मा के मुख्य नाम का अर्थ विचार कर नित्यप्रति जप किया करे। अपने आत्मा को परमेश्वर की आज्ञानुकूल समर्पित कर देवे। यद्यपि निर्मली वृक्ष का फल जल को शुद्ध करनेवाला होता है, तथापि उसके नाम ग्रहण मात्र से जल शुद्ध नहीं होता। किन्तु उसको ले पीस जल में डालने से ही उस मनुष्य का जल शुद्ध होता है, वैसे नाममात्र जाप करने से कुछ भी नहीं होता। उस-उस नाम के अर्थो के अनुसार धर्मयुक्त कर्म करने से नाम-स्मरण सफल होता है, अन्यथा नहीं। जैसे शक्कर-शक्कर कहने से मुख मीठा नहीं होता, वैसे ही सत्यभाषणादि कर्म किये बिना राम ! राम !! कहने से कुछ भी फल नहीं होगा। नवीन कल्पित तन्त्रशास्त्र और पुराण ग्रन्थो मे वर्णित नाना प्रकार के नाम-स्मरण अर्थात् राम-राम कृष्ण-कृष्ण को जो मुक्ति का साधन मान रखा है, वह सब मिथ्या ही जानना चाहिये, क्योकि वेदादि सत्य ग्रन्थो मे इनका कहीं चिह्न भी नहीं पाया जाता, किन्तु निषेध ही पाया जाता है।

इसी प्रकार नाम के माहात्म्य की बातें भी सच्ची नहीं हैं, क्योकि जो पाप छूट जाते हो, तो दरिद्रो को धन राजपाट, अन्धो को आखे मिल जातीं, कोढियो का कोढ आदि रोग छूट जाता परन्तु ऐसा नहीं होता। सहस्रो कोस दूर से भी गगा ! गगा !! कहे तो उसके पाप नष्ट होकर वह वैकुण्ठ को जाता है, 'हरि' इन दो अक्षरो का नामोच्चारण सब पापों को हर लेता है और इसी प्रकार राम, कृष्ण, शिव, भगवती आदि नामो का माहात्म्य है, इनके मिथ्या होने मे क्या शका ? क्योंकि इनके नामस्मरण मात्र से पाप कभी नहीं छूटता। जो छूटे तो दु खी कोई न रहे और पाप करने से भी कोई न उठे। मूढो को विश्वास है कि हम पाप कर नाम-स्मरण करेंगे, तो पापो की निवृत्ति होजावेगी। इसी विश्वास पर पाप करके इस लोक और परलोक का नाश करते हैं। किया हुआ पाप तो भोगना पडता है। इन उपायो से पाप करके पाप के फल से बचने की प्रवृत्ति असत्य नीच कृत्य है। पाप करके पश्चात्ताप और फिर प्रायश्चित्त करके उस कर्म का फल प्रसन्नता से भोगना ही सज्जनो का लक्षण है। नाम-स्मरण मात्र से कुछ भी फल नहीं होता। जैसा कि मिश्री-मिश्री कहने से मुख मीठा और नीम-नीम कहने से कडवा नहीं होता, किन्तु जीभ से चखने ही से मीठा वा कडवापन जाना जाता है। पुराणों मे लिखी नाम लेने की रीति उत्तम नहीं, वह रीति झूठी है, वेदविरुद्ध है। वेदोक्त रीति से नामस्मरण इस प्रकार करना चाहिये- **'यस्य नाम महद्यशः'** (यजु० ३२।३)। जिस परमेश्वर का नाम बडे यश अर्थात् धर्मयुक्त कामों का करना है, जिससे बडे यश की प्राप्ति होती है। अर्थात् उसकी आज्ञा का ठीक-ठीक पालन करना और उत्तम कीर्तियों के हेतु जो सत्यभाषणादि कर्म हैं, उनका

(शेष पृष्ठ सात पर)

जनगणना में हमारा कर्तव्य

आपको मालुम है कि हर दस वर्षों के पश्चात् फरवरी २००१ में भारत सरकार की ओर से पूरे देश मे जनगणना का कार्य होरहा है। सरकारी कर्मचारी ९ फरवरी से २८ फरवरी के बीच आप सबके घर पर आएगा व अनेक प्रकार के ३९ प्रश्न पूछेगा। इन प्रश्नों के विषय खेत-खलियान, परिवार, जन्मस्थान, मकान-जायदाद, पशु, कारखाना, विवाह आदि तो होगे ही परन्तु तीन अन्य विषय हमारे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण होगे।

उपरोक्त विषयो के उत्तर तो सबके अपने-अपने स्तर पर भिन्न-भिन्न होंगे, परन्तु जिन विषयों पर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने १८८१ ई० मे ही निर्णय अपने एक भक्त को लिखे पत्र में दे दिया था, उन विषयो मे आम जनता का ध्यान दिलाना हमारा कर्तव्य है-

धर्म-प्रश्न ७ मे कर्मचारी आपसे आपके धर्म के विषय में पूछेगा। इसके उत्तर मे हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सिक्ख, बौद्ध व जैन, ये छ नाम फार्म मे छपे हैं। यह कोई आवश्यक नहीं है कि उत्तर इनमें से ही देना है। जो लोग वेद को ईश्वर का ज्ञान मानकर इसे सब सत्यविद्याओ का पुस्तक मानते हैं व प्रत्येक सत्सग के अन्त मे जयघोष बोलते हैं- **'वैदिकधर्म की जय'**-उनका धर्म **वैदिकधर्म** ही होसकता है, कोई और नहीं। अत आप अपना धर्म वैदिक ही लिखाए। सरकारी कर्मचारी यदि आप से कहे कि स नाम का कोई धर्म है ही नहीं तो उसे कहिए कि इसका निर्णय मैंने करना है, तुमने या सरकार ने नहीं। मजबूर होकर उसे **वैदिकधर्म** ही लिखना पडेगा।

मातृभाषा-इस क्षेत्र मे बसनेवाले सब लोगो की मातृभाषा हिन्दी ही है और पहले की जनगणनाओ मे भी हम यही लिखवाते आए हैं व यही हमारी मातृभाषा है। इसकी रक्षा के लिए हमने हिन्दी रक्षा आन्दोलन चलाया था व उसमे हमारे वीरो ने बलिदान दिए थे। यह राष्ट्रभाषा भी है व राष्ट्र को एकता के सूत्र मे बाधती है। जो लोग प्रान्तीय बोलियो को मातृभाषा [illegible] रहे हैं, वे लोग हिन्दी की शक्ति को कमजोर कर रहे हैं जिससे राष्ट्रीय एकता को ठेस लगेगी।

आपसे अनुरोध है कि अपनी मातृभाषा **हिन्दी ही लिखवाएं** ताकि राष्ट्रीय एकता मे मजबूती बनी रहे।

अन्य भाषाओं का ज्ञान-जनगणना करने आया सरकारी कर्मचारी आपसे ग्यारहवा प्रश्न यह पूछेगा कि मातृभाषा के अतिरिक्त आप अन्य दो कौनसी भाषाओ का ज्ञान रखते हैं ?

आपसे अनुरोध है कि इसके उत्तर मे सबसे पहले **'सस्कृत'** लिखवाए व बाद मे **'पजाबी'** लिखवाए। हमारी धर्मभाषा सस्कृत है, सस्कृति की भाषा सस्कृत है। वेद, उपनिषद्, छ शास्त्र, रामायण, महाभारत, आयुर्वेद, गणित, ज्योतिष, गीता आदि सभी ग्रन्थ सस्कृत मे ही हैं। अपनी सस्कृति की रक्षा करने की इच्छा यदि आपमे है तो सस्कृत को आप छोडकर ऐसा नहीं कर सकते। ससार की सबसे पहली भाषा, सब भाषाओं की जननी भाषा, कम्प्यूटर के लिए सबसे उपयुक्त भाषा भी सस्कृत ही है।

'अन्य भाषाओ के ज्ञान' के अन्तर्गत सस्कृत के बाद **'पजाबी'** लिखानी चाहिए। यह हमारे ही देश के एक निकटस्थ प्रदेश पजाब की भाषा है व इसका भण्डार भी सस्कृत के लगभग ६० प्रतिशत शब्दो से भरा पडा है। इसके स्थान पर यदि आप अग्रेजी लिखाते हैं तो आप एक विदेशी भाषा की जडे मजबूत करने का पाप करते हैं, भले ही आप अग्रेजी मे बहुत बडे विद्वान् क्यो न हो।

याद रखिए, सरकारी कर्मचारी को वही कुछ लिखना पडेगा, जो आप लिखाएगे। आपको यह पूरा-पूरा अधिकार है कि आप देखले कि जो जानकारी आपने उसे दी है, वही उसने लिखी है या नहीं। यदि वह मनचाही जानकारी आपके विषय मे लिखता है तो हमे बताए या जिलाधीश (उपयुक्त) को उसकी शिकायत करके ठीक कराए।

इस विज्ञापन को पढकर घर के सभी सदस्यो को भी समझाए व यह विज्ञापन पडोसी को दे। धन्यवाद।

विनीत

केशवदास आर्य	प्रमोदकुमार आर्य	इन्द्रजित्देव
प्रधान	मन्त्री	प्रचारमत्री

आर्य केन्द्रीय सभा, यमुनानगर

लोक-परलोक विचार

नवम-विचार—(नहीं, कुछ लेकर ही जायेंगे)

❑ शिवप्रसाद उपाध्याय, आर्यसमाज होशियारपुर (पंजाब)

(गताक से आगे)

सज्जनो ! परसो और कल दो दिन से लगातार हम सब मिलकर विचार कर रहे थे कि सासारिक वस्तुए क्या हैं ? और हमारा शरीर क्या है ? अन्त के समय सासारिक वस्तु तो दूर रही परन्तु यह हमारा अपना ही शरीर भी साथ नहीं दे सकेगा तो अब रह क्या गया ?

क्या इतना बडा हरा-भरा ससार, इतना अमूल्य अपना देह सब बेकार है ? झूठे हैं ? या यह सब स्वप्न तो नहीं ? या यह किसी मायावी की जादूगरी तो नहीं ? इसलिए तो हम कह रहे थे—'खाली हाथ आए थे और खाली हाथ ही लौटेगे।' ऐसी निराशा के समय मे हम सबको निराश देखकर कवि जी ने तुरन्त कह दिया—'नहीं भाई ! ऐसी बात नहीं और निराश होने की जरूरत भी नहीं है। तुम्हारे हाथ कभी भी खाली नहीं रहेंगे। तुम्हारे पल्ले कुछ न कुछ अवश्य है। बात ध्यान से सुनो—

धर्मानुगो गच्छति जीव एक,
कर्मानुगो गच्छति जीव एक,

यह पाञ्चभौतिक ससार नाशवान् है। तुम्हारा शरीर भी पाञ्चभौतिक होने से नाशवान् है। नाशवान् वस्तु तुम्हारे साथ कैसे जासकेगी ? परन्तु यहा आकर तुमने जो धर्म किया है, जो कर्म किया है, जो दिया है, जो लिया है, जीवनभर तुम अनेक प्रकार के पुरुषार्थ करते रहे, तुमने मेहनत की है, परिश्रम किया है, जो भी सिरखपाई की ये सब बेकार नहीं है। यही तो साथ मे जानेवाली वस्तु है। तुम्हारा परमधन तो धर्म-कर्म, पाप-पुण्य यही तो सब कुछ है। शास्त्रो मे कहा गया—

नामुत्र हि सहायतार्थं पिता माता च तिष्ठत ।
न पुत्रदार न ज्ञातिर्धर्मस्तिष्ठति केवल ।। (मनु० ४-२३९)

उस परलोक मे तो सहायता के लिए न तो पिताजी साथ देते हैं, न माताजी साथ देती है, न पुत्र, न स्त्री ही साथ देती है, बन्धु-बान्धव भी साथ नहीं देते। वहां तो सिर्फ धर्म ही साथ देता है।

मृत शरीरमुत्सृज्य काष्ठलोष्ठसम क्षितौ।
विमुखा बान्धवा यान्ति धर्मस्तमनुगच्छति।। (मनु० ५-२४)

मरे हुए पाञ्चभौतिक शरीर को लक्कड-पत्थर के समान मानकर लकडी के साथ ही जलाकर तुम्हारे बन्धुबान्धव तुम्हे पीठ देखाकर चले जाते हैं। उस समय तुम्हारे साथ जानेवाला तुम्हारा साथी तो धर्म ही होगा।

यथा धेनुसहस्रेषु वत्सो विन्दति मातरम्।
तथा पूर्वकृत कर्म कर्तारमनुगच्छति।। (पचतत्र २-१३५)

जैसे बहुत-सी गायो मे से बछडा अपनी मा को पहचान कर उसके पास पहुच जाता है, ठीक उसी प्रकार कर्ता को भी उसका पूर्वकृत्त कर्म चाहे वह शुभ हो चाहे अशुभ हो अवश्य ढूंढ लेता है।

सज्जनो ! कविजी के सारगर्भित इस गम्भीर उत्तर से मुझे एक बात याद आरही है—

एक समय की बात है। एक आदमी ने किसी सेठ के पास जाकर १०० रुपये उधार लिये थे। बीच की [illegible] ह थी कि—'एक वर्ष पूरा होने पर सेठ के पास आकर वह कर्जदार पाच रुपये के हिसाब से व्याज के साठ रुपये और मूलधन १०० रुपये लौटाएगा।' हालांकि उस कर्जदार को इस समय रुपयो की कोई जरूरत नहीं थी पर वह मक्कार स्वभाव का था। वह दूसरे के धन को मुफ्त मे मिला मानकर उसे बीडी सिगरेट, शराब आदि मे ही उडा दिया करता था। उसकी आदत उधार लेने की तो जरूर थी पर उसके हाथ से किसी का धन लौटाया ही नहीं जाता था। समय बीतते देर नहीं लगी।

वह आदमी शर्त के अनुसार वर्ष दिन पूरे होने पर सेठ के पैसे लौटाने नहीं आया सेठ ने सोचा कि—'कोई बात होगई होगी, दूसरे मास मे आएगा।' पर वह दूसरे मास मे भी नहीं आया। तब सेठ स्वय ही उसके पास जाकर अपने रुपये मागने लगा—'भाई ! तुम्हारी ओर मेरे १६५ रुपये बनते हैं। जल्दी दे दो।' इस पर उस कर्जदार ने बहाना बनाया और कहा—'सेठ जी ! अभी-अभी मैं सख्त बीमार पड गया था, आपके पैसे लौटाने मे देरी होगई है। माफ कीजिए। अगले मास मैं आपके १७० रुपये लेकर स्वय आजाऊगा।' सेठ भी उसको एक मास की छूट देकर अपने घर चला गया।

इसी बीच किसी ने आकर सेठ को कहा कि—'वह आदमी बडा ही मक्कार है, वह इसी प्रकार सबको ठग रहा है। उसने अनेक लोगो से ऋण लेके पैसे खाए हुए हैं, पर अब तक उसने किसी के भी पैसे नहीं लौटाए। वह व्याज का लालच देकर लेना तो जानता है, पर देना कभी नहीं जानता।'

अगला मास भी बीत गया। वह कर्जदार लौटकर नहीं आया। इधर सेठ ने समाचार सुना कि—'उसने हजार रुपयो की गेहू बेच ली हैं।' तब भी वह पैसे लेकर नहीं आरहा। इस बार भी सेठ स्वय उस आदमी के पास पहुंच गया। सेठ ने कहा—'अब तो मेरे १७० रुपये दे दो।' अबकी बार भी वह बहाना बनाने लगा कि—'सेठ जी ! खलिहान से गेहू तो लाई हुई हैं, वह बेचनी है। इस समय भाव भी बहुत गिरे हुए हैं। गेहू विक्री के पश्चात् मैं स्वय आपके पास आकर आपके १७० रुपये लौटा आऊगा। बार-बार आपको इस प्रकार तकलीफ करने की जरूरत नहीं।'

सेठ उसके विचारो को भाप गया। सेठ ने सोचा कि—'यह आदमी ऐसे तो काबू मे नहीं आएगा, न ही मेरे रुपये लौटाएगा।' उसी समय सेठ ने उसको पकडकर बाध लिया और कहा—'या तो तू आज मेरे पैसे चुकाएगा, या फिर अपनी जान खो बैठेगा। मैं तुझे ऐसे ही नहीं छोडूगा। चल तेरे पास पैसे नहीं हैं, तो ना सही, तू पैसे नहीं देसकता तो कोई बात नहीं। तू १७० रुपये के बदले मे १७० लाल मिर्च सामने खाके खतम करदे। मैं सन्तोष करके चला जाऊगा।

सेठ ने अपनी तरफ से ही उसी समय १७० लालमिर्च खरीदकर उसके सामने धरदी। वह लालमिर्च चबाने लगा। अभी वह करीब १०० मिर्च चबा चुका था कि उसकी बस होगई। तुरन्त सेठ से कहने लगा—'सेठ जी ! मैं बाकी मिर्च नहीं खा सकता।' सेठ ने फिर १०० प्याज सामने रख दिये और कहा—'तू ये सारे प्याज तो खा सकेगा।' उसने प्याज खाना सरल समझा। वह प्याज खाने लगा। करीब ५० प्याज खाने के पश्चात् उसकी बस होगई। उसकी आत्मा ने कह दिया—'भाई ! यदि अगला प्याज उठाएगा, तो तू है नहीं।' वह झट सेठ से कहने लगा—'सेठजी ! अब तो मेरे से बाकी के प्याज भी नहीं खाए जाते।' फिर क्या था ? बन्धन मे तो वह पहले से ही पडा था। सेठ ने तुरन्त अपना जूता उठाकर कहा—'तैयार होजा ५० जूते तो खा ही सकेगा न ?' उसने यह काम और भी आसान समझा। कहने लगा—'५० जूते खाने पर यदि आपके पैसे लौटाने नहीं पडेगे तो मारिये।' सेठ उसे जूते मारने लगा। करीब २५ जूते मारे तो वह एकदम चिल्ला उठा—'सेठ जी ! सेठ जी ! आगे नहीं मारना, सिर्फ दो मिनट का टाइम दीजिए। मैं आपके १७० रुपये अभी चुकता करूगा। मुझे सिर्फ घर के अन्दर जाकर पैसे निकालकर लाने दे। घर मे कुछ रुपये जरूर पडे होगे।' सेठ उसका हाथ पकडकर उसे अन्दर लेगया। उस मक्कार ने उसी समय १७० रुपये सेठ के हाथ मे पकडा दिये।

सज्जनो ! यही बात तो शास्त्रो मे बताई गई है—

अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्मशुभाशुभम्।

चाहे शुभ कार्य किया हो, चाहे अशुभ कार्य किया हो। उसका फल अवश्य ही भोगना पडता है। उस मक्कार को आखिर मे जाकर सेठ के १७० रुपये चुकाने पडे। उसको जो लालमिर्च, प्याज और जूते खाने पडे, ये उसकी मक्कारी के थे। हमे इस कर्म के रहस्य को अच्छी प्रकार समझना चाहिए। किया हुआ कर्म जीवात्मा को कभी भी नहीं छोडेगा। जिस प्रकार कि अपराधी को पुलिस नहीं छोडती। इसी बात को किसी कवि ने मार्मिक वचनो मे यो कहा था—

शयान चानुशेते हि तिष्ठन्त चानुतिष्ठति।
अनुधावति धावन्तं कर्म पूर्वकृत नरम्।। (पचतत्र २-१३६)

कर्म के बन्धन से कोई भी बच नहीं सकता। यदि जीवात्मा सोता है, तो कर्म भी उसी के साथ ही सोएगा। वह उठता है, तो कर्म भी उठेगा। वह बैठता है, तो कर्म भी बैठेगा। यदि वह चल पडे तो कर्म भी उसी के साथ चल पडता है।

वेद आदि सत्य शास्त्रो मे दो प्रकार के कर्म माने हैं। अच्छे और बुरे। अच्छे कर्मो का फल अच्छा और बुरे कर्मों का फल बुरा होगा। ऐसा नहीं होसकता है कि हम बुरा कर्म करते जाये और अच्छे फल की अभिलाषा करे। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपनी अमरकृति सत्यार्थप्रकाश मे अच्छे-बुरे कर्मो की पहचान के लिए बहुत ही सरल उपाय बताया है। उन्हीं के शब्दो मे—जिसके करने से हमे भय, शका और लज्जा हो वह बुरा कर्म है और जिसके करने से प्रसन्नता, निर्लज्जता और अभय हो वह अच्छा कर्म है।

मैं तो कई बार कहा करता हू कि—'जैसे कि एक आदमी पाच रुपये की चोरी करता है। उनमे से दो रुपये दान कर देता है और तीन रुपये आप खर्च करता है। जो भी हो उसे पाच रुपये चोरी का ही बुरा फल अवश्य मिलेगा। उसने उसमे से दो रुपये जो दान दिये हैं, उसका भी शुभ फल जरूर मिलेगा। ऐसा नहीं होसकता, कि उसे पाच रुपये की चोरी का फल न मिलकर तीन रुपये का ही बुरा फल मिले। कर्म का रहस्य बडा गम्भीर है। हमे बहुत ही सोच-समझकर कर्म करने चाहिये। इसलिये तो अनुभवी लोग कहते हैं—

'गहना कर्मणो गति' (गीता० ४-१७)

कर्म की गति अत्यन्त गहन है। इसके रहस्य को समझने के लिए अत्यन्त समाहित चित्त चाहिए। **(क्रमश)**

दयानन्द बोधरात्रि विशेषांक

आपके प्रिय सर्वहितकारी पत्र का दिनाक २१ फरवरी २००१ को दयानन्द बोधरात्रि विशेषाक प्रकाशित किया जा रहा है। अत लेखक महानुभाव महर्षि दयानन्द के जीवन और वैदिक सिद्धान्त-सम्बन्धी कविता, लेख आदि भेजने की कृपा करे। लेख पत्र के एक तरफ, सक्षिप्त एव सारगर्भित होने चाहिये। —**सुदर्शनदेव आचार्य,** सह-सम्पादक

गुजरात राहत कोष अपील

महर्षि दयानन्द एवं महात्मा गांधी की जन्मभूमि संकट में

२६ जनवरी २००१ को गुजरात मे आए भूकम्प से भुज, अहमदाबाद, महर्षि की जन्मभूमि टकारा का गुरुकुल भवन, यज्ञशाला, गोशाला, गाधी जी की जन्मभूमि तथा अन्य क्षेत्रो मे जो भारी तबाही हुई है उसकी कल्पनामात्र से ही दिल काप उठता है। इस हादसे में लाखो लोग काल का ग्रास बन गये, लाखो परिवार बेघर होगए, हजारो बच्चे अनाथ होगए और लाखो लोग घायल होगए हैं। वहा इस प्राकृतिक आपदा से पीडित लोग भोजन, पानी, दवाइया, कपडे और आश्रय के लिए जूझ रहे हैं। प्राकृतिक आपदा को रोका तो नहीं जासकता लेकिन पीडित लोगो की सहायता करना हमारा सबसे बडा धर्म है। आज सारा राष्ट्र सकट की इस घडी मे गुजरात के लोगो के साथ है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अधिकारियों ने सहयोगियो से परामर्श करके निश्चय किया है कि **'गुजरात भूकम्प पीडित सहायता निधि'** में करोडो रुपये की आहुति दी जावे। गुजरातवासियो के परिवार के कल्याण के लिए हरयाणा प्रान्त के सभी वेदप्रचार मण्डल, आर्यसमाज, गुरुकुल, कालिज एव अन्य आर्यशिक्षण सस्थाए इस सहयोग यज्ञ मे अधिक से अधिक धनराशि बैंक ड्राफ्ट, चैक या नकद आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को भेजे। यह राशि आयकर से मुक्त है।

सभाप्रधान स्वामी ओमानन्द जी महाराज ३१ जनवरी २००१ को लाखो रुपये का सामान कम्बल औषधिया आदि लेकर गुरुकुल के ब्रह्मचारियो एव कार्यकर्ताओ के साथ टकारा के लिए प्रस्थान कर गए है। आर्यसमाज टकारा मे अपना मुख्य सहायता केन्द्र बनाकर मोरवी आदि सैकडो गावो मे सेवा का कार्य सम्भालेगा। देश-विदेश मे बैठे सभी भारतीयो से प्रार्थना है कि वे भारी सख्या मे गुजरात के भूकम्प पीडितो की सहायता के लिए धन की सहायता भेजे। दानियों के नाम सर्वहितकारी साप्ताहिक मे प्रकाशित किये जायेंगे।

निवेदक

प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास (सभामत्री) **बलराज** (सभा कोषाध्यक्ष) **प्रो०शेरसिह** (पूव रक्षाराज्यमत्री) **स्वामी इन्द्रवेश** (कार्यकर्ता प्रधान) **स्वामी ओमानन्द** (सभाप्रधान)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सभी पदाधिकारी अन्तरग सदस्य एव कार्यकर्ता

'गुजरात भूकम्प पीड़ित सहायता निधि' में प्राप्त दानराशि

(गताक से आगे)

१७ श्री भद्रसेन शास्त्री म०न० १०१५ सैक्टर-१ रोहतक ५०१-००
१८ मा० बलजीतसिह आर्य गाव चिमनी जि० झज्जर ११००-००
१९ श्री बलदेव आर्य गाव बोन्दकला जिला भिवानी १००-००
२० श्री जयपालसिह आर्य सभा भजनोपदेशक १०१-००
२१ श्री सत्यपाल आर्य सभा भजनोपदेशक १०१-००
२२ श्रीमती शकुन्तलादेवी धर्मपत्नी कर्नल श्री हरिचन्द्र आर्य, मकान न० ३०० विद्या निकेतन रोड, माडल टाउन, रोहतक ५०१-००
२३ श्रीमती शान्तिदेवी धर्मपत्नी श्री टेकचन्द आर्य १ सैक्टर रोहतक ५०१-००
२४ श्री जगवीर सुपुत्र प्रो० सत्यवीर शास्त्री सभामत्री ग्राम डालावास भिवानी ५००-००
२५ श्री वेदव्रत शास्त्री आचार्य प्रिंटिग प्रेस दयानन्दमठ रोहतक ११००-००
२६ कर्मचारी वर्ग आचार्य प्रिंटिग प्रेस दयानन्दमठ रोहतक १८१०-००

(१) श्री सुरेन्द्रकुमार सूर्यनगर कालोनी रोहतक १००-००
(२) श्री देवेन्द्र गर्ग, १३००/१९ सतनगर रोहतक १००-००
(३) श्री दादाराम रोहतक १००-००
(४) श्री विनोद कटारिया, रोहतक १००-००
(५) श्री मुकेशकुमार, रोहतक १००-००
(६) श्री बलवन्तसिह, दिल्ली १००-००
(७) श्री नन्दकिशोर कृपालनगर, रोहतक १००-००
(८) श्री दयाराम, दिल्ली १००-००
(९) श्री बिजेन्द्र नेगी, रोहतक १००-००
(१०) श्री जयकुमार त्यागी, दिल्ली ५०-००
(११) श्री भगवान, रोहतक ५०-००
(१२) श्री सुरेश सैनी, सुखपुरा चौक, रोहतक ५०-००
(१३) श्री रामकिशन दीक्षित, रोहतक ५०-००
(१४) श्री नागेन्द्र बैठा, रोहतक ५०-००
(१५) श्री विजय बैठा, रोहतक ५०-००
(१६) श्री रविन्द्रकुमार, रोहतक ५०-००
(१७) श्री तुलसीराम, रोहतक ५०-००
(१८) श्री लक्ष्मीकान्त, रोहतक ५०-००
(१९) श्री मुरारीलाल, रोहतक ५०-००
(२०) श्री रमेशचन्द्र कुशवाहा, रोहतक ५०-००
(२१) श्री सतीशकुमार मिश्रा, सूर्यनगर कालोनी, रोहतक ५०-००
(२२) श्री नरेन्द्र नेगी, रोहतक ५०-००
(२३) श्री सुरजीतकुमार, गुरुनानकपुरा, रोहतक ५०-००
(२४) श्री जगदीशकुमार, चिन्योट कालोनी, रोहतक ५०-००
(२५) श्री अनिलकुमार, रोहतक ५०-००
(२६) श्री नरेश रोहिल्ला पियवाडा मोहल्ला, रोहतक ५०-००
(२७) श्री सुबल घोष, रोहतक २०-००
(२८) श्री गुरुदीन कुशवाहा, रोहतक २०-००
(२९) श्री सजीवकुमार, पाडा मोहल्ला, रोहतक २०-००

२७ प्रो० राजपाल शास्त्री राजकीय कालेज दूबलधन (झज्जर) ११००-००
२८ श्री हरिश्चन्द्र मलिक सु० श्री रिसालसिह ग्राम खेडी सापला (रोहतक) १०१-००

(क्रमश)

साधना, स्वाध्याय एवं सेवा शिविर

दिनांक २३ फरवरी, २००१ शुक्रवार से दिनांक ४ मार्च, २००१ रविवार तक

आपके मन के किसी कोने मे साधना करने की इच्छा बीज रूप मे हो, अपने जीवन को वेद एव ऋषियो के आदर्शानुकूल ढालना चाहते हो, विद्यात्मक एव सृजनात्मक जीवन चाहते हो, अपने मन को पवित्र बनाने की इच्छा रखते हो, वैदिक साधना पद्धति को जानना-समझना चाहते हो, वैदिक सिद्धान्तों को समझना चाहते हो या अपने को वैदिकधर्म के प्रचार-प्रसार में लगाने की अभिलाषा रखते हो तो यह शिविर आपको एक उत्तम अवसर प्रदान करेगा।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर की ओर से ऋषि उद्यान मे वर्ष मे तीन बार पहला होली के आस-पास दूसरा ग्रीष्मावकाश मे तथा तीसरा दीपावली के आसपास लगाए जाते हैं। शिविर योग्य आचार्यो के निर्देशन मे लगाया जाता है। शिविर के चलते सब प्रकार के दुर्व्यसन निषिद्ध हैं तथा समाचार-पत्र पढने, दूरदर्शन देखने एव आकाशवाणी सुनने पर भी प्रतिबन्ध है।

शिविर मे रहने की, खाने-पीने की एव बिछाने के बिस्तरो की व्यवस्था है। शेष दैनिक उपयोग की वस्तुए यथा-मजन, ब्रश, साबुन तेल दवाए ओढने-बिछाने की चादर/कम्बल लिखने के लिए सचिका (नोट बुक), लेखनी, टार्च आदि साधक अपने साथ लावे।

शिविर मे भाग लेनेवाले कृपया यथाशीघ्र हमे अपना पूर्ण विवरण लिखकर निम्न पते पर भेजदे– **मत्री, परोपकारिणी सभा, केसरगज, अजमेर (दूरभाष ४६०१६४)**

गुरुकुल में वसन्तोत्सव पर क्रीडा प्रतियोगिता आयोजित

कुरुक्षेत्र (२९ जनवरी २००१) प्राणियो को ही नही, अपितु वृक्ष लता आदि को आह्लादित करनेवाले वसन्तोत्सव के सुअवसर पर गुरुकुल कुरुक्षेत्र के विशाल प्रागण मे प्रकृति की विचित्र देन 'वसन्त' तथा 'बालवीर हकीकतराय' पर भाषण तथा क्रीडा प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमे गुरुकुल के ब्रह्मचारियो ने वसन्त ऋतु का स्वागत व अभिवादन अपने मधुर कण्ठ से गीतो को गाकर किया।

इस महोत्सव मे मुख्य अतिथि के रूप मे पानीपत के प्रतिष्ठित अधिवक्ता व प्रसिद्ध समाजसेवी श्री राममोहनराय उपस्थित थे। उन्होने गुरुकुल के सभी कार्यक्रमो को देखकर अभिभूत होकर गुरुकुल की भूरि-भूरि प्रशसा करते हुए कहा कि गुरुकुल के ब्रह्मचारियो ने नई व्याख्या प्रस्तुत कर पुरानी धारणाओ को मिथ्या सिद्ध कर दिया है। उन्होने कहा कि मुझे गुरुकुल मे आकर अनेक नवीन जानकारिया प्राप्त हुई है जिससे मेरे ज्ञान मे अत्यन्त वृद्धि हुई है। उन्होने अपने करकमलो द्वारा सभी प्रतिभागियो को पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित भी किया।

इस अवसर पर धर्म रक्षा हेतु बलिदान देकर अपना नाम ससार मे अमर करनेवाले वीर बालक हकीकतराय को श्रद्धाजलि भी अर्पित की गई। गुरुकुल के ब्रह्मचारियो ने अश्व बाधा दौड सल्यूट, नेताबाजी तथा लक्ष्यभेदन आदि का मनोहारी प्रदर्शन कर सभी दर्शको को मन्त्रमुग्ध कर दिया। क्रीडा प्रतियोगिता मे गुरुकुल के आचार्यो व ब्रह्मचारियो ने भाग लेकर गुरु-शिष्य के अटूट सम्बन्ध को प्रगाढ बना दिया।

वार्षिक उत्सव स्थगित

आर्यसमाज सोहना जिला गुडगाव का २३वा वार्षिक उत्सव दिनाक २ ३ ४ मार्च २००१ को होना था परन्तु गुजरात भूकप त्रासदी को देखते हुए एव अन्य आर्यसमाजो के कार्यो का देखते हुए दिनाक ७-२-२००१ की आर्यसमाज एव दयानन्द माध्यमिक विद्यालय की अतरग की मीटिंग मे सर्वसम्मति से पारित किया गया कि अधिक से अधिक राशि अपने सदस्यो से इकट्ठी करके गुजरात की आपदा मे आर्थिक सहयोग किया जाये जिसके लिए १४११०/- का ड्राफ्ट दयानन्द मा०वि० द्वारा एव ११०००/- से अधिक राशि आर्यसमाज के सदस्यो द्वारा भेजने का निर्णय किया गया। वार्षिक उत्सव का कार्यक्रम स्थगित कर दिया गया है।

–**सुरेन्द्र आर्य,** मत्री आर्यसमाज सोहना

आर्य केन्द्रीय सभा रोहतक के तत्त्वावधान में

ऋषि बोधोत्सव (महाशिवरात्रि पर्व)

दिनाक २१ फरवरी २००१ (बुधवार) का धन्वन्तरि [illegible] आर्यनगर रोहतक म ऋषि बोधोत्सव बड धूमधाम स [illegible] सभी सादर आमन्त्रित है। समय प्रात ६ बजे स १२ तक।

निवदक **आर्य केन्द्रीय सभा, रोहतक**

सार्वदेशिक आर्ययुवक परिषद् के बढ़ते कदम

—**रविन्द्रकुमार आर्य**, कार्यालयमन्त्री, दयानन्दमठ, रोहतक

(गतांक से आगे)

(७) आर्यसमाज के नीचे से लेकर ऊपर के पदाधिकारियो को न्यूनतम एक महीने के विशेष प्रशिक्षण से गुजरना चाहिये जिसमें उन्हे साधना, सिद्धान्त एव सगठन कार्य की विधि में दीक्षित किया जाये। ऐसे ही प्रशिक्षण की व्यवस्था आर्यसमाज के समस्त उपदेशको, प्रचारको, पुराहितो आदि के लिए भी होनी चाहिए।

(८) आर्यसमाज द्वारा सचालित शिक्षण सस्थाओ के आचार्य, प्राचार्य, शिक्षक आदि के लिए तीन महीने से लेकर एक वर्ष के प्रशिक्षण की व्यवस्था हो। समय-समय पर इन लोगो को एक-एक मास के तीन रिफ्रेसर कोर्स कराए जाए। विदेशो मे प्रचारार्थ इन्हीं विद्वानों मे से छ मास की विशेष ट्रेनिंग के बाद भेजने की व्यवस्था हो। विशेषकर योग आदि विषयो पर अलग से प्रचारक तैयार हो।

(९) आर्य साहित्य के विभिन्न भाषाओ मे प्रकाशन, आर्य पत्रिका के सपादन और आडियो/वीडियो कैसेट्स तैयार कर सचार माध्यमो के सदुपयोग पर जोर दिया जाये। आकाशवाणी, दूरदर्शन आदि पर आर्यवाणी/वेदवाणी का प्रसारण हो।

(१०) जन्मना जातिवाद को तोडकर गुण, कर्म, स्वभाव की समानता में दहेजरहित अन्तर्जातीय विवाह का अभियान चलाते हुए एक आर्य बिरादरी की स्थापना की जाये।

(११) महिलाओ को पुरुषो के बराबर सम्मान एव मानव अधिकार की स्वीकृति हो तथा नारी उत्पीडन के लिए जिम्मेदार बालिका भ्रूणहत्या, दहेज एव दहेज-हत्या, शराबखोरी, बलात्कार आदि के विरुद्ध जनमत खडा किया जाये।

(१२) शोषण एव विषमतारहित समाज ही वास्तव मे आर्यसमाज है, ऐसा मानकर परिवार एव गाव सभा की इकाइयो को मजबूत किया जाये तथा उपभोक्तावाद की आधी मे जीवनमूल्यो को नष्ट करनेवाले भूमण्डलीकरण का विरोध किया जाये। विकास की आध्यात्मिक अवधारणा को जन-जन मे प्रतिष्ठित किया जाये।

(१३) अगले वर्ष के अन्त तक पूरे भारतीय उपमहाद्वीप स्तर की एक विशाल जनजागरण यात्रा की योजना क्रियान्वित हो जो आर्यसमाज, वैदिक मान्यताओ तथा महर्षि दयानन्द के क्रान्तिकारी व्यक्तित्व को जनमानस मे प्रतिष्ठित कर पाखण्ड, गुरुडम, साप्रदायिकता भ्रष्टाचार, जातिवाद आदि के विरुद्ध आन्दोलन खडा करे।

(१४) सन् २००१ मे जबकि आर्यसमाज अपने जीवन के १२५ वर्ष पूर करने जारहा है, उस समय दिल्ली में एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया जाए। उस सम्मेलन में उक्त दस्तावेज पर विचार-विमर्श करने के उपरान्त इसे आनेवाले समय के लिए आर्यसमाज के नीति-निर्धारण सिद्धान्तो एव कार्यक्रमो का चार्टर माना जाये और इसे अमल मे लाने के लिए क्रान्तिकारी युवाशक्ति का सघर्षशील सगठन खडा किया जाये।

(१५) उपरोक्त सभी कामो के लिए अगले तीन माह मे सवा करोड, अर्थात् १२५ लाख रुपये की **'स्थिरनिधि'** कायम की जाये और इन कामो को अन्जाम दिया जाये।

(१६) वेदप्रचार मण्डल सोनीपत के तत्त्वावधान मे दिनाक २३-१-२००१ से २८-१-२००१ तक सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् द्वारा सचालित ब्रह्मचर्य एव योगासन शिविर दून वरिष्ठ मा०वि० सोनीपत मे सम्पन्न हुआ। इस शिविर मे लगभग १०० युवको ने भाग लिया। इस शिविर की अध्यक्षता वेदप्रचार मण्डल सोनीपत के अध्यक्ष मास्टर प्रतापसिह आर्य ने की तथा शिविर की सारी व्यवस्था प्रिंसिपल आजादसिह जी मन्त्री वेदप्रचार मण्डल सोनीपत ने की। अन्तिम दिन सभी ने आर्यसमाज की विचारधारा को जन-जन तक पहुचाने की शपथ ली।

इसी के साथ-साथ श्री आर्य ने बताया कि प्रदेश अध्यक्षो को राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगवीरसिह एडवोकेट ने निर्देश दिये हैं कि सभी जिलो की इकाइयो को सक्रिय किया जाये। अन्य गतिविधियो का विवरण अगले अको मे आप पढ पायेगे। (क्रमश)

बलिदान/पुस्तकालय भवन के लिये दानी महानुभावों से अपील

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक में सभा द्वारा एक विशाल बलिदान भवन/पुस्तकालय भवन का निर्माण कार्य आरम्भ होगया है। इस बलिदान भवन/पुस्तकालय भवन में आर्यसमाज के बलिदानियो के चित्र विवरण के साथ लगाये जायेगे।

सभी दानी महानुभावो से प्रार्थना है कि इस पुनीत कार्य मे अधिक से अधिक धनराशि मनीआर्डर, चैक या बैंक ड्राफ्ट द्वारा अथवा नकद भेजकर पुण्य के भागी बने। जिन सज्जनों का पूर्व मे दान का वचन है वे भी अपना वचन शीघ्र पूरा करने की कृपा करें।

निवेदक

प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास	बलराज	प्रो०शेरसिंह	स्वामी इन्द्रवेश	स्वामी ओमानन्द
सभामंत्री	सभा कोषाध्यक्ष	पूर्व रक्षाराज्यमंत्री	कार्यकर्ता प्रधान	सभाप्रधान

इनाम जीतिए

प्रतियोगिता मे केवल दसवीं कक्षा तक के छात्र ही भाग ले सकते हैं—

कृपया निम्न प्रश्नों के उत्तर नीचे लिखे पते पर २८ फरवरी तक साफ-साफ लिखकर भजे। अपना नाम, कक्षा, पिताजी का नाम और पूरा पता पिनकोड अवश्य लिखे। प्रथम, द्वितीय, तृतीय पुरस्कार राशि १००/-, ५०/-, २५/- रुपये धनादेश द्वारा भेजी जाएगी।

(१) स्वामी दयानन्द जी का जन्म कहा और कब हुआ ? इनके बचपन का नाम, माता-पिता जी का नाम भी लिखो।

(२) स्वामी जी ने घर परिवार क्यों और कब छोडा ?

(३) स्वामी जी ने सन्यास की दीक्षा कब और किससे ग्रहण की ?

(४) स्वामी जी ने वेदो का ज्ञान कब, कहा और कौन किस गुरुजी से प्राप्त किया ?

(५) सर्वप्रथम आर्यसमाज की स्थापना कब, कहा की गई ?

(६) स्वामी दयानन्द जी ने कब, कहां और कैसे प्राण त्यागे ?

—**देवराज आर्यमित्र**, आर्यसमाज कृष्णनगर, दिल्ली-५१

मुफ्त प्राप्त करें—सन्ध्या हवन की पुस्तक प्राप्त करने के लिये निम्न पते पर दो रुपये का डाक टिकट के साथ अपना नाम पूरा पता लिखकर भेजे। —**देवराज आर्यमित्र**

वेदप्रचार सम्पन्न

आर्यसमाज गागटहेडी जिला करनाल मे दिनाक ६ व ७ फरवरी २००१ को सभा के भजनोपदेशक महाशय जयपालसिह, सत्यपाल आर्य व स्वामी देवानन्द आर्य के मधुर भजन हुए तथा वेदप्रचार किया गया। सभा को १६४१/- रु० दान दिया गया। म० जयपालसिह आर्य ने आर्यसमाज का रिकार्ड रजिस्टर लिखा व निम्नप्रकार आर्यसमाज का चुनाव कराया गया। श्री ओम्प्रकाश आर्य प्रधान, श्री रामकिशन आर्य उपप्रधान, श्री जीतसिह आर्य मत्री, श्री सुभाष आर्य उपमत्री, श्री राजेशकुमार आर्य कोषाध्यक्ष।

साधारण अधिवेशन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक साधारण अधिवेशन १८ मार्च २००१ को गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद मे होना निश्चित हुआ है। अत सभी आर्यसमाजो के अधिकारियों से निवेदन है कि वे अपने आर्यसमाज का वर्ष १९९९-२००० तथा २०००-२००१ का वेदप्रचार, दशाश तथा सर्वहितकारी शुल्क शीघ्र भेजने का कष्ट करे ताकि सभी प्रतिनिधियो को समय पर एजेण्डा भेजा जासके।

—**प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास**, सभामत्री

*** ओ३म् ***

॥ यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म॥

महर्षि दयानन्द जयन्ती-समारोह

महर्षि दयानन्द सरस्वती

आपको यह जानकर बड़ी प्रसन्नता होगी कि दिनांक 17 फरवरी 2001 को महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक की पवित्र यज्ञशाला में 177वां महर्षि दयानन्द जयन्ती-समारोह बड़े उल्लासपूर्वक मनाया जा रहा है।

अध्यक्ष —**मे० ज० भीमसिंह सुहाग,**
कुलपति म.द.वि. रोहतक

मुख्य अतिथि —**डॉ० धर्मपाल,**
कुलपति गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरद्वार

मुख्यवक्ता —**डॉ० सुदर्शनदेव आचार्य**
निदेशक—संस्कृत सेवा संस्थान रोहतक

कार्यक्रम — **यज्ञ 9-45 बजे प्रातः**
भाषण एवं भजन 11-00—12-00

आप सभी इस समारोह में सादर निमन्त्रित हैं।

संयोजक

एस०पी०एस० दहिया
कुलसचिव,
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक।

श्रीमती जानकीदेवी श्रद्धांजलि दिवस सम्पन्न

आर्यसमाज के आर्य केन्द्रीय सभा यमुनानगर के प्रचार-सचिव श्री इन्द्रजित्देव एव आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता भ्राता भूषणकुमार आर्य यमुनानगर की पूज्या माता श्रीमती जानकीदेवी का ९० वर्ष की आयु मे देहान्त होगया। श्री आचार्य राजकिशोर जी वैदिक साधन आश्रम यमुनानगर ने पूर्ण वैदिकरीति अनुसार अन्त्येष्टि सस्कार कराया। २६ जनवरी २००१ को एक विशेष शोकसभा का आयोजन किया गया जिसमे नगर की प्रमुख धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक एव शैक्षणिक सस्थाओं एव गणमान्य नागरिको ने भाग लिया। वेदप्रचार मण्डल जिला यमुनानगर के महासचिव श्री सत्यकाम आर्य ने पूज्या माताजी को श्रद्धाजलि देते हुए उनके धार्मिक एव सात्त्विक जीवन की चर्चा की। श्री डॉ० राजिन्द्र वेदालकार कुरुक्षेत्र महामन्त्री आर्यवीर दल जो आर्यसमाज के वैदिक विद्वान् हैं, ने जीवन-मृत्यु की वैदिक विवेचना की। आचार्य राजकिशोर जी श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर ने मृत्यु के वास्तविक स्वरूप का दिग्दर्शन कराया। श्री ओ३मृप्रकाश जी वर्मा, डा० कमला वर्मा पूर्वमन्त्री, श्री जयप्रकाश शर्मा विधायक यमुनानगर, श्री जयपाल आर्य प्रधान शादीपुर गुरुकुल आदि अनेक गणमान्य व्यक्ति शोकसभा मे पधारे।

—**सत्यकाम आर्य**, महासचिव आर्य वेदप्रचार मण्डल, जिला यमुनानगर

योगस्थली आश्रम में बृहद् यज्ञ एवं वैदिक सत्संग

प्रत्येक माह की भांति अन्तिम रविवार को इस बार भी दिनाक २८ जनवरी २००१ को योगस्थली आश्रम महेन्द्रगढ मे वैदिक सत्सग बडी धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। यज्ञ पूज्य स्वामी व्रतानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में हुआ। यज्ञ का कार्य आचार्य सुरेन्द्रकुमार जी लूखी, प० इन्द्रमुनि जी प्रचारमत्री यतिमण्डल दक्षिणी हरयाणा, मा० उमरावसिह जी आर्य पालडी ने कराया। यज्ञ के पश्चात् ब्रह्मचारी प्रदीपकुमार विमला बहिन जी, श्रीमती मनफूल देवी सरपच लोहाना, आचार्य सुरेन्द्रकुमार जी, म० उमरावसिह, चौ० वेदप्रकाश दादरी, प्रो० जितेन्द्रकुमार जी ने महर्षि दयानन्द के उपकारो को याद दिलाते हुए सुन्दर भजन और उपदेशों द्वारा जनता को अति प्रभावित किया। अन्त मे श्री इन्द्रसिंह जी बोहरा एस०डी०एम० कोसली ने नवयुवको को सम्बोधित करते हुए बताया आज के युग मे नवयुवको को अपना चरित्र सुधारने पर बल देना चाहिए। चरित्र बल से ही देश का उत्थान होगा अथवा स्वय भी और देश भी सुखी रहेगा। आज देश पर भयानक सकट है। इस सकट से उबरने के लिए हमें देशभक्त बनना होगा। अन्त मे स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती ने आगन्तुको का आभार प्रकट किया और धन्यवाद के साथ दो मिनट का मौन धारण करवाके गुजरात के भूकप की त्रासदी से मृत आत्माओ की शान्ति प्रार्थना कराई। ३० रोगियों का उचित निदान कर नि शुल्क ओषधियो का वितरण किया।

—**जोशी सुदर्शनकुमार एडवोकेट**, महेन्द्रगढ

साहित्य-समीक्षा

पुस्तक का नाम – **सत्यार्थप्रकाश कवितामृत**
लेखक – आर्य महाकवि प० जयगोपाल
सम्पादक – प० रामगोपाल शास्त्री, वैद्यभूषण, करोलबाग, दिल्ली
प्रकाशक – श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखामहल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राजस्थान)

इस ग्रन्थ मे महर्षि दयानन्दकृत समस्त सत्यार्थप्रकाश का पद्यमय भाषा में सुन्दर अनुवाद किया है। इसके माध्यम से रामचरितमानस आदि के समान सत्यार्थप्रकाश का भी वेदप्रचार सप्ताह आदि कार्यक्रमो मे उत्तम गायन किया जासकता है। आर्यजगत् के सगीताचार्य इस ग्रन्थ को सगीत का स्वर प्रदान करें। यह रचना अत्युत्तम तथा प्रत्येक आर्य नर-नारी के स्वाध्याय करने योग्य है।

—**सुदर्शनदेव आचार्य**, सह-सम्पादक

आर्यसमाज थर्मल कालोनी पानीपत का चुनाव

प्रधान-श्री वाई०डी० आर्य, कार्यकारी प्रधान-श्री जगदीशचन्द्र आर्य, उपप्रधान-श्री रणवीरसिंह कुन्डू, उपमत्री-श्री विश्वामित्र भीमवाल, कोषाध्यक्ष-श्री आनन्दसिंह आर्य, प्रचारमत्री-श्री रणजीतसिंह अंटाल, पुस्तकालयाध्यक्ष-श्री यशवन्तसिह आर्य, लेखानिरीक्षक-श्री रमेश जी गुप्ता।

आर्यसमाज पिंजौर (पंचकूला) का चुनाव

प्रधान-श्री धर्मपालसिह आर्य, उपप्रधान-श्री वेदपाल मलिक, श्री राजकुमार चौहान, मंत्री-श्री राजेशसिंह आर्य, उपमत्री-श्री कुलदीप, कोषाध्यक्ष-श्री प्रवीन गर्ग, पुस्तकालय व स्टोर कीपर-श्री सुरेशकुमार आर्य, प्रचार सचिव-श्री सुशीलकुमार, सरक्षक-प्रेमनाथ सिंगला, श्री प्रेमचन्द्र शर्मा।

आर्यसमाज बीगोपुर (महेन्द्रगढ़) का चुनाव

प्रधान-श्री कन्हैयालाल आर्य, मंत्री-श्री फूलसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष-श्री उमरावसिंह।

दो स्मरणीय घटनाएँ

१५ जनवरी को प्रतिवर्ष सेना दिवस मनाया जाता है। एक प्रशसनीय परम्परा के अनुसार भारतीय सेना के प्रमुख इस दिन अपना भाषण हिंदी मे देते हैं, परन्तु यह भाषण प्राय अंग्रेजी (रोमनलिपि) में लिखकर पढा जाता है। इस बार के सेना दिवस पर थल सेनाध्यक्ष जनरल सुन्दर राजन पद्मनाभन ने अपना भाषण रोमनलिपि से पढने की बजाय, सीधे हिंदी मे देकर एक ऐतिहासिक कार्य किया है। उनके भाषण की शब्दावली सुन्दर और सहज, बोलने की शैली स्पष्ट और सरल और प्रवाहमान थी। दक्षिण भारतीय स्थल सेनाध्यक्ष जनरल पद्मनाभन ने उत्तर भारत के उन सैनिक-असैनिक अफसरो को सोचने-समझने का अवसर दिया है जो मौके-बे-मौके अंग्रेजी में ही बोलने की हिमाकत करने से नहीं चूकते। इस घटना ने इस मिथक को भी धराशायी किया है कि दक्षिण भारत के उच्च अधिकारी अच्छी हिंदी बोल सकते अथवा दक्षिण भारत के बुद्धिजीवियो मे हिंदी के प्रति वैमनस्य की भावना है।

दूसरी स्मरणीय घटना भारत में अमेरिका के एक पूर्व राजनयिक द्वारा दूरदर्शन को दीगई भेंटवार्ता है। पूर्व राजनयिक ने भेंटवार्ता में जिस आत्मविश्वास के साथ बेझिझक हिंदी मे अपनी बात कही, उससे हिन्दीप्रेमियों के मन में उल्लास होना स्वाभाविक है। यह भेटवार्ता १९ जनवरी के दूरदर्शन समाचारो मे प्रसारित की गई। क्या भारत सरकार के मत्रियो (प्रधानमत्री सहित) तथा उच्च अधिकारियों से अपेक्षा की जाय कि वे सरकारी समारोहो, कूटनीतिक वार्तालापो, औपचारिक कार्यक्रमो तथा वाणिज्य और उद्योग जगत् के सम्मेलनों में अपनी राजभाषा हिंदी का प्रयोग करके सविधान के अनुच्छेद ३५१ मे दिये गए निर्देशो का निष्ठापूर्वक पालन करने की पहल करेंगे ? उनकी इस पहल का नीचे के अधिकारी और कर्मचारी भी अनुसरण करेगे। क्योंकि यथा राजा तथा प्रजा। तभी अनुच्छेद ३५१ के निर्देशो के प्रकाश में राजभाषा के रूप मे हिंदी का विकास तथा प्रचार-प्रसार होसकेगा।

—**श्यामलाल**, महासचिव, राजभाषा सघर्ष समिति, ए-४/१५३ सै०-४, रोहिणी, दिल्ली-८५

आर्यो, स्वामी दयानन्द बन जाओ

आर्यकुमारो, सद्गुण धारो, स्वामी दयानन्द बन जाओ।
महानाश की ज्वालाओ से, विश्व बचाओ, धर्म निभाओ।।

ऋषियो, मुनियों की धरती पर, पापाचार गया बढ भारी।
डाकू, गुण्डे, चोर सुखी हैं, मस्ती मे हैं मासाहारी।
शासकदल बन गया शराबी, बहुत दु खी हैं वेदाचारी।
रक्षक ही भक्षक बन बैठे, आतकित हैं सब ना-नारी।
मानवता का रग बिखेरो, स्वर्ग पुन धरती पर लाओ।
महानाश की ज्वालाओ से, विश्व बचाओ, धर्म निभाओ।।

काट-काट बिरवे गुलाब के, आज नागफन सींचा जाता।
डाल-डाल पर बिठा उल्लुओ को, माली मन मे हर्षाता।
खाओ, पीओ, मौज उडाओ, युवा वर्ग खुश होकर गाता।
अपमानित होरही नारिया, सिसक रही है भारतमाता।
राम, भरत के वीर सपूतो, दु खीजनों के कष्ट मिटाओ।
महानाश की ज्वालाओ से, विश्व बचाओ, धर्म निभाओ।।

गौ, ब्राह्मण की सेवा करना, ऋषियो ने है धर्म बताया।
गोमाता है खान गुणो की, वेद-शास्त्रो मे समझाया।
लेकिन हमने तो ऋषियो की, शिक्षाओ को है बिसराया।
नकल दानवो की कर-करके, अपना जीवन नर्क बनाया।
गोहत्या का कलक मिटाओ, श्रीकृष्ण गोपाल कहाओ।
महानाश की ज्वालाओ से, विश्व बचाओ, धर्म निभाओ।।

ईशद्रोही, धूर्त, नास्तिक, मनमाने है ढोंग रचाते।
चेतन की पूजा छुडवाते, जडपूजा को धर्म बताते।
मुल्ला, पोप, पादरी, पण्डे, भोली जनता को बहकाते।
नन्हे-नन्हे से बच्चो की, हत्याए शैतान कराते।
करो वेदप्रचार जगत् मे, सकल विश्व को आर्य बनाओ।
महानाश की ज्वालाओ से विश्व बचाओ, धर्म निभाओ।।

याद रखो, जो मानवता की, श्रद्धा से करते हैं सेवा।
वही भाग्यशाली पाते हैं, सुनो सुयश की उत्तम मेवा।
डूब रही है नाव धर्म की, पार लगाओ बनकर खेवा।
अगर न जागे, नहीं रहेगा, नाम तुम्हारा जग मे लेवा।
'नन्दलाल निर्भय' जीवन मे, जितना हो, शुभकर्म कमाओ।
महानाश की ज्वालाओ से, विश्व बचाओ, धर्म निभाओ।।

—**पं० नन्दलाल निर्भय**, भजनोपदेशक
ग्राम डाकघर बहीन, जनपद फरीदाबाद (हरयाणा)

दयानन्दमठ रोहतक का सतरहवां वैदिक सत्संग सम्पन्न

दयानन्दमठ रोहतक। आर्यसमाज की प्रमुख कार्यस्थली दयानन्दमठ रोहतक का सतरहवा वैदिक सत्सग ४ फरवरी २००१ रविवार को बडी धूमधाम से सम्पन्न होगया। इस वैदिक सत्सग के सयोजक एव व्यवस्थापक श्री सन्तराम आर्य ने बताया कि यह सत्सग सामाजिक कुप्रथाओ, धार्मिक अधविश्वासो, छुआछूत, अशिक्षा, अन्याय एव शोषण के बारे मे वैदिकधर्म की मान्यताओ का प्रचार-प्रसार हेतु प्रारम्भ किया गया है।

श्री सन्तराम आर्य ने सत्सग के बारे मे विस्तार से चर्चा करते हुए बताया कि सत्सग का कार्यक्रम प्रात ९-०० बजे यज्ञ से प्रारम्भ हुआ जो १०-०० बजे तक चला फिर यज्ञप्रसाद बाटा गया। इससे पहले कि सत्सग की कार्यवाही विधिवत् प्रारम्भ हो, सर्वप्रथम गुजरात मे आए ५२वे गणतन्त्र पर विनाशकारी भूकप मे मारे गये लोगो की आत्मिक शान्ति के लिये सभी उपस्थित जनसमूह ने खडे होकर एक मिनट का मौन रखा। इसके बाद ईश्वरभक्ति गीतो की शृखला प्रारम्भ की। एक छोटी-सी बालिका अमिता खरब (हनुमान कालोनी) ने अपना गीत इस प्रकार प्रारम्भ किया- **'मेरे भगवान्-मुझको देना सहारा'**। इसके बाद महाशय झाबेराम व शेरसिह की जोडी ने भजन सुनाया। इसी शृखला को आगे बढाया रिटायर्ड सूबेदार साधूराम बेरी ने। भाव थे- **'एजी-एजी हमारी कौन पूछता बात'**। वृद्ध अवस्था की तरफ एक सकेत था। भक्तिभाव को अच्छी साजीदगी से आगे बढाया मा० देवीसिह आर्य व सत्यनारायण जे०ई० की टीम ने। महिलाओं मे और विशेषरूप से नौजवान बहनो मे कार्य करनेवाली सार्वदेशिक आर्य वीरागना परिषद् की हरयाणा प्रदेश की सयोजिका बहिन पुष्पा शास्त्री ने भक्तिभाव को प्रखररूप देकर पूरे वातावरण को अपनी मधुर आवाज की ओर आकर्षित किया। उनके गीत के भाव इस प्रकार थे- **'महर्षि दयानन्द-दया के सागर जगत् की व्यथा के, दवा बनके आए'**। ठीक ११-०० बजे आज के मुख्यवक्ता महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक मे सस्कृत विभाग के प्रो० श्री सुरेन्द्रकुमार जी ने अपनी मधुर वाणी से शिवरात्रि पर्व व महर्षि दयानन्द के जीवन पर एक घण्टे तक अपने विचारो से लोगो को मन्त्रमुग्धसा कर दिया। उन्होने पर्व की व्याख्या करते हुए बताया कि पर्व धातु का अर्थ प्रवाह से है अर्थात् पर्व का मतलब है जो जीवन को आनन्द से भरदो। जिस प्रकार गाडी मे खराबी आजाती है, कोई कचरा आजा है, इजन आवाज करता है, तब हम उस गाडी को किसी न किसी सर्विस स्टेशन पर रिपेयर के लिए ले जाते हैं। ठीक वैसी ही स्थिति मानव जीवन की है। मानव जीवन मे भी काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहकार के रूप मे अनेक कचरे पैदा होजाते हैं और जीवन मे उलझन पैदा करते हैं। इसलिए हमारे ऋषियो ने इन पर्वो की व्यवस्था की है जहा से या जिससे मानव उलझनो को सुलझाता है। पर्व की व्याख्या के साथ उन्होने शिवरात्रि पर्व की व्याख्या की।

सत्स[illegible] १२-३० बजे सम्पन्न हुआ। फिर सयोजक श्री सन्तराम आर्य ने घोषणा की कि आज के ऋषिलगर मे भोजन की व्यवस्था श्री बलवीरसिह डागर (कबूलपुरवाले) की तरफ से की गई है। अत सभी ने मिलकर भोजन किया फिर शान्तिपाठ के बाद समारोह सम्पन्न हुआ। साथ ही अगले सत्सग की तिथि ४ मार्च २००१ की घोषणा की तथा सभी का धन्यवाद किया।

—**रविन्द्रकुमार आर्य,** कार्यालयमन्त्री, दयानन्दमठ, रोहतक

श्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अध्यक्षता में

विशाल प्रदर्शन

सतलुज-यमुना नहर जल विवाद

१. दिनांक – १५ फरवरी वीरवर प्रातः ११ बजे
स्थान – उपायुक्त कार्यालय जीन्द

२. दिनांक – १६ फरवरी सोमवार प्रातः ११ बजे
स्थान – उपायुक्त कार्यालय रेवाडी

सभी जिला वेदप्रचार मण्डल, अन्य संस्थाएं एवं जिले के समस्त आर्यसमाज अधिक से अधिक संख्या में पधारकर अपने-अपने जिले के प्रदर्शन को सफल बनायें। उपायुक्तों के माध्यम से राष्ट्रपति, केन्द्र सरकार तथा हरयाणा सरकार को ज्ञापन दिया जायेगा।

निवेदक : सत्यवीर शास्त्री (गढी बोहर) संयोजक
सतलुज-यमुना लिंक नहर संघर्ष समिति

ऋषि जन्मभूमि—भूकम्पग्रस्त

२६ जनवरी को प्रात काल गुजरात मे आये महाविनाशकारी भूकम्प से ऋषि जन्मभूमि परिसर टकारा भी अत्यन्त प्रभावित हुआ है। गोशाला सर्वथा ध्वस्त होगई है किन्तु ईश्वर की कृपा से गाये प्रकृतिप्रदत्त वरदानस्वरूप सुरक्षित बाहर निकल आई हैं। परिसर का पुराना राजमहल और यज्ञशाला सर्वाधिक क्षतिग्रस्त हुआ तथा शेष सभी भवनो मे दरारे पड गई हैं। राजमहल और यज्ञशाला का तो सर्वथा नवनिर्माण ही करना पडेगा। परिसर मे जो नवनिर्माण चल रहा है, वह भी इस आपदा से बच नहीं पाया। ईश्वर की कृपा से वहा के सभी निवासी एव पशुधन सुरक्षित हैं। नए-पुराने सभी भवन क्षतिग्रस्त होगये हैं।

टकारा ग्राम के भूकम्प प्रभावित होने के कारण सभी ग्रामवासी अपने घरो को छोडकर ऋषि जन्मभूमि परिसर मे एकत्रित होगए हैं। टकारा ट्रस्ट की ओर से सभी ग्रामवासियो के भोजन एव आवास की समुचित व्यवस्था की जारही है। निवास के लिए टैंटो की व्यवस्था होरही है। जन्मभूमि परिसर में २१ फरवरी को होनेवाले शिवरात्रि के लिये जो खाद्यसामग्री वहा एकत्रित की गई थी, वह सब भूकम्प पीडित ग्रामवासियो के उपयोग मे आरही है तथा ट्रस्ट के नई दिल्ली उपकार्यालय की ओर से एक लाख रुपये की राशि सहायतार्थ २६ जनवरी को भेज दी गई है। अभी तुरन्त और धनराशि एव खाद्यसामग्री औषधिया तथा अन्यान्य वस्तुए भेजी जारही है। ट्रस्ट का नई दिल्ली कार्यालय इस सहायता कार्य मे युद्धस्तर पर जुट गया है।

—**मन्त्री, श्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टकारा, नई दिल्ली**

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में गणतन्त्र दिवस सम्पन्न

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद (हरयाणा) मे गणतन्त्र दिवस समारोह बडे धूमधाम के साथ मनाया गया। इस अवसर पर गुरुकुल के अधिष्ठाता मास्टर महासिह जी आर्य ने राष्ट्रीय ध्वजारोहण किया तथा गुरुकुल के अधिष्ठाता जी ने सभी कुलवासियो के साथ मिलकर सार्वभौम राष्ट्रीय प्रार्थना **'ओ३म् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो '** एव **'विश्वविजयी तिरगा प्यारा .. .'** के पश्चात् श्री मास्टर महासिह आर्य ने अपने उद्बोधन मे ब्रिटिश साम्राज्य की दासता से देश को मुक्त करानेवाले देशभक्त अमरशहीदो को श्रद्धाजलि देते हुए कहा कि कृतज्ञ राष्ट्र उन सभी ज्ञात-अज्ञात अमरशहीदो एव स्वतन्त्रतासेनानियो को श्रद्धापूर्वक नमन करता है जिन्होने भारतमाता की परतन्त्रता की बेडियो को काटने के लिए अपने आपको आहूत कर दिया। आचार्य हरिशचन्द्र जी ने अपने वक्तव्य के द्वारा राष्ट्र की एकता अखण्डता एव विकास के लिए एकजुट होकर प्रयास करना चाहिए। गुरुकुल के सभी ब्रह्मचारियो एव अन्य गणमान्य व्यक्तियो ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

—**ब्रह्मचारी सुरेन्द्रकुमार शास्त्री,** गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ (फरीदाबाद)

एम०डी० वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के नवनिर्मित भवन का उद्घाटन समारोह सम्पन्न

एम०डी० वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय का उद्घाटन समारोह दिनाक ५ फरवरी, २००१ को विद्यालय परिसर मे हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर हरयाणा सरकार के स्वास्थ्यमत्री डॉ० एम०एल० रगा मुख्य अतिथि थे। उन्होने उपस्थित छात्र-छात्राओ का आह्वान किया कि सामाजिक बुराइयो को समाप्त करने के लिए युगपुरुष स्वामी दयानन्द जी महाराज की नीतियों पर चले। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ० सुदर्शनदेव आचार्य ने की तथा चौ० राममेहर एडवोकेट, सुदर्शन मलिक, सुखदेव शास्त्री, डी०ए०वी० आन्दोलन की नेत्री बहन अनीता कत्याल ने भी अपने विचार रखे। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की भजनमण्डली म० जयपाल आर्य एव सतपाल आर्य के मधुर प्रेरणादायक भजन हुए। मत्री महोदय ने विद्यालय के विकास के लिए २१००० रुपये अनुदान देने की घोषणा की। इस पावन अवसर पर विद्यार्थियों ने आध्यात्मिक व देशभक्ति के मनोहर भजन प्रस्तुत किये। कार्यक्रम के अन्त मे भारत विख्यात स्वामी गोरक्षानन्द जी महाराज ने आशीर्वाद देते हुए विद्यालय की प्रबन्ध समिति के कार्यो की प्रशसा की।

—प्राचार्या,
एम०डी० वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, जीन्द रोड, रोहतक (हरयाणा)

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

वैदिक साधनाश्रम गोरड (फरीदाबाद) (अथर्ववेद पारायणयज्ञ एव उत्सव)	१० से १८ फरवरी २००१
वेदप्रचार मण्डल बदरपुर क्षेत्र, नई दिल्ली	१७-१८ फरवरी, २००१
ग्रीन फिल्ड पब्लिक स्कूल, कारोर (रोहतक)	२५ फरवरी २००१
गुरुकुल झज्जर का वार्षिकोत्सव	२४-२५ फरवरी, २००१
आर्यसमाज गोहाना (सोनीपत)	१ से ४ मार्च, २००१
श्रीमद्दयानन्द विद्यापीठ गदपुरी (फरीदाबाद)	२ से ४ मार्च, २००१
विशाल आर्य महासम्मेलन (सोनीपत)	४ मार्च, २००१
आर्यसमाज आहुलाना (सोनीपत)	१७-१८ मार्च, २००१
गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद	१७-१८ मार्च, २००१
आर्ष गुरुकुल सस्कृत महाविद्यालय डिकाडला (पानीपत)	१७-१८ मार्च, २००१

—**डॉ० सुदर्शनदेव आचार्य,** वेदप्रचाराधिष्ठाता

श्री वीरेन्द्रसिंह देशवाल का निधन

आर्यसमाज लाढौत जिला रोहतक के प्रधान मा० रामप्रकाश जी आर्य के सबसे छोटे सुपुत्र श्री वीरेन्द्रसिंह देशवाल एम ए, बी एड अध्यापक (दिल्ली) का ३५ वर्ष की भरी जवानी मे लम्बी बीमारी के बाद दिनाक २७ जनवरी २००१ मे राजीव गाधी कैंसर हस्पताल नई दिल्ली मे निधन होगया। वे अपने पीछे धर्मपत्नी, एक लडका तथा एक लडकी छोड गये हैं। वे बहुत होनहार, साहसी तथा सन्तोषी युवक थे। लम्बे समय तक भयकर बीमारी मे भी धैर्यपूर्वक रहे। सदा मुख से आह के स्थान पर ओ३म् का ही उच्चारण करते रहे। वे सदा आर्यसमाज के कार्यो मे सहयोग देते रहे।

उनके निधन पर सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती तथा सभामन्त्री प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास ने गहरा दु ख प्रकट करते हुए उनकी आत्मा को सद्गति तथा उनके दु खी परिवार को दु ख सहन करने की शक्ति प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की है। उनकी स्मृति मे शान्ति यज्ञ ४ फरवरी को सम्पन्न हुआ।

—**केदारसिंह आर्य**

परमेश्वर की........... **(प्रथम पृष्ठ का शेष)**

करना ही नामस्मरण कहाता है जैसे ब्रह्म, परमेश्वर, ईश्वर, न्यायकारी, दयालु, सर्वशक्तिमान् आदि नाम परमेश्वर के गुण कर्म स्वभाव से हैं। इनमे–

ब्रह्म=सबसे बडा, सर्वव्यापक। **परमेश्वर**=ईश्वरो का ईश्वर। **ईश्वर**=सामर्थ्ययुक्त। **सर्वशक्तिमान्**=अपने सामर्थ्य ही से सब जगत् की उत्पत्ति स्थिति प्रलय करने मे किसी का सहाय नहीं लेनेवाला। **ब्रह्मा**=जगत् के विविध पदार्थो को बनानेवाला। **विष्णु**=सबमे व्यापक होकर रक्षा करनेवाला। **महादेव**=सब देवो का देव। **रुद्र**=प्रलय करनेवाला। **दयालु**=सब पर कृपादृष्टि रखनेवाला। **न्यायकारी**=कभी अन्याय न करनेवाला। **सत्य**= अविनाशी।

आदि अनेक नाम परमेश्वर के गुण कर्म स्वभाव से हैं। इन नामो के अर्थो को अपने मे धारण करे। अर्थात् बडे कामो से बडा हो, सत्कर्मो से प्रसिद्ध यशस्वी हो, ईश्वर अर्थात् समर्थो मे समर्थ हो, सामर्थ्यो को बढाता जाय, सब प्रकार के साधनो को समर्थ करे शिल्पविद्या से नाना प्रकार के पदार्थो को बनावे, ससार मे अपने आत्मा के तुल्य सबके सुख-दु ख को समझे, सबकी रक्षा करे, विद्वानो से विद्वान् होवे, दुष्टकर्म करनेवालो को प्रयत्न से दण्ड देकर सज्जनो की रक्षा करे, सब पर दया रखे, जैसे पक्षपातरहित होकर परमात्मा सबका यथावत् न्याय करता है, वैसे उनको ग्रहण कर न्याययुक्त व्यवहार सदा करे, अधर्म अन्याय कभी न करे, सदा मन वचन कर्म से एक जैसा रहे। इस प्रकार परमेश्वर के नामों का अर्थ जानकर और नामो के अर्थो का स्मरण करते हुये परमेश्वर के गुण कर्म स्वभाव के अनुकूल अपने गुण कर्म स्वभाव को करते जाना ही परमेश्वर का नाम स्मरण है। यदि मनुष्य उसके एक नाम के भी अर्थ को अपने मे धारण करे तो उस एक नाम के भी जाप या स्मरण से मनुष्य का महाकल्याण होसकता है।

सर्वहित परतन्त्रता ही सर्वसुख स्वतन्त्रता का मूल है

❑ **आचार्य आर्यनरेश 'वैदिक गवेषक'**, उद्गीथ साधना स्थली, ग्राम डोहर, डाक शाया, तहसील राजगढ, जिला सिरमौर, हिमाचलप्रदेश पिन-१७३१०१

ससार मे जैसे-जैसे ज्ञान-विज्ञान तथा प्रचार तन्त्र के द्वारा जनता प्रबुद्ध होरही है कि ठीक वैसे-वैसे ही विश्व का प्रत्येक व्यक्ति अधिकाधिक स्वतन्त्रता और सुख की कामना करने लग गया है। एक छोटे से छोटे बालक और कम से कम पढे-लिखे व्यक्ति मे भी सब बन्धनो से युक्त होकर स्वेच्छापूर्वक जीने की भावना जागृत होगई है। सुख और स्वतन्त्रता की प्रतिस्पर्धा मे यह दिखाई दे रहा है कि सुख और स्वतन्त्रता पहले की अपेक्षा बढे नहीं हैं अपितु कम होगये हैं। अधिक सुख की लालसा में आज प्रत्येक चतुर व्यक्ति स्वच्छन्दता को ही स्वतन्त्रता समझकर व्यक्तिगत स्वार्थहित सब नियमो को तोडकर मनमानी का जीवन जीने पर उतारू होचुका है।

क्योकि ससार की इस भीड में प्रत्येक व्यक्ति अपने आपको दूसरे से अधिक चतुर समझता है अत वह अपनी तथाकथित स्वतन्त्रता को सुरक्षित रखने के लिए किसी भी दूसरे व्यक्ति की कोई चिन्ता नहीं करता। जिसका परिणाम आज का अनुशासनहीन समाज है। समाज मे जीते हुए यदि हम अन्य सब लोगो की उपेक्षा करके सुख और स्वतन्त्रता चाहेगे तो क्या यह सम्भव होसकेगा ? कदापि नहीं। कारण, जैसे कि हम अपनी स्वतन्त्रता और सुख के लिए चिन्तित हैं ठीक वैसे ही समाज मे रहनेवाले अन्य लोगों की भी यही स्वाभाविक इच्छा है। परन्तु यदि प्रत्येक व्यक्ति अन्य लोगों की उपेक्षा करके सुख चाहेगा तो उसको सुख के स्थान पर ढेर सारा दु ख और स्वतन्त्रता के स्थान पर ढेर सारी चिन्ताए ही उपलब्ध होगी। **उदाहरणार्थ**– किसी राजमार्ग पर यात्रा करते हुए अथवा किसी नगर की भीडभरी सडक पर चलते हुए यदि हम चाहे कि बस केवल हमारी ही गाडी आगे निकले और इसमें कोई व्यक्ति, कोई गाडी अथवा कोई नियम आडे नहीं आवे। हम जैसे भी चाहें सडक के जिस ओर भी चाहे, गाडी को दौडाकर आगे ले जाए तो क्या यातायात के नियमो को तोडकर कोई व्यक्ति अपने घर पर सुरक्षित पहुच सकेगा ? क्या बाए अथवा दाए किसी भी ओर स्वच्छन्दता से अपनी गाडी बढा देने पर सडक का यातायात चल सकेगा ? कदापि नहीं। क्योकि हमारे पीछे से एव सामने से आनेवाले लोग भी बिना किसी नियम के तथाकथित स्वतन्त्रता को पूर्ण करने के लिए एव शीघ्रता से पहुचने के सुख को प्राप्त करने हेतु ऐसा ही करना चाहेगे। जिसका परिणाम गाडी की तीव्रगति के स्थान पर यातायात का अवरुद्ध होना और शीघ्र घर पहुचने के सुख के स्थान पर दुर्घटनाग्रस्त होकर किसी हस्पताल मे भयकर दु ख को झेलना होगा।

इस उपरोक्त उदाहरण से स्पष्ट होजाता है कि यदि समाज में रहते हुए हमे अधिक सुख-स्वतत्रता चाहिए तो हम सबको एक सर्वहितकारी नियम में बधने की परतत्रता को स्वीकार करना होगा। यह बात आज से लगभग डेढ शताब्दी पूर्व विश्वमित्र आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कही थी। यदि हम तथाकथित स्वतन्त्रता के पश्चात् देवदयानन्द द्वारा प्रतिपादित विश्वशान्ति के दस नियमो मे से अन्तिम नियम को अगीकार कर लेते तो निश्चितरूपेण आज के भारत का वातावरण इतना भयावह कभी न होता। ऋषिवर लिखते हैं–"प्रत्येक व्यक्ति को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने मे परतत्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम मे सब स्वतन्त्र रहे।"

(आर्यसमाज का १०वा नियम)।

आज अत्यन्त दु ख एव आश्चर्य का विषय है कि ज्ञान-विज्ञान की अत्यधिक उन्नति होने पर भी, देश के चप्पे-चप्पे मे विद्यालयों एव महाविद्यालयो का जाल बिछा होने पर भी और पहले की अपेक्षा कहीं अधिक शिक्षित लोगो की सख्या होने पर भी समाज मे अ गुशासनहीनता, शत्रुता, द्वेष, अपराधो की सख्या एव मानसिक तनाव निरन्तर बढ रहे हैं। जिसका मौलिक कारण है–सर्वहितकारी नियम पालन का अभाव। जिसे आज का तथाकथित बुद्धिजीवी व्यक्ति इसलिए स्वीकार नहीं करता क्योंकि ऐसा करके वह अपनी स्वतन्त्रता को भग होगई, समझता है। ऐसे समय मे वह दूसरे की स्वतन्त्रता की भावना को भूल जाता है। इसीलिए महर्षि दयानन्द ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को सर्वहितकारी नियम पालने मे परतन्त्र रहना चाहिए। देवदयानन्द द्वारा प्रस्तुत यह सर्वहित परतन्त्रता ही वास्तविक सुख और स्वतन्त्रता का मूल है। हम एक और उदाहरण के द्वारा विषय को और अधिक स्पष्ट करने का प्रयास करते हैं–एक व्यक्ति जीवन की सुख-सुविधाओं को एकत्रित करने के लिए किसी संस्था में कार्यरत था। उस सस्था के आने-जाने, काम करने, उठने-बैठने तथा खाने-पीने के नियम निश्चित थे। दो-चार दिन के पश्चात् उस कार्यकर्ता ने कहा–'मैं गुलाम बनकर कार्य नहीं कर सकता। इन नियमों को पालना और परतन्त्र होना मैं उचित नहीं समझता। मैं एक स्वतन्त्र प्राणी हू। मैं अकुश में रहना पसन्द नहीं करता। मैं तो अब अपनी ही सस्था चलाऊगा। सस्था प्रारम्भ हुई। अधिक लाभ के लिए वस्तुओ तथा समय का सत्प्रयोग आवश्यक था। अत उसने भी कार्यकर्ताओं के लिए आने-जाने, खाने-पीने, मशीनों पर कार्य करने व उनका प्रयोग करने के नियम प्रसारित कर दिए। उसकी सस्था में उसका एक साथी (जो पूर्व सस्था में कार्य कर चुका था) भी कार्यरत था, उसने इस सस्था में इन सब नियमों को देखकर अपने उस मित्र एव मालिक को कहा–"देखो भाई साहब ! अब आप उन्हीं सब नियमों का अंकुश हम पर लगा रहे हैं जिनको आप गुलामी और परतन्त्रता की सज्ञा देकर छोड आए थे। इस बात को सुनकर उसका मित्र देखता रह गया और कुछ न कहता हुआ चुपचाप गर्दन झुकाकर खडा होगया।

पाठकवृन्द ! मानव समाज में जीते हुए यदि हमे पूर्ण सुख और तनावरहित शान्ति चाहिए तो महर्षि देवदयानन्द का सर्वहितकारी परतन्त्रता का यह नियम आज समाज के प्रत्येक स्तर और वर्ग के लिए अत्यन्त अनिवार्य है। कुछ वर्ष पूर्व स्वच्छन्दता को ही स्वतन्त्रता मानकर जीनेवाले रजनीश की पूना में एक लहर चली थी। रजनीश कहता था सब बन्धनों को तोडकर मुक्त होजाओ और ऐसा ही उसने किया भी। अर्थात् सब सामाजिक नियमो को ताक पर रखकर नग्नता का प्रदर्शन और अश्लीलता का वातावरण योग समझा जाने लगा। उन्हीं दिनों देश के एक प्रबुद्ध आर्ययुवक ने उसके आश्रम में पहुचकर उससे वार्तालाप करने के लिए समय ले लिया। समय नपा-तुला था और उतने ही समय में उस युवक को अपनी बात पूर्ण करनी थी। विषय था–कि "यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने मन की तथाकथित इच्छा पूर्ण करने के लिए स्वच्छन्द होजाए जिसे आप स्वतन्त्रता कहते हैं तो क्या समाज मे सुख बढेगा या दु ख ? क्योकि जब हर व्यक्ति समाज में अपनी मनमानी चलायेगा तो उसके स्वच्छन्द व्यवहार से प्रत्येक दूसरे व्यक्ति को हानि, तनाव और कष्ट निश्चितरूपेण होगे और यह व्यवहार जिसे भूल से प्राय स्वतन्त्रता कहा जाता है, स्वच्छन्दता ही है, क्योंकि स्वतत्र में भी एक तन्त्र है, अर्थात् एक आत्मिक सूत्र है जो सब आत्माओ के हित मे है। परन्तु स्वच्छन्दता तो पूरी मनमानी है।" प्रश्न का उत्तर रजनीश के पास नहीं था। वह हडबडाया और बोला–"मेरी बात तुम्हारी बुद्धि से परे है। मेरा समय नष्ट मत करो और यहा से चले जाओ और वैसे भी तुम्हें बातचीत के लिए दिया गया समय समाप्त होचुका है। जैसे ही उस युवक ने समय समाप्ति का नियम सुना तो उसने आक्रोश में आकर कहा–"मैं अब तुम्हारी ही तरह स्वतन्त्र हू और मेरी इस स्वतन्त्रता को तुम भग नहीं कर सकते अर्थात् मैं भी सब नियमो से ऊपर हू और मैं जितनी देर चाहू तुम्हे मेरी बात सुननी होगी और यदि तुम आनाकानी करोगे तो फिर मेरी मनमानी मार-पिटाई तक भी होसकती है।" रजनी हक्का-बक्का रह गया और उसने हाथ जोडकर बडी कठिनाई से उस युवक से छुटकारा पाया। (विशेष जानकारी के लिए लेखक की अन्य पुस्तके पढें)।

परिवारो मे हम देखते हैं कि बच्चे यह नहीं चाहते कि माता-पिता उन पर नियमों का अंकुश लगाए। विद्यालय मे विद्यार्थी, कार्यालयो में कार्यकर्ता, राष्ट्र मे राष्ट्र के अधिकारी भी यही चाहते हैं कि उन पर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध न लगे। वे सब स्वच्छन्द रहे। परन्तु सज्जनवृन्द ! क्या ऐसा होने से कोई भी सुखी होसकेगा ? कदापि नहीं। आज इस तथाकथित स्वतन्त्र भारत के उच्छृखल समाज मे जो कुछ भी सुख अथवा स्वतन्त्रता दिखाई देख रहे हैं, उसका कारण वे कुछ मानवतावादी धार्मिक लोग हैं जो कि सर्वहितकारी अनुशासन की परतन्त्रता मे बधकर ठीक समय पर निर्धारित स्थान पर उचित साधनो के द्वारा कर्तव्य का पालन कर रहे हैं। यदि बच्चो की भाति माता-पिता भी पालन-पोषण के दायित्व की परतन्त्रता मे न बधे और उन्हे समय पर सब सुविधाए न दे तो फिर बच्चो के सुख का क्या बनेगा ? यदि बस, रेल, राशन, बिजली, पानी, हस्पताल आदि के सभी अधिकारी भी अन्य कुछ कर्तव्यहीन लोगो की ही भाति पूर्णरूपेण स्वच्छन्द होजाए तो फिर जनता के सुख और स्वतन्त्रता का क्या बनेगा ? यदि सीमा के प्रहरी वीर सैनिक एव उनके सभी अधिकारी भी यही सोचले कि हम भी क्यो परतन्त्र बनकर यहीं खडे और अडे रहे ? हमारी इच्छा होगी तो सीमा को देख लेगे अन्यथा नहीं। तो फिर देश मे एक कारगिल नहीं सभी सीमाए कारगिल बन जायेगी और देश का कोई भी तथाकथित स्वतन्त्रता चाहनेवाला स्वच्छन्द व्यक्ति सदा के लिए गुलामी की जजीरो में जकड लिया जाएगा।

अत पाठकवृन्द ! महर्षि देवदयानन्द के शब्दो मे यदि हमे सर्वसुख स्वतन्त्रता चाहिये तो उसकी प्राप्ति के लिए सर्वहितकारी सामाजिक नियमों मे परतन्त्र रहना ही होगा। यही पूर्ण सुख का मूल मन्त्र है। इसलिए प्रत्येक देश के नागरिक को चाहिए कि वह अनुशासनयुक्त जीवन को कभी दु खदायी न समझे। अनुशासन से मारा अभिप्राय एक ऐसे वातावरण से है जहा प्रत्येक व्यक्ति अपने ठीक समय और उचित स्थान पर क्रियाशील साधनो से सुसज्जित होकर प्रसन्नता और पुरुषार्थपूर्वक कर्तव्य का पालन करने के लिए अडिग एव तत्पर रहता है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिग प्रेस, रोहतक (फोन : ४६८७४, ५७७७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ४०७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०१

पजीकरणसंख्या टैक/एच आर/49/रोहतक/99 ☎ ०१२६२-४०७२२

रोहतक

प्रधानसम्पादक : प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक :- डा० सुदर्शनदेव आचार्य

वर्ष २८ अंक १३ २१ फरवरी, २००१ वार्षिक शुल्क ६०) आजीवन शुल्क ६००) विदेश मे १० पौंड एक प्रति १-२५

दयानन्द बोधरात्रि अंक

सच्चे शिव का अभिलाषी

गुजरात काठियावाड प्रान्त मे पुण्य भूमि टकारा की।
पावन करती उसी भूमि को नदिया अमृतधारा की।।
उसी ग्राम मे ब्राह्मण रहते कर्षण जी तिवारी थे।
करते थे दीवानी राज्य की भरे-पूरे परिवारी थे।।
उन्हीं के घर मे जन्म लिया था भोले बाबा शकर ने।
सभी तरह की मौज करी थी काटा लगे न ककर ने।।
खाने-पीने का ढग किया रोटी घी और शक्कर से।
फिर भी कमी नहीं ठगते थे दुनिया को वह मक्कर से।।
फाल्गुन की शिवरात अधेरी नयी रोशनी लायी थी।
महादेव के पिड पर चढकर चूहो ने मौज उडायी थी।।
पिता से पूछा महादेव क्या ये ही जग के स्वामी हैं?
चूहे को भी हटा न सकते, इनमे बहुत सी खामी हैं।।
सतुष्टि कर सके पिता ना, नास्तिक कहकर फटकारा।
निराश होकर घर को लौटा, बालक शकर बेचारा।।
प्रिय भगिनी, चाचा प्यारे कराल काल ने छीन लिये।
मुझको भी क्या जाना होगा, प्रश्न अनेको चीन्हलिये।।
समाधान पाने को इनका, उसने घर को छोड दिया।
माता-पिता और बन्धुजनो से उसने नाता तोड लिया।।
नगर, गाव और पर्वत जगल घूमा शिव का अभिलाषी।
सन्यास लिया गुरु पूरणानन्द से बन गया दयानन्द सन्यासी।।
चौदह बरस तपस्या करके नाना विद्या पढ डाली।
प्राप्त हुए ना फिर भी शिवजी, दोनो हाथ रहे खाली।।
कृपा हुई जगदीश की उस पर विरजानन्द का नाम सुना।
पहुच गये मथुरा नगरी मे, विरजानन्द को गुरु चुना।।
अन्तर पट खुल गये, गुरु से पाकर सत्य सनातन ज्ञान।
सिद्ध होगये अग योग के, प्राणायाम, धारणा, ध्यान।।
समाधिलीन हुआ वह योगी, तप पूत स्वर्णिम काया।
गुरुदक्षिणा की खातिर कुछ लौंग मागकर लेआया।।
गुरुचरणो ने शीश झुकाकर दयानन्द जी यो बोले।
तुच्छ भेट स्वीकार कीजिए, लाया लौंग हू कुछ तोले।।
नही दक्षिणा चाहिये ऐसी, जैसी तू है लाया।
अज्ञान-अविद्या का है जग मे घोर अधेरा छाया।।
पाखण्डो को दूर करो और सत्यार्थ प्रकाश करो।
निराकार, सर्वज्ञ प्रभु का उर-उर मे विश्वास भरो।।
पूर्ण करूगा गुरु आज्ञा को, करके न्यौछावर तन-मन।
पीने पडे जहर के प्याले, या हो प्राणो का निष्कासन।।
आशीर्वाद गुरु का लेकर गया आगरा ब्रह्मचारी।
सत्यासत्य का किया विवेचन चकित हुए सब नर-नारी।।
हरद्वार मे गगा तट पर लगा कुम्भ का मेला था।
एक तरफ दुनिया सारी थी, एक तरफ ऋषि अकेला था।।
पाखण्ड-खण्डनी ओम्-पताका तटपर लहरायी।
सभी मतो की पोलकर कण्ठी माला फिकवायी।।
इसी तरह काशी के पडित न ठहर सके उसके आगे।
दबा बगल मे पोथी पतरे, इधर-उधर सारे भागे।।
दयानन्द की धूम मची थी लाहौर व लुधियाने मे।
कलकत्ता, भोपाल, बनारस, बम्बई, पूना, थाने मे।।
जगह-जगह पर घूम-घूमकर वेदो का प्रचार किया।
दबी हुई नारी जाति का उसने फिर उद्धार किया।।
सह न सके प्रताप ऋषि का, लोभी, दम्भी पाखण्डी।
खत्म करने की योगी को, पकडी राह अति भौंडी।।
ईटे फैंकी पत्थर मारे, सभी तरह अपमान किया।
कभी पान मे, कभी दूध मे जहर मिलाकर उसे दिया।।
आखिर पापी जगन्नाथ ने काच पीसकर पिला दिया।
भारत मा के अमर पुत्र की मजबूत जडो को हिला दिया।।
रहा जूझता चालीस दिन क नरपुंगव यमदूतो से।
जाते-जाते यही कह गया भारत मा के पूतो से।।
मेरे पीछे सब आजाओ, द्वार खोलदो बन्द सारे।
भारत मा के तभी कटेगे, दुख दर्द के फन्द सारे।।
तेरी इच्छा पूरण होवे, लीला खूब करी प्यारे।
दया करो आनन्द की वर्षा 'हरि' पै हो जीवन सारे।।

इक बात सुनी है हमने जोकि सुनने लायक है

इक बात सुनी है हमने जोकि सुनने लायक है।
सुननेवाले को भी वैसी ही आनन्ददायक है।।

बात बात मे बात है बनती बात पुरानी है।
बात बात मे बात बिगडती, सुनी कहानी है।
उलझी बात को सुलझाने मे बात सहायक है।। इक

सोच-समझकर कहनी चाहिए बात जो होकि सच्ची।
विश्वास कीजिये दुनिया है यह कानो की बडी कच्ची।
कहनी चाहिए बात वही, जो कहने लायक है।। इक

इधर-उधर की बाते करके ठगते हैं मक्कार यहा।
इधर-उधर की बाते सुनकर होती है तकरार यहा।
इधर-उधर की बातें सुनना काम ना लायक है।। इक

कहनी चाहिए बात वहीं पर, जहा सुफलता पाये।
जैसे रग श्वेत कपडे पर, खूब चमकता आये।
स्थायी असर पडे जिस पर वह सच्चा ग्राहक है।। इक

एक बार ही वचन को बोले राम सरीखा पावन।
उसके आगे टिक न पाये झूठ पुलींदा रावण।
हनुमान जय बोलके कह दे सच्चा नायक है। इक

गाने को तो गाते बहुत से लोग भजन व गीत।
जिस गायन से मिले 'हरि' को सबका प्यारा मीत।
शादा हृदय से कहदे वह ही सच्चा गायक है।। इक

हरिदत्त वि०प्र०

शिवरात्रि

शिवरात्रि का आगमन सन्देश देता है यही।
रात भर जो जागत है बोध लेता है वही।।
यो तो कितने वर्ष बीते जागते-सोते रहे।
लाभ कुछ भी न मिला और भागते-रोते रहे।।
असलियत फिर भी किसी ने जानकर क्यो न कही।
मूलशकर भी जगा था शिव को पाने के लिए।
शिवलिग पर चूहे चढे थे माल खाने के लिए।।
देखकर अटखेलिया यह बात शकर ने कही।
विश्व को रचता, टिकाता और करता नाश जो।
हो नहीं सकता यह शकर कण-कण में करता वास जो।।
क्षुद्र जीवो को हटाने की भी है शक्ति नही।
खोज करके ही रहूगा विश्व के करतार की।
सर्वव्यापी शक्तिशाली, जग के पालनहार की।
महिमा बतायी वेद ने जिसकी है अति ही मही।
शिव को पाने के लिए शकर चला घर छोडकर।
उसको पकडने के लिए पहुचे पिता जी दौडकर।
पकडे जाने पर भी उसने पकडा फिर रस्ता वही।
गगा-यमुना के तटो पर और नर्मदा के तीर पर।
ऊचे हिमालय पर भी पहुचा अलखनदा चीर कर।
छान डाली मूलशकर ने थी भारत की मही।
मथुरा नगरी था बताया धाम विरजानन्द का।
योगी दयानन्द था बना प्रिय शिष्य विरजानन्द का।
उसको गुरुवर ने बताया रूप शिव का फिर मही।
मूलशकर ने बतायी वास्तविकता शान से।
मरते दम भी कह गया वह बात यह भगवान् से।
तेरी इच्छा पूर्ण होवे 'हरि' की इच्छा हो यही।

हरिदत्त वि०प्र०, आर्यसमाज प्रशात विहार
ए-ब्लाक, दिल्ली-११००८५

लोक-परलोक विचार

नवम-विचार—(नहीं, कुछ लेकर ही जायेंगे)

❑ शिवप्रसाद उपाध्याय, आर्यसमाज होशियारपुर (पंजाब)

(गताक से आगे)

सज्जनो ! हमारा जीवन त्रिगुणात्मक है। त्रिगुणो मे से जिस समय जिसकी प्रबलता होगी, हमारे आचार-विचार भी उसी प्रकार के होगे। सत्वगुण के उदय होने पर शुभ विचार होगे, तमोगुण की प्रबलता मे तामसी विचार उभरेंगे तथा रजोगुण का राज्य होने पर हमारे विचार भी मिले जुले होगे। ये त्रिगुण अत्यन्त चञ्चल हैं। हमारा जीवन भी अनित्य है और हमारा मन भी अत्यन्त चञ्चल है। इसलिए जब-जब हमारे मन मे शुभ विचार आये तब-तब शुभ कर्म करने मे देरी नहीं करनी चाहिए। किसी कवि ने कितना मार्मिक रूप से कहा–

चला विभूति. क्षणभगी यौवनम्, कृतान्तदन्तान्तरवर्ति जीवितम्।
तथाऽप्यवज्ञा परलोकसाधने, नृणामहो ! विस्मयकारी चेष्टितम्।।

यह सम्पूर्ण धन-वैभव और हमारे विचार भी अत्यन्त चञ्चल हैं। हमारा जीवन तो क्षणभगी है ही। हमारे जीवन का निवास भी यमराज के दाँतो मे है। ऐसा होने पर भी हम परलोक साधन के लिये उदासीन ही रहते हैं। ससार के मनुष्यो का बरताव कितना विस्मयकारी है ?

हमारे मन मे कई बार ऐसे भी विचार आते हैं-'मेरे सामनेवाला कोई धर्म-कर्म नहीं कर रहा, मैं क्यो करूँ ? या ऐसे भी चिार आते हैं कि-'हमारे मे से हमारे पिताजी दान-धर्म करते ही रहते हैं, मेरा भाई भी कर रहा है, मैं अमुक समाज से जुडा हू, वहीं से धर्म-कर्म किया जारहा है इत्यादि। पर ये सभी धारणाए वेद की दृष्टि मे गलत हैं। वेद मे कहा–

स्वय वाजिस्तन्व कल्पयस्व स्वय यजस्व स्वय जुषस्व।
महिमा तेऽन्येन न सन्नशे।। यजु० १३-१५

हे बोध चाहनेवाले, उत्थान को प्राप्त करने की इच्छावाले जन। तू अपने आप ही अपने शरीर को समर्थ बना। अपने आप ही अच्छे विद्वानो से सगति कर और अपने आप ही उनकी सेवा भी कर जिससे तेरा प्रताप और तेरी बढाई हो। प्रकृति आदि के साथ नष्ट मत हो। प्रकृति आदि के साथ मिलने से तेरी महिमा नष्ट न हो जाए। इस बात की पुष्टि महाभारत मे भी की गई है–

एक: प्रजायते जन्तुरेक एव प्रलीयते।
एकोऽनुभुक्ते सुकृतमेक एव च दुष्कृतम्।। मनु० ४-२४०

जन्तु अपने पूर्वकृत कर्मो के सहारे एकला ही इस ससार मे आता है और जाता भी अकेला ही है। किये हुए सुकृत और दुष्कृत का फल भी वह एकला ही भोगता है। गीता में भी यही बात बताई है–

उद्धेरदात्मनात्मान नात्मानमवसादयेत्।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मन ।। गीता ६-५

अपना उद्धार अपने आप करे, कभी भी अपनी अवहेलना न करे। अपने आप ही अपना शत्रु भी है, तो अपने आप ही अपना मित्र भी है।

हमे अपनी सुरक्षा आप करनी है। अपने आप ही शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक सब प्रकार की उन्नति भी करनी है। अपना प्रबन्ध आप ही करना होगा। सासारिक इष्ट-मित्र, दवाई-औषधि सब क्षणिक हैं। वैदिक मर्यादा मे तीन अनादि तत्त्व माने हुए हैं। ईश्वर, जीव, प्रकृति इनमे से ईश्वर के विषय मे तो अथर्ववेद मे कहा–

अकामो धीरो अमृत स्वयभू-
रसेन तृप्तो न कुतश्चनोन ।। अथर्ववेद १०-८-४४

वह ईश्वर कामनाओ से रहित है। वह चचल नहीं परन्तु अत्यन्त धीर है। वह अमृत स्वरूप है। वह स्वयभू है। सम्पूर्ण रसो मे भी वह भरपूर और तृप्त है। उसमे कुछ भी न्यूनता नहीं है। इसलिए परमात्मा जीवात्मा के समान कर्मो मे प्रवृत्त नहीं होता। प्रकृति जडस्वरूप होने से कर्म करती ही नहीं। यदि वह कर्म कर भी ले तो भी उसका करना न करना बराबर ही है। क्योंकि वह भोक्ता नहीं है। अपने किये हुए कर्मो के फल का भोग नहीं कर सकती। रहा जीवात्मा।

जीवात्मा मे अनेक प्रकार की इच्छा, प्रवृत्ति आदि गुण होने से वह कुछ भोगो की इच्छा जरूर करता है। भोग बिना कर्म सिद्ध नहीं होते। इसलिए वह कर्म मे प्रवृत्त हो जाता है। कर्म करना जीवात्मा का शाश्वत अधिकार है। हम कर्म किये बिना रह नहीं सकता। छोटे मास-दोमास के बच्चे को देखे, अपने हाथ, पैर, जोर-जोर से चलाता है। प्रत्येक जीवात्मा को देखने, खाने, सुनने आदि की इच्छा होती है। इसलिए जीवात्मा बिना कर्म किये नहीं रह सकता। जीवात्मा का धर्म ही कर्म करना है। ऐसा सोचकर यदि हम जो मन मे आए और उसे करने लग जाए। ऐसा भी नहीं हो सकता, कर्मो के करने के भी शास्त्रों मे नियम बने हुए हैं। मनु जी कहते हैं–

कामात्मता न प्रशस्ता न चैवेहस्त्यकामता।
काम्यो हि वेदाधिगम कर्मयोगश्च वैदिक ।। मनु० २-२

बहुत अधिक चाहना ठीक नहीं और बिना चाहना के रहना कठिन है। क्योकि'वेदो का समझना और वैदिक (विदानुसार) कर्म करना भी तो कामना के पश्चात् होता है।

यह बात तो निश्चित है, कि यदि हम कर्म नहीं करेंगे तो हमे उसका फल कुछ भी नहीं मिलेगा। यदि कुछ कर्म करेगे तो ईश्वर के द्वारा उसके अनुरूप फल मिल ही जाएगा। जैसे कि हमे एक गांव से दूसरे गाव जाना है। रास्ते की विपत्ति भूख, प्यास, सर्दी, गर्मी आदि के डर से यदि नहीं चल पडे तो निश्चित है कि दूसरे गाव कदापि नहीं पहुच पायेंगे। चल पडने की देरी है। यदि चल पडे तो कभी न कभी पैदल ही सही दूसरे गांव पहुच ही जायेंगे। यही बात इन शब्दो मे बताई गई है।

मार्गस्थो नावसीदति

जिसने रास्ता पकड लिया, वह कभी न कभी मजिल तक पहुच ही जाएगा। इस प्रकार हम यदि कर्म से अलीग नहीं हो सकते हैं, तो शुभ कर्म ही क्यो न करे, जिससे कि जन्म-मरणादि के चक्र से भी छूटा जा सके। यजुर्वेद का पूरा का पूरा उद्देश्य ही मनुष्यो को कर्म करने के लिए प्रेरित करना है। उसकी शुरुआत मे ही कह दिया–

श्रेष्ठतमाय कर्मणे। यजु० १-१

हे मनुष्य ! तेरी रचना, तेरा उपयोग श्रेष्ठतम कर्म करने के लिए है और आखिर में जाकर भी यही उपदेश दिया कि–

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत समा ।
एव त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।। यजु० ४०-२

हे मनुष्य ! तू कर्म करता करता हुआ सौ साल तक जीने की इच्छा कर। यदि तू कर्मो को करता रहेगा तो शुभ कर्म तुझे बन्धन मे न डालकर बन्धन से मुक्त करने मे सिद्ध होगे। उसी यजुर्वेद के एक अन्य स्थान पर कहा गया–

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते ससृजेथामय च।
अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।। यजु० १५-१४

हे मनुष्य ! तुझमे कोई कमी नहीं है। तू अग्नि के समान प्रकाशमान है। तू अग्नि के समान उद्बुद्ध हो जा। जाग जा। इष्ट और पूर्त्त कर्मो की रचना कर। इस तेरे देह मे अनेक प्रकार के तेरे सहायक देव बैठे हुए हैं। यहा तक कि जहा-जहा तेरी पहुच है, वहा-वहा भी तेरी सहायता के लिए देव बैठे हैं। तू उनसे सहायता प्राप्त कर। तेरे इस देह रूपी सदन मे मनरूपी यजमान 'जो अत्यन्त कर्मठ है' वह भी तो बैठा है, तू उससे मदद प्राप्त कर।

इस प्रकार वेदमन्त्र मे इष्ट और पूर्त कर्म करने के लिए उपदेश दिया गया है। जिस कार्य के करने से हमे इस लोक मे सुख मिले वह इष्ट है और जिस कार्य के करने से हमे पूर्णानन्द की प्राप्ति हो वह पूर्त्त कर्म है। मन्त्र मे दोनो प्रकार के कार्य का कितना सुन्दर उपदेश है। महर्षि कणाद जी भी तो यही कहते हैं।

यतोऽभ्युदयनि.श्रेयससिद्धि स धर्म । वैशे १ २

जिस कार्य के करने से इहलौकिक तथा पारलौकिक सिद्धि (सुख) प्राप्त हो वही कर्म है, वही धर्म है। महर्षि मनु जी ने तो अपनी गारटी पूरी दी है–

श्रुतिस्मृत्युदितं धर्ममनुतिष्ठन् हि मानव ।
इह कीर्तिमवाप्नोति प्रेत्य चानुत्तम सुखम्।। मनु० २-७

वेदोक्त कर्म और स्मृति ग्रन्थो मे वेदानुकूल कहे हुए कर्मो के करने से मनुष्य इस लोक मे तो कीर्तिमान् होगा ही, मरने के उपरान्त भी उसको अत्युत्तम सुख प्राप्त होगा।

।। इत्योम् शम्।।

भजन

मेरे दाता के दरबार मे, सब लोगो का खाता।
जैसे कोई कर्म करे वो, वैसा ही फल पाता।।

क्या साधु क्या सन्त गृहस्थी, क्या राजा क्या रानी,
उसकी बही मे लिखी हुई है, सबकी कर्म कहानी।
बडे—बडे वो जमा खर्च का, सही हिसाब लगाता।।

नहीं चले उसके घर रिश्वत, नहीं चले चालाकी,
उसके अपने लेन देन की, रीति बडी है बाकी।
पुण्य का बेडा पार करेगा, पापी का नाव डुबाता।।

बड़ा कड़ा कानून प्रभु का, बडी—कड़ी मर्यादा,
किसी को कौडी कम नहीं देता, किसी को कौडी ज्यादा।
इसीलिये तो वही जगत् का, नगर सेठ कहलाता।।

अच्छी करनी करो रे भैया, कर्म न करियो काला,
लाखों आखों से देख रहा है, तुझे देखनेवाला।
भले कर्म ही करते रहियो, समय गुजरता जाता।।

समग्र-क्रान्ति के अग्रदूत—महर्षि दयानन्द सरस्वती

❑ **यशपाल आर्यबंधु**, आर्य निवास, चन्द्रनगर, मुरादाबाद

महर्षि दयानन्द सरस्वती समग्र क्रान्ति के अग्रदूत थे। किन्तु क्रान्ति तथा समग्र-क्रान्ति के स्वरूप को समझे बिना यह समझना कठिन है कि महर्षि कैसी क्रान्ति चाहते थे और वे किसके अग्रदूत बनकर आये थे ? आज क्रान्ति के सम्बन्ध मे जो धारणायें हैं, उनसे बहुत भ्रान्तिया फैली हुई हैं। आज क्रान्ति का अर्थ सत्ता के लिए सघर्ष, राजनीतिक उलटफेर, उखाड-पछाड, तोड-फोड और रक्तपात से ही प्राय लिया जाता है। पर यह सब क्रान्ति के वास्तविक अर्थ नहीं। क्रान्ति का वास्तविक अर्थ तो सक्रमण है, अर्थात् एक स्थिति से दूसरी स्थिति को जाना। दादा धर्माधिकारी के अनुसार–"क्रान्ति मे महत्त्व सामाजिक परिवर्तन का है, न कि सघर्ष एव रक्तपात का।" ४ जून सन् १९२९ को सैशन जज की अदालत मे क्रान्तिवीर अमरशहीद भगतसिह ने क्रान्ति का अभिप्राय बतलाते हुए यही कहा था कि–"क्रान्ति से हमारा मतलब समाज मे परिवर्तन से है।"

(देखे–अमर क्रान्तिकारी, पृष्ठ-१६)

हमारी मान्यता है कि क्रान्ति का अर्थ तीव्र परिवर्तन है, सामान्य परिवर्तन नहीं। राष्ट्रकवि दिनकर का यथार्थ कथन है कि "परिवर्तन जब धीरे-धीरे आता है तो उसे सुधार कहते हैं, किन्तु वही जब तीव्र गति से पहुच जाता है तो उसे सुधार नहीं क्रान्ति कहते हैं।" वस्तुत सुधार तो त्रुटियो का मात्र एक सशोधन है, जबकि क्रान्ति एक शक्तिशाली परिवर्तन। सही अर्थो मे सडी-गली अवैज्ञानिक मान्यताओ एव रूढिवादी निरर्थक परम्पराओ को सर्वदा तिलाजलि देकर उनमे एकदम तीव्रतम आमूलचूल परिवर्तन ला देने का नाम ही क्रान्ति है। महर्षि ऐसी ही क्रान्ति चाहते थे, वे ऐसी ही क्रान्ति के अग्रदूत थे।

वैचारिक क्रान्ति का सूत्रपात–

प्रत्येक क्रान्ति के पीछे कोई न कोई वैचारिक आधार हुआ करता है। अर्थात् *क्रान्ति की शुरुआत विचारो से ही हुआ* करती है। जब विचारो मे क्रान्ति (तीव्र परिवर्तन) आता है तो वाणी उसे उगलने लगती है। भाषण क्रान्ति को हवा देते हैं। विचारो मे परिवर्तन से कार्यो एव कार्य प्रणालियो मे परिवर्तन आया करता है। तात्पर्य यह कि वैचारिक क्रान्ति ही सामाजिक आदि सभी क्रान्तियों का आधार हुआ करती है। महर्षि दयानन्द ने इस तथ्य को भलीभांति हृदयगम किया था तभी उन्होने वैचारिक क्रान्ति का सूत्रपात किया था। उन्होंने मूर्तिपूजा का तीव्र विरोध किया, किन्तु इसके लिये उन्होने मन्दिरो से मूर्तियो को उखाड नहीं फैंका, अपितु मानवो के मन-मन्दिरो से उन्हें उखाड फैंका। उन्होने समाज में विद्रोह की स्थिति नहीं उत्पन्न होने दी, अपितु तीव्र सामाजिक परिवर्तन का आधार दिया। महर्षि की वैचारिक क्रान्ति का प्रभाव सर्वाधिक बौद्धिक वर्ग पर पडा। सच पूछिये तो वैचारिक अथवा बौद्धिक क्रान्ति के फलस्वरूप ही समाज में तीव्र गतिशीलता आसकी, जो तीव्र सामाजिक परिवर्तन का आधार बनाने लगी। महर्षि ने अपने क्रान्तिकारी विचारो को एक पुस्तकाकार दिया और उस पुस्तक का नाम है सत्यार्थप्रकाश। विगत एक शताब्दी मे इस पुस्तक ने कितनी क्रान्ति मचाई यह जगविदित है।

समग्र क्रान्ति के अग्रदूत–

महर्षि दयानन्द समग्र-क्रान्ति के अग्रदूत थे। समग्र-क्रान्ति उसे कहते हैं, जो जीवन मे किसी एक आध पहलू तक ही सीमित न रहे, अपितु मानव-जीवन के प्रत्येक पहलू को झकझोरकर रखदे। तात्पर्य यह कि समग्र क्रान्ति के लिये किसी भी क्रान्तिदूत के लिये यह आवश्यक है उसकी दृष्टि एकागी न हो। वह मानव-जीवन के किसी एक-दो पक्षो तक ही सीमित न रहे। महर्षि दयानन्द सही अर्थो मे समग्र-द्रष्टा थे। मानव जीवन का कोई पहलू उनकी दृष्टि से ओझल नहीं हुआ। यही कारण है कि वे तत्कालीन सुधारको से सर्वथा भिन्न दिखाई देते हैं। दिनकर ठीक ही कहते हैं–"दयानन्द के समकालीन अन्य सुधारक, सुधारकमात्र थे किन्तु दयानन्द क्रान्ति के वेग से आये।" उनके सोचने का ढग तथा उनके कार्य करने की शैली १९वीं तथा २०वीं शताब्दी के सुधारको से सर्वथा भिन्न थी। उन्होने मानव-जीवन को उसके समग्र रूप मे देखा था और कोई भी क्षेत्र अपने क्रान्तिकारी परिवर्तन मे लाये बिना नहीं रुके। धार्मिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, दार्शनिक, पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक आदि कोई भी क्षेत्र तो उनकी पैनी दृष्टि से ओझल नहीं होसका। आज मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उनके क्रान्तिकारी परिवर्तनो को सरलता से ढूढा जासकता है।

अत्यन्त धार्मिक होत हुये भी देश की राजनीतिक दुर्दशा उनकी दृष्टि से कभी ओझल नहीं हुई। देश की आर्थिक दुर्दशा पर एक विरक्त साधु होते हुये भी उन्होने आसू बहाये थे। एक वीतराग सन्यासी होते हुये भी उन्होने गृहस्थाश्रम की गौरवगाथा गाई थी। एक आदित्य ब्रह्मचारी होते हुए भी नारी सम्मान को वे नहीं भूले। परलोक सिद्धि के लिए उन्होने इस लोक की कभी उपेक्षा नहीं की। मानव-उत्थान का पक्षधर होते हुये भी गौ आदि प्राणियो की रक्षा को सदैव तत्पर रहे। सामाजिक कुरीतियो पर जहा उनके तर्क वज्र के समान प्रहार करते थे वहीं आध्यात्मिक एव भक्तिरस का प्रवाह भी उन्होने खूब बहाया। मिथ्या आडम्बरो का जहा उन्होने भरपूर खण्डन किया वहीं वैदिक सस्कारो का प्रचलन करना भी वे नहीं भूले। पुराणो का खण्डन किया तो वेदो का प्रचार किया। यही उनके चरित्र की विशेषता थी, कहा तक वर्णन करे।

स्वय गुजराती भाषा-भाषी तथा सस्कृत का उद्भट विद्वान् होते हुए भी अपने समस्त ग्रन्थो को हिन्दीभाषा मे लिखना एक अभूतपूर्व क्रान्तिकारी पग था। अब तक दार्शनिक मन्तव्यो की अभिव्यक्ति का माध्यम केवल सस्कृत था, जो जनसामान्य की समझ से परे था। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के माध्यम से हिन्दीभाषा मे दार्शनिक मन्तव्यों की अभिव्यक्ति का क्रान्तिकारी पग उठाया। वेदो का हिन्दीभाषा मे अनुवाद करने का साहस अभी तक कोई महामानव नही जुटा पाया था, क्रान्तिदूत दयानन्द ने यह भी करके दिखा दिया। वस्तुत यह एक युगान्तकारी घटना थी। वेदाध्ययन का अधिकार मानवमात्र को देना उस क्रान्तिदूत का ही काम था। तात्पर्य यह कि क्रान्तिदूत दयानन्द मानव जीवन के जिस क्षेत्र से गुजरा एक अभूतपूर्व हलचल, एक अद्भुत क्रान्तिसी मचाता निकल गया और आज–

ऋषिराज तेज तेरा चहु ओर छारहा है।
तेरे बताये पथ पर ससार का आरहा है।

आज की शिवरात्रि–

आज की शिवरात्रि पुकार-पुकार कर कह रही है कि अब फिर किसी को वैसा बोध नहीं होगा जो मूलशकर को हुआ था ? अब कोई और मूलशकर नहीं आयेगा और देवदयानन्द की समग्र-क्रान्ति की मन्द पडती ज्वालाए ललकार-ललकार कर पूछ रही हैं कि कोई दयानन्द का लाल जो समग्र-क्रान्ति की इस मशाल को अपने सबल हाथो मे थाम सके ? आर्यो ! तुम्हे उत्तर देना होगा और अन्त मे हम यही कहेगे कि–

आर्यवीर क्रान्ति की मशाल को सम्भाल ले।
एक दीप बुझ चले तो दूसरे को बाल ले।।

डॉ० सांगवान मुख्यमंत्री श्री ओम्प्रकाश चौटाला को चैक दे रहे है।

आर्यसमाज कोर्ट रोड सिरसा के प्रधान एव आर्य सी०सै० स्कूल सिरसा के प्रबन्धक डॉ० आर०एस० सागवान ने गुजरात भूकम्प पीडित राहत कोष हेतु अपनी ओर से ५१०००/- रु० तथा आर्यसमाज कोर्ट रोड की ओर से ११०००/- रु० के चैक हरयाणा के मुख्यमत्री श्री ओम्प्रकाश चौटाला को उनके सिरसा आगमन पर दिए।

आर्यसमाज कोर्ट रोड तथा आर्य सी०सै० स्कूल के छात्रो व अध्यापको ने मिलकर ११०००/- रु० की राशि नगर के विभिन्न बाजारो मे जाकर एकत्रित की।

–कृष्णलाल बोहरा, आर्यसमाज सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, सिरसा

पूर्णमासेष्टि यज्ञ सम्पन्न

दिनाक ८-२-२००१ पूर्णिमा को मास्टर ओम्प्रकाश सैनी के घर पर पूर्णमासेष्टि यज्ञ का आयोजन स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती प्रधान यतिमण्डल दक्षिणी हरयाणा की अध्यक्षता मे यज्ञ का कार्य प० इन्द्रमुनि आर्य पुरोहित वेदप्रचार मत्री दक्षिणी हरयाणा एव मास्टर वेदप्रकाश आर्य मण्डलपति आर्यवीर दल महेन्द्रगढ ने यज्ञ कार्य सुचारु रूप से करवाया। यजमान का स्थान मास्टर ओम्प्रकाश आर्य एम०ए०बी०एड० सहपत्नी श्रीमती पकज आर्या एम०ए० ने ग्रहण किया। यज्ञ पर २० महिलाओ और १६ पुरुषो को यज्ञोपवीत धारण कराया। यज्ञ के पश्चात् मास्टर वेदप्रकाश आर्य ने महिलाओ को शिक्षाग्रहण कर रूढिवाद और अन्धविश्वास को छोडकर देश और समाज के उत्थान मे सहयोग करना चाहिये। **'माता निर्माता भवति'** की व्याख्या करते हुये महिलाओ को कुसग से दूर रहने के बारे मे एक गीत भी सुनाया।

इसके पश्चात् सभी आगन्तुको का श्री सैनी और हनुमानप्रसाद आर्य ने हार्दिक धन्यवाद किया और प्रसाद वितरण किया व शुद्ध घी से निर्मित भोजन कराया। १०१ रु० सार्वदेशिक आर्यवीर दल, ५० रु० आर्य प्रतिनिधि सभा को दानस्वरूप भेट किया और ६० रु० सर्वहितकारी पत्रिका का सदस्यता शुल्क भी प्रदान किया।

–सतीशकुमार आर्य, महेन्द्रगढ

गुजरात राहत कोष अपील

महर्षि दयानन्द एवं महात्मा गांधी की जन्मभूमि संकट में

२६ जनवरी २००१ को गुजरात मे आए भूकम्प से भुज, अहमदाबाद, महर्षि की जन्मभूमि टकारा का गुरुकुल भवन, यज्ञशाला, गोशाला, गाधी जी की जन्मभूमि तथा अन्य क्षेत्रो मे जो भारी तबाही हुई है उसकी कल्पनामात्र से ही दिल काप उठता है। इस हादसे में लाखों लोग काल का ग्रास बन गये, लाखो परिवार बेघर होगए, हजारो बच्चे अनाथ होगए और लाखो लोग घायल होगए हैं। वहा इस प्राकृतिक आपदा से पीडित लोग भोजन, पानी, दवाइया, कपडे और आश्रय के लिए जूझ रहे हैं। प्राकृतिक आपदा को रोका तो नहीं जासकता लेकिन पीडित लोगो की सहायता करना हमारा सबसे बडा धर्म है। आज सारा राष्ट्र सकट की इस घडी मे गुजरात के लोगो के साथ है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अधिकारियो ने सहयोगियो से परामर्श करके निश्चय किया है कि **'गुजरात भूकम्प पीडित सहायता निधि'** मे करोडो रुपये की आहुति दी जावे। गुजरातवासियो के परिवार के कल्याण के लिए हरयाणा प्रान्त के सभी वेदप्रचार मण्डल, आर्यसमाज, गुरुकुल, कालिज एव अन्य आर्यशिक्षण सस्थाए इस सहयोग यज्ञ मे अधिक से अधिक धनराशि बैंक ड्राफ्ट, चैक या नकद आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को भेजे। यह राशि आयकर से मुक्त है।

सभाप्रधान स्वामी ओमानन्द जी महाराज ३१ जनवरी २००१ को लाखो रुपये का सामान कम्बल, औषधिया आदि लेकर गुरुकुल के ब्रह्मचारियो एव कार्यकर्ताओ के साथ टकारा सहायता कार्य का निरीक्षण करने गये थे। आर्यसमाज टकारा मे अपना मुख्य सहायता केन्द्र बनाकर मोरवी आदि सैकडो गावो मे सेवा का कार्य आरम्भ करवाया। देश-विदेश मे बैठे सभी भारतीयो से प्रार्थना है कि वे भारी सख्या मे गुजरात के भूकम्प पीडितो की सहायता के लिए धन की सहायता भेजे। दानियो के नाम सर्वहितकारी साप्ताहिक में प्रकाशित किये जारहे हैं।

निवेदक

प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास	बलराज	प्रो०शेरसिंह	स्वामी इन्द्रवेश	स्वामी ओमानन्द
सभामंत्री	सभा कोषाध्यक्ष	पूर्व रक्षाराज्यमंत्री	कार्यकर्ता प्रधान	सभाप्रधान

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सभी पदाधिकारी अन्तरग सदस्य एवं कार्यकर्ता

'गुजरात भूकम्प पीड़ित सहायता निधि' में प्राप्त दानराशि

(गतांक से आगे)

२९	श्रीमती दयावती आर्या W/o श्री वेदपालसिह पवार गाव बोन्दखुर्द जिला भिवानी	१०१-००
३०	श्री विनोद कौशिक सैक्टर-१६ फरीदाबाद	१२०-००
३१	श्री रामरतन आर्य म० न० ९२१/९ विशाल नगर निकट चौ० चादराम डेयरी, गोहाना रेलवे लाइन, रोहतक	१३०-००
३२	श्री रामकिशन हुड्डा मुख्याध्यापक (साघीवाले) प्रेमनगर रोहतक	५००-००
३३	डा० मनोहरलाल आर्य (पूर्व अतरग सदस्य सभा) ओम् आश्रित आर्य सदन, ५७४-१५-ए,, फरीदाबाद	५००-००
	योग	१,३५१-००
	गत अक ७ व १४ फरवरी का योग	७०,०२४-००
	सर्वयोग	७१,३७५-००

(क्रमश)

नोट—दानदाताओ से निवेदन है कि वह अपनी सहयोग राशि का बैंक ड्राफ्ट/चैक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के नाम भेजे। प्रधानमत्री अथवा मुख्यमत्री वेलफेयर फण्ड का सभा मे न भेजे। —**सभामंत्री**

बलिदान/पुस्तकालय भवन के लिये दानी महानुभावों से अपील

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक मे सभा द्वारा एक विशाल बलिदान भवन/पुस्तकालय भवन का निर्माण कार्य आरम्भ होगया है। इस बलिदान भवन/पुस्तकालय भवन मे आर्यसमाज के बलिदानियो के चित्र विवरण के साथ लगाये जायेगे।

सभी दानी महानुभावो से प्रार्थना है कि इस पुनीत कार्य मे अधिक से अधिक धनराशि मनीआर्डर, चैक या बैंक ड्राफ्ट द्वारा अथवा नकद भेजकर पुण्य के भागी बने। जिन सज्जनो का पूर्व मे दान का वचन है वे भी अपना वचन शीघ्र पूरा करने की कृपा करे।

निवेदक

प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास	बलराज	प्रो०शेरसिह	स्वामी इन्द्रवेश	स्वामी ओमानन्द
सभामंत्री	सभा कोषाध्यक्ष	पूर्व रक्षाराज्यमंत्री	कार्यकर्ता प्रधान	सभाप्रधान

रेल्वे/एस.टी. की सुविधा प्राप्त स्वातन्त्र्य सैनिकों को अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में भाग लेने हेतु प्रेरणा

भलीभाति जानते हो कि आर्यसमाज के अगणित स्वातन्त्र्य सैनिक हैं, जिन्हें रेल्वे/एस टी सुविधा विशेष छूट शासन की ओर से उपलब्ध है। उन्हे अपने साथ एक सहायक को भी लाने की सुविधा है। कुछ वरिष्ठ नागरिक ६५ वर्ष की आयु या ऊपर की आयु के हैं, उन्हे भी रियायत किराये में दी जाती है।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का ऐसा ऐतिहासिक आर्य महासम्मेलन बहुत वर्षो के पश्चात् होरहा है और यह सम्मेलन महानगर मुम्बई मे होरहा है। देश-विदेश से आर्य महानुभाव हजारो की सख्या मे उपस्थित होगे। आर्यसमाज स्थापना के १२५ वर्ष के समापन समारोह के रूप मे यह सम्पूर्ण आयोजन होरहा है।

स्वातन्त्र्य सैनिको के जीवन मे यह एक अनूठा अवसर है। अत उनसे सानुरोध विनती है कि ऐसे स्वातन्त्र्य सैनिकों और ज्येष्ठ नागरिको को इस अवसर का लाभ अवश्य उठाना चाहिये, इस हेतु उन्हे प्रेरित करे। सम्मेलन के नियमो का पालन करने मे वे बाध्य रहेगे। कार्यक्रम बान्द्रा रिक्लेमेशन मैदान मुम्बई-५० पर दि० २३ मार्च से २६ मार्च २००१ तक होगा।

—**देवरत्न आर्य**, समारोह सयोजक

आज की निशा विश्व की दिशा बन गई

❑ **आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री,** वेदप्रवक्ता, आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी, नई दिल्ली

युग निर्माता देवदयानन्द का प्रादुर्भाव भारतीय जनजीवन के सुधार के निमित्त हुआ था। देश की सामाजिक दुरवस्था, राजनैतिक विषमता, सांस्कृतिक अवनति और धार्मिक विभिन्नता के परिणामस्वरूप भारतवर्ष शताब्दियों से जर्जरित होरहा था। मानव-मानव का रक्त पीने के लिए तैयार था। योग के नाम पर ढोंग, ईश्वर के नाम पर पाखण्ड, धर्म के नाम पर दुकान खोला जारहा था।

ऐसी विषम परिस्थिति के घेराव मे ही कालिमा से कलंकित दिगन्तमाला को प्रकाशित करने के लिए उन्नीसवीं शती के प्रथम चरण मे श्री कर्षण ब्राह्मण की हृदयेश्वरी भुजग्राम निवासिनी अमृताबाई ने रविसम तेजस्वी पुत्र मूलशकर को उत्पन्न किया। उनके पिता परम शैव औदीच्य ब्राह्मण थे, उसी परम्परा के अनुसार १४ वर्षीय मूलशकर को पूज्य पिताजी के आदेशानुसार इसी शिवरात्रि का व्रत और पूजन करने के लिए शिवालय मे जाना पडा।

अर्धरात्रि को सारे उपासक सो गये, परन्तु मूलशकर अपनी आखो मे पानी का छींटा मारकर जागते रहे और टकटकी लगाकर देखते रहे शायद शिव का साक्षात् दर्शन होजाये। परन्तु इसी बीच एक चूहा शिवलिंग के ऊपर चढकर अठखेलिया करने लगा और नैवेद्य को खाने लगा। मूलशकर के मन मे विचार तरगे उठने लगीं–

कैलाशवासी किमय महेश ? क्या यही है शिव ? यह तो अपने ऊपर से चूहे को नहीं हटा सकता। जिस महादेव को लोग पारब्रह्म कहते थे उसके गुण इस मूर्ति में नहीं आसकते। इस घटना से मूर्तिपूजा के प्रति घोर अश्रद्धा हुई और मूलशकर की सच्चे शिव को जानने की इच्छा बलवती होगई।

आज की घटना से शिवरात्रि दयानन्द बोधरात्रि नाम से प्रसिद्ध होगई। आज की निशा विश्व की दिशा बन गई।

हे मेरी शिवरात्रि प्यारी प्रत्येक वर्ष तू आती है।
पर किसी मूलशकर को क्यो, ऋषि दयानन्द न बनाती है ?
प्रतिभासम्पन्न महामानव क्यों अब उत्पन्न न होते हैं ?
जो दयानन्द, बुद्ध, न्यूटनसम नव बीज ज्ञान के बोते हैं।

आइये आज इस बोधरात्रि के अवसर पर हम और आप सब मिलकर आत्मावलोकन करे और सत्य के ग्रहण और असत्य के छोडने मे सदा उद्यत रहे। ऋषि दयानन्द महाराज जीवन भर सत्य की खोज मे लगे रहे, हम भी उनके जैसे सत्यान्वेषी बने।

इस दयानन्द बोधरात्रि का यही पावन सदेश है कि अधविश्वासो को छोडकर अपनी बुद्धि और ज्ञान से प्रत्येक मानव को काम करना चाहिए। आज कपडा नहीं है, इसलिए दु ख नहीं है, पानी नहीं है, इसलिए दु ख नहीं, अपितु सच्ची समझ न होने के कारण लोग ज्यादा दु खी हैं।

एक वर्ष पूर्व एक समाचार दूरदर्शन मे दिखाया जारहा था कि एक अज्ञानी गुरु ने कहा यदि तुम मुक्ति चाहते हो तो पहाड से छलांग लगाओ, उसके कहने से चेले कूद पडे और मर गये। क्या यही मुक्ति का साधन है ?

ऐसे अज्ञानियो के कारण राष्ट्र का विनाश होरहा है। याद रखना जो जाग गया वह बुद्ध है, जो सोता रहा वह बुद्धू है।

मुक्ति का साधन तो समग्रक्रान्ति के अग्रदूत देवदयानन्द महाराज सत्यार्थप्रकाश मे लिखते हैं–

अधर्म, अविद्या, कुसग, कुसस्कार, बुरे व्यसनो से अलग रहने और सत्यभाषण परोपकार, विद्या पक्षपातरहित, न्याय-धर्म की वृद्धि करने ईश्वर की आज्ञा पालने, योगाभ्यास करने आदि साधनो से मुक्ति प्राप्त होती है। आओ–

जागरण का वक्त, सोने का नहीं है।
आचरण का वक्त, खोने का नहीं है।
वक्त है सद्भाव सींचो, प्यार बोओ।
यह घृणा के बीज बोने का नहीं है।
वैर छोडो गैर को अपना बनाओ।
हार जायेगा अधेरा, दीपक जलाओ।

स्वय जगे, दूसरो को जगावें। अज्ञान, अभाव, अन्याय को दूर करने के लिए सकल्प ले।

रात तो हर रोज आती है सुलाने के लिए।
पर यह निराली रात थी हमको जगाने के लिए।।

आओ शिव के दर्शन करें

कौन कहता है कि आर्यसमाज शिव की नहीं मानता। आर्यसमाज शिवशकर की भक्ति भी करता है और पूजा भी करता है। प्रतिदिन करता है। प्रात -साय दोनो समय शिवशकर को नमस्कार करता है। सच पूछो तो आर्यसमाज शिव के दर्शन करने का मार्ग बताता है। यदि आप शिव तक पहुचना चाहते हो तो अपने आपको तैयार करलो। शिवपूजा की सामग्री एकत्र करलो।

मैं देख रहा हू, शिव पूजा के लिए आपके हृदय मे अटूट श्रद्धा है जो भक्ति का एक आवश्यक अग है परन्तु भक्ति का दूसरा अग तो लुप्त है। जब तक उसे चालू नहीं करोगे तब तक शिव के दर्शन करना असम्भव है। उस अग का नाम है ज्ञानचक्षु। अपने ज्ञानचक्षु खोलो और शिव के दर्शन करलो। ज्ञानचक्षु खोलने के लिए योगसाधना करे। अपने आपको शिव का सच्चा भक्त बनाओ। भक्त का अर्थ है जोडना, मिलाना और इसके विपरीतार्थक शब्द है, विभक्त अर्थात् भाग करना, अलग करना।

अब स्वय ही अपनी जाच करो कि आपका मन भक्ति मे लगा हुआ है या विभक्ति मे। यदि भक्ति मे लगा हुआ है तो जीवन को शुद्ध सरल और पवित्र बनाओ। धूम्रपान, शराब आदि पीने की जो भी बुरी आदते हैं उन्हे छोडो। तभी आपकी भक्ति सफल होगी। जो लोग शिव के नाम पर नशा करते हैं वो शिव को बदनाम करते हैं। शिव तो कल्याणकारी है। वह कभी नशा नहीं करता।

आओ ! आज शिवरात्रि के अवसर पर हम सब मिलकर ऐसा व्रत धारण करे जिसके द्वारा शिव के दर्शन कर सके। याद रखो, सुबह से रात तक भूखे रहने का नाम व्रत नहीं है, यह तो अनशन है। व्रत का अर्थ है 'प्रतिज्ञा करना'। कैसी प्रतिज्ञा ? जो हमे आनन्द और कल्याण के स्रोत शिव भगवान् की भक्ति मे मग्न रखे। जब आपका मन शिवसकल्पमय होजायेगा तो शिव का दर्शन भी सुलभ होजायेगा। शिव कहीं दूर नहीं है आपके ही पास है। बस मन के दर्पण को निर्मल बनाने की आवश्यकता है। उर्दू मे कवि कहता है–

यार की तस्वीर दिल के आयने मे है,
जब चाहो गर्दन झुकाकर देखलो।

–देवराज आर्यमित्र, आर्यसमाज कृष्णनगर, दिल्ली-५१

ऋतुराज वसन्त आया

रचयिता–स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

ऋतुराज वसन्त आया।
पचम स्वर अलापिनी कोयल ने आवाज लगाई।
चहक उठीं चचल चिडियाये देनी लगी बधाई।
मौसम मनभावन मन भाया,
ऋतुराज वसन्त आया।।१।।
जौ, गेहू और चना मटर से खेत रहे लहराई।
पीली पीली सरसो फूली शोभा कही न जाई।
ऋतुओं का राजा कहलाया,
ऋतुराज वसन्त आया।।२।।
मखमल का भूपर बिछ रहा है बिछौना।
हीरा-मोती उगल रहा भारत का कोना-कोना।
यह छटा निराली लाया,
ऋतुराज वसन्त आया।।३।।

फरीदाबाद की केन्द्रीय आर्य सभा ने कार्यकर्ताओं सहित साढ़े तीन लाख की राहत सामग्री गुजरात भेजी

फरीदाबाद १२ फरवरी। आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद की प्रधान एव महर्षि दयानन्द शिक्षण सस्थान की अध्यक्षा डॉ० श्रीमती विमला महता ने गुजरात भूकम्प पीडित के लिए राहत सामग्री से लदे ट्रक को ओ३म्ध्वज फहराकर गाधीधाम गुजरात के लिए सैकडो आर्य नर-नारियो के बीच रवाना किया। ट्रक मे आर्यसमाज सेवा सदन बल्लभगढ के प्रधान श्री कुलभूषण आर्य के नेतृत्व मे आर्यवीर दल के शिक्षक श्री देवराज आर्य, शिक्षक हरिओ३म्, जवा गाव के किशनसिह, बहवलपुर के वीरसिह तथा गुलाबसिह के साथ पलवल आर्यवीर दल के ओमवीर, राजेन्द्र तथा बबली, बल्लभगढ आर्यवीर दल के राजीव व ऋषिपाल, तिलपत आर्यवीर दल के देवेन्द्र तथा बलदेव भूकम्प पीडितो के आंसू पोंछने तथा उनके घावो पर मरहम लगाने गये।

ट्रक में भूकम्प पीडितों की सहायता के लिए टैंट २००, कम्बल ४००, साबुन २ टन, स्टोव २००, थालिया, गिलास २०० प्रत्येक, भगोने और बडे चम्मच २०० प्रत्येक कपडे २० गाठ, देशी घी तथा हवनसामग्री पर्याप्त मात्रा मे भेजे गये हैं। लगभग ३ लाख ५० हजार रुपये की राहत सामग्री गुजरात भेजी गई है। इस सहायता कार्य मे आर्यसमाज नेहरू ग्राउंड, पांच भाई साबुनवाले, आर्यसमाज सैक्टर-१९, आर्यसमाज न०-३, आर्यसमाज न० ४, सैक्टर-७, सैक्टर-१५, सैक्टर-१७, सैक्टर-२२-२३, आर्यसमाज जवाहर कालोनी, आर्यसमाज गोछी, आर्यसमाज बडखल आर्यसमाज बल्लभगढ, सेवासदन, आर्यसमाज मेन बाजार तथा आर्यसमाज चावला आर्यसमाज बहवलपुर जवा तथा महर्षि दयानन्द योगधाम का विशेष योगदान रहा।

१३ सदस्योवाले आर्यसमाज एव आर्यवीर दल के नौजवानो को गुजरात मे राहत कार्य मे सेवाकार्य करने के लिए भेजनेवालो मे डा० ओ३म्प्रकाश, योगाचार्य, देशबन्धु आर्य, सुरेशकुमार, पुरोहित सुशीलकुमार शास्त्री, नरेन्द मलिक, जयदेव शर्मा, वसतलाल भाटिया, मानस शास्त्री सुरेन्द्र चावला, राधेश्याम नागर, डा० सत्यदेव गुप्ता, सुरेश गुलाटी, सदीप आर्य, डा० सोमदेव आर्य, सुरेश गाधी नीलम कालिया एव अन्य अधिकारी वर्ग उपस्थित थे।

इससे पूर्व भी राहत सामग्री से भरा ट्रक १५ आर्ययुवको के साथ आर्यसमाज सैक्टर-१५ से गुजरात भेजा जाचुका है तथा आगामी कार्यक्रम मे अभी और भी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। उन्होने फरीदाबाद वासियो तथा आर्यजनता का इस सहयोग के लिए धन्यवाद किया।

–नीलम कालिया

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मुम्बई
परिपत्र

मान्यवर !

सादर नमस्ते।

आपको विदित करते हुए हर्ष होता है कि आर्यसमाज स्थापना के १२५ वर्ष का विशाल कार्यक्रम दिनाक २३ मार्च से दिनाक २६ मार्च २००१ तक (शुक्रवार से सोमवार) **अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन,** आयोजित किया गया है। समारोह की सफलता हेतु आपसे प्रार्थना है कि निम्न बातो का अवश्यमेव ध्यान रखने की कृपा करे एव अपने सभी पदाधिकारियों, सदस्यो तथा आर्यप्रेमी सज्जनो को, जो सम्मेलन मे आने को उत्सुक हैं, निश्चित रूप से अवगत कराने की कृपा करे।

१ कार्यक्रम स्थल रिक्लेमेशन मैदान, बान्द्रा पश्चिम, मुम्बई - ४०० ०५०

२ दिनाक २६ मार्च को चैत्र शुक्ला प्रतिपदा - आर्यसमाज स्थापना दिवस है।

३ प्रत्येक आगन्तुक को अपना नाम का पजीकरण कराना आवश्यक होगा। पजीकरण शुल्क रु० ५० प्रति व्यक्ति होगा। जो आर्यजन समारोह मे आ रहे हैं वे इस राशि को डी डी या मनीआर्डर द्वारा **"आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई"** के नाम से कार्यालय के पते पर भेजने की कृपा करे।

४ पजीकरण दिनांक २३ फरवरी, २००१ तक कराने की कृपा करें ताकि निवास व्यवस्था तदनुकूल करने मे सुविधा हो सके।

५ भोजन-निवास पजीकृत व्यक्ति को भोजन व निवास हेतु कूपन-पुस्तिका दी जायेगी एवं वे ही इसका नि शुल्क लाभ उठा सकेंगे। ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ होने से यहा उस समय उष्णता का मौसम होगा।

६ क) आपसे प्रार्थना है कि सम्मेलन के दौरान आप समस्त कार्यक्रमो मे उपस्थित रहे। ख) जो सज्जन मुम्बई दर्शन पर जाना चाहेगे उनके लिये हम विशिष्ट बस व्यवस्था दिनाक २७, २८ मार्च, २००१ को आयोजित करेगे।

८ जो सज्जन सम्मेलन मे आ रहे हैं वे अपने सामान का विशेष ध्यान रखे एव सभी स्थानो पर जेब कतरो से सावधान रहे।

कृपया इस परिपत्र की जानकारी सभी तक पहुचाने की कृपा करे।

—कैप्टन देवरत्न आर्य, सयोजक-अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

जानकारी तथा आवश्यक कार्यवाही हेतु

सभा अपने अतर्गत आनेवाली समाजों को अपने साथ नामपट्ट, बॅनर्स, ओ३म् के झण्डे आदि लाने के लिए अवश्य सूचित करेगे ऐसी प्रार्थना है।

नोट : कुछ आर्यजन किसी कारणवश पूर्व सूचना नहीं दे पायेंगे, ऐसा हम अनुभव करते हैं। ऐसे समय पर आनेवाले व्यक्तियों की व्यवस्था तो होगी परन्तु उन्हे कुछ असुविधाओ को सहना पड सकता है। उसके लिए हम अग्रिम क्षमा प्रार्थी हैं।

कार्यालय अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

आर्यसमाज, विट्ठलभाई पटेल मार्ग, साताक्रुज (पश्चिम), मुबई-४०० ०५४ दूरभाष ६६०२०७५ - ६६११८३४ फैक्स ६६११८३४

संभलो भारत की नारियो

भारत की नारी भूल गई क्यों अपने स्वरूप को।
सती साध्वी वेदमार्गी वीरागना के रूप को।
सती सावित्री सीता और दमयन्ती की सन्तान हो।
दोनो हाथों में तलवारे लेकर लडनेवाली की सन्तान हो।
प्राण न्यौछावर कर दिये शत्रु को छूने नहीं दिया तन।
ऐसा ऊचा आदर्श चरित्र कहीं नहीं पाता है बन।
पर आज भारत की नारिया नग्न करके नापी जाती हैं।
मान मार्यादा लज्जा खोकर सौन्दर्य प्रतियोगिता मे जाती हैं।
समाचार पत्रो मे उनके चित्र दिखाये जाते हैं।
राष्ट्रपति प्रधानमन्त्री उनसे हाथ मिलाते हैं।
खो दई अपनी पहचान आज भारत की नारी ने।
पश्चिमी सभ्यता ले गई पतन की ओर भारत की नारी ने।
सौन्दर्य प्रतियोगिता बन्द करो क्यों अश्लीलता बढाते हो।
ऋषि मुनियो के देश को बट्टा आज लगाते हो।

—नन्दकिशोर वर्मा, झज्जर

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, मुम्बई

दिनांक २३ मार्च से २६ मार्च, २००१

आर्य बधुओ,

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के सदर्भ मे निवेदन है कि मुम्बई जैसे महानगर में आवास सम्बन्धी कठिनाइयों का सामना करना पड सकता है। अत इस सम्मेलन मे जो आर्य बधु भाग लेना चाहते हैं वे ५० रु० पजीकरण शुल्क सीधे मुम्बई कार्यालय मे भेजकर आवास सुरक्षित करवाले ताकि व्यवस्था में कोई कठिनाई न हो।

जो सज्जन रेल से चलना चाहेंगे उनको किराये मे आधी छूट मिलेगी। छूट फार्म शीघ्र ही सभा में मिलने आरम्भ हो जायेंगे।

अधिक से अधिक सख्या मे भाग लेकर सम्मेलन को सफल बनाये। **—सभामंत्री**

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

ग्रीन फिल्ड पब्लिक स्कूल, कारोर (रोहतक)	२५ फरवरी २००१
गुरुकुल झज्जर का वार्षिकोत्सव	२४-२५ फरवरी, २००१
आर्यसमाज गोहाना मण्डी (सोनीपत)	१ से ४ मार्च, २००१
श्रीमद्दयानन्द विद्यापीठ गदपुरी (फरीदाबाद)	२ से ४ मार्च, २००१
विशाल आर्य महासम्मेलन (सोनीपत)	४ मार्च, २००१
आर्यसमाज मनाना जिला पानीपत	४ से ६ मार्च, २००१
आर्यसमाज आहुलाना (सोनीपत)	५ से ७ मार्च, २००१
गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद	१७-१८ मार्च, २००१
आर्ष गुरुकुल सस्कृत महाविद्यालय डिकाडला (पानीपत)	१७-१८ मार्च, २००१
अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, मुम्बई	२३ से २६ मार्च २००१

आर्यसमाज आहुलाना (सोनीपत) के वार्षिकोत्सव की सूचना भूलवश १७,१८ मार्च छप गई। इसे आप ५,६,७ मार्च पढे। **—डॉ० सुदर्शनदेव आचार्य,** वेदप्रचाराधिष्ठाता

कारगिल युद्ध में शहीद वीर सैनिकों की विधवा/माता/पिता अभिनन्दन समारोह

हरयाणा प्रान्त के कारगिल युद्ध मे शहीद वीर सैनिको की विधवा/माता/पिता अभिनन्दन समारोह आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान मे दिनाक २५-२-२००१ रविवार को प्रात ११ बजे गुरुकुल झज्जर के महोत्सव के अवसर पर आयोजित किया जारहा है। समारोह की अध्यक्षता सभा के प्रधान पूज्य स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती करेंगे। शहीद परिवार में से शहीद की विधवा, माता अथवा पिता मे से किसी एक का ही सम्मान राशि तथा साहित्य भेट करके अभिनन्दन किया जाएगा।

आप सभी सादर आमन्त्रित हैं। **—सभामन्त्री**

शिवरात्रि पर विशेष :–

आओ ! गहरे पानी पैठें

शिवरात्रि से अनेक दिन पूर्व ही प्रभात फेरिया निकलनी शुरू हो जाती हैं। जिनमे गाए जानेवाले गीत शिव की महिमा, चरित की चर्चा करते हैं। ऐसे ही दूरदर्शन, आकाशवाणी और समाचारपत्रो से भी यही कीर्तन सामने आता है। जिसमे शिव का स्वरूप जहा ईश्वर के रूप में चित्रित होता है, इसके साथ ससारी सम्बन्धो को दशानिवाले अनेक रूप, घटनाये होती हैं, वहा एक विशेष सामर्थ्यशाली व्यक्ति रूप मे भी चर्चा चलती है।

परिचय का स्रोत–प्राय हम अपने परिवारो मे अपने से बडो को धर्म के रूप मे जो कुछ करते देखते हैं वैसा ही हम भी करने, मानने लग जाते हैं और उसको हर तरह से उचित समझते हैं। कुछ अपने मित्रो के प्रभाव, सम्पर्क से किसी विशेष प्रकार के धार्मिक, आयोजन, तीर्थों, पर्वों, व्रतो को स्वीकारने लगते हैं।

हममे से कुछ विरले ही ऐसे होते हैं, जो उस पर विचार करते हैं, कि यह जो कुछ हो रहा है, इसका क्या प्रभाव है ? इन धार्मिक क्रियाओ, भावनाओ का आपस मे कैसा ताल-मेल, जवाब है ? यह सब ऐसे ही क्यो हो रहे हैं ? जिस भावना, कामना से जो कुछ कर रहे हैं, उस कामना तथा कर्म मे सम्बद्धता, सार्थकता किस प्रकार से है ? हा, ससार के इतिहास में ऐसी अनेक घटनाये घटीं, जब सोचनेवाले उलझन मे उलझकर रह गए और अन्त मे उन्होंने अपनी साधना से अनोखा रूप, वैचारिक क्रान्ति प्रस्तुत की। जैसे कि–गौतम बुद्ध, न्यूटन, जार्ज जेम्स आदि के नाम सर्वप्रसिद्ध हैं।

ऐसी ही १८३८ की शिवरात्रि पर एक ऐतिहासिक घटना घटी। चौदह वर्षस्थ मूलशकर पिता जी के साथ शिवरात्रि की पूर्वसन्ध्या पर शिवकथा सुनने गया। कथा मे शिव की महिमा, व्रत के महत्त्व और विधि को सुनकर स्वय ही व्रत रखने का सकल्प धार लिया। सारा दिन विधिवत् निराहार व्रत रखने के पश्चात् शिव पूजन तथा जागरण के लिए पिता जी के साथ कुमार मूल शिव मन्दिर पहुचा। प्रथम द्वितीय प्रहर की पूजा के पश्चात् जब मूल अपने जागरण के सकल्प को पूर्ण करने मे सचेष्ट था, तब चूहो को चढावा खाते हुए देखकर चौक पडा। पिता जी को जगाकर प्रश्न पर प्रश्न पूछे, पर पिता जी के उत्तर से मन को सन्तोष नहीं हुआ और पिता जी के उत्तर मे यह सुनकर कि 'असली शिव तो कैलास मे रहते हैं 'फिर मैं तो सच्चे शिव के ही दर्शन करूगा' का सकल्प मन मे धारते हुए मूल वापिस घर आगया। 'जो जागत है-सो पावत है' के नियम के अनुसार मूल के मन मे एक नये विचार का अकुर अकुरित हुआ और बहन की मृत्यु के पश्चात् चाचा की मौत से उभरे वैराग्य से युवक मूलशकर की सोच मे एक विचित्र वैचारिक क्रान्ति चमकी जो कि १८७५ को आर्यसमाज की स्थापना के साथ परिपक्व हुई। अत आर्यसमाज शिवरात्रि से उभरे बोध के कारण इस पर्व को ऋषिबोधोत्सव के रूप मे आयोजित करता है। बोध के पूर्ण रूप को '**ऋषिबोधोत्सव**' पुस्तिका पढकर जहा समझा जा सकता है, वहा महर्षि दयानन्द के विचारो के सामान्य व्यावहारिक पक्ष को परखने के लिए ये दो उद्धरण पर्याप्त होगे। जिनमे महर्षि के विचारो तथा क्रिया-कलाप का निचोड आगया है और वस्तुत यही शिव=कल्याण का मार्ग है।

पहला उद्धरण है–जो-जो बात सबके सामने माननीय है उनको मानता, अर्थात् जैसे सत्य बोलना सबके सामने अच्छा है और मिथ्या बोलना बुरा है, ऐसा सिद्धान्तो को स्वीकार करता हू। और जो मतमतान्तर के परस्पर विरुद्ध झगडे हैं, उनको मैं पसन्द नहीं करता, क्योंकि इन्हीं मतवालों ने अपने मतो का प्रचार कर मनुष्यो को फसा के परस्पर शत्रु बना दिये हैं, **इस बात को काट, सर्वसत्य का प्रचार कर सबको एकमत मे करा, द्वेष छुडा, परस्पर मे दृढ प्रीतियुक्त कराके सबसे सबको सुख लाभ पहुचाने के लिए मेरा प्रयत्न और अभिप्राय है** (स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश)।

सत्यार्थप्रकाश मे महर्षि दयानन्द के ये अन्तिम शब्द हैं।

दूसरा उद्धरण–"इसीलिए विद्वानो, आप्तो का यही मुख्य काम है कि उपदेश वा लेख द्वारा सब मनुष्यो के सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित करदे, पश्चात् वे अपना हित-अहित समझकर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द मे रहे। मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य का जाननेवाला है। तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि के लिए हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषो से सत्य को छोड असत्य मे झुक जाता है।"

(सत्यार्थप्रकाश की भूमिका)

शिव शब्द के कल्याण, सुख अर्थ के अनुसार यह सन्देश शिवरात्रि का सार्थक रूप है।

यदि किसी की और अधिक गहराई में जाने की इच्छा हो, तो ऋषि के परिपक्व हुए बोध को संक्षिप्त शब्दो में कहना हो, तो वह है–

रूढिवाद से मुक्त कर यौगिकता की ओर प्रवृत्त करना–क्योंकि महर्षि से पूर्व भी वेदादि शास्त्र तथा उनके ईश्वर, धर्म, यज्ञ, योग आदि सिद्धान्त थे। पुनरपि उनके मानने वालों मे परस्पर विरोधी, विचित्र मान्यताये मिलती हैं। उन चर्चाओ को लेकर जब कोई जीता है, तो अनेक अवसरों पर व्यक्ति असमजस मे पड जाता है। बार-बार ढूढने पर भी उसमें उसको एकरूपता, सुसम्बद्धता, सार्थकता प्राप्त नहीं होती। वह बहुधा उलझकर रह जाता है, कि सब कुछ विधिपूर्वक करने पर भी प्रतिज्ञा के अनुरूप परिणाम सामने क्यो नहीं आता ? इन्हीं उलझनो से निकालकर ऋषि ने अपने ऋषित्व=**ऋषिर्दर्शनात्** से एक सुसगत, सार्थक रूप प्रस्तुत किया है, जो कि सर्वथा यौगिक है।

यौगिक शब्द योग से तद्धित मे बनता है और योग का अर्थ है जैसे भाषा मे प्रयुक्त शब्द धातु–प्रत्यय के मेल से बनते हैं। अत उनका अर्थ उस पर आश्रित होता है। पर रूढिवादी शब्द बिना आधार के अहेतुक होते हैं। उनका प्रयोग '**लकीर का फकीर**' के समान होता है। अत महर्षि का प्रत्येक मन्तव्य साधार है, महर्षि किसी मान्यता को उतने, उस रूप मे मानते हैं, जितना, जिस रूप मे वह युक्ति मुक्त होता है। रूढिवादी की तरह 'लकीर का फकीर होने' का महर्षि समर्थन नहीं करते। महर्षि का विचार है, कि प्रत्येक बात, कर्म को सोच-विचार कर जो-जो शास्त्रानुमोदित और युक्तियुक्त होने से सुसगत है, उसी को ही अपनाना चाहिए। अतएव आर्यसमाज के पाचवे नियम मे आया है–'सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिये।'

महर्षि दयानन्द ने अपने मन्तव्यो की पुष्टि मे वैदिक वाङ्मय के सहस्रों वचन उद्धृत किये हैं। जहा महर्षि ने अपने मन्तव्यो को यौगिक रूप मे प्रस्तुत किया है, वहा उनके समर्थन मे दिए जानेवाले शास्त्रो के प्रमाणो के अनुवाद मे उनको यौगिक रूप से ही प्रतिपादित किया है। प्रचलित रूढिवादी अर्थ की अपेक्षा यौगिक अर्थ को ही दर्शाया है। इस सृष्टि से पाठको का ध्यान मे तीन स्थलो की ओर आकर्षित करना चाहता हू। पहला है योग का सूत्र–**अहिसाप्रतिष्ठाया तत्सन्निधौ वैरत्याग** महर्षि सत्यार्थप्रकाश मे योगी के मन की स्थिति वैररहित बन जाती है की भावना दर्शाते हैं। प्रचलित अर्थ के विपरीत हम इतिहास मे भी देखते हैं, जैसा कि पचतन्त्र मे भी आया है, कि महर्षि पतञ्जलि, पाणिनि जगली जानवरो का शिकार बने।

दूसरा उदाहरण मनुस्मृति का–**यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता ।** (३, ५६) है। यहा भी प्रचलित भावना की अपेक्षा महर्षि ने यौगिक पक्ष का प्रतिपादन करते हुए सस्कार विधि मे लिखा है–'जिस कुल मे नारियो की पूजा अर्थात् सत्कार होता है, उस कुल मे दिव्यगुण, दिव्य भोग और उत्तम सतान होते हैं।

इसका तीसरा उदाहरण है–

जामयो यानि गेहानि । तानि कृत्या हतानीव ।। ३, ५८

इस श्लोक के कृत्या शब्द का अर्थ प्राय अन्य भाष्यकारो ने अभिचार कर्म, मारण, उच्चाटन आदि तान्त्रिक कर्म लिया है। जबकि इन अभिचार कर्मो का फल व्यवहार मे सामने नहीं आता। अधिकतर ऐसा विश्वास रखते हैं, पर ऐसा फल चरितार्थ हुआ हम अपने इतिहास मे भी नहीं देखते हैं। महर्षि ने इसका अर्थ इस प्रकार लिखा है–"**जैसे विष देकर बहुतो का एक बार नाश कर देवें**"।

इस प्रकार महर्षि के विचारो मे यत्र-तत्र-सर्वत्र यौगिकता का ही सामने आता है। कारोबार के कार्यों की तरह हम अन्य क्षेत्रो मे भी यौगिकपन को अपनाकर ही सफल हो सकते हैं। 'लकीनल की फकीर होने' पर केवल निराशा ही हाथ लगती है। अत आइए ! पर्व के यौगिक रूप को अपनाये।

–**भद्रसेन**, बी-२, ९२/७ बी, शालीमारनगर, होशियारपुर

आत्मनिरीक्षण के क्षण

हम दूसरो के दोष और अवगुण तो बहुत जल्दी देखते हैं, परन्तु कभी अपने अन्दर झाकने की चेष्टा नहीं करते कि हमारे भीतर कितनी त्रुटिया हैं। प्रतिदिन गायत्री मन्त्र का जाप करते हैं और विश्वानि देव के मन्त्र का भी पाठ करते हैं परन्तु मन मस्तिष्क मे फिर भी मैल जमा हुआ है। इसका कारण है कि हम कभी आत्मनिरीक्षण करने का प्रयास नहीं करते। कभी शान्त और एकान्त वातावरण मे बैठकर हमे अपनी कमजोरियो पर नजर डालनी चाहिये और उन्हे दूर करने की कोशिश करनी चाहिये।

पहले अपने को सुधारो तब आपका प्रभाव आपकी पत्नी और बच्चो पर होगा। आपके सयमित नियमित सत्याचरण से आपका परिवार भी नहीं अपितु आपके सम्पर्क में आनेवाला प्रत्येक व्यक्ति प्रभावित होगा। हमारा आचरण और व्यवहार ही तो हमारे चरित्र का प्रमाणपत्र है। हम क्या खाते-पीते हैं ? कब सोते-जागते हैं ? कहा उठते-बैठते हैं ? क्या पहनावा है ? इन सब बातों को देखकर दिनचर्या का पता चलता है, जिसकी दिनचर्या ही ठीक नहीं है उसके जीवन से क्या शिक्षा मिल सकती है। वह क्या किसी को मानवता की प्रेरणा दे सकता है।

कोई मामूली देहाती अनपढ आदमी गलती करे तो हम उपेक्षा कर देते हैं। परन्तु सुशिक्षित व्यक्ति जो मच पर लम्बे-लम्बे भाषण देता है, उपदेश करता है, उसको दुर्व्यसनो मे जकडा हुआ देखकर आश्चर्य होता है। आज जो लोग आर्यसमाज के माध्यम से अपना स्वार्थ सिद्ध कर रहे हैं या धनोपार्जन करते हैं उनको जब तक पृथक् नहीं किया जाएगा तब तक आर्यसमाज का प्रभाव अस्थिर रहेगा। आर्यसमाज के अयोग्य अधिकारियो और दक्षिणा के लालची प्रवक्ताओं को समझना और समझाना होगा। क्षमा करना, मैं यह शब्द अनुभव के आधार पर अन्तर्वेदना के साथ लिख रहा हू। आर्यसमाज मे जो कूडा-करकट जमा होरहा है उसे कोई भी देखना पसन्द नहीं करता। "आर्यसमाज अमर रहे" के जयघोष को सफल बनाने के लिये अपने जीवन का निर्माण करना होगा। केवल नारे लगाने से कुछ नहीं होगा। —**देवराज आर्यमित्र,** आर्यसमाज कृष्णनगर, दिल्ली-५१

आर्य सीनियर सैकण्ड्री स्कूल सिरसा व आर्यसमाज कोर्ट रोड की ओर से आज दिनाक ५-२-२००१ को गुजरात भूकम्प पीडित राहत कोष हेतु नगर के मुख्य बाजारो मे विद्यार्थियो, अध्यापको तथा आर्यसमाज कोर्ट के सदस्यो ने दान-पात्र हाथो मे लेकर लोगो से अधिकाधिक धनराशि देने की अपील की।

सलग्न चित्र मे विद्यालय के प्रबन्धक व आर्यसमाज कोर्ट रोड के प्रधान डा० आर०एस० सागवान, स्कूल प्राचार्य श्री कृष्णलाल बोहरा, श्री कवरसिह आर्य, श्री सतपालसिह, श्री राकेशकुमार, श्री मदनलाल ग्रोवर व विद्यार्थी स्कूल बैनर व पट्टिया लेकर खडे हैं।

आदर्श विवाह

आपको बडे हर्ष के साथ सूचित किया जाता है कि अतरसिह डबास सुपुत्र श्री योगेन्द्रकुमार ग्राम मोहम्मदपुर माजरा झज्जर का विवाह श्री हरिराम नैण सुपुत्री सरोज जोधपुर राजस्थान निवासी के साथ वैदिकरीति के साथ सम्पन्न हुआ। इस शुभ अवसर पर श्री रणधीरसिह, रोहतास जी, चन्द्रपाल पुरोहित, सत्यपाल ने बहुत ही उत्तम रीति से सम्पन्न करवाया। इस शुभ अवसर पर श्री अतरसिह जी ने गुरुकुल झज्जर को ३०० रु०, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा १०० रु०, आर्यसमाज सैक्टर-४ गुडगाव १०० रु० दान दिये। यह शुभ विवाह मे मात्र एक रु० मे ही सम्पन्न और श्री हरिराम नैण ने वरपक्ष को स्वेच्छा से ५०० रु० दिया। इस प्रकार वैदिक रीति से यह शुभविवाह सम्पन्न हुआ।

—**अतरसिंह**

आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव ने भूकम्प पीड़ितों के लिए एक ट्रक भोजन सामग्री गांधी धाम भेजा

आर्य केन्द्रीय सभा गुडगाव द्वारा गुजरात के भूकप पीडितो के लिए एक ट्रक भोजन सामग्री गाधी धाम के लिए रवाना किया है। इससे पूर्व आर्यसमाज भीमनगर गुडगाव ने भी एक ट्रक सामान पिछले सप्ताह भेजा था। इस बार इस ट्रक मे २५० परिवारो के लिए एक किट बनाकर भेजी गई है। प्रत्येक किट मे चार थालिया, दो गिलास, एक पतीली, एक थाल, एक बाल्टी, तवा, चकला, बेलन, चाकू, दो किलो चीनी, दो किलो दाल तथा २५० ग्राम चाय की व्यवस्था की गई है। जानकारी केन्द्रीय सभा गुडगाव के प्रधान रामदास सेवक ने दी।

आर्य केन्द्रीय सभा के उपप्रधान किशनचद सैनी तथा प्रेस सचिव कन्हैया लाल आर्य ने बताया कि पर्यावरण शुद्धि के लिए यज्ञ करने के लिए पाच टीन देसी घी भी भेजा जारहा है। इसके अतिरिक्त पाच क्विटल गुड, १० क्विटल गाजर, १० क्विटल बन्दगोभी, दो क्विटल चावल, तीन पेटी कपडे तथा ५० मिलिट्री वाले टैंट और उन टैंटों को स्थापित करने के लिए १५० बल्लिया, किल्ले, रस्सिया आदि भेजी जारही हैं।

इस भोजन सामग्री एवं टैंटो को ट्रक द्वारा आर्य केन्द्रीय सभा के महामत्री शिवदत्त आर्य अपने साथ आर्यसमाज सैक्टर-९ के प्रधान अमीरचन्द, श्रीधर, जैकमपुरा से राजेद्र आर्यवीर को ले जारहे हैं। एक सप्ताह तक सेवा कार्य करके वहा से लौटे ओम्प्रकाश मैदान कोषाध्यक्ष आर्य केन्द्रीय सभा पुन सेवा के लिए इस ट्रक मे प्रस्थान कर गए हैं। इस ट्रक को हरी झडी देने के लिए गुडगाव नगर के सभी आर्यसमाजो के अधिकारी जिनमे चदरसिह आर्य, किशनचद चुटानी, बख्शाराम, बसीलाल चावला, जीआर मेहदीरत्ता, सुखदेव कपूर, कुदनलाल साहनी, जयदेव शास्त्री, नई कालोनी आर्यसमाज के मत्री, नगर पार्षद शशी दुआ, राजेश आर्य वजीरचद, पदमचद आर्य, किशनचद कोटि तथा माडल टाउन आर्यसमाज के अधिकारी तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। वहा उपस्थित लोगो के उत्साह को देखकर यह आश्वासन भी दिया गया कि शीघ्र ही अन्य सहायता भी भेजी जाएगी।

आवश्यक सूचना

हरयाणा की समस्त आर्यसमाजो, सभी वेदप्रचार मण्डलो, गुरुकुल, कालिज, आर्य केन्द्रीय सभाओ, अन्य आर्य शिक्षण सस्थाओ के अधिकारियो से निवेदन है कि जिन्होंने गुजरात भूकम्प पीडितो की सहायता के लिए सीधे जिला रेडक्रास या जिला उपयुक्तो के माध्यम से सहायता सामग्री (कम्बल, टैंट, अन्न तथा दवाइया आदि) अथवा नकद राशि भेजी है उसका पूरा पता विवरण सभा की सर्वहितकारी पत्रिका मे प्रकाशनार्थ आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक को लिखितरूप मे भेजने का कष्ट करे। —**सभामंत्री**

ओ३म् फोन ०१२६२-४०७२२

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

क्रमाक दिनाक १३-२-२००१

सेवा मे,

श्री प्रधान/मन्त्री
समस्त आर्यसमाज, हरयाणा

विषय : वार्षिक साधारण तथा नैमित्तिक अधिवेशन

मान्यवर !

सादर नमस्ते।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक साधारण तथा नैमित्तिक अधिवेशन दिनाक १८ मार्च २००१ को गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ जिला फरीदाबाद मे होना निश्चित हुआ है। अत सभी आर्यसमाजो के अधिकारियो से निवेदन है कि वे अपने आर्यसमाज का वर्ष १९९९-२००० (तथा ९८-९९ का कोई बकाया हो तो) का वेदप्रचार दशाश तथा सर्वहितकारी शुल्क ३ मार्च २००१ तक सभा कार्यालय मे भेजने का कष्ट करे ताकि सभी प्रतिनिधियो को समय पर एजेण्डा भेजा जा सके। यदि आपने पूर्व राशि भेज रखी है तो प्राप्तकर्ता का नाम, राशि तथा रसीद क्रमाक दिनाक सहित सभा को लिखकर भेज देवे।

सभा के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर कार्यवृत्तान्त प्रकाशित हो रहा है, उसमे अपने आर्यसमाज की विशेष उल्लेखनीय गतिविधि भी २८ फरवरी २००१ तक लिखकर भेज दीजिए।

भवदीय

प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास
सभामंत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ४६८७४, ५७७७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ४०७२२) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। पत्र के प्रत्येक प्रकार के विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०१
पंजीकरणसंख्या टैक/एच.आर./49/रोहतक/99 ☎ ०१२६२-४०७२२

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र रोहतक

प्रधानसम्पादक : प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक :- डा० सुदर्शनदेव आचार्य

वर्ष २८ अंक १४ २८ फरवरी, २००१ वार्षिक शुल्क ६०) आजीवन शुल्क ६००) विदेश में १० पौंड एक प्रति १-२५

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (पंजीकृत)

प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना मार्ग, रोहतक

यू.पी.सी. द्वारा फोन ४०७२२

क्रमाक दिनाक २८-२-२००१

विषय : वार्षिक साधारण एवं नैमित्तिक अधिवेशन का एजेण्डा (कार्य सूची)

माननीय प्रतिनिधि महोदय,

नमस्ते।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक साधारण एव नैमित्तिक अधिवेशन दिनाक १८ मार्च २००१ को प्रात ११ बजे गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ जिला फरीदाबाद में होना निश्चित हुआ है। अत आपसे निवेदन है कि समय पर पधारने की कृपा करे।

वार्षिक साधारण अधिवेशन के विचारणीय विषय

१ दिवगत आर्य नरनारियों को श्रद्धाजलि।
२ २६ मार्च २००० की कार्यवाही की सम्पुष्टि।
३ सभा के गत वर्ष १९९९-२००० के आय-व्यय की सम्पुष्टि तथा आगामी वर्ष २०००-२००१ के आनुमानिक आय-व्यय बजट की स्वीकृति।
४ सभा के गत वर्ष के कार्यवृत्तान्त पर विचार।
५ सभा के गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, गुरुकुल कुरुक्षेत्र, दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय शादीपुर यमुनानगर के वर्ष १९९९-२००० के आय-व्यय की सम्पुष्टि एवं वर्ष २०००-२००१ के बजट की स्वीकृति।
६ बोगस सभा से सम्बन्ध रखने तथा अनुशासनहीनता के कारण सभा की प्रतिनिधि सूची से काटे गए (श्री कुलभूषण आर्य सभा कोषाध्यक्ष सहित) २१ नामो की स्वीकृति।
७ श्री बलराज आर्य पानीपत की नए कोषाध्यक्ष के रूप मे नियुक्ति की सम्पुष्टि।
८ सतलुज यमुना लिक नहर तथा अन्य सबधित मुद्दों पर विचार।
९ जिला वेदप्रचार मण्डलो की प्रगति पर विचार।
१० शराबबन्दी आन्दोलन पर विचार।
११ अन्य विषय सभाप्रधान जी की आज्ञा से।

असाधारण नैमित्तिक अधिवेशन के विचारणीय विषय

स्थान–गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद समय–१ बजे दोपहर बाद

१ दिनाक २६-३-२००० ई० को नैमित्तिक (असाधारण) अधिवेशन मे पारित सभा के विधान में सशोधन की सम्पुष्टि।

नोट :– सभी प्रतिनिधियों से अनुरोध है कि सभा के विधान में सशोधन की सम्पुष्टि हेतु आपकी उपस्थिति आवश्यक है कृपया वार्षिक साधारण एवं नैमित्तिक अधिवेशन में अवश्य पहुंचने का कष्ट करे।

भवदीय

प्रो० सत्यवीरशास्त्री डालावास
सभामंत्री

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मुम्बई के लिए रेल किराये में ५० प्रतिशत की छूट

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा द्वारा रेल राज्य मत्री श्री दिग्विजयसिंह को लिखे पत्र के फलस्वरूप रेलवे बोर्ड के डायरेक्टर श्रीमती मणि आनन्द ने अपने पत्र सख्या **टी सी** २/२०६६/९८/६ दिनाक १४ फरवरी, २००१ द्वारा मुम्बई, कलकत्ता, नई दिल्ली, गोरखपुर, गुवाहाटी, चेन्नई, सिकन्दराबाद, भुवनेश्वर, हाजीपुर, अलाहाबाद, जयपुर, बगलोर तथा जबलपुर कार्यालय को सूचित किया है कि **२३ से २६ मार्च** २००१ की तिथियो मे अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मुम्बई मे भाग लेनेवाले **यात्री मेल तथा एक्सप्रेस गाड़ियो मे द्वितीय श्रेणी साधारण और स्लीपर** के किराये में ५० **प्रतिशत छूट** के अधिकारी होगे। यह छूट **केवल ३०० कि०मी० से अधिक** की यात्रा करनेवालों को ही उपलब्ध होगी। इस छूट का लाभ **किन्हीं ३० दिनो** मे उठाया जासकेगा जिसमे महासम्मेलन की तिथिया (२३ से २६ मार्च, २००१) शामिल हों।

यह छूट प्राप्त करने के लिए **आर्य यात्री** तत्काल **सार्वदेशिक सभा कार्यालय** (फोन न० ३२७४७७१, ३२६०९८५) **सार्वदेशिक प्रेस** (फोन नं० ३२७०५०७, ३२७४२१६), पर अपने **नाम, आयु, स्टेशन** जहा से यात्रा आरम्भ करनी है का विवरण **अपने पते सहित** लिखवा दे। छूट प्रमाण-पत्र मुख्य वाणिज्य प्रबन्धक उत्तर रेलवे नई दिल्ली से प्रमाणित कराना होगा।

यह सूचना मिलने पर तत्काल आर्य यात्री को सभामत्री **श्री वेदव्रत शर्मा** द्वारा **हस्ताक्षरित** एक **प्रमाण-पत्र** जारी कर दिया जाएगा। यह **प्रमाण-पत्र** प्राप्त होने पर आर्य यात्री अपने निर्धारित रेलवे स्टेशन पर इसे प्रस्तुत करके ५० **प्रतिशत छूट** वाले **रेलवे टिकट** प्राप्त कर पायेगे।

नोट :–

१ जो यात्री दिल्ली के नजदीक है यह छूट प्राप्त करने के लिए वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नई दिल्ली से सम्पर्क करे।
२ रोहतक के समीपवाले यात्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा कार्यालय सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक से सम्पर्क करें।
३ स्पेशल रेलगाडी की व्यवस्था समय कम होने के कारण कठिन है।
४ अपने-अपने ग्रुप की स्पेशल डीलक्स बस अथवा टाटा सूमो द्वारा बीच-बीच मे अजमेर आदि स्थानो पर रुकते हुए मुम्बई पहुचा जासकता है।
५ ५०/- रु० पजीकरण शुल्क सीधे मुम्बई कार्यालय मे भेजकर अपने नाम का पजीकरण करवाले।

—सभामंत्री

आर्यसमाज नरेला की विशेष सभा ११-२-२००१ के निर्णय

१ गुजरात भूकम्प मे हताहत हजारो आत्माओ की शान्ति के लिए प्रभु से प्रार्थना।
२ भूकम्प सहायतार्थ २५,००० (पच्चीस हजार) स्वामी ओमानन्द जी प्रधान सार्वदेशिक सभा को भेंट।
३ आर्यसमाज नरेला का वार्षिक महोत्सव दिनाक १३-१४ व १५ अप्रैल २००१ शनिवार से रविवार तक।
४ धूम्रपान निषेध के साहसिक कदम का स्वागत व धन्यवाद।
५ अश्लीलतत्व नग्नता को दूरदर्शन से दूर करने की प्रार्थना।

निवेदक - **मा० पूर्णचन्द आर्य**, महामत्री आर्यसमाज नरेला दिल्ली-४०

लोक-परलोक विचार

दशम-विचार—(अपने को देखो)

❑ शिवप्रसाद उपाध्याय, आर्यसमाज होशियारपुर (पंजाब)

(गतांक से आगे)

प्रिय सज्जनो ! हम सब मिलकर कल विचार कर रहे थे कि 'हमारे किये हुए धर्म-कर्म, पाप-पुण्य ही परलोक मे हमारा साथ देनेवाले हमारे पक्के साथी हैं। जितने भी भौतिक पदार्थ हैं, उनमे से अन्त मे साथ देनेवाला कोई भी नहीं है। यहा तक कि यह देह जिसको कि हम हमारा शरीर कहते हैं, वह भी अन्त मे साथ नहीं दे सकता। इसलिए हमे इस जीवन मे अधिक से अधिक धर्म-कर्म ही करने चाहिये। जिससे कि इस लोक मे भी हमारी कीर्ति हो और परलोक मे भी वे हमारे साथी रहे। महाराजा भर्तृहरि जी ने हमे एक चेतावनी दी है—

यावत् स्वस्थमिद शरीरमजर यावज्जरा दूरतो,
यावच्चेन्द्रियशक्तिरप्रतिहता यावत् क्षयो नायुष ।
आत्मश्रेयसि तावदेव विदुषा कार्य प्रयत्नो महान्,
सदीप्ते भवने तु कूप खनन प्रत्युद्यम कीदृश.।। (वै०श० ७५)

जब तक कि यह हमारा शरीर स्वस्थ रहे, तन्दुरुस्त रहे, बुढापेरूपी कष्ट के आने से पहले-पहले जब तक कि हमारी सम्पूर्ण इन्द्रियो मे भी शक्ति हो और जब तक हमारी आयु का क्षय नहीं होजाता, होशियार विद्वान् को चाहिए कि वह आत्मोत्थान के लिये महान् पुरुषार्थ करे। क्योकि घर मे आग लग जाने पर कूआ खोदने लग पड़ना ठीक नहीं।

कई बार धर्म-कर्म की बात सुनते ही हम उदासीन बन जाते हैं या उस अदृष्ट के पीछे विश्वास ही नहीं करते। इसी भौतिक भोग मे ही मस्त रह जाते हैं। क्योकि यह दृष्ट हैं। प्रत्यक्ष हैं। या कई बार ऐसा भी देखा गया है कि 'जिसको धर्म-कर्म की हवा भी नहीं लगी, जो धर्म-कर्म कुछ भी नहीं करता, इसी भौतिक भोगो मे ही मस्त रहता है। परन्तु वह बडा मालामाल रहता है। न उसे कोई चिन्ता सताती है, न उसे कोई शारीरिक दु ख ही मिलता है और जो हमेशा धर्म-कर्म ही करता रहता है, अनेक प्रकार के तीर्थ, व्रत, दया, दान आदि भी समय-समय पर करता रहता है परन्तु वह हमेशा ही दु खी रहता है या गरीबी से मजबूर देखा गया है।

इन बातो को देखकर कई बार हमारा मन उस अदृष्ट पाप-पुण्य, धर्म-कर्म की श्रद्धा से उकता जाता है। परन्तु सज्जनो ! बात ऐसी नहीं है। एक बात ध्यान से सुने—'जिस बच्चे ने स्कूल मे प्रवेश ही नहीं लिया वह कभी गलती होने पर भी मास्टरो से मार क्यो खाएगा ? वह तो स्वच्छन्द अपना जीवन गुजारेगा। लेकिन जिस बच्चे ने कुछ बनने के लिए, कुछ करने के लिए, कुछ महान् उद्देश्य को लेकर स्कूल मे एडमिशन लिया है, उसे तो अपनी गलती पर मार खानी ही पडेगी। साथ ही पढाई-लिखाई के लिए भी दिमाग खपाना ही पडेगा।

ठीक इसी प्रकार जिस जीवात्मा ने इस ससार मे स्वतन्त्ररूप से विचरण करना हो, वह इस अदृष्ट आध्यात्मिकता के पीछे क्यो पडेगा ? ईश्वर भी उसको स्वच्छन्द मानकर इन्हीं सासारिक भोगो मे ही फसाए रखेगा। परन्तु जिसने अपने जीवन को समझ लिया है, जो भोगो को समझ गया है। वह ईश्वर की पाठशाला (न्यायव्यवस्था) मे रहकर भौतिक भोगो से ऊपर उठकर अपने जीवन का उत्थान करना चाहता है, जीवन को सफल बनाना चाहता है, वेदोक्त कार्यो को ही करना चाहता है और परम आनन्द को प्राप्त करना चाहता है, उसे तो जगत् का न्यायकर्ता परमात्मा अपनी न्याय की कसौटी मे जरूर कसेगा ही। उसकी सम्पूर्ण भोगेच्छाओ की जाच-परख अवश्य करेगा। यदि वह अभी भी कुछ भोगना चाहता है तो उसे पुन भौतिक जगत् मे ही छोड देगा। यदि वह तृप्त है, तभी वह अपने आनन्द का रसास्वादन कराएगा।

जैसे कि पिता की गोदी मे बैठा हुआ बच्चा पिता से कभी कुछ, और कभी कुछ मागकर पिता को तग करता है, तो उसका पिता उसे या तो डाट-फटकार करता है। या फिर उसे उसकी मागी हुई वस्तु दे देता है।

एक अध्यापक क्लास मे पढाने बैठा है। सभी विद्यार्थी आपस मे ही बात कर रहे हैं, वह उन्हे उस समय नहीं पढा सकता। यही कहेगा कि 'पहले तुम अपनी बात पूरा करो फिर मैं पढाऊगा' यही हाल हमारा और ईश्वर का है।

हम इसे यो भी समझ सकते हैं—जैसे कि मेरी जेब मे पचास रुपये हैं। मैं सब्जी लेने सब्जीमण्डी चल पडा। वहा जाकर जो सब्जी लेनी थी ले ली। पचास रुपये खतम होगये। वहा से चल पडा तो रास्ते मे फलो की दुकान दिखाई दी। देखा तो बहुत ही ताजे-ताजे, सुन्दर-सुन्दर, मीठे-मीठे फल बढिया सजाकर रखे हुए हैं। लेने को बहुत ही दिल करे, परन्तु जेब मे पैसे नहीं थे। मैं फल नहीं ले सका। मैं उन फलो के पीछे ललचाता हुआ घर आगया। जो सब्जी ली थी वह बनाकर खाली। वे दुकान के फल भी कुछ क्षण के बाद भूल गए। उस दिन की तो बात इतनी ही थी। जब आई मृत्यु के पश्चात् ईश्वर का दरवाजा खटखटाने की बारी' ईश्वर ने कह दिया—'भाई ! उस दिन तुम सब्जी से तो तृप्त होगए थे परन्तु तुम्हारी फल खाने की जो लालसा थी वह अभी पूरी नहीं हुई। तुम तो अल्पज्ञ होने के कारण उस दिन की बात भूल बैठे, परन्तु मैं तो हमेशा ही वर्तमान हू। तुम भी तो उस समय वर्तमान ही थे; जब फल की इच्छा कर रहे थे। अभी तुम भौतिक भोगों से ही तृप्त नहीं हुए हो तो मैं तुम्हें आनन्द कैसे दे सकता हूं, जाओ खूब फल खाकर तृप्त होकर आना।

सज्जनो ! हम हमेशा ही वर्तमान अवस्था मे ही रहते हैं और वर्तमान अवस्था मे ही कर्म कर रहे होते हैं। परन्तु दैनिक व्यवहार मे इस प्रकार की कई गलतिया कर जाते हैं। मुक्ति का प्रश्न आते ही फिर हम परमात्मा से बार-बार दण्डित होजाते हैं। इस व्यापक आकाश को परमात्मा की रील समझे। हम यहा पर जो कुछ भी करते जाते हैं, वह सब नोट होता जाता है। जिस प्रकार कि आटोमैटिक कैमरे में हमारी सम्पूर्ण हरकत नोट होती जाती है। यही बात तो वेद मे भी बताई गई है—'**विश्व शृणोति पश्यति**'

वह परमात्मा सभी का सुनता है, सभी को देखता है। हम इन भौतिक भोगो से ऊपर उठकर अपनी इच्छाओ को समेटने का प्रयत्न करे। इच्छाओ को समेटते हुए हम एक दिन निरीक्ष बन सकते हैं। यह तभी होगा जबकि हम धर्म-कर्म में मन लगायेगे। निरन्तर शुभकर्मो के अभ्यास से जहा हम अनेक प्रकार के पापो से छूट सकेगे वहा हमे अशुभ कर्मो को करने के लिए अवकाश भी नहीं रहेगा।

कई बार हमारे अन्त करण मे ऐसे भी ख्याल आते हैं—'यह धर्म-कर्म कुछ भी नहीं है, इसकी केवल महिमा-महिमा मात्र है। उस व्यक्ति को देखो—उसे गडा हुआ धन मिल गया, दूसरे को देखो लाटरी से धन मिला। अरे ! अमुक को देखो उसे तो मुफ्त का ही मकान मिला हुआ है, वह बडा राज्य कर रहा है, इत्यादि। उन लोगो ने कौन से शुभ कर्म किये हैं जो मालामाल हैं।' भगवान् जब देता है तो छप्पर फाडकर दे देता है—

अजगर करे न चाकरी पछी करे न काम।
दास मलूका कह गए सब का दाता राम।।

ऐसा सोचकर हम अपना धर्म-कर्म आदि पुण्य कार्य छोड बैठते हैं, निष्कर्मी बन जाते हैं। परन्तु बात ऐसी नहीं है। यह जीवात्मा बहुत पुराना है। यह यहा पर कई बार जन्म लेकर आ चुका है। यह सृष्टि भी बडी पुरानी है। यह कई बार बिगडी है और कई बार बनी है। जीवात्मा ने यहा आकर बडे-बडे कार्य किये हैं। यह बात ठीक है कि वह इस जन्म मे थक गया है और हमारे सामने कुछ नहीं कर रहा मालूम होता। फिर भी उसे गडा धन मिल जाता है। वह गडा धन उसे वैसे ही नहीं मिला। उसे वह पूर्वकृत सचित कर्म का ही फल मिला है। लाटरी मे उसे जो धन मिला है वह भी उसे पूर्वकृत कर्म का ही फल मिला है। मकान भी उसे वैसे ही नहीं मिल गया, वह भी उसका पूर्वकृत सचित कर्म का ही फल मिला है।

परमात्मा के पास वैसी कोई फैक्टरी नहीं है कि वह किसी को मुफ्त मे ही माल बना-बनाकर दे। किये हुए कर्म का फल लेना जीवात्मा का पूर्ण अधिकार है। वही उसे मिलेगा। परमात्मा तो न्यायकारी है वह न तो किसी को एक कौडी कम देता है, नहीं किसी को कौडी ही ज्यादा। यदि परमात्मा किसी को तो मुफ्त मे ही दे दे और किसी को कुछ दे ही नहीं, तो उसे न्यायकारी कौन कहेगा ? हम ही अविद्या, अज्ञान आदि मे फसे रहने के कारण और धर्म-कर्म के सिद्धान्त को न जानने के कारण उल्टा समझकर ईश्वर को ही दोष देते हे। धर्म-कर्म का फल अवश्य मिलेगा। यह झूठ सिद्धान्त नहीं है कि मेरे पीछे कुछ साथ नहीं जाएगा।

मुझे इस समय एक बात याद आरही है—जब महाभारत का युद्ध समाप्त होगया, जिस सिद्धान्त को लेकर वह युद्ध हुआ था, वह सिद्धान्त भी पूरा होगया। अर्थात् उस युद्ध का मुख्य उद्देश्य था—'पाडवो की जीत'। सो उनकी जीत हो गई। जो-जो मरने थे मर गए। उस युद्ध मे सिर्फ दस आदमी शेष बचे थे। यह तो सबको पता ही था कि युद्ध मे लोगो ने मरना ही मरना है। **(क्रमश)**

महर्षि दयानन्द जयन्ती पर शोभायात्रा सम्पन्न

आर्य युवक समाज रोहतक के तत्त्वावधान मे दिनाक १७-२-२००१ को विशाल शोभायात्रा का आयोजन किया गया जिसका नेतृत्व आर्य युवती समाज हरियाणा की वरिष्ठ नेत्री बहन अनीता कत्याल सुमित्रा वर्मा, मजू बुरा व प्रतिभा सुमन ने किया। प्रात ८ से १० बजे तक ललु बाबा मन्दिर मे भक्ति सत्सग का आयोजन हुआ जिसमें भिन्न-भिन्न सस्थाओ के विद्यार्थियों ने तथा धर्मोपदेशिका बहन सुमित्रा वर्मा ने ओजस्वी भजनो के माध्यम से स्वामी दयानन्द जी महाराज के जीवन पर प्रकाश डाला।

इस पुनीत अवसर पर युवाओ को स्वामी दयानन्द जी महाराज के सिद्धान्तो की रक्षा का सकल्प दिलाया। अंत मे राष्ट्रीय सत स्वामी सूरतदास जी ने भी आर्य युवको को आशीर्वाद प्रदान किया इसके पश्चात् विशाल शोभायात्रा नगर के मुख्य मार्गो से होती हुई महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित यज्ञ पर बड़े ही उल्लासपूर्ण वातावरण मे सम्पन्न हुई। इस पावन अवसर पर नगर की आर्यसमाजे, आर्य शिक्षण संस्थाये तथा विभिन्न सामाजिक सगठनो के कार्यकर्ताओ ने उत्साहपूर्वक शोभायात्रा में शामिल हुए।

—ओमदर्शन, संयोजक विशाल शोभायात्रा आर्य युवक समाज रोहतक

विदेशों में आर्यसमाज का प्रारम्भ

लेखक व पत्रकार–**प्रतापसिंह शास्त्री** (आचार्य) एम०ए० हिसार, २५-गोल्डन विहार, गगवा रोड, हिसार

राजस्थान मे खेतडी एक छोटी-सी रियासत थी इसके शासक अजीतसिह (सन् १८७० से सन् १९०१) थे। शेखावाटी सम्भाग के विभिन्न ठिकानों मे खेतडी का स्थान महत्त्वपूर्ण था। इसके अन्तिम शासक सरदारसिह सन् १९२७ से १९४७ तक थे तत्पश्चात् देश आजाद होगया और इस खेतडी रियासत का अस्तित्व समाप्त होगया। इसके शासक अजीतसिह से स्वामी विवेकानन्द के अच्छे मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध थे। अमेरिका मे जो सर्वधर्म सम्मेलन शिकागो मे हुआ था उसमे हर प्रकार की सहायता करके अजीतसिह ने ही स्वामी विवेकानन्द को भेजा था। जिस समय स्वामी विवेकानन्द अमेरिका मे जाकर हिन्दू धर्म की दार्शनिक ऊचाइयो की विजय पताका फहरा रहे थे और न्यूयार्क शिकागो और बोस्टन आदि नगरो में मुट्ठी भर अमरीकी नरनारियो को वेदान्त का उपदेश देकर वहा मठो की स्थापना करा रहे थे, तब उन्हीं दिनो दक्षिणी अमेरिका ट्रिनीडाड, अमरारा, जमेका आदि उपनिवेशो मे हजारो प्रवासी भारतीय हिन्दू धर्म को छोडकर ईसाई बनते जारहे थे। उन उपनिवेशो मे विरले ही शिक्षित व्यक्ति ईसाई बनने से बचे होगे, नहीं तो सब ईसाइयत की शपथ मे जा चुके थे। उन अभागे हिन्दुओ पर न स्वामी विवेकानन्द की दृष्टि पडी न उनके अनुयायियो की। जब ऐसा प्रतीत होने लगा कि भविष्य मे प्रवासी भारतीयो के वशजो मे हिन्दुत्व का चिह्न भी नहीं बचेगा, तभी आर्यसमाज और वैदिक धर्म का सदेश उन तक पहुचा गया और हिन्दुत्व नामशेष होने से बच गया। विदेशो मे लगभग एक करोड भारतीय प्रवासी रहते हैं। उनी रक्षा का दायित्व यद्यपि वहा की सरकारो पर है फिर भी आर्यसमाज सदैव अग्रसर रहा है।

आर्यसमाज एक ऐसा सगठन है जिसने बहुत समय पहले से ही विश्व आन्दोलन का रूप ले रखा है। देश-विदेश मे इसकी शाखाए हैं और ये सब सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली द्वारा निर्धारित नियम व उपनियमो मे बन्धकर प्रजातान्त्रिक पद्धति से चलती हैं। प्रस्तुत है सक्षिप्त रूप मे कुछ आर्यसमाजो का परिचय–

केनिया (पूर्वी अफ्रीका)–केनिया की राजधानी नैरोबी मे सन् १९०३ मे आर्यसमाज की स्थापना हुई। आर्यसमाज का लाखो रुपये की लागत का जैसा शानदार और भव्य भवन (मन्दिर) यहा बना है वैसा समस्त अफ्रीका महाद्वीप मे तो क्या विदेशो मे अन्यत्र कहीं भी नहीं है। एक विशाल भवन आर्य कन्या पाठशाला का है जिसमे हजार से भी अधिक छात्राए शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। इस पाठशाला मे आधुनिक विज्ञान के विषयो के साथ-साथ हिन्दी, गुजराती, अग्रेजी के अलावा सगीत पाकशास्त्र और सस्कृत धर्मशिक्षा की भी व्यवस्था है। एक दुमंजिली अतिथिशाला है, जिसमे १३-१४ कमरे हैं। सुसचालित पुस्तकालय और वाचनालय है। यहा स्त्री आर्यसमाज भी बहुत सशक्त और प्रभावशाली है।

आर्यसमाज किसुमू नगर–यह किसुमू नगर का आर्यसमाज दूसरे नम्बर पर है। यहा सन् १९१० मे आर्यससमाज की स्थापना हुई थी। विशाल आर्यसमाज मन्दिर बना हुआ है। निकट ही आर्यसमाज कन्या पाठशाला की इमारत है। अतिथियो के लिए आर्य पथिक आश्रम है। स्त्री आर्यसमाज, पुस्तकालय और वाचनालय है।

मोम्बासा नगर आर्यसमाज–यह केनिया का तीसरा आर्यसमाज है। यह देश का मुख्य बन्दरगाह है और वैदिक धर्म का प्रचार करने के लिए समुद्री मार्ग से केनिया पधारनेवाले आर्य उपदेशको को इसी आर्यसमाज के दर्शन होते हैं। आर्यो के सर्वप्रथम स्वागत का श्रेय यही आर्यसमाज प्राप्त करता है। यही सभी सुविधाए हैं।

युगाण्डा–केनिया से लगा हुआ प्रदेश है–युगाण्डा। युगाण्डा के कम्पाला नगर मे सन् १९०८ मे आर्यसमाज की स्थापना हुई थी। इस प्रदेश मे अन्य प्रमुख आर्यसमाजे हैं–जिजा और मवेल नगर की। मवेल मे एक आर्य कन्या पाठशाला भी है। पर युगाण्डा के तत्कालीन राष्ट्राध्यक्ष ईदी अमीन की दुर्नीति के कारण जब सभी भारतीयों को युगाण्डा छोडना पडा, तब आर्यो को भी सब कुछ ज्यो का त्यो छोडकर वहा से निकलना पडा था। आज पुन वहा आर्यसमाज कार्य कर रहा है।

आर्यसमाज जंजीबार–मोम्बासा नगर से लगभग २०० मील दूर जजीबार है। यहा सन् १९०७ मे आर्यसमाज की स्थापना हुई थी। जिस स्थान पर कभी गुलामो का बाजार लगता था और हब्शी दासो की खरीद फरोख्त होती थी, उसी स्थान पर बने आर्यसमाज मंदिर मे अब यज्ञ होता है और वेदमन्त्रो की ध्वनि गुजित होती है। जजीबार के तत्कालीन सुलतान ने स्वय उदारतापूर्वक आर्यसमाज मन्दिर के निर्माण मे सहयोग दिया था। आर्यसमाज मन्दिर दुमजिला है और एक आर्य कन्या पाठशाला भी है। यहा से भी अधिकाश भारतीय निष्कासित हुए थे पर वर्तमान में आर्यसमाज का कार्य चल रहा है।

आर्यसमाज टागानीका–जजीबार के निकट ही टागानीका है। इस प्रदेश की राजधानी और सबसे बडा शहर दारेसलाम है। जहा भारतीयो की आबादी २५ हजार से भी अधिक है। सन् १९१९ मे यहा आर्यसमाज की विधिवत् स्थापना हुई। आर्यसमाज की अपनी एक कन्या पाठशाला भी है जो इस क्षेत्र के लिए गौरव की बात है। इस टागानीका प्रदेश मे टागा, टबोरो और क्वाजा नगरो मे भी आर्यसमाजे हैं। केनिया मे अपनी पृथक् आर्य प्रतिनिधि सभा है जो सन् १९२२ मे सगठित हुई थी। पूर्वी अफ्रीका मे आर्यसमाज की लगभग सवा करोड से भी अधिक की सम्पत्ति है। जिन स्थानो पर आर्यसमाजे हैं उनके नाम इस प्रकार हैं–नैरोबी, नुकुरू एन्डोरेट, मोम्बासा, किसुमू, माचाकोम, कम्पाला, तुगाजी, मासिडी, तोरोरो दारेसलाम, जजीबार, टागा, अरूबा टैबोरो आदि।

दक्षिणी अफ्रीका–दक्षिण अफ्रीका मे चार प्रदेश हैं–नैटाल, ट्रासवाल, केप और ओरेज फ्री स्टेट। नैटाल मे पहले पहल भारतीय सन् १८६० मे पहुचे। मद्रासियो की सख्या अधिक है। बिहारी, उत्तरप्रदेशी, गुजराती भी अच्छी सख्या मे हैं। कुछ पजाबी भी हैं। सन् १९२५ मे डर्बन मे महर्षि दयानन्द जन्म शताब्दी महोत्सव मनाया गया था। इसी अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका की स्थापना हुई। इस सभा के साथ २५ आर्यसमाजे सम्बद्ध हैं।

फिजी द्वीप समूह–आस्ट्रेलिया से पूर्व मे और न्यूजीलैंड से उत्तर मे प्रशान्त महासागर मे फिजी द्वीप समूह है। वहा सन् १८१९ मे भारतीय पहुचे थे। आर्यसमाज के प्रचार से पूर्व यहा ईसाइयत का बोलबाला था। इस समय इस द्वीपसमूह मे प्राय सभी नगरो मे आर्यसमाज स्थापित है। सन् १९१६ मे आर्य प्रतिनिधि सभा फिजी द्वीपसमूह की नींव पडी। आर्यसमाजियो को सरकार का कोपभाजन भी बनना पडा। पर उनके विरुद्ध राजद्रोह का आरोप सिद्ध नहीं हुआ। प्रवासी भारतीय चौ० महेन्द्रकुमार मूल निवासी हरयाणा महम चौबीसी क्षेत्र से हैं, जब फिजी के प्रधानमत्री निर्वाचित हुए और पिछले दिनो भारत मे आये तथा मुख्यमत्री हरयाणा ने रोहतक मे उनका अभिनन्दन किया तथा हरयाणा के नागरिको से एक-एक रुपया प्रति नागरिक के अनुसार सहायता की अपील की तब वहा फिजी मे भी आर्यसमाज को वहा की तत्कालीन परिस्थितियो मे सरकार के कोप का भाजन बनना पडा। आज वहा आर्यसमाज की ओर से तो कोई सूचनाए नहीं हैं किन्तु अपदस्थ प्रधानमत्री महेन्द्र चौधरी की सरकार को पुन बहाल करने के फिजी हाईकोर्ट के निर्णय से कुछ आशाए बधी हैं। उम्मीद है फिजी का सर्वोच्च न्यायालय भी हाईकोर्ट के निर्णय को बहाल रखेगा जिससे महेन्द्र चौधरी की सरकार बहाल होने का रास्ता खुलेगा। किन्तु फिजी के भारतीय नागरिको ने अतर्राष्ट्रीय समुदाय से मदद अवश्य मागी है। आर्यसमाज की ओर से फिजी मे कई स्कूल और कालेज भी चल रहे हैं। इस द्वीप मे आर्यसमाज की लाखो रुपये की सम्पत्ति है।

दक्षिण अमेरिका–दक्षिण अमेरिका के निकटवर्ती ब्रिटिश गियाना ट्रिनीडाड, सूरीनाम और वेस्टइडीज मे सन् १८६५ मे भारतीयो का आना जाना प्रारम्भ हुआ था। गियाना मे आर्यसमाज का शिक्षासम्बन्धी कार्य अच्छा है। गियाना के चारो भागो मे आर्यसमाजे हैं। भारतीयो की आबादी तीन लाख से ऊपर है।

अमेरिका मे जाट सघ Association of Jats in America, U S A Tel (312) 2891071 दुनिया के इस पश्चिमी गोलार्द्ध मे जाट भाइयो के ५०० से अधिक परिवार रहते हैं। ये हर वर्ष शिकागो मे सम्मेलन करते हैं और सन् १९८१ से लगातार हर वर्ष वार्षिक सम्मेलन होता रहा है। अब ये भी आर्यसमाज की स्थापना की तैयारी मे हैं। इन्होने जो मेरे पास सगठन के सदस्यो की सूची भेजी हैं वह सूची १५०० सदस्यो की है और अलग-अलग पते लिखे हैं। ऊपर दूसरा Address लिखा है–Address of Jat Families in U S A १२ दिसम्बर १९९५, १९६ Andrien Road Glen Mills Pa 19342 इनमे वे परिवार भी शामिल हैं जो Australlia आस्ट्रेलिया Canada कनाडा मे रहते हैं।

ब्रिटिश गियाना के पास ही ट्रिनिडाड है। यहा भारतीय सन् १८४५ मे पहले पहल आये। छगुआनास नामक स्थान आर्यसमाज की गतिविधियो का केन्द्र है। प्रिसेज टाउन, सेटजोसेफ मे आर्यसमाजे हैं।

डच गियाना मे सर्वप्रथम भारतीय मजदूर सन् १८७३ मे आए। यहा सूरी नाम के कुछ हिन्दुओ ने सन् १९२६ मे सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थ मगाकर पढे तो उनकी आखे खुली। यहा की राजधानी पारामारीबो मे आर्यसमाज की स्थापना होचुकी है। सन् १९३७ मे आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना भी होगई है। जार्ज टाउन उसका प्रमुख केन्द्र है और गियाना, ट्रिनीडाड और सूरीनाम उसके कार्यक्षेत्र है। एक डी ए वी कालेज तथा डी ए वी पब्लिक स्कूल चल रहा है। पचास के लगभग आर्यसमाजे हैं और कई स्कूल इस सभा से सम्बद्ध हैं। पाच स्त्री आर्यसमाजे है और दस आर्यवीर दल हैं।

ब्रिटेन–लन्दन मे कई बार आर्यसमाज की गतिविधिया प्रारम्भ होकर मद पड गई। सन् १९७० मे वैदिक मिशन के नाम से आर्यसमाज की स्थापना हुई है। नियमपूर्वक साप्ताहिक सत्सग होते हैं। बरमिघम मे आर्यसमाज स्थापित होचुका है और आर्यसमाज ने अपना भवन क्रय कर लिया है सदस्य सख्या भी १५० से अधिक है और अब साउथ हाल लन्दन मे डी ए वी एजुकेशन इन्स्टीच्यूशन की स्थापना होचुकी है।

थाईलैंड–थाईलैंड मे ५ हजार भारतीय बसते हैं। कुछ दुकानदार और व्यापारी हैं। पर अधिकाश मजदूर या दरबान है। व्यापारियो मे सिधी, पजाबी और गुजराती अधिक हैं और मेहनत मजदूरी करनेवालो मे मद्रासी और गोरखे अधिक हैं। राजधानी बैकाक मे सन् १९२० मे आर्यसमाज की स्थापना हुई। अपना भवन है। जनता पर आर्यसमाज का अच्छा प्रभाव है। आजाद हिन्द फौज का

(शेष पृष्ठ ६ पर)

'गुजरात भूकम्प पीड़ित सहायता निधि' में प्राप्त दानराशि

(गताक से आगे)

३४ आर्यसमाज कालका एव आर्य गर्ल्ज सी०सै० स्कूल कालका जिला पचकूला ५,०००-००
३५ श्री वेदप्रकाश आर्य मण्डलपति आर्यवीर दल महेन्द्रगढ द्वारा सग्रहीत ६,१००-००
(१) श्री दिनेश आर्य सु० श्री बनवारीलाल आर्य चमफेडा रोड महेन्द्रगढ ५००-००
(२) टैम्पू यूनियन सतनाली रोड, महेन्द्रगढ १५१-००
(३) श्री पूरणचन्द, प्रभातीलाल ठेकेदार कैमला १२२-००
(४) प० इन्द्रमुनि आर्यपुरोहित १०१-००
(५) श्री हनुमानप्रसाद आर्य सु० श्री रामनाथ सैनी महेन्द्रगढ १०१-००
(६) महत आनन्दस्वरूपदास प्रधान आर्यवीर दल महेन्द्रगढ १०१-००
(७) श्री राजेन्द्रप्रसाद सु० बिहारीलाल नम्बरदार महेन्द्रगढ १०१-००
(८) यादव सैल्ज कारपोरेशन महेन्द्रगढ १००-००
(९) गुप्तदान महेन्द्रगढ १००-००
(१०) श्री राजेन्द्रप्रसाद सु० जयनारायण कैमला ५१-००
(११) श्री वीरेन्द्रसिह कैमला ५१-००
(१२) श्री प्रतापसिह कैमला ५१-००
(१३) श्री लालचन्द सु० रतिराम सैनी महेन्द्रगढ ५१-००
(१४) श्री पावरसिह सु० मेहरचन्द सैनी महेन्द्रगढ ५१-००
(१५) श्री कैलाशचन्द्र सु० महेशचन्द्र सैनी महेन्द्रगढ ५१-००
(१६) श्री लक्ष्मीनारायण बालरोडिया ५१-००
(१७) श्री ताराचन्द सैनी महेन्द्रगढ ५१-००
(१८) श्री बनवारीलाल सैनी महेन्द्रगढ ५१-००
(१९) श्री हरिराम सैनी सु० मामनराम सैनी महेन्द्रगढ ५१-००
(२०) श्री प्रेमकुमार मैन बाजार महेन्द्रगढ ५१-००
(२१) श्री दीपक खेडीवाला ५१-००
(२२) श्री पन्नालाल महेन्द्रगढ ५१-००
(२३) श्रीमती कुसुम देवी महेन्द्रगढ ५१-००
(२४) श्री जगदीशप्रसाद सु० भोलाराम नम्बरदार ५१-००
(२५) श्री हजारीलाल यादव ५१-००
(२६) सरपच श्री गुरदयालसिह कैमला ५०-००
(२७) श्री रमेशकुमार कैमला ५०-००
(२८) श्री सतलाल छात्र आई टी आई महेन्द्रगढ ५०-००
(२९) श्री कृष्णसिह कैमला ५०-००
(३०) श्री बजरगसिह सु० श्री बलदेवसिह कैमला ५०-००
(३१) श्री रमेश सु० श्री रामचन्द्र यादव ५०-००
(३२) यादव ट्रैक्टर वर्कशाप महेन्द्रगढ ५०-००
(३३) श्री रमेशकुमार सु० श्री हरिसिह लावनवाले ५०-००
(३४) श्री पूर्णसिह लिशानवाले ५०-००
(३५) श्री पवनकुमार भगडानावाले ५०-००
(३६) श्री गुप्तदान महेन्द्रगढ ५०-००
(३७) सिसोदिया मार्बल हाउस महेन्द्रगढ ५०-००
(३८) श्री रमेशकुमार महेन्द्रगढ ५०-००
(३९) श्री आर्यवीरो द्वारा एकत्र राशि ३,२५७-००
३६ मन्त्री आर्यसमाज महेन्द्रगढ ३१००-००
३७ श्रीमती विभा कुमारी शास्त्री आर जेड ७० सी गली न ९ मध्यमार्ग तुगलकाबाद विस्तार नई दिल्ली ११००-००
३८ आर्यसमाज भटगाव जिला सोनीपत ५००-००
३९ आर्यसमाज शेखपुरा खालसा जिला करनाल १,०००-००
४० मन्त्री आर्यसमाज गोहाना मण्डी जिला सोनीपत ११००-००
४१ श्री धर्मवीर आर्य आर्यसमाज रणसीका तह० हथीन जिला फरीदाबाद १०१-००

योग=१८,००१-००
गताक योग=७१,३७५-००
सर्वयोग=८९,३७६-००

(क्रमश)

नोट—दानदाताओ से निवेदन है कि वह अपनी सहयोग राशि का बैंक ड्राफ्ट/चैक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के नाम भेजे। प्रधानमन्त्री अथवा मुख्यमन्त्री वेलफेयर फण्ड का सभा मे न भेजे।

—सभामंत्री

गुजरात राहत कोष अपील

महर्षि दयानन्द एवं महात्मा गांधी की जन्मभूमि संकट में

२६ जनवरी २००१ को गुजरात मे आए भूकम्प से भुज, अहमदाबाद, महर्षि की जन्मभूमि टकारा का गुरुकुल भवन, यज्ञशाला, गोशाला, गाधी जी की जन्मभूमि तथा अन्य क्षेत्रो मे जो भारी तबाही हुई है उसकी कल्पनामात्र से ही दिल काप उठता है। इस हादसे मे लाखों लोग काल का ग्रास बन गये, लाखो परिवार बेघर होगए, हजारो बच्चे अनाथ होगए और लाखो लोग घायल होगए हैं। वहा इस प्राकृतिक आपदा से पीडित लोग भोजन, पानी, दवाइया, कपडे और आश्रय के लिए जूझ रहे हैं। प्राकृतिक आपदा को रोका तो नहीं जासकता लेकिन पीडित लोगो की सहायता करना हमारा सबसे बडा धर्म है। आज सारा राष्ट्र सकट की इस घडी मे गुजरात के लोगो के साथ है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अधिकारियो ने महयोगियो से परामर्श करके निश्चय किया है कि **'गुजरात भूकम्प पीडित सहायता निधि'** मे करोडो रुपये की आहुति दी जावे। गुजरातवासियो के परिवार के कल्याण के लिए हरयाणा प्रान्त के सभी वेदप्रचार मण्डल, आर्यसमाज, गुरुकुल, कालिज एव अन्य आर्यशिक्षण सस्थाए इस सहयोग यज्ञ मे अधिक से अधिक धनराशि बैंक ड्राफ्ट चैक या नकद आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को भेजे। यह राशि आयकर से मुक्त है।

सभाप्रधान स्वामी ओमानन्द जी महाराज ३१ जनवरी २००१ को लाखो रुपये का सामान कम्बल, औषधिया आदि लेकर गुरुकुल के ब्रह्मचारियो एव कार्यकर्ताओ के साथ टकारा सहायता कार्य का निरीक्षण करने गये थे। आर्यसमाज टकारा मे अपना मुख्य सहायता केन्द्र बनाकर मोरवी आदि सैकडो गावो मे सेवा का कार्य आरम्भ करवाया। देश-विदेश मे बैठे सभी भारतीयो से प्रार्थना है कि वे भारी सख्या मे गुजरात के भूकम्प पीडितो की सहायता के लिए धन की सहायता भेजे। दानियो के नाम सर्वहितकारी साप्ताहिक मे प्रकाशित किये जारहे हैं।

निवेदक

स्वामी ओमानन्द सभाप्रधान
स्वामी इन्द्रवेश कार्यकर्ता प्रधान
प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास सभामत्री
बलराज आर्य सभा कोषाध्यक्ष
प्रो०शेरसिंह पूर्व रक्षाराज्यमत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सभी पदाधिकारी अन्तरग सदस्य एव कार्यकर्ता

वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज आर्यनगर जिला हिसार का वार्षिकोत्सव दिनाक २७ व २८ जनवरी को धूमधाम के साथ मनाया गया। उत्सव की शुरुआत २७ जनवरी प्रात उत्सव स्थल (पण्डाल) मे यज्ञ से हुई। गुरुकुल आर्यनगर से पूज्य आचार्य प० रामस्वरूप जी शास्त्री गुरुकुल के ५०-५५ ब्रह्मचारियो सहित यज्ञ करवाने पहुचे। श्री फतेहसिह आर्य व श्री मागेराम जी सपत्नीक यजमान बने। यजमानो के अतिरिक्त कुमारी किरणबाला आर्या व बिमलादेवी आर्या ने यज्ञोपवीत धारण किये। गायत्री मन्त्र के महत्त्व व गायत्री पाठ पर आचार्य जी का सारगर्भित प्रवचन हुआ। दोनो दिन ३-३ सभाए प्रात, बाद दोपहर व रात्रि को हुई। रविवार प्रात काल यज्ञ श्री रमेशकुमार जी ग्रोवर के घर पारिवारिक सत्सग के रूप में हुआ। बाहर से पधारे साधु विद्वानो व भजनोपदेशको मे मुख्य रूप से पूज्य स्वामी सर्वदानन्द (गुरुकुल धीरणवास), स्वामी कीर्तिदेव महात्मा तेजमुनि, आचार्य प० रामस्वरूप शास्त्री, श्री मानसिह पाठक, चौ० बदलूराम आर्य (प्रधान-वेदप्रचार मण्डल, हिसार) प० विश्वामित्र शास्त्री, प्रि० जिलेसिह, रामनिवास आर्य, प० रामरख आर्य व रामकुमार आर्य की भजनमण्डली प्रमुख थे।

आर्यसमाज की मान्यताओं, समाज सुधार, आज के बिगडते वातावरण मे पश्चिमी सभ्यता का टी०वी० के माध्यम से अन्धानुकरण, महर्षि दयानन्द के उपकार, शराबबन्दी महिला जागृति व अन्य सामाजिक बुराइयो पर विभिन्न विद्वानों व भजनोपदेशको ने प्रभावशाली ढग से चर्चा की। शनिवार सायकालीन सभा मे श्री रामस्वरूप वर्मा एच सी एस (एस डी एम महेन्द्रगढ) मुख्य अतिथि बने। जबकि रविवार की सभाओ मे लै० कर्नल ओ३म्प्रकाश आर्य व प० रामजीलाल आर्य (पूर्व सासद) सभा के अध्यक्ष बने।

रविवार सायकालीन सभा के अन्त मे गुरुकुल धीरणवास के ब्रह्मचारियो का बहुत मनोहर आकर्षक व्यायाम प्रदर्शन हुआ, जिसमे विभिन्न योगासनो के इलावा स्तूप, दण्ड-बैठक, गले व आख से सरिये मोडना छाती से ट्यूबें तोडना, बेल तोडना, काच पीसना आदि प्रमुख थे। उत्सव मे गाव के स्त्री-पुरुषो, नवयुवको के इलावा मुकलान, टोफस, पातन धीरणवास, हिन्दवान, बालसमन्द, शिशवाला व हिसार से अच्छी सख्या मे नरनारियो ने भाग लिया। इस प्रकार हर प्रकार से पिछले उत्सवो से सर्वाधिक सफल रहा।

—**सीताराम आर्य,** सह-मन्त्री
आर्यसमाज आर्यनगर, जिला हिसार
(हरयाणा)

छात्र तथा छात्राओं का सदाचार शिक्षण शिविर सम्पन्न

आर्यसमाज जूआ जिला सोनीपत की ओर से ग्राम के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय एव राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मे पृथक्-पृथक् छात्र तथा छात्राओ का चरित्रनिर्माण सदाचार प्रशिक्षण शिविरो का १५ से २० फरवरी २००१ तक आयोजन किया गया। इसका सामूहिक रूप मे उद्घाटन श्री राजेन्द्रसिह दहिया जिला शिक्षा अधिकारी ने किया। उन्होने आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती का गुणगान करते हुए कहा कि उनके कारण ही भारत में स्वतन्त्रता आन्दोलन की नींव रखी गई। सर्वप्रथम सत्यार्थप्रकाश मे उन्होने ही आवाज उठाई थी। यदि वे न आते तो कन्याओ को आज वेदमन्त्र बोलने का अधिकार नहीं मिलता। छात्र तथा छात्राओ को वैदिक सिद्धान्तो तथा सदाचार की शिक्षा देना समय की माग है। आपने इस शुभकार्य के लिए आर्यसमाज के अधिकारियो की प्रशसा की। आपने छात्र एव छात्राओ को दूरदर्शन द्वारा प्रसारित होनेवाले अश्लील कार्यक्रम न देखने का परामर्श दिया।

उद्घाटन से पूर्व ६०० छात्र तथा छात्राओ ने विद्यालय के प्रागण मे सामूहिक यज्ञ किया। ग्राम के आर्यसमाज के मत्री महाशय सजानसिह आर्य ने शिविर मे भाग लेनेवाले छात्र तथा छात्राओ को महर्षि दयानन्द द्वारा १२५ वर्ष पूर्व स्थापित आर्यसमाज के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए बताया कि भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन मे ८० प्रतिशत आर्यसमाज के कार्यकर्ताओ ने भाग लिया था। गुरुकुलो तथा डी ए वी विद्यालयो की स्थापना करके वैदिक धर्म का प्रचार तथा प्रसार किया। शुद्धि, गोरक्षा, हैदराबाद आर्य सत्याग्रह, हिन्दी रक्षा तथा शराबबन्दी आन्दोलनो मे भी आर्यसमाज के कार्यकर्ताओ ने भाग लेकर परोपकारी कार्य किये। आपने ऋषि दयानन्द बोधोत्सव पर्व पर विस्तार से बच्चों को जानकारी दी और पृथ्वीसिह बेधडक का लिखा गया प्रसिद्ध भजन **'यदि टकारा में आती नहीं शिवरात तो हमारी कौन पूछता बात'** सुनाकर श्रोताओ को मन्त्रमुग्ध कर दिया।

शिविर मे छात्र-छात्राओ को वैदिक धर्म, सदाचार, हवन-सन्ध्या तथा योगादि आसनो का प्रशिक्षण कन्या गुरुकुल नरेला की ओर से कु० रानी शास्त्री, कु० राजनेश शास्त्री, कु० ममता शास्त्री, कु० सुमन, कु० मोनिका तथा कु० नीलम ने दिया और छात्रो को ब्र० योगेश तथा ब्र० सुरेन्द्र ने प्रभावशाली ढग से दिया। इनके अतिरिक्त प्रिंसिपल राममेहर, श्री ज्ञानसिह आर्य, श्री धर्मचन्द शास्त्री, श्री महेन्द्र शास्त्री, मा० आजादसिह आर्य आदि ने छात्र-छात्राओ को सम्बोधित किया। १८ फरवरी को महर्षि दयानन्द के जन्मदिवस तथा २० फरवरी को बोध-दिवस पर आर्यसमाज मन्दिर मे यज्ञ करके इन पर्वो को मनाया गया। शिविर के समापन समारोह के अवसर पर छात्र तथा छात्राओं ने पृथक्-पृथक् शिविर के प्रशिक्षण का प्रदर्शन किया। आर्यसमाज की ओर से आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा प्रकाशित वैदिक साहित्य एव फल शिविर मे भाग लेनेवाले छात्र तथा छात्राओ को वितरित किया। दोनो विद्यालयो के प्रधानाचार्यो तथा उनके स्टाफ द्वारा दिये गये सहयोग तथा गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियो को आवास तथा भोजनादि की सुविधा देने के लिए श्री जोगीराम, श्री वेदसिह, श्री जभगवान एवं श्री धर्मपाल आर्य के परिवार का धन्यवाद दिया गया।

—**केदारसिंह आर्य**, प्रधान
आर्यसमाज जूआ जिला सोनीपत

५००० से अधिक ईसाई वैदिक धर्म में दीक्षित

गत २१, २२ जनवरी को विशाल वनवासी आर्य महासम्मेलन एव शुद्धि समारोह ग्राम तोलमा मे अत्यन्त हर्षमय वातावरण मे उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी व्रतानन्द जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इसमे २१३० ईसाई परिवारों के लगभग ५००० सदस्यों ने वैदिक धर्म ग्रहण किया। इस कार्यक्रम का सचालन एव दीक्षा यज्ञ श्री प० विशिकेशन जी शास्त्री, उपप्रधान उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा एव ब्र० विनयकुमार नैष्ठिक ने करवाया। इस कार्यक्रम मे आशीर्वाद देने के लिये म०प्र० एव विदर्भ आर्य प्रतिनिधि सभा के मत्री श्री लक्ष्मीनारायण जी भार्गव पधारे थे। उन्होने सभी दीक्षित सदस्यो का चरण धोकर सम्मान किया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप मे क्षेत्रीय उत्साही सासद विष्णुदेव साय एव भाजपा के कई अधिकारी भी उपस्थित थे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री स्वामी सुमेधानन्द जी भी अन्तिम दिन आशीर्वाद देने के लिये पहुच गये थे। दीक्षित लोगो को आशीर्वाद देने एव उत्साहित करने के लिए दयानन्द सेवाश्रम सघ नई दिल्ली की महामत्री पूज्या माता प्रेमलता भी पधारी थीं। ध्यान रहे दयानन्द सेवाश्रम सघ के सहयोग से ही तोलमा मे एक मिडल स्कूल श्री स्वामी धर्मानन्द जी की देखरेख मे चल रहा है।

वनवासियो के सम्मेलन एव शुद्धि समारोह को देखने के लिये श्री स्वामी देवानन्द जी हालैण्ड से विशेष रूप से पधारे थे। वे वनवासी लोगो को देखकर हर्षविभोर होगए। इस अवसर पर वेद-पारायण महायज्ञ हुआ तथा आर्य वीरदल का शिविर भी लगाया गया था।

इस समारोह का आयोजन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान एव गुरुकुल आश्रम आमसेना के आचार्य श्री स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती की प्रेरणा पर हुआ था। सारी आर्थिक व्यवस्था गुरुकुल की तरफ से स्वामी जी ने कर दी थी।

इस आयोजन की व्यवस्था एव इसे सफल करने मे श्री प्रहलादप्रसाद जी आर्य श्री वेदपाल जी आर्य, श्री त्रिनाथप्रसाद जी, श्री जोगीराय जी, श्री पीताम्बर प्रसाद जी एव विद्यालय के उत्साही अध्यापको ने विशेष परिश्रम किया। सारा कार्यक्रम अत्यत हर्षमय वातावरण मे सम्पन्न हुआ।

गुरुकुल आश्रम आमसेना (उडीसा)

गुरुकुल आश्रम आमसेना का वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

गत दिनाक ९, १०, ११ फरवरी को गुरुकुल आश्रम आमसेना का ३३वा वार्षिक महोत्सव एव स्व० श्री चौ० शीशराम जी आर्य का पुण्य स्मृति-दिवस उत्साहमय वातावरण मे श्री कै० रुद्रसेन जी सिन्धु की अध्यक्षता मे मनाया गया।

इस अवसर पर विभिन्न गुरुकुलो के ब्रह्मचारियो की वेद-वेदाग की कण्ठस्थ शास्त्र स्मरण प्रतियोगिता का आयोजन भी था। इसमे विभिन्न गुरुकुलो के ३५ से अधिक छात्र-छात्राओ ने भाग लिया। महोत्सव मे सारे देश के प्रसिद्ध विद्वान् जैसे प० आचार्य सुदर्शनदेव जी शास्त्री (रोहतक), प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु (अबोहर), स्वामी इन्द्रवेश (पूर्व सासद हरयाणा), श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य (जनरल मैनेजर वैद्यनाथ कम्पनी नागपुर) स्वामी श्रद्धानन्द (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा महाराष्ट्र), प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री ओम्प्रकाश वर्मा (यमुनानगर), प० सुरेन्द्रपाल (नागपुर), डॉ० सु०ब० काले (मन्त्री महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिध सभा), अचल के युवा उत्साही विधायक श्री वसन्तकुमार पण्डा (नवापारा), डॉ० कुशलदेव शास्त्री (महाराष्ट्र), डॉ० कृष्णदेव सारस्वत (प्राचार्य शासकीय महाविद्यालय सिमगा), श्री योगेन्द्रकुमार शास्त्री आदि अनेक उच्चकोटि के विद्वान् व वक्ताओ के प्रभावशाली उपदेश हुए। उत्सव के दोनो दिन कन्या गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियो का एव गुरुकुल के ब्रह्मचारियो का अत्यन्त आकर्षक व्यायाम प्रदर्शन ने जनसमुदाय को मोहित कर दिया।

—**सत्यप्रिय सामयुवा**

दयानन्दमठ रोहतक का अठारहवां वैदिक सत्संग

दयानन्दमठ, रोहतक। आर्यसमाज की कार्यस्थली दयानन्दमठ रोहतक मे प्रतिमास के पहले रविवार को वैदिक सत्सग समारोह मनाया जाता है। इस बार ४ मार्च २००१ रविवार को दयानन्दमठ का अठारहवा सत्सग स्वामी इन्द्रवेश जी कार्यकर्ता प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अध्यक्षता मे मनाया जायेगा।

यह समारोह सामाजिक कुप्रथाओ, धार्मिक अधविश्वासो, छुआछूत अशिक्षा, अन्याय एव शोषण के बारे मे वैदिक धर्म की मान्यताओ का प्रचार-प्रसार करने हेतु प्रारम्भ किया गया है। इसका कार्यक्रम प्रात ९-०० बजे यज्ञ से प्रारम्भ होता है फिर १० बजे यज्ञ प्रसाद की व्यवस्था की जाती है। १०-२० बजे से ११-०० बजे तक ईश्वरभक्ति के गीत व भजनो का कार्यक्रम होता है। ठीक ११-०० बजे से १२-०० बजे तक एक वैदिक विद्वान् का प्रवचन होता है। इस बार सत्सग मे विषय रखा गया है **'जीवन के प्रति यथार्थ दृष्टिकोण'** वैदिक प्रवक्ता के रूप मे आमन्त्रित किये गये हैं गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्रधानाचार्य श्री देवव्रत जी। आप आर्यसमाज के प्रखर वक्ता है।

श्री सन्तराम आर्य ने बताया कि प्रवचन के बाद सभी मिलकर ऋषिलगर मे भोजन करते हैं। इस बार ऋषिलगर की व्यवस्था वैदिक सत्सग समिति दयानन्दमठ रोहतक की तरफ से होगी। श्री आर्य ने अपील की कि सभी आर्य सज्जनो, बहनो एव भाइयो से निवेदन है कि दलबल सहित अपने परिवार के सभी सदस्यों के साथ इस सत्सग में पहुचकर जीवन के यथार्थ को समझें। बहनें केसरिया रग का परिधान तथा आर्यबन्धु केसरिया पगडी बाधकर समारोह में भाग लें।

निवेदक संयोजक सत्संग समारोह

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मुम्बई

दिनांक २३ मार्च से २६ मार्च २००१

परिपत्र

मान्यवर !

सादर नमस्ते।

आपको विदित करते हुए हर्ष होता है कि आर्यसमाज स्थापना के १२५ वर्ष का विशाल कार्यक्रम दिनाक २३ मार्च से दिनाक २६ मार्च, २००१ तक (शुक्रवार से सोमवार) **अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन**, आयोजित किया गया है। समारोह की सफलता हेतु आपसे प्रार्थना है कि निम्न बातो का अवश्यमेव ध्यान रखने की कृपा करे एव अपने सभी पदाधिकारियो, सदस्यो तथा आर्यप्रेमी सज्जनो को, जो सम्मेलन मे आने को उत्सुक हैं, निश्चित रूप से अवगत कराने की कृपा करे।

१ कार्यक्रम स्थल रिक्लेमेशन मैदान, बान्द्रा पश्चिम, मुम्बई - ४०० ०५०

२ दिनाक २६ मार्च को चैत्र शुक्ला प्रतिपदा - आर्यसमाज स्थापना दिवस है।

३ प्रत्येक आगन्तुक को अपने नाम का पजीकरण कराना आवश्यक होगा। पजीकरण शुल्क रु० ५० प्रति व्यक्ति होगा। जो आर्यजन समारोह मे आरहे हैं वे इस राशि को डी डी या मनीआर्डर द्वारा **"आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई"** के नाम से कार्यालय के पते पर भेजने की कृपा करे।

४ भोजन-निवास पजीकृत व्यक्ति को भोजन व निवास हेतु कूपन-पुस्तिका दी जायेगी एव वे ही इसका नि शुल्क लाभ उठा सकेगे। ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ होने से यहा उस समय उष्णता का मौसम होगा।

५ क) आपसे प्रार्थना है कि सम्मेलन के दौरान आप समस्त कार्यक्रमो मे उपस्थित रहे।
ख) जो सज्जन मुम्बई दर्शन पर जाना चाहेगे उनके लिये हम विशिष्ट बस व्यवस्था दिनाक २७, २८ मार्च, २००१ को आयोजित करेगे।

६ जो सज्जन सम्मेलन मे आरहे हैं वे अपने सामान का विशेष ध्यान रखे एव सभी स्थानो पर जेबकतरो से सावधान रहे।

कृपया इस परिपत्र की जानकारी सभी तक पहुचाने की कृपा करे।

—कैप्टन देवरत्न आर्य, सयोजक-अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

जानकारी तथा आवश्यक कार्यवाही हेतु

सभा अपने अतर्गत आनेवाली समाजो को अपने साथ नामपट्ट, बॅनर्स, ओ३म् के झण्डे आदि लाने के लिए अवश्य सूचित करेगे ऐसी प्रार्थना है।

नोट . कुछ आर्यजन किसी कारणवश पूर्व सूचना नहीं दे पायेगे, ऐसा हम अनुभव करते हैं। ऐसे समय पर आनेवाले व्यक्तियो की व्यवस्था तो होगी परन्तु उन्हे कुछ असुविधाओ को सहना पड सकता है। उसके लिए हम अग्रिम क्षमा प्रार्थी हैं।

कार्यालय अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
आर्यसमाज, विट्ठलभाई पटेल मार्ग, माताक्रुज (पश्चिम),
मुबई-४०० ०५४ दूरभाष ६६०२०७५ - ६६११८३४ फैक्स ६६११८३४

विदेशों में....... (पृष्ठ ३ का शेष)

एक कैम्प नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने बैंकाक मे भी स्थापित किया था। यहा लगभग ५ लाख रुपये की आर्यसमाज की सम्पत्ति है।

बर्मा—यहा सन् १९२७ मे आर्यसमाज का प्रवेश हुआ। रगून मे आर्यसमाज का अपना भवन है। सत्यार्थप्रकाश का बर्मी भाषा मे अनुवाद होचुका है। **'अखिल बर्मा आर्यन लीग'** के अधीन १५ आर्यसमाजे हैं—रगून, मिटियाना मौजीक, माडले, मोनयावा कलाव, टाऊनग्री चक, लाशियो, नमदो, जियवाडी आदि। यहा लाखो की सम्पत्ति आर्यसमाज की है।

सिगापुर की आर्यसमाज पूर्वी एशिया की प्रमुख आर्यसमाजो मे है और वहा बहुत अच्छा काम चल रहा है तेजुमुतान द्वीप मे भी दो आर्यसमाजे स्थापित होचुकी हैं।

ईराक—तीन प्रमुख शहर हैं—बगदाद, बसरा और मोसल। इनमें बगदाद मे दो आर्यसमाजे हैं। सन् १८५६ मे अवध पर अग्रेजो का अधिकार हो जाने के पश्चात् अनेक राज परिवार और अमीर-उमराव ईराक में जाकर बस गये, पर उन्होंने अपनी भारतीयता नहीं छोड़ी है। बगदाद की आर्यसमाज सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बद्ध है।

मौरीशस मे ३०० आर्यसमाजे हैं वहा १ अप्रैल १९१० मे आर्यसमाज की स्थापना का श्रीगणेश हुआ था। मौरीशस मे आर्यसमाज और सत्यार्थप्रकाश कैसे पहुचा ? यह रोचक तथ्य अगले अको मे दिया जाएगा।

मुक्तक—

पत्थरों के संग

(१)
मुह की खाई है, खारहे हैं हम।
माथे अपने घिसा रहे हैं हम।
बुत तो बुत हैं, वे बोलते ही नहीं।
खिला रहे हैं, पिला रहे हैं हम।

(२)
मान जाते जो अन्धविश्वासी।
रूह रहती न फिर कभी प्यासी।
पत्थरो को रिझाने की खातिर।
लोग खाते है, रोटिया बासी।

(३)
जुलमतो से घिरा हुआ घर है।
जहालतो का मुहीब मजर है।
हकीकतो से नहीं है जो वाकिफ।
खाक दिल हैं, वे एक पत्थर हैं।

(४)
पत्थरो से जो पड गया पाला।
लग गया है, फिर अक्ल पर ताला।
जानते भी हैं, मानते भी है।
दाल मे कुछ जरूर है काला।

(५)
पत्थरो से भी कुछ हुआ हासिल।
होगा इनसे नहीं खुदा हासिल।
कोशिशे हैं तुम्हारी 'नाज' फिजूल।
बुतपरस्ती से होगा क्या हासिल ?

—नाज सोनीपती

बलिदान/पुस्तकालय भवन के लिये दानी महानुभावों से अपील

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक मे सभा द्वारा एक विशाल बलिदान भवन/पुस्तकालय भवन का निर्माण कार्य आरम्भ होगया है। इस बलिदान भवन/पुस्तकालय भवन मे आर्यसमाज के बलिदानियो के चित्र विवरण के साथ लगाये जायेगे।

सभी दानी महानुभावो से प्रार्थना है कि इस पुनीत कार्य मे अधिक से अधिक धनराशि मनीआर्डर, चैक या बैंक ड्राफ्ट द्वारा अथवा नकद भेजकर पुण्य के भागी बने। जिन सज्जनो का पूर्व मे दान का वचन है वे भी अपना वचन शीघ्र पूरा करने की कृपा करे।

निवेदक

स्वामी ओमानन्द सभाप्रधान
स्वामी इन्द्रवेश कार्यकर्ता प्रधान
प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास सभामंत्री
बलराज आर्य सभा कोषाध्यक्ष
प्रो०शेरसिह पूर्व रक्षाराज्यमंत्री

हिन्दी की उपेक्षा से देश टूट के कगार पर : ओमानन्द

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष ओमानन्द सरस्वती ने कहा कि राष्ट्रभाषा हिंदी की उपेक्षा के चलते राष्ट्र की अखंडता को खतरा पैदा होगया है। एक अनौपचारिक बातचीत में उन्होने कहा कि स्थानीय बोलियों (बोलचाल की भाषा) को बढ़ावा देने की प्रवृत्ति घातक है। उन्होंने कहा कि बिना पूर्ण ज्ञान के जनगणना कर्मी गलत आकडे इकट्ठे कर रहे हैं, जिसके चलते देश की सही तस्वीर चालू जनगणना के बाद सामने नहीं आपाएगी। उन्होने पत्रकारो से बातचीत में कहा कि मातृभाषा के कॉलम मे हिन्दी भाषा भरी जानी चाहिए व दूसरी ज्ञात भाषाओ के कोष्ठको मे सर्वप्रथम सस्कृत व दूसरे नबर पर पजाबी भाषा को वरीयता दी जानी चाहिए। कारण बताते हुए स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने कहा कि सस्कृति सब भाषाओं की जननी है। खुद उर्दू, फारसी, अग्रेजी, सस्कृत, हिन्दी, पजाबी के ज्ञाता ओमानन्द सरस्वती ने कहा कि यूं तो कोई भाषा बुरी नहीं है, किन्तु सरकारी कार्य हिन्दी मे किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा महात्मा गाधी, सरदार वल्लभ भाई पटेल व स्वामी दयानन्द सरस्वती ने गुजरात मे जन्म लेने के बावजूद साहित्य लेखन हिन्दी मे किया। उन्होने कहा कि यदि सभी लोग मनमर्जी से भाषा सम्बन्धी आकडे प्रस्तुत करेंगे तो भाषायी आधार पर नए राज्यों की गठन की कवायत के चलते देश टूट के कगार पर पहुच जाएगा। उन्होंने कहा कि हिन्दी का इस्तेमाल देश की एकता के लिए आवश्यक है।

ओमानन्द सरस्वती ने कहा कि अग्रेजी का प्रयोग हमारी दासता का कटु प्रमाण है। केन्द्र सरकारो की ढुलमुल नीति के चलते हिन्दी अपने ही देश में बेगानी हो गई है। हिन्दी आन्दोलन मे जेल जा चुके सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने खोए सम्मान की बहाली के लिए आन्दोलन चलाने की वकालत की है।

आर्य विद्यासभा गुरुकुल कांगड़ी हरद्वार के डा० रणजीतसिंह प्रधान और प्रिंसिपल चन्द्रदेव वरिष्ठ उपप्रधान चुने गये

आर्य विद्या सभा गुरुकुल कांगडी हरद्वार के मत्री डा० प्रकाशवीर विद्यालंकार ने रोहतक स्थित सभा के उपकार्यालय से वक्तव्य जारी करके कहा है कि १७-२-२००१ को आर्यसमाज मंदिर हनुमान रोड नई दिल्ली में आयोजित आर्य विद्या सभा की कार्यकारिणी की बैठक में डा० रणजीतसिह को आगामी चुनाव होने तक सर्वसम्मति से प्रधान तथा प्रिंसिपल चन्द्रदेव को उपप्रधान चुना गया। गौरतलब है कि स्व० श्री सूर्यदेव के निधन के बाद प्रधान का पद रिक्त होगया था और डा० सिह इस समय वरिष्ठ उपप्रधान होने के नाते कार्यवाहक प्रधान के रूप मे कार्य कर रहे थे।

बैठक में पूर्व प्रधान स्व० सूर्यदेव तथा गुजरात भूकम्प मे मृतकों के प्रति शोक प्रस्ताव पारित करके श्रद्धाजलि भी अर्पित की गई। अन्य महत्त्वपूर्ण निर्णयो में गुरुकुल संस्थाओं की आर्थिक व्यवस्था को ठीक करना, प्रबन्ध व्यवस्था का पुनरीक्षण करना, बैंक खातों की आपरेशन विधि की विवेचना तथा संविधान मे सशोधन करना शामिल है। संविधान सशोधन समिति में डा० प्रकाशवीर विद्यालकार, डा० महेश विद्यालकार और श्री ऋषिपालसिह एडवोकेट को शामिल किया गया है। कार्यकारिणी ने डा० महेश विद्यालकार की माग पर अधिकतम तीन महीने में साधारण सभा की बैठक बुलाकर नये चुनाव करवाने का भी निर्णय लिया है।

डा० विद्यालकार ने बताया कि बैठक मे स्वामी ओमानन्द सरस्वती, प्रो० शेरसिह, प० हरबसलाल शर्मा, डा० के०के० पसरीजा, डा० सच्चिदानन्द शास्त्री, श्री ऋषिपालसिह एडवोकेट, श्रीमती प्रभातशोभा, डा० धर्मपाल, प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास और श्री तेजपाल मलिक भी उपस्थित थे।

आर्य केन्द्रीय सभा रोहतक द्वारा प्रेषित भूकम्प राहत सामग्री गांधीधाम में वितरित

राहत-दल सकुशल वापिस लौटा

आर्य केन्द्रीय सभा, रोहतक के तत्त्वावधान मे रोहतक नगर की सभी आर्य सस्थाओ के सम्मिलित प्रयास से दिनाक ६-२-२००१ को एक ट्रक राहत सामग्री भेजी गई जिसमे दस×सवा तीन फिट की स्टील की १०४ चद्दरे, २१ शामयाने, २५ कनौत, २१ गद्दे, ५० कम्बल, ३० बाल्टिया, १०० हवनकुण्ड, ५ बोरी सामग्री, ३ टीन देसी घी १५ पीपे अचार, १० स्टेचर, ८ किलो चायपत्ती, काटन पट्टिया कुछ खाने का सामान खजूर, गुड, चना आदि सामान तथा नये व पुराने कपडे भेजे गये। इस राहत सामग्री के साथ दस आर्य वीरो का (दल) श्री वेदप्रकाश आर्य महामत्री आर्यवीर दल हरयाणा तथा मुलखराज आर्य मडलपति आर्यवीर दल रोहतक के नेतृत्व मे भेजा गया जिन्होंने विपरीत परिस्थितियों मे दिनाक ६-२-२००१ से १७-२-२००१ तक गाधी धाम आर्यसमाज के सहयोग से लगभग ३५-४० ग्रामो मे आवश्यकतानुसार राहत सामग्री का वितरण किया तथा मलबे से शवो को निकालकर नियमानुसार उनका दाह-सस्कार करवाया जिसमे घी-सामग्री का प्रचुर मात्रा मे प्रयोग किया। आर्य केन्द्रीय सभा द्वारा नकद भेजी गई राशि से चारा खरीदकर पशुओ को भूखे मरने से बचाया। यह सारा राहत कार्य ब्र० आचार्य नरेश जी, आचार्य देवव्रत जी प्रधान सेनापति सार्वदेशिक आर्यवीर दल, नई दिल्ली तथा आर्यसमाज गांधीधाम के अधिकारियो की देखरेख मे अब भी चल रहा है।

आर्य केन्द्रीय सभा रोहतक के महामत्री श्री देशराज आर्य ने बताया कि सारी राहत सामग्री जिसके वितरण की एक सूची दिनाक ६-२-२००१ को प्रस्थान समय उपायुक्त जिला रोहतक को दे दी गई थी। आवश्यकतानुसार समय पर वितरण करके आये सभी स्वयसेवको का सभा हार्दिक धन्यवाद करती है।

वार्षिक उत्सव सम्पन्न

(१) आर्यसमाज गुरुकुल मटिण्डू जिला सोनीपत का वार्षिक उत्सव दिनाक १० व ११ फरवरी २००१ को बडी धूमधाम से मनाया गया जिस पर आचार्य महेश्वर व आचार्य यशपाल जी के मधुर भाषण हुये। गुरुकुल की प्रणाली को सुचारु रूप से चलाने के लिये अवगत कराया ब्रह्मचारियो के मधुर भजन हुये। इसके साथ-साथ आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के श्री जयपालसिह आर्य व श्री सत्यपाल आर्य भजनोपदेशको के शिक्षाप्रद भजन हुये। सभा को वेदप्रचार दशाश सर्वहितकारी शुल्क कुल मिलाकर १४४९ रुपये की धनराशि दी।

(२) दिनाक १२-१३-१४ फरवरी को गाव रिठाल जिला रोहतक मे श्री जयपालसिह आर्य व श्री सत्यवान आर्य के शिक्षाप्रद भजन हुये। इस गाव रिठाल मे ४० वर्ष के बाद आर्यसमाज का वेदप्रचार हुआ है। आर्यसमाज की स्थापना करके आर्य प्रतिनिधि से सम्बन्ध कराया गया प्रचार मे सैकडों पुरुषो एव महिलाओ ने सभा को वेदप्रचार दशाश सर्वहितकारी शुल्क कुल मिलाकर ९५० रुपये की धनराशि दी।

वार्षिक चुनाव निम्न प्रकार हुआ—श्री रोशनलाल प्रधान, श्री सत्यवीर उपप्रधान, श्री उमेदसिह मत्री, श्री सोमवीर उपमत्री, श्री कुलवीर कोषाध्यक्ष चुने गये।

(३) **विवाह संस्कार पर दान**—श्री मा० करतारसिह दहिया सोनीपत ने अपने पुत्र बिजेन्द्रसिह का विवाह सस्कार श्रीमती कविता पुत्री सुरेन्द्रसिह सैनी गाव नरेला मे वैदिकरीति से श्री रामेश्वर शास्त्री टटेसर द्वारा करवाया गया। निम्नलिखित आर्यसस्थाओ को दान दिया—

(१) आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा रोहतक १०१ रु०, (२) दयानन्दमठ रोहतक ५१ रु०, (३) आर्यसमाज भटगाव (सोनीपत) ५१ रु०, (४) आर्यसमाज नरेला १०१ रु०, (५) कन्या गुरुकुल नरेला १०१ रु०, (६) चौ० छोटूराम धर्मशाला सोनीपत २०२ रु०। कुल ६०७ रु० दान दिया।

—**जयपालसिह आर्य**, सभाभजनोपदेशक

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

आर्यसमाज गोहाना मण्डी (सोनीपत)	१ से ४ मार्च, २००१
श्रीमद्दयानन्द विद्यापीठ गदपुरी (फरीदाबाद)	२ से ४ मार्च, २००१
विशाल आर्य महासम्मेलन (सोनीपत)	४ मार्च, २००१
आर्यसमाज आहुलाना (सोनीपत)	५ से ७ मार्च, २००१
आर्यसमाज मनाना जिला पानीपत	४ से ६ मार्च, २००१
आर्यसमाज मन्धार	१०-११ मार्च, २००१
गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद	१७-१८ मार्च, २००१
आर्ष गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय डिकाडला (पानीपत)	१७-१८ मार्च, २००१
आर्यसमाज सफीदो (जीन्द)	१६ से १८ मार्च, २००१
अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, मुम्बई	२३ से २६ मार्च २००१
आर्यसमाज नरेला (दिल्ली)	१३ से १५ अप्रैल, २००१

—**डॉ० सुदर्शनदेव आचार्य**, वेदप्रचाराधिष्ठाता

आर्य केन्द्रीय सभा रोहतक के तत्त्वावधान में ऋषि बोधोत्सव सम्पन्न

(महाशिवरात्रि पर्व)

रोहतक नगर की सभी आर्यसमाजो एव आर्य सस्थाओ के सयुक्त प्रयास से आर्य केन्द्रीय सभा रोहतक के तत्त्वावधान में ऋषि बोधोत्सव २१-२-२००१ को धन्वन्तरी आर्य कन्या उच्च विद्यालय मे ९ से १ बजे तक समारोह पूर्वक मनाया गया जिसमे पब्लिक स्कूल, धन्वन्तरी आर्य कन्या उच्च विद्यालय आर्य वीरदल के छात्र-छात्राओ के भाषण एव समूहगान आकर्षण के स्रोत थे। प० विश्वामित्र शास्त्री (हिसार), डा० सुरेन्द्रकुमार, प० योगेशदत्त आर्य (बिजनौर), चौ० राममेहर एडवोकेट, प० सुखदेव शास्त्री, प० सुभाष जी, ब्र० वीरेन्द्र जी (कच्छ गुजरात) ने महर्षि दयानन्द के जीवन पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के पश्चात् प्रीतिभोज (ऋषिलगर) का आयोजन किया गया। अन्त मे आर्य केन्द्रीय सभा रोहतक के प्रधान श्री एस आर० विनायक तथा महामत्री देशराज आर्य ने आगन्तुक विद्वानो, समाज के अधिकारियों तथा आर्यजनता का धन्यवाद किया।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के बढ़ते कदम

दयानन्दमठ रोहतक। आर्यसमाज का युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद जहा एक ओर राष्ट्र की भावी पीढी के चरित्रनिर्माण एव राष्ट्रभक्ति की भावना जागृत करता है, वहीं पर यह संगठन **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** के वैदिक सिद्धान्त को चरितार्थ करते हुए मानव मात्र के कल्याण हेतु अग्रसर है। भारतवर्ष के ५२वें गणतन्त्र दिवस की प्रात वेला में आये गुजरात के विनाशकारी भूकम्प में सहायतार्थ एक ट्रक पहली खेप के रूप में रवाना किया गया। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद की हरयाणा इकाई के अध्यक्ष एव संगठन के प्रेस सचिव श्री सन्तराम आर्य ने पत्रकारों को बताया कि कम्बल ४००, दरी १००, महिलाओं की साडिया २५०, गद्दे १५० तथा ६० कट्टे चावल, १० कट्टे दाल तथा १०० टैंटो के साथ खाने का अन्य सामान व बच्चो की ४०० ड्रेसें आदि सामान लेकर आर्यसमाज शक्तिनगर दिल्ली से परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगवीरसिंह एडवोकेट के नेतृत्व में भेजा गया है। सामान के ट्रक को हरी झण्डी दिखाई आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान डा० श्री शिवकुमार शास्त्री ने। इस सामान के साथ श्री जगवीरसिंह के इलावा आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के उपप्रधान व पुरोहित सभा के मन्त्री श्री प्रेमपाल शास्त्री व सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् उ०प्र० इकाई के अध्यक्ष ब्र० रामफल पहलवान तथा परिषद् की राजस्थान इकाई के अध्यक्ष श्री धर्मवीर जी पत्रकार और आचार्य यशोवर्धन भी साथ गये हैं। ये सामग्री अपने हाथों से बांटेंगे तथा कहा-कहा, किस-किस चीज की जरूरत है, इसके लिए निर्देशन भी करेगे।

इस अवसर पर आर्यसमाज शक्तिनगर दिल्ली की प्रधाना श्रीमती लीलावती गुप्ता भी अपने सभी सहयोगियों के साथ उपस्थित थी। श्री सन्तराम आर्य ने बताया कि यह सारा सामान भुज क्षेत्र में कच्छ सीमा के पास भेजा जायेगा जहा पर सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् एक गाव का पुनर्निर्माण का कार्य करेगा तथा दयानन्दनगर नाम से नया नगर बसाया जायेगा।

—**रविन्द्र आर्य**, कार्यालयमंत्री
सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरयाणा

वेदप्रचार मण्डल हिसार का उत्सव

दयानन्दमठ, रोहतक। आर्यसमाज जाण्डवाला (भादु) जिला फतेहाबाद (हरयाणा) का वार्षिक महोत्सव १४-१५ फरवरी २००१ को बडी धूमधाम से सम्पन्न होगया। यह उत्सव वेदप्रचार मण्डल जिला हिसार के तत्त्वावधान मे मनाया गया। इसकी सफलता हेतु वेदप्रचार मण्डल सिरसा का भी विशेष योगदान रहा।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् की हरयाणा प्रान्तीय इकाई के अध्यक्ष ने बताया कि इस सम्मेलन मे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यकर्ता प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी, सभा उपप्रधान एवं पूर्व एस०डी०एम० चौ० सूबेसिंह जी, श्री धर्मचन्द जी पूर्व एम०डी० ने पहुचकर अपने विचार रखे।

इस अवसर पर एक और जहां स्वामी इन्द्रवेश जी ने लोगों को शराब जैसी नशीली वस्तुओं से बचने के लिए प्रेरित किया वहीं चौ० हरिसिंह सैनी ने कन्या गुरुकुल का प्रस्ताव रखा। इसके बाद आर्यसमाज जाण्डवाला के प्रधान ने गुरुकुल के लिए भूमि देने की घोषणा की। चौ० सूबेसिह पूर्व एस०डी०एम० ने कन्या गुरुकुल के लिए एक आई०ए०एस० लडकी जो डी०सी० के पद पर कार्यरत है, उसे इस संस्था की प्रधानाचार्या बनाने की जिम्मेदारी ली। आर्यसमाज नागौरी गेट हिसार की तरफ से एक लाख रुपये कन्या गुरुकुल के निर्माण हेतु देने की घोषणा हुई। इसी कडी मे आर्यसमाज सिरसा की ओर से इक्कीस हजार रुपये देने की घोषणा चौ० हरलाल जी द्वारा की गई। वेदप्रचार मण्डल हिसार के प्रधान चौ० बदलूराम आर्य ने कन्या गुरुकुल सचालन में अपना पूरा समय देने की घोषणा की।

इस मौके पर उपदेशकों में श्री पं० रामनिवास आर्य पानीपत, प० चन्द्रभान जी आर्य, बहिन पुष्पा शास्त्री रिवाडी तथा गुरुकुल धीरणवास के कुलपति स्वामी सर्वदानन्द जी, सेठ राजेन्द्र आर्य हासी कोषाध्यक्ष वेदप्रचार मण्डल हिसा, श्री जगदीशचन्द्र बालसमन्द, चौ० रणसिह जी पूर्व विधायक व वेदप्रचार मण्डल सिरसा तथा चौ० महेन्द्रसिह प्रधान गुरुकुल धीरणवास ने स्टेज का सयोजन किया।

—**सन्तराम आर्य**, प्रदेशाध्यक्ष
सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरयाणा

सूचना

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय, हरद्वार ४ मार्च २००१ को अपनी स्थापना के शताब्दी वर्ष में प्रवेश कर रहा है। यह निश्चय ही हम सबके लिए परम गौरव का क्षण है।

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय परिवार इस अवसर पर शताब्दी वर्ष के अन्तर्गत अनेक कार्यक्रमो की योजना बना रहा है जो साल भर चलते रहेगे। इन सब कार्यक्रमों के शुभारम्भ का उद्घाटन समारोह रविवार ४ मार्च २००१ पूर्वाह्न १०-०० बजे विश्वविद्यालय भवन मे होना निश्चित किया गया है।

शताब्दी समारोह समिति के मुख्य सयोजक के नाते आप सबको हम गुरुकुल परिवार के सभी सदस्यों एव प्रशासन की ओर से सादर सप्रेम आमत्रण है। आप सब अपने-अपने समाजों/परिवारों सहित पधारकर अपनी उपस्थिति से इस अवसर की शोभा, गौरव और हमारा मनोबल बढाकर हमें अनुगृहीत करे। —**डा० बी०डी० जोशी**, मुख्य सयोजक

सभामंत्री राजभाषा संघर्ष समिति दिल्ली द्वारा सम्मानित

राजभाषा संघर्ष समिति, ए-४/१५३, सैक्टर-४, रोहिणी, दिल्ली-११००८५

भाषा भारती गौरव सम्मान

श्रीमान् प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास जी निवासी रोहतक (हरयाणा) को इस वर्ष २००० मे हिन्दी/अन्य भारतीय भाषाओ के विकास तथा व्यवहार पक्ष को सम्पुष्ट करने मे अतिविशिष्ट योगदान के निमित्त, माननीय प्रो० रासासिह रावत ससद-सदस्य की अध्यक्षता मे, दिल्ली विश्वविद्यालय में आयोजित समारोह मे, भाषा-भारती-गौरव सम्मान का प्रतीक स्मृति-चिह्न सादर भेट किया गया।

(अश्विनीकुमार पाठक) — अध्यक्ष
(श्यामलाल) — महासचिव

दिनांक २८ जनवरी, २००० ई०

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से सभामत्री प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास को बधाई।

(डा० सुदर्शनदेव आचार्य)
सभा उपमत्री एव वेदप्रचाराधिष्ठाता

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ४६८७४, ५७७७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ४०७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०१
पंजीकरणसंख्या टैक/एच.आर./49/रोहतक/99 ☎ ०१२६२-४०७२२

रोहतक

प्रधानसम्पादक : प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामन्त्री **सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री** **सहसम्पादक :- डा० सुदर्शनदेव आचार्य**

वर्ष २८ अंक १६ १४ मार्च, २००१ वार्षिक शुल्क ६०) आजीवन शुल्क ६००) विदेश में १० पौंड एक प्रति १-२५

राष्ट्र शक्तिशाली कब बनता है ?

भद्रमिच्छन्त ऋषय. स्वर्विदस्तपो दीक्षामुपनिषेदुरग्रे।
ततो राष्ट्र बलमोजश्च जात तदस्मै देवा उपसनमन्तु।। अथर्व १९।४१।१
ऋषि ब्रह्मा। देवता **ब्रह्मा।** छन्द **त्रिष्टुप्।।**

अन्वय-- स्वर्विद ऋषय भद्रम् इच्छन्त अग्रे तप दीक्षाम् उपनिषेदु ।
तत राष्ट्रम्, बलम् ओजश्च जातम् तत् अस्मै देवा उपसनमन्तु।।

शब्दार्थ--(स्वर्विद) सुख-शान्ति को जानने और प्राप्त करनेवाले **(ऋषय.)** ऋषियों ने **(अग्रे)** सर्वप्रथम **(तप)** सुखदु खादि द्वन्द्वसहन की क्षमता **(दीक्षाम्)** नियमव्रतादि को **(उपनिषेदु)** ग्रहण किया। **(तत)** उस तप और दीक्षा के आचरण से **(राष्ट्रम्)** राष्ट्रीयभावना **(बलम्)** राष्ट्रीयबल **(ओजश्च)** ओज-राष्ट्रीय प्रभाव तथा रौब **(जातम्)** उत्पन्न हुआ **(तत्)** इसलिए **(अस्मै)** इस राष्ट्र के सम्मुख **(देवा)** देव भी शक्ति-सम्पन्न भी **(उपसनमन्तु)** झुके. उचित रूप से सत्कार करे।

व्याख्या--मन्त्र मे मुख्यरूप से एक ही विचार दिया गया है कि देश को राष्ट्र का रूप देकर उसे शक्ति-सम्पन्न और गौरवास्पद बनाने के लिए आवश्यक है कि देशवासी तपस्वी और दीक्षित बने। इन मुख्य गुणों के आचरण से देश में अतुलबल का उद्भव होगा और उसके ओजस्वी स्वरूप को देखकर बडे-बडे राष्ट्र उसके सम्मुख नतमस्तक होगे।

अब इस पर विस्तार से विचार कीजिये। बडे सघर्ष, त्याग, तप और बलिदानो के बाद लगभग एक हजार वर्ष के पश्चात् १५ अगस्त सन् १९४७ को हमारा देश स्वाधीन हुआ।

स्वतन्त्रता का जो बाह्यरूप देखने में आया और जिसका बहुधा प्रचार भी किया गया, वह यह है कि अग्रेज ने अहिंसा के आन्दोलन से प्रभावित होकर देश की प्रभुसत्ता भारतवासियों को सौंपी। भ्रम मे आकर अनेक वक्ता यह कहते सुने गये और बहुत-से लेखकों ने लिखा भी कि भारत ने रक्त की एक बूद बहाये बिना अपनी स्वाधीनता प्राप्त की। किन्तु स्वतन्त्रता सघर्ष के इतिहास से यह तथ्य नितरा सुस्पष्ट है कि ५ मई १८५७ के मगलपाडे के पावन बलिदान से लेकर ३० जनवरी १९४८ के महात्मा गांधी के बलिदान तक, बलिदानियों की यह इतनी लम्बी पंक्ति है कि उसे देखते हुए यह उचित रूप से कहा जा सकता है कि इन स्वाधीनता के दीवानों ने अपने उष्णरक्त से दासता की अन्धकारपूर्ण रात्रि को उष.काल के रूप मे परिवर्तित किया और उसी के बाद १५ अगस्त सन् ४७ को स्वाधीनता का सूर्य उदय हुआ।

किस-किस प्रकार के महत्त्वपूर्ण बलिदान हुए उसका थोडा-सा प्रसगोपात्त दिग्दर्शन कराना जहा विषय के प्रतिपादन की दृष्टि से उचित है, वहा भारत की स्वाधीनता के भव्य भवन की नींव मे लगे दृढ पाषाण स्वरूप उन बलिदानियो के प्रति कृतज्ञतापन भी अत्यावश्यक है। स्वतन्त्रता की दीप शिखा पर अपने को आहुत करनेवाले इन पतगों के मन में इतनी महत्त्वाकांक्षा तो चमक ही उठती थी-

शहीदों के मज़ारों पे लगेंगे हर बरस मेले।
वतन पे मरनेवालों का यही बाकी निशा होगा।।

कलकत्ते के स्थान पर दिल्ली को राजधानी बनाने के अग्रेज सरकार के निर्णय को मूर्तरूप देन के लिए तत्कालीन वायसराय लार्डहार्डिंग की दिल्ली के चादनी चौक में हाथी पर सवारी निकल रही थी। सड़कों पर लोगों की अपार भीड थी। मकानों की छतें दर्शनार्थी स्त्री-पुरुषों से पटी पड़ी थीं। बहुत आकर्षक और प्रभावपूर्ण दृश्य था। चारों ओर से पुष्प और हारों की वर्षा होरही थी। इतने में एक क्रान्तिकारी ने फूलों के साथ ही वायसराय के हाथी पर बम फेक दिया। बम के फटते ही वायसराय का अगरक्षक मारा गया। वायसराय मूर्छित होगये और सारे जुलूस मे भगदड मच गयी। पुलिस ने सारे चादनी चौक की नाकाबदी करके अपराधी की खोज प्रारम्भ करदी।

पूरा प्रयत्न करने पर भी अपराधी का कुछ पता न चला। तब सी आई डी की आशकाओ के आधार पर देश भर मे से ११३ व्यक्ति गिरफ्तार किये गये। इन पकडे गये व्यक्तियो मे पश्चिमी पजाब के जेहलम जिले के भल्ला करियाला गाव के एक प्रतिष्ठित परिवार के नवयुवक, भाई परमानन्दजी के सहोदर, भाई बालमुकुन्द भी थे।

बालमुकन्द का विवाह तो होचुका था, किन्तु मुकलाबा (गौना) न हुआ था। बालमुकुन्द की पत्नी का नाम रामरखी था। बालमुकुन्द को गिरफ्तार साथियो के साथ दिल्ली की जेल मे जहा आजकल मौलाना आजाद मेडिकल कालिज है, एक कालकोठरी मे बन्द कर दिया गया। जेल मे रामरखी परिवार-जनो के साथ अपने पति के दर्शन करने आयी। विवाह के बाद अपने पति को देखने का रामरखी का यह पहला अवसर था। गर्मियो के दिन थे। जेल की कोठरी तग, घुटनभरी और अन्धकारपूर्ण थी। रामरखी ने अश्रुपूर्ण नयनो से पति को देखकर नमस्ते की और पूछा रात को सोने के लिए क्या कहीं और लेजाते हैं ? बालमुकुन्द ने मुस्कराकर उत्तर दिया, कैदी हू, कोई शाही मेहमान नहीं कि जिसकी सुख-सुविधा के लिए दिन मे कहीं और रात मे कहीं, विश्राम का प्रबन्ध किया जाय। इसी कोठरी मे रात भी काटनी पडती है। रामरखी ने थोडी देर बाद पूछा। खाने को क्या देते हैं ? भाई बालमुकुन्द की जेब मे आधी रोटी पडी थी, उसे रामरखी की ओर बढाते हुए कहा-ऐसी दो रोटियां एक समय मे दी जाती हैं। रामरखी ने रोटी अपने दुपट्टे के कोने मे बाधली। दिल्ली से लौटकर रामरखी अपनी ससुराल भल्ला कटियाला (जिला जेहलम) गयी। अपने मकान की सबसे तग कोठरी मे घासफूस बिछाकर अपने पति के समान भूमि पर लेटने बैठने लग गयी। जेल की रोटी रामरखी ने चखकर देखी। उसमे उसे राख मिली हुई लगी तो तो अपने आटे मे भी उसने राख मिलाली और उतने ही वजन की दो रोटी दोपहर और रात को खानी प्रारम्भ करदी। जब तक भाई बालमुकन्द पर केस चलता रहा रामरखी उसी तपश्चर्यापूर्ण स्थिति मे भगवान् का भजन करती रही। अन्त मे केस का निर्णय हुआ बालमुकन्द को फासी पर लटका दिया गया।

यह दारुण और हृदयविदारक समाचार भल्ला कटियाला भी पहुचा। रामरखी ने अन्न-जल त्याग दिया और ग्यारह दिन रात उसी कोठरी में मौन प्रभु-भजन करती रही। अन्तिम दिन उठकर स्नान किया, वस्त्र बदले थोडासा स्थान गोबर से लीपकर स्वच्छ किया और आसन पर बैठकर प्रभु का ध्यान किया। अन्त मे अपने पति को सम्बोधित करके कहा, आज आपको ससार से गये हुए दस दिन बीत गये, आपकी प्रियतमा इससे अधिक आपके वियोग को सहन नहीं कर सकती। यह कहते हुए एक लम्बे श्वास के साथ उसने अपनी जीवनलीला समाप्त करदी। तप और दीक्षा की भट्टी मे तपे हुए व्यक्तियो के बलिदान से स्वतन्त्रता की प्राप्ति हुई है।

ऐसे-ऐसे हजारो बलिदानो के बाद यह स्वाधीनता हमे मिली है। लोकमान्य तिलक के जीवन की एक घटना का उल्लेख किये बिना नहीं रहा जारहा।

लोकमान्य बालगगाधर तिलक को भारत से निर्वासित करके माडले की जेल मे बन्द कर दिया गया। गीतारहस्य नाम की अमरकृति उसी जेल मे लिखी गई। जब वे माडले की जेल मे थे, तभी इधर भारत मे उनकी पत्नी सत्यभामा की ८८ वर्ष की वय मे मृत्यु होगई। भारत से तार द्वारा यह दु खद समाचार माडले के जेलर को भेजा गया। माडले का जेलर तिलक की विद्वत्ता और आचार-व्यवहार की पवित्रता को देखकर उनका श्रद्धालु भक्त बन गया था। उस तार को पढकर उसे आघात लगा और अपने मन मे निश्चय किया कि इस दु खद समाचार को देने के लिए मुझे स्वय जाना चाहिए, उनके दु खी हृदय को सान्त्वना के दो शब्द कहकर धैर्य भी बधाना चाहिए।

जेलर तार का कागज हाथ मे पकडे तिलक के कमरे पर पहुचा। तिलक अपने ग्रन्थ के लेखन मे व्यस्त थे। जेलर ने तिलक का अभिवादन करके तार का कागज उनके आगे दिया। तिलक ने उसे पढा और उलटा करके सामने की पुस्तक पर रख दिया। तिलक गम्भीर और निस्तब्ध भाव से बैठे रहे। जेलर का अनुमान था कि देश से निर्वासित होने से ही तिलक का हृदय खिन्न है और उसपर भी जीवनसाथी का वियोग एक वज्रपात के समान होगा। इस स्थिति मे वे बहुत दु खी और विह्वल होंगे तो मैं उनकी सान्त्वना के लिए दो शब्द कहूगा। किन्तु वहा दृश्य ही कुछ और था।

जेलर ने आश्चर्य से तिलक की ओर देखकर पूछा-आपने इस तार को पढा है ? तिलक ने शान्तभाव से उत्तर दिया-हा, मैंने देख लिया है। जेलर ने कहा, इसमे आपकी पत्नी की मृत्यु का दु खद समाचार है। तिलक ने उत्तर दिया, हा, यही बात है। जेलर ने कहा-मैंने अपने जीवन मे आप जैसा कठोर व्यक्ति नहीं देखा, जिसकी आखो से अपनी पत्नी के मरने पर दो आसू भी न गिरे। जेलर के शब्दो ने तिलक को झकझोर डाला। तिलक ने कहा-मेरे सम्बन्ध मे तुम्हारी यह धारणा मेरे साथ न्याय नहीं है। मैं भी ससार के दूसरे गृहस्थियो के समान ही अपनी पत्नी से अनुराग रखता था। इस ससार से उसकी विदाई मेरे लिये अति दारुण और दु खदायी है। किन्तु उसके इस वियोग के अवसर पर आसुओं का न गिरना हृदय की कठोरता नहीं है। अपितु जेलर ! वास्तव मे बात यह है कि मेरी आखो मे जितने भी आसू थे, उन्हे मैं भारतमाता की दु खद अवस्था पर बहा चुका हू। अब मेरी आखो मे कोई आसू नहीं रहा जो मेरी पत्नी के मरने पर निकलकर बाहर आता।

मातृभूमि के प्रति कितनी भावप्रवणता है। तिलक के हृदय का चित्र खींचना हो तो एक उर्दू शायर के शब्दो मे कहा जा सकता है-

गम तो हो हदसे सिवा, अश्क अफशानी न हो।
उससे पूछो जिसका घर जलता हो, और पानी न हो।।

रामप्रसाद बिस्मिल, अश्फाक उल्ला, चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिह, राजगुरु, सुखदेव, खुदीराम बोस, ६३ दिन लाहौर जेल मे भूखा रहकर और तिलमिल करके अपनी जीवनवर्तिका को जलानेवाला यतीन्द्रनाथ दास, मदनलाल ढींगरा और सुभाषचन्द्र बोस और अन्य कितने ही मूल्यवान् जीवन स्वाधीनता सग्राम की भेट हुए।

तो हमने इस त्याग, तपस्या और बलिदानो के पश्चात् अपनी इस स्वाधीनता को देखा है।

किन्तु हमारा दुर्भाग्य है कि हम देश की स्वाधीनता के सघर्ष के समय के सभी उदात्त गुणो को भूल गये हैं। अब चारो ओर स्वार्थपरता, विलासिता और भ्रष्टाचार का नग्न नृत्य होरहा है। युवक और युवतिया अनुशासनहीन और बेनकेल के ऊट हैं। लूटपाट और डाकाजनी की आंधिया चल रही हैं। देश की यह दशा एक विचारशील व्यक्ति के मन मे वेदना उत्पन्न करती है-

क्या किस्मत ने इसी दिन के लिए चुनवाये थे तिनके।
बन जाये नशेमन तो कोई आग लगा दे।।

पाठकवृन्द ! अथर्ववेद के इस मन्त्र मे देश का काया-कल्प करने के लिए कुछ अचूक योगो का वर्णन किया है। यदि वेद के परामर्श के अनुसार हम देशवासियो मे इन विचारो को जगा सके तो यह मातृभूमि की बहुत बडी सेवा होगी।

इस मन्त्र मे पहली बात कही गयी है किसी देश मे उसके उत्थान के लिए आवश्यक है कि उसके नागरिको मे तप और दीक्षा की भावना हो। आर्यो के सास्कृतिक दृष्टिकोण से ये दोनो शब्द बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं। योग के दूसरे अग-नियमो मे तप का तीसरा स्थान है। किसी भी लक्ष्य की पूर्ति के लिए बीच मे आनेवाली समस्त बाधाओ को धैर्यपूर्वक सहते हुए आगे बढते जाने का नाम तप है। इसीलिए शास्त्र मे इसकी दूसरी परिभाषा तपो द्वन्द्वसहनम् भी की गयी है। हानि-लाभ, सुख-दु ख, सर्दी-गर्मी आदि जितने भी द्वन्दू (जोडे) हैं, उनकी चिन्ता न करके कर्त्तव्य पथ पर बढते चले जाना तप कहाता है। इसी भावना से मिलती किसी शास्त्रकार ने तपस्वी की निम्न परिभाषा की है।

यस्य कार्यन्न विघ्नन्ति शीतमुष्ण भय रति ।
समृद्धिरसमृद्धिर्वा स वै तापस उच्यते।।

जिसके कामो मे सर्दी-गर्मी भय-प्रेम ऐश्वर्य और निर्धनता बाधक नहीं बनते और जो निरन्तर लक्ष्य की ओर बढता ही चला जाता है उसे तपस्वी कहते हैं। महाभारत मे यक्ष और युधिष्ठिर का सवाद बहुत प्रसिद्ध है। यक्ष ने अनेक प्रश्न पूछे और युधिष्ठिर ने उनके उत्तर दिये हैं। उनमे एक प्रश्न है-**तप कि लक्षण प्रोक्तम्** तप का क्या लक्षण है ? युधिष्ठिर ने उत्तर दिया-**तप स्वकर्मवर्तित्वम्** अपने कर्त्तव्य का एकनिष्ठ होकर पालन करने का नाम ही तप है। राष्ट्रीय दृष्टि से युधिष्ठिर की तप की परिभाषा बहुत ही उपादेय है। भारत मे स्वाधीनता के बाद से कर्त्तव्यपालन की भावना तो प्राय लुप्त हो गयी है। अग्रेजी के शासन मे दण्ड के भय लोग अपने-अपने काम मे जुटे रहते थे। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद से वह दण्ड का अकुश निकल गया। अब साधारण-सा कर्मचारी भी प्रान्त और केन्द्र मे बिरादरी और रिश्तेदार की कडिया जोडकर रखता है और जब तक धैर्यपूर्वक लम्बी लडाई की तैयारी न करें तबतक आप उसमें कुछ सुधार नहीं कर सकते।

कर्त्तव्यपालन के लिए दृढ निष्ठा तब तक उत्पन्न नहीं होगी जबतक कि देशवासियो का चारित्रिक धरातल ऊचा न हो। अत चाणक्यसूत्र नाम के छोटे-से ग्रन्थ मे राजनीति के कुशल कर्णधार चाणक्य ने तप की परिभाषा करते हुए लिखा **तप सार इन्द्रियनिग्रह**, तप का निचोड जितेन्द्रियता है। अत राष्ट्र मे शक्तिसचार और समृद्धि के लिए वेद सर्वप्रथम नागरिको मे तप को अपनाने का परामर्श देता है। तप मे भी सौष्ठव और निखार लाने के लिए वेद ने कहा नागरिको मे दीक्षा भी होनी चाहिए।

संस्कृत व्याकरण मे, दीक्ष-धातु के मौण्ड्य, इज्या, नियम, व्रत और आदेश ये पाच अर्थ लिखे हुए हैं। सार यह निकला कि राष्ट्र के उत्थान के लिए अच्छे व्रत, नियम और मिलकर काम करने के कुछ सगठन बनाकर देश का शारीरिक, बौद्धिक और आर्थिक विकास करना चाहिए। ये सभी उत्कर्ष के साथ दीक्षा मे समाहित हैं।

तप और दीक्षा के आचरण का लाभ यह होगा कि देश में राष्ट्र-भाव जागृत होगा। एक नागरिक दूसरे के कष्ट को अपना कष्ट समझकर उसके निवारण में सहयोग करेगा। हमारे पैर मे काटा चुभता है तो समस्त शरीर में वह वेदना अनुभव करता है। आंख घायल पैर को देखती है, हाथ काटे को निकालने के लिए दौड पडते हैं और जबतक उस कष्ट के कारण काटे को नहीं निकाल फैंकते तबतक शान्ति से नहीं बैठते। दीक्षा भी समस्त राष्ट्र मे इसी आत्मीयता की भावना को उत्पन्न करेगी।

इस भावना के आते ही देश मे **बलम् ओजश्च जातम्** प्राणशक्ति का सचार होगा, राष्ट्रवासियो का स्वाभिमान जाग जाएगा और फिर ऐसे सगठित देश के सामने **देवा उपसन्नमन्तु** अच्छे-अच्छे शक्तिशाली राष्ट्र भी घुटने टेककर नतमस्तक होगे।

राष्ट्र को शक्तिशाली और सम्मानित बनाने के लिए दूसरा कोई मार्ग नहीं है। इसके लिए आवश्यक है कि देश के वातावरण और शिक्षा को तप और दीक्षा के पवित्र मार्ग की ओर मोडा जावे। (साभार 'आर्यजीवन' जनवरी-२०००)

सम्पादकीय—

यज्ञादि में पत्नी का आसन

सभी गृह्यकार्य सपत्नीक ही करने का विधान है। यज्ञादि धार्मिक अनुष्ठानों मे यजमान पति-पत्नी का आसन यज्ञवेदी के पश्चिम में पूर्वाभिमुख होता है। पूर्व, दक्षिण वा उत्तर दिशा में यथाभीष्ट मुख करके भी बैठ सकते हैं। परन्तु यहा प्रश्न उत्पन्न होता है कि पत्नी पति के बायें हाथ में बैठे अथवा दायें में ? सामान्यतया लोक-व्यवहार में पत्नी की बाई ओर बैठने की परिपाटी चली आरही है। परन्तु कुछ कर्मकाण्डी विद्वान् इसे ठीक नहीं मानते। वे पत्नी को पति के दाहिनी ओर बैठाकर यज्ञादि सम्पन्न करवाते हैं। कर्मकाण्ड अनभिज्ञ साधारणजन यद्यपि इसे ठीक नहीं मानते, पुनरपि वे विद्वानों के आगे चुप रह जाते हैं।

यजुर्वेद के शतपथब्राह्मण काण्ड २, अध्याय ५ में चातुर्मास्यनिरूपण में प्रजोत्पत्ति प्रसग मे द्वितीय ब्राह्मण की १७वीं कण्डिका में–

"स उत्तरस्यामेव पयस्याया मेषीमवदधाति। दक्षिणस्यां मेषमेवमेव हि मिथुन क्लृप्तमुत्तरतो हि स्त्री पुमांसमुपशेते।"

उत्तरी पयस्या पर मेषी को रखता है और दक्षिण की पयस्या पर मेष को। क्योंकि इसी प्रकार ठीक जोडा मिलता है। क्योंकि **स्त्री पुरुष से उत्तर की (बाईं) ओर लेटती है।**

महर्षि दयानन्द सरस्वती संस्कारविधि के गर्भाधानप्रकरण में लिखते हैं–"जिस रात्रि में गर्भस्थापन करने की इच्छा हो, उससे पूर्व दिन में सुगन्धादि पदार्थों सहित पूर्व सामान्य प्रकरण के लिखित प्रमाणे हवन करके निम्नलिखित मन्त्रों से आहुति देनी। **यहा पत्नी पति के वामभाग में बैठे** और पति वेदी के पश्चिमाभिमुख पूर्व, दक्षिण वा उत्तर दिशा में यथाभीष्ट मुख करके बैठे।" (पृष्ठ ३५)।

जब उत्पन्न हुए तब इनकी बालक और बालिका अथवा पुत्र और कन्या सज्ञा थी। विद्या अध्ययनकाल मे ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणी कहलाये। अध्ययनोपरान्त समावर्तन के पश्चात् स्नातक और स्नातिका सज्ञा हुई। विवाह-सस्कार काल में वर और वधू बने। वे ही वर और वधू, वधू के वर के गोत्र की हुए पश्चात् वधू पत्नीत्व को और वर पतित्व को प्राप्त होते हैं। अर्थात् भर्ता और भार्या बनते हैं और गर्भाधान करते हैं।

गर्भाधान से पूर्व के यज्ञ मे ऋषि दयानन्द ने स्पष्ट लिखा है कि **'यहा पत्नी पति के वामभाग मे बैठें'**।

विवाह-संस्कार काल मे वर और वधू को यज्ञकुण्ड के पश्चिम भाग मे प्रथम स्थापन किये हुए आसन पर पूर्वाभिमुख वर के दक्षिणभाग मे वधू और वधू के वामभाग मे वर के बैठाने का विधान किया गया है (पृष्ठ १२२)।

विवाह के पश्चात् रथ नौका कार आदि में बैठाकर वर-वधू को अपने घर ले जाता है तब भी वधू को अपने दक्षिण बाजू बैठाने का विधान सस्कारविधि में है (पृष्ठ १४१)।

बोधायन गृह्यसूत्र (१ ५ ४) मे भी लिखा है–**'अथैना दक्षिणे हस्ते गृहीत्वा स्वान् गृहान् नयति।'** वर के घर जाकर जो हवन होता है वहा पर भी लिखा है–'वधू को अपने दक्षिण भाग में पूर्वाभिमुख बैठावे' (पृ० १४२)।

'सनातन सस्कारविधि' मे विवाह सस्कार के अन्त में **'सुमङ्गलीरिय वधूरिमा समेत पश्यत'** इत्यादि मन्त्र के पश्चात् देशाचार के अनुसार इसी अवसर मे वधू को वर के वामाग में बैठाने का विधान है, जिसे आसन परिवर्तन या पाटडा फेर भी लोकभाषा में कहते हैं। यहा पर कन्या वर से सात वचन भरवाती है अर्थात् सात प्रतिज्ञाये करवाती है, यदि आप ऐसा करे तो मैं आपकी वामागी अर्थात् पत्नी बनना स्वीकार करू। वे प्रतिज्ञा श्लोक इस प्रकार हैं–

तीर्थव्रतोद्यापनयज्ञदान, मया सह त्व यदि कान्त ! कुर्या:।
वामाङ्गमायामि तदा त्वदीयं, जगाद वाक्यं प्रथमं कुमारी।।१।।
हव्यप्रदानैरमरान् पितृश्च, कव्यप्रदानैर्यदि पूजयेथा:।
वामाङ्गमायामि तदा त्वदीयं, जगाद कन्या वचन द्वितीयम्।।२।।
कुटुम्बरक्षाभरणे यदि त्वं, कुर्या पशूना परिपालन च।
वामाङ्गमायामि तदा त्वदीय, जगाद कन्या वचनं तृतीयम्।।३।।
आयव्ययौ धान्यधनादिकाना, पृष्ट्वा निवेश च गृहे निदध्या।
वामाङ्गमायामि तदा त्वदीय, जगाद कन्या वचनं चतुर्थम्।।४।।
देवालयाराम-तडाग-कूप-वापी विदध्या यदि पूजयेथा।
वामाङ्गमायामि तदा त्वदीयं, जगाद कन्या वचन च पञ्चमम्।।५।।
देशान्तरे वा स्वपुरान्तरे वा, पृष्ट्वा विदध्या क्रयविक्रयौ त्वम्।
वामाङ्गमायामि तदा त्वदीयं, जगाद कन्या वचनं च षष्ठम्।।६।।
न सेवनीया परकीयजामा, त्वया भवे कापि च कामकामिनी।
वामाङ्गमायामि तदा त्वदीय, जगाद कन्या वचन च सप्तमम्।।७।।

ऋषि दयानन्द ने इस प्रचलित प्रथा के अनुसार विवाह सस्कार मे वधू को वर के वामांग में बैठाने का विधान न करके **गर्भाधान संस्कार के समय वर के वाम भाग में बैठने का उल्लेख किया है।**

इस विषय में वैदिक सिद्धान्तों के मर्मज्ञ विद्वान् स्व० श्री जगदेवसिंह जी शास्त्री सिद्धान्ती ने अपनी 'वैदिक विवाह पद्धति' पुस्तक में लिखा है–

"स्त्री और पुरुष की अवस्थानुसार कुछ सज्ञायें होती हैं। (१) कुमार-कुमारी, (२) बालक-बालिका, (३) किशोर-किशोरी, (४) छोरा-छोरी, (५) युवक-युवति, (६) वर-वधू, (७) पति-पत्नी और (८) भर्ता-भार्या। पाचवीं अवस्था मे ही विवाह की आयु होती है और चौथी अवस्था मे दोनों मे विवाह की कामना होजाती है। विवाह पद्धति होजाने पर पति-पत्नी होजाते हैं, परन्तु गर्भाधान से पूर्व भर्ता और भार्या नहीं कहलाते। उससे पूर्व भर्ता-भार्या भाव उनमें नहीं होता।

इसका अत्यन्त प्रभावपूर्ण प्रयोजन यह है कि गर्भाधान से पूर्व ही यदि पति-पत्नी का किसी भी कारण मृत्यु आदि से सम्बन्ध टूट जावे तो विधुर व विधवा नहीं कहे जासकते। उनका पुन विवाह होसकता है, क्योंकि उनका कौमार्य बना हुआ है।* गर्भाधान होने पर पति-पत्नी क्षतवीर्य होजाते हैं। ऐसी दशा मे उनका वियोग होजाने पर वे विधुर और विधवा कहलायेंगे। उनका पुनर्विवाह न होकर नियोग होसकता है यदि उनको सन्तान की इच्छा होवे तो। यदि हृदयस्पर्श के पश्चात् ही वधू को वामभाग मे बैठाया जावे, तो महान् अनर्थ होजाता है। **कानून की दृष्टि में वामभाग में बैठाने पर भर्ता और भार्या माने जाते हैं।** ऋषि दयानन्द ने करोडों हिन्दू बालिकाओं पर दया की है। हिन्दूसमाज में जिन लडकियों ने पति का मुख तक नहीं देखा, पति के मर जाने पर वे विधवा समझली जाती थीं। ऋषि दयानन्द द्वारा गर्भाधान के समय ही वामभाग में बैठने का निर्देश देने पर ही ऐसी करोडों हिन्दू बालिकायें विधवा-सज्ञक होने से बच गई। वे कुमारी-सज्ञक ही रहती हैं और उनका पुनर्विवाह होसकता है। अत हृदयस्पर्श के पश्चात् ही पत्नी को वामभाग में भूलकर भी नहीं बैठना चाहिए।" (पृष्ठ १०५-१०६)

प्रथम गर्भाधान सस्कार में पति के वामभाग मे पत्नी के बैठने का स्पष्ट विधान करके द्वितीय पुसवन-सस्कार में इसका पुन निर्देश नहीं किया गया है। तृतीय सीमन्तोन्नयन सस्कार मे लिखा है–एकान्त मे जाके पति-पत्नी के पृष्ठ की ओर बैठकर अपनी पत्नी के केशों को कंघे आदि से सुधार स्वच्छ करके पट्टी निकाल और पीछे की ओर जूडा सुन्दर बाधकर यज्ञशाला मे आवे।

चतुर्थ जातकर्म-सस्कार मे सभी कार्य यजमान अर्थात् बालक का पिता ही पुरोहित के सान्निध्य में सम्पन्न करता है। प्रसूता स्त्री प्रसूत स्थान पर दस दिन तक रहती है। १० दिन छोड ग्यारहवे दिन वा एक सौ एकवें अथवा दूसरे वर्ष के आरम्भ मे पाचवा नामकरण-सस्कार करने का विधान है। इस सस्कार में भी पत्नी-पति के उत्तर भाग अर्थात् **बाईं ओर** पूर्वाभिमुख बैठे ऐसा स्पष्ट निर्देश है। (पृष्ठ ५८)

छठे निष्क्रमण सस्कार मे भी पत्नी **पति के बाए पार्श्व मे पूर्वाभिमुख बैठे** (पृ० ६१)। आगे इस सस्कार मे पत्नी-पति के वामभाग में आकर जल की अजलि भरके चन्द्रमा के सम्मुख खडी रहके **'यददश्चन्द्रमसि'** इत्यादि मन्त्र से परमात्मा की स्तुति करके जल को पृथिवी पर छोड देती है। इसी प्रकार पति जब जल की अजलि भर पूर्वोक्त मन्त्र से परमेश्वर की प्रार्थना करता है तब पुन पत्नी-**पति के बाईं ओर खडी होती है।** इस प्रकार इस सस्कार मे तीन स्थानो पर पत्नी का पति के बाईं ओर बैठने वा खडी रहने का निर्देश है।

इस प्रकार ऋषि दयानन्द के लेखानुसार यज्ञादि धार्मिक कृत्यों मे भार्या वा पत्नी का **स्थान वा आसन पति के वामभाग मे ही होना चाहिये।** मेरे अध्ययन मे ऋषि दयानन्द के ग्रन्थो मे **पत्नी पति के दाहिनी ओर बैठे** ऐसा कहीं भी देखने मे नहीं आया है। ऋषि दयानन्द के अतिरिक्त अन्य प्रामाणिक ग्रन्थो मे भी यदि कहीं ऐसा विधान हो तो अधिकारी विद्वान् प्रमाणपूर्वक लिखने की कृपा करे। अन्यथा पत्नी को पति के दक्षिण भाग मे बैठाकर यज्ञादि करवाने की परिपाटी को छोड देना चाहिये।

सस्कृत साहित्य मे स्त्री का पर्यायवाची **'वामा'** शब्द भी है। **वमति स्नेहमिति वामा।** जो **'टुवम उद्गिरणे'** (भ्वा०प०) धातु से सिद्ध होता है। **वामोरू** आदि मे वाम शब्द सौंदर्यवाचक है। महाकवि कालिदास ने रघुवश (७।८) मे **वामनेत्रा** और मेघदूत (७८,९६) मे **वामलोचना** शब्दो का प्रयोग किया है। अभिज्ञानशाकुन्तलम् (४।१८) मे **"यान्त्येव गृहिणीपद युवतयो वामा कुलस्याधय"** श्लोक मे **'वामा'** शब्द का प्रयोग प्रतिकूल वा विपरीत अर्थ मे किया है। वाम शब्द दाहिने का उलटा (विपरीत) जगत्प्रसिद्ध है।

प० किशोरीदास वाजपेयी ने अपने **'हिन्दी शब्दानुशासन'** मे वर्ण-विचार प्रकरण मे लिखा है–**"दीर्घता या गुरुता प्रकट करने के लिए मात्राओ की स्थिति (या रुख) दाहिनी ओर है। दाहिना अग शक्ति अधिक रखता है। ह्रस्व मात्राओ का रुख (या स्थिति) बाईं ओर है। वाम निर्बल होता है न!"**

पुरुष जहा पौरुष का प्रतीक है वहा स्त्री को इसके विपरीत कमजोर कोमल अथवा अबला तक कहा जाता है। यह बात सभी स्त्री-पुरुष मानते और जानते हैं। इस युक्ति से भी पति की गुरुता और पत्नी की लघुता प्रकट करने की दृष्टि से पत्नी का पति के बाईं ओर बैठना सिद्ध होता है।

–वेदव्रत शास्त्री सिद्धान्तशिरोमणि

---

*मनुस्मृति (अ० ९ श्लोक १७५) के अनुसार जिस स्त्री को पति ने छोड दिया है अथवा स्त्री ने स्वेच्छा से पति को छोड दिया है अथवा स्त्री विधवा होगई है तो ऐसी स्थिति में मनु जी कहते हैं–

सा चेदक्षतयोनि स्याद् गतप्रत्यागतापि वा।
पौनर्भवेन भर्त्रा सा पुन सस्कारमर्हति।। (९।१७६)

सत्यार्थप्रकाश चतुर्थसमुल्लास में महर्षि दयानन्द जी इस श्लोक की व्याख्या में लिखते हैं–

"जिस स्त्री वा पुरुष का पाणिग्रहणमात्र सस्कार हुआ हो और सयोग (न हुआ हो) अर्थात् अक्षतयोनि स्त्री, अक्षतवीर्य पुरुष हो तो उस स्त्री वा पुरुष का अन्य पुरुष वा स्त्री से पुनर्विवाह होना चाहिए और शूद्रवर्ण में भी चाहे कैसा ही हो पुनर्विवाह होसकता है। किन्तु ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य वर्णों में क्षतयोनि स्त्री, क्षतवीर्य पुरुष का पुनर्विवाह न होना चाहिए।"

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मुम्बई

दिनांक २३ मार्च से २६ मार्च २००१

परिपत्र

मान्यवर !

सादर नमस्ते।

आपको विदित करते हुए हर्ष होता है कि आर्यसमाज स्थापना के १२५ वर्ष का विशाल कार्यक्रम दिनाक २३ मार्च से दिनाक २६ मार्च, २००१ तक (शुक्रवार से सोमवार) **अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन**, आयोजित किया गया है। समारोह की सफलता हेतु आपमे प्रार्थना है कि निम्न बातो का अवश्यमेव ध्यान रखने की कृपा करे एव अपने सभी पदाधिकारियो, सदस्यो तथा आर्यप्रेमी सज्जनो को, जो सम्मेलन मे आने को उत्सुक हैं, निश्चित रूप से अवगत कराने की कृपा करे।

१ कार्यक्रम स्थल रिक्लेमेशन मैदान, बान्द्रा पश्चिम, मुम्बई - ४०० ०५०

२ दिनाक २६ मार्च को चैत्र शुक्ला प्रतिपदा - आर्यसमाज स्थापना दिवस है।

३ प्रत्येक आगन्तुक को अपने नाम का पजीकरण कराना आवश्यक होगा। पजीकरण शुल्क रु० ५० प्रति व्यक्ति होगा। जो आर्यजन समारोह में आरहे हैं वे इस राशि को डी डी या मनीआर्डर द्वारा **"आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई"** के नाम से कार्यालय के पते पर भेजने की कृपा करे।

४ भोजन-निवास पजीकृत व्यक्ति को भोजन व निवास हेतु कूपन-पुस्तिका दी जायेगी एव वे ही इसका नि शुल्क लाभ उठा सकेगे। ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ होने से यहा उस समय उष्णता का मौसम होगा।

५ क) आपसे प्रार्थना है कि सम्मेलन के दौरान आप समस्त कार्यक्रमो मे उपस्थित रहें।

ख) जो सज्जन मुम्बई दर्शन पर जाना चाहेगे उनके लिये हम विशिष्ट बस व्यवस्था दिनाक २७, २८ मार्च, २००१ को आयोजित करेंगे।

६ जो सज्जन सम्मेलन में आरहे हैं वे अपने सामान का विशेष ध्यान रखे एव सभी स्थानों पर जेबकतरों से सावधान रहे।

कृपया इस परिपत्र की जानकारी सभी तक पहुचाने की कृपा करे।

—कैप्टन देवरत्न आर्य, सयोजक-अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

जानकारी तथा आवश्यक कार्यवाही हेतु

सभा अपने अतर्गत आनेवाली समाजों को अपने साथ नामपट्ट, बॅनर्स, ओ३म् के झण्डे आदि लाने के लिए अवश्य सूचित करेंगे ऐसी प्रार्थना है।

नोट : कुछ आर्यजन किसी कारणवश पूर्व सूचना नहीं दे पायेगे, ऐसा हम अनुभव करते हैं। ऐसे समय पर आनेवाले व्यक्तियो की व्यवस्था तो होगी परन्तु उन्हें कुछ असुविधाओ को सहना पड सकता है। उसके लिए हम अग्रिम क्षमा प्रार्थी हैं।

कार्यालय · **अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन**
आर्यसमाज, विट्ठलभाई पटेल मार्ग, सातांक्रुज (पश्चिम),
मुबई-४०० ०५४ दूरभाष ६६०२०७५ - ६६११८३४ फैक्स ६६११८३४

बलिदान/पुस्तकालय भवन के लिये दानी महानुभावों से अपील

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक मे सभा द्वारा एक विशाल बलिदान भवन/पुस्तकालय भवन का निर्माण कार्य आरम्भ होगया है। इस बलिदान भवन/पुस्तकालय भवन में आर्यसमाज के बलिदानियो के चित्र विवरण के साथ लगाये जायेंगे।

सभी दानी महानुभावो से प्रार्थना है कि इस पुनीत कार्य में अधिक से अधिक धनराशि मनीआर्डर, चैक या बैंक ड्राफ्ट द्वारा अथवा नकद भेजकर पुण्य के भागी बनें। जिन सज्जनों का पूर्व में दान का वचन है वे भी अपना वचन शीघ्र पूरा करने की कृपा करें।

निवेदक

स्वामी ओमानन्द सरस्वती	**स्वामी इन्द्रवेश**	**प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास**
सभाप्रधान	कार्यकर्ता प्रधान	सभामंत्री
बलराज आर्य		**प्रो०शेरसिंह**
सभा कोषाध्यक्ष		पूर्व रक्षाराज्यमंत्री

भूल-सुधार

७ मार्च २००१ के सर्वहितकारी के पेज न० ८ पर हुड्डा आर्यसमाज के स्थान पर हुड्डा आर्यसमाज पानीपत के नेतृत्व में भूकम्पपीडितों की सहायता के लिए तीन लाख सत्तर हजार की राहत सामग्री लेकर राहत दल रवाना पढा जाए। -सम्पादक

प्रो० चन्द्रप्रकाश आर्य को भाषाभारती गौरव सम्मान

वर्ष २००१ में हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रचार में अतिविशिष्ट योगदान के लिए राजभाषा संघर्ष समिति ए-१४, १५३, सेक्टर-४, रोहिणी, दिल्ली-८५ द्वारा दिल्ली विश्वविद्यालय में आयोजित सम्मान समारोह मे दयालसिह कालेज, करनाल के स्नातकोत्तर हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० चन्द्रप्रकाश आर्य को भाषा-भारती-गौरव सम्मान प्रदान किया गया।

(१) हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं को उचित स्थान दिलवाने हेतु प्रो० आर्य सदा सक्रिय रहते हैं। वर्ष २००० में उन्होंने १४ सितम्बर २००० को राष्ट्रीय डेरी अनुसन्धान सस्थान, करनाल द्वारा आयोजित हिन्दी दिवस समारोह में मुख्यवक्ता के रूप में व्याख्यान दिया।

(२) १४ सितम्बर को ही साथ केनरा बैंक मण्डल कार्यालय, करनाल द्वारा आयोजित हिन्दी माह समापन समारोह में मुख्यअतिथि के रूप में बोलते हुए उन्होने हिन्दी के राष्ट्रीय महत्त्व पर प्रकाश डाला।

(३) ३०-१०-२००० को लघुउद्योग सेवा सस्थान (करनाल), उद्योग 'मत्रालय भारत सरकार द्वारा आयोजित एक दिवसीय राजभाषा सगोष्ठी मे प्रो० आर्य ने 'हिन्दी के विकास में भारतीय भाषाओ का योगदान' विषय पर मुख्यवक्ता के रूप मे व्याख्यान दिया। इस आयोजन मे नगर राजभाषा कार्यान्वियन समिति (गृहमत्रालय भारत सरकार) से जुडे विभिन्न प्रतिष्ठानो के अधिकारी भी थे।

(४) हरयाणा के कालेजों में हिन्दी (अनिवार्य) विषय को अग्रेजी (अनिवार्य) के बराबर पीरियड मिले। इस वक्त बी ए कक्षाओं में अग्रेजी को हिन्दी से तीन गुणा अधिक पीरियड मिलते हैं। इस बारे मे १४ सितम्बर को एक ज्ञापन हरयाणा सरकार के नाम उपायुक्त, करनाल एव अतिरिक्त उपायुक्त करनाल के माध्यम से भेजा गया। इस बारे मे प्रो० आर्य ने सीधे भी ज्ञापन हरयाणा सरकार तथा हरयाणा के राज्यपाल को रजिस्टर्ड डाक से भेजे हैं। उन पर करनाल के विभिन्न कालेजो के छात्रो के हस्ताक्षर भी हैं।

इसके अतिरिक्त समाचारपत्रों में भी प्रो० आर्य हिन्दी तथा अग्रेजी बनाम हिन्दी के बारे मे लिखते रहते हैं।

(१) १२ फरवरी २००० के "अमर उजाला" (चडीगढ) में उनका लेख **"अग्रेजी की पालकी"** प्रकाशित हुआ।

(२) "राष्ट्रीय सहारा" (नई दिल्ली १२-९-२०००) मे उनका लेख हिन्दी की उपेक्षा के लिए गृहमत्रालय तथा भारत सरकार जिम्मेदार" प्रकाशित हुआ।

(३) इसी प्रसग में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र के रिसर्च जर्नल (आर्ट्स) मे उनका शोधपत्र "भारत की राष्ट्रभाषाबन्दी बनाम अग्रेजी" छापने हेतु स्वीकृत हुआ। (देखिये कुरु० यूनि० पत्र स० RJAH/2001/2148/ता० 2/2/2001)

लेखनकार्य के साथ-साथ प्रो० आर्य कई प्रतिष्ठित हिन्दी सेवी सस्थाओं से सम्बद्ध होकर हिन्दी का प्रचार-प्रसार करने मे रत हैं। (१) हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, १९० बहादुरगज इलाहाबाद-३ द्वारा उन्हे १९-२१ मई २००० को नाथद्वारा (राजस्थान) में आयोजित वार्षिक अधिवेशन में प्रतिनिधि के रूप मे आमन्त्रित।

(२) हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग द्वारा १३-१४ सितम्बर २००० को नेल्लोर (आन्ध्र) मे आयोजित अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा सम्मेलन मे भाग लेने हेतु प्रतिनिधि के रूप मे आमत्रित।

(३) प्रो० आर्य की हिन्दी के प्रचार-प्रचार मे गतिविधियों के उपहारस्वरूप भारती परिषद्, प्रयाग के महामत्री द्वारा ३१-१०-२००० को प्रो० आर्य को (१) डा० रामकुमार वर्मा तथा (२) प० कमलापति त्रिपाठी अभिनन्दन ग्रन्थ भेट।

(४) इसी क्रम में हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग द्वारा २५-२६ दिसम्बर २००० को जयपुर मे आयोजित राजेन्द्रशकर भट्ट सारस्वत सम्मान समारोह मे भाग लेने हेतु प्रो० आर्य प्रतिनिधि रूप में आमत्रित किए गए।

(५) अखिल भारतीय भाषा सरक्षण सगठन सघलोक सेवा आयोग शाहजहा रोड, नई दिल्ली-११ की गतिविधियो मे भी भाग लिया है।

(६) भारतीय भाषा सम्मेलन, ए-२, रिग रोड, साउथ एक्सटेशन, भाग-१, नई दिल्ली-४९ के हिन्दी प्रचार प्रसार कार्यों में भाग लिया है तथा उनके सदस्य भी बनाए हैं।

(७) हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं के सन्दर्भ मे प्रो० आर्य मातृभाषा विकास परिषद, के-९ आनन्द पर्वत, नई दिल्ली-११०००५ से भी सम्पर्क में हैं।

(८) प्रो० आर्य राष्ट्रीय हिन्दी परिषद्, मेरठ के नियमित सदस्य हैं। परिषद् की पत्रिका में उनके लेख भी छपे हैं।

(९) अखिल भारतीय अग्रेजी हटाओ आन्दोलन (इन्दौर अध्यक्ष श्री जगदीशप्रसाद वैदिक) की ओर से उन्हें अंग्रेजी अनिवार्य हटाओ आन्दोलन में सहयोग हेतु। सम्पर्क हेतु समय-समय पर पत्र प्राप्त।

(१०) अग्रेजी अनिवार्य हटाओ समिति (नकोदर, पजाब) द्वारा संसद सदस्यों को भेंट करने हेतु पुस्तक "अंग्रेजी अनिवार्य हटाओ" में प्रो० आर्य के लेख "भारतीय भाषाओं की उपेक्षा का कारण अंग्रेजी" को सम्मिलित किया गया है।

लोक-परलोक विचार

दशम-विचार—(अपने को देखो)

❑ शिवप्रसाद उपाध्याय, आर्यसमाज होशियारपुर (पंजाब)

(गताक से आगे)

ससार के बहुत से लोगो का ख्याल यह है कि परमात्मा जीवात्मा से काम करवाता है। परन्तु यह धारणा बिल्कुल गलत है। जब तक यह धारणा बनी रहेगी, तब तक जीवात्मा को न मुक्ति मिलेगी न आनन्द ही मिलेगा। ऐसी अवस्था में हम घर के एक नौकर के समान ही हो गए। जो स्वामी कहेगा, वही नौकर करेगा। यदि स्वामी कह दे कि-'तू जिन्दगी भर नहीं खाना, कुछ पीना भी नहीं, न ही सोना।' क्या उस नौकर का स्वामी उस नौकर के भूख, प्यास और नींद को हटा सकेगा ? ऐसी स्थिति में तो जीवात्मा परमात्मा का हमेशा ही नौकर बना रहेगा, तो न ही उस जीवात्मा की स्वतन्त्र सत्ता रहेगी, न ही उस को कभी मुक्ति का अवसर ही मिलेगा और न ही उस ईश्वर का भी न्यायकारी होना सिद्ध होगा। यदि जीवात्मा को परमात्मा से ही प्रेरित होकर कर्म करने वाला माना जाए, तो सम्पूर्ण वेदशास्त्र और दर्शनशास्त्रो का उपदेश 'जीवात्मा को पुरुषार्थी' बनाने का बेकार रह जाएगा। जबकि दर्शन शास्त्रो मे जीवात्मा की सत्ता को अनादि और स्वतन्त्र कहकर इसके गुणों की चर्चा भी की है–

इच्छा-द्वेष-प्रयत्न-सुख-दुःख-ज्ञानान्यात्मनो लिङ्गमिति। न्याय १-१-१०।

इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुःख और ज्ञान जीवात्मा के गुण हैं। दरअसल इस ससार मे परमात्मा का कार्य अलग है और जीवात्मा का कार्य भी अलग है। परमात्मा कपास का पौधा बनाकर उसमे रूई तो भर देता है परन्तु उस पौधे से रूई निकालना, घर लेजाना, बिनौले छाटना, धागा बनाना, धागे से कपडा बनाना फिर उस कपडे को सीलकर पहनना ये सभी जीवात्मा के काम हैं। यदि जीवात्मा की स्वतन्त्र सत्ता नहीं होती, तो कपडा बनाकर परमात्मा ही हमें क्यो न पहना देता ? हमे अपनी हस्ती और अपने कर्त्तव्य को समझना चाहिए। महर्षि पाणिनि जी भी कर्त्ता को हमेशा ही स्वतन्त्र कहते हैं–

'स्वतन्त्र कर्ता' अष्टाध्यायी १४५४

जहा तक मृत्यु का सवाल है। कई बार हम यह सोचते हैं कि 'यदि समय पर डाक्टर के पास लेजाते, तो शायद यह और भी जीता; यदि ऐसी वस्तु का सेवन नहीं करता, तो और भी जीता।' कई बार एक्सिडेण्ट होकर मृत्यु होजाती है। तब भी हम यही कहने लग पडते हैं-'यदि उस गाडी से नहीं जाता उससे पहली या बाद वाली गाडी से जाता फिर भी तो बचने का अवसर होता। इत्यादि।

सज्जनो ! हमारा ऐसा सोचना सर्वथा बेकार है। मृत्यु अवश्यभवी है। उसे कोई भी नहीं रोक सकता। निमित्त चाहे कुछ भी हो सकता है। प्राय यहा की हर वस्तु मृत्युदायी है। किसी ने कहा था-

जलमग्निर्विष शस्त्र क्षुद्-व्याधि पतन गिरेः।
किञ्चिन्निमित्तमासाद्य देही प्राणान् विमुञ्चति।।

जल, अग्नि, विष, शस्त्र, भूख-प्यास, अनेक प्रकार के रोग लगाना, पहाड-पर्वत आदि से गिरना इत्यादि बहानो के मारे जब कभी भी आत्मा को इस शरीर मे बैठे रहने से खतरा मालूम पडे, तो वह उसी समय इसे छोड देता है।

आपने कभी रास्ते में सफर करते हुए, जहा पर टूटा-फूटा रास्ता या तंग पुल होगा, उसके इस किनारे पर एक सूचक बोर्ड लगा हुआ देखा होगा। उस बोर्ड पर लिखा है 'खतरा'। फर्ज कर लीजिए कि हम अपनी मस्ती से अपनी गाडी पूरी रफ्तारी के साथ ले जारहे हो और उस 'खतरा' लिखे हुए बोर्ड की ओर हमने ध्यान नहीं दिया। यदि दूसरी ओर से भी अपनी पूरी रफ्तारी से आरही होगी, रास्ता एक तो ऊबड-खाबड है, उस पर भी तग हो; तो उस समय अवश्य ही हम एक्सिडेट के भागी बन सकते हैं।

जबकि परिवहन-प्रशासन की ओर से पूरी व्यवस्था की गई थी। 'खतरे' का बोर्ड लगा दिया था। परन्तु हमने उसकी अवहेलना की। उस अवहेलना का फल हमे भुगतना पडा। यदि हम 'खतरे' के बोर्ड को पढ लेते; तो सम्भल कर होशियारी के साथ चलते और आराम से सुस्वस्थ अगले किनारे पहुंच जाते। जहा यह भी लिखा होगा-'धन्यवाद।'

ठीक यही बात इस संसार की और हमारे जीवन की है। इस ससार को ऊबड-खाबड देखकर ही तो परमात्मा ने मनुष्यों के लिए वेदरूपी बोर्ड दे रखा है। उसमें हमारे जीवन के परिवहन के सम्पूर्ण नियम भी लिख रखे हैं। हम उस परमज्ञान का परित्याग करके अपनी ही इच्छित गति से इस ससाररूपी तग, ऊबड-खाबड रास्ते मे चल रहे हैं। जिसका फल हमें इस तंग रास्ते मे ही एक्सीडेंट का शिकार होना पड रहा है। आगे 'धन्यवाद' रूपी बोर्ड तक नहीं पहुच पारहे हैं। यह 'धन्यवाद' रूपी बोर्ड क्या है ? वही तो मुक्ति है। वही तो ससार को पार करना है। संसार को पार करने का अर्थ यह नहीं कि हम इस संसार को छोड़कर किसी और ही जगह पहुचेंगे। ससार को पार करने का अर्थ यही है, कि भौतिक भोगों से पार होकर जन्म-मृत्यु के चक्कर में न फसकर परम आनन्द को प्राप्त करना।

उस परम आनन्द को प्राप्त करने का अधिकारी कौन होगा ? इस प्रश्न के उत्तर में गीताकार करते हैं–

निर्मानमोहा जितसंगदोषा, अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामा।
द्वन्द्वैर्विमुक्ता. सुखदुःखसंज्ञैर्गच्छन्त्यमूढा पदमव्यय तत्।। गीता १५-५

जिनके माया मोह नष्ट होगए हैं। जो भौतिक पदार्थों के सगों से निवृत्त होगए हैं। जिन्होंने अपनी आत्मा को पहचान लिया है। जो नित्य ही परमात्मा के गुणो का चिन्तन करते हैं। जिनकी सम्पूर्ण इच्छाए पूरी होगई हैं। जो सुख दुःख के द्वन्द्वो से मुक्त होगए हैं। वे ज्ञानी पुरुष ही उस अव्ययपद को प्राप्त होकर परम आनन्द मे विचरण करते हैं।

सज्जनो ! आप सभी ने लगातार दस दिन तक मुझसे लोक-परलोक के विचार सुने हैं, एतदर्थ आप सबका धन्यवाद। इस विषय मे और भी विचार किया जाना चाहिए। मेरे से कोई ऐसे शब्द, वाक्य या सिद्धान्त निकल गए हो जो आपको अनुचित लगें उसे क्षमा कर देने की कृपा करें। पुनरपि आप सभी का धन्यवाद। ओ३म् शान्ति शान्ति शान्ति ।।

।। भजन।।

जीवन खतम हुआ तो, जीने का ढंग आया,
जब शमा बुझ गई तो, महफिल में रग आया।।
गाडी निकल गई तो, घर से चला मुसाफिर,
मायूस हाथ मलता, वापस बैरग आया।।
मन की मशीनरी ने, तब ठीक चलना सीखा,
जब बूढे तन के हर इक, पुर्जे में जग आया।।
फुरसत के वक्त मे न, सुमिरन का वक्त निकला,
उस वक्त वक्त मागा, जब वक्त तग आया।।
आयु ने जब ये सारे, हथियार फेक डाले,
यमराज फौज लेके, करने को जग आया।।

उद्‌घाटन

दिनाक १२-२-२००१ को यादव श्री सुरेन्द्रसिंह जी आर्य की दुकान, स्टेशन कोसली, साल्हावास रोड पर पूज्यपाद श्री स्वामी शरणानन्द जी महाराज आश्रम दडोली जी के ब्रह्मत्व मे तथा पूजनीय स्वामी श्री जीवानन्द जी नैष्ठिक के पुरोहित्य मे सम्पन्न हुआ।

यजमान यादव श्री सुरेन्द्रसिह जी ने यथाशक्ति ६० रुपये देकर सर्वहितकारी के नये ग्राहक बने। **—दीनदयाल सुधाकर प्रचार मडलपति, आर्यवीर दल रिवाडी**

आर्यवन रोजड़ का योग-शिविर निरस्त

जनवरी ३० से ही विद्यालय के ब्रह्मचारी और आचार्यवर्ग भूकम्पग्रस्त गावों में जाकर पीडित लोगो की सहायता मे जुटे हुए हैं। अनेक गावों मे जाकर हजारो परिवारों मे तम्बू, कम्बल, वस्त्र, खाद्य-सामग्री, बर्तन आदि वस्तुए वितरित की हैं। अभी भी अनेक केन्द्रो मे सहायता का कार्य चल रहा है।

इस कारण से आर्यवन रोजड मे मार्च-अप्रैल २००१ मे लगने वाला योग-शिविर इस बार नहीं लगेगा, कृपया इस सूचना को अन्य जिज्ञासु सज्जनो तक भी पहुचाने का प्रयास करें। निवेदक **आचार्य-दर्शन योग महाविद्यालय,**
आर्यवन, रोजड, पो० सागपुर, जिला साबरकाठा, गुजरात

गुजरात राहत कोष अपील

महर्षि दयानन्द एवं महात्मा गांधी की जन्मभूमि संकट में

२६ जनवरी २००१ को गुजरात में आए भूकम्प से भुज, अहमदाबाद, महर्षि की जन्मभूमि टकारा का गुरुकुल भवन, यज्ञशाला, गोशाला, गाधी जी की जन्मभूमि तथा अन्य क्षेत्रो में जो भारी तबाही हुई है उसकी कल्पनामात्र से ही दिल काप उठता है। इस हादसे मे लाखो लोग काल का ग्रास बन गये, लाखों परिवार बेघर होगए, हजारों बच्चे अनाथ होगए और लाखो लोग घायल होगए हैं। वहा इस प्राकृतिक आपदा से पीडित लोग भोजन, पानी, दवाइया, कपडे और आश्रय के लिए जूझ रहे हैं। प्राकृतिक आपदा को रोका तो नहीं जासकता लेकिन पीडित लोगो की सहायता करना हमारा सबसे बडा धर्म है। आज सारा राष्ट्र सकट की इस घडी मे गुजरात के लोगो के साथ है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अधिकारियों ने सहयोगियो से परामर्श करके निश्चय किया है कि '**गुजरात भूकम्प पीड़ित सहायता निधि**' मे करोडो रुपये की आहुति दी जावे। गुजरातवासियो के परिवार के कल्याण के लिए हरयाणा प्रान्त के सभी वेदप्रचार मण्डल, आर्यसमाज, गुरुकुल, कालिज एव अन्य आर्यशिक्षण सस्थाए इस सहयोग यज्ञ मे अधिक से अधिक धनराशि बैंक ड्राफ्ट, चैक या नकद आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को भेजे। यह राशि आयकर से मुक्त है।

सभाप्रधान स्वामी ओमानन्द जी महाराज ३१ जनवरी २००१ को लाखों रुपये का सामान कम्बल, औषधिया आदि लेकर गुरुकुल के ब्रह्मचारियो एव कार्यकर्ताओ के साथ टकारा सहायता कार्य का निरीक्षण करने गये थे। आर्यसमाज टकारा में अपना मुख्य सहायता केन्द्र बनाकर मोरवी आदि सैकडो गावो मे सेवा का कार्य आरम्भ करवाया। देश-विदेश मे बैठे सभी भारतीयो से प्रार्थना है कि वे भारी सख्या मे गुजरात के भूकम्प पीडितो की सहायता के लिए धन की सहायता भेजे। दानियो के नाम सर्वहितकारी साप्ताहिक मे प्रकाशित किये जारहे हैं।

निवेदक :

स्वामी ओमानन्द सरस्वती — सभाप्रधान
स्वामी इन्द्रवेश — कार्यकर्ता प्रधान
प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास — सभामंत्री
बलराज आर्य — सभा कोषाध्यक्ष
प्रो० शेरसिंह — पूर्व रक्षाराज्यमंत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सभी पदाधिकारी अन्तरंग सदस्य एवं कार्यकर्ता

हिन्दी में दाखिल याचिका पर विचार हो सकता है : सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली, ८ जनवरी। उच्चतम न्यायालय ने व्यवस्था दी है कि न्यायालय की कार्यवाही के नियमों के तहत अग्रेजी भाषा में ही याचिका तैयार करने के प्रावधान के बावजूद उच्च न्यायालय में हिंदी भाषा मे पेश चुनाव याचिका पर विचार हो सकता है।

मुख्य न्यायाधीश डा आदर्श सेन आनन्द, न्यायमूर्ति आर सी लाहोटी और न्यायमूर्ति शिवराज वी पाटिल की तीन सदस्यीय खण्डपीठ ने पिछले सप्ताह इस सम्बन्ध मे मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय के ४ फरवरी २००० के निर्णय को सही ठहराते हुए महेश्वर विधान सभा सीट से निर्वाचित डा विजयलक्ष्मी साढो की याचिका खारिज करदी।

न्यायाधीशो ने अपने १४ पेज के निर्णय मे कहा कि चुनाव याचिका के बारे मे उच्च न्यायालय द्वारा निर्धारित नियम सिर्फ प्रक्रिया सम्बन्धी ही है और वे कोई महत्त्वपूर्ण कानून नहीं है। न्यायाधीशो ने कहा कि सविधान के अनुच्छेद ३४८(१) में स्पष्ट है कि उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयो की कार्यवाही अग्रेजी भाषा मे होगी लेकिन अनुच्छेद ३४८(२) मे इस सम्बन्ध मे अपवाद का भी प्रावधान है। न्यायाधीशों ने विधायक डॉ० विजय लक्ष्मी साढे की याचिका खारिज करते हुए कहा कि अनुच्छेद (२) मे स्पष्ट है कि राष्ट्रपति की पूर्व अनुमति से किसी भी राज्य के राज्यपाल उच्च न्यायालय में हिन्दी अथवा किसी अन्य भाषा के इस्तेमाल की अनुमति दे सकते हैं बशर्ते सम्बन्धित राज्य में ही उच्च न्यायालय की प्रधान बच हो।

इस मामले मे मध्यप्रदेश के राज्यपाल ने राष्ट्रपति की पूर्व अनुमति से १८ सितम्बर १९७१ को एक अधिसूचना के तहत उच्च न्यायालय के फैसले, आदेश और डिक्री के अलावा अन्य सभी कार्यवाही मे हिन्दी भाषा के इस्तेमाल की अनुमति देदी थी।

न्यायालयो ने कहा कि अनुच्छेद ३४८(२) के साविधिक प्रावधानो को निष्प्रभावी करने के लिए उच्च न्यायालय के नियम २(बी) का प्रयोग नहीं किया जा सकता है। न्यायाधीशों ने कहा कि नियम २ (बी) को अनुच्छेद ३४८ (२) के तहत राज्यपाल की अधिसूचना के आलोक मे देखना होगा। इसके अनुसार चुनाव याचिका हिन्दीभाषा में दाखिल की जा सकती है लेकिन उच्च न्यायालय के नियम २ (बी) पर अमल नहीं होने के आधार पर इसे जनप्रतिनिधित्व कानून की धारा ८६ के तहत शुरु में ही खारिज नहीं किया जा सकता है। इस प्रकरण मे महेश्वर विधानसभा सीट पर चुनाव हारनेवाले जमदीश ने चुनाव में भ्रष्ट तरीके अपनाने के आरोप लगाते हुए डॉ० साढो के निर्वाचन को चुनौती दी थी। श्री जगदीश ने अपनी याचिका और हल्फनामा हिन्दी भाषा में दाखिल किया था।

'गुजरात भूकम्प पीड़ित सहायता निधि' में प्राप्त दानराशि

(गतांक से आगे)

क्र०	नाम	राशि
४२	आर्यसमाज नरेला, दिल्ली	२५,०००-००
४३	श्रीमती कृष्णा धर्मपत्नी चौ० बलवीरसिह सागवान डी डी पी ओ रोहतक	५००-००
४४	चौ० मोहब्बतसिंह आर्य, आर्यनगर, भिवानी	१०१-००
४५	आर्यसमाज भाण्डवा, जिला रोहतक	१००-००
४६	श्री धर्मपाल आर्य धीर शास्त्री ग्राम भाण्डवा, भिवानी	१००-००
४७	श्री बलवीरसिह आर्य सु० श्री प्रभातीराम ग्राम मोई हुड्डा जिला रोहतक	५१-००
४८	श्री शेरसिह आर्य, सभा भजनोपदेशक ग्राम मधार जिला यमुनानगर	१००-००
४९	श्री हरिराम आर्य, यमुनानगर	१००-००
५०	आर्यसमाज रादौर जिला यमुनानगर	५००-००
५१	आर्यसमाज जगाधरी	१००-००
५२	श्री उदयसिह आर्य, पाडा मोहल्ला, रोहतक	१०१-००
५३	आर्यसमाज सरगथल जिला सोनीपत	४०१-००
५४	मा० श्योचन्द आर्य सभा भजनोपदेशक ग्राम जखाला जिला रेवाड़ी	१०१-००
५५	स्वामी देवानन्द सभा भजनोपदेशक, दयानन्दमठ, रोहतक	१०१-००
५६	श्री वीरेन्द्र शास्त्री ग्राम टिटौली, जिला रोहतक	१००-००
५७	श्री नायब सूबेदार नवाबसिह आर्य, ३७० कम्पनी ए एस सी. स्पलाई टाइप-ए मार्फत ५६ ए पी ओ	१०१-००
५८	श्री नायब सूबेदार चादराम सागवान, ३७० कम्पनी ए एस सी स्पलाई टाइप-ए मार्फत ५६ ए पी ओ	१०१-००
५९	श्री सूबेदार चन्दनसिह आर्य, ग्राम समसपुर माजरा, जि झज्जर	१०१-००
६०	श्री सत्यप्रकाश आर्य कनिष्ट अभियन्ता रेल पथ म नं टी-१२७/सी, रेलवे कालोनी, पानीपत	१००-००
६१	आर्यसमाज भावर, जिला सोनीपत	५१-००
६२	बहन किताब कौर अध्यापिका, ग्राम फाकस्मा जिला रोहतक	५०१-००
६३	श्री रणजीतसिह शूर सेना अध्यक्ष ग्राम हसनगढ जिला रोहतक	१००-००
६४	श्री पर्वतसिह आर्य ग्राम गिवाना जिला सोनीपत	१०१-००
	योग	=२८,६१२-००
	गतांक योग	=८९,३७६-००
	सर्वयोग	=१,१७,९८८-००

(क्रमशः)

नोट—दानदाताओ से निवेदन है कि वह अपनी सहयोग राशि का बैंक ड्राफ्ट/चैक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के नाम भेजे। प्रधानमन्त्री अथवा मुख्यमन्त्री वेलफेयर फण्ड का सभा मे न भेजे। **—सभामंत्री**

संस्कृत भाषण प्रतियोगिता में प्रथम

२२ फरवरी २००१ को पजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ द्वारा आयोजित अन्तर्विश्वविद्यालय सस्कृत भाषण प्रतियोगिता मे गुरुकुल प्रभात आश्रम के ब्रह्मचारियो ने भाग लिया। जिसमें ब्रह्मचारी विनोद ने सर्वप्रथम स्थान प्राप्त कर प्रथम पदक जीता तथा ब्रह्मचारी विनोद और ब्रह्मचारी करुण ने दलीय प्रथम स्थान लेकर गुरुकुल को चलविजयोपहार प्राप्त कराया। विदेशो के विश्वविद्यालयों में भी प्रथम आने का सकल्प लेना चाहिए। तभी गुरुकुल परम्परा का गौरव बढेगा। **—प्रबन्धक . गुरुकुल प्रभात आश्रम**

टेलीफोन नम्बर बदले

	पुराना नम्बर	नया नम्बर
सभा कार्यालय	४०७२२	७७७२२
स्वामी इन्द्रवेष	४६८०१	७७८०१
आचार्य प्रिंटिंग प्रेस	४६८७४	७६८७४
आचार्य निवास	५६८३३	७६६७४

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

स्थान	तिथि
गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद	१७-१८ मार्च, २००१
आर्यसमाज सफीदो (जींद)	१६, १७, १८ मार्च २००१
गुरुकुल सस्कृत महाविद्यालय डिकाडला (पानीपत)	१७, १८ मार्च २००१
आर्यसमाज न्यात (सोनीपत)	२३, २४ मार्च २००१
आर्यसमाज चोरामाजरा जिला करनाल	२३, २४ मार्च २०००१
अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, मुम्बई	२३ से २६ मार्च, २००१
आर्यसमाज उलेटा (नगीना) जिला गुड़गाव	२४ से २८ मार्च २००१
आर्यसमाज ढाकला जिला झज्जर	२६, २७ मार्च २००१
वैदिक योगाश्रम नियाणा (हिसार)	३, ४ अप्रैल २००१
आर्यसमाज नरेला दिल्ली	१३, १४, १५ अप्रैल २०००१

—डॉ० सुदर्शनदेव आचार्य, वेदप्रचाराधिष्ठाता

दयानन्दमठ का अठारहवां वैदिक सत्संग सम्पन्न

दयानन्दमठ रोहतक। आर्यसमाज की प्रमुख कार्यस्थली दयानन्दमठ रोहतक का अठारहवा वैदिक सत्सग समारोह ४ मार्च २००१ रविवार को बडी धूमधाम से सम्पन्न होगया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यकर्त्ता प्रधान व पूर्व सासद स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज ने इस समारोह की अध्यक्षता की।

वैदिक सत्सग समारोह के संयोजक एव व्यवस्थापक श्री सन्तराम आर्य ने बताया कि यह कार्यक्रम प्रत्येक महीने के प्रथम रविवार को मनाया जाता है जिसमे प्रात ९-०० बजे ब्रह्मयज्ञ व देवयज्ञ (हवन) से प्रारम्भ होकर १०-२० बजे से ११-०० बजे ईश्वरभक्ति के गीत व भजन तथा ११-०० बजे से १२-०० बजे प्रमुख वक्ता का भाषण होता है। फिर १२-०० बजे से १-०० बजे तक ऋषिलगर मे सब मिलकर भोजन करते हैं। इस बार ४ मार्च को सम्पन्न हुए सम्मेलन मे ऋषिलगर मे भोजन की व्यवस्था आर्यसमाज गुसाई खेडा (जीन्द) के प्रधान श्री कपूरसिंह आर्य, आर्यसमाज जीन्द जक्शन, आर्यसमाज सफीदो तथा आर्यसमाज नरवाना (जीन्द) चारो आर्यसमाजो की ओर से किया गया। इसकी एक विशेषता यह थी कि ऋषिलगर में देसी घी से निर्मित जलेबी परोसी गई। सभी श्रोताओ ने भोजन व्यवस्था की भूरि-भूरि प्रशसा की।

श्री आर्य ने विस्तार करते हुए बताया कि इस समारोह में श्री विनयकुमार जी ने पूर्ण नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा स्वामी इन्द्रवेश जी से गेरुए वस्त्र लेकर ली। श्री विनय जी ने सम्पूर्ण जीवन आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार हेतु लगाने का फैसला किया है। इसी के साथ प्रारम्भ होता है भक्तिरस के गीत व भजनो का कार्यक्रम। प० रतीराम आर्य (जीन्द) ने बताया कि सुख चाहना मानव की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। ससार के सभी जीव मीठा फल चाहते हैं। लेकिन कार्य का गलत निर्णय करने से दु ख प्राप्त होता है। उन्होने बताया कि धन की शुचिता ही सर्वोत्तम शुचिता है तथा सबसे अधिक सुख परमात्मा मे माना गया है। फिर बहनो के गीतो मे रीनादेवी गुसाई खेडा, बहिन दयावती प्राध्यापिका, मॉडल टाउन, बहिन सुमित्रा देवी, जीन्द रोड रोहतक, श्री कुलदीपसिंह आर्य भजनोपदेशक ने ईश्वरभक्ति के गीतो से सारे वातावरण को साधनामय-सा बना दिया। इसी के साथ शुरू हुआ आज के मुख्य वैदिक प्रवक्ता आचार्य देवव्रत जी का उपदेश। जैसा विषय था कि **'जीवन के प्रति यथार्थ दृष्टिकोण'**। उन्होने बताया कि दो दृष्टिकोण वर्तमान में चल रहे हैं। एक दृष्टिकोण के लोग वे हैं जो परमात्मा को ही सर्वेसर्वा (सर्वशक्तिमान्) मानते हैं। दूसरा दृष्टिकोणवाले लोग इस भौतिक वैभव को ही सब कुछ मानते हैं वे कहते हैं मजे ले लो माया ही सर्वोपरि है। इस दृष्टिकोण के लिए विष्णु व लक्ष्मी के झगडे का उदाहरण दिया। उन्होने इस तथ्य को स्पष्ट करते हुए ग्रीकदेश की नाइट जाति, बारकले व जॉनसन तथा वेदान्त के उदाहरण प्रस्तुत किये। न्यूटन के उदाहरण से स्पष्ट किया कि किसी भी गतिहीन पदार्थ में अपने आप गति नहीं हो सकती। यह सामने रखा माईक अपने आप नहीं बज सकता है। यह माईक सत्य है लेकिन न दिखाई देनेवाली बिजली अधिक सत्य है। इसी प्रकार शरीर व ससार सत्य है इकार नहीं किया जासकता। परन्तु आत्मा व परमात्मा अधिक सत्य व स्थायी है। इसके बिना शरीर व ससार का अस्तित्व रह नहीं सकता। वैभव साधन है, सीढी है, परमात्मा साध्य है। जैसे हाईड्रोजन व ऑक्सीजन के मेल से पानी बनता लेकिन कोरी आखो से पानी दिखाई नहीं देता। ठीक उसी प्रकार दृश्य शरीर व ससार को अदृश्य परमात्मा गति देता है। काबुल में बैठा हुआ सिकन्दर आसू बहा रहा है, सारा जीवन धन-वैभव इकट्ठा करने मे लगा दिया। अब लोगो से कहता है कि मैं गलत था मानव अपने साथ कुछ भी नहीं ले जा सकता।

अत आइये इस दृष्टिकोण को समझने के लिए वैदिक सत्सग मे। प्रथम अप्रैल को दयानन्दमठ का उन्नीसवा वैदिक सत्सग समारोह होगा। इसके लिये आप सादर आमन्त्रित हैं। यह कहकर सयोजक सन्तराम आर्य ने शान्तिपाठ बुलवाकर सत्सग सम्पन्न किया।

निवेदक **रविन्द्रकुमार आर्य,**
कार्यालयमंत्री दयानन्दमठ, रोहतक

सामवेद पारायण यज्ञ व वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज औरंगाबाद मित्रौल जिला फरीदाबाद ने ६२वा वार्षिकोत्सव तथा सामवेद पारायण यज्ञ बडे हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न किया। सामवेद पारायण यज्ञ के ब्रह्मा श्री आनन्दमुनि दिल्ली तथा सहयोगी श्री देवराज शास्त्री और श्री नेतराम शास्त्री ने सामवेद के मन्त्रों को सरल भाषा मे अर्थ, भाव लोगो को भलीभाति समझाया तथा मन को मुग्ध कर दिया। सामवेद पारायण यज्ञ तिथि ६-२-२००१ से प्रारम्भ होकर ११-२-२००१ को सम्पन्न हुआ।

आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव मे वैदिक मान्यताए सम्मेलन, वेद सम्मेलन, शहीदी सम्मेलन, कुरीति उन्मूलन सम्मेलन तथा गोरक्षा सम्मेलनो पर ग्राम तथा बाहर से पधारे सज्जनो की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। ग्राम के लोगो ने सामवेद पारायण यज्ञ के लिए बडी श्रद्धा से घी तथा हवन सामग्री के लिए दान देकर परोपकार का कार्य किया। उत्सव मे आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री शोभाराम प्रेमी, श्री आशाराम, प० चिरजीलाल (आ०प्र०स० हरयाणा), श्री खेमसिह, श्री दुलीचन्द, श्री किशनसिह, श्री अमीचन्द, श्री रघुनाथ, श्री रणजीतसिह ने विभिन्न सम्मेलनो मे विचार प्रस्तुत किये। उत्सव मे आर्यनेता श्री भगवानसहाय रावत विधायक ने समाज मे व्याप्त कुरीतियो पर प्रकाश डालकर ग्राम तथा बाहर से आए सज्जनो को आर्यसमाज के कार्य को बढाने के लिए प्रेरणा दी। लोगो ने कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशसा की।

—डालचन्द आर्य प्रभाकर,
मत्री आर्यसमाज औरगाबाद मितरौल
जिला फरीदाबाद

प्रचारक प्रशिक्षण शिविर

१६-५-२००१ से ३१-५-२००१

स्थान - गुरुकुल आश्रम आमसेना

देश, धर्मप्रेमी, सेवाभावी, श्रद्धालु नवयुवक जो बेरोजगार हैं, उन्हे वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार मे लगने के लिए तथा सस्कार करने, योगासन, प्राणायाम आदि का प्रशिक्षण देने के लिए आगामी १६ मई से ३१ मई २००१ तक प्रचारक प्रशिक्षण शिविर गुरुकुल आश्रम मे लगाया जारहा है। इस शिविर मे भाग लेनेवाले युवको को जहा अपने जीवन निर्माण की प्रेरणा मिलेगी वहा वे योगासन आदि सिखाकर सस्कार आदि करके अपनी आजीविका भी कर लेगे।

इस शिविर मे दैनिक सध्या, यज्ञ, मन्त्रपाठ, प्रारम्भिक सस्कृत शिक्षा वैदिक धर्म के सिद्धान्तो का तुलनात्मक ज्ञान, क्रियात्मक सस्कारो का शिक्षण, बोलने अथवा व्याख्यान देने की कला, सगीत ज्ञान, प्रारम्भिक चिकित्सा एव आकस्मिक चिकित्सा, योगासन, व्यायाम प्राणायाम तथा आर्यवीर दल का शिक्षण दिया जायेगा। भोजन एव आवास की नि शुल्क व्यवस्था गुरुकुल की ओर से होगी। शिक्षार्थी की आयु कम से कम १८ वर्ष हो व हिन्दी भाषा बोल एव पढ सके तथा दिनचर्या का पालन कर सके। आनेवाले नवयुवक किसी आर्यसमाज के अधिकारी या गुरुकुल से परिचित सज्जन का पत्र लेकर आये। अप्रैल के अन्त तक अपने आने की सूचना अवश्य भेज दे। इस शिक्षण मे जो छात्र योग्य रहेगे, उन्हे प्रचार आदि कार्यो मे भी लगाया जा सकता है।

आनेवाले शिविरार्थी अपने साथ ऋतु अनुकूल वस्त्र एव थाली, लोटा, कटोरी, कापी, पेन, सत्यार्थप्रकाश, सस्कारविधि, व्यवहारभानु आदि पुस्तके साथ लावे।

निवेदक -

मित्रसेन आर्य	**स्वामी व्रतानन्द सरस्वती**	**स्वामी धर्मानन्द सरस्वती**
अध्यक्ष	प्रबन्धक न्यासी	आचार्य

प्राचीन भारतीय विद्यासभा गुरुकुल आश्रम आमसेना, न्यास

प्रतियोगिता-परिणाम

सर्वहितकारी के अक दिनाक १४ फरवरी २००१ मे स्वामी दयानन्द जी के सम्बन्ध मे पूछे गये प्रश्नो के उत्तर २५ छात्र-छात्राओ से प्राप्त हुये हैं। परिणाम निम्नलिखित है–

प्रथम–**श्री देवदत्त आर्य,** कक्षा आठवीं, नयागज (गाजियाबाद)

द्वितीय–**श्री वेदपाल,** कक्षा दसवीं (मानपुर) पलवल

तृतीय–**कु० नीलम,** कक्षा दसवीं (पाढा) करनाल

इनके इनाम रु० १००/-, ५०/-, २५/- शीघ्र ही धनादेश द्वारा भेजे जायेंगे। इनके अतिरिक्त चार बच्चों को सन्ध्या-हवन की पुस्तक भेजी जायेगी। मुझे अफसोस है गुरुकुल के किसी विद्यार्थी ने भाग नहीं लिया।

—देवराज आर्य मित्र, आर्यसमाज कृष्णनगर दिल्ली-५१

ब्रह्मचर्य एक दिव्य शक्ति है

❑ स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती, योगस्थली आश्रम महेन्द्रगढ

ब्रह्मचर्य पालन से सचमुच ही मनुष्य में दिव्य शक्तियो का सचार होता है। जब कभी हम महर्षि दयानन्द जी के जीवन चरित्र को पढते हैं, तो आश्चर्य होता है, उनकी दिव्य स्मरणशक्ति और अतुल शारीरिक बल एव आध्यात्मिक बल पर अग्रेज लोग भी प्रभावित थे।

अब प्रश्न यह उपस्थित होता है कि स्वास्थ्य और बुद्धि बल के लिए यदि ब्रह्मचर्य इतना जरूरी है, तो ब्रह्मचर्य के पालन मे लोगो की अपने आप प्रवृत्ति क्यो नहीं होती ? यह ठीक है कि जीवन की इस प्रकार की विलक्षताओ को देखकर यद्यपि मनुष्य को स्वय विचार करना चाहिए कि सयमी और बिलासी जीवन के परिणामो मे कितना अतर है और उसको कैसा जीवन बिताना है, किन्तु उसके सामने कुछ ऐसी अडचने रहती हैं, जो उसे ऐसा नहीं करने देती।

उन्हे दूर करने के लिए मनुष्य को उपदेश की, गुरुप्रेरणा की आवश्यकता है, चरकसहिता मे लिखा है–'सस्कारो हि गुणान्तराधानमुच्यते' उसकी पूर्ति के लिए ऋषियो ने शास्त्रो मे ब्रह्मचर्य के पालन का उपदेश दिया है। उनका यह उपदेश हजारो वर परीक्षित है, आप्त वचन है, इसलिए विश्वास के योग्य है।

हजारो वर्षों की लम्बी दासता के कारण भारतीय आर्यजाति एक जीर्ण रोगी के समान बल, वीर्य, तेज और उत्साह से हीन होगई है। ऐसी अवस्था मे ब्रह्मचर्य एक महा रसायन औषध के समान है। यह हमारी अतिहीन मनोवृत्ति की निशानी है कि हम ब्रह्मचर्य जैसी स्वास्थ्यकर वस्तु को व्यवहार मे लाना असम्भव समझने लगे हैं।

यह कार्य असम्भव नहीं है कुछ कठिन अवश्य है। सो भी उसके लिए जिसके सामने कोई बडा लक्ष्य नहीं है। श्रेष्ठ कामो मे चित्त लगाकर जुट जाने से भी ब्रह्मचर्य का पालन आसानी से होजाता है।

ब्रह्मचर्य के बाधक कारण (अष्टविध मैथुन)

स्मरण कीर्तन केलि प्रेक्षण गुह्यभाषणम्।
सकल्पोऽध्यवसायश्च क्रियानिर्वृत्तिरेव च।।
एतन्मैथुनमाष्टाङ्ग प्रवदन्ति विचक्षणा।
विपरीत ब्रह्मचर्यमेतदेवाष्टलक्षणम्।।

(१) **स्मरण**–पूर्व देखे सुने मैथुन का ध्यान आना, सम्भोगयोग्य व्यक्ति का ध्यान आना।

(२) **कीर्तन**–मैथुन की बाते करना, अश्लील कहानी, नाटक, उपन्यास अथवा सिनेमा आदि।

(३) **केलि**–कामक्रीडा, मखौल, मजाक, चिकोटी काटना, हाथ-पाव-भौं-मुख से गन्दे सकेत करना।

(४) **प्रेक्षण**–जिससे विषयभोग की इच्छा उत्पन्न हो अथवा बढे, इस प्रकार किसी को छिपकर अथवा सामने आकर देखना।

(५) **गुह्यभाषण**–मैथुन सम्बन्धी गुप्त बाते करना अथवा स्त्री-पुरुष का कहीं छिपकर बातचीत करना।

(६) **सकल्प**–मैथुन करू ऐसी तरग मन उठना।

(७) **अध्यवसाय**–मैथुन करने के उपाय करना।

(८) **क्रियानिवृत्ति**–जानबूझकर लिग इन्द्रिय से वीर्यपात क्रिया करना। **(क्रमश)**

ऋषिबोध पर्व और पं० लेखराम बलिदान दिवस समारोहपूर्वक सम्पन्न

आर्यसमाज सैक्टर २२-ए चण्डीगढ के तत्त्वावधान मे क्षेत्रीय आर्यसमाजो और आर्य शिक्षण सस्थाओ के सान्निध्य मे ऋषिबोध पर्व (महाशिवरात्रि) और प० लेखराम बलिदान दिवस समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ।

इस उपलक्ष्य मे दिनाक १९-२-२००१ से २५-२-२००१ तक वेदकथा का आयोजन किया गया। आर्यजगत् के मूर्धन्य विद्वान् और वैदिक प्रवक्ता डॉ० योगेन्द्रकुमार शास्त्री द्वारा 'त्रैतवाद'–ईश्वर, जीव और प्रकृति, समानता, भेद और परस्पर सम्बन्ध की बहुत ही उत्तम, सरल और हृदयग्राही व्याख्या की गई। सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री उदयवीरसिह आर्य द्वारा भक्ति सगीत की प्रस्तुति बहुत ही सराहनीय रही।

–बुधराम आर्य, महामत्री आर्यसमाज सैक्टर २२-ए, चण्डीगढ

वैदिक सत्संग सम्पन्न

दिनाक २५-२-२००१ को योगस्थली आश्रम महेन्द्रगढ में वैदिक सत्सग तथा बृहद् यज्ञ महन्त आनन्दस्वरूपदास सन्त कबीरमठ सोला तथा प्रधान आर्यवीर दल महेन्द्रगढ की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ।

यज्ञ का कार्य प० इन्द्रमुनि आर्य धर्मप्रचार मत्री यतिमण्डल दक्षिणी हरयाणा तथा मास्टर वेदप्रकाश आर्य मण्डलपति आर्यवीर दल महेन्द्रगढ ने करवाया।

यजमानो का स्थान प० मनोहरलाल आर्य ग्राम खत्रीपुर ने अपनी पत्नी श्रीमती नारायणी देवी के साथ ग्रहण किया। यजमानो के अतिरिक्त पांच महिला तथा चार पुरुषो को यज्ञोपवीत धारण करवाये गये।

अन्त मे स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती प्रधान यतिमण्डल दक्षिणी हरयाणा ने मास्टर रूपराम जी द्वारा काल-अकाल मृत्यु के बारे मे पूछे गये प्रश्न का उत्तर वेद तथा चरकसहिता दर्शन और सुश्रुतसहिता के आधार पर बताते हुए कहा–

त्र्यायुष जमदग्ने कश्यपस्य त्र्यायुषम्।
यद्देवेषु त्र्यायुष तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्।।

तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भि । अहेळमानो वरुणेह बोध्युरुशस मा न आयु प्रमोषी स्वाहा।

हितोपचारमूल जीवितमतो विपर्ययो हि मृत्यु ।

चरकशास्त्र–द्विविधा तु खलु भिषजो भवन्ति अग्निवेश। प्राणाना ह्येके अभिसरा । हन्तारो रोगाणा-रोगाणा ह्येके अभिसरो हन्तार प्राणानामिति। आदि मन्त्रो का सरलार्थ करके सभी श्रोताओ को अनेक उदाहरणो के साथ समझाया। पश्चात् प्रसाद वितरण किया।

इस यज्ञ तथा प्रसाद का सारा खर्च श्री यू०एस० शर्मा गागडवास निवासी ने अपनी धर्मपत्नी श्रीमती चन्द्रावती की पुण्यस्मृति पर किया। कार्यक्रम की समाप्ति के पश्चात् स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती ने ३० रोगियो का उचित निदान करके नि शुल्क दवाई वितरण की।

–मास्टर वेदप्रकाश आर्य, महेन्द्रगढ

वेदप्रचार मण्डल जिला हिसार

वेदप्रचार मण्डल जिला हिसार की ओर से वेदप्रचार का कार्य सुचारु रूप से चल रहा है। गुरुकुल खरल के रजत-जयन्ती समारोह पर आर्यसमाज हिसार के प्रधान श्री हरिसिह सैनी व मण्डल प्रधान श्री चौ० बदलूराम जी आर्य के नेतृत्व मे १४-१५ साथियो का दल पहुचे। आर्यसमाज हिसार की ओर से गुरुकुल को ३१०००/- रु० अनुदान देने की घोषणा की गई। इसके पश्चात् १४-२-२००१ को उसी अपनी टीम के साथ दोनो महानुभावो के नेतृत्व मे नव स्थापित आर्यसमाज जाण्डवाला (भादू) जिला फतेहाबाद पहुचकर उनके प्रथम उत्सव की शोभा बढाई। वेदप्रचार मण्डल जिला हिसार की ओर से नव आर्यसमाज के लिए ११००/- रु० तथा वेदप्रचार मण्डल हासी की ओर से राजेन्द्र आर्य ने ५००/- रु० का दान दिया गया।

–राजेन्द्र आर्य, कोषाध्यक्ष वेदप्रचार मण्डल हिसार

वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज मनाना जिला पानीपत का वार्षिक उत्सव दिनाक ४-५-६ मार्च, २००१ को बडी धूमधाम से मनाया गया जिसमे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की भजन मण्डली श्री जयपालसिह आर्य व श्री सत्यपाल आर्य के मधुर भजनो से आर्यसमाज के अधिकारियो व गाव के अनेक नरनारियो ने दिल खोलकर दान दिया। समाज मे सामाजिक बुराइयो के विरोध मे प्रचार हुआ। तीनो दिन यज्ञ कराया गया नौजवानो ने बुराइया छोडने की प्रतिज्ञा करके यज्ञ मे आहुति डाली। सभा को वेदप्रचार, दशाश, सर्वहितकारी शुल्क कुल मिलाकर १३२२/- रुपए की धनराशि दी गई।

–जयपालसिंह आर्य, सभा भजनोपदेशक

हांसी में तीसरे आर्यसमाज की स्थापना

स्थानीय खरड चुगी (भाटिया कालोनी) हासी की ज्योति फैक्ट्री के प्रागण में स्वामी कीर्तिदेव जी महाराज की अध्यक्षता मे एक विशेष वैदिक सत्सग का आयोजन किया गया जिसमे सर्वप्रथम प० विजयपाल शास्त्री (प्रभाकर) जी द्वारा यज्ञ किया गया।

इस शुभ अवसर पर तीसरे आर्यसमाज खरल चुगी हासी की विधिवत् स्थापना की गई जिसके प्रधान श्री पुरुषोत्तमलाल जी गिरधर सर्वसम्मति से चुने गये। शेष कार्यकारिणी का गठन करने का अधिकार प्रधान जी को दिया गया।

–राजेश शर्मा, प्रेस सचिव आर्यवीर दल हांसी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ४६८७४, ५७७७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ४७७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २१२०७/७३ सृष्टिसंवत् १,९६,०८,५३,१०१

पंजीकरणसंख्या टैक/एच.आर./४१/रोहतक/९९ ☎ ०१२६२-७७७२२

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र रोहतक

प्रधानसम्पादक : प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक :- डा० सुदर्शनदेव आचार्य

वर्ष २८ अंक १७ २१ मार्च, २००१ वार्षिक शुल्क ६०) आजीवन शुल्क ६००) विदेश में १० पौंड एक प्रति १-२५

आर्यसमाज स्थापना अंक

विश्व के शिरोमणि समाज-आर्यसमाज के स्थापना दिवस पर विशेष–

होता ना आर्यसमाज यहां, तो कौन कहो, नवजागृति लाता ?

❑ सुखदेव शास्त्री महोपदेशक दयानन्दमठ, रोहतक (हरयाणा)

महान् समाज सुधारक, महान् वेदोद्धारक, राष्ट्रीय जागरण के पुरोधा महर्षि दयानन्द ही इस विश्वशिरोमणि समाज, आर्यसमाज के सस्थापक थे। महर्षि ने अपनी अति सूक्ष्म बुद्धि से राष्ट्र का कल्याण चाहते हुये, तत्कालीन भयकर परिस्थितियों को देखते हुए १० अप्रैल १८७५ को बम्बई में आर्यसमाज की स्थापना की थी।

महर्षि ने ३० मई १८६३ को गुरुवर विरजानन्द जी से समाज सुधार की दीक्षा लेकर भारतीय राष्ट्र की सब प्रकार की उन्नति के लिये समाज सुधार के कार्यक्षेत्र में कदम रक्खा था। सचमुच, तत्कालीन भारत की दुर्दशा पर यदि दृष्टि डाली जाये तो आप शोकग्रस्त एव हतप्रभ होजाओगे। ऐसे कठिन काल मे राष्ट्र एक ऐसे तेजस्वी आदित्य ब्रह्मचारी, वेदप्रवक्ता की प्रतीक्षा कर रहा था, जो इसका अपना बलिदान देकर भी अनेक बार विषपान करके भी परतन्त्रता बेडियों मे जकडे भारत को मुक्ति दिला सके। आर्यभाषा के कवि ने महर्षि का मूल्याकन करते हुए उस समय लिखा था–

जंजीरो से जकड़े भारत को राह दिखाई थी तूने,
जिसको न काल भी बुझा सके, वह शमा जलाई थी तूने।
घनघोर तिमिर के आंगन में, तू बीज उषा के बोता था,
आवाज लगाई थी तूने, जब सारा भारत सोता था।

राष्ट्र में चारो ओर भयकर सकट के घनघोर बादल छाए हुए थे। काले भयंकर मजहबी बादलों से देश रसातल से गहरे पाताल को जारहा था। गहरे अविद्या के अन्धेरे में कुछ भी दिखाई न देता था। ब्रह्मर्षि विरजानन्द की चरण शरण में बैठकर शिक्षा एव दीक्षा लेकर वह मैदान में उतरा था। रामनरेश त्रिपाठी, हिन्दी के कवि ने महर्षि की विद्वत्ता का आकलन करते हुए कभी ठीक ही लिखा था–

लोकहित चिन्तन में, गृहसुखत्यागी, वेदब्रह्म का अनन्य अनुगामी ऊर्ध्वरेता था।
ज्ञानी अद्वितीय, अभिमानी आर्यसभ्यता का, जीवन का दानी, धर्मग्रन्थ का प्रणेता था।
हरि के समान कोटि-कोटि शिवमंडल में, विकट विरोधियों के वृन्द का विजेता था।
भारत के भाग्य का भविष्य रूप दयानन्द, शंकर के बाद आर्यो का एक नेता था।

उस महर्षि ने अपने जीवन काल में ही सर्वप्रथम भारतीय राष्ट्रवाद एव भारतीय स्वतन्त्रता का जयघोष किया था। ऐसा पता महर्षि दयानन्द के वेदभष्य एव सत्यार्थप्रकाश तथा आर्याभिविनय के पढने से लगता है। वे महान् राष्ट्रवादी थे।

महर्षि दयानन्द से पहले वैसे तो राजा राममोहनराय आदि कुछेक नेताओं के प्रयत्नो से ही १८२८ में सतीप्रथा के विरुद्ध कानून बना था। उनके एक बंगाली साथी ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने १८५६ में विधवा विवाह की वैधता का कानून बनवाया था। राजा राममोहनराय द्वारा स्थापित ब्रह्मसमाज का ट्रस्टडीड ८ जनवरी १८३० को लिखा गया था। इस समाज ने अपने आरम्भ काल में बहुविवाह, बालविवाह, सतीप्रथा, मूर्तिपूजा आदि को वेदविरुद्ध बताकर इन्हें त्याज्य बताया था। किन्तु कुछ काल पश्चात् राममोहनराय अपने विचारों का सन्तुलन खोने लगे। वे ईसाइयत से प्रभावित होने लगे। राममोहनराय का ब्रह्मसमाज भी विचारधारा से भारतीय न रहकर ईसाइयत में परिवर्तित होता चला गया। उन्होंने लिखा था–"जबसे मुझे यह ज्ञात हुआ कि अंग्रेज हमसे अधिक बुद्धिमान् एव सन्तुलित होते हैं तो मेरा विचार बदल गया और मैं उनका प्रशसक होता चला गया। अग्रेजी राज्य भारत के लिये विदेशी होते हुए भी अधिक हितकर है।" वे जीवनभर अग्रेजी राज्य का गुणगान करते रहे।

राजा राममोहनराय ने लार्ड मैकाले की उस अग्रेजी शिक्षा व्यवस्था का समर्थन किया, जिसके अनुसार भारतीयों की प्रवृत्ति, सम्मति, नैतिकता मे अग्रेज-ईसाई बनाने का सुनियोजित षड्यन्त्र था। उन्होंने उस समय बगाल के गवर्नर को पत्र लिखकर अंग्रेजी शिक्षा को सुदृढ करने के लिए निवेदन किया था। कलकत्ता में अग्रेज सरकार द्वारा खोले जानेवाले सस्कृत कालेज का विरोध किया था। उन्होंने भारत के स्वतन्त्र कराने मे कोई सहयोग नहीं दिया। सन् १८३० में राजा राममोहनराय अग्रेजों की गोद में इग्लैंड चले गए। वहीं १८३३ मे उनका देहान्त होगया। उनके बाद उनके अनुयायी केशवचन्द्र सेन भी जीवनभर अग्रेजो तथा ईसाइयत का गुणगान करते रहे। आज उनके द्वारा स्थापित ब्रह्मसमाज, प्रार्थनासमाज, देवसमाज आदि सब समाप्तप्राय होगए हैं।

महर्षि दयानन्द १८७२ मे कलकत्ता गए थे। महर्षि उस समय ब्रह्मसमाज के सब नेताओ से मिले थे, जिनमे केश्वरचन्द्र सेन प्रमुख थे। महर्षि ने इनकी भेट का विवरण सत्यार्थप्रकाश के ११वे समुल्लास के अन्त मे यो लिखा है–"इन लोगो मे स्वदेशभक्ति बहुत कम है। इन्होने ईसाइयों के आचरण बहुत से लिए हैं। अपने देश व अपने पूर्वजो की भरपेट निन्दा करते हैं।"

उस समय ऐसे ही महापुरुषों मे रामकृष्ण परमहस और स्वामी विवेकानन्द भी थे, किन्तु उस समय समाज सुधारको मे उनका कोई स्थान न था। समाजहित व देशसेवा से इनका कोई लेना-देना न था। भारत के स्वाधीनता सग्राम मे इनके योगदान का कहीं कोई उल्लेख नहीं मिलता। स्वामी विवेकानन्द तो गोमास भी खाते थे। जब कुछ लोगों ने स्वामी विवेकानन्द के गोमांस खाने पर आपत्ति की तो उन्होंने कहा–यदि भारत के लोग चाहते हैं कि मैं निषिद्ध भोजन न करू, तो उनसे कह दो कि मुझे एक रसोइया भेज दें और उसके वेतन की भी व्यवस्था करदे। स्वामी विवेकानन्द कहा करते थे कि "वेदो मे मास खाना लिखा है, पहले ऋषि-मुनि भी गोमास खाते थे। बिना वेद पढे और बिना प्रमाण के इस प्रकार झूठे प्रलाप से विवेकानन्द अपने कुकृत्य को शास्त्रसम्मत सिद्ध करना चाहते थे। १८६३ मे पैदा हुए विवेकानन्द १९०२ मे दमा से पीडित होकर मरे। जीवन भर अग्रेजो की प्रशसा करते रहे।

तत्कालीन तथाकथित समाजसुधारको के कार्य का आकलन करना इसलिए भी आवश्यक समझा गया कि ये लोग सिद्धान्तहीन, स्वदेशभक्ति आदि से भी दूर थे। वे भारतीय सभ्यता एव वैदिक संस्कृति से भी बिल्कुल अनभिज्ञ थे।

ऐसी विपरीत सवेदनशील राष्ट्रीय परिस्थितियो मे महर्षि दयानन्द का आगमन हुआ। इन सभी विपरीत राष्ट्रीय समस्याओ के समाधान करने के लिए ही महर्षि ने १८७५ मे आर्यसमाज की स्थापना की थी। कौनसी थी वे राष्ट्रीय समस्याए ? उन समस्याओ का एक कवि यों वर्णन करता है–

अन्धकार मिथ्या पन्थन को, शुद्ध-बुद्ध ईश्वरीय ज्ञान बिसराया था।
आर्यसभ्यता को अस्त-व्यस्त करने के काज, पश्चिमी कुसभ्यता ने रग बिठलाया था।

(शेष पृष्ठ दो पर)

मातृभूमि के लिए दिया बलिदान व्यर्थ नहीं जाता

झज्जर, २५ फरवरी। गुरुकुल झज्जर के ८६वें वार्षिक शिवरात्रि सम्मेलन में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा प्रदेश के उन सभी शहीदों के परिजनों को सम्मानित किया गया जिन्होंने कारगिल युद्ध के दौरान दुश्मन के दात खट्टे करते हुए शहीद होगये थे।

आर्य प्रतिनिधि सभा ने नवम्बर ९९ तक शहीद हुए ९२ शहीदों के परिजनों में ७५ शहीदों की विधवाओं, १५ शहीदों की माताओं व दो शहीदों के पिता को ११०० रुपए व पुस्तकों के एक-एक सैट से शहीदो के परिजनों को सम्मानित किया जिसमें भिवानी के १३ शहीदों रणधीरसिंह (बलकरा), रामकुमार (देवास), सुरेशकुमार (चरखी), राजकुमार (पुर), कुलदीपसिंह (महराणा), सजयसिंह (मघ-माघवी), राजवीरसिह (मोडी), नरेशकुमार (डाडमा) को सम्मानित किया गया। लालसिंह (गोकल), सुरेन्द्रसिह (बडदूघिरजा), धर्मवीरसिंह (भिरान) व महावीरसिह (कन्हेरी) के परिजन न पहुच सके।

झज्जर जिले के १२ शहीदो में आजादसिंह (जाखोदा), अमित वर्मा (बराही), हरिओम (सुगाई), रामफल (सलौदा), लीलाराम (जटवाडा), राजेश (झासवा), श्यामसिह (निलोठी), सुरेन्द्रसिंह (सुबाना), विनोदकुमार (जैतपुर) के परिजनों को सम्मानित किया गया तथा धर्मवीर (ढाकला), जयप्रकाशसिह (देशलपुर) के परिजन नहीं पहुच सके। जिला महेन्द्रगढ से लालसिह (गुबानी), वीरेन्द्रसिंह (गढी रूहाल), शिवकुमार (ककराला), खजानसिह (डॅगरा जाट)। रोहतक से समुन्द्रसिह (साघी), जसवीरसिंह (सीसर खास), राजवीर (लाखन माजरा), जसवीरसिह (सैमाण), कृष्णलाल (टिटोली), विजयसिह (सुन्दरपुर), सुरेशकुमार (मोखरा) के परिजनों को तथा जिला रेवाडी के साधुराम की माता को, हसराज (झाल), दीनदयाल (मसानी) के अलावा जिला यमुनानगर के रणवीरसिह (मधार), परमिन्द्र (तिजली) और जिला फरीदाबाद के हरप्रसाद (फरीदपुर), जाकिर हुसैन (सोफता गाडपुरी) तथा जीन्द जिले से विजय चौधरी (मगलपुर), आशीरकुमार (धिमाणा) के परिजनों के अलावा करनाल जिले के गांव मुवाला के शहीद परवेशकुमार, गाव बल्लाह के शहीद गुलाबसिंह के परिजनों को गुरुकुल के वार्षिक उत्सव पर सम्मानित किया गया।

इसके अतिरिक्त आर्यसमाज के कार्यक्रम में जिला कुरुक्षेत्र के गांव कौलापुर के शहीद सजीवकुमार और पंचकूला जिले के शहीद सदीप सागर के पिता को सम्मानित किया गया। जिला हिसार के प्रवीनकुमार (मिलखपुर) की माता को सम्मानित किया गया। जिला पानीपत से विजयकुमार (पुठर), जयवीरसिह (बबैल) और जिला अम्बाला से मजीतसिंह (कासैपुर) और फतेहाबाद जिले के शहीद नरेन्द्रसिंह जाखड़ा (मिल्लूवाला) के अतिरिक्त सोनीपत जिले के लक्ष्मनसिंह (महलाना), सुखवीरसिंह (रूखी) व महावीरसिह (भन्देरी), भीमसिंह (पिपाना) के परिजनों को नकद राशि व सत्यार्थप्रकाश, श्रीमद्दयानन्दप्रकाश व हिन्दी आन्दोलन की पुस्तकों के सैट भेंटकर सम्मानित किया गया।

जिला भिवानी के शहीदों, झज्जर के १२ शहीदो, महेन्द्रगढ से ९ शहीदों तथा इतने ही रोहतक, पानीपत, सोनीपत, रेवाडी जिलों से ६-६ शहीदों, फरीदाबाद, पचकूला करनाल से ३-३ तथा जिला हिसार व जीन्द से २-२ और कुरुक्षेत्र व सिरसा जिलो से १-१ शहीदों के परिजनों को सम्मानित किया गया। जबकि जिला कैथल में नवम्बर ९९ तक कोई भी कारगिल में शहीद नहीं हुआ।

इस अवसर पर स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने कहा कि देशभर में करीब ४५० जवान कारगिल युद्ध मे शहीद हुए थे जिनमें से ३५ फीसदी अकेले हरयाणा प्रान्त से थे और इन शहीदों के बलिदान ही के कारण आज भारतमाता आजाद है। उन्होंने कहा कि मातृभूमि के लिए किसी भी प्रकार का बलिदान व्यर्थ नहीं जाता। आर्य प्रतिनिधि सभा ने एक लाख ३५ हजार से अधिक की राशि से इन अमर शहीदों के परिजनों को सम्मानित किया। इसके अलावा सभी को धार्मिक ग्रन्थ (पुस्तको) से भी सम्मानित किया गया।

आर्यवीर दल की ओर से
ग्रीष्म अवकाश में शिविरों की योजना

आर्यवीर दल हरयाणा की ओर से ग्रीष्म अवकाश में प्रत्येक जिले में प्रशिक्षण शिविरों की योजना बनाई गई है तथा आर्य वीर दल का अगला राष्ट्रीय शिविर ४ जून से १८ जून तक आर्यसमाज गाधीधाम गुजरात मे आयोजित किया जायेगा। जहा आर्यवीरों को शारीरिक प्रशिक्षण दिया जायेगा वहा आर्यवीरो को भूकम्प पीड़ित क्षेत्रों में सेवा करने का सुअवसर भी प्राप्त होगा। अत जो राष्ट्रीय शिविर मे भाग लेना चाहें वे आर्यवीर दल के अधिकारियो से सम्पर्क स्थापित करें।

जो आर्यजन अपने क्षेत्रो मे शिविर लगवाना चाहे वे शीघ्र ही आर्यवीर दल के अधिकारियो से सम्पर्क करे या आर्यसमाज शिवाजी कालोनी रोहतक (प्रान्तीय कार्यालय) से सम्पर्क करे।

—वेदप्रकाश आर्य, प्रान्तीय मंत्री

नवसंवत् हो मंगलकारी

❑ **राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति**, मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

नवसंवत् हो मंगलकारी, जन-जन में आए सद्बुद्धि।
परहित के भावों की मन में, हो सहसा अभिवृद्धि।
मंगलमय हो नव संवत्सर, मंगलमय हो घर-आंगन।
मंगलमय हो इस धरती का, सत्यं शिवं सुन्दरं-सा कनकन।
आज हमारे अन्तस्तल में, प्रेम भाव हो पुन. प्रदीप्त।
करुणा-क्षमा-सहिष्णुता हो, अन्तर्मन में फिर उद्दीप्त।
भाव शत्रुता का मिट जाए, उर में जागे मित्र भावना।
पूर्ण सदा हो मानव मन की, इच्छा के अनुकूल कामना।
राम-कृष्ण की, दयानन्द की, परम्परा हो फिर जीवित।
करें परस्पर स्वच्छ हृदय से, एक-दूसरे का हम हित।
मिटे नए इस संवत्सर में, फैला जो अन्याय-अनय।
सभी दिशाएं हो मंगलमय, जन-जन हो भू का निर्भय।
मानवता के मगलकारी पथ पर ही अब बढें चरण।
सच्चरित्रता का ही हम सब, जीवनपथ पर करें वरण।
भ्रष्टाचार मिटे जिसने है किया राष्ट्र को अब आक्रात।
जागृति का नवमंत्र मिले अब, जागे मानव मन उद्भ्रात।
रुदन मिटे इस वसुन्धरा का, छा जाए कुल हर्षोल्लास।
स्वार्थवाद को दिए तिलाजलि, जगे धरा पर नूतन आश।
मानवता की जय का डंका, बजे पुन, भूमण्डल पर।
जन-जन हित हो मगलकारी, आया जो नवसवत्सर।

आर्यसमाज बनाया

लेखक—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

मुम्बई नगरी में आर्यसमाज बनाया।
हुए सवा सौ साल ये पौधा लहर-लहर लहराया।
भूले हुए वेदपथ उनको सत्यमार्ग दरशाया।
विष पी-पीकर वेदामृत का आकर पान कराया।
जनकल्याण हेतु ऋषिवर ने आर्यसमाज बनाया।
अज्ञान अविद्या अंधकार में ज्ञान का दीप जलाया।
रूढिवाद कुप्रथाओं का आकर किया सफाया।
ओ३म् पताका कर में लेकर वेद सन्देश सुनाया।
हुए सवा सौ साल ऋषि ने आर्यसमाज बनाया।
महासम्मेलन मुम्बई नगरी में जाता आज मनाया।

होता ना आर्यसमाज.........(प्रथम पृष्ठ का शेष)

गौ, अबला, अनाथ यहा त्राहि-त्राहि करते थे, धर्म और कर्म चौके-चूल्हे में समाया था।
रक्षक नहीं था कोई भक्षक बने थे सभी ऐसे घोर सकट में ऋषि दयानन्द आया था।

आर्यसमाज की स्थापना के और क्या कारण थे ? कवि प्रकाश बताते हैं—

भारत के नभमण्डल पर अविवेक अधर्म के बादल छाए।
छोड़ रहे थे निरन्तर वैदिक धर्म सनातन राम के जाए।
ईशकृपा से कराल परिस्थिति में ऋषिराज दयानन्द आए।
संसृति के अघ ताप निवारण कारण आर्यसमाज बनाए।।१।।
होता न आर्यसमाज यहां तो, कौन हमे सन्मार्ग दिखाता।
तर्क की कसौटी से कौन हमे फिर सत्यासत्य का बोध कराता।
कौन कहो, फिर घोर घमण्डियों धूर्त पाखण्डियों के गढ़ ढाता।
एक अखण्ड अगोचर ईश की, कौन हमे भक्ति सिखलाता।।२।।
कौन सनातन वेद के अर्थ सही, शुचि यज्ञ महत्त्व सिखाता।
इन पादरी-मुल्लों के चंगुल से प्रिय राम की सन्तति को कौन बचाता।
कौन निराश्रित दीन-दुःखी विधवा अनाथों की धीर बन्धाता।
हम कीचड़ में ही पड़े रहते, शुचि हीरा हमें फिर कौन बनाता।।३।।
होता न आर्यसमाज यहां तो, कौन कहो नवजागृति लाता।
आर्यसमाज के पुत्र हैं हम, और आर्यसमाज हमारी माता।।

क्रमिक-२३ मार्च से लेकर २६ मार्च २००१ तक आर्यसमाज की शताब्दी बम्बई में मनाई जारही है, उसमें सम्मिलित होकर हमें अपने संगठन का परिचय देना चाहिए और संकल्प लेना चाहिए कि आर्यसमाज के सुधार कार्य को आगे बढाएंगे।

आर्यसमाज अमर रहे। ओ३म् शम्।

सम्पादकीय— आदर्श गुरुकुल

आर्ष गुरुकुल आश्रम आमसेना (उड़ीसा)

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों में जिस पठन-पाठन विधि का प्रतिपादन किया है तदनुसार श्रीमद्दयानन्दार्ष विद्यापीठ गुरुकुल झज्जर के अधीन भारत मे अनेक आर्ष गुरुकुल चल रहे हैं। गुरुकुल झज्जर के सुयोग्य विद्वान् विरक्त स्नातक स्वामी धर्मानन्द सरस्वती ने आज से ३३ वर्ष पूर्व आर्ष गुरुकुल आमसेना (उडीसा) की स्थापना की थी। इस वर्ष इस गुरुकुल के ३३वें वार्षिक उत्सव पर इस गुरुकुल को देखने का अवसर मिला। इस गुरुकुल के महाविद्यालय, गोशाला, औषधालय, चिकित्सालय (होस्पीटल), वेदप्रचार विभाग समाजसेवा के पुण्यकार्य मे तत्परता के साथ सलग्न हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा का उडीसा का कार्यालय भी यहीं है। वन्य प्राणियों की रक्षा के लिये एक जीवालय भी है।

यहा सब छात्रो को नि शुल्क शिक्षा दी जाती है। भोजन, वस्त्र, आवास और चिकित्सा आदि की सब व्यवस्था गुरुकुल की तरफ से ही की जाती है। स्वामी जी के प्रमुख शिष्य व्रतानन्द, कुञ्जदेव और सुदर्शनदेव आदि ने नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा लेकर गुरुकुल के समस्त कार्य को यथावत् सभाल रखा है। इन विरक्त ब्रह्मचारियो का जीवन गुरुकुल की सेवा मे समर्पित है।

शास्त्रस्मरण प्रतियोगिता

इस वर्ष गुरुकुल के महोत्सव पर चौ० मित्रसेन सिन्धु के पूज्य पिता श्री शीषराम जी आर्य की पुण्यस्मृति मे एक शास्त्रस्मरण-प्रतियोगिता का शुभारम्भ किया गया जिसमें अनेक गुरुकुलो के ब्रह्मचारियो तथा ब्रह्मचारिणियों ने भाग लिया। एक नौ वर्षीय कन्या को अष्टाध्यायी आदि अनेक व्याकरणशास्त्र कण्ठस्थ थे। ब्रह्मचारियो को यजुर्वेद, पाच दर्शन तथा सामवेद आदि भी कण्ठस्थ कराये गये थे। सभी प्रतियोगी छात्र-छात्राओं को श्री शीषराम जी के पौत्र श्री रुद्रसेन जी ने १०००/- रु० से लेकर २५००/- रुपये की राशि के पुरस्कार प्रदान किये और साथ में प्रमाणपत्र भी दिये गये। गुरुकुल की पवित्र यज्ञशाला में छात्रों ने दैनिक व्यवहार में सस्कृतभाषण का व्रत लिया। व्यायाम प्रदर्शन मे दर्शकों की अपार भीड थी। ब्रह्मचारी तथा ब्रह्मचारिणियों ने अपने अद्भुत व्यायाम प्रदर्शन से जनता को मन्त्रमुग्ध कर रखा था।

निर्धनता की पराकाष्ठा

इस प्रदेश में निर्धनता इतनी है कि गुरुकुल के चिकित्सालय (होस्पीटल) यदि किसी का प्राणान्त हो जाता है तो उसके पारिवारिकजन उसे अन्त्येष्टि के लिये भी लेने नहीं आते हैं। उसका अन्त्येष्टि कर्म गुरुकुल की ओर से ही किया जाता है।

समाजसेवा

इस क्षेत्र मे गुरुकुल की ओर से समय-समय पर चावल और वस्त्र आदि का भी नि शुल्क वितरण किया जाता है। यदि किसी परिवार मे किसी दिन तवा न चढे तो उसके लिये गुरुकुल का भोजनालय सदा खुला रहता है।

धर्मान्तरण

इस क्षेत्र की निर्धनता का लाभ उठाकर ईसाई मिश्नरी लोग शिक्षा, चिकित्सा और विवाह आदि के प्रलोभन से क्षेत्र के लोगो को अपनी ईसामसीह की भेडो मे मिला रहे हैं। इस दिशा मे भी एक वीर सन्यासी स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती उन मिश्नरी लोगों से डटकर लोहा ले रहे हैं। स्वामी जी जो लोग ईसाई बन चुके थे उन्हे लाखो की सख्या मे वैदिक धर्म की गगा में स्नान कराकर शुद्ध कर चुके हैं।

गुरुकुल की ओर से अनेक ग्रामो मे वेदप्रचार केन्द्र चलाये जारहे हैं जिनमे एक शिक्षित केन्द्राध्यक्ष की नियुक्ति की जाती है जिससे ईसाई मिश्नरी लोगों को बहकाकर उनसे धर्मान्तरण कार्य मे सफल न हो सके और उन्हे वैदिक धर्म की पूरी जानकारी दी जासके।

कन्या गुरुकुल

स्वामी जी के निर्देशन मे ग्राम आमसेना मे एक आर्ष कन्या गुरुकुल भी चल रहा है जिसमें दो-दो ब्रह्मचारिणियो को नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा लेकर बड़ी निष्ठापूर्वक गुरुकुल का सचालन कर रही हैं।

पुनर्जन्म

गत वर्ष स्वामी धर्मानन्द जी अत्यन्त अस्वस्थ होगये थे। एक मास मूर्छा अवस्था में रहे। इससे गुरुकुल के नभमण्डल मे निराशा के बादल छाये रहे। परमपिता परमात्मा की दया और चौ० मित्रसेन सिन्धु के सुपुत्र श्री रुद्रसेन आदि के अनुपम सहयोग एव उत्तम उपचार के फलस्वरूप स्वामी जी की मूर्छा समाप्त हुई। इसे स्वामी जी का पुनर्जन्म ही कहना चाहिये। इससे गुरुकुल के वातावरण मे हर्ष का सचार हुआ और निराशा के मेघ सफल उपचार की आधी मे उड गये। स्वामी जी अब धीरे-धीरे पूर्ण स्वास्थ्य की ओर बढ रहे हैं और गुरुकुल का कार्य भलीभांति चल रहा है।

सार्वदेशिक सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा तथा आर्यजगत् के समस्त आर्यसमाज सघटन को इस गुरुकुल की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए और तन-मन-धन से स्वामी जी का सहयोग देना चाहिये।

—**सुदर्शनदेव आचार्य,** उपमत्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

शंका-समाधान

(देवराज आर्य-मित्र, दिल्ली)

शंका—आर्यसमाज के पुरोहित यज्ञ करने से पहले हवनकुण्ड के चारो ओर धूपबत्ती जलाकर रख देते हैं, जिनका धूआ होता जनो के नाक मे जाकर खासी पैदा करता है। क्या ये धूपबत्तिया जलाना उचित है।

समाधान—यज्ञ मे धूपबत्ती और अगरबत्ती सुगन्धित वातावरण के लिये लगाई जाती हैं। यदि किसी व्यक्तिविशेष को इससे हानि होती है तो वह यज्ञकुण्ड से कुछ दूर बैठ सकता है। यदि सबके लिये ही हानिकारक है तो उन्हे न जलावे, क्योकि उनके जलाने का कोई शास्त्रीय विधान नहीं है।

शंका—आचमन सबसे पहले करें या स्तुति-प्रार्थना-उपासना आदि मन्त्रों के बाद करें ?

समाधान—महर्षि ने सस्कारविधि में स्तुति-प्रार्थना-उपासना, स्वस्ति-वाचन, शान्तिकरण और ऋत्विग्वरण के पश्चात् आचमन का विधान किया है। अत विधि की एकरूपता के लिये ऋषि-लेख प्रमाण है। हा ! ऋषि ने दैनिक अग्निहोत्र मे प्रथम 'शन्नोदेवी०' से आचमन का विधान किया है। अत जैसा भी सस्कार, बृहद्यज्ञ, दैनिक अग्निहोत्र आदि करना हो, वह सब ऋषि के लेखानुसार करना चाहिये। वैदिक कर्मकाण्ड मे ऋषि ही हमारे लिये परम प्रमाण है, अन्य आर्य विद्वान् नहीं। —**सुदर्शनदेव आचार्य,** वेदप्रचाराधिष्ठाता

शोक समाचार

श्रीमती लक्ष्मी देवी धर्मपत्नी श्री रामगोपाल एडवोकेट गोशाला मण्डी पानीपत का दिनाक २२-२-२००१ को निधन होगया। परमात्मा दिवगत आत्मा को सद्गति तथा उनके परिवार को इस वियोग को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। शान्ति यज्ञ पर ११००/- रु० आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक को दान दिया गया।

—सभामंत्री

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मुम्बई

दिनांक २३ मार्च से २६ मार्च २००१

परिपत्र

मान्यवर !

सादर नमस्ते।

आपको विदित करते हुए हर्ष होता है कि आर्यसमाज स्थापना के १२५ वर्ष का विशाल कार्यक्रम दिनाक २३ मार्च से दिनाक २६ मार्च, २००१ तक (शुक्रवार से सोमवार) **अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन**, आयोजित किया गया है। समारोह की सफलता हेतु आपसे प्रार्थना है कि निम्न बातों का अवश्यमेव ध्यान रखने की कृपा करें एव अपने सभी पदाधिकारियो, सदस्यों तथा आर्यप्रेमी सज्जनों को, जो सम्मेलन में आने को उत्सुक हैं, निश्चित रूप से अवगत कराने की कृपा करे।

१ कार्यक्रम स्थल रिक्लेमेशन मैदान, बान्द्रा पश्चिम, मुम्बई - ४०० ०५०

२ दिनाक २६ मार्च को चैत्र शुक्ला प्रतिपदा - आर्यसमाज स्थापना दिवस है।

३ प्रत्येक आगन्तुक को अपने नाम का पजीकरण कराना आवश्यक होगा। पजीकरण शुल्क रु० ५० प्रति व्यक्ति होगा। जो आर्यजन समारोह में आरहे हैं वे इस राशि को डी डी या मनीआर्डर द्वारा **"आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई"** के नाम से कार्यालय के पते पर भेजने की कृपा करें।

४ भोजन-निवास पजीकृत व्यक्ति को भोजन व निवास हेतु कूपन-पुस्तिका दी जायेंगी एव वे ही इसका नि शुल्क लाभ उठा सकेंगे। ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ होने से यहा उस समय उष्णता का मौसम होगा।

५ क) आपसे प्रार्थना है कि सम्मेलन के दौरान आप समस्त कार्यक्रमों में उपस्थित रहें।

ख) जो सज्जन मुम्बई दर्शन पर जाना चाहेंगे उनके लिये हम विशिष्ट बस व्यवस्था दिनाक २७, २८ मार्च, २००१ को आयोजित करेंगे।

६ जो सज्जन सम्मेलन में आरहे हैं वे अपने सामान का विशेष ध्यान रखें एव सभी स्थानों पर जेबकतरो से सावधान रहे।

कृपया इस परिपत्र की जानकारी सभी तक पहुचाने की कृपा करें।

—कैप्टन देवरत्न आर्य, सयोजक-अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

जानकारी तथा आवश्यक कार्यवाही हेतु

सभा अपने अतर्गत आनेवाली समाजों को अपने साथ नामपट्ट, बॅनर्स, ओ३म् के झण्डे आदि लाने के लिए अवश्य सूचित करेंगे ऐसी प्रार्थना है।

नोट : कुछ आर्यजन किसी कारणवश पूर्व सूचना नहीं दे पायेंगे, ऐसा हम अनुभव करते हैं। ऐसे समय पर आनेवाले व्यक्तियों की व्यवस्था तो होगी परन्तु उन्हें कुछ असुविधाओं को सहना पड सकता है। उसके लिए हम अग्रिम क्षमा प्रार्थी हैं।

कार्यालय . **अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन**

आर्यसमाज, विट्ठलभाई पटेल मार्ग, सांताक्रुज (पश्चिम),

मुबई-४०० ०५४ दूरभाष ६६०२०७५ - ६६११८३४ फैक्स ६६११८३४

दयानन्दमठ का उन्नीसवां वैदिक सत्संग

आर्यसमाज की कार्यस्थली दयानन्दमठ रोहतक का उन्नीसवा वैदिक सत्सग प्रथम अप्रैल २००१ रविवार को बडी धूमधाम से स्वामी इन्द्रवेश जी कार्यकर्ता प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अध्यक्षता मे मनाया जारहा है। समारोह के सयोजक श्री सन्तराम आर्य ने बताया कि यह सत्सग सामाजिक कुप्रथाओ, धार्मिक अन्धविश्वासो, छुआछूत, अशिक्षा, अन्याय एव शोषण के बारे में वैदिकधर्म की मान्यताओं का प्रचार-प्रसार करने हेतु प्रारम्भ किया गया है। यह सत्सग समारोह प्रत्येक महीने के प्रथम रविवार को मनाया जाता है। इस बार प्रथम अप्रैल को पहला रविवार है।

सत्सग का कार्यक्रम प्रात ९-०० बजे यज्ञ से प्रारम्भ होगा तथा मुख्य वैदिक वक्ता ११-०० बजे से १२-०० बजे तक अपना प्रवचन करता है। इस बार सत्सग के लिए ऋषिलगर की व्यवस्था मास्टर दीपचन्द आर्य मनदीप हाईस्कूल गोहाना रोड, रोहतक की तरफ से की जायेगी। पाश्चात्य सभ्यता की इस मान्यता पर आर्यजन विश्वास नहीं करते कि फस्ट अप्रैल को फूल (मूर्ख) बताया जाता है। उन्होंने सभी आर्यसज्जनों, बहनों एवं भाइयों से अपील की कि वे दल-बल सहित इस समारोह में पहुचकर विद्वानों के विचार सुने तथा जीवन की सार्थकता को अपनायें एवं धर्मलाभ उठायें।

सूचनार्थ—स्वामी इन्द्रवेश जी कार्यकर्ता प्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक का दूरभाष का नम्बर ७७८०१ होगया है। **—रविन्द्रकुमार आर्य**

देश में आर्यसमाज की आवश्यकता क्यों ?

❑ प्रो० चन्द्रप्रकाश आर्य, अध्यक्ष स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, दयालसिंह कालेज, करनाल-१३२००१ (हरयाणा)

आर्यसमाज की स्थापना को १२५ वर्ष होगए हैं। पिछली एक शताब्दी में आर्यसमाज ने देश के धार्मिक एव सामाजिक उत्थान में कोई कसर नहीं छोडी है। धार्मिक अन्धविश्वासों, चमत्कारों, पौराणिक मान्यताओं तथा प्राचीन रूढियों का खडन करने में, उनको समाज से दूर करने मे आर्यसमाज ने अभूतपूर्व योगदान दिया है। जैसे मध्यकाल में कबीर ने जमकर धार्मिक पाखण्डों, रीतिरिवाजों एव समाजिक बुराइयों के खिलाफ जमकर प्रचार किया है। आर्यसमाज के दो ही कार्य मुख्य रहे हैं–(१) वेद का प्रचार तथा (२) धार्मिक अन्धविश्वासों एव पाखण्डों का खडन। यद्यपि देश में और भी बहुतसी धार्मिक एव सामाजिक सस्थायें हैं किन्तु किसी ने भी समाज की इन बुराइयों का खंडन नहीं किया।

आज देश एक ओर उन्नति की ओर आगे बढ रहा है। विज्ञान तथा तकनीकी के क्षेत्र में, अन्तरिक्ष विज्ञान में, कम्प्यूटर तथा इंटरनेट के क्षेत्र मे महती उन्नति कर रहा है, हम सूचना क्रान्ति के द्वार पर हैं, वहीं दूसरी ओर देश तथा देश के लोग धार्मिक अन्धविश्वासों, पौराणिक मान्यताओं, पाखण्डों एवं चमत्कारों के मायाजाल में फसते जारहे हैं। लगता है देश में अन्धविश्वासों, धार्मिक पाखण्डो तथा अन्ध श्रद्धा बाढसी आगई है। इनको दूर कौन करेगा ? केवल आर्यसमाज ही यह कार्य कर सकता है। देश में कई लाख साधु-सन्त हैं, महात्मा हैं, सैकडों अखाडे हैं, अनेकों मठ हैं, बडे-बडे मन्दिर हैं परन्तु इन धार्मिक पाखण्डों, चमत्कारो का खडन करने के लिए, समाज को इन अन्धविश्वासों से, चमत्कारों से मुक्त करवाने के लिए वे आगे नहीं आते ? विश्व हिन्दू परिषद्, सनातन धर्म जैसे बडे-बडे सगठन हैं परन्तु इन धार्मिक बुराइयों को दूर करने में समाज को इन चमत्कारों से छुडवाने में इनकी कोई रुचि नहीं। परिणामत आज देश फिर इन धार्मिक अन्धविश्वासों और पाखण्डों की ओर चल पडा है।

श्रावण महीने में देश के कई भागों में विभिन्न तीर्थस्थानों से पानी भरकर उसका कावड बनाकर शिवमंदिरों में लोग उसे चढाते हैं। कहते हैं कि इससे शिवजी प्रसन्न होते हैं। इस प्रथा का प्राचीन साहित्य में कहीं भी उल्लेख नहीं है। इस यात्रा से समय और स्वास्थ्य की भारी हानि होती है, क्योंकि कावड ढोनेवाले प्राय पैदल ही यात्रा करते हैं। फिर शिवजी की मूर्ति पर जल चढाने से ईश्वरभक्ति एव शान्ति कहां से मिल सकती है ? 'अमर उजाला' (चडीगढ १०-८-९९ पृ० १४) अखबार के अनुसार अकेले हरयाणा में ही सोमवारी त्रयोदशी पर ९-८-९९ को यहा के मंदिरों में लाखों कावडियों ने हरद्वार, ऋषिकेश तथा गोमुख से जल लाकर शिवजी की मूर्ति का अभिषेक किया। इस यात्रा में कई अनैतिक धधा करनेवाले लोग भी शामिल होरहे हैं। समाज को इससे क्या लाभ ?

देश में कई करोड लोग तीर्थयात्राओं पर जाते हैं। उनमें एक अमरनाथ गुफा की यात्रा भी है। इस वर्ष अगस्त २००० में १३ जुलाई से ३-८-२००० तक लगभग दो लाख (१७०) यात्री वहा पहुंचे। १-२ अगस्त २००० को बत्तीस यात्रियों को आतंकवादियों ने मार डाला। 'दैनिक भास्कर' (पानीपत/चंडीगढ़ ३-८-२०००) समाचार पत्र ने अपने संपादकीय में लिखा कि वहां हैवानियत का नंगा नाच हुआ। देश के दूर-दूर भागों से आए इन यात्रियों ने कई-कई दिन घोर कष्ट सहन किये, निरन्तर मौत इनके सिर पर मंडराती रही। फिर इनको मिला क्या ? किसलिए ये लोग वहा गए थे ? शिवलिंग के दर्शन करने के लिए, बर्फ या हिम से बने शिवलिगों को देखने के लिए ? इन अन्धविश्वासों को कौन दूरेगा ? लोगों को इन मान्यताओं/कष्टों से छुटकारा कौन दिलवायेगा ? आर्यसमाज, केवल आर्यसमाज।

इसी प्रकार सूर्यग्रहण के अवसर पर लाखों लोग तीर्थयात्रा पर जाते हैं। कुरुक्षेत्र में ही इस प्रकार के कई मेले लग चुके हैं। कुरुक्षेत्र में इस शताब्दी के अन्तिम सूर्यग्रहण मेले के अवसर पर लगभग दस लाख लोग इकट्ठे हुए और कई लाख लोगों ने कुरुक्षेत्र के ब्रह्मसरोवर मे डुबकी लगाई। परन्तु इससे क्या वे, या अन्य लोग पापमुक्त/दोषमुक्त हो सकते हैं ? नहीं। ये तीर्थयात्राओं के कुछ उदाहरण हैं, परन्तु असली तीर्थ क्या है ? यह आर्यसमाज ही बता सकता है। सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास/अध्याय में महर्षि दयानन्द सच्चे तीर्थ के लक्षण बताते हुए कहते हैं, "वेदादि सत्य शास्त्रों का पढना-पढाना, धार्मिक विद्वानों का संग, परोपकार, धर्मनुष्ठान, निर्वैर, निष्कपट, सत्यभाषण, सत्य का मानना, सत्य करना, ब्रह्मचर्य, आचार्य, अतिथि, माता-पिता की सेवा तथा परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना, शान्ति, जितेन्द्रियता, सुशीलता, धर्मयुक्त पुरुषार्थ, ज्ञानविज्ञानादि शुभ गुण कर्म दु खो से तारनेवाले होने से तीर्थ हैं और जो जल स्थलमय हैं, वे तीर्थ कभी नहीं हो सकते क्योंकि मनुष्य जिनके द्वारा दु खों से तरे उनका नाम तीर्थ है। जलस्थलमय तरानेवाले नहीं किन्तु डुबाकर मारनेवाले हैं।" आज इनका जल भी प्रदूषित होगया है। लाखों मन कूड-कचरा, शहरों/महानगरों का गन्दा पानी इनमें आकर मिलता है। प्रतिदिन अखबारों में छपता रहता है कि गगा, यमुना आदि नदियों का जल बेहद दूषित होगया है। इन सब बातों से लोगों को आर्यसमाज के बिना कौन बताएगा ?

देश मे मूर्तिपूजा फिर जोरों पर है। १९९५ में गणेश की मूर्तियो द्वारा दूध पीने का प्रचार किया गया। लाखो लोग बिना सोचे-विचारे अपना कामकाज छोडकर मूर्तियो को दूध पिलाने मन्दिरो की ओर चल पडे। बाद मे वैज्ञानिको द्वारा पता चला कि यह कोई चमत्कार नहीं था। पृष्ठ तनाव व कैपिलरी एक्शन के कारण यह घटना हुई। कई लाख मन दूध नष्ट होगया। लोगों का समय तथा शक्ति अलग नष्ट हुई।

महाराष्ट्र मे गणेश चतुर्थी के अवसर पर तथा बगाल मे दुर्गापूजा के अवसर पर प्रतिवर्ष मूर्तियो की स्थापना की जाती है। इस बार सितम्बर २००० में गणेश चतुर्थी का पर्व १२ दिन तक मनाया गया। घर-घर मे गणेश की मूर्तिया स्थापित की गईं। दूरदर्शन 'राष्ट्रीय प्रसारण' १-९-२००० के अनुसार अकेले मुम्बई में ८५ हजार गणेश की प्रतिमायें स्थापित की गईं। राजधानी दिल्ली में भी जगह-जगह गणेश की प्रतिमाओ की स्थापना की गई। दैनिक जागरण' (नई दिल्ली ३-९-२०००) के अनुसार एक फुट से लेकर दस फुट तक की गणेश की विभिन्न मुद्राओं की मूर्तियों से बाजार भर जाते है। तबि, पीतल, प्लास्टरपेरिस, कपडे पर बनी पैटिग तथा मिट्टी की बनी इन मूर्तियो का निर्माण लगातार चलता रहता है। राजधानी में यह उत्सव लगभग प्रत्येक कालोनी मे मनाया जाता है–राजा पार्क, रानीबाग, आनदवन कालोनी, शाहदरा, मयूर विहार, रोहिणी, राजेन्द्रनगर, पहाडगज, जनकपुरी, कनॉट प्लेस आदि। विनायक मदिर कनॉट प्लेस में तो दक्षिण के विद्वानो द्वारा प्रतिदिन गणेश का चतुर्याम पूजन तथा गणेश सहस्त्रनाम का पाठ भी किया जाता है। यह हाल है देश की राजधानी का ? अन्धविश्वास तथा अन्ध श्रद्धा ही चारो ओर दिखाई देती है। कौन मुक्त करेगा देश को इस मूर्तिपूजा से ?

दुर्गापूजा और नवरात्रो पर दुर्गा की प्रतिमाओ की नौ दिन तक पूजा की जाती है। दीपावली आते ही फिर गणेश और लक्ष्मी की मूर्तियो की पूजा प्रारम्भ होजाती है। एक ओर देश कम्प्यूटर और इटरनेट के युग मे प्रवेश कर रहा है और दूसरी ओर फिर मूर्तिपूजा की ओर बढ रहा है। इस मूर्तिपूजा से समाज तथा देश को मिलेगा क्या ? जड की पूजा करने से, जड वस्तु का ध्यान करने से मनुष्य की बुद्धि जड होजाती है। सोमनाथ के मदिर से जब मोहम्मद गौरी मूर्तियों को तोडकर वहा से कई मन सोना लूटकर लेगया तब मूर्तिया कुछ नहीं कर सकीं और वहा के पुजारी/पुरोहित खडे देखते रह गये। मध्यकाल में कबीर ने मूर्तिपूजा का खडन किया था–

पत्थर पूजे हरि मिले, तो मैं पूजू पहार।
ताते तो चाकी भली, पीस खाय ससार।।

किन्तु आज इसका विरोध कौन करेगा ? आर्यसमाज के इलावा सब चुप हैं। फिर असली मूर्तिपूजा क्या है ? यह आर्यसमाज ही बता सकता है।

'सत्यार्थप्रकाश' के ग्यारहवे (११वें) समुल्लास मे महर्षि दयानन्द ने लिखा है कि प्रथम–माता मूर्तिमती पूजनीय देवता अर्थात् सन्तानो को तन, मन, धन से माता को प्रसन्न करना, हिंसा अर्थात् कभी ताडना न करना। दूसरा–पिता सत्कर्त्तव्यदेव उसकी भी माता के समान सेवा करनी। तीसरा–आचार्य जो विद्या का दान देनेवाला है, उसकी तन, मन, धन से सेवा करनी। चौथा–अतिथि जो विद्वान्, धार्मिक, निष्कपटी, सबकी उन्नति चाहनेवाला, जगत् मे भ्रमण करता हुआ, सत्य उपदेश से सबको सुखी करता है, उसकी सेवा करे। पाचवा–स्त्री के लिए पति और पुरुष के लिए स्वपत्नी पूजनीय है। ये पाच मूर्तिमान् देव हैं जिनके सग से मनुष्यदेह की उत्पत्ति, पालन, सत्य शिक्षा, विद्या और सत्योपदेश की प्राप्ति होती है। ये ही परमेश्वर की प्राप्ति होने की सीढिया हैं। इनकी सेवा न करके जो पाषाणादि मूर्ति पूजते हैं, वे अतीव वेद-विरोधी हैं।

बलिदान/पुस्तकालय भवन के लिये दानी महानुभावों से अपील

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक मे सभा द्वारा एक विशाल बलिदान भवन/पुस्तकालय भवन का निर्माण कार्य आरम्भ होगया है। इस बलिदान भवन/पुस्तकालय भवन में आर्यसमाज के बलिदानियो के चित्र विवरण के साथ लगाये जायेंगे।

सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि इस पुनीत कार्य में अधिक से अधिक धनराशि मनीआर्डर, चैक या बैंक ड्राफ्ट द्वारा अथवा नकद भेजकर पुण्य के भागी बने। जिन सज्जनों का पूर्व में दान का वचन है वे भी अपना वचन शीघ्र पूरा करने की कृपा करे।

निवेदक

स्वामी ओमानन्द सरस्वती सभाप्रधान — **स्वामी इन्द्रवेश** कार्यकर्ता प्रधान — **प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास** सभामंत्री

बलराज आर्य सभा कोषाध्यक्ष — **प्रो० शेरसिंह** पूर्व रक्षाराज्यमंत्री

सभी धर्मों तथा संस्कृतियों का आदिस्रोत : वेद

❑ प्रतापसिंह शास्त्री, आचार्य, एम.ए., पत्रकार, २५, गोल्डन विहार, हिसार

आज ससार में यहूदी, मुसलमान, ईसाई, पारसी, यूनानी, भारतीय पौराणिक, बौद्ध, जैन तथा वैदिक आदि जो प्रचलित धर्म हैं तथा इन सभी के जो धर्मग्रन्थ हैं इन सभी के सत्य अश का मूलस्रोत वेद ही है। लेकिन इनके अनुयायियो को तथा इनके धर्माचार्यो को यह तथ्य समझाना आज ऐसा होगया है जैसे रेलगाडी में ऊट को चढाना। यदि यह कटु सत्य समझ मे आजाये तो विश्वभर में एक धर्म होगा, एक समाज होगा, एक सस्कृति होगी और वह धर्म और समाज दूसरा कोई न होकर वैदिकधर्म होगा और वैदिक सस्कृति होगी क्योंकि इन सबका आदिस्रोत वेद है। आइये, देखें वेदरूपी गगोत्री से उपजनेवाली ज्ञान-गगा की धारा किन-किन क्षेत्रों में पहुचकर क्या-क्या रूप धारण करती गई हैं। अथर्ववेद का एक मत्र है–**'यस्मिन् वेदा निहिता विश्वरूपा तनौदनेन अतितराणि मृत्युम्'** (अथर्व० ४।३५।६) अर्थात् यहा ब्रह्म को एक पौधा कहा गया है। ब्रह्मरूपी जो धान का, चावल का पौधा है जिस चावल का भात बनता है उस परमात्मा रूपी पौधे में वेद निहित हैं। इसी वेद ज्ञान से मनुष्य मृत्यु को तर जाता है, अमरत्व (मोक्ष) को प्राप्त कर लेता है। धर्म अर्थ काम मोक्ष के लक्ष्य को मनुष्य प्राप्त कर लेता है। किन्तु महाभारत काल के बाद ऐसा समय आया कि वेदरूपी गगोत्री से निकली ज्ञानगगा की धारा ज्यों-ज्यों आगे बढती गई त्यो-त्यो मार्ग मे मिले कुडे-कर्कट (विभिन्न सम्प्रदाय) के कारण उसके शुद्ध रूप को पहचानना ही कठिन होगया।

महर्षि दयानन्द से पहले पौराणिक या पाश्चात्य वेद के अनभिज्ञ भाष्यकारो ने वेदमन्त्रों के यौगिक अर्थ न करके रूढि अर्थ किये। उन अर्थों को पढकर लोगों की वेदो मे आस्था ही नहीं रही। बल्कि वेदज्ञान लुप्तप्राय होगया, सदियो शताब्दियों तक पुस्तक रूप मे वेदो के दर्शन मात्र से भी लोग वचित होगये। इतिहास इस बात का साक्षी है कि वैदिक सस्कृति के रक्षक वेद एव ब्राह्मणो के प्रतिपालक आर्य जाति के जीवनदाता श्री शिवाजी द्वारा यज्ञोपवीत धारणार्थ १३ करोड ८७ लाख ७९ हजार रुपया खर्च करने पर तथा प्रायश्चित्त करने पर धर्माचार्य श्री गागा भट्ट और लेवता ब्राह्मणो की व्यवस्था से क्षत्रिय वीर शिवाजी अपने आपको गायत्री मन्त्र से पवित्र न कर सके, केवल अपनी मनमानी से इन नाम मात्र के ब्राह्मणो द्वारा उन्हे यज्ञोपवीत का अनधिकारी घोषित कर दिया गया। हमने जो अथर्ववेद का मत्र दिया है उसी मत्र के आधार पर जावा देश की मुस्लिम जनता मे एक कथानक (कि वदन्ती) प्रसिद्ध है जो वेद के आध्यात्मिक भाव को प्रकट कर रहा है। जावा की जनता मुसलमान है। ये मुसलमान रामायण तथा महाभारत पढते हैं और साथ ही कुरान को अपनी धर्म पुस्तक मानते हैं। जावा निवासी मुसलमान रामायण तथा महाभारत को अपनी धर्म पुस्तकें समझते हैं। वहा के मुसलमानो में एक कथानक प्रचलित है। वे कहते हैं कि महाभारत के युद्ध के बाद युधिष्ठिर जावा के एक पहाड के ऊपर जाकर बैठ गया। उसके पास जीवन के वृक्ष की जड थी। पहाड पर चढ चुकने के बाद यह एक पुस्तक बन गई और युधिष्ठिर इस पुस्तक को अपने सामने खोलकर सैकडों साल तक बैठा रहा। इस पुस्तक के कारण अमर होगया। सदियों बाद एक मुसलमान, जिसका नाम शेख सीती जेनार था उसी पहाडी पर चढा जहा उसने युधिष्ठिर को बैठे देखा। दोनों आपस में बडे प्रेम से मिले। शेख ने युधिष्ठिर से पूछा–तुम क्या पढ रहे हो ? युधिष्ठिर ने कहा–मेरे पास जीवन की पुस्तक है। इसके प्रभाव से अब तक जीवित हू, मरा नहीं। शेख ने युधिष्ठिर से पुस्तक मागी और देखकर चिल्ला पडा–अरे, यह तो कुरान है, लाओ यह पुस्तक मुझे दे दो। युधिष्ठिर ने वह पुस्तक शेख को दे दी और मर गया। इधर शेख ने जावा में कुरान का प्रचार किया। जावा के इस कथानक मे वृक्ष की जड के पुस्तक बन जाने, उससे युधिष्ठिर के अमर हो जाने और जड से बनी उस पुस्तक के कुरान होने का अलफलैला का किस्सा सिर्फ किस्सा ही नहीं है वस्तुत इसमे भी आध्यात्मिक उन्नति के लिए प्रेरणा दी गई है जो उक्त वेदमत्र को ही अपना स्रोत प्रमाणित करता है। शारीरिक उन्नति के लिए वनस्पति अन्न फल आदि और आध्यात्मिक उन्नति के लिए वेदज्ञान चाहिए यही भाव जावा मे एक कथानक बन गया जिसका आदिस्रोत वेद है। इस्लाम से थोडासा भी परिचय रखनेवाले जानते हैं कि बकरीद के नाम पर गौ की कुर्बानी दी जाती है। वहा गाय का मारा जाना एक उत्सव का रूप धारण कर गया है। मुसलमानो ने गाय का इस प्रकार मारना यहूदियों से लिया है। यहूदियो की धर्म पुस्तक 'डिट्रोनिमी' में लिखा है कि यदि कोई कत्ल हो जाये और उसका कातिल न मिले तो एक नया ताजा बछडा लेकर मारा जाये और उसके खून से कत्ल हुए व्यक्ति के रिश्तेदार हाथ धोकर कहे कि हमने उस व्यक्ति को नहीं मारा, तो वे पाप के भागी नहीं होंगे।

यहूदियों में पाप से बचने के लिए गाय का मारा जाना पाया जाता है और मुसलमानों मे भी यही बात है ऐसी दूषित बातें कैसे इनके धर्मग्रन्थों मे आगई इसका कारण भी वेदमत्रों के गोमेध यज्ञ का गलत अभिप्राय लेना ही है।

(क्रमशः)

'गुजरात भूकम्प पीड़ित सहायता निधि' में प्राप्त दानराशि

(गतांक से आगे)

६५	आर्यसमाज बीगोपुर जिला महेन्द्रगढ			१,०००-००
६६	मन्त्री आर्यसमाज नरेला (दिल्ली) २५००० रु० पहले दिये जा चुके			३०१-००
६७	श्री छतरसिंह बोहरा ग्राम वजीराबाद जिला गुडगाव			१५०-००
६८	श्री सुरेशकुमार आर्य आर्यसमाज मिलारगज, १३७१, गली न०१२/५, दशमेशनगर लुधियाना (पजाब) द्वारा सग्रहीत			२,३५०-००
	(१) श्री सुरेशकुमार आर्य प्रधान आर्यसमाज मिलारगज		५००-००	
	(२) श्री अशोक कुमार I	" "	१००-००	
	(३) श्री सुखपाल	" "	५०-००	
	(४) श्री देव आशीष	" "	१५०-००	
	(५) श्री अशोक कुमार II	" "	१०१-००	
	(६) श्री रामकुमार	" "	१००-००	
	(७) श्री रमेशकुमार	" "	१००-००	
	(८) श्री सुनीलकुमार	" "	१००-००	
	(९) श्री नरेशकुमार	" "	१००-००	
	(१०) श्री सुभाषचन्द्र	" "	१५०-००	
	(११) श्री जगवीरसिह	" "	१००-००	
	(१२) श्री रामफल	" "	१००-००	
	(१३) श्री धर्मेन्द्र	" "	१००-००	
	(१४) श्री विनोदसिंह	" "	१००-००	
	(१५) श्री शिवशकर पाल	" "	५०-००	
	(१६) श्री जीवनलाल	" "	५०-००	
	(१७) श्री नरेन्द्रपाल	" "	५०-००	
	(१८) श्री चन्द्रशेखर	" "	५०-००	
	(१९) श्री किशोरीलाल	" "	५०-००	
	(२०) श्री अनिलकुमार	" "	५०-००	
	(२१) श्री चन्दालाल	" "	५०-००	
	(२२) श्री गबरसिह	" "	५०-००	
	(२३) श्री अनदीप	" "	५०-००	
	(२४) श्री राजेन्द्रसिह	" "	२४-००	
	(२५) श्री नवीनचन्द्र	" "	२५-००	
६८	श्रीमती रामरती देवी म०न० ९९ आर, माडल टाउन रोहतक			५००-००
			योग=	४,३०१-००
			गताक योग=	१,१७,९८८-००
			सर्वयोग=	१,२२,२८९-००

(क्रमशः)

नोट–दानदाताओ से निवेदन है कि वह अपनी सहयोग राशि का बैंक ड्राफ्ट/चैक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के नाम भेजे। प्रधानमत्री अथवा मुख्यमत्री वेलफेयर फण्ड का सभा मे न भेजे। **–सभामंत्री**

विवाह-संस्कार पर दान

दिनाक २७-२-२००१ को श्री बलदेव जी आर्य के पौत्र श्री अनिलकुमार पुत्र श्री नफेसिंह की शादी मोनिका सैनी बी०कॉम० पुत्री श्री सूबेसिह सैनी झाडसां (गुड़गांव) निवासी से वैदिक रीति के अनुसार श्री आचार्य विश्वदेव सोनीपत ने करवाई। इस शुभ अवसर पर निम्नलिखित सस्थाओं को दान दिया गया–

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ५१/- रु०, दयानन्दमठ रोहतक ५१/- रु०, आर्यसमाज दयानन्दमठ रोहतक ५१/- रु०, आर्यसमाज भटगाव सोनीपत ५१/- रु०, वेद-वेदांग विद्यालय सोनीपत १००/- रु०, पत्रिका सैनी कल्याण दर्पण १००/- रु०, कुटिया प्रभु आश्रित ५१/- रु०, कुल ४५५/- रु० दान दिया। **–जयपालसिंह आर्य**, सभा भजनोपदेशक

श्री सोमदेव शास्त्री को पितृशोक

श्री सोमदेव शास्त्री बालन्द (रोहतक) के पूज्य पिता महाशय सुखलाल आर्य का दिनाक ६ मार्च २००१ को ९० वर्ष की आयु में स्वर्गवास होगया। उन्होंने अपने पुत्र सोमदेव जी को गुरुकुल झज्जर में तथा पुत्री सरलादेवी को कन्या गुरुकुल नरेला में पढाया था। महाशय जी अपने जीवनकाल में धूम्रपान, सुरापान, दहेजप्रथा, स्वांग, फजूलखर्ची और दिखावा आदि के विरुद्ध ग्राम में सदा संघर्ष करते रहे हैं। दिनांक २२ मार्च २००१ को श्रद्धांजलि सभा है।

–सुदर्शनदेव आचार्य, वेदप्रचाराधिष्ठाता

रामायण इतिहास है--कपोल कल्पना नहीं

❑ स्वामी वेदमुनि परिव्राजक, अध्यक्ष वैदिक संस्थान, नजीबाबाद (उ०प्र०)

२५ जनवरी १९७५ ई० को कलकत्ता नगर में एशियाटिक सोसाइटी द्वारा आयोजित सभा में भाषण करते हुए डा० श्री सुनीति चटर्जी ने कहा कि "कवि वाल्मीकि ने बौद्ध साहित्य के दशरथ-जातक से प्रेरणा प्राप्त कर राम की कथा लिखी थी।" आपने अपने भाषण में यह भी कहा कि "ईसा के जन्म से ५०० वर्ष पूर्व रामायण लिखी गई और ईसा की मृत्यु के बाद दूसरी शताब्दी में रामायण को वर्तमान रूप मिला।

आपने और भी अनेक अनर्गल बातें कहीं। बौद्ध साहित्य के उदाहरण से आपने 'दशरथ को वाराणसी का राजा', और 'सीता को राम की बहन' बताया तथा यह भी कहा कि 'दशरथ की दो रानिया कौशल्या और कैकेयी थी।' आपका कहना है कि 'वाल्मीकि ने रामायण को विस्तृत रूप दिया।'

हमारा यह कहना है कि बौद्ध मत केवल २५०० वर्ष का है और रामायण–

त्रेतायुगे चतुर्विंशे रावणस्तस क्षयात्।
रामदाशरथिं प्राप्य सगण क्षयमीभिवान्।।

(वायुपुराण उत्तरार्द्ध अध्याय ९ श्लोक ४८)

अर्थात् २४वे त्रेतायुग मे रावण का सामर्थ्य क्षीण हुआ और तब दशरथ-पुत्र राम को प्राप्त होकर वह बन्धु-बान्धवों सहित मारा गया।

इस श्लोक के अनुसार रामायण २४वें त्रेतायुग की घटना है। अब २८वीं चतुर्युगी है। इस प्रकार इस २८वीं चतुर्युगी के त्रेतायुग तक रामायण काल को चार चतुर्युगी पूरी-पूरी बीत गईं। यदि हम यह मान लें कि रामायण की घटना २४वीं चतुर्युगी के त्रेतायुग के इतने अन्त मे हुई थी तब उसका एक दिन भी शेष नहीं रह गया था, तब भी उस चतुर्युगी से अब तक चार द्वापर, चार कलियुग, चार सतयुग और त्रेतायुग लगाकर चार तो पूरी चतुर्युगी और इस चतुर्युगी (२८वीं) का द्वापर सम्पूर्ण तथा कलियुग का अब तक का समय रामायणकाल को बीत चुका।

काल गणनानुसार कलियुग ४,३२,००० सहस्र वर्ष का होता है और क्रमश द्वापर इससे दो गुणा, त्रेता तीन गुणा तथा सतयुग चार गुणा होता है। इस प्रकार चारो युगों का काल ४३,२०,००० सहस्र वर्ष हुआ। इन चारो युगो अर्थात् एक चतुर्युगी के काल ४३,२०,००० सहस्र वर्ष को चार से गुणा करने पर चार चतुर्युगियो का काल १,७२,८०,००० सहस्र वर्ष होता है। यह अवधि इस चतुर्युगी के त्रेता के अन्त के साथ पूरी होचुकी। इसमें इस अट्ठाइसवीं चतुर्युगी के त्रेता के पश्चात् का काल अर्थात् द्वापर के ८,६४,००० सहस्र वर्ष तथा कलियुग के अब तक के बीते हुये ५१०० वर्ष और जोड देने पर १,८१,४९,१०० वर्ष रामायणकाल को बीत चुके।

बौद्धमत ही अब केवल २५०० वर्ष का है तो बौद्ध साहित्य तो इससे पहले हो ही नहीं सकता। इस दृष्टि से दशरथ-जातक आज तक लगभग दो सहस्र वर्ष का होगा। इस दो सहस्र वर्ष के कथानक के आधार पर रामायण को लिखा बताना नितान्त हास्यास्पद है।

भारतीय इतिहास के वास्तविक ज्ञान के अभाव के कारण ही श्री चटर्जी ने यह भी कहा कि रामायण ईसा के जन्म के पांच सौ वर्ष पूर्व लिखी गई और ईसा की मृत्यु के बाद दूसरी शताब्दी में उनको वर्तमान रूप दिया गया। क्योकि बौद्धमत को २५०० वर्ष बीते हैं और ईसा को १९९९ वर्ष और आपने बौद्ध साहित्य का दशरथ-जातक पढ लिया, बस रामायण का आधार उसी को बना बैठे और इसी दृष्टि से आपने रामायण को बौद्धमत के बाद का समझ लिया, परन्तु यह नितान्त भ्रान्ति है। वास्तविकता वही है, जो हमने ऊपर प्रस्तुत की है। आश्चर्य की बात तो यह है कि आपके मस्तिष्क मे यह नहीं आया कि रामायण की घटना को तोडमरोडकर ही यह कथा 'दशरथ-जातक' नाम से बौद्ध साहित्य में लिखी गई है।

श्री चटर्जी के अनुसार वाल्मीकि कवि ने बौद्ध साहित्य की इस कहानी को विस्तार दे दिया है। हम श्री चटर्जी से कहना चाहते हैं कि वह रामायण को ध्यानपूर्वक पढे। वाल्मीकि रामायण का प्रारम्भ ही वाल्मीकि और नारद सवाद से होता है। महर्षि वाल्मीकि के आश्रम मे देवर्षि नारद आये तो उनसे वाल्मीकि ने पूछा–

कोन्वस्मिन्साम्प्रतं लोके गुणवान् कश्च वीर्यवान्।
धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च सत्यवाक्यो दृढ़व्रत:।।

अर्थात् इस समय ससार में गुणवान्, शूरवीर, धर्मज्ञ, कृतज्ञ, सत्यवादी और दृढप्रतिज्ञ कौन है ? इसी प्रकार से अन्य कुछ बाते भी पूछीं जो रामायण मे इससे आगे के श्लोको मे वर्णित है। महर्षि नारद ने ना केवल इन समस्त गुणों से युक्त राम को बतलाया। अपितु उनकी अन्य भी अनेक प्रकार से प्रशसायें कीं।

उक्त श्लोक के **'अस्मिन् साम्प्रत लोके'** यह शब्द ध्यान देने योग्य है। **'साम्प्रत अस्मिन् लोके'** इस समय इस ससार में इन शब्दो में वाल्मीकि जी ने अपने और नारद जी के सवाद के समय का समाचार पूछा। इससे यह स्पष्ट होजाता है कि राम उस समय थे। यह ऐतिहासिक वर्णन है, न कि काल्पनिक और वाल्मीकि-नारद सवाद का सन्दर्भ इसकी ऐतिहासिकता का प्रबल प्रमाण है।

नारद जी के जाने के बाद महर्षि वाल्मीकि स्नान के लिए तमसा नदी के तट पर पहुचे। वहीं उन्होने क्रौञ्च पक्षी के जोडे को काम-क्रीडा करते देखा। साथ ही उन्होंने यह भी देखा कि एक व्याध ने उस जोडे पर निशाना लगाया तथा जोडे मे से नर पक्षी मर गया, जिससे क्रौञ्ची विह्वल होगई। तब वाल्मीकि के मुह से यह श्लोक निकला–

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगम शाश्वती समा।
यत्क्रोञ्चमिथुनादेकमवधी काममोहितम्।।

अर्थात् हे निषाद ! तूने इस कामोन्मत्त नर पक्षी को मारा अत तुझे बहुत कालपर्यन्त सुख, शान्ति प्राप्त न हो। यही श्लोक महर्षि के रामायण को इसी (अनुष्टुप्) छन्द मे लिखने का आधार बना। इस विषय मे भी वाल्मीकि रामायण का ही प्रमाण है। महर्षि वाल्मीकि के एक शिष्य जो उस समय उनके साथ में था, ने यह श्लोक कण्ठस्थ कर लिया। स्नान से लौटकर ऋषिवर अपने शिष्यो को कुछ कथायें सुना रहे थे, तभी वहां ब्रह्माजी आये और उन्होने वाल्मीकि से कहा कि जैसा आपने नारद जी से सुना है–रामचरित का वर्णन करो।

महर्षि ने राम के जीवन की घटनाये एकत्र की और तब उन्हें श्लोकबद्ध इतिहास का रूप प्रदान किया। महर्षि वाल्मीकि द्वारा राम-जीवन की घटनाओ का एकत्र करना और महर्षि ब्रह्मा द्वारा उनसे रामचरित के वर्णन की माग करना भी रामायण के इतिहास होने के अकाट्य और प्रबल प्रमाण है। इसमें वाल्मीकि रामायण के ही निम्न श्लोक प्रमाण के लिये प्रस्तुत है–

श्रुत्वा वस्तु समग्रं तद्धर्मार्थसहित हितम्।
व्यक्तमन्वेषते भूयो यद्वृत्तं तस्य धीमत:।।
तत: पश्यति धर्मात्मा तत्सर्वं योगमास्थित:।
पुरा यत्र निवृत्तं पाणावामलक यथा।।
तत्सर्वं तत्त्वतो दृष्ट्वा धर्मेण स महामति.।
अभिरामस्य रामस्य तत्सर्वं कर्तुमुद्यत।।
प्राप्तराज्यस्य रामस्य वाल्मीकिर्भगवानृषि।
चकार चरित कृत्स्न विचित्रपदमर्थवत्।।

अर्थात् नारद जी से सुने हुए राम के चरित को महर्षि वाल्मीकि ने धर्म-अर्थ से युक्त सर्वजन हितकारी राम के जीवन की घटनाओं का उत्तम प्रकार से अन्वेषण किया। उसके पश्चात् उन्होने एकाग्रचित्त होकर उन सब चरितो को जो एकत्र कर लिये थे, हथेली पर रक्खे आवले की भाति देखा अर्थात् उनका एक बार गम्भीर दृष्टि से अध्ययन किया। उन सब वृत्तान्तों को ठीक प्रकार जानकर महामुनि वाल्मीकि सर्वप्रिय राम के चरित को श्लोकबद्ध करने को उद्यत हुए। राम के राज्यसिंहासन पर आरूढ होने के पश्चात् उन्होंने विचित्र पद से युक्त इस सम्पूर्ण ऐतिहासिक काव्य की रचना की।

इन प्रमाणो के होते हुए रामायण की ऐतिहासिकता का विरोध करना और उसे बौद्ध साहित्य के आधार पर रचा गया वाल्मीकि द्वारा विस्तार दिया गया ग्रन्थ बताना भ्रान्त विचार है। उपर्युक्त प्रमाणों का निष्कर्ष यही है कि रामायण १,८१,४९,१०० वर्ष पुराना इतिहास है और उसके मूल लेखक महर्षि वाल्मीकि जी ही थे।

बौद्ध साहित्य के अन्तर्गत 'दशरथ-जातक' के आधार पर ही आपने दशरथ की दो रानिया कौशल्या और कैकेयी बतायीं। यद्यपि दशरथ की तीन रानिया कौशल्या, सुमित्रा और कैकेयी थी। दशरथ की राजधानी भी आपने वाराणसी को बताया किन्तु वह इतिहास प्रसिद्ध अयोध्या नगरी थी। आपने राम का वनवास में हिमालय पर जाना बतलाया यद्यपि राम दक्षिण की ओर अयोध्या से प्रयाग, चित्रकूट आदि स्थानो पर होते हुए विन्ध्याचल के क्षेत्र मे जाकर पचवटी मे कुटी बनाकर रहे थे। आपने सीता को राम की बहन बतलाया जिनका राम से इतिहास प्रसिद्ध शिव-धनुष टूटने के कारण विधिवत् विवाह-सस्कार हुआ था। यह सब भ्रान्तिया इसलिये हैं कि श्री चटर्जी ने रामायण नहीं पढी। यदि पढी है और रामायण पढकर भी रामायण के ही प्रमाणो के विरुद्ध इस प्रकार भ्रान्त बाते श्री चटर्जी ने जानबूझकर कही है तो हमे यह कहने मे लेश भी सकोच नहीं कि चटर्जी विदेशियो की शीतयुद्ध की राजनीति के चगुल मे फस गये हैं और इस प्रकार पश्चिमीय महत्त्वाकाक्षी दृष्टिकोण के लिये समझ-बूझकर भारतीय इतिहास को भ्रष्ट करने और एकमेव भावी भारतीय सन्तति को पथभ्रष्ट करने का गम्भीर तथा अक्षम्य अपराध कर रहे हैं।

उपर्युक्त बातो के अतिरिक्त अन्य अनेक अनर्गल बाते श्री चटर्जी ने अपने भाषण मे कही हैं, जिनका वर्णन करके हम लेख का कलेवर बढाना उचित नहीं समझते। किन्तु इतना अवश्य चाहते हैं कि भारतीय जनमानस और भारत सरकार इस विषय मे जागरूक रहे और सावधानी बर्ते, कहीं ऐसा न हो कि विदेशियो का शीतयुद्ध जो ब्रिटिश सरकार द्वारा भारत मे सदा अपना साम्राज्य बनाये रखने ओर इतिहास मे भारतीयों (आर्यजाति) को अर्वाचीन और पतित सिद्ध करने के लिए प्रारम्भ किया गया था-सफल होजाये।

इस समय भारत को ब्रिटिश साम्राज्य का भय तो नहीं है, किन्तु गौरवपूर्ण जातीय इतिहास के भ्रष्ट होने से भावी सन्तति के भ्रष्ट होने का तो भय है ही। जो जाति ऐतिहासिक रूप से सबसे प्राचीन जाति हो और सास्कृतिक रूप से इतिहास में सर्वोच्च स्थान रखती हो, यदि स्व-इतिहास के भ्रष्ट होने से आत्मविस्मृत होकर वह पथभ्रष्ट होगई तो यह न केवल भारत-भारतीयता की ही अपितु विश्वमानवता की भारी क्षति होगी। कारण कि मानवता के सर्वोच्च मानबिन्दु और आदर्श इसी जाति के इतिहास और सास्कृतिक परम्पराओ मे निहित हैं।

आर्य का लक्षण एवं कार्य

आज आवश्यकता है कि प्रत्येक आर्य की श्रद्धा भक्तिभावना एवं पूर्ण निष्ठा के साथ अपने उत्तरदायित्व को समझने और निभाने की है। यह सर्वमान्य सत्य है कि आर्यसमाज की स्थापना हुई तब से अब तक वैदिकधर्म (सत्य सनातन) का प्रचार वाणी और लेखनी द्वारा अधिक एव जीवन, व्यवहार-आचरण से बहुत कम हुआ है। किसी सस्था वा आन्दोलन के प्रति लोग आकर्षित तभी सार्थक रूप से होंगे जब उसके कार्यकर्ता, पदाधिकारी और नेतृत्व (प्रचारक) अपने जीवन के व्यवहार व आचरण की अमर छाप उनके (दूसरों के) हृदय पटल अकित कर सकेगे।

इसी को सुचारु रूप से अपने जीवन मे धारण कराने हेतु आज हमे कुछ बातों को अपनाना होगा तभी आर्यसमाज के आन्दोलन मे नवजीवन पुन सचारित कर सकेगे। इस समय आर्यसमाजो में व्याप्त शिथिलता को दूर करने के लिए आओ हम मिलकर, बैठकर एक-दूसरे के प्रति आस्था रखते हुए निम्नलिखित सुझावो को कार्यान्वित करने और कराने का प्रयास करें। हा सर्वप्रथम मैं अपने मे झाकू और स्वयं आचरण करके ही दूसरो को आचरण या अपनाने के लिये कहने का गुरुमन्त्र अपनाना होगा।

१ आर्य शब्द के अर्थ को समझकर ही अपने नाम के साथ आर्य लगाये। अगर हमारे कार्य, सोच व व्यवहार अर्थ के अनुसार नहीं होगे तो हम आर्य शब्द को बदनाम करेंगे। इसलिये आर्य शब्द की मर्यादा को बचाना अपना कर्तव्य समझना होगा।

२ जातिवाचक एव गोत्रसूचक शब्द का प्रयोग अपने नाम के साथ लगाकर अपनी पहचान बनाने का काम न करे। जाति जन्मकुल से नहीं जाति तो कर्म से होती है। कर्म समयानुसार अपनाते हैं, परन्तु कुल नहीं बदलते। जाति तो गुरु नानक के कथनानुसार मानव की एक ही जाति है अर्थात् जाति केवल मानव, पशु-पक्षी, कीट-पतग के नाम से होती है।

३ अभिवादन आदर, आस्था और सम्मान का सूचक है जो कि नमस्ते शब्द में पूर्णरूप से समाहित है। अत परस्पर जब भी अभिवादन का समय हो श्रद्धापूर्वक, मीठे स्वर में, थोडा झुककर और मुस्कराकर नमस्ते ही कहें।

४ प्रत्येक आर्य के घर पर 'ओ३म्' ध्वज पताका लहरानी चाहिये। दीपावली पर्व और मकरसंक्रान्ति पर्व पर (या अन्य पर्वों पर) ध्वज बदल लेना चाहिये। यह आर्य परिवार के निवासस्थान व कार्यस्थल का पहिचान सकेत है।

५ ओ३म् ईश्वर का मुख्य नाम है इस शब्द को किसी न किसी रूप में प्रत्येक मतपन्थों के ग्रन्थों, मन्त्रों, पाठों में प्रयोग किया जाता है। यहा तक कि अन्य सम्प्रदायों में इसको अपनी योग्यता अनुसार मानते हैं अत. प्रत्येक आर्य (हिन्दू जिसमें सभी मत-पंथ निहित हैं) को अपने निवास के मुख्य द्वार पर 'ओ३म्' शब्द मोटे सुन्दर अक्षरों मे अंकित कराना चाहिये। सुन्दर और शोभायमान भवन-घर के द्वार को काली हाडी या काले लोहे के पतेर पर भद्दी डरावनी शक्लवाला चिह्न नहीं लगाना चाहिए।

६ प्रत्येक आर्य को आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्सगों में जहा पर हो उसी नगर या ग्राम के आर्यसमाज में अपनी उपस्थिति दर्ज करवाये।

७ प्रत्येक आर्य को कुछ समय नियमपूर्वक सुविधानुसार आर्यसमाज लगाना चाहिये ताकि संगठन और समाज की व्यवस्था सुदृढ हो सके और वहा चल रही गतिविधियों में भागीदार बने।

८ परिवारजनों की सुविधानुसार नित्यप्रति सन्ध्या, हवन का समय निश्चित करके मिलकर करने का प्रयास करे।

९ 'शिखा-सूत्र (यज्ञोपवीत) की महत्ता को समझाना घर के मुखिया का कर्तव्य है और समय-समय पर परिवारजनो की इस सम्बन्ध मे पडताल भी करे।

१० स्वाध्यायशील बनना जरूरी है उसके लिये मन-शरीर और बुद्धि को उर्जा शक्ति प्रदान करनेवाले सतसाहित्य पढना ही स्वाध्याय कहलाता है। मात्र समाचार-पत्र, उपन्यास, अश्लील पुस्तको को पढना स्वाध्याय नहीं कहलाता।

११ परोपकार की भावना अपने से छोटे, बडे, निर्बल, असहाय और सभी प्राणियों के प्रति हर समय रखनी चाहिये। स्वार्थ और सकीर्णता की भावना को त्यागनेवाला मानव ही आर्य कहलाने का अधिकारी है।

१२ परमपिता परमेश्वर से सघर्षमय कर्मशील जीवन मागो। आलस्य और सुखमय जीवन को नपुसक बना देता है। सकट के समय साहस, धैर्य और समभाव रखनेवाला ही आर्य कहलाता है।

एक कवि ने आर्य कौन ? इसका चित्रण अपनी भावनाओ को निम्न पक्तियों मे सजोया है–

> जो ईर्ष्या द्वेष दम्भ मोह को न अपनाता कभी,
> चित्त बीच राजद्रोह को न अपनाता कभी।
> पापरूपी कर्मों से भागता है कोसों दूर जो,
> प्राणिमात्र से न कभी वैरभाव लाता कभी।
> चुगली का त्याग करे, वाद-विवाद दुष्टों से न बढाये,
> मदिरा आदि नशे धुए न, उन्नत वह बन जाये।
> कहती है विदुरनीति सीधी साफ बात एक,
> ऐसा जन ही तो 'आर्य' पदवी को पाता है।

अन्त मे मैं प्रत्येक आस्थावान आर्य को पाच 'आ' अपनाने की अनिवार्यता पर बल देता हू। (१) आचार-व्यवहार, (२) आदरपूर्वक सत्कार करना, (३) 'ओ३म्' को हर समय स्मरण करना, (४) आग अग्निहोत्र की भावनाओ से जीवन को सुगन्धित बनाना, (५) आर्यसमाज के मन्तव्यो के प्रति सजग और सचेत रहना और रखना। मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरे इन विचार विन्दुओं से सहमत होंगे। इसी विश्वास के साथ।

निवेदक : **राजेन्द्र आर्य**, हासी (हिसार)

गुजरात राहत कोष अपील

महर्षि दयानन्द एवं महात्मा गांधी की जन्मभूमि संकट में

२६ जनवरी २००१ को गुजरात में आए भूकम्प से भुज, अहमदाबाद, महर्षि की जन्मभूमि टंकारा का गुरुकुल भवन, यज्ञशाला, गोशाला, गाधी जी की जन्मभूमि तथा अन्य क्षेत्रों में जो भारी तबाही हुई है उसकी कल्पनामात्र से ही दिल काप उठता है। इस हादसे मे लाखों लोग काल का ग्रास बन गये, लाखों परिवार बेघर होगए, हजारों बच्चे अनाथ होगए और लाखों लोग घायल होगए हैं। वहा इस प्राकृतिक आपदा से पीडित लोग भोजन, पानी, दवाइया, कपडे और आश्रय के लिए जूझ रहे हैं। प्राकृतिक आपदा को रोका तो नहीं जासकता लेकिन पीडित लोगो की सहायता करना हमारा सबसे बडा धर्म है। आज सारा राष्ट्र सकट की इस घडी में गुजरात के लोगों के साथ है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अधिकारियों ने सहयोगियों से परामर्श करके निश्चय किया है कि **'गुजरात भूकम्प पीडित सहायता निधि'** में करोडों रुपये की आहुति दी जावे। गुजरातवासियो के परिवार के कल्याण के लिए हरयाणा प्रान्त के सभी वेदप्रचार मण्डल, आर्यसमाज, गुरुकुल, कालिज एव अन्य आर्यशिक्षण सस्थाएं इस सहयोग यज्ञ में अधिक से अधिक धनराशि बैंक ड्राफ्ट, चैक या नकद आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को भेजें। यह राशि आयकर से मुक्त है।

सभाप्रधान स्वामी ओमानन्द जी महाराज ३१ जनवरी २००१ को लाखो रुपये का सामान कम्बल, औषधिया आदि लेकर गुरुकुल के ब्रह्मचारियों एवं कार्यकर्ताओं के साथ टंकारा सहायता कार्य का निरीक्षण करने गये थे। आर्यसमाज टकारा मे अपना मुख्य सहायता केन्द्र बनाकर मोरवी आदि सैकडो गावों मे सेवा का कार्य आरम्भ करवाया। देश-विदेश में बैठे सभी भारतीयो से प्रार्थना है कि वे भारी सख्या मे गुजरात के भूकम्प पीडितों की सहायता के लिए धन की सहायता भेजें। दानियों के नाम सर्वहितकारी साप्ताहिक में प्रकाशित किये जारहे हैं।

निवेदक

स्वामी ओमानन्द — सभाप्रधान
स्वामी इन्द्रवेश — कार्यकर्ता प्रधान
प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास — सभामन्त्री
बलराज आर्य — सभा कोषाध्यक्ष
प्रो०शेरसिंह — पूर्व रक्षाराज्यमंत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सभी पदाधिकारी अन्तरंग सदस्य एवं कार्यकर्ता

पातञ्जल योगधाम आर्यनगर ज्वालापुर हरिद्वार का

५७वां ध्यानयोग शिविर एवं यौगिक यज्ञ

(शुक्रवार ६ अप्रैल, २००१ से गुरुवार १२ अप्रैल २००१ तक)

आपको जानकर अत्यन्त प्रसन्नता होगी कि गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी योगधाम मे श्री स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में ध्यानयोग शिविर का आयोजन किया जारहा है, जिसमें आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि का प्रशिक्षण दिया जायेगा तथा यम, नियमादि का पालन भी कराया जायेगा। शिविरार्थी शारीरिक निर्बलता तथा मानसिक अशान्ति से छुटकारा पाने के लिये विविध यौगिक उपायों से लाभ प्राप्त करके आत्मदर्शन का मार्ग प्रशस्त कर सकेंगे शिविर में यथासमय आचार्य श्री वेदप्रकाश 'श्रोत्रिय', श्री स्वामी इन्द्रवेश सरस्वती जी के प्रवचन तथा स्वामी रुद्रवेश जी के भक्ति संगत होंगे।

–स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती, प्रधान

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ७६८७४, ५७७७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ७७७२२) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। पत्र के प्रत्येक प्रकार के विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक होगा।

प्रधानसम्पादक : प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक :- डा० सुदर्शनदेव आचार्य

वर्ष २८ अंक १८ २८ मार्च, २००१ वार्षिक शुल्क ६०) आजीवन शुल्क ६००) विदेश में १० पौंड एक प्रति १-२५

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक साधारण एवं नैमित्तिक अधिवेशन सम्पन्न

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के ८५वें वार्षिकोत्सव के दूसरे दिन आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक साधारण एवं नैमित्तिक अधिवेशन दिनांक १८ मार्च २००१ को प्रात. ११ बजे स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद में सम्पन्न हुआ। इसमें प्रो० शेरसिंह जी पूर्व रक्षाराज्यमंत्री, स्वामी इन्द्रवेश जी सभा कार्यकर्त्ता प्रधान, स्वामी अग्निवेश जी, श्री सूबेसिंह जी पूर्व एस.डी.एम., डा० सुदर्शनदेव आचार्य, डा० रणजीतसिंह, चौ० धर्मचन्द पूर्व एम०डी० आदि सहित हरयाणा के विभिन्न जिलों से सभा के प्रतिनिधियों ने भारी संख्या में भाग लिया।

१ अधिवेशन में सर्वप्रथम सभा के गत १९९९-२००० वर्ष के १७०७२१२ के आय-व्यय को स्वीकृत किया गया तथा वर्ष २०००-२००१ के लिए ३६,६५,८०० का बजट पास किया गया। सभा के आय-व्यय एव बजट के साथ-साथ सभा के अधीन चलने वाले गुरुकुल कुरुक्षेत्र, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ तथा दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय शादीपुर यमुनानगर आदि का भी आय-व्यय एव बजट पास किया गया।

२ बोगस सभा से सम्बन्ध रखने तथा अनुशासनहीनता के कारण सभा की प्रतिनिधि (मतदाता) सूची में से काटे गए (श्री कुलभूषण आर्य सभा कोषाध्यक्ष सहित) २० नामों के काटने की सम्पुष्टि के साथ-साथ श्री कुलभूषण आर्य के स्थान पर श्री बलराज आर्य पानीपत की नए कोषाध्यक्ष के रूप में नियुक्ति की सम्पुष्टि की गई।

३ जिला वेदप्रचार मण्डलों की प्रगति पर विचार करते समय हरयाणा प्रान्त में आर्यसमाज के प्रचार कार्य को और अधिक गति देने के लिए हरयाणा के ९० विधान सभा क्षेत्रों में ९० वेदप्रचार मण्डलों का गठन किया जाएगा। इस समय हरयाणा में १९ जिलों में १६ जिला वेदप्रचार मण्डल कार्य कर रहे हैं। विधानसभा क्षेत्र वेदप्रचार मण्डलों के गठन से आर्यसमाज के वेदप्रचार कार्यक्रम को प्रत्येक जिले के गाव-गांव तथा शहरों तक पहुंचाया जाएगा। आज भी देश में एक लाख व्यक्ति आर्यसमाज की पद्धति से दैनिक यज्ञ करते हैं। आर्यसमाज एक राष्ट्रीय संस्था है। आर्यसमाज को ही हरयाणा निर्माण का श्रेय जाता है।

४ सतलुज-यमुना लिंक नहर नदी जलविवाद के जन-जागरण हेतु १० मई से १५ दिन की एक जनजागरण यात्रा निकाली जाएगी। इस यात्रा में आर्यसमाज के संन्यासी व कार्यकर्त्ता भाग लेंगे। यात्रा के प्रथम चरण में दक्षिणी हरयाणा के १० जिलों प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में जनजागरण कर आन्दोलन के लिए लोगो को तैयार किया जाएगा। सतलुज-यमुना लिंक नहर के पानी के साथ-साथ भारत सरकार से माग की गई कि पजाब के हिन्दीभाषी क्षेत्र अबोहर-फाजिल्का आदि हरयाणा को दिए जाए। हरयाणा प्रान्त के गठन के समय भारत सरकार ने पूरा पैसा खर्च करके हरयाणा की नई राजधानी बनाने की जिम्मेदारी ली थी। भारत सरकार अपना वचन पूरा करे। बटवारे के समय भारत सरकार ने हरयाणा की जो शर्तें मानी थीं उन्हे पूरा करे।

५ विशेष आमंत्रित प्रिंसिपल श्यामलाल जी दिल्ली महासचिव राजभाषा संघर्ष समिति दिल्ली के प्रस्ताव पर हरयाणा सरकार के कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी के व्यवहार की असन्तोषजनक स्थिति, प्राथमिक कक्षाओं में अंग्रेजी की अनिवार्यता, राज्य के चारों विश्वविद्यालयों में अंग्रेजी का गैरकानूनी वर्चस्व, केन्द्र की रक्षा सेवा परीक्षाओं-एन.डी.ए. सी.डी.एस. इत्यादि में अंग्रेजी की अनिवार्यता के कारण हरयाणा के होनहार नौजवानों के साथ हो रहे अन्याय व भेदभाव तथा यहां के उच्च न्यायालय में हिन्दी को लागू कराने सम्बन्धी समस्याओं पर गंभीरता से विचार किया गया। अधिवेशन में सर्वसम्मति से निश्चय किया गया कि सभा इस कार्य में सुधार लाने के लिए इसे अपने हाथ में ले। इसके लिए सभा के कार्यकर्ता प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया जिसके निम्नलिखित सदस्य बनाए गए।

अध्यक्ष–श्री स्वामी इन्द्रवेश जी रोहतक, संयोजक–श्री श्यामलाल आर्य दिल्ली, सदस्य–प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, चौ० सूबेसिंह पूर्व एस डी एम रोहतक, चौ० धर्मचन्द रोहतक, श्री महावीर शास्त्री रोहतक, प्रो० चन्द्रप्रकाश आर्य करनाल, श्री जगदेव विद्यालकार दूबलधन (झज्जर), श्री रघुनाथ प्रियदर्शी हिसार, चौ० हरफूलसिंह आर्य, बुडाना (हिसार), सूबेदार आनन्दसिह आर्य, निडाना (रोहतक), चादसिंह आर्य, झोझूकला (भिवानी), प्रिंसिपल लाभसिंह, पानीपत, श्री रामगोपाल गुप्ता, तोशाम (भिवानी), प्रो० जयदेव आर्य, दिल्ली।

६ पाखण्ड के खण्डन बारे में पारित स्वामी अग्निवेश जी का प्रस्ताव (१२५वे स्थापना वर्ष के समापन पर) आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने आज से १४० वर्ष हरद्वार कुभ मेले में लाखों धर्मध्वजियों के मुकाबले अकेले पाखण्ड-खण्डिनी पताका फहराई थीं और धर्म के नाम पर पनप रहे अधविश्वास, गुरुडम पोपलीला आदि पाप-पाखण्ड का पर्दाफाश किया था।

आर्यसमाज की स्थापना के बाद हर कुंभ-महाकुंभ आज (२१ फरवरी) ऋषि बोधोत्सव-शिवरात्रि पर दिल्ली के लालकिले पर हम सभी आर्य नर-नारी पाखण्ड-खण्डिनी पताका फहराकर संकल्प लेते हैं कि हम हर धर्म मजहब के पाखण्ड का विरोध करते रहेंगे और अपनी मान्यता स्थापित करेंगे।

(१) महाकुभ हो या अन्य कोई पर्व, किसी भी नदी में डुबकी लगाने से पाप नहीं धुलता। अपितु ऐसे पाखण्ड से नये सिरे से पाप करने के लाइसेंस का नवीनीकरण होता है और समाज में पाप अर्थात् अधर्म का प्रचलन बढता जाता है।

(२) वैदिक मान्यता के अनुसार शुभ-अशुभ कर्मों का फल भोगना अवश्यभावी है। यही न्यायकारी परम कारुणिक परमात्मा की न्याय व्यवस्था है। इसलिये ईश्वर का नाम जपकर अथवा डुबकी लगाकर पापमुक्त हो जाने की बात कपोल कल्पना है। ईश्वर का दर्जा घटाकर रिश्वतखोर थानेदार के बराबर लाने जैसा है।

(३) गाजा अफीम का दम लगाने वाले चिलमची साधु या शराब पीकर नगे धमाचौकडी करनेवालों का धर्म के नाम पर महिमा मण्डन हिन्दू मान्यताओ का अपमान है।

(४) धर्मध्वजियो द्वारा स्वय को परमात्मा का अवतार घोषित करना अथवा अपने चेलो से ऐसा करवाना और घृणित गुरुडम को भोली भाली जनता पर थोपना, पशुबलि से लेकर नरबलि तक तान्त्रिक, जादू टोना आदि करना, गडे ताबीज, शनीचर देवता का प्रकोप बताना और डायन बताकर किसी मासूम की हत्या कर देना–ये सभी घोर निन्दनीय अपराध हैं। हमें इनके विरुद्ध प्रचण्ड जनमत जागृत करना होगा क्योंकि आज के वैज्ञानिक युग में भी यह सब पनप रहा है।

(५) अवतारवाद की परम्परा में पुट्टपूर्ति के सत्य साई बाबा द्वारा चमत्कार दिखाने की बात पुरानी पड गई। उनके द्वारा नाबालिग बच्चों के यौन शोषण की कुत्सित हरकतो का हाल ही में भण्डाफोड हुआ है और विश्व के कई देशों मे उनके ही चेले उनके चित्र फाडकर उनके मंदिर तोड़ रहे हैं। भारत सरकार को चाहिये कि उनके बारे मे प्रकाशित आरोपों के संदर्भ में एक उच्च स्तरीय जाच आयोग बैठाये और धार्मिक पाखण्ड द्वारा अर्जित अकूत सम्पत्ति को जनता की सेवा के लिये समर्पित करे।

(६) ईसाई-मुस्लिम-सिख-जैन-बौद्ध-कबीरपंथी-ब्रह्मकुमारी आदि अनेकानेक सम्प्रदायो में भी कतिपय धर्मध्वजी अपना पाखण्ड प्रचार कर रहे हैं और पौराणिक मूर्तिपूजा की

(शेष पृष्ठ दो पर)

आर्यसिद्धान्त-शिक्षा

इन्द्रसिंह आर्य, आरजैड-६०, ब्लाक-ओ, नया रोशनपुरा, नजफगढ़, दिल्ली-४३

सब विद्याओ का मूल तत्त्वमात्र ईश्वर द्वारा प्रकाशित हुआ है। इसका विशेष प्रभाव मनुष्यो के हाथो अभ्यास द्वारा होता है। ईश्वर ने ऋग्वेद में सकल पदार्थों के गुणों का प्रकाश किया है। सृष्टि के समस्त पदार्थो को ठीक-ठीक उपयोग में लेने के लिए कर्म करना चाहिए, इसका उपदेश परमात्मा ने यजुर्वेद में किया है। क्योंकि जब तक मनुष्य को क्रियात्मक ज्ञान नहीं होता तब तक उसे उत्तम सुख की प्राप्ति नहीं होती। विद्या की सार्थकता क्रियान्वयन मे है और क्रिया पदे-पदे विद्या की अपेक्षा करती है। बिना व्यावहारिक ज्ञान के मनुष्य का किया हुआ कर्म पगु एवं अकिंचित्कर है। पूर्वकाल में भिन्न-भिन्न विद्याए भरतखण्ड में वेदो के कारण प्रसिद्ध थीं। जैसे-विमान-विद्या, शस्त्रास्त्र विद्या इत्यादि। विद्याओ की पुस्तक नष्ट हो जाने से, विद्याएं भी नष्ट हो गईं। आजकल के पण्डित लोग कहते हैं कि पहले मन्त्रोचार के सामर्थ्य से शस्त्रास्त्र निर्माण हो जाते थे। परन्तु ऐसा नहीं है। मन्त्रों के कारण आग उत्पन्न होती थी, यदि ऐसा माने तो मन्त्र बोलने वाला स्वय कैसे नहीं जलता था ? मन्त्र नाम है, विचार का। विचार से प्रथम सब सृष्टि पदार्थो का ज्ञान और तत्पश्चात् क्रिया करने से अनेक प्रकार की वस्तुए और क्रिया-कौशल उत्पन्न होते हैं। प्राचीन (आर्य) लोग एक ही मन्त्र को लेकर जपने नहीं बैठते थे, बल्कि अनेक वैदिक मन्त्रो की मीमासा किया करते थे, इसलिए तो उन्हें वारुणास्त्र, आग्नेयास्त्र, (पाशुपतास्त्र) मोहनास्त्र और नागपाश आदि बनाने की विद्याए मालूम थीं। यह कार्य मुख्यत ब्राह्मण लोगो का था। ब्राह्मण का कार्य अध्ययनाध्यापन तक ही सीमित नहीं था बल्कि हस्तक्रिया, यन्त्रकला, कला-कौशल में भी वे पारगत होते थे। बड़े-बड़े पाठान्तर (कण्ठस्थ) करने से विद्या उत्पन्न नहीं होती, यह तो विद्या प्राप्ति का एक साधनमात्र है यथार्थ मे दर्शन (साक्षात्कार) ही विद्या है। मनुष्य कहीं अकर्मण्य न हो जाए अत सब प्रकार की विद्या पुरुषार्थ से सपादन करने में प्रयत्नशील रहना चाहिए। मनुस्मृति में वर्णित 'यजन, याजन' का अर्थ मात्र अग्निहोत्र ही नहीं लेना चाहिए। यहा 'यजन-याजन' शब्द प्रयोग वा कर्म के लिए प्रयुक्त हुआ है। अत स्पष्ट है कि ब्राह्मणादि लोग शिल्प कर्म के सैद्धान्तिक और प्रायोगिक दोनो ही रूपो के ज्ञाता/शिक्षक होते थे। महर्षि दयानन्द के शब्दो मे शिल्प श्रेष्ठ यज्ञ है। महर्षि ने यजु० भाष्यभूमिका के आरम्भ में 'यज्ञ' की व्याख्या इस प्रकार से की है-'यज्ञ' शब्द 'यज्ञ देवपूजासगतिकरणदानेषु' धातु से सिद्ध होता है। देवपूजा (विद्वानो का सत्कार), सगतिकरण (पदार्थों के गुणो के मेल और विरोध ज्ञान की सगति से शिल्पविद्या का प्रत्यक्ष करना) और दान (विद्वानो से ग्रहण की हुई विद्यादि शुभ गुणो का दान करना) ये तीन अर्थ हैं। शिल्पादि श्रेष्ठ त्रयी यज्ञ का सपादक, चारों वेदों को अर्थसहित जाननेवाला, पदार्थविद्या का ज्ञाता, यानविमानादि का निर्माता ब्रह्मा (ब्राह्मण) कहलाता है। इस विषय को और उजागर करने के लिए निम्नलिखित प्रमाण उद्धृत करना आवश्यक समझते हैं।

१ ज्ञानविज्ञानमास्तिक्य ब्रह्मकर्म स्वभावजम् (गीता)

ब्राह्मणलक्षणम्-(ज्ञानम्) सब शास्त्रों का पढना तत्पश्चात् पढाने का पूर्ण सामर्थ्य होना। (विज्ञानम्) पृथिवी से लेके परमेश्वर पर्यन्त पदार्थो को जानना तत्पश्चात् क्रिया कुशलता तथा योगाभ्यास से साक्षात् करके उनसे उपकार ग्रहण करना और कराना ये गुण कर्म जिस स्त्री-पुरुष मे हो, वे ब्राह्मण और ब्राह्मणी कहलाने के अधिकारी हैं। (स० वि० ब्राह्मणलक्षणम्)

२ **ब्रह्मणा शालां निर्मितां कविभिर्निमिता मिताम्।** (स०वि० शाला कर्मविधि प्रकरण)

चारो वेदो के ज्ञाता ब्राह्मण (ब्रह्मा) द्वारा बनाई गई शाला सब ऋतुओं में सुख देने वाली, ऐश्वर्य, आरोग्य, सर्वदा सुख प्रदान करने वाली है, उसी को यजमान लोग निवास के लिए ग्रहण करे।

३ ब्रह्मा विश्वसृजो-यह मनु० (अ० १२, श्लोक ५०) का वचन है-

जो मनुष्य सत्त्वगुणयुक्त होके उत्तम सात्त्विक शुभ कर्म करते हैं। वे 'ब्रह्मा' (ब्राह्मण) का जन्म पाते हैं। वेद से व्युत्पन्न ब्रह्मा समस्त सृष्टि विद्या के ज्ञाता विविध प्रकार के यान विमानादि का आविष्कार करके जगत् का उपकार करते हैं।

४ (ऋग्वेद १-३-५ के अनुसार) ईश्वर की प्राप्ति उन्हीं क्रियावान् ब्राह्मणों को होती है जो पदार्थ विद्या के धर्म को यथावत् जानकर सर्वजन हित के लिए उसको उपयोग में लाते हैं।

यथा- "इन्द्रा याहि धियेषितो विप्रजूत: सुतावत:। उप ब्रह्माणि वाघत:

प्रमाणार्थ-(विप्रजूत) 'विप्र' पद निघण्टु (३/१५) में मेधावी नामों से पढा गया है। (ब्रह्माणि) 'ब्रह्म' वै ब्राह्मण ' इस शतपथ ब्राह्मण (श० १३-१-५-३) के प्रमाण से 'ब्रह्म' का अर्थ ब्राह्मण है। (वाघत.) यह पद निघण्टु (३/१८) में ऋत्विक् नामों में पढा गया है।

अर्थ-इन्द्र (ईश्वर) उत्तम ज्ञान से युक्त शुद्ध बुद्धि से वा उत्तम कर्मों से प्राप्त करने योग्य है। वह मेधावी विद्वानों से माना जाता है। वह पदार्थ को प्राप्त करने वाले, वेदार्थ के ज्ञाता, यज्ञ-विद्या के अनुष्ठान से सुखो को सिद्ध करनेवाले ब्राह्मण (ऋत्विक) को प्राप्त होता है।

ब्राह्मण लोग पदार्थों से कैसे उपकार ग्रहण करें ? जिस प्रकार सोवियत संघ के वैज्ञानिकों ने पदार्थों से उपकार ग्रहण किया है। यह खबर दिनांक ५-२-९३ को भारत वर्ष के प्रत्येक मुख्य समाचार से प्रकाशित हुई थी कि सोवियत सघ के वैज्ञानिक अनुसंधान ने एक अंतरिक्ष दर्पण (सूर्य की किरणों को पृथ्वी के अधेरे भाग में प्रकाश फैलाने वाला) नामक यन्त्र बनाया है। इस दर्पण की सहायता से अब रात को दिन में बदला जा सकेगा। केवल+तार नामक पदार्थ पर एल्युमीनियम की परत चढाकर इस यंत्र को २० मीटर व्यास के पैरासूट जैसा आकार दिया गया है। इस दर्पण से पृथ्वी की ओर प्रकाश पुंज परावर्तित होने की भी पुष्टि हो चुकी है।

५. कविवर दिनकर के शब्दों में ब्राह्मण के लक्षण :-

असन वसन से हीन दीनता में जीवन धरने वाले।
सहकर भी अपमान मनुजता की चिता करने वाले।।
कवि, कोविद, विज्ञान, विशारद, कलाकार, पण्डित ज्ञानी।
कनक नहीं कल्पना और उज्ज्वल चरित्र के अभिमानी।।

प्राचीनकाल मे ब्राह्मण लोग, राजनीति, युद्ध विद्या, कृषि, व्यापार, ललितकला, भवन निर्माण कला, भैषज, शल्यचिकित्सा, भूगोल, खगोल, गणित वेदवेदांगों के ज्ञाता होते थे। आज तो ऐसे ऊट-पटाग पूजापाठ में संलग्न कर्मकाण्ड सपादित करनेवाले को ब्राह्मण कहा जाता है। जिसके करने न करने से कोई लाभ नहीं होता। हा समय और धन की अवश्य हानि होती है। (परोपकारी, सितम्बर १९९१)

६. *"एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मन."* यह मनु० (अ० १ श्लोक १३९) का वचन है। ब्राह्मण लोग युद्ध विद्यादि के आचार्य (गुरु) होते थे। इस आर्यावर्त में उत्पन्न ब्राह्मणों से देश-देशान्तरों से मनुष्य विद्या और चरित्र की शिक्षा ग्रहण के लिए आते थे। विद्वान् अर्थात् ब्राह्मण लोग आर्यकुलोत्पन्न बालकों को विद्यारम्भ के समय यज्ञोपवीत धारण करने के लिए देते थे। यदि ठीक-ठीक विद्या सपादन न हुई तो चाहे ब्राह्मण के ही कुल में उत्पन्न हुआ हो तो भी उस विद्यार्थी का यज्ञोपवीत छीन लिया जाता था इससे उसकी बडी अप्रतिष्ठा होती थी। उसी तरह शूद्रादि भी उत्तम विद्या संपादन कर 'ब्राह्मणत्व' के अधिकारी होकर यज्ञोपवीत धारण करते थे। उस समय चौदह विद्याओं के पढने की रीति हमारे देश में थी। (चार वेद, चार उपवेद और छ अग-शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष (फलित नहीं)। (क्रमश:)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा.........(प्रथम पृष्ठ का शेष)

तरह कब्र पूजन, पाषाण पूजन, स्वर्ग की ठेकेदारी, पाप को क्षमा करना आदि अंधविश्वासों का सहारा ले रहे हैं। उनके अनुयायियो में आर्यसमाज की तरह बहस उठनी चाहिये।

(७) सरकार द्वारा आकाशवाणी-दूरदर्शन पर धार्मिक पाखण्ड पोषण करनेवाले अतार्किक, बुद्धिविरोधी समाज विरोधी प्रचार सामग्री का और सीरियलों का हम विरोध करते हैं और सविधान की धारा ५१-ए के अन्तर्गत ऐसे तमाम प्रसारणों पर प्रतिबध की मांग करते हैं।

७ २३ से २६ मार्च तक मुम्बई में होनेवाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में हरयाणा की ओर से बढचढकर भाग लेने का निश्चय हुआ।

८ आर्य विद्या सभा गुरुकुल कांगडी हरद्वार के प्रधान डा० रणजीतसिंह जी ने गुरुकुल कागडी की स्थापना के शताब्दी वर्ष के दूसरे चरण के रूप में मनाए जानेवाले गुरुकुल कागड़ी के ११-१२-१३ अप्रैल को आयोजित उत्सव में हरयाणा से बडी संख्या में लोगों से पहुचने की अपील की। सभा कार्यालय दयानन्दमठ, रोहतक से प्रतिव्यक्ति २०० रु० भुगतान के आधार पर ११ अप्रैल को प्रात:काल बस गुरुकुल कांगडी हरद्वार ले जाने का निश्चय किया गया। इच्छुक यात्री तत्काल श्री सन्तराम आर्य दयानन्दमठ, रोहतक के पास २०० रु० प्रतियात्री जमा करा देवें। ५० यात्री होने पर ही बस की व्यवस्था हो सकेगी।

९. सभा के नैमित्तिक (असाधारण) अधिवेशन में २६-३-२००० ई० को पारित सभा विधान में संशोधन की सर्वसम्मति से सम्पुष्टि की गई।

१० अन्त में सभाप्रधान स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने सुझाव दिया कि नवयुवक तथा सेवानिवृत्त व्यक्ति आर्यसमाज के कार्यों के लिए आगे आएं। **अपनी सन्तान को आर्यसमाजी बनाओ, गुरुकुल में पढ़ाओ। सभी सत्यार्थप्रकाश पढ़ें, उसका स्वाध्याय करें। सारे हरयाणा को आर्य बनाओ। जीना है तो आर्यसमाज में आ, जीने की जगह आर्यसमाज में है।**

प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामंत्री

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

क्रमांक . दिनांक २२ ३ २००१

सभा से सम्बन्धित आर्यसमाजों के अधिकारी महानुभावों की सेवा में निवेदन

माननीय श्री प्रधान जी/मन्त्री जी
सभा से सम्बन्धित समस्त आर्यसमाज, हरयाणा

विषय : सभा का त्रिवार्षिक साधारण अधिवेशन

मान्य महोदय,

सादर नमस्ते।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का त्रिवार्षिक साधारण अधिवेशन ९ अगस्त २००१ से पूर्व होना है। इसलिए हरयाणा के सभी आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि आगामी ३ वर्ष के लिए अपने आर्यसमाज के प्रतिनिधि आर्यसमाज के नियम-उपनियमों के अनुसार चुनकर संलग्न प्रतिनिधि फार्म भरकर दिनाक ३० ०४ २००१ तक सभा कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक में भेज देवें, जिससे आपके प्रतिनिधि समय पर स्वीकार हो सकें।

प्रतिनिधि निर्वाचन के नियम

१ प्रत्येक आर्यसमाज जो आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक के साथ कम से कम एक वर्ष से सम्बन्धित हो और प्राप्तव्य दशांश तथा वेदप्रचार के लिए प्रतिवर्ष कम से कम १०१ रु० अथवा अधिक देता हो, को अधिकार होगा कि वह अपने प्रथम दस आर्य सभासदों पर एक प्रतिनिधि तथा आगे २० आर्य सभासदों (जिनके नाम उस आर्यसमाज की पजिका में प्रतिनिधि या प्रतिनिधियों की नियुक्ति तिथि से पूर्व वर्ष भर अकित रहे हों और यदि वे शुल्क देने वाले सभासद् हों तो उन्होंने वर्ष में पूरे १२ मासो का शुल्क आर्यसमाज के उपनियम संख्या-४ के अनुसार दिया हो) पर एक प्रतिनिधि भेज सकेगा।

२. नए प्रतिनिधियों की स्वीकृति के लिए सभा से सम्बन्धित प्रत्येक आर्यसमाज को पिछले तीन वर्षों का वेदप्रचार तथा दशाश की राशि के साथ-साथ 'सर्वहितकारी' का शुल्क ६० रुपये वार्षिक भेजना अनिवार्य है। वर्ष ९८-९९, ९९-२०००, २०००-२००१ का शुल्क जमा न होने पर प्रतिनिधि स्वीकृत नहीं होंगे।

३ आर्य सभासद् वे होते हैं जिनका नाम किसी आर्यसमाज की पुस्तक पर सदाचारपूर्वक वर्षभर अंकित रहा हो, शताश के अनुसार सभासदो की आय के हिसाब से समाज को शुल्क देते रहे हो और जिनकी उपस्थिति साप्ताहिक सत्संगों में कम से कम २५ प्रतिशत हो। (यदि अतरग सभा में किसी कारण से उनका शुल्क माफ न कर दिया हो या उपस्थिति के नियम को शिथिल न कर दिया हो।)

४ चुने जानेवाले प्रतिनिधि की आयु २१ वर्ष से कम नहीं होनी चाहिए और प्रतिनिधि फार्म पर छपे प्रतिज्ञा-पत्र पर प्रतिनिधि के हस्ताक्षर एव उसका पूरा पता फार्म में लिखना जरूरी है।

५ प्रतिनिधियो का निर्वाचन साधारण सभा में आर्य सभासद् सर्वसम्मति से या बहुमतानुसार करेंगे परन्तु वह प्रतिनिधि स्वीकार नहीं किया जाएगा, जो किसी ऐसे आर्यसमाज का सभासद् हो जिसका सम्बन्ध आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के साथ न हो।

६ नया प्रतिनिधि फार्म भेजते समय और प्रतिनिधियों के प्रत्येक चुनाव के अवसर पर जो सभा को प्रार्थना-पत्र भेजा जाए उसके साथ आर्य सभासद् होने का निश्चय-पत्र, शुल्क देने और सदाचार व विश्वास रखने का प्रतिज्ञा-पत्र सलग्न होना आवश्यक है। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अधिवेशनों में कोई प्रतिनिधि तब तक सम्मिलित न हो सकेगा, जब तक कि उसका निश्चय-पत्र और प्रतिज्ञा-पत्र नियमानुसार सभा के पास न पहुंच चुका हो, जिस समाज का वह प्रतिनिधि हो उससे वेदप्रचार, दशांश तथा सर्वहितकारी की राशि प्राप्त न हो चुकी हो।

७. प्रत्येक आर्यसमाज अपने सदस्य शुल्क की आय का दशाश प्रतिवर्ष सभा के कोष में भेजेगा। (सभा के विधान की धारा ८ क)

८ भरे हुए प्रतिनिधि फार्म की एक नकल अपने आर्यसमाज के रिकार्ड के लिए अवश्य रखनी चाहिए। आवश्यकतानुसार खाली प्रतिनिधि फार्म की फोटो कापी करालें।

९ वही फार्म स्वीकार किये जायेंगे जो आर्यसमाज के नियम-उपनियम तथा सभा के विधान के अनुसार भरकर भेजे जायेंगे।

१० अत· जिन आर्यसमाजों ने वर्ष ९८-९९, ९९-२००० तथा २०००-२००१ अर्थात् मार्च २००१ तक का तीन वर्षों का वेदप्रचार, दशांश तथा सर्वहितकारी शुल्क नहीं भेजा है उसे शीघ्र सभा प्रचारकों अथवा मनीआर्डर द्वारा सभा को भेजने का कष्ट करे।

आपसे अनुरोध है कि आप इस सम्बन्ध में यथाशीघ्र कार्यवाही कर अपना तथा अपने आर्यसमाज का पूर्ण सहयोग प्रदान करे।

धन्यवाद।

भवदीय

प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामंत्री

विशेष– वैसे तो वर्तमान प्रतिनिधियों का कार्यकाल मार्च २००१ को समाप्त हो रहा है, किन्तु नए प्रतिनिधि चुने जाने तक उनका प्रतिनिधित्व बना रहेगा।

सभी धर्मों तथा संस्कृतियों का आदिस्रोत : वेद

❑ प्रतापसिंह शास्त्री, आचार्य, एम.ए., पत्रकार, २५, गोल्डन विहार, हिसार

गताक से आगे–

बौद्ध काल मे ही महात्मा बुद्ध जैसा सन्यासी वेद ज्ञान से अनभिज्ञ था अन्यथा वह वेद के नाम से यज्ञो मे प्रचलित पशु बलि को, हिसा को अवश्य रोकता। उसने अहिसा धर्म का तो प्रचार किया किन्तु वैदिक कर्मकाण्ड से वह बिल्कुल अनभिज्ञ रहा। भारत मे लबे समय तक गोमेध-यज्ञ होता रहा और इसके नाम पर यज्ञो मे "गोवध" होता रहा। जबकि 'गौ' शब्द के अर्थ हैं धरती अर्थात् 'गोमेध' से अभिप्राय कृषि करना, खेती करना ही अर्थ होता है। वैदिक सस्कृत मे 'गो' शब्द के यद्यपि दो अर्थ हैं– गाय तथा पृथ्वी। जहा यज्ञ शब्द जुड गया वहा खेती करना यह यौगिक अर्थ हो गया। वेदों मे इसके अनेक प्रमाण हैं जहां 'गो' शब्द के अर्थ=पृथ्वी है यथा देखिए–ऋग्वेद मत्र १०/६५/६ **'या गौवर्तनि पर्येति निष्कृतं पयो दुहाना व्रतनीखारत'** अर्थात् जो पृथ्वी अपने नियम का पालन करती हुई, दानी और श्रेष्ठजनों के लिए चहु ओर धारा प्रवाह से निरन्तर अन्न रस फलादि योग्य पदार्थों को उत्पन्न करती हुई अनेक प्रकार की सुख सामग्रियों को पैदा करती है वह गौ परमात्मा की महिमा का उपदेश करती हुई अपनी कक्षा में सूर्य के चारों तरफ घूमती है। एक अन्य मत्र देखिए–**'अय गौ पृश्निरक्रमीद सदन्मातर पुर पितर च प्रयन्त्स्व।'** अर्थात् यह पृथ्वी जननी स्वरूप जल को प्राप्त होती हुई उसे अपने साथ लेती हुई तथा नि शेष प्राणियों को पितृवत् उत्पन्न तथा पालन करनेवाले सूर्य लोक के चारो तरफ चलती हुई, अन्तरिक्ष में भ्रमण करती है। इन उक्त मत्रों मे गौ शब्द के अर्थ जहा धरती है वहा वेद विज्ञान का सिद्धान्त भी अनादि काल से मत्र में विद्यमान है कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है। पारसियों मे 'गोमेध' के लिए 'गोमेज' शब्द पाया जाता है परन्तु उनके धर्म मे 'गोमेज' का अर्थ गोकुशी न करके, खेती करना लिया गया है। पारसी धर्म के विद्वान् डॉ० हाग व भारतीय काग्रेस के प्रारम्भिक नेता पारसी दादा भाई नारोजी भी यह स्वीकार करते हैं कि 'गोमेध' शब्द का अपभ्रश शब्द ही 'गोमेज' है जिसका अर्थ खेती करना है गाय को मारना नहीं और पारसी धर्म के इस 'गोमेज' शब्द का आदि स्रोत वेद ही है। अब देखते हैं इस विषय मे ईसाई क्या कहते हैं। रोमन साम्राज्य के अध.पतन से ३०० वर्ष पहले वहा एक धर्म फैला हुआ था जिसका नाम 'मिथ धर्म' था। इस धर्म का विस्तार इतना अधिक था कि जितना पीछे ईसाइयत का हो गया। ब्रिटिश म्युजियम मे इस धर्म का एक सगमरमर का बुत रखा हुआ है जिसमें मिथ देवता बर्छी लेकर गाय पर आक्रमण करता है परन्तु बर्छा लगने से खून की धार बहने के स्थान पर गेहूं, जौ, चना, चावल (धान), गन्ना, ईख आदि अनाज उपजते दिखाई गए हैं। डॉ० हाग लिखता है कि 'गोमेज' शब्द भी उसी समय का है जब 'गोमेज' या 'गोमेध' का अर्थ केवलमात्र कृषि करना समझा जाता था। किन्तु यह बुत उस काल का समझा जाता है जब लोग गोमेध से मतलब 'गाय को मारना' लेने लगे थे और साथ ही गोमेध का अर्थ खेती करना भी समझते थे। बुत बनाने वाले ने यह बुत खेती की प्रेरणा हेतु बनाया था गाय वध के लिए नहीं। यदि आज भी मुसलमान और ईसाई यहूदी या अन्य लोग महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित–'गोकरुणानिधि' पुस्तक पढ लें तो वे कदापि गो-वध न करें। राजस्थान के पौलिटिकल एजेंट कर्नल ब्रुक्स जब अपना सेवाकाल समाप्त कर इग्लैण्ड जाने लगे तो अजमेर में उनका विदाई-समारोह रखा गया। मौके की बात स्वामी दयानन्द जी भी उस दिन अजमेर मे ही थे। स्वामी जी की भक्तमण्डली आग्रह करके उन्हें भी समारोह मे ले गई। जब स्वामी जी से कुछ कहने का अनुरोध किया गया तो दो बातें ही केवल उन्होंने कर्नल ब्रुक्स को कही। आप लदन पहुंचकर महारानी विक्टोरिया को कह दें, यदि भारतीयो के धार्मिक जीवन में शासन इसी तरह हाथ डालता रहा और गाय जो भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ एव सास्कृतिक जीवन का प्रतीक है, उसका वध जारी रहा तो १८५७ की क्रान्ति फिर भी दोहराई जा सकती है।" स्वामी जी के इस गम्भीर गर्जन को सुनकर सब अवाक् रह गये। पर इतनी स्पष्ट बात साधु ही उनसे कह सकता था। कर्नल ब्रुक्स समझ गये यह संन्यासी देश की नब्ज पर हाथ रखकर बोल रहा है। वस्तुत 'गौ' का अर्थ पृथ्वी न करके गाय कर लिख गया और इससे यहूदी और मुहम्मदी मतो में एक भारी गलती पैदा हो गई। कुरानी में भी ऐसे सकेत हैं कि गौ को मारने का विचार किसी न किसी गलतफहमी से पैदा हुआ है। इनके धर्मग्रन्थों मे लिखा है–'और मूसा ने जब अपने लोगो को कहा कि खुदा ने गाय की कुर्बानी को कहा है, तो वे लोग कहने लगे- क्या हमसे मजाक करते हो ? इसके बाद उन लोगों ने तीन बार मूसा पर विश्वास नहीं किया और उसे बार-बार खुदा के पास भेजा और पूछा कि गाय की कुर्बानी से तुम्हारा क्या मतलब है ? जब हर बार मूसा ने गाय की कुर्बानी का ही जिक्र किया तब जाकर उन लोगों ने माना।' इससे भी ध्वनित होता है कि हजरत मुहम्मद के दिल में यह भाव था कि गाय को मारने के ख्याल में कहीं न कहीं गलती है लेकिन क्योंकि यहूदियों में गोकुशी चल पड़ी थी, इसलिये हजरत मुहम्मद ने इसे ले लिया।

(क्रमशः)

गुजरात राहत कोष अपील

महर्षि दयानन्द एवं महात्मा गांधी की जन्मभूमि संकट में

२६ जनवरी २००१ को गुजरात में आए भूकम्प से भुज, अहमदाबाद, महर्षि की जन्मभूमि टकारा का गुरुकुल भवन, यज्ञशाला, गोशाला, गांधी जी की जन्मभूमि तथा अन्य क्षेत्रों में जो भारी तबाही हुई है उसकी कल्पनामात्र से ही दिल काप उठता है। इस हादसे में लाखों लोग काल का ग्रास बन गये, लाखो परिवार बेघर होगए, हजारों बच्चे अनाथ होगए और लाखो लोग घायल होगए हैं। वहां इस प्राकृतिक आपदा से पीडित लोग भोजन, पानी, दवाइया, कपड़े और आश्रय के लिए जूझ रहे हैं। प्राकृतिक आपदा को रोका तो नहीं जासकता लेकिन पीडित लोगो की सहायता करना हमारा सबसे बडा धर्म है। आज सारा राष्ट्र सकट की इस घडी में गुजरात के लोगो के साथ है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अधिकारियों ने सहयोगियों से परामर्श करके निश्चय किया है कि **'गुजरात भूकम्प पीडित सहायता निधि'** में करोडों रुपये की आहुति दी जावे। गुजरातवासियों के परिवार के कल्याण के लिए हरयाणा प्रान्त के सभी वेदप्रचार मण्डल, आर्यसमाज, गुरुकुल, कालिज एव अन्य आर्यशिक्षण सस्थाए इस सहयोग यज्ञ में अधिक से अधिक धनराशि बैंक ड्राफ्ट, चैक या नकद आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को भेजे। यह राशि आयकर से मुक्त है।

सभाप्रधान स्वामी ओमानन्द जी महाराज ३१ जनवरी २००१ को लाखो रुपये का सामान कम्बल, औषधिया आदि लेकर गुरुकुल के ब्रह्मचारियों एव कार्यकर्ताओं के साथ टकारा सहायता कार्य का निरीक्षण करने गये थे। आर्यसमाज टकारा में अपना मुख्य सहायता केन्द्र बनाकर मोरवी आदि सैकडो गांवो मे सेवा का कार्य आरम्भ करवाया। देश-विदेश मे बैठे सभी भारतीयों से प्रार्थना है कि वे भारी संख्या में गुजरात के भूकम्प पीडितों की सहायता के लिए धन की सहायता भेजें। दानियो के नाम सर्वहितकारी साप्ताहिक में प्रकाशित किये जारहे हैं।

निवेदक

स्वामी ओमानन्द सरस्वती — सभाप्रधान
स्वामी इन्द्रवेश — कार्यकर्ता प्रधान
प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास — सभामंत्री
बलराज आर्य — सभा कोषाध्यक्ष
प्रो०शेरसिंह — पूर्व रक्षाराज्यमंत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सभी पदाधिकारी अन्तरंग सदस्य एवं कार्यकर्ता

आर्यसमाज लोहारू (भिवानी) का चुनाव

प्रधान–श्री बद्रीसिह गिगनाऊ, मंत्री–श्री रोहतास कुमार आर्य, उपप्रधान–श्री जागेराम, मगलाराम, धनपत व रामस्वरूप सैनी, उपमत्री–श्री हवासिह आर्य, कोषाध्यक्ष–डॉ० ब्रह्मदेव, पुस्तकाध्यक्ष–श्री भवरसिंह आर्य, प्रचारमत्री–श्री जयपाल आर्य, लेखानिरीक्षक– मा० अमरसिह व मा० निहालसिह, सरक्षक–स्वामी योगानन्द व स्वामी रामानन्द।

भूल सुधार

सर्वहितकारी मे दिनाक २१ फरवरी, २००१ के अक में आदर्श-विवाह मे भूलवश 'अतरसिह डबास सुपुत्र श्री योगेन्द्रकुमार ग्राम मोहम्मदपुर माजरा झज्जर का विवाह श्री हरिराम नैण सुपुत्री सरोज जोधपुर राजस्थान निवासी के साथ वैदिकरीति से सम्पन्न हुआ।' छप गया। कृपया इसे **'चि० योगेन्द्रकुमार सुपुत्र श्री अतरसिह डबास ग्राम मोहम्मदपुर माजरा झज्जर का विवाह सौ० सरोज सुपुत्री श्री हरिराम नैण जोधपुर** राजस्थान निवासी के साथ वैदिकरीति से सम्पन्न हुआ।' पढा जाये। **–सम्पादक**

पानी के राजनीतिक बंटवारे से हरयाणा घाटे में रहा

भेदभाव : पंजाब के सतलुज से साथ नहरों के बहाव की दिशा बदली गई : दक्षिण हरयाणा की कीमत पर अन्य राज्यों को लाभ

❑ ओमप्रकाश बेरी, पूर्व विधायक

पजाब से हरयाणा अलग बनाने काक एक कारण तत्कालीन पंजाब के राजनेताओं द्वारा राजकीय संसाधनों का अपने इलाकों मे प्रयोग भी था। यदि नहरी पानी के रहस्य का अवलोकन किया जाए तो भारत व पाकिस्तान के बीच १९६० में सिंधु नदी जल समझौता हुा था जिसके अन्तर्गत भारत ने पाकिस्तान को ११० करोड रुपये अदा करके सतलुज नदी के पानी का तत्कालीन पजाब तथा राजस्थान के बीच १९५९ में भाखडा-नगल समझौते के अधीन भाखडा प्रोजेक्ट द्वारा सिंचित इलाकों के प्रयोग के लिए बंटवारा किया गया। पजाब पुनर्गठन अधिनियम १९६६ के द्वारा पजाब व हरयाणा के बीच सतलुज के जल का बटवारा हुआ। इससे पहले सतलुज के पानी को हरयाणा में लाने के लिए भाखडा प्रोजेक्ट के अन्तिम ड्राफ्ट को चौधरी छोटूराम ने उस समय के रोहतक, गुडगाव, महेन्द्रगढ, हिसार, सगरूर तथा बठिंडा जिलों के बारानी व रेतीले इलाको की सिंचाई के लिए मन्जूर किया था। उनके निधन के बाद देश के राजनीतिक हालात बदल गए।

१९६६ मे हरयाणा बनने के बाद भी प्रदेश की राजनीति पर पुराने हिसार के लोगों का कब्जा रहा। यही कारण है कि चौधरी देवीलाल समझौते के नाम पर संघर्ष कराते रहे। चौधरी देवीलाल ने न्याय-युद्ध आन्दोलन के समय यह जिक्र कभी नहीं किया कि रावी-व्यास का १८ लाख एकड फीट पानी १९७७ में सिरसा तथा हिसार में गैरकानूनी ढग से चल रहा है बल्कि प्रचार करते रहे कि रावी-व्यास का पानी तो पजाब में सतलुज-यमुना जोड नहर पूरी होने के बाद हरयाणा को मिलेगा। सत्ता के बल पर इस पानी को पिछले २३ वर्षों मे सिरसा, हिसार (हांसी उपमण्डल को छोडकर) तथा जींद जिले के नरवाना उपमण्डल में प्रयोग किया जा रहा है। अत सिरसा तथा हिसार जिलों एव नरवाना उपमण्डल में नहरें एक माह में तीन सप्ताह चलती हैं और रोहतक, भिवानी, महेंद्रगढ, सोनीपत, रेवाडी में नहरें बडी मुश्किल से एक सप्ताह चलती हैं। रेवाडी तथा महेन्द्रगढ मे तो पीने का पानी भी मुश्किल से पहुच रहा है। गुडगाव तथा फरीदाबाद जिलों में तो इस पानी को ले जाने के लिए नहरे भी नहीं बनाई गई हैं। भिवानी, महेन्द्रगढ, रेवाडी तथा झज्जर जिलों में कई माइनरों मे तो कई वर्ष से पानी आया ही नहीं है।

जिस इलाके में पानी के लिए त्राहि-त्राहि मची हुई है उसी दक्षिणी हरयाणा में १९९५ में बाढ ने अपना कहर बरसाया था। सिरसा व हिसार जिलों में इस बाढ का नुकसान दक्षिणी हरयाणा की अपेक्षा कम था। इसका कारण था कि प्रदेश में पानी का बंटवारा राजनीतिक आधार पर होता है, जरूरत के अनुसार नहीं अर्थात् पानी, नौकरियों तथा बिजली का बंटवारा राजनीति करती रहीं। मुख्यमन्त्री की कुर्सी पर बैठे राजनेताओं ने इन संसाधनों का प्रयोग करके अपने वोट पक्का करने के लिए किया। यही कारण है कि बाढ के दिनों में तो भाखडा सिस्टम का सारा पानी रोहतक, सोनीपत, जींद तथा झज्जर जिलों की तरफ कर दिया जाता है तथा सूखे के समय में सिरसा, हिसार तथा जींद जिले के नरवाना उपमण्डल की ओर नहरी पानी का रूख रहता है।

हरयाणा के नरवाना उपमण्डल के झाल आदि गाव की समस्या रहती है कि उनकी नहरो मे पानी कम छोडा जाए। सिरसा तथा हिसार जिले के हासी उपमण्डल को छोडकर नहरों में इतना पानी आता है कि गांवों में तो हजारों एकड भूमि पर सेम की समस्या ने अपना भयानक रूप दिखाना शुरू कर दिया है। इसके विपरीत यमुना द्वारा सिचित इलाको मे जोहडों, जलघरों तथा तालाबो में पानी न पहुचने के कारण पेयजल के भी लाले पडे हुए हैं। हासी उपमण्डल के कवारी गांव में तो बवानी खेडा, तोशाम तथा सात बास के किसानों ने जबरदस्त नहरी पानी की मांग को लेकर धरना दिया था। अपने पेयजल समस्या के लिए लघुसचिवालय हिसार पर भी नहरी पानी के लिए प्रभावी प्रदर्शन किए थे। अब चिता का विषय है कि हरयाणा प्रदेश के डेढ जिले में तो नहरों में ज्यादा पानी छोडने की शिकायत कर रहे हैं तथा दक्षिणी हरयाणा में पेयजल के लिए जनजीवन अस्त-व्यस्त हो रहा है।

पश्चिमी यमुना नहर मे सालाना औसतन ३८ लाख एकड फीट पानी होता है। यह भी निश्चित नहीं है। पश्चिमी यमुना नहर प्रणाली से रावी-व्यास के पानी की उम्मीद मे जूई नहर, लुहारू कनाल, सिवानी नहर तथा जवाहरलाल नेहरू नहर निकालकर भिवानी, महेद्रगढ, रेवाडी तथा झज्जर जिलों के सूखे इलाके में इस पानी को लाने का प्रबन्ध किया गया था। इस तरह पश्चिमी यमुना नहर पानी का कमाड एरिया ४० लाख एकड हो गया जबकि इसके लिए पानी केवल ३८ लाख एकड ही उपलब्ध करवाया जा रहा है और इसके विपरीत भाखडा सिस्टम का कमाड एरिया लगभग २९ लाख एकड है और इसके लिए पानी की उपलब्धि ५८ लाख एकड फीट है। हरयाणा राज्य की ८० फीसदी आबादी और ७० फीसदी इलाका यमुना कैमाड क्षेत्र में आता है जिसको राज्य में मिलने वाले कुल पानी का ४० फीसदी हिस्सा ही दिया जा रहा है जबकि सिरसा, हिसार व नरवाना उपमण्डल के २० फीसदी से ३० फीसदी क्षेत्र को कुल पानी का ६० फीसदी भाग दिया जा रहा है। यही कारण है कि सिवानी उपमण्डल (भिवानी) के आधे से भी अधिक गांवो में पेयजल के भी लाले पडे हुए हैं तथा हिसार जिले के साथ लगते कुछ गांवों में नहरी पानी की आपूर्ति सतोषजनक है क्योंकि यह इलाका भाखडा सिस्टम से पानी का उपभोग कर रहा है। हासी उपमण्डल में इसके लिए आन्दोलन का मुख्य कारण भी यही है क्योंकि वे अपने साथ लगते हिसार जिले की नहरो की सप्लाई होते देखते हैं, वरना महेंद्रगढ तथा रेवाडी के राजस्थान से लगते गाव तो ऐसे हैं जो पेयजल के लिए पलायन जैसा कदम उठाने की सोच रहे हैं।

यह ठीक है कि पजाब के राजनेताओं ने केन्द्र पर अनावश्यक दबाव डलवाकर रावी-व्यास पानी में हरयाणा के नेताओ ने राजस्थान व दिल्ली को पानी देकर अपना प्रभाव काम किया है, वरना दिल्ली को पानी देते समय केन्द्र से सम्पर्क नहर पूरी कराकर अपने हिस्से का पानी हरयाणा के सूखे इलाकों मे लाना चाहिए जो पाकिस्तान में व्यर्थ बह रहा है। अभी हाल ही में हरयाणा सरकार ने भाखडा सिस्टम में से राजस्थान को पानी दिया है, परन्तु राजस्थान ने साहबी, कृष्णावती, काटली तथा दोहान नदियों के उद्गम स्थलों पर बाध बनाकर दक्षिणी हरयाणा में आने से रोक दिया जबकि अन्तर्राष्ट्रीय प्राधिकरण की बैठक में इन सब नदियों व नालों का कुल पानी ५ जनवरी, १९७६ को राजस्थान व हरयाणा के बीच में ५०-५० फीसदी बट चुका था। हरयाणा सरकार नदियों पर रावली, कमेडा, हम्मीदपुर व कमेडा, कोजिदा बाध बनवाने में अरबों रुपए खर्च कर चुकी है, परन्तु राजस्थान द्वारा अनधिकृत रूप से रोके गए नदियो के जल का कोई समाधान नहीं किया गया।

हरयाणा सरकार ने अभी हाल ही मे २०००-२०००१ के लिए जारी गई रोटेशन प्रणाली की मात्रा कम की है जिसके कारण एटी ग्रुप बुटाना, सबर व भालोटा ग्रुप से चलने वाली नहरें अबर आठ दिन चलकर ३२ दिन बंद रहने के बजाय ४० दिन बद रहेगी। जवाहरलाल नेहरू कनाल जिसमे रोहतक, झज्जर, रेवाडी, महेंद्रगढ मे सिचाई के साथ-साथ भू-जलस्तर सुधरता था, उसकी क्षमता भी ३६०० क्यूसिक से आधी कर दी गई है। भाखडा सिस्टम में (भाखडा मेनलाइन टोहाना हैड तथा बरवाला-सिरसा ब्राच) नहरें एक सप्ताह चलकर दो सप्ताह बद रहेगी जबकि नरवाना सिरसा ब्राच पहले की तरह एक महीने मे तीन सप्ताह चलती रहेगी। इसके अतर्गत मुख्यमन्त्री का इलाका आता है। यह ठीक है कि रावी-व्यास का पूरा पानी तो एसवाईएल नहर पजाब के क्षेत्र में बनने पर ही मिल पाएगा, परन्तु अब भी भाखडा नहर से रावी-व्यास का पानी पश्चिमी यमुना नहर के इलाको को दिया जा सकता है। इस नहर की पिछले कई वर्षों से छटाई नहीं की गई है। नरवाना ब्राच से जो पानी पश्चिमी यमुना नहर मे लाया जाता है, उसमे से साढे चार लाख एकड फीट पानी पश्चिमी यमुना नहर के द्वारा दिल्ली को दिया जा रहा है जबकि दिल्ली का हिस्सा रावी-व्यास के पानी मे केवल दो लाख एकड फीट है।

भाखडा सिस्टम से पश्चिमी यमुना नहर सिचित क्षेत्र मे पानी लाने का दूसरा रास्ता भाखडा मेन लाइन से बरवाला लिंक नहर द्वारा पेटवाड की डिस्ट्रीब्यूटी को मिलाया जा सकता है जिसके लिए केवल ३० किलोमीटर की नहर बनानी पडेगी। इससे हासी उपमण्डल तथा सिवानी नहर कमाड एरिया को भाखडा का पानी मिल सकता है। हरयाणा सरकार को चाहिए कि हरयाणा की सूखाग्रस्त जनता के हक मे तुरन्त प्रभावी कदम उठाकर नहरी पानी के भेदभाव को खत्म करे।

(लेखक हरयाणा के पूर्व विधायक एवं सक्रिय राजनेता हैं)

२२-३-२००१ के दैनिक भास्कर से साभार

बलिदान/पुस्तकालय भवन के लिये दानी महानुभावों से अपील

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक मे सभा द्वारा एक विशाल बलिदान भवन/पुस्तकालय भवन का निर्माण कार्य आरम्भ होगया है। इस बलिदान भवन/पुस्तकालय भवन में आर्यसमाज के बलिदानियों के चित्र विवरण के साथ लगाये जायेगे।

सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि इस पुनीत कार्य में अधिक से अधिक धनराशि मनीआर्डर, चैक या बैंक ड्राफ्ट द्वारा अथवा नकद भेजकर पुण्य के भागी बने। जिन सज्जनो का पूर्व में दान का वचन है वे भी अपना वचन शीघ्र पूरा करने की कृपा करे।

निवेदक

स्वामी ओमानन्द सरस्वती — सभाप्रधान
स्वामी इन्द्रवेश — कार्यकर्ता प्रधान
प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास — सभामंत्री
बलराज आर्य — सभा कोषाध्यक्ष
प्रो० शेरसिंह — पूर्व रक्षाराज्यमंत्री

'स्वामी दयानन्द का शिक्षा-दर्शन' शोधकार्य (पी-एच.डी.)

पजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ मे वैदिक अनुसधान पीठ के पूर्वाध्यक्ष प्रो० डॉ० अनिरुद्ध जोशी जी एव डॉ० वसुन्धरा 'रिहानी' प्रवक्ता दयानन्द चेयर के सफल सान्निध्य मे श्री रुद्रदत्त शर्मा शास्त्री ने 'स्वामी दयानन्द का शिक्षा-दर्शन' विषय पर शोध-प्रबन्ध लिखकर प्रस्तुत किया। जिसे स्वीकृत कर २७ दिसम्बर २००० को पजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ के प्रागण में आयोजित दीक्षान्त समारोह में भारत के उपराष्ट्रपति तथा विश्वविद्यालय के चासलर श्री कृष्णकान्त जी ने अपने करकमलो से पी-एच डी की उपाधि प्रदान की।

—**स्वामी विद्यानन्द**, गुरुकुल गदपुरी (फरीदाबाद)

महर्षि दयानन्द जन्मदिवस मनाया गया

दिनाक १७ फरवरी, शनिवार के दिन महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के १७६वे जन्मदिन के अवसर पर आर्यसमाज प्रतापसिंह मैमोरियल उच्च विद्यालय खरखौदा के प्रागण मे यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें आर्यसमाज के सभी सभासदों खरखौदा-के गणमान्य व्यक्तियों, विद्यालय के ग्यारह सौ विद्यार्थियों एव पूरे अध्यापकवृन्द ने भाग लिया। यज्ञ के ब्रह्मा श्री धर्मेन्द्र शास्त्री रहे। यज्ञ पर बोलते हुए जगत्सिह आर्य (से नि मु सरकारी स्कूल) जी ने सत्यार्थप्रकाश को वास्तविक धार्मिक पुस्तक बताते हुए बताया कि यदि सभी व्यक्ति इस ग्रन्थ का अध्ययन आरम्भ कर दें तो ससार में कहीं भी कलेश लेशमात्र भी न बचे।

विद्यालय के मुख्याध्यापक श्री कृष्ण पाराशर ने इस पवित्र दिन पर बच्चों की चरित्र के प्रति जागरुक रहने तथा मास-मीट न खाने पर बल देते हुए महर्षि के बताए रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित किया।

विद्यालय के मार्गदर्शक श्री किशोरी लाल गुप्ता जी (से०नि०मु० हिन्दू स्कूल सोनीपत) ने महर्षि द्वारा नारी समाज पर किए गए उपकारों के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि यदि महर्षि न आए होते तो आज पूरे संसार में कहीं अच्छाई न होती और महर्षि द्वारा निर्मित नियमों पर चलने के लिए उत्साहित किया।

समाज के मन्त्री श्री महेन्द्रसिह जी ने महर्षि द्वारा किए गए त्याग के बारे में विस्तार से विचार रखे।

आर्यसमाज के प्रधान श्री धर्मप्रकाश जी ने महर्षि को विश्व का सबसे बडा महापुरुष बतलाते हुए बताया कि ससार में अनेक महापुरुषों ने जन्म लिया है लेकिन उन सभी में वे सारे गुण नहीं पाए जितने महर्षि मे पाए गए। किसी में एक गुण पाया तो दूसरा नहीं। कोई प्रभु भक्त है तो वह विद्वान् नहीं, यदि विद्वान् बना तो योगी नहीं। योगी बना तो समाज सुधारक नहीं। समाज सुधार के कार्य किए तो दिलेर नहीं। दिलेर पाया गया तो ब्रह्मचारी नहीं रहा। यदि ब्रह्मचारी रहा तो सन्यासी नहीं हो पाया। यदि सन्यासी बन गया तो वक्ता नहीं बना। यदि वक्ता बन गया तो लेखक न बन सका। यदि लेखक बना तो सदाचारी न रहा। सदाचारी रहा तो परोपकारी नहीं हुआ। यदि परोपकारी बना तो कर्मठ नहीं, कर्मठ बना तो त्यागी नहीं। त्यागी हुआ तो देशभक्त नहीं। देशभक्त बना तो वेदो का ज्ञान नहीं हुआ। वेदो का ज्ञान हुआ तो उद्धार न हुआ। उद्धार हुआ तो शुद्ध आहारी नहीं। शुद्ध आहारी बना तो योद्धा नहीं रहा। योद्धा बन गया तो सरल नहीं रहा। कोई सरल रहा तो वह सुन्दर नहीं था। यदि सुन्दरता थी तो बलवान् नहीं रहा, यदि कोई महापुरुष बलशाली बन गया तो दयालु नही रहा। यदि दयालु रहा तो संन्यासी न रह सका।

महर्षि देव दयानन्द के कई मधुर भजन हुए। अन्त मे शान्तिपाठ के पश्चात् कार्यवाही सम्पन्न हुई। इस शुभावसर पर दैनिक सध्या-हवन की चार हजार प्रतिया छपवाकर नि शुल्क वितरित की गई।

—धर्मप्रकाश आर्य,

प्रधान—आर्यसमाज प्रतापसिह मैमोरियल उच्च विद्यालय, खरखौदा (सोनीपत)

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

आर्यसमाज सैक्टर-१९ सी चण्डीगढ (वेदकथा एव रामनवमी पर्व)	२६ मार्च से १ अप्रैल
आर्यस्माज सैक्टर ४, अर्बन एस्टेट, गुडगाव	२ से ७ अप्रैल
वैदिक योगाश्रम नियाणा (हिसार)	३ से ४ अप्रैल
आर्यसमाज मुवाना जिला जीन्द	६ से ८ अप्रैल
गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय, हरद्वार	११ से १३ अप्रैल
आर्यसमाज नरेला (दिल्ली)	१३ से १५ अप्रैल

—**डॉ० सुदर्शनदेव आचार्य**, वेदप्रचाराधिष्ठाता

प० ओंकार मिश्र जी का निधन

आर्यजगत् के महोपदेशक, कवि, लेखक, आचार्य प० ओंकार मिश्र 'प्रणव' शास्त्री का दिनांक ४ मार्च को आकस्मिक निधन हो गया। श्री 'प्रणव' जी विगत दो वर्ष से हृदय रोग से पीडित थे। मृत्यु से एक दिन पूर्व अचानक तबीयत बिगडने पर उन्हें आगरा के रामरघु हॉस्पीटल में भर्ती किया गया जहा गहन चिकित्सा के दौरान ४ मार्च की प्रात ७-३० बजे उनका देहान्त हो गया। वे ८३ वर्ष के थे। उनका अन्तिम संस्कार माजगज श्मशान घाट पर वैदिक पद्धति से सम्पन्न हुआ।

स्व० 'प्रणव' जी ने १९४० से १९४९ तक महाविद्यालय गुरुकुल धाम झेलम पजाब मे व्याकरणोपाध्याय, सन् १९४८ से १९४९ तक आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तम प्रदेश लखनऊ में उपदेशक, १९४९ से १९८० तक डी०ए०वी० इण्टर कॉलेज, फिरोजाबाद में सस्कृत प्रवक्ता पद पर कार्य करते हुए अनेक ग्रन्थों की रचना की जिनमे प्रमुख 'बोस बावनी', 'अमर ज्योति', 'ज्वाला', 'धारणा', 'विजय बावनी', 'सुमड्गली', 'मधुमती', 'गृहस्थ का महत्त्व', 'ऋतु विहार', 'प्रणव तरंगिणी', 'खिले फूल आक ढाक के', 'वेद-वैचित्र्य' आदि हैं। आपका वेद-वैचित्र्य ग्रन्थ आर्यजगत् में मील का पत्थर है। इनके अतिरिक्त आर्य पत्र-पत्रिकाओं में समय-समय पर उनके अनेक लेख, काव्य-रचनाए प्रकाशित होती रही हैं। आर्यसमाज के सिद्धान्तो एव आदर्शों का आजीवन प्रचार-प्रसार हेतु स्व० 'प्रणव' जी को आर्यसमाज सान्ताक्रुज, बम्बई द्वारा वेदोपदेशक पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है।

प० ओंकार मिश्र जी का आर्यसमाज सान्ताक्रुज ने दिनाक ३१ जनवरी १९९६ को मेरे साथ वेदोपदेशक पुरस्कार से सम्मानित किया था।

—सुदर्शनदेव आचार्य

साधना शिवर सम्पन्न

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित नि शुल्क दस दिवसीय साधना-स्वाध्याय-सेवा शिविर दिनांक २३ फरवरी से ४ मार्च तक ऋषि उद्यान अजमेर मे भली प्रकार सम्पन्न हुआ। शिविर में साधना के रूप मे प्रात साय एक-एक घण्टा उपासना का क्रियात्मक अभ्यास तो रखा ही गया था, साथ मे सम्पूर्ण दिवस साधनामय बने एतदर्थ निश्चित समय में मौन का अभ्यास भी करवाया गया और सयम, अनुशासन, अन्तर्मुखी वृत्ति, आत्मनिरीक्षण के द्वारा साधना को सर्वांगीण परिपुष्ट करने का प्रयत्न हुआ। प्रात १ घण्टा उपासना का क्रियात्मक प्रशिक्षण व सायं १ घण्टा उसी का व्यक्तिगत प्रयोग करने का अवसर दिया गया। उपासना काल में निर्बाध आसन बनाये रखने का विशेष प्रशिक्षण दिया गया। शारीरिक साधना हेतु प्रात एक घण्टा सर्वांगीण सुन्दर व्यायाम एव आसन सिखाये गये।

स्वाध्याय की दृष्टि से पातञ्जल योग दर्शन के अनेक सूत्र पढाये-समझाये गये, यज्ञोपरान्त वेदप्रवचन हुए, ज्ञान-कर्म-उपासना का सैद्धान्तिक पक्ष विशद किन्तु सरल ढग से बताया गया, वैदिक संध्या के मत्रो का शुद्ध उच्चारण एव उनका अर्थ बताया गया।

शिविर में राजस्थान, हरयाणा, उत्तर प्रदेश व चण्डीगढ के लगभग चालीस साधक-साधिकाओ ने भाग लिया। प्रशिक्षण प्रदाता अध्यापक थे-ब्र० श्री दर्शनाचार्य, प्रो० श्री धर्मवीर, ब्र० श्री सत्येन्द्र दर्शनाचार्य, ब्र० श्री रवीन्द्र व्याकरणाचार्य, ब्र० श्री सत्यजित् दर्शनाचार्य एव श्री यतीन्द्र। सस्था के अधिकारियो, कर्मचारियो एव सेवाभावी सहयोगियो के सम्मिलित प्रयास से शिविर सत्यकृत्या पूर्ण हुआ।

इसी प्रकार का अगला साधना शिविर १ से १० जून, २००१ को इसी स्थान ऋषि उद्यान, अजमेर में आयोजित होगा। शिविर की पूर्व सध्या अर्थात् ३१ मई की शाम ४ बजे तक यहा पहुचना आवश्यक है।

सूचना

गुरुकुल सिंहपुरा सुन्दरपुर (रोहतक) की व्यवस्था को पारदर्शी बनाने एव गुरुकुल की वर्तमान अवस्था पर विचार-विमर्श के लिए ८ अप्रैल, २००१ रविवार को प्रात ९ बजे गुरुकुल के प्रांगण मे एक बैठक होगी। सभी गुरुकुल प्रेमी सज्जनों से प्रार्थना है कि गुरुकुल के हित में अपने अमूल्य सुझाव देने हेतु अवश्य पधारे।

निवेदक **डॉ० बनीसिंह कुण्डू**, प्रधान—आर्यसमाज प्रेमनगर, रोहतक

१ एक बार निकले बोल वापस नहीं आ सकते, अत एव सोचकर बोलो।
२ तलवार की चोट उतनी तेज नहीं होती, जितनी जिह्वा की।
३ धीरज के सामने भयंकर संकट भी धुए के बादलों की तरह उड जाते हैं।
४ तीन सच्चे मित्र हैं—वृद्धा पत्नी, पुराना कुत्ता और पास का धन।
५ मनुष्य के तीन सद्गुण हैं—आशा, विश्वास और दान।
६ घर में [illegible] होना पृथ्वी पर स्वर्ग के समान है।

समग्र क्रान्ति के योद्धा – महर्षि दयानन्द

उन्नीसवीं शताब्दी में भारतीय इतिहास में पुनर्जागरण अभियान का नेतृत्ववाले अनेक महापुरुष पुण्य भारत भू पर अवतरित हुए। उन सबने अपनी शक्ति को केवल एक उद्देश्य की प्राप्ति के लिए व उस विशेष बात के लिये जगजागरण अभियान चलाया था। परन्तु महर्षि दयानन्द ने इस अभियान को इतना विस्तृत रूप दिया जिसका कोई छोर नहीं था। वह सर्वतोमुखी क्रान्ति का सन्देश लेकर आया था। उस महामानव ने तत्कालीन भारत में धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक आदि सभी क्षेत्रों में अभूतपूर्व क्रान्तिकारी परिवर्तन करने का शखनाद बजाया था। दयानन्द के समय में चलनेवाले आन्दोलनों व अभियानों को सुधारों के रूप मे जाना गया। अकेले उस युग पुरुष ने अपने अपार ब्रह्मचर्य बल, अगाध विद्वता अनुपम निर्भीकता और अलौकिक साहस से विश्व भर की आसुरी शक्तियों और प्रवृत्तियों के दुर्ग ढहा दिये और ससार में फैले अज्ञान, अन्धविश्वासों, कुप्रथाओं, कुरीतियो, रूढियो, पाखण्डों और मान्यताओं को अपनी विलक्षण तर्कों व वेदों की सत्यता का आधार मानकर उन्हें चूर-चूर कर दिया। इन्हीं के लिये वह जिआ और इन्हीं के विरुद्ध संघर्ष करता हुआ अपने जीवन का बलिदान दिया।

हिमालय की ऊचाई, सागर की गहराइयों, पृथ्वी के रेत के कणों, आकाश और धरती के प्रांगण को कौन माप सकता है। इसी भान्ति उस योगी तर्ककेसरी महापुरुष देव दयानन्द की गरिमा-महत्ता और कर्मशीलता को आकना-जाचना भी सम्भवत मानव के सामर्थ्य की बात नहीं है। जब-जब विश्व इतिहास के पन्नों को टटोलेंगे परन्तु दयानन्द का सानी नहीं मिलेगा। मानव मात्र की पीडा के प्रति सचेत, धीर-गम्भीर, ऋषि-योनि, तत्त्ववेता, कालकूट विष पीकर भी शकर सा रौद्र नहीं अपितु ममता का सागर दया और आनन्द से प्रफुल्लित अपनी भावनाओं को सजोये रखनेवाला हृदय केवलमात्र दयानन्द के पास ही था। उन जैसा चरित्र व अथाह तार्किक विचारशक्ति का खजाना उन्हीं को प्राप्त हुआ था।

महर्षि का मानवता के प्रति अपार प्यार हर क्षण समुद्र की लहरो की भान्ति अस्थिर था। उनकी भविष्य द्रष्टा पर कोई जाति या कोई भी युग गौरव कर सकता है। उन्होंने मानव उत्थान के लिये हर पहलु को पहले सत्य के आधार पर परखा जाचा, चाहे मन्द बुद्धि वालों को हौवा लगा हो परन्तु उनकी सत्य निष्ठा को देखो उन्होने इस परख के लिये केवल वेद की मान्यताओं को आधार व सही माना। उन्होंने लोगों से 'वेदों की ओर लौटो' का आह्वान किया और समझाया कि किस प्रकार से वेद ही सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद किसी विशेष देश, जाति या वर्ग के लिए नहीं अपितु वेदों मे निहित शिक्षा में, मान्यताये सब देशों, सभी समय और सभी प्राणिमात्र के हितार्थ हैं। वेदों के प्रति इतना आगाध विश्वास अन्य किसी को हुआ हो, इतिहास इसके समुचित उत्तर में मौन है।

गुरु विरजानन्द ने महर्षि दयानन्द से गुरु दक्षिणा के रूप में लोक कल्याण और राष्ट्र को एक सूत्र में संगठित करने के लिये, स्वतन्त्रता का अलख जगाने हेतु दयानन्द का जीवन ही मांगा था। वेदों के प्रकाण्ड पण्डित दयानन्द ने हरद्वार में पाखण्ड-खण्डनी पताका फहराई तब सम्पूर्ण पौराणिक जगत् में एक हलचल मच गयी थी। ऐसा लगा मानो किसी ने आकर हरद्वार में भागीरथी को उलटा दिया और दूसरा क्रान्ति का बिगुल पौराणिकों के गढ काशी में शास्त्रार्थ के द्वारा अपने तार्किक, प्रमाणिक और सत्य पर आधारित विचारों को जनता के समक्ष प्रस्तुत किया तो बौखलाहट की हुंकार गूजी। महर्षि दयानन्द की इस दिग्विजय पर एक बहन (श्रीमती सावित्री जी) ने लिखा–

हुआ चमत्कृत विश्व अरे यह कौन वीर संन्यासी। जिसकी भीषण हुंकारों से कांप उठी मथुरा, हरद्वार, काशी। यह किसका गर्जन तर्जन है, कौन उगलता ज्वाला है ? किसकी वाणी में से निकली, आज धधकती ज्वाला है।

एक बार महर्षि से उनके शिष्य ने आग्रह किया कि "महाराज मुझे गुरुमन्त्र दीजिये" तो दयानन्द ने उत्तर दिया कि "मेरा गुरुमन्त्र तो सत्य है उसी को जीवन का आधार बनाओ और असत्य (अवैदिक मान्यताओ) को छोड दो।" क्या सत्य के प्रति किसी और मानव की ऐसी निष्ठा मिली है ? ढूढते रह जाओगे परन्तु नहीं मिलेगी। उनकी निर्भीकता और स्पष्टवाणी को दूसरी घटना दर्शाती है। एक बार महर्षि ने आग्रह किया कि महाराज मूर्ति पूजा का खण्डन मत करो इसके लिए एक लिंग शिव मन्दिर की अपार चल-अचल सम्पत्ति के अधिकारी आप होंगे और लाखो व्यक्ति आपके शिष्य अनुयायी बनने को एकमुश्त तैयार हैं। दयानन्द ने मुस्कराकर कहा–

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु।
लक्ष्मी समा विशतु गच्छतु व यथेष्टम्।।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा।
न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीरा.।।

उन्हीं के शब्दो में "बुद्धिमान् न्याय के मार्ग से नहीं हटते। उन्हें प्रशसा, निन्दा की परवाह नहीं। न धन वैभव की और न दरिद्रता की, चाहे वे एक वर्ष में मरें या युग पर्यन्त जिये।" उन्होंने पुन कठोर होकर स्पष्ट शब्दों में गर्जना करते ललकार की कि "मैं सत्य को नहीं छोड सकता" स्वय उन्होंने आगे इसका खुलासा किया है। "मेरे जीवन का उद्देश्य, मन, वचन और कर्म से सत्य का अनुष्ठान करना है।" यह महामानव केवल सत्य ज्ञान की खोज में १५ वर्षों तक पर्वतों, गुफाओ, कन्दराओ, मैदानो में घूमता रहा। इस दौरान अनेक साधुओं से और सन्यासियों, मनीषियो से योगाभ्यास सीखा। अपनी ज्ञान पिपासा की तृप्ति के लिये कहा-कहा ठोकरें खाईं। कितने कष्ठ उठाये, उन्हे कलमबद्ध करना मेरे वश में नहीं है। महर्षि को जितना आघात, कष्ट अपनी ही जाति (पौराणिक हिन्दुओ) के लोगो ने दिया उतना अन्यों ने नहीं। अन्य मत मतान्तरों के लोगो ने अपने कार्यों और धर्मग्रन्थों में निहित कमियो, दोषो को समझा व स्वीकार किया अन्त में सशोधन भी किये। परन्तु पौराणिक हिन्दुओं ने केवल विरोध करने के लिये ही विरोध का सहारा लिया। उन्होंने सच्चाई को जानने-मानने का यत्न नहीं किया। महर्षि ने तत्कालिक हिन्दू समाज में व्याप्त कुरीतियों, आचरणो एव पापाचार की धारणाओ पर जोर से चोट पहुंचाई ताकि वे सभलकर मनुष्य जाति एवं प्राणिमात्र के हितार्थ कार्य कर सकें और अधिक मजबूत बनें। उन्होंने हिन्दुओं में नवचेतना व जागृति की चिगारी इसलिये फूकी थी कि वे इन्हीं दोषों के कारण परस्पर घृणा-द्वेष, फूट मे फसकर रहते हैं और तबाह हो रहे हैं। द्वेषपूर्ण भावों, घृणित विचारों व कार्यो को धर्म के नाम प्रकट किया जाता था। जो सत्य से कोसों दूर होता था। महर्षि का उद्देश्य केवल प्राणिमात्र की रक्षा व मानव की बुराइयों को प्रकट करके, सत्य पथ को उजागर करना था। उन्होंने लिखा है कि मैं गुरुडम के नाश के लिये निकला हूं, मैं कोई नया पंथ या सम्प्रदाय नहीं खडा करना चाहता अपितु मेरा उद्देश्य श्रेष्ठ, कर्मठ और कर्मवीर मानवो से गठित समाज हो।" इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये अनन्त उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना की थी। उन्होंने आर्यसमाज मे प्रवेश के लिये सभी मानवो के लिये द्वार खोले। उन्होंने कहा कि कोई भी व्यक्ति श्रेष्ठता को अपनाकर आर्यसमाज का सदस्य बन सकता है।

वास्तव मे दयानन्द का प्रादुर्भाव ऐसे समय मे हुआ जब भारत में अनेक कुरीतिया, पाप, धर्म के नाम पर होते थे। दयानन्द का प्रकाश प्रदीप वैदिक विज्ञान था। दयानन्द के प्रति एक जर्मन लेखक ने ठीक ही लिखा है "दयानन्द उदार विचारो वाले व्यक्ति थे। वे आदर्शवादी, भविष्यद्रष्टा थे। उनके मन मे उस महान् भारत की कल्पना थी जो अन्धविश्वासों से रहित हो, विज्ञान के लाभो से परिपूर्ण हो, एक ईश्वर की पूजा और राष्ट्र के प्रति सजग होकर स्वाधीनता के योग्य बने जिससे भारत पुन अपने गुरु-गौरव को प्राप्त कर सके।" हकीकत यह है कि उन्होंने मानव और राष्ट्र की तत्कालीन पीडा को समझा और इसलिये जीवन पर्यन्त वे अपनी अन्तरात्मा से इस पीडा निवारण के उपाय सुझाते रहे, सचेत करते रहे। जिस तरह से शरीर पानी से शुद्ध होता है उसी तरह से मन सत्य और आत्मा तप से शुद्ध होता है। अविद्या से फूट, द्वेष की भावनायें और कुकर्मो की जानकारी होती है तथा विद्या से एकता मेल-मिलाप बढता है। हमारे प्राचीन ग्रन्थो मे परम एकता का सन्देश पाते हैं, मनुष्यों को सब राष्ट्रो से आपस के वैमनस्य के भावों को त्यागकर मानव व प्राणिमात्र के कल्याण के लिये सोचे व कार्य करे। यह आर्यो का सन्देश है जो कि भोगवाद के कीचड मे फसी सभ्यता मे रहनेवालो को इससे दूर रहना होगा इसके लिये वेद ज्ञान सर्वोपरि है।

इस लेख का शीर्षक समग्र क्रान्ति शब्द लिखा है। सर्वप्रथम क्रान्ति का अर्थ समझना होगा। क्रान्ति का अर्थ परिवर्तन का है न कि सघर्ष एव रक्तपात का। अत गली सडी अवैज्ञानिक मान्यताओं तथा रूढिवादी निरर्थक परम्पराओ मे एकदम तीव्रतर परिवर्तन लाने का नाम क्रान्ति है। जब व्यक्ति अपनी आस्था मे बदलने को बाध्य हो जाये उसे क्रान्ति कहते हैं। सभी प्रकार की क्रान्तियो की जननी वैचारिक क्रान्ति होती है। सत्यार्थप्रकाश महर्षि की अनुपम क्रान्तिकारी विचारो को जागृत करने वाला महान् ग्रन्थ है जिसके पढने के बाद किसी मे क्रान्ति न आई हो ऐसा व्यक्ति नहीं मिला। इसलिये दयानन्द सभी धर्माचार्यो से सर्वथा भिन्न रूप से समग्र क्रान्ति के प्रेरणास्रोत थे। तभी विद्वान् लेखक सर सैयद अहमद खा (अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय) ने अपने उद्गार मे महर्षि दयानन्द के प्रति इस प्रकार से व्यक्त किये हैं–

"स्वामी दयानन्द सरस्वती के अनुयायी उन्हे देवता मानते हैं और वे वास्तव मे देवता माने जाने के योग्य थे भी। उन्हेने निराकार भगवान् की उपासना की शिक्षा दी। हम स्वामी जी को निकट से जानते थे और उनका अत्यधिक आदर सम्मान करते थे। वे एक ऐसे विद्वान् एव श्रेष्ठ व्यक्ति थे जोकि सभी धर्मानुयायियो के लिये पूज्य थे। उनका ऐसा व्यक्तित्व था जिसका सानी तत्कालीन पूरे भारत मे मिलना मुश्किल था।"

अन्त मे मैं उस महामना को शत-शत नमन करता हूं तथा सभी धर्म अभिलाषा प्रेमियो का इस शुभ दिन पर अभिनन्दन करता हू। –राजेन्द्र आर्य, हासी (हिसार)

अनमोल वचन

१ जिस तरह कीडा कपडों को कुतर डालता है, उसी तरह ईर्ष्या मनुष्य को।
२. क्रोध मूर्खता से प्रारम्भ होता है और पश्चात्ताप पर समाप्त होता है।
३ नम्रता से देवता भी मनुष्य के वश मे हो जाते हैं।
४ सम्पन्नता मित्रता बढाती है, विपदा उनकी परख करती है।

श्री हरबंसलाल शर्मा गुरुकुल कांगड़ी विश्व-विद्यालय हरद्वार के कुलाधिपति निर्वाचित

दिनाक १९ मार्च, २००१ ई० को आर्यसमाज मन्दिर हनुमान रोड, नई दिल्ली में हरयाणा, पजाब तथा दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभाओं के प्रधान सर्वश्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती श्री हरबसलाल शर्मा तथा श्री वेदव्रत शर्मा की गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरद्वार के कुलाधिपति के निर्वाचन के लिए आहूत बैठक में आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री हरबसलाल शर्मा आगामी तीन वर्ष के लिए सर्वसम्मति से गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरद्वार के कुलाधिपति निर्वाचित हुए हैं। हरयाणा के प्रधान स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने शर्मा जी के नाम का प्रस्ताव रखा तथा दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने प्रस्ताव का समर्थन किया।

कुलाधिपति चुने जाने पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से श्री हरबसलाल जी शर्मा को हार्दिक बधाई एव शुभकामनाए। आशा है भविष्य मे भी इसी प्रकार सौहार्दपूर्ण वातावरण बना रहेगा।

—प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामन्त्री

सूचना

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरद्वार अपने स्थापना शताब्दी वर्ष के उपलक्ष मे दिनाक ११ से १३ अप्रैल २००१ तक विशाल उत्सव का आयोजन कर रहा है। इस अवसर पर आर्य विद्या सभा गुरुकुल कागडी हरद्वार के प्रधान डॉ० रणजीतसिह जी ने सभी आर्य महानुभावो से अपील की है कि इस उत्सव में अधिक से अधिक सख्या में पहुचें।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक से प्रति व्यक्ति २०० रुपये भुगतान के आधार पर ११ अप्रैल को प्रात काल बस गुरुकुल कागडी हरद्वार जाएगी। इच्छुक यात्री तत्काल श्री सन्तराम आर्य दयानन्दमठ, रोहतक के पास २०० रुपये प्रति यात्री जमा करा देवे। ५० यात्री होने पर ही बस की व्यवस्था हो सकेगी।

—सभामन्त्री

यज्ञ

फुटपाथो पर गरीब लोग अपने बच्चो को छोडकर भाग जाते हैं—चार महिलाओं ने जिनको हम नन्ज कहते हैं-ऐसी एक सौ कन्याओं को जिनकी आयु ५ से ८ वर्ष तक की थी अपने आश्रम मे ले आई और रहने खाने पहनने और पढाने का प्रबन्ध किया है—सस्था का नाम 'प्रेम दान विद्यालय' रखा है। अब वह कन्याए कोई दसवीं श्रेणी में है कोई कॉलिज मे जाती है। उनका व्यवहार, बोलचाल और सस्कार देखने को बनता है।

यह लडकिया बडी होकर क्या हिन्दू बनेगी ? चार ईसाई महिलाओं ने इनको बडा किया है और इन्सान बनाया है। हिन्दू स्वय तो कुछ करते नहीं और कहेंगे कि ईसाई जबरदस्ती लोगो को ईसाई बनाते हैं।

इस प्रकार के जब तक यज्ञ नहीं किये जायेंगे तब तक आप कितने भी मत्र पढकर आहुतिया देते जाये कुछ होने वाला नहीं है। अभी कारगिल का युद्ध हवन से नहीं जीता गया-शत्रु को शक्ति से हराया गया था।

जिन चार महिलाओ ने सौ लडकियों को जीवन दान दिया है क्या हमारे हिन्दू समाज मे ऐसी महिलाए हैं जो प्रतिदिन यज्ञ करती हैं इस प्रकार कोई यज्ञ कराकर दिखायेंगी ? यदि हम कोई ऐसा कार्य कर सके तो हमारा यज्ञ सफल होगा। आओ यज्ञ करना सीख ले।

—ओकारनाथ, २७९, ओ सदन, ३६वां रास्ता, बान्द्रा, मुम्बई-४०००५०

आर्यसमाज छानीबड़ी (राज०) का चुनाव

सरक्षक—श्री रमेशचन्द्र गोयल, प्रधान—श्री नत्यूराम बैनीवाल, उपप्रधान—श्री मनीराम कुलडिया, मत्री—श्री महावीरसिह आर्य, उपमन्त्री—श्री भूपसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री ओमप्रकाश, लेखानिरीक्षक—श्री मोमनराम, सगठन सचिव—श्री विनोदकुमार आर्य, प्रचारमन्त्री—श्री बलजीतसिह आर्य, खेलमन्त्री—श्री देवीलाल आर्य, श्री शमशेरसिह।

वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज छानीबडी (राज०) का वार्षिक महोत्सव दिनाक १८ से २० फरवरी २००१ को बडे हर्षोल्लास से मनाया गया जिसमें स्वामी सर्वदानन्द जी कुलपति गुरुकुल धीरणवास, श्री जबरसिह खारी भजनोपदेशक व श्रीमती पुष्पादेवी भजनोपदेशिका व मुख्य अतिथि के रूप में श्री हरिसिह सैनी प्रधान आर्यस्माज नागोरी गेट हिसार ने भाग लिया।

नवसस्येष्टि यज्ञ सम्पन्न

वैदिक धर्म सेवा समिति मेवात केन्द्र बहीन (फरीदाबाद) के अन्तर्गत नवसस्येष्टि यज्ञ का आयोजन प० नन्दलाल निर्भय के ब्रह्मत्व में किया गया जिसकी अध्यक्षता पं० परमानन्द शर्मा की।

इस अवसर पर ब्रह्मचारी श्री जयदेव आर्य ने ईश्वर भक्ति के मधुर भजन सुनाए जिन्हें सुनकर श्रोता झूम उठे।

आर्यजगत् के प्रख्यात कवि, वक्ता प० नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य ने अपने व्याख्यान में बताया कि होली का वास्तविक नाम नवसस्येष्टि यज्ञ है। यह आर्य पर्व है जो प्राचीन वैदिक काल से समस्त जगत् में उल्लासपूर्वक फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। नवसस्येष्टि का अर्थ है नए अन्न से यज्ञ करना। उस दिन गरीब व्यक्तियों को दान देने का व्रत लेना चाहिए। गन्दी आदतों को छोड कर यज्ञादि शुभ कर्म करने चाहिएं तभी ससार का कल्याण होगा। —सुभाष चन्द्र आर्य मंत्री, आर्यसमाज बहीन (फरीदाबाद)

डॉ० भवानीलाल भारतीय का वेदप्रचारार्थ मारीशस प्रस्थान

आर्यजगत् को यह जानकर अति हर्ष होगा कि मारीशस के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् प्रो० वासुदेव विष्णुदयाल की जन्मजयन्ती पर प्रमुख भाषण देने तथा इस देश के आर्यसमाजों में वैदिक धर्म की सार्वभौम शिक्षाओं पर अपने विद्वत्तापूर्ण प्रवचन करने के लिए आर्यसमाज के मूर्धन्य विद्वान्, वक्ता तथा शताधिक ग्रन्थों के प्रणेता डॉ० भवानीलाल भारतीय को मारीशस में आमन्त्रित किया गया है। प्रो० वासुदेव विष्णुदयाल स्मारक समिति द्वारा आयोजित इस समारोह में भाग लेने के अतिरिक्त डॉ० भारतीय इस लघु भारत (मारीशस) में ऋषि दयानन्द के जीवन की सरस कथा तथा रेडियो एव टेलीविजन कार्यक्रमों मे भी भाग लेंगे। वे दिनाक १३ मार्च को एयर मारीशस के विमान के द्वारा प्रस्थान कर चुके हैं तथा २४ मई तक वहा अपना प्रचार कार्यक्रम पूरा करेगे।

—राहुल माथुर, दयानन्द अध्ययन सस्थान, जोधपुर

साहित्य-समीक्षा

१ पुस्तक का नाम— वेदाङ्ग-परिचय।
लेखक—आचार्य आनन्दप्रकाश।
प्रकाशक—आर्ष शोध संस्थान, अलियाबाद, शामीर पेट, जिला रंगारेड्डी (आ०प्र०)
मूल्य—५०-०० रुपये।

इस ग्रन्थ के लेखक आचार्य आनन्दप्रकाश वेदादि शास्त्रों के सुयोग्य विद्वान् हैं। उन्होंने इस ग्रन्थ में शिक्षा, कल्प, व्याकरण, छन्द और ज्योतिष नामक छह वेदाङ्गो का अति उत्तम परिचय दिया है। इन वेदाङ्गों के सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द के विरुद्ध मान्यताओं का प्रतिवाद भी किया गया है। फलित ज्योतिष की असारता और गणित ज्योतिष का उत्तम वर्णन किया गया है। वैदिक इतिहास के जिज्ञासु जनों के लिए यह ग्रन्थ परम उपयोगी है।

२. पुस्तक का नाम—आर्यसमाज और डॉ० भीमराव अम्बेडकर।
लेखक—डॉ० कुशलदेव शास्त्री, नान्देड़ (महाराष्ट्र)।
प्रकाशक—आर्य प्रकाशन समिति कोटा (राजस्थान)।
मूल्य—१०-०० रुपये।

इस पुस्तक के लेखक डॉ० कुशलदेव शास्त्री आर्यजगत् के सुयोग्य मनीषी विद्वान् हैं। उन्होंने भारत के सविधान-निर्माता डॉ० भीमराव अम्बेडकर के जीवन में आर्यसमाज का अद्भुत प्रभाव चित्रण किया है। जो लोग यह मानते हैं कि डॉ० अम्बेडकर आर्यसमाज के सिद्धान्तों को यथावत् नहीं जानते थे, और वे आर्यसमाज को नहीं मानते थे उन्हें यह पुस्तक अवश्य पढनी चाहिए।

३. पुस्तक का नाम—मनुस्मृति के संदर्भ में डॉ० भीमराव अम्बेडकर और आर्यसमाज।
लेखक—डॉ० कुशलदेव शास्त्री, नान्देड़ (महाराष्ट्र)।
प्रकाशक—आर्य प्रकाशन समिति कोटा (राजस्थान)।
मूल्य—१०-०० रुपये।

विद्वान् लेखक ने इस पुस्तक के माध्यम से इस भ्रान्ति को दूर करने का प्रयास किया है कि डॉ० भीमराव अम्बेडकर मनु महाराज द्वारा रचित मनुस्मृति के विरोधी थे क्योंकि समाज में प्रचलित जातिवाद मनुस्मृति में प्रतिपादित वर्णव्यवस्था की देन है। कई लोग वर्णव्यवस्था को मरण-व्यवस्था कहते हैं। उन लोगों को यह पुस्तक अवश्य पढनी चाहिए। जिससे मनुस्मृति, डॉ० अम्बेडकर और आर्यसमाज की मान्यताओं को यथावत् समझ सकें।

—सुदर्शनदेव आचार्य

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ७६८७४, ५७७७८) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ७७७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा पंजि० नं० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०१
पंजीकरणसंख्या टैक/एच.आर/४७/रोहतक/९९ ☎ ०१२६२-७७७२२

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र रोहतक

प्रधानसम्पादक : प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक :- डा० सुदर्शनदेव आचार्य

वर्ष २८ अंक १६ ७ अप्रैल, २००१ वार्षिक शुल्क ६०) आजीवन शुल्क ६००) विदेश में १० पौंड एक प्रति १-२५

"तहलका अब तहलका मचाकर मन्द पड़ गया" इसका विशेष परिचय–

वतन की जो हालत बताने लगेंगे, तो पत्थर भी आंसू बहाने लगेंगे। कहां खोगई देश की वो इज्जत, जिसे ढूंढने में जमाने लगेंगे।।

❑ सुखदेव शास्त्री, महोपदेशक, दयानन्दमठ, रोहतक (हरयाणा)

भारतीय आर्यराष्ट्र की प्राचीन राजनीति–

महर्षि दयानन्द ने भारतीय आर्यराष्ट्र की खोई गई वैदिक राष्ट्रीय राजनीति का वेदो के आधार पर निर्माण करने के लिए अपने जीवन मे महान् परिश्रम एव प्रयत्न किये। वे इसके सफल सचालन के लिए तत्कालीन राजाओं के सुधार के लिए भी प्रयत्न करते रहे। उदयपुर के महाराणा सज्जनसिह को मनुस्मृति, चाणक्यनीति, विदुरनीति तथा वेदो के सभी राजनीतिक प्रकरण समझाते रहे, जिनसे आर्य राष्ट्र की स्थापना होसके। उन्होने इसके लिए अपने अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में छठा समुल्लास राजधर्म विषय मे लिखा। सत्यार्थपकाश क्या था ? उसमे आर्यराष्ट्र निर्माण की योजना तथा भारतीय स्वतन्त्रता की घोषणा का प्रथम प्रारूप-प्रावधान का उद्घाटन करना था। अंग्रेज सामाज्य के प्रति जनता को जागृत करके उनके राज्य से छुटकारा पाना था। महर्षि दयानन्द राष्ट्र के राजा (राष्ट्रपति) तथा सारे ही मन्त्रिमण्डल के निर्माण के विषय में ऋग्वेद के मण्डल ३, सूक्त ३८, मन्त्र ६ मे बहुत ही योजनापूर्वक लिखते हैं–

त्रीणि राजाना विदथे पुरूणि परि विश्वानि भूषथ सदांसि।।

महर्षि ने छठे समुल्लास मे सब प्रकार की राजनीतिक व्यवस्था एव योग्यताओ व मर्यादाओ का पालन करने की विधि लिखी है, पूरे राज्य संचालन की रूपरेखा महर्षि ने लिखी है। किन्तु १९४२ में विभाजित आजादी मिलने के बाद एव १९३५ मे अग्रेजों द्वारा बनाये गये भारतीय सविधान के कारण भारतीय राष्ट्र के राष्ट्रपति, प्रधानमत्री, लोकसभा एव राज्य सभा के सासदों की योग्यता के विषय में बहुत ही महत्त्वपूर्ण योग्यताओं का कोई भी नियम व प्रावधान नहीं किया गया है। कोई भी घोर अपराधी, लुटेरा, आततायी, जेल मे रहता हुआ आतकवादी अनेक जनहत्याओं में वाञ्छित व्यक्ति भी जन-धन के बल पर ससद् सदस्य, विधायक बन सकता है। इसके साथ-साथ कोई भी राजनीतिक पार्टी बनाकर चुनाव मे धन के बल पर करोडो रुपये का दाव लगाकर सदस्य बन सकती है।

आज भी विधानसभाओं मे और राज्यसभा तथा लोकसभाओ में ऐसे सदस्यो की सख्या बहुत ही अधिक है। वे जब भी मन्त्री या कोई अधिकार प्राप्त कर लेते हैं तो 'घोटाले' करना शुरू कर देते हैं, उन्हे किसी अनुशासन या दण्ड का भय नहीं रहता। ऐसे सदस्यो के द्वारा देश को लूट लिया गया और उनका आज तक कुछ भी नहीं बिगडा।

प्रथम प्रधानमत्री प० नेहरू के शासनकाल से ही भ्रष्टाचार घोटाले आरम्भ होगए थे। किन्तु नेहरू जी कुछ भी ध्यान नहीं देते थे। उनके जमाने मे भ्रष्टाचार के चार काण्ड हुए। वित्तमत्री टी टी कृष्णमाचारी मूदडा काण्ड, जिसमे छ करोड का घोटाला हुआ। २-रक्षामत्री कृष्णमैनन द्वारा जीप खरीद घोटाला हुआ जिसमे १९६२ मे चीन से भारत की हार हुई। कृष्ण मैनन कम्युनिष्ट थे, कम्युनिष्ट चीन से उनकी सहानुभूति थी। नेहरू जी भी हिन्द-चीनी भाई-भाई का नारा लगाते रहे। इसी पराजय के कारण २७ मई १९६४ को नेहरू जी की मृत्यु हुई। ३-केन्द्रीयमत्री के०वी० मालवीय के रिश्वत लेने का घोटाला। ४-पजाब के मुख्यमत्री प्रतापसिंह कैरों का भ्रष्टाचार काण्ड। इनके विरुद्ध आरोप लगते रहे। पश्चात् न्यायाधीशों के निर्णय के पश्चात् इन्हें हटाया गया। इन्दिरा जी के शासन मे भी घोटालों की भरमार रही। सिराजुद्दीन काण्ड, बीजूपटनायक काण्ड, वीरेन मित्रा काण्ड, धर्मतिजा जहाजरानी काण्ड, नागरवाला काण्ड। राजीव के समय मे भी बोफोर्स तोप काण्ड, नरसिहाराव का शासन तो घोटालों का ही समय था, नरसिहाराव ने यूरिया घोटाला मे १३३ करोड लिये। हर्षद मेहता काण्ड, सासद रिश्वत काण्ड, गेहू खरीद काण्ड सीमेट घोटाला, चीनी काण्ड, दूरसचार काण्ड, इन सभी घोटालो से देश लूट लिया गया। इन भ्रष्टाचारो की जिम्मेदारी से क्या ये तत्कालीन काग्रेसी प्रशासक इकार कर सकते हैं ? **और अब तहलका काण्ड ने देश मे तहलका मचा दिया।**

तहलका कैसेट के निर्माता तथा उसके प्रवक्ता तरुण तेजपाल व अनिरुद्ध बहल हैं। उनका दावा है कि उन्होने इस तहलका कैसेटो की वीडियो के निर्माता की प्रक्रिया लगभग सात-आठ महीने पहले आरम्भ की थी। उन्होने अपने इस गहरे षड्यन्त्र के लिये २८ दिसम्बर २००० समता पार्टी की अध्यक्षा जया जेटली, जो मन्त्री भी थीं और ५ जनवरी २००१ को भाजपा अध्यक्ष बगारू लक्ष्मण का साक्षात्कार लिया। हमने उनके निजी सचिव सत्यमूर्ति का उपयोग किया। हम योजनापूर्वक बगारू के घर मे गये और उनसे मनचाही बाते उगलवाली।

इन वीडियो के निर्माताओं के मुख्य लक्ष्य सत्तारूढ राजग गठबन्धन की छवि का हनन करना और विपक्षी राजनीति को बल प्रदान करना था, क्योकि १३ मार्च को ३-३० बजे वीडियो कैसेट का उद्घाटन प्रदर्शन करने के लिए आयोजित कार्यक्रम मे काग्रेस एव अन्य विपक्षी दलों के सासदों को बुलाया गया किया किन्तु सत्तारूढ गठबधन के सासदो को उसका पता भी न लगने दिया। इधर ३-३० बजे वीडियो कैसेट का प्रदर्शन आरम्भ हुआ और उधर लोकसभा में काग्रेस सासद प्रियरजन मुन्शी ने इस कैसेट के आधार पर रक्षा सौदो मे दलाली का प्रश्न उठाकर ससद् मे हगामा खडा कर दिया और इधर 'तहलका' ने जी टी वी के साथ गुप्त अनुबन्ध करके जी टी वी चैनल पर वीडियो का प्रदर्शन ३-३० बजे ही शुरू करवा दिया, क्योकि खबरों के अनुसार जी टी वी की 'तहलका' कम्पनी में आर्थिक भागीदारी है।

इस 'तहलका का डाट कॉम' के पीछे काग्रेसी, कम्युनिस्ट और ईसाई प्रेरणा काम कर रही थी, क्योकि इन षड्यन्त्रो के सूत्रधारो में दो मैथ्यु थे। एक थामस और दूसरा सैमूअल। थामस इस समय गृहमत्रालय मे निदेशक पद पर कार्यरत है। गृहमत्रालय मे निदेशक पद पर कार्यरत थामस मैथ्यु और तहलका के सवाददाता सैम्युअल मैथ्यु के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध हैं। क्योकि एक रहस्योद्घाटन के अनुसार सैम्युअल मैथ्यु और थामस मैथ्यु के कार्यालय में लगातार आना जाना था। ये दोनो ही भाजपा नीति सरकार के प्रति घोर दुर्भावनाए रखते थे और केन्द्र की राजग सरकार मे दरार पैदा करने की योजना बना रहे थे। विशेषकर जार्ज फर्नाण्डीज के प्रति उनका विरोध था। उन्होने यह रहस्योद्घाटन रेलवे सलाहकार हरीशचन्द्र प्रसाद के सामने भी सैमुअल मैथ्यु ने बताया था कि उसका सम्पर्क कुछ धनवान अनिवासी भारतीयो से है और अगर ममता बनर्जी, रामबिलास पासवान, चन्द्रबाबू नायडू और जार्ज फर्नाण्डीज से बातचीत तय होसके तो धन की कमी नहीं रहने दी जायेगी। हम उनके साथ हुई सब बाते गुप्तरूप से टेप कर लेगे। जब ये इस कोशिश में थे, तब इनका एक साथी शकर शर्मा अपनी पत्नी के साथ अमेरिका भाग गया। ये सब इस टेप रिकार्ड के षड्यन्त्र से बच गए।

(शेष पृष्ठ दो पर)

आर्यसिद्धान्त-शिक्षा

इन्द्रसिंह आर्य, आरजैड-६०, ब्लाक-ओ, नया रोशनपुरा, नजफगढ़, दिल्ली-४३

(गताक से आगे)

७ सागोपाग वेदविद्या, उत्तम शिक्षा और हस्तक्रिया–(क्रिया कौशल, नानाविध पदार्थो का निर्माण अर्थात् यत्रकला, भवन निर्माणकला जिसे वास्तुशास्त्र कहते हैं) ब्रह्मचर्य व्रत पूरा हो जाने के बाद ही विद्यार्थी आचार्यकुल को छोडकर घर लौटते थे। यही कारण था कि उस समय ब्राह्मण, तो क्या क्षत्रिय और वैश्य लोग भी शिल्पविद्या के भूषण (कुशल रथपति) होते थे। (देखिए समावर्तन सस्कार)

जैसा कि मीमासा के निम्न श्लोक से द्रष्टव्य है–

८ वचनाद्रथकारस्याऽधानेऽस्य सर्वशेषत्वात्।।४३।।

(रथकारस्य) रथकार के (आधाने) अग्न्याधान करने में (वचनात्) 'ब्राह्मण' वाक्य पाये जाने से (अस्य) उसको अग्न्याधान की आज्ञा पाई जाती है, क्योंकि वह (सर्वशेषत्वात्) तीनो वर्णों का अग है।

भाष्य–शिल्पजीवी लोगों को यज्ञ का अधिकार है क्योंकि शिल्पकर्म सब कर्मों का अगभूत है, यज्ञादि कर्मों में ब्राह्मण को, शास्त्रों के लिए क्षत्रिय को और कृषि कर्म के लिए वैश्य को शिल्प की आवश्यकता है, कहने का भाव रथकार–(शिल्पी) लोग तीनों वर्णों के भीतर हैं तो फिर तीनो वर्णों को 'यज्ञ' का अधिकार सर्वसम्मत है।

९ **'स्वधया परिहिता श्रद्धया पर्यूढा दीक्षया गुप्ता यज्ञे प्रतिष्ठिता लोको निधनम्'।** (अथर्व० का० १२ अनु० ५ म० ३) ईश्वर का यह उपदेश सब मनुष्यों के लिए है।

(यज्ञे) विद्वानो का सत्कार शिल्प विद्या और शुभ गुणों के दान में प्रतिष्ठा को प्राप्त हुआ करो और इन्हीं कर्मों से इस मनुष्य लोक को प्राप्त होके मृत्युपर्यन्त सदा आनन्द में रहो। (देखिए स०वि० गृहाश्रम प्रकरण एव ऋ०भा०भू० वेदोक्त विचार)

जहा तक शूद्र के विषय मे प्रश्न है ? वैदिक सिद्धात पढने में सामर्थ्यहीन को शूद्र माना है, शूद्र कोई जाति नहीं है। शूद्र में शूद्रत्व का अभाव पाये जाने से उसको भी उपनयन एव यज्ञ का अधिकार है।

यज्ञ–उसको कहते हैं कि जिसमे विद्वानो का सत्कार यथायोग्य शिल्प अर्थात् रसायन जो कि पदार्थविद्या उससे उपयोग और विद्यादि शुभगुणों का दान अग्नि होत्रादि जिनसे वायु, वृष्टि, जल, औषधि की पवित्रता करके सब जीवों को सुख पहुचाना है, उसको मैं उत्तम समझता हू। –स्वामी दयानन्द सरस्वती

शिल्पविद्या और उसके अधिकारी–१

प्रथम शिष्य–

आचार्य जी शिल्पविद्या का प्रत्यक्ष करना शूद्र का है कर्म।
इसलिए कि द्विजो की सेवा करना उनका है धर्म।।

आचार्य–

शिष्य ! निरक्षर के हृदय में जब तक नहीं खिलता विद्यारूपी कुसुम।
तब तक वह ज्ञान-विज्ञान को नहीं कर सकता प्रत्यक्षम्।।

दूसरा शिष्य–

महोदय जी ! फिर तो वह वैश्य वर्णस्थ लोगो का है चरितम्।
क्योकि वे व्यवहारिक लेन-देन के सभी जानते हैं सूत्रम्।।

आचार्य–

शिष्य तुम्हारा भी कहना सम्यक् नहीं बल्कि पूर्णतया है असत्यम्।
मीमासक ने इसे द्विजो का कर्म बतलाकर उखाड फैंका है भ्रम।।
देखो ! समावर्तन सस्कार मे ऋषि दयानन्द का अभिमत भी मीमासक के अनुरूप है, तथ्यम्।
विद्या, हस्त क्रिया और ब्रह्मचर्यव्रत पूर्ण होने के बाद ही आचार्य शिष्यों को दीक्षित किया करते थे, विधिवतम्।।
वास्तव मे देवज्ञ ब्राह्मण (ब्रह्मा) ही सब वेदविद्याओं का श्रेयस्कर है उन्नयनउद्गम।
क्योकि वे परोक्षापरोक्ष विद्याओ को साक्षात् करने मे होते हैं सक्षम।।

तीसरा शिष्य–

आचार्य जी यदि (ब्राह्मण लोग) हस्तकिया, कलाकौशल आदि में करते हैं उद्यम।
तो उनके वेदाभ्यास, आत्मचिन्तन मोक्षप्रदान करनेवाले छूट जाते हैं सब सर्वश्रेष्ठ कर्म।

आचार्य–

शिष्य ये विचार उन लोगो के हैं, जिन्होने कभी आर्षसाहित्य के पढ़ने में नहीं किया श्रम।
सच्च तो यह है कि बिना शिल्पादि श्रेष्ठ यज्ञ किये मनुष्य को अमरता की प्राप्ति नहीं होती, साक्षी है वेद वचनम्।।
नि संदेह विमान तार, भूगर्भादि विद्या का सिद्ध करना और कराना ब्राह्मण वर्णस्थ लोगों का है मुख्य चरितम्।।
क्योंकि वे प्रतिष्ठा से बढकर अपमान को अमृततुल्य समझते हुए समाज में सर्वोप्रियता को करते हैं ग्रहणम्।।
बा०रा० बालकाण्ड के सर्ग १४ का यह श्लोक आज भी अपने स्थान पर सूर्य की भांति है प्रज्वलनम्।
कि शिल्पकर्म में निपुण ब्राह्मणो ने राजा दशरथ की यज्ञवेदी का चयन कर अग्नि को भी प्रदीप्त किया था विधिपूर्वकम्।।
अद्वितीय शिल्पकार तो ईश्वर है, वह ब्रह्मा कहलाता है, जब जगत् को नाना रूप देता है जन्म।
अपने शरीर को देखो भीतर हाडों के जोड ऊपर मास का लेपन, आख की तारवत रचना की है सूक्ष्म से भी सूक्ष्म।
ऋषि दयानन्द की हार्दिक इच्छा थी कि सभी भारतीयों के उच्चतम तकनीक की ओर बढें कदम।
ऋषि और प्रो० जी० वाईज के पत्र व्यवहार के अध्ययन के उपरांत ही इस सत्यता को जान सकते हैं हम।।
इन्द्रसिंह आर्य 'यज्ञ' शब्द के तीन अर्थ हैं देव पूजा, शिल्पविद्या का प्रत्यक्ष करना और दानम्।
ब्राह्मणों में सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मण (ब्रह्मा) यज्ञ, यजमान और ऋत्विजों का रक्षक, त्रुटिरहित यज्ञ का करता है सपादनम्।। **(क्रमश)**

वतन की जो हालत............... (प्रथम पृष्ठ का शेष)

तहलका के द्वारा किये गए षड्यन्त्र से विपक्ष की राजनीति के कारण न केवल सेना तथा सामान्य जनता के मनोबल मे भी गिरावट आई है। अब रक्षा जरूरतो को पूरा करने के मामले मे भी तरह-तरह अवरोध-रुकावटें पैदा होने शुरू होगए हैं। इसके साथ ही सुरक्षा व्यवस्था मे भी तहलका से भ्रम फैला है। यह एक गम्भीर स्थिति है।

पाकिस्तान व चीन मे भी इस प्रकार के प्रचार की कल्पना भी नहीं की जासकती। एक सुरक्षा विशेषज्ञ ने लिखा है कि ब्रिटेन और अमेरिका में ऐसे कानून हैं जहा सुरक्षा व्यवस्था में ऐसे षड्यन्त्र से न्यायालय के द्वारा तुरन्त दण्डित किया जाता है, किन्तु यहा भारत में जब पोखरण में आणविक परीक्षण हुआ और इससे भारत विश्व का एक आणविक शक्तिसम्पन्न राष्ट्र बन गया, तब भी काग्रेस तथा अन्य दलों ने सामरिक हितो से अधिक अपने दलगत हितो को ही अधिक महत्त्व दिया था। ये लोग दलीय राजनीति करने मे सकोच नहीं करते। जब उस दिन चार बजे तहलका टेप दिखाया तब भी विपक्ष मे सारा दिन ससद् को नहीं चलने दिया। विपक्ष ने भारी शोर-शराबे के बीच माग की कि सरकार त्यागपत्र दे। प्रधानमत्री त्यागपत्र दे। फर्नाण्डीज त्यागपत्र दे। सचमुच, जबकि कोई रक्षा सौदा हुआ ही नहीं था। इनकी कम्पनी फर्जी थी। उसका टेपरिकार्ड फर्जी था। विपक्ष ने जितना गैर जिम्मेदारी का काम किया है, ऐसा कभी भी नहीं हुआ। विपक्ष को तो सरकार व रक्षामत्री का त्यागपत्र चाहिए था।

इसमें थोडासा गहराई से विचार कीजिए, इसमें कोई सन्देह नहीं कि अब तक हुए रक्षाकर्मियो मे जार्ज फर्नाण्डीज सर्वाधिक लोकप्रिय रक्षामत्री माने गए हैं। उन्होने सियाचीन, कारगिल जैसी अग्रिम चौकियों मे भी जागर सैनिको का मनोबल बढाया है। सीमाओ पर जाकर अग्रिम चौकियो तक बार-बार भ्रमण किया है। ऐसे रक्षामत्री का त्यागपत्र विपक्ष केवल दलीय राजनीति के कारण कर रहा है।

तहलकावालो तथा विपक्ष को क्या मिला ? जबकि सरकार ने लोकसभा में सरकार के विरुद्ध मत डालने को निमन्त्रित कर दिया। इस पर विपक्ष इससे भी पीछे हट गया। विपक्ष किसी भी अवस्था मे अपनी सरकार नहीं बना सकता। काग्रेस के ११२ सदस्य हैं। मुलायम व कम्युनिष्ट तथा मायावती भी किसी भी हालत में सरकार नहीं बना सकते। ३०६ राजग के सदस्य थे, जिनमे से ममता के ९ तथा तमिलनाडु के ५ सदस्यो के भी निकल जाने से राजग के सदस्यों की सख्या २९२ रह जाती है। राजग की गठबधन सरकार नहीं टूट सकती। जब तक चन्द्रबाबू नायडू के २९ सदस्य साथ देते रहेंगे। सरकारो के टूटने रहने से तो नुकसान ही होता है।

अब बेचारे विपक्षी एक नया तीसरा मोर्चा बनाने में लगे हैं। प्रधानमत्री पद के तीन उम्मीदवार हैं–मुलायम, सोनिया, ज्योतिबसु। ये तीनों तराजू के मेढको के समान कभी भी तोलने में नहीं आसकते। इससे पहले भी यह तमाशा होचुका है। तहलकावालो को सख्त दण्ड देना चाहिए। सुरक्षा सम्बन्धी सौदों मे कानून के अनुसार किसी का हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए। अब तो वैंकट स्वामी की अध्यक्षता में इस तहलका काण्ड की जाच की जायेगी। देखें क्या नतीजा निकलता है इस दगे का निर्णय होना ही चाहिये। **ओ३म् शम्।**

आर्ष गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ का ८५वां वार्षिकोत्सव धूमधाम से सम्पन्न

मा. [illegible]त्मा स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित आर्ष गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ का ८५वां वार्षिकोत्सव १७-१८ मार्च २००१ को धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इसमें आचार्य हरिश्चन्द्र के ब्रह्मत्व में १२ मार्च से गुरुकुल के वेदपाठी ब्रह्मचारियों द्वारा "यजुर्वेद पारायण यज्ञ" किया गया। पूर्णाहुति १८ मार्च को सम्पन्न हुई।

१७ मार्च को यज्ञोपरान्त आर्यविद्या सभा गुरुकुल कांगडी के प्रधान एव सभा के पूर्वमंत्री प्रसिद्ध विद्वान् एवं इतिहासज्ञ प्रिंसिपल डा० रणजीतसिंह के करकमलो से ओ३म् ध्वजारोहण हुआ। आर्यवीर दल के वीरो ने ध्वजगीत प्रस्तुत किया। डा० रणजीतसिह ने अपने ध्वजारोहण के उद्‌बोधन मे गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के पुनरुद्धारक अमरहुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द के गुणों का स्मरण करते हुए वीर भक्तसिंह आदि क्रान्तिकारियो के गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ से सम्बन्ध का वर्णन किया।

इस महोत्सव मे अनेक सम्मेलनो का आयोजन किया गया। सम्मेलनो मे समाज सुधार सम्बन्धी विषयो पर प्रकाश डालने के लिए अनेक उच्चकोटि के विद्वान्, साधु-सन्त, महात्मा, उपदेशक, भजनोपदेशक तथा राजनेताओं ने भाग लिया। इनमे सार्वदेशिक सभा एव हरयाणा सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द सरस्वती, सभा के कार्यकर्ता प्रधान स्वामी इन्द्रवेश, बन्धुआ मुक्ति मोर्चा के प्रधान स्वामी अग्निवेश, नशाबन्दी के प्रधान पूर्व केन्द्रीय मत्री प्रो० शेरसिह, पलवल के विधायक भगवान् सहाय रावत, हरयाणा के पूर्व मुख्यमत्री बनारसीदास गुप्त, गुरुकुल एव वेदप्रचार मण्डल के प्रधान तथा विधायक चौ० राजेन्द्रसिह बीसला, चौ० सूबेसिह सभा उपप्रधान, चौ० धर्मचन्द पूर्व मुख्याधिष्ठाता (गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ), डा० सुदर्शनदेव आचार्य, डा० देवव्रत आचार्य कुरुक्षेत्र, बहिन कलावती आचार्या, श्रीमती बिमला मेहता (फरीदाबाद), महाशय बेगराज, महाशय फतहसिह कौराली, महाशय शोभाराम प्रेमी, महाशय जयपालसिह बेधडक, महाशय खेमसिह, प० सत्यपाल आर्य आदि राजनेता, विद्वान् एव,सन्यासी एव भजनोपदेशको के सारगर्भित भाषण एव उपदेश हुए।

पलवल के विधायक श्री भगवान् सहाय रावत ने व्यक्तिगत रूप से ११००० हजार रुपये गुरुकुल में दान दिए। स्वतन्त्रता सेनानी हरयाणा के पूर्वमुख्यमत्री राज्यसभा सासद् श्री बनारसीदास गुप्त ने अपनी सासद निधि कोटे से ३,५०,००० (तीन लाख पचास हजार) रुपये गुरुकुल मे नलकूप (बोर) निर्माण के लिए प्रदान किये।

अन्तिम दिन सतलुज यमुना लिंक नहर का पानी लाओ सम्मेलन प्रो० शेरसिह की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। स्वामी इन्द्रवेश जी तथा स्वामी अग्निवेश जी ने नहरी पानी लाने हेतु हरयाणा में जनजागरण करने की योजना प्रस्तुत की।

इस उत्सव में हजारो आर्य नरनारियो ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। गुरुकुल के कोषाध्यक्ष एव नवनियुक्त मुख्याधिष्ठाता श्री भक्त मगतुराम जी ने रात दिन एक करके पूरे इलाके मे जागृति पैदा करके आर्यजनो को पुन इस प्राचीन गुरुकुल की ओर आकर्षित करने का स्तुत्य प्रयास किया है।

गुरुकुल समिति के प्रधान विधायक चौ० राजेन्द्रसिह बीसला ने सभी आगन्तुक आर्यजनों का स्वागत तथा गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता भक्त मगतुराम जी ने सभी का आभार प्रकट करते हुए धन्यवाद ज्ञापन किया। भक्त मगतुराम ने इस अवसर पर अनेक विद्वानो तथा राजनेताओ को शाल अर्पित कर सम्मानित किया। गुरुकुल के आचार्य, अध्यापको एव ब्रह्मचारियो ने पूर्ण निष्ठा से उत्सव को सफल बनाने मे योगदान दिया। सभा के अन्तरग सदस्य श्री शिवराम आर्य पलवल ने कुशलतापूर्वक मच सचालन किया। समारोह में देसी घी से निर्मित भोजन की सुन्दर व्यवस्था की गई। ऋषिलगर मे आसपास के हजारो झुग्गीवासियो सहित हजारों आर्य नरनारियो ने दोनो दिन भोजन का आनन्द लिया। इस सुन्दर एव व्यवस्थित आयोजन के लिए सारा गुरुकुल प्रशासन विशेषरूप से भक्त मगतुराम जी बधाई के पात्र हैं।

—सभामंत्री

तकनीकी शिक्षा का माध्यम और भारतीय भाषाएं

'तकनीकी शिक्षा का माध्यम और भारतीय भाषाओं' पर संक्षेप में स्थिति यह है :–

१. भारतीय मनीषा विश्व में श्रेष्ठतम है।

भारत की एक व्युत्पत्ति है–'भा'=प्रकाश या ज्ञान (की खोज या प्राप्ति) मे 'रत'=लगा हुआ। इसलिए भारत आदि काल से ही विद्वानो का देश रहा है, जहा से ज्ञान सारे ससार मे फैला। आज भी भारतीय प्रतिभा और भारतीय-मनीषा की श्रेष्ठता दुनिया स्वीकारती है।

२. व्यावहारिक या तकनीकी ज्ञान की दृष्टि से भी।

व्यावहारिक या तकनीकी ज्ञान के क्षेत्र में भी भारत की श्रेष्ठता बहुत पुरानी है। जब सारा ससार असभ्यो और जगलियो का जीवन जी रहा था, तब भारत मे उच्चकोटि की आर्य (श्रेष्ठ) सभ्यता फल-फूल रही थी। इसके प्रमाणस्वरूप सभी विषयो का उत्कृष्ट साहित्य अब भी मिलता है (जबकि कई आक्रान्ताओं ने पुस्तकालय तक जला दिये थे)। जगह-जगह प्राचीन सभ्यता के अवशेष भी मिलते हैं। देशी और विदेशी विद्वान् इसमे सहमत हैं कि भारत विश्वगुरु था।

३. फिर अंग्रेजी का चस्का क्यों ?

जब सारा ज्ञान भारत में और भारतीय भाषाओं मे था, सारा काम, सरकारी और गैर-सरकारी, भारतीय भाषाओ के माध्यम से चलता था, तो अब, देश आजाद होने के आधी सदी बाद भी अंग्रेजी की ललक क्यो बढती जारही है, यह गभीरतापूर्वक सोचने की बात है। विद्वानों ने विचार किया है और इसे ऐसा दुर्भाग्य कहा है जिसकी मिसाल दुनिया में नहीं है। फिर शिक्षा के क्षेत्र में ही अग्रेजी की बैसाखी के बिना हम क्यो नहीं आगे बढ सकते ? जो भाषा विदेशी है, इने-गिने दो-तीन प्रतिशत भारतीयों के अलावा शेष देशवासी समझ-बोल ही नहीं सकते, उसके माध्यम से शिक्षा का प्रसार करने में कौनसी बुद्धिमानी है ?

४. भारत के गृहमन्त्री जी का निष्कर्ष।

परिस्थितियो का गंभीर विवेचन करके श्री लालकृष्ण आडवाणी, हमारे गृहमन्त्री को १४ सितबर २००० को यह सामयिक सलाह देनी पडी कि **'हम हीनभावना को त्यागकर अपनी भाषा और संस्कृति पर गर्व करें।'** उन्होंने यह भी कहा कि 'अपनी भाषा के उत्थान के लिए सास्कृतिक चेतना पैदा करना जरूरी है।' अग्रेजी थोपी गई थी अग्रेजी राज की जड जमाने के लिए श्रेष्ठ भारतीय संस्कृति नष्ट करके पश्चिम की अपनी सस्कृति फैलाने के लिए। इसलिए जब तक हम अग्रेजी का पल्ला छोडने मे हिचकिचाते रहेंगे, तब तक हमारा पूर्ण स्वराज का स्वप्न अधूरा रहेगा।

५. स्व-भाषा और सु-भाषा का भ्रम।

अंग्रेजी शासन चलाने का अधिकार अग्रेजी भाषा को मिल जाने पर वह रोजी-रोटी और अधिकार-सम्पन्नता की 'सु-भाषा' गिनी जाने लगी और उसके लिए ललक पैदा की गई। यह तो ऋषि दयानन्द सरस्वती ने बताया कि किसी शासन को 'सुराज' या 'स्वराज' तब तक नहीं कह सकते, जब तक वह अपनी भाषा के माध्यम से न चलाया जाए। अंग्रेजी भाषा के माध्यम से अग्रेज भारतीयो का मानस-परिवर्तन करते रहे कि हमे अपनी भाषाओ से विरक्ति हो जाए और वैसा वे सिखाए-पढाए-रटाए, वैसा ही हम बोलने-करने-कराने लगें। यानी हम उनके जर-खरीद गुलाम बन जाए और हम 'बाबू' (अग्रेजी का बॅबून=नकलची बंदर) बनकर गर्वोन्नित होते रहे।

६. षड्यन्त्र का भण्डा फोड।

इस प्रकार षड्यन्त्र का भण्डा-फोड होने पर स्व-देशी और स्व-भाषा के प्रति अनुराग बढाकर भारत ने स्व-राज्य प्राप्त कर लिया। किन्तु गलती यह होगई कि हमने अंग्रेजों को तो भगा दिया, उनका शासन-तत्र, जो अग्रेजी से चल रहा था, ज्यो का त्यों अपना लिया। भारतीय भाषाए समृद्ध, समर्थ और सक्षम होने पर भी हम उनके प्रति अविश्वासी ही बने रह सके। हमने चीन और इजराइल से कुछ नहीं सीखा, जिन्होंने भारत के बाद स्वतत्र होने पर भी अपनी-अपनी भाषाओ के माध्यम से इतनी उन्नति करली।

७. हमारी भाषा तो सु-भाषा भी है।

हिन्दी सभी प्रकार से श्रेष्ठ और विश्व-भाषा बनने योग्य है। यह स्व-भाषा और सु-भाषा भी है और विश्व की लगभग आधी जनसंख्या इसे बोलती-समझती है, जबकि अंग्रेजी बोलने-समझनेवाले बहुत कम हैं। भारत मे भी बोलने-समझनेवाले लगभग ८० प्रतिशत हैं। यह राष्ट्रभाषा और सपर्क की भाषा रही है, सदियो से ही।

८. तकनीकी काम हिन्दी में करना विशेष आसान भी है।

देश मे सब लोग, जिनकी मातृ-भाषा हिन्दी नहीं है, अन्य भाषा-भाषियो के साथ हिन्दी बोलकर काम चला लेते हैं। आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की तकनीकी शब्दावली आदि भारत सरकार के 'वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग' ने भी हिन्दी और भारतीय भाषओ में तैयार करदी है। अत तकनीकी काम भी हिन्दी मे करना विशेष आसान है। हिन्दी सरल, सुबोध और सर्वग्राह्य तो पहिले ही थी। फिर विद्वान् अध्यापक/प्राध्यापक और उच्च पदस्थ अधिकारी तो प्रकृत्या प्रखर बुद्धिवाले होते हैं। उन्हें तो हिन्दी अपनाने मे कोई कठिनाई होनी ही न चाहिए।

९. कार्यान्वयन-सम्बन्धी कुछ संकेत।

सरकारी काम मे भी हिन्दी का प्रयोग करने के लिए समय-समय पर सरकार से बहुत आदेश-अनुदेश जारी किये हैं। उनके कार्यान्वयन के लिए कुछ सकेत भी लिपिबद्ध हैं। उनमे सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण यह है कि साधारण बोलचाल की भाषा का प्रयोग करना है और यदि कहीं कोई उपयुक्त हिंदी शब्द न सूझ पडे तो अग्रेजी शब्द ही नागरी मे लिखकर काम चलाए। इस प्रकार की मिली-जुली भाषा सरकारी काम के लिए स्वीकार्य है। पारस्परिक बातचीत, चर्चा-परिचर्चा छात्रो को पढाने-समझाने और उनकी पृच्छाओ के उत्तर देने के लिए इतना ही पर्याप्त होगा। फाइलों के काम में, जैसा प्रशासनिक कार्यालयो मे होता है ऐसी हिन्दी की, प्राय आवश्यकता नहीं होती जिसे साहित्यिक हिंदी कहते हैं। हिन्दी का कामचलाऊ ज्ञान ही हिंदी-शिक्षण-योजना के अतर्गत दिया जाता है। साहित्यिक हिंदी लिखने मे यह भी सभव है कि किसी ऐसे व्यक्ति को जिसे भाषा का ऊचे स्तर का ज्ञान नहीं है, समझने में कठिनाई हो। इसलिए पाण्डित्य-प्रदर्शन सप्रयास बचते हुए सरल हिंदी का ही प्रयोग करना चाहिए। यही 'अच्छी हिंदी' है। अत हमे निराशा त्यागकर हिन्दी का प्रयोग करके स्वय पहल करनी चाहिए। अन्य भी साथ हो लेंगे। वातावरण बदलेगा और यह शती हिन्दी की होगी।

—**विश्वम्भरप्रसाद 'गुप्तबन्धु'**, बी-१५४
लोक विहार दिल्ली-११००३४

सभी धर्मों तथा संस्कृतियों का आदिस्रोत : वेद

❑ प्रतापसिंह शास्त्री, आचार्य, एम.ए., पत्रकार, २५, गोल्डन विहार, हिसार

(गताक से आगे)

असल मे प्राचीन धर्मों का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि बकरीद गोमेध ही था और गोमेध का अर्थ कृषि था। गौ शब्द मे गलती खाकर वैदिक धर्म का कृषि का ऊचा विचार अन्य धर्मों में पहुचते-पहुचते कुछ का कुछ बन गया। अर्थ का अनर्थ होगया। योगदर्शन में ५ यमों तथा ५ नियमों का वर्णन है, पाच यम–अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य तथा अपरिग्रह। पाच नियम–शौच, सतोष, तप, स्वाध्याय तथा ईश्वरप्रणिधान। इस प्रकार योग का अभ्यास करने के लिए तथा वैदिक जीवन पद्धति के लिए ये आवश्यक है। बौद्ध धर्म में जब किसी को दीक्षा दी जाती थी उस दीक्षा को उप सम्पदा कहते थे और उस समय–'**बुद्धम् शरणम् गच्छामि, सघम् शरणं गच्छामि, धमम् शरण गच्छामि**' इन शब्दो का तीन बार पाठ होता था उसके बाद १० आदेश दिये जाते थे जो प्राय वही थे जो योगदर्शन के यम-नियम हैं। ईसामसीह ने '**सरमन आन दी मौऊट**' मे वैदिक पाच यमो की ही व्याख्या की है। ईसामसीह की यमो की व्याख्या योगदर्शन की व्याख्या के इतनी निकट है ऐसा प्रतीत होता है कि वह किसी भारतीय सन्त के सम्पर्क मे आया होगा या भारत में आकर उसने इन सिद्धांतो को यहा के बौद्धो से सीखा होगा। क्योकि ईसायत बौद्धमत से निकली है ऐसा बहुत से विद्वानो का विचार है। यहूदियो मे एक कथानक प्रचलित है कि जिहोवा ने मूसा को दो पट्टियों पर 'खुदाई फरमान' लिखकर दिया था जिसमे यहूदियो के लिये १० आज्ञाए थी वे १० पाच यम और पाच नियम ही थे। इस प्रकार प्राय सभी धर्मों मे इन यमो व नियमों का पाया जाना यह सिद्ध करता है कि इस विचारधारा का एक ही स्रोत है और वह स्रोत है 'वेद'। महर्षि पतजलि ने महाभाष्य में जहा चारो वेदों को सूचित करने के लिये एक-एक मत्र दिया है। वहा अथर्ववेद को सूचित करने के लिए–**ओ शन्नो देवीरभिष्टये आपो भवन्तु पीतये। श योरभि स्रवन्तु न।।** यह वेदमत्र दिया है। उक्त वेदमत्र के सम्बन्ध में '**जिंदावस्ता**' (पारसी धर्मग्रन्थ) के एक अध्याय 'होमयष्ट' मे लिखा है कि ईरान में राजा करेशानी के राज्य मे अथर्ववेद का पाठ होता था जिसे 'अपा अभिष्ट' मे या अभिष्टश का पाठ भी कहा गया है जब उसने यह पाठ बद कर दिया तो वहा के राष्ट्राध्यक्ष व धर्माचार्य होम ने करेशानी को राजसत्ता से हटा दिया था। इससे सिद्ध होता है–'जिदावस्ता' का आदि स्रोत भी वेद है। सृष्टि उत्पत्ति के समय का वर्णन वेदों मे बहुत सुदर ढग से किया गया है। ऋग्वेद में सूक्त ३२ मडल-१ में कई मत्र ऐसे हैं वृत्र और अहि, इद्र और अहि शब्द आए हैं और इनमें सृष्टि के आरम्भ मे जो वाष्प बनते हैं और वाष्प उठते हैं, बादल मडराते हैं, बिजली चमकती है, कभी धूंध छायी रहती है, उसका रोचक वर्णन है। यहां अहि का अर्थ बादल है साप नहीं। इद्र का अर्थ सूर्य है। यथा–'**अपाद हस्त. अपृतन्यद इन्द्रम्**' (ऋ० १/३२/७) **अहि शयत उपपृक पृथिव्या** (ऋ० १/३२/५) वेदो में इद्र और अहि का सूर्य और बादल का सोमरस के लिए अर्थात् जल के लिए झगडा होता है। बादल जब पृथ्वी पर आ गिरा तब नदिया बहने लगीं। अर्थात् बादल जब जल को अर्थात् (सोमरस को) अपने पास रखने लगा तब इद्र अर्थात् सूर्य ने टुकडे-टुकडे करके उसे पृथ्वी पर ला पटका। बादल को अर्थात् 'अहि' को बिना हाथ-पैर वाला बताया है बस इन्हीं मत्रो के रूढि अर्थ करके ईसाइयों ने, मुसलमानों ने, यहूदियों ने अपने धर्मग्रन्थों में 'अहि' का अर्थ 'साप' और 'शैतान' लिख लिया 'बादल' नहीं लिखा। 'इद्र' का अर्थ 'खुदा' लिख लिया 'सूर्य' नहीं लिखा। 'सोमरस' का अर्थ वर्षा का पानी या 'ज्ञान' नहीं लिखा 'ट्री ऑफ नोलेज' लिख लिया और कहानी घड दी कि खुदा ने अदन के बगीचे में 'ट्री ऑफ नोलेज' को रोपकर आदम से कहा कि इसके फल को मत खाना। शैतान ने जिसकी शक्ल साप की थी, आकर आदम को बहकाकर उसे फल खाने को दिया जिसका परिणाम यह हुआ कि शैतान और खुदा मे तू-तू मैं-मैं होगई और खुदा ने शैतान को शाप दिया कि तू जमीन पर जा गिरेगा और पेट के बल रेगा करेगा। यह कहानी ईसाई और मुसलमानो मे समान रूप से है। 'खुदा' और 'साप' का 'ट्री ऑफ नौलेज' के लिए झगडा होता है, खुदा चाहता है 'ट्री ऑफ नौलेज' उसके पास रहे किन्तु 'साप' पृथ्वी पर आ रेंगने लगता है। वैदिक धर्म में 'इद्र' और 'अहि' का 'सोमरस' के लिए झगडा होता है 'अहि' पृथ्वी पर आ सोता है। इन सब बातो का आदि स्रोत 'वेद' है। सृष्टि उत्पत्ति के बाद शतपथ ब्राह्मण में मनु के तूफान का वर्णन कथानक के रूप में और गलत फहमी के कारण 'जिंदावस्ता' पारसियों के धर्मग्रथ मे 'यम' का तूफान, ईसाइयों की बाइबिल में व मुसलमानो की कुरान मे नूह के तूफान का वर्णन है। इससे प्रमाणित होता है वेदरूपी गगोत्री से निकली ज्ञान की गगा की धारा कूडा कर्कट मिलने से गदला पानी बनती चली गई। अब हम पुनर्जन्म और मृत्यु इस विषय मे जब विचार करते हैं तो पाते हैं कि पुनर्जन्म का सिद्धान्त वैदिक सिद्धान्त है, जो वेदो से ही अन्य धर्मों मे गया है। यहूदी तथा ईसाई इसे 'रिसलेक्शन' कहते हैं और मुसलमान 'कयामत' कहते हैं। मृत्यु के बाद तीन दिन तक आत्मा भ्रात अवस्था मे रहता है यह विचार भी सबमें एक समान है परन्तु इसका मूल भी उपनिषद मे है। (क्रमश.)
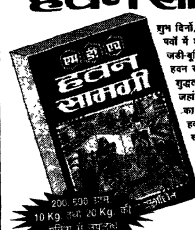
आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् की कार्यकारिणी की एक विशेष बैठक ८ अप्रैल रविवार प्रात १०-०० बजे आर्यसमाज शक्तिनगर दिल्ली-७ मे बुलाई गई है। सभी अन्तरग सदस्य व प्रदेश व जिले के प्रधानो को इसमे आमत्रित किया गया है।

निवेदक **सन्तराम आर्य,** प्रदेशाध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् (हरयाणा)

आर्यसमाज औरंगाबाद मितरौल (फरीदाबाद) का चुनाव

प्रधान-श्री बहालसिह भारद्वाज, उपप्रधान-श्री दुर्गाप्रसाद पालीवाल, महामत्री-श्री डालचन्द आर्य प्रभाकर, उपमत्री-श्री अशोककुमार शर्मा, कोषाध्यक्ष-श्री दयाराम आर्य, प्रचारमत्री-श्री भजनलाल आर्य, लेखानिरीक्षक-श्री उमाशकर शर्मा, पुस्तकालयाध्यक्ष-श्री रामसिह आर्य।

—**डालचन्द आर्य प्रभाकर,** मत्री आर्यसमाज औरगाबाद मितरौल (फरीदाबाद)

आर्यसमाज सालवन जिला करनाल का चुनाव

प्रधान-जयप्रकाश नेता जी, महामत्री-राजवीर आर्य, उपप्रधान-भजनलाल आर्य, उपप्रधान-श्रीमती मुन्नी देवी, उपमत्री-श्रीमती मनोरमा, पुस्तकालयाध्यक्ष-बलवीर आर्य, कोषाध्यक्ष-जसवीर आर्य, लेखानिरीक्षक-ओम्प्रकाश वर्मा।

—**राजवीर आर्य,** मत्री वेदप्रचार मंडल असन्ध

सभाप्रधान स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती द्वारा गुजरात भूकम्प पीड़ितों के लिए राहत कार्य

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एव आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती गुरुकुल झज्जर २६ जनवरी को प्रात महर्षि की जन्मभूमि गुजरात मे आए भयकर भूकम्प की विनाशलीला का समाचार सुनते ही ३१ जनवरी को प्रात गुरुकुल झज्जर के वेदपाल शास्त्री, सोमवीर तथा बलवान्सिह आदि पाच ब्रह्मचारियों को लेकर गुजरात के लिए चल पडे।

प्रथम चरण के रूप मे स्वामी जी अपनी जीप मे २५ हजार की आयुर्वेदिक औषधिया नि शुल्क बांटने हेतु साथ लेगए थे। गुरुकुल टकारा में पहुचने पर पता चला कि आसपास के गावो मे जन-पशु हानि तो अधिक नहीं थी किन्तु मकान पूर्णत ध्वस्त हो चुके थे। टकारा गुरुकुल पीडितो की शरणस्थली बन गया था। वहा चल रहे ऋषिलगर के लिए स्वामी जी ने १० हजार रुपये की नकद सहायता की।

स्वामी जी पीछे से गुरुकुल के आचार्य विजयपाल जी को २०-२५ ब्रह्मचारियो के साथ ट्रक में सामान लाने का निर्देश दे गये थे। स्वामी जी के निर्देशानुसार आचार्य विजयपाल जी गुरुकुल झज्जर के २५ ब्रह्मचारियो के साथ एक डेढ लाख रुपये के वस्त्र, अन्न, कपडे, बर्तन तथा अन्य खाने का सामान आदि लेकर गए। इस सामान को टकारा के समीपस्थ किन्तु सडक से दूर तीन गावों मे विपरीत किया गया। यह सारा सामान गुरुकुल झज्जर के आचार्य, अध्यापक, कर्मचारी एव ब्रह्मचारियो द्वारा एकत्र किया गया था। इन तीन गांवों में तब तक कोई सहायता नहीं पहुंची थी। टकारा से स्वामी जी मौरवी एवं राजकोट आदि भी गए। भूकम्प में गुरुकुल टकारा की गोशाला तथा यज्ञशाला को भी क्षति पहुची थी।

छह दिन के बाद भूकम्प पीडितो की आवश्यकता का पता लगाकर स्वामी जी को वापसी में सैकडों ट्रक राहत सामग्री ले जाते हुए मार्ग में मिले। स्वामी जी ने पुन आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, आर्यसमाज नरेला, रोहणा, सुधीर शास्त्री तथा प्रिं० लाभसिह पानीपत, गांव दुबलधन आदि की सहायता से तीस हजार का सामान, दाल, चावल, अचार, सिले हुए कपड़े आदि तथा इनके अतिरिक्त लगभग तीन लाख का सामान दिनाक १८-३-२००१ को कैप्टन जसवन्तसिह, वेदपाल शास्त्री, सत्यवीर शास्त्री, सोमवीर शास्त्री, अशोक शास्त्री तथा अन्य ८ ब्रह्मचारियों के साथ निम्नलिखित सामान लेकर एक ट्रक अपनी जीप गाडी के साथ पुन गुजरात भेजा। ट्रक की व्यवस्था जिला प्रशासन की ओर से की गई।

कम्बल-४००, दरिया-२००, लोई १५०, लेडीज शाल १००, खेश सूती २००, टेट २७, देशी घी २ पीपे, हवनसामग्री ३ क्विटल यज्ञ हेतु, सिले हुए कपडे, बर्तनो के सैट, ९० मन गेहू, चावल, दाल, आदि, सत्यार्थ-प्रकाश ५०, श्रीमद्दयानन्दप्रकाश ५० पुस्तकें भी वहा भेजीं।

प्रो० शेरसिह जी के गाव बाघपुर से भी अन्न, धन एव वस्त्रो की सहायता प्राप्त हुई। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने भी इस अभियान मे लगभग एक लाख रुपये का योगदान दिया।

गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारियो ने सहायता सामान वितरण के लिए गुरुकुल टकारा से अध्यापक रामदेव जी शास्त्री तथा चार ब्रह्मचारियो को अपने साथ लिया। टकारा में ही आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के उपप्रधान चौ० ऋषिपालसिह एडवोकेट तथा श्री कर्तारनाथ जी भी आ मिले। सभी लोगो ने एकत्र होकर मौरवी तालुका के दूरदराज के तीन गावो नारायणका, मानसर, खेवारिया आदि में सहायता सामग्री का वितरण किया।

गाबो में जाने से पता चला कि वहा लोगों को अब कपडे, अन्न तथा अन्य सामान आदि की अपेक्षा भवननिर्माण सामग्री की अधिक आवश्यकता है, जैसे सीमेंट, लोहा, ईंट, बजरी आदि। इस प्रकार दूसरे चरण की सहायता सामग्री का वितरण करके दल के सभी सहयोगी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मे भाग लेने के लिए मुम्बई पहुचे।

गुजरात भूकम्प की इस भयकर त्रासदी मे हरयाणा के समस्त आर्यसमाजों जिला वेदप्रचार मण्डलो एव केन्द्रीय सभाओ ने अपने स्तर पर लाखों रुपये की सहायता भूकम्प पीडितो के लिए गुजरात भेजी। जिनमें प्रमुख हैं–

(१) आर्य केन्द्रीय सभा भिवानी २० हजार नकद १ ८५ लाख का सामान, (२) गुरुकुल कुरुक्षेत्र एक दिन का वेतन १० अनाथों को गोद लेंगे, (३) आर्य केन्द्रीय फरीदाबाद ३ ५० लाख का सामान, (४) आर्य केन्द्रीय सभा हिसार १ २५ लाख का सामान, (५) आर्य केन्द्रीय सभा पानीपत ६ ट्रक सामान, आर्य शिक्षण सस्थाए १ लाख रुपये, (६) आर्य केन्द्रीय सभा गुडगाव एक ट्रक भोजन सामग्री, (७) आर्यसमाज भीमनगर एक ट्रक राहत सामग्री, चीनी, चाय, बर्तन, चावल, गुड, देशी घी के टीन, सब्जी, कपडे, ५० टैंट, १५० बल्लिया, रस्से, किल्ले, चावल, दाल आदि। (८) आर्यसमाज कोर्ट रोड सिरसा ७३ हजार नकद।

इसी प्रकार अम्बाला, यमुनानगर, चरखी दादरी, नारनौल तथा जीन्द आदि से सीधे लाखों का सामान भेजा गया। इसके अतिरिक्त जिलो के स्थानीय आर्यसमाजो ने जिला उपायुक्त जिला रेडक्रास, मुख्यमत्री सहायता कोष एव प्रधानमत्री सहायता कोष के माध्यम से लाखों रुपये नकद एव लाखो का सामान सहायता के रूप में प्रदान किया। इसके लिए हरयाणा की आर्यजनता बधाई की पात्र है। हरयाणा प्रान्त में जिला झज्जर सहायता कार्य मे अग्रणी है।

सारा देश भूकम्प पीडितो की सहायता के लिए जिस प्रकार एक साथ खडा हुआ है उसके लिए भारत की जनता बधाई की पात्र है। प्राकृतिक विपदाओं को रोकना तो मानव के वश मे नहीं है किन्तु विपत्तिग्रस्त लोगो की सहायता में एकजुटता व तत्परता दिखलाना देश के लिए शुभ लक्षण है।

–प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

दयानन्दमठ प्रबन्धकारिणी सभा रोहतक को आयकर में छूट का प्रमाण-पत्र

F No 228 (100-D) PRO

Office of the
Commissioner of Income Tax,
Rohtak.

ORDER Date 28.3.2001

Sub . Exemption u/s 80-G of the Income Tax Act. 1961

Donations made to "M/s Daya Nand Parbandh Karni Sabha, Gohana Road, Rohtak shall qualify for deductions u/s 80-G of the I T Act. 1961 in the hands of donors subject to the limit prescribed therein

This exemption is valid from 01 04 1999 to 31 03 2004 and subject to the following conditions -

i) Receipts issued to the donors should bear the number and data of this order and should state clearty that this certifica is valid upto 31.03 2004 only
ii) The income and expenditure account a balance sheet should be submitted alongwith the Income-tex retarn annually to the Assessing Officer having jurisdiction over the case
iii) The amendments if any, made to the trust deed should be intimated to this officer
iv) If any further renewal is required an application has to be the concerned Assessing Officer together with statement of accounts of income and expenditure

(S N PRASAD)
COMMISSIONER OF INCOME TAX
ROHTAK

Copy to -

1. 'M/s Daya Nand Math Parbandh Karni Sabha, Gohana Road. Rohtak (By Regd Post)
2. The Income-tax Officer, Ward-1 Rohtak He should verify himself w r t the annual statement which will be submitted by the applicant that it continues to tultill the conditions laid down u/s 80-G and instructions issued by the Board from time to time
3. The cecretary. Central Board of Direct Texes New Delhi
4. The Director of Income Tax (PSP & PR), New Delhi
5. All commissioners of Income Tax in H R , Panchkula and N W R. Chandigarh
6. All Assessing Officers in this charge

(A K. VERMA)
PUBLIC RELATION OFFICER
FOR COMMISSIONER OF INCOME TAX
ROHTAK

बलिदान/पुस्तकालय भवन के लिये दानी महानुभावों से अपील

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक मे सभा द्वारा एक विशाल बलिदान भवन/पुस्तकालय भवन का निर्माण कार्य आरम्भ होगया है। इस बलिदान भवन/पुस्तकालय भवन में आर्यसमाज के बलिदानियो के चित्र विवरण के साथ लगाये जायेंगे।

सभी दानी महानुभावो से प्रार्थना है कि इस पुनीत कार्य मे अधिक से अधिक धनराशि मनीआर्डर, चैक या बैंक ड्राफ्ट द्वारा अथवा नकद भेजकर पुण्य के भागी बने। जिन सज्जनो का पूर्व मे दान का वचन है वे भी अपना वचन शीघ्र पूरा करने की कृपा करे।

निवेदक

स्वामी ओमानन्द सरस्वती — सभाप्रधान
स्वामी इन्द्रवेश — कार्यकर्ता प्रधान
प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास — सभामन्त्री
बलराज आर्य — सभा कोषाध्यक्ष
प्रो० शेरसिंह — पूर्व रक्षाराज्यमंत्री

दयानन्दमठ रोहतक का उन्नीसवां वैदिक सत्संग सम्पन्न

आर्यसमाज की प्रमुख सस्था दयानन्दमठ, रोहतक का उन्नीसवां वैदिक सत्संग समारोह प्रथम अप्रैल २००१ रविवार को सम्पन्न होगया। इसे प्रात ९-०० बजे ब्रह्मयज्ञ तथा देवयज्ञ से प्रारम्भ किया गया। इस समारोह की अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यकर्ता प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी ने की। यज्ञ के बाद प्रसाद की व्यवस्था की गई। महिलाओ और पुरुषो के भक्ति के गीत हुए जिनमे श्री कुलदीपसिह आर्य भजनोपदेशक का गीत इसके बाद निरन्तर एक के बाद एक ईश्वरभक्ति के गीतो से पूरा वातावरण बदल गया। बहिन दयावती प्राध्यापिका व रेणूबाला खरल ने सुन्दर गीतो से सभी के मन मे भक्तिभाव पैदा कर दिया। इसी कडी को आगे बढाया सुरेश आर्य मालवी तथा डा० बनीसिह कुण्डू ने। सत्सग की महिमा पर प० सुखदेव शास्त्री ने पूरी तेजगति से अपनी चर्चा की तथा चौ० राममेहर एडवोकेट ने आर्यसमाज की स्थापना के बारे मे चर्चा की।

अन्त मे इस समारोह के अध्यक्ष व आज के मुख्य वक्ता श्रद्धेय स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज ने श्रोताओ के आग्रह पर पहले मुम्बई के १२५वे आर्यसमाज स्थापना दिवस २३ मार्च से २६ मार्च २००१ पर प्रकाश डाला तथा बाद में आज मूल विषय '**प्राणायाम. परम तप**' पर चर्चा की। उन्होने बताया कि वैदिक धर्म ब्रह्मा से लेकर जैमिनि तक उसी ज्ञान व परम्परा को मानते आये हैं। जो सिद्धान्त अथवा विचार महर्षि दयानन्द ने लोगो के सामने रखा है। स्वामी दयानन्द जी ने भी अष्टाग योग को माना है। वे कहते हैं कि गुण से गुणी का ध्यान करे। स्वामी जी ने कहा कि कम से कम तीन प्राणायाम अवश्य करने चाहिये। प्राणायाम करनेवाले व्यक्ति कफ, नजला, खासी व दमा नहीं होसकता। आखिर मे प्राणायाम की विधिया बताकर स्वामी जी कहा कि ध्यान की तैयारी भी प्राणायाम ही है।

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

आर्यसमाज मुवाना जिला जीन्द	६ से ८ अप्रैल
आर्यसमाज सैक्टर-४ अर्बन इस्टेट गुडगाव	२ से ८ अप्रैल
आर्यसमाज जमाल जिला सिरसा	१०, ११ अप्रैल
गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय, हरद्वार	११ से १३ अप्रैल
आर्यसमाज नरेला (दिल्ली)	१३ से १५ अप्रैल

—**डॉ० सुदर्शनदेव आचार्य**, वेदप्रचाराधिष्ठाता

शंका-समाधान

(श्रवणकुमारसिंह निर्वाण, ग्राम करमसाना, जिला सिरसा)

शंका—स्वा० दयानन्द सरस्वती ने सन्ध्या के मन्त्रो मे यजुर्वेद और अथर्ववेद के ही मन्त्र दिये हैं जबकि उन्होने अन्य स्थान पर उपासना-प्रधान वेद तो सामवेद को लिखा है जबकि सामवेद का एक भी मन्त्र सन्ध्या मे नहीं दिया है।

समा०—महर्षि दयानन्द ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के 'वेदविषयविचार' प्रकरण मे लिखते हैं कि चारो वेदो मे विज्ञान, कर्म, उपासना और ज्ञान विषय मुख्य हैं। इनमे भी विज्ञान (ईश्वर का ज्ञान) विषय प्रधान है। महर्षि दयानन्द चारो वेदो मे उक्त विषयो का उल्लेख मानते हैं। यह नहीं कि ऋग्वेद में विज्ञान, यजुर्वेद मे कर्म, सामवेद मे उपासना और अथर्ववेद मे ज्ञान विषय है। यदि आपके पास अपने विचार की पुष्टि मे कोई ऋषि प्रमाण हो तो पत्र द्वारा सूचित करना।

शका—आज लोग इतने पढे-लिखे हैं फिर भी मूर्तिपूजा, पाखण्ड मे फस रहे हैं, जबकि भारत के नेता सविधान के विरुद्ध सम्मेलनो मे भाग लेते हैं। जब आज तक कोई आर्यसमाज की एक बात झूठी सिद्ध नहीं कर सका है फिर भी लोग आर्यसमाज की तरफ आकृष्ट क्यो नहीं होते ?

समा०—जो लोग मूर्तिपूजा आदि पाखण्ड मे फसे हुये हैं उनकी जीविका उनके साथ जुडी हुई है, लोभ को छोडकर सत्य मार्ग पर चलना साधारण व्यक्ति के वश की बात नहीं है। राजनेताओ का मुख्य उद्देश्य वोट बटोरना है अपनी कुर्सी को कायम रखना है, वे अपने स्वार्थ मे फसे हुये हैं, अत सविधान की परवाह नहीं करते हैं। आर्यसमाज और वेद का पथ एक सत्य और त्याग का मार्ग है। इस पथ पर चलनेवाले लोग संस्कारी और सौभाग्यशाली हैं। आर्यसमाज ने जो पथ दिखाये थे उन्हे समाज अधिकाश अपना भी चुका है। जैसे कि भारतीय स्वतन्त्रता, अनिवार्य शिक्षा, नारी शिक्षा, दलितोद्धार, विधवा-विवाह, छुआछूत का त्याग आदि। यह सब आर्यसमाज की ही विजय है। लोकसभा मे जब कोई वेदमन्त्र के सत्यार्थ की बात उठती है तब महर्षि का वेदभाष्य ही प्रामाणिक माना जाता है। आज भी लाखो युवक और युवतिया आर्यसमाज के कार्यक्रम मे सम्मिलित होते जारहे हैं। गुरुकुल, विद्यालय, कालेज, विश्वविद्यालय, आश्रम, आर्यवीर दल, प्रतिनिधि सभा, प्रादेशिक सभा, सार्वदेशिक सभा कितने ही सस्थान आर्यसमाज के माध्यम से चलाये जारहे हैं। आप जैसे नवयुवको को आर्यसमाज मे उत्साह और योग्यतापूर्वक कार्य करना चाहिये।

—**सुदर्शनदेव आचार्य**, वेदप्रचाराधिष्ठाता

प्रोग्राम के अन्त में संयोजक ने आज के सत्सग में ऋषिलगर की व्यवस्था करने पर मास्टर दीपचन्द आर्य का विशेष धन्यवाद किया। शान्तिपाठ के बाद सभी ने भोजन किया। अगले सत्सग ६ मई २००१ के लिये आमन्त्रित किया।

—**रविन्द्रकुमार आर्य**, कार्यालय मत्री दयानन्दमठ रोहतक

विशेष सूचना

सभी आर्यसज्जनों एव बहिनों को सूचित किया जाता है कि ११, १२, १३ अप्रैल २००१ को गुरुकुल कांगडी हरद्वार का १०१वा स्थापना दिवस मनाया जारहा है जो भी आर्यजन इस कार्यक्रम में सम्मिलित होकर स्वामी श्रद्धानन्द की तप.स्थली देखना चाहता है वे अपना नाम व पता दयानन्दमठ रोहतक मे आचार्य सन्तराम जी के पास लिखवा दे। बस का किराया आने जाने का २००/- दो सौ रु० प्रति सवारी जमा कराना होगा। ९ अप्रैल सायकाल तक यह कार्य सम्पन्न होना है। इच्छुक महानुभाव शीघ्र सम्पर्क करें ताकि व्यवस्था की जा सके। बस की व्यवस्था पचास सवारियों से कम नहीं हो सकेगी।

निवेदक **सन्तराम आर्य**, दयानन्दमठ, रोहतक

आर्य-संसार

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मुम्बई के अवसर पर ऋषि दयानन्द विषयक महत्त्वपूर्ण शोध कृति—दयानन्द सरस्वती : पश्यिचम की एक दृष्टि में का भव्य प्रकाशन

जोधपुर—आर्य जगत् को यह जानकर हर्ष होगा कि आर्यसमाज की १२५वीं स्थापना तिथि पर आर्यसमाज के मूर्धन्य लेखक, गवेषक तथा विद्वान् डा भवानीलाल भारतीय द्वारा सकलित और सम्पादित स्वामी दयानन्द सरस्वती : पश्चिम की दृष्टि मे शीर्षक ग्रन्थ का भव्य प्रकाशन किया जारहा है। इसमे ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, फ्रास, जर्मनी, नार्वे, मैक्सिको, कनाडा, आस्ट्रेलिया आदि पाश्चात्य देशो के ६३ विद्वानो, लेखको, पत्रकारो, शोधार्थियो, प्राध्यापकों, राजनेताओ तथा सामाजिक कार्यकर्ताओं के दयानन्द विषयक उद्गारों तथा उनकी सम्मतियो को सकलित किया गया है। अग्रिम ग्राहक १०० रुपये निम्न पते पर भेजकर अपनी प्रति आरक्षित करालें। उनसे डाक व्यय नहीं लिया जायेगा।

—डा० भवानीलाल भारतीय, ८/४२३ नन्दनवन, जोधपुर दूरभाष ०२९१-७५५८८३

निवेदक राहुल माथुर प्रचार सचिव दयानन्द अध्ययन सस्थान जोधपुर

नामकरण-संस्कार सम्पन्न

दिनाक २५ मार्च २००१ को चौ० मित्रसेन सिन्धु के पुत्र श्री व्रतपाल सिन्धु की पुत्री का नामकरण सस्कार वैदिक विद्वान् डा० सुदर्शनदेव आचार्य के ब्रह्मत्व मे सिन्धु महालय की पवित्र यज्ञशाला में वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। बालिका का 'सुरुचि' नाम रखा गया। सस्कार के उपरान्त अभ्यागतजनों के लिये उत्तम प्रीतिभोज का आयोजन किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा को एक शाल तथा ५००/- रु० की राशि से सम्मानित किया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को ५००/- रु० दिया गया। **—डा० सुधीरकुमार आचार्य**

आर्यसमाज मल्हारगंज इंदौर में धर्मवीर लेखराम बलिदान दिवस एवं होलिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज मल्हारगज इन्दौर (म०प्र०) में धर्मवीर प० लेखराम जी का बलिदान दिवस तथा होलिकोत्सव (वासन्ती नवसस्येटि पर्व) क्रमश दिनाक ६ मार्च तथा ९ मार्च २००१ को भव्यता के साथ मनाया गया। धर्मवीर प० लेखराम के व्यक्तित्व एव कृतित्व पर आचार्य डॉ० संजयदेव ने ओजस्वी व्याख्यान दिया।

—दिनेश शर्मा 'कमल' उपमत्री आर्यसमाज मल्हारगज, इन्दौर (म प्र)

आर्यसमाज रमेशनगर (पंजीकृत)

महर्षि दयानन्द मार्ग, रमेशनगर, नई दिल्ली-११००१५

रविवार दिनाक १८-३-२००१ को आर्यसमाज रमेशनगर जानेवाले मार्ग का नामकरण महर्षि दयानन्द मार्ग किया गया। क्षेत्रीय सासद श्री मदनलाल खुराना ने मार्ग का उद्घाटन किया। इस पावन अवसर पर श्रीमती उषा मेहता (निगम पार्षद), श्री वेदव्रत शर्मा (मत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा) आदि ने उनके द्वारा किये जारहे पावन कार्यो हेतु बधाई दी। **—सत्यपाल नारंग,** मंत्री

जन्मदिवस समारोह सम्पन्न

आज दिनांक २१-३-२००१ को योगस्थली आश्रम महेन्द्रगढ मे ब्रह्मचारी कपिलदेव के जन्मदिवस समारोह के अवसर पर "बृहद्यज्ञ महन्त आनन्दस्वरूपदास सन्त कबीरमठ सोहला एव प्रधान आर्यवीर दल महेन्द्रगढ की अध्यक्षता में किया गया।

यज्ञ का कार्य मास्टर वेदप्रकाश आर्य मण्डलपति आर्यवीर दल महेन्द्रगढ ने कराया। यजमान का स्थान ब्रह्मचारी कपिलदेव आर्य ने ग्रहण किया। उपस्थित सभी महानुभावो ने उनके दीर्घजीवन तथा विद्वान् एव बल-बुद्धि और विद्या से परिपूर्ण होने की कामना की गई। कपिलदेव के माता-पिता ने रुपये ११००/- की राशि आर्यवीर दल महेन्द्रगढ को तथा योगस्थली आश्रम को और ५०/- रु० आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को भेट दिया।

—मा० हनुमानप्रसाद आर्य, महेन्द्रगढ

शान्तियज्ञ सम्पन्न

श्री मा० दयाचन्द हवासिह रणवीरसिह व श्री जोरावरसिह जी ने अपने पिता स्वर्गीय श्रीरामसिह (पहलवान) जी के उपलक्ष्य मे श्री सुखदेव शास्त्री द्वारा यज्ञ करवाया। परमात्मा दिवगत आत्मा को सद्गति तथा उन के परिवार को इस वियोग को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। इस अवसर पर निम्न प्रकार सस्थाओ को दान दिया गया।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्द मठ रोहतक १०१/-रु०, दयानन्दमठ रोहतक १०१/- रु०, चौ० लखीराम आर्य अनाथालय १०१/- रु०, वृद्ध आश्रम रोहतक १०१/- रु०, कोढी आश्रम रोहतक १०१/- रु०। कुल ५०५ रु० दान दिया गया।

—जयपालसिंह आर्य, सभा भजनोपदेशक

तपोवन में ग्रीष्मोत्सव १८ अप्रैल से २२ अप्रैल तक

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, देहरादून का ग्रीष्मोत्सव बुधवार १८ अप्रैल से रविवार २२ अप्रैल तक आयोजित किया जारहा है। समावेद-पारायण यज्ञ तथा योग साधना शिविर श्री स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी के निर्देशन मे चलेंगे।

आचार्य सत्यव्रत राजेश जी के वेदप्रवचन होंगे। प्रसिद्ध शास्त्रीय गायक श्री सुचित नारग तथा अन्य गायको द्वारा भक्तिसगीत प्रस्तुत किया जायेगा।

—देवदत्त बाली, मत्री, वैदिक साधन आश्रम, देहरादून

आर्यसमाज आर्यनगर का वर्ष २०००-०१ का लेखा-जोखा व 'आर्य पुस्तकालय एवं अतिथि कक्ष' का उद्घाटन समारोह सम्पन्न

दिनाक १०-३-२००१ होली (फाग) के पावन पर्व पर हर वर्ष की भाति आर्यसमाज मदिर आर्यनगर के प्रागण मे वर्ष २०००-०१ का लेखा-जोखा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत प्रात ९-०० बजे गुरुकुल आर्यनगर से पधारे आचार्य प० रामस्वरूप जी शास्त्री व सहायक मुख्याधिष्ठाता श्री मानसिह जी पाठक ने पर्व की विशेष आहुतियो से यज्ञ करवाकर की। श्री आत्माराम जी आर्य सपत्नीक यजमान बने। यज्ञ सम्पन्न होने के बाद विधिवत् नवनिर्मित 'आर्य पुस्तकालय एव अतिथि कक्ष' का उद्घाटन मान्यवर प० रामजीलाल जी आर्य (पूर्व सासद) के पावन करकमलो द्वारा सम्पन्न हुआ। उल्लेखनीय है कि आर्यसमाज मन्दिर परिसर मे इसका शिलान्यास पिछले वर्ष ही फाग के दिन समाप्त हुआ था तथा इस कार्य पर लगभग १ ३५ लाख रुपये व्यय हुआ है।

आर्यसमाज आर्यनगर की ओर से ११०० रु० वेदप्रचार मण्डल, जिला हिसार को दान दिया गया। आर्यसमाज के पदाधिकारियों के चुनाव की बात भी रखी गई। सभी उपस्थित आर्यजनों से सर्वसम्मति से वर्तमान कार्यकारिणी मे विश्वास व्यक्त करते हुए एकमत से इन्हीं पदाधिकारियों को आगामी वर्ष के लिए कार्य करने का अधिकार दिया।

—सीताराम आर्य, सह-मत्री आर्यसमाज आर्यनगर जिला हिसार (हरयाणा)

शुद्धि और विवाह-संस्कार सम्पन्न

आर्यसमाज रेलवे रोड, यमुनानगर मे दिनाक १८-३-२००१ को एक ईसाई युवती अरुणा स्कार्ट को शुद्धि सस्कार करके उसका नाम कु० अरुणा देवी करके श्री विद्यारत्न के साथ विवाह सस्कार सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्यसमाज मे काफी सख्या में लोग उपस्थित थे। सस्कार के पश्चात् श्री विद्यारत्न ने आर्यसमाज को ११००/- सौ रुपये दान दिया। उपर्युक्त सस्कार आर्यसमाज के पुरोहित श्री प० अशोक शास्त्री जी ने सम्पन्न कराया। **—कृष्णचन्द्र आर्य,** प्रधान आर्यसमाज रेवले रोड, यमुनानगर (हरयाणा)

सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक से सम्बन्धित सभी आर्यसमाजो को सूचित किया जाता है कि अन्तरग सभा दिनाक १३-१०-२००० के प्रस्तावानुसार समानान्तर (बोगस) सभा के अन्तरग सदस्य होने के कारण महावीरप्रसाद मगला सुपुत्र श्री कन्हैयालाल, आर्यसमाज सैक्टर-२३ फरीदाबाद का सभा की प्रतिनिधि (मतदाता) सूची से नाम काट दिया गया था। श्री महावीरप्रसाद मगला ने सभा को दो बार टेलीफोन द्वारा सूचना दी है घर से कई दिन बाहर रहने के कारण मुझे आपका नोटिस नहीं मिला। मेरा बोगस सभा से कोई सम्बन्ध नहीं है। अत सभा की मतदाता सूची मे मेरा पुन नाम अकित किया जाए। सभाप्रधान स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती के नेतृत्व मे मेरी पूर्ण आस्था है।

अन्तरग सभा के दिनाक १८-३-२००१ के निर्णयानुसार सभा की मतदाता सूची मे श्री महावीरप्रसाद मगला का नाम पुन अकित किया जाता है। **—सभामंत्री**

शोक समाचार

ओ३म्—वायुरनिलममृतमथेद भस्मान्त शरीरम्।
ओ क्रतो स्मर क्लिबे स्मर कृत स्मर।। (वेद)

अति खेद के साथ सूचित किया जाता है कि आर्यजगत् के कर्मठ सेवी, यज्ञप्रेमी, दानशील एव अनेक आर्य सस्था/गुरुकुलो के सहयोगी आर्यश्री रणधीरसिह जी राठी पूर्व मुख्याध्यापक की धर्मपरायणा धर्मपत्नी श्रीमती फूलवती देवी का ७२ वर्ष की आयु मे दिनाक २८-३-२००१ को आकस्मिक निधन होगया। वे अपने परिवार मे चार पुत्र तथा एक पुत्री के पौत्रो व पौत्रियों सहित भरापूरा परिवार छोडकर गई हैं।

इस दु खद अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दिवगत आत्मा की सद्गति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करती है तथा शोकाकुल परिवार के प्रति हार्दिक सवेदना प्रकट करती है। शान्तियज्ञ का कार्यक्रम उनके निवास-स्थान (२३६ ए-१, माडल टाउन, रोहतक) पर ८ अप्रैल २००१ रविवार में प्रात ९ बजे सम्पन्न होगा।

—प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामत्री

ब्रह्मचर्य : सुखी जीवन का रहस्य

❑ स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती, योगस्थली आश्रम महेन्द्रगढ़

विद्यार्थी जीवन में ब्रह्मचर्य नष्ट करके जो लोग गृहस्थ में प्रवेश करते हैं, उनका जीवन अत्यन्त दु खपूर्ण होता है। शीघ्र पतन और स्नायुमण्डल की निर्बलता से स्त्री को तृप्त न कर सकने के कारण स्त्री के सामने आने मे ऐसे लोगो को अति सकोच और लज्जा का अनुभव होता है। स्त्री को हर समय उदास देखकर वह कमजोर मनुष्य या तो आत्महत्या की अथवा कहीं बाहर निकलने की बात सोचने लगता है।

ऐसी दशा मे कोई दवा नहीं जो उसको ब्रह्मचारी के समान शरीर और मन से स्वस्थ बनादे। इस प्रकार की निराशा और दु खो से रक्षा करके गृहस्थी का पूर्ण आनन्द प्राप्त कराने के लिए विद्यार्थी को कठोर ब्रह्मचर्य पालना करने की प्रेरणा देते हैं, कठोर ब्रह्मचर्य केवल विद्यार्थियो के लिए और नियमित स्त्रीसभोग गृहस्थो के लिए स्वास्थ्यजनक है। इसलिए हम दो प्रकार के ब्रह्मचर्य का निर्देश करते हैं।

ब्रह्मचारी अध्ययन काल मे ब्रह्मचर्य का कठोरता से पालन नहीं करता तो गृहस्थ में दु ख ही दु ख भोगता है। इसलिए हमे उचित है कि ब्रह्मचर्य का नाश न करे।

आजकल विद्यार्थी उचित अवस्था होने तक भी वीर्यरक्षा का महत्त्व नहीं जानते। इसका बुरा फल हमारे सामने है। जब तक विद्यार्थी को वीर्यसम्बन्धी उचित शिक्षा प्राप्त नहीं होती तब तक समाज अथवा व्यक्ति स्वस्थ नही बनाया जासकता। बडी अडचन यह है कि गुरु, माता-पिता आदि जिनको वीर्यसम्बन्धी उचित शिक्षा देने का अधिकार है, वे लोग छोटे विद्यार्थियो के सामने वीर्य शब्द का उच्चारण करने मे भी लज्जा का अनुभव करते हैं, जैसे वे कोई पाप कर रहे हो। फिर विद्यार्थी को वीर्यरक्षा कौन सिखाएगा। वीर्यरक्षा मे उनकी रुचि कैसे होगी ? वे स्वस्थ कैसे बनेगे ? उन्हे दोष क्यो दिया जासकेगा ? प्रकृति के नियम तोडने से उसका दण्ड बिमारी अथवा शीघ्र मौत के रूप मे भोगना ही पडेगा।

इन आपत्तियो से बचने के लिए वीर्यसम्बन्धी ज्ञान छात्र के अभिभावको को कराना चाहिए। वीर्य सब धातुओं का सार है, रक्त से छ गुणा अधिक महत्त्व रखता है, बीस-तीस बूद रक्त गिरने से हम घबरा जाते हैं, फिर वीर्य तो रक्त से बहुत महत्त्वपूर्ण है। दूध में घी और ईख मे रस की तरह सारे शरीर मे व्याप्त रहता है। मैथुन के समय वह धातुओ से छनकर बाहर आता है। उत्तरोत्तर एक-एक धातु के बनने मे पहली धातु का नियत समय तक परिपाक होता है, वीर्य सातवीं धातु हैं। पहली छ धातुओ की क्रमिक परिपाक से उनकी उत्पत्ति होती है। वीर्य शरीर मे धातुओ के सतरूप मे बहुत थोडासा है। उसको व्यर्थ खोना भारी गलती है। व्यर्थ खोने से अनेक प्रकार की व्याधि, अल्पायु, क्षीणकाय अथवा मन्द बुद्धि से ग्रस्त होता है। (क्रमश)

सभा से सम्बन्धित आर्यसमाजों के अधिकारी महानुभावों की सेवा में निवेदन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का त्रिवार्षिक साधारण अधिवेशन ९ अगस्त २००१ से पूर्व होना है। इसलिए हरयाणा के सभी आर्यसमाजो के अधिकारियो से निवेदन है कि आगामी ३ वर्ष के लिए अपने आर्यसमाज के प्रतिनिधि आर्यसमाज के नियम-उपनियमो के अनुसार चुनकर प्रतिनिधि फार्म भरकर दिनाक ३०-०४-२००१ तक सभा कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक मे भेज देवे, जिससे आपके प्रतिनिधि समय पर स्वीकार हो सके। सभी आर्यसमाजो को प्रतिनिधि फार्म डाक द्वारा भेज दिए गए हैं। जिन्हे फार्म न मिले हो सभा कार्यालय को पत्र लिखकर और मगवाले।

१ नए प्रतिनिधियो की स्वीकृति के लिए सभा से सम्बन्धित प्रत्येक आर्यसमाज को पिछले तीन वर्षो का वेदप्रचार तथा दशाश की राशि के साथ-साथ 'सर्वहितकारी' का शुल्क ६० रुपये वार्षिक भेजना अनिवार्य है। वर्ष ९८-९९, ९९-२०००, २०००-२००१ का शुल्क जमा न होने पर प्रतिनिधि स्वीकृत नहीं होंगे।

२ वही फार्म स्वीकार किये जायेगे जो आर्यसमाज के नियम-उपनियम तथा सभा के विधान के अनुसार भरकर भेजे जायेगे।

अत जिन आर्यसमाजों ने वर्ष ९८-९९, ९९-२००० तथा २०००-२००१ अर्थात् मार्च २००१ तक का तीन वर्षो का वेदप्रचार, दशाश तथा सर्वहितकारी शुल्क नहीं भेजा है उसे शीघ्र सभा प्रचारको अथवा मनीआर्डर द्वारा सभा को भेजने का कष्ट करे।

आपसे अनुरोध है कि आप इस सम्बन्ध मे यथाशीघ्र कार्यवाही कर अपना तथा अपने आर्यसमाज का पूर्ण सहयोग प्रदान करे। —**प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास**, सभामत्री

विशेष— वैसे तो वर्तमान प्रतिनिधियो का कार्यकाल मार्च २००१ को समाप्त हो रहा है, किन्तु नए प्रतिनिधि चुने जाने तक उनका प्रतिनिधित्व बना रहेगा।

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

क्रमाक दिनांक ३०-३-२००१

सेवा मे—

प्रधान एवं मन्त्री,

जिला वेदप्रचार मंडल, समस्त हरयाणा।

विषय : हरयाणा के प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में वेदप्रचार मंडल संयोजक नियुक्त करने बारे।

महोदय !

सादर नमस्ते।

जैसा कि आपको विदित है दिनाक १८ मार्च २००१ को सम्पन्न हुई आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की साधारण सभा की बैठक मे सर्वसम्मति से यह निश्चय हुआ है कि वेदप्रचार के कार्य को गति देने के लिए हरयाणा के समस्त ९० विधानसभा क्षेत्रो मे जिला वेदप्रचार मडल के अन्तर्गत प्रत्येक क्षेत्र मे पृथक्-पृथक् वेदप्रचार मडलो का तत्काल गठन कर सयोजक नियुक्त किए जावें।

अत आप तत्काल अपने जिला वेदप्रचार मडल की बैठक बुलाकर अपने जिले के सभी विधानसभा क्षेत्रो मे संयोजक का चयन कर तथा क्षेत्र के अनुसार कार्यकारिणी का गठन कर सयोजक का नाम अविलम्ब सभा कार्यालय मे भेजने का कष्ट करे।

२-प्रथम चरण मे दक्षिणी हरयाणा के सभी १० जिलो मे स्वामी इन्द्रवेश जी सभा कार्यकर्ता प्रधान के नेतृत्व मे नहरी पानी विवाद के समाधान के लिए १० मई २००१ से २४ मई २००१ तक १५ दिन की जनजागरण यात्रा निकाली जावेगी।

३-जनजागरण यात्रा से पूर्व प्रथम चरण मे १० जिलो में स्वामी इन्द्रवेश जी एव अन्य सभा अधिकारी निर्धारित तिथियो मे जिला वेदप्रचार मडल एव विधानसभा क्षेत्र वेदप्रचार मडलो की सयुक्त बैठको को सम्बोधित करेगे।

जिला वेदप्रचार मडलो की बैठक एव १० मई से प्रारम्भ होनेवाली १५ दिन की जनजागरण यात्रा का विस्तृत कार्यक्रम बाद मे डाक द्वारा एव सर्वहितकारी के माध्यम से सूचित किया जावेगा।

इस पत्र को अत्यावश्यक समझ तत्काल उचित कार्यवाही करके सभा को सूचित करे।

सधन्यवाद। भवदीय

प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास

सभामत्री

'गुजरात भूकम्प पीड़ित सहायता निधि' में प्राप्त दानराशि

(गताक से आगे)

६९	आर्यसमाज रोहणा जिला सोनीपत	५,१००-००
७०	मा० आजाद पुरुषार्थी ग्राम खुरमपुर जिला सोनीपत	१००-००
७१	वैद्य अभयदेव शर्मा ग्राम धतीर त० पलवल, जिला फरीदाबाद	१०१-००
		योग=५,३०१-००
		गताक योग=१,२२,२८९-००
		सर्वयोग=१,२७,५९०-००

(क्रमश:)

नोट—दानदाताओ से निवेदन है कि वह अपनी सहयोग राशि का बैंक ड्राफ्ट/चैक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के नाम भेजे। प्रधानमंत्री अथवा मुख्यमंत्री वेलफेयर फण्ड का सभा मे न भेजे। **—सभामंत्री**

शोक समाचार

दिनांक २५-३-२००१ को आर्यसमाज कालावाली में एक शोकसभा का आयोजन किया गया। हमारे आदरणीय श्री गुरुदत्त जी गिल्होत्रा का दिनाक २३-३-२००१ को लम्बी बीमारी के बाद निधन होगया। उनकी आयु लगभग ८० वर्ष थी।

उन्होने अपने पूरे जीवनकाल मे आर्यसमाज की सेवा की और दयानन्द कन्या महाविद्यालय का काम पूरी निष्ठा से मैनेजर के पद पर रहते हुए करते रहे।

इनकी सेवाए आर्यसमाज कालावाली को सदैव स्मरणीय रहेंगी।

—ओम्प्रकाश आर्य, मत्री आर्यसमाज कालावाली

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ७६८७४, ५७७७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ७७७२२) से प्रकाशित।

पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। पत्र के प्रत्येक प्रकार के विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०२
पंजीकरणसंख्या टैक/एच.आर./49/रोहतक/99 ☎ ०१२६२-७७७२२

प्रधानसम्पादक : प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक :- डा० सुदर्शनदेव आचार्य

वर्ष २८ अंक २० १४ अप्रैल, २००१ वार्षिक शुल्क ६०) आजीवन शुल्क ६००) विदेश में १० पौंड एक प्रति १-२५

हरयाणा की समस्त आर्यसमाजों और आर्यशिक्षण संस्थाओं की सेवा में आवश्यक निर्देश

मान्यवर,

जैसा कि आपको पता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की १८-३-२००१ की साधारण सभा में सभा प्रधान स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में सभा के अन्तर्गत हरयाणा राष्ट्रभाषा समिति का गठन किया गया था। साधारण सभा के निश्चयानुसार यह समिति विशेषकर हरयाणा राज्य मे और सामान्यत हरयाणा के बाहर भी राजभाषा और राष्ट्रभाषा के रूप मे हिन्दी के प्रचार-प्रसार मे आने वाली वर्तमान बाधाओ को दूर करने के लिए योजनाबद्ध तरीके से काम करेगी।

इस समिति की पहली बैठक दिनांक ८-४-२००१ को सभा कार्यालय दयानन्दमठ, रोहतक मे सभा प्रधान एव समिति के संरक्षक स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई। विचार-विमर्श के बाद बैठक में निम्नलिखित पचसूत्री कार्यक्रम पर विचार किया गया–

१ हरयाणा प्रदेश से प्रथम कक्षा से अनिवार्य अग्रेजी को समाप्त कराना।

२ हरयाणा सरकार के कामकाज में शत-प्रतिशत राजभाषा हिन्दी का व्यवहार सुनिश्चित कराना।

३ राज्य के चारो विश्वविद्यालयो एव हरयाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड से अग्रेजी के गैरकानूनी वर्चस्व को समाप्त कराना।

४. हरयाणा उच्च न्यायालय की अलग स्थापना कराने तथा उच्च न्यायालय मे हिन्दी में काम की अनुमति दिलाना।

५ सैनिक अफसरो की भर्ती परीक्षाओं एन डी ए तथा सी डी एस से अग्रेजी की अनिवार्यता को समाप्त कराना।

उपर्युक्त पचसूत्री कार्यक्रम की सफलता के लिए जनजागरण और आन्दोलन की रूपरेखा बनाई जाए।

१ इस समय हरयाणा और पजाब का सम्मिलित उच्च न्यायालय चण्डीगढ में स्थित है और उच्च न्यायालय का सारा कामकाज केवल अग्रेजी में हो रहा है। उच्च न्यायालय का काम हिन्दी मे भी कराने के लिए हरयाणा का अलग उच्च न्यायालय होना आवश्यक है। इसलिए हरयाणा सरकार और केन्द्र सरकार पर दबाव बनाया जाये कि हरयाणा के उच्च न्यायालय की अलग स्थापना करके वहा का कामकाज हिन्दी मे भी कराने की अनुमति दी जाए।

२ जन-आन्दोलन के रूप में प्रत्येक जिले और विधानसभा क्षेत्रो मे गोष्ठिया और सम्मेलन इत्यादि कराने का निश्चय किया गया। इस क्रम मे पहला जिला राष्ट्रभाषा सम्मेलन आगामी ६-५-२००१ को प्रात काल दस बजे दयानन्दमठ, रोहतक मे आयोजित करने का निश्चय किया गया। इस सम्मेलन के संयोजक श्री महावीर शास्त्री होंगे।

अन्त मे बैठक के अध्यक्ष स्वामी ओमानन्द जी ने आह्वान किया कि प्रदेश की समस्त आर्यसमाजे और आर्य शिक्षण सस्थाए एकजुट होकर इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए आगे आएं ताकि अग्रेजी के वर्चस्व के कारण हरयाणा के नौजवानो पर हो रहे अन्याय को दूर किया जा सके।

आपकी सेवा मे निवेदन है कि–

१ निर्णय सख्या १ के अनुसार हरयाणा के मुख्यमन्त्री श्री ओमप्रकाश चौटाला, राज्यपाल बाबू परमानन्द तथा शिक्षामन्त्री श्री बहादुरसिंह को पत्रो और प्रस्तावों द्वारा इन मांगों को पूरा करने के लिए अपनी समाज और शिक्षा संस्था की तरफ से निवेदन करे और भेजे गए पत्र की प्रतिलिपि सभा को भी भेजें।

२ निर्णय सख्या २ के लिए केन्द्र सरकार के विधिमंत्री श्री अरुण जेटली, प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी तथा हरयाणा के राज्यपाल बाबू परमानन्द को पत्र लिखे जाए और पत्र की प्रतिलिपि सभा को भेजी जाए।

३ निर्णय संख्या ३ के अनुपालन के लिए अपने-अपने जिले में राष्ट्रभाषा सम्मेलन आयोजित करने का निर्णय करके सभा को उसकी सूचना भेजें ताकि आपके यहा सम्मेलन रखने की स्वीकृति दी जा सके।

४ हरयाणा या केन्द्र सरकार की तरफ से आप या आपके सदस्यो के नाम यदि कोई सरकारी पत्र अग्रेंजी में आता है तो नियमो के अनुसार वह गैर कानूनी है। ऐसे पत्रो के विरुद्ध सम्बन्धित अधिकारी को शिकायती पत्र लिखे और उसकी प्रतिलिपि मुख्यमन्त्री तथा सभा को भेजें।

आशा है उपर्युक्त निर्देशो पर आप तत्काल कार्यवाही करके सभा को सूचित करेगे।

धन्यवाद सहित।

भवदीय

श्यामलाल
सयोजक राष्ट्रभाषा समिति

प्रो० सत्यवीर शास्त्री, डालावास
मन्त्री–आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

किसानों के हितैषी चौ० देवीलाल नहीं रहे

स जातो येन जातेन याति वश समुन्नितम्।
परिवर्तिनि ससारे मृत को वा न जायते।।

६ मार्च की रात्रि के समाचारो मे महान् स्वतन्त्रता सेनानी, जननायक, किसानो एव मजदूरो के हितैषी, भारत के पूर्व उपप्रधानमंत्री हरयाणा के पूर्व मुख्यमंत्री, तथा वर्तमान राज्सभा सासद चौ० देवीलाल जी के आकस्मिक निधन का समाचार सुनकर सम्पूर्ण आर्यजगत् निस्तब्ध रह गया।

७ मार्च को दिवगत नेता के सम्मान मे हरयाणा के सभी सरकारी कार्यालय शिक्षण सस्थाए तथा बैंको में शोकावकाश के साथ सात दिन तक राजकीय शोक मनाने की घोषणा की गई।

आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा के कार्यालय मे उपस्थित सभा भजनोपदेशको एव सभा कार्यालय के कर्मचारियो की सयुक्त सभा मे दिवगत नेता के प्रति हार्दिक शोक एव सवेदना प्रकट की गई तथा दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धाजलि अर्पित करने के बाद सभा कार्यालय मे शोकावकाश घोषित कर दिया गया।

ऐसे महान् जननेता एव जनकल्याणकारी योजनाओं को लागू करनेवाले धरतीपुत्र के निधन पर हरयाणा का सम्पूर्ण आर्यजगत् दिवगत आत्मा के प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धाजलि अर्पित करता है।

गुरुकुल के ब्रह्मचारियो के साथ हरयाणा आर्यप्रतिनिधिसभा रोहतक एव सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधिसभा दिल्ली के प्रधान स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, पूर्व रक्षा राज्यमंत्री प्रो० शेरसिह तथा सभा के कार्यकर्त्ता प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी ने उनकी अन्त्येष्टि संस्कार में किसान घाट दिल्ली जाकर गाय का घी १५ किलो तथा एक बोरी सामग्री के साथ पूरे आर्यजगत् की ओर से दिवगत आत्मा के प्रति श्रद्धाजलि प्रदान की।

ईश्वर से प्रार्थना है कि वह दिवगत महापुरुष के परिवार को इस असीम शोक को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

अपने यश शरीर से ताऊ देवीलाल आज भी जीवित हैं।

शोकाकुल
प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामंत्री

आर्यसिद्धान्त-शिक्षा

इन्द्रसिह आर्य, आरजैड-६०, ब्लाक-ओ, नया रोशनपुरा, नजफगढ़, दिल्ली-४३

(गताक से आगे)

शिल्पविद्या और उसके अधिकारी – २

जब-जब हम आर्यों के सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य का करते हैं अध्ययन।
उस समय वैदिक धर्म से अन्य कोई मत नहीं था यह जानकर मन होता है प्रसन्न।।
सभी भारतीय सम्पन्न थे, कोई अकर्मणीय ही था निर्धन।
क्यो न हो ! स्त्री-पुरुष ज्ञान-विज्ञान, कला-कौशल से थे सम्पन्न।।
यह तभी तक सभव था, आर्यलोगो की वेदों की ओर प्रवृत्ति थी मेरे भाई।
महाभारत से इस देश को ऐसा धक्का लगा कि इसकी ऐश्वर्यता पुन लौटकर नहीं आई।।

वाल्मीकि ऋषि हमे यथार्थ से परिचित कराते हैं।
कि विद्या के भूषण आर्य राम ललित कला के ज्ञाता हैं।।
अनुज भ्राता लक्ष्मण पचवटी में पर्णशाला (निवास) बनाते हैं। अपने अनुरूप पुरुषार्थ और सामर्थ्य को देख राम, लक्ष्मण को गले लगाते हैं।
यह तभी सभव था गुरुकुलों में पाठ्य-पुस्तकों के साथ-साथ तकनीकी शिक्षा भी जाती थी सिखलाई।
महाभारत से इस देश को ऐसा धक्का लगा कि इसकी सम्पन्नता पुन लौटकर नहीं आई।। (२)

इन्द्रपुत्र अर्जुन महाभारत मे अद्वितीय दिखलाते हैं पराक्रम।
शस्त्रास्त्र के आविष्कारक उनके पिता हैं, यह कह सकते हैं हम निर्भ्रम।।
जगत् की सम्पूर्ण शिल्पादिविद्या मे पारगत वीरसेन पुत्र राजा नल व्यावहारिक ज्ञान मे उत्सुकता दिखलाते हैं।
और वसुपुत्र (उपरिचर) देखते-देखते स्वय निर्मित विमान मे बैठ अतरिक्ष में उड जाते हैं।।
यह तभी सम्भव था ब्राह्मण वेद विद्याओं को सिद्ध करने में तन, मन के साथ लगा देते थे गाढी कमायी।
महाभारत युद्ध से इस देश को ऐसा धक्का लगा कि इसकी समृद्धि पुन लौटकर नहीं आई।। (३)

प्राचीन काल मे ऋषि, मुनि लोग वेदमत्रो को लेकर उनकी किया करते थे मीमासा।
प्रयोगशाला मे नित्य अनुसधान कर पूर्ण किया करते थे राष्ट्र की आकाक्षा।।
वरुणास्त्र, आग्नेयास्त्र आदि उन्हे विदित थे क्योंकि पदार्थविद्या का था उन्हें पूर्ण ज्ञान।
उस काल मे एक साधारण गरीब के पास भी अपना होता था विमान।।
प्राचीन विज्ञान के समक्ष आधुनिक विज्ञान नगण्य है ये बाते ऋषि दयानन्द ने बतलाई।
महाभारत से इस देश को ऐसा धक्का लगा कि इसकी वैभवता पुन लौटकर नहीं आई।। (४)

वस्तुत वेद एक कलाविहीन पुरुष को पति बनने का नहीं देता अधिकार।
सत्यासत्य को जानने के लिये पढिए, सीमन्तोन्नयन सस्कार।।
कहने का अभिप्राय स्त्री का पति होवे वेद से व्युत्पन्न (ब्रह्मा) विश्वकर्मा।
पत्नी भी सूर्या (ब्रह्मा) पद से विभूषित हो तो, दोनों की चहु और फैलेगी गरिमा।
यदि सतान भी माता-पिता के अनुरूप हो ज्ञानवान् क्रियावान्।
तो उस कुल से दरिद्रता और आलस्य की निष्क्रिय होजाती है कमान।।
यथार्थ मे अध्ययनाध्यापन के बाद ही मनुष्य की क्रियाजन्य पदार्थों के बनाने मे होती है प्रवृत्ति।
यह सत्य है बिना हस्तक्रिया के ज्ञान का फल ही नहीं मिलता बल्कि नगण्य है ज्ञानी की शोभा एव कीर्ति।।
इन्द्रसिह आर्य ज्ञान, विज्ञान एक-दूसरे के पूरक एव इतने सापेक्ष हैं कि एक के न जाने बिना दूसरे की हालत है खसती।
ऋग्० से जानो, यजु० से करो, साम० से मन लगाओ और अथर्ववेद से सशयों की होजानी चाहिए निवृत्ति।।
यह तभी तक सम्भव था ब्राह्मण लोग यजनादि से अपनी जीविका चलाते थे प्रतिग्रह को मानते थे बुराई।
महाभारत से इस देश को ऐसा धक्का लगा कि इसकी आत्मनिर्भरता पुन लौटकर नहीं आई।। (५)

शंका समाधान – एक

दादी मा–बेटा मन्दिर चलने के लिए हो जाओ तैयार।
घर वापिस आकर पढ लेना अखबार।।
सुनो पुत्र ! माँ शेरावाली के जो भी मनुष्य श्रद्धा से करता दर्शन।
वह उसे मनवांछित फल देती है, सेवाभाव से होकर प्रसन्न।।

पौत्र–दादी मा ! यह तो सत्य है कि देखने, सुनने, बोलने, चलने में असमर्थ है तुम्हारी देवी।
फिर निराधार है जडमूर्ति के प्रति यह कहना कि वह है करुणामयी, परोपकारिणी और स्नेही।।

दादी मां–बेटा तुम अभी बालक हो और ना-समझ और नादान।
सच्ची भावना से मानो तो पत्थर की मूरत भी है भगवान्।।

पौत्र–दादी मा ! क्या कोई अधा मनुष्य मूलनेत्र की भावना करके, ग्रहण कर लेता है ज्योति।
क्या कोई दरिद्र मनुष्य, धन की भावना करके प्राप्त कर लेता है हीरे मोती।।
यदि नहीं तो फिर जैसा कोई पदार्थ हो, उसे वैसा ही चाहिए आंकना।
क्योंकि मात्र गुड-गुड कहने से मुंह मीठा नहीं होता चाहे, हम लाख करे भावना।।
दादी मा सर्वव्यापक, अशरीर, अमूरत की हम नहीं बना सकते कोई मूर्ति।
शका निवारण के लिए पढिए आर्ष साहित्य एव वेदश्रुति।।
दादी मा भले बुरे का कर्त्ता जीव है, तो फल का प्रदाता है एकमात्र है ईश्वर।
समस्त जीवो में विद्यमान होने से कहलाता है अजन्मा अन्तर्यामी और अनश्वर।।
प्रत्युत हम किसी भी स्थान पर किसी स्त्री पुरुष की प्रतिमा लगा सकते हैं असशय।
लेकिन चित्र के स्थान पर उनके चरित्र की ही पूजा हो, यह अत्युत्तम कार्य होगा अति प्रशस्य।।

दादी मा–बेटा ! उस सनातन पुरुष (ईश्वर) का कैसे हो सकता है साक्षात्कार।

पौत्र–दादी मा ! जिस प्रकार युगपुरुष राम, कृष्ण ने अपनी आत्मा मे किया है साकार।।
ईश्वर नेत्रादि इन्द्रियों से देखने का विषय नहीं है, उसे पाने के लिए बुद्धिपूर्वक करना चाहिए विचार।
योगसाधना से योगी लोग उसका आश्रय लेके लाघ जाते हैं, मृत्युद्वार।।

दादी मा–बेटा तुम्हारी समस्त बाते तर्कसगत, अनुभूत और हैं सारगर्भित।
सिद्ध हुआ, भौतिक पदार्थो की पूजा, स्वार्थी लोगो ने निज स्वार्थ के लिए की है उपार्जिता।।
मुझे भी पूर्वजो की भांति वैदिक पथ चलाना चाहिए था, मैं अज्ञानतावश गई थी भूल।
अब मैं नित्य ऋषि के वेदभाष्य का अध्ययन करती शकाओ को करूगी निर्मूल।।
अचेतन की पूजा ईश्वरप्राप्ति की प्रथम सीढी नहीं है, बल्कि एक गहरी खाई है खबरदार।
इससे बचने का एकमात्र उपाय सत्यार्थ० पढे, जिसने भी पढा उसी का होगया है बेडापार।।

शंका समाधान – दो

शिष्य–अध्यापक जी सुना है कि यह पृथ्वी शेषनाग के फनो पर टिकी।

अध्यापक–शिष्य, बतलाइये कि नाग के जन्म से पूर्व यह किसके सहारे रही थी रुकी।।
सच्च तो यह है कि शेष नाम उसका है जो रह जाता है बाकी।
वह परमात्मा है, सृष्टि रचना से पूर्व और प्रलय के बाद रहता है एकाकी।।
आश्चर्य है वह सबको बनाता है लेकिन स्वय रचना में नहीं आता।
शरीर व सासारिक बधनो से परे, जीवो के कर्मों का द्रष्टा और है फलप्रदाता।।

दूसरा शिष्य–महोदय जी, यह पृथ्वी शेष-नाग के फनो पर नहीं बल्कि बैल (उक्षा) के सींगो पर होगी विराजमान।

अध्यापक–हे शिष्य ऐसा वही करते हैं जो कि सृष्टिविद्या से हैं अनजान।।
यथार्थ में 'उक्षा' नाम यहा सूर्य का है जो अपने गुरुत्वाकर्षण से पृथ्वी को कर रहा है धारण।
पृथ्वी अपनी कक्षा में इसके चारों ओर घूमती है, दिन रात बनने का भी है यही कारण।।
इन्द्रसिह आर्य यदि स्वय कोई वस्तु बनती तो हम क्यो बनाते खाने को भोजन रहने को मकान।
देखो नाना प्रकार की रचना बनानेवाले को सिद्ध करती है, वह शिल्पकार इस जग के कण-कण में है विद्यमान।। **(क्रमश:)**

वर्तमान शताब्दी में आर्यसमाज क्या करे

ले० डा० मनोहरलाल पूर्व अन्तरग सदस्य, आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने महान् उद्देश्यों को सम्मुख रखकर आर्यसमाज की स्थापना की थी। वे सारे भारत का समुचित कल्याण और सम्पूर्ण विश्व को आर्यसमाज के माध्यम से आर्य बनाना चाहते थे। आधुनिक समय मे इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए भी आर्यसमाज को वेदप्रचार कार्य को व्यवस्थित और सुसगठित रूप से करना चाहिये। यह तभी होसकता है कि हम आपसी प्रेमभाव को बढाकर अपने ही देश की आर्यसमाजो मे सत्सगो मे सम्मिलित हों और मिलजुलकर प्रचार कार्य करे और दूसरे विदेशों मे भी आर्यसमाजो की स्थापना करके प्रचार कार्य करें। अपने ही देश को ले तो पिछली एक शताब्दी में यदि हम शिक्षा सस्थाओ, गुरुकुलो, अनाथालयो और आर्यसमाजो के माध्यम से किये गये कार्यो पर विहगम दृष्टि डाले तो हम गौरव से कह सकते हैं कि हमारे पूर्वजो ने अपने त्याग बलिदान, निष्ठा और परिश्रम आदि गौरवपूर्ण कार्य करके आर्यसमाज का मुख उज्ज्वल किया है और महर्षि के उद्देश्यो को आगे बढाया है जिसके फलस्वरूप आज हम इतने उत्साह के साथ मुबई मे आर्यसमाज स्थापना की १२५वीं जयन्ती समारोह मना रहे हैं, पर हमे यह स्वीकार करना पडेगा कि ईसाई मत और इस्लाम के प्रचार में जो विस्तार और सुसगठित रूप है वह आर्यसमाज के प्रचार मे नहीं है। हम जब भारत के मुस्लिम शासनकाल पर दृष्टिपात करते हैं, तो हमे पता चलता है कि मुसलमानो ने अपने शासन बल से हमारे धर्म-स्थानो और तीर्थो पर मन्दिरो को गिराकर मस्जिदो को खडा किया, इसी प्रकार ईसाईमत भी फैला और ईसाई मिशनरीज मीठी छुरी से हिन्दू-धर्म को काटे जा रहे हैं। मैं केरल और कर्नाटक मे कई जगह पर गया हू, विशेष रूप से केरल मे तो मैंने देखा कि आर्यसमाज का प्रचार तो शून्य के बराबर है, जबकि छोटे-छोटे नगरो और ग्रामो मे गिरजे और मस्जिदे हैं। उन प्रान्तो के महानगरो मे भी आर्यसमाज कहीं नहीं देखे गए। इसी प्रकार यदि हिन्दू तीर्थो पर दृष्टिपात करे तो जम्मू से आगे कटडा जहा से वैष्णो देवी की यात्रा आरम्भ होती है, ऋषिकेश से ऊपरी सारी उत्तरकाशी मे केदारनाथ, बद्रीनारायण की यात्रा के सारे मार्ग पर, गौरीकुण्ड, रुद्रप्रयाग, श्रीनगर और जोशीमठ आदि पडावों पर मैंने कहीं भी आर्यसमाज मन्दिर नहीं देखा, जहां पर लाखो यात्री न केवल पौराणिक अपितु आर्यसमाजी भी भ्रमण के लिए जाते हैं। वहा पर भी आर्यसमाज का प्रचार शून्य के बराबर है। ऐसे धर्म स्थानो और तीर्थों पर आर्यसमाज को विशेष ध्यान देना चाहिये, तभी हम स्वामी दयानन्द के मिशन को पूरा कर सकते हैं। महर्षि ने अपने प्रचार के लिए इन तीर्थों को विशेष रूप से चुना था, हमारा इधर कोई ध्यान ही नहीं। इसके साथ ही देश के प्रत्येक प्रदेश में आर्यसमाज के प्रचार का ऐसा सगठन हो कि वहा के मूल निवासियों मे उनकी सभ्यता, सस्कृति और भाषा को आधार मानकर प्रचार के साधन जुटाये जायें।

जहा तक विदेशो मे आर्यसमाज और वैदिकधर्म के प्रचार की बात है, मैंने १९७६ के बाद अमरीका की कई यात्राये की हैं और आधे से ज्यादा अमरीका में घूमा हू, यह ठीक है कि वहा पर भारतीय सस्कृति का खूब प्रचार होरहा है परन्तु आर्यसमाज का प्रचार बहुत थोडा है सिवाय चन्द बडे नगरो को छोडकर कहीं भी आर्यसमाज नहीं। तकरीबन हर बडे शहर में गुरुद्वारे और मन्दिर बन रहे हैं। मैंने अपनी पहली यात्रा से वापिस आने के बाद १९७७ मे सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधिसभा को अपने कुछ सुझाव प्रचार हेतु भेजे थे पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। उस समय वहा भारतीय समुदाय के लोग थोड थे कुछ जगहो पर गुरुद्वारो और हरेकृष्ण मिशन के द्वारा प्रचार था पर अब तो हालात बहुत बदल गए है। मेरी एक यात्रा के दौरान FREMONT (U S A) के एक मन्दिर मे अपने प्रो० शेरसिह जी की धर्मपत्नी श्रीमती शोभा पण्डित जी से भेट हुई थी और प्रो० शेरसिह जी स्वय U S A की यात्रा करके आये हैं, इन्होने भी अनुभव किया होगा। इन हालात मे मूल भारतीयो मे तो अपनी सस्कृति के प्रति बहुत श्रद्धा है इसके अतिरिक्त वहा के मूलवासियो मे भी खासकर योगा के लिये आकर्षण बढ रहा है। इस समय अमरीका आर्यसमाज के प्रचार का बडा विस्तृत क्षेत्र है, योग के माध्यम से ही केवल आर्यसमाज का प्रचार हो सकता है। इसलिये मैं तो अपने आर्यनेताओं से यह प्रार्थना करूगा कि मुबई मे होनेवाले सम्मेलन में विदेशो मे आर्यसमाज के प्रचार के साधनों पर विचार किया जाये और इसके लिए पर्याप्त कदम उठाये जाये। हम भी इसमे योगदान देगे जैसाकि मेरी सुपुत्री श्रीमती प्रभा दुनेजा कैलिफोर्निया (U S A) के Bay Aria मे वैदिक साहित्य और वैदिक सस्कारो नामकरण, यज्ञोपवीत आदि के माध्यम से आर्यसमाज का प्रचार कार्य कर रही है, और उसकी सेवाओ से भी लाभ उठाया जा सकता है। प्रचार कार्य में साहित्य निर्माण का बहुत महत्त्व है, जिसके लिये आर्यसमाज के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ का हिन्दीभाषा के अतिरिक्त भारत की विभिन्न भाषाओ में अनुवाद कार्य सुचारु रूप से प्रान्तीय और केन्द्रीय सभा द्वारा करवाया जाये और छोटे-छोटे ट्रैक्टों और छोटी पुस्तकों के सस्ते सस्करणो के प्रकाशन की और अधिक ध्यान दिया जाये। "ससार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना" पर इस कलियुग मे इस उद्देश्य की पूर्ति तब तक नहीं हो सकती, जब तक नई पीढी को आगे न लाया जाये या यू कहिये कि आर्यसमाज का भविष्य ही नई पीढी पर आधारित है, परन्तु आज का युवक जिस स्थिति में से गुजर रहा है वह अत्यन्त निराशाजनक है एव दिशाशून्य भी है। आज युवावर्ग मे घुमक्कड प्रवृत्ति, निठल्लापन, उद्देश्यहीनता, अकर्मण्यता और नशीली दवाओं के प्रयोग की प्रवृत्ति बढ रही है, जो आकडे सामने आये हैं, वह चौंका देनेवाले हैं। हाई स्कूल से लेकर विश्वविद्यालयों तक जो पतनोन्मुखी प्रवृत्तिया जन्म लेरही हैं उन पर अकुश लगना चाहिये। अब आर्यसमाज को आगे बढकर भारत में ही नहीं विश्व के युवको के चरित्र निर्माण मे लग जाना चाहिये।

युवक राष्ट्र की अजेय शक्ति होते हैं। किसी भी राष्ट्र के बहुमुखी कार्यक्रम का क्रियान्वयन युवको द्वारा ही होता है। राष्ट्र का वास्तविक स्वरूप युवको मे ही दिखाई देता है, ऋषि दयानन्द का जीवनक्रम भारत ही नहीं विदेशों के युवावर्ग का भी मार्गदर्शन कर सकता है। सकीर्णताओ के लिये विद्रोह, "सत्यम" का ग्रहण और शिवम की प्राप्ति के लिये अनवरत सघर्ष युवक ही कर सकता है। युवको के जीवन निर्माण और मार्गदर्शन के लिये जिन गुरुकुलो और महाविद्यालयो की स्थापना हुई थी उनके द्वारा इस दिशा मे पर्याप्त काम हुआ है किन्तु आज विश्व के युवको को एक सूत्र मे बाधकर निर्माण और विश्व-कल्याण की ओर एक होजाने की आवश्यकता है। "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का उद्देश्य तभी पूर्ण हो सकेगा।

शिव संकल्प महायज्ञ सम्पन्न

आर्ययुवती समाज हरयाणा की सरक्षिका दयावन्ती आर्या को सम्मानित करते हुए शिक्षाधिकारी नत्थूराम।

हरयाणा उच्च विद्यालय मे नवीन सत्र के शुभारम्भ के अवसर पर शिव सकल्प महायज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्यअतिथि चौ० नत्थूराम जिला शिक्षा अधिकारी थे। महायज्ञ की अध्यक्षता श्री दयानन्द आर्य ने की। नगरपार्षद प्रतिभा सुमन विशिष्ट अतिथि थी। उक्त जानकारी देते हुए प्राचार्य जयवीर बूरा ने बताया कि सुप्रसिद्ध समाजसेविका माता दयावन्ती का अभिनन्दन किया तथा वार्षिक परीक्षा मे उत्तीर्ण विद्यार्थियो को पारितोषिक वितरित किए गए। इस पुनीत महायज्ञ मे विद्यार्थियो के अभिभावको को सम्बोधित करते हुए मुख्यअतिथि ने महर्षि दयानन्द को एक महान् सुधारक व युगप्रवर्तक बताते हुए उनके बताए हुए मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया। उत्तरी भारत के विख्यात भजनोपदेशक महाशय जयपालसिह बेधडक के क्रान्तिकारी भजनो का सभी ने आनन्द लिया। कार्य के अन्त मे त्यागमूर्ति जीवानन्द जी नैष्ठिक ने आशीर्वाद दिया।

संयोजक **ओमदर्शन आर्य**

सभी धर्मों तथा संस्कृतियों का आदिस्रोत : वेद

❑ प्रतापसिंह शास्त्री, आचार्य, एम.ए., पत्रकार, २५, गोल्डन विहार, हिसार

(गताक से आगे)

जब नचिकेता यम के यहा गया तब उपनिषद् कहती है कि तीन रात तक उसका मृत्यु से साक्षात्कार नहीं हुआ '**तिस्रो रात्री यदवात्सी गृहे**' मे कठोपनिषद् का आचार्य यम का अपने शिष्य नचिकेता को दिया गया उपदेश अन्य धर्मो मे क्या से क्या बन गया। पारसियो के धर्म 'जिदावस्ता' मे लिखा है कि मरने के तीसरी रात बाद आत्मा '**मिथ देवता**' के यहा पहुचता है। ईसाई लोग भी ईसा का मरने के तीसरे दिन बाद उठना मानते हैं। मुसलमानो मे मरने के तीसरे दिन बाद कब्र पर जाते हैं। हिंदुओ मे तीसरे दिन फूल चुने जाते हैं। आर्यसमाजी भी तीसरे या चौथे दिन भस्मी इकट्ठी करते हैं और तेहरामी तो शातियज्ञ अथवा श्रद्धाजलि के रूप मे मनाया जाना आम बात है। इन सबका आदिस्रोत भी वेद है। अब स्वर्ग और नरक विषय को देखिए वैदिक विचारधारा के अनुसार इस शरीर मे ही स्वर्ग है इस शरीर मे ही नरक है क्योकि सुख विशेष का नाम स्वर्ग और दु खविशेष का नाम नरक है। अथर्ववेद मे कहा है–'**अष्टचक्रा नवद्वारा देवाना पूरयोध्या। तस्या हिरण्य कोश स्वर्गो ज्योतिषावृत ।** (१०/२/३१) अर्थात् इस देह मे आठ चक्र हैं–कुडलिनी, मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूरक, अनाहत, विशुद्ध, आज्ञा तथा सहस्रार तथा नौ द्वार हैं–दो आख, दो कान, दो नासिका के छिद्र, एक मुख, एक गुदा द्वार–एक मूत्र द्वार।

इस शरीर को ही अयोध्या कहा है जिसका अर्थ है जिस पर कोई आक्रमण नहीं होसकता जिसे काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, घमड आदि शत्रु जीत नहीं सकते। इसमे सुवर्ण की प्रभा से युक्त एक खजाना है अर्थात् हृदय मे ब्रह्म की अनुभूति होती है उसी को इस शरीर की स्वर्गपुरी का हिरण्यकोश कहा गया है। इसके अतिरिक्त भौतिक दृष्टि से भी अथर्ववेद मे स्वर्ग का वर्णन है यथा मत्र देखिये - "**घृतह्रदा मधुकूला सुरोदका क्षीरेण पूर्णा उदकेन दध्ना दतास्त्वा धारा उपयतु सर्वा स्वर्गे लोके मधुमत्यन्वमाना उप त्वा तिष्ठन्तु पुष्करिणी समन्ता ।**" (अथर्व० ४/३४) इसमे साधनसम्पन्न समृद्ध गृहस्थ का वर्णन किया गया है। घी, दूध, दही शहद मक्खन की नदियो का बहना इनकी कमी न होना ही नदी बहना है। कुनबे मे नाना सम्बन्धो वाली स्त्रिया हो, बहिने, भावजे, दादी, चाची, ताई, माता आदि हो तो "**स्वर्गे लोके बहुस्त्रैणमेषाम्**" अर्थात् स्वर्गलोक मे (समृद्ध गृहस्थ मे) मनुष्य अनेक स्त्रियो के सम्पर्क मे आता है। कठोपनिषद् मे भी आचार्य यम अपने नचिकेता शिष्य की परीक्षा लेने के लिए जो स्वर्ग का प्रलोभन देता है उसका वर्णन इसी प्रकार यथा-"**इमा रामा सरथा सतूर्या न हीदृशा लम्भनीया मनुष्यै । आभि प्रमत्ताभि परिचारयस्व नचिकेतो मरण मानु प्राक्षी**" (कठो० १/२५) किन्तु आध्यात्मिक ज्ञान के इच्छुक नचिकेता ने अपने आचार्य यम द्वारा कहे हुए इस लोक की सुखसुविधा, मौज बहार को ठुकरा दिया था। किन्तु यही वर्णन कुरान व बाइबिल जैसे धर्म ग्रथो मे अवैदिक ढग से लेलिया गया क्योकि उनके धर्माचार्य वेदो को नहीं जानते थे जैसा किसी ने बताया मान लिया। इस प्रकार इन बातों का भी आदि स्रोत "वेद" है। कुरान मे इसी के आधार पर लिखा कि बहुत स्त्रिया रखो, कई-कई शादिया करो, बहिश्त में स्वर्ग में भी स्त्रिया मिलेगी, हुरे, अप्सराएं मिलेंगी, वहा घी, दूध, शहद की नदिया बहती हैं। अथर्ववेद के - "त्रितो बहिष्ठ" (४/३४/५) मत्र का "बहिष्ठ" शब्द ही अपभ्रश होकर इनका "बहिश्त"- "स्वर्ग" बन गया है। "ईसाइयत बौद्ध मत से कैसे निकली" इस विषय मे एक विद्वान् लिखता है - "फिलो" नाम के एक इतिहासकार हुए हैं वे लिखते हैं कि "ईजिप्ट" में एक सम्प्रदाय जिसका नाम-थेराप्युट था यह बौद्ध की शाखा था। इनसे ईसामसीह के गुरु-"जान दि बैपिटस्ट" ने शिक्षा ग्रहण की और "पैलेस्टाइन" नगर में एक धर्म सम्प्रदाय चलाया जिसका नाम - "एसनीज" था यहीं से ईसामसीह ने शिक्षा लेकर ईसाईधर्म का प्रारम्भ किया। तभी तो बौद्ध धर्म तथा ईसाइयत में अहिंसा, ब्रह्मचर्य आदि सिद्धान्तों की इतनी समानता पाई जाती है कि जिसके आधार पर विद्वान् ये सिद्ध कर चुके हैं कि ईसाइयत बौद्ध मत से निकली है और इन दोनों का आदि स्रोत वैदिकधर्म ही है। मध्य एशिया में एक प्रजाति थी जिसका नाम "कस्साइत" था। इसने "बैबीलोन" को जीतकर उसे अपनी राजधानी बना लिया था यह १६वीं सदी ईसा पूर्व की बात है। इस प्रजाति के देवता "सूर्य" तथा "मरुत" थे। जो वैदिकधर्म मे वैदिक देवता है वेद मत्रो मे जिनका सर्वत्र वर्णन है। इस जाति के राज्य मे उत्तर पश्चिम के हिस्से पर एक मित्तनी तथा दूसरी खत्तनी दो जातिया भी राज्य करती थीं ये दोनो आपस मे लडती रहती थीं। इनमे परस्पर युद्ध होता रहता था। ईसा से १३८० वर्ष पूर्व इन दोनो जातियो की आपस मे सधि होगई यह सधि मित्तनी जाति के राजा दशरत और उसके पुत्र "मतिउत" तथा खत्तनी जाति के राजा "सुबुलुलिम" के बीच हुई थी जो अभिलेख मिलते हैं उन अभिलेखो पर सधि की साक्षी के रूप मे मित्र, वरुण, इन्द्र आदि वैदिक देवताओ का उल्लेख है। इनका आधार भी "ओ शन्नो मित्र श वरुण" यह ऋग्वेद वेदमत्र है इससे सिद्ध होता है ये जातिया आर्यो की ही शाखाए थी और इन सब जगह वेदो का प्रचार-प्रसार था। ये चिन्ह ये अभिलेख इतिहासकारो को "बोगाजकाई" स्थान पर मध्य एशिया में मिले हैं। ऋग्वेद का एक प्रसिद्ध मत्र है जो "ईश्वर जीव-प्रकृति" तीनों को "अनादि" सिद्ध करता है - "**द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्ष परिषस्वजाते। तयोरन्य पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति**" (ऋ० १/१६८/२०) यहा मत्र मे कहा है प्रकृति रूपी वृक्ष पर दो पक्षी बैठे हैं एक फल खारहा है जबकि दूसरा केवल देख रहा है। यही चित्र "मोहन जोदडो की खुदाई" से मिला है। जिसे "आर्यो की सभ्यता" या "सिधु घाटी की सभ्यता" का नाम दिया गया है। इतिहासकार लिखते हैं कि यह नगर श्रीकृष्ण और युधिष्ठिर ने आबाद किया था। "बोगाज काई अभिलेख" को पढकर डॉ० "याकोबि" जो बेबोलोनियन भाषा के विद्वान् हैं, का कहना है इनका स्रोत "ऋग्वेद" है तथा सिधुघाटी की खुदाई से प्राप्त "वृक्ष पर बैठे दो पक्षियों का चित्र" को समझने वाले २० वर्ष तक इस विषय में अनुसधान करनेवाले उज्जैन विक्रम विश्वविद्यालय मे पुरातत्त्व विभागाध्यक्ष डॉ० "विष्णु श्रीधर" ने इस सभ्यता का मूल वैदिक आर्यो की सभ्यता को माना है जिनका स्रोत "वेद" ही है। पारसियो की धर्मपुस्तक "जिदावस्ता" मे परमात्मा कहता है कि मेरा नाम - अह्मि तथा अह्मि यदह्मि है। अह्मि शब्द सस्कृत के अस्मि शब्द का अपभ्रश है। पारसी मे स को "है" बोलते हैं। इसका अर्थ हुआ मैं हू, वह मैं हू। ईसाइयो के धर्मग्रन्थ मे भी परमात्मा मूसा को कहता है I am तथा I am that I am. यहूदियो ने ये दोनो बाते पारसियो से ली हैं। यजुर्वेद में आता है "योऽसावसौ पुरुष सोऽहमस्मि। (यजु० अध्याय ४०) तथा यजुर्वेद के अध्याय-२ के २८वे मत्र मे आया है। "इदमह य एवास्मि सोऽस्मि"। इनका भी ऊपर वाला ही अर्थ है जो ईसाई पारसी यहूदी कर रहे हैं। उपनिषदो मे भी "सोऽहमस्मि" जगह-जगह है। "मैं शरीर नहीं हू, आत्मा हू।" इन सबका आदि स्रोत वेद है मगर ये धर्माचार्य अब भी भूलसुधार नहीं कर रहे। लोकमान्य तिलक अपनी पुस्तक वैदिक ज्योतिष या "वेदाग ज्योतिष" मे - ऋग्वेद का मत्र देकर सिद्ध करते हैं कि "यह्व" शब्द वेद मे अग्नि के लिए है और यहूदियो मे "जिहोवा" नाम परमात्मा का है जुहु धातु से "जुहोति" बनता है का तथा यह्व का अपभ्रश है। तब यहूदी भी हवन करते थे क्योंकि बाईबिल मे लिखा है "मूसा जब उन्हें मिश्र से निकालकर कैनान ले जारहा था तक 'जिहोवा' अग्नि का रूप धारण कर उनका मार्गदर्शन कर रहा था अर्थात् उन्हे यज्ञ के समय वेदोपदेश दिया गया होगा। आश्चर्य केवल इस बात का है कि वेदरूपी गगोत्री से निकली वैदिक विचारधारा की गगा देश देशातरो मे फैली लेकिन एक ही स्रोत से जन्म लेनेवाले विचार एक ही स्रोत से जन्म लेनेवाले धर्म व सस्कृतिया एक दूसरे के विरुद्ध वैमनस्य का शत्रुता का, कट्टर विरोध का रूप क्यो धारण कर गये। सम्भवत इसका कारण विभिन्न धर्माचार्य व उनके धर्मग्रथ तथा उनके निजी स्वार्थ हैं।

●●●

बलिदान/पुस्तकालय भवन के लिये दानी महानुभावों से अपील

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक मे सभा द्वारा एक विशाल बलिदान भवन/पुस्तकालय भवन का निर्माण कार्य आरम्भ होगया है। इस बलिदान भवन/पुस्तकालय भवन में आर्यसमाज के बलिदानियों के चित्र विवरण के साथ लगाये जायेगे।

सभी दानी महानुभावो से प्रार्थना है कि इस पुनीत कार्य मे अधिक से अधिक धनराशि मनीआर्डर, चैक या बैंक ड्राफ्ट द्वारा अथवा नकद भेजकर पुण्य के भागी बने। जिन सज्जनो का पूर्व मे दान का वचन है वे भी अपना वचन शीघ्र पूरा करने की कृपा करे।

निवेदक

स्वामी ओमानन्द सरस्वती	स्वामी इन्द्रवेश	प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास
सभाप्रधान	कार्यकर्ता प्रधान	सभामत्री
बलराज आर्य		प्रो० शेरसिंह
सभा कोषाध्यक्ष		पूर्व रक्षाराज्यमत्री

राजभाषा में समर्थ आर्यभाषा (हिन्दी)

लेखक सोहनलाल शारदा, शाहपुरा (भीलवाडा) राज०

"आप लोग भी जहा तक हो सके गोरक्षार्थ सही करानी और साथ ही आर्यभाषा देवनागरी लिपि को राजकार्य मे प्रवृत्त होने के लिये शीघ्र प्रयत्न करना है।

यह वचन एक पत्र में महर्षि दयानन्द जी महाराज ने मत्री आर्यसमाज फर्रुखाबाद के श्री कालीचरण रामचरण को १४ अगस्त सन् १८८२ को लिखे। इस पत्र में यह भी दर्शाते हैं कि-

"इस समय आर्यभाषा को राजकार्य में प्रवृत्त होने के अर्थ जो प्रार्थना-पत्र प्रकाशित किये हैं उन्हें शीघ्रातिशीघ्र भेजना भिजवाना है।" (महर्षि के पत्र और विज्ञापन पृष्ठ ६०२ मीमासक जी)

उस समय इस आर्य राष्ट्र के शासनाधिकारियों ने एक विशेष कमीशन श्री डॉ० हण्टर जी महोदय की अध्यक्षता में नियुक्त किया। वह इसलिये कि राजकार्य चलाने हेतु जनासाधारण कौनसी भाषा चाहते हैं तथा विद्यालयों में भी कौनसी भाषा और लिपि पढाई-सिखाई जाय।

इसी निमित्त लाहौर आर्यसमाज के प्रधान ने **आर्यभाषा और देवनागरी** लिपि हेतु इसी के समर्थन में पत्र भेजा और आर्यसमाज मुल्तान ने भी सर्वसम्मत निर्णयानुसार ऐसा ही पत्र भेजा। यह कमीशन तत्कालीन भारत सरकार ने सन् १८८२ के आरम्भ मे नियुक्त किया था।

मुल्तान आर्यसमाज के उस समय मत्री थे श्री दयाराम जी। इन्होने महर्षि को भी दिनांक १९ मार्च १८८२ को एक पत्र मे सूचित करते हुये लिखते हैं कि-

"श्रद्धेय स्वामी जी महाराज ! आप सभी आर्यसमाजों को सूचित करने की कृपा करें कि जो यह कमीशन कलकत्ता में बैठाया गया है इसके प्रधान को एक पत्र लिखने को प्रेरित करें कि जिससे सभी लिखे यहा की भाषा आर्यभाषा और लिपि देवनागरी हो। इस विषय का आन्दोलन किया जाय।"

महर्षि ने इस कार्य के महत्त्व को समझते हुये सभी आर्यसमाजों व प्रतिष्ठितजनो को आग्रहपूर्वक प्रार्थना-पत्र भेजने की कही। लेकिन तत्कालीन कुछ आर्यजनों में प्रमादवश कुछ सुस्त कार्यक्रम चल रहा था। अत महर्षि ने सेठ दुर्गाप्रसाद जी फर्रुखाबाद को १७ अगस्त सन् १८८२ को पत्र मे निम्न अश लिखते हैं कि-

"अति शोक करने की यह बात है कि आजकल सर्वत्र अपनी आर्यभाषा के राजकार्य मे प्रवृत्त होने के अर्थ 'भाषा के निर्णयार्थ, जो कमीशन निश्चय किया है उसको पजाब हाथरस आदि से प्रार्थना पत्र भेजे गए हैं। परन्तु मध्य प्रान्त, फर्रुखाबाद, कानपुर, बनारस आदि स्थानो से नहीं भेजे गये हैं। ऐसा ज्ञात हुआ है और गत दिवस नैनीताल की सभा की ओर से भी एक इसी विषयक पत्र मिला है। उसके अवलोकन से निश्चय हुआ है कि पश्चिमोत्तर देश से भी मेमोरियल नहीं गये हैं।

इसलिये आपको अति उचित है कि - मध्यप्रदेश से सर्वत्र पत्र भेजकर बनारस आदि स्थानो से जहा-जहा भी परिचय हो सभी ग्रामो और नगरो से यह मेमोरियल भिजवाने का प्रयास कीजिए। यह कार्य किसी एक के करने का नहीं।"

इस विषय पर चेतावनी देते हुये जो वर्णन किया गया है वह आज भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। इसलिये कि आज इसे ११८ वर्ष पूरे व्यतीत होजाने पर भी यह कार्यरूप मे परिणत नहीं हो सकी। समस्या ज्यो की त्यो है।

यहा वर्णन है कि-

"ऐसा अवसर चूकने पश्चात् ऐसा अवसर आना दुर्लभ है। जो यह कार्य सिद्ध हुआ तो आशा है मुख्य सुधार की नींव पड जावेगी। इस पर विशेष लिखना आवश्यक नहीं है। बडे ही हर्ष का विषय यह है कि एक गोरक्षार्थ और दूसरा यह राजभाषा निर्णयार्थ ये दोनो सौभाग्य कारक अकुर आर्यो के कल्याणार्थ उदय हुये हैं। अत इन दोनो कार्य की सिद्धि हेतु प्रयास करे। इसके लिये सभी आर्यो को उचित है कि तन, मन, धन से पूर्ण प्रयास करे।"

इस पर उपेक्षा करने पर जो शब्द लिखे हैं। उससे सिद्ध होता है कि महर्षि इसी आर्यभाषा को राजभाषा बनाने के लिये कितने आतुर थे और इसके राजभाषा नहीं होने से जो हानि सभव है उसका भी वर्णन करते हुये यहा लिखते हैं कि-

"अब इसकी उपेक्षा करने पर इससे ज्यादा क्या दुर्भाग्यपूर्ण बात अन्य कोई हो सकती है।

महर्षि के विचारधारानुसार ही जो प्रार्थना-पत्र मेरठ समाज के सभासदो से भेजा गया था उसके मुख्याश निम्न हैं।

"श्रीमान् डाक्टर श्री हण्टर जी महोदय अध्यक्ष राष्ट्रभाषा व विद्यालयो मे शिक्षा हेतु भाषा के निर्णय हेतु कमीशनी निवेदन यह है कि - मातृभाषा उसको कहते हैं कि जो आपस की बोलचाल और लेखमात्र ही नहीं हो। किन्तु उससे आगे बढने और विद्वान् बनने निमित्त कविता और विद्या के विस्तृत मार्ग भी हो। अक्षर सुलभ हो जिससे सब प्रकार के सभी भाषाओ के उच्चारण के शब्द ज्यो के त्यो लिखे जाते हो। अर्थात् जैसी लिखी जाय वैसी ही पढी भी जाय।

इस भाषा के लेख को अन्य जन भाषाविद् भी थोडा-सा प्रयास पर ही निर्भय और शुद्ध पढ सकता है। इसमे सर्वप्रकार के शब्दो का भडार है। जो अन्य किसी भी भाषा में यह गुण नहीं है। यही भाषा जिसे अब हिन्दी कही जाती है जो इस सर्व आर्यावर्त राष्ट्र मे यही भाषा किसी-किसी शब्द को उलट-पुलट व ऊंचे-नीचे स्वरों के भेद से बोली जाती है। फिर भी बोलचाल में इसको अन्य जन भी थोडा-सा मेल-मिलाप से स्पष्ट उच्चारण कर सकता है।

यह तो इस भाषा की सुगमता व सरलता का किञ्चित् वर्णन हुआ। इस भाषा के अपूर्व अक्षर जो देववाणी सस्कृतभाषा के जो पृथ्वीमात्र के सम्पूर्ण अक्षरों से उत्तम सुन्दर एव अक्षर अक्षर का रूप निराला होने से सभी प्रकार के शब्दो को शुद्ध लिखे पढे जा सकते हैं। केवल यह गुण इसी भाषा मे है। अन्य किसी भी भाषा मे यह गुण नहीं है।

अत अन्य भाषा तो मात्र उदरपूर्ति हेतु ही पढते हैं। वैसे हर साधारण जन अपनी वार्ता इसी भाषा मे करते देखे जा सकते हैं। यह बोलचाल की भाषा ९० प्रतिशत पूरे भारतभर मे जानी जाती है। इसी निश्चय के साथ।

(पत्र विज्ञापन महर्षि का भाग २ पञ्चम परिशिष्ट)

यह तो सर्वविदित ही है कि इस्लामिक शासनकाल के पूर्व मे सर्वत्र इस आर्यावर्त राष्ट्र मे देवनागरी सस्कृत एव मातृभाषा इसी आर्यभाषा और देवनागरी लिपि का ही प्रचार-प्रसार था। अत उस समय सन् १८८२ के आरम्भ में बनी इस कमीशन की रिपोर्ट मे कहा गया था कि-

"हिन्दी के द्वारा प्रथम शिक्षा चाहनेवाले अधिक जन हैं। इसलिये कि दो लाख जनो के अनुमान से दो सौ मैमोरियल इसी प्रयोजनार्थ इस शिक्षा कमीशन की सेवा मे पहुचे हैं।"

इसीलिये ही इसी शिक्षा कमीशन के अध्यक्ष श्री हण्टर जी महोदय ने लाहौर मे अपना वक्तव्य देते हुये कहा था कि-**"मैमोरियल अधिकतर हिन्दी के लिये ही दिये गये हैं और विपक्ष मे अति न्यून। जिन्होने हिन्दी के पक्ष मे लिखा है वे सभी सर्वसाधारण जन ही हैं।"**

इसी विषय पर अपनी सम्मति देते हुये महर्षि दयानन्द जी महाराज कहते हैं कि-

"सस्कृत व आर्यभाषा तथा देवनागरी लिपि सर्वश्रेष्ठ सर्व गुण सम्पन्न हैं। सस्कृत मे व वेदो में ईश्वर से लेके पृथ्वी पर्यन्त अनेकानेक विद्यायें इसमे विद्यमान हैं। चाहे वह विद्या खगोल शास्त्र की हो या भूगोल वा विज्ञान आदि की।"

अत तत्कालीन भारत सरकार ने जनता की रुचि जानकर ही प्रथम मे सावधानीपूर्वक वर्नाक्यूलर व नार्मल विद्यालय चलाते हुये मैट्रिक, एफ ए, बी ए, एम ए को भी विशेषतापूर्वक चलाये। जिससे तत्कालीन सरकार को राजकाज चलाने मे कई लेखक सेवक मिलते रहे।

भारत स्वतत्र हुआ। पुन शिक्षा कमीशन बैठा। लेकिन विदेशीभाषा की चमक-दमक के मोह के इस आर्यभाषा के सुसमृद्ध होने पर भी सर्वथा अद्यावधि उपेक्षित ही रही। अत इसके प्रचार-प्रसार हेतु अब वर्तमान सरकार को पुन वर्नाक्यूलर की पढाई हेतु आग्रह करते हुये हमे स्वय भी निश्चयपूर्वक इस भाषा के महत्त्व को पहिचानते हुये पढाना है।

महर्षि दयानन्द जी महाराज ने इसी हेतु एक प्रथम विधि जो सत्यार्थप्रकाश और सस्कारविधि मे है। यह विधि सर्वश्रेष्ठ है। दूसरी विधि जो पत्र व विज्ञापन पुस्तक मे है। जिसमे वेदागप्रकाश व पिंगल सूत्र पढाने का निर्देश है। कथनी करनी का भेद मिटाकर इसे उदयपुर चारणो की पाठशाला मे पढाना शुरु भी स्वय कर गये थे। इसे हम श्रेष्ठ विधि कह सकते हैं।

तीसरी विधि जो सर्व सुलभ महर्षिकृत ग्रन्थो से है। जिसे शाहपुरा के नरेशो ने पूर्णतया ६५ वर्षो तक अनिवार्य अपने विद्यालयो मे चलाया यह विधि ही सर्वसाधारण हेतु आर्यभाषा आर्यराष्ट्र आर्यजन निर्माण हेतु सरल सुबोध अति उत्तम है। हमे व्यक्तिगत तौर पर निश्चयपूर्वक पाच जनो को इसे ही पढाकर राष्ट्र हेतु समर्पण करना है। जैसा पूर्व आर्यो ने क्रान्तिकारियो को पैदा किया था।

सार्वजनिक सूचना

सर्व जनसाधारण को सूचित किया जाता है कि दिनाक ८ ४ २००१ को आदर्श गुरुकुल सिहपुरा सुन्दरपुर, जीन्द रोड, रोहतक मे गुरुकुल की आम सभा हुई। जिसकी अध्यक्षता गुरुकुल के सरक्षक चौधरी राममेहर जी एडवोकेट ने की। आम सभा द्वारा सर्वसम्मति से गुरुकुल प्रबन्ध समिति व गुरुकुल के समस्त प्रकार के रिकार्ड व व्यवस्था की जाच हेतु एक पाच सदस्यीय विशेष जाच कमेटी नियुक्त करने का अधिकार सभाध्यक्ष चौ० राममेहर जी एडवोकेट को दिया गया।

उक्त वर्णित सभा के अध्यक्ष द्वारा निम्नलिखित पाच सदस्य इस कमेटी हेतु नियुक्त किए गए हैं-

१ डा० बलवानसिह, गाव व डा० टिटौली, जिला रोहतक। २ चौ० कपूरसिह, गाव व डा० सिहपुरा कला, जिला रोहतक। ३ चौ० रामकिशन कुण्डू, गाव व डा० सुन्दरपुर, जिला रोहतक। ४ चौ० बलवन्तसिह नहरा, गाव व डा० सुन्दरपुर, जिला रोहतक। ५ श्री यज्ञदत्त आर्य, आर्य स्वर्णकार, गली सुनारो वाली, रेलवेरोड, रोहतक।

इस सूचना द्वारा सभी जनसाधारण से निवेदन है कि यदि किसी भी सज्जन को गुरुकुल की प्रबन्धक समिति, व्यवस्था सचालन व आय-व्यय तथा किसी भी रिकार्ड सम्बन्धित कोई शिकायत हो, या आरोप लगाना चाहते हो तो अपना आरोप/शिकायत उक्त कमेटी को लिखित रूप में दे। शिकायतकर्त्ता व आरोपकर्त्ता का नाम पूर्णतया गुप्त रखा जायेगा। गुरुकुल की व्यवस्था व उन्नति के लिए जनसाधारण के बहुमूल्य सुझावो का हार्दिक स्वागत है। उक्त समिति के सयोजक श्री यज्ञदत्त आर्य मनोनीत किए गए हैं।

विशेष—आरोप पत्र/शिकायत पत्र/व्यवस्था सम्बन्धित सुझाव पत्र इस सूचना के प्रकाशन ३० दिनो के अन्दर कार्यालय मे आने आवश्यक हैं। उसके पश्चात् किसी भी आरोप पर कोई विचार नहीं किया जायेगा व उसे निराधार समझा जायेगा।

निवेदक **यज्ञदत्त आर्य**, सयोजक, पाच सदस्यीय विशेष जाच कमेटी

वैदिक कुम्भ-स्नान

—आचार्य आर्यनरेश, वैदिक गवेषक, उद्‌गीथ साधना स्थली, हिमाचल

कुम्भ-ज्ञान सगठन स्वच्छता तथा त्याग का प्रतीक है। वेदादि शास्त्रो के प्रमाण से 'ज्ञान' का वास्तविक अभिप्राय है स्वत प्रमाण शाश्वत ईश्वरीय 'वैदिक ज्ञान'। जो कि परमात्मा के समान ही नित्य अनादि सर्वहितकारी और त्रुटिरहित है। इसी वेदज्ञान को पाकर 'आत्मा' इस ससाररूपी पाठशाला से सेवा व साधना के दो पक्षो द्वारा उत्तीर्ण होकर 'मोक्ष' को प्राप्त करता है या फिर ससाररूपी सागर से पार उतरने का यही सच्चा 'तीर्थ' अथवा 'कुम्भ स्नान' है।

महर्षि देव दयानन्द सरस्वती स्वलिखित क्रान्तिकारी वैदिक सस्कृति के विशिष्ट रक्षक ग्रन्थ-सत्यार्थप्रकाश के स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश मे लिखते हैं कि "तीर्थ उसे कहते हैं" जिससे दु खसागर से पार उतरे, कि जो सत्य भाषण, (विद) विद्या, सत्सग, यमादि, योगाभ्यास, पुरुषार्थ (और) विद्यादानादि शुभ कर्म है उसको तीर्थ समझता हू। इतर जलस्थलादि को नहीं।"

एक समय था जबकि आर्यावर्त्त के महान् योगी और विद्वान्जन सच्चे ब्राह्मण 'राष्ट्र' को दु खो से पार करने हेतु देश के लोगो को एक स्थान पर एकत्रित करते थे। ऐसे 'ज्ञान-कुम्भ' मे स्नान करने हेतु देश से ही नहीं अपितु विदेश से भी लोग सम्मिलित होते थे। ऐसे अवसरो पर बहुत बडे-बडे यज्ञो का भी आयोजन किया जाता था। जिससे कि ज्ञान प्राप्ति तथा सत्कर्म सिद्धि की आधारशिला "वातावरण" की शुद्धि हो सके। इन शुभ अवसरो को जोड के कारण 'पर्व' तथा ज्ञान का स्नान होने से 'उत्सव' कहा जाता था। उत्=अर्थात् उत्कर्ष हेतु 'उत्कृष्ट' प्रकार का तथा 'सव' का अर्थ स्नान होता है। ज्ञान का उत्कृष्ट स्नान ही वास्तव मे मानव को देव बना सकता है। ज्ञानवान् व्यक्ति ही अनिष्ट कर्मो 'पापो से बचता वेदानुसार श्रेष्ठ कर्मो का अनुष्ठान करता इस लोक और परलोक को सुधार सकता है। दु खो मे बचने का यही सच्चा सनातन कुम्भ स्नान है।

जो अनाडी "अनार्य-जन" मात्र जल के स्नान के द्वारा ही दु खो की निवृत्ति और मुक्ति की सिद्धि होना मानते हैं वे वास्तव मे सत्य-सनातन वैदिक-धर्म के क, ख, ग को भी नहीं जानते। वैदिक सस्कृति बार-बार यह उपदेश देती है-'ऋते ज्ञानान् न मुक्ति' अर्थात् ज्ञान के बिना कर्म करने मे मुक्ति नही हो सकती। क्योकि अन्यत्र भी कहा गया है-'अद्‌भिर्गात्राणि शुध्यन्ति, मन सत्येन शुध्यति" अर्थात् 'जल' से तो केवल बाहर के शरीर के अगो या चमडी अथवा वस्त्रो की ही शुद्धि होती है, मन की शुद्धि तो 'सत्य' से ही सम्भव है और विद्या तथा तप से आत्मा की शुद्धि होती है। 'विद्यातपोभ्या भूतात्मा' पाठ का यही उपदेश है। अत सनातन-शास्त्र भी यही शिक्षा देरहे हैं कि सच्चे तीर्थ या स्नान अथवा "महाकुम्भ" जल नहीं अपितु 'ज्ञान' ही है। क्योंकि यदि 'जल' के स्नान से ही संसार सागर से मुक्ति और कष्टों अथवा दु खों से निवृत्ति हेनेवाली हेती तो मछली कछुआ मगरमच्छ जल मे रहनेवाले सर्प तथा जल के समीप रहकर नित्य 'मछली पकडने' हेतु जल में डुबकी मारनेवाले मछुआरें कभी के मुक्त होगए होते। यदि नदिया व तथाकथित तीर्थों और नामलेवा कुम्भो में ही स्नान करने से भारतवासियों का कुछ कल्याण सम्भव होता तो अब तक सम्पूर्ण भारत स्वर्ग बन गया होता। यहा कहीं भी चोरी, सीनाजोरी, मिलावटखोरी, रिश्वतखोरी, शराब, मास, अण्डे व धूम्रपान का गदा वातावरण दिखाई न देता। कोई भी भारत का नागरिक रोगी व भोगी बनकर हस्पतालों या न्यायालयों का चक्कर न काट रहा होता।

आश्चर्य की बात तो यह है कि जिस तथाकथित 'महाकुम्भ' को महाकल्याणकारी समझा जारहा था वहा उसके स्थल पर अनेक सूचना पत्रो पर यह लिखा गया था कि इस 'सगम' के पानी को न पीये। पीने के लिए टूटी के शुद्ध जल का प्रयोग करे। पाठकवृन्द! इस सूचना से यही सिद्ध होता है कि जो जल अशुद्ध होने से पीने के ही योग्य नहीं वह भला 'मन' को तो कैसे निर्मल कर सकता है? अत ऐसा जल अशुद्ध होने से न तो शरीर के लिए और नहीं आत्मा के लिए ही कल्याणकारी है। क्योकि खान-पान से ही अन्त करण औरउससे ही जीवन की सद्‌गति सम्भव है। पर जब अन्त करण ही अपवित्र होगया तो फिर 'आत्मा' के कल्याण का तो प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। इसलिए उपरोक्त चर्चा से यही सिद्ध होता है कि सच्चा 'महाकुम्भ' जल के स्नान का नाम नहीं अपितु ज्ञान के स्नान का नाम है।

शारीरिक-निरोगता और बौद्धिक सचेतता, ये दोनों ही ससार सागर से पार उतरने के दो प्रमुख साधन हैं। पर अत्यन्त दुख से लिखना पड रहा है कि इस तथाकथित 'महाकुम्भ' में इन दोनो ही का प्राय अभाव था। (इलाहाबाद) प्रयाग का वातावरण ठीक इससे विपरीत था। 'प्रयाग' जिसका यौगिक अर्थ भी प्र=प्रकर्ष, याग=महायज्ञ अर्थात् विशेष महायज्ञ है। वह इन दिनो 'उत्कर्षता' का स्थान न बनकर अपकर्ष का स्थान बन चुका था। चाहिए तो यह था कि वहा प्रत्येक स्थान पर टैंटो, शामियानों या झोपडियों अथवा पण्डालो मे बैठे लोग 'यज्ञ-हवन' करते दिखाई देते। पर देखा यह गया कि वहा स्थान-स्थान पर लोग बिना हिसाब के बीडी-सिगरेट ही नहीं पीरहे थे, अपितु उनकी खपत को पूर्ण करने हेतु स्थानीय 'कुम्भ' सभा या सरकारी तन्त्र ने भारतभर की बर्बादी के प्रमुख साधन और पर्यावरण के विनाश के प्रमुख भागीदार बीड़ी सिगरेट की कम्पनियो को बडे-बडे 'स्टाल' आवंटित किए हुए थे। क्या धूम्रपान करनेवाले अशुद्ध तन और धूम्रपान के धुए से ठसाठस पूर्ण अशुद्ध वातावरण कभी मुक्ति, सिद्धि या भक्ति का स्थान हो सकता है? यदि नहीं, तो फिर हमें यही कहना चाहिए कि वर्तमान के ये ज्ञान और शुद्ध वातावरण के बिना तथाकथित 'कुम्भ' दु खो से मुक्ति नहीं अपितु दु खो से बाधने के ही मुख्य स्थल हैं।

यदि किसी को सच्ची मुक्ति, शान्ति और धर्ममार्ग मे प्रवृत्ति करनी है तो उन्हे चाहिए कि वे इन तथाकथित पाखण्डो से बचकर यज्ञमय वैदिक सत्संग मे स्नान करें। कुछ त्याग करने की ही इच्छा है तो हवन में आहुति डालकर अण्डा, मांस, मछली, शराब, सिगरेट, बीडी और बुरी आदतों का त्याग करे। कुछ प्रसाद ही ग्रहण करना है तो सयम, ओमजप, यज्ञ, वेदपाठ और परोपकार का प्रसाद ग्रहण करके जीवन को सार्थक बनाए। यदि ऐसे अवसरों पर देशभर के विद्वान् या महात्मा पुरुष स्थान-स्थान पर यज्ञ हवन व वेदकथा करने का कार्य करें तो यह कुम्भ वास्तव में वैदिक ज्ञानकुम्भ बनकर सबको जीवन देनेवाले बनें तथा महायज्ञों की पूर्ण आहुति पर हवन कुण्डों पर रखे गये मटकों के औषधमय पावन जलों से स्नान करके 'महाकुम्भ' स्नान को भी चरितार्थ करें।

अत सच्चा कुम्भ स्नान वही है जहा विशाल जन-समुदाय भारत की प्राचीन आर्य-सस्कृति के प्रति श्रद्धा रखता हुआ वेद की ज्ञानधाराओ से स्नान करता, परस्पर एक-दूसरे की सेवा व सत्कार करता, अपनी पवित्र सम्पदा द्वारा खरीदी गई घृत-सामग्री से हवन करता, ध्यान योग से परमात्मा के आनन्द मे डुबकी लगाता हुआ ऐसे महान् "ज्ञान यज्ञो" से देश धर्म व असहायो तथा "गौ" आदि प्राणियो की रक्षा करने का व्रत लेकर जाता है। अर्थात् ऐसे वैदिक महाकुम्भ स्नान से सम्पूर्ण राष्ट्र ही शुद्ध, पवित्र तथा शान्त वातावरण को प्राप्त करता है।

●●●

श्री सत्यकाम आर्य भारत विकास परिषद् रादौर के अध्यक्ष मनोनीत

आर्य वेदप्रचार मण्डल जिला यमुनानगर के महामन्त्री एव आर्यसमाज डी ए वी रादौर के प्रधान श्री सत्यकाम जी आर्य की विशिष्ट सामाजिक सेवाओ को महत्त्वपूर्ण मानते हुए भारत विकास परिषद् शाखा रादौर का अध्यक्ष मनोनीत किया गया है। यह गौरव उनको आर्यसमाज से जुडी उनकी धार्मिक, सामाजिक एव शैक्षणिक सस्थाओ में उनके द्वारा किए गए कार्यों के फलस्वरूप ही प्राप्त हुआ। —सुशील आर्य

योगस्थली आश्रम में सत्संग एवं बृहदयज्ञ

दिनाक २५-३-२००१ को योगस्थली आश्रम महेन्द्रगढ में बृहद्यज्ञ एव सत्संग का आयोजन आचार्य सत्यप्रिय जी गुरुकुल खौल की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ।

यज्ञ का कार्य महन्त आनन्दस्वरूपदास-सन्त कबीरमठ सोहला तथा प्रधान आर्यवीर दल महेन्द्रगढ एवं मास्टर उमरावसिह जी आर्य ग्राम पालडी ने करवाया।

यजमान का स्थान बहन सुशीला जी आर्य ने ग्रहण किया। यजमान के अतिरिक्त अन्य आठ पुरुषों तथा सात महिलाओं को यज्ञोपवीत धारण करवाये।

अन्त में स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती प्रधान यतिमण्डल दक्षिणी हरयाणा ने अपने प्रवचनों में बताया, कि महर्षि दयानन्द जी ने समाज-सुधार और कुरीतियो तथा अन्धविश्वासों को दूर करने का अथक प्रयत्न किया अथवा देश के ५६ लाख साधु ईश्वरभक्ति का झूठा आडम्बर अपनाकर अब तक आम गृहस्थी को लूटते-ठगते रहे थे, उनके लिए भी ईश्वर भक्ति का वेद के प्रमाण से मार्ग प्रशस्त किया।

आज की सभा के प्रधान श्री प्रभातीलाल जी पहलवान बवानिया ने सभी आगन्तुकों का धन्यवाद किया और प्रसाद वितरण किया तथा ५३ रोगियो का उचित निदान करके स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती ने नि शुल्क दवाई वितरण की। —दिनेश सैनी आर्य

हांसी में आर्यसमाज स्थापना दिवस मनाया गया

स्थानीय आर्यसमाज खरड चुगी (भाटिया कालोनी) द्वारा पूज्य स्वामी रामानन्द जी की अध्यक्षता में आर्यसमाज स्थापना दिवस मनाया गया। इस शुभ अवसर पर समाज के पुरोहित प० विजयपाल शास्त्री (प्रभाकर) द्वारा यज्ञ किया गया। जिसके मुख्य यजमान समाज के प्रधान श्री पुरुषोत्तमलाल जी गिरधर थे।

इसी दौरान विशेष आमंत्रित नगर के सुप्रसिद्ध वैदिकविद्वान् आचार्य रामसुफल शास्त्री, सचालक आर्यवीर दल हासी ने मुख्यवक्ता के रूप मे अपने विचार रखते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज की स्थापना करके ससार का बहुत बडा उपकार किया है। स्वामीजी ने नारी शिक्षा पर बल दिया जिसके परिणामस्वरूप महिलाए आज पुरुषो से आगे बढ रही हैं। —राजेश शर्मा, प्रेस सचिव, आर्यवीर दल हासी

शान्ति यज्ञ सम्पन्न

स्व० श्रीमती फूलवती देवी (धर्मपत्नी आर्यश्री रणधीरसिह, हैडमास्टर सेवानिवृत्त, २३६-ए-१, माडल टाउन, रोहतक) की स्मृति मे उनके परिवार द्वारा ८ अप्रैल मे अपने निवास पर शान्तियज्ञ किया गया, जिसमें सैंकडों लोगों ने भाग लिया। इस अवसर पर अनेक गुरुकुलों व संस्थाओं के आचार्य तथा सचालकों ने दिवगत आत्मा के प्रति अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की तथा उपस्थित जनसमूह ने दो मिनट का मौन रखकर उनकी आत्मा की शान्ति व सद्गति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। कार्यक्रम में स्वामी ओमानन्द जी (प्रधान, सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधिसभा) भी उपस्थित थे।

इस अवसर पर स्व० फूलवती देवी की स्मृति मे उनके परिवार द्वारा अनेक गुरुकुलों व सस्थाओं को १९३०३ रुपये की दानराशि प्रदान की गई एव दो लाख की स्थिरनिधि से उनके नाम पर भविष्य मे कन्या गुरुकुलों को छात्रवृत्ति-सहायता प्रदान करने की घोषणा की। परिवार की यह आर्य-परम्परानुगत दानशैली अनुकरणीय है।

स्मरणीय है कि २९ मार्च में श्रीमती फूलवती देवी का वैदिकविधि से अन्त्येष्टि सस्कार सम्पन्न किया गया था, जो ६५ कि० देसी घृत १०० कि० हवन सामग्री, केसर-कस्तूरी, चन्दन व मेवा आदि शास्त्रोक्त हव्य द्रव्यो से ३ आचार्यों तथा ४ ब्रह्मचारियो के निर्देशन में वैदिक मन्त्रोच्चार के साथ सम्पन्न हुआ था। २९ मार्च से ७ अप्रैल पर्यन्त प्रतिदिन गृह पर यज्ञ व प्रवचन का कार्यक्रम चलता रहा।

वैदिक एव आर्य परम्पराओं के आदर्श पुरुष के रूप मे आर्य श्री रणधीरसिह जी प्रशंसा तथा सम्मान के योग्य हैं। परमपिता परमात्मा इनका सर्वविध मगल करे।

देश को आर्यसमाज ने ही जगाया

कानपुर। पराग दुग्ध डेरी (मिल्क बार) के सामने आयोजित १२६वें "आर्यसमाज स्थापना दिवस समारोह" के मुख्यअतिथि श्री देवीदास आर्य ने कहा कि देश को जगाने का श्रेय आर्यसमाज को ही है। आर्यसमाज ने देश मे धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षिक क्रान्ति पैदा करदी। आज जो कार्य सर्वसाधारण लगते हैं, १२६ वर्ष पहले असम्भव से लगते थे। अंधविश्वास, गुरुडम, बेमेल विवाह, सतीप्रथा, नशाखोरी, देश की गुलामी आदि बुराइयो का आर्यसमाज ने डटकर विरोध किया और स्वतत्रता, शुद्धि, स्वदेशी, विधवा विवाह, हिन्दीभाषा, नारीशिक्षा, एक ही ईश्वर उपासना, वेदप्रचार आदि के लिए आन्दोलन किये। यदि हिन्दू आर्यसमाज के शुद्धि आन्दोलन का विरोध न करते तो पाकिस्तान कभी नहीं बनता। —बालगोविन्द आर्य, मत्री

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार के स्नातकों की सेवा में

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार के स्नातक बन्धुओ की सेवा मे निवेदन है कि प्रतिवर्ष की भांति नवस्नातक विदाई समारोह विद्यालय के प्रागण मे २८ अप्रैल को हर्षोल्लास के साथ मनाया जारहा है।

इस शुभ अवसर पर डा० सुरेन्द्रकुमार जी महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक एक दिन पूर्व कथा करेंगे तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित होगे।

अत आप सभी स्नातक बन्धुओ से अनुरोध है कि अपनी मातृसस्था विद्यालय मे अपने इष्ट मित्रों व परिवार के साथ अवश्य पधारें। —रामसुफल वाचस्पति, महामत्री राष्ट्रीय स्नातक मण्डल, दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार

शुद्धि समाचार

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधिसभा के तत्त्वावधान मे प्रधान स्वामी सेवानन्द सरस्वती प्रधान भारतीय शुद्धि सरक्षणी सभा ने म०प्र० के जिला सरगुजा छत्तीसगढ के आदिवासी, जो ईसाई बन गए थे उनकी शुद्धि का कार्य किया। गऊ मास, अन्य मास, शराब आदि न खाने-पीने का सकल्प कराया। यज्ञ हवन कराया गया एव यज्ञोपवीत धारण कराया। शुद्धि के पश्चात् कपडा भी वितरण किया गया।

पूज्य स्वामी सर्वानन्द सरस्वती दयानन्दमठ दीनानगर जिला गुरदासपुर (पजाब) के आदेशानुसार यह कार्य किया गया।

क्रमाक	दिनांक	गाव का नाम	परिवारो की स०	सदस्यो की स०
१	५-२-२००१	डकई	१०००	२५००
२	६-२-२००१	कुन्दीकला	५००	१५००
३	७-२-२००१	कपी	१००	५००
४	८-२-२००१	विक्रमपुर	१००	५००
			१७००	५०००

सेवानिवृत्त होने पर यज्ञ

दिनाक ३१-३-२००१ को राजकीय पाठ्यपुस्तक बिक्री भण्डार रोहतक के कार्यालय मे श्री भलेराम आर्य, प्रबन्धक की अध्यक्षता मे श्री रामकिशन शर्मा के सेवा के भारमुक्त होने के अवसर पर उनके सम्मान में यज्ञ का आयोजित किया गया। जिसका सचालन महाशय रूपनारायण जी आर्य द्वारा किया गया तथा उसके पश्चात् बहन सुमित्रा वर्मा आचार्य महर्षि दयानन्द हाई स्कूल रोहतक की भजनमण्डली ने व्याख्यान व भजनो द्वारा सभी को अपना कर्त्तव्य लगन व श्रद्धा से श्री रामकिशन शर्मा की तरह करने को कहा तथा समाज में बढ रही बुराई के ऊपर प्रकाश डाला तथा भविष्य का अपना जीवन सामाजिक व धार्मिक कार्यों मे लगाने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर श्री रामकिशन शर्मा ने १५० रुपये आर्यसमाज साघी, ५१ रुपये चौ० लखीराम अनाथालय रोहतक तथा ५१ रुपये हरयाणा प्रतिनिधि सभा रोहतक को दान दिया। श्री भलेराम आर्य प्रबन्धक ने श्री रामकिशन शर्मा के कार्यों का उल्लेख करते हुए अन्य कर्मचारियो को भी उन्हीं की तरह निष्ठा व लगन से कार्य करने का आह्वान किया। —भलेराम आर्य

बरवाला में गुरुकुल की स्थापना

जनपद मुजफ्फरनगर के ग्राम बरवाला मे ब्र० यशवीर आर्य के पवित्र करकमलो से यज्ञ के पश्चात् वैदिक मंत्रो के साथ दिनाक २५ मार्च २००१ को गुरुकुल की स्थापना की गई। गुरुकुल के शिलान्यास के उपरान्त ब्र० यशवीर आर्य ने उपस्थित जनसमूह को अपने सम्बोधन में कहा कि इस गुरुकुल मे बच्चो के आत्मिक, शारीरिक एव बौद्धिक विकास की तरफ ध्यान दिय जायेगा तथा उनको पूर्णतया वैदिक सिद्धान्तो की शिक्षा दी जावेगी। इस अवसर पर प० चत्तरसिह की भजनमण्डली के मधुर भजन हुए। श्री ओमकारसिह ब्र० मृगेन्द्रसिंह, श्री प्रदीप बालियान विधायक ने भी वैदिक गुरुकुल की स्थापना के लिए ब्र० यशवीर आर्य की प्रशसा की।

उसी दिन गुरुकुल में चार विद्यार्थियो का भी प्रवेश हुआ। अन्त मे शान्तिपाठ के पश्चात् कार्यवाई समाप्त हुई। —ब्र० यशवीर आर्य

समय की पुकार

भजन

श्रेष्ठ पुरुषो एक हो जावो समय पुकार रहा है।
आज तुम्हारी तरफ देख सारा संसार रहा है।।
राग द्वेष की आज भयंकर भड़क रही है ज्वाला–
इस ज्वाला में भस्म हो रहे बाड़े भयंकर आला–
सारे विश्व को इस ज्वाला ने भस्मसात् कर डाला
कोई माई का लाल नहीं जो इसे बुझाने वाला–
देश बचावो चारों तरफ हो हाहाकार रहा है।।१।।
आज का मानव फंसता जा रहा स्वार्थ की दलदल में
सच्चाई को भुला दिया है झूठ कपट और छल में–
राम राम की रटता माला लेरहा छुरी बगल में
पवित्र होना चाहता है फिर नहा गंगा के जल में
शराब मांस अण्डे खाकर बन खूंखार रहा है।।२।।
अनार्य लोग तुम्हारे ऊपर करते हैं आज शासन
तुम आपस की फूट में कोरे झाड़े जावो भाषण
सच्चे साधु आर्यजनों का समाज में था उच्चासन
आज इसमें घुस गये स्वार्थी कर ना सके निष्कासन
मानव के सिर पर दानव–दल ललकार रहा है।।३।।
यदि तुम चाहवो सारे विश्व को आर्य बना सकते हो
दुनियां के घर–घर में वैदिक नाद बजा सकते हो
स्वप्न ऋषि का करके तुम साकार दिखा सकते हो
गोहत्या का इस भारत से कलंक मिटा सकते हो–
मित्र आर्य वेद धर्म का कर प्रचार रहा है।।४।।
आज तुम्हारी तरफ देख सारा संसार रहा है।।

रचयिता - **विश्वमित्र आर्य, भजनोपदेशक**
ग्रा० पो० लूखी (रेवाडी)

सभा से सम्बन्धित आर्यसमाजों के अधिकारी महानुभावों की सेवा में निवेदन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का त्रिवार्षिक साधारण अधिवेशन ९ अगस्त २००१ से पूर्व होना है। इसलिए हरयाणा के सभी आर्यसमाजो के अधिकारियो से निवेदन है कि आगामी ३ वर्ष के लिए अपने आर्यसमाज के प्रतिनिधि आर्यसमाज के नियम-उपनियमो के अनुसार चुनकर प्रतिनिधि फार्म भरकर दिनाक ३०-०४-२००१ तक सभा कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक मे भेज देवे, जिससे आपके प्रतिनिधि समय पर स्वीकार हो सके। सभी आर्यसमाजो को प्रतिनिधि फार्म डाक द्वारा भेज दिए गए हैं। जिन्हे फार्म न मिले हो सभा कार्यालय को पत्र लिखकर और मगवाले।

१ नए प्रतिनिधियो की स्वीकृति के लिए सभा से सम्बन्धित प्रत्येक आर्यसमाज को पिछले तीन वर्षो का वेदप्रचार तथा दशाश की राशि के साथ-साथ 'सर्वहितकारी' का शुल्क ६० रुपये वार्षिक भेजना अनिवार्य है। वर्ष ९८-९९, ९९-२०००, २०००-२००१ का शुल्क जमा न होने पर प्रतिनिधि स्वीकृत नहीं होगे।

२ वही फार्म स्वीकार किये जायेंगे जो आर्यसमाज के नियम-उपनियम तथा सभा के विधान के अनुसार भरकर भेजे जायेगे।

अत जिन आर्यसमाजो ने वर्ष ९८-९९, ९९-२००० तथा २०००-२००१ अर्थात् मार्च २००१ तक का तीन वर्षो का वेदप्रचार, दशाश तथा सर्वहितकारी शुल्क नहीं भेजा है उसे शीघ्र सभा प्रचारको अथवा मनीआर्डर द्वारा सभा को भेजने का कष्ट करें।

आपसे अनुरोध है कि आप इस सम्बन्ध मे यथाशीघ्र कार्यवाही कर अपना तथा अपने आर्यसमाज का पूर्ण सहयोग प्रदान करें। **–प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास**, सभामत्री

विशेष– वैसे तो वर्तमान प्रतिनिधियों का कार्यकाल मार्च २००१ को समाप्त हो रहा है, किन्तु नए प्रतिनिधि चुने जाने तक उनका प्रतिनिधित्व बना रहेगा।

सुख का एक साधन : मौन

–आचार्य डॉ० संजयदेव, आर्यसमाज मल्हारगंज, इन्दौर (म प्र)

एक साधु हमेशा 'मौन' रहते थे। वे लोगों के प्रश्नों का उत्तर लिखकर दिया करते थे। एक दिन एक महिला ने उत्सुकतावश बाबा से पूछा-"आप मौन क्यों रहते हैं ?" बाबा मुस्कराए और उत्तर दिया-'एक चुप सौ सुख।' सभी को आश्चर्य हुआ। भला चुप रहने से सुख कैसे मिल सकता है। यह रहस्य जानने के लिए बाबा से आग्रह किया। साधु ने इसका लाभ सबको समझाया।

मौन एक साधना है, जिससे जीवन में अनुशासन आता है। हमारा अधिक समय व्यर्थ एव बेकार की बातो मे जाता है। प्रतिदिन एक-दूसरे की बुराई तथा व्यर्थ की चर्चा मे ही सुबह से शाम होजाती है। कभी-कभी चर्चाए झझट भी खडा कर देती हैं। बिना किसी कारण परेशानिया खडी होकर 'आ बैल मुझे मार' वाली कहावत सही सही होजाती है। दिनभर ज्यादा बोलना भी अच्छा नहीं रहता। कभी न कहनेवाली बात भी कहने में आजाती है। दूसरे लोग इसका लाभ उठाकर हानि पहुंचा देते हैं। बाद मे पश्चात्ताप के अलावा कुछ नहीं बचता। अधिक बोलने से लोगों मे भय बना रहता है तथा लोग मिलने से घबराते हैं। एक धारणा भी बन जाती है कि बहुत बोलते हैं। ऐसे मे कभी-कभी छोटी-सी गलती से कही बात भी 'राई का पहाड' बन जाती है।

इसलिए इन झझटो से बचने के लिए सबसे सरल तरीका यही है कि चुप रहा जाए। चुप रहने का अभ्यास धीरे-धीरे किया जा सकता है। आरम्भ मे जब भी किसी से बातचीत की जाए, बाद मे उसका विश्लेषण करना चाहिए। हमने जो भी बातचीत की उसमे व्यर्थ की एव बेकार की आवश्यक बहुत कम और इधर-उधर की ज्यादा। फिर प्रयास यह किया जाए कि अगली बार पुन ऐसी गलती न हो। लगातार ऐसा अभ्यास करने से कुछ महीनो में ही आश्चर्यजनक परिवर्तन महसूस होगा। व्यक्तिगत विकास होकर जीवन मे आगे बढते जाएगे, परन्तु यह अभ्यास स्वेच्छा से दृढ निर्णय लेकर ही किया जा सकता है। जोर-जबरदस्ती के साथ अगर किसी का बोलना बन्द कर दिया जाए और उसे चुप रहने के फायदे बताए जाए तो बजाए लाभ के नुकसान ही होगा। इच्छा के विपरीत मौन नहीं रखा जा सकता। दबाव से अगर मौन रखा भी तो वह मानसिक तनाव उत्पन्न कर देगा। इसीलिए किसी का भी दबाव मे बोलना बन्द नहीं किया जाना चाहिए। मौन के महत्त्व को समझकर ही इसे आसानी से अपनाया जा सकता है तथा पूरा लाभ उठाया जा सकता है।

मौन एक प्रकार का तप है। जबान को लगाम देना, आधे से अधिक मन पर नियन्त्रण करने के समान है। इससे बातचीत मे खर्च होने वाली शक्ति भी बच जाती है। यह ऊर्जा व्यक्तिगत मे निखार लाकर समाज एव घर मे प्रशसनीय और लोकप्रिय बनाती है। इच्छाशक्ति का विकास होता है। काल्पनिक एव ऊची उडान पर नियन्त्रण होकर धैर्य एव सहनशीलता बढ जाती है। मानसिक तनाव से छुटकारा मिलकर मन में शान्ति एव शुद्धता आती है। संकल्पशक्ति दृढ होती है, सुख की गहरी नींद आती है। ईश्वरचिन्तन मनन, पठन-पाठन बढ जाता है। इस प्रकार कई सुख केवल चुप रहने से ही मिल जाते हैं। इसलिये चुप रहकर सुख उठाइये।

अन्तरंग सभा के सदस्यों, विशेष आमन्त्रितों एवं जिला वेदप्रचार मण्डलों के सभी अधिकारियों की सेवा में निवेदन

आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा की अन्तरग सभा की बैठक सभा कार्यालय रोहतक में दिनाक २२-४-२००१ रविवार को प्रात १० बजे होनी निश्चित हुई है। इस बैठक मे आर्यसमाज स्थापना के १२५ वर्ष पूरे होने पर हरयाणा में 'अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन' के आयोजन तथा अन्य विषयो पर विचार किया जाएगा।

अन्तरग सभा के सदस्यो, विशेष आमन्त्रितो एव जिला वेदप्रचार मण्डलो के अधिकारियों से निवेदन है कि आप सभी इस बैठक मे समय पर पधारने की कृपा करे।

–प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामंत्री

डा० विमल महता लगातार चौथी बार आर्य केन्द्रीय सभा की अध्यक्षा

सैक्टर २८ आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव के समापन समारोह के पश्चात् वहीं के हाल में आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद का द्विवार्षिक चुनाव सम्पन्न हुआ और डा० विमल महता अध्यक्षा महर्षि दयानन्द शिक्षण सस्थान को लगातार चौथी बार प्रधान चुन लिया गया, यह चुनाव सर्वसम्मति से हुआ और सर्वसम्मति से ही उन्हें अपनी कार्यकारिणी घोषित करने का अधिकार भी देदिया गया।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ७६८७४, ५७७७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ७७७२२) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। पत्र के प्रत्येक प्रकार के विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०२
पंजीकरणसंख्या टैक/एच आर./49/रोहतक/99 ☎ ०१२६२-७७७२२

प्रधानसम्पादक : प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक :- डा० सुदर्शनदेव आचार्य
वर्ष २८ अंक २१ २१ अप्रैल, २००१ वार्षिक शुल्क ६०) आजीवन शुल्क ६००) विदेश में १० पौंड एक प्रति १-२५

वर्तमान जनगणना के अनुसार राष्ट्र में मुसलमानों की बढ़ती आबादी पर विशेष–

क्या भारत का फिर से विभाजन होगा ?

❑ सुखदेव शास्त्री, महोपदेशक, दयानन्दमठ, रोहतक (हरयाणा)

महर्षि दयानन्द सरस्वती दीर्घदर्शी थे, वे तत्कालीन परिस्थितियो को देखकर ही इस बात से अतिचिन्तित एव शंकित थे कि भविष्य में मुस्लिम व ईसाई राष्ट्र के विभाजन मे भूमिका निभाएगे। वे राष्ट्र के लिये घातक सिद्ध होगे। महर्षि जी जो चिन्ता इनके विषय मे किया करते थे वह १९४७ मे राष्ट्र के विभाजन के कारण पाकिस्तान के पृथक् निर्माण के कारण पूरी हुई।

महर्षि दयानन्द कितने स्वदेशभक्त थे। महर्षि के बारे मे सन् १९०१ मे जनगणना के अध्यक्ष (सेसस् कमिश्नर) मिस्टर बर्न थे, उन्होने अपनी जनगणना की रिपोर्ट मे लिखा है–"Dayananda feared Islam and Christianity because he considered that the adoption of any foreign creed would endanger the national feelings he wished to faster."

अर्थात् दयानन्द इस्लाम तथा ईसाइयत के प्रति इसलिये शंकित थे कि क्योंकि वे समझते थे कि विदेशी मतों के अपनाने से देशवासियो की राष्ट्रीयता की भावना को क्षति पहुचेगी, जिन्हे वे पुष्ट करना चाहते थे।

मि० ब्लट ने ही एक बात और भी अपनी रिपोर्ट मे लिखी है–"Dayananda was not merely a religious reformer he was a great patriot It would be fair to say that with him religious reform was a mere means to national reform."

अर्थात् "दयानन्द मात्र धार्मिक सुधारक ही नहीं था, वह एक महान् देशभक्त था। यह कहना ठीक होगा कि उसके लिए धार्मिक सुधार राष्ट्रीय सुधार का एक उपाय था।" इन मुसलमान तथा ईसाइयों की तत्कालीन कार्यप्रणाली तथा राष्ट्रविरोधी कार्यविधि को देखकर ही महर्षि ने ईसाइयों तथा मुसलमानों के खण्डन मे सत्यार्थप्रकाश मे १३वा व १४वा समुल्लास लिखे थे।

आज फिर वही परिस्थितिया हमारे सामने हैं–जनगणना मे मुस्लिमों की अत्यन्त बढती जनसख्या से देश के विभाजन की चिन्ता बहुत ही शोचनीय है।

भारत की जनसख्या गणना के आकडो के घोषित परिणाम के अनुसार १ मार्च २००१ को भारत की जनसख्या एक अरब, दो करोड, बीस लाख, पन्द्रह हजार, दो सौ सैंतालीस होगई है। १९९१ से भारत की जनसख्या २००१ तक इन दस वर्षों में १८ करोड दस लाख लोगो की वृद्धि हुई है।

इस जनसंख्या के आकडों को ध्यानपूर्वक देखने से मुसलमानो की जनसख्या मे भारी वृद्धि हुई है। जनगणना की रिपोर्ट से मुस्लिमो की आबादी मे तेजी से वृद्धि के कारण चिन्ता प्रकट की जासकती है।

कुछ ही दिनो पहले भारतीय जनगणना आयुक्त के कार्यालय से एक रिपोर्ट प्रकाशित की गई थी। इस रिपोर्ट से पता चलता है कि विगत एक दशक १९८१ से १९९१ तक मे भारत के मुसलमानो की आबादी ३२ ७८ प्रतिशत के हिसाब से बढी, अब १९९१ से मार्च २००१ दस वर्षीय जनगणना रिपोर्टो मे भारत के मुसलमानो की आबादी मे निरन्तर वृद्धि होरही है। पिछले वर्षो के हिसाब से १९७१ मे भारत मे मुसलमानो की आबादी का प्रतिशत १२ २० था, जो १९८१ में बढकर ११ ३६ होगया। १९९१ मे १२ १२ होगया। जब इसी अवधि मे हिन्दुओ की जनसख्या के प्रतिशत मे क्रमानुसार कमी आई। १९७१ मे उनकी आबादी ८२ ७२ प्रतिशत थी जो १९८१ मे घटकर ८२.६५ प्रतिशत रह गई। १९९१ में यह प्रतिशत ८२ पर पहुच गया था।

पिछले दशकों को देखे तो १९८१ मे देश की जनसख्या लगभग ६६ करोड थी जिसमे लगभग ८ करोड मुस्लिम थे। इस प्रकार कुल जनसख्या का १२ प्रतिशत से ज्यादा मुसलमान थे। जब १९९१ मे देश की जनसख्या लगभग ८५ करोड हुई तो उसमे मुसलमान सम्प्रदाय की जनसख्या लगभग पौने तेरह करोड होगई, जो कुल जनसख्या का १५ प्रतिशत होता है। इस प्रकार देश मे मुसलमानो की जनसख्या की वृद्धि दर डेढ गुणा यानी ३३ प्रतिशत है। इसलिए अनेक प्रान्तो मे मुस्लिम आबादी का वृद्धि दर चौंकानेवाला है एव चिन्ताजनक भी है। जहा पर भी इनकी आबादी बढ जाती है, वहीं भारत विभाजन की माग खडी होजाती है।

वर्तमान की जनगणना से एक दशक पहले इनकी आबादी इस प्रान्तों में इस प्रकार थी–पजाब में ४२.२ प्रतिशत, हरयाणा मे ४५ ६, चडीगढ में ९१.७४, दिल्ली ८४ ६५, राजस्थान ४१ ४६, उत्तरप्रदेश ३६ ५४, बिहार २९ ५, बगाल ३६ ९, मिजोरम १०५ ९०, नागालैंड मे ७४ ८४, दादरा नागर हवेली ७२ ९०, पूरे आसाम की आबादी १९७१ मे ७२ ५ थी, १९९१ में वह घटकर ६७ १३ प्रतिशत ही रह गई है। क्योंकि बगलादेशी मुसलमानो की घुसपैठ से असम की आबादी निरन्तर घट रही है। अब वहा मुसलमानों के वोट तथा उपभोक्ता कार्ड बनने के कारण वे बहुसख्या मे होते जारहे हैं। वहा उनके द्वारा पृथक् इस्लामिस्तान की माग भी की जाने लगी है।

यो तो जनसंख्या के बल पर मुसलमान राष्ट्रीय राजनीति में प्रभावशाली और अनेक स्थानो पर निर्णायक भी होता जारहा है। पर क्या उन की सोच इन ५३ वर्षो मे पाकिस्तान बनने के बाद भी राष्ट्रीय धारा मे परिवर्तित हुई है ? इस सवाल के उत्तर में इस्लाम के प्रसिद्ध विद्वान् मोलाना वहीदुद्दीन खा कहते हैं–

"१९४७ से आज तक मैंने अल्पसख्यक मुस्लिमो की सभाओ मे भाग लिया है, पर मुसलमानो की मैंने एक भी ऐसी सभा नहीं देखी, जो विशेषत भारतीय राष्ट्र की समस्याओ पर विचार करने के लिए की गई हो। भारतीय मुसलमानों की सभाओ मे उनकी कार्यसूची मे देश की किसी भी समस्या का जिक्र बिल्कुल नहीं होता।"

इस जनगणना मे बिहार व उत्तरप्रदेश के जिन जिलो में मुसलमानो की आबादी पहले भी अधिक रही है, वहा अब और भी काफी तेज रफ्तार से आबादी बढ रही है। इसी प्रकार से जम्मू-कश्मीर की जनसख्या की वृद्धि दर अधिक पाई गई है। जबकि यह प्रदेश आतकवाद से बुरी तरह से ग्रस्त है।

इसी प्रकार पाकिस्तान, चीन, म्यामार, भूटान, नेपाल की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा से लगनेवाले कई जिलो मे मुस्लिम आबादी की बढोतरी दर का काफी होना भी चिन्ता का विषय है। नेपाल की सीमा से लगा उत्तर प्रदेश का लखीमपुर खीरी, श्रावस्ती जिला भी मुस्लिम बहुल होगया है। जबकि नेपाल की सीमा से लगनेवाले बिहार व उत्तरप्रदेश के सिद्धार्थनगर व महाराजगज, यही नहीं रिपोर्ट मे प्रधानमत्री का ससदीय क्षेत्र लखनऊ भी मुस्लिम आबादी की वृद्धि से खतरनाक क्षेत्र के तौर पर दर्शाया गया है। सीमाचल के किशनगज, अररिया, पूर्णिया, कटिहार की आबादी मे मुस्लिम बहुल होगया है। नेपाल की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा के आसपास के सीतामढी, दरभगा, समस्तीपुर की आबादी भी बदल गई है। यही स्थिति बिहार के चम्पारण की है।

इसी प्रकार दशक भर से कश्मीर व लेह के इलाको मे आबादी वृद्धि की रफ्तार ३० फीसदी से अधिक होगई है। कश्मीर घाटी मे तो कोई भी अन्य जातीय रहा ही नहीं है। मुस्लिम प्रदेश होगया है। पृथक्ता के लिए भयकर आतकवाद चल रहा है। यह सब हुआ ३७० धारा के कारण से। प०

(शेष पृष्ठ दो पर)

आर्यसिद्धान्त-शिक्षा

इन्द्रसिंह आर्य, आरजैड-६०, ब्लाक-ओ, नया रोशनपुरा, नजफगढ़, दिल्ली-४३

(गताक से आगे)

कौन कहता है कि हनुमान् पर्वत उठा लाए थे ?

सर्व साधारण लोगो की है यह अभिव्यक्ति।
कि पवनपुत्र हनुमान् मे थी अपरिमित शक्ति।।
वे अकेले ही उठा लाए थे एक विशालकाय पर्वत।
जो देखने मे था लम्बा, चौडा और विस्तृत।।
हम आर्य, सुनी-सुनाई बातो पर कभी नहीं करते विश्वास।
हम विषय के अनुरूप अर्थ की सगति लगाकर भ्रान्ति का समूल करते हैं विनाश।।
देखो ! यह घटना उस समय की है जब राम और लक्ष्मण युद्ध मे होगए थे मूर्च्छित।
समस्त सेना स्तब्ध शोकातुर खडी थी, आसुओ से तर हो रही थी भूमि प्रहत।।
यकायक वैद्य सुषेण ने कहा क्षीरसागर के शिखर पर एक औषधियो का पर्वत है वर्तमान।
वहा सजीवकरणी, विशल्यकरणी ये औषधिया हैं विद्यमान।।
इतना सुन हनुमान् ने अविलम्ब क्षीरसागर की ओर किया प्रस्थान।
इतिहास साक्षी है, उनके द्वारा लाई गई औषधियों से राम और लक्ष्मण के बचे थे प्राण।।
आइये अब हम तनिक पर्वत शिखर शब्द पर भी कर लेते हैं विचार।
जिसके वास्तविक अर्थ की अनभिज्ञता से जगत् मे फैला है भ्रामक प्रचार।।
देखिए यहा प्रकरण के अनुसार पर्वत का अर्थ पौधा तो शिखर का कोपल यानि के हैं, बौर।
जिनके सूघने मात्र से राम और लक्ष्मण स्वस्थ हुए शुभचितको का हृदय हुआ था आनन्द विभोर।।

अंगिरस पुत्र सर्वश्रेष्ठ चरित्र के धनी

तुम्हीं हो श्रेष्ठ गदाधारी, सर्वश्रेष्ठ तीरदाज।
तुम्हीं ने किया है इस अखिल भूमण्डल पर राज।।
तुम्हीं हो विप्र सुधन्वा, राम के आचार्य।
पिता श्री अगिरा जिनके स्मरणीय हैं पुनीत कार्य।।
तुम्हीं हो बृहस्पति के पुत्र 'कच' अंगिरा ऋषि के पौत्र।
तुमने गुरु (शुक्राचार्य की) पुत्री से विवाह न करके रोशन किया है निज कुल गोत्र।।
यह तर्क देते हुए कि हे देवायानी, हम दोनों एक ही पिता की सतान हैं तुम पुत्री तो मैं पुत्र।
फर्क बस इतना सा है कि मैं उनका ज्ञानज पुत्र हू जबकि तुम्हारा उत्पत्ति स्थान है उदर।।
इन्द्रसिह आर्य घर-घर पहुचा दो अपने पूर्वजो का यह सदेश।
सदाचार सम्पन्न विद्या, शिक्षा गुणो से अलकृत साक्षित्व नि श्रेयस।।

आर्यसमाज की दृष्टि में वेद और रामचरितमानस

मोहन– ससार मे कौनसी पुस्तक है अत्युत्तम।
देवव्रत– हम वेदों को स्थान देते हैं प्रथम।।
मोहन– वेदो मे क्या है ऐसी विशेषता।
देवव्रत– अपौरुषेयता ही है इनकी श्रेष्ठता।।
ईश्वर आदिसृष्टि मे करता है वेदो का प्रकाश।
मूर्ख लोग, इनसे इतिहास सिद्ध करने का करते हैं दुस्साहस।।
वेद स्वत प्रमाण हैं अर्थात् नगण्य है इनके समक्ष मनुष्यकृत ग्रथो की प्रामाणिकता।
वेदो के शब्द लोक मे, न कि लोक के शब्द वेदो मे आए हैं यह भी जान लेने की है आवश्यकता।।
ऋषि दयानन्द के शब्दो मे वेद सब सत्यविद्याओ का है पुस्तक।
एक और विशेष बात, इनमे बुद्धि के विपरीत कोई भी शब्द नहीं है, आरम्भ से अत तक।।
मोहन– अच्छा तो यह बतालाइये ! रामचरित+मानस के विषय मे आपके क्या हैं ख्याल।
देवव्रत– यह कल्पित प्रसगो की एक पिटारी है या यू कहिए भ्रामक विचारो का है एक जाल।।
मोहन– वृत्तिकार की कलम से तो उनकी यह रचना अलौकिक है, तो चौपाइया हैं बेमिसाल।
देवव्रत– हा ! एक तर्कहीन व्यक्ति उनकी चिकनी+चूपडी बातो को मानने के लिए विवश हो सकता है तत्काल।।
मोहन– क्या आप कोई ऐसा प्रस्तुत कर सकते हैं उदाहरण।
ताकि हमे भी विदित होजाए इसकी क्षुद्रता का कारण।।
देवव्रत– देखिए हम यथाक्रम प्रस्तुत करते हैं कतिपय प्रमाण।
जिनसे निरक्षर तो क्या विद्वज्जन लोग भी हैं अनजान।।

(क) जिस मातृशक्ति का मनुष्य बाल्यावस्था मे करता है दुग्धपान।
जिसकी उपस्थिति के बिना अधूरे समझे/माने जाते हैं सभी धार्मिक अनुष्ठान।।
यह भी सच है–जिस कुल मे नारी की पूजा होती है, उसी कुल का सर्वतोमुखी होता है उत्थान।
तब कितना अशोभनीय है उसके प्रति यह कहना कि स्त्री होती है अवगुणो की खान।।

(ख) यदि तुलसीदास जी को यत् किंचित् भी सृष्टिविद्या का होता ज्ञान।
तो वे पृथ्वी को स्थिर तो सूर्य को नहीं लिखते चलायमान।।
इससे अधिक और क्या होगी उनकी जडता की पहचान।
कहते हैं कि पृथ्वी कछुए की पीठ और शेषनाग के फनो पर है विराजमान।।

(ग) पहला स्थल-राम और लक्ष्मण दोनो भाई प्रात साय ईश्वर की किया करते थे वन्दना।
दूसरा स्थल-जनमानस को भ्रमित उपदेश ! जीवन के अतिम समय तक राम राम ही जपना।।
जो लोग तुलसी को महाकवि की सज्ञा देकर उसके पांडित्य को लेकर मचाते हैं शोर।
हम उनसे पूछते हैं ? तुम्हारे ईश्वर राम हैं, तो क्या भला राम के थे कोई और।।

(क्रमश)

क्या भारत का.............(प्रथम पृष्ठ का शेष)

नेहरू जी की राजनीतिक भूलो के कारण से। आज कश्मीर मे पृथक्तावादी विभिन्न सगठन सक्रिय हैं। जैसे–(१) हिज्ब-उल-मुजाहिदीन। (२) हरकत-उल-मुजाहिदीन। (३) लश्कर-ए-तोबा। (४) जम्मू-कश्मीर लिबरेशन फ्रट। (५) अलबर्क। (६) तहरीक-उल-मुजाहिदीन। (७) अलजिहाद। (८) अल-उमर-मुजाहिदीन। (९) हिज-बुल्लाह। (१०) दुखतरन-ए-मिल्लत आदि।

आप दूर क्यो जाते हैं ? आपके निकट पजाब के जालन्धर मे अचानक मुस्लिम जनसख्या का भयकर विस्फोट हुआ है। उल्लेखनीय है कि १९८१ मे जनगणना के अनुसार जालन्धर जिले की कुल मुस्लिम आबादी ५,४२९ थी और जालन्धर शहर मे मुस्लिमो की सख्या मात्र ६४६ थी। जबकि इस समय जालन्धर जिले मे अनुमानित मुस्लिम जनसख्या १ लाख, २५ हजार तक बताई जारही है। शहर मे मुस्लिम जबर्दस्त रूप से बढते जारहे हैं। मुस्लिम हिन्दू मौहल्लो मे किराये पर रह रहे हैं। १५ मुस्लिम ढाबे पर चल रहे हैं। जालन्धर जिले मे इस समय ७० मस्जिदे हैं। इनमे पता ना कौन, कश्मीरी मुस्लिम भी रह रहे हैं। जालन्धर शहर मे २२ मस्जिदे हैं। यहा रहनेवाले मुस्लिम बिहारी व उत्तरप्रदेश के हैं। जालन्धर मे पहली मुस्लिम कालोनी १९९२ मे बनी थी, उस समय कालोनी की आबादी २-३ हजार थी, आज ८-१० हजार होगई है। शहर मे दो मदरसे चल रहे हैं। एक मदरसा इमाम नासिर की मस्जिद मे चल रहा है। दूसरा बूटा मण्डी की जालीवाल कालोनी मे है। इस समय जालन्धर लोकसभा क्षेत्र में ६०-७० हजार मुस्लिम मतदाता हैं। यह है आपके जालन्धर की बात।

इसी प्रकार आज जनसख्या वृद्धि रफ्तार पाकिस्तान की सीमा से लगे राजस्थान के जैसलमेर, बाडमेर, बीकानेर व जोधपुर जिलो को भी आका गया है। गुजरात के कच्छ भुज जो पाकिस्तान के निकट हैं, उसके ग्राम मुस्लिम होगए हैं। महाराष्ट्र के औरगाबाद, मुम्बई, पुणे की हालत भी इस जनगणना मे बुरी बताई गई है। कर्नाटक मे बगलोर की आबादी असामान्य रूप से मुस्लिमो की बढ रही है। आध्रप्रदेश रगारेड्डी व हैदराबाद जिलो मे जनसख्या विस्फोट की जानकारी मिली है। चीन की सीमा से लगनेवाले अरुणाचल प्रदेश की दिबाग घाटी, लोहित व म्यामार से लगनेवाले चनगियाग और भूटान की सीमा से लगनेवाली पश्चिम कामेग जिलो की स्थिति भी मुस्लिम बहुल होने के कारण खतरनाक मानी गई है। चीन से लगनेवाले सिक्किम के तीन जिलो की आबादी भी चिन्ताजनक है।

यही हालत त्रिपुरा, मेघालय, मिजोरम के जिलो मे ईसाइयत जोरशोर से धर्मान्तरण कर रही है। इन्हे विदेशो से धन की आर्थिक सहायता मिलती है। गृहमत्रालय की एक रिपोर्ट के अनुसार किस चर्च को कितनी आर्थिक सहायता मिली है। ये आकडे भी पढ लीजिये–

(१) सिल्चर के गिरजाघर को ४६५९०००, (२) डिब्रूगढ को १६८३६०००, (३) तेजपुर को १६८७७०००, (४) पूर्वी धारा पहाडी को १६७४०००, (५) गुवाहाटी को ४०५०००, (६) सिस्टर ऑफ चैरिटी होम को १०७७७०००, (७) शिलाग के आर्क विशप को ५४५५९०००, (८) इम्फाल के विशप को ११६२६०००, इन्हे विदेशी सहायता धर्मान्तरण के लिए मिलती है। इस प्रकार पूर्वोत्तर भारत के असम को छोडकर सात प्रदेशों में ईसाइयत का साम्राज्य स्थिर होगया है। असम में बगलादेशी मुस्लिम घुसपैठिये दो करोड की सख्या मे आ घुसे हैं, जो अभी से मन्दी-मन्दी आवाज मे 'इस्लामिस्तान' की आवाज लगाने लगे हैं। यह है संक्षिप्तसा विवरण १ मार्च २००१ की जनगणना का।

ओ३म् इति शम्।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

बाये से श्री ओंकारनाथ आर्य (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई), वेदोपदेश पुरस्कार प्राप्तकर्ता डा० शिशुपाल रामभरोस (सरक्षक आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका, डरबन), सम्मान स्वरूप रु० १५००१/-, रजत ट्राफी, शाल, श्रीफल भेट किया गया। साथ मे मच पर उपस्थित हैं, डा० स्वामी सत्यम् (अमेरिका), **पूज्य स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती (प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली)**, कैप्टन देवरत्न आर्य (समारोह सयोजक)।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के सहयोग से मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा ने जो अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिनाक २३ से २६ मार्च, २००१ तक आयोजित किया था, वह आशा से कहीं अधिक सफलता से २६ मार्च, २००१ को मध्याह्न २ बजे सम्पन्न हुआ। चारों दिन के इस सम्मेलन मे जनता की उपस्थिति बहुत अच्छी रही और अन्तिम दिन तो ५० हजार से ऊपर सख्या थी। इस सम्मेलन की सबसे बडी विशेषता यह रही कि आर्य जनता भारत के हर कोने से यहा उपस्थित थी और प्रात १० बजे से लेकर रात को १० बजे तक विभिन्न सम्मेलनो में जो भी भाषण इत्यादि हुए उनको बडी ही शान्ति से एकाग्र होकर सुनती रही। आर्य महासम्मेलन के प्रति जनता का अपार उत्साह देखने योग्य था। जो लोग बाहर से आये थे जिन्होंने अनेको सम्मेलनो मे भाग लिया था उनके शब्दो के अनुसार मुम्बई मे होनेवाला यह प्रथम सम्मेलन भारत मे अनेक स्थलो पर हुए सम्मेलनो की अपेक्षा बहुत बडा था और इसने मुम्बई मे ही नहीं समूचे भारत मे एक नया इतिहास बना दिया। ऐसा सम्मेलन जिसमे सारी जनता प्रेमपूर्वक भाग ले रही थी, अपने ढग का बहुत ही अनोखा था।

दूसरी विशेषता इस सम्मेलन की यह थी कि इन चारो दिनो मे लगभग ८० वक्ताओ ने भाग लिया, जिसमे उच्च कोटि के आर्य विद्वान् मौजूद थे। इन्होंने आर्यसमाज की भावी योजनाओ पर विस्तार से विचार किया, अतीत के बलिदानियों, वीर पुरुषो और श्रद्धालु भक्तो के चरित्र जनता के सम्मुख रखकर उनको भावी उज्ज्वलमय इतिहास बनाने की प्रेरणा दी।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने बडे जोशीले शब्दों में कहा-**"समय आगया है कि समाज संगठित होकर आगे बढे और जल्दी से जल्दी अपने आपको एक आर्य राष्ट्र के रूप मे प्रस्तुत करे।"** सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष डा० सुखदेवचन्द सोनी (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका) ने समस्त प्रतिनिधियो का स्वागत करते हुए कहा कि "मानव मात्र को सभी प्रकार की बुराइयो से मुक्त कर सच्चे अर्थो मे आर्य अर्थात् परमात्मा की सन्तान बनाने के लिए नेताओं और जनता को अतुल प्रयास करना चाहिए।"

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने अपने वक्तव्य मे कहा कि ऋषि दयानन्द का ऋण हम सभी पर है, उनका स्मरण कर हमे सकल्प लेना चाहिए कि हम कैसे अधिक से अधिक सगठित होकर वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार कर सकें। सायकालीन सम्मेलन की अध्यक्षता डा० धर्मपाल (कुलपति गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरद्वार) ने की। पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती (साहिबाबाद) ने बहुत सुन्दर भाषा मे बताया कि "आज इन्सान खोगया है, विषय वासनाओं में, अपने स्वार्थ मे, लोभ-लालच मे डूबा हुआ इन्सान भटक रहा है, इस खोज मे है कि उसे सच्चा रास्ता कब मिलेगा, उसे सुख और शान्ति कब प्राप्त होगी।"

दिनाक २४ मार्च २००१ वैदिक धर्म ससद् में 'इसान की तलाश मे' इस विषय पर चर्चा हुई। इस सम्मेलन के अध्यक्ष श्री सोमपाल जी (सदस्य योजना आयोग, दिल्ली) थे। स्वामी सत्यपति जी सरस्वती (योगदर्शन महाविद्यालय साबरकाठा), परमपिता परमात्मा का आदेश मनुर्भव, कहा खो गया इसान आज ? पर अपने उत्तम विचार प्रस्तुत किये।

दिनाक २५ मार्च २००१ वैदिक धर्म संसद् मे 'स्वर्ग की तलाश मे' इस विषय पर चर्चा हुई, इस सम्मेलन के अध्यक्ष पूज्य स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती थे। मुख्य अतिथि श्री देशबन्धु गुप्ता (चेयरमैन लूपिन लेबोरेटरिज लि०), विशेष अतिथि श्री प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास (पूर्व प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली), वैरिष्टर दीपचन्द गार्डी (सुप्रसिद्ध समाज सेवक) उपस्थित थे। इस प्रसग मे डा० सत्यपालसिह (DIG) ने बहुत सुन्दर रूप में जनता की भाषा में स्वर्ग की व्याख्या की और कहा "स्वर्ग इसी ससार में है, कहीं किसी और जगह नहीं है, हम अपने जीवन को सुख-शान्तिमय बनायें, परोपकारी बनायें और परिवार मे सुख-शान्ति अच्छी शिक्षा इन सबके द्वारा बच्चे प्रगति के मार्ग पर चलें ताकि उनका भविष्य उज्ज्वल हो वही स्वर्ग का वास्तविक स्वरूप है।" स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती (उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली), स्वामी इन्द्रवेश (का० प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा), बिग्रेडियर चितरजन सावन्त (नोएडा), श्री सच्चिदानन्द शास्त्री (कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली), डा० रघुवीर वेदालकार ने "स्वर्ग की तलाश मे" इस विषय पर अपने उत्तमोत्तम विचार प्रस्तुत किये। इस सम्मेलन का सचालन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने किया।

अपराह्ण के सम्मेलन मे आर्य महिला सम्मेलन सम्पन्न हुआ, जिसकी अध्यक्षा भारत सरकार की ऊर्जा राज्यमत्री श्रीमती जयवन्ती बेन मेहता थी। विशेष अतिथि श्रीमती शकुन्तला देवी आर्या (पूर्व महापौर दिल्ली महानगर पालिका) उपस्थित थीं। इस सम्मेलन मे श्रीमती सरोजिनी गोयल (मुम्बई) ने महिलाओं को श्रद्धा, लगन और समर्पण की प्रतिभा के रूप मे बहुत सुन्दर रूप से चित्रित किया। श्रीमती उज्ज्वला वर्मा (दिल्ली) ने कहा कि "सस्कृति की स्रोत महिला ही है", "कैसे हो नारी के गौरव की रक्षा" इस विषय मे सुश्री पुष्पा शास्त्री (रेवाडी) का व्याख्यान जनता पर बहुत प्रभावकारी रहा, उन्होने ऐतिहासिक घटनाओं के आधार पर वीरतापूर्ण नारी की गौरवगाथा प्रस्तुत करके जनता मे उत्साह की लहर फैला दी। लोगों ने उनके व्याख्यान को बहुत सराहा। डा० उषा शास्त्री ने बडे सुन्दर रूप मे स्पष्ट किया कि "महिला ही अपने घरो के आगन को आर्यो का आगन बना सकती हैं।" श्रीमती शिवराजवती आर्या (मुम्बई), श्रीमती आशारानी (कानपुर), सुश्री कलावती आचार्या आदि ने महिला सम्मेलन मे अपने विचार व्यक्त किये। इस महिला सम्मेलन का सयोजन श्रीमती शशिप्रभा (दिल्ली) ने किया।

आर्य महासम्मेलन के अवसर पर "वैदिक विहार" की स्थापना की योजना के सम्बन्ध मे डा० सत्यम् जी और कैप्टेन देवरत्न आर्य ने सारी योजना का विस्तार रूप मे उल्लेख किया। स्वामी सत्यम् जी ने कहा कि यहा से लगभग ७० किलो मीटर दूरी पर वाडा तहसील मे आर्य महासम्मेलन के सयोजक आर्य नेता कैप्टन देवरत्न आर्य और उनके पुत्र श्री आशीष आर्य व अश्विनी आर्य ने १४ एकड भूमि का दान इस योजना के लिए दिया है, जो वैतरणा नदी के किनारे बननेवाला है। इस योजना मे एक "अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक अनुसधान केन्द्र" की स्थापना की जारही है, जिसमे विभिन्न विदेशी भाषाओ मे विद्वान् तैयार कर उन्हे भारत के बाहर वैदिक सस्कृति के प्रचार हेतु भेजा जाता रहेगा। इस केन्द्र में वृद्धाश्रम, चिकित्सालय, आर्ष गुरुकुल, विद्यालय इत्यादि सामाजिक उन्नति के सभी अगो का समावेश होगा। कैप्टन देवरत्न आर्य ने कहा कि "इसमे आर्य विद्वान् और सन्यासियो के रहने का भी बहुत अच्छा प्रबन्ध होगा, जहा पर उनकी वृद्धावस्था मे सेवा और देखरेख का प्रबन्ध होगा।

समापन के रूप मे सम्मेलन के अधिकारियो ने अपना सन्देश उपस्थित जनता को दिया। इसी सिलसिले मे स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने कहा कि **"हम हरयाणा मे शीघ्र ही बहुत बडा आर्य महासम्मेलन करेगे और उन्होने जनता से अपील की कि ऐसे आर्य महासम्मेलन भारत मे स्थान-स्थान पर होते रहने चाहिये, इससे समाज मे गति और स्फूर्ति बनी रहेगी।"**

यज्ञ

फुटपाथ पर गरीब लोग अपने बच्चो को छोडकर भाग जाते हैं-चार महिलाओ ने जिनको हम नन्ज कहते हैं-ऐसी एक सौ कन्याओ को जिनकी आयु ५ से ८ वर्ष तक की थी, अपने परिश्रम में लेआई और रहने खाने पहनने और पढाने का प्रबन्ध किया है-सस्था का नाम 'प्रेम दान विद्यालय' रखा है-अब वह कन्याए कोई दसवीं श्रेणी मे है कोई कालेज जाती है। उनका व्यवहार, बोलचाल और सस्कार देखने को बनता है।

यह लडकिया बडी होकर क्या हिन्दू बनेगी ? चार ईसाई महिलाओ ने इनको बडा किया और इन्सान बनाया है। हिन्दू स्वय तो कुछ करते नहीं और कहेगे कि ईसाई जबरदस्ती लोगो को ईसाई बनाते हैं।

इस प्रकार के जब तक यज्ञ नहीं किये जायेगे तब तक आप कितने भी मत्र पढकर आहुतिया देते जाये कुछ होनेवाला नहीं। अभी कारगिल का युद्ध हवन से नहीं जीता गया-शत्रु को शक्ति से हराया गया था।

जिन चार महिलाओ ने सौ लडकियो को जीवनदान दिया है क्या हमारे हिन्दू समाज मे ऐसी महिलाए जो प्रतिदिन यज्ञ करती हैं इस प्रकार कोई यज्ञ कराकर दिखायेगी ? यदि हम कोई ऐसा कार्य कर सके तो हमारा यज्ञ सफल होगा। **आओ यज्ञ करना सीख ले।**

–ओंकारनाथ, २७९, ओ सदन, ३६वा रास्ता, बान्द्रा, बम्बई- ४०००५०

सुप्रसिद्ध गायिका लता मंगेशकर ने शुद्ध संस्कृत मंत्रोच्चारण के संस्कार आर्यसमाज से प्राप्त किये

-प्रा० (डॉ०) कुशलदेव शास्त्री, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस महाविद्यालय, नादेड पिन-४३१६०१ मराठवाडा-महाराष्ट्र।

सुप्रसिद्ध पार्श्वगायिका लता मगेशकर राष्ट्रीय और अतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारतरत्न, पद्मभूषण, रसेश्वर, तानसेन, सुरश्री आदि अनेक सम्मानो से सम्मानित होचुकी हैं। उनकी देश-विदेश की सगीत यात्राये तो अत्यत ही लोप्रिय सिद्ध हुई हैं।

ऐ ! मेरे वतन के लोगो, जरा आख मे भरलो पानी।
जो शहीद हुए हैं उनकी, जरा याद करो कुर्बानी।।

कवि प्रदीप द्वारा लिखे गये और लता मगेशकर द्वारा शहीदो की श्रद्धाजलि में गाए गये इस गीत ने प० जवाहरलाल नेहरू जी को ही नहीं, परन्तु असख्य श्रोताओ को भावविहल किया है। मातृभूमि के लिए अपना सर्वस्व अर्पण करने की प्रेरणा लता मगेशकर द्वारा गाये गये इस गीत से समय-समय पर मिलती रही है।

लता दीदी को २२ भाषाओं मे लगभग बीस हजार से भी अधिक गीत गाने का श्रेय प्राप्त है। विश्वस्तरीय कीर्तिमान 'गिनीज बुक' में विश्व मे सर्वाधिक गीत ध्वनि मुद्रित करनेवाली गायिका के रूप में उनका गौरवास्पद उल्लेख है। गीत के प्रसग को समझकर, काव्यार्थ ध्यान में रखकर शब्दो को यथायोग्य गति देकर, वैसे ही भावो की अभिव्यक्ति के लिए आवाज को कभी कम, कभी ज्यादा सस्कारित करके, वे गीत प्रस्तुत करती हैं, इसलिए उनके गाये गीतों को एक अलग ही सौंदर्य व स्तर प्राप्त होता है। कुछ ध्वनिमुद्रिकाओ मे उन्होने सस्वर श्लोको और वेदमत्रो का भी गायन किया है।

अतर्राष्ट्रीय निर्वाण शताब्दी महोत्सव के अवसर पर जैसे अजमेर मे विविध क्षेत्रीय सुप्रसिद्ध कलाकारो को सम्मानित किया था। वैसा सम्मान आर्यसमाज की सक्षम सस्थाओ की ओर से गीत-सगीत के क्षेत्र मे एक युग का परिवर्तन करनेवाली प्रतिभावान् गायिका लता दीदी का धूमधाम से किया जाना चाहिये। साथ ही एक ऐसी योजना बनानी चाहिये जिसके माध्यम से सस्वर वेदमत्रो और आर्यसमाजी भजनो की ध्वनिमुद्रिकाये बनाई जासके।

प्राय आर्यजगत् मे यह बात अज्ञात ही है कि लता दीदी को शुद्ध सस्कृत वाणी के सस्कार आर्यसमाज के माध्यम से प्राप्त हुये हैं। मुबई से प्रकाशित 'लोकसत्ता' नामक मराठी दैनिक (२३ अप्रैल १९८९, पृष्ठ ५) मे स्वय लता दीदी द्वारा लिखित एतद् विषयक मूल मराठी सस्मरण उसके हिंदी अनुवाद के साथ मैं आर्य ससार की जानकारी के लिए प्रस्तुत कर रहा हू-

"पुण्यात आम्ही राजिवडेकराच्या चालीत रहात हो तो, तेव्हा आमच्या रोजारी शर्मा नावाचे आर्यसमाजी रहात असत, ते मत्र पठण शिकवीत बाबाच्या सांगण्यावरून आम्ही भावड त्याच्याकडे मत्र-सस्कृत शिकायला जात असू. सस्कृत ने वाणी शुद्ध होते यावर त्याची श्रद्धा त्यानतर आम्ही पुण्यात घर घेतल त्या गृह प्रवेशाच्या वेळी होम-हवन झाले बाबानी आम्हाला तेव्हा मत्र पठण करायला लावल, आमच्या नव्या घरात आम्ही मुल धडाधडा सस्कृत मत्र म्हणत आहोत हे बाबा कौतुकान पहात होते, पुटे याच घरात असता त्याचा मृत्यू झाला आम्हाला हे घर सोडाव लागल, पण वाणीचे सस्कार पुसले नाहीत स्वच्छ शुद्ध शब्दोच्चार आम्ही मगेशकरानी बालपणीच आत्मसात् केलेला सस्कार आहे।"

अर्थात् "पुणे मे हम राजिवडेकर की 'चाल' मे रहते थे। (चाल से तात्पर्य उस बडे भारी मकान से है, जिसमे पचासो किरायेदार सपरिवार रह सके) तब हमारे पडोस मे राजोरी शर्मा नामक एक आर्यसमाजी रहा करते थे। वे हमे मत्रोच्चारण करने की पद्धति सिखलाते थे। पिताश्री मास्टर दीनानाथ जी मगेशकर के कहने पर हम भाई-बहन उनके पास सस्कृत भाषा मे लिखे मत्र पढने जाते थे। तत्पश्चात् पुणे मे हमने एक घर लिया। गृह-प्रवेश के समय होम-हवन सम्पन्न हुआ। उस समय पिताजी ने हमे भी मत्रपाठ करने के लिये प्रेरित किया। जब अपने इस नये घर में हम सब बच्चे धाराप्रवाह मत्र पाठ कर रहे थे तब उस दृश्य को बडे कुतूहल के साथ पिताजी देख रहे थे। आगे चलकर इसी घर मे रहते समय पिताजी का देहात हुआ और हमे घर छोडना पडा। पर इस घर मे रहते समय शुद्ध सस्कृत वाणी के जो सस्कार हमारे दिलो-दिमाग पर पडे, वे अमिट रहे। हम लता मगेशकर भाई-बहनो ने बचपन मे ही स्वच्छ, शुद्ध शब्दोच्चारण का सस्कार आत्मसात् कर लिया था।"

सगीत के समस्त अलकारो को अपनी असामान्य ग्रहण शक्ति द्वारा ग्रहण कर देव दुर्लभ गायन प्रस्तुत करनेवाली लता दीदी को सश्रद्ध नमन। साथ ही आर्यजगत् के माध्यम से दीर्घायु-चिरायु-हितायु होने की शुभकामनाए।

जीवेत् शरद शतम्। भूयश्च शरद शतात्।

निवास सपर्क **प्रा० (डॉ०) कुशलदेव शास्त्री**, रामनद नगर, पावडेवाडी नाके के पास, ग्राम-जिला नादेड-४३१६०२। दूरभाष ०२४६२ - ५०९२३।

उत्कल दिवस पर नुआपड़ा जिलापाल द्वारा पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी का अभिनन्दन

सेवा की तडप लेकर उडीसा आकर इस पिछडे क्षेत्र मे गत ३० वर्ष से सेवारत वैदिक साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान् उडीसा एव छत्तीसगढ मे वैदिक धर्म के प्रचार के केन्द्र, शुद्धि आन्दोलन के सूत्रधार महाविद्यालय गुरुकुल आमसेना, आर्ष कन्या गुरुकुल आमसेना तथा रामदुलारी बृजकिशोर धर्मार्थ हस्पताल के सचालक पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी की सेवा और कार्य से सारा आर्यजगत् तो परिचित एव प्रभावित है ही, उडीसा की जनता एव अधिकारी भी आपके सेवाकार्य को प्रेरणाप्रद मानते हैं। इनकी सेवा कार्य से प्रभावित होकर उत्कल दिवस एव नुआपडा जिला स्थापना दिवस १ अप्रैल को नुआपाडा में एक भव्य कार्यक्रम जिला प्रशासन ने उप जिलापाल श्री जब्बर भोई की अध्यक्षता मे आयोजित किया। इस अवसर पर पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी को उनके नुआपडा जिले मे किये गये सेवा कार्य से प्रभावित होकर उन्हे **नुआपड़ा जिला का श्रेष्ठ समाजसेवी** मानकर इस समारोह मे सायंकाल ७ बजे नुआपडा के जिलापाल श्री विष्णुपद सेठी ने अभिनन्दन पत्र शाल श्रीफल और मोतियो की माला अर्पित कर उनका सम्मान किया। इस अवसर पर स्थानीय युवा विधायक श्री वसन्तकुमार पण्डा के अतिरिक्त अनेक अधिकारी एवं भारी सख्या मे जनता उपस्थित थी। विधायक श्री पण्डा जिलापाल श्री सेठी उप जिलापाल आदि सभी वक्ताओ ने पूज्य स्वामी जी के कार्यों की भूरि-भूरि प्रशसा की। अभिनन्दन पत्र जिला सूचना लोक सम्पर्क अधिकारी श्री ईश्वरप्रसादसिह ने पढकर सुनाया। कार्यक्रम के मुख्यवक्ता श्री रविरजन प्रधान थे।

इस अवसर पर श्री स्वामी जी ने जिलापाल आदि सभी अधिकारियो को धन्यवाद दिया, आभार माना तथा उनके द्वारा जनता की सेवा कार्य की प्रशसा करते हुए उन्होने अधिकारियो से मास, शराब तथा रिश्वत आदि दोषो से बचने का आग्रह करते हुए कहा कि आप लोग इस पिछडे जिले को एक आदर्श जिले के रूप मे बदलने का यत्न करे। इससे आप सबको भगवान् से बहुत आशीर्वाद मिलेगा। उपस्थित अधिकारियो को गुरुकुल की ओर से उडिया एव अग्रेजी की पुस्तके भेटस्वरूप दी गई।

-स्वामी व्रतानन्द सरस्वती,
प्रधान उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा, गुरुकुल आश्रम आमसेना (उडीसा)

अंग्रेजी बोलने की बीमारी

मैं उनमे से नहीं हू जो "खाते हिन्दी की हैं, गाते अग्रेजी की हैं"। मुझे मेरे देश की इस भाषा से प्यार है, जिसे हम संविधान मे राष्ट्र और राजभाषा का पद देने के बावजूद सही अर्थों मे स्थान दे पाने मे पूरी तरह असफल रहे हैं। हिन्दीभाषी होते हुए भी घर परिवार मे अग्रेजी मे बाते कर अपने को अति आधुनिक मानने की हीनभावना रखनेवाले यह नहीं जानते कि जापान, फ्रास, स्पेन, रूस आदि देशो के लोग अपनी राष्ट्रभाषा पर कितना गर्व करते हैं। दूसरी ओर हमे गर्व इस पर होता है कि हम अग्रेजी मे बात करते हैं। हवाई जहाज, होटल, रेस्टोरेट इन स्थानो पर अनेक बार अनुभव हुआ कि वहा के हिन्दीभाषी कर्मचारी भी अग्रेजी मे ही बात करना पसद करते हैं। उस दिन एक रेस्टोरेट में "क्या खाना खायेगे" पूछनेवाले कर्मचारी ने जब अग्रेजी मे मुझसे मेरी पसद जाननी चाही तो मैंने हिन्दी मे बता दिया। इसके बाद वह जब भी बात करे, अग्रेजी मे बोले और मैं हिन्दी मे जवाब दू। मैं खीज गया। पूछ ही बैठा "आप हिन्दी नहीं जानते ? क्यो नहीं जानता, बिल्कुल जानता हू। तो फिर यह अग्रेजी क्यो ? सच बताऊ साहब, हमे हिदायत है कि ग्राहको से अग्रेजी मे ही बात करे। हमारा रेस्टोरेट बहुराष्ट्रीय कपनी का है।" मैंने पूछा "फिर वह जो चीनी जापानी जैसे दो चार लोग बैठे हैं, वे ?' बीच मे ही उसने मुझे टोक दिया, "वे अग्रेजी-हिन्दी कुछ नहीं समझते।" मैंने एक और सवाल दागा, "फिर कैसे बताते हैं क्या खायेगे" सक्षिप्त उत्तर था, "इशारो से"। "भले मानस, इशारो से ही समझना है तो फिर हिन्दी मे पूछो या अग्रेजी मे क्या फर्क पडता है, पर मुझ जैसे भारतीय से तो हिन्दी मे बात करो।" किन्तु कहा-कहा, कितने लोगो से आप यह सवाल उठायेगे। मुझे तो यही लगता है, अग्रेजी अब हम मे और हम उसमे रस बस चुके हैं। बस एक ही चाह रहती है कि हिन्दी बोले या न बोले, पर कम से कम उसका अपमान तो न करे।

यदि कोई हिन्दी मे बात करना चाहता है तो कम से कम उसे निराश तो न करे। यो जहा मजबूरी है वहा अग्रेजी बोलने से भी नहीं कतराना चाहिए। हम भारतीयो की अग्रेजी के तो अग्रेज भी कायल हैं। ज्ञानी जैलसिह कहीं भी बोले, भाषण करे केवल हिन्दी मे, अग्रेजी उन्हे कामचलाऊ ही आती थी, किन्तु अपनी हिन्दी और पजाबी पर उन्हे गर्व था। एक बार एक तमिल भाषी मित्र ने मुझसे कहा भी था, "हमको ज्ञानी जी का हिन्दी समझने मे कोई 'डिफीकल्टी' नहीं होता। **-जसदेवसिह**

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

आर्यसमाज नगली डा० भुगारका जिला महेन्द्रगढ	२० से २२ अप्रैल
आर्यसमाज रेलवेरोड जीन्द जक्शन (वार्षिक वेदप्रचार महोत्सव)	१९ से २४ अप्रैल
आर्यसमाज बसई जिला गुडगाव	२७ अप्रैल

-डॉ० सुदर्शनदेव आचार्य, वेदप्रचाराधिष्ठाता

हरयाणा के कालेजों में हिन्दी के साथ भेदभाव

❑ प्रो० चन्द्रप्रकाश आर्य, अध्यक्ष स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, दयालसिंह कालेज करनाल

हरयाणा के कालेजों मे बी०ए० I, II, III कक्षाओं में अंग्रेजी (अनिवार्य) को प्रति सप्ताह नौ से बारह पीरिएड दिए जाते हैं जबकि हिन्दी (अनिवार्य) को प्रति सप्ताह चार पीरिएड दिए जाते हैं। हिन्दी भी १०० अंक की है तथा अंग्रेजी का प्रश्नपत्र भी १०० अंक का है। फिर यह भेदभाव क्यो ? करनाल, पानीपत, कैथल, अम्बाला, कुरुक्षेत्र, यमुनानगर आदि में स्थित विभिन्न कालेजो में यही स्थिति है। हरयाणा हिन्दी भाषी राज्य है, यहा की सरकारी भाषा हिन्दी है फिर भी हिन्दी की उपेक्षा क्यो है ? एक ओर हरयाणा सरकार ने स्कूलो मे पहली कक्षा से अंग्रेजी विषय को लागू कर दिया है तो दूसरी ओर हिन्दी को बराबर का अधिकार नहीं दिया जा रहा है। उक्त शब्द उस ज्ञापन के हैं जो दयालसिंह कालेज, करनाल के स्नातकोत्तर हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० चन्द्रप्रकाश आर्य ने करनाल के उपायुक्त तथा अतिरिक्त उपायुक्त क्रमश श्री देवेन्द्रसिंह तथा डॉ० रामभक्त लौंगियान को भेजे हैं।

प्रो० आर्य के अनुसार वर्ष १९९८ मे भी इस बारे मे एक ज्ञापन हरयाणा के राज्यपाल को रजिस्टर्ड पत्र स० ९६५९० ता० १३/४/९८ तथा रजि० पत्र स० २५३४ ता० २०/४/९८ भेजा गया तथा हरयाणा के मुख्यमत्री को भी रजि० पत्र स० ९०५८ ता० १३/४/९८ तथा रजि० पत्र स० २५३३ ता० २०/४/९८ द्वारा भेजे गए। वर्ष १९९९ मे भी हरयाणा सरकार को इस बारे में ज्ञापन भेजा गया। शिक्षामत्री हरयाणा को भी नई शिक्षा नीति के तहत हिन्दी के साथ भेदभाव खत्म करने के लिए एक ज्ञापन भेजा गया।

प्रो० आर्य ने बताया कि इन ज्ञापनो मे माग की गई है कि **हरयाणा के कालेजो मे हिन्दी (अनिवार्य) को अंग्रेजी (अनिवार्य) के बराबर पीरिएड दिये जाये तथा हिन्दी (अनिवार्य) मे भी अंग्रेजी की तरह दो-दो प्रश्नपत्र किये जाये।** इन दो-दो प्रश्नपत्रो हेतु बी०ए० तक के पाठ्यक्रमो में आवश्यक नए विषय (i) सूचना तकनीक (ii) कम्प्यूटर शिक्षा (iii) पत्रकारिता (iv) सचार माध्यम (v) प्रयोजनमूलक हिन्दी (vi) तकनीकी शब्दावली जैसे नए विषय शामिल किए जाये ताकि हरयाणा का विद्यार्थी भावी जीवन मे दूसरो से न पिछडे। इससे विद्यार्थियो का स्तर बढेगा।

दूसरे हरयाणा के कालेजों मे यदि हिन्दी विषय के एक कालेज मे छह अध्यापक हैं तो अंग्रेजी विषय के बारह अध्यापक होते हैं। जैसे दयालसिंह कालेज, करनाल मे हिन्दी विषय मे छह प्राध्यापक हैं और अंग्रेजी विषय मे बारह। प्रत्येक कालेज मे यही स्थिति है। अंग्रेजी विषय के प्राध्यापक हिन्दी विषय की तुलना मे दो गुणा होते हैं। इसका कारण हिन्दी तथा अंग्रेजी विषयो को दिए गए प्रति सप्ताह पीरियडो की असमानता है। यदि बी०ए० कक्षाओ तक हिन्दी (अनिवार्य) को अंग्रेजी के बराबर नौ से बारह पीरियड दिए जाये तो हिन्दी विषय के २००-२५० अध्यापको/प्राध्यापको को कालेजो मे स्थान मिल सकता है तथा इस तरह कालेजो मे हिन्दी विषय को समानता/बराबरी का स्थान मिल सकता है।

प्रो० आर्य ने इस बारे मे हरयाणा सरकार से उच्चाधिकार समिति गठित करने की माग की है जिसमे सरकारी प्रतिनिधियो के इलावा कालेजो के हिन्दी प्राध्यापको के प्रतिनिधि भी शामिल किये जाये।

दिल्ली के मिटो रोड स्थित आर्यसमाज मन्दिर को अतिक्रमण विरोधी दस्ते द्वारा तोडे जाने, वैदिक साहित्य एवं विद्वानों के चित्रो को नष्ट करने तथा ब्रह्मचारियो के साथ मारपीट करने के खिलाफ हजारो आर्यसमाजियो ने ससद् के समक्ष १७ अप्रैल को उग्र प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियो पर पुलिस ने आसू गैस के गोले दागे एव पानी की बौछार की। इस प्रदर्शन मे प्रो० शेरसिह, स्वामी सुमेधानन्द, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मत्री प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभा के कार्यकर्ता प्रधान स्वामी इन्द्रवेश, चौ० सूबेसिह, श्रीमती पुष्पा शास्त्री, आर्य केन्द्रीय सभा गुडगाव के सदस्य, श्री तेजपाल मलिक दिल्ली, श्री किशनचन्द सैनी मत्री वेदप्रचार मण्डल जिला गुडगाव, राजधानी के विभिन्न आर्यसमाजी सगठन, डी०ए०वी० कालेज प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष श्री ज्ञानप्रकाश चोपडा आदि हजारो व्यक्तियो ने भाग लिया। प्रदर्शनकारियो को सम्बोधित करते हुए नेताओ ने प्रशासनिक अधिकारियो द्वारा आर्यसमाज मदिर को तोडे जाने की घोर आलोचना की। सार्वदेशिक सभा एव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारियो ने प्रदर्शन मे भाग लिया।

प्रो० शेरसिह जी पूर्व रक्षाराज्यमत्री के नेतृत्व मे एक शिष्ट मण्डल गृहमत्री श्री लालकृष्ण आडवानी से मिला। इस शिष्टमण्डल मे स्वामी अग्निवेश, स्वामी इन्द्रवेश, स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, चौ० साहबसिह वर्मा पूर्व मुख्यमत्री, श्री मदनलाल खुराना पूर्व मुख्यमत्री दिल्ली, श्री वेदव्रत शर्मा, डा० धर्मपाल आदि ने भाग लिया। श्री लालकृष्ण आडवाणी गृहमत्री ने शहरी विकास मत्री श्री जगमोहन से आर्यसमाज की जायज माग को मानने के लिए कहा। इसी दिन दोबारा साय ५ बजे यह शिष्टमण्डल शहरी विकास मत्री श्री जगमोहन से मिला उन्होंने शिष्टमण्डल की बात को मान लिया तथा घोषणा की कि २२ अप्रैल २००१ को आर्यसमाज मंदिर की आधारशिला रखी जाएगी तथा श्री जगमोहन जी इस कार्य मे पूर्ण सहयोग देगे। स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली आर्यसमाज मन्दिर की आधारशिला रखेगे तथा जगमोहन जी शहरी विकास मत्री इस कार्यक्रम मे मुख्य अतिथि होगे। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने १५ तारीख को ही यह घोषणा की थी कि मन्दिर वहीं बनेगा।

—प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, मत्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

वर चाहिए

पवार राजपूत सुन्दर २३ वर्ष ५'-३" बी०एस०सी० नॉन मैडिकल बी०एड०, एम०एस०सी० गणित कन्या हेतु सुन्दर, सुशिक्षित, सुव्यवस्थित, आर्य विचारोवाला शाकाहारी वर चाहिए।

पता—**विजयपालसिंह विद्यालंकार**
मार्केट कमेटी के साथ नरवाना, पिन-१२६११६

दीर्घ जीवन कैसे प्राप्त करें

विश्व का हर प्राणी सुख और दीर्घ जीवन प्राप्त करना चाहता है। यह भी अटल सत्य है कि यदि मानव अन्त करण से, शुद्ध भावना से अपना जीवनयापन करना चाहे तो सफलता अवश्य प्राप्त होसकती है।

एक हस्पताल के मुख्य चिकित्सक ने अपना अनुभव बताया कि मेरे पास लोग अनेक प्रकार की बिमारिया लेकर आते हैं पर उनका मूल प्रश्न यही होता है कि "मैं कैसे स्वस्थ अनुभव कर सकता हू और दीर्घजीवन प्राप्त कर सकता हू।" फिर आप उनको क्या उत्तर देते हैं ? उन्होने स्पष्ट उत्तर दिया कि हमने लाखों व्यक्तियो की परीक्षा की है, हमारा अनुभव कि अधिकाश लोग अपनी परेशानी और मृत्यु टाल सकते हैं यदि आरम्भ से वे अपने शरीर की ओर ध्यान देने लग जाये अपनी आदतो, खानपान, व्यवहार, विचारो मे दृढता, ब्रह्मचर्य नित्यकर्मों का अनुशासन मे रहकर पालन करे तो यह सच है कि उन्हे हमारे पास आने की आवश्यकता ही नहीं पडेगी।

(१) **सर्वप्रथम अनुभव कीजिये कि मैं स्वस्थ हू और स्वस्थ बना रहूगा** अर्थात् अपनी विचार शक्ति को दृढ और मजबूत बनाये, किसी भी प्रकार की मन मे कमजोरी आने ही न दे। ऐसा भाव पैदा ही न होने दे कि मैं सबसे या फला से कमजोर हू ऐसा सोचना ही हीनभावना को पैदा करता है। जिस व्यक्ति के मन मे हीनभावना होने लग जाती है वह कुछ भी नहीं सोच सकता है और न कुछ कार्य ही कर सकता है। **"मन के हारे हार है और मन के जीते जीत"** इसको हर समय याद रखे। मन में एक ही धारणा बनाये रखे कि आगे बढ रहा हू मेरा स्वास्थ्य अच्छा है और यही सोचते विचारते रहें कि भगवान् मेरा उत्थान हो पतन कभी न हो। मैं किसी से कमजोर नहीं बल्कि मेरा मन, कर्म ऊचे उठानेवाला हो जिससे मेरा स्वास्थ्य सुदृढ होगा।

(२) **मोटापा के रोग से बचे**–आजकल इस रोग से ज्यादा ग्रस्त मिलते हैं। कई व्यक्तियो की यह धारणा है कि बल बढाने के लिए अधिक भोजन, अधिक घी, मेवा, मासाहारी मास खाने पर जोर देते हैं यह उनकी निर्मूल सोच है। कई व्यक्तियों की यह सोच भी है कि ज्यो-ज्यो उम्र बढती है वजन बढता ही है यह भी खतरनाक सोच है। उम्र बढने पर वजन या मोटापा बढने का अर्थ मासपेशियो को क्षति पहुचाना है। ३० वर्ष की उम्र मे यदि आपका वजन ५७/६० के बीच का है तो ६५ वर्ष की आयु तक यह यों का यो ही रहना चाहिये यह उम्र वजन या मोटापा बढने की होती है। प्राकृतिक चिकित्सा वाले तो यहा तक कहते हैं उम्र बढने के साथ-साथ वजन कमती होगा तो ज्यादा चुस्ती रहेगी और तन्दुरुस्त अधिक होगा। यदि ३००/२५० ग्राम वजन प्रतिवर्ष भी घटाये तो इस ढलती उम्र तक लगभग ६-७ किलो कमती हो सकेगा फिर आपका वजन सन्तुलित रहेगा और आपकी कार्य करने की, सोचने की शक्ति, चाल-ढाल युवक के समान होगी। सच ही कहा है मोटे आदमी मे बुढापा जल्दी आता है।

(३) **धूम्रपान बन्द करे**–धूम्रपान दुनिया मे सबसे ज्यादा प्रदूषण पैदा करता है। डाक्टर लोग तो दिल का दौरा पडने पर, दमा या कैंसर भयानक रोग होने पर धूम्रपान को रोकते हैं परन्तु प्रारम्भ से ही इसे रोकना होगा तथा इसके दुष्प्रभाव को मीडिया द्वारा, चित्रो द्वारा, प्रचार द्वारा बताना होगा। इसकी आदत पडने पर छोडने की इच्छा होने पर भी छूटती नहीं। ऐसा देखा गया है कि शराब पीनेवाले ने शराब छोड दी परन्तु तम्बाकू (बीडी, सिगरेट, गाजा) की आदत पर काबू नहीं पासका। एक व्यक्ति धूम्रपान करनेवाला एक ही सिगरेट-बीडी पीने पर लगभग ५००-६०० व्यक्तियों को अपने द्वारा निकाले हुए धुए का दुष्प्रभाव छोडता है और जबरदस्ती उन्हें वह धुआ पीने को बाध्य करता है। आमतौर पर शराबी शराब अकेला ही उसके दुष्प्रभाव से ग्रस्त होगा परन्तु एक धूम्रपान करनेवाला कितनो को अपने दोष के चगुल मे फसाता है। देखकर, पढकर भी हम उस पर पालन नहीं करते। बसो में, सार्वजनिक स्थानो पर सिगरेट की डिब्बी पर या बण्डल पर लिखे हुए को पढते हैं, सार्वजनिक चेतावनी को जानकर भी हम उसे मानते नहीं। ड्राइवर के सामने लिखा है, 'धूम्रपान वर्जित है, स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है" परन्तु बस या अन्य किसी वाहन को चलाते ही सबसे पहले वही उसका खुलेआम शौक से उल्लघन करता है उसे किसी का भय नहीं। बहाना करता है नींद नहीं आने का। यदि आप दृढ सकल्प करे तो प्रेम से पडोसी यात्री से न पीने की कहेंगे तो वह मान जायेगा परन्तु वाहन चालक शीशे मे देखकर प्रसन्न होकर धुए के छल्लों को निहारता हुआ सभी यात्रियो को धुआ पिलाता है और अन्यों को प्रोत्साहित करता है कितना बडा पाप करता है। सरकारी संवैधानिक चेतावनी मात्र लिखने से कुछ नहीं बननेवाला, यह तो मन मे दृढता करने से इस दोष को छोडा जासकता है।

(४) **शराब बन्द हो**–मैं तो यह कहता हू बीडी, सिगरेट और शराब पर सरकार की ओर से इनके निर्माण पर ही सख्त पाबन्दी लगनी चाहिये। शराब, धूम्रपान सब दोषो को जन्म देते हैं इनके विज्ञापनों पर पूर्ण पाबन्दी लगे। किसी भी प्रचार माध्यम से इनका विज्ञापन, प्रचार करने की स्वीकृति ही नहीं होनी चाहिए। सरकार एक ओर तो संवैधानिक चेतावनी लिखकर अपने कर्तव्य को निभाती है परन्तु दूसरी ओर सरकारी और गैर सरकारी प्रचार माध्यमों को इनके सेवन के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए विज्ञापन व प्रचार की छूट देती है। धार्मिक या सामाजिक सुधार के सन्देश प्रचारित करने की पाबन्दी है परन्तु इनके प्रचार साधनों पर कोई पाबन्दी नहीं वे कितनी ही ऊची आवाज मे इसका प्रचार स्कूलो, मन्दिरो, सार्वजनिक स्थलो पर कैसे भी करें इसकी सरकार की ओर मामूली फीस भरवाकर सरकारी स्वीकृति पत्र प्रदान करती है।

(५) **नियमित व्यायाम अपनाये**–प्रात का घूमना, घर पर या पार्को मे नियमित व्यायाम करना सबसे सस्ता, सादा साधन है। यह जरूरी नहीं इसके लिये हम दो-तीन घण्टे लगाये, हा नियमित, निश्चित समय जरूर देंगे तो दीर्घ लाभ होगा। कुछ दिन ८-१० मील की सैर करते रहे या एक घण्टा-दो घण्टे व्यायाम करते रहे फिर लम्बी छुट्टी करे तो यह लाभकारी नहीं होगा। जितना भी अपनाये इसे आदत और जरूरी समझकर व्यवस्था अनुसार नियमित की योजना बनाये। व्यायाम, सैर, व्यक्ति के हृदय को, शरीर की मासपेशियो को सुदृढ बनाने का सबसे सरल तरीका है। इनके करने से व्यक्तियो मे उत्साह, काम करने की क्षमता तथा मानसिक दृष्टि से उसकी जागरूकता बढेगी।

(६) **आशावादी बने और प्रसन्न रहे**–मानसिक दृष्टि से प्रसन्न रहना बडा ही स्वास्थ्यकर है। जो व्यक्ति ग्लानियुक्त होता है वह अपनी ऊर्जा शक्ति को शिथिल करता है। कई बार हम बीमार से उसका हालचाल पूछते हैं आप भी उस समय बीमारी की कामना करने लग जाते हैं तो आप बीमारी को बुलाते हैं। डाक्टर हैगेडोर्न का कहना है कि आशावादिता के अभाव मे मैंने कितने युवको को मरते देखा है। निराशावादी तो सास ले रहा है सम्भव हो वह बाह्य शरीर से सासारिक हलचल भी कर रहा है परन्तु जिन्दा लाश के समान है जो व्यक्ति यह विचार करता रहेगा "मेरी आत्मा महान् है, मैं कभी हार नहीं सकता क्योंकि मेरे जीवन का उद्देश्य पवित्र बनने, श्रम करने, परोपकार करने तथा दीर्घ आयु प्राप्त करने के लिये है। यह जीवन मेरा नहीं अपितु दूसरो से प्रेम का व्यवहार करता हुआ परहित मे लगने के लिये ही प्रभु की असीम कृपा से प्राप्त हुआ है। परोपकार करते हुए प्रसन्नता से रहकर, सभी प्रकार के तनावो से मुक्ति मिलेगी। जब कभी कुछ निराशा के भाव उत्पन्न हों तो प्रकृति के साथ रहने के लिये नियोजित ढग से घर से, व्यापार से छुट्टिया मनायें इसके लिये पहाडो पर रमणीय स्थान पर परिवार के साथ जावे। प्रकृति के सग मे रहने से प्रसन्नता मिलेगी वहा पर तनाव नहीं मिलेगा वहा पर बीतने वाले अमूल्य क्षण होगे जिसे मनुष्य चिन्तामुक्त आनन्दपूर्वक बिताये। इससे शरीर, आत्मा और मन मे नई ऊर्जा शक्ति का सचार होगा तथा नवजीवन प्राप्त होगा।

–**राजेन्द्र आर्य,** हासी (हरयाणा)

आर्यसमाज के प्रसिद्ध संगीताचार्य : ओमप्रकाश वर्मा

आर्यसमाज के विगत १२५ वर्षों के इतिहास मे भजनोपदेशको की लम्बी शृंखला मे एक यशस्वी नाम 'ओमप्रकाश वर्मा' है जो विगत ५४ वर्षो से निरन्तर आर्यसमाज व देश की सेवा कर रहे हैं और आयु के ७२ वर्ष पूरे करके पूर्ण स्वस्थ हैं। केरल प्रान्त को छोडकर देश के प्राय सभी नगरो व ग्रामो मे पहुचकर आपने अपने मधुर भजनो व सगीत द्वारा धर्मप्रेमी श्रद्धालु भक्तो के हृदय मे ईश्वर के स्वरूप, महिमा, ऋषि दयानन्द महिमा व वैदिक ज्ञान के अमृततुल्य विचारो की ज्ञानगगा को प्रवाहित किया है।

श्री ओमप्रकाश वर्मा का जन्म यमुनानगर (हरयाणा) के निकट अल्हार गाव मे एक आर्यसमाजी परिवार मे १५ नवम्बर सन् १९२८ को हुआ था। चार भाई व चार बहिनों के परिवार मे आयुक्रम मे आपका पाचवा स्थान है। श्रीमती सुनहरी देवी आपकी जीवनसगिनी हैं। पाच सन्तानो मे आपके दो पुत्र व तीन पुत्रिया हैं जो सभी विवाहित हैं। आपने मैट्रिक करने के पश्चात् हिन्दी प्रभाकर की परीक्षा पास की। पाठशाला मे आप प्रार्थना गाया करते थे। कण्ठ मधुर था, अत गुरुजनो ने प्रेरणा की कि सगीत सीखकर गायक बनो। परिवार भी इस कार्य मे सहायक बना और आप सगीत सीखने श्री धूमसिह जी के पास सिमौली (दौराला) पहुचे। कुछ समय यहा रहकर इस शताब्दी के पाचवें दशक के मध्य मे आपने भगत मगतराम के 'गन्धर्व महाविद्यालय' मे सगीत की शिक्षा चार वर्षो मे प्राप्त की। सगीत की शिक्षा पूरी कर आप भजनोपदेशक के रूप मे वैदिक विचारधारा का प्रचार करने सगीत की दुनिया मे उतरे और आर्य प्रतिनिधि सभा, पजाब मे 'भजनोपदेशक' बन गए। सन् १९४६ से १९६६ तक के बीस वर्षो मे उक्त सभा के अन्तर्गत पजाब के नगरो व ग्रामो मे प्रचार कर आपने सभा की सेवा का त्याग कर दिया और स्वतन्त्र 'आर्य भजनोपदेशक' बन गए। इस अवधि मे आपको प्राय पूरे देश के नगरो व ग्रामो मे जाने का अवसर मिला और आपने अपने सम्पर्क मे आये व्यक्तियो पर वैदिक धर्म की गहरी छाप छोडी। ईश्वर ने आपको मधुर कण्ठ दिया है तथा भजनो का गायन एव प्रस्तुतीकरण इतना प्रभावशाली होता है कि किसी भी आर्यसमाज के उत्सव की सफलता आपकी उपस्थिति से सुनिश्चित होजाती है। आपके भजनो मे जीवन उन्नति के दिव्य विचारो के साथ बुराइयो को छोडने की भी प्रेरणा रहती है जो श्रोतृवर्ग पर अनुकूल प्रभाव डालती है। सम्प्रति भजनोपदेशक के रूप मे आप ५६ वर्षो का सेवाकाल पूरा कर लेने के बाद भी कर्तव्य क्षेत्र मे डटे हुए हैं। आपकी ७२ वर्ष की आयु है तथा शेष समय भी वैदिक धर्म की सेवा मे बिताने का आपका सकल्प है।

अनेक गुरुकुलो व आर्य सस्थाओं की स्थापना मे आपने उल्लेखनीय योगदान किया है। देश की शीर्षस्थ आर्य सस्थाओ, आर्यसमाजो के सम्बन्ध मे पूछने पर वर्मा जी कहते हैं कि आर्यसमाजो मे ऐसे तत्त्वों का प्रवेश होगया है जो आर्य नहीं हैं तथा स्वार्थ, पद व लोकैषणा से ग्रसित हैं। यह पूछने पर कि आर्यसमाज का भविष्य कैसा है, उन्होने कहा-"आर्यसमाज का भविष्य उज्ज्वल है क्योंकि इसमे महर्षि दयानन्द का खून लगा है।" ७२ वर्ष की अवस्था मे किसी व्यक्ति द्वारा देश के कोने-कोने मे जाकर आर्यसमाज के विचारों का प्रचार करना वस्तुत प्रशसनीय है।

—**मनमोहनकुमार आर्य**, १९६/२, चुक्खूवाला, देहरादून

नोट—श्री ओम्प्रकाश वर्मा के चाचा श्री भक्तराम जी आर्य भजनोपदेशक थे। उनका जीवन परिचय भेजे। चित्र भी भेजना। —**सुदर्शनदेव आचार्य**, वेदप्रचाराधिष्ठाता

वैदिक धर्म के प्रचार मे भजनोपदेशको का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण योगदान है। सर्वहितकारी मे प्रकाशनार्थ उनके जीवन परिचय सादर आमन्त्रित हैं।

—**सुदर्शनदेव आचार्य**, वेदप्रचाराधिष्ठाता

सत्या इंटरप्राइजिज

दिनाक २३ मार्च से २६ मार्च २००१ तक मुम्बई मे आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मे माननीय कैप्टेन देवरत्न आर्य द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन कार्यों, सिद्धान्तों एव वेदो पर आधारित टी०वी० धारावाहिक बनाने की विधिवत् घोषणा की। श्री रज्जन ठाकुर जो इस धारावाहिक का निर्देशन कर रहे हैं, का परिचय करवाया और मोतियो की माला पहनाकर स्वागत किया। पाण्डाल में बैठे लगभग २५००० आर्यजनों ने जिनमें ३५०० विदेशी भी थे कर्तल ध्वनि से स्वागत किया। श्री रज्जन ठाकुर ने धारावाहिक के विषय मे जानकारी दी। दूरदर्शन पर यह धारावाहिक शीघ्र ही आनेवाला है। इसके एपीसोड दूरदर्शन में जमा करवा दिए गए हैं।

—**डॉ० कुन्दनलाल पाल**, पी आर ओ सत्या इण्टर प्राईजिज
चोपडा भवन सरहन्दी गेट पटियाला

नामकरण संस्कार

दिनाक २-४-२००१ को रिवाडी मे श्री सुरेन्द्रकुमार के निवास स्थान पर उनकी नवजात सुपौत्री के नामकरण-सस्कार पर यज्ञ का आयोजन स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती प्रधान यतिमण्डल दक्षिणी हरयाणा की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ।

श्री सुरेन्द्रकुमार ने ५०/- रुपये आर्य प्रतिनिधि सभा को दानस्वरूप दिये। स्वामी जी ने २० रोगियो का उचित निदान करके नि शुल्क दवाई वितरण की।

—**सुनील आर्य**, ग्राम बुचावास

शान्ति यज्ञ सम्पन्न

दिनाक ४-४-२००१ को महेन्द्रगढ मे कुहरावास रोड पर श्री रिसालसिह के निवास स्थान पर उनके स्वर्गीय ताऊ श्री चन्दूलाल की आत्मिक शान्ति हेतु यज्ञ का आयोजन स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती प्रधान यतिमण्डल दक्षिणी हरयाणा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

अन्त मे एक मिनट का मौन करके दिवगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रभु से प्रार्थना की। ५०/- रुपये आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को दानस्वरूप दिये।

सुनील आर्य, महेन्द्रगढ

आदर्श विवाह

श्री अतरसिह के बडे भाई रिसलदार भूपसिह की पौत्री प्रीतिकुमारी सुपुत्री श्री चन्द्रपाल आर्य गाव मोहम्मदपुर माजरा जिला झज्जर का शुभ विवाह श्री कुवरसिह सुपुत्र श्री भूपसिह गाव पिलानी श्री भगवानदास पुरोहित के द्वारा वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। सभी कार्य एक रुपये से हुए। उसके बाद धार्मिक सस्थाओं मे दान दिया।

१०१ रु० गुरुकुल झज्जर, १०१ रु० आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक, ५० रु० गुरुकुल लाढौत, २१ रु० आदर्श गोशाला गुरुकुल झज्जर।

सूचना

बहन सुमित्रा वर्मा भजनोपदेशिका रोहतक का टेलीफोन न० ७१४९० की जगह ३५३३९ होगया है।

क्रियात्मक एवं ध्यान योग साधना शिविर

(६ मई से १३ मई २००१ तक)

आपको जानकर अति हर्ष होगा कि स्वामी श्री सत्यपति जी परिव्राजक के सान्निध्य मे दिनाक ६ मई २००१ तक क्रियात्मक एव ध्यान योग साधना शिविर "गुरुकुल उच्च विद्यालय धीरणवास" मे लगाया जारहा है। अत आप सभी सादर आमन्त्रित हैं।

विशेष—बाहर से आने वाले सज्जनो के लिए भोजन व निवास की व्यवस्था गुरुकुल की ओर से होगी।

गुरुकुल धीरणवास हिसार से १५ किलोमीटर की दूरी पर बालसमन्द रोड पर है इसके लिए बालसमन्द-भादरावाली बस मे बैठकर धीरणवास के अड्डे पर उतरे।

चौ० देवीलाल एक युगपुरुष थे

डॉ० सांगवान सिरसा

आज दिनाक ८-४-२००१ रविवार को प्रात ८ बजे आर्यसमाज कोर्ट रोड सिरसा मे साप्ताहिक यज्ञ के उपरान्त भारत के पूर्व उपप्रधानमंत्री चौ० देवीलाल जी के आकस्मिक निधन पर उन्हे आर्य बन्धुओ द्वारा भावभीनी श्रद्धाजलि दी गई। इस अवसर पर आर्यसमाज कोर्ट रोड व सिरसा एजुकेशन सोसाइटी के प्रधान तथा आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल सिरसा के प्रबन्धक डॉ० आर०एस० सागवान द्वारा चौ० देवीलाल के व्यक्तित्व एव कृतित्व पर विस्तार से प्रकाश डाला गया। कुछ अश निम्न हैं–

'मेरा दिवगत चौधरी साहब से गत ३० वर्षों से भी अधिक का पारिवारिक सम्बन्ध रहा है। आज भी यह सम्बन्ध ज्यो का त्यो है। मुझे एव मेरे परिवार को चौधरी साहब के आकस्मिक निधन से गहरा दुख पहुचा है। एक ऐसी क्षति हुई है जिसकी कभी पूर्ति नहीं होसकती। जब कभी वह चौटाला गाव से दिल्ली जाते अथवा दिल्ली से चौटाला गाव आते तो वह सदा मेरे आवास पर अवश्य ही रुकते। इतनी अधिक आत्मीयता थी हमारी।"

डॉ० सागवान जी ने आगे कहा चौधरी देवीलाल जननायक थे। उनके निधन से पूरे हरयाणा मे ही नहीं बल्कि समस्त भारत मे एक शोक लहर फैल गई है। प्रत्येक गाव की चौपाल मे उदासी है। आज वह शख्स जहान से उठ गया है जो हुक्को की गडगडाहट के साथ उनसे घर बार, खेती, परिवार की बात करता था। उनके सुख-दुख मे सदा शरीक होता था। आज प्रत्येक नगर की बस्ती मे दुख है क्योंकि आज वह व्यक्ति पचतत्त्व मे विलीन होगया है, जो कर्मचारी, व्यापारी तथा सभी का हितैषी था। उस महान् व्यक्ति ने गरीब, मजदूर, दलित, किसान ही नहीं बल्कि समाज के सभी वर्गो के जीवन को उन्नत करने के लिए कार्य किया। पूरे देश मे उनको ताऊ के नाम से ख्याति प्राप्त हुई।

चौ० देवीलाल द्वारा किये गये सतत सघर्ष के कारण ही १९६६ ई० मे हरयाणा का निर्माण हुआ। अनेक बार उन्हे जेल जाना पडा तथा सब प्रकार के कष्ट सहने पडे। लेकिन भाग्य की यह विडम्बना ही थी कि वह ११ वर्षो के बाद हरयाणा में मुख्यमत्री पद पर सुशोभित हुए। मुख्यमत्री बनते ही उन्होंने ग्रामोत्थान की अनेक योजनाए प्रारम्भ कीं। वृद्धावस्था पेशन लागू करके उन्होने हरयाणा के लोगो का हृदय जीत लिया। चाहे वह सत्ता मे रहे अथवा बाहर लेकिन वह सदा जमीन से जुडे हुए नेता रहे। जहा भी वह जाते चाहे गाव की चौपाल या नगर की बस्ती हजारो लोग उनके दर्शनो के लिए उमड पडते। सत्य तो यह है कि पूरे भारत मे चौधरी देवीलाल के समान सघर्षशील व्यक्तित्व आज तक नहीं हुआ है। सर छोटूराम के बाद वह ही ऐसे किसान नेता थे जिन्हे आनेवाली पीढिया सदा स्मरण करती रहेगी तथा उनके पदचिह्नो पर चलती रहेगी।

चौधरी देवीलाल के पचतत्त्व मे विलीन होने से एक युग का अन्त होगया है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम सब उस युगपुरुष के प्रेरणादायी जीवन से प्रेरणा ले। भारत सरकार केवल उन्हे भारतरत्न की उपाधि से ही सम्मानित करके अपने कर्तव्य की इतिश्री ही न समझे बल्कि उनके चरित्र को स्कूल तथा कालेज व विश्वविद्यालय स्तरीय हिन्दी पाठ्यक्रम मे उचित स्थान दे।

डॉ० सागवान ने आर्यसमाज कोर्ट रोड मे उपस्थित सभी आर्यबन्धुओ को भी चौ० देवीलाल के सघर्षशील व्यक्तित्व से प्रेरणा लेने के लिए प्रेरित किया। दो मिनट का मौन भी रखा गया।

आर्यसमाज का अपमान

रोहतक। राजधानी नई दिल्ली स्थित मिटो रोड पर आर्यसमाज मन्दिर को डी०डी०ए० के दस्ते द्वारा तोडे जाने पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक के मंत्री प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभा के कार्यकर्ता प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी पूर्व सासद ने कडे शब्दो मे निन्दा की है तथा इस कार्यवाही के प्रति गहरा रोष प्रकट किया है। इस कार्यवाही से आर्यसमाज का अपमान हुआ है। लोगो की भावनाओ को गहरी ठेस पहुची है। मिटो रोड नई दिल्ली स्थित आर्यसमाज मंदिर ४५ वर्ष पुराना है उसे अवैध निर्माण बताकर ढहा दिया गया जबकि उसी के पास स्थित मस्जिद आज भी सुरक्षित है जिसे तोडकदस्ते ने छूआ तक नहीं। यह सरकार की भेदभावपूर्ण दोहरी नीति है।

इस सम्बन्ध मे सभाप्रधान स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने घटनास्थल पर जाकर वहा का दौरा किया है तथा घोषणा की है कि मदिर उसी स्थान पर बनेगा इसके लिए देश के सभी आर्यजन सडको पर उतर आयेगे। सरकार इस कार्यवाही के लिए माफी मागे तथा उसी स्थान पर मदिर बनवाये। —**प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास** सभामत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ रोहतक

साहित्य समीक्षा

पुस्तक का नाम – **देवो के वैद्य अश्विनीकुमार।**
लेखक – **आचार्य आनन्दप्रकाश।**
प्रकाशक – आर्ष शोध सस्थान अलियाबाद म० शामीरपेट, जिला रगारेड्डी (आध्रप्रदेश)
मूल्य – ५-००

इस पुस्तक मे विद्वान् लेखक आचार्य आनन्दप्रकाश जी ने देवताओ के वैद्य अश्विनीकुमारो के स्वरूप का सप्रमाण उत्तम प्रतिपादन किया है। उनका मत है कि शल्यचिकित्सा आसुरी चिकित्सा है, औषध चिकित्सा मानुषी चिकित्सा है प्राणायाम आदि योगविद्या से की जानेवाली चिकित्सा दैवी चिकित्सा है। प्राण और अपान ही अश्विनौ (अश्विनीकुमार) हैं। स्वाध्यायशील जनो को यह पुस्तक अवश्य पढनी चाहिये।

—**सुदर्शनदेव आचार्य,** वेदप्रचाराधिष्ठाता

सभा से सम्बन्धित आर्यसमाजों के अधिकारी महानुभावों की सेवा में निवेदन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का त्रिवार्षिक साधारण अधिवेशन ९ अगस्त २००१ से पूर्व होना है। इसलिए हरयाणा के सभी आर्यसमाजो के अधिकारियो से निवेदन है कि आगामी ३ वर्ष के लिए अपने आर्यसमाज के प्रतिनिधि आर्यसमाज के नियम-उपनियमो के अनुसार चुनकर प्रतिनिधि फार्म भरकर दिनाक ३०-०४-२००१ तक सभा कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक मे भेज देवे, जिससे आपके प्रतिनिधि समय पर स्वीकार हो सके। सभी आर्यसमाजों को प्रतिनिधि फार्म डाक द्वारा भेज दिए गए हैं। जिन्हें फार्म न मिले हो सभा कार्यालय को पत्र लिखकर और मगवाले।

१. नए प्रतिनिधियो की स्वीकृति के लिए सभा से सम्बन्धित प्रत्येक आर्यसमाज को पिछले तीन वर्षो का वेदप्रचार तथा दशाश की राशि के साथ-साथ 'सर्वहितकारी' का शुल्क ६० रुपये वार्षिक भेजना अनिवार्य है। वर्ष ९८-९९, ९९-२०००, २०००-२००१ का शुल्क जमा न होने पर प्रतिनिधि स्वीकृत नहीं होगे।
२ वही फार्म स्वीकार किये जायेगे जो आर्यसमाज के नियम-उपनियम तथा सभा के विधान के अनुसार भरकर भेजे जायेगे।

अत जिन आर्यसमाजो ने वर्ष ९८-९९, ९९-२००० तथा २०००-२००१ अर्थात् मार्च २००१ तक का तीन वर्षो का वेदप्रचार, दशाश तथा सर्वहितकारी शुल्क नहीं भेजा है उसे शीघ्र सभा प्रचारको अथवा मनीआर्डर द्वारा सभा को भेजने का कष्ट करें।

आपसे अनुरोध है कि आप इस सम्बन्ध मे यथाशीघ्र कार्यवाही कर अपना तथा अपने आर्यसमाज का पूर्ण सहयोग प्रदान करें। —**प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास**, सभामत्री

विशेष– वैसे तो वर्तमान प्रतिनिधियो का कार्यकाल मार्च २००१ को समाप्त हो रहा है, किन्तु नए प्रतिनिधि चुने जाने तक उनका प्रतिनिधित्व बना रहेगा।

बलिदान/पुस्तकालय भवन के लिये दानी महानुभावों से अपील

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक मे सभा द्वारा एक विशाल बलिदान भवन/पुस्तकालय भवन का निर्माण कार्य आरम्भ होगया है। इस बलिदान भवन/पुस्तकालय भवन में आर्यसमाज के बलिदानियों के चित्र विवरण के साथ लगाये जायेंगे।

सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि इस पुनीत कार्य मे अधिक से अधिक धनराशि मनीआर्डर, चैक या बैंक ड्राफ्ट द्वारा अथवा नकद भेजकर पुण्य के भागी बने। जिन सज्जनो का पूर्व मे दान का वचन है वे भी अपना वचन शीघ्र पूरा करने की कृपा करे।

निवेदक

स्वामी ओमानन्द सरस्वती	**स्वामी इन्द्रवेश**	**प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास**
सभाप्रधान	**कार्यकर्ता प्रधान**	**सभामत्री**
	बलराज आर्य	**प्रो० शेरसिंह**
	सभा कोषाध्यक्ष	**पूर्व रक्षाराज्यमंत्री**

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिग प्रेस, रोहतक (फोन : ७६८७४, ५७७७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, प० जगदेवसिह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ७७७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १,९६,०८,५३,१०२
पंजीकरणसंख्या टैक/एच.आर./४१/रोहतक/९९ ☎ ०१२६२–७७७२२

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र रोहतक

प्रधानसम्पादक : प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक :- डा० सुदर्शनदेव आचार्य

वर्ष २८ अंक २२ २८ अप्रैल, २००१ वार्षिक शुल्क ६०) आजीवन शुल्क ६००) विदेश में १० पौंड एक प्रति १-२५

अन्तरंग सभा की बैठक सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरग सभा की बैठक अन्तरग सदस्यों, विशेष आमन्त्रितों, वेदप्रचार मण्डलो के अधिकारियों आदि की उपस्थिति मे सभा के वरिष्ठ अन्तरग सदस्य व पूर्व सभामत्री डॉ० रणजीतसिह जी की अध्यक्षता मे दिनाक २२-४-२००१ रविवार को प्रात १० बजे दयानन्दमठ रोहतक मे आरम्भ हुई। इसमें निम्नलिखित निश्चय किये गए–

१ बी एस एफ के १५ शहीदों को बगला देश राइफल्स द्वारा भयकर यातनाए देकर अमानवीय ढग से मारने की कड़ी निन्दा की गई तथा इस कार्यवाही के प्रति निन्दा प्रस्ताव पास करके प्रधानमत्री व मुख्यमत्री को प्रस्ताव की कापी भेजने का निर्णय हुआ।

२ सभा के साप्ताहिक पत्र सर्वहितकारी का वार्षिक शुल्क १ जुलाई २००१ से ६० रु० से बढाकर ८० रु० किया गया।

३ आर्यसमाज स्थापना के १२५ वर्ष पूरे होने पर अक्तूबर के अन्त में या नवम्बर मास के प्रथम सप्ताह मे सार्वदेशिक सभा के तत्त्वावधान मे नई दिल्ली मे होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में पूर्ण सहयोग देने का निर्णय किया गया।

४ हरयाणा के समस्त ९० विधान सभा क्षेत्रों मे जिला वेदप्रचार मडल के अन्तर्गत प्रत्येक क्षेत्र मे पृथक्-पृथक् वेदप्रचार मण्डलो का गठन कर सयोजक नियुक्त किये जायेगे। जीन्द व महेन्द्रगढ जिले मे सयोजक नियुक्त किये जा चुके हैं।

५ सतलुज यमुना लिक नहर के लिए जनजागरण बारे प्रथम चरण में दक्षिणी हरयाणा के सभी १० जिलो मे स्वामी इन्द्रवेश जी सभा कार्यकर्ता प्रधान के नेतृत्व मे नहरी पानी विवाद के समाधान के लिए १० मई २००१ से १९ मई २००१ तक १० दिन की यात्रा जिला जीन्द से निम्नलिखित कार्यक्रमानुसार आयोजित की जाएगी। यात्रा का समापन १९ मई को जिला झज्जर मे होगा।

क्र	जिला	दिनाक	क्र	जिला	दिनाक
१	जीन्द	१० मई २००१	२	हिसार	११ मई २००१
३	भिवानी	१२ मई २००१	४	महेन्द्रगढ	१३ मई २००१
५	रिवाड़ी	१४ मई २००१	६	गुड़गांव	१५ मई २००१
७	फरीदाबाद	१६ मई २००१	८	सोनीपत	१७ मई २००१
९	रोहतक	१८ मई २००१	१०	झज्जर	१९ मई २००१

६ जनजागरण यात्रा मे पानी के मुद्दे को सुलझाने के लिए हरयाणा की जनता तथा पचायतो को इस बात के लिए प्रेरित किया जावे कि वे अपनी पचायतो से प्रस्ताव पास करके राज्य सरकार तथा केन्द्र सरकार को भेजे।

७ ६ मई २००१ को दयानन्दमठ रोहतक में राष्ट्रभाषा सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा।

८ श्री नत्थूसिंह यादव निलम्बित गणक एव लिपिक सर्वहितकारी डाक-प्रेषण की सभा से सेवा समाप्ति की सर्वसम्मति से सम्पुष्टि की गई।

९ श्री परसराम पटवारी सहायक मुख्यत्यारेआम को सभा मुख्यत्यारेआम नियुक्त करने का निर्णय हुआ।

–सभामन्त्री

आर्यसमाजों और आर्य शिक्षण संस्थाओं की सेवा में

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अन्तर्गत गठित **"हरयाणा राष्ट्रभाषा समिति"** ने राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास के लिए पंचसूत्री मांगपत्र तैयार किया है। इस मागपत्र के समर्थन में प्रबल जनजागरण आरम्भ किया जा रहा है। इसके लिए प्रथम राष्ट्रभाषा सम्मेलन दयानन्दमठ रोहतक मे ६ मई, २००१ रविवार को प्रात १० बजे रखा गया है। प्रत्येक आर्यसमाज और शिक्षण सस्थाएं भी अपने उत्सवों में अनिवार्य रूप से राष्ट्रभाषा के बारे में प्रभावशाली रूप से सम्मेलन, गोष्ठियां, अन्य कार्यक्रम आदि रखें। इसके लिए वक्ताओं का सहयोग हरयाणा राष्ट्रभाषा समिति से ले सकते हैं।

निवेदक

स्वा० ओमानन्द सरस्वती	**स्वामी इन्द्रवेश**	**श्यामलाल**	**प्रो० सत्यवीर डालावास**
सभा प्रधान एव सरक्षक	सभा कार्यकर्ता प्रधान एव अध्यक्ष	सयोजक	सभामन्त्री

हरयाणा राष्ट्रभाषा समिति

ईश्वर प्रार्थना पद्धति

–स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, आर्ष गुरुकुल, कालवा

हे प्रकाशस्वरूप सर्वज्ञ परमेश्वर ! आपकी कृपा से जिस विज्ञानवती यथार्थ धारणावाली बुद्धि को विज्ञान-ज्ञानी और योगी लोग धारण करते हैं तथा यथार्थ पदार्थ विज्ञानवाले पितर जिस बुद्धि के उपाश्रित होते हैं, उसी बुद्धि से युक्त हमको इसी वर्तमान समय मे मेधावी कीजिये। हे स्वप्रकाश ! अनन्ततेज ! आप अविद्यान्धकार से रहित हो, किन्तु सत्य विज्ञान तेज स्वरूप हो, कृपा दृष्टि से मुझको भी वही तेज प्रकाश धारण कराइये जिससे मैं निस्तेज दीन और भीरू कहीं कभी न होऊँ। हे अनन्तवीर्यपरमात्मन् ! आप वीर्यस्वरूप हैं, मुझमे शक्ति की स्थापना कीजिये। हे सर्वशक्तिमान् ! आप अनन्त बलयुक्त हैं मुझमे भी सर्वोत्तम बल को स्थिर कीजिये। हे अनन्त पराक्रम ! आप ओज अनन्त सामर्थ्ययुक्त हैं मुझमे भी पूर्ण सामर्थ्य सदैव धारण कराये। हे न्यायकारिन् ! आप दुष्टकाम और दुष्टो पर मन्यु (=बुद्धियुक्त क्रोध) करने वाले हैं, मुझमे भी वही मन्यु धारण कराओ। हे अनन्त सहन स्वरूप ! आप निन्दा, स्तुति और स्व अपराधियों का सहन करनेवाले हो कृपा करके मुझको भी वैसा ही कीजिये, मुझमे भी सहन सामर्थ्य धारण कराइये।

हे दयानिधे ! जो मेरा मन आत्मा का मुख्य साधक और दिव्य गुण युक्त है, मुझ जागते हुए का दूर-दराज जाता है और सोते हुए का दूर-दूर जाने के समान व्यवहार करता है अथवा सुषुप्ति को प्राप्त होता है, जो दूरगमनशील है, शरीर की प्रकाशक चक्षु श्रोत्रेन्द्रियादि का प्रकाशक, कर्म करनेवाले धर्मयुक्त विद्वान् लोग या और युद्धादि मे जिससे सर्वविध कर्म करते हैं, जो अपूर्व सामर्थ्ययुक्त पूजनीय और प्रजा के भीतर रहनेवाला है। जो उत्कृष्ट ज्ञान दूसरे को जितानेहारा निश्चयात्मक वृत्ति है, जो प्रजाओ के भीतर प्रकाशयुक्त और नाशरहित है, जिसके बिना कोई कुछ भी कर्म नहीं कर सकता। हे जगदीश्वर ! जिससे योगीजन भूत भविष्यत् वर्तमान के व्यवहारो को जान सकते हैं अर्थात् जो नाशरहित जीवात्मा को परमात्मा के साथ मिलाके उसे सब प्रकार से त्रिकालज्ञ करता है, जिससे पचज्ञानेन्द्रिय बुद्धि और आत्मायुक्त उस योग रूप यज्ञ को बढाते हैं। हे परम विद्वान् परमेश्वर ! जिस मेरे मन मे रथ के मध्य धुरा मे लगे आरे की तरह ऋग् यजु साम और अथर्व प्रतिष्ठित हैं, जिसमे प्रजा का साक्षीभूत सर्वत्र सर्वव्यापक चेतन चित्त विदित होता है, हे सर्वनियन्ता ईश्वर ! उत्तम सारथी जैसे रस्सी से वेगवान् घोडो को इधर उधर ले जाता है, वैसे ही जो मनुष्यो को इधर-उधर हिलाता है वह मेरा मन शिव सकल्प अर्थात्–१ अपने और दूसरे प्राणियो के अर्थ कल्याण का सकल्प करनेवाला होवे। किसी की हानि करने की इच्छायुक्त कभी न होवे। २ धर्म करने की इच्छायुक्त होकर अधर्म को सर्वथा छोड देवे। ३ शुद्ध गुणो की इच्छा करके दुष्ट गुणो से पृथक् रहे। ४ विज्ञान युक्त होकर अविद्यादि क्लेशो से पृथक् रहे। ५ अविद्या का अभाव कर विद्याप्रिय सदा

(शेष पृष्ठ दो पर)

आर्यसिद्धान्त-शिक्षा

इन्द्रसिंह आर्य, आरजैड-६०, ब्लाक-ओ, नया रोशनपुरा, नजफगढ, दिल्ली-४३

(गताक से आगे)

(घ) जन्म, क्षय से परे है ईश्वर, फिर भी जानता है हम जीवों के मन के अभिप्राय।
फिर कितना हास्यास्पद है तुलसी का यह कथन **'को जाने केहि वेश में नारायण मिल जाय।'**
जो लोग काष्ठ, पाषाणदि की मूर्ति बनाकर, ईश्वर के स्थान पर करते हैं आराधना।
वे नरकगामी हैं क्योकि वे ईश्वर के निराकारत्वपक्ष को त्यागकर भौतिक पदार्थों की करते हैं उपासना।।
ईश्वर इच्छामय शरीर भी धारण नहीं कर सकता क्योंकि वह सनातन स्वरूप से है अमूरत।
सब के निर्माता का कोई जनक नहीं फिर प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता कि बना दे कोई उसकी सूरत।।
नि सदेह जो आकार से परिच्छिन्न (सीमित) होता है, वह शक्ति से भी होता है परिच्छिन्न।
'ब्रह्म' को साकार मानने से, वह सर्वज्ञ न होकर अल्पज्ञ कहलायेगा, भूख प्यास भी हमारी भाति उसे सतायेगी निस दिन।।

(च) तुलसीदास जी की यह मनगढन्त है कल्पना।
कि राम ने विधिवत् अर्चना करके शिवलिगकी की थी स्थापना।।
वेद साक्षी है–परमेश्वर एक है अर्थात् उसके अतिरिक्त कोई और नहीं है दूजा।
फिर हम कैसे मान ले, आर्य होकर राम भौतिक पदार्थों की किया करते थे पूजा।।
हा ! राम ने पार्वती के शिव की नहीं बल्कि देवो के देव महादेव (परमात्मा) का अवश्य किया है गुणगान।
हे सीते ! यह वही रमणीय स्थान है, हम नित्य बैठकर विभु (जो सर्वत्र व्यापक है) परमपिता का किया करते थे ध्यान।।
प्रभु की असीम कृपा और नल-नील इजीनियर की कार्यकुशलता से हम समुद्र मे सेतु बाधने मे हुए थे सफल।
जिसे पार करके हमने लका पर विजय प्राप्त की और उसी से अयोध्या को लौट रहे हैं सकुशल।।
इसके सिवाय वाल्मीकि ने कुछ नहीं लिखा अनुकरणीय है इस सबध में ऋषि दयानन्द के उद्गार।
अपयश के भागी तो तुलसीदास हैं जिन्होने वैदिक सिद्धान्तो का गला घोटकर जगत् मे फैलाया है अविद्यान्धकार।।

(छ) सर्वथा, विशुद्ध और निर्गुण परमात्मा का न कोई जनक है, और न ही कोई है गोत्र वा वश।
तुलसी फिर भी यही कहते रहे कि जीव, 'ब्रह्म' का होता है अश।।
जरा सोचिए ! यदि जीव ईश्वर मे से उत्पन्न हुआ होता, तो उसमे भी अवश्य देखने को मिलते ईश्वरीय गुण।
ठीक उसी तरह जैसे कि सोने के आभूषण मे सोने का अस्तित्व विद्यमान रहता है अनून।।
'ब्रह्म' के गुण कर्म और स्वभाव जीव मे नहीं घटते, क्योकि दोनों मे परस्पर है असाधारण असमानता।
अत ब्रह्म को साकार मानने वाले लोग भ्रात हैं, क्योंकि ब्रह्म को निराकार सिद्ध करती है वेद की प्रधानता।।
अश अर्थात् टुकडे भौतिक पदार्थ के ही हो सकते हैं, वे स्वरूप से होते हैं साकार।
फिर वह तो सब ओर से पूर्ण है अदृश्य है, अक्षय है और है निर्विकार।।
इन्द्रसिह आर्य यदि तुलसी को मालूम होता कि एक पदार्थ के दो धर्म/गुण नहीं होते, साकार व निराकार।
तो वे (तुलसी) शरीर मे शयन करने वाले जीव को भूलकर भी 'ब्रह्म' मानने/कहने को नहीं होते तैयार।।

हिरण्यकश्यप और प्रह्लाद का वास्तविक स्वरूप

शिष्य–

स्त्री पुरुष परस्पर किया करते हैं सवाद।
कि हिरण्यकश्यप के एक पुत्र हुए हैं भक्त प्रह्लाद।
दुष्ट पिता के कारण प्रजा मे फैला हुआ था आतकवाद।
ईश्वर के स्थान पर उसी का बजता था शखनाद।।
पुत्र को प्रिय न लगा पिता का यह पतनोन्मुख वाद।
पुत्र को अनेक यातनाए देने पर भी पिता को हाथ लगा मात्र विषाद।
अब पुत्र को ठिकाने लगाने के लिए उसने बहन होलिका से की फरियाद।।
वह प्रह्लाद को अपनी गोद मे ले अग्नि मे बैठ गई, भयानक करती हुई प्रवाद।
कहते हैं होलिका जल गई, प्रह्लाद बच गए, सुरक्षा का कारण बना कवच रूपी आच्छाद।।
बहिन की मृत्यु से हिरण्यकश्यप को गहरा धक्का लगा उसके अत करण में अभिवृद्ध हुआ उन्माद।
इससे पहिले वह प्रह्लाद को समाप्त कर देते, नरसिह ने उसका समूल नष्ट किया माद।।
आचार्य ! क्या यह सत्यकथा है या फिर अज्ञानियों का भ्रात रूप खडा है प्रासाद।
आप हमारी इस शका की निवृत्ति कर दो हम पकडते हैं आपके पाद।।

आचार्य–

सुनो यहा ! हिरण्यकश्यप का शाब्दिक अर्थ है 'सूर्य' अन्धकार विनाशक।
और 'प्रह्लाद' नाम है अन्न का, पिता हिरण्यकश्यप (सूर्य) हुआ इसका उत्पादक।।
सस्कृत मे 'होलिका' छिलके को कहते हैं, जिसमे सुरक्षित रहता है अन्न रूपी जातक।
बालों को भूनने की क्रिया मे होलिका का जल जाना स्वाभाविक है, सुन रहे हो पाठक।।
शेष (बचे) हुए अन्न को होला (होले) की सज्ञा दी जाती है, जिसे बडे चाव से खाते हैं तरुण, वृद्ध और बालक।
क्योंकि यह खाने मे होता है, अति स्वादिष्ट, आरोग्य और सुपाचक।।
इन्द्रसिह आर्य यही है हिरण्यकश्यप और उसके पुत्र प्रह्लाद का स्वरूप तर्कसगत और सार्थक।
होला, होले, होलका का अपभ्रश नाम 'होली' है मनाते आ रहे हैं, हर्षोल्लास आज तक।

शिष्य–

आचार्य जी ! कहते हैं कि हिरण्यकश्यप एक राक्षस थे और नरसिह विष्णु के अवतार।

आचार्य–

हे शिष्य ! यह गपौडा उसी बोबदेव का है, जो भागवत पुराण के हैं रचनाकार।।
स्मरण रखना ! पुराण वैदिक मान्यताओ के विरुद्ध होने से सत्य की कसौटी पर नहीं ठहरते बरकरार।
अभिप्राय को समझने के लिए पढकर देख लीजिए निम्नलिखित पक्तियो का सार।।

(क) पुराणकार के मत मे पुराणों की रचना उन स्त्री-पुरुषों के लिए की है जिन्हें वेद पढने का नहीं है अधिकार।
जबकि मनुष्य मात्र को ईश्वर की आज्ञा है वेद पढे-पढाये, सुने-सुनाये और घर-घर में करे प्रचार।।

(क्रमश)

ईश्वर प्रार्थना पद्धति.........(प्रथम पृष्ठ का शेष)

रहे। ६ सब इन्द्रियो को अधर्माचरण से रोक कर धर्मपथ मे सदा चलाया करे।

हे परमगुरो परमात्मन् ! आप हमको असत् मार्ग से पृथक् कर सन्मार्ग प्राप्त कराइये अविद्यान्धकार को छुडा के विद्यारूप सूर्य को प्राप्त कराइये, मृत्यु रोग से पृथक् करके मोक्ष के आनन्दरूप अमृत को प्राप्त कराइये। इस प्रकार जिस-जिस दोष या दुर्गुण से अपने को भी पृथक् मानके परमेश्वर की प्रार्थना की जाती है, वह प्रार्थना विधिनिषेध मुख होने से सगुण-निर्गुण प्रार्थना होती है। जो मनुष्य जिस बात की प्रार्थना करता है उसको वैसा ही वर्तमान करना चाहिये अर्थात् जैसे यदि कोई मनुष्य सर्वोत्तम बुद्धि की प्रार्थना के लिए परमेश्वर की प्रार्थना करे तो उसके लिये जितना अपने से प्रयत्न हो सके उतना किया करे। अभिप्राय यह है कि अपने पुरुषार्थ के उपरान्त ही प्रार्थना करनी योग्य है।

ऐसी प्रार्थना कभी न करनी चाहिये और न परमेश्वर कभी उसको स्वीकार करता है, जैसे कि-हे परमेश्वर ! आप मेरे शत्रुओ का नाश, मुझको सबसे बडा, मेरी ही प्रतिष्ठा हो और सब मेरे आधीन हो जाये इत्यादि। क्योंकि जब दोनो शत्रु एक दूसरे के नाश के लिये प्रार्थना करे तो क्या परमेश्वर दोनो का नाश कर दे ? यदि कोई कहे कि जिसका प्रेम अधिक उसकी प्रार्थना सफल हो जावे, तब हम कह सकते हैं कि जिसका प्रेम न्यून हो उसके शत्रु का भी न्यून नाश होना चाहिये। ऐसी मूर्खता की प्रार्थना करते-करते कोई ऐसी भी प्रार्थना करेगा–"हे परमेश्वर ! आप हमको रोटी बनाकर खिलाइये, मेरे मकान मे झाडू लगाइये, वस्त्र धो दीजिये और खेती बाडी भी कीजिये।" इस प्रकार जो परमेश्वर के भरोसे आलसी होकर बैठे रहते हैं, वे महामूर्ख हैं। क्योकि जो परमेश्वर की पुरुषार्थ करने की आज्ञा है, उसको जो कोई तोडेगा वह सुख कभी नहीं पावेगा। जैसे पुरुषार्थ करते हुये पुरुष का सहाय दूसरा भी करता है, वैसे धर्म से पुरुषार्थी पुरुष का सहाय ईश्वर भी करता है, जैसे देखने की इच्छा करने पर नेत्रवाले को ही दिखलाते हैं, अन्धे को नहीं। इसी प्रकार परमेश्वर भी सबके उपकार करने की प्रार्थना मे सहायक होता है, हानिकारक कर्म में नहीं। जो कोई गुड मीठा है, ऐसा कहता है, उसको गुड का लाभ वा स्वाद कभी प्राप्त नहीं होता और जो यत्न करता है, उसको शीघ्र वा विलम्ब से गुड मिल ही जाता है।

"परमेश्वर की प्रार्थना का प्रकार" वेद और महर्षि दयानन्द के आधार पर लिखा है, पाठगण लाभान्वित हो।

महर्षि दयानन्द एवं आर्यसमाज की १२५वीं जन्मशताब्दी पर विशेष आकलन पर विशेष :—

जमाना तो बड़े गौर से सुन रहा था, हमीं सो गये दास्तां कहते-कहते

❑ सुखदेव शास्त्री, महोपदेशक, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक

जगन्नियन्ता के नियमानुसार महाभारत के पांच हजार वर्षों के बाद भारत देश में महर्षि दयानन्द ने १२ फरवरी, १८२४ में उत्पन्न होकर पृथिवीवासियों को **"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"** की उद्‌घोषणा करके फिर से वेद की ज्योति जलाई थी और दिव्य वेद की ज्योति के जलते प्रकाश से शताब्दियों से पद-दलित, दीन-हीन-मलीन, पराधीन, विदेशियों एवं मुसलमानों और अंग्रेजों के पैरों की ठोकरें खाती हुई आर्यजाति को आत्मसम्मान, आत्मविश्वास, आत्मावलम्बन, आत्मगौरव, स्वदेशभिमान एव १८७५ में आर्यसमाज की स्थापना से पहले ही पाठ पढाकर सजग एव उसे सचेत एव जागृत कर दिया था। जिससे आर्य (हिन्दू) जाति ने एक ऐसी जोरदार अगडाई ली कि प्राय हजारों वर्ष की दासता एव पराधीनता की दृढ सकलो को कमलनाल की भाति टूट-टूटकर दूर जा गिरी और पुन स्वदेशी, स्वधर्म, स्वजाति, स्वातन्त्र्य, स्वाभिमान, स्वराज्य, सुराज्य का जीवन-प्रद उद्‌घोष करते हुए हम सावधान होकर खडे हो गए और इस आदेश का पालन करते हुए **'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत'** के महामन्त्र का जाप करते हुए विश्व भर को चकित करने लगे।

जिस समय महर्षि का भारत में प्रादुर्भाव हुआ, उस समय धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक, अध पतन की पराकाष्ठा हो चुकी थी। अंग्रेजो का समस्त हिन्दू जाति पर कुछ इस प्रकार का जादू चल चुका था कि उसे अंग्रेजी राज्य की प्रशसा करने के सिवाय कुछ भी नहीं सूझता था। अपनी आर्यजाति की इस दुर्दशा पर महर्षि का कोमल हृदय द्रवीभूत हो जाता था। जब वे अपने देशवासी बन्धुओ को अंग्रेजों की खुशामद करते देखते तो अपना हृदय पकडकर रह जाते और परमात्मा से प्रार्थना करते कि हे साम्राज्य प्रसारक, राज्यविधायक, कृपानिधे, हमको शौर्य, धैर्य, बल, पराक्रम, साम्राज्य, सम्मति, स्वदेश सुख सम्पादनार्थ गुणो से उत्तम करो। फिर से स्वदेश प्रेम के दिव्य प्रकाश से प्रकाशित कीजिये। महर्षि ऐसी प्रार्थना परमेश्वर से सदैव किया करते थे।

बौद्ध व जैनो के सम्प्रदायो के प्रादुर्भाव से ढाई हजार वर्षो तक उनके व्यक्तिवाद एव निर्वाण के प्रचार के कारण राष्ट्र बिल्कुल ही निर्जीव सा होकर रह गया था। हिन्दू जाति की वीरोचित भावना नष्ट हो चुकी थी। इस कारण से भारत में यहां वहा मुसलमानो का बोलबाला होते देर न लगी। अफगानिस्तान, जिस के अन्दर अभी बमियान क्षेत्र में लगी बौद्ध की मूर्तियों को तोड दिया गया है। बौद्ध और जैनो ने नास्तिकता का प्रचार किया। उस समय तुलसीदास ने, जो अकबर के समकालीन थे स्त्रियों की दुर्गतिका का प्रचार किया था। ऐसे ही स्वामी शकराचार्य ने भी नारी जाति का अपमान किया था। इस्लाम मे भी स्त्री का दर्जा अपमानजनक था। उसे उन्होंने पैर की जूती कहा। उसे तलाक का दर्जा दिया। ईसाइयों ने भी स्त्रियों का बोलना भी बन्द किया। शूद्रो का दर्जा निम्न बताया। महर्षि ने इन्हें ऊचा दर्जा दिया।

इस प्रकार अमानुषिक अत्याचारों के महाभयकर परिणामों का महर्षि ने जीवन भर मुकाबला किया।

महर्षि को स्वदेश की बडी चिता एव दु ख था। जबकि एक विधवा माता अपने मृत बालक को दरिद्रता के कारण उसे ढकने के लिए कफन भी न दे सकी, गगा में उसे बहाकर उसका कफन वापिस उतार ले जाती हुई को देखकर महर्षि की गंगा के किनारे पर समाधि मे बैठे हुए थे की समाधि खुल जाती है। माता से कफन उतारने के बारे में पूछा तो-विधवा ने कहा-मेरा यह साडी का टुकडा है, इसे दुबारा सीकर अपनी लाज को ढकूगी, ऐसा बताकर वह रो पडी। उस देवी का पत्थर को भी पिघला देने वाला करुणक्रन्दन सुनकर महर्षि का पाषाणहृदय भी रो पडा। इस प्रकार विधवाओ, दीन अनाथों, गायों की दुर्दशा को देखकर बहुत ही दु.खी होते थे। इन सबका कारण वे राष्ट्र की पराधीनता ही मानते थे।

वे भारत मे अपना स्वराज्य चाहते थे। इस सम्बन्ध में एक घटना महर्षि के जीवन की अति महत्त्वपूर्ण है जिससे उनकी स्वराज्य सम्बन्धी विचारधाराओ का पता चलता है कि महर्षि वास्तव मे क्या थे ? सन् १८७३ के जनवरी मास मे महर्षि कलकत्ता गये थे। जो उस समय भारत की राजधानी थी। उस समय उनकी भेट तत्कालीन वायसराय लार्ड नार्थब्रुक से कलकत्ता मे हुई थी। इस भेट का विवरण "इण्डिया हाउस लन्दन" मे गवर्नर जनरल की प्राईवेट डायरी से प्राप्त हुआ है। इस भेंट में आपसी शिष्टाचार के बाद वायसराय ने महर्षि से कहा– "Pandit Dayanand, I am informed your inconalastic crtiscism of other religions wounds and irritates the cherished sentiments of (and stimulates hostility againsts you among) Musalman and Christian audiences Do you apprehend any danger to you person from your enemies ? In particular, do you need any special protection of your self our government "

अर्थात् पण्डित दयानन्द मुझे सूचना मिली है कि आप द्वारा दूसरे मतमतान्तरों की कडी आलोचना मुसलमान और ईसाई जनता में क्षोभ उत्पन्न करती है और उनके हृदयो मे आपके प्रति शत्रुता का भाव पैदा करती है, इस सम्बन्ध मे क्या अपनी सुरक्षा का विशेष प्रबन्ध सरकार से चाहते हैं ? महर्षि ने उत्तर दिया–"मुझे अपने विचारो के प्रचार की अंग्रेजी राज्य में पूरी आजादी है। मुझे व्यक्तिरूप से किसी से कोई खतरा नहीं है। मेरा रक्षक स्वय परमेश्वर है।

वायसराय ने कहा–"If it is so, would you mind expressing your appreciation for the blessings conferred by British Rule on your Country ? And in the prayers to God that usually precede your discourses, would you pray for the propetual continuance of British sovereighty in India ?"

अर्थात् यदि ऐसा ही है तो क्या आप अपने देश मे अंग्रेजी शासन द्वारा उपलब्ध उपकारो का भी वर्णन किया करेंगे ? और आप अपने व्याख्यानो के शुरू में जो ईश्वर प्रार्थना किया करते हैं उसमे भारत मे ब्रिटिश साम्राज्य के निरन्तर स्थिर रहने की भी प्रार्थना किया करेंगे ? महर्षि ने निर्भीक होकर कहा–"मैं ऐसी किसी बात को मानने मे सर्वथा असमर्थ हू। क्योंकि मेरा यह मत है कि मेरे देशवासियों को अबाध राजनीतिक विकास और ससार के राज्यो में समानता का दर्जा पाने के लिए शीघ्रातिशीघ्र पूर्ण स्वतन्त्रता मिलनी ही चाहिए। वायसराय महोदय ! मैं तो नित्यप्रति प्रात साय सर्वशक्तिमान् परमात्मा से अपनी प्रार्थनाओ मे यही मागता हू कि उस ईश्वर की दिव्य दया से मेरा देश विदेशियो की दासता से मुक्त हो जाये।

डायरी मे आगे लिखा है–"Such unexpected ununciation of Dayannand's political aspirations alarmed the viceroy and abruptly cut short the conversation "

अर्थात् दयानन्द की राजनीतिक आकाक्षाओं के इस प्रकार के निर्भीक प्रदर्शन से वायसराय चौंक उठे और तुरन्त वार्तालाप बद कर दिया गया। लार्ड नार्थब्रुक ने यह घटना अपनी साप्ताहिक डायरी द्वारा इण्डिया आफिस लन्दन को भेजी और अंग्रेजी सरकार के सैक्रेटरी ऑफ स्टेट को सूचित किया कि उसने इस 'बागी फकीर' पर कडी निगरानी रखने के लिए सरकार को आदेश दे दिये हैं।"

क्या महर्षि की इस घोषणा को उस समय के जमाने के लोगों ने बडे गौर से नहीं सुना होगा ? अवश्य सुना था क्योकि फ्रैंच विद्वान् रोमा रौला ने परमहस रामकृष्ण की जीवनी लिखते हुए महर्षि दयानन्द की चर्चा प्रशसात्मक रूप से किये बिना न रहा गया, वे लिखते है– "This man (Dayanand) with the nature of a lion is one of those, whom Europe is too apt to forget, when she judges India, but whom she will probably be forced to remember to her cost, for he was that rare combination, a thinker of action with a genius of leadership "

अर्थात् सिंह समान निर्भीक प्रकृति वाला यह पुरुष (दयानन्द) उन व्यक्तियो मे से था, जिन्हें भारत का मूल्याकन करते समय योरोप भुलाने की चेष्टा करता हुआ भी भुला न सकेगा, क्योकि ऐसा करना उसके (योरोप के) हित मे न होगा। उस महान् (दयानन्द) मे विचारक, कर्मनिष्ठ एव नेतृत्व की प्रतिभा का अनुपम सम्मिश्रण था।' (पुस्तक के पृष्ठ १४६ पर)। वे अपनी पुस्तक के पृष्ठ १५३ पर फिर लिखते हैं–

'Dayanand's stern teachings corresponded to the thought of his country men and to the first stirrings of Indian nationalism to which he contributed

अर्थात् दयानन्द की उग्र तथा प्रौढ शिक्षाए उनके देशवासियो की विचारधारा के अनुकूल थी और उन शिक्षाओ से भारतीय राष्ट्रवाद का प्रथम पुनर्जागरण हुआ और उनका इसमे बहुत बडा हाथ था।

उन्होने अपनी पुस्तक के पृष्ठ १६१ पर फिर लिखा–' Dayanand transferred with the languid body of India his own formidable energy, his certainty his lion's blood His words rang with heroic power

अर्थात् दयानन्द ने भारत के निष्प्राण शरीर मे अपना अदम्य उत्साह अपना दृढ निश्चयात्मक सकल्प और अपना सिह जैसा रक्त भरकर उसे सजीव किया। उसके वीरोचित शब्द शक्ति के साथ गूज उठे। रोमा रोला की अपनी पुस्तक मे महर्षि दयानन्द की प्रशसात्मक प्रशस्ति की ये पक्तिया बडे गौर से जमाने के सुनने की परिचायक हैं।

।। इति।।

मुख्यमन्त्री हरयाणा के नाम पत्र

विषय : गांव गामडी तहसील गोहाना में शराबबन्द करने हेतु सहयोग की मांग

नम्र निवेदन है कि भगवान् की कृपा और बुजुर्गों के सहयोग एव कन्या गुरुकुल खानपुर की बदोलत गठवाला के किसी गाव मे शराब का ठेका नहीं है, परन्तु बसीलाल सरकार के दिनो मे शराब पर पाबन्दी लगाने से हर एक आदमी ने इसको रोजगार का धन्धा बना डाला जिसकी बदौलत हमारे गाव गामडी मे भी कई दुकानदार इसको बेचने लग गये और गाव के लगभग ५० प्रतिशत से अधिक जवान तबका पीने लग गया जिसके कारण शरीफ आदमी तथा शाम के समय बहू-बेटियो का गलियों से निकलना मुश्किल हो गया है। इस हालात को देखते हुए गांव की पचायत के २९ ३ २००१ के रेजुलेशन एव आर्यसमाज गामडी के १ ४ २००१ के रेजुलेशन के अनुसार एक-एक कापी सी एम साहब हरयाणा चण्डीगढ तथा डी सी साहब, एस पी साहब सोनीपत और एस डी एम गोहाना, डी एस पी गोहाना, एस एच ओ गोहाना को भेज दिये हैं और एक पत्र आपकी सेवा में भेजकर सहयोग माग रहे हैं। आशा है कि आप हमारी मदद करके हौसला अफजाई करेंगे। दोनों रेजुलेशनों का अनुवाद इस प्रकार है कि श्रीमान् जी–

१ जो गोहाना के ठेकेदार की जीप गाव में दुकानदारों को शराब देकर जाती है, उस पर रोक लगाई जाये।

२ जो दुकानदार गाव मे शराब बेचते हैं उनको बन्द किया जावे।

३ जो लोग गाव मे शुल्फा शराब पीकर आवारा घूमते हैं उनको पुलिस के हवाले किया जावे।

श्रीमान् जी इसके लिए आप भी अफसरान तालुका को लिखकर हमें पूरा सहयोग प्रदान करे आपकी अति कृपा होगी।

प्रार्थी–आर्यसमाज गामड़ी तहसील गोहाना जिला सोनीपत

ह० स्वामी सूरजानन्द, प्रधान ह० तारासिह, मत्री ह० राममेहर, कोषाध्यक्ष

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के बढ़ते कदम

ग्रीष्मकालीन छुट्टियों में परिषद् के भावी कार्यक्रम की रूपरेखा

दयानन्दमठ रोहतक। आर्यसमाज का युवा सगठन 'सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्' आने वाले जून मास की ग्रीष्मकालीन छुट्टियों में देश की भावी पीढ़ी को आर्यसमाज के छठे नियम की पालना हेतु युवको के योग एव ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन करेगी। इन शिविरों में एक ओर योग्य व्यायामाचार्यो के द्वारा शरीर को बलिष्ठ बनाया जायेगा वहीं दूसरी ओर विभिन्न विद्वानो के प्रवचनो द्वारा आत्मिक रूप से सबल मनाया जायेगा तथा राष्ट्र के सामाजिक ढाचे का उद्धार करके समाज को व्यावहारिक ज्ञान प्रदान किया जायेगा। सगठन के भावी कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् की हरयाणा इकाई के अध्यक्ष श्री सन्तराम आर्य ने बताया कि सर्वप्रथम ५० व्यायामशिक्षको का शिविर २० मई से २९ मई २००१ तक हरिद्वार (गुरुकुल कागडी) में लगेगा। जिसमे व्यायाम-शिक्षक एव प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे। उसके बाद फिर उन्हें विभिन्न शिविरो नवआगन्तुक युवकों को प्रशिक्षण हेतु भेजा जायेगा। मुख्य शिविरों की व्यवस्था इस इकाई से की जायेगी–

२९ मई से ५ जून २००१ तक २०० युवको का शिविर बहरोड जिला अलवर (राज०)
०२ जून से ९ जून २००१ तक छपरौली (मेरठ) उ०प्र० मे लगभग २५० युवकों का शिविर।
०२ जून से ०९ जून २००१ तक गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ (फरीदाबाद) हरयाणा में ३०० युवकों का शिविर।
०३ जून से १० जून २००१ तक आर एस डी कॉलेज कैथल (हरयाणा) में ५०० युवको का शिविर।
०३ जून से १० जून २००१ तक सिरसली (मेरठ) उ०प्र० में लगभग २०० युवको का शिविर।
०४ जून से ११ जून २००१ तक महेन्द्रगढ (हरयाणा) में लगभग २५० युवकों का शिविर।
१० जून से १७ जून २००१ तक जींद (हरयाणा) में लगभग ३०० युवकों का शिविर।
११ जून से १७ जून २००१ तक तिजारा (अलवर) राज० मे बूढीबावल में लगभग २०० युवको का शिविर।
११ जून से १८ जून तक शुक्रताल मूठनगर (उ०प्र०) में लगभग २०० युवकों का शिविर।
१२ जून से १८ जून २००१ तक रोहतक (हरयाणा) में २०० युवको का शिविर।

उपरोक्त शिविरो की समाप्ति पर उन्ही शिविरों से योग्यता के आधार पर कुछ युवकों को लेकर तथा सभी व्यायामशिक्षक सगठन के कार्यकर्ता एव पदाधिकारी सभी का २० जून से ३० जून २००१ तक कैपसूल कैम्प लगाया जायेगा जिसमें सगठन के कार्यकर्ता तैयार किये जायेगे। जो आर्यसमाज की गतिविधियो को सुचारू रूप से संचालित करने में सगठन के लिए कार्य करेंगे। उसी शिविर मे दसवीं कक्षा उत्तीर्ण किये हुये युवक ही भाग ले सकते है। विस्तृत जानकारी के लिए परिषद् के प्रदेश कार्यालय दयानन्दमठ, रोहतक में दूरभाष ७७८०१ से सम्पर्क अथवा व्यक्तिगत रूप से प्रतिदिन २ बजे से रात को ९ बजे तक प्रदेशाध्यक्ष श्री सन्तराम आर्य से सम्पर्क कर सकते हैं। दूसरी ओर परिषद् के केन्द्रीय कार्यालय आर्यसमाज मन्दिर शक्ति नगर दिल्ली से प्राप्त कर सकते हैं।

निवेदक रविन्द्र आर्य, दयानन्दमठ, रोहतक

साहित्य-समीक्षा

पुस्तक का नाम–अध्यात्म सरोवर (द्वितीय भाग)
लेखक–ब्र० सुमेरु प्रसाद दर्शनाचार्य, दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन (गुजरात)
प्रकाशक–आर्य रणसिह यादव, आर्यवन रोजड, पो० सागपुर जिला साबरकाठा (गुजरात)
मूल्य–१७-०० रुपये (लागतमात्र)

इस पुस्तक में पूज्य स्वामी सत्यपति परिव्राजक के प्रशिष्य प्रिय ब्र० सुमेरुप्रसाद दर्शनाचार्य ने अन्तर्ध्वनि, निराशाविनाश, दु ख, भय, अहङ्कार, विवेक-वैराग्य, सस्कार, मन, ईश्वरप्रणिधान, उपासना आदि आध्यात्मिक विषयो पर उत्तम चिन्तन तथा अपना अनुभव प्रकाशित किया है। अध्यात्म-पथ के राही जनों को इस पुस्तक का स्वाध्याय अवश्य करना चाहिए।

इस पुस्तक मे तृतीय और चतुर्थ सोपान हैं। प्रथम, द्वितीय सोपान प्रथम भाग मे हैं। यदि यह पुस्तक एक ही जिल्द में छपे तो अधिक उपयोगी हो सकती है।

–सुदर्शनदेव आचार्य, वेदप्रचाराधिष्ठाता

दयानन्दमठ रोहतक का बीसवां वैदिक सत्संग एवं हरयाणा राजभाषा हिन्दी सम्मेलन

दयानन्दमठ, रोहतक। आर्यसमाज की प्रमुख कार्यस्थली दयानन्दमठ रोहतक का बीसवा वैदिक सत्संग समारोह ६ मई, २००१ रविवार को बडी धूमधाम से मनाया जा रहा है। जैसा कि आप सभी को ज्ञात ही है कि यह सत्संग हर महीने के प्रथम रविवार को मनाया जाता है। इस समारोह के संयोजक एव व्यवस्थापक श्री सन्तराम आर्य इस सत्सग के उद्देश्य के बारे में चर्चा करते हुए कहते हैं कि आज से ठीक बीस महीने पहले हम सबने मिलकर एक संकल्प किया था कि आने वाले समय में सामाजिक कुप्रथाओ, धार्मिक अन्धविश्वासों, छुआछूत, अशिक्षा, अन्याय एव शोषण के बारे मे वैदिक धर्म की मान्यताओ का प्रचार-प्रसार करने के लिए प्रत्येक महीने एक सम्मेलन किया जायेगा। उसी सकल्प की लड़ी में यह बीसवा वैदिक सत्सग मनाया जा रहा है। प्रत्येक महीने के प्रथम रविवार को यह समारोह प्रात. ९-०० बजे से बृहद् यज्ञ से प्रारम्भ होता है तथा दस बजे तक यज्ञ सम्पन्न करके फिर भक्तिरस के गीतों एव भजनों का कार्यक्रम चलता है। ठीक ११ बजे से १२ बजे तक एक घण्टा एक विशेष विद्वान् को बुलाकर आध्यात्मचर्चा होती है। इसके बाद ऋषि लंगर में सभी मिलकर भोजन का आनन्द लेते हैं। इस बार सत्सग के अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा हरयाणा सभा के प्रधान एवं आर्यसमाज के तपोनिष्ठ सन्यासी स्वामी ओमानन्द जी महाराज अपना प्रवचन देंगे। उनके प्रवचन का विषय होगा '**आर्यसमाज का इतिहास**'। इस समारोह में ऋषि लगर की व्यवस्था आर्यसमाज व ग्राम सांघी (रोहतक) के द्वारा की जायेगी।

इस दिन एक विशेषता यह भी रहेगी कि हरयाणा राजभाषा हिन्दी सम्मेलन के कार्यकर्ताओ की बैठक दोपहर १२ बजे होगी जिसकी अध्यक्षता भी स्वामी ओमानन्द जी महाराज करेंगे तथा भावी योजना पर अपने विचार प्रकट करेगे। सत्सग के सयोजक श्री सन्तराम आर्य ने एक ओर सभी आर्यसज्जनों, बहनों एवं भाइयो से निवेदन किया है वे दल बल सहित अपने परिवार के सभी सदस्यों के साथ इस सत्सग मे पधारें। उन्होने कहा कि बहिनें केसरिया रग का परिधान तथा आर्यबन्धु केसरिया पगडी बाधकर समारोह में भाग लें तथा दूसरी ओर सभी हिन्दी प्रेमी अध्यापकों व छात्रो का भी आह्वान किया कि वे हरयाणा में राजभाषा हिन्दी कैसे हो, इस विषय पर आर्यसमाज के ऐतिहासिक स्वरूप को जानने के लिए अवश्य दयानन्दमठ रोहतक पहुचकर स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती के विचार सुने।

भवदीय · **रविन्द्र कुमार आर्य**, कार्यालय सचिव
सार्व०आ०यु० परिषद् हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

युग पुरुष महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

–स्वामी वेदमुनि परिव्राजक, अध्यक्ष–वैदिक संस्थान नजीबाबाद (उ०प्र०)

सायंकाल का समय था और दीपमालिका का दिवस लगभग साढे पाच बजे थे। उस समय प्रत्येक घर दीपकों से जगमगाने लगा था। उधर अजमेर स्थित राणा साहब भिनाय की कोठी में एक महान् दीप-ऐसा महान्-जिसने सहस्रो शताब्दियो से बुझे हुए ज्ञान दीप वेदज्ञान को अपनी सम्पूर्ण योग्यता और सामर्थ्य से भूमण्डल मे प्रकाशित कर दिया था, निर्दयी काल के प्रबल झोके से बुझ रहा था। बुझा तो वह दीप किन्तु ससार को ज्योति प्रदान कर, वह ज्योति जो न केवल युग-युग तक अपितु प्रलयकाल तक अपनी प्रखर रश्मियों से सम्पूर्ण विश्व को, विश्व ब्रह्माण्ड और विश्व मानवता को न केवल प्रकाश प्रदान करती रहेगी अपितु देदीप्यामान बनाये रखेगी।

'संसार के सभी झझावात केवल मोह माया के अपितु मत-मतान्तरो के भी उसे बुझाने दौडे, परन्तु वह अडिग, निश्चल और अटल हिमालय की भाति खडा रहा और खडा रहकर विश्व मानवता के हित में उक्त ज्योति की प्रखर और जाज्वल्यमान उद्दीप्त रश्मिया बिखेरता रहा। प्रत्येक पग पर उस तप.पूत ने यह प्रमाणित किया कि–

निन्दंतु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु,
लक्ष्मी: समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा,
न्यायात्पथ: प्रविचलन्ति पद न धीरा.।। भर्तृहरि शतक।।

नीतिनिपुण लोग निन्दा करें अथवा स्तुति, लक्ष्मी (धन) आये या चली जाये, चाहे आज ही मृत्यु हो जाये या युगों के पश्चात् किन्तु धैर्यवान् लोग न्याय के पथ से विचलित नहीं होते।

इस युग-पुरुष महान् तपस्वी वैदिक ऋषि को हम युगप्रवर्त्तक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के नाम से स्मरण करते हैं। न केवल आज ही स्मरण करते हैं अपितु 'यावच्चन्द्रदिवाकरो' जब तक चन्द्रमा और सूर्य आकाश में स्थित हैं-प्रबुद्ध जन सर्वदा उनके नाम पर श्रद्धोपेत होकर शिर को झुकाते रहेंगे।

इतिहास के पृष्ठों में जहां तक दृष्टि जाती है, महर्षि दयानन्द हमे प्रथम महापुरुष दृष्टिगोचर होते हैं, जिन्होंने यह घोषणा की कि 'जो पदार्थ जैसा हो, उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहाता है।' यह घोषणा उन्होने पूर्वाग्रह रहित होकर की। सत्य को स्वीकार करने तथा किसी भी विषय मे पक्षपाती न होने की उनकी मनोवृत्ति का भी उनकी इस घोषणा से परिचय मिलता है। अपनी इसी पक्षपातरहित मनोवृत्ति का परिचय उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना करते हुए उसके चौथे नियम की यह भाषा बनाकर प्रकट कर दिया कि 'सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोडने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।' सत्याग्रही उसी व्यक्ति को कहा जाना चाहिए जो सत्य के लिए आग्रह करे, जो अपनी मनमानी बात चाहे वह कितनी भी अयुक्त तथा सर्वथा अन्याययुक्त क्यो न हो मनमाने के लिए अडा ही रहे, वह तो दुराग्रही ही है। महर्षि दयानन्द सरस्वती के सम्पूर्ण जीवन का आद्योपान्त और उनके ग्रन्थों का भी अध्ययन करने के उपरान्त हम इस परिणाम पर पहुंचे हैं और पूर्ण दायित्व के साथ कह सकते हैं कि दुराग्रह तो उन्हे छू भी नहीं पाया था। अपने और पराये का भेदभाव उनके मन मे था ही नहीं। पक्षपात उनके विचारो और जीवन में लेश भी, नाममात्र को भी नहीं था।

इन सबका कारण यदि खोजा जाये तो इसके अतिरिक्त दूसरा नहीं मिलेगा कि उन्होंने वेदों का न केवल अध्ययन ही किया था अपितु गहन अध्ययन किया था। वेद को ससार के किसी माप-दण्ड, किसी भी विद्वान् के दृष्टिकोण से नहीं अपितु वेद के ही मापदण्ड और वेद के ही दृष्टिकोण से समझा था। वर्तमान के युग के वेदवेत्ता कहलानेवालो मे महर्षि दयानन्द की यही विशेषता है, वही उनका ऋषित्व है और इसके कारण वह यह घोषणा करने मे समर्थ हो सकें कि "वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है।" और क्योंकि उन्होने वेद को सबसत्य विद्याओं का पुस्तक समझा और घोषित किया एतदर्थमेव "वेद का पढना पढाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म" बताया। इससे कोई भी बुद्धिमान् व्यक्ति इकार नहीं करेगा कि जो "सब विद्याओ का पुस्तक है" ससार का कोई भी आर्य पुरुष, कोई भी श्रेष्ठ व्यक्ति उस पुस्तक के पढने-पढाने और सुनने-सुनाने को परम धर्म, सर्वोच्च कर्त्तव्य मानने में हिचकिचा नहीं सकता।

ऋग्वेद मे एक स्थल पर कहा गया '**ऋषि स यो मनुर्हित**' अर्थात् ऋषि वही होता है, जो मनुष्यमात्र का हितकारी होता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती मनुष्यमात्र के हितकारी थे, इस बात से केवल वही व्यक्ति नकार सकता है जो किसी प्रकार के पूर्वाग्रह से ग्रस्त हो। इससे बढकर महर्षि की मनुष्यमात्र की हितकारिणी प्रवृत्ति का और क्या परिचय दिया जा सकता है कि उन्होंने अपने द्वारा सस्थापित सस्था आर्यसमाज का एक नियम ही यह बना दिया कि "ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है।' ससार मे प्रत्येक व्यक्ति का उपकार निहित है ही।

तथ्य यह है कि ऋषिवर देव दयानन्द को मनुष्यमात्र की हितकारिणी वृत्ति का कारण भी उनका गहन वेदाध्ययन ही है। वेद मे क्योंकि किसी की, किसी क्षेत्र आदि का पक्ष नहीं है। हमारा अभिप्राय यह है कि वेद न तो पक्षपात युक्त ग्रन्थ हैं तथा न देश या वर्ग विशेष के लिए अर्थात् 'वेद' तो मनुष्यमात्र के लिए हैं, सार्वभौम हैं और सार्वकालिक हैं तथा मतमतान्तर के आग्रह से रहित हैं। वेद मनुष्य को न तो मुसलमान बनाना चाहता है, न हिन्दू, न फारसी, न जैन, न बौद्ध, न ईसाई और मूसाई। वेद तो मनुष्य को मनुष्य देखना चाहता है और मनुष्यता ही ससार मे सर्वजनीन सत्य है। वेद तो स्पष्ट शब्दो मे 'मनुर्भव' मनुष्य बनने का निर्देश करता है।

वह जो मनुष्य बनने का सदेश है, महर्ष दयानन्द सरस्वती ने इसी को वेद से प्राप्त किया और यही सूत्र लेकर ससार के उपकारार्थ आर्यसमाज की स्थापना की तथा स्वजीवन को भी इसी कार्य में होम किया। जीवन भर वेद-विज्ञान का प्रचार-प्रसार किया और अगले उत्तराधिकारी के रूप में आर्यसमाज को वेद-आलोक प्रसार का दायित्व समर्पित कर दीपावली के सायकाल के धीरे-धीरे टिमटिमाते दीपको के प्रकाश मे वह आधुनिक युग का प्रवर्त्तक और युगपुरुष ससार से विदा हो गया। महाकवि नाथूराम शर्मा 'शंकर' के शब्दो में–

शंकर दिया बुझाय दीपावली को देह का।
कैवल्य के विशाल बदन में समा गया।।

अनेक दीप जलाये उस युगपुरुष ने अपनी घोर तपस्या तथा कठोर साधना से। आज यद्यपि वह समाज में कहीं दिखाई नहीं देता किन्तु ससार का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं जहा उसकी छाप, उसकी जीवन ज्योति अपनी जाज्वल्यता और देदीप्यता का परिचय न दे रही हो। इत्योम्।

सर्वहितकारी (साप्ताहिक) की मूल्यवृद्धि की सूचना

कागज एव छपाई तथा डाक शुल्क की मूल्य वृद्धि के कारण १ जुलाई, २००१ से सर्वहितकारी (साप्ताहिक) का वार्षिक शुल्क ६० रुपये तथा आजीवन शुल्क ६०० रुपये के स्थान पर ८० रुपये व ८०० रुपये कर दिया गया है। पुराने तथा नये ग्राहक बननेवालों से निवेदन है कि ३० जून २००१ तक वार्षिक शुल्क ६० रुपये तथा आजीवन शुल्क ६०० रुपये भेजकर इस सुविधा का लाभ उठावे। पत्रिका के स्तर मे सुधार के लिए सम्पादक मण्डल प्रयत्नशील है।

आशा है सुधी पाठक मूल्यवृद्धि के लिए क्षमा करेंगे। –सभामन्त्री

गुजरात से—

विनाश की धरती पर जीवन के अंकुर

—डॉ० पूर्णसिंह डबास

*इस लेख के लेखक डॉ डबास ने मार्च के पहले सप्ताह में गुजरात के सर्वाधिक भूकम्प प्रभावित क्षेत्र की यात्रा की जिसमे भुज, अजार, भचाऊ, गाधीधाम तथा दुधई आदि स्थान शामिल हैं। उन्होने भुज से लगभग ६० कि मीटर की दूरी पर **दुधई और भुजपुर** के उस पुनर्निर्माण कार्य को भी देखा जो दिल्ली के पूर्व मुख्यमन्त्री, वर्तमान सासद तथा सूरजमल स्मारक शिक्षा सस्था के आजीवन सदस्य डॉ० साहिब सिह वर्मा के संरक्षण मे चल रही 'राष्ट्रीय स्वाभिमान' नामक समाजसेवी सस्था के द्वारा किया जा रहा है। हमारे लिए यह गर्व की बात है कि गुजरात में नवनिर्माण का कार्य, किसी भी सरकारी एव गैर सरकारी एजेसी सहित, सबसे पहले आरभ करने का श्रेय श्री साहिबसिह वर्मा को जाता है। उनके इस कार्य की पूरी क्षेत्र मे बहुत सराहना की जा रही है तथा अनेक समाजसेवी सस्थाए उससे प्रेरणा प्राप्त कर रही हैं। —**सम्पादक***

२६ जनवरी, २००१, शेष भारत की तरह, गणतन्त्र दिवस के मौके पर हर्ष और उल्लास से भरा गुजरात। दूरदर्शन पर देश-प्रेम के कार्यक्रम देखते लोग और राष्ट्रध्वज को नमन करने के लिए स्कूलों में तैयार बालक-बालिकाओं के दल। इसी बीच प्रकृति का अप्रत्याशित प्रकोप और धरती का आक्रोश भरा कम्पन। मात्र डेढ मिनट • झटके में गुजरात के बहुत बडे हिस्से में भयकर तबाही। भरभराकर धराशायी होते भवन और मलबे के विशाल ढेर मे तबदील होती बस्तिया। चारों तरफ हाहाकार और चीत्कार। लाशो के अबार मे बदलते हसते-खेलते जीवन। घोर निराशा और असहायता की हालत। ककरीट के भारी स्तम्भों, छतों और दीवारों के नीचे दबे-फसे-मरे लोग। मलबे में दबे बच्चो को बचाने के लिए बेतहाशा इधर-उधर दौडते मा-बाप और मा-बाप की तलाश में चीखते-चिल्लाते बच्चे। कुल मिलाकर खड प्रलय का-सा दृश्य।

दिल्ली में गणतन्त्र दिवस की भव्य परेड समाप्त हुई और गुजरात की विनाश लीला की खबरे आनी शुरू हो गई। नेता वर्ग और शासन तत्र मे हडबडी। सभी कार्य छोडकर गृहमत्री गाधीनगर पहुचे। खबरों का सिलसिला जारी था—भीषण भूकम्प   अहमदाबाद मे दो सौ मरे   हजारो घायल   दो हजार के मरने की आशका   दस हजार मलबे मे दबे   अनेक बस्तिया धराशायी   लाखो लोग मलबे में दबे जिनके बचने की सभावनाए कम   सचार-तत्र ध्वस्त   भुज तथा भीषण रूप से प्रभावित अन्य क्षेत्रो से कोई सम्पर्क नहीं   विश्वभर से गुजरात के प्रति सवेदना और सहायता के सदेश   सेना राहत कार्य मे जुटी   देशी-विदेशी दल गुजरात पहुचे। सचार माध्यम द्वारा बार-बार उल्लिखित-अहमदाबाद, गाधीधाम तथा भुज जैसे परिचित और भुचाऊ, अजार तथा दुधई जैसे अनजाने नाम लोगो की जबान पर तैरने लगे।

भूकम्प से हिली दिल्ली जान-माल के नुकसान से तो बच गई लेकिन गुजरात की तबाही से उसका दिल दहल गया। २९ जनवरी को प्रधानमत्री गुजरात पहुचे। बाहरी दिल्ली से सासद, भाजपा के महामत्री एव दिल्ली के पूर्व मुख्यमन्त्री डॉ० साहिब सिह वर्मा भी उनके साथ थे। उन्होंने अभूतपूर्व विनाश को स्वय अपनी आंखों से देखा। 'साहिब' और 'सिह' जैसे नाम-शब्दों के पीछे उनका सवेदनशील हृदय रो उठा। वे भारी मन से दिल्ली लौटे।

डॉ० वर्मा दिल्ली तो लौट आए लेकिन रात को नींद कहा ! आंखों के सामने विध्वस के दृश्य कौंध रहे थे। हृदय बार-बार उद्वेलित हो उठता था। इसी उद्वेलन के बीच से प्रकट हुआ एक दृढ संकल्प। उन्होंने निश्चय किया कि वे अपनी समाजसेवी सस्था 'राष्ट्रीय स्वाभिमान' के माध्यम से किसी एक गाव का पुनर्निर्माण करेंगे। अगले सप्ताह ही वापिस भुज पहुचे। क्षेत्र का सर्वेक्षण किया गया और निर्णय लिया कि पूरी तरह से ध्वस्त दुधई गाव को नए सिरे से बसाएंगे।

दुधई, भुज से पूर्व की दिशा में लगभग ६० किलोमीटर की दूरी पर प्रान्तीय राजमार्ग से एक किलोमीटर हटकर बसा हुआ साठ सौ घर-परिवारों का गाव। आसपास के गावो मे प्रमुख। छोटे से बाजार, जल आपूर्ति तथा टेलीफोन एक्सचेंज आदि की सुविधाओ से युक्त। सैंकडो चिताओं को अग्नि दे चुके हक्के-बक्के लोग। पूरा का पूरा गाव शब्द के सच्चे अर्थों में धराशायी। मानो आधुनिक इतिहास ने किसी नए 'मोन-जो-दडो' (मुर्दों का टीला) को जन्म दिया हो। समस्या थी कि मलबे के इस ढेर पर पुनर्निर्माण कैसे हो ? मलबे को तोडकर उठाने लायक बनाना क्या कोई सरल काम था। अगर यह भी हो जाए कि मलबा बने पूरे गाव को कहा डाला जाए ? कितना व्ययसाध्य और श्रमसाध्य होगा यह काम ! फिर, जैसी कि भारतीय गावों की स्थिति है, गाव नियोजित रूप से भी तो नहीं बसा था। ऐसी हालत मे तय किया गया कि गाव का नवनिर्माण सुनियोजित तरीके से, पास ही किसी दूसरे स्थान पर किया जाए। लेकिन यहा भी एक बाधा थी—ग्रामवासियों का अपने पैतृक आवासो के प्रति मोह। चाहे वे मलबे के ढेर में बदल चुके थे लेकिन उनके साथ दबी-बिखरी यादें तो खत्म नहीं हुई थी। समस्या के समाधान के लिए गाव के लोगों की समिति बनाकर समस्या उनके सामने रखी गई। अंतत वे ध्वस्त गांव से दो किलोमीटर दूर प्रांतीय राजमार्ग के साथ बसने को तैयार हो गए। गाव के परिवारों की संख्या और नए गांव में दी जाने वाली पार्क, स्कूल, हैल्थ सैंटर आदि की सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए ६० एकड भूमि खरीदने का निश्चय किया गया। किसी ने अपनी भूमि स्वेच्छा से बेचने का प्रस्ताव रखा और किसी को मनाना पडा। भूमि प्राप्त हो जाने पर बस्ती का नक्शा बनवाया गया। 'हिन्दुस्तान अर्बन डिवलमैंट कार्पोरेशन' के परामर्श से भूकम्परोधी आवास का डिजाइन तैयार हुआ और प्रत्येक परिवार को १०५ वर्गमीटर के प्लाट पर दो कमरे, रसोई तथा शौचालय बनाकर देने का निश्चय किया गया।

इसी बीच दुधई से दो-ढाई किलोमीटर की दूरी पर स्थित 'भुजपुर' गावे की चर्चा उभरी। इतने पास में स्थित इस गाव को उपेक्षित छोड देना क्या ठीक होगा ? कुल दो सौ घर ही तो हैं ? 'राष्ट्रीय स्वाभिमान' के संरक्षक डॉ० साहिब सिह वर्मा ने ऐलान किया-दुधई के साथ-साथ हम भुजपुर का भी निर्माण करेंगे। दुधई अगर गाय है तो भुजपुर वत्स है। गाय को अपनाया है तो बछडे को कैसे छोडा जा सकता है। यह प्रेम और अपनत्व पाकर भुजपुरवासियों की आखें नम हो उठी।

कुल मिलाकर एक हजार आवासो का निर्माण करना था। अनुमानित व्यय बारह करोड रुपये। निर्णय हो जाने और योजना बन जाने के बाद अब क्रियान्वयन की बारी थी। इसे सम्पन्न करने के लिए राष्ट्रीय स्वाभिमान के कार्यकर्ता सक्रिय हो उठे। इसके सचिव कैप्टन रुद्रसेन सिन्धु सहित दिल्ली से अनेक कार्यकर्ताओं ने जाकर दुधई में डेरा डाल दिया। 'बम्बई सबर्बन इलैक्ट्रिसिटी सप्लाई कम्पनी' को निर्माण कार्य का ठेका दे दिया गया और बस्ती की आधारशिला रखवाने के लिए १९ फरवरी की तिथि निश्चित कर दी गई। शिलान्यास के लिए गुजरात के मुख्यमन्त्री श्री केशुभाई पटेल पधारे। उनके साथ स्थानीय सासद और एम एल ए सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति वहा उपस्थित थे। हजारों ग्रामवासियों की मौजूदगी में डॉ० साहिबसिह वर्मा ने घोषणा की कि १०० दिन के भीतर बस्ती का निर्माण करके ग्रामवासियो को इसमे स्थानान्तरित कर दिया जाएगा। तालियों की गडगडाहट से इस घोषणा और उसके पीछे निहित दृढ संकल्प का स्वागत किया गया। इतनी सक्रियता और कर्मठता से लोग हर्ष विभोर भी थे और अवाक् भी। नई दुधई का निर्माण विधिवत् शुरू हो गया और इसका नाम भी नया रखा गया-इन्द्रप्रस्थ।

उधर भुजपुर मे भी जमीन समतल की जा रही थी। ग्रामवासियों का भी पूरा सहयोग मिल रहा था। नए भुजपुर की आधारशिला रखवाने के लिए ५ मार्च का दिन तय किया गया। गाव के लोगों में उत्साह था। भारतीय जनता पार्टी के तत्कालीन अध्यक्ष श्री बंगारू लक्ष्मण, केन्द्रीय सरकार में मंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे तथा गुजरात सरकार के कई मंत्री उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन कर रहे एक स्थानीय युवक ने हृदय के उद्गार प्रकट करते हुए डॉ० साहिबसिंह वर्मा को अपने ग्रामवासियों के लिए 'उद्धारक' तथा 'भगवान्' जैसे विशेषणों से अलकृत कर दिया। जब प्रमुख जनों के भाषण एवं शिलान्यास की औपचारिकताए पूरी हो चुकी तो डॉ० वर्मा भी अपने वक्तव्य के लिए उठे। वे बोल रहे थे—बधुओ ! हम कहां के उद्धारक और कहा के भगवान्। आपका इतना बडा दु ख देखकर थोडी-सी हमदर्दी जताने के लिए हम आ पहुचे। इसके बदले जो प्यार और सम्मान आपने हमको दिया वह हमारी पूजी बन गया। यह पूंजी सदा हमारे साथ रहेगी। दुधई गाव में कल रात कुछ लोग मुझसे मिलने आए। आपसी चर्चा के दौरान मैंने एक बंधु से पूछ लिया—आपके कितने बच्चे हैं ? उसने जवाब दिया—साहब ! महीने भर पहले तो तीन थे, अब तो केवल एक बेटी ही मेरे पास बची है। इतना कहकर वह फूट-फूटकर रोने लगा। यह घटना सुनाते हुए साहिबसिंह वर्मा स्वय भी रो पडे और बोले-इतने बडे दु ख को क्या कोई दूर कर सकता है ? अगर हमारे कार्यों से आपको थोडी सी दिलासा मिल गई तो हम अपने प्रयत्नों को सार्थक समझेंगे। भुजपुर को दिए गए नए नाम 'विजया राजे पुरम' का उल्लेख करते हुए उन्होंने श्रीमती वसुन्धरा राजे की ओर उन्मुख होकर कहा-यह मा का घर है। आप मां के घर आई हैं। जब तीन महीने के बाद ये नए घर गाव वालों को सौंपे जाएगे तो आप न केवल यहा आएगी बल्कि एक दिन यहा निवास भी करेंगी।

नवनिर्माण का कार्य [illegible] तेजी के साथ जारी है। 'इन्द्रप्रस्थ' में सडकों का निर्माण हो रहा है। निर्माण सामग्री पहुच रही है। मकानों की नींव खोदी जा रही है। सडकों के किनारे रोशनी का इतजाम हो चुका है। निर्माणाधीन विशाल क्षेत्र मे रात को जगमगाती सोडियम वेपर बल्बो की रोशनी निर्माण की तेजी को उजागर कर रही है। फोन और फैक्स की सुविधा से युक्त कार्यालय में प्रात काल से लेकर देर रात तक सक्रियता देखी जा सकती है। दिल्ली से आए व्यवस्थापकों-कार्यकर्ताओं के लिए शामियाना लगा हुआ है। स्टोर तबुओ में है और भोजनालय भी तबुओं में चलता है। इस विशाल कार्य को प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से अनेक विशेषज्ञो, प्रशासको और कार्यकर्ताओं का सहयोग मिल रहा है। योजना के कार्यान्वियन की मुख्य जिम्मेदारी कच्छ क्षेत्र से पूरी तरह परिचित और अनुभवी प्रशासक श्री समशेरसिह पर है। वे अपने विभाग से छुट्टी लेकर वहीं डेरा जमाए हुए हैं। गांधीधाम के कई सज्जन बहुत सहयोग कर रहे हैं। गांववाले भी साथ हैं। उनके मन में उत्सुक्ता है कि घर जल्दी बनकर तैयार हों। उनका दु.ख-दर्द धीरे-धीरे कम हो रहा है और प्रकृति की मार से डगमगाया आत्मविश्वास लौट रहा है। विनाश की धरती पर फिर से जीवन के अकुर फूट रहे हैं।

एम-९३, साकेत, नई दिल्ली-११००१७

(सूरज सुजान के सौजन्य से)

आर्य-संसार

साधना, स्वाध्याय एवं सेवा शिविर

ज्येष्ठ शुक्ला दशमी से आषाढ़ कृष्णा चतुर्थी २०५८
तदनुसार १ जून से १० जून २००१ तक

आपके मन के किसी कोने मे साधना करने की इच्छा बीज रूप मे हो, अपने जीवन को वेद एव ऋषियो के आदर्शानुकूल ढालना चाहते हो, विधेयात्मक एव सृजनात्मक जीवन चाहते हो, अपने मन को पवित्र बनाने की इच्छा रख हो, वैदिक साधना-पद्धति को जानना समझना चाहते हो, वैदिक सिद्धान्तो को समझना चाहते हो या अपने को वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में लगाने की अभिलाषा रखते हो, तो यह शिविर आपको एक उत्तम अवसर भी प्रदान करेगा। इस शिविर मे योग का क्रियात्मक अभ्यास, वैदिक सिद्धान्तों एव सेवा के विभिन्न पहलुओं का परिज्ञान कराया जायेगा।

शिविरार्थियों को पूरा लाभ मिल सके एतदर्थ अनुशासन मे चलना नितात आवश्यक होगा। शिविर के दिनो में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह का पालन एव मौन के निर्धारित समय मौन रहना अनिवार्य है। शिविर के पूरे काल मे साधक को पत्र-दूरभाष आदि किसी भी प्रकार से बाह्य सपर्क का निषेध है। ऋषि उद्यान के अदर ही रहना है। समाचार-पत्र पढने, आकाशवाणी सुनने, दूरदर्शन देखने की अनुमति नहीं है। धूम्रपान, तम्बाकू या अन्य किसी भी मादक द्रव्य का सेवन निषिद्ध रहेगा। जो इन नियमो तथा शिविर की दिनचर्या को स्वीकार करे वे मत्री, परोपकारिणी सभा, केसरगज, अजमेर (राज०) से पत्र/दूरभाष/साक्षात् सपर्क करके शिविर से पूर्व अपना नाम पजीकृत करवा ले। शिविर मे माता-बहनें भी भाग ले सकती हैं, उनके निवास की व्यवस्था पृथक् की जाती है।

—मंत्री, परोपकारिणी सभा, केसरगज, अजमेर। दूरभाष ४६०१६४

आर्यसमाज सिवाह (पानीपत) का चुनाव सम्पन्न

सरक्षक–प्रिय लाभसिह, प्रधान–श्री इन्द्रसिह, उपप्रधान–श्री कृष्णसिह, मत्री–श्री कर्णसिह, उपमत्री–श्री प्रतापसिंह, कोषाध्यक्ष–श्री ईश्वरदास, प्रचार मत्री–सुखवीर सिह, पुस्तकाध्यक्ष–सदीप सिह।

—कर्णसिह, मत्री–आर्यसमाज सिवाह

सिरसा जिला के जमाल गांव का आर्यमहासम्मेलन सम्पन्न

सिरसा १४ अप्रैल। यहा से २५ किलोमीटर दूर जमाल में आर्य महासम्मेलन दो दिन चला जिसमे कई कार्यक्रमो का आयोजन किया गया। इसमे प्रथम दिन आचार्य चितामणि जी शास्त्री के ब्रह्मत्व मे सामवेद पारायण यज्ञ किया गया जिसकी पूर्णाहुति ११ अप्रैल को सम्पन्न हुई।

१० अप्रैल को यज्ञोपरान्त आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान् स्वामी यज्ञमुनि जी के करकमलों से ओ३म् ध्वजारोहण हुआ। इस महासम्मेलन मे मद्यनिषेध, राष्ट्ररक्षा, महिला सम्मेलन, वेदरक्षा सम्मेलन, पाखण्ड खण्डन सम्मेलन, गोरक्षा सम्मेलनो का आयोजन किया गया।

—राजेन्द्र, मन्त्री, आर्यसमाज सिरसा

श्री हरिसिंह जी सैनी प्रधान नागौरी गेट आर्यसमाज हिसार, जमाल गांव आर्यसमाज मन्दिर की आधार शिला रखते हुए। पास में खड़े हैं चौ० दानवीर हरलाल आर्य, राजेन्द्र आर्य, श्रवणकुमार कर्मशाना आदि।

आर्यसमाज उज्जैन का वार्षिक निर्वाचन

प्रधान–श्री राजेन्द्र व्यास, उपप्रधान–श्री गोवर्धनलाल आर्य, श्री वेदप्रकाश सैण्डो, मत्री–श्री ओम्प्रकाश यादव, उपमत्री–श्री रामप्रसाद मालाकार, श्री दिलीप चाहर, पुस्तकाध्यक्ष–श्री नरेन्द्र भावसार, सम्पादक आर्य सकेत–श्री सुखदेव व्यास।

—ओम्प्रकाश यादव, मत्री–आर्यसमाज उज्जैन

आर्यसमाज जुरहैड़ा जिला भरतपुर (राजस्थान) में वेदप्रचार की भारी धूम

आर्यसमाज जुरहैडा जिला भरतपुर (राजस्थान) मे तिथि ३१ मार्च व १ अप्रैल २००१ को वेदप्रचार का आयोजन किया। इस समारोह की अध्यक्षता चौ० तैय्यब हुसैन कृषि मत्री राजस्थान की सुपुत्र श्रीमती जाहीदा बेगम ने की। इस अवसर पर प्रभात फेरी निकाली गई तथा देवयज्ञ किया गया जिसमें सैंकडो स्त्री, पुरुषो, बच्चो ने भाग लिया।

इस समारोह मे उत्तरी भारत के प्रसिद्ध विद्वान् कवि पंडित नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य ग्राम बहीन जिला फरीदाबाद (हरयाणा) ने अपने भजनोपदेश मे बताया कि महर्षि दयानन्द सरस्वती मानवता के पुज थे जिन्होने वेदों का भाष्य करके ससार को यह बताया कि वेद-ईश्वरीय ज्ञान है। वेदो मे जीवनपयोगी शिक्षाए दी गई हैं। वेद हमे शुभ कर्म करने की शिक्षाए देते हैं।

—गोविन्दराम आर्य, मत्री आर्यसमाज जुरहैडा

गुजरात भूकंप पीड़ितों का आजीवन स्मारक 'जीवन प्रभात'

२६ जनवरी २००१ को गुजरात और विशेषकर कच्छ जिले मे विनाशकारी भूकप आया जिसमे ६०-७० हजार लोग मृत्यु के ग्रास बने और लगभग इतने ही लोग अपग हो गए। अरबो रुपये की सम्पत्ति का विनाश हुआ और गुजरात १० वर्ष पीछे चला गया।

ऐसी स्थिति मे ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति इन्सान की इन्सानियत जाग उठी। पूरे विश्व से भूकम्प पीडितो को सहायता पहुचने लगी। आर्यसमाज जिसका छठा नियम सभी आर्यो को प्रेरणा देता है 'ससार का उपकार करो' पूरे विश्वस्तर पर आर्यसमाज की सेवा मे लग गया।

सार्वदेशिक सभा-दिल्ली ने गाधीधाम को भूकम्प सेवा का केन्द्र घोषित किया। २६ जनवरी दोपहर से ही भोजनालय व मलबो मे जीवित, मृतको को निकालना शुरू कर दिया। ३-४ दिन बाद से ही पूरे देश से आर्यो के दल सेवा हेतु आना शुरू हो गए। पूरे कच्छ क्षेत्र मे आर्यसमाज ने राहत सामग्री बटवायी। आर्यसमाजो द्वारा राहत सामग्री आयी ही, परन्तु दुबई, जापान, दक्षिण अफ्रीका, मस्कत आदि से भी करीब ६० ट्रक राहत सामग्री आर्यसमाज गाधीधाम को भेजी गयी। केवल आर्यसमाज गाधीधाम ने १७५ ट्रक राहत सामग्री बाटी। सीधे कच्छ मे पहुचकर राहत सामग्री बाटकर गये आर्य दलो ने भी ४०-५० ट्रक बाटे। देश भर से आर्यजन, आर्य अग्रणी स्थिति का मुआयना करने पधारे, स्थानीय कार्यकर्ताओं का मनोबल बढाया।

वैसे जो गाव पुनर्वास हेतु दत्तक लिये जा रहे हैं लेकिन बच्चो व विधवाओ के पुनर्वास की ओर आर्यसमाज का विशेष ध्यान गया है-जो गाव के पुनर्वास से भी ज्यादा जरूरी है। इन असहायो की जीवनभर सहायता आर्यसमाज करेगा।

सभी दाताओ से निवेदन है कि अपनी ओर से, आर्यसमाज की ओर मे दान **'जीवन प्रभात'** योजना के अतर्गत 'आर्यसमाज गाधीधाम चेरिटेबल ट्रस्ट' के नाम ड्राफ्ट/चेक से 'आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग, झडा चौक के पास गाधीधाम (कच्छ) ३७० २०१ पर भेजे। ५१००० रुपये से ज्यादा के दाता का नाम सगमरमर पत्थर पर लिखा जायेगा अथवा बालक का मासिक २००० रु० खर्च के सहयोग का सकल्प भी किया जा सकता है। दान आयकर के अतर्गत १०० प्रतिशत आयकर मुक्त है।

—वाचोनिधि आर्य, मत्री–आर्यसमाज गाधी धाम (गुजरात)

वेदप्रचार कार्यक्रम सम्पन्न

दिनाक ३०-३-२००१ को आर्यसमाज मन्दिर बीगोपुर जिला महेन्द्रगढ मे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपदेशको द्वारा वेद प्रचार किया गया। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण था समाज मे व्याप्त कुरीतिया। आर्यसमाज बीगोपुर के प्रधान श्री कन्हैया लाल व मत्री श्री फूलसिह आर्य ने भी पडाल मे उपस्थित लोगो को अपने विचारो से अवगत करवाया तथा समाज मे फैली कुरीतियो को जड से उखाड फेकने का सकल्प लिया।

इस अवसर पर आर्यसमाज मन्दिर मे रह रहे वानप्रस्थी अमर मुनि ने भी अपने विचार प्रकट किये। पाश्चात्य सस्कृति के बढते प्रभाव पर दु ख प्रकट किया तथा उन्होने लोगो को बताया कि इस समय आर्यसमाज ही एक ऐसी सस्था है जो समाज की डूबती नैया को बचा सकता है।

—फूलसिह आर्य, मत्री–आर्यसमाज बीगोपुर

जीवन कार्षापण के दो पहलू

—आचार्य डॉ० संजय देव, आर्यसमाज मल्हारगज, इन्दौर (म०प्र०)

जो कुछ हमे अच्छा लगता है वह हमे सुख देता है। इसके विपरीत जो हमें अच्छा नहीं लगता, वह दु ख का कारण बनता है। यह भी निश्चित है कि जीवन में वही सब कुछ नहीं घटता, जो हम चाहते हैं। जो कुछ हमारे न चाहने पर घटता है वही हमे दु ख देता है। लेकिन यदि हमे मनचाहा प्राप्त नहीं हुआ है तो बुद्धिमत्ता इसी मे ही है कि जो कुछ हमे प्राप्त है उसे मनचाहा बनाले। दार्शनिक ह्यूम के अनुसार वह सुखी है, जिसकी परिस्थितिया उसके स्वभाव के अनुकूल हैं। लेकिन वह और भी सुखी है जो अपने स्वभाव को परिस्थितियों के अनुकूल बना लेता है।

मनुष्य जीवन घडी के पेण्डुलम की भाति सुख और दु ख के मध्य झूलता रहता है। उस पर कभी सुख की वर्षा होती है तो कभी दु ख उसे जकड लेते हैं। यह भी विचित्र बात है कि अधिक सुख की अभिलाषा ही दु ख का प्रमुख कारण है। जिस प्रकार बहुत सारे रग किसी चित्र को बदरग बना देते हैं, उसी तरह बहुत अधिक सुख जीवन को दु खी बना देते हैं।

वस्तुत जीवन एक वीणा की भाति है एव सुख और दु ख उसके दो राग हैं। यह जीवन जीने वाले पर निर्भर करता है कि वह वीणा पर कौन-सा राग बजाना चाहता है। यदि हम दु ख का राग अलाप रहे हैं तो दोष वीणा का नहीं हमारा है। महाकवि कालिदास का कथन है कि किसी को केवल सुख या एकमात्र दु ख नहीं मिलता। दु ख और सुख रथ के पहिये की भाति ऊपर और कभी नीचे रहा करते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति की यह आकाक्षा एव अभिलाषा होती है कि उसके पास सुख-सुविधा के साधन हो तथा उसका जीवन सुख और चैन से व्यतीत हो। सब समान रूप से सुखी हो-यह समय और समाज की पुकार है। हम सब अपनी कल्पना के स्वर्ग को साकार कर अधिकतम सुख प्राप्त करना चाहते हैं। कौन ऐसा व्यक्ति है जो स्वर्ग की अवतारणा करके स्वर्णिम प्रभात के दर्शन करने का अभिलाषी न हो ? सामान्य व्यक्ति की स्थिति यह है कि जो कुछ हमारे पास नहीं है हम उसके लिए लालायित रहते हैं और जो कुछ उपलब्ध है उसका सम्यक् उपयोग एव उपभोग नहीं कर पाते हैं। तब क्या सुख-चैन या स्वर्ग का जीवन अलभ्य है ? स्वर्ग को वैकुठ भी कहा गया है। अर्थात् जहा किसी तरह की कुठा न हो तब क्या कुठारहित जीवन कल्पना की वस्तु है ?

सुखी एव प्रसन्न जीवन का आधार धन, पद नहीं है। उसे वर्तमान स्थिति मे सदुपयोग करने मे पाया जा सकता है। इन्हीं दो आधारो पर उच्चतर भविष्य के लिए प्रयत्न परिश्रम एव पुरुषार्थ भी सभव है। अपनी आजीविका के लिए कठिन सघर्ष करने वाले एव विषम परिस्थितियों से जूझने वाले अनेक लोगो के चेहरो पर सुख एव सन्तोष की आभा दिखाई देती है, जबकि अपेक्षाकृत अधिक सुविधा-सम्पन्न परिस्थितियों मे रहने वाले दु खी और दुर्भाग्यपूर्ण जीवन जीते हैं। ऐसा क्यो ? दरअसल सुखी एव प्रसन्न जीवन के रास्ते मे परिस्थितिया बिल्कुल भी बाधक नहीं हैं। मन स्थिति ही सन्तोष एव असन्तोष को जन्म देती है। सन्तुष्टि जहा वर्तमान परिस्थितियों को पूरी तरह स्वीकार करने का भाव उत्पन्न कराती है वहीं असन्तुष्ट मन सदा अपनी कमियो को देखकर उद्विग्नता पैदा करता है। सुख की खोज मे असन्तुष्ट मन की व्यथा प्रकट करते हुए टैगोर कहते हैं–'नदी का यह किनारा आह भरकर कहता है कि सामने के किनारे पर ही सारे सुख हैं, यह मैं अच्छी तरह जानता हू।' सामने वाला किनारा पहले वाले से भी ज्यादा आह भरकर कहता है कि 'जगत् मे जितना सुख है, वह सारा उस किनारे पर है।'

जो अपने वर्तमान से असन्तुष्ट है, उसे दु र्भाग्यपूर्ण एव अभावग्रस्त समझते हैं, उससे सामजस्य नहीं कर पा रहे हैं, साधन एव सुविधाओ के लिए रोना रोते हुए व्यग्र रहते हैं। वे एक उच्चतर भविष्य के लिए प्रयत्न किस प्रकार कर सकते हैं। उज्ज्वल भविष्य के लिए सन्तुलित चित्तवृत्ति, स्थिर बुद्धि, प्रसन्न मन स्थिति एव उपलब्ध साधनो मे विश्वास की आवश्यकता होती है। अभावात्मक सोच एव असीमित इच्छाए असन्तोष का मार्ग प्रशस्त करती हैं। इच्छाओ के भवर मे फसा व्यक्ति अपने आसपास बिखरे सुखो को नहीं देख पाता और दु खी होता है। इच्छाए अनन्त हैं और उसी तरह दु ख भी अनन्त हैं। जार्ज बर्नार्ड शॉ ने कहा है कि 'जीवन मे केवल दो ही स्थल दु खपूर्ण होते हैं। पहला इच्छाओ की पूर्ति हो जाना और दूसरा इच्छाए अपूर्ण रह जाना। वास्तव में वे लोग बहुत सौभाग्यशाली हैं, जो अपनी इच्छाओ एव सामर्थ्य के बीच व्याप्त खाई की चौडाई को शीघ्र जान लेते हैं। अन्यथा चादर से अधिक पैर फैलाने वालो को दु खी देखा गया है।' स्वामी विवेकानन्द के अनुसार, "इच्छाओ का समुद्र सदा अतृप्त रहता है। उसकी माग ज्यो- ज्यो पूरी की जाती है त्यो-त्यो वह गर्जन करता है।"

खुशिया अथवा सुख परमात्मा की ऐसी देन हैं जो सम्पूर्ण जीवन-मार्ग पर बिखरे पडे हैं। जो लोग मंजिल पर पहुचकर खुशिया तलाशने को बेताब हैं, वे निराश और दु खी होते हैं। जीवन का हर पल खुशनुमा है, इसे खुशी से जीए। जीवन का हर क्षण आनन्द से परिपूर्ण है इसका अमृतपान करें। आनन्द के गीत गाए, उल्लास से झूमें और दु ख या गम को दफन कर दे।

पांच छात्रों ने भारतीय परिधान में डिग्री ली

गुरु जम्भेश्वर यूनिवर्सिटी हिसार द्वारा आयोजित प्रथम दीक्षात समारोह मे लगभग १४०० विद्यार्थियो ने स्नातक व स्नातकोत्तर तथा डाक्टरेट की डिग्रिया लीं। समारोह के मुख्य अतिथि उपराष्ट्रपति श्री कृष्णकान्त रहे। पाच छात्रो ने डॉ० विजया (बी एम सी), डिम्बल (बी एम सी), तरुणा (एम एम सी), मनीष (एम एम सी), यशवीर (एम एम सी) ने भारतीय परिधान (धोती कुर्ता, साडी व पटका) पहना व काले गाऊन (ब्रिटिश परिधान) को अस्वीकार किया। भारतीय परिधान का प्रचलन यूनिवर्सिटी के प्रथम दीक्षात समारोह मे ही हो जाए इसके लिए २० दिन तक सघर्ष करना पडा। मा० उपकुलपति, उपराष्ट्रपति व अखबारो को पत्र लिखे गए। परिधान का प्रबन्ध स्वय अपने बलबूते पर किया गया। धोती पहनाने का जिम्मा भी व्यक्ति विशेष ने लिया। काले गाऊन के साथ-साथ यदि भारतीय परिधान भी यूनिवर्सिटी मे उसी काऊटर पर किराए पर मिलता हो तो बहुत से और छात्र व छात्राए भी भारतीय परिधान मे डिग्री लेगे। भविष्य मे भारतीय परिधानो का प्रबन्ध यूनिवर्सिटी परिसर मे ही किया जाए व शिक्षक गण भी भारतीय परिधान पहनकर समारोह मे सम्मिलित हो।

—डॉ० विजया, हिसार

(सार्वदेशिक से साभार)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिग प्रेस, रोहतक (फोन ७६८७४, ५७७७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, पं० जगदेवसिह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ७७७२२) से प्रकाशित।
पत्र मे प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। पत्र के प्रत्येक प्रकार के विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०२
पंजीकरणसंख्या टैक/एम.आर./49/रोहतक/99 ☎ ०१२६२-७७७२२

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र रोहतक
प्रधानसम्पादक : प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक :- डा० सुदर्शनदेव आचार्य
वर्ष २८ अंक-२३ ७ मई, २००१ वार्षिक शुल्क ६०) आजीवन शुल्क ६००) विदेश में १० पौंड एक प्रति १-२५

आवश्यक सूचना

सभा से सम्बन्धित आर्यसमाजों के अधिकारी महानुभावों की सेवा में निवेदन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का त्रिवार्षिक साधारण अधिवेशन (चुनाव) ९ अगस्त, २००१ से पूर्व होना है। आर्यसमाज के अधिकारियों की मांग पर सभा प्रधान जी ने प्रतिनिधि फार्म भरकर भेजने की अन्तिम तिथि ३० अप्रैल से बढाकर १५ मई, २००१ तक कर दी है।

१ नए प्रतिनिधियों की स्वीकृति के लिए सभा से सम्बन्धित प्रत्येक आर्यसमाज को पिछले तीन वर्षों का वेदप्रचार तथा दशांश की राशि के साथ-साथ सर्वहितकारी का शुल्क ६० रुपये वार्षिक भेजना अनिवार्य है। वर्ष ९८-९९, ९९-२०००, २०००-२००१ का शुल्क जमा न होने पर प्रतिनिधि स्वीकृत नहीं होंगे।

२ प्रतिनिधि फार्म भरते समय प्रतिनिधि फार्म के सभी कॉलम पूरे भरें जैसे प्रतिनिधि फार्म के प्रथम पेज पर निवेदन-पत्र, प्रतिनिधि चुनने की साधारण सभा की तारीख, प्रधान, मंत्री व कोषाध्यक्ष के हस्ताक्षर करवाने अनिवार्य हैं।

३ चुने गए प्रतिनिधि का प्रतिज्ञा पत्र व निश्चय-पत्र हस्ताक्षर करवाकर प्रधान व मंत्री से प्रमाणित करवाकर भेजें।

४ प्रतिनिधि फार्म के पेज नं० २ पर नाम आर्य सभासद, पिता का नाम, व्यवसाय, आयु, शुल्क की दर (मासिक/वार्षिक), शुल्क जो वर्ष भर में समाज को इस सभासद् से प्राप्त हुआ।

५ प्रतिनिधि फार्म पर जहां भी, मंत्री, प्रधान, कोषाध्यक्ष के हस्ताक्षर का कॉलम है उनके हस्ताक्षर अवश्य करवाकर भेजे।

अत. जिन आर्यसमाजों ने वर्ष ९८-९९, ९९-२०००, २०००-२००१ अर्थात् मार्च २००१ तक का तीन वर्षो का वेदप्रचार, दशांश तथा सर्वहितकारी शुल्क नहीं भेजा है उसे शीघ्र सभा प्रचारकों अथवा मनीआर्डर द्वारा सभा को भेजने का कष्ट करें। आपसे अनुरोध है कि आप इस सम्बन्ध में यथाशीघ्र कार्यवाही कर अपना तथा अपने आर्यसमाज का पूर्ण सहयोग प्रदान करें।

—प्रो० सत्यवीर शास्त्री, डालावास
सभामंत्री

विशेष निवेदन

नीचे एक पत्र का प्रारूप नं० 1 दिया गया है। इसे सब आर्यसमाजे, शिक्षण सस्थाए तथा बुद्धिजीवी व्यक्ति विधिमत्री भारत सरकार, राज्यपाल तथा मुख्यमत्री हरयाणा को तुरन्त भेजने की कृपा करें। प्रतिलिपि समिति को भेजें।

सयोजक **हरयाणा राष्ट्रभाषा समिति**
दयान्दमठ, रोहतक

प्रारूप नं० 1

माननीय विधिमंत्री राज्यपाल तथा मुख्यमंत्री को भेजे जाने वाले पत्र का प्रारूप

सेवा मे

माननीय श्री अरुण जेटली,
विधि एवं न्यायमत्री,
भारत सरकार नई दिल्ली

विषय **1. हरयाणा उच्च न्यायालय का पृथक् गठन एव**
2. हरयाणा उच्च न्यायालय मे, हरयाणा की राजभाषा हिन्दी के प्रयोग की अनुमति।

मान्यवर महोदय !

1 इस समय हरयाणा और पजाब तथा चण्डीगढ का इकट्ठा उच्च न्यायालय एक ही है, जबकि हरयाणा को पृथक् राज्य बने हुए लगभग 35 वर्ष हो चुके हैं। अभी हाल ही मे उत्तराचल, झारखण्ड और छत्तीसगढ अलग राज्य बने हैं उनके उच्च न्यायालय भी अलग बनाए हैं। अत हरयाणा का अलग उच्च न्यायालय होना चाहिए और यह उच्च न्यायालय वर्तमान भवन के आधे भाग मे होना चाहिए। अलग उच्च न्यायालय की माग के निम्न मुख्य कारण हैं –

(क) तीन राज्य पजाब, हरयाणा तथा चण्डीगढ का एक ही उच्च न्यायालय होने के कारण मुकदमों की सख्या इतनी अधिक हैं कि एक ही उच्च न्यायालय मे उनका निपटारा होने मे कई-कई वर्ष लग जाते हैं और लोगो को न्याय मिलने मे इतनी देर हो जाती है कि उस न्याय का औचित्य ही समाप्त हो जाता है।

(ख) सम्मिलित उच्च न्यायालय का काम-काज शत-प्रतिशत अग्रेजी मे होता है जबकि हरयाणा की भाषा हिन्दी है। हरयाणा के लोगो की सुविधा के लिए उच्च न्यायालय में काम-काज की भाषा हिन्दी होनी चाहिए। हिन्दी भाषा लागू करने के लिए उसका पृथक् किया जाना आवश्यक है।

2. जैसा कि ऊपर कहा गया है हरयाणा तथा पजाब उच्च न्यायालय की भाषा इस समय केवल अग्रेजी है। इसके कारण पक्षकारो को समुचित न्याय प्राप्त करने मे कठिनाई होती है तथा वकीलो को मुह मागी फीस देनी पडती है। सविधान तथा राजभाषा अधिनियम की धाराओ के अनुसार राष्ट्रपति महोदय हरयाणा की राजभाषा हिन्दी मे काम करने की अनुमति, उच्च न्यायालय को दे सकते हैं। 26 नवम्बर 1998 के राष्ट्रपति महोदय के आदेश हैं, के अनुसार ऐसा करना अपेक्षित है।

3 निवेदन है कि हरयाणा के नागरिको के हित मे, हरयाणा का पृथक् उच्च न्यायालय वर्तमान भवन मे ही स्थापित करने तथा राजभाषा हिन्दी मे उच्च न्यायालय मे कार्यवाही की अनुमति देने के आदेश पारित करने की कृपा करे।

सधन्यवाद

भवदीय

हस्ताक्षर
सस्था की मोहर तथा पता

ऐसा ही पत्र –

1 माननीय बाबू परमानन्द महामहिम राज्यपाल राजभवन, हरयाणा चण्डीगढ।
2 माननीय श्री ओमप्रकाश चौटाला मुख्यमत्री हरयाणा चण्डीगढ को भेजे।
3 प्रतिलिपि सयोजक हरयाणा राष्ट्रभाषा समिति दयानन्दमठ, रोहतक को प्रेषित करे।

(लगातार पृष्ठ २ पर)

विशेष निवेदन

नीचे एक पत्र का प्रारूप न० 2 दिया गया है। इसे सब आर्यसमाजें, शिक्षण सस्थाए तथा बुद्धिजीवी व्यक्ति मुख्यमंत्री हरयाणा को तुरन्त भेजने की कृपा करें।

सयोजक . हरयाणा राष्ट्रभाषा समिति
दयानन्दमठ, रोहतक

प्रारूप न० 2

हरयाणा में प्राथमिक कक्षाओं से अंग्रेजी हटवाने सम्बन्धी पत्र का प्रारूप

सेवा मे

माननीय श्री ओमप्रकाश चौटाला, मुख्यमंत्री
हरयाणा सरकार, चण्डीगढ

विषय हरयाणा मे प्राथमिक कक्षाओं से अग्रेजी हटाने का अनुरोध।

मान्यवर,

गत वर्ष आपने हरयाणा मे प्रथम कक्षा से ही अग्रेजी शिक्षा अनिवार्य करदी है। इस सम्बन्ध में आपसे निवेदन है कि प्रथम कक्षा से सरकारी स्कूलो से अग्रेजी को तुरन्त हटाना चाहिए। जिसके निम्न कारण हैं –

1 हरयाणा हिन्दीभाषी प्रान्त है, अत यहा प्रथम कक्षा में अग्रेजी का पठन-पाठन कठिन और अहितकर है।

2 किसी भी हिन्दीभाषी प्रान्त मे प्रथम कक्षा से अग्रेजी अनिवार्य नहीं है। अत हरयाणा मे भी नहीं होनी चाहिए।

3 विदेशी और अवैज्ञानिक लिपि वाली भाषा होने के कारण बच्चों के मस्तिष्क पर बहुत बोझ पडेगा।

4 सरकारी स्कूलो मे लागू करने की बजाय छात्रो की शिक्षा की एकरूपता के लिए प्राइवेट स्कूलो से भी प्रथम कक्षा से अग्रेजी का पठनपाठन समाप्त होना चाहिए।

5 राष्ट्रभाषा हिन्दी का सम्मान तभी होगा जब अग्रेजी की अनिवार्यता हटाई जाएगी।

6 बाल मनोवैज्ञानिक और शिक्षाशास्त्र विश्वमान्य सिद्धान्तो के अनुसार प्राथमिक कक्षाओ मे केवल एक भाषा अर्थात् मातृभाषा ही पढाने का प्रावधान होना चाहिए।

7 एक से अधिक भाषा एक साथ पढाए जाने पर बालक न ठीक से मातृभाषा सीख पाता है और न ही दूसरी भाषा उसकी स्थिति 'न तीतर न बटेर' जैसी हो जाती है।

8 अग्रेजो के समय मे भी भारतवर्ष मे कहीं भी छठी कक्षा से पहले अग्रेजी नहीं पढाई जाती थी। छठी कक्षा से भी अग्रेजी ऐच्छिक विषय के रूप मे पढाई जाती थी।

उपर्युक्त तथ्यो के आधार पर निवेदन है कि प्रथम कक्षा से लागू की अग्रेजी की पढाई को तुरन्त समाप्त करने के आदेश जारी किए जाए ताकि बच्चो के मन पर अग्रेजी का फैला हुआ आतक समाप्त हो।

भवदीय
हस्ताक्षर
सस्था की मोहर तथा पता

प्रति निम्नलिखित को प्रेषित करे -

1 शिक्षामन्त्री हरयाणा सरकार।
2 राज्यपाल हरयाणा सरकार।
3 सयोजक हरयाणा राष्ट्रभाषा समिति दयानन्दमठ, रोहतक।

हरयाणा प्रान्त में स्थित आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा से सम्बद्ध/असम्बद्ध आर्यसमाजों के लिए

परिपत्र

हरयाणा प्रान्त मे स्थित "आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा" से सम्बद्ध अथवा अभी तक असम्बद्ध आर्यसमाजो को इस परिपत्र के द्वारा सूचित किया जाता है कि–

१ १४ ९ १९७५ के पजाब सभा के त्रिशाखन के निर्णय को मान्यता प्रदान करते हुए अम्बाला एव कुरुक्षेत्र मे स्थित न्यायालयो द्वारा हरयाणा प्रान्त मे स्थित विभाजन पूर्व "आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब" के नाम की सभी स्कूल, कालिज, आर्यसमाज मन्दिर, भवन अथवा अन्य कृषि भूमि आदि सभी अचल सम्पत्तियो की डिग्री "आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा" के नाम कर दी गई है।

२ सार्वदेशिक सभा द्वारा निर्धारित "आर्यसमाज के नियमोपनियम" की धारा ४० के अनुसार प्रान्त में स्थित सभी आर्यसमाजो का प्रान्त की "आर्य प्रतिनिधि सभा" से सम्बद्ध होना अनिवार्य है।

अत जिन नई अथवा पुरानी आर्यसमाजो ने आर्य प्रतिनिधि सभा से अपना सम्बन्ध नहीं जोडा है, वे तत्काल इस सम्बन्ध मे कार्यवाही करें।

३ उपर्युक्त नियमोपनियम की धारा ४३ के अनुसार प्रान्तीय सभाओ से सम्बद्ध आर्यसमाजो की रजिस्ट्री प्रान्तीय सभाओ से पृथक् नहीं हो सकती। यदि कोई समाज अपनी सम्पत्ति और सगठन की रजिस्ट्री पृथक् कराएगा और प्रान्तीय सभा चाहे वह धारा ४१ के अनुसार उस समाज के विरुद्ध कार्यवाही कर सकती है।

सभी आर्यसमाजो के अधिकारियो से निवेदन है कि वे इन सभी नियमोपनियमो का पालन करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अनुशासन मे रहकर आर्यसमाज के सगठन को सुदृढ करें।

भवदीय – प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामत्री

आर्यसिद्धान्त-शिक्षा

इन्द्रसिंह आर्य, आरजैड-६०, ब्लाक-ओ, नया रोशनपुरा, नजफगढ़, दिल्ली-४३

(गताक से आगे)

ब्रह्मा की बेटी सरस्वती – विद्या !

(ख) कहते हैं–ब्रह्मा के अपने बेटी विद्या के साथ अनुचित थे व्यवहार।
यह अभियुक्ति पुराणकर्ताओं की है जिन्होंने धर्म से हटाकर अधर्म की ओर मोड दिया है ससार।।
सरस्वती नाम विद्या का है जिसकी ओर प्रमोन्मुख हुए बिना मनुष्य 'ब्रह्मा' पद का नहीं हो सकता दावेदार।
जिसके बिना न कोई मनुष्य कुशल चिकित्सक, कला विशारद बन सकता है और न ही सर्वत्र पा सकता है सत्कार।।

(ग) तनिक सोचिए ! जिन पुराणों के पढने मात्र से ही मन मे उत्पन्न होते हों कुत्सित विचार।
जिनके पृष्ठों पर मुद्रित हो, स्त्री-पुरुष के दर्शन, स्पर्शन अर्थात् अश्लील प्रसगो की भरमार।।
क्या इन तुच्छ ग्रथों के पढने से हमारा या हमारे बच्चों का हो सकता है निस्तार।
नहीं तो फिर क्यो पौराणिक भाई यह कहते हैं कि आर्यसमाज का पुराणो से सदैव विरोध रहा है, समझ से बाहर।।
ऋषि कहते हैं-जैसे अमृत तुल्य अन्न मे विष मिला हो उसे छोड देते हैं समझकर बेकार।
इसी प्रकार इन समस्त अनार्ष ग्रन्थो का अत करण से कर देना चाहिए बहिष्कार।।
फिर हम अपने विषय पर लौटते हैं, ताकि शका का हो परिष्कार।
असत्य से कोसों दूर सत्य का करते हुए अगीकार।।
तत्त्वत ! हिरण्यकश्यप नाम सूर्य का है जैसा कि हमने पहिले भी बतलाया है कई बार।
'वराह' नाम यहा 'मेघ' का है अपनी छाया से सूर्य को ढक लेता है जब-जब अभिवृद्ध होता है उसका आकार।।
कहने का अभिप्राय जब सूर्य, मेघ को जल रूप में पृथ्वी पर गिराता है, तब-तब वर्षा होती है मूसलाधार।
सूर्य की किरणो द्वारा फिर जल मेघ रूप धारण कर लेता है, इसे कहते हैं हिरण्यकश्यप और वराह का सग्राम रूपकालकार।।
इन्द्रसिह आर्य नवीन अर्थ की कल्पना कर जो लोग यह अर्थ निकालते हैं कि प्राणी रूप हिरण्यकश्यप को नरसिह ने दिया मार।
देखो ऋषि के सत्य स्वरूप के सामने उन हठी दुराग्रही पौराणिक लोगों की धराशायी हो गयी है दीवार।।

अहिल्या का वास्तविक स्वरूप

(क) अहिल्या एक ऐतिहासिक धर्मपरायण, सती साध्वी, यशस्विनी थी नारी।
जिनके पति महामुनि गौतम हुए हैं पत्नीव्रत, सदाचारी।।
राम ने लक्ष्मण सहित उनके आश्रम की ओर किया प्रस्थान।
उस समय वह समाधियोग में अपने तेज से हो रही थी देदीप्यमान।।
संध्यादि से निवृत्त होकर मातृशक्ति ने अतिथियों का यथोचित किया सम्मान।
दोनो भ्राताओ ने देवी के चरण स्पर्श कर यथायोग्य ग्रहण किया जलपान।।
बस इतनी सी सच्चाई को यदि तुलसीदास भी अपने शब्दो में कर देते बखान।
तो समीक्षक रूप में कलम उठाने को विवश नहीं होता कोई आर्य विद्वान्।।
प्रत्युत तुलसी ने सत्कथा को विकृत रूप देकर अपने मत को किया है पोषित।
पर पुरुष के साथ अवैध संबंध की मनघडन्त कहानी बनाकर उसे दुराचारिणी किया है घोषित।।
सत्य है तो यह है कि अहिल्या ने नहीं बल्कि दोनों भाइयों ने अहिल्या के पैरो को छूआ है साक्षी है वा०रा० के वृत्तिकार।
फिर राम की धूलि पडने व अहिल्या के पत्थर होने जैसी बाते असभावित और हैं निराधार।। (क्रमश·)

आर्यसमाज मन्धार (यमुनानगर) का चुनाव

प्रधान–श्री श्यामसिह आर्य, उपप्रधान–श्री प्रेमपाल आर्य, मन्त्री–श्री कृष्णदेव आर्य, उपमत्री–श्री सुखदेव आर्य, कोषाध्यक्ष–श्री विजयपाल आर्य, प्रचार मत्री–मास्टर प्रदीप कुमार आर्य एव मामचन्द जी आर्य, पुस्तकाध्यक्ष–श्री राकेशकुमार जी, लेखानिरीक्षक–श्री अशोककुमार आर्य एव राजेशकुमार आर्य।

–शेरसिह आर्य, सभा भजनोपदेशक

अद्भुत क्रान्तिकारी व्यक्तित्व—स्वामी कर्मानन्द

स्वामी कर्मानन्द जी महाराज
जन्म . देहान्त
८-२-१९०३ ई० २५-१२-१९६० ई०

(ले० श्री परमानन्द आर्य, पुत्र श्री सत्यव्रत शास्त्री)

{**नोट**—स्वामी कर्मानन्द जी ने आर्यसमाज, काग्रेस और प्रजामण्डल के माध्यम से भारत की स्वाधीनता के लिये सघर्ष किया है। इनका प्रमुख कार्यक्षेत्र हरयाणा, पजाब, उत्तरप्रदेश और राजस्थान रहा है। इनका जीवन चरित प्रकाशित किया जारहा है। इस सम्बन्ध मे जिन साथी सहयोगियो के पास जो भी चित्र, घटना, सस्मरण हो, यथाशीघ्र डाक द्वारा नीचे लिखे पते पर भेजने की कृपा करे। —**वेदव्रत शास्त्री**, दयानन्दमठ, रोहतक। फोन ७६८७४, ५७७७४}

स्वामी कर्मानन्द के व्यक्तित्व के बारे मे एकबारगी कुछ कह पाना आसान नहीं है। जैसे-जैसे आप गहरे उतरेगे वैसे-वैसे ही आप उनके व्यक्तित्व की अनेक अच्छाइयो से परिचित होते हैं। जैसे कि एक पुरानी कहावत मे कहा गया है—**"कुछ लोग महानता मे ही जन्म लेते हैं, कुछ पर महानता थोपी जाती है तथा ऐसे लोग बिरले ही होते हैं जो महानता को अर्जित करते हैं।"** स्वामी जी उन विरले पुरुषो मे ही थे जिन्होने महानता को अर्जित किया। स्वामी जी के व्यक्तित्व के बारे मे सोचने से ही मन मे यकायक **'प्रकाश स्तम्भ'** की कल्पना साकार होती है। अथाह समुद्र की चिर अशान्त लहरो के कोलाहलमय अनवरत प्रहारो से जूझता, अन्धेरे के साम्राज्य मे चुनौती देता हुआ प्रकाश स्तम्भ जो स्वय अधेरो मे रहकर अनवरत थपेडो से घिरा रहने के लिए अभिशप्त है किन्तु उसकी रोशनी से आने-जानेवाले सैकडो जलयानो को अपना रास्ता-अपना लक्ष्य सूझता है।

प्राय किसी भी सार्थक और सफल जीवन जीनेंवाले व्यक्ति मे साहस, उदात्तता, बुद्धिसम्पन्नता, नेतृत्वक्षमता जैसे गुण होते ही हैं, लेकिन सिर्फ इन गुणो के होने भर से व्यक्ति महान् नहीं होजाता है। महानता के लिए व्यक्ति को कुछ समाजेतर खूबिया भी अर्जित करनी होती हैं। स्वामी कर्मानन्द के व्यक्तित्व मे ऐसी कई खूबिया भी जो अपने समय और काल के अन्य सहभागियो से उन्हें विशिष्ट बनाती थीं। इन सबके बावजूद अपनी तमाम विशिष्टताओ के बाद भी स्वामी कर्मानन्द कभी विशिष्ट बनकर रहे नहीं। उनका रहन-सहन हमेशा आदमी जैसा सामान्य और सहज रहा।

कद काठी से भीमकाय, अक्खड खालिस हिंदुस्तानी मिट्टी से बने एक किसान जैसे खुरदरे शख्स, बुद्धि और मस्तिष्क से मनीषियो की तरह प्रशान्त सरस सूक्ष्म और दूरदर्शी, हृदय से एक अबोध शिशु की भाति सरल और सहज, कहीं कोई कृत्रिमता-कोई उलझन नहीं। सभी कुछ स्पष्ट और शान्त। इस स्पष्टवादी, अक्खड चेतना पर कडकती हुई आवाज उन्हे खालिस हरयाणवी जमीन से जोडती थी। वही उनकी निस्पृहता, सुख-दुख लाभ-अलाभ, हर्ष-शोक मे स्थितप्रज्ञ और एकात्मचित्त व विवेक उन्हे भारतीय सतो और मनीषियों की परम्परा मे ला खडा करता था।

आर्यसमाज और वैदिक सिद्धान्तो के प्रति स्वामी जी की श्रद्धा अगाध थी। ऐसे असख्य अवसर आए जब उनकी जान पर खतरा था पर स्वामी जी अपनी मान्यताओ और आस्थाओ से रचमात्र भी पीछे नहीं हटे। बल्कि ऐसे अवसरो पर उनमे एक खास किस्म की जिद देखने को मिलती थी अर्थात् मुश्किले और कठिनाइया जितनी अधिक होती स्वामी जी की लगन और काम को हर हालत मे पूरा करने निष्ठा उतनी ही बलवती होजाती थी।

लोहारू मे स्वामी कर्मानन्द जी का पदार्पण १ जून १९४१ मे हुआ था। उन दिनो नवाब लोहारू के विरुद्ध आर्यसमाज का सत्याग्रह चल रहा था। अपने जुझारूपन, कर्मठता और अन्यो को प्रेरित करने की विशिष्टता के कारण जल्दी ही वे नवाब लोहारू तथा उनके समर्थको की आखो मे चढ गए। इन दिनो कई बार उन पर प्राणघातक हमले हुए। दिनाक १३ दिसम्बर १९४३ को बरालू के स्टेशन से दमकौरे जाते हुए स्टेशन पर उन पर हुआ हमला काफी जोरदार था जिसमे उन्हे दिल्ली इर्विन हस्पताल मे कई दिन भरती रहना पडा।

इन्हीं दिनो प्राय बाजार या मडी तथा तगी रिहायशी इलाको से इनके गुजरने पर विरोधीजन इन पर पत्थर-ईट आदि फेक इन्हे घायल कर देते थे। इसका हल स्वामी कर्मानन्द ने यो निकाला कि सिर पर साफा बाधकर एक पीतल की बाल्टी, जो कि उन दिनो इनके साथ रहती थी, को सिर पर टोपी की तरह पहन लेते थे। इस तरह घरो-गलियो से होनेवाले छोटे-मोटे किन्तु अनिश्चित हमलो से इन्होने अपना बचाव किया किन्तु गतिशीलता व सक्रियता पर जरासा भी असर नहीं पडा। हा-इस दौरान उनका नाम **"बाल्टीवाला बाबा"** भी पड गया था।

लोहारू में आते ही स्वामी कर्मानन्द ने पहला काम यह किया आर्यसमाज के प्रचार व प्रसार के लिए लोगो को गोलबद करना शुरू किया। निर्भयता और निडरता उनके चरित्र का स्थायी गुण था। इसी कारण अपनी मित्रमडली मे प्राय उन्हे अक्खड व्यक्ति के रूप मे भी याद किया जाता था। कोई भी परिस्थिति उन्हे कभी भयभीत नहीं कर सकी। ऐसी ही एक घटना लोहारू की है (जिसका समय ठीक-ठीक याद नहीं है) सभवत ४८-४९ के आसपास की घटना होगी। स्वामी कर्मानन्द उन दिनो सत्यव्रत शास्त्री के घर पर ठहरे थे। यह मकान वैदिक विद्यालय हरियावास के समीप था। एक शाम आर्यसमाज के किसी कार्यक्रम मे सत्यव्रत शास्त्री जी को जाना पडा, जाना तो स्वामी जी को भी था किन्तु स्वामी जी अस्वस्थ थे अत शास्त्री जी के कमरे मे विश्राम कर रहे थे। रात को १०-११ बजे के करीब मकान की छत पर होनेवाली आहटो से उनकी नींद खुली। छत पर उन्हे कुछ हलचल सुनाई दी। ध्यान देकर सुना तो शक सही निकला, ये विरोधी गुडे थे और निश्चित था कि उन्हे मारने की योजना से ही जमा हुए थे। स्वामी जी ने दम साथ लिया और दीवार से सटकर उनकी बाते सुनने की कोशिश करने लगे। गुडे सभवत सख्या मे ३-४ थे। अतत वे छत पर कुछ खपरैले हटाने मे सफल रहे और छत पर खपरैल हटाकर बनाई जगह से नीचे उतरने लगे। छेद इतना ही बडा था कि एक-एक कर ही वे नीचे आ सकते थे। जैसे ही पहले व्यक्ति ने नीचे उतरने के लिए पैर नीचे किये स्वामी जी ने पास पडा लट्ठ उठा लिया और उसके पैरो पर निशाना मारा। जोरदार चोट खाते ही विरोधी भाग खडे हुए। शोरगुल सुनकर भीड भी जमा होगई और आखिरकार गुडो को जान बचाकर खाली हाथ ही भागना पडा।

स्वामी कर्मानन्द सही अर्थो मे एक वीतराग, विदेह और निस्पृह साधु थे। शोक-हर्ष, लोभ-भय स्वार्थ जैसी अनुभूतिया उन्हे छू भी न सकी थी। प्राय जब भी कभी स्थिति विषम होती सभी स्वामी जी को ही याद करते। शिव की नीलकण्ठवाली स्थिति की तरह किसी भी प्रतिकूल और विषम स्थिति मे स्वामी जी की ही बाट जोही जाती थी।

किसी भी आन्दोलन मे सबसे अहम् और महत्त्वपूर्ण काम लोगो को गोलबद करना है। लेकिन आन्दोलन का वित्तपोषण करना, उसके लिए सम्यक् आर्थिक समाधन जुटाना भी अहम् कार्य है। स्वामी कर्मानन्द जी का व्यक्तित्व इतना प्रभावशाली और ओजस्वी था कि उनके सम्पर्क मे आनेवाला कोई भी शख्स उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाता था। इसके अलावा किसी भी सकट या विषमता की घडी में उनकी भूमिका **'सकटमोचक'** के रूप मे ही होती थी।

ऐसी ही एक घटना है। प्राथमिक विद्यालय दानी सज्जनो के दान पर चलता था। नवाब के विरुद्ध होने पर विद्यालय को मिलनेवाला दान अचानक कम होने लगा। इन्हीं मुश्किल दिनो मे हालात यहा तक बिगडे कि छात्रावास मे भोजनालय चला पाना भी कठिन होरहा था। दान आदि का सम्यक् इतजाम नही होसका। अत विद्यालय के प्रबन्धको ने छात्रावास को कुछ दिनो के लिए बद रखने तथा छात्रो को उनके घरो मे भेजने का निर्णय लिया। अगले दिन ही सुबह सभी छात्रो को घर भेजा जाना था। जैसे तैसे रसोई के बरतनो को झाड-पोछकर रात्रि का भोजन बनाया गया। भोजन बन ही रहा था कि अचानक ५०-६० की सख्या मे स्वयसेवक आ पहुचे ये स्वयसेवक अलवर से आरहे थे। थके-मादे व भूखे-प्यासे थे। इनकी व्यवस्था भी किसी तरह करनी ही थी। आयोजको के हाथ-पाव फूलने लगे। मजे की बात यह थी कि स्वामी कर्मानन्द इन दिनो लोहारू से बाहर गए हुए थे। इधर आयोजको के हाथो तोते उडे हुए थे। आयोजक उद्विग्नता और हताशा मे छात्रावास की छत पर टहलने लगे। रात भी गहरा रही थी। तभी अधेरे मे कुछ लोगो के आने की आहट सुनाई दी इसी शोरगुल मे स्वामी जी का बेखौफ और धमाकेदार ठहाका सुनाई दिया। ठहाका सुनते ही प्रबन्धक लोगो की जैसे जान मे जान आई। सीधे सडक की ओर दौड पडे और जाकर स्वामी जी को सारी समस्या बतादी। जवाब मे स्वामी जी ने फिर एक ठहाका लगाया, मैं सोच रहा था काफी थक गया हू कुछ आराम करूगा परन्तु ईश्वर मेरे पहुचने से पहले मेरे लिए काम भेज देता है और इस ठहाके के साथ ही साथ मे दो लोगो को लेकर स्वामी जी उल्टे पाव लौट पडे। करीब डेढ-दो घण्टे बाद स्वामी जी आए। साथ मे तीन गाडिया थी जिन पर दूध आटा दाल गुड और चना आदि राशन था कुछ सब्जिया भी थीं। आयोजको मे किसी ने यह नही पूछा कि इतने कम समय मे इतनी सारी व्यवस्था कहा से और कैसे होसकी। उन्हे कोई आश्चर्य भी नहीं था। रात को भोजन पका। विद्यालय के छात्रो स्वयसेवको को भोजन मिला और छात्रो को घर भेजने का निर्णय वापिस लिया गया। सभी के मन मे अपार शाति थी सभी निश्चिन्त थे। सभी को विश्वास था कि स्वामी कर्मानन्द जी के लिए यह कोई कठिन काम नहीं था। जब उम्मीद के सारे रास्ते बद हो स्वामी कर्मानन्द उस समय भी काफी कुछ कर पाने की क्षमता रखते थे। अगुआई करने के लिए स्वामी जी ने कभी नही कहा। बल्कि ऐसे मुश्किल और कठिन क्षणो मे स्वामी जी की नेतृत्व क्षमता अपने आप उभर कर

आती थी। आंदोलन रहा हो या विद्यालय के लिए भवन निर्माण, प्रजामण्डल का कार्य रहा हो या गोरक्षा, हिंदीरक्षा जैसे आन्दोलनों मे भागीदारी निभाना स्वामी जी की पहलशक्ति इतनी प्रबल और कारगर थी ऐसी मुश्किल घडी मे लोग स्वय ही अगुआई के लिए उन्हे आगे कर देते थे।

शिक्षा प्रसार

विद्या पवित्रतम दान है। लोहारू आते ही स्वामी जी ने देखा कि जागृति फैलाने के लिए जरूरी है अशिक्षा का उन्मूलन। उन दिनो लोहारू तथा उसके आसपास कोई विशेष विद्यालय आदि न था। इस क्षेत्र मे शिक्षा के प्रसार करने मे स्वामी कर्मानन्द जी ने महती भूमिका निभाई। लोहारू क्षेत्र में पाठशाला खोलने के सारे निर्णय इन्हीं के थे।

आरम्भ मे पाठशाला खोलने के लिए वित्त जुटाने के लिए स्वामी कर्मानन्द ठा० भागवतसिह के साथ पिलानी के सेठ बिरला जी से मिले। बिरला जी के यहा से कोई बात नहीं बनी लेकिन हार न मानना भी स्वामी जी की जिद थी। इसी क्रम मे वे लोयलकावालो से मिले और अतत स्वामी जी के आग्रह पर सेठ लोयलकावालों ने ग्यारह पाठशालाओं के लिए धन देना स्वीकार किया।

पाठशालाए शुरू की गईं। (१) वैदिक विद्यालय हरियावास, (२) आर्य पाठशाला, बिसलवास, (३) आर्य पाठशाला दमकौरा, (४) आर्य पाठशाला, सेहर, (५) आर्य पाठशाला, चहड छोटी, (६) आर्य पाठशाला गोकलपुरा, (७) आर्य पाठशाला बारवास आदि वे प्रमुख पाठशालाए थीं जिनके निर्माण, स्थापना या विकास मे प्रत्यक्ष या परोक्षत स्वामी जी की सक्रिय सहभागिता रही थी।

इन पाठशालाओ से नवाब लोहारू खुश नहीं थे। उन्हे अदाज रहा होगा कि शिक्षित होने पर ये सभी जागृत होगे और जागृत होने के बाद मेरा अन्याय नहीं सहेगे। अत नवाब ने स्कूल खोलने पर पाबन्दी लगादी।

१ मई १९४३ मे यह पाबदी लगा दी गई। स्वामी कर्मानन्द जी ने इस अन्याय के लिए नवाब का विरोध किया और यह पाबन्दी उठाने की माग की किन्तु नवाब टस से मस न हुआ, बल्कि उसके दरबारी और कारिन्दे जनता को डराने धमकाने लगे और इन लोगो से कोई भी सम्बन्ध न रखने की हिदायते देने लगे।

अतत १८ मई, १९४३ मे स्वामी जी ने लोहारू मे भूख हडताल करदी। एक-दो नहीं यह हडताल पूरे १० दिनो तक चली और आखिर मे नवाब को ही झुकना पडा और ये पाबदिया उठानी पडीं। इस प्रकार स्कूलो की स्थापना का काम शुरू हुआ। किन्तु नवाब मन से पाठशालाओ के खिलाफ ही था अत जैसे ही पाठशालाओ का काम शुरू हुआ नवाब के कर्मचारी तथा कारिन्दे स्थानीय जनता को डराते-धमकाते, स्वामी जी तथा उनके सहयोगियो से दूर रहने के लिए बहकाते थे। किन्तु स्वामी जी भला हार कैसे मानते। **'तू डाल-डाल मैं पात-पात'** की कहावत को चरितार्थ करते हुए नवाब के कारिन्दो का पीछा करते। जहा-जहा वे लोगो को बहकाते, उकसाते और धमकाते, वहीं-वहीं स्वामी जी भी लोगों को यथास्थिति बताते, उन्हे निर्भय बनाते और शिक्षाप्रसार के महत्त्व से परिचित कराते और इस तरह अतत विद्यालय खुलना संभव होसका।

स्वामी जी के बारे में पहले भी कह चुका हू कि वे पत्थर को भी निचोड़ने का सामर्थ्य रखते थे। इसका प्रमाण यही है कि बाद में इन्हीं नवाब साहब से उन्होंने वैदिक विद्यालय, हरियावास के लिए ४० रुपए माहवार की आर्थिक सहायता भी स्वीकृत कराई। सिर्फ इतना ही नहीं स्थिति यहां तक बदली कि इसके लगभग ३ साल बाद एक बार स्वामी कर्मानन्द जी ने दिनाक २७ अक्तूबर, १९४६ को निरीक्षण के लिए नवाब लोहारू को आमन्त्रित किया। विद्यालय का बेहतर प्रशासन, उत्तम शिक्षा व्यवस्था और अनुशासन आदि देखकर नवाब भी दग रह गए, अतत उनके जैसे प्रबल विरोधी को भी स्वामी कर्मानन्द जी के प्रयासों की सराहना करनी ही पडी। आगे उन्हीं के शब्द हैं–

"Invited by Swami Karmanad Ji I visited the Arya Samaj School today and was much delighted to note the organisation of the staff and the educational capability of the School Children.

The staff is efficient and the children look smart and physically fit I wish the school all the success in future

(Sd Aminuddin)
28 10 1946

अक्खडता और निर्भीकता स्वामी जी की खूबी थी। अक्सर इस अक्खडता के चलते कई दफा अपने साथियों तथा अनुयायियों में उन्हें क्षणिक विराध भी देखना पडता। उनके आसपास के लोगों को यह स्पष्टवादिता कई बार अखर भी जाती थी, किन्तु स्वामी जी अपनी स्पष्टवादिता को छोड नहीं सके। ये गुण आजीवन उनके साथ रहे।

स्वामी जी अपने काम को किसी भी कीमत पर पूरा करके ही दम लेते थे। निरन्तर परिश्रम, अनियमित खान-पान और अत्यधिक व्यस्तता के कारण इन्हीं दिनो वह कुछ समय दिल की बीमारी से रुग्ण रहे।

स्वामी कर्मानन्द का स्वभाव मुख्यत गभीरता और ओज का सम्मिश्रण था, लेकिन समय और परिस्थिति के अनुसार अद्भुत विनोदप्रियता और हाजिरजवाबी का भी उन्होंने प्रदर्शन किया था।

ऐसी ही एक घटना है जब स्वामी जी प० सत्यव्रत शास्त्री जी के साथ गाजियाबाद के नजदीक किसी इलाके मे जारहे थे। जाने क्या कारण था कि ट्रेन लेट होगई थी और रात को करीब साढे नौ बजे गाडी से स्टेशन पर उतरे तो स्टेशन पर आसपास कोई भी न था। पास में कोई सवारी भी न थी। सत्यव्रत जी ने स्टेशन पर ही रुकने का सुझाव दिया, लेकिन स्वामी जी इतनी आसानी से भला मान लें ? सो पैदल ही गतव्य के लिए रवाना होगए।

रास्ता नया था, रात्रि के लगभग १० बज रहे थे। आपस मे बातचीत करते या घूमते-फिरते पता नहीं कैसे दोनो रास्ता भूल गये और घूमते-फिरते खेतों से होते हुए चौडीसी एक नहर पर बनी पुलिया पर पहुच गए। पुलिया पर चार व्यक्ति बैठे हुए थे। **"आओ जी आओ कोई तो आया" बडी देर से इतजार कर रहे हैं , उनमें से एक व्यक्ति बोला।"** स्वामी कर्मानन्द और उनके साथ सत्यव्रत शास्त्री तुरन्त समझ गए कि दोनों राहजनो के बीच फस चुके हैं। अजान इलाका, गहराती रात वापसी का कोई सुरक्षित रास्ता नहीं , अधेरे का फायदा उठाकर स्वामी जी ने अपना बटुआ अपने कौपीन मे छुपा लिया। दोनो ही व्यक्ति समझ गए कि विरोध करने या समझाने-बुझाने का कोई फायदा नहीं होगा एक पल के लिए दोनों कि कर्तव्यविमूढ होगए।

अचानक स्वामी जी को जाने क्या सूझी, एक तेज अट्टहास से नि शब्दता का वातावरण काप उठा। बेवक्त की इस हसी से 'सत्यव्रत शास्त्री' जी चौंक उठे , ये क्या स्वामी जी के मन मे उठी वे सोच रहे थे। उन्हें क्या मालूम था कि स्वामी जी के मन मे क्या था कि वे **'शठे शाठ्य समाचरेत्'** की उक्ति को चरितार्थ करने पर उद्यत हैं। उनके इस बेखौफ अट्टहास के आगे सामने के चारों राहजन भी भौंचक्क थे। **"भाई अच्छी कही तूने भी, चील के घोंसले में मांस खोज रहे हो तुम भी "** स्वामी जी अपनी हसी को विराम देते हुए बोले, **"क्या मतलब "** वे चारों अकबका कर खडे होगए।

"मतलब ये भाई कि बोलो नमक से नमक खाओगे क्या ?" स्वामी जी बिना घबराए बोले।

"अब साफ-साफ बोलो" बात क्या है चारों लोगो का धैर्य जवाब दे रहा था। **"बात यो है भाई जो तुम हो हम भी वही हैं पर क्या बेकार इलाका है यार तुम्हारा शाम छ बजे से घूम रहे हैं अभी तक एक चिडिया का पूत भी न मिला "** स्वामी जी ने उन्हें बताया।

"क्या " हैरत मे चारो राहजन के मुह फटे के फटे रह गए थे। **"इस तरह हैरान क्यो होते हो भाई हम भी जेबकतरे हैं बल्कि सच मानो तो आज ही दुपहरी को तिहाड से भागे हैं "** चारो डाकू भौचक थे। **"पर जेल मे तो वर्दी पहनी जाती है ना हथकडी भी लगती है "** डाकुओ मे से एक ने याद करते हुए कहा।

"हां हा वही कटवा के तो हम गाजियाबाद से आरहे हैं। वहीं से ये कपड़े खरीदे बाल कटाए अब तो अच्छे-अच्छे भी ना पहचान सकें।" स्वामी जी ने अपने काषाय वस्त्रो की ओर इशारा करते हुए कहा।

आखिरकार चारों को यकीन दिला दिया गया कि दोनों ही जेल से भगे जेबकतरे हैं। **"ठीक है बैठो तुम भी यहीं देखते हैं कोई फंसे तो ।"** जेबकतरों ने हामी भरदी। **"पर भाई हम क्या कीर्तन कर रहे हैं ? यों साथ बैठके क्या होगा–यहां तो कोई आता ना दीखे । ऐसा करो भाई कुछ लोग यहां बैठो कुछ उस पार जाके बैठो, ताकि दोनो तरफ से गुजाइश रहे।"** स्वामी कर्मानन्द ने उन्हें एक रास्ता सुझाया।

"ठीक-ठीक ऐसा करो तुम दोनों पुलिया के उस पार जाके बैठो " उनका मुखिया बोला।

"ठीक है भाई लोग बैठ तो जाते हैं, पर एक बात की कसम उठानी पडेगी, जो भी माल मिले उसका आधा-आधा करना पडेगा कसम है बच्चन की।" स्वामी जी पुन: बोले। हा-हा यार चिता मत करो बेईमानी नहीं होगी, जल्दी जाके बैठो उन डाकुओं ने जवाब दिया। उन्हे अपने जेबकतरा होने का पुख्ता विश्वास दिलाकर स्वामी कर्मानन्द जी और सत्यव्रत शास्त्री जी दोनों जन पुलिया के उस पार जाकर बैठ गए। थोडी देर बैठने के बाद मौका निकालकर चुपचाप खेतो मे होते हुए दोनो भाग निकले और आखिरकार भागकर किसी तरह बस अड्डे को वापस आपहुचे। इस तरह अपनी हाजिरजवाबी, दिलेरी और प्रत्युत्पन्नमति के चलते ना केवल लुटेरों से बचे बल्कि लुटेरो की आखो में भी धूल झोंक आए।

उपनिषदों और प्राचीन भारतीय वाङ्मय में जिस प्रकार यश-अपयश, लाभ-अलाभ, जीवन-मरण आदि बाधाओ से पूरी तरह मुक्त **'निष्काम पुरुष'** की कल्पना की गई है, स्वामी कर्मानन्द जी भारतीय सस्कृति की इन अपेक्षाओं मे पूरी तरह से खरे उतरे थे। **सुख-दु:खे समे कृत्वा लाभा-लाभौ जया-जयौ।** स्वामी जी का जीवन आचरण की इस कसौटी पर पूरा खरा उतरा था। वे सही अर्थों मे एक निष्काम पुरुष थे।

प्राय धर्म और धर्म के लोकाचारो, जो कि प्रकारान्तर से धर्म के ही स्थूल प्रतीक मात्र हैं, को सामान्यजन एक ही समझ लेते हैं। जबकि धर्म और उसके लोकाचार दो अलग-अलग वस्तुए हैं। तीर्थ-यात्रा, पूजा-पाठ, यम-नियम आदि जितने भी कर्मकाण्ड हैं वस्तुत वे सभी माध्यम भर हैं। यह सिर्फ एक विवेकशील और स्थिरप्रज्ञ मनीषी के बस में नहीं होता है कि वह माध्यम और लक्ष्य के बीच के इस अंतर को समझ सके।

प्रथाए तथा रिवाज जिन्हे हम रूढ़िया भी कहते हैं वे वास्तव में किसी समय और परिस्थिति विशेष की मान्यताएं हैं। किसी समय विशेष में उनकी उपयोगिता और सार्थकता भले रही हो किन्तु बदलते समय संदर्भों में उनकी उपयोगिता क्रमश समाप्त होरही होती है। यही कारण है कि ये रूढ़िया भले ही धर्म के नाम पर पोषित की जाएं किन्तु उनमें निहित अन्तर्वस्तु प्राय धर्म की अंतश्चेतना के विरुद्ध ही होती है।

(क्रमश:)

अज्ञान, अन्याय से मुक्ति हेतु भाषा की प्रतिष्ठा जरूरी

उज्जैन, राष्ट्र का विकास हमारे लिए सर्वोपरि होना चाहिए। राष्ट्र की भाषा ही उसके ऐश्वर्यों को प्रदान करती है। देश को अज्ञान से मुक्त करवाने के लिए देश की भाषा को ही अपनाना जरूरी है।

भारत में इस स्थिति के निर्माण के लिए व्यापक संघर्ष की आवश्यकता है। अन्यायमुक्त समाज की रचना के लिए भी न्यायालय की भाषा भारतीय भाषा ही होनी चाहिए। देश के कर्तृत्वकर्ताओं पर संविधान के राजभाषा अनुच्छेद के पालन के लिए समूचे देश का दबाव बनाया जाना आवश्यक है। अग्रेजी के पक्ष में एक बडा षड्यत्र देश में चल रहा है, जिसके सशक्त प्रतिकार की आवश्यकता है। यह उद्‌गार राजभाषा संघर्ष समिति दिल्ली के राष्ट्रीय महासचिव श्यामलाल ने यहा आयोजित समिति के प्रथम जिला अधिवेशन को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किये।

सम्बोधित करते हुए श्री श्यामलाल राष्ट्रीय महासचिव राष्ट्रीय राजभाषा संघर्ष समिति दिल्ली।

राजभाषा संघर्ष समिति के जिला अधिवेशन का शुभारम्भ

इस अवसर पर आयोजन में हिन्दी की प्रतिष्ठा, संवर्धन और विस्तार के लिए किये गये अतिविशिष्ट कार्यों के लिए वरिष्ठ हिन्दी सेवी आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी, प्रो० लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आनदमगलसिंह कुलश्रेष्ठ, प० शारदाशंकर व्यास, डॉ० शैलेन्द्रकुमार शर्मा एव प्रभुलाल चौधरी को समिति की ओर से राष्ट्रीय महासचिव श्यामलाल ने राष्ट्रभाषा सेवा सम्मान से अलंकृत किया। अधिवेशन के उद्घाटनकर्ता हिन्दी साहित्य सम्मेलन के राष्ट्रीय सभापति आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी ने सम्बोधित करते हुए कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि संविधान मे देश को राष्ट्र के रूप मे नहीं, सब राज्य के रूप मे मान्य किया गया है। राजभाषा के रूप मे हिन्दी को प्रतिष्ठा न मिल पाना खेदजनक है। राजभाषा से जुडे शासकीय प्रभागो को भी चेतना सम्पन्न बनाने की आवश्यकता है। आज शुद्ध-लेखन को लेकर सजगता समाप्त होरही है, इस दिशा मे भी कोशिश जरूरी है।

हिन्दी प्रदेश मिलजुलकर हिन्दी के पक्ष में अपना दायित्वबोध समझें और समग्र प्रयास करे। अध्यक्षीय उद्‌बोधन मे प्रो० लक्ष्मीनारायण अग्रवाल ने कहा कि राष्ट्रभाषा हिन्दी की प्रगति में हिन्दीभाषीजन ही बाधक रहे हैं। मध्यप्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रान्तीय मत्री आनदमंगलसिह कुलश्रेष्ठ ने सम्बोधित करते हुए कहा कि राजभाषा हिन्दी की प्रतिष्ठा के लिए सघर्ष की आवश्यकता है। वातावरण बनाने के लिए सकल्पनिष्ठा जरूरी है। बगैर बलिदानी भावना के हिन्दी को उसका गौरवपूर्ण स्थान नहीं मिल सकेगा। जिला शिक्षा अधिकारी एव साहित्यकार ब्रजकिशोर शर्मा ने कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि हम आज भी भाषा के स्तर पर गुलामी मे जी रहे हैं। वैश्वीकरण और उपभोक्तावाद के दौर मे हिन्दी की स्थापना के लिए व्यापक प्रयत्नो की जरूरत है। स्टेट बैंक ऑफ इडिया के राजभाषा अधिकारी गिरिजेश व्यास ने कहा कि राजभाषा के रूप मे हिन्दी को आज भी उसका गौरवपूर्ण स्थान नहीं मिल सका है। हम भाषा के स्तर पर गूगे होरहे हैं यह चिताजनक है।

समीक्षक डॉ० शैलेन्द्रकुमार शर्मा ने सम्बोधित करते हुए कहा कि शिक्षा के माध्यम, शासकीय सेवा मे भर्ती, प्रशिक्षण तथा कामकाज के लिए राजभाषा हिदी की स्थापना के लिए समग्र प्रयास जरूरी है। राजभाषा के पक्ष मे वातावरण निर्माण के लिए युवाजन आगे आए। हिन्दी की प्रतिष्ठा के लिए प्रतिकार की शक्ति जगाना जरूरी है। अतिथियो का स्वागत कमलेश दूबे, सत्यनारायण अग्निहोत्री, शिवनारायण उपाध्याय 'शिव', मोहसिन खान, वर्षा जोशी, हेमेन्द्र, चन्द्रशेखर यति, सुभाष पाटीदार, श्रीमती राजेश्वरी नाशिककर, भागीरथ शर्मा आदि ने किया। आयोजन मे वरिष्ठ हिन्दी देवी सुश्री सुरक्षा भारद्वाज, सतीश राठी, प्रो० शैलेन्द्र पाराशर आदि सहित अनेक हिन्दीप्रेमी उपस्थित थे। कार्यक्रम का सचालन समिति के जिलाध्यक्ष प्रभुलाल चौधरी ने किया। आभार प्रदर्शन कमलेश दवे ने किया।

(दैनिक चेतना इन्दौर २४/४/२००१ से साभार)

शंका-समाधान

(विरजानन्द ११९ गुरुकुल गोतमनगर, नई दिल्ली-४९)

शंका—छन्द शास्त्र के सूत्र के पदार्थ और भावार्थ की परस्पर सगति नहीं लग पा रही है। कृपया समाधान देने का कष्ट करें। सूत्र यह है- **'सा ग् येन न समा ला ग्ल इति'** (अ० ४। सू० ५३)

यहा **'येन'** पद से क्या अभिप्राय है। भाष्यकार **'येन'** पद का अर्थ **'यावदभिरक्षरैः'** करते हैं, तो **'यैः'** पद पढा जासकता था। यादव प्रकाश ने **'येन'** का अर्थ **'येन येन परिमाणेन'** किया है। प्रत्येक पद से वह अर्थ निकलना चाहिये जो इस सूत्र की व्याख्या में भावार्थ रूप में दिया हुआ है।

समाधान—सूत्र—सा ग् ये न समाः, लां ग्ल.।

अन्वय—ये ग्लो लां समा न, सा ग्।

अर्थ—किसी छन्द में (ये) जो (ग्ल) गुरु-लघु मात्राक वर्ण=अक्षर (लाम्) लघु मात्राओं के (समा) समान (न) नहीं बनते हैं, उन्हें छन्द मे जितनी लघु मात्रायें हैं, उनमें से घटाकर जो शेष रहते हैं (सा) वह (ग्) गुरुमात्रा हैं। जैसे कि उपगीति आर्या छन्द का उदाहरण निम्नलिखित है—

मात्राङ्क १-२ ३-४५-६ ७-८ ९१०१११२ १३ १४ १५१६१७१८१९२०२१२२२३ २४२५ २६२७

ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ ऽ

त—त्रा—न—न्दा—रा—मे, नि—त—रा—मा—न—न्द—य—ल्लो—कान्।

वर्णाङ्क १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५

मात्राङ्क २८२९३०३१३२३३३४३५३६३७३८३९४०४१४२४३४४४५४६४७४८४९५०५१५२५३५४

ऽ ऽ ऽ । । । । ·ऽ । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ ऽ

सा—न—न्दं कि—ल कृ—त—वान्, व—स—ति श्री—मान् द—या—न—न्द ।

वर्णाङ्क १६ १७ १८ १९ २०२१ २२ २३ २४२५२६२७ २८ २९ ३० ३१ ३२

इस छन्द में ५४ लघु मात्रायें वर्ण=अक्षर ३२ हैं। ५४ में से ३२ घटाने पर २२ गुरु और शेष १० लघु हैं।

यहां **'येन'** के स्थान पर **'ये'** पद ठीक हैं, क्योंकि **'ये'** पद का अन्वय **'ग्ल·'** के साथ है।

—सुदर्शनदेव आचार्य

यक्ष प्रश्नों के उत्तर

पाण्डवो के वनवास काल मे यक्ष के प्रश्नों का उत्तर दिये बिना सरोवर से जल ग्रहण करने पर नकुल, सहदेव, अर्जुन और भीम मूर्च्छित अवस्था मे होगये थे। उस समय युधिष्ठिर ने आकर यक्ष के प्रश्नों का समुचित उत्तर दिया और अपनी बुद्धि का प्रयोग करके यक्ष को प्रसन्न करके अपने सब भाइयो को स्वस्थ कराया। कुछ प्रश्नो के उत्तर निम्नलिखित हैं जो ध्यान देने योग्य हैं—

	प्रश्न	उत्तर
१	मनुष्य को क्या सुनना चाहिये ?	ईश्वर द्वारा दिया गया वेदज्ञान
२	पृथ्वी से भारी क्या है ?	माता
३	आकाश से ऊंचा कौन है ?	पिता
४	वायु से भी तेज कौन चलता है ?	मन
५	नींद में भी आखे कौन बन्द नहीं करता ?	मछली
६	उत्पन्न होने के बाद भी कौन हरकत नहीं करता ?	अण्डा
७	मरण-आसन व्यक्ति का मित्र कौन है ?	दान
८	अमृत क्या है ?	गाय का दूध
९	अपने मार्ग में अकेला कौन चलता है ?	सूर्य
१०	सब सुखों में उत्तम सुख क्या है ?	निरोगता (स्वस्थ जीवन)
११	किसको वश में करने पर मनुष्य सुखी रह सकता है ?	मन को
१२	किस दान का फल नष्ट होजाता है ?	जो कुपात्र को दिया जाता है।
१३	तप का लक्षण क्या है ?	कर्त्तव्य पालन
१४	सुखी कौन है ?	जो ऋणी (कर्जदार) नहीं है।
१५	सबसे बड़ा आश्चर्य क्या है ?	प्रतिदिन मृत्यु को प्राप्त लोगो को देखकर भी नश्वर शरीर को स्थायी मानना।
१६	मनुष्य जीवन का मार्ग कौनसा है ?	महापुरुषो का अनुगमन करना।

प्रस्तुतकर्ता—**देवराज आर्यमित्र,** आर्यसमाज कृष्णनगर, दिल्ली-५१

परमेश्वर की स्तुति का प्रकार

❑ स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा

वह परमात्मा सबमे व्यापक, शीघ्रकारी और अनन्त बलवान् शुद्ध, सर्वज्ञ, सबका अन्तर्यामी, सर्वोपरि विराजमान, स्वय सिद्ध है और वह परमेश्वर अपनी जीवनस्वरूप सनातन अनादि प्रजा को अपनी सनातन विद्या से यथावत् अर्थो का बोध वेद द्वारा कराता है, इस प्रकार गुण से रहित परमेश्वर का गुणानुवाद करना इसकी सगुण स्तुति है। जैसे–हे सच्चिदानन्दस्वरूप ! हे नित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वभाव ! हे अद्वितीयानुपम अखण्डैकरस ! हे जगदादिकारण ! हे अज निराकारनिर्विकार ! हे सर्वव्यापक सर्वशक्तिमान् ! हे दयालो न्यायकारिन् ! हे अनादि अनन्त ! हे जगदीश ! हे सर्वजगदुत्पादक, जगदाधार, जगत् सहारक ! हे सनातन, सर्वमगलमय, सर्वस्वामिन् ! हे करुणामय परमपित ! हे परमोपकारक परम सहायक इष्टदेव ! हे सर्वानन्दप्रद सर्वदु खविनायक ! हे अघमोद्धारक, पतितपावन, पापविमोचक ! हे अविद्यान्धनिर्मूलक विद्यार्थप्रकाशक ! हे परमैश्वर्यदात मोक्षप्रद ! हे निर्मल निरीह निरामय अपापविद्ध अव्रण अकाय शुद्धस्वरूप ! हे दीनदयाकर दीनबन्धो ! हे धर्म-अर्थ-काम-मोक्षसाधक ! हे सर्वसिद्धिप्रद ! परात्पर परमात्मन् परब्रहान् ! हे सर्वस्वामिन् सर्वद्रष्टा प्रभो हमारे लिये न्याययुक्त सुख देनेवाले तुम ही हो। हमको आपका ही आश्रय है। हे जगद् वन्द्य ! सब जगत् के आदि कारण होने की तरह परम विद्या वेद के आदि कारण भी तुम ही हो। हे सर्वहितोपकारक ! तुम सब जगत् के हितसाधक हो। सब मनुष्यों के पूज्यतम हो। सब जगत् को समस्त योगक्षेम के देनेवाले हो। हे मेरे प्रिय प्रभो ! हम बार-बार तुम्हारी स्तुति करते हैं, इसको स्वीकार करो जिससे तुम्हारे कृपा पात्र होके सदैव आनन्द मे रहे।

"हे परमेश्वर ! भूतकाल-वर्तमान-भविष्यत् इन तीनो कालो के बीच मे जो कुछ होता है, उन सब व्यवहारो को तू यथावत् जानता है, हे सर्वज्ञ रचयित ! सब जगत् को अपने विज्ञान से ही तू जानता, रचता, पालता एव लय करता है, ससार के सब पदार्थों का अधिष्ठाता अर्थात् स्वामी है, सुख ही तुम्हारा केवल स्वरूप है, हे आनन्दघन ! जो तू मोक्ष और व्यवहार सुख को देनेवाला है ज्येष्ठ=सबसे बडा, सब सामर्थ्य से युक्त ब्रह्म है वही तुम सब मनुष्यो से स्तुति के योग्य हो।" पृथिवी आदि पदार्थ जिस तेरे होने और यथार्थज्ञान की सिद्धि होने का दृष्टान्त है तथा जिस तूने अपनी सृष्टि मे पृथिवी को पादस्थानी रचा है पृथिवी और सूर्य के बीच मे का आकाश जिसने उदरस्थानी किया है, अपनी सृष्टि मे दिव=प्रकाशक पदार्थो को सबके ऊपर मस्तकस्थानी किया है, अर्थात् जो तू पृथिवी से लेकर सूर्यलोकपर्यन्त सब जगत् को रचके, उसमे व्यापक होके=जगत् सब अवयवो को पूर्ण होके सबको धारण कर रहा है, वही तुम सब इष्टदेव हो। "जिसने सूर्य और चन्द्रमा को नेत्रस्थानी किया है, जो तू कल्प-कल्प के आदि मे सूर्य और चन्द्रमादि पदार्थो को बार-बार नये-नये रचता है जिसने अग्नि को मुखस्थानी उत्पन्न किया है।" "ब्रह्माण्ड के वायु को प्राण और अपान की न्याई किया है, प्रकाश करनेवाली किरणो को चक्षु की न्याई किया है, जिससे रूप ग्रहण होता है, दश दिशाओ को सब व्यवहारो को सिद्ध करनेवाली बनाया है।" हे कृपासिन्धो ! भगवन् ! हम सब मिलकर तुझको प्रसन्न करें। "जो तू जगदीश्वर आत्मदा=अपनी कृपा से ही अपने आत्मा का विज्ञान देनेवाला है, बलदा=त्रिविध बल एक मानस विज्ञान बल, द्वितीय=इन्द्रिय बल अर्थात् श्रोत्रादि की स्वस्थता तेजोवृद्धि, तृतीय शरीर बल अर्थात् वैराग्य, महापुष्टि, दृढागता और वीर्यादि वृद्धि इन तीन बलों का दाता है। जिस तेरी उपासना और वेदोक्त शिक्षा को सब विद्वान् और शिष्ट लोग यथावत् स्वीकार करते हैं, जिसे तेरा आश्रय करना है। मोक्षसुख और जिसका निराश्रय ही बार-बार जन्म-मरण रूप दु खों को देनेवाला है, जो तू सुखस्वरूप और सब प्रजा का पति है। हे परम सहायक ! तू ही इन्द्रियों के साथ वर्तमान कर्मो के कर्ता भोक्ता हम जीवो का योग्य मित्र है। तू अन्तर्यामी है। हम सुबुद्धि युक्त होके उत्तम प्रकार से आपका स्तवन, स्तुति करें।

हे कल्याणस्वरूप कल्याणकर ! मोक्षसुखस्वरूप और मोक्षसुखप्रद ! तुझे नमस्कार है। सासारिक सुख के करनेवाले आपको मैं नमस्कार करता हू। सब जीवों का कल्याण करनेवाले, मन इन्द्रिय प्राण और आत्मा को सुख देनेवाले मगलमय अत्यन्त शिवरूप आपको हम श्रद्धाभक्ति से नमस्कार करते हैं। जो जन ईश्वर को नमस्कार करता है सो भी मगलमय होता है और जो केवल भाण्ड के समान परमेश्वर के गुण कीर्तन करता है और अपने चरित्र नहीं सुधारता अर्थात् परमेश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार अपने को नहीं बनाता–जैसे परमेश्वर को न्यायकारी, दयालु, उपकारक जानकर भी स्वय न्याय न करके पक्षपात से बर्तता है, दया न करके क्रूर व्यवहार करता है, उपकार न करके जीवो के अपकार में तत्पर रहता है–उसका स्तुति करना व्यर्थ है। यहा परमेश्वर की स्तुति का प्रकार वेद और महर्षि दयानन्द जी के अनुसार ही लिखा गया है।

प्रवेश सूचना

सस्कृत तथा सस्कृतिप्रेमी अभिभावको !

आपको सूचित किया जाता है कि गुरुकुल कवरपुरा मे कक्षा ६, ७, ८, ९ व १० में, १० मई २००१ से प्रवेश आरम्भ होरहे हैं। छात्रो को प्रवेश हिन्दी, अग्रेजी तथा गणित की लिखित तथा मौखिक परीक्षा लेकर ही दिया जायेगा। प्रवेश परीक्षाए आप १ मई से ३० जून के बीच दिला सकते हैं। कृपया सस्कृत के प्रति अतिश्रद्धा व जीवन निर्माण मे उसकी सहयता को हृदय से स्वीकार करनेवाले सज्जन ही सम्पर्क करे। यह गुरुकुल महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त है।

दूरभाष ०१४२१ - ८८१७१

नोट :– **मार्ग**–दिल्ली या जयपुर से कोटपूतली पहुचकर वहा से पावटा जानेवाली जीप या मिनी बस मे बैठकर कवरपुरा स्कूल पर उतरे तथा वहा से गुरुकुल पहुचे।

राजभवन का हिंदीकरण

उत्तर-प्रदेश के राज्यपाल का लखनऊ-स्थित सरकारी निवास 'राजभवन' के नाम से जाना जाता है, लेकिन उसके विभिन्न कक्षो के नाम अभी तक अग्रेजी मे ही प्रचलित हैं। इस वर्ष नये राज्यपाल आचार्य विष्णुकात शास्त्री ने उन नामों का हिंदीकरण कर दिया है। विशाल भोजन-कक्ष 'बैंक्वेट हॉल' अब **'अन्नपूर्णा कक्ष'** कहलाएगा। मिनी 'बैंक्वेट हाल' अब 'तृप्ति' कहलाएगा। 'पिंक रूम' अब **'शतमल'** और ब्लू रूम **'नील कुसुम'** कहलायेगे। गुप्ता रूम **कला कक्ष** और 'कॉन्फ्रेस रूम' **'प्रज्ञा'** के नाम से जाने जायेगे। 'गवर्नर्स रूम' अब **'परिमल'** कहलाएगा। 'वी वी आई पी विंग' **'पटल'** कहलाएगा। राजभवन गार्डन अब **'धनवतरि वाटिका'** के नाम से जाना जाएगा।

(दक्षिण समाचार १४-३-२००१ से साभार)

आर्य-संसार

लन्दन में बी.बी.ए. रेडियो पर वेदप्रचार

आर्यसमाज लंदन वन्दे मातरम् भवन लन्दन के कार्यों से प्रभावित होकर 'ब्रिटिश बोर्न एशियन' (B.B.A. Radio) ने आ०स० लन्दन को चार सप्ताह तक 'वैदिक धर्म' के प्रचार-प्रसार के लिए आमंत्रित किया जिसमें आर्यसमाज के प्रधान प्रो० सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज, पुरोहित प० रामचन्द्र शास्त्री तथा भजनोपदेशक श्री लेखराम दासमुथ, आर्यसमाज के आजीवन सदस्य श्री बलदेव मोहन मेहता तथा कवि श्री यशपाल गुप्ता ने वेदमन्त्र व्याख्या, ऋषि जीवन पर विचार तथा भजनों के माध्यम से रोचक प्रेरणाप्रद B B A Radio द्वारा प्रचार प्रसार किया।

—रामचन्द्र शास्त्री, मंत्री—आर्यसमाज लन्दन (यू०के०)

आर्यसमाज नेहरू ग्राउंड का चुनाव सम्पन्न

आज दिनांक २२ ४ २००१ को प्रात सत्सग के पश्चात् नेहरू ग्राउड आर्यसमाज का चुनाव सम्पन्न हुआ जिसमें सर्वसम्मति से श्री लेखूराम गुम्बर एव श्री रामचन्द्र गुप्त जी आर्य को सरक्षक घोषित किया गया। डॉ० विमला महता को प्रधान, श्री बी एल भाटिया को मंत्री, श्री डी सी आहुजा को कोषाध्यक्ष, डी डी चुग को भडाराध्यक्ष तथा श्री नरेश गोसाई को पुस्तकालयाध्यक्ष बनाया गया।

—बसन्तलाल भाटिया, मन्त्री—आर्यसमाज नेहरू ग्राउंड, फरीदाबाद

आर्यसमाज नरेला के ६६वें वार्षिक महोत्सव की कार्यवाही की संक्षिप्त रिपोर्ट

१३ ४ २००१ शुक्रवार प्रात १० बजे से दोपहर १२ बजे तक स्वामी इन्द्रवेश जी की अध्यक्षता में लाखों रुपयों की लागत से प० टेकचन्द जी स्वतन्त्रता सेनानी की स्मृति मे बनाई गई भव्य यज्ञशाला का स्वामी देवव्रत जी प्रधान सेनापति आर्यवीर दल के ब्रह्मत्व में वृहद् महायज्ञ कई कुण्डों के द्वारा उद्घाटन व ऋषि लगर, जिसका आयोजन श्रीमान् विनोद बागेश्वर सुपुत्र स्वर्गीय श्री अनन्तराम जी वकील नरेला ने किया था। कई सौ लोग इस सहभोज मे सम्मिलित हुए।

१४ ४ २००१ शनिवार प्रात. ८ से १० बजे तक यज्ञ उपदेश व यज्ञशेष प्रसाद।

दोपहर १२ से ४ बजे तक महिला मान रक्षा सम्मेलन, जिसकी अध्यक्षता बहन वन्दना जी शर्मा, (अध्यक्षा नारी रक्षा समिति) दिल्ली ने की। मुख्यवक्ता स्वामी ओमानन्द जी महाराज, शास्त्री सुखदेव जी गुरुकुल नरेला की अध्यापिकाए, व ब्रह्मचारिणियों ने भाग लिया।

—महामन्त्री, आर्यसमाज नरेला, दिल्ली

सूचना

आर्यसमाज मन्दिर 'हासी' में दो तीन वर्षों से रामसुफल शास्त्री पुरोहित पद पर कार्य कर रहे थे, उनको एक फरवरी से समाज के विरुद्ध कार्य करने की वजह से हटा दिया गया है।

—सतीशकुमार आर्य, मन्त्री—आर्यसमाज मन्दिर, हासी

भूकम्प पीड़ितों को सहायता

आर्यसमाज मिर्जापुर बाछौद ने गुजरात भूकम्प पीडितार्थ गाव में से चन्दा इकट्ठा किया था। इसके तुरन्त बाद समाज के प्रस्ताव के अनुसार एव गाव के विशिष्ट पुरुषों के परामर्शानुसार यह राशि श्री उपायुक्त महोदय, नारनौल की उपस्थिति में राशि ८००० (आठ हजार रु०) रसीद न ७०८१ दिनांक २०-४-२००१ को नकद जमा करा दी गई है।

—रामचन्द्र चौहान, प्रधान—आर्यसमाज मिर्जापुर बाछौद

शान्ति यज्ञ सम्पन्न

दिनांक २३-४-२००१ को महेन्द्रगढ में श्रीमती मायादेवी आर्या के निवास स्थान पर उनके स्वर्गीय पति श्री बनवारीलाल जी ठेकेदार की पुण्यस्मृति पर 'शान्ति यज्ञ' स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती प्रधान यतिमण्डल दक्षिणी हरयाणा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

यज्ञ का कार्य प० इन्द्रमुनि जी आर्य पुरोहित यतिमण्डल दक्षिणी हरयाणा, महन्त आनन्दस्वरूप संत कबीर मठ सेहला, मास्टर वेदप्रकाश आर्य मण्डलपति आर्यवीर दल ने करवाया।

—कंवरसिंह आर्य

आर्यसमाज अलाहर जिला यमुनानगर का चुनाव

प्रधान—श्री वेदप्रकाश जी, उपप्रधान—श्री बीरसिंह जी, मन्त्री—श्री रमेशचन्द्र, उपमंत्री—श्री शेरसिंह जी, कोषाध्यक्ष—श्री हुकमसिंह जी, प्रचार मंत्री—श्री सुरेन्द्र आर्य जी, पुस्तकालयध्यक्ष—श्री नसीर पाल।

—डॉ० गेंदाराम आर्य, मन्त्री—श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय एव वैदिक साधनाश्रम, शादीपुर (यमुनानगर) हरयाणा

आर्यसमाज सेक्टर ३२-डी चण्डीगढ़ का चुनाव

सरक्षक—सुभद्रा सतीजा एव कर्नल धर्मवीर, प्रधान—डॉ० ओ पी सेत्या, उपप्रधान—राजकुमार आर्य एव सत्यपाल कक्कड, मन्त्री—आर पी वर्मा, प्रचारमन्त्री—प्रेमदत्त शर्मा, कोषाध्यक्ष—सुभाष गाबा, सम्पदाधिकारी—रामदर्शन, उपमंत्री—वेदपाल, निरीक्षक—सीताराम गोयल, स्त्री प्रभाग—श्रीमती चन्द्रकान्ता।

—राजेन्द्रप्रसाद, मन्त्री

समस्त विश्व को आर्य बनायें

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस वेदमंत्र "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" (सारे संसार को आर्य बनाओ) का उद्घोष करके विश्व के सभी लोगो को श्रेष्ठ पुरुष बनाने का आह्वान किया था। उनके आह्वान को साकार करने के लिए आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं ने भारत की स्वाधीनता से पूर्व तन-मन-धन से सकल्प लिया। इसी सकल्प का परिणाम था कि समग्र राष्ट्र मे राष्ट्रीय पुन जागरण का शखनाद हुआ और धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक आदि सभी क्षेत्रो मे वैदिक विचारधारा के आधार पर नूतन उत्क्रान्ति उत्पन्न हुई और भारत की तरुणाई, अंगडाई लेकर धर्म और राष्ट्र की बलिवेदी पर सर्वस्व समर्पित करने के लिए प्रतिबद्ध हो उठी। भारत की स्वाधीनता के सग्राम की बलिवेदी पर शीश चढाने वाले अस्सी प्रतिशत अमर सपूत आर्यसमाज और स्वामी दयानन्द की विचारधारा तथा उत्प्रेरणा से ही प्रभावित थे। नव चेतना, नव जागृति की जो लहर महर्षि दयानन्द तथा आर्यसमाज ने फैलाई, उससे सारा राष्ट्र आप्लवित हो उठा। धर्म के नाम पर फैले हुए पाखण्ड, अन्ध विश्वास, जातिवाद, छुआछात, नारी दुर्दशा, सामाजिक असमानता, अन्याय, अभाव, अज्ञान, पराधीनता पर आर्यसमाज ने कठोर प्रहार किए और सदियो से एक नए स्वतन्त्र सशक्त, समृद्ध, सुसस्कृत भारत के निर्माण का द्वार खुला। असख्य बलिदानों के उपरान्त भारत स्वतत्र हुआ, लेकिन स्वतन्त्रता ने हमारे राजनेताओं की अदूरदर्शिता के कारण राष्ट्र को खण्डित कर दिया। खण्डित भारत के नवनिर्माण का चक्र चला तो अवश्य, लेकिन हम भौतिकता की अधी आधी मे प्रतिकूल दिशा मे बढते गये और आज स्वाधीनता के तिरपन वर्षों के बाद हमारी सस्कृति, हमारा धर्म, हमारी सनातन परम्पराए, हमारी पवित्र विचारधाराए, हमारे सत्य सनातन सिद्धान्त तिरोहित होगये और आज हम भारतवासी उस केन्द्र बिन्दु पर आकर खडे हैं, जहां से वह पथ निकलता है जिसे हमारी शास्त्रपरम्परा आसुरी पथ उद्घोषित करती है। आज मानवता के अस्तित्व पर ही सकट के बादल मडरा रहे हैं और दानवता खिलखिलाती हुई आगे बढ रही है। सर्वनाशिनी विचारधारा के दर्शन कदम कदम पर हो रहे हैं और हम उसे देखकर भी अनदेखा कर रहे हैं। क्या कर्मचारी, क्या अधिकारी, क्या व्यापारी, क्या राजनेता, क्या अभिनेता, क्या समाज सुधारक, क्या सामाजिक कार्यकर्ता तथा कथित धार्मिक नेता सभी के सभी धर्म स्वधर्म विस्मृत कर केवल धन के लिए अपना-अपना कार्य कर रहे हैं। क्या होगा राष्ट्र का भविष्य ? यह विचारधारा विषय है।

भौतिकवादी अपसस्कृति के बढते प्रभाव के कारण स्वार्थपरता बढ रही है। मानवता का निरन्तर ह्रास होने के कारण श्रेय मार्ग पर चलना कठिन होता जा रहा है। ऐसी विषम परिस्थिति मे सत्य सनातन वैदिक धर्म की मान्यताए ही मानवता की रक्षा करने तथा विश्व को विनाश से बचाने मे सक्षम हैं। आर्यसमाज का मुख्य लक्ष्य वैदिक धर्म तथा वेदो की महान् शिक्षाओ का ही प्रचार व प्रसार करना है। दुख है कि आर्यसमाज के परिक्षेत्र मे भी आत्मघाती शिथिलता तथा स्वार्थपरता परिलक्षित हो रही है। आज आवश्यकता इस बात की है कि आर्यसमाज अपनी तन्द्रा त्यागे और आर्यसमाज के कार्यकर्ता कटिबद्ध होकर, स्वाधीनता सघर्ष के समय की भावना संजोकर ही कार्य करे तथा वेदो के पावन प्रचार व प्रसार द्वारा मानवता के विनाश को रोकें। इतिहास व समय की इस आवश्यकता को हम अनदेखा नहीं कर सकते। आइए, आर्यसमाज के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने का हम व्रत ले।

राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

।। ओ३म् ।।

१४ दिवसीय योग साधना शिविर एवं वार्षिक उत्सव

स्वामी सत्यपति जी महाराज

आर्यजगत् के प्रसिद्ध तपस्वी स्वामी सत्यपति जी महाराज के निर्देशन में २८ मई से १० जून २००१ तक १४ दिवसीय योग साधना शिविर का आयोजन किया गया है। यह शिविर मानव कल्याण केन्द्र एवं द्रोणस्थली आर्ष कन्या गुरुकुल के परिसर में लगने जा रहा है। इस शिविर में क्रियात्मक योग, योगासन, ज्ञान कर्म उपासना की तथा दर्शन एवं उपनिषद् की कक्षाएं भी उपलब्ध होंगी। शिविरार्थी की न्यूनतम आयु १५ वर्ष से अधिक हो और धूम्रपानादि व्यसनों रहित हो। शिविर शुल्क ४०० रुपये मात्र होगा।

शिविर से पूर्व हमारा वार्षिक उत्सव २५, २६ एव २७ मई, २००१ को है। सभी आर्यजन सादर आमन्त्रित हैं।

मानव कल्याण केन्द्र (वैदिक आश्रम) पंजीकृत एवं द्रोणस्थली आर्ष कन्या गुरुकुल महाविद्यालय
३५-ए, किशनपुर, ग्राम-पोस्ट राजपुर, देहरादून-२४८००६ (उत्तरांचल)

आवश्यकता

आर्य कन्या गुरुकुल ग्राम पो० पाढा जिला करनाल के लिए कोई रिटायर अनुभवी प्रधानाचार्य की आवश्यकता है। एमए,बीएड. को प्राथमिकता दी जाएगी जो आर्यविचारों से ओतप्रोत हो और छात्रावास में रहे। समर्पित होकर सचालन कर सके। दूसरी, एम.ए.,बीएससी., नोन मेडिकल महिला की। वेतनमान योग्यता अनुसार होगा ओर यदि कोई वृद्ध सन्यासी वानप्रस्थी सेवा की भावना से रहना चाहे तो उसके लिए अवसर है। गुरुकुल की ओर से भोजन आवास का प्रबन्ध है। करनाल से पानीपत से बस सेवा का आवागमन है।

निवेदक : चौ० दयासिंह
प्रधान–आर्यसमाज गुरुकुल पाढा जिला करनाल

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा का आह्वान

हिन्दी हमारी राष्ट्रीय एकता की भाषा है जिसने सारे देश को एकता के सूत्र मे बाधने का कार्य किया है। यह देश के अधिकाश क्षेत्रो मे अधिकतर लोगों द्वारा बोली और समझी जाती है। हमारे स्वतन्त्रता आन्दोलन मे यही भाषा राष्ट्रभाषा बनी और अब स्वतन्त्र भारत के सविधान मे राजभाषा के पद पर समतादृत है। हिन्दी की शक्ति और उसका सामर्थ्य, उसकी लोकप्रियता और व्यापकता उसकी अपनी उपभाषाओ और बोलियो में निहित है। हिन्दी इन बोलियों और उपभाषाओ का ही समष्टि रूप है। यह सही है कि इन बोलियो का विकास अवश्य होना चाहिए किन्तु हिन्दी की कीमत पर नहीं। हिन्दी साहित्य इस बात का साक्षी है कि इसमे अवधि, मैथिली, ब्रज और राजस्थानी मे लिखा गया अपार साहित्य मौजूद है।

खेद है कि आज भोजपुरी, मैथिली, राजस्थानी आदि बोलियो और उपभाषाओ को हिन्दी से अलग करने की आवाज उठ रही है जो निश्चय ही राष्ट्र और राष्ट्रभाषा के लिए एक घातक कदम है।

अत राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा सभी सम्बन्धित से यह अपील करती है कि हम ऐसा कोई भी कदम न उठाए। जिसके कारण हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी का कद छोटा हो और अंग्रेजी का वर्चस्व बना रहे।

–मधुकरराव चौधरी, अध्यक्ष–राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

भूल सुधार

सर्वहितकारी साप्ताहिक के १४ अप्रैल २००१ के अंक में प्रथम पेज पर प्रकाशित समाचार 'किसानो के हितैषी चौ० देवीलाल नहीं रहे' में दो जगह ६ मार्च व ७ मार्च की तारीख भूलवश छप गयी है। इसके स्थान पर तारीख ६ अप्रैल व ७ अप्रैल पढी जाए।

–प्रधान सम्पादक

सुभाष चन्द्र बोस ने कहा था–

जुल्म करनेवाले से जुल्म सहनेवाला अधिक अपराधी होता है। इस अन्याय के विरुद्ध हमे युद्ध करना है, उसके बदले में चाहे हमें कितना ही बलिदान क्यों न करना पडे।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ७६८७४, ५७७७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ७७७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १,९६,०८,५३,१०२

पंजीकरणसंख्या टैक/एच आर/49/रोहतक/99 ☎ ०१२६२-७७७२२

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र रोहतक

प्रधानसम्पादक : प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक :- डा० सुदर्शनदेव आचार्य

वर्ष २८ अंक २४ १४ मई, २००१ वार्षिक शुल्क ६०) आजीवन शुल्क ६००) विदेश में १० पौंड एक प्रति १-२५

हरयाणा की खुशहाली, हरयाणा की भाषा से ही

—श्यामलाल, पूर्व प्राचार्य, सयोजक, हरयाणा राष्ट्रभाषा समिति, आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक।

राष्ट्र की समृद्धि :—

"अहम् राष्ट्री सगमनी वसूनाम्" ऋग्वेद के इस मंत्राश में परमप्रभु परमेश्वर ने राष्ट्र निर्माण का एक मूल्यवान् सूत्र मानव जाति को दिया है। यहा कहा गया है कि **'राष्ट्र की अपनी भाषा ही उसे ऐश्वर्यों की प्राप्ति कराती है।'** परमात्मा का यह संदेश सार्वदेशिक, सार्वकालिक और चिरन्तन है। यह सूत्र इंग्लैंड, अमेरिका, चीन, जापान और अन्य विकसित देशों में व्यावहारिक धरातल पर लागू होकर उन्हें समृद्धशाली बना रहा है। यदि इस स्वर्णिम सूत्र का प्रयोग भारत, पाकिस्तान, श्रीलका और अन्य विकासशील देश भी कर पाते या अब भी करने को कृतसकल्प हों तो ये देश भी शीघ्र ही विकास की ऊंचाइया छू सकते हैं। भारत पुन सोने की चिडिया बन सकता है। यहा एक बार फिर दूध-दही की नदिया बह सकती हैं। गाधीजी की द्रवीभूत भावनाओं के अनुसार नीचे से नीचे व्यक्ति के कपोलों पर ढुलकते बेबसी के अश्रुकणो को कोमल स्पर्श से पोछकर, भारत के २०-२५ करोड दरिद्र-नारायणों के नेत्रों में आशा और उमग पैदा की जा सकती है।

आओ तनिक व्यावहारिक रूप में विचार करे कि भाषा और राष्ट्र के ऐश्वर्यशाली होने मे क्या सम्बन्ध है ? राष्ट्र का निर्माण समाज की विभिन्न इकाइयों के समवेत प्रयास से होता है। मनु की कर्मानुसार वर्ण-व्यवस्था के सन्दर्भ मे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र वर्णों के अपने-अपने क्षेत्रो में किए गए सामूहिक कर्त्तव्यों से समग्र समाज आगे बढता है। राष्ट्र के समग्र विकास में **अज्ञान, अन्याय और अभाव सबसे बड़े बाधक तत्त्व हैं।** आज की भाषा में कहें तो सबको शिक्षा, सबको न्याय अर्थात् निर्भयता तथा सबको आवश्यकता के अनुसार रोटी, कपडा, मकान और स्वास्थ्य के प्राप्त होने से राष्ट्र स्वत ही ऐश्वर्यशाली बन सकेगा। भय, भूख और भ्रष्टाचाररहित समाज का नारा भी इसी से निकला है। इसी सन्दर्भ में भाषा के महत्त्व पर विचार करना सगत है।

भाषा का महत्त्व :—

क्या यहां यह बताने की आवश्यकता है कि भारत राष्ट्र की अपनी सर्वमान्य भाषा हिन्दी या प्रदेशों की भाषाओं अर्थात् तमिल, तेलगू, बंगला, मराठी, गुजराती, पजाबी तथा हिन्दी आदि मातृभाषाओं में शिक्षा देने से ही अज्ञान अथवा अशिक्षा का कलक मिटाया जा सकता है तथा दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रो की झोंपडियों मे भी ज्ञान का दीपक जल सकता है। इसी प्रकार जनता जनार्दन की अपनी भाषा मे नीचे से ऊपर के न्यायालयों में काम होने से ही युक्तिसगत, पारदर्शी तथा भेदभावरहित त्वरित न्याय की आशा की जा सकती है। विदेशीभाषा अंग्रेजी का वर्चस्व जब तक न्यायालयो मे बना रहेगा, तब तक जनता वकीलो तथा उनके मुशियो से आतकित होकर लुटती-पिटती रहेगी और हमारे न्यायालय केवल धनपतियों, अफसरों तथा राजनेताओं को न्याय दे सकेगे, साधारण जनता को नहीं। इसी प्रकार लोगो को उनकी भाषा मे छोटे बडे अफसरो तथा राजनेताओ को न्याय दे सकेगे, साधारण जनता को नहीं। इसी प्रकार लोगों को उनकी भाषा मे छोटे बडे रोजगारो, कुटीर और लघु उद्योगों तथा रोजगारोन्मुख पाठ्यक्रमो जैसे शिक्षक, वकील, इजीनियर, डॉक्टर, लेखाकार, लिपिक, कम्प्यूटर चालक, वाहन चालक, छोटे बडे कारीगर, मिस्त्री लोहार, बढई, स्वर्णकार तथा कृषि वैज्ञानिक आदि बहुविध धन्धों की शिक्षा देने से लाखो करोडों, लोगो को रोजगार के अवसर मिल सकते हैं तथा देश से बेरोजगारों की सेना को समाप्त किया जा सकता है। जापान, जर्मन, फ्रास, चीन आदि देशों ने अपनी भाषाओं के बल पर ही विश्व मे सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया है, न कि अंग्रेजी के बल पर।

हरयाणा की स्थिति :—

विकास और समृद्धि के उपर्युक्त वेदशास्त्र सम्मत तथा विश्वमान्य भाषायी मानदड के विपरीत आज हरयाणा राज्य मे उल्टी गगा बह रही है। इस राज्य मे वर्तमान भाषायी स्थिति इस प्रकार है -

१. अंग्रेजी की पढाई :—हरयाणा के सभी स्कूलों-कालेजों में कक्षा ६ से बी.ए, तक अंग्रेजी पढाई अनिवार्य है। पिछले वर्ष से प्राथमिक कक्षाओ में भी पहली कक्षा से ही अंग्रेजी की पढ़ाई अनिवार्य करदी गई है।

विचारणीय तथ्य—

क) छात्र अंग्रेजी के कारण आतंकित हैं। वे कक्षाओं से भाग रहे हैं। बडी सख्या मे छात्र आठवीं, दसवीं, बारहवीं तथा बी ए की परीक्षाओ मे अंग्रेजी मे अनुत्तीर्ण होकर अथवा अंग्रेजी मे कम्पार्टमैंट आकर घर बैठने और असामाजिक गतिविधियों में सलिप्त होने पर विवश हैं। अनेक छात्र आत्महत्या तक कर रहे हैं।

ख) प्रथम कक्षा से अंग्रेजी की पढाई ने तो बटाधार ही कर दिया है। बच्चे न ठीक से हिन्दी सीख पाते हैं, न अंग्रेजी। अंग्रेजी के समय मे भी देश मे कहीं भी पाचवीं कक्षा से पहले अंग्रेजी नहीं पढाई जाती थी।

ग) प्रथम कक्षा से अंग्रेजी की पढाई बाल मनोविज्ञान तथा शिक्षाशास्त्र के विश्वमान्य सिद्धान्तो की अवहेलना है। महात्मा गाधी के अनुसार यह बच्चो पर जुल्म करना है।

घ) आज हरयाणा मे अंग्रेजी के अयोग्य शिक्षको की जो फौज खडी करदी है, उस पर लोगो की खून-पसीने की कमाई का करोडों रुपया बर्बाद होरहा है। इस रुपये को बचाकर बिजली, पानी उपलब्ध कराने पर लगाया जा सकता है।

ङ) हिन्दी के मुकाबले अंग्रेजी के दो गुणा पीरियड दिए जाते हैं। फिर भी छात्र अंग्रेजी मे प्राय शून्य ही रहते हैं।

च) सरकार की यह नीति भारत सरकार द्वारा स्वीकृत त्रिभाषा सूत्र के भी विपरीत है, जिसके अनुसार अंग्रेजी की अनिवार्य शिक्षा केवल कक्षा ६ से ८ मे ही दी जा सकती है।

छ) केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी बी एस ई), जिसके अन्तर्गत देश मे हजारो स्कूल हैं, के पाठ्यक्रम मे भी कक्षा ९, १० ११ तथा १२ मे अंग्रेजी अनिवार्य नहीं है।

ज) दिल्ली, जो कि देश की राजधानी है, के स्कूलो मे भी कक्षा ९ से १२ तक अंग्रेजी की अनिवार्यता नहीं है। अन्य प्रदेशो में भी अंग्रेजी केवल ऐच्छिक है, अनिवार्य नहीं।

२. न्यायालयो की भाषा :—

निचली अदालतो मे काम हिन्दी अंग्रेजी दोनो में होरहा है। उच्च न्यायालय मे केवल अंग्रेजी मे ही काम किया जाता है।

विचारणीय तथ्य—

क) हरयाणा हिन्दी भाषी राज्य हैं।

(शेष पृष्ठ छह पर)

एस०वाई०एल० मुद्दे पर जनजागरण यात्रा स्थगित

दिनाक ८ मई २००१ को प्रो० शेरसिह जी के सान्निध्य मे गुरुकुल झज्जर मे हुई बैठक में यह निर्णय लिया गया कि स्वामी इन्द्रवेश जी की अध्यक्षता मे १० मई से दक्षिणी हरयाणा के १० जिलो मे निकाली जानेवाली एस०वाई०एल० नहर जनजागरण यात्रा फिलहाल अपरिहार्य कारणो से स्थगित करदी गई है।

—प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, मत्री आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा

6-5-2001 को दयानन्दमठ रोहतक में आयोजित राष्ट्रभाषा सम्मेलन की रिपोर्ट

६ ५ २००१ को दयानन्दमठ, रोहतक में हरयाणा राष्ट्रभाषा समिति द्वारा राष्ट्रभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता समिति के अध्यक्ष तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यकर्त्ता प्रधान श्री स्वामी इन्द्रवेश जी ने की। मुख्यवक्ता के रूप मे श्री कृष्ण कुमार ग्रोवर, पूर्व सचिव ससदीय राजभाषा समिति भारत सरकार तथा श्री राममेहर जी एडवोकेट पधारे।

सर्वप्रथम समिति के सयोजक पूर्व प्राचार्य श्री श्यामलाल ने सदन के सम्मुख पचसूत्री प्रस्ताव प्रस्तुत किए और सभी ने बडे उत्साह के साथ हाथ उठाकर प्रस्ताव को पारित किया। पाच सूत्र निम्नलिखित हैं--

१ हरयाणा प्रदेश मे प्रथम कक्षा से अनिवाय अंग्रेजी को समाप्त कराना।
२ हरयाणा सरकार के कामकाज मे राजभाषा हिन्दी का शतप्रतिशत व्यवहार सुनिश्चित कराना।
३ राज्य के चारो विश्वविद्यालयो एव हरयाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड से अग्रेजी के गैरकानूनी वर्चस्व को समाप्त कराना।
४ हरयाणा उच्च न्यायालय मे हिन्दी मे काम की अनुमति दिलाना।
५ सैनिक अफसरो की भर्ती परीक्षाओं राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (एन डी ए) तथा सम्मिलित रक्षा सेवा (सी डी एस) से अग्रेजी की अनिवार्यता को समाप्त करना।

मुख्य वक्ता श्री कृष्ण कुमार ग्रोवर ने अपने वक्तव्य मे निम्नलिखित तथ्य प्रस्तुत किए--

१ सर्वप्रथम स्वामी दयानन्द सरस्वती ने इस बात पर जोर दिया कि भारत में सम्पर्क भाषा के रूप मे हिन्दी को अपनाया जाए।
२ महात्मा गाधी भी हिन्दी के बहुत बडे पक्षधर थे। स्वतन्त्रता प्राप्ति के तुरन्त बाद उन्होने यह घोषणा की थी कि लोगो को कह दो कि गाधी अग्रेजी भूल गया है।
३ महात्मा गाधी मे हिन्दी प्रेम जगाने हेतु स्वामी श्रद्धानन्द का भी योगदान रहा है। एक बार गाधी ने स्वामी श्रद्धानन्द को अग्रेजी मे पत्र लिखा था जिसका उन्होने करारा जवाब दिया।
४ अम्बेडकर ने सविधान मे पहले प्रस्ताव मे अग्रेजी हटाने की बात कही थी।
५ सैनिक अफसरो को भर्ती मे अग्रेजी के साथ हिन्दी भी होनी चाहिए। जिसके लिए राष्ट्रपति से हस्ताक्षर करवाने के लिए दबाव डालना चाहिए।
६ हरयाणा उच्च न्यायालय मे हिन्दी मे कामकाज होना चाहिए।
७ हिन्दी के प्रचार प्रसार के लिए आर्यसमाज का प्रशसनीय योगदान रहा है।
८ हिन्दी को व्यावहारिक रूप में लागू करवाने के लिए कानून का सख्ती से पालन करवाने की आवश्यकता है।
९ जन्ता को जनता की भाषा मे ही न्याय मिलना चाहिए।
१० सर्वोच्च न्यायालय मे भी द्विभाषा आवश्यक हो और अनुवादको का प्रबन्ध हो।

दूसरे मुख्य वक्ता श्री राममेहर एडवोकेट ने कहा कि आज शिक्षा की स्थिति प्राईवेट पब्लिक स्कूलो मे ऐसी होती जा रही है जैसे मानो हिन्दी भारत के लिए विदेशी भाषा हो और अग्रेजी इनकी अपनी मातृभाषा हो। इन पब्लिक स्कूलो मे हिन्दी को इतनी हेयदृष्टि से देखा जाने लगा है कि स्कूल मे हिन्दी के पीरियड के अतिरिक्त हिन्दी बोलने वाले छात्र पर जुर्माना किया जाता है। खतरा यहा तक है कि यदि यही रवैया चलता रहा तो आने वाले २०-२५ वर्षो मे यहा की मातृभाषा अग्रेजी बन जाएगी।

अत उन्होने परामर्श दिया कि हिन्दी को लागू करने के लिए आर्यसमाज अर्थात् आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को बढ-चढकर नेतृत्व करना होगा इसके लिए जन आन्दोलन और सत्याग्रह की आवश्यकता भी पड सकती है।

इसके अतिरिक्त डॉ० नरेश मिश्र, श्री मनोज दूहन, पूर्व सूबेदार मेजर आनन्दसिह तथा श्री कर्मवीर आर्य आदि अनेक वक्ताओ ने पचसूत्री प्रस्ताव का पुरजोर समर्थन करते हुए अपने विचार प्रस्तुत किए। हिन्दी की उपेक्षा से सभी पीडित थे।

अन्त मे स्वामी इन्द्रवेश जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे इस बात पर जोर दिया कि गोष्ठियो और सम्मेलनो के साथ-साथ ठोस और सक्रिय कदम उठाना चाहिए। चारो ओर राष्ट्रभाषा हिन्दी के सम्मान का वातावरण तैयार करना चाहिए।

विश्व मे सर्वाधिक लोगो द्वारा बोली जाने वाली भाषाओ मे हिन्दी का दूसरा स्थान है। अग्रेजी का तीसरा स्थान है। हिन्दी अग्रेजी से अधिक वैज्ञानिक, सक्षम, समर्थ एवं समृद्ध भाषा है। फिर हमारी मनोवृत्ति यह क्यो बन गई है कि अग्रेजी के बिना काम नहीं चल सकता। यह भावना हमारी गुलाम मानसिकता की द्योतक है।

हिन्दी को सुचारू रूप से लागू करने के लिए उन्होंने युवावर्ग का आह्वान किया और कहा कि विद्यालयो, महाविद्यालयो तथा विश्वविद्यालयो के छात्रो को आगे आना होगा और इसके लिए सघर्ष करना होगा। हम हर प्रकार के सहयोग के लिए तैयार हैं। विश्वविद्यालयो मे बढ रहे अग्रेजी के वर्चस्व का विरोध छात्रो को करना पडेगा तभी इन अग्रेजी परस्त लोगो पर प्रभाव हो सकता है।

श्यामलाल, सयोजक राष्ट्रभाषा समिति, दयानन्दमठ, रोहतक

आर्यसिद्धान्त-शिक्षा

इन्द्रसिंह आर्य, आरजैड-६०, ब्लाक-ओ, नया रोशनपुरा, नजफगढ़, दिल्ली-४३

(गतांक से आगे)

(ख) शतपथ ब्राह्मण में 'अहिल्या' नाम रात्रि का, तो 'गौतम' है चन्द्रमा का नाम।
'इन्द्र' नाम का सूर्य है, वृष्टिरूपी जल को पृथ्वी में फैलाना, इसका है काम।।
ऋषि की कलम से, रात्रि (अहिल्या) और चन्द्रमा (गौतम) यहा दोनो अलकार रूप मे, पति-पत्नी के हैं समान।
अल्पमति लोग यथार्थ को कैसे जाने, वे स्वय शब्द सागर की अथाह से हैं अजान।।
सूर्य रात्रि को भगाता है, इसलिए वह कहलाता है, अहिल्या अर्थात् रात्रि का जार।
वह (सूर्य) रात्रि को उसके पति चन्द्रमा से ही पृथक् नहीं करता बल्कि विकृत कर देता है उसका शृगार।।
स्मरण रहे अहिल्या, द्रौपदी, तारा, सीता, मन्दोदरी ये सब मिलकर कहलाती हैं पाच कन्या।
विद्यादि श्रेष्ठ गुणो से वर्चस्वि इनका चिरस्मरणीय आदर्शमय जीवन हम भारतीयो के लिए आज भी है मान्य।।
इन्द्रसिह आर्य तुलसी ने आकारण मातृत्व के सतीत्व पर उगली उठाकर भारतीय नारी का किया है घोर अपमान।
जबकि उनके गौरवमय, परोपकारमय, शिक्षाप्रद, जीवन का करना चाहिए था गुणगान।।

धर्मराज युधिष्ठिर ही द्रोपदी के एकमात्र पति थे।

नवभारत टाइम्स के स्थानीय सम्पादक हैं, माननीय श्री सूर्यकान्त जी बाली।
वे सदैव लिखने मे व्यस्त रहते हैं, कुछ मिथ्या तो कुछ टकसाली।।
देखो 'मील के पत्थर' शृंखला, ५३ में उनकी लेखनी ने की है, अविरल गति।
बिना किसी प्रमाण के लिखते हैं - कि पाचपाडव महारथी थे द्रोपदी के पति।।
लेकिन हमारा शास्त्रमत सम्मत कहता है कि द्रोपदी का केवल युधिष्ठिर के साथ हुआ था विवाह।
उस शुभ मागलिक अवसर के प्रधान धौम्य पुरोहित हमारे ऐतिहासिक हैं गवाह।।
माना कि अर्जुन ने स्वयवर मे लक्ष्य-भेद करके जीती थी एक असाधारण शर्त।
फिर भी अग्नि के समान तेजस्वी अर्जुन का चित्त अधर्म की ओर नहीं हुआ प्रवृत्त।।
बल्कि उन्होंने कहा कि जो अनार्य लोग ऐसा अप्रिय, अन्यायोचित करते हैं आपस मे व्यवहार।
वे पाच हैं - आचार्य, पुरोहित, पिता, कन्या, वर सभी नरकगामी होते हैं, अर्थात् सस्कार निहार।।
विद्वज्जनो, एक स्त्री के अनेक पति, वैसे भी यह बात लोक ओर वेद, दोनो के है विपरीत।
अत हममे से बडे भाई (युधिष्ठिर) का विवाह आरम्भ किया जाये धर्मशास्त्र वर्णित।।
महर्षि व्यास ने राजा द्रुपद से कहा, हे राजन् अर्जुन की सभी बाते हैं शास्त्रयुक्त।
अत तुम अविलम्ब धर्मराज का सैरन्ध्री के साथ गठ-बन्धन कराके सभी शकाओं से हो जाओ मुक्त।।
इन्द्रसिह आर्य आज भी देखो हम आर्यो (हिन्दुओ मे इस परम्परा की प्रज्जवलित है ज्योति।
कि श्रेष्ठ भ्राता के अविवाहित रहते हुए कनिष्ठ भ्राता की शादी नहीं होती।

प्रमाण--

त्वया जिता फाल्गुन, याज्ञसेनी, त्वयैव शोभिष्यति राजपुत्री।
प्रज्वाल्यतामग्नीरमित्र-साह, गृहाण पाणिं विधिवत् त्वमस्या:।।

(म०भा० आदि पर्व १८२/७)

हे अर्जुन तूने द्रोपदी को जीता है, इसलिए तुम विधिपूर्वक इस राज-कन्या का प्राणी ग्रहण करो

मा मां नरेन्द्र धर्मभाज, कृथा न धर्मोज्यमशिष्टदृष्ट:।
भगवान् निवेश्य प्रथमं ततोऽह, भ्रीमो महाबाहुरचिन्त्यकर्मा।।

(म०भा० आदि पर्व अ० १८२/८)

अर्जुन - हे महाराज युधिष्ठिर, मुझको आप अधर्म का भागी न बनाइये (बडे भाई के अविवाहित रहते हुए छोटे भाई का विवाह होजाये) यह धर्म नहीं है, अत पहले आपका विवाह होना चाहिए।

(क्रमश:)

अद्भुत क्रान्तिकारी व्यक्तित्व—स्वामी कर्मानन्द

गताक से आगे—

चूंकि आर्यसमाज का जन्म ही इन निरर्थक और नि स्सार रूढियों के विरोध में ही हुआ था। इसके अलावा "सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोडने में सर्वथा उद्यत रहना चाहिए।" के सिद्धान्त के अनुसरण के क्रम में प्रत्येक आर्य का कर्त्तव्य है कि धर्म को उसके बाह्य लोकाचारों से नहीं अपितु उसकी अन्तर्वस्तु के रूप मे पहचाने और उसी रूप में उसे ग्रहण करे।

धर्म का मूलाधार मानव कल्याण है। मनुष्य के कल्याण से बढकर कोई लोकाचार या कोई धर्म नहीं।

धर्म के इस मर्म से स्वामी कर्मानन्द जी अनभिज्ञ न थे। **नर सेवा नारायण सेवा** स्वामी जी मानव सेवा की महत्ता को हृदय से अगीकार करते थे। इसका एक उदाहरण निम्न घटना से मिलता है। घटना इस प्रकार है—

६ मार्च १९५८ को लोहारू मे पिलानी (राजस्थान) से दिल्ली को जाने वाली पजाब रोडवेज की एक बस (न० ४९५) पश्चिम की ओर रेल फाटक से टकराती हुई रेल इजन से जा भिडी। इस दुर्घटना मे तीन व्यक्ति तत्काल मर गए थे और १७ व्यक्ति बुरी तरह हताहत हो गए। जिस समय यह दुर्घटना हुई उस समय स्वामी कर्मानन्द जीप मे बैठकर एक सम्मेलन मे भाग लेने जयपुर जा रहे थे। उस सम्मेलन मे स्वामी जी का पहुचना अनिवार्य था।

इस घटना के बारे मे सुनते ही स्वामी ईशानन्द, सत्यव्रत शास्त्री, ठा० भगवतसिह तथा पटवारी किशोरीलाल आदि मित्रो को लेकर स्वामी कर्मानन्द जी तत्काल दुर्घटना स्थल पर जा पहुचे और पहुचते ही क्षतिग्रस्त बस से घायलो को निकालने लगे। घायलों को बस से निकालने, आग जलाकर उनकी ठड दूर करने तथा घायलो को अस्पताल पहुचाने, घायलों की सेवा शुश्रूषा आदि के इतजाम मे स्वामी जी ने तत्काल सारी व्यवस्था करवाई। लोहारू मोटर कम्पनी के सौजन्य से हताहतो को पिलानी हस्पताल मे भर्ती कराया और मृतको को उनके नगर मे भेजने की व्यवस्था की गई। इस पूरे आयोजन मे स्वामी जी पूरे दिन भर लगे रहे। यद्यपि अधिवेशन मे उनकी प्रतीक्षा होती रही। लेकिन इस छोटे से किन्तु अहम् 'सत्य', कि मानव सेवा किसी भी अधिवेशन या सम्मेलन से अहम् है, से स्वामी जी पूरी तरह परिचित थे।

वे एक सच्चे साधु थे। हर प्रकार के राग द्वेष से मुक्त एक मूक सेवक स्वामी जी ने अपने कार्यों, अपने त्याग और अपनी उपलब्धियों का कभी कोई ढिंढोरा नहीं पीटा, ना ही कभी प्रचार किया।

हालाकि ऐसे मौन सेवकों का मूल्याकन करने मे हम प्राय असफल रहते हैं। स्वामी कर्मानन्द जी स्वामी थे किन्तु उन्हें उपदेश देने में अधिक प्रसन्नता नहीं होती थी। प्राय. वह कहा भी करते थे **"मैं कहकर उपदेश नहीं देता बल्कि स्वय काम करते हुए उपदेश देना चाहता हूं।" जैसे अंग्रेजी में एक कहावत में भी कहा गया है—** "A ounce of work is better then millions of words" अर्थात् आचरण का एक छोटा बिन्दु भी हजारों लाखो उपदेशों से बेहतर है।

जैसा कि स्वामी कर्मानन्द जी के जीवन तथा उनक व्यक्तित्व से स्पष्ट होता है कि स्वामी जी कभी ख्याति या प्रसिद्धि के पीछे नहीं भागे। असभव से लगने वाले किसी भी काम, आन्दोलन या अभियान मे अचानक कूद पडना और अपनी निष्ठा, लगन और परिश्रमशीलता से काम को सफलतापूर्वक खत्म करके रगमच से नेपथ्य में चले जाना कर्मानन्द जी का स्वभाव था।

ऊपरी तौर पर उनमे अद्भुत या असाधारण कुछ भी नहीं लगता था। रहन-सहन, खान-पान, चाल-ढाल से एक ग्रामीण जैसे सरल और सादगी भरे इसान थे। बाहरी तौर कहीं से भी विशिष्ट नहीं थे। उनकी विशिष्टता उनके मन मे, आचरण तथा चिन्तन में थी। यह आन्तरिक विशिष्टता ही व्यक्ति को अपने समय और सदर्भ से महान् बनाती है।

एक छोटी सी घटना और है—उस समय की बात है जब स्वामी जी घूम-घूमकर पाठशाला के लिए चदा जमा कर रहे थे। साथ मे तीन चार साथी भी थे। शाम की गाडी से लौट रहे थे कि स्टेशन पर उतरकर बाहर आते समय एक व्यक्ति दिखा। अपनी चादर मे मुह छिपाए धुधलके मे खडा यह आदमी सुबक-सुबक कर रो रहा था। यह रोना बहुत तेज नहीं था। ज्यादातर लोगो ने इसे सुना भी नहीं था। किन्तु स्वामी कर्मानन्द जी के कानो मे यह आवाज पडनी ही थी कि चलते-चलते वे ठिठके और आदतन पूछ बैठे-सुबकते हुए व्यक्ति ने अपने हालात के बारे मे बताया। शायद उसकी पत्नी गभीर रूप से बीमार थी जिसे इलाज के लिए दिल्ली ले जाने को उसके पास पैसे नहीं थे। स्वामी जी से यह दुख देखा नहीं गया। उन्होने जेब से कुछ रुपये (सभवत ५०० रुपये) निकालकर उसे थमा दिए। स्वामी जी ये पैसा पाठशाला के लिए था इसे यो खर्च करना ठीक है। एक साथी ने पूछा भी था। जवाब मे स्वामी जी ने वैसे ही आदतन अट्टाहस लेते हुए साथी की पीठ पर एक धौल जमाते हुए कहा था—ओ यार पाठशाला भी कल्याण है और ये काम भी तो कल्याण का ही है। इससे बढकर कल्याण कहा-कोई, और एक जोरदार हसी पर बात खत्म हो गई थी।

घटना बहुत मामूली है बहुत छोटी सी है लेकिन इससे स्वामी जी के जीवन का एक दूसरा ही पहलू उभरकर सामने आता है। एक जुझारू और सघर्षचेता नेता के अक्खड और खुरदरी काया के नीचे छिपे उनकी सवेदना की परदु खकारता को सामने लाती है और बताती है कि राष्ट्रोद्धार, देशनिर्माण और समाजसेवा के व्यापक और महान् उद्देश्यों मे व्यस्त रहते हुए भी एक सामान्य गृहस्थ की चिंता उसकी आकुल चित्तस्थिति से स्वामी कर्मानन्द का मन अछूता नहीं था।

प्राय बडे-बडे कामों को करते हुए हम छोटी-छोटी बातो को भुला दिया करते हैं। लेकिन स्वामी कर्मानन्द जी ने इन छोटी किन्तु महत्त्वपूर्ण सवेदनाओ को अपने हृदय से बाहर नहीं किया था। यही निजता ही थी जो उनके व्यक्तित्व को सुदर-स्मरणीय और अनुकरणीय बनाती थी। किसी विशाल और भव्य प्रासाद या किसी मदिर मे लोग जाते हैं तो उसकी उत्तुग प्राचीरो, उसके विशाल प्रागण तथा द्वारों और मेहराबो को देखते हैं। सूर्य की सुनहरी रोशनी मे जाज्वल्यमान नक्षत्रों की भाति प्रकाशमान क्लश की शोभा को निहारते हैं और सराहते हैं। कोई आसमान से बाते करती दीवारो की ऊचाई की तारीफ करता है लेकिन इस बीच कितने ही लोग ऐसे होते हैं जिनका ध्यान उस भव्य और विशाल प्रासाद की नींव की ईंटो की तरफ जाए।

उस तरफ किसी का भी ध्यान नहीं जाता है। नींव की वे ईंटें जिनका त्याग और समर्पण अद्भुत है, अद्वितीय और अप्रतिम है। नींव की वो ईटे, जिन्होने युगो-युगो तक अधेरो मे दफन होना सिर्फ इस लिए स्वीकार किया कि उन पर एक विशाल और भव्य इमारत बन सके। उन्होने अधभूमि मे हवा और सास से वचित रहकर गुमनाम हो जाना इसलिए स्वीकार किया कि उन पर चढकर एक मजबूत और पुख्ता दीवार आसमान की निरभ्र ऊचाई को चूमते हुए हवा से बातें कर सके।

भवन या निर्माण कोई भी हो, सबके आधार मे नींव की यही ईंटे होती है। समा और राष्ट्रो का निर्माण भी इसी पद्धति पर होता है। आज भले ही कुछ लोग समाज या राष्ट्र के पटल पर सुदर कगूरो और कलशो की तरह चमकते हों, प्रकाशमान होते हो, हवा से बाते करते हो, लेकिन किसी भी अवस्था मे उनसे अधिक महत्त्वशाली वो मौन और मूक सेवक होगे जिन पर समाज की बुनियाद टिकी हुई है। अज्ञात और गुमनाम रहते हुए भी यही व्यक्ति किसी देश, राष्ट्र और समाज की आधारशिला होते हैं।

स्वाम कर्मानन्द जी महाराज का जीवन नींव की ईंटो की तरह गुमनाम और अज्ञात भले ही रहा हो लेकिन इससे उनके त्याग की महत्ता, उनके सघर्ष की गरिमा और अहमियत कहीं भी कम नही होती।

अकेले पजाब-हरयाणा और राजस्थान ही नहीं अपितु प्राय पूरे उत्तर पश्चिम भारत मे आर्यसमाज के विकास, उसके प्रचार-प्रसार, शिक्षा के फैलाव तथा समाज-सुधार के क्षेत्र मे स्वामी जी का योगदान भुलाया नहीं जा सकेगा।

वस्तुत यह भी हमारा प्रमाद और आलस्य ही है कि ऐसे समाजसेवी और अनन्य राष्ट्रसेवी व्यक्ति के योगदान को अभी तक हम भुलाए ही बैठे रहे। भावी पीढी ऐसे महान् लोगों के बारे मे कुछ जान और समझ सके इसके लिए कुछ करने की सुधि भी हमे अब जाकर आई।

"देर आयद दुरुस्त आयद" कोई बात नहीं अब ही सही। स्वामी कर्मानन्द जी जैसी सादगी भरी विभूतिया भी कभी इस धरती पर विचरी थीं भावी सततियो को यह बतलाने के सक्रिय प्रयास किए जाने चाहिए। स्वामी जी जैसे नायको की स्मृति के बिना हमारा समाज ऐसा ही होगा जैसा कि बिना नींव का कोई महल या मकान।

स्वामी जी की स्मृतियो, उनके सघर्षो को अक्षुण्ण रखा ही जाना चाहिए। पिछले कुछ दशको और वर्षो ने हमे और हमारे समाज के साथ-साथ हमारी सस्कृति को भी काफी कुछ बदला है। हमारे सामाजिक, राजनीतिक आर्थिक परिवेश मे काफी तबदीलिया आई है। सार्वभौमिक और विश्वस्तर पर देखे तो एक ओर जहा तीव्र परिवहन, सचार तथा सूचना क्षेत्र मे आई क्रान्ति ने समूची दुनिया को एक 'ग्लोबल विलेज' (सार्वभौमिक गाव) मे बदल दिया है वहीं विपन्न और विकासशील देशो मे आर्थिक व सामाजिक विषमता को भी बढाया है और सबसे बढा दिया है हमारी सास्कृतिक विशिष्टता और स्वायत्तता को। आज उदारीकरण और वैश्वीकरण के अधानुकरण के इस अधे दौर मे हर ओर से हमारी सामाजिक तथा सास्कृतिक निजता को चुनौतिया मिल रही हैं। वैश्वीकरण के इस माहौल मे मनुष्य अकेला पडता जा रहा है। वैचारिकता, निष्ठा, प्रतिबद्धता, ईमानदारी और त्याग, सेवा जैसे शब्द शब्दकोषो मे सिमटते जा रहे हैं। वैचारिक तौर पर शून्य और रिक्त इस नस्ल मे बढती आर्थिक विषमता इसे और भी तेजी से दिग्भ्रमित कर रही है।

एक तरफ जहा बडे-बडे विध्वसक परमाणु अस्त्र-शस्त्र, मिसाइले बन रही हैं, उपग्रह छोडे जा रहे हैं, वहीं दूसरी तरफ गाव से रोजगार और दो वक्त की रोटी को तलाशते निर्धन आबादी तेजी से शहरो मे जमा होकर स्लम बढाती जा रही है। बेरोजगारी बढ रही है। सम्मानपूर्वक जीने के अवसर सीमित होते जा रहे हैं। यह आर्थिक असुरक्षा और अनिश्चितता ही सामाजिक तौर पर विचारशून्यता, हिसा और भ्रष्ट आचरण मे प्रकट हो रही है। तेजीसे विघटित और विखडित होते इस समाज मे आर्यसमाज तथा उसके सिद्धान्तो की प्रासगिकता खत्म नहीं हुई है। बल्कि आज के सदर्भो मे देखे तो उसकी प्रासगिकता उससे कहीं ज्यादा तीव्र और समय सापेक्ष है जितनी कि आज से १०० या १५० वर्ष पहले रही होगी। इस दिशाहीन समाज और दिग्भ्रमित पीढी को एक सशक्त और सार्थक नैतिक आधार आर्यसमाज ही दे सकता है।

इन सदर्भो मे जब जब हम आर्यसमाज या वैदिक सिद्धान्तो की उपादेयता या उनकी प्रासगिकता की बात करते हैं तो निश्चित रूप से हमारा ध्यान स्वामी कर्मानन्द जी जैसे सघर्षचेता, क्रान्तिकारी व्यक्तित्व की ओर भी जाता है। क्योकि वैदिक सिद्धान्तो की सार्थक और सशक्त परिणति स्वामी कर्मानन्द जैसे तेजस्वी पुरुषो मे ही देखी जा सकती है अन्यत्र नहीं। ऐसे महापुरुषो की अपेक्षा समय और समाज को सदा ही रही है और रहेगी। **—परमानन्द आर्य**

थियोसोफिकल सोसाइटी और आर्यसमाज

❑ प्रतापसिंह शास्त्री, एम ए, पत्रकार, २५ गोल्डन विहार, गगवा रोड, हिसार

जिन दिनो सन् १८७५-१८७६ मे महर्षि दयानन्द जी बम्बई में व्याख्यान दे रहे थे उन दिनों प्राय अमेरिकन लोग वहा आया करते थे और उन लोगों से प्राय प्रश्नोत्तर भी हुआ करते थे और यही कारण है कि जब वे लोग अमेरिका पहुंच गये तो बाबू हरिश्चन्द्र चिन्तामणि प्रधान आर्यसमाज बम्बई काकडवाडी का उनसे पत्र व्यवहार हुआ और तत्पश्चात् महर्षि दयानन्द से भी होता रहा। यह एक सयोग की बात है कि उसी वर्ष अमेरिका मे थियोसोफिकल सोसाइटी स्थापित हुई कि जिस वर्ष बम्बई में आर्यसमाज स्थापित हुआ था। थियोसाफिकल सोसाइटी के सचालको का पहला पत्र १८ फरवरी, १८७८ को मिला जिसका उत्तर २१ अप्रैल सन् १८७८ को दिया गया और अन्तिम पत्र ५ जून १८७८ को स्वामी जी के नाम आया जिसका उत्तर २६ जुलाई, १८७८ को दिया था जिसके पहुचने पर वह अमेरिका से १७ दिसम्बर सन् १८७८ भारत में महर्षि दयानन्द जी से वेदों की शिक्षा लेने के उद्देश्य से चले। स्वामी जी ने अमेरिका वालो की ये सब छ सात पत्र सन् १८७८ मे ही अग्रेजी विक्टोरिया प्रेस लाहौर और नागरी लिपि मे आगरा और उर्दू में ज्वालाप्रकाश प्रेस, मेरठ में छपवाकर प्रकाशित कर दिये थे।

इन चिट्ठियो के अध्ययन से प्रत्येक मनुष्य जान सकता है कि इन लोगो में इस देश मे आने और स्वामी दयानन्द जी महाराज के चरण स्पर्श करने का कितना उत्साह था। इन चिट्ठियो से स्पष्ट प्रकट होता है कि वे ईश्वर को मानने और वैदिक सत्य विद्या को सीखने के लिए यहा आना चाहते थे। साराश यह है कि इन लोगों की उत्साहपूर्ण चिट्ठियो ने हम आर्यों के हृदयो पर यह प्रभाव डाला कि ये लोग सब प्रकार पवित्र वेद के अनुयायी हैं और समस्त भूमण्डल पर तन-मन-धन से उसका प्रचार करना चाहते हैं। १७ दिसम्बर सन् १८७८ को न्यूयार्क से चलकर ये लोग लन्दन होते हुए १६ फरवरी सन् १८७९ को बम्बई मे प्रविष्ट हुए और बाबू हरिश्चन्द्र चिन्तामणि प्रधान आर्यसमाज बम्बई काकडवाडी के मकान पर पहुचे। स्वामी दयानन्द जी इन दिनो हरिद्वार क्षेत्र में प्रचार कर रहे थे। उस समय विभिन्न समाचार पत्रो ने इनके सम्बन्ध मे बहुत कुछ लिखा था। "इण्डियन मिरर" कलकत्ता ने लिखा–एक खुले विचार वाले वकीलो की टोली अमेरिका की राजधानी न्यूयार्क से बम्बई मे आई और उसके आने का हेतु सुनकर भारतवासी आश्चर्यान्वित हैं कि ये लोग, जिनमे यूरोपियन भी हैं और अमेरिका के निवासी भी हैं। भारत वर्ष मे केवल इस विचार से आये हैं कि पण्डित दयानन्द सरस्वती से वेदज्ञान की प्राप्ति करे।"

स्वामी जी से इन अमेरिकन लोगो की भेंट (जिनके प्रमुख कर्नल अल्काट व मैडम ब्लैवेटस्की हैं) देहरादून, सहारनपुर और मेरठ मे हुई। मेरठ आर्यसमाज मे कर्नल अल्काट ने कहा–कि हमने पाच वर्ष पूर्व न्यूयार्क में थियोसोफिकल सोसाइटी की स्थापना की है और स्वामी दयानन्द सरस्वती को अपना गुरु अर्थात् पथप्रदर्शक मानकर हम आपकी सेवा मे वेदो की शिक्षा ग्रहण करने उपस्थित हुए हैं। स्वामी जी ने अपने सरल हृदय से इस सोसाइटी को आर्यसमाज के नियम सिद्धान्त स्वीकार कर लेने से आर्यसमाज की मान्यता प्रदान कर दी अर्थात् इससे आर्यसमाज का सम्बन्ध जोडने की स्वीकृति दे दी। यह बात ५ मई १८७९ की है। कर्नल अल्काट और मैडम ब्लैवेटस्की ने १५ दिसम्बर सन् १८७९ को बनारस मे स्वामी जी से दूसरी बार भेट की। स्वामी जी ने कुछ लोगो की गलत धारणा का उत्तर देने के लिए यहीं पर विशिष्ट विज्ञापन प्रसारित किया कि आर्यसमाज थियोसोफिकल सोसाइटी की शाखा नहीं है। बल्कि बाबू हरिश्चन्द्र चिन्तामणि जो किसी समय बम्बई आर्यसमाज के प्रधान थे उनसे न्यूयार्क नगर अमेरिका की थियोसोफिकल सोसाइटी के प्रधान एच एस कर्नल अल्काट साहब और मैडम एच पी ब्लैवेटस्की आदि से पत्र व्यवहार होने पर मेरे पास न्यूयार्क से पत्र आया था कि हमको भी आर्यावर्तीय प्राचीन वेदोक्त धर्मोपदेश विद्यादान कीजिए। मैंने उसके उत्तर मे लिखा था कि मुझसे जितना उपदेश बन सकेगा यथावत् करूगा। इसके बाद उन्होने मुझे कहा कि इस थियोसोफिकल सोसाइटी को आर्यावर्तीय आर्यसमाज की शाखा करने का विचार करे। मैंने आर्यसमाज के सभासदो को यह सुनाया तो कुछ ने प्रसन्न होकर स्वीकार किया और बहुतो ने कहा कि हम ठीक-ठीक जान [illegible] पश्चात् इस बात को स्वीकार करेंगे।

९ सितम्बर सन् १८८० से १२ सितम्बर १८८० तक स्वामी जी मेरठ मे थे तब इन थियोसोफिकल वालो की भेट स्वामी जी से तीसरी बार हुई। इस समय स्वामी जी को इन पर सदेह हुआ कि ये वैदिक सिद्धात के विरुद्ध आचरण करते हैं और यहीं से मतभेद प्रारम्भ हो गये। दिसम्बर सन् १८८[illegible] मे बम्बई रेलवे स्टेशन पर स्वामी जी के स्वागतार्थ पहुचे कर्नल अल्काट प्रधान थियोसोफिकल सोसाइटी व आर्यसमाज बम्बई के सम्मानित सदस्यगण के म[illegible] स्वामी जी बालकेश्वर गोशाला (जहां नियत निवास स्थान था) के निकट आकर अत्यन्त मनोहर और उत्तम स्थान समुद्र तट पर ७ मास तक रहे। यहीं पर कर्नल अल्काट और मैडम ब्लैवेटस्की को एक पत्र लिखवाया कि मेरठ में आपने एक व्याख्यान दिया है जिससे विदित हुआ कि आप लोगों को ईश्वर की विद्यमानता में संदेह है और आप लोगों ने अमेरिका से जो चिट्ठी पहले लिखी थी, अपने मत का नाम–"थियोसोफिकल" लिखा था। हमने इस शब्द के अर्थ अग्रेजी जानने वालों से पूछे उन लोगों ने कोष का अध्ययन करने के पश्चात् उत्तर दिया कि–"थियोसोफिकल" शब्द का वास्तविक अर्थ–"ईश्वर की बुद्धिमत्ता" है। इसलिए हमने समझा था कि तुम ईश्वर उपासक हो। इसलिए तुमसे मित्रता करने मे मेरे लिए कोई रुकावट नहीं रही थी। अब तुम्हारे व्याख्यान इसके विरुद्ध दीखते हैं और हम से तुम से मित्रता हो चुकी है अत शीघ्र आओ और स्थान नियत करो तथा शास्त्रार्थ के लिए तैयार रहो। बम्बई के रहने वाले एक रईस को पत्र देकर कहा कि मैं नास्तिकों का खण्डन करने में आलस्य करना पाप समझता हूं। आओ शीघ्र इसको लाओ। जब बार-बार सूचित करने पर भी वे लोग न आये तो २२ मार्च सन् १८८२ को अन्तिम पत्र कर्नल अल्काट को भेजा कि यदि तुम शास्त्रार्थ के लिए नहीं आते हो तो मैं २८ मार्च १८८२ को तुम्हारे विरुद्ध व्याख्यान "काऊस जी हाल" मे दूगा।

स्वामी जी ने केवल व्याख्यान ही नहीं दिया अपितु थियोसोफिकलों से आर्यसमाज का सम्बन्ध विच्छेद भी कर लिया तथा विज्ञापन द्वारा इसकी सर्वत्र आर्यसमाजों में सूचना भी दे दी और २८ मार्च १८८२ से थियोसोफिकल सोसाइटी से आर्यसमाज व महर्षि दयानन्द का किसी भी प्रकार का कोई सम्बन्ध न रहा।

वस्तुत यह थियोसोफिकल सोसाइटी क्या थी आओ इस पर भी विचार करते हैं। क्योंकि प्राचीन धर्मों की सम्पूर्ण रूढियों, विश्वासों एव क्रियाकलापो का वैज्ञानिक तथा प्रबल समर्थन थियोसोफिकल द्वारा हुआ। थियोसोफी का जन्म अमेरिका मे हुआ किन्तु बडी विचित्र परिस्थितियों में यह आन्दोलन महर्षि दयानन्द तथा आर्यसमाज की सहायता से भारत में प्रारम्भ हुआ। (क्रमश)

सर्वहितकारी (साप्ताहिक) की मूल्यवृद्धि की सूचना

कागज एव छपाई तथा डाक शुल्क की मूल्य वृद्धि के कारण १ जुलाई, २००१ से सर्वहितकारी (साप्ताहिक) का वार्षिक शुल्क ६० रुपये तथा आजीवन शुल्क ६०० रुपये के स्थान पर ८० रुपये व ८०० रुपये कर दिया गया है। पु[illegible] तथा नये ग्राहक बननेवालों से निवेदन है कि ३० जून २००१ तक वार्षिक शुल्क ६० रुपये तथा आजीवन शुल्क ६०० रुपये भेजकर इस सुविधा का लाभ उठावे। पत्रिका के स्तर मे सुधार के लिए सम्पादक मण्डल प्रयत्नशील है।

आशा है सुधी पाठक मूल्यवृद्धि के लिए क्षमा करेंगे। – [illegible]मन्त्री

लोकलाज का महत्त्व

—आचार्य संजय देव, ३४५, मल्हारगज, इन्दौर (म०प्र०)

लोकलाज अर्थात् लोक की या जग की लाज। लोक की लज्जा से लोग डरते रहे हैं। जग क्या कहेगा ? इसकी चिन्ता हर किसी को हो रही है। लोक या जग का कोई स्पष्ट, प्रत्यक्ष एवं हस्तक्षेप करने वाला स्वरूप तो नहीं रहा है। वनवासी क्षेत्रों में ही लोक या जग का स्वरूप थोडा भिन्न रहा है। वहा इसका स्वरूप प्रत्यक्ष, स्पष्ट एव हस्तक्षेप वाला रहा है। वहां लोकलाज या जग क्या कहेगा का अनुशासन अधिक रहा है। वनवासी समाजों में लोकलाज की अवहेलना करने वाले दण्डित होते रहे हैं। वनवासी अचलों से बाहर के क्षेत्रों में लोकलाज या जग क्या कहेगा का अनुशासन अब नहीं रहा है।

यह ठीक है कि लोकलाज का भय सज्जनों को ही विशेषकर रहा है। दुर्जनो ने लोकलाज की इतनी परवाह नहीं की है, किन्तु ये भी लोकलाज के प्रति सजग तो रहे हैं। जहां तक सम्भव हुआ है, वहां तक वे लोकलाज की नजरें बचाते रहे हैं। नजरे बचा नहीं पाए हैं तो उन आंखों में धूल झौंकने का प्रयास करते रहे हैं। अभिप्राय यह है कि दुर्जन भी लोकलाज की पकड मे आने से बचने का पूरा-पूरा प्रयास करते रहे हैं। इन प्रयासो से लोकलाज की शक्ति का पता लगता है। दुर्जन भी इस शक्ति के कायल रहे हैं—इसकी अवहेलना वे पूर्णतया नहीं कर पाए हैं। सज्जनों की यह मान्यता रही है कि लोकलाज की बहुआयामी एवं पारदर्शक दृष्टि के सामने कुछ भी छुपता नहीं है। दुर्जनों की मान्यता इससे भिन्न रही है। ये लोकलाज को भी छकाने में विश्वास करते रहे हैं।

यह भी सही है कि नैतिक मूल्यों के विघटन के इस दौर में लोकलाज की स्थिति अब पहले जैसी नहीं रही। लोकलाज की स्थिति अब उन बुजुर्गों जैसी हो गई है, जिनकी अपने घर में नहीं चलती। जिनकी आखो की शर्म पाली जाती रही थी, उन्हे अब आखें बताई जाती हैं। जो आदर एव श्रद्धा के पात्र थे, वे अब दया के पात्र बन गए हैं। सारे समीकरण जैसे बदल गए हैं—ठीक यही स्थिति अब लोकलाज की भी हो गई है। बाहुबल, धन-बल, पदबल आदि बलों ने लोकलाज की छवि धूमिल कर दी। इन बलवानो की ही तूती अब बोलने लगी है। इन बलवानों के सामने लोकलाज अब असहाय सिद्ध होने लगी है। इन बलवानो ने लोकलाज को गूगी, बहरी एव अधी जैसी बना दिया है। लोकलाज की सारी तेजस्विता अस्ताचलगामी सूर्य जैसी होती जा रही हे। लोकलाज देखकर भी उसे अनदेखा करने पर विवश है तथा सुनकर भी अनसुना करने के लिए अभिशप्त है। बोलने को बहुत कुछ है, मगर बोल नहीं पा रही है। लोकलाज का जैसे किसी ने गला दबा रखा है। लोकलाज की ऐसी दुर्दशा कभी नहीं हुई थी।

यह भी सही है कि लोकलाज को दबाने का प्रयास हर युग एव हर दौर मे होता रहा है। बलशालियों, दुर्जनों एव गलत काम करनेवालों को लोकलाज हमेशा आख की किरकिरी की तरह खटकती रही है। ये सदा इसकी आखो पर पट्टी बाधने, कानो मे पिघला शीशा उतारने एव इसका गला उतारने की कुचेष्टा करते रहे हैं, किन्तु ये अपने इन प्रयासो मे आज के युग की तरह सफल नहीं हुए हैं। लोकलाज ने हर आवरण एव अवरोध को चीरकर बादलो से बाहर आने वाले सूर्य की तरह अपना तेजस्वी स्वरूप जगजाहिर करते हुए अधकार को ललकारा है। अनाचार की बाढ-सी आ रही है, फिर भी लोकलाज न सिर्फ टुकुर-टुकुर देख रही है, बल्कि सह भी रही है। गलत काम करने वालों को लोकलाज की अब परवाह ही नहीं रही। लोक से अब कमजोरों को ही लाज आती है। ये ही लोकलाज से डरते हैं। जग क्या कहेगा, इसकी परवाह अब शक्तिहीन ही करते हैं। शक्तिवान् तो लोकलाज को मुह चिढाते हुए नाच रहे हैं। देश मे बडी अनोखी एव विषम स्थिति होती जा रही है। लोकलाज का अकुश ही मदाध हाथी तक को वश मे करता रहा था। अपनी हजार आखो से लोकलाज समाज की सब गतिविधियो पर नजर रखती रही है। लोकलाज हमारे समाज की सम्मिलित बहुआयामी शक्ति थी तथा हर बुरे काम का रास्ता रोकती थी। लोकलाज की चलनी में से हर किसी को निकलना पडता था। लोकलाज का बडा व्यापक एव सुव्यवस्थित तन्त्र था। यह उपयोगी तन्त्र हमारी परम्परा ने विकसित किया था। खेद है कि अवमूल्यन की इस आंधी में इस अत्यन्त उपयोगी तन्त्र की चूले भी हिल गई। लोकलाज के तेजहीन होने से सज्जनों का जीना दूभर हो गया तथा दुर्जनो की बन आई। दुर्जन बिना किसी भय के खुलकर खेलने लगे हैं।

यह सही है कि दुर्जनो के सामने सज्जन सदा विषम स्थिति मे रहे हैं, किन्तु यह भी सही है कि देवत्व जैसी उनकी सम्मिलित शक्ति असुरों का पराभाव करती रही है। सज्जनों की इस सम्मिलित शक्ति का ही दूसरा नाम लोकलाज है। सज्जनो को चाहिए कि वे अपनी-अपनी शक्ति लोकलाज को दे तथा इसे फिर से तेजस्वी बनाए। इसका तेज ही तमस को भगा सकता है।

सूचना

आर्यजगत् के उच्चकोटि के वैदिक विद्वान् पं० भरतलाल शास्त्री हांसी का फोन नं० ५३५१४ से बदलकर ५८५१४ हो गया है।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के उदीयमान नक्षत्र

सफल और असफल मनुष्य में क्या अन्तर है ? यह कि एक ने एक काम कम किया और दूसरे ने अधिक। नहीं, बात कुछ ओर ही है। सफल व्यक्ति ने अपना काम बुद्धिमत्ता से किया, अपनी सोयी हुई प्रतिभा को जगाकर किया, विर्च्छिन्न मेधा को एकाग्र करके किया। वास्तव में मनुष्य यदि एकाग्रता और परिश्रम के साथ अवसर से लाभ उठाने मे मेधा का प्रयोग करे तो उसे प्रत्येक स्तर पर उन्नति का सर्वोच्च स्थान प्राप्त होता है। कुछ ऐसा ही कर दिखाया है गुरुकुल कुरुक्षेत्र के कक्षा एकादश मे अध्ययनरत ब्रह्मचारियो ने।

हिन्दू-शिक्षा समिति, हरयाणा द्वारा आयोजित "मेधावी छात्र परीक्षा" २००१ मे पूरे हरयाणा प्रान्त से एकादश (वाणिज्य) कक्षा मे अध्ययनरत छात्रो ने भाग लिया, जिसमे पूरे प्रान्त से १० छात्र चयनित हुए हैं, जिनमे से **चार (४) ब्रह्मचारी अकेले गुरुकुल कुरुक्षेत्र शिक्षण संस्थान से हैं।** इन मेधावी छात्रो को गुरुकुल परिवार की ओर से कोटिश बधाई एवम् भविष्य मे सफलता की ओर उच्चतम स्तर को प्राप्त करने के लिए अपनी शुभकामनाए देता है। गुरुकुल कुरुक्षेत्र इन सबकी गौरवमयी सफलता पर हार्दिक गौरव एव प्रसन्नता का अनुभव कर रहा है।

—उपप्रधानाचार्य—गुरुकुल कुरुक्षेत्र (हरयाणा)

दयानन्दमठ रोहतक का बीसवां मासिक वैदिक सत्संग सम्पन्न

रोहतक। आर्यसमाज की कार्यस्थली दयानन्दमठ रोहतक का बीसवा मासिक वैदिक सत्सग समारोह ०६ मई, सन् २००१ रविवार को बडी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। वैदिक सत्सग के सयोजक एव व्यवस्थापक श्री सन्तराम आर्य ने बताया कि यह सत्सग सामाजिक कुप्रथाओं, धार्मिक अन्धविश्वासों, छुआछूत, अशिक्षा, अन्याय एव शोषण के बारे मे वैदिक धर्म की मान्यताओ का प्रचार-प्रसार करने हेतु प्रारम्भ किया गया है। कार्यक्रम की चर्चा करते हुए उन्होने बताया कि प्रात ९-०० बजे से १०-०० बजे तक ब्रह्मयज्ञ व देवयज्ञ होता है फिर यज्ञ प्रसाद तथा ईश्वर भक्ति के गीत व भजनों का कार्यक्रम होता है। ग्यारह बजे से बारह बजे तक एक विद्वान् का किसी एक विषय पर व्याख्यान होता है। इस बार मुख्य वक्ता के रूप मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा हरयाणा सभा के प्रधान त्याग व तप की साक्षात् मूर्ति सवामी ओमानन्द जी महाराज थे। प्रवचन का विषय था 'आर्यसमाज का इतिहास'। इसी के साथ दूसरा विषय था 'हरयाणा राजभाषा हिन्दी सम्मेलन।'

कार्यक्रम की विस्तृत व्याख्या करते हुए हमे सयोजक जी ने बताया कि यज्ञ की समाप्ति के साथ यज्ञ प्रसाद की व्यवस्था की गई। इस बार सत्सग मे ऋषि लगर की व्यवस्था आर्यसमाज साघी एव ग्राम साघी की ओर से की गई थी। भक्ति रस का कार्यक्रम मास्टर देवीसिह जी व जे ई सत्यनारायण के गीत से प्रारम्भ हुआ। इसके बाद सूबे० आनन्दसिह निडाना, छात्र विनय कुमार, आत्मशुद्धि आश्रम के ब्र० देवेन्द्र व अध्यात्म चर्चा स्वामी धर्ममुनि जी बहादुरगढ ने की। बहिन दयावर्ती आर्या ने अपने मधुर गीतो से सबको आनन्दित किया। ठीक ११ बजे स्वामी इन्द्रवेश जी ने स्वामी ओमानन्द जी महाराज के जीवन पर सक्षिप्त प्रकाश डाला। स्वामी ओमानन्द जी ने अपने पढाई दिल्ली के सैंट स्टीफन कॉलेज से शुरू हुई। लेकिन जीवन का काटा बदलकर कॉलेजो की पढाई के विकल्प के रूप मे गुरुकुल प्रणाली चालू की। आज अनेको गुरुकुल स्वामी जी की प्रेरणा से चल रहे हैं। स्वामी ओमानन्द जी महाराज ने नवाब हैदराबाद के विरुद्ध आर्यसमाज के आन्दोलन से अपना वक्तव्य प्रारम्भ करके आजादी के आर्यसमाज के योगदान तथा हिन्दी आन्दोलन व अन्य अनेकों सघर्षों का जिक्र किया जिनमे आर्यसमाज ने मुख्य भूमिका निभाई थी। उन्होने बताया कि महात्मा नारायण जी स्वामी के सत्याग्रह मे १२००० लोग गये। नवाब हैदराबाद सबसे ज्यादा पैसे वाला था। दो भाइयो बसीलाल व श्यामलाल जी का विशेष उल्लेख किया। इसके बाद राजभाषा हिन्दी सम्मेलन स्वामी इन्द्रवेश जी की अध्यक्षता मे हुआ। सभी ने ऋषि लगर मे भोजन किया। समारोह के सयोजक श्री सन्तराम आर्य ने सभी को अगले सत्सग समारोह के लिये , जून २००१ के लिये आमन्त्रित किया तथा शान्ति पाठ के बाद सत्सग सम्पन्न हुआ।

—रविन्द्रकुमार आर्य

(पहले पृष्ठ का शेष)

हरयाणा की खुशहाली, हरयाणा की भाषा......

५ मार्च १९६९ को सरकार के गजट मे प्रकाशित तथा २६ जनवरी १९६९ से लागू **हरयाणा राजभाषा अधिनियम १९६९** की धारा ३ के अनुसार अदालतो समेत प्रदेश का समस्त सरकारी काम केवल राजभाषा (सरकारी भाषा) हिन्दी मे किया जाना अनिवार्य है।

ख) तहसील, जिला तथा सत्र अदालतों मे जो कम या अधिक काम अब भी अंग्रेजी मे होता है, वह एक पकार से गैरकानूनी है। इसे तुरन्त रोका जाना चाहिए।

ग) पारदर्शी, जनकल्याणकारी तथा पक्षपातरहित न्याय का तकाजा है कि हरयाणा उच्च न्यायालय मे भी हिन्दी मे काम कराया जाए। इसके लिए राज्यपाल महोदय से निवेदन किया जाए कि वे सविधान के अनुच्छेद ३४८ (२) के सन्दर्भ में हिन्दी में काम की अनुमति के लिए महामहिम राष्ट्रपति जी के आदेश तुरन्त प्राप्त करे।

घ) अन्य हिन्दी प्रदेशो उत्तरप्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश तथा बिहार के उच्च न्यायालयो मे काम हिन्दी मे पहले से होरहा है। फिर हरयाणा ही अपवाद क्यो ? इसके लिए सम्भवत उच्च न्यायालय, जो कि इस समय पजाब, हरयाणा तथा चण्डीगढ का सयुक्त उच्च न्यायालय है, के स्थान पर हरयाणा का पृथक् उच्च न्यायालय स्थापित करना होगा।

ङ) उत्तराचल, छत्तीसगढ तथा झारखण्ड राज्यो मे उनकी स्थापना के साथ ही पृथक् उच्च न्यायालय बना दिए गए हैं।

३. राजकाज की भाषा :–

हरयाणा राजभाषा अधिनियम १९६९ द्वारा हिन्दी को हरयाणा की एकमात्र राजभाषा घोषित किया गया है। यह अधिनियम राज्य मे २६ जनवरी, १९६९ से लागू है।

विचारणीय तथ्य–

क) राजभाषा अधिनियम को लागू हुए ३२ वर्ष बीत चुके हैं। फिर भी राज्य के सरकारी कार्यालयो मे केवल ४०-५० प्रतिशत काम ही हिन्दी मे होरहा है।

ख) हरयाणा शहरी विकास प्राधिकरण (हुडा), हरयाणा पर्यटन विकास निगम, हरयाणा उद्योग विभाग, उच्च शिक्षा विभाग तथा कई अन्य विभाग तो ऐसे हैं जिनमे अवैधनिक रूप से ९० प्रतिशत काम अंग्रेजी मे होरहा है।

ग) प्रदेश के चारो विश्वविद्यालय-कुरुक्षेत्र, महर्षि दयानन्द, गुरु जम्भेश्वर तथा चौ० चरणसिह कृषि विश्वविद्यालय तथा हरयाणा शिक्षा बोर्ड भिवानी के प्रशासनिक काम में तो अंग्रेजी का ही वर्चस्व है। विश्वविद्यालय के अनुकरण मे कालेजो मे भी अंग्रेजी का दबदबा है।

घ) अनेक कार्यालयो, विभागो और सरकारी निगमों के विज्ञापन हिन्दी समाचार पत्रो मे भी अंग्रेजी मे छपते हैं। यह जनता के धन का सरासर दुरुपयोग है। हिन्दी के पाठको तक इन विज्ञापनो का सन्देश नहीं पहुचता। ऐसे विज्ञापनों पर खर्च की गई राशि सम्बन्धित अधिकारी से वसूली जानी चाहिए। राज्य के लेखापरीक्षक को भी इस पर दण्डात्मक कार्यवाही करनी चाहिए।

ङ) मुख्यमत्री श्री चौटाला हिन्दी को बढावा देने का दावा करते हैं। बार-बार सरकारी आदेश भी जारी करते हैं, परन्तु इन आदेशों की अनेक अफसर खुली अवहेलना कर रहे हैं।

च) लगता है कि या तो मुख्यमत्री जी के आदेश मात्र दिखावा हैं और वे नहीं चाहते कि प्रदेश से अंग्रेजी का वर्चस्व समाप्त हो या फिर मुख्यमत्री महोदय की, अपने मातहत उच्च अफसरो पर पकड समाप्त होगई है तथा शासन मुख्यमत्री नहीं, अफसर चला रहे हैं।

छ) इन परिस्थितियो मे प्रदेश के देशभक्त, वीर और सरल स्वभाव, किसान, मजदूर, दुकानदार, छोटे कर्मचारी, युवा छात्र तथा महिलाए अंग्रेजी मे राजकाज के चर ते हैरान परेशान हैं तथा रात-दिन सरकार को कोस रहे हैं।

ज) अंग्रेजी में शासन का काम चलाए जाने से पारदर्शिता प्रभावित होरही है तथा भ्रष्टाचार चरम सीमा पर है। अंग्रेजी मे प्राप्त होनेवाले सरकारी पत्रों का झूठ-मूठ गलत अर्थ बताकर बिचौलियों द्वारा साधारण नागरिको को लूटा जारहा है।

झ) हरयाणा राजभाषा अधिनियम १९६९ मे अंग्रेजी मे सरकारी काम करने का विशेष प्रावधान नहीं है। अत अंग्रेजी का प्रयोग प्राय अवैधानिक है। इसे न्यायालय मे भी चुनौती दी जा सकती है।

४. केन्द्र सरकार के कार्यालय :–

हरयाणा के विभिन्न नगरो में केन्द्र सरकार के सैंकडो कार्यालय स्थित हैं। उदाहरण के लिए सभी राष्ट्रीयकृत बैंकों की शाखाए, आयकर, उत्पादन कर के कार्यालय, रेल विभाग तथा समस्त रेलवे स्टेशन, डाक विभाग तथा समस्त छोटे-बडे डाकघर, रक्षा विभाग के कार्यालय तथा समस्त छावनिया, भारतीय खाद्य निगम के समस्त खाद्य भण्डार, समस्त केन्द्रीय विद्यालय, नवोदय विद्यालय तथा सैनिक स्कूल, करनाल का डेयरी अनुसधान सस्थान, पानीपत का नेशनल थर्मल पावर कार्पोरेशन तथा बीसियो विभागों के बडी सख्या मे अन्य कार्यालय, इस श्रेणी में आते हैं। इन सब केन्द्रीय कार्यालयो पर केन्द्र सरकार के अन्य नियमो के समान राजभाषा नियम १९७६ भी लागू है। राजभाषा नियमों के नियम स० ३ के अनुसार इन सब कार्यालयो को अपना अधिकाश काम विशेषत: जनता से सम्बन्धित काम अनिवार्य रूप से हिन्दी में करना चाहिए। परन्तु उच्च अधिकारियों की अंग्रेजी की गुलाम मानसिकता, कर्मचारियो की उपेक्षा तथा जनता की सहनशीलता के कारण इन सब कार्यालयों में अंग्रेजी का ही वर्चस्व है। इसमें आमूलचूल परिवर्तन के लिए अधिकारियों पर दबाव बनाया जाना आवश्यक है।

हमारा कर्त्तव्य :–

हरयाणा राज्य की समृद्धि और खुशहाली के लिए शिक्षा सस्थानों, न्यायपालिका तथा सरकारी कार्यालयों से अंग्रेजी के वर्चस्व को उखाड फैंकने की आवश्यकता है। इसके लिए निष्ठावान् बुद्धिजीवियो, देशभक्त नागरिको, किसानो मजदूरों, नवयुवकों, शिक्षकों, सेवानिवृत्त सैनिकों, वकीलों, पत्रकारों, महिलाओं तथा धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक सगठनो को एकजुट होकर सरकार को समझाना-बुझाना होगा, भरपूर दबाव बनाना होगा तथा जनजागरण और आन्दोलन तक करना होगा। आवश्यकता पडने पर सरकार के विरुद्ध कानूनी लडाई लडनी पडे तो उसके लिए भी तैयार रहना होगा। साधारण जनता को अपनी भाषायी अस्मिता के लिए जागरूक होने की आवश्यकता है। क्योंकि अपनी भाषा के सम्मान में ही अपना सम्मान निहित है।

हरयाणा का निर्माण १९५७ के हिन्दी रक्षा आन्दोलन में दर्जनों वीरों के बलिदानों पर हुआ था। अब इस प्रदेश को अज्ञान, अन्याय और अभाव से मुक्त करके ऐश्वर्यशाली और समृद्ध प्रदेश बनाने के लिए भी जन की मातृभाषा, भारत की राष्ट्रभाषा तथा प्रदेश की राजभाषा हिन्दी की छत्रछाया मे आना पडेगा। आओ सब मिलकर इस जनकल्याणकारी यज्ञ में अपने भाग की आहुति समर्पित करने की तैयारी करे। यज्ञाग्नि प्रदीप्त हो तथा विदेशी भाषा का कलुष प्रदेश की वीर प्रसूता धरती से शीघ्र ही धो दिया जाए। **कविहृदय अटल बिहारी वाजपेयी के शब्दो में :–**

बनने चली विश्वभाषा, जो अपने घर में दासी, सिंहासन पर अंग्रेजी का, रखकर दुनियां हांसी।
रखकर दुनियां हांसी, हिन्दी बोले हैं चपरासी, अफसर सारे अंग्रेजीमय, अवधी हों, मद्रासी।
कह कैदी कविराय, विश्व की चिन्ता छोडो, पहले घर में अंग्रेजी के, गढ को तोडो।

आर्यसमाज के उत्सव की सूची

आर्यसमाज भुरथला जिला रेवाडी — १९ से २० मई
–**डॉ० सुदर्शनदेव आचार्य**, वेदप्रचाराधिष्ठाता

प्रवेश सूचना

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर, झज्जर

(महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सम्बद्ध)

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर में पांचवीं कक्षा उत्तीर्ण विद्यार्थियों के प्रवेश पाने के लिए प्रवेश परीक्षा ३० मई, २००१ को होगी। इस परीक्षा में छठी, सातवीं और आठवीं के विद्यार्थी भाग ले सकते हैं। इस प्रवेश परीक्षा मे उत्तीर्ण होने के बाद छठी, सातवीं एवं आठवीं कक्षा में प्रवेश दिया जायेगा।

प्रधानाचार्य
महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर
जिला झज्जर (हरयाणा)

निःशुल्क ध्यानयोग-वैदिक दम्पती निर्माण संस्कार प्रशिक्षण शिविर

(रविवार, दिनांक २४ जून से १ जुलाई, रविवार, २००१ तक)

शिविर की विशेषताएं

१ शिविरमध्य अष्टाग-योग का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया जायेगा, जिससे आप शारीरिक सुख-स्वास्थ्य, मानसिक शान्ति और आत्मिक आनन्द प्राप्त कर सकेंगे।

२ आज के युग में कलुषित वातावरण के कारण युवा पीढी पथभ्रष्ट होती जारही है, उन्हे सन्मार्ग पर लाने के लिए भारतीय-सस्कृति-सभ्यता, आहार-व्यवहार का विशेष ज्ञान कराया जायेगा, जिसे प्राप्त कर युवक-दम्पती गौरव का अनुभव करेगे।

३ पच महायज्ञो और सस्कारो का क्रियात्मक प्राप्त कर माता-पिताओं, पुत्र-पुत्रियो और पुत्र-वधुओ को कर्त्तव्य पालन का बोध होगा और वास्तविक जीवन पद्धति का ज्ञान प्राप्तकर मनुष्य जन्म सफल बना सकेंगे।

४ गृहस्थ आश्रम प्रवेश से वानप्रस्थाश्रम तक की सभी समस्याओ और शकाओ का समाधान पाकर आप सन्तानो का निर्माण करने के साथ आश्रम मर्यादाओ का पालन करते हुए भावी जीवन का निर्माण-गृहस्थाश्रम मे रहते हुए वानप्रस्थाश्रम प्रवेश विधि का विशेष का ज्ञान प्राप्त करेगे। जिससे आप को शान्त और सुखी रहने की कला हाथ लगेगी।

योग-साधना निर्देशक .-पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी महाराज 'दुग्धाहारी' मुख्याधिष्ठाता, आत्मशुद्धि आश्रम।

शिविराध्यक्ष .-श्री प० फूलसिह जी आचार्य बौद्धिकाध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य वीरदल (उ०प्रदेश)

यज्ञ-ब्रह्मा :-श्री आचार्य भद्रसेन जी शास्त्री, रोहतक

इस शुभावसर पर अनेकों उच्चकोटि के वक्ताओं, संन्यासी-महात्माओ को आमन्त्रित किया गया है। मनोहर भजनो-सगीत का कार्यक्रम प्रभावशाली रहेगा।

महान् आत्माओ! यह एक स्वर्ण सन्धि, जो जीवन मे नव उमग, मगलमय प्रेरणा नव-स्फूर्ति एव नई दिशा की ओर अग्रसर होने का सुअवसर प्राप्त है। अत माता-पिताओ, वृद्ध-वृद्धाओ, विशेष रूप से युवक युगल दम्पती अधिक से अधिक सख्या मे पधारे। जोडे मे आने मे असमर्थ हैं तो अकेले अवश्य आये।

आवश्यक निवेदन .-योगदर्शन, सत्यार्थप्रकाश, सस्कारविधि, लेखनार्थ कापी, पैन, ऋतु अनुसार बिस्तर साथ लेकर आये। भोजन तथा निवास का प्रबन्ध आश्रम की ओर से नि शुल्क होगा। इच्छुक दम्पती परिवार १५ जून तक अपना नाम प्रेषित कर देवे।

शिविर का उद्घाटन २४ जून रविवार साय ४ बजे, समापन १ जुलाई, रविवार, प्रात १० बजे।

—**यशपाल गांधी**, मत्री, आत्मशुद्धि आश्रम (प० न्यास) बहादुरगढ (हरयाणा)

गृहप्रवेश यज्ञ

दि० २९ अप्रैल २००१ को प्राध्यापक श्री रमेशचन्द्र आर्य ग्राम बालधन के गृहप्रवेश शुभ अवसर पर यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ मे श्री जीवानन्द जी नैष्ठिक ब्रह्मा की उपस्थिति मे पुरोहित कार्य श्री प० परमानन्द वसु (आनन्द मुनि) द्वारा करवाया गया। यज्ञमान के स्थान पर प्रा० आर्य जी व धर्मपत्नी श्रीमती शारदा सहित विराजमान हुए।

शान्तिपाठ के पश्चात् ब्रह्मा-पुरोहित व साधुजनो को यथायोग्य दक्षिणा देकर सम्मानित किया, वहीं आर्यसमाज बालधन कला, आश्रम दडौली, आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा को ५१-५१ रुपये दानस्वरूप भेट किए।

—प० वसु **(आनन्द मुनि)**, बालधन कला, रेवाडी

बृहद् यज्ञ एवं वैदिक सत्संग सम्पन्न

दिनांक २९-४-२००१ को योगस्थली आश्रम महेन्द्रगढ में बृहद्‌यज्ञ एव वैदिक सत्सग स्वामी आनन्दस्वरूप, सन्त कबीरमठ सोहला, की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ।

यज्ञ का कार्य आचार्य रामनारायण जी सस्कृत प्रवक्ता राजकीय महाविद्यालय चूरू तथा प० इन्द्रमुनि जी आर्यपुरोहित धर्मप्रचारमन्त्री दक्षिणी हरयाणा ने करवाया।

यजमान का स्थान श्री आर०एस वर्मा उपमण्डल अधिकारी (नागरिक) महेन्द्रगढ तथा मास्टर रामकवार आर्य ने ग्रहण किया, यजमानो के अतिरिक्त ८ पुरुषो तथा ५ महिलाओ को यज्ञोपवीत धारण करवाये।

स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती ने अपने प्रवचनो मे बताया कि सैंकडो वर्षो से आज के वैज्ञानिक मनुष्य की परिभाषा (What is a man) नहीं समझ पारहे हैं, कि मनुष्य क्या है ? कुछ वैज्ञानिक इस बात पर डटे हुए हैं, कि Man is a heredity मनुष्य एक वश परम्परा है। दूसरा ग्रुप इस बात पर डटा हुआ है, कि Man is a environment (पर्यावरण) अथवा संस्कारो से ही निर्मित है।

अन्त में दोनों समुदायो ने समझौता किया, कि मनुष्य के निर्माण मे वश परम्परा एव पर्यावरण दोनों का ही महत्त्व है। सभी आगन्तुको का धन्यवाद किया और प्रसाद वितरण किया, स्वामी ब्रह्मानन्द ने ६० रोगियो को उचित निदान करके नि शुल्क दवाइया वितरित कीं।

—**मास्टर हनुमान प्रसाद**

दिनाक ३०-४-२००१ को दीवान कालोनी महेन्द्रगढ मे सेठ श्री रामकुमार आर्य के निवास स्थान पर उनके सुपुत्र नवविवाहित वधू का स्वागत हेतु यज्ञ का कार्य प० इन्द्रमुनि आर्य पुरोहित व स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती, प्रधान यति मण्डल दक्षिणी हरयाणा की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुवा। यजमानो का स्थान श्री नरेन्द्रकुमार ने अपनी धर्मपत्नी कोमलदेवी के साथ ग्रहण किया।

अन्त मे स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती ने नवविवाहित वधू को गृहस्थजीवन को किस प्रकार से सफल बनाया जा सकता है, इस पर शतपथ ब्राह्मण के सूत्र **"माता निर्माता भवति"** को आधार बनाकर वर-वधू को सस्कारविधि के आधार पर महत्त्वपूर्ण शिक्षा दी।

५० रुपये आर्यप्रतिनिधिसभा को दानस्वरूप भेट किये।

—**सेठ मनोहरलाल आर्य**

सूचना

निर्धन, अनाथ एव योग्य छात्रो को सूचना दी जाती है कि वे छात्रवृत्ति हेतु प्रधान अखिल भारतीय दयानन्द साल्वेशन मिशन, होशियारपुर (पजाब) को अपने-अपने प्रार्थना-पत्र सादे कागज पर लिखकर दिनाक ३१-५-२००१ तक भेज दे।

—**हरदयालसिह** (मत्री), अखिल भारतीय दयानन्द साल्वेशन मिशन, होशियारपुर (पजाब)

प्रवेश सूचना

महर्षि दयानन्द अन्तराष्ट्रीय उपदेशक विद्यालय टंकारा

जिला राजकोट, टकारा-३६३६५० (गुजरात)

प्रथम पाठ्यक्रम—महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक (हरयाणा) से मान्यता प्राप्त। मध्यमा, शास्त्री, आचार्य तक अध्ययन सुलभ है। वेद दर्शन, उपनिषद्, सस्कृत व्याकरण एव साहित्य तथा सभी सस्कार स्वामी दयानन्द जी द्वारा लिखित सभी ग्रन्थ, उपदेश, भजनोपदेश का प्रशिक्षण पाना अनिवार्य है।

योग्यता—सातवीं कक्षा पास प्रवेश के लिए आवेदन करे।

द्वितीय पाठ्यक्रम—पुरोहित, उपदेशक एव भजनोपदेशक का प्रशिक्षण पानेवाले छात्र आवेदन कर सकते हैं।

योग्यता—न्यूनतम दसवीं कक्षा पास।

नोट—दोनो प्रकार के पाठ्यक्रमो के प्रशिक्षण के लिए नि शुल्क व्यवस्था है। आवेदन पत्र जमा करने की अन्तिम तिथि ३१ मई २००१ है।

—**आचार्य विद्यादेव**

शोक समाचार

हमे यह दु खद सूचना देते हुए अत्यधिक मानसिक खेद होरहा है कि हरयाणा मे झज्जर मण्डल के आर्यसमाज जसौरखेडी के सूबेदार चरणसिह आर्य का मेडिकल कालेज रोहतक मे २६ अप्रैल को निधन होगया क्योकि आप गत ६-७ मास से उच्च रक्तचाप से भयकर रोग से ग्रस्त चले आरहे थे।

परमात्मा दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे तथा उनके परिवार को इस दु ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—**आर्य परमार्थी**, सरक्षक आर्यसमाज जसौरखेडी, जिला झज्जर

आर्यसमाज खातोली जाट जिला महेन्द्रगढ़ का चुनाव सम्पन्न

सरक्षक-महाशय रामसिह आर्य, प्रधान-प्रभुदयाल ठेकेदार, उपप्रधान-दुर्गाप्रसाद पूर्व सरपच, मत्री, डा० तुलाराम आर्य, उपमत्री-दलीपसिह पूर्व सरपच, कोषाध्यक्ष-मास्टर रामप्रतापसिह आर्य, पुस्तकाध्यक्ष-ठडुराम जी मास्टर, प्रचारमत्री-सत्यप्रकाश सरपच सहायक प्रचारमत्री-दयाराम आर्य।

—**तुलाराम आर्य**, खातोली जाट

आर्य विद्या सभा की २६ अप्रैल को आयोजित बैठक में पारित शोक प्रस्ताव

मन्त्री आर्य विद्या सभा गुरुकुल कागडी, हरद्वार ने सभा के प्रधान स्व० श्री सूर्यदेव तथा भारत के पूर्व उपप्रधानमत्री स्व० चौ० देवीलाल के आकस्मिक निधन पर दिवगत नेताओ द्वारा अपने-अपने क्षेत्र मे किए गए अभूतपूर्व योगदान का उल्लेख करते हुए शोक प्रस्ताव प्रस्तुत किया जिसे सभी उपस्थित सदस्यो ने सर्वसम्मति से पारित किया और दो मिनट का मौन धारण करके दिवगत आत्माओ का श्रद्धाजलि अर्पित की गई।

यह प्रस्ताव भी पारित किया गया कि पारित प्रस्ताव की एक-एक प्रति डा० रविकान्त पुत्र श्री सूर्यदेव और चौ० ओमप्रकाश चौटाला मुख्यमत्री सरकार को भेजी जावे।

—डा० प्रकाशवीर विद्यालकार

चरखीदादरी आर्यसमाज का चुनाव

प्रधान-डॉ० रामनारायण चावला, उपप्रधान-श्री बलवीरसिह आर्य, श्री देवदत्त आर्य, मन्त्री-श्री हरिश्चन्द्र लाम्बा, का० मन्त्री-डॉ० चन्द्रप्रकाश चावला, पुस्तकाध्यक्ष-श्री राजेन्द्रकुमार वर्मा, सहायक-श्री सुरेन्द्रकुमार आर्य, कोषाध्यक्ष-श्री श्यामसुन्दर चावा, प्रचारमत्री-डॉ० धर्मबीर सागवान, सहायक-श्री नारायणदास कथूरिया, श्री सूबेसिह यादव, आडिटर-श्री विनोदकुमार ऐरन, पुरोहित-श्री नेभराज खन्ना।

राज्यपाल द्वारा जीवन का विमोचन

महामहिम राज्यपाल हरयाणा श्री बाबू परमानन्द जी २७ मई, २००१ को दिन के ग्यारह बजे श्री गान्धी हरिजन सेवा आश्रम गनीपुरा रोहतक के प्रागण में आश्रम के सस्थापक महान् स्वतन्त्रता सेनानी, समाजसुधारक महात्मा चन्दगीराम जी की जीवनी विमोचन करेगे। —रणबीरसिह आर्य, प्रधान

श्री गान्धी हरिजन सेवा आश्रम सोसायटी (रजि०), गनीपुरा, रोहतक

आवश्यक सूचना

प्रतिनिधि फार्म भेजने का तीसरा एवं अन्तिम अवसर

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का त्रिवार्षिक साधारण अधिवेशन (चुनाव) ९ अगस्त, २००१ से पूर्व होना है। आर्यसमाज के अधिकारियो की माग पर सभा प्रधान जी ने प्रतिनिधि फार्म भरकर भेजने का प्रथम अवसर ३० अप्रैल तक, दूसरा अवसर १५ मई, २००१ तक दिया गया था। अब तीसरा एव अन्तिम अवसर ३१ मई, २००१ तक कर दिया गया है।

१ नए प्रतिनिधियो की स्वीकृति के लिए सभा से सम्बन्धित प्रत्येक आर्यसमाज को पिछले तीन वर्षो का वेदप्रचार तथा दशांश की राशि के साथ-साथ सर्वहितकारी का शुल्क ६० रुपये वार्षिक भेजना अनिवार्य है। वर्ष ९८-९९, ९९-२०००, २०००-२००१ का शुल्क जमा न होने पर प्रतिनिधि स्वीकृत नहीं होगे।

२ प्रतिनिधि फार्म भरते समय प्रतिनिधि फार्म के सभी कॉलम पूरे भरे जैसे प्रतिनिधि फार्म के प्रथम पेज पर निवेदन-पत्र, प्रतिनिधि चुनने की साधारण सभा की तारीख, प्रधान, मत्री व कोषाध्यक्ष के हस्ताक्षर करवाने अनिवार्य हैं।

३ चुने गए प्रतिनिधि का प्रतिज्ञा पत्र व निश्चय-पत्र हस्ताक्षर करवाकर प्रधान व मत्री से प्रमाणित करवाकर भेजे।

४ प्रतिनिधि फार्म के पेज न० २ पर नाम आर्य सभासद्, पिता का नाम, व्यवसाय, आयु, शुल्क की दर (मासिक/वार्षिक), शुल्क जो वर्ष भर मे समाज को इस सभासद् से प्राप्त हुआ।

५ प्रतिनिधि फार्म पर जहा भी, मत्री, प्रधान, कोषाध्यक्ष के हस्ताक्षर का कॉलम है उनके हस्ताक्षर अवश्य करवाकर भेजे।

अत जिन आर्यसमाजो ने वर्ष ९८-९९, ९९-२०००, २०००-२००१ अर्थात् मार्च २००१ तक का तीन वर्षो का वेदप्रचार, दशाश तथा सर्वहितकारी शुल्क नहीं भेजा है उसे शीघ्र सभा प्रचारको अथवा मनीआर्डर द्वारा सभा को भेजने का कष्ट करे। आपसे अनुरोध है कि आप इस सम्बन्ध मे यथाशीघ्र कार्यवाही कर अपना तथा अपने आर्यसमाज का पूर्ण सहयोग प्रदान करे। प्रतिनिधि फार्म जाच करने एव त्रुटिया दूर करने मे बहुत अधिक समय लगता है। अत इसके बाद आगे तिथि नहीं बढाई जायेगी। समय पर सभा का त्रिवार्षिक चुनाव कराने के लिए आप सभी का सहयोग अपेक्षित है।

—प्रो० सत्यवीर शास्त्री, डालावास
सभामंत्री

—अपील—

क्या मेरी बीमारी से शुद्धि कार्य रुक जायेगा ?

गत मार्च-अप्रैल मे मैं मलेरिया बुखार मे ही बाहर यात्रा करता रहा। उन दिनों गर्मी भयकर थी। फलस्वरूप रोग काबू से बाहर होगया और कोमा (अचेतावस्था) में चला गया। लगभग एक माह तक बेहोश रहा फिर कुछ चेतना आई फिर डाक्टरों के परामर्श से मुझे गुरुकुल ले आये। परन्तु इस रोग ने शरीर को शक्तिहीन और जर्जर कर दिया। अब दो महीने से डडे के सहारे चलने का सामर्थ्य आया है। परन्तु पाव का शय्यावरण (बेडशोल) अभी तक नहीं भरा है। लगातार एक महीने तक अचेतन पडे रहने से आखो में सफेदी आगई, दोनो आखो मे अल्सर होगया। उसकी चिकित्सा अभी चल रही है इस प्रकार अभी तक शरीर यात्रा करने योग्य नहीं हुआ है। जबकि प्रचार एव शुद्धि का कार्य निरन्तर अवाध गति से चल रहा है। हमारे योग्य स्नातक परामर्श लेकर कार्य कर रहे हैं। चार आर्यवीर दल के शिविर और प्रचारक प्रशिक्षण शिविर जून से अब तक लग चुके हैं। साथ में पुनर्मिलन (शुद्धि) एव प्रचार का कार्य भी चल रहा है। गत दिसम्बर मे सुन्दरगढ जिले मे, जनवरी मे ग्राम तोलमा रायगढ मे और फरवरी में कोरापुट उडीसा मे पुनर्मिलन के कार्यक्रम हो चुके हैं। इन कार्यक्रमों में लाखों रुपया खर्च होगया है और अब आगामी मई में तीन हजार ईसाइयों की शुद्धि का बडा कार्यक्रम प्रथम सप्ताह मे होना है उसकी तैयारी चल रही है। उसमें भी लगभग एक लाख रुपया खर्च होगा। मैं यात्रा कर नहीं सकता। मेरे सहयोगियों का बाहर परिचय नहीं है फिर भी हमारी चार-पाच सस्थाओं को सभाल रहे हैं। अत ऐसा लगता है यदि आर्थिक व्यवस्था न हो तो हमें शुद्धि और प्रचार के कार्य बद करने पडेगे।

अत देशप्रेमी और देश के एकता के इच्छुक सज्जनों से मेरा विनम्र निवेदन है कि इस पुनर्मिलन के चक्र को रुकने न दें। कई वर्षों के लगातार परिश्रम के बाद यह वातावरण बना है इस निवेदन को ही मेरी उपस्थिति मानकर यथाशक्ति नई साडी, धोती और आर्थिक सहयोग करने की कृपा करे। हम आपके आभारी होंगे।

स्वामी श्रद्धानन्द एव लेखराम ने अपने जीवन की आहुति देकर इस शुद्धि आन्दोलन को क्रियात्मक रूप दिया था उन्हीं के तप, त्याग और परिश्रम से उत्तर प्रदेश, दिल्ली, पजाब का बडा हिस्सा बच गया। अन्यथा यह सब भाग पाकिस्तान में होता। आज भी नागालैंड, मिजोरम, त्रिपुरा, मेघालय में एक प्रकार से विदेशी मिशनरी का शासन है। अब वे अरुणाचल, झारखण्ड, छत्तीसगढ और उडीसा के लोगों की ईसा की भेडों में शामिल करने मे जी-जान से लगे हुए हैं। **स्वर्गीय स्वामी आनदबोध जी (पूर्व प्रधान सार्व० आर्यप्रतिनिधिसभा) इस परिस्थिति को समझते थे। इसलिये उन्होने मुझे पूरा आशीर्वाद और सहयोग दिया। भयंकर रोग ने मुझे भी तोड दिया है।** फिर भी हम इस काम को आगे बढाना चाहते हैं। यह आर्यजनता के आशीर्वाद एव स्नेह, सहयोग से हो सकेगा। आशा है आर्यजन मेरी इस विनम्र प्रार्थना पर ध्यान देगे।

विशेष—चेक या ड्राफ्ट गुरुकुल आश्रम आमसेना के नाम स्टेट बैंक या सैन्ट्रल बैंक, खरियार रोड के नाम भेजें। गुरुकुल को दिये गये दान पर आयकर छूट प्रमाण पत्र प्राप्त है।

—**स्वामी धर्मानन्द सरस्वती**, आचार्य
गुरुकुल आश्रम आमसेना, जिला नवापारा-७६६१०९ (उडीसा)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ७६८७४, ५७७७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ७७७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०२
पंजीकरणसंख्या टैक/एन.आर./49/रोहतक/99 ☎ ०१२६२-७७७२२

रोहतक

प्रधानसम्पादक : प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक :- डा० सुदर्शनदेव आचार्य

वर्ष २८ अंक २५ २१ मई, २००१ वार्षिक शुल्क ६०) आजीवन शुल्क ६००) विदेश में १० पौंड एक प्रति १-२५

सेवा और समर्पण के जीवंत स्रोत स्वामी धर्मानन्द

स्वामी धर्मानन्द जी का जन्म १६ जून १९४३ को रोहतक (हरयाणा) जिले के हुमायूपुर नामक गांव में चौ० जुगलाल सिह के यहां हुआ। आपके पू पिताजी पजाब सरकार में सेवारत थे। आपकी माता दाखो देवी भी एक आदर्श ईश्वरभक्त महिला थी व एक आर्यपरिवार से आई थी। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा गाव के ही स्कूल मे हुई थी। एक दिन गाव के स्कूल मे गुरुकुल झज्जर के तपोनिष्ठ आचार्य स्वामी ओमानन्द जी का आगमन हुआ और उनके भाषण का कार्यक्रम स्कूल में हुआ, जिसे सुनकर आपके मन में भी गुरुकुल जाने की इच्छा हुई। परन्तु घरवालों ने भेजने से मना कर दिया लेकिन पूर्व जन्म के सुसस्कारों के कारण गुरुकुल में पढने की इच्छा दिन पर दिन बढने लगी। फलस्वरूप आपने घरवालों से कह दिया पढ़ूगा तो केवल गुरुकुल में अन्यथा नहीं और इस प्रकार सातवीं उत्तीर्ण कर स्कूल छोड दिया।

आपकी दृढ प्रतिज्ञा के सामने घरवालों को झुकना पडा और आप ६ सितम्बर १९५६ को गुरुकुल झज्जर में प्रविष्ट हो गए तीव्र बुद्धि होने के कारण चार वर्ष की अल्पावधि में ही मध्यमा शास्त्री, आचार्य पर्यन्त सभी परीक्षाए प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की व गुरुकुल झज्जर जैसी बृहत् सस्था मे सहायक मुख्याधिष्ठाता जैसे प्रतिष्ठित पदो पर रहते हुए सुयोग्यतापूर्वक सचालन किया व अपना प्रभाव सभी पर छोडा। उस समय गुरुकुल झज्जर में चारों ओर सात्विक वातावरण था। सभी में दयानन्द मिशन के प्रति अपना जीवन न्यौछावर करने की होड सी लगी हुई थी। हर कोई दयानन्द श्रद्धानन्द बनना चाहता था। जब आपने आचार्य उत्तीर्ण की तो घरवालों ने घर ले जाने का प्रयास किया, लेकिन आप अपना जीवन ऋषि मिशन को समर्पित कर चुके थे। घरवालों के बार-बार आग्रह को ठुकराते हुए १९६० में आपने घर वालो से सदा के लिये नाता तोडते हुए आजीवन ब्रह्मचर्य दीक्षा का व्रत धारण कर पूज्य स्वामी ओमानन्द जी से नैष्ठिक दीक्षा ली। तत्पश्चात् गुरुकुल में २ वर्ष अध्ययन किया और ४ वर्ष तक प्रबंधक का कार्य किया। १९६७ में जब गोरक्षा आन्दोलन प्रारम्भ हुआ तो एक गोभक्त के नाते आप इससे कैसे दूर रह सकते थे, फलस्वरूप सहायक मुख्य अधिष्ठाता जैसे प्रतिष्ठित पद को छोडकर आपने भी इसमें भाग लिया व छ महीने जेल मे बिताये।

आप प्रारभ से ही ऋषि मिशन के प्रति समर्पित रहे हैं। फलस्वरूप आपकी इच्छा ऐसी जगह प्रचार कार्य करने की थी जहां ऋषि मिशन का नाम तक कोई न जानता हो, क्योंकि उत्तर भारत में उस समय आर्यसमाज युवावस्था में था। आज भी लगभग सन्यासी उत्तर भारत का विशेष रूप से हरयाणा के ही हैं। आपकी इस इच्छा को पूर्त रूप दिया उडीसा के सन्यासी स्वामी ब्रह्मानन्द जी ने। उनके आग्रह पर आप अपने दो सहपाठियो के साथ पहली बार उडीसा आये और यहा के होकर रह गये। जब आप उडीसा मे आये तब यहा घूम-घूमकर यहा के निवासियों की हृदय विदारक दशा देख आप से रहा नहीं गया। फलस्वरूप मन ही मन आपने उनके उद्धार की योजना बनाई तथा ७ मार्च १९६८ को गुरुकुल आमसेना की स्थापना हुई, उस समय दान मे केवल ६८ रुपये व आधा बोरा चावल प्राप्त हुआ था। गुरुजनों परिवार वालों से दूर अलग प्रदेश, अलग भाषा, रहन-सहन आदि सब कुछ अलग-अलग होते हुए अपने त्याग, तपस्या, कठोर परिश्रम व महान् पुरुषार्थ के कारण आज वह सब कुछ प्राप्त कर लिया जो एक सस्था को चाहिए। आज गुरुकुल आमसेना अपने पूर्ण यौवन में है। अनेकों स्नातक यहा से निकल चुके हैं व देश-विदेश मे ऋषि मिशन को महत्त्वपूर्ण दिशा मे ले जा रहे हैं।

उडीसा में आर्यसमाज को गति देने हेतु आपने गाव-गाव घूमकर व्याख्यान दिये एव आर्यसमाज गठित किए। आपके द्वारा सार्वदेशिक सभा के आदेश पर १९७५ से उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा का गठन हुआ। जिसके अन्तर्गत सैकडों समाज व अनेकों प्रचारक हैं। १९७५ से १९९७ तक लगातार २२ वर्ष तक आप प्रधान पद पर कार्यरत रहे एव सभा को एक नई गति प्रदान की। उडिया भाषा मे वैदिक धर्म का साहित्य प्रकाशित करने के लिये दिसम्बर १९७१ मे स्टेट बैंक से लोन लेकर खरियार रोड में प्रिंटिंग प्रेस बैठाया, प्रेस मे नगरवासियो का स्टेशनरी छापना शुरू किया इससे इसका खर्च चलता रहा तथा उडिया और हिन्दी मे कुलभूमि पत्रिका एवं अन्य साहित्यों का प्रकाशन किया। फलस्वरूप इस समय ६० से भी अधिक उडिया भाषा मे साहित्य प्रकाशित हो चुके हैं। आज गुरुकुल आश्रम आमसेना की प्रमुख प्रकाशकों में गिनती है। गोमाता की सेवा के लिये ब्रह्मचारियो को शुद्ध दूध उपलब्ध कराने के लिये १९७५ में बैंक से ऋण लेकर ८-१० गाये लेकर गोशाला की स्थापना की अब इसमे ४० अच्छे नस्ल की गाये हैं। जब फरवरी १९७८ मे उडीसा के महामहिम राज्यपाल श्री भगवत दयाल शर्मा एव केन्द्रीय रक्षामंत्री प्रो० शेरसिह पधारे तो वे इस क्षेत्र का सेवा कार्य देखकर प्रभावित हुए। उनके आने से गुरुकुल मे बिजली आ गयी तथा अनुदान आदि मिलना प्रारम्भ हो गया। इससे गुरुकुल की उन्नति का द्वारा खुल गया।

१९७८ मे ही जो कन्यायें आठवीं, नवमीं, दसवीं पढकर घर मे बैठी थीं उन्हे आगे शिक्षा देने व कुछ उद्योग सिखाने के उद्देश्य से प्रौढ शिक्षा केन्द्र प्रारभ किया। इसमे २५ कन्यायें रखी गयी, वे सभी मैट्रिक कक्षा मे सफलतापूर्वक उत्तीर्ण होगई। फिर वहीं पर कन्या गुरुकुल प्रारम्भ कर दिया। अब वहा पर ९० से अधिक कन्याये विभिन्न प्रातो की मध्यमा, शास्त्री, आचार्य कक्षा मे पढ रही हैं। इनमे से अधिकतर वनवासी आदि पिछडे वर्ग की छात्राये हैं। इनकी पूर्ण व्यवस्था गुरुकुल की ओर से होती है। इसी प्रकार सन् १९७२ मे जमीन खरीदकर गुरुकुल को गाव से दूर वर्तमान स्थान पर लाया गया। यहा उत्तरोत्तर शिक्षा की व्यवस्था एव छात्रो की सख्याये बढती गई। इस समय १६० छात्र सभी कक्षाओ मे पढ रहे हैं। इसमें से अधिकाश छात्र निर्धन, अनाथ या वनवासी हैं। सबकी व्यवस्था गुरुकुल की ओर से होती है। अब तक सैकडों शास्त्री, आचार्य की कक्षा उत्तीर्ण कर सुयोग्य स्नातक निकल गये हैं। इसमे से कइयो को तो नि शुल्क समाजसेवा मे लगा रखा है। म प्र बिहार, राजस्थान, आसाम, दिल्ली, उडीसा आदि प्रान्तो मे सेवा कार्य मे जुटे हुए हैं। इस क्षेत्र मे जब-जब अकाल पडे हैं, गुरुकुल की ओर से जनता का भरपूर सहयोग किया गया है। १८७८, १९८७ मे व्यापक स्तर पर अन्न एव वस्त्र बाटा गया था। १९८७ मे नवापारा सब डिवीजन के पचायत (बी डी ओ) अधिकारी को २५० साडी, २०० धोती बाटने के लिए दी गई थी। राशन कार्ड बनाकर इस इलाके में कई मास तक चावल बाटा गया। जब लातूर मे भयकर भूकप आया तो गुरुकुल एव खरियार रोड की ओर से १०० क्विटल अनाज, दवाइया आदि लेकर सबसे पहले यहा का ट्रक बाटने पहुच गया था। इसी प्रकार उडीसा मे आये भयकर विनाशकारी तूफान मे पीडित लोगो की सहायता के लिए वहीं दो मास तक सहायता के लिए स्वामी जी के नेतृत्व मे १० ब्रह्मचारियो की टीम चूडा, चावल, कम्बल, बर्तन, त्रिपाल, दवाई, नये पुराने वस्त्र बाटते रहे। इस सहायता पर गुरुकुल की ओर से दस लाख रुपये स्वामी जी ने खर्च किये थे। धर्मार्थ चिकित्सालय स्वामी जी की प्रेरणा से दिल्ली-निवासी श्री बृजकिशोर जी अग्रवाल तथा उनकी धर्मपत्नी ३० शय्या का एक अस्पताल १० लाख रुपये की लागत से बनवा दिया था। इस अस्पताल का शिलान्यास उडीसा के महामहिम राज्यपाल श्री यज्ञदत्त जी शर्मा ने किया था। मार्च १९९३ मे सुप्रीमकोर्ट के पूर्व मुख्य न्यायाधीश श्री रगनाथ मिश्र के करकमलो से अस्पताल का

(शेष पृष्ठ ८ पर)

वैदिक-स्वाध्याय

तेज धारण करें

ओ३म् तत्सवितुर्वरेण्य भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो न. प्रचोदयात्।। य० ३६।३

ऋ० ३।६२।१०। यजु० ३।३५। साम० उ० ६।३।१०।।

शब्दार्थ—(सवितु) प्रेरक उत्पादक (देवस्य) परमात्मदेव के (तत्) उस (वरेण्य) वरने योग्य (भर्ग) शुद्ध तेज का (धीमहि) हम धारण करते हैं, ध्यान करते हैं (य) जो धारण किया हुआ तेज (न) हमारी (धिय) बुद्धियो को, कर्मों को (प्रचोदयात्) सदा सन्मार्ग पर प्रेरित करता रहे।

विनय—मुझे क्या करना चाहिये क्या नहीं, यह मैं नहीं जानता। किस समय क्या कर्त्तव्य है क्या अकर्त्तव्य, क्या धर्म है क्या अधर्म, यह मैं नहीं जान पाता। सुना है कि बडे-बडे ज्ञानी भी बहुत वार इस तरह किंकर्त्तव्यविमूढ रहते हैं। पर क्या इसका कोई इलाज नहीं है ? हे सवित देव ! हमारे उत्पादक देव ! क्या तूने हमे उत्पन्न करके इस अधेरे ससार मे यों ही छोड दिया है। कोई निर्भ्रान्त (निश्चित) प्रकाश हमारे लिए तुमने नहीं दिया है। यह कैसे हो सकता है ? नहीं, तुम अपने अनन्त प्रकाश के साथ सदा हमारे हो। यदि हम चाहे और यत्न करे, तो तुम हमे अपने प्रकाश से आप्लावित कर सकते हो। इसके लिए हम आज से ही यत्न करेंगे और तेरे उस 'भर्ग' (विशुद्ध तेज) को अपने मे धारण करने लगेगे जो कि वरणीय है, जिसे कि हर किसी को लेना चाहिये—जिसे कि प्रत्येक मनुष्य-जन्म पानेवाले को अपने अन्दर स्वीकार करने की जरूरत है। इस तेरे वरणीय शुद्ध स्वरूप का हम जितना श्रवण, मनन, निदिध्यासन करेगे अर्थात् जितना तेरा कीर्तन सुनेगे, तेरा विचार करेगे, तेरे में मन एकाग्र करेगे, तेरा जप करेंगे, तुझमे अपना प्रेम समर्पित करेगे उतना ही तेरा शुद्ध स्वरूप हमारे अन्दर धारण होता जायेगा। बस, यह ऊपर से आता हुआ तुम्हारा तेज ही हमारी बुद्धि को और फिर हमारे कर्मों को ठीक दिशा मे प्रेरित करता रहेगा। इस शुद्ध स्वरूप के साथ तुम ही मेरे हृदय मे बस जाओगे और तुम ही मेरे बुद्धि, मन आदि सहित इस शरीर के सचालक हो जाओगे। फिर धर्म अधर्म की उलझन कहा रहेगी ! तुम्हारे पवित्र सस्पर्श से इस शरीर की एक चेष्टा मे शुद्ध धर्म की ही वर्षा होगी। इसलिए हे प्रभो ! हम आज से सदा तुम्हारे शुद्ध तेज को अपने मे धारण करने मे लगते हैं। एक-एक मानसिक विचार के साथ, एक-एक जप के साथ इस तेज का अपने अन्दर आह्वान करेगे और इस तरह प्रतिदिन इस तेज को अपने मे अधिक-अधिक एकत्र करते जायेंगे। निश्चय है कि इस 'भर्ग' की प्राप्ति के साथ-साथ धर्म के निश्चय मे पटु होती जाती हुई हमारी बुद्धि एक दिन तुम्हारी सर्वज्ञता के कारण पूरी तरह बिल्कुल ठीक मार्ग पर ही चलने वाली हो जायेगी।

(वैदिक विनय)

आर्यसमाज के उत्सव की सूची

आर्यसमाज भुरथला जिला रेवाडी	१९ से २० मई
आर्यसमाज गोन्दर जिला करनाल	२ से ४ जून
आर्यसमाज गोहाना मण्डी (सोनीपत)	१ से ३ जून

—**डॉ० सुदर्शनदेव आचार्य,** वेदप्रचाराधिष्ठाता

आर्यसिद्धान्त-शिक्षा

इन्द्रसिंह आर्य, आरजैड-६०, ब्लाक-ओ, नया रोशनपुरा, नजफगढ, दिल्ली-४३

(गतांक से आगे)

युधिष्ठिर का विवाह

"ततोऽब्रवीद्भगवान् धर्मराज-मद्यैव पुण्याहमुत व: पाण्डवेय।
अद्य पौष्यं योगमुपैति चन्द्रमा:, पाणि कृष्णायास्त्वं गृहाणाद्य-पूर्वम्।।५।।

(म०भा० आदि पर्व० अ० १९० श्लोक)

महर्षि व्यास ने धर्मराज युधिष्ठिर से कहा कि हे पाण्डु-नन्दन तुम्हीं कृष्णा का पाणि ग्रहण करो।

तत: समाधाय स वेद-पारगो, जुहाव मत्रै र्ज्वलित हुताशनम्।
युधिष्ठिरं चाप्युपनीय मत्रविन्नियोजयामास सहैव कृष्णया।।

(म०भा० आ+दिपर्व अ० १९०/११-१२)

तत्पश्चात् वेद के पारगत विद्वान् मत्रज्ञ पुरोहित धौम्य ने (विदी पर) प्रज्वलित अग्नि की स्थापना करके उसमें मंत्रो की आहुति दी और युधिष्ठिर को बुलाकर कृष्णा के साथ उसका गठबधन कर दिया।

ओ३म्

(एक शब्द-अनेक अर्थ और विषयानुसार उनकी उपयोगिता)

(क) 'सैन्धव' शब्द के सामान्यत हैं दो अर्थ।
एक 'लवण' तो दूसरा 'अश्व' है दृष्टार्थ।।
भोजन के समय सैन्धव चाहिए तो 'लवण' दिया जाना है उचित।
यदि सवारी का समय हो तो 'अश्व' किया जाना चाहिए उपस्थित।।
सवारी के समय 'लवण' और भोजन के समय यदि प्रस्तुत किया जाता है 'अश्व'।
तो स्वामी क्रुद्ध हो कह उठेगा ! कितना मूर्ख है सेवक जो समझ न सका मेरा तत्त्व।।
भृत्य अल्पमति होने से अपने स्वामी के अभिप्राय को समझ नहीं पाता है।
विषय के प्रतिकूल अर्थ अपनाने से वह निर्बुद्धि कहलाता है।।
विद्वानो का कर्त्तव्य है प्रकरण के अनुरूप वे सत्य अर्थ का करें प्रतिपादन।
इसी से उनकी प्रशसा है ! वे वक्ता के अभिप्रायनुकूल न्यायोचित अर्थ को देते हैं उचित स्थानिन्।।
जो लोग आशय के प्रतिकूल नवीन अर्थ की किया करते हैं कल्पना।
सच मानिए ऐसे अविद्यायुक्त लोग - वाक्छल की करते हैं स्थापना।।
उदाहरणार्थ देखिए एक प्रसग, यहा 'असुर' शब्द का अर्थ किया है 'राक्षस' भ्रमार्थक।
जबकि विषय शिल्पविद्या का है अत उपर्युक्त अर्थ 'अभियन्ता' ही है सार्थक।।
देखो ! इसी भाति 'दानव' का अर्थ अभिप्राय के प्रतिकूल किया है मात्र 'दानव'।
प्रकरण विद्या का है अत यहा अविच्छिन्न अर्थ ग्रहण किया जाना चाहिए दाता, दानशील-मानव।।
उत्तम कुल, श्रेष्ठ वर्ण, विद्या कौशल मे निष्णात थे 'मय' आचार्य।
जितेन्द्रिय, गुणवान्, धर्मज्ञ, वेद-वेदागो के मर्मज्ञ विद्वान् आर्यों मे श्रेष्ठ थे आर्य।।
जिनकी (निज) सतान गभीरता मे समुद्र के तुल्य, धैर्य मे थी हिमालय के समान।
युद्ध कला-कौशल, स्मरण शक्ति से परिपूर्ण, प्रतिभासपन्न, ऐश्वर्यवान्।।
ज्ञातव्य है ! 'मय' (पिताश्री) ने बनाया था एक असाधारण पुष्पक-विमान।
जबकि उनके पुत्रो 'नल-नील' ने एक अलौकिक 'सेतु' का किया था निर्माण।।
'ब्रह्मा' विश्वकर्मा एक उपाधि है ये दोनों शब्द सूचित करते हैं समानार्थ।
'मय' के साथ ये (दोनों) शब्द प्रयुक्त हुए हैं, देखिए वा०रा० युद्धकाण्ड अध्ययनार्थ।।
'मय' आचार्य के चरित्र को कलुषित करने वालो का अहम उस समय हो जाता है खण्डित।
जब 'मय' के नाम के साथ पढते हैं-आदर सूचक शब्द – श्रीमान्, प्रीतिमान्, महात्मा, महाकवि, पडित।।
'असुर' (इजीनियर) उपाधि से सुशोभित जिन देवजनो ने जगत् के परोपकारार्थ समर्पित किया अपना तन-मन-धन।
जिनके सान्निध्य में अन्त करण शुद्ध हो जाता था, उनके उपकारो को भूल गए हैं कृतघ्न।।

(ख) एक और 'त्रिशिरा' शब्द को लेकर बहुधा लोग करते हैं वाद-विवाद।
उनको बतलाइये 'त्रिशिरा' एक मत्र द्रष्टा ऋषि हैं, ताकि वे भविष्य में रखें याद।।
त्रि (तीन) अर्थात् चारों वेद के अतर्हित केवल तीन ही हैं विद्याए।
शिरा (मस्तिष्क) अर्थात् ज्ञान विज्ञान का कोश यह कहलाए।।
देव पुरुष 'त्रिशिरा' जो त्रयी विद्या को विधिवत् करता है प्रत्यक्ष।
विद्या और सद्गुणों की प्राप्ति के अर्थ शिष्य लोग बैठते हैं जिनके समक्ष।।

(क्रमश.)

जन्मशताब्दी के अवसर पर–

उड़ीसा में आर्यसमाज के समर्पित प्रचारक पं० लिंगराज अग्निहोत्री

❑ मूल लेखक पं० प्रियव्रत दास, भुवनेश्वर

पातञ्जल योगशास्त्र के प्रवक्ता, समाज सुधारक तथा उत्कल प्रदेश के आर्यो में अग्रगण्य प० लिंगराज अग्निहोत्री का जन्म १९०० में उडीसा प्रान्त के गजाम जिले के एक गांव बुधाईसुनी में हुआ था। आज उडीसा में आर्यसमाज की जागृति दिखाई दे रही है उसका मुख्य श्रेय इसी समर्पणशील प्रचारक को है जिसने गजाम जिले के पोलासरा नामक स्थान में सर्वप्रथम आर्यसभाज की स्थापना की। डेढ वर्ष की आयु में वे यहां के एक वृद्ध दम्पती के दत्तक पुत्र के रूप में आये थे। प्राथमिक शिक्षा के लिए भी इस बालक को कडा सघर्ष करना पडा था। ब्राह्मण पुत्र होने के कारण उन्हें एक पौराणिक प० ईश्वर मिश्र के यहा पौराणिक कर्मकाण्ड का अध्ययन करने के लिए भेजा गया। यह वह समय था जब दक्षिण उडीसा के कुलीन ब्राह्मणो को परम्परा से बहुत बडी संख्या में ब्राह्मण परिवार प्राप्त थे। ये शिष्य अपने गुरुओं को प्रतिवर्ष नियमित रूप से दक्षिणा प्रदान करते उनके चरणों में सिर झुकाते तथा उनके खाये भोजन को प्रसाद रूप में ग्रहण करते। उन्हें भगवान् का साक्षात् प्रतिनिधि माना जाता था। जब लिगराज बडे हुए तो उन्हे भी कहा गया कि वे गावो मे जाकर वहा रह रहे अपने पुराने शिष्यो को शिक्षित करे तथा नये शिष्य बनाये। लिगराज को गुरुडम के इस पाखण्डपूर्ण नियम से घृणा हो गई किन्तु जिस माता ने उन्हे अपना दत्तक पुत्र बनाया था, उन्हें इस कार्य के लिए विवश करने लगी। लिगराज ने अपने गुरु के समक्ष इस कार्य के प्रति अपना आक्रोश प्रकट किया। उनके गुरु प० ईश्वर मिश्र ने उन्हें मनुस्मृति के कुछ अध्याय पढाये थे। इस ग्रन्थ का एक श्लोक उनके मन मे प्राय. कौंधता रहता। वह था–

मृतं शरीरमुत्सृज्य काष्ठलोष्ठसामं क्षितौ।
विमुखा बांधवा यान्ति धर्मस्तमनुगच्छति।।
८/२४१

अर्थात् मृतक के बधु जन तो उसके शरीर को लकडी और पत्थर तुल्य समझकर धरती पर छोडकर चले जाते हैं। अकेला धर्म ही उसका अनुगमन करता है। लिगराज उस धर्म को साक्षात् देखना चाहते थे जिसके बारे मे शास्त्र का कहना है कि वह व्यक्ति के साथ जाता है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए वे मृतकों की अन्त्येष्टि यात्राओं में बराबर जाते रहे। वे दाहस्थल पर घण्टो खडे रहते जब कि अन्य लोग स्वगृहो की ओर प्रस्थान कर जाते। उन्हें जब वहा धर्म के दर्शन नहीं होते तो वे निराश हो जाते। उनकी शंकाओं का कोई समाधान नहीं कर सका, उनका अध्यापक भी नहीं। एक दिन वे अपने माता-पिता को बिना सूचना दिये कलकत्ता चले गये। वहा अनेक मत-सम्प्रदायों के आस्था स्थलो पर भटकने के पश्चात् वे १९ कार्नवालिस स्ट्रीट (अब विधान सरणी) के आर्यसमाज में पहुंच गये। अब वे यहा नियमित रूप से आने लगे। यहीं पर उनकी धर्मजिज्ञासा शान्त हुई, उनकी शकाओ का उत्तर मिला और उन्होंने अपने भावी मार्ग का निर्धारण कर लिया। अब उन्होंने कलकत्ता के उडीसा निवासियों के बीच धर्मप्रचार करना आरम्भ कर दिया।

इसके पश्चात् वे अपने ग्राम में आये। अब उनके पास स्वामी दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द तथा स्वामी दर्शनानन्द के गुछ ग्रन्थ थे। उन दिनों उडीसा के भीतरी भागों मे हिन्दी एक विदेशी भाषा के तुल्य थी। प० लिगराज को हिन्दी सीखने तथा उपर्युक्त लेखकों की पुस्तको के अभिप्राय को जानने के लिए अत्यन्त श्रम करना पडा। शीघ्र ही उनका घर हिन्दी सीखने, योगासन का प्रशिक्षण देने तथा स्वामी दयानन्द के सिद्धान्तों का ज्ञान कराने का केन्द्र बन गया।

कलकत्ता छोडने के पहले वे अपने कुछ युवा मित्रों के साथ देश के स्वाधीनता आन्दोलन की ओर आकृष्ट हुए। अब वे चरखा कातते, गाधी टोपी पहनते तथा देशभक्तों के जुलूसों में भाग लेते। कलकत्ता से उडीसा लौटकर उन्होंने अपनी पूर्व प्रवृत्तियो को जारी रखा साथ ही अपने मित्रो को हिन्दी सीखने, उसका प्रचार करने, बालको का चरित्र निर्माण करने तथा बालविवाह उन्मूलन, अछूतोद्धार, पर्दा निवारण तथा जन्माधारित जाति व्यवस्था के उन्मूलन जैसे सामाजिक सुधारों का महत्त्व बतलाते।

यह उनका सौभाग्य था कि उडीसा के प्रथम आर्यसमाजी महान् समाज सुधारक तथा सत्यार्थप्रकाश के उडीया अनुवादक श्रीवत्स पण्डा उनके बहनोई थे और उनके गाव से मात्र पचास मील की दूरी पर रहते थे। दोनो का आर्यसमाज से सम्पर्क भिन्न साधनो और परिस्थितियो मे हुआ था। श्रीवत्स पण्डा का पत्र व्यवहार लाहौर के तत्कालीन आर्यनिताओ से रहा जब कि लिगराज कलकत्ता के आर्यों के सम्पर्क में आ चुके थे। अब दोनो ने मिलकर उडीसा मे आर्यसमाज के कार्य को बढाया। पण्डा जी ने अपने लेखन के द्वारा अधविश्वासो के विरोध मे अपना अभियान चलाया जबकि लिंगराज वैदिक सोलह सस्कारो के प्रचार, योग प्रशिक्षण तथा आध्यात्मिक साधना पर बल देते थे।

(क्रमशः)

साहित्य-समीक्षा

पुस्तक का नाम–भीष्म भजन सग्रह (भीष्म भजन भास्कर के ५१ भजन)
लेखक–स्वा० भीष्म जी महाराज घरौण्डा (करनाल)
प्रकाशक–चन्द्रभान आर्य ७५६/३, आदर्श कालोनी, सुभाष चौक (जीन्द)
मूल्य–१४-०० रुपये पृष्ठ–६८

स्वामी भीष्म जी महाराज आर्यसमाज के प्रसिद्ध उपदेशक हुये हैं। उनके भजन समस्त आर्यजगत् मे गाये जाते हैं। स्वामी जी के शिष्य प० चन्द्रभानु आर्य ने उनकी रचना भजन-भास्कर में से ५१ भजन संकलित करके यह रचना प्रकाशित की है। आर्य भजनोपदेशकों तथा भजन-प्रेमी आर्यजनों के लिये यह पुस्तक उपयोगी है। भीष्म-भजन-संग्रह नाम से स्वामी जी की समस्त रचनायें प्रकाशित होनी चाहिये। इससे शोधकर्ता उस पर शोध कार्य भी कर सकें। –सुदर्शनदेव आचार्य

उस योगी की बात नहीं मानी तो....

सासारिक लोगो की मुक्ति के लिए, जो छोडकर आया १८ घण्टे की समाधि,
त्यागा अपना मोक्ष, कर्मक्षेत्र मे उतरा, ऐसे परम हितैषी योगी की
बात नहीं मानोगे तो किसकी बात मानोगे १

माता-पिता, घर-द्वार, धन-सम्पत्ति व मान-सम्मान को त्यागकर,
सच्चे शिव की खोज मे, कष्टो को सहा, जगलो की खाक छानी, बनकर जोगी,
उसकी बात नहीं मानोगे तो किसकी बात मानोगे २

देश से अज्ञान, पाखण्ड, अन्धविश्वास का अन्धकार मिटाने के लिए,
पत्थर, ईंटें खाई, जहर पिया, कितनी ही दुःख व तकलीफें भोगी,
उसकी बात नहीं मानोगे तो किसकी बात मानोगे ३

देश में जो कुरीतिया, कुप्रथाए थी उनको मिटाया, गोरक्षा के लिये किया प्रयत्न,
असहायों का बना सहारा, शूद्रो को दिलवया सम्मान, ऐसे कर्मयोगी,
की बात नहीं मानोगे तो किसकी बात मानोगे ४

ब्रह्मचर्य, सदाचार, संयम और देश व समाज की सेवा का पाठ पढाकर,
स्वा० श्रद्धानन्द, अमीचन्द जैसे को लाया सत्पथ पर, जो थे दुर्व्यसनो के रोगी,
उसकी बात नहीं मानोगे तो किसकी बात मानोगे ५

सच्चाई के पावन पथ से हटाने के लिये, कितने ही दिये गये लालच व प्रलोभन,
पर ठुकरा दिये उस लगोटधारी फकीर ने, ऐसे सन्त, महात्मा, निर्लोभी,
की बात नहीं मानोगे तो किसकी बात मानोगे ६

हमको आया था जगाने देव दयानन्द, लेकर वेदों का सन्देश, पूरा करने गुरुवर का आदेश,
अब तो चेतो, जागो ओर उठो, ऐ ! भोली मानव जाति, क्यों मुह ढककर सोगी,
उस जोगी की बात नहीं मानोगे तो किसकी बात मानोगे ७

एक त्यागी, तपस्वी, परोपकारी, विद्वान् इस धारा धाम पर युगो बाद अवतरित हुआ,
उसने देखा हमारा बुरा हाल, बनाया हमे 'खुशहाल' भगाकर धूर्त, पाखण्ड और ढोगी,
उस योगी की बात नहीं मानोगे तो किसकी बात मानोगे ८

–खुशहालचन्द्र आर्य
१८०, महात्मा गाधी रोड (दो तल्ला), कलकत्ता

शोक समाचार

अत्यधिक दुःख के साथ सूचित किया जाता है कि ग्राम जाडवाला फतेहाबाद (हरयाणा) के श्री टोडरमल आर्य की धर्मपत्नी श्रीमती हरदेवी आर्या का निधन २४-४-२००१ को हो गया है, हरदेवी आर्या जी समाज के कार्यो मे हमेशा अग्रणी रहती थी। यह समाज के लिए एक बहुत बडी क्षति है। स्वर्गीय हरदेवी आर्या के श्रद्धाजलि मे उनके पुत्रो ने एक लाख उन्नीस हजार रुपया कुछ धर्मस्थलो में दान देने का सकल्प लिया।

–मन्त्री आर्यसमाज सिरसा

सर्वहितकारी (साप्ताहिक) की मूल्यवृद्धि की सूचना

कागज एव छपाई तथा डाक शुल्क की मूल्य वृद्धि के कारण १ जुलाई, २००१ से सर्वहितकारी (साप्ताहिक) का वार्षिक शुल्क ६० रुपये तथा आजीवन शुल्क ६०० रुपये के स्थान पर ८० रुपये व ८०० रुपये कर दिया गया है। पुराने तथा नये ग्राहक बननेवालों से निवेदन है कि ३० जून २००१ तक वार्षिक शुल्क ६० रुपये तथा आजीवन शुल्क ६०० रुपये भेजकर इस सुविधा का लाभ उठावे। पत्रिका के स्तर मे सुधार के लिए सम्पादक मण्डल प्रयत्नशील है।

आशा है सुधी पाठक मूल्यवृद्धि के लिए क्षमा करेंगे। –सभामन्त्री

सर्वसुख स्वतन्त्रता का मूल

❑ आचार्य आर्य नरेश 'वैदिक गवेषक', उद्‌गीथ साधना स्थली,
ग्राम डोहर, डाक० शाया, जिला सिरमौर (हि०प्र०)

ससार मे जैसे-जैसे ज्ञान-विज्ञान तथा प्रचार तन्त्र के द्वारा जनता प्रबुद्ध हो रही है ठीक वैसे-वैसे ही विश्व का प्रत्येक व्यक्ति अधिकाधिक स्वतन्त्रता और सुख की कामना करने लग गया है। एक छोटे से छोटे बालक और कम से कम पढे-लिखे व्यक्ति मे भी सब बन्धनों से मुक्त होकर स्वेच्छापूर्वक जीने की भावना जागृत हो गयी है। सुख और स्वतन्त्रता की प्रतिस्पर्धा मे यह दिखाई दे रहा है कि सुख और स्वतन्त्रता पहले की अपेक्षा बढे नहीं हैं अपितु कम हो गये हैं। अधिक सुख की लालसा में आज प्रत्येक चतुर व्यक्ति स्वच्छन्दता को ही स्वतन्त्रता समझकर व्यक्तिगत स्वार्थहित सब नियमों को तोडकर मनमानी का जीवन जीने पर उतारू हो चुका है।

क्योकि ससार की इस भीड मे प्रत्येक व्यक्ति अपने आपको दूसरे से अधिक चतुर समझता है। अत वह अपनी तथाकथित स्वतन्त्रता को सुरक्षित रखने के लिए किसी भी दूसरे व्यक्ति की कोई चिन्ता नहीं करता। जिसका परिणाम आज का अनुशासनहीन समाज है। समाज मे जीते हुए यदि हम अन्य सब लोगो की उपेक्षा करके सुख और स्वतन्त्रता चाहेंगे तो क्या यह सभव हो सकेगा ? कदापि नहीं। कारण, जैसे कि हम अपनी स्वतन्त्रता और सुख के लिए चिन्तित हैं ठीक वैसे ही समाज में रहने वाले अन्य लोगों की भी यही स्वाभाविक इच्छा है। परन्तु यदि प्रत्येक व्यक्ति अन्य लोगो की उपेक्षा करके सुख चाहेगा तो उसका सुख के स्थान पर ढेर सारा दु ख और स्वतन्त्रता के स्थान पर ढेर सारी चिन्ताएं ही उपलब्ध होगी। उदाहरणार्थ– किसी राजमार्ग पर यात्रा करते हुए अथवा किसी नगर की भड भरी सडक पर चलते हुए यदि हम चाहे कि बस केवल हमारी ही गाडी आगे निकले और इसमें कोई व्यक्ति कोई गाडी अथवा कोई नियम आडे नहीं आवे। हम जैसे भी चाहें, सडक के जिस ओर भी चाहे, गाडी को दौडाकर आगे ले जाए तो क्या यातायात के नियमों को तोडकर कोई व्यक्ति अपने घर पर सुरक्षित पहुच सकेगा ? क्या बाए अथवा दाए किसी भी और स्वच्छन्दता से अपनी गाडी बढा देने पर सडक का यातायात चल सकेगा ? कदापि नहीं। क्योकि हमारे पीछे से एव सामने से आने वाले लोग भी बिना किसी नियम के तथाकथित स्वतन्त्रता को पूर्ण करने के लिए एव शीघ्रता से पहुचाने के सुख को प्राप्त करने हेतु ऐसा ही करना चाहेगे। जिसका परिणाम गाडी की तीव्र गति के स्थान पर यातायात का अवरुद्ध होना और शीघ्र घर पहुचने के सुख के स्थान पर दुर्घटना ग्रस्त होकर किसी हस्पताल में भयंकर दु ख को झेलना होगा।

इस उपरोक्त उदाहरण से स्पष्ट हो जाता है कि यदि समाज में रहते हुए हमे अधिक सुख-स्वतन्त्रता चाहिए तो हम सबको एक सर्वहितकारी नियम मे बधने की परतन्त्रता को स्वीकार करना होगा। यह बात आज से लगभग डेढ शताब्दी पूर्व विश्वमित्र आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कही थी। यदि हम तथाकथित स्वतन्त्रता के पश्चात् देवदयानन्द द्वारा प्रतिपादित विश्वशान्ति के दस नियमों में से अन्तिम नियम को अगीकार कर लेते तो निश्चित रूपेण आज के भारत का वातावरण इतना भयावह कभी न होता। ऋषिवर लिखते हैं–"प्रत्येक व्यक्ति को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।"

(आर्यसमाज का १०वा नियम)

आज अत्यन्त दु ख एव आश्चर्य का विषय है कि ज्ञान-विज्ञान की अत्यधिक उन्नति होने पर भी, देश के चप्पे-चप्पे में विद्यालयों एव महाविद्यालयो का जाल बिछा होने पर भी पहले की अपेक्षा कहीं अधिक शिक्षित लोगों की सख्या अधिक होने पर भी समाज में अनुशासनहीनता, शत्रुता, द्वेष, अपराधों की सख्या एव मानसिक तनाव निरन्तर बढ रहे हैं। जिसका मौलिक कारण है सर्वहितकारी नियम पालन का अभाव। जिसे आज का तथाकथित बुद्धिजीवी व्यक्ति इसलिए स्वीकार नहीं करता क्योंकि ऐसा करके वह अपनी स्वतन्त्रता को भग हो गयी, समझता है। ऐसे समय में वह दूसरे की स्वतन्त्रता की भावना को भूल जाता है। इसलिए महर्षि दयानन्द ने कहा कि–प्रत्येक व्यक्ति को सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए। देव दयानन्द द्वारा प्रस्तुत यह सर्वहित परतन्त्रता ही वास्तविक सुख और स्वतन्त्रता का मूल है। हम एक और उदाहरण के द्वारा विषय को और अधिक स्पष्ट करने का प्रयास करते हैं–एक व्यक्ति जीवन की सुख-सुविधाओं की एकत्रित करने के लिए किसी सस्था में कार्यरत था। उस सस्था के आने-जाने, काम करने, उठने-बैठने तथा खाने-पीने के नियम निश्चित थे। दो-चार दिन के पश्चात् उस कार्यकर्ता ने कहा–"मैं गुलाम बनकर कार्य नहीं कर सकता। इन नियमों को पालना और परतन्त्र होना मैं उचित नहीं समझता। मैं एक स्वतन्त्र प्राणी हू। मैं अकुश में रहना पसन्द नहीं करता। मैं तो अब अपनी ही संस्था चलाऊगा। सस्था प्रारम्भ हुई अधिक लाभ के लिए वस्तुओं तथा समय का सत्प्रयोग आवश्यक था। अत उसने भी कार्यकर्ताओं के लिए आने-जाने, खाने-पीने, मशीनों पर कार्य करने व उनका प्रयोग करने के नियम प्रसारित कर दिए। उनकी संस्था में उसका एक साथी (जो पूर्व संस्था में कार्य कर चुका था) भी कार्यरत था। उसने इस संस्था में इन सब नियमों को देखकर अपने उस मित्र एव मालिक को कहा–"देखो भाई साहब ! अब आप उन्हीं सब नियमों का अंकुश हम पर लगा रहे हैं जिनको आप गुलामी और परतन्त्रता की सज्ञा देकर छोड़ आए थे। इस बात को सुनकर उसका मित्र देखता रह गया और कुछ न कहता हुआ चुपचाप गर्दन झुकाकर खडा हो गया।

पाठकवृन्द ! मानव समाज मे जीते हुए यदि हमें पूर्ण सुख और तनावरहित शान्ति चाहिए तो महर्षि देव दयानन्द का सर्वहितकारी परतन्त्रता का यह निम आज समाज के प्रत्येक स्तर और वर्ग के लिए अत्यन्त अनिवार्य है। कुछ वर्ष पूर्व स्वच्छन्दता को ही स्वतन्त्रता मानकर जीने वाले रजनीश कहता था सब बन्धनों को तोडकर मुक्त हो जाओ और ऐसा ही उसने किया भी। अर्थात् सब सामाजिक नियमो को ताक पर रखकर नग्नता का प्रदर्शन और अश्लीलता का वातावरण योग समझा जाने लगा। उन्हीं दिनो देश के एक प्रबुद्ध आर्ययुवक ने उसके आश्रम मे पहुचकर उससे वार्तालाप करने के लिए समय ले लिया। समय नपा-तुला था और उतने ही समय में उस युवक को अपनी बात पूर्ण करनी थी। विषय था–कि यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने मन की तथाकथित इच्छा पूर्ण करने के लिए स्वच्छन्द हो जाए जिसे आप स्वतन्त्रता कहते हैं तो क्या समाज मे सुख बढेगा या दु ख ? क्योकि जब हर व्यक्ति समाज मे अपनी मनमानी चलायेगा तो उसके स्वच्छन्द व्यवहार से प्रत्येक दूसरे व्यक्ति को हानि, तनाव और कष्ट निश्चित रूपेण होंगे और यह व्यवहार जिसे भूल से प्राय स्वतन्त्रता कहा जाता है, स्वच्छन्दता ही है। क्योंकि स्वतन्त्र मे भी एक तन्त्र है अर्थात् एक आत्मिक सूत्र है जो सब आत्माओं के हित मे है। परन्तु स्वच्छन्दता तो पूरी मनमानी है।" प्रश्न का उत्तर रजनीश के पास नहीं था। वह हडबडाया और बोला– "मेरी बात तुम्हारी बुद्धि से परे है। मेरा समय नष्ट मत करो और यहा से चले जाओ। और वैसे भी तुम्हें बातचीत के लिए दिया गया समय समाप्त हो चुका है। जैसे ही उस युवक ने समय समाप्ति का नियम सुना तो उसने आक्रोश मे आकर कहा– "मैं अब तुम्हारी ही तरह स्वतन्त्र हू और मेरी इस स्वतन्त्रता को तुम भंग नहीं कर सकते अर्थात् मैं भी सब नियमों से ऊपर हू और मैं जितनी देर चाहू तुम्हें मेरी बात सुननी होगी और यदि तुम आनाकानी करोगे तो फिर मेरी मनमानी मार-पिटाई तक भी हो सकती है। रजनीश हक्का-बक्का रह गया और उसने हाथ जोडकर बडी कठिनाई से उस युवक से छुटकारा पाया।

(विशेष जानकारी के लिए लेखक की अन्य पुस्तकें पढें)

परिवारों में हम देखते हैं कि बच्चे यह नहीं चाहते कि माता-पिता उन नियमो का अकुश लगाएं। विद्यालय मे विद्यार्थी, कार्यालयों में कार्यकर्ता, राष्ट्र मे राष्ट्र के अधिकारी भी यही चाहते हैं कि उन पर किसी प्रकार के नियम का प्रतिबध न लगे। वे सब स्वच्छन्द रहें। परन्तु सज्जनवृन्द क्या ऐसा होने से कोई भी सुखी हो सकेगा ? कदापि नहीं। आज इस तथाकथित स्वतन्त्र भारत के उच्छृखल समाज मे जो कुछ भी सुख अथवा स्वतन्त्रता दिखायी दे रहे हैं, उनका कारण वे कुछ मानवतावादी, धार्मिक लोग हैं जोकि सर्वहितकारी अनुशासन की परतन्त्रता में बधकर ठीक समय पर निर्धारित स्थान पर उचित साधनो के द्वारा कर्त्तव्य का पालन कर रहे हैं। यदि बच्चो की भांति माता-पिता भी पालन-पोषण के दायित्व की परतन्त्रता मे न बधे और उन्हे समय पर सब सुविधाए न दे तो फिर बच्चो के सुख का क्या बनेगा यदि बस, रेल, राशन, बिजली, पानी, हस्पताल आदि के सभी अधिकारी भी अन्य कुछ कर्त्तव्यहीन लोगो की ही भांति पूर्णरूपेण स्वच्छन्द हो जाए तो फिर जनता के सुख और स्वतन्त्रता का क्या बनेगा ? यदि सीमा के प्रहरी वीर सैनिक एव उनके सभी अधिकारी भी यही सोच ले कि हम भी क्यों परतन्त्र बनकर यहीं खडे और अडें रहें ? हमारी इच्छा होगी तो सीमा को देख लेंगे अन्यथा नहीं। तो फिर देश में एक कारगिल नहीं सभी सीमाए कारगिल बन जायेगी और देश का कोई भी तथाकथित स्वतन्त्रता चाहने वाला स्वच्छन्द व्यक्ति सदा के लिए गुलामी की जजीरों में जकड लिया जाएगा।

अत पाठकवृन्द ! महर्षि देव दयानन्द के शब्दों में सर्वसुख स्वतन्त्रता चाहिए तो उसकी प्राप्ति के लिए सर्वहितकारी सामाजिक नियमों मे परतन्त्र रहना ही होगा। यही पूर्ण सुख का मूलमन्त्र है। इसलिए प्रत्येक देश के नागरिक को चाहिए कि वह अनुशासनयुक्त जीवन को कभी दु खमय न समझे। अनुशासन से हमारा अभिप्राय एक ऐसे वातवरण से है जहा प्रत्येक व्यक्ति अपने ठीक समय और उचित स्थान पर क्रियाशील साधनो से सुसज्जित होकर प्रसन्नता एव पुरुषार्थपूर्वक कर्त्तव्य का पालन करने के लिए अडिग एवं तत्पर रहता है।

ईश्वर उपासना पद्धति

❑ स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा

जब-जब मनुष्य लोग ईश्वर की उपासना करना चाहें, तब-तब इच्छाओं के अनुकूल एकान्त स्थान में बैठकर अपने मन को शुद्ध और आत्मा को स्थिर करें। सब इन्द्रिय और मन को सच्चिदानन्दादि लक्षणयुक्त सर्वान्तर्यामी और न्यायकारी परमात्मा की ओर अच्छी प्रकार से लगाकर सम्यक् चिन्तन स्तुति और शरीर इन्द्रिय मन बुद्धि आत्मा में बल की प्रार्थना करके उसमें अपने आत्मा को नियुक्त करें। अर्थात् उसी की स्तुति प्रार्थना और उपासना को बार-बार करके अपने आत्मा को भली-भांति उसमें लगा दें। उपासना के समय परमेश्वर से अतिरिक्त अन्य विषय से और व्यवहार के समय सब अधार्मिक व्यवहारों से अपने मन की वृत्ति को सदा रोकना चाहिये, यही योग है। इसके विपरीत परमेश्वर से दूर होने और उसकी आज्ञा के विरुद्ध बुराइयो में फंसने को नियोग कहते हैं। जैसे जल के प्रवाह को एक ओर से दृढ़ बाध के रोक देने पर जिस ओर नीचा होता है उसी ओर चल के स्थिर हो जाता है, वैसे ही जब मन की वृत्ति बाहर के व्यवहारो से हटाके स्थिर की जाती है, तब वह सर्वज्ञ परमेश्वर में स्थित हो जाती है।

उपासना शब्द का अर्थ है, समीपस्थ होना, जीव का ईश्वर के समीप होना अर्थात् जब जो जीव परमेश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव के अनुकूल अपने गुण-कर्म-स्वभाव करता है वही सामर्थ्य से उस सर्वज्ञ सर्वव्यापी पारब्रह्म के साथ एकता कर सकता है उस समय समाधि दशा में योगी को परमेश्वर का प्रत्यक्ष होता है। इस प्रकार समाधियोग से जिस पुरुष के अविद्यादि मल नष्ट होगये हैं। आत्मस्थ होकर परमात्मा में जिसने चित्त लगाया है, उसको जो परमात्मा के योग का सुख होताहै वह वाणी से कहा नहीं जा सकता। क्योंकि उस आनन्द को जीवात्मा अपने अन्त करण से ग्रहण करता है।

वह परमेश्वर सर्वव्यापक, शुक्र अर्थात् जगदुत्पादयिता सर्वशक्तिमान्, शुद्ध कवि, मनीषी, परिभू, स्वयभू इत्यादि रूप से गुणों के सहित होने के कारण सगुण है। अकाय, अव्रण, अस्नाविर और अपापविद्ध इत्यादि रूप से गुणों के निषेध होने के कारण निर्गुण कहाता है। इसी प्रकार वह एकदेव, सर्वभूतों में गूढ़, सर्वव्यापी, सर्वभूतान्तरात्मा, सर्वाध्यक्ष, सर्वभूतों का आश्रय, चराचर जागत् का साक्षी और केवल चेतन होने से सगुण और निर्गुण अर्थात् जीव और प्रकृति के गुणों से रहित होने के कारण निर्गुण समझा जाता है। ईश्वर की सर्वज्ञता, सर्वशक्तिमत्ता, शुद्धता, समानता, न्यायकारिता, दयालुता, सर्वव्यापकता, सर्वाधारता, मगलमयता, सर्वोत्पादकता, सर्वस्वामित्व=सर्वाधिष्ठातृत्व इत्यादि सत्यगुणों से उसकी ज्ञानपूर्वक उपासना को सगुणोपासना कहते हैं।

वह परमेश्वर अजन्मा अर्थात् कभी जन्म नहीं लेता, निराकार अर्थात् आकार वाला कभी नहीं होता। अकाय अर्थात् शरीर कभी धारण करता, अव्रण अर्थात् उसमें छिद्र कभी नहीं होता, वह द्वेष तथा शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध वाला कभी नहीं होता, उसमे दो-तीन आदि की गणना नहीं बन सकती, वह लम्बा चौडा, हल्का-भारी कभी नहीं होता इत्यादि-इत्यादि गुण-निवारण पूर्वक उस परमात्मा का स्मरण करते हुये अति सूक्ष्म आत्मा के भीतर बाहर व्यापक परमेश्वर में दृढ स्थित हो जाना निर्गुण उपासना कहाती हैं।

इसलिये जो अज्ञानी मनुष्य यह कहते हैं कि ईश्वर देह धारण करने से सगुण और देह त्याग करने से निर्गुण है, यह उनकी कल्पना सब वेदशास्त्रो के प्रमाणों और विद्वानों के अनुभव से विरुद्ध होने के कारण सज्जन लोगों को कभी नहीं माननी चाहिये। परन्तु सबको पूर्वोक्त रीति से ही करनी चाहिये।

इस उपासना का फल-जैसे शीत से आतुर पुरुष का शीत अग्नि के पास जाने से निवृत्त हो जाता है, वैसे परमेश्वर के समीप प्राप्त होने से सब दोष और दु.ख छूटकर परमेश्वर के गुण कर्म स्वभाव के सदृश जीवात्मा के गुण-कर्म-स्वभाव पवित्र हो जाते हैं। सब भूत, आकाश और प्रकृति से लेके पृथिवी पर्यन्त संसार में जो परमेश्वर व्याप्त होके पूर्ण भर रहा है, जिसके बिना एक कण भी खाली नहीं, जीव को चाहिये कि अपने आत्मा से अत्यन्त सत्याचरण, विद्या, श्रद्धा, भक्ति से उस यथार्थ सत्यस्वरूप परमात्मा को यथावत् जानके, उसके निकट उपस्थित=प्राप्त=अभिमुख होके उस परमानन्द स्वरूप परमात्मा में प्रवेश करके सब दु:खों से छूट उसमे स्वतन्त्रता से विचरता हुआ महाकल्प पर्यन्त सुख ही सुख को भोगे।

परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना सबको अवश्य करनी चाहिये इससे दु.खनिवृत्ति एव परमेश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव के सदृश जीव के हो जाने के अतिरिक्त आत्मा का बल इतना बढेगा कि पर्वत के समान दु:ख प्राप्त होने पर भी उपासक न घबरावेगा और सब प्रसन्नता से सहन कर सकेगा और जो परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना उपासना नहीं करता, वह कृतघ्न और महामूर्ख भी होता है। क्योंकि जिस परमात्मा से इस जगत् के सब पदार्थ जीवों को सुख के लिये दे रखे हैं उसका गुण भूल जाना और ईश्वर ही को न मानना कृतघ्नता और मूर्खता है।

यह उपासना विषयक विचार वेदादि सत्यशास्त्रों के तथा महर्षि दयानन्द महाराज के ही हैं।

आर्यसमाज गोहाना मण्डी (सोनीपत) का चुनाव

प्रधान–प० बदलूराम प्रभाकर, मत्री–सूबेदार करतारसिह आर्य, कोषाध्यक्ष–श्री राममेहर आर्य।

–मन्त्री

प्रवेश सूचना

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर, झज्जर

(महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सम्बद्ध)

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर मे पांचवीं कक्षा उत्तीर्ण विद्यार्थियों के प्रवेश पाने के लिए प्रवेश परीक्षा ३० मई, २००१ को होगी। इस परीक्षा में छठी, सातवीं और आठवीं के विद्यार्थी भाग ले सकते हैं। इस प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद छठी, सातवीं एवं आठवीं कक्षा में प्रवेश दिया जायेगा।

प्रधानाचार्य :
महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर
जिला झज्जर (हरयाणा)

थियोसोफिकल सोसाइटी और आर्यसमाज

❑ **प्रतापसिंह शास्त्री**, एम ए, पत्रकार, २५ गोल्डन विहार, गगवा रोड, हिसार

एक रूसी महिला ब्लैवेटस्की इसकी प्रबन्धकर्त्री थी। १२ अगस्त सन् १८३१ ई० में एक रूस प्रवासी जर्मन परिवार में उसका जन्म हुआ और सन् १८४८ में १७ वर्ष की आयु में ब्लैवेटस्की के कथनानुसार ७० वर्षीय एक रूसी अफसर एन०वी० ब्लैवेटस्की के साथ उसकी शादी हुई। उसे बचपन से ही आध्यात्म विद्या का शोक था। सन् १८४८-१८७२ तक का उसका जीवन इन्हीं साधनाओं मे तथा दुवृत्ततापूर्वक बीता। वह स्वय अपनी जीवन पुस्तक मे से एक पृष्ठ को फाड देना चाहती थी। फरवरी १८८६ में अपने एक पत्र में 'सो सोलोवयाफ' को 'माई कन्फैशन' लेख भेजते हुए लिखा था कि मैंने सिनेट को अपने सस्मरण सिनेट की इच्छानुसार छापने का निषेध किया है। मैं स्वय सत्यतापूर्वक उसे प्रकाशित करूगी। ईश्वर की दुनिया के सामने उसका अपना तथा दूसरो का गन्द (अनाचार) लोगो के सामने आयेगा। मैं कुछ भी नहीं छिपाऊगी और मानव जाति के नैतिक अध:पतन का यह सेटुरनेलिया (शनि के आदर मे दिसम्बर के मध्य मे प्राचीन रोम में मनाया जाने वाला एक पर्व जिसमे सभी प्रकार के आमोद प्रमोद की छूट होती थी) होगा। इस समय में वह मेट्रोविच नामक व्यक्ति के साथ भी रही और उसका एक पुत्र भी हुआ किन्तु अपने को कुमारिका प्रख्यात करने के बाद उसने उस बालक के बारे मे बाद में कथानक गढा। उपर्युक्त अज्ञातवास की समाप्ति पर सन् १८७२ में हम उसे काहिरा में प्रेतविद्या तथा मृतात्माओं को बुलाने द्वारा जीविका उपार्जन करता हुआ पाते हैं। इन्हीं प्रेतात्मा प्रदर्शनो मे उसकी श्रीमती कूलोम से भेंट हुई जिसने अर्थसकट में उसकी पर्याप्त सहायता की। प्राचीन मिश्री जादू सीखकर वह ७ जुलाई १८७३ को अमेरिका पहुंची। अमेरिका में उन दिनो प्रेतविद्या का बडा शोर था। सन् १८७४ में एक ऐसे ही प्रदर्शन में उसका कर्नल अलकाट से परिचय हुआ। दोनों ने अमेरिका मे प्रेतविद्या का उचित क्षेत्र पाया। अल्काट ने ब्लैवेटस्की के उच्चकुल तथा दीर्घ साधना का ढोल पीटना शुरू किया किन्तु जल्दी ही 'जान किग' नामक व्यक्ति से इस ढोल की पोल खुलने लगी। ब्लैवेटस्की इससे घबरा गई क्योंकि अब इस व्यवसाय से उनकी आजीविका घटने लगी थी। अपने पत्रों में वह इस बात पर दु ख प्रकट करती है कि पाच महीने में उसकी पुस्तक की एक हजार प्रतिया भी नहीं बिकीं। अल्काट यद्यपि आर्थिक त्याग कर रहा है किन्तु उसको बडे परिवार का पोषण करना प्रतीत हो रहा है। १८ जुलाई १८७५ के पत्र मे वह लिखती है–

यह मेरा दु ख है। कल मेरे पास खाने को कुछ भी नहीं होगा। कुछ असाधारण वस्तु गढ़नी पडेगी। इसमें संदेह है कि अल्काट का 'मिरेकल क्लब' कुछ सहायक सिद्ध हो सकेगा। मैं अन्त तक सघर्ष करूगी। इसी सघर्ष के परिणाम स्वरूप ७ सितम्बर १८७५ को न्यूयार्क में थियोसोफिकल सोसाइटी स्थापित की गई। एक पत्र में वह इस पर सन्तोष प्रकट करती है कि इस सोसाइटी का उपकोषाध्यक्ष न्यूटन एक लखपति व्यक्ति है। ब्लैवेटस्की के अगले दो वर्ष बडी निर्विघ्नता से कटे। अप्रैल १८७५ में ब्लैवेटस्की ने पति के जीवित रहते हुए एक आर्मीनियन 'माईकेल वेटले' से यह कहकर शादी की कि वह विधवा है तथा उसने अपनी आयु ४३ वर्ष के स्थान पर ३६ वर्ष बतायी। सन् १८७७ मे दो वर्ष मे भगीरथ परिश्रम के बाद उसने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'Isis Unveiled' प्रकाशित की। इसमे प्राचीन धर्मों का समर्थन था तथा चमत्कारो, हिप्नोटिज्म, दूर श्रवण, समाधि आदि का वर्णन एव वर्तमान ईसाइयत और विज्ञान के विरुद्ध जबरदस्त जिहाद था। "सैनफ्रांसिस्को" के कोलमैन ने शीघ्र ही यह सिद्ध कर दिया कि यह पुस्तक बिना कृतज्ञता प्रकाश किये पुराने ग्रन्थो के सदर्भ को चुराकर सगृहीत की गई है। होम ने भी थियोसोफिस्टो Lights and Shadows of Spiritualism में पोल खोली। ब्लैवेटस्की का अब अमेरिका या यूरोप में रहना बहुत कठिन हो गया और उसने भारत आने का निश्चय किया। वह एक पत्र मे लिखती है कि यही कारण है कि मैं सदा के लिए भारत जा रही हू। लज्जा और तिरस्कार के कारण मैं एक ऐसी जगह जाना चाहता हू जहा मुझे कोई जानने वाला न हो। होम की दुर्भावना ने यूरोप मे हमेशा के लिए मुझे तबाह कर दिया है।

इन परिस्थितियो मे जनवरी १८७९ में मैडम ब्लैवेटस्की तथा कर्नल अल्काट भारत पहुँचे। पहले उन्होने स्वामी दयानन्द जी की शरण ली किन्तु जब उन्हें यह विश्वास हो गया कि भारत मे इतना अधिक अन्ध विश्वास है कि अनुयायी मिलना कठिन नहीं तो उन्होंने स्पष्टतया कुछ ऐसी बातो का प्रचार करना शुरू किया जो आर्यसमाज के सिद्धान्तो के प्रतिकूल था। स्वामी दयानन्द जी ने उन्हे अपनी पूर्व प्रतिज्ञाओ का तथा पत्रों का स्मरण कराया किन्तु सब निष्फल हुआ और १८८१ मे दोनो सस्थाओ का सर्वथा पृथक्करण हुआ।

श्रीमती ब्लैवेटस्की तथा कर्नल अल्काट ने भारत का भ्रमण किया। श्री ब्लैवेटस्की ने अनेक स्थानो पर चमत्कार दिखाकर लोगों का ध्यान थियोसोफी की ओर खींचा। काग्रेस के प्रारम्भिक सस्थापको मे श्री ह्यूम के घर पर, शिमला में ब्लैवेटस्की ने श्रीमती ह्यूम के एक खोये हुए सोने के काटे का ठीक पता बताकर बहुत प्रसिद्धि प्राप्त की। किन्तु शीघ्र ही 'पायोनिर', टाइम्स ऑफ इण्डिया' व 'बाम्बे गजट' द्वारा लोगो को यह ज्ञात हुआ कि श्री ह्यूम के परिवार का एक व्यक्ति ब्लैवेटस्की से पहले मिलता रहा था। ब्लैवेटस्की जिसे चमत्कार कहती थी वह काम इसी व्यक्ति द्वारा करवाया गया था। बाद मे श्री ह्यूम ने यह कहा कि यह एक बहुत बडी प्रवचना थी। भारतीयो मे अपने को लोकप्रिय बनाने के लिए थियोसोफिकल सोसाइटी के नेता भारतीय धर्मों की ओर झुके। बौद्धों का तन्त्रवाद ब्लैवेटस्की को बहुत रुचिकर प्रतीत हुआ। अडयार (मद्रास) के एक कक्ष में, उसे तिब्बत के कूट होमी तथा अन्य गुरुओं से गुप्त संदेश प्राप्त होते थे। आर्यसमाज से थियोसोफिकल सोसाइटी का सम्बन्ध विच्छेद वैसे तो १८८१ मे ही होगया था लेकिन विधिवत् विज्ञापन आदि से सन् १८८२ के फरवरी मार्च में सर्वथा पृथक्करण हो गया। इस समय तक आर्यसमाज के कारण भारत में थियोसोफि की ६० से अधिक शाखाएं स्थापित हो चुकी थी और सन् १८८४ तक तो थियोसोफी की १०० से ऊपर शाखाए स्थापित होगई। इसी वर्ष २१ फरवरी १८८४ को कर्नल कल्काट व मैडम ब्लैवेटस्की विलायत चले गये। उनके बाद शिष्यों को ब्लैवेटस्की का उपर्युक्त कक्ष (अडयार (मद्रास) में स्थित) देखने का कुतूहल उत्पन्न हुआ। इस विषय को लेकर दो दल हो गये और एक दल ने मैडम ब्लैवेटस्की के सम्पूर्ण पत्र क्रिश्चियन कॉलेज मैगनीज को दे दिये और दूसरे दल ने अपने पर जांच की आच आने देने के लिए मैडम ब्लैवेटस्की का यह विशेष कक्ष ही नष्ट कर दिया। कैम्ब्रीज के दर्शन के प्रोफेसर श्री हेनरी सिजविक ने इस सारे काण्ड प्रेतवाद व भूत विद्या की सत्यता का अन्वेषण करने के लिए श्री रिचर्ड हागसन को भेजा। उसका स्वय इस विद्या पर विश्वास था और उसने सन् १८८४ के अन्त में विलायत से कर्नल अल्काट व मैडम ब्लैवेटस्की के लौटने पर उन्हीं से इस विषय की जाच का प्रारम्भ किया। उसके सूक्ष्म अन्वेषण का यह परिणाम था कि प्रत्येक चामत्कारिक घटना की वह जहां तक जाच कर सका है छलमात्र है। तिब्बत से आने वाली कूट हूकी के पत्र ब्लैवेटस्की के स्वयं लिखे हुए थे। वह स्वय लिखती और डाक मे डलवा देती जो डाक से उसके पास सोसाइटी कार्यालय मे आ जाते। मैडम ब्लैवेटस्की के पत्रो के प्रकाशित होने पर ब्लैवेटस्की ने यह कहा था कि वे पत्र झूठे हैं और अदालत मे, पत्र प्रकाशित करने वाले श्रीमती कूलोम पर वह मुकदमा चलाकर अपने को निर्दोष सिद्ध करेगी। बहुत समय बीतने पर भी जब उसकी ओर से कोई मुकदमा न चला तो श्रीमती कूलोम ने उन पत्रों को सार्वजनिक रूप से, जाली कहने वालों पर मानहानि का अभियोग चलाने का निश्चय किया तथा एक थियोसोफिस्ट जनरल मारगन की मानहानि के लिए २ अप्रैल तक क्षमा मागने का नोटिस दिया। मैडम ब्लैवेटस्की अदालत की जाच से घबराती थी। उसे डर था कि अदालत में बहुत सी बाते खुल जायेगी। गर्म जलवायु उसके स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद है इस आशय के डॉक्टरी प्रमाण पत्र के आधार पर उसने पासपोर्ट प्राप्त किया और २ अप्रैल को वह एक जहाज में बैठकर यूरोप के लिए रवाना हो गई। उसके यूरोप जाने का कारण बीमारी नहीं अपितु मुकदमें का डर था। यह सब रहस्य उसके पत्रों से सिद्ध हुए। यह मैडम ब्लैवेटस्की एक विलक्षण, महाझूठी, मक्कार, ठग व धूर्त्ता थी जो सन् १८९१ में मृत्यु को प्राप्त हुई।

यह आन्दोलन इस महिला के निधन के बाद समाप्त प्राय होगया लेकिन कुछ परिवर्तन के साथ भारत में चलता रहा लेकिन इसका कोई विशेष महत्त्व नहीं। श्री एनी बेसेण्ट भी इस आन्दोलन (थियोसोफिकल सोसाइटी) की नेत्री बनी। वर्तमान में भी यह सोसाइटी भारत में है किन्तु मृतप्राय है।

आर्य-संसार

चरित्र निर्माण एवं आधुनिक व्यायाम प्रशिक्षण शिविर

आर्यवीर दल हरयाणा के तत्त्वावधान मे ग्रीष्म अवकाश मे निम्नलिखित शिविरों का आयोजन किया जा रहा है जिसमें युवको का चरित्र निर्माण तथा आधुनिक व्यायाम के अन्तर्गत आसन, प्राणायाम, जुड़ो-कराटे, तलवार-भाला-मलखम्भ इत्यादि का प्रशिक्षण सुयोग्य प्रशिक्षकों के द्वारा दिया जायेगा।

१	२० मई से २७ मई	आर्य बाल विद्यालय, पानीपत
२	२० मई से २९ मई	आर्यसमाज नरवाना
३	२५ मई से २ जून	प्रान्तीय आर्यवीर शिविर, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ
४	२४ मई से १ जून	यदुवशी विद्यालय, बुचाली रोड, महेन्द्रगढ
५	३ जून से १० जून	डी ए वी स्कूल करनाल
६	१० जून से १७ जून	दयानन्द मठ, रोहतक
७	१७ जून से २४ जून	वैदिक आश्रम, रेवाडी
८	२२ जून से १ जुलाई	आर्यसमाज कनीना

आर्यवीरांगना शिविर

२० मई से २७ मई — दयानन्द पब्लिक स्कूल, पानीपत

—वेदप्रकाश आर्य, मन्त्री

पुण्यतिथि यज्ञ सम्पन्न

दिनाक ५-५-२००१ को प्रधान अशोककुमार आर्यसमाज मोहल्ला पुराना, कोसली मे स्वामी जीवानन्द जी नैष्ठिक की अध्यक्षता में प्रधान जी के छोटे भाई स्वर्गीय पवनकुमार की ६वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में यज्ञ-प्रवचन हुआ। ५१ रुपये आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को दान दिया।

—भगवान्सिह आर्य, कोसली

सूचना—शुद्धि आन्दोलन हेतु सहायता

शुद्धि कार्य में सहयोग

आर्यसमाज मन्दिर दीवान हाल दिल्ली में आयोजित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा की बैठक में उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा उडीसा के सरक्षक एव गुरुकुल आमसेना के आचार्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती द्वारा ईसाई बहुल क्षेत्र मे किए जा रहे शुद्धि कार्य की प्रशसा की गई एव पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया गया।

इस अवसर पर सभा प्रधान स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती द्वारा स्वामी धर्मानन्द जी के शिष्य स्वामी व्रतानन्द जी को १०२००० रुपये की राशि शुद्धि कार्य के लिए सहायतार्थ भेट की गई।

१	सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली	५१०००-०० रुपये
२	आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक	५१०००-०० रुपये

विशेष—आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की इक्यावन हजार की सहायता राशि मे निम्नलिखित महानुभावों का विशेष योगदान रहा।

१	सभा प्रधान स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती (व्यक्तिगत)	११०००-००
२	आर्य केन्द्रीय सभा, फरीदाबाद (प्रो० शेरसिह जी प्रेरणा से)	११०००-००
३	आर्य केन्द्रीय सभा, फरीदाबाद (स्वामी अग्निवेश जी की प्रेरणा से)	११०००-००
४	आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा प्रदत्त शेष राशि	१८०००-००

—सभामन्त्री

युवक निर्माण प्रशिक्षण शिविर बहीन (फरीदाबाद)

हरयाणा आर्य युवक परिषद् के तत्त्वावधान में २७ मई से ३ जून तक युवाओ को योगासन, प्राणायाम, दण्ड, बैठक, जुड़ो-कराटे, बॉक्सिग, प्राकृतिक चिकित्सा आदि के अतिरिक्त आर्यसमाज एव वैदिक धर्म की मूल मान्यताओं की जानकारी देने के लिए राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बहीन (फरीदाबाद) में युवक निर्माण प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

सम्पर्क करें—**दयानन्द माध्यमिक बाल विद्यालय**
सोहना रोड, पलवल (फरीदाबाद)
हरयाणा-१२११०२

शिवराम विद्यावाचस्पति
शिविर सयोजक
दूरभाष ०१२७५-३८६७४

पर्यावरण शुद्धि एवं गायत्री महायज्ञ सम्पन्न

स्वामी चिदानन्द आश्रम, चापड़ा घाट, नर्मदा का तट, किटी, जिला देवास (म०प्र०) में दिनाक २१ अप्रैल से २३ अप्रैल, २००१ तक 'पर्यावरण-शुद्धि एव गायत्री महायज्ञ' युवा वैदिक विद्वान् आचार्य डॉ० संजयदेव (इन्दौर) के ब्रह्मत्व मे अत्यन्त हर्षोल्लास के वातावरण में सम्पन्न हुआ। इस महायज्ञ में प० दीपचन्द (भिवानी) तथा प० विजयकुमार (होशंगाबाद) ने वेदपाठ किया। —जगदीश पटेल, ग्राम-बिचकुआ (देवास) म०प्र०

महात्मा हंसराज जयन्ती सम्पन्न

कानपुर। हमारे देश के प्रथम भारतीय प्राचार्य महात्मा हसराज ने अपना सारा जीवन आर्यसमाज और डी०ए०वी० कॉलेज को समर्पित कर दिया। उन्होने डी०ए०वी० कॉलेज लाहौर से जीवन भर कभी भी कोई वेतन नहीं लिया।

उपरोक्त विचार आर्यनेता समाज तथा केन्द्रीय आर्यसभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने आर्यसमाज मन्दिर गोविन्द नगर के सभागार मे आयोजित महात्मा हसराज जयन्ती समारोह की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किये।

श्री आर्य ने आगे कहा कि महात्मा हसराज का जीवन सरल, विनम्रता, त्याग, तपस्या, समर्पण भावना से भरा था। उन्होंने डी०ए०वी० कॉलेज लाहौर के प्राचार्य के नाते छात्रो में देशभक्ति की प्रेरणा प्रदान करते हुए भगतसिह जैसे अनेक छात्रो को क्रान्तिकारी बनाया। —बाल गोविन्द आर्य, मन्त्री

शोक समाचार

बडे दुःख के साथ हमे सूचित करना पड रहा है कि आर्यसमाज सिलीगुडी के भूतपूर्व प्रधान श्री रमेश प्रसाद गुप्त का आकस्मिक स्वर्गवास दिनाक २२ अप्रैल, २००१ रविवार को हो गया। उनका जीवन याज्ञिक एव आर्यसमाज के प्रति समर्पित था। उनका निधन आर्यजगत् के लिये एक अपूरणीय क्षति है।

—मोहनचन्द्र गुप्त
मन्त्री—आर्यसमाज सिलीगुडी (दार्जिलिंग)

सभा उपप्रधान चौ० सूबेसिंह के पौत्र का नामकरण संस्कार सम्पन्न

दिनाक १३-५-२००१ को चौ० सूबेसिह सभा उपप्रधान के पौत्र स्क्वैड्रन लीडर श्री सूरतसिह तक्षक के सुपुत्र का नामकरण सस्कार श्री वेदप्रकाश जी साधक के ब्रह्मत्व मे उपप्रधान जी के निवास स्थान ३४, विकास नगर, रोहतक में गरिमापूर्ण विधि से सम्पन्न हुआ।

नवजात शिशु को 'अभिमन्यु' नाम से अलकृत किया गया। साधक जी एव सभा के कार्यकर्ता प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी ने नामकरण सस्कार के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए नवजात शिशु के उज्ज्वल भविष्य एव दीर्घायुष्य की कामना करते हुए चौ० धर्मचन्द अन्तरग सदस्य, हैडमास्टर श्री किरणपाल सिह (नवजात शिशु के नाना), प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास सभा मन्त्री, श्रीमती धर्मचन्द तथा तक्षक परिवार के अन्य सगे सम्बन्धियो की उपस्थिति मे चि० अभिमन्यु को शुभाशीर्वाद प्रदान किया। साथ ही आशा प्रकट की कि चि० अभिमन्यु भी आगे चलकर अपने दादा जी के समान वैदिक विचारधारा का सवाहक बनेगा। चौ० सूबेसिह के छोटे-छोटे नाती-पोतियो द्वारा यज्ञ से पूर्व सध्या के मत्र सुनाकर स्वामी जी से उत्साहवर्धन पुरस्कार प्राप्त करना इस अवसर की एक प्रमुख विशेषता थी। परिवार ने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को इस अवसर पर २०० रुपये वेदप्रचार के लिए प्रदान किए तथा यज्ञ के ब्रह्मा एव स्वामी इन्द्रवेश जी को यथायोग्य दक्षिणा से सम्मानित किया। चि० अभिमन्यु के नाना जी ने भी सभी विशिष्ट अभ्यागतो का यथोचित राशि भेटकर मान सम्मान किया। अन्त मे प्रसाद वितरण एव दुग्धपान के साथ श्रद्धा एव हर्ष के वातावरण ने यह पवित्र कार्य सम्पन्न हुआ। आस्ट्रेलिया मे वायुसेना के विशेष कोर्स की ट्रेनिंग के लिए विदेश गए हुए अपने पिताश्री से आशीर्वाद लेने के लिए चि० अभिमन्यु भी शीघ्र ही अपनी माता जी के साथ अपनी प्रथम विदेशयात्रा प्रस्थान की तैयारी मे सलग्न है। —सभामन्त्री

चरित्र निर्माण एवं व्यायाम प्रशिक्षण शिविर

रविवार दिनांक १० जून, २००१ से रविवार १७ जून २००१ तक

आपको यह जानकर अति प्रसन्नता होगी कि आर्यवीर दल, रोहतक मण्डल के तत्त्वावधान मे १० जून से १७ जून तक **चौ० लखीराम आर्य अनाथालय, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक** मे एक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है जिसमे देश की भावी पीढ़ी के उचित मार्गदर्शन तथा उनमें नैतिकता, आध्यात्मिकता, सदाचार, कर्त्तव्य परायणता, राष्ट्रभक्ति एवं धार्मिकता के प्रसुप्त भावो को जागृत करने का पुरुषार्थ किया जावेगा। शिविर मे शारीरिक मानसिक एव आध्यात्मिक विकास के मूल सूत्रो का योग्य शिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण दिया जावेगा जिसमें भारतीय व्यायाम पद्धति तथा योगासन-प्राणायाम, दण्ड-बैठक, शस्त्र-सचालन, लाठी ,भाला, तलवार और जूडो-कराटे (कुग्फू) का प्रशिक्षण भी सम्मिलित होगा।

बौद्धिक प्रशिक्षण—सर्वश्री स्वामी इन्द्रवेश जी, स्वामी जीवानन्द जी, प्रो० राम विचार जी, प्रो० ओमकुमार जी, वेदप्रकाश जी आर्य (महामन्त्री), चौ० राममेहर जी (एडवोकेट), डॉ० सुरेन्द्रकुमार जी, मास्टर वेदप्रकाश जी, आचार्य भद्रसेन जी, आचार्य सत्यव्रत जी, चौ० अतरचन्द जी गुगनानी, म० गुरुदत्त जी, मा० घनश्यामदास जी, डॉ० धर्मपाल जी, आ० सुदर्शनदेव जी तथा अन्य वैदिक विद्वानो द्वारा समय-समय पर दिया जावेगा।

शारीरिक व्यायाम प्रशिक्षण—सर्वश्री अनिल आर्य, प्रमोद आर्य, सतीश आर्य, रमाकात आर्य एवम् दीपक आर्य। —निवेदक आर्यवीर दल, रोहतक मण्डल

अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के निर्णय की सूचना

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन १३-१४ अक्तूबर, २००१ को दिल्ली में

आर्यसमाज स्थापना के १२५ वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में नई दिल्ली में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के आयोजन के लिए दिनाक २२-४-२००१ को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरग सभा मे पारित प्रस्ताव सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपनी दिनाक १२-५-२००१ की अन्तरंग सभा की बैठक में सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया है। सम्मेलन १३-१४ अक्तूबर २००१ को दिल्ली मे होगा।

आर्य महासम्मेलन पूर्णत सार्वदेशिक सभा के नेतृत्व मे आयोजित होगा। मुख्य कार्यालय भी सार्वदेशिक सभा भवन मे रहेगा।

इसके लिए सभाप्रधान एव सम्मेलन के अध्यक्ष पूज्यपाद स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने कार्य सचालनार्थ प्रमुख व्यक्तियो की एक सचालन समिति का गठन कर दिया है। सम्मेलन के सयोजक स्वामी अग्निवेश तथा सहसयोजक श्री जगवीरसिह एडवोकेट होगे। विस्तृत कार्यक्रम की रूपरेखा शीघ्र ही प्रकाशित की जा रही है।

–सभामन्त्री

आवश्यक सूचना

प्रतिनिधि फार्म भेजने का तीसरा एवं अन्तिम अवसर

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का त्रिवार्षिक साधारण अधिवेशन (चुनाव) ९ अगस्त, २००१ से पूर्व होना है। आर्यसमाज के अधिकारियों की मांग पर सभा प्रधान जी ने प्रतिनिधि फार्म भरकर भेजने का प्रथम अवसर ३० अप्रैल तक, दूसरा अवसर १५ मई, २००१ तक दिया गया था। अब तीसरा एवं अन्तिम अवसर ३१ मई, २००१ तक कर दिया गया है।

१ नए प्रतिनिधियो की स्वीकृति के लिए सभा से सम्बन्धित प्रत्येक आर्यसमाज को पिछले तीन वर्षों का वेदप्रचार तथा दशांश की राशि के साथ-साथ सर्वहितकारी का शुल्क ६० रुपये वार्षिक भेजना अनिवार्य है। वर्ष ९८-९९, ९९-२०००, २०००-२००१ का शुल्क जमा न होने पर प्रतिनिधि स्वीकृत नहीं होगे।

२ प्रतिनिधि फार्म भरते समय प्रतिनिधि फार्म के सभी कॉलम पूरे भरे जैसे प्रतिनिधि फार्म के प्रथम पेज पर निवेदन-पत्र, प्रतिनिधि चुनने की साधारण सभा की तारीख, प्रधान, मत्री व कोषाध्यक्ष के हस्ताक्षर करवाने अनिवार्य हैं।

३ चुने गए प्रतिनिधि का प्रतिज्ञा पत्र व निश्चय-पत्र हस्ताक्षर करवाकर प्रधान व मत्री से प्रमाणित करवाकर भेजे।

४ प्रतिनिधि फार्म के पेज नं० २ पर नाम आर्य सभासद्, पिता का नाम, व्यवसाय, आयु, शुल्क की दर (मासिक/वार्षिक), शुल्क जो वर्ष भर मे समाज को इस सभासद् से प्राप्त हुआ।

५ प्रतिनिधि फार्म पर जहा भी, मत्री, प्रधान, कोषाध्यक्ष के हस्ताक्षर का कॉलम है उनके हस्ताक्षर अवश्य करवाकर भेजें।

अत जिन आर्यसमाजो ने वर्ष ९८-९९, ९९-२०००, २०००-२००१ अर्थात् मार्च २००१ तक का तीन वर्षों का वेदप्रचार, दशाश तथा सर्वहितकारी शुल्क नहीं भेजा है उसे शीघ्र सभा प्रचारको अथवा मनीआर्डर द्वारा सभा को भेजने का कष्ट करे। आपसे अनुरोध है कि आप इस सम्बन्ध मे यथाशीघ्र कार्यवाही कर अपना तथा अपने आर्यसमाज का पूर्ण सहयोग प्रदान करे। प्रतिनिधि फार्म जांच करने एव त्रुटिया दूर करने मे बहुत अधिक समय लगता है। अत इसके बाद आगे तिथि नहीं बढाई जायेगी। समय पर सभा का त्रिवार्षिक चुनाव कराने के लिए आप सभी का सहयोग अपेक्षित है।

–प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामन्त्री

निमन्त्रण-पत्र

सेवा में,

श्री विक्रम प्रतिष्ठान, अमेरिका द्वारा प्रतिष्ठापित सम्मान समारोह का गुरुकुल झज्जर में आयोजम

आपको अत्यन्त हर्ष के साथ सूचित किया जाता है कि विद्वज्जनों के सम्मानार्थ श्री विक्रम प्रतिष्ठान, अमेरिका द्वारा प्रतिष्ठापित इस वर्ष का सम्मान समारोह ३० मई, २००१ को प्रात ९-०० बजे गुरुकुल झज्जर मे आयोजित हो रहा है। सम्मान-समारोह समिति ने इस वर्ष मनुस्मृति के प्रक्षेपानुसंधानकर्ता एव व्याख्याता डॉ० सुरेन्द्रकुमार (झज्जर) आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता स्वामी व्रतानन्द जी गुरुकुल आमसेना, उडीसा को सम्मानित करने का निर्णय लिया है। इस समारोह में सम्मान-समारोह के प्रतिष्ठाता डॉ० वीरदेव जी, प्राचार्य डी०ए०वी० कॉलिज अमेरिका भी सपरिवार उपस्थित रहेंगे। डॉ० वीरदेव जी गुरुकुल झज्जर के सुयोग्य स्नातकों में से एक हैं। गुरुकुल झज्जर की ओर से इस समारोह में उन्हें भी सम्मानित किया जाएगा। आपसे अनुरोध है कि आप इष्ट मित्रों सहित पहुंचकर समारोह की शोभा बढायें।

आपको यह भी सूचित किया जाता है कि गुरुकुल मे नये विद्यार्थियों का प्रवेश भी ३० मई, २००१ को ही होगा। प्रवेश के इच्छुक अभिभावक प्रवेश-परीक्षा के लिए प्रात ९ बजे तक गुरुकुल में अवश्य पहुच जायें।

निवेदक

स्वामी ओमानन्द सरस्वती	**वेदव्रत शास्त्री**	**डॉ० विजयकुमार**
आचार्य–गुरुकुल झज्जर	प्रधान	मन्त्री

तथा सम्मान समारोह समिति के सदस्य

आचार्य विजयपाल	**डॉ० जगदेव विद्यालंकार**
(गुरुकुल झज्जर)	प्राध्यापक राजकीय महाविद्यालय दुबलधन
श्री धर्मपाल आर्य	**डॉ० धर्मवीर**
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली	मन्त्री–परोपकारिणी सभा, अजमेर

आर्यसमाज मन्दिर भाण्डवा में आयोज्यमान पौरोहित्य प्रशिक्षण शिविर के सम्बन्ध में आवश्यक सूचना

पौरोहित्य सीखने के इच्छुक आर्यजनो को सूचित किया जाता है कि आर्यसमाज भाण्डवा द्वारा सकल्पित पौरोहित्य प्रशिक्षण शिविर को प्रशिक्षण विद्वानों की व्यवस्था न होने के कारण स्थगित करके जून माह के प्रारम्भ में आयोजित करने का निश्चय किया गया है। विद्वानों की स्वीकृति मिलने पर यथासमय सूचना प्रकाशित कर दी जायेगी। प्रशिक्षणार्थी सम्पर्क करें।

–धर्मपाल आर्य शास्त्री, मन्त्री–आर्यसमाज भाण्डवा (भिवानी) हरयाणा

आर्यसमाज बालधन कलां जिला रेवाड़ी का चुनाव

प्रधान–श्री शिवराम जी आर्य, उपप्रधान–देवकरण, मन्त्री–मा० अमरसिंह, उपमन्त्री–श्री अतरसिह, कोषाध्यक्ष–श्री रामोतार आर्य, सहकोषाध्यक्ष–श्री कवरसिह, पुस्तकाध्यक्ष–श्री रामपत।

–रामकरण आर्य, आर्यसमाज बालधन कला

सेवा और समर्पण के जीवंत.........(प्रथम पृष्ठ का शेष)

उद्घाटन हुआ। गुरुकुल से स्नातक स्वामी व्रतानन्द सरस्वती की देखरेख मे इस चिकित्सालय का संचालन हो रहा है। प्रतिदिन सैकडों मरीज चिकित्सा का लाभ उठा रहे हैं। अस्पताल में ई सी जी, एक्सरे, पैथालॉजी, ऑक्सीजन, एम्बुलैंस आदि की सुविधाए उपलब्ध हैं। इस क्षेत्र के लोकप्रिय विधायक श्री बसन्तकुमार जी पाण्डा की प्रेरणा से इस क्षेत्र की सासद श्रीमती सगीता देवी ने एक एम्बुलेस उपलब्ध कराया।

शुद्धि आन्दोलन के प्रथम सूत्रधार स्वामी श्रद्धानन्द जी के बाद आपका ही नाम गुजायमान हो रहा है। अब तक लगभग ५० हजार से भी अधिक म प्र एव उडीसा के (कोरापुट, फुलवाणी, सुन्दरगढ) भटके आदिवासी ईसाइयों को पुन वैदिक धर्म (हिन्दू) की दीक्षा दे चुके हैं एव आपके निर्देश एव प्रेरणा से यह कार्य आज भी जारी है। १९९० में कालाहाण्डी जिले के सर्वश्रेष्ठ समाजसेवक का महत्त्वपूर्ण सम्मान भी आपको मिला, इसके साथ १९८३ मे दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह व १९९२ मे भी आप प्रशस्ति पत्र, शाल, श्रीफल आदि से सम्मानित हो चुके थे। वर्तमान मे आप आर्यसमाज के शीर्षस्थ सस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान के पद पर विभूषित हैं। आर्यजगत् भविष्य में आपसे अनेक अपेक्षाए करता है।

साभार 'आर्यजीवन' अप्रैल २००१

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ७६८७४, ५७७७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, प० जगदेवसिह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ७७७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १,९६...
पंजीकरणसंख्या टैक/एच.आर/49/रोहतक/99 ☎ ०१२६२-७७७२२

प्रधानसम्पादक : प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक :- डा० सुदर्शनदेव आचार्य

वर्ष २८ अंक २६ २८ मई, २००१ वार्षिक शुल्क ६०) आजीवन शुल्क ६००) विदेश में १० पौंड एक प्रति १-२५

वर्तमानयुगीन जटिल समस्याएं और उनका वैदिक समाधान

विश्व की वर्तमान परिस्थिति सुखी एव शान्त नहीं दिखाई देती। प्राय करके सभी प्रमुख देशों के प्रमुख नेता समय-समय पर आपस में मिलकर अनेक प्रकार की जटिल समस्याओ का विचार करते रहते हैं। परन्तु भौतिकतावादी चकाचौंध में किये हुये निर्णयों को क्रियान्वयन करने में अनेक प्रकार की बाधाए आती हैं और उनको वहीं छोड दिया जाता है। अदम्य साहस न होने के कारण लोगो का साथ न मिलने के कारण देश अनेक प्रकार की विषम परिस्थिति से गुजरता दिखाई पडता है। मूलत भौतिकतावादी दृष्टिकोण के कारण बात वहीं की वहीं रह जाती है।

आज भौतिकतावादी आकर्षक दृष्टि ने मनुष्य के अस्तित्व को ही सकट मे डाल दिया है। सभ्यता की बात कौन कहे ? विज्ञान ने मारक अस्त्र-शस्त्रो के निर्माण में एक भय और आतक व्याप्त कर दिया है। वैर, विरोध, अविश्वास और घृणा का मनुष्यों में वातावरण बना दिया है। स्वार्थ और सकीर्णता के घेरे मे मनुष्य अच्छी तरह से घिरा हुआ है। राष्ट्रों एव सत्ता के बीच गुटों में उत्पन्न प्रतिस्पर्धा निरन्तर विश्वयुद्ध की ओर धकेल रही है। मनुष्यो में विश्व मैत्री भाव पख लगाकर उड गया है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का भाव कहीं पर भी दिखाई नहीं पडता। भौतिकतावादी व्यवस्था में अविश्वास के बीज बोकर सम्पूर्ण समाज को विषाक्त बना दिया है। आज परिवार में विघटन, संवेदना से रहित, स्वार्थ साधन मे तत्पर, बडो के प्रति निरादर, सन्तान के प्रति दायित्व का अबोध, आय के स्रोतो के प्रति पवित्रता का तिरस्कार, मनमानी और उच्छृखलता को बढावा निरन्तर Generation gap के नाम से दिया जारहा है। इन पर कोई सन्तुष्टिपूर्ण कार्य नहीं होरहा है।

मनुष्य समाज मे फूट, विनाश, विघटन और शत्रुता के भाव आज के भौतिक युग की देन है। मानव जाति मे पारस्परिक विश्वास और प्रेम न के बराबर है। मानव सभ्यता को भुलाकर अपने-अपने स्वार्थों को पूरा करने के लिए अपनी-अपनी बोलिया बोलने लगे हैं। अज्ञान, अन्याय और अभाव एव सामाजिक बुराइया व विषमताओ के प्रति हम भौतिकतावादी स्थिति ने अक्षम बना दिये हैं। हमारे समाज मे एक वर्ग सफलता की चरमसीमा पर खडा है और साधनहीन विपन्न लोग गहरे अधेरे के गर्त मे पडे हैं। न्यूनाधिक ऐसे ही बडे राष्ट्र छोटे राष्ट्रो के प्रति असद् व्यवहार कर रहे हैं। धनी और गरीब की खाई निरन्तर बढ रही है। वाणिज्य और व्यवसाय के क्षेत्र मे एकाधिकार उन्नति के शिखर पर है। कुछ लोग धन के कारण विलासिता में सराबोर हैं तो कुछ लोग शोषण, भुखमरी, महामारी के कारण मौत के शिकार हो रहे हैं। मशीनी युग ने मनुष्य को भी मशीन बना दिया और मनुष्य की सवेदना और सहानुभूति कुण्ठित कर दी। आज विश्व का अस्सी प्रतिशत समाज दानवाकार वणिक् वृत्ति से पीडित, त्रस्त एव अभिशप्त होरहा है।

क्या इस प्रकार की भौतिकवादी अन्धी और विलासितापूर्ण दौड मे ऐसा कोई सिद्धान्त, कोई सूत्र, कोई मान्यता विश्व के साहित्य मे उपलब्ध है, जो इस धधकती ज्वाला को विचारपूर्वक शान्त करने मे सक्षम हो। अमेरिका के राष्ट्रपति बिल क्लिटन भारत आये तथा भारत के प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी अमेरिका गये, उच्च स्तरीय विचार विनियम हुआ। रूस के राष्ट्रपति पुतिन भी भारत आये और गहराई के साथ विचार विनिमय हुआ। ऐसे ही सम्पूर्ण विश्व के राष्ट्रो के राष्ट्राध्यक्ष और राष्ट्रनेता मिलजुलकर विचार विनिमय करते रहते हैं। राष्ट्रो के अन्तर्राष्ट्रीय धरातल पर और विश्व के स्तर पर समस्याए जटिल से जटिलतर होती जाती हैं। शायद दिलो मे कुछ खोट है। स्वार्थ से ऊपर उठकर विश्व के धरातल पर चिन्तन भी उसी स्तर का चाहिए और क्रियान्वयन भी। किन्तु ऐसा हो नहीं पाता। इसलिये समस्याए विषम से विषमतर होती जाती हैं।

विश्व के साहित्य मे सबसे प्राचीन वेद का नाम आता है। यदि विश्व के लोग वैदिक सिद्धान्तो को समग्रता के साथ देखे और मनन करे और दृढता के साथ क्रियान्वयन करे तो विश्व के सभी मानव सुख-समृद्धि के साथ शान्तिपूर्ण जीवन व्यतीत कर सकते हैं। आज की आपाधापी स्वार्थ और संकीर्णता को, अविद्या और जहालत को समूल उखाडकर मानव सभ्यता को पवित्र बनाने में पूर्ण सक्षम है। अथर्ववेद की एक पवित्र ऋचा मे विषमताओ को दूर करने में रामबाण सिद्ध होसकती है। भौतिकतावादी समाज मे जीनेवाले मनुष्य के लिये आज सबसे बडी आवश्यकता है सौमनस्य और मैत्री भाव की। इन दोनो को शिक्षा के माध्यम से सिखाकर आत्मसात् कर लिया जाये तो विश्व स्वर्ग बन सकता है। इसी पवित्र भाव को देखिये इस ऋचा ने कितना सुन्दर रूप दिया है–

अभय मित्रादभयममित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात्।
अभयं नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु।।

हम सब विश्व के लोग मित्रो और अमित्रों के बीच में निर्भय होकर विचरे। ज्ञात और अज्ञात लोग भी हमे भय रहित करें। दिन और रात भी हमारे लिये अभय देनेवाली हो और सम्पूर्ण दिशाए मित्रवत् हो। आज आवश्यकता है मनुष्यो मे विश्व मैत्री भाव जगाने की। प्राय करके हम वेदों को भक्ति और कर्मकाण्ड का ग्रथ मानकर पेटियो मे सुरक्षित रख देते हैं। अध्ययन करके गहराई के साथ चिन्तन मनन करके समाज की बुराई को दूर करने के लिए अच्छे [illegible] नहीं करते। उपरोक्त मत्र मे विश्व के प्राणिमात्र के प्रति निर्भीकता का भाव [illegible] गया है। ऐसे सिद्धान्तो की अनदेखी के कारण विषमताए बढीं और जटिलताए बढती चली गई। यजुर्वेद के निम्नलिखित मत्र की वाणी देखिए विश्व के समस्त प्राणियो के प्रति मैत्री भाव प्रकट करते हुए यजुर्वेद की घोषणा है–

मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।।

समस्त ससार के प्राणिमात्र को हम मित्रता की दृष्टि से देखे। ऐसा यथार्थ आदर्श विश्व के किसी साहित्य मे न हो, नहीं दृष्टिगोचर होता। आज की भौतिकतावादी व्यवस्था मे विषाक्त वातावरण को अमृत बनाने के लिये वेद की कैसी अद्भुत प्रेरणादायक और सबल शिक्षा है। इसकी जानकारी आज के लोगो को शायद नहीं है। जिस दिन विश्व के समाज मे इस प्रकार की स्नेह भरी शिक्षा और विचार व्यवहार दिये जायेंगे उस दिन भौतिकवादी आकर्षण और विषमताए पख लगाकर उड जायेगी। यजुर्वेद के चालीसवे अध्याय के प्रथम मत्र में क्या ही मनोहारी शिक्षाप्रद विचार प्रस्तुत किये गये हैं। सम्पूर्ण ससार भगवान् से आच्छादित है। भगवान् विश्व के कण-कण मे व्याप्त है, सुख-शान्ति चाहनेवाले के लिए जरूरी है परमात्मा द्वारा दिये गये पदार्थो का त्यागपूर्वक उपभोग करे और दूसरे के धन का लोभ और लालच न करें। इस प्रकार की उदात्त शिक्षाए आज के भौतिकतावादी युग मे अपनाने के लिए प्रेरित करना अत्यन्त आवश्यक है। चारो वेदो मे ऐसे बहुमूल्य सूत्र व सिद्धान्त बहुलता से उपलब्ध हैं।

सामाजिक स्नेह का चित्रण करते हुए वेद ने क्या ही सुन्दर सिद्धान्त प्रतिपादित किया है–**'अन्योन्यमभिहर्यत वत्स जातमिवाघ्न्या'** तुरन्त पैदा हुए बछडे के प्रति गाय का स्नेह देखनेवाला होता है। जैसे गाय अपने बछडे से स्नेह करती है वैसे ही हमे भी समाज मे रहते हुए एक दूसरे के प्रति स्नेह सहानुभूति और सौमनस्य का व्यवहार रखना चाहिए।

आज प्रत्येक क्षेत्र मे विषमताए मख खोलकर खडी हैं। धनी और गरीब की मालिक और मजदूर की, स्वामी और सेवक की और तो और खाने पीने के विषय मे भी समर्थ लोगो का साम्राज्य दिखाई देता है। वेद ने इसका सुन्दर सशक्त प्रेरणादायक समाधान प्रस्तुत करते हुए कहा है–'**समानी प्रपा सह वो अन्नभाग समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि।**' विश्व का निर्माण करनेवाला भगवान् हम सब मनुष्यो को [illegible] के एक धुरे मे बाधता है और साथ-साथ जल की व्यवस्था और भोजन की व्यवस्था [illegible]

(शेष पृष्ठ आठ पर)

वैदिक-स्वाध्याय

बुद्धि और कर्म द्वारा नमस्कार की भेंट

समीप आते रहें

ओ३म् उप त्वाग्ने दिवे दिवे दोषावस्तर्धिया वयम्।
नमो भरन्त एमसि।।

ऋ० ११७। साम० पू० ११४।।

शब्दार्थ–(अग्ने) हे अग्ने! (वय) हम (दिवे दिवे) प्रतिदिन (दोषावस्त) रात और दिन के समय (धिया) बुद्धि व कर्म से (नमो भरत) नमस्कार की भेंट लाते हुए (त्वा) तेरे (उप) समीप (एमसि) आ रहे हैं।

विनय–जब से हम उत्पन्न हुए हैं, दिन के पश्चात् रात और रात के पश्चात् दिन आता जाता है। प्रतिदिन एक नया-नया दिन और एक नयी-नयी रात आती जाती हैं। इस तरह यह अनवरत अविश्रान्त काल-चक्र चल रहा है। इस काल-चक्र में हम कहा जा रहे हैं ? हे मेरे प्रभु अग्निदेव! तुमने तो ये अहोरात्र इसलिए रचे हैं कि प्रत्येक अहोरात्र के साथ अपनी आत्मिक उन्नति का दाया और बाया पैर आगे बढाते हुए हम प्रतिदिन तुम्हारे निकट-निकट पहुंचते जायें। यदि हम प्रत्येक अहोरात्र के आरम्भों मे अर्थात् प्रात काल और सायकाल के समय में अपनी बुद्धि द्वारा तुम्हारे आगे झुकते हुए, नमन करते हुए तथा कर्म द्वारा भी अपने 'नम' की भेंट तुम्हारे प्रति लाते हुए, तुम्हारे लिए स्वार्थ त्याग करते हुए चलेंगे तो यह दिन-रात का चक्र हमे एक दिन तुम्हारे चरणो में पहुचा देगा। इसलिए, हे अग्निरूप परमदेव! हम आज से निश्चय करते हैं कि हम प्रत्येक अहोरात्र को (प्रात काल और सायकाल) अपनी बुद्धि तथा कर्म द्वारा तुम्हें नमस्कार की भेट चढाते हुए (आत्म समर्पण व स्वार्थ-त्याग करते हुए) ही अब जीयेंगे और इस तरह जहा प्रत्येक दिन के श्रममय काल में हमारा दायां पैर तुम्हारी तरफ बढेगा वहां प्रत्येक रात्रिकाल मे हमारी उन्नति का बाया पैर उस उन्नति को स्थिर करता जायेगा। हे प्रभो! ये दिन-रात इसलिए प्रतिदिन आते हैं। निश्चय ही आज से प्रत्येक अहोरात्र हमें तुम्हारे समीप लाता जायेगा। आज से प्रतिदिन हम स्वार्थ-त्याग द्वारा पवित्रान्त करण होते हुए और पवित्रान्त करण से प्रात साय तुम्हारी वन्दना करते हुए प्रतिदिन तुम्हारी तरफ आने लगे हैं, हे प्रभो! प्रतिदिन तुम्हारे समीप आते जा रहे हैं। **(वैदिक विनय)**

आर्यसिद्धान्त-शिक्षा

इन्द्रसिंह आर्य, आरजैड-६०, ब्लाक-ओ, नया रोशनपुरा, नजफगढ, दिल्ली-४३

(गताक से आगे)

(ग) असुरों के गुरु 'शुक्र' हुए हैं ऐसा है लोगों का मत।
विषय विद्या का है अत. 'असुर' पद का अर्थ बालक गृहस्थी मनुष्य ही है, यहा अपेक्षित।।
निरक्षरता को मूल से उखाडने के अभिप्राय शुक्राचार्य नित्य किया करते थे विद्या का दान।
उनके सबसे प्रिय शिष्य 'मय' हुए हैं जिनको अपनी कला-कौशल पर रहा है स्वाभिमान।
जिस देव पुरुष के पद चिह्नों पर चलकर मेरा जीवन बना है सुखमय।
हे ससार के लोगो मैं अपराजित हनुमान, उसी परमपूजनीय विश्वकर्मा का हू शिष्य।।

कौन कहता है कि द्रोपदी का चीरहरण हुआ था और श्रीकृष्ण चीरहरण के समय उपस्थित थे ?

(क) प्रतिकामी–हे धर्मपरायण सदाचारिणी देवी, वक्त की ऐसी पडी है पाडवो पर मार।
स्वय हार जाने के बाद युधिष्ठिर ने तुमको भी, दाव पर लगा दिया है, होकर लाचार।
दुर्योधन ने द्यूतसभा मे तुमको बुलाया है अत शीघ्र चलने के लिए हो जाइये तैयार।
अविलम्ब हुआ तो मुझ सेवक को दुष्ट दुर्योधन की सुननी पडेगी अप्रिय फटकार।
द्रोपदी–विदित होता है, पापी दुर्योधन को अपने जीवन से तनिक नहीं है प्यार।
देखना वह युद्ध क्षेत्र मे सहन न कर पायेगा मेरे देवर (भीम) की गदा का एक भी वार।
धिक्कार है, भारतवशी क्षत्रियो को लगता है उनका चरित्र पूर्णतया होगया विनष्ट।
एक वस्त्र में, मुझ द्रोपदी को पुरुषो की सभा में बुलाना कौरवों के लिए नहीं है अभीष्ट।
हारे हुए जुआरी (युधिष्ठिर) से पूछो द्यूतक्रीडा में किसकी हुई है आखिर मे हार।
मुझ द्रोपदी को दाव पर लगाने का युधिष्ठिर को कोई नहीं है अधिकार।
प्रतिकामी ने भरी सभा मे द्रोपदी के विचारों का विस्तार रूप से किया प्रसार।
क्रोधित हो दुर्योधन ने दुशासन से कहा तुम उसे अविलम्ब घसीटकर लेआओ बिना किये विचार।।
अन्यायी दुशासन के कुकृत्यो के सम्मुख द्रोपदी किंचित् नहीं हुई अधीर।
दु ख से कापती हुई श्वसुर के सामने गिर पडी सिर से उतर गया चीर।।
दुष्टात्मा दुर्योधन ने अपनी बाई जाघ दिखलाते हुए कहा हे दासी अब तुम और न बहाओ नीर।
प्रत्युत भीम ने प्रतिज्ञाबद्ध घोषणा की कि वह युद्ध क्षेत्र में तेरी इसी प्यारी जाघ को तोड देगा हे मुहिर।।
अप्रिय समाचार को सुन गधारी ने विदुर के साथ अधर्म सभा मे किया प्रवेश।
दृश्य देखने योग्य था, जैसे नाममात्र को शरीर धारण किये हुए हैं निष्प्राण अवशेष।।
गधारी ने पुत्र को कहा हे दुर्बुद्धि दुर्योधन यह ससार कभी न भूलेगा तुम्हारी अपकीर्ति।
द्रोपदी के प्रति कहे गये दुर्वचन ही तेरी मृत्यु का कारण बनेंगे, देखना कितनी भयानक होगी वह स्थिति।।
हे आर्यपुत्र (धृतराष्ट्र) तुम सान्त्वनापूर्वक पाचाली से कहो, तुम मेरी सब बहुओ मे हो उत्युत्तम।
बैठने के लिए उपयुक्त आसन दो इससे पहिले की उसकी वाणी से कोई अप्रिय शब्द हो उद्गम।।
धृतराष्ट्र ने कहा हे पाचाली! तुम हमसे कोई एक वर मागो निमित्त आदर सत्कार।
पाचाली ने कहा हे भारत, धर्मराज युधिष्ठिर को दास-भाव से मुक्त कर दो यह मेरा वचन प्रथम करो स्वीकार।।
धृतराष्ट्र बोले 'तथास्तु' हे कल्याणी तुम अब कोई और दूसरा वर मागो मैं नहीं करूगा इकार।
हे राजन् मैं भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव को शस्त्रास्त्र, रथ सहित चाहती हू मुझ पर कीजिए एक और उपकार।।
'तथास्तु' हे याज्ञसेनि अब तुम तीसरा वर भी माग सकती हो निमित्त पुरस्कार।
हे राजन्, लोभ धर्म के नाश का मूल है, अत मुझे पाडवों के अतिरिक्त और कुछ नहीं चाहिए सरकार।।
द्रोपदी को अपने प्रश्न का उत्तर नहीं मिला भरी सभा मे कौरव बने सिह से मूषिकाकार।
द्रोपदी ने धृतराष्ट्रपुत्र विकर्ण, विदुर और गधारी के प्रति मुक्त हृदय से प्रकट किया आभार।।
इस प्रकार इन्द्रसिह आर्य बिना नाव के जल में डूबते पांडवो के लिए द्रोपदी बनी पतवार।
पाठकगण यू कहिए कि एक धर्मपरायण पतिव्रता के अत्युत्कृष्ट कर्मों के कारण ही पाडवो की नैय्या लगी थी पार।। (क्रमश.)

जन्मशताब्दी के अवसर पर—

उड़ीसा में आर्यसमाज के समर्पित प्रचारक पं० लिंगराज अग्निहोत्री

❑ मूल लेखक पं० प्रियव्रत दास, भुवनेश्वर

गताक से आगे ......

उनकी माता ने (पिता दिवगत हो चुके थे) अब उनका विवाह कर दिया। पत्नी उमादेवी उस समय उन्नीस वर्ष की थी। पत्नी ही उनकी प्रथम शिष्या बनी जिससे देव प्रतिमाओं को कुए मे डाल दिया और नियमित रूप से संध्या करने लगी। उसने वैदिक उपासना प्रणाली को अपना लिया। उनके दो पुत्र हुए जिनके आरम्भ से ही वैदिक सस्कार कराये गये। जब लिगराज हरिजन बस्ती के निकट के घर में रहने लगे तो पौराणिक समुदाय ने उन्हे नाना कष्ट दिये तथा उत्पीडित किया। जब वे कथित अछूतों को अपने कुएं से पानी भरने देते, उन्हें गायत्री मत्र सिखाते तो लोग उनको तग करते, उनका उपहास करने लगते। लिगराज से लोगों की नाराजगी इसलिए थी कि वे स्थानीयजनों को हिन्दी सिखाते थे। जब वे इधर-उधर व्यर्थ भटकने वाले साधुओ और बाबाओं को सुधारने की कोशिश करते तो शहरी लोग उनके विरुद्ध होजाते।

१९४० मे अपने परिजनों के कट्टर विरोध के उपरान्त उन्होने अपने दोनों पुत्र प्रियव्रत तथा देवदत्त का आर्यसमाज की विधि से उपनयन 'यज्ञोपवीत' कराया। जब उनकी माता की मृत्यु हुई तो वैदिक रीति से उसका अन्त्येष्टि सस्कार किया। इस कारण गाववालो तथा परिवार के लोगों द्वारा उनका विरोध चरम सीमा पर पहुच गया। अपने गाव में उन्होने एक हाई स्कूल की स्थापना की जो जिले का एक विशिष्ट स्कूल था। इसे उसी स्थान पर स्थापित किया गया जहा उडीसा के गाधी श्री गोपबधुदास ने अपना व्याख्यान दिया था। उन्होने गोपबघु की यादगार मे एक पुस्तकालय भी स्थापित किया। उनके अन्य सेवा कार्यो मे कन्या पाठशाला की स्थापना, कुए और तालाब खुदवाया तथा उन्हे स्वच्छ रखने की स्थायी व्यवस्था करना आदि मुख्य हैं। इनसे लोकोपकारी कार्यो मे वे स्वय मजदूरों के काम का निरीक्षण करते, और भवन निर्माण कार्य की पूर्ण चौकसी रखते। उन्होंने मजदूरों से कहा कि वे अपना पारिश्रमिक उन लोगों से लें, जिन्होंने इन कामों में अपना सहयोग करने का वचन दिया है। सेवाभावी लिंगराज उस पर घर में तुरन्त पहुंचते जहा कि किसी की मृत्यु का समाचार उन्हे मिलता। वे मृत व्यक्ति की अन्त्येष्टि में शरीक होते और वैदिक विधि से संस्कार कराते।

१९४३ में उड़ीसा में भयकर अकाल पड़ा। उस समय आर्यप्रतिनिधिसभा पंजाब ने अपने दो प्रचारकों को अकाल पीड़ित सहायता कार्य के लिए लिंगराज के गांव पोलासरा भेजा। पंजाब से आये पं० वेदव्रत शास्त्री और प० अमरनाथ लिगराज की देखरेख मे राहत कार्यों में जुट गये। उसी समय एक महत्त्वपूर्ण कदम उठाकर प० लिंगराज ने स्वग्राम पोलासरा मे आर्यसमाज की स्थापना करदी। सम्भवत यह उडीसा की प्रथम आर्यसमाज थी। ९४ वर्षीय प० वेदव्रत शास्त्री आज भी इस आर्यसमाज मे रहते हैं। प० लिगराज ने ही इन्हे लाहौर के दयानन्द उपदेशक विद्यालय मे अध्ययन के लिए भेजा था।

लिगराज अग्निहोत्री कहलाते थे क्योंकि कलकत्ता से लौटने के बाद उन्होंने नियमित रूप से यज्ञ करना आरम्भ कर दिया था। यदि वे रेल में यात्रा करने तब भी यज्ञ नियमित रूप से करते। वे प्रात तीन बजे उठ जाते और सध्योपासना तथा स्वाध्याय में लग जाते। जब अग्निहोत्र का समय आता तो अन्य जिज्ञासुगण भी उसमें सम्मिलित होते। १९६२ मे उन्होने सन्यास लेलिया तथा उडीसा के वनवासीप्रधान जिलों-कोरापुर तथा कालाहाण्डी मे रहने लगे। उनके अथक प्रयत्न का ही परिणाम था कि अनेक आदिवासियो ने मांसाहार त्याग कर दिया, मद्यपान तथा तलाक आदि बुराइयो को छोड दिया। वनवासियों की स्थिति का अध्ययन करने के लिए जब ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय (इग्लैंड) के प्रो० टी बरुआ उडीसा के कोरापुर जिले मे आये तो उन्हें इस महान् समाजसेवक से मिलकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। अब वे एक दुभाषिये के माध्यम से उनसे वार्तालाप करते। डा० बरुआ ने इन चर्चाओ का सार इग्लैंड के अनेक पत्रो मे प्रकाशित कराया था। प० लिगराज ने उन्हे बताया कि प्राचीन ऋषियो की ही आदिवासी सज्ञा थी न कि आज के इन तथाकथित आदिवासियो की जो सामाजिक दृष्टि से पूर्णतया उपेक्षा का जीवन जीरहे हैं और जगलो मे दयनीय जीवन बिताते हैं। इन वनवासियों तथा पाश्चात्य देशो के लोगो मे अनेक समानताए हैं यथा भोजन पान तथा तलाक आदि। दोनो के लोकगीतो मे तो अद्भुत समानता दिखाई देती है। जब प्रो० बरुआ ने प्राचीन आर्यो द्वारा भारत पर आक्रमण की बात कही तो पं० लिगराज ने उसका तीव्र प्रतिकार किया।

प० लिगराज ने स्त्रीशिक्षा के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य किया था। उनकी बडी पुत्र-वधू श्रीमती शन्नो ने उनके जीवन एव शिक्षाओं से प्रेरणा ली और वैदिक उपदेशिका के रूप में कार्य किया। अब तक उन्होने अनेक सस्कार कराये हैं, विविध ग्रन्थो की रचना की है तथा अमेरिका मारिशस व इंग्लैंड मे वेदप्रचारार्थ जाचुकी हैं। उन्होंने अपनी उड़िया पुस्तक 'वेदपाठ ओ वैदिक कर्मकाण्डरे नारीर अधिकार' में लिखा– "पचास वर्ष पूर्व मैं आपके (अपने श्वसुर प० लिगराज) घर मे पुत्रवधू के रूप मे प्रविष्ट हुई थी और यहा मेरे नेत्रो को एक नया वातावरण मिला था। यहा का दिन उषाकाल की संध्या प्रार्थना, यौगिक व्यायाम, अग्निहोत्र, ध्यान, स्वावलम्बन, दानशीलता, अध्ययन तथा सादगीपूर्ण जीवनादर्श से आरम्भ होता है। यहा वह सब होता है जो व्यक्ति को कर्त्तव्यपरायण तथा दिव्य जीवनयुक्त बनाता है। आपने मुझे यज्ञोपवीत की दीक्षा देकर वैदिक विचार प्रदान किये। मैं आपकी अन्त्येष्टि यात्रा मे वेदमत्रो का उच्चारण करते हुए सम्मिलित हुई। यह दृश्य राजधानी के इस भाग के निवासियो के लिए आश्चर्यप्रद था। यह सब आपके आदेश के अनुसार ही किया था। पिताजी! आज तो मिट्टी की बनी दुर्गा प्रतिमाए आडम्बर और शान से पूजी जाती हैं जबकि जीवित देवियो का अपमान किया जाता है। उन्हे जलाया जाता है। एक विनम्र भेट के रूप में मैं यह पुस्तक आपकी पावन स्मृति मे भेट करती हू।"

पण्डित जी के दोनो पुत्र उडीसा के आर्यसमाजी क्षेत्र में अत्यन्त सक्रिय हैं। उनके बडे पुत्र प्रियव्रतदास ने बचपन से ही एक लेखक तथा वक्ता के रूप मे चमकना आरम्भ किया। वैदिक साहित्य पर उन्होने लगभग ३० ग्रन्थो की रचना की है और अपनी साहित्यिक उपलब्धियो के लिए भारत तथा विदेशो मे सम्मानित हुए हैं। भुवनेश्वर में आर्यसमाज तथा वैदिक अनुसधान परिषद् की स्थापना प० लिगराज के स्वप्नो को साकार करना ही है। यह पुरुषार्थ प० प्रियव्रत ने किया जिनकी उडीसा मे वेदप्रचार मे प्रमुख भूमिका रही और जो इस कारण घर-घर मे जाने गये। उडीसा राज्य के सार्वजनिक निर्माण विभाग के चीफ इजीनियर के पद से वे १९८९ मे अवकाश ले चुके हैं और अब आर्यसमाज के पूर्णकालिक कार्यकर्त्ता हैं। उनके पुत्र देवदत्त एक उद्योगपति तथा दानी हैं। अग्निहोत्री के पौत्र दृढ आर्यसमाजी हैं। यज्ञ प्रकाश और ओमप्रकाश (प० प्रियव्रत के पुत्र) दोनो इजीनियर हैं, साथ ही आर्य साहित्य के प्रणेता तथा आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता हैं।

अग्निहोत्री जी की पत्नी की इक्यासी वर्ष की आयु मे १९९४ मे मृत्यु हुई। उन्होने छब्बीस वर्षों का वैधव्य भोगा। वे जीवन के अन्त तक सध्योपासना करती आर्यसमाज के उत्सवो मे जाती तथा घर आये वैदिक विद्वानो तथा सन्यासियो का आतिथ्य सत्कार करतीं।

प० लिगराज की जन्मशताब्दी के वर्ष मे उनकी स्मृति मे अनेक कार्यक्रम किये जारहे हैं। उनकी उडिया जीवनी का, जो उनके यशस्वी पुत्र प० प्रियव्रत ने लिखी है भुवनेश्वर मे एक भव्य समारोह में लोकार्पण समारोह सम्पन्न हुआ। इसमे अनेक विद्वान् तथा शिक्षाशास्त्री सम्मिलित हुए थे। जीवनी का शीर्षक **'मोर पिता मोर गुरु'** है। उनकी स्मृति मे श्मशान बधु तथा वेदपथिक की उपधिया आरम्भ की गई हैं। लाजपतराय युवा मण्डल ने कोष्ठ निबध लेखन के लिए पुरस्कार घोषित किये हैं। उडीसा के युवको के लिए प० लिगराज अग्निहोत्री का नाम उच्च आदर्श वाले पुरुष के रूप मे चिरस्थायी रहेगा जो यह बताता है कि किस प्रकार एक अनाथ जैसे युवक ने सत्य की खोज के द्वारा एक आदर्श घर का निर्माण किया और उडीसा जैसे पिछडे राज्य मे आर्यप्रचारको का एक सुदृढ सगठन बनाया।

(अनुवादक भवानीलाल भारतीय,
१३९, शहीदनगर, भुवनेश्वर)

भूल सुधार

२१ मई २००१ के सर्वहितकारी साप्ताहिक के पेज न० ७ मे 'सूचना शुद्धि आन्दोलन हेतु सहायता' समाचार मे न० ३ पर 'आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद (स्वामी अग्निवेश जी की प्रेरणा से) ११०००/- रु के स्थान पर स्थान पर स्वामी अग्निवेश जी धर्म प्रतिष्ठान ७-जन्तर-मन्तर रोड, नई दिल्ली ११०००/- रु पढा जाये। —सम्पादक

आर्यसमाज के उत्सव की सूची

आर्यसमाज गोहाना मण्डी (सोनीपत)	१ से ३ जून
आर्यसमाज गोन्दर जिला करनाल	४ से ६ जून
आर्यसमाज मातनहेल (झज्जर) (व्यायाम एव सदाचार प्रशिक्षक शिविर)	१५ से १७ जून
आर्यसमाज कनीना (महेन्द्रगढ)	२५ जून से १ जुलाई

—डॉ० सुदर्शनदेव आचार्य, वेदप्रचाराधिष्ठाता

सर्वहितकारी (साप्ताहिक) की मूल्यवृद्धि की सूचना

कागज एव छपाई तथा डाक शुल्क की मूल्य वृद्धि के कारण १ जुलाई २००१ से सर्वहितकारी (साप्ताहिक) का वार्षिक शुल्क ६० रुपये तथा आजीवन शुल्क ६०० रुपये के स्थान पर ८० रुपये व ८०० रुपये कर दिया गया है। पुराने तथा नये ग्राहक बननेवालों से निवेदन है कि ३० जून २००१ तक वार्षिक शुल्क ६० रुपये तथा आजीवन शुल्क ६०० रुपये भेजकर इस सुविधा का लाभ उठावे। पत्रिका के स्तर मे सुधार के लिए सम्पादक मण्डल प्रयत्नशील है।

आशा है सुधी पाठक मूल्यवृद्धि के लिए क्षमा करेंगे। —सभामन्त्री

अनमोल वचन

१ जेस तरह कीडा कपडो को कुतर डालता है, उसी तरह ईर्ष्या मनुष्य को।
२ क्रोध मूर्खता से प्रारम्भ होता है और पश्चात्ताप पर समाप्त होता है।
३ नम्रता से देवता भी मनुष्य के वश में हो जाते हैं।
४ सम्पन्नता मित्रता बढाती है, विपदा उनकी परख करती है।
५ एक बार निकले बोल वापस नहीं आ सकते, अत एव सोचकर बोलो।
६ तलवार की चोट उतनी तेज नहीं होती, जितनी जिह्वा की।
७ धीरज के सामने भयकर सकट भी धुए के बादलों की तरह उड जाते हैं।
८ तीन सच्चे मित्र हैं—वृद्धा पत्नी, पुराना कुत्ता और पास का धन।

आर्यसमाज मालडा सराय (महेन्द्रगढ़) का चुनाव

प्रधान-श्री रूपचन्द, उपप्रधान-श्री घीसाराम, मत्री-इन्द्राजसिह, उपमत्री-राजसिंह, कोषाध्यक्ष-श्री दयानन्द, पुस्तकाध्यक्ष-श्री मुनीलाल।

आर्यसमाज मोहल्ला पुराना महल कोसली जिला रेवाडी का चुनाव

प्रधान-अशोक कुमार आर्य (पच), उपप्रधान-श्री शीशपालसिह आर्य (पच), मंत्री-श्री वैद्य श्रीचन्द्र आर्य लीलोढ, उपमत्री-राजेन्द्रसिह आर्य, कोषाध्यक्ष-जगमालसिह आर्य, निरीक्षक-श्रीराम आर्य लोछाया आदि। —**अशोककुमार आर्य,** प्रधान

संशोधन—आर्यसमाज भाण्डवा (भिवानी) का पुरोहित प्रशिक्षण शिविर २५ जून से ४ जुलाई तक होगा। —**डॉ० सुदर्शनदेव आचार्य,** वेदप्रचाराधिष्ठाता

आवश्यक सूचना

प्रतिनिधि फार्म भेजने का तीसरा एवं अन्तिम अवसर

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का त्रिवार्षिक साधारण अधिवेशन (चुनाव) ९ अगस्त, २००१ से पूर्व होना है। आर्यसमाज के अधिकारियों की माग पर सभा प्रधान जी ने प्रतिनिधि फार्म भरकर भेजने का प्रथम अवसर ३० अप्रैल तक, दूसरा अवसर १५ मई, २००१ तक दिया गया था। अब तीसरा एव अन्तिम अवसर ३१ मई, २००१ तक कर दिया गया है।

१ नए प्रतिनिधियो की स्वीकृति के लिए सभा से सम्बन्धित प्रत्येक आर्यसमाज को पिछले तीन वर्षो का वेदप्रचार तथा दशाश की राशि के साथ-साथ सर्वहितकारी का शुल्क ६० रुपये वार्षिक भेजना अनिवार्य है। वर्ष ९८-९९, ९९-२०००, २०००-२००१ का शुल्क जमा न होने पर प्रतिनिधि स्वीकृत नहीं होगे।

२ प्रतिनिधि फार्म भरते समय प्रतिनिधि फार्म के सभी कॉलम पूरे भरे जैसे प्रतिनिधि फार्म के प्रथम पेज पर निवेदन-पत्र, प्रतिनिधि चुनने की साधारण सभा की तारीख, प्रधान, मत्री व कोषाध्यक्ष के हस्ताक्षर करवाने अनिवार्य हैं।

३ चुने गए प्रतिनिधि का प्रतिज्ञा पत्र व निश्चय-पत्र हस्ताक्षर करवाकर प्रधान व मत्री से प्रमाणित करवाकर भेजे।

४ प्रतिनिधि फार्म के पेज न० २ पर नाम आर्य सभासद, पिता का नाम, व्यवसाय, आयु, शुल्क की दर (मासिक/वार्षिक), शुल्क जो वर्ष भर में समाज को इस सभासद् से प्राप्त हुआ।

५ प्रतिनिधि फार्म पर जहा भी, मत्री, प्रधान, कोषाध्यक्ष के हस्ताक्षर का कॉलम है उनके हस्ताक्षर अवश्य करवाकर भेजे।

अत जिन आर्यसमाजो ने वर्ष ९८-९९, ९९-२०००, २०००-२००१ अर्थात मार्च २००१ तक का तीन वर्षो का वेदप्रचार, दशाश तथा सर्वहितकारी शुल्क नही भेजा है उसे शीघ्र सभा प्रचारको अथवा मनीआर्डर द्वारा सभा को भेजने का कष्ट करे। आपसे अनुरोध है कि आप इस सम्बन्ध मे यथाशीघ्र कार्यवाही कर अपना तथा अपने आर्यसमाज का पूर्ण सहयोग प्रदान करे। प्रतिनिधि फार्म जाच करने एव त्रुटिया दूर करने मे बहुत अधिक समय लगता है। अतः इसके बाद आगे तिथि नहीं बढाई जायेगी। समय पर सभा का त्रिवार्षिक चुनाव कराने के लिए आप सभी का सहयोग अपेक्षित है।

—**प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामंत्री**

कैसा यह अजब तमाशा है

□ स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

अति सरस सुगम मृदुतर हिन्दी भाषा से नाता तोड रहे।
नीरस कटु और अगरेजी टरटर भाषा से रिस्ता जोड रहे।।
भारत के रहनेवालों के घर अगरेजी का वासा है।
कैसा यह अजब तमाशा है।।१।।

न जाने क्यों इन लोगों ने हिन्दी गिनती ठुकराय दई।
महारानी की कुर्सी ऊपर दासी लाकर बिठलाय दई।।
है सोच यही हिन्दोस्तानी तज रहे भारतीय भाषा है।
कैसा यह अजब तमाशा है।।२।।

सच पूछो तो इन लोगों ने हिन्दी की खाल उधेड दई।
हिन्दी के बीच में जानबूझ गिनती अंगरेजी घुसेड दई।।
आधे तीतर आधे बटेर कह दूं यह बात खुलासा है।
कैसा यह अजब तमाशा है।।३।।

अगरेजी का बनकर काटा चुभ रहा पैर के तलुवे में।
जैसे कोई जहर मिलादे देशी घी के हलुवे में।।
कर देता है जहर मिला थोड़ा यह रत्ती माशा है।
कैसा यह अजब तमाशा है।।४।।

हम धीरे-धीरे बोल रहे वह बोल रहा है तेजी में।
हम गिनती हिन्दी में बोलें वह बोल रहा अगरेजी में।।
कारण यही देश अपने में छाई घोर निराशा है।
कैसा यह अजब तमाशा है।।५।।

शान्तियज्ञ

श्री जगवीरसिह आर्य की माता का ६ मई २००१ को शान्तियज्ञ श्री सुखदेव शास्त्री द्वारा किया गया। श्री जगवीर जी द्वारा आर्यसमाज सांघी को ११०० रुपये व गोशाला खिडवाली को ५०० रुपये एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को १०० रुपये दान दिया गया।

प्रवेश सूचना

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर, झज्जर

(महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सम्बद्ध)

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर में पांचवीं कक्षा उत्तीर्ण विद्यार्थियों के प्रवेश पाने के लिए प्रवेश परीक्षा ३० मई, २००१ को होगी। इस परीक्षा मे छठी, सातवीं और आठवीं के विद्यार्थी भाग ले सकते हैं। इस प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद छठी, सातवीं एवं आठवीं कक्षा में प्रवेश दिया जायेगा।

प्रधानाचार्य :
महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर
जिला झज्जर (हरयाणा)

आर्यसमाज कलकत्ता : क्रांति केंद्र

❑ प्रतापसिंह शास्त्री, एम.ए., पत्रकार, २५ गोल्डन विहार, गंगवा रोड, हिसार

आर्यसमाज कलकत्ता की भूमि स्वदेशी आन्दोलन की भूमि रही है। यहा लाल-बाल-पाल--लाला लाजपतराय, बालगंगाधर तिलक और विपिनचन्द्रपाल जैसे देशभक्त क्रान्तिकारी राष्ट्रनेताओं के व्याख्यान होते थे। इनसे पूर्व बल्कि आर्यसमाज की स्थापना से पूर्व अर्थात् सन् १९७५ से पूर्व महर्षि दयानन्द १६ दिसम्बर सन् १८७२ ई० को हावडा स्टेशन पर उतरे थे और यहां कलकत्ता में लगभग ४ मास रहे थे। इस बगाल आगमन का कलकत्ता आर्यसमाज के लिए और इससे भी अधिक सम्पूर्ण आर्यसमाज एव महर्षि दयानन्द जी की विभिन्न प्रकार की गतिविधियों के लिये विशेष महत्त्व हैं। बंगाल आने से पूर्व स्वामी दयानन्द जी कई वर्षो तक उत्तरप्रदेश और उन पश्चिमी स्थानों का भ्रमण और उन प्रदेशो मे अपनी मान्यताओं का प्रचार करते रहे जो बंगाल से पर्याप्त भिन्न थी। स्वामी के आगमन से पूर्व बगाल मे अग्रेजी शिक्षा का पर्याप्त प्रचार होगया था। अच्छे सुधी, सम्पन्न अभिजात्य लोग अंग्रेजी शिक्षा की ओर झुक चुके थे और एक सीमा तक नवीनता का, पाश्चात्य दृष्टिकोण का प्रचार बगाल मे होरहा था। यहा पर राजा राममोहनराय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर और केशवचन्द्र सेन जैसे सुधारकों का कार्य भी चल रहा था। इन सुधारकों मे आदि ब्रह्मसमाज के नेता भारतीयता के प्रति उन्मुख थे तो, नवीन ब्रह्मसमाज के नेता विशेषकर केशवचन्द्र सेन पश्चिमी विचारधारा और ईसाइयत से अनुप्राणित होरहे थे। इन्हीं के साथ भारतीय मनीषा के परम आग्रही वयोवृद्ध पं० ईश्वरचन्द्र विद्यासागर अपने ढंग से शिक्षा और सुधार के कार्यों में लगे हुए थे उन्होंने कन्या पाठशाला भी खोल रखी थी, संस्कृत की कई पुस्तकें भी लिखी थी और अपना एक निज का प्रेस भी खोल रखा था जिसमें उनकी पुस्तकें अति शुद्ध रूप में छपती थीं। हावडा स्टेशन पर १६ दिसम्बर को कलकत्ता प्रसिद्ध बैरिस्टर चन्द्रशेखर स्वामीजी के स्वागत के लिए खडे थे। स्वामीजी को आमन्त्रित करने वालो में देवेन्द्रनाथ ठाकुर भी थे जिनसे स्वामीजी की भेंट प्रयाग में कुम्भ मेले पर हुई थी। कलकत्ता प्रवास तक स्वामीजी का एक कौपनधारी नग्न संन्यासी का उनका रूप था वे संस्कृत में ही व्याख्यान देते थे। कलकत्ता में स्वामीजी के व्याख्यान कई महत्त्वपूर्ण स्थानों पर हुए। कई विद्यालयों में, ब्रह्मसमाज के उत्सव में, देवेन्द्रनाथ ठाकुर के घर में, केशवचन्द्र सेन के घर में इत्यादि। वृद्ध एवं ईश्वरचन्द्र विद्यासागर रुग्ण चल रहे थे किन्तु स्वामीजी की उनसे भी बातचीत हुई उनका प्रेस व पुस्तकें देखी। इन सब गतिविधियों से परिचित होने और अपने भावी कार्यक्रमों को निर्धारित करने में स्वामी दयानन्द जी को पर्याप्त सहायता मिली होगी। कलकत्ता से लौटने के बाद उनकी कार्यसरणि में पर्याप्त अन्तर दिखाई पडता है। आर्यसमाज के रूप में अपना सगठन स्थापित करने की प्रेरणा सम्भवत स्वामीजी ने इसी काल में प्राप्त की थी। सस्कृत की बजाय हिन्दी में प्रचार करना और वस्त्र पहनकर रहना स्वामीजी के जीवन मे एक क्रान्तिकारी परिवर्तन था। कलकत्ता के प्रगतिशील वातावरण में रहकर और वहा के विद्वानो के निकट सम्पर्क मे आकर उनके दृष्टिकोण मे कुछ न कुछ परिवर्तन आया ही होगा। कलकत्ता उन दिनो राजधानी थी। स्वामीजी ने यहा कुछ ऐसा भी साहित्य देखा था जो हमारे इतिहास व सस्कृति को बदनाम करनेवाला था। स्वामीजी ने कुछ पुस्तकें भी खरीदी थीं। इन कारणों से स्वामीजी के कलकत्ता प्रवास को उनके जीवन का संक्रान्तिकाल कहा जा सकता है। स्वामीजी के सन् १८८३ में मोक्षधाम चले जाने के बाद सन् १८८५ में कलकत्ता में आर्यसमाज की स्थापना हुई थी और स्वामीजी की स्मृति में दीपावली के दिन हर वर्ष श्रद्धाजलि सभाए होती रही उनमें बगाल के चोटी के विद्वान् सुधारक वृद्ध प० ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, श्री राजनारायण वसु, देवेन्द्रनाथ ठाकुर जैसे लोग शामिल हुए थे।

जिन दिनो केवल कलकत्ता में ही नहीं, सम्पूर्ण भारत में आर्यसमाज स्वतन्त्रता, स्वदेशप्रियता और जागरण का शखनाद कर रहा था, अग्रेज सरकार को आर्यसमाज और आर्यसमाजियो पर बहुत सन्देह होगया था। आर्यसमाज कलकत्ता और यहा के सदस्य भी स्वदेशप्रियता में कहीं से कम न थे। इसका एक बडा आकर्षक इतिहास यह है कि अमर शहीद भगतसिह आर्यसमाज कलकत्ता में दो बार आकर ठहरे थे।

आर्यसमाज कलकत्ता में सरदार भगतसिंह का प्रथम प्रवास--प्रथम बार साण्डर्स वध से पूर्व भगतसिंह कुछ केमिकल्स खरीदने के विचार से कलकत्ता आये थे। साण्डर्स का वध सन् १९२८ ई० की घटना है। उस समय कलकत्ता यात्रा मे श्री कमलनाथ तिवारी, जो पीछे ससद् सदस्य भी बने, उनके साथ इस खरीददारी में थे। श्री कमलनाथ तिवारी (लाहौर केस के अभियुक्त और बाद मे ससद् सदस्य) के शब्दों में--

"साण्डर्स हत्याकाण्ड से कुछ दिन पहले भगतसिंह देशी बम बनाने के लिए कुछ अत्यावश्यक केमिकल्स खरीदने के उद्देश्य से कलकत्ता आये। यह काम मुझे सौंपा गया। उनका बाजार में जाना सन्देहास्पद होसकता था। मैं बहुतसी दुकानों पर गया। अधिकतर दुकानदारों ने सरकारी प्रतिबन्ध के कारण केमिकल्स देने से इंकार कर दिया। बाद में क्रान्तिकारी दल से सहानुभूति रखनेवाले दुकानदारों के यहां मैं भाई बैजनाथसिंह 'विनोद' (बाद में जायसवाल युवक और विश्वव्यापी के सम्पादक) के साथ गया। उनसे आवश्यक केमिकल्स मिल गये। उनमे बी० पाल का नाम मुझे आज भी याद है। उन केमिकल्स को एक मुटिया-मजदूर के सिर पर रखवाकर हम दोनों आर्यसमाज (आर्यसमाज कलकत्ता जो उस समय क्रान्तिकारियो का केन्द्र था) लौट रहे थे कि मुटिया की टोकरी उसके सिर से गिरने को हुई। हमने उसको ऐसे डाट-डपट करनी शुरू करदी जैसे हमारा उससे कोई सम्बन्ध ही न हो। बात यह थी कि सामने ही एक सर्जेण्ट खडा था। हमें भय हुआ कि यदि कहीं उसको केमिकल्स के बारे में सन्देह होगया तो हम दोनो उसके चगुल से बच न सकेंगे। हमारी डाट-डपट काम आ गई। मुटिया सभलकर आगे बढ गया और सर्जेण्ट का ध्यान उसकी ओर से हटकर हम पर लग गया। उसने हमको समझाया कि उस मामूलीसी बात पर गरीब मुटिया को डाटने की क्या जरूरत थी। थोडी दूर जाकर सामान रिक्शा पर रख दिया और हम दोनो सकुशल सामान के के साथ आर्यसमाज पहुच गये।" दूसरे दिन सवेरे भगतसिह, फणीन्द्रनाथ घोष (बाद मे सरकारी गवाह) और यतीन्द्रनाथ दास (बाद में शहीद) तीनो ने मिलकर देशी बम में काम आनेवाली देशी गन काटन तैयार की। शेष केमिकल्स और गन काटन लेकर भगतसिह आगरा के लिए रवाना होगये।"

जनश्रुतियो मे यह बात तो है कि सरदार भगतसिह एसेम्बली बम काण्ड से पूर्व, दुर्गा भाभी के साथ कलकत्ता आये थे और आर्यसमाज मन्दिर मे रहे भी थे, किन्तु साण्डर्स वध से पूर्व केमिकल्स खरीदने के उद्देश्य से कलकत्ता आने पर भी भगतसिह आर्यसमाज मन्दिर मे आये, यह कलकत्ता के लोग भी कम जानते हैं। इससे यह बात सुस्पष्ट समझ मे आती है कि आर्यसमाज क्रान्तिकारियो का केन्द्र था। इस पवित्र वेद मन्दिर मे क्रान्तिकारी न केवल निवास की दृष्टि से अपने को निरापद समझते थे अपितु कई-कई क्रान्तिकारी एक साथ इकट्ठे होकर क्रान्ति के कुछ कार्यो की योजना कार्यान्वित करते थे। गन काटन बनाने की बात के अतिरिक्त भी यहा गुप्त मीटिंगे करना तथा क्रान्तिकारियो मे रहना, सोना, खाना-पीना, वस्त्र धो लेना, कुछ लिखना-पढना आदि का भी यह आर्यसमाज मन्दिर ही एकमात्र स्थान था।

आर्यसमाज कलकत्ता में द्वितीय प्रवास

सरदार भगतसिह दूसरी बार साण्डर्स वध के पश्चात् फरार होकर पुलिस की निगाहो से बचते हुए कलकत्ता आये थे। उस समय दुर्गा भाभी अपने पुत्र को लेकर भगतसिंह के साथ दिखावे के लिए उनकी पत्नी का रूप धारण किये हुए कलकत्ता स्टेशन पर उतरी हुई थी। यह इतिहास प्रसिद्ध घटना है कि पुलिस भगतसिह को अविवाहित सिख नौजवानों के रूप में पहचानती थी। पुत्र सहित दुर्गा भाभी जब उनके साथ लग गई तो पुलिस की निगाहें यह दूर की भी सभावना न कर सकती थी कि यह नौजवान भगतसिह होसकता है। उन दिनों सुशीला दीदी कलकत्ता मे थी और दानवीर सेठ चौ० छाजूराम के परिवार मे बच्चो को पढाती थी अत सर सेठ छाजूराम से उनका परिचय था। सेठ छाजूराम उन दिनो कलकत्ता आर्यसमाज के ट्रस्टी सदस्य एव कोषाध्यक्ष पदाधिकारी थे। जिस स्थान पर आर्यसमाज कलकत्ता का मन्दिर १९, विधान सरणी मे बना हुआ है यह पहले १९, कार्नवालिस स्ट्रीट था और जब भूमि खरीदी गई तब इसका ट्रस्ट बना था और ९, व्यक्ति ट्रस्टी थे--राय साहब रलाराम ये पूर्वी बगाल राज रेलवे के इजीनियर थे, सेठ जयनारायण पोद्दार--इनका पेशा ब्रोकरेज था, चौधरी सेठ छाजूराम ये सभी ब्रोकरेज का काम करते थे, प० शकरनाथ जमींदार, श्री टेकचन्द व्यवसायी श्री देवीबक्स व्यवसायी, श्री अनन्तराम व्यवसायी, श्री जमुनादास ब्रोकर श्री रामगोपाल व्यवसायी। यह सन् १९०७ की बात है और सन् १९१० मे आर्यसमाज मन्दिर का निर्माण होचुका था।

सुशीला दीदी ने सेठ छाजूराम की पत्नी श्रीमती लक्ष्मीदेवी से बाते कीं और भगतसिह तथा दुर्गा भाभी को सर छाजूराम की कोठी मे अतिथि रूप मे ले आयी। भगतसिह और दुर्गा भाभी पहले दिन एक होटल मे रहे और अगले दिन छाजूराम जी की कोठी मे चले गये और एक सप्ताह से अधिक वहीं रहे।

भगतसिह को वहा रखने की और निश्चित रहने की स्वीकृति सर सेठ की पत्नी लक्ष्मीदेवी जी ने ही सुशीला दीदी को दी थी। इन लोगो को ऊपर की मजिल मे ठहराया गया था और भोजन आदि की व्यवस्था स्वय लक्ष्मी देवी ही करती थी। उन दो के अतिरिक्त भगतसिह का सही परिचय किसी को भी न था। यह इतिहास का चरित्र है कि उसने एक सप्ताह के आतिथ्य के बदले मे माता लक्ष्मीदेवी और उनके पति सर सेठ छाजूराम को सदा के लिए अपना अतिथि बना लिया। आगे इतिहास इतना ही बताता है कि सर छाजूराम की कोठी मे एक सप्ताह रहने के बाद सरदार भगतसिह को और अधिक सुरक्षित स्थान मे स्थानान्तरित कर दिया गया। भगतसिह कलकत्ता मे 'हरि' नाम से अपना परिचय देते थे। भगतसिह और दूसरे साथियो के लिए बाद मे दूसरे सुरक्षित मकान का प्रबन्ध होगया और वे सेठ सर छाजूराम की कोठी से वहा बदल दिये गये। कुछ दिन वे उसमे रहे और तब आगरा चले गये। इससे यह बात सुस्पष्ट होजाती है कि कलकत्ता आकर भगतसिह क्रान्तिकारी साथियो के सम्पर्क मे आये। एक अतिथि तो सर छाजूराम की कोठी मे अतिथि बनकर रह सकता था किन्तु यह सर और सेठ की कोठी क्रान्तिकारियो का अड्डा तो नहीं बन सकती थी। इसके लिए तो कोई सार्वजनिक स्थान ही उपयुक्त होसकता था और यह सार्वजनिक स्थान क्रान्तिकारियो का केन्द्र आर्यसमाज मन्दिर था।

आर्यसमाज मन्दिर की छत पर ट्राम रास्ते की ओर उत्तर-दक्षिण दोनो कोनो पर गुम्बजनुमा दो कोठरिया थीं। इन्हीं दोनो मे से एक कोठरी मे भगतसिह रहते थे। छत की कोठरी होने के कारण इनमे सुरक्षित होने का आश्वासन भी अधिक था। सरदार भगतसिह का फ्लैट हैटवाला प्रसिद्ध जनप्रिय चित्र यहीं कलकत्ता का है। इसी रूप मे 'हरि' नाम से वे यहा रहते थे। यहा से जाते समय आगे के निर्णायक कदम लगभग तय थे। एसेम्बली बम काण्ड की मानसिक तैयारी भगतसिह के मस्तिष्क मे पूर्ण होचुकी थी। अत वे जब कलकत्ता से चले तो सुशीला दीदी ने तो उन्हे अपने रक्त से टीका किया था और आर्यसमाज मन्दिर की छत की कोठरी ने एक बलिदानी वीर को जीवन के अन्तिम किन्तु अद्भुत कार्य के लिए मौन विदा दी थी। भगतसिह भी इस यात्रा के गौरव को समझते थे और परवर्ती घटनाओ के लिए सजग थे। उन्होने आर्यसमाज के तात्कालिक सेवक तुलसीराम को अपना थाली लोटा यादगार के रूप मे दिया था और उसको इस यादगारी का कुछ आभास भी दे दिया था पर सरल तुलसीराम उस रहस्यमय सकेत को कैसे समझ सकता था।

गुरुकुल कांगडी में सरदार भगतसिंह की आचार्य अभयदेव से भेंट—साण्डर्स को लाहौर मे मारने का कार्य तब होचुका था। यह देशभक्त भगतसिह पहली बार सन् १९२८ मे शीतकाल की ऋतु मे गुरुकुल कागडी (हरद्वार) मे प्रथम बार गुरुकुल के आचार्य अभयदेव विद्यालकार से मिले। तब गुरुकुल बाढ के कारण ध्वस्त सा होचुका था। गगा के उस पार गुरुकुल के आचार्य अभयदेव थे। उन्होने स्वय एक सस्मरण मे लिखा है–' मैं स्वामी श्रद्धानन्द जी वाले बगले के एक बडे कमरे मे रहता था तब एक सुन्दर नवयुवक पगडी पहने हुए मुझसे मिलने आया। उसने एकान्त मे मुझसे मिलने की इच्छा प्रकट की। बातचीत प्रारम्भ करते ही उसने बताया मैं भगतसिह हू। मैंने उसकी तरफ ध्यान से देखा। उस पहली भेट से ही मुझे भगतसिह से प्रेम होगया। बातचीत के अन्त मे मैंने उससे पूछा–तुम मुझसे नि शक होकर मिलने कैसे आगये ? यदि मैं तुम्हे पकडवा दू, इसका तुमने ख्याल नहीं किया। उसका सहजभाव मे उत्तर था, नहीं, मैं जानता हू आप पकडवायेंगे नहीं। यहा यह भी उल्लेखनीय बात है कि गुरुकुल कागडी के सुयोग्य स्नातक प्रोफेसर जयचन्द्र विद्यालकार लाहौर कालेज मे भगतसिह के गुरु थे, वे इतिहास के प्रोफेसर थे, उनसे भगतसिह आर्यसमाज और गुरुकुल शिक्षाप्रणाली तथा देशभक्ति व ऋषि दयानन्द की वैचारिक क्रान्ति के अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश आदि सभी बातो से परिचित थे, तभी तो गुरुकुल कागडी मे इस प्रथम विचार विमर्श तथा प्रवास के बाद कई बार वहा आते रहे और ठहरते रहे। गुरुकुल मे आचार्य अभयदेव के अतिरिक्त अन्य किसी को यह पता नहीं होता था कि यह मिलनेवाला नवयुवक कौन है। एक बार आचार्य अभयदेव जो कहीं बाहर ट्रेन द्वारा आकर हरद्वार स्टेशन पर उतरे तब उनकी दृष्टि वहीं खडे भगतसिह पर पडी। उस समय भगतसिह के हाथ मे एक पुस्तक थी–गुटका साइज "फ्रेंच रिवोल्यूशन"। वहा से वे आचार्य अभयदेव जी के साथ ५-७ मील पैदल चलकर गुरुकुल कागडी आगये और वहीं रहे। अभयदेव जी ने लिखा है कि भगतसिह की रुचि क्रान्तिकारी साहित्य पढने के साथ-साथ ऐसी योगविद्या सीखने में थी जिसका अभ्यास होने से अग्रेज बेहोश करके या हिप्नोटाईज करके भी मन की बात न निकलवा सके। अभयदेव जी ने कहा कि मैं स्वय देश की स्वतन्त्रता के लिए हिंसक क्रान्ति के मार्ग का पथिक नहीं हू लेकिन आपके सहयोगी बनने मे समर्थ कुछ व्यक्ति हैं आप उनसे मिले। मैंने भगतसिह को उन व्यक्तियो के सम्बन्ध मे जानकारी दी जो उस क्षेत्र मे रहते थे। लेकिन मुझे खेद है और आश्चर्य है उनमे से किसी ने भी भगतसिह का साथी होना नहीं माना। यह बात भगतसिह से हुई अगली मुलाकातो मे पता चली। जिन चार व्यक्तियो से आचार्य अभयदेव जी ने भगतसिह का सम्पर्क करवाया था वे वैसे तो अहिंसा का मजाक उडाते थे और स्वतन्त्रता के लिए हिंसक क्रान्ति को आवश्यक मानते थे किन्तु भगतसिह ने आचार्य अभयदेव को बताया कि वे व्यक्ति असत्यवादी हैं और कायर हैं। इनमे एक सन्यासी भी थे। उन्होने तो भगतसिह को यही कहा कि मैं तो काषाय वस्त्र पहनता हू, मुझे हिंसा कार्य शोभा नहीं देता। इसी तरह दूसरो ने भी अपने-अपने कारण बता दिये जिससे कि वे भगतसिह के सहयोगी नहीं बन सकते थे। आचार्य अभयदेव ने भगतसिह को बडा निर्मल, निष्कपट, सच्चा खरा युवक लिखा है और वे कहते है कि मुझे प्रसिद्ध साहित्यिक उपमा देने का जरा भी अभ्यास नही है पर भगतसिह के प्रति अन्दर से यही उद्गार निकलता है कि वह हीरा था स्फटिक की तरह शुद्ध भक्ति वाला था। उसकी भक्ति देश के प्रति सच्ची तथा निर्मल थी। उन्हे देश की सेवा के अतिरिक्त कुछ नहीं चाहिये था।"

यहा के पश्चात् एसेम्बली बमकाण्ड के पश्चात् जब सरदार भगतसिह पकडे गये और उनका फोटो समाचार-पत्रो मे छपा तब लोगो ने जाना कि यह वही नौजवान है जो हरद्वार तथा गुरुकुल कागडी मे रहा था। कलकत्ता के लोगो ने भी तभी पहचाना कि यह वही नौजवान है जो आर्यसमाज मन्दिर की छत पर रहकर गया है। आर्यसमाज का सेवक तुलसीराम तो भगतसिह द्वारा दिये थाली और लोटे को अपनी अमूल्य निधि और पवित्र धरोहर मानकर रखता था। वह उसे दिखा तो देता था पर किसी को देने के लिए तैयार न था। तुलसीराम जब कलकत्ता छोडकर जाने लगा तब भी इस पवित्र स्मारक (भगतसिह का थाली व लोटा) को अपने साथ लेता गया, उसे यहा छोडने के लिए वह तैयार न था। महाशय रघुनन्दनलाल पण्डित दीनबन्धु वेद शास्त्री ने उससे यह स्मारक यहा कलकत्ता आर्यसमाज मदिर मे छोडने का आग्रह भी किया था पर वह उन्हे अपना समझता था और उन्हे अपने साथ लेता गया। यहा एक स्वाभाविक प्रश्न उठता है कि अमरशहीद भगतसिह दोनो बार आर्यसमाज कलकत्ता मे ही क्यो ठहरे ? पहली बार बम बनाने हेतु केमिकल्स खरीदने आये तो इस मंदिर मे केवल ठहरे ही नहीं अपितु क्रान्तिकारियों का मिलना जुलना भी यहा होता रहा। गन काटन भी यहीं बनाई गई। इसका एक सहजसा उत्तर यही होसकता है कि सरदार भगतसिह का तो परिवार ही आर्यसमाजी था और आर्यसमाज के वातावरण मे ही स्वदेश भक्ति का नशा था। किन्तु इस सन्दर्भ मे इतनी भूमिका से कैसे क्रान्तिकारी यहा इकट्ठे हुए और इस स्थान की सुरक्षा के सम्बन्ध मे आश्वस्त हुए। यहा फणीन्द्रनाथ घोष, यतीन्द्रनाथ दास जैसे बगाली क्रान्तिकारी भी गन काटन आदि बनाने के लिए इकट्ठे हुए थे। ऐसा लगता है कि ये बगाली युवक भी इसी क्रान्ति केन्द्र मे सुरक्षा की दृष्टि से आश्वस्त थे। द्वितीय बार चौ० छाजूराम जी के आतिथ्य के पश्चात् अधिक सुरक्षा की दृष्टि से वे आर्यसमाज मन्दिर में आगये यह आसानी से समझ में आजाता है कि भगतसिंह स्वयं भी अपने पूर्व परिचित क्रान्ति केन्द्र में अधिक विस्तृत रूप में क्रान्ति कार्य कर सके होंगे। जो चौ० छाजूराम जी की कोठी से सम्भव नहीं होसकता था। आर्यसमाज कलकत्ता के तात्कालिक अधिकारी जानते रहे होगे कि कोई युवक समाज मन्दिर मे आकर टिका हुआ है। दूसरे युवक उससे मिलते हैं। वहा क्रान्ति के परामर्श ही नहीं, क्रान्तिकारियो की गतिविधिया भी सक्रिय हैं। इस अनुमान से यह सहज ही बोधगम्य है कि आर्यसमाज मन्दिर और आर्यसमाज की सस्था गुरुकुल कांगडी (हरद्वार), आर्यसमाजी लोग सभी स्वतन्त्रता के रग में पूर्णरूपेण सराबोर थे। यही स्थिति प्राय सम्पूर्ण भारतवर्ष मे थी विशेषकर आर्यसमाज से सम्बन्धित सस्थानों में। कलकत्ता का अपना राजनीतिक और प्रशासनिक महत्त्वपूर्ण स्थान था। भगतसिह जैसे क्रान्तिकारी का इस मन्दिर मे दो बार निवास करना, यह बताता है कि आर्यसमाज कलकत्ता इस कडी मे किसी अन्य स्थान से पीछे न था। यहा लोग भगतसिह का वास्तविक परिचय चाहे उसकी गिरफ्तारी के बाद जान सके किन्तु लोग क्रान्ति के उस गोपनीय स्वरूप से सर्वथा अनभिज्ञ न थे। मन्दिर यदि क्रान्ति केन्द्र बना हुआ था तो अधिकारियो की सहमति से ही। गुरुकुल कागडी (हरद्वार) तो अपने स्नातको द्वारा राष्ट्र के कोने-कोने मे जहा भी वे कार्य करते थे वैचारिक क्रान्ति फैलाने मे अहम् भूमिका निभा रहा था।

आर्य-संसार

महात्मा भक्त फूलसिंह वैदिक सम्मेलन

दिनांक १० जून, २००१ रविवार को ग्राम भैंसवाल कला (सोनीपत) के राजकीय कन्या वरि० मा० विद्यालय में वैदिक सम्मेलन का आयोजन गुरुकुल भैंसवाल कला स्नातक सघ एव आर्यसमाज भैंसवाल कला के तत्त्वावधान में किया जा रहा है।

प्रमुख वक्ता–स्वामी ओमानन्द प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, स्वामी इन्द्रवेश कार्यकारी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, स्वामी अग्निवेश, स्वामी कर्मपाल सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत अध्यक्ष, प्रो० शेरसिंह, प्रभात शोभा पण्डिता, आचार्य यशपाल प्रधान स्वामी दयामुनि विद्यापीठ, पदमश्री बहिन सुभाषिणी, आचार्य बलदेव गुरुकुल कालवा, राममेहर एडवोकेट, डॉ० भीमसिंह वेदालंकाचर प्रो० वि०वि० कुरुक्षेत्र, आचार्य सुदर्शनदेव, सत्यवीर विद्यालंकार चण्डीगढ, डॉ० अभिमन्यु पटियाला, प्रकाशवीर विद्यालकार, प्रो० इन्द्रदेव विद्यालंकार वाचस्पति निदेशक डी ए वी सस्थान करनाल तथा सुखदेव शास्त्री महोपदेशक प्रतिनिधि सभा हरयाणा होगे।

मन्त्री–गुरुकुल भैंसवाल एवं आर्यसमाज भैंसवाल कला

आर्य वीरांगना चरित्र निर्माण शिविर

वर्तमान समय के प्रदूषित वातावरण से हटकर शारीरिक, आत्मिक, सामाजिक उन्नति एव वैचारिक क्रान्ति के आर्यजगत् की सुप्रसिद्ध आचार्या डॉ० अन्नपूर्णा (मानव कल्याण केन्द्र देहरादून) के प्रेरक नेतृत्व में आर्य वीरागना प्रशिक्षण/चरित्र निर्माण शिविर आर्यसमाज मन्दिर किशनपुरा गन्नौर मण्डी (हरयाणा) में डॉ० प्रेमचन्द जी महता की अध्यक्षता एवम् श्री हरिचन्द बत्रा के सरक्षण में २५ जून २००१ से ०१ जुलाई २००१ तक आयोजित किया जा रहा है। इस शिविर मे बालिकाओ को नैतिक एवम् आध्यात्मिक शिक्षा के साथ-साथ आसन, प्राणायाम, आत्मरक्षण हेतु जूडो, कराटे, लाठी चलाना, तलवार, बरछी, भाला चलाना, आग के गोले में से निकलना, देशभक्ति के प्रवचन देकर नारी जाति को सम्मानित किया जायेगा।

–**हरिचन्द स्नेही**, प्रान्तीय बौद्धिक अध्यक्ष–आर्यवीर दल हरयाणा, भागतपुरा सोनीपत

निर्धन मेधावी छात्रों को पुस्तकें व कापियां वितरित

आर्य सीनियर सैकेण्डरी स्कूल सिरसा मे दिनाक १५-५-२००१ को श्री कृष्ण मानव कल्याण समिति की ओर से ३० निर्धन एवम् मेधावी छात्रों को पुस्तके व कापिया वितरित की गई। इस अवसर पर नगर सुधार न्यास के अध्यक्ष श्री लीला कृष्ण मेहता मुख्यातिथि थे। डॉ० आर एस सागवान विद्यालय प्रबन्धक ने मेहता जी का गर्मजोशी से हार्दिक स्वागत किया। समिति के प्रधान श्री भगवानदास बजाज ने विद्यालय को एक वाटर कूलर देने की घोषणा की।

डॉ० सागवान ने विस्तार से स्कूल की विशेषताओ की जानकारी दी। स्कूल प्रिंसिपल श्री कृष्ण वोहरा ने सबका हार्दिक स्वागत किया।

आवश्यकता

हमे अपने गुरुकुल के लिये एक सन्यासी की जरूरत है, जो ब्रह्मचारियो को धर्मशिक्षा, योग इत्यादि सीखा सके। गुरुकुल में भोजन-आवास की उचित व्यवस्था है।

–**ज्ञानचन्द गुप्त**, प्रधान

महर्षि दयानन्द गुरुकुल महाविद्यालय, पटेल मार्ग, गाजियाबाद

आर्यसमाज रामनगर गुड़गांव का वार्षिक चुनाव

प्रधान–श्री भक्त राजेन्द्र प्रसाद, वरिष्ठ उपप्रधान–श्री ओ०पी० मनचन्दा, उपप्रधान–श्री जवाहर लाल, मन्त्री–श्री ओमप्रकाश चुटानी, उपमन्त्री–श्री रामधा कृष्ण सोलकी, कोषाध्यक्ष–श्री ताराचन्द, पुस्तकाध्यक्ष–श्री अशोक टुटेजा, भण्डारी–श्री वीरभान सेठी, लेखानिरीक्षक–श्री धर्मेन्द्र बजाज। –**ओ०पी० चुटानी, मन्त्री**

नई सदी में जनता को दे नया विकल्प

अंग्रेजी परस्तों के शोषण अन्याय व ठगी को रोकने का लें संकल्प

१ स्वतन्त्रता मिलने के पश्चात् देश के सविधान निर्माताओ ने जनतान्त्रिक व्यवस्था के अनुरूप देश की जनता को अग्रेजी परस्तो के शोषण से मुक्ति दिलाने के लिए १४ सितम्बर, १९४९ को हिन्दी तथा प्रादेशिक भाषाओ को राजभाषा की मान्यता प्रदान की थी। इसलिए यह दिन भारतीय भाषाओ की स्वतन्त्रता का सकल्प दिवस माना जाता है।

२ किन्तु देश के अग्रेजी परस्त इस व्यवस्था से बौखला गये और अनेक प्रकार के दुष्चक्र और कुचक्र रचने लगे।

३ भारत मे किसी को भी अग्रेजी भाषा से, उसके पठन-पाठन से विरोध/द्विवेष न था और न है। किन्तु इस भावना की आड में अग्रेजी परस्तों ने अग्रेजी भाषा को शोषण, अन्याय, ठगी असमानता, गुलामी व सामन्तवाद का हथियार बना दिया।

४ अग्रेजी को देश की आम जनता पर जबरदस्ती लादे रखा गया और देश के दो प्रतिशत बुर्जुवावर्ग (अभिजात्य वर्ग) के हितों को पूरा सरक्षण दिया गया।

५ अग्रेजी को हथियार बनाकर सामाजिक न्याय, राष्ट्रीय एकता एव अखण्डता के विरुद्ध भारतीय भाषा-भाषियों के बीच जहर बोकर भाषा विवाद जैसी काल्पनिक समस्या पैदा की गई।

६ अग्रेजी को हथियार/अनिवार्य बनाकर गरीबो, मजदूरो, पिछडो एव मध्यम वर्ग के प्रतिभाशाली लोगों को नौकरी में भर्ती तथा पदोन्नति से वचित किया जा रहा है। इस अमानवीय एव अन्यायपूर्ण व्यवस्था पर मानवतावादी सामाजिक न्याय, गरीबो, मजदूरो के मसीहा चुप रहते हैं। इस सम्बन्ध मे सवधैनिक व्यवस्थाओ ससदीय सकल्पो, ससदीय राजभाषा समिति की सिफारिशो की लगातार अवहेलना की जा रही है।

७ अग्रेजी परस्तों ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र मे अग्रेजी की अनिवार्यता बनाकर गरीबों, मजदूरों, पिछडों एव मध्यम वर्ग को अग्रेजी की वैशाखी पर चलने के लिए बाध्य किया जा रहा है, जिसके वे अभ्यस्त नहीं है। कम्प्यूटरो मे अग्रेजो की व्यवस्था कराकर जनता को लूटने व ठगने का अग्रेजी परस्तों का कुचक्र सफलतापूर्वक चल रहा है।

८ इन विपरीत परिस्थितियो के बावजूद जनता के दबाव से हिन्दी तथा प्रादेशिक भाषाओं की जो प्रगति हुई है, वह निराशाजनक नहीं है। ऊपर के लोगो से विशेषकर राजसमाज के धृतराष्ट्रो, भीष्मपितामहो एव द्रोणाचार्यो से किसी न्याय एव आदर्श की अपेक्षा नहीं की जानी चाहिए। अपवादस्वरूप कुछ लोगो को छोडकर हिन्दी को ओढने बिछाने व खाने वाले लोग भी अग्रेजी परस्तों का हित साधने मे लगे हैं। इसलिए इनसे भी कोई आशा नहीं की जानी चाहिए। जनता को न्याय पाने के लिए स्वय आगे आना चाहिए। सामाजिक क्रातिया हमेशा नीचे से होती हैं। हमारा सुझाव है कि इस क्षेत्र मे शान्ति क्रान्ति से ही ठोस सफलता प्राप्त की जा सकती है। हिन्दी का प्रयोग सामाजिक न्याय का प्रतीक है। इसके व्यावहारिक पक्ष को सबल बनाना हम सबका दायित्व है।

–**जगदीश नारायण राय**, सयोजक राजभाषा

शंका-समाधान

(श्री सूरतसिंह आर्य गोरीपुर जिला भिवानी)

शंका–महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के वेदोत्पत्ति विषय मे लिखा है कि जो चारो युगो के चार भेद और उनके वर्षो की घट-बढ सख्या क्यो हुई है ? इसकी व्याख्या आगे करेगे, वहा देख लेना चाहिये। यहा इसका प्रसग नहीं है इसलिए नहीं लिखा। चार भेद तो कृतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग हो गये। इनका नामकरण सतयुग त्रेता द्वापर और कलियुग क्यो हुआ, इनके वर्षो मे घट-बढ क्यो हुई।

समाधान–इन सत्युग आदि का काल अधोलिखित है–

१ *सत्युग*–१७२८००० वर्ष, २ *त्रेतायुग*–१२९६००० वर्ष, ३ *द्वापर*–०८६४००० वर्ष, ४ *कलियुग*–०४३२००० वर्ष।

'कलि' शब्द 'कल सख्याने' (चु प) धातु से सिद्ध होता है। ४३००० वर्ष की सख्या का नाम कलि है। कलियुग का दुगुना ८६४००० वर्ष का द्वापर कहाता है। कलियुग मे तिगुणा १२९६००० वर्ष का त्रेता युग कहाता है। जिसमे कलियुग द्वापर, त्रेता तीनो सत् हों और उसका अपना समय समय भी सत् (विद्यमान) हो उसे सत्युग कहते हैं जो कि १७२८००० वर्ष का होता है।

सत्युग में धर्म चार पावो से त्रेता मे तीन पावो से द्वापर मे दो पावो से और कलियुग में एक पाव से खडा रहता है यह पौराणिक मान्यता है। इस भ्रान्ति का कारण त्रेता और द्वापर शब्द प्रतीत होते हैं। सत्युग मे चार पाव और कलियुग मे एक पाव से धर्म खडे रहने का कोई आधार नहीं है। धर्म की घटती-बढती का युगो के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है।

एक सृष्टि मे १००० चतुर्युगिया होती हैं। ६ चतुर्युगियो का समय सृष्टि रचना मे लगता है, ९९४ चतुर्युगी काल प्राणियों का भोगकाल है। (ऋ०भू०भा० भूमिका वेदोत्पत्ति विषय)।

–**सुदर्शनदेव आचार्य**, वेदप्रचाराधिष्ठाता

आत्मा परमात्मा का अंश नहीं

महाभारत के युद्ध मे अधिकतर वैदिक विद्वान् समाप्त हो जाने से वैदिक धर्म प्राय लुप्त हो गया था और ऋषि-मुनियों की पुण्य-भूमि भारत में अनेकों मत-मतान्तर प्रचलित हो गये थे, जिनमे बौद्ध व जैन मत मुख्य थे। इनके सिद्धान्त नास्तिक तथा वेद विरोधी होने से, उनको परास्त करने के लिए आदि शकराचार्य ने अद्वैतवाद की स्थापना की, जिसमें एक ईश्वर की ही सत्ता को स्वीकार किया है बाकी जीव व प्रकृति की सत्ता को नहीं माना है। जीव और प्रकृति को ईश्वर के ही रूप माने गये हैं। जीव को परमात्मा का अश और प्रकृति को शून्य व स्वप्नवत् माना है जो नितान्त भ्रामक व वेदविरुद्ध है। वेदां में त्रैतवाद का प्रतिपादन किया गया है जिसमे ईश्वर, जीव (आत्मा) व प्रकृति की अलग-अलग सत्ता अनादि व अनन्त मानी गई। इन तीनो सत्ताओं का न कभी आरम्भ है और न कभी अन्त है। महर्षि दयानन्द ने भी इसी त्रैतवाद के सिद्धान्त को ही माना है। ऋग्वेद के निम्नलिखित मन्त्र से भी यही स्पष्ट होता है।

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्य: पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति।।

इस मन्त्र मे बताया गया है कि एक वृक्ष पर दो पक्षी सखा भाव से बैठे हैं, जिनमे एक पक्षी वृक्ष के फलो का रसपान कर रहा है और दूसरा सिर्फ देख रहा है। इसमें फल खाने वाला पक्षी जीव है, सिर्फ देखने वाला पक्षी ईश्वर है और वृक्ष प्रकृति है। अब प्रश्न उठता है कि अद्वैतवाद जिसको पूरा हिन्दू (पौराणिक) समाज मानता है, उसके अनुसार आत्मा परमात्मा का अश नहीं ? इसका उत्तर यही है कि अश और अशी के गुण समान होने चाहिये। जैसे सोने मे जो गुण है वही गुण सोने से बने जेवर में होते हैं, काठ के गुण उससे बने फर्नीचर में होते हैं और लोहे के गुण उसके बने कल-पुर्जों में होते हैं। इसलिए इनमे अश-अशी का सम्बन्ध है लेकिन आत्मा और परमात्मा के गुण समान नहीं हैं। ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, अजर, अमर, अजन्मा है, जबकि जीव (आत्मा) अल्पज्ञ, सीमितव्यापक, अल्पशक्तिमान् है और जीव के अवगुण काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष, घृणा आदि ईश्वर मे नहीं है इसलिए परस्पर गुण भेद होने से ईश्वर और जीव का अश-अशी का सम्बन्ध नहीं हो सका। ईश्वर और जीव की अलग-अलग सत्ता है, दोनो ही अनन्त व अनादि हैं साथ ही प्रकृति भी अनन्त और अनादि अलग सत्ता है। इन तीनों सत्ताओ का कोई आदि व अन्त न होने से यह विषय मनुष्य की सोच से परे है।

हाँ ! आत्मा और परमात्मा के पिता-पुत्र, स्वामी-सेवक, गुरु-शिष्य, राजा-प्रजा तथा गुण-गुणी के सम्बन्ध आवश्यक है। बहुत से लोग पिता-पुत्र के सम्बन्ध को अश-अशी का सम्बन्ध समझ लेते हैं, कारण पुत्र को पिता का अश मान लेते हैं, लेकिन ऐसा नहीं है। कारण पिता व पुत्र अपने-अपने किये कार्यों का फल अलग-अलग पाते हैं तथा गुण, कर्म, स्वभाव भी अलग-अलग होते हैं। पुत्र के कर्म जैसे होते हैं वैसे ही उसको माता-पिता मिलते हैं और माता-पिता के कर्मानुसार पुत्र पैदा होता है, यह सत्य है लेकिन तीनो के कर्म व कर्मफल अलग-अलग होने से वे अश-अशी नहीं हो सकते। ईश्वर को माता-पिता इसलिये माना जाता है कि वह अपनी न्याय व्यवस्था से प्रत्येक प्राणी का पालन-पोषक करता है जो माता का कर्त्तव्य है और उनके अभावो को दूर करके उनकी रक्षा करता है जो पिता का कर्त्तव्य है। इसलिए ईश्वर को माता व पिता कहा गया है। दूसरा कारण यह है कि ईश्वर ने सृष्टि के आदि मे मनुष्यो, पशुओ व पक्षियो की उत्पत्ति अमैथुनिक क्रिया द्वारा युवा अवस्था मे नर-मादा जोडे के साथ की जिससे उनके पालन-पोषण की समस्या न आवे, इसलिए ईश्वर हमारे माता-पिताओ का माता-पिता होने से प्रत्येक का माता-पिता हुआ।

ईश्वर सृष्टि रचकर जीव के पालन-पोषण व रक्षण के साथ-साथ उनके कर्मानुसार फल भी देता है और मनुष्य अपने जीवन मे उत्तरोत्तर उन्नति व समृद्धि किस प्रकार प्राप्त कर तथा अपने व्यवहार, चरित्र, परस्पर सहयोग व प्रेम की भावना व योग-साधन के बल पर किस प्रकार मोक्ष को प्राप्त करे आदि शिक्षाए व आदेश सृष्टि के आरम्भ मे ईश्वर जीव को वेदज्ञान द्वारा देता है जिससे मनुष्य अपने जीवन मे सुख व शान्ति को प्राप्त करता हुआ मृत्यु के बाद मोक्ष को प्राप्त करता है जो मनुष्य का अन्तिम लक्ष्य है। जीव पर हो रहे इन उपकारो से ईश्वर के अन्य बाकी सम्बन्ध गुरु-शिष्य, स्वामी-सेवक व राजा-प्रजा आदि स्वयमेव जुड जाते हैं। इसीलिये हम ईश्वर से यह प्रार्थना करते हैं।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविण त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देवदेव।।

ईश्वर का जीव से एक और विशेष सम्बन्ध गुण-गुणी का है जो विशेष तौर पर समझने का विषय है। जिस प्रकार घडी को देखकर हम घडी के बनानेवाले की कल्पना कर लेते हैं, अच्छे सुन्दर मकान को देखकर उसके बनानेवाले मिस्त्री की प्रशंसा करते हैं। कम्प्यूटर, टी०वी०, रोकेट आदि अद्भुत व आश्चर्यजनक आविष्कारों को देखकर उसके बनानेवाले वैज्ञानिक की बुद्धिमत्ता की प्रशसा करते नहीं थकते, इसी प्रकार सूर्य, चन्द्रमा, जल, अग्नि, पृथिवी व मानव शरीर की रचना आदि कितनी बुद्धिपूर्वक, सुव्यवस्थित तथा विचित्र है, इनको देखकर इनको बनानेवाले सर्वशक्तिमान् ईश्वर की हमें याद आती है। किसी गुण को देखकर उसके बनानेवाले गुणी की कल्पना होना ही गुण-गुणी का सम्बन्ध है। इसे हम कर्ताकृति का सम्बन्ध भी कह सकते हैं। गुण या कृति को देखकर हम गुणी व कर्ता का बोध करते हैं, यही बोध हमें ईश्वर के अस्तित्व की पुष्टि करता है।

—खुशहालचन्द आर्य, १८० महात्मा गाधी रोड (दो तल्ला) कलकत्ता-७०००০७

वर्तमानयुगीन जटिल समस्याएं.........(प्रथम पृष्ठ का शेष)

करते हुए कहता है कि वैदिक समाजवाद लोगों के भोजनालयो और पीने के पानी की व्यवस्था एक समान की व्यवस्था का आह्वान करता है। पूंजीवाद का विरोध करता है। जब मनुष्य अपने कर्तव्य पालन के प्रति जागरूक होजायेगा तो अधिकाशों के झगडे की प्रवृत्ति सदा के लिए समाप्त होजायेगी और भौतिकवादी चकाचौंध में जो एकाधिकार के कारण विकट सकट आया हुआ है वह समाप्त होजायेगा।

आज का मनुष्य स्वार्थ और सकीर्णता के कारण स्वय में व्यक्तिवादी दृष्टिकोण को स्थापित करने के लिये अहकारमय होगया है। परन्तु वेद तो व्यक्ति की उन्नति के साथ सामाजिक उन्नति को भी प्राथमिकता देता है। ऋग्वेद अन्तिम सूक्त समाजवाद के इस व्यक्तिवादी दृष्टिकोण को निरस्त करता हुआ कहता है– '*सगच्छध्वं सवदध्वं*' साथ चलने, साथ बोलने, मनो को एकसा बनाने की प्रेरणा देता है। वेद मनुष्य से देवत्व की ओर बढने की प्रेरणा भी प्रदान करता है। '**देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां**' हम सब मनुष्य देवताओं की कल्याणी मति को प्राप्त करें। दैवी आदर्शों को वेद ने कैसे सुन्दर ढग से प्रस्तुत किया है। मनुष्य से देवत्व को प्राप्त तभी कर सकेंगे जब समष्टिहित की भावना को विकसित करेगे। ऐसी स्थिति मे ऋग्वेद का यह सूक्त विचारो की एकता सगठन की एकता, चित्त व मन की एकता की ओर बरबस हमारा ध्यान आकृष्ट करता है। सकल्पशक्ति और मनुष्य के मनोभावो की एकता का कैसा सुन्दर चित्रण ऋग्वेद ने किया है।

कर्म और ज्ञान का समन्वय सामाजिक व्यवस्था, सामाजिक हित और सगठन, परिवार, समाज, प्रेम, राजनीति, शरीर विज्ञान औषधविज्ञान मनुष्य के भिन्न-भिन्न प्रकार की रुचियो और प्रवृत्तियो को ध्यान मे रखते हुए वेद ने अनेक अनुपम, अविस्मरणीय सिद्धान्त विचार के रूप मे प्रदान किये हैं। जिनकी अवहेलना के कारण आज समस्त विश्व मौत के कगार पर खडा है। इस भीषण विषम सकट से बचने का एक ही प्रकार है कि हम स्वाध्याय मननपूर्वक करे। वेद की शिक्षा को आत्मसात् करें। आज के मशीनी युग मे मशीन बना आदमी चिन्तन और निदिध्यासन का समय ही नहीं निकाल पाता। इसका समाधान भी वेद ने कर्म और ज्ञान का समन्वय स्थापित करते हुए कहा कि '**अविद्यया मृत्यु तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते**' मनुष्य कर्मशील होकर मृत्यु से छूटता है और ज्ञानवान् होकर अमृतत्व को प्राप्त करता है।

मध्य युग की अपेक्षा पूर्व और पश्चिम के लोग वेदों का अनुशीलन आज गहराई के साथ कर रहे हैं। भारतवर्ष मे आर्यसमाज की स्थापना महर्षि दयानन्द ने १८७५ मे वेद के आधार पर की और वेद सब सत्यविद्याओ का पुस्तक है। वेद का पढना-पढना और सुनना-सुनाना सबका परम धर्म है ऐसी घोषणा करनेवाला आर्यसमाज भी देश और विश्व की व्यवस्था को तो प्रभावित नहीं कर पाया। खेद के साथ कहना पडता है कि आर्यसमाज अपने विशाल भव्य भवनो मे बैठकर वैदिक शिक्षाओ को जीवन मे समाज के सगठन मे भी आत्मसात् करने मे अक्षम दिखाई देता है। आर्यसमाज का सगठन सस्थाए समूचे देश मे ही नहीं विदेश मे भी फैली हुई हैं परन्तु वेद जिन उदात्त जीवन सम्बन्धी गम्भीर चिन्तन, समाज, राष्ट्र व विश्व के अनुशासन व प्रशासन का दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, वह तो कहीं दिखाई नहीं देता। आर्यसमाज के कर्णधारो को, विद्वानो और कार्यकर्ताओ को इस ओर अविलम्ब ध्यान देना चाहिए और वेद की सार्वभौम शिक्षाओ को आत्मसात् करने के लिए कोई स्वस्थ अभियान चलाना चाहिए।

—हरिदत्त शास्त्री, डी०ए०वी० नैतिक शिक्षा सस्थान, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली
साभार-टंकारा समाचार अप्रैल २००१

स्वर्णपदक विजेता

आर्यसमाज मानपुर (फरीदाबाद) के सरक्षक मा० हेतराम ने अखिल भारतीय योगा प्रतियोगिता मे नवम्बर २००० मे जिनकी आयु लगभग ८० वर्ष है, उन्होंने प्रतियोगिता मे स्वर्णपदक प्राप्त किया है।

—नवलकिशोर, मन्त्री आर्यसमाज मानपुर, जिला फरीदाबाद

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिग प्रेस, रोहतक (फोन : ७६८७४, ५७७७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, प० जगदेवसिह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष . ७७७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १,९६,०८,५३,१०२
पंजीकरणसंख्या टैक/एच.आर./४९/रोहतक/99 ☎ ०१२६२-७७७२२

प्रधानसम्पादक : प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक :- डा० सुदर्शनदेव आचार्य

वर्ष २८ अंक २७ ७ जून, २००१ वार्षिक शुल्क ६०) आजीवन शुल्क ६००) विदेश में १० पौंड एक प्रति १-२५

आवश्यक सूचना

प्रतिनिधि फार्म भेजने की तिथि १५ जून २००१ तक बढ़ाई

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का त्रिवार्षिक साधारण अधिवेशन (चुनाव) ९ अगस्त, २००१ से पूर्व होना है। आर्यसमाज के अधिकारियों की माग पर सभा प्रधान जी ने प्रतिनिधि फार्म भरकर भेजने की तिथि ३१ मई, २००१ से बढाकर १५ जून तक कर दी है।

नए प्रतिनिधियों की स्वीकृति के लिए सभा से सम्बन्धित प्रत्येक आर्यसमाज को पिछले तीन वर्षों का वेदप्रचार तथा दशाश की राशि के साथ-साथ सर्वहितकारी का शुल्क ६० रुपये वार्षिक भेजना अनिवार्य है। वर्ष ९८-९९, ९९-२०००, २०००-२००१ का शुल्क जमा न होने पर प्रतिनिधि स्वीकृत नहीं होंगे।

—प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामंत्री

आर्य विद्यासभा गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार (पंजीकृत)

अधिसूचना

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि आर्य विद्यासभा गुरुकुल कांगडी हरिद्वार (पजीकृत) के दिनाक २७ मई, २००१ को गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के कुलपति के सम्मेलन कक्ष मे पूर्व दोपहर १०-३० बजे आयोजित अधिवेशन मे चुनाव अधिकारी डॉ० महावीर अग्रवाल कुलसचिव की देखरेख मे आगामी ३ वर्ष की अवधि के लिए निम्न प्रकार से पदाधिकारियों तथा कार्यकारिणी के सदस्यो का सर्वसम्मति से चुनाव हुआ। तदनुसार निवर्तमान पदाधिकारियों ने नये अधिकारियो को कार्यभार सौंप दिया है और नये पदाधिकारियो ने तुरन्त प्रभाव से अपना कार्यभार सभाल लिया है।

१	स्वामी इन्द्रवेश (हरयाणा)	प्रधान
२	प्रि० चन्द्रदेव (दिल्ली)	वरिष्ठ उपप्रधान
३	श्री तेजपाल मलिक (दिल्ली)	मत्री
४	डॉ० प्रकाशवीर विद्यालंकार (हरयाणा)	वरिष्ठ उपमंत्री
६.	श्री देवेन्द्र शर्मा (पंजाब)	उपमंत्री
७	डॉ० रणजीतसिंह (हरयाणा)	कोषाध्यक्ष

कार्यकारिणी के सदस्य

१. श्रीमती प्रभातशोभा पण्डिता (हरयाणा)
२ श्री सत्यवीर शास्त्री (हरयाणा)
३ श्री राजसिंह भल्ला (दिल्ली)
४ श्री सुदर्शन शर्मा (पंजाब)

—मंत्री

मानव जीवन का उद्देश्य

❑ स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा

इस चर-अचर जगत् में समस्त जीवधारी प्राणियो के आवागमन का उद्देश्य अपने शुभाशुभ कर्मों के सुख-दुःखात्मक फलो को भोगकर मोक्ष प्राप्त करना है। समस्त जीवधारी 'पच जन' कहाते हैं, अर्थात् मनुष्य, पशु, पक्षी, कृमि-कीटादि और स्थावर वृक्ष आदि भेद से प्राणियों के पाच प्रकार हैं। इसमे मनुष्य विवेकशील और सामाजिक प्राणी है। जहा अन्य योनिया भोग योनिया हैं, वहा मनुष्य योनि योगयोनि भी है और कर्मयोनि भी। इसका यह अभिप्राय है कि पूर्वजन्म में कृत शुभाशुभ कर्मों का सुख दुःखात्मक फल भोगता है और लोक-परलोक मे सुखैश्वर्य प्राप्ति तथा निःश्रेयसावस्था मे स्वतन्त्रता से सुख ही सुख भोगने के लिए इस वर्तमान जन्म में सत्कर्मों का सम्पादन करता है। इसी सत्कर्म सम्पादन का नाम चरित्र निर्माण करना है। क्योंकि जीव कर्म करने मे स्वतन्त्र है, इसलिए उसके लिए धर्माधर्म, शुभाशुभ, पाप पुण्य और कर्त्तव्याकर्त्तव्य आदि का विवेक आवश्यक है। वर्तमान नीतिशास्त्र मे इसी का नाम 'मानव धर्म' या मानव चरित्र है। साथ ही मानव देहधारी इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए अपने जीवन का उद्देश्य नियत करता है और जीवन मे उस चरित्र का अनुष्ठान करता है।

मानव जीवन का उद्देश्य धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष इन चार पुरुषार्थों की प्राप्ति करके आनन्द भोगना है। इस प्रकार के जीवन की प्रवर्त्तना का नाम ही चरित्र-निर्माण है। धर्माचरण से अर्थकाम का उचित उपभोग करके यथासमय इनका मोह त्याग करके सुख ही सुख का लाभ करना अर्थात् ईश्वर के समीप पहुचना। ऐसा कौन-सा मार्ग है जिससे इस लक्ष्य की सिद्धि सरलता से हो जावे अर्थात् मनुष्य को जीवन मे कैसे चरित्र का आचरण करना चाहिये जिससे कि वह मोक्ष को, सुख ही सुख को प्राप्त हो ? वह अष्टांग योग मार्ग है। अगर इसका पालन प्रारम्भ से ही बालक को कराया जावे तो बालक सदाचारी ही बनेगा। सदाचार या सच्चरित्रता का अभिप्राय है दुःख पाप शून्य जीवन बिताना। महर्षि दयानन्द ने जहा ससार पर अन्य महान् उपकार किये हैं उनमें वे दो मुख्य हैं। प्रथम तो पुरुषार्थ चतुष्टयसिद्धि रूप मानव जीवन के वास्तविक उद्देश्य का प्रतिपादन और द्वितीय अष्टांगयोग रूप उसका अभ्यास मार्ग यही चरित्रनिर्माण की वैज्ञानिक पद्धति है। इस मार्ग पर चलने से मनुष्य के शरीर मन बुद्धि का संशोधन सस्करण विकास होता है। मानव जीवन मे दिव्यता का प्रवेश होने लगता है अर्थात् वह प्रकृति रूपी तम से ऊपर उठकर परब्रह्म ज्योति के पास पहुचने लगता है। उसका जीवन बाह्य प्रपच से हटकर अन्तर्मुख हो सर्वानन्द ईश्वर का सान्निध्य प्राप्त करता है। इसीलिए इसे उपासना मार्ग कहते हैं। उपासना शब्द का अर्थ 'समीपस्थ होना' है। अष्टागयोग से परमात्मा के समीपस्थ होने और उसको सर्वव्यापी सर्वान्तर्यामी रूप से प्रत्यक्ष करने के लिए जो-जो काम करना होता है, वह-वह सब करना चाहिए। उनके अनुष्ठान से अविद्यादि दोषों का क्षय होने से तब तक ज्ञान के प्रकाश की वृद्धि होती है, जब तक जीव यथावत् मोक्ष को प्राप्त नहीं हो जाता। यम नियम आसन प्राणायाम प्रत्याहार धारणा ध्यान समाधि ये आठ अग हैं। अष्टाग योग के अनुष्ठान को उपासना योग कहते हैं।

यम-नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार से सात्विक भावों का उदय होगा। जीवन मे सच्चाई उतरेगी, न्यायाचरण बढेगा। स्वार्थ घटेगा। मनुष्य बाह्यमुख न हो अन्तर्मुख होगा। परिणामत काम, क्रोध, लोभ, मोह की प्रवृत्तिया घट जावेगी। वह निवृत्ति मार्ग का पथिक बनेगा। धारणा, ध्यान, समाधि से उसके आत्मा मे अन्तर्ज्योति का प्रकाश फैलेगा। जब इस प्रकार व्यक्ति शरीर बुद्धि मन आत्मा से शुद्ध होगा तो सामाजिक जीवन स्वत ही

(शेष पृष्ठ २ पर)

वैदिक-स्वाध्याय

कुटिलता व हिंसारहित यज्ञ में परमात्म-व्याप्ति

ओ३म् अग्ने यं यज्ञमध्वरं विश्वतः परिभूरसि।
स इद् देवेषु गच्छति।।

ऋ० ११४

शब्दार्थ–(अग्ने) हे परमात्मन्! (त्वं) तुम (य) जिस (अध्वरं यज्ञ) कुटिलता तथा हिंसा से रहित यज्ञ को (विश्वतः परि भूः असि) सब तरफ से व्याप लेते हो (स इत्) केवल वही यज्ञ (देवेषु गच्छति) दिव्य फल लाता है।

विनय–हम कई शुभ अभिलाषाओं से कुछ यज्ञों को प्रारम्भ करते हैं और चाहते हैं कि यज्ञ सफल हो जाये। परन्तु हे देवों के देव अग्निदेव! कोई भी यज्ञ तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक कि उस यज्ञ में तुम पूरी तरह न व्याप रहे हो, चूंकि जगत् में तुम्हारे अटल नियमों व तुम्हारी दिव्य-शक्तियों के अर्थात् देवों के द्वारा ही सब कुछ सम्पन्न होता है। तुम्हारे बिना हमारा कोई यज्ञ कैसे सफल हो सकता है? और जिस यज्ञ में तुम व्याप्त हो वह यज्ञ अध्वर (ध्वरा अर्थात् कुटिलता और हिंसा से रहित) तो जरूर होना चाहिये। पर जब हम यज्ञ प्रारम्भ करते हैं, कोई शुभ कर्म करते हैं, किसी संघ, संगठन में लगते हैं, परोपकार का कार्य करने लगते हैं तो मोहवश तुम्हें भूल जाते हैं। उसकी जल्दी सफलता के लिए हिंसा और कुटिलता से भी काम लेने को उतारू हो जाते हैं, तभी तुम्हारा हाथ हमारे ऊपर से उठ जाता है। ऐसा यज्ञ तुम्हारे देवों को स्वीकृत नहीं होता, उन्हें नहीं पहुंचता–सफल नहीं होता। हे प्रभो! अब जब कभी हम निर्बलता के वश अपने यज्ञों में कुटिलता व हिंसा का प्रवेश करने लगें और तुम्हें भूल जायें तो हे प्रकाशक देव! हमारी अन्तरात्मा मे एक वार इस वैदिक सत्य को जगा देना, हमारा अन्तरात्मा बोल उठे कि "हे अग्ने! जिस कुटिलता व हिंसा-रहित यज्ञ को तुम सब तरफ से घेर लेते हो, व्याप लेते हो, केवल वही यज्ञ देवों में पहुचता है अर्थात् दिव्य फल लाता है–सफल होता है।" सचमुच तुम्हें भुलाकर, तुम्हें हटाकर यदि किसी संगठन शक्ति द्वारा कुटिलता व हिंसा के जोर पर कुछ करना चाहेंगे तो चाहे कितना घोर उद्योग करें पर हमें कभी सफलता न होगी।

(वैदिक विनय)

मानव जीवन का उद्देश्य.........(प्रथम पृष्ठ का शेष)

शुद्ध-पुनीत-निर्मल होगा। इस प्रकार वैयक्तिक चरित्र और सामाजिक चरित्र का निर्माण होगा। इस मार्ग के आचरण से ही मनुष्य 'सकल भद्रमश्नुते' भद्र अर्थात् अभ्युदय और निःश्रेयस सुख की प्राप्ति कर सकता है।

जो मनुष्य एकान्त पवित्र निरुपद्रव देश में स्थिर होकर वेदादि उपासना के सब अंगो का अभ्यास करते हैं वे निर्मल आत्मा होकर ज्ञानी श्रेष्ठ सिद्ध होते हैं और जो इनका संग और सेवा करते हैं वे भी शुद्ध अन्तःकरण होके आत्मयोग के जानने के अधिकारी होते हैं। यह चरित्र निर्माण का वास्तविक मार्ग है। सच्चरित्र मनुष्य का लक्षण क्या है? "वह उपकारी पर दुःखहर्ता, पक्षपात रहित न्यायाचरणकर्ता, सत्यभानी सत्यवक्ता, आस्तिक ।" इसी का नाम ऋषि ने आप्त धार्मिक विद्वान् होना लिखा है। इस मार्ग पर आचरण करने वाला ऐसा ही बनेगा।

आर्यसिद्धान्त-शिक्षा

इन्द्रसिंह आर्य, आरजैड-६०, ब्लाक-ओ, नया रोशनपुरा, नजफगढ़, दिल्ली-४३

(गतांक से आगे)

(ख) द्रोपदी– घोर संकट (विपत्ति) के समय हम से जो कर गए थे किनारा।
देखो आर्यपुत्र अब वे आये हैं हाल-चाल पूछने हमारा।।

श्रीकृष्ण– हे कृष्णा! यदि मैं उस समय यदि होता द्वारिका के आसपास।
तो न द्यूत-क्रीड़ा आयोजित होती और न ही अधर्म-सभा का होता विकास।।

युधिष्ठिर– हे वासुदेव! तुम उस दिनों द्वारिका में नहीं तो और कहां थे यह जानने के लिए मेरे मन में उठा है एक प्रश्न।
आशा करता है कि तुम सच-सच बतलाओगे, आर्य शिरोमणि कृष्ण।।

श्रीकृष्ण– हे धर्मराज! श्रीमन् शिशुपाल के मारे जाने की खबर सुनकर राजा शाल्व हो गये उन्मत्त।
प्रत्यकार उसने सौभनगर पर चढ़ाई करके नगर ग्राम को कर दिया था विकृत।।
इस दुखद समाचार को सुन यदि मैं सौभनगर की ओर नहीं करता प्रस्थान।
तो वह पापी मेरे पिता के निकाल लेता प्राण।।
शाल्व की अपार सैन्य शक्ति को देख द्वारिका सेना हो गई थी व्याकुल।
उस समय प्रद्युम्न ने निरुत्साहित यादव सेना में जागृत किया आत्मबल।।
प्रथम उन्होंने शाल्व पर बाणों की वर्षा करते हुए किया उसे मूर्छित।
फिर मैंने अपने सुदर्शन चक्र को किया अभिमंत्रित।।
आग्नेयास्त्र (सुदर्शन) की शक्ति से शाल्व का शरीर अनेक टुकडों में हुआ खण्डित।
उस दुष्टात्मा के मारे जाने की खबर सुनकर सौभनगर के नर-नारियों का प्रसन्न हुआ चित्त।।
यही कारण था जो मैं उस समय हस्तिनापुर में नहीं था उपस्थित।
अन्यथा मैं दुर्योधन, शकुनि को बीच अधर्म सभा में ही कर देता दण्डित।।

महाभारत कालीन

(अंगिरा वंश परिचय की एक और झलक)

अंगिरा ऋषि के ज्येष्ठ पुत्र बृहस्पति।
यथा नाम यथा कीर्ति।।
देवों के आचार्य बृहस्पति के भारद्वाज।
विमानशास्त्र के रचयिता अंगिरस का स्वय निर्मित वायुयान की कम्पायन थी आवाज।।
वैज्ञानिक भारद्वाज के सुपुत्र द्रोणाचार्य।
जिनके इतिहास प्रसिद्ध शिष्य हुए हैं, कौरव-पाण्डव श्रेष्ठ आर्य।।
अंगिरा ऋषि की सुपुत्री बृहस्पति की प्रिय भगिनी।
ब्रह्मर्षि अभियन्ता विश्वकर्मा की कहलायी मातृ जननी।।
इन देव पुरुषों ने वेदों के प्रति अपनी अनुरक्तता दिखाई, ये किसी के नहीं थे मुखापेक्षक।
इनमें से किसी ने शिल्पशास्त्र की रचना की थी तो कोई कहलाया शिल्पी वैज्ञानिक, अन्वेषक।।
यदि शिल्प ब्राह्मण का कर्म नहीं होता तो अंगिरा, बृहस्पति क्योंकिर वास्तुविद्या को साक्षात् करने में होते समर्थ।
द्रोण के कुल के सभी देव पुरुष विज्ञान के व्यावहारिक रूप को प्रत्यक्ष करते आये हैं, निमिन समृद्धि, ऐश्वर्य अत्यर्थ।।
ब्राह्मण (ब्रह्म) पदार्थ विद्या और हस्तकला में दक्षता प्राप्त करे यह है उसका प्रथम कर्म।
तत्पश्चात् ज्ञान विज्ञान को देश-देशान्तरों में फैलाए, सिखाए यह है उसका दूसरा कर्त्तव्य अर्थात् धर्म।।
इन्द्रसिंह आर्य मैंने किसी का दिल दुखाने व मन को हानि पहुंचाने के उद्देश्य से नहीं उठाई है अपनी कलम।
वह ब्राह्मण ही नहीं, जो वेद के पढने व वेद विद्याओं को प्रत्यक्ष करने में नहीं करता श्रम।।

(क्रमशः)

सर्वहितकारी (साप्ताहिक) की मूल्यवृद्धि की सूचना

कागज एवं छपाई तथा डाक शुल्क की मूल्य वृद्धि के कारण १ जुलाई, २००१ से सर्वहितकारी (साप्ताहिक) का वार्षिक शुल्क ६० रुपये तथा आजीवन शुल्क ६०० रुपये के स्थान पर ८० रुपये व ८०० रुपये कर दिया गया है। पुराने तथा नये ग्राहक बननेवालों से निवेदन है कि ३० जून २००१ तक वार्षिक शुल्क ६० रुपये तथा आजीवन शुल्क ६०० रुपये भेजकर इस सुविधा का लाभ उठावें। पत्रिका के स्तर में सुधार के लिए सम्पादक मण्डल प्रयत्नशील है।

आशा है सुधी पाठक मूल्यवृद्धि के [illegible] करेंगे। –सभामन्त्री

सन्ध्या में मन की एकाग्रता के उपाय

□ आचार्य आर्य नरेश, वैदिक गवेषक, उदगीथ साधना स्थली, हिमाचल

सत्य चेतन निराकार भगवान् की पूजा करने के स्थान पर मूर्ति पूजा में अधिक आनन्द आता है ऐसा अधिकतर पौराणिक धार्मिक्ह लोगों का विचार है। बिना किसी तर्क या वितर्क के यदि सामान्य दृष्टि से देखा जाये तो यह बात सच्ची प्रतीत होती है। संध्या करनेवालों की अपेक्षा मूर्तिपूजा करनेवाले कहीं अधिक दत्त-चित्त होकर विशेष सुख की अनुभूति करते हुए दिखाई देते हैं। पर इसमें दो मत नहीं कि मूर्तिपूजक जिसे वे गलती से आनन्द मान रहे हैं यह वास्तव में आत्मिक आनन्द न होकर शारीरिक सुख है। सुख का आधार मन आदि इन्द्रियां हैं जिसे वे ससार के भौतिक साधनों से प्राप्त करते हैं। परन्तु आनन्द का आधार आत्मा है जिसे वह परम पिता परमात्मा से ही प्राप्त करता है।

मूर्तिपूजा करनेवालों को जो थोड़ी बहुत शान्ति या सुख मिलता है वह उन्हें ईश्वर से न मिलकर सामने रखी हुई सुन्दर मूर्ति से मिलता है। जिसका सम्बन्ध वे अपने मन में ही कृष्ण शिव या राम से जोडे रखते हैं। अपनी अधश्रद्धा के वशीभूत होकर वे पूजा करते समय ऐसा सोचते हैं कि श्री शिव शकर, राम या कृष्ण बस उनके बिल्कुल पास ही खडे हैं। इस प्रकार से मूर्तिपूजक उनके साथ अपना भावात्मक सम्बन्ध जोडे रखते हैं। अपने अज्ञान के कारण वे गुणगान करते तथा उन जड मूर्तियों को ईश्वर न होते हुए भी चेतन तथा ईश्वर समझते उनकी पूजा करते हैं। क्योंकि प्राण-प्रतिष्ठा के पाखण्ड ने पहले ही उन्हें पक्का विश्वास दिला रखा होता हैं कि यह एक प्रकार न हिलते-डुलते हुए भी चेतन अर्थात् प्राण-युक्त हैं। जिसे स्थूल जड के उपासक मूर्तिपूजा अथवा 'माला-पूजक' मन लगाना कहते हैं। वास्तव में उनका मन एकाग्र न होकर मूर्ति के विभिन्न अगों और माला के मनकों में चलायमान रहता है। हा इतनी बात अवश्य है कि वे बडे ससार मे न भटक कर एक छोटे संसार में भटक रहे होते हैं।

मूर्ति पूजक अपना मनुष्यरूपी सम्पूर्ण मूल्यवान जीवन इसी अज्ञानयुक्त पूजा में व्यतीत कर देते हैं पर उन्हें कभी भी सच्चे ईश्वर का साक्षात्कार या आनन्द नहीं मिलता। क्योंकि जिन्हें वे भगवान् मान रहे हैं होते हैं उन शिव, राम, कृष्ण जी को तो हम स्वय 'ओ३म्' चेतन भगवान् की ही साधना करते हुए देखते हैं। उदाहरण के लिए ब्रह्मा जी, शिव जी, राम जी व कृष्ण जी ये सभी सिद्ध पुरुष अपने चित्रों मे केवल 'ओ३म्' ही की साधना करते मिलते हैं। जब कोई विद्वान्, प्रेम से उन मूर्ति-पूजकों को यह बात समझाने लगता है तो वे इसे मान भी जाते हैं, पर पुनः यह कहकर कि 'मूर्तियों की पूजा अज्ञानियों के लिए उस निराकार तक जाने की एक सीढी है। इस जड पूजा में ही लगे रहते हैं। अज्ञानी लोग इन पूर्णों अक्षरों को सिखाते समय जो सर्वप्रथम छोटे बच्चों को बिन्दी-बिन्दी लगाकर सिखाया जाता है) पर चलकर फिर इसकी सहायता के निराकार की साधना में दक्ष हो सकते हैं अत मूर्ति पूजा मे बुराई ही क्या है ? प्रियवरो ! क्या असत्य से भी बढकर कोई और बडी बुराई हो सकती है ? क्योंकि शास्त्रकार मुक्त कण्ठ से कह रहे हैं– "न अनृतात् पातकम् परम्" अर्थात् झूठ से बढकर कोई पाप नहीं, क्योंकि वह सब पापों का मूल है।

अब तनिक विचार करें कि 'आनन्द' जो कि केवल परमात्मा में ही रहता है और उसके सिवाय किसी भी जड वस्तु या आत्मा में नहीं रहता वह राम, कृष्ण आदि मे कैसे मिल सकता है ? क्योंकि वे दिव्य महापुरुष परमात्मा नहीं अपितु आत्मा ही थे और इसलिए तो वे आनन्द की प्राप्ति हेतु 'ओ३म्' परमात्मा की साधना किया करते थे। यदि वे स्वय आनन्दयुक्त परमात्मा होते तो ऐसा कभी न करते। अत पहला असत्य तो यह है कि जहा आनन्द नहीं है वहा आनन्द की कामना करना और दूसरा बडा असत्य यह है कि साकार मूर्ति के सहारे निराकार ईश्वर तक पहुचने का प्रयास करना।

देखो भक्तजनो ! स्थूल लिपि एक साकार वस्तु है, अत उसके सूक्ष्म आकार वो 'पूर्णों' से स्थूल पर पहुचने का अभ्यास करना उचित है। पर परमात्मा जो कि मूल रूप से एक निराकार वस्तु है उसका कोई सूक्ष्म या स्थूल आकार सहारा नहीं बन सकता। अत निराकार (अदृश्य) ईश्वर तक पहुचने का सहारा ससार की कोई भी स्थूल वस्तु या मूर्ति कभी नहीं हो सकती। इतना ही नहीं अपितु ये मूर्तिया जिसे आज भगवान् जानकर अज्ञानी जनता पूज रही है वह भी ईश्वर की न होकर उसके भक्तो की ही है। क्योंकि आज ससार में कहीं भी चेतन ओंकार भगवान् की हाथ- पैर वाली मूर्ति नहीं मिलती। अत भक्तों की मूर्तियों के ध्यान, भजन अथवा गुणगान से भक्तों के ही जीवन का किंचित् लाभ व अनुभव हो सकता है न कि भगवान् का। और रही बात यह कि अज्ञानी लोग मूर्ति पूजा के सहारे यदि ईश्वर को पालें, प्राप्त कर लें तो क्या बुराई ? यह भी एक बहुत बडा झूठ है क्योंकि आज देश तथा विदेश में जितनी भी बढ- चढकर जोरों से बडे-बडे विशाल मन्दिर बनाकर मूर्ति पूजा चल रही है वह वास्तव मे मूर्खों या अज्ञानियो के द्वारा नहीं हो रही, अपितु ज्ञानवान् व धनवान् समझदार लोगो के द्वारा ही करोडो रुपये के मन्दिर बनाकर हो रही है। अत इस बहुत बडे झूठ के षड्यन्त्र से भी मुक्ति पायें कि 'मूर्ति पूजा अज्ञानियो के लिए एक सहारा है।" यदि यह केवल अज्ञानियो या मूर्खों के लिए ही सहारा थी तो फिर इसे करोडो ज्ञानी क्यो कर रहे हैं ?

क्या करें ? निराकार की पूजा मे न तो मन ही नहीं लगता है और न ही कुछ आनन्द ही आता है। अत कुछ तो करे। हा अवश्य करे पर अमृतपान के स्थान पर विषपान न करे। सत्चित्' आनन्दस्वरूप निराकार ईश्वर का ध्यान अमृत है पर ईश्वर के स्थान पर अन्य वस्तुओं की पूजा आत्मा हेतु घोर मृत्यु है, जिसने सदियो तक भारत को गुलाम बना कर रखा। अत यदि आनन्द चाहिए तो अपने अत्यन्त समीप रहने वाले, इस शरीर तथा ससार को बनाने वाले व जीवन को चलाने वाले, सब प्रकार की सुख- सुविधाओं को देने वाले सच्चे भगवान् 'ओंकार' की साधना कीजिये। यदि प्रभु की वाणी वेद के कुछ मत्र आते हो तो उससे साधना कीजिये। यदि आप सस्कृत या हिन्दी पढने मे बिल्कुल असमर्थ हो तो उन मन्त्रो के भावार्थ पर विचार करके साधना कीजिये। यदि आप ऐसा भी न कर सकें तो केवल 'ओ३म्' के अर्थ पर विचार करते ध्यान कीजिए। आपको मनचाहा आनन्द मिलेगा।

जो लोग प्राय यह शका करते हैं कि सध्या करने या निराकार की उपासना में न तो उनका मन लगता है और न ही कभी आनन्द आता है। वे लोग आगे ध्यान मे पढें। सध्या करने वाले अधिकतर लोगो को उसमें आनन्द न आने या ध्यान न लगने का मुख्य कारण है 'उनकी अभावात्मक स्तुति प्रार्थना और उपासना'। जिस दिन वे अपनी सध्या को 'भावात्मक' बना लेगे उस दिन से उनकी यह ध्यान न लगने की 'शिकायत' समाप्त हो जाएगी। सध्या मे ध्यान लगाने हेतु उसके भावात्मक स्वरूप को जानना आवश्यक ही नहीं अपितु अनिवार्य भी है। इसलिए 'भावात्मक जड पूजा' करनेवाले अभावात्मक सच्ची चेतन पूजा करने वालो से अधिक भाव-विभोर दिखाई देते हैं। इतना ही नहीं उस जड पूजा की अन्धश्रद्धा हमारे चेतन सच्चे ईश्वर पूजक की श्रद्धा से कहीं अधिक होती है। इसका कारण यही है कि वह ईश्वर के समक्ष न होने पर भी उसको अपने झूठे भाव से समक्ष खडा हुआ ही समझता है। परन्तु सचचा निराकार उपासक 'ठीक- उपासना' की पद्धति पर चलते हुए भी अपने प्रभु से भावात्मक सम्बन्ध नहीं जोडता। इसीलिए उसको पूजा मे रस नहीं आता और उसका मन भी नहीं लगता।

निराकार सच्चे ईश्वर के साधको को बस यही बात सीखनी है कि वे 'भावात्मक पूजा' के रहस्य को समझे और उसे व्यवहारिक रूप दे। अभावात्मक पूजा का अर्थ है कि हम जिसकी पूजा या अर्चना करने जा रहे हैं वह हमारे सामने अविद्यमान है अर्थात् उसका हमारी सध्या मे अभाव

(लगातार पेज न० ४ पर)

है। क्योकि भाव (भवतिऽइति विद्यमानता) होते हुए भी सध्या के मन्त्रो का पाठ करते हुए उस ईश्वर के साथ सीधे कोई सम्बन्ध नहीं जोड पाते। हम लोग मन्त्रो को बोलते अवश्य हैं पर बोलते हुए हम ऐसा प्राय नहीं विचारते कि हमारे इन मन्त्रो का यहीं हमारे अग-सग व समक्ष बाहर तथा भीतर विद्यमान 'भगवान्' से क्या सम्बन्ध है ? आसन बिछाने, चोटी बाधने से, आचमन करने तथा मन्त्रो को बोलने तक हम प्राय अपने भगवान् से दूर ही होते हैं। हम सध्या करने जा रहे हैं सध्या करने बैठे हैं, सध्या के मन्त्र बोल रहे हैं। ऐसा कहते और करते हुए भी यह नहीं समझ रहे होते कि 'सध्या' वास्तव मे क्या है। सम्पूर्ण सध्या की क्रिया प्राय अभावात्मक ही रहती है। यह सब हम जिसके लिए कर रहे हैं वह हमारे सामने नहीं होता तथा न ही हम भावात्मक रूप से उसके साथ जुडे होते हैं।

इस प्रकार से 'अभावात्मक' ईश्वर की विद्यमानता अथवा उसके साथ अलगाव के भाव में हमारी सध्या पूर्ण हो जाती है। हमारे सारे मन्त्र 'हवा' मे खाली (अभावात्मक) स्थान मे छोडे हुए होते हैं। मन्त्रों का उच्चारण करते समय न तो हम अपने आपको ही कुछ सुना रहे या प्रेरणा दे रहे होते हैं न ही हमारे मन्त्रो का श्रोता वह भगवान् ही होता है जो कि उस समय हमारे अतीव समीप अपने सम्पूर्ण ज्ञान, बल व आनन्द से युक्त होकर अपने निराकार रूप मे बाहर-भीतर विद्यमान होता है।

वस्तुत सच्चाई यही है कि हमने सध्या करनी है, हम सध्या कर रहे हैं, और हमने सध्या कर ली अर्थात् कुछ निश्चित मन्त्रो का पाठ या विशेष विधि या तरीका अपना कर हमने एक काम कर दिया है। पर हम इस सध्या के काम को करते अथवा कर चुकने के पश्चात् भी नहीं समझ रहे होते कि हमारा इसे करने का मुख्य अभिप्राय क्या है। सिवाय इसके कि हमने प्रतिदिन की तरह एक काम पूरा कर दिया, इसको छोडकर हमारा सभवत सध्या करने का और कुछ भी भाव नहीं होता। बस, सध्या मे मन या ध्यान न लगने अथवा आनन्द न आने का यही मुख्य कारण है। इसीलिए सध्या हेतु बहुत से लोग बैठते हैं और सारे मन्त्रो का पाठ करके उठ जाते हैं तथा कई बार तो मन्त्रो का पाठ करते-करते कहीं और ही चले जाते हैं पर मन्त्र पाठ चलता रहता है। क्योंकि प्रतिदिन का अभ्यास होने से वे अनजाने मे ही निकल कर पूरे हो जाते हैं। इस तरह से भी सध्या पूरी हो जाती है। इसी का नाम है 'अभावात्मक सध्या'।

आइए पाठकवृन्द अब विचरते हैं मन लगाने वाली, ध्यान जमानेवाली व आनन्द देने वाली 'भावात्मक सध्या' के विषय में। भावात्मक संध्या अर्थात् एक सध्या जिसमे तैयारी से लेकर समाप्ति तक और उसके पश्चात् भी जिसकी प्राप्ति हेतु सध्या की जाती है उस ईश्वर का भाव बना रहता है कि निराकार रूप में सच्चिदानन्द भगवान् हमारे पास ही विराजमान है और हम उसके बिल्कुल समीप विराजमान हैं। सध्या हेतु जाते समय या बैठते समय एक भावात्मक सध्या करनेवाले व्यक्ति श्रद्धापूर्वक ऐसी भावना बनाकर सध्या के स्थान की ओर जाते हैं कि अब हम थोडी ही देर के पश्चात् अपने सब सासारिक व्यवहारों को छोडकर उस ईश्वर के समीप बैठ जायेगे। आसन बिछाकर बैठने पर वह ऐसा भावात्मक विचार बनाता है कि अब मैं उसके समीप हू और वह ईश्वर मेरे बिल्कुल समीप है। गायत्री मन्त्र का उच्चारण करते हुए व अपनी शिखा को बाधते समय वह ऐसा भाव बनाता है कि अब मैं केवल अपने भीतर उपस्थित भगवान् की ओर ही ध्यानावस्थित हो रहा हू। अब मेरा मन पूर्व बिखरे हुए बालो के समान इधर-उधर नहीं बिखरेगा अपितु बधी हुई चोटी के समान 'प्रभु' में एकाग्र हो जाएगा।

अब इस समय मेरा एक और केवल एक ही कार्य है। वह है केवल भगवान् मे चित्त लगाकर उसकी ही स्तुति प्रार्थना और उपासना करना जो कि मेरे बाहर तथा भीतर कण-कण मे होता हुआ सर्वव्यापक है। ओं, शन्नो देवी से आचमन करता हुआ सच्चा 'भावात्मक साधक' उसी भगवान् का जल और भगवान् का ही शरीर समझ कर यही भाव बनाता है कि मेरे अतीव समीप विद्यमान भगवान् अब मेरे शुभ कर्मों से अपने आनन्द की वर्षा कर रहा है। सध्या के शेष मन्त्रों का भी पाठ करता हुआ 'भावात्मक भक्त' सब शब्दो के अर्थ न आते हुए भी ऐसा विचार बनाये रखता है कि भगवान् यहीं विराजमान होकर मेरे सब मन्त्रो को स्तुतियो में सुन रहा है। इसके साथ-साथ यदि आपको सब मन्त्रों के अर्थ भी आते हो फिर तो सोने पर सुहागा है। परन्तु यदि सब मन्त्रों के अर्थ नहीं भी आकर केवल भाव ही आते हैं और यह भाव बना रहता हे कि भगवान् सुन रहा है और अपना आशीर्वाद दे रहा है तो भी कम आनन्द नहीं आयेगा। और भावात्मक विधि से मन भी अपनी चचलता को छोड़कर सारे सासारिक कार्यों से हटकर भगवान् में लग जाएगा क्योंकि उस मन को अब हमने अपने आगे-पीछे, ऊपर नीचे, बायें तथा दायें व अन्दर-बाहर उपस्थित महाशक्ति-शाली, सृष्टिकर्ता तथा अपने सबसे बडे साथी और आनन्ददाता भगवान् के साथ जोड दिया है। क्योंकि उस भगवान् को हमने अपने आस-पास सृष्टि के कण-कण मे जान ही नहीं लिया अपितु इस सध्या के समय में उसे अपने आसपास नितान्त समीप मान लिया है, इतना ही नहीं अपितु उसे आत्मा मे समझकर अपने मन्त्र भी सुना रहे हैं। अत ऐसा भावात्मक व्यवहार होने से मन हमारे आत्मा का सहयोगी होकर अब बाहर कहीं और नहीं जाता। यह तब ही जाता था जब हम आत्मा से बिना जाने कि 'ईश्वर हमारे पास है' यूहीं हवा में मन्त्र छोड़ते या पढ़ते जाते थे। परन्तु अब तक इस भावात्मक सम्बन्ध से आत्मा अपने मन से प्रत्येक मन्त्र ईश्वर को सुना रहा होता है। अत: मन के कहीं और जाने का प्राय: प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता।

जिन सज्जनों को सध्या के प्रत्येक मन्त्र का शब्दार्थ नहीं आता यदि वे सर्वप्रथम उसका मोटा सा भाव ही स्मरण करके अपने प्यारे प्रभु को अपने समक्ष जानकर उससे प्रार्थना करेंगे मन्त्रों से ईश्वर की उपस्थिति में अपने आत्मा को प्रेरणा या शिक्षा देंगे तो ऐसा भावात्मक सम्बन्ध जुडने से उनका मन बाहर से रुककर आत्मा के अधीन रहेगा तथा आत्मा प्रभु की वास्तविक उपस्थिति मे रहकर मन्त्रों द्वारा उससे बात करता हुआ पूर्ण आनन्द को प्राप्त करेगा। जैसे एक छोटा सा बच्चा सारे ससार को भूलकर बडे प्रेम से अपने पिता की गोद में बैठकर बातचीत करता है ठीक वैसे ही इन वेदमन्त्रों का माध्यम बनाकर परमपिता से वार्तालाप करे। संध्या के सम्पूर्ण मन्त्रो के पश्चात् गायत्री मन्त्र के शब्दार्थ को वार्तालाप का माध्यम बनाइये इसके पश्चात् मन को सूक्ष्मता की ओर लाने हेतु अन्त में ईश्वर के अनेक गुणों का स्मरण करते हुए ओम् का जप कीजिए कि [illegible] सब कुछ सुन रहा है। आपका मन लगेगा, आनन्द आएगा और संध्या सफल होगी।

हम ये सब बातें क्रियात्मक रूप से उद्गीथ साधना स्थली में लगाये जाने वाले शिविरों में आगन्तुक साधकों को बताते रहते हैं। जिन्हे इस विषय में विशेष जानकारी लेनी हो अथवा योगसाधना को वैज्ञानिक रूप से सीखने की इच्छा हो, वे यहा समय-समय पर लगने वाले नि शुल्क शिविरों में भाग लेकर सीख सकते हैं। क्योंकि लेख के द्वारा प्रत्येक बात को खोलकर समझाना कठिन है। अत लेख के ऊपर यह सूक्ति दी है कि हम अपने मन या बुद्धि से ईश्वर को नमन करना या उसके प्रति झुकना सीखें क्योंकि वह बाहर की वाणी या हाथों से नहीं मिलता। बाहर के हाथों या शरीर से तो शरीरधारियों को ही नमन करना उचित है।

सूचना

आर्यसमाज मन्दिर भाण्डवा में पौरोहित्य प्रशिक्षण शिविर (दिनाक २५ जून से ४ जुलाई २००१ तक) के सम्बन्ध में आवश्यक निवेदन

(क) शिविर शुल्क ५००) पाच सौ रुपये तथा भोजन शुल्क १००) एक सौ रुपये। (ख) आवश्यक वस्तुए–सस्कारविधि, लेखनी व सञ्चिका। (ग) प्रशिक्षणार्थी २० जून तक शुल्क जमा करा देवे। (घ) प्रशिक्षण समय–प्रात साय तीन-तीन घण्टे। (ङ) प्रशिक्षक–प० सुदेशदिव आचार्य आदि। अन्य विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करे–

मन्त्री आर्यसमाज

दयानन्द मठ रोहतक का इक्कीसवां वैदिक सत्संग समारोह सम्पन्न

दयानन्दमठ रोहतक। आर्यसमाज की कार्यस्थली दयानन्दमठ, रोहतक का इक्कीसवा वैदिक सत्सग समारोह आज दिनाक ०३ जून, २००१ रविवार को स्वामी इन्द्रवेश जी की अध्यक्षता मे बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस समारोह के सयोजक एव व्यवस्थापक श्री सन्तराम आर्य ने बताया कि यह सत्सग सामाजिक कुप्रथाओ, धार्मिक अन्धविश्वासो, छुआछूत, अशिक्षा, अन्याय एवं शोषण के बारे मे वैदिक धर्म की मान्यताओ का प्रचार-प्रसार करने हेतु शुरु किया गया है। इस सत्सग की विशेषता यह रही कि इस बार मुख्यवक्ता के रूप में युवा सन्यासी स्वामी सूर्यवेश 'योगी' पधारे हुए थे। जिन्होने अध्यात्म चेतना पर एक घण्टे के सारगर्भित वक्तव्य से लोगो का मार्गदर्शन किया। उन्होने 'कठोपनिषद्' के सूत्र का जिकर किया। गुरु के सान्निध्य मे बैठकर अध्ययन करना ही उपनिषद् है। उपासना से पाप-पुण्य का सामञ्जस्य बनाया जा सके। कामना खत्म करने के चार विषय बताये–श्रवण, मनन, निदिध्यासन व साक्षात्कार। उन्होंने बताया कि जीवन एक राशन कार्ड की भाति है जिसमें हर वस्तु की मात्रा लिखी होती है। सुख-दुःख में समभाव, समरस की अवस्था को कठोपनिषद् कहते हैं। स्वामी सूर्यवेश योगी बिजनौर जिला उ०प्र० के केवलानन्द निगम आश्रम से पधारे थे। पिछले ग्यारह वर्ष से योग की तपस्या कर रहे हैं, ने यमाचार्य व नचिकेता के उदाहरण दिये।

इससे पूर्व आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकर्ता प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी ने अभिभावकों को अपनी-अपनी ड्यूटी पूरी करते हुए भावी आशाओं को ठीक मार्ग दर्शन व निगरानी रखते हुए बच्चों के निर्माण करने की सलाह दी तथा यह भी बताया कि इस प्रकार के सत्संगों में अपने बच्चों को साथ लाने की सलाह दी। यह सत्संग बच्चों के लिए ट्रेनिंग का केंद्र है तथा विद्वानों के प्रवचनों का सगम है।

इस समारोह की विस्तृत व्याख्या करते हुए श्री सन्तराम आर्य ने बताया कि प्रात: ९-०० बजे ब्रह्मयज्ञ व देवयज्ञ से प्रारम्भ होकर १२-०० बजे सम्पन्न होता है। फिर गीत व भजन महाशय झाबेराम जी, बहिन दयावती प्राध्यापिका व श्री सुरेश कुमार आर्य (जीन्द) के मधुर गीतों ने आत्मविभोर कर दिया। शान्ति पाठ के बाद सत्संग सम्पन्न हुआ।

–[illegible] आर्य, कार्यालय सचिव,
सार्व०आ०यु० परिषद् हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

गोसंवर्धन और महर्षि दयानन्द

☐ प्रतापसिंह शास्त्री, एम.ए., पत्रकार, २५ गोल्डन विहार, गंगवा रोड, हिसार

महर्षि दयानन्द दया का सागर थे, करुणानिधि थे, आदि में थी दया जिसके अन्त मे आनन्द था, ऐसे दयानन्द जो बडी से बड़ी आपत्तियों में विचलित न हुए उन्हे हम दो अवसरों पर आंसू बहाता पाते हैं। पहला अवसर वह है–"जब उन्होंने देखा कि एक मा अपने बालक के शव को गंगा में बहाने से पहले उसको ढकने वाले वस्त्र को उतारकर गगाजल में धोकर निचौडते हुए अपने साथ वापिस ले जा रही थी। अपने जिगर का टुकडा प्यारा बच्चा मृतक होने से गंगा में बहा दिया और बच्चे को लपेटने वाला वस्त्र कुछ इस प्रकार वापिस लिया मानो बच्चे से भी अधिक वह वस्त्र का टुकडा प्रिय हो ? महर्षि के पूछने पर उस माता ने बताया कि शव को लपेटने के लिए उसके पास कोई अतिरिक्त वस्त्र न होने से अपनी लाज को ढकने वाली एकमात्र धोती से ही आधा हिस्सा फाडकर उसी मे बालक के शव का लपेटकर लाई थी। अब उसी को वापिस ले जाकर दोनो टुकडो को जोडकर (सूई धागे से सीकर) फिर से उसे धोती का रूप दे दूगी। सोने की चिडिया कहलाने वाले देश की इस प्रकार की भयकर दरिद्रता, विपन्नता को देखकर देव दयानन्द [illegible] तो चीत्कार कर उठा, वे फूट-फूटकर रोने लगे, उनकी आखों से गगा और यमुना [illegible]।"

दूसरा अवसर–"एक बार मध्य रात्रि में छत पर आहट पाकर सेवक बलदेव की आखे खुल गई। ऊपर जाकर देखा कि महर्षि दयानन्द बडे उद्विग्न होकर इधर से उधर टहल रहे हैं। बलदेव ने पूछा कि–महाराज ! कहीं दर्द हो तो कोई दवाई लाऊ ? देवदयानन्द बोले बलदेव ! इस दर्द की दवा बाजार में नहीं मिलेगी और देश की दुर्दशा का सकेत करके आसू बहाने लगे।" फरुखाबाद में व्याख्यान देते हुए देव दयानन्द ने कहा कि–"देश में सहस्रो गायें प्रतिदिन मारी जाती हैं जिससे देश की अत्यन्त हानि होरही है, इसी कारण यह देश दुर्दशा को प्राप्त हो रहा है। कितने शोक की बात है कि इतनी भारी क्षति को देखते हुए भी हमारे देश के शासक इस ओर ध्यान नहीं देते। परन्तु इसमें केवल शासको का ही अपराध नहीं है, हमारा भी है। हममे एकता नहीं है और इसी कारण यह क्षति होती चली जा रही है। यदि सब मिलकर सरकार से निवेदन करें तो क्या गोवध बन्द नहीं हो सकता ? ऐसा दयालु हृदय व्यक्ति देव दयानन्द–**"माता रुद्राणाम् दुहिता वसूनाम् स्वसादित्यानाम् अमृतस्य नाभि"** को लाखो की सख्या मे कटते देखकर, सुनकर द्रवित हुए बिना, आसू बहाये बिना कैसे रह सकता था ? गौ मे तो महर्षि दयानन्द के प्राण बसते थे। वे ही पहले महापुरुष थे जिन्होंने गोसवर्धन के कार्य के लिए आर्यसमाज के छठे और सातवे नियम में सकेत किया। मनुष्य को जो प्रेरणा आर्यसमाज का ७वा नियम दे रहा है उससे यथायोग्य व्यवहार का प्रश्न उपस्थित है जिसका समाधान प्राणिमात्र के साथ प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना लिखा है। आर्यों को चाहिये कि उस पशुधन की रक्षा करें जो घी, दूध, चमडा आदि देकर भी मानव जाति का उपकार करते हैं। ऋग्वेद (मन्त्र ८-१०१-१५) के अनुसार वेद भगवान् ने मानव को चेतावनी देते हुए कहा है–हे मानव ! तू अपने जीवन में गौ को कभी मत मार। यह गौ निर्दोष और निरपराध है। यह गौ रुद्र देवों की माता है। वसुदेवों की कन्या है। आदित्य देवों की बहिन है इससे भी बढकर यह अमरपन का केन्द्र है। तू इसकी रक्षा करके (प्र नु वोच चिकितुषे जनाय मा गा अनागा अदिति वधिष्ट) स्वय अमर हो जायेगा। पशु हमारा उपकार करते हैं हम पशुओं की रक्षा न करेंगे तो कृतघ्न होंगे और कृतघ्नता पाप माना गया है फिर गौ तो राष्ट्र की विश्व की माता है। वेदों में गोवध को जघन्य पाप कहा है। **"गावो विश्वस्य मातर"** महर्षि दयानन्द ससार के सबसे पहले महापुरुष थे जिन्होने–'गोकरुणानिधि' लघुग्रन्थ गोरक्षा के गोसवर्धन के कार्य के लिए लिखा। केवल उन्होने यह लघु ग्रन्थ ही नहीं लिखा अपितु गौ आदि मूक प्राणियों की रक्षार्थ महान् आन्दोलन भी किया। गोमाता को बचाने के लिए एक संगठित सभा स्थापित की, इस सभा का नाम 'गोकृष्यादिरक्षिणी सभा' रखा। इससे पहले भारत में कोई भी ऐसी सभा या संगठन नहीं था। कृषि शब्द को साथ मिलाकर महर्षि ने धर्म के साथ उपयोगिता का भी सयोग कर दिया और इसका आर्थिक रूप भी बन गया। महर्षि की इस उदारनीति से मुसलमान ईसाई फारसी आदि सभी सज्जन सन्तुष्ट थे। गोवध बन्द करने में वे उनका साथ देने को तैयार थे। महर्षि के अन्तिम वर्षों में यह सभा स्थापित हुई थी। सभा का काम बडे उत्साह के साथ हो रहा था। यदि विधाता के विधान में महर्षि का जीवन एक वर्ष और बना रहता तो गोहत्या सर्वथा बन्द हो जाती।

जिस दयानन्द ने विदेशी शासकों द्वारा रक्षार्थ की जाने वाली व्यवस्था को ठुकरा दिया, वही दयानन्द गोमाता के प्राणों की भीख मांगने के लिए उनके द्वार खटखटाने मे संकोच नहीं करता था। कभी वह अजमेर के कमीश्नर डेविडसन के पास जाता है, कभी राजस्थान के पोलिटिकल एजेन्ट कर्नल ब्रुक्स के सेवाकाल समाप्ति पर इग्लैण्ड जाने से पूर्व उनके विदाई समारोह में अजमेर मे शामिल होकर गम्भीर गर्जना करते हुए कहता है–"कर्नल ब्रुक्स, आप लन्दन पहुंचकर महारानी विक्टोरिया से कह दें यदि भारतीयो के धार्मिक जीवन में शासन इसी तरह हाथ डालता रहा और गाय जो भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ एवं सास्कृतिक जीवन का प्रतीक है, उसका वध जारी रहा तो सन् १८५७ की क्रान्ति फिर दोहराई जा सकती है।" कर्नल ब्रुक्स समझ गये कि यह संन्यासी देश की नब्ज पर हाथ रखकर बोल रहा है। गोरक्षा के महान् आन्दोलन के इसी क्रम में महर्षि दयानन्द सन् १८७३ में नवम्बर-दिसम्बर के मध्य संयुक्त प्रान्त (उत्तर प्रदेश) के लैफ्टीनेंट गवर्नर म्यूर से मिलते फरुखाबाद जा पहुचते हैं। आम जनता को सम्बोधित करते हैं, गोरक्षा के लिए प्रेरित करते हैं और गवर्नर म्यूर से बातचीत करते हुए कहते हैं कि हमने सुना है आप यहां से [illegible] जाकर इण्डिया कौंसिल के सदस्य होंगे। इसलिए अच्छा होगा कि भारत के हितार्थ गोरक्षा के लिए आप कुछ प्रयत्न करें। उन्होंने महर्षि को वचन भी दिया था।

(क्रमशः)

अपनी संस्कृति और मिट्टी को न भूलें : वीरदेव

झज्जर, ३० मई। स्थानीय गुरुकुल के सभागार मे बुधवार को विक्रम प्रतिष्ठान अमेरिका द्वारा प्रतिष्ठापित वेदवागीश विजय पुरस्कार प्रदान किए गए। सस्थान के प्रतिष्ठाता व गुरुकुल झज्जर के स्नातक व वर्तमान में डीएवी कालेज अमेरिका मे प्राचार्य के पद पर कार्यरत डॉ० वीरदेव ने कहा कि आर्यसमाज को सजीव रखने का काम गुरुकुल कर रहे हैं, इन्हीं आर्यों ने समाज मे फैली कुरीतियो को मिटाने का प्रयास किया है। उन्होने आह्वान किया कि समय आ गया है जब आर्यसमाज के विद्वान् न केवल भारत मे, बल्कि विदेशों मे आर्यजगत् के आदर्शों को स्थापित करके लुप्त होती भारतीय सस्कृति को बचाए।
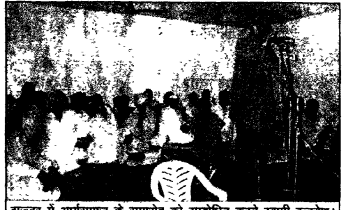
झज्जर में आर्यसमाज के समारोह को सम्बोधित करते स्वामी इन्द्रवेश।

डॉ० वीरदेव ने कहा कि यह चिता का विषय है कि विदेशो मे बसे भारतीय वहा के रग मे इस कदर डूब गए हैं कि वे अपनी सस्कृति तक भुला बैठे हैं। उन्होने कहा कि मनुष्य को अपनी सस्कृति व मिट्टी को कभी नहीं भूलना चाहिए। डॉ० वीरदेव ने कहा कि श्रद्धा व भक्ति की अपनी भाषाए हो सकती दृष्टि मे जिस श्रद्धा उमडे उसका महान् हो कि हमे होजाना पडे। अलग-अलग हैं मगर उनकी व्यक्ति के प्रति चरित्र इतना नम्रता से नम्र सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने कहा कि गुरुकुलो ने समाज को बहुत कुछ दिया है और समाज को सजीव रखा है। यहा सम्मान समारोह मे स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने कहा कि सभी धर्मानन्द ने उडीसा मे तीन गुरुकुल व १२ विद्वान् पैदा करके समाज को ऐसी अमूल्य धरोहर दी है। डॉ० एस के हुड्डा व स्वामी व्रतानन्द को दिए गए सम्मान का उन्हे हकदार बताते हुए स्वामी जी ने उनके कार्यों पर प्रकाश डाला।

सम्मान समारोह

- **व्याख्याता सुरेन्द्रकुमार को दस हजार नकद व प्रशस्तिपत्र दिया**
- **आर्यसमाजी महर्षि दयानन्द के आदर्शों को प्रचारित करें**

मुख्य पुरस्कार मनुस्मृति के प्रक्षेपानुसधानकर्त्ता एव व्याख्याता डॉ० सुरेन्द्रकुमार हुड्डा को दिया गया। उन्हें इस पुरस्कार मे अमेरिका सस्थान द्वारा १० हजार रुपए नकद, प्रशस्ति पत्र व शाल भेटकर सम्मानित किया गया। इस सम्मान मे सस्थान द्वारा स्वामी व्रतानन्द जी को ५ हजार रुपए की राशि, स्मृति चिन्ह व शाल भेट किया गया।

आर्यसमाज रेवाड़ी का चुनाव

प्रधान–सर्वश्री प्रेमस्वरूप जी, उपप्रधान–श्री सुखराम आर्य जी, श्री कै रघुवीर सिह जी, श्रीमती कमला आर्या जी, महामत्री–कै मातुराम शर्मा जी, सहमत्री–श्री ईश्वर सिह (एस डी ओ), प्रचारमत्री–श्री मास्टर समयसिह जी, कोषाध्यक्ष–श्री मनोहरलाल जी, पुस्तकाध्यक्ष–प्रो० कर्मवीरसिह जी, लेखा निरीक्षक–श्री अरुणाशु भारद्वाज सरक्षक–श्री ओम्प्रकाश जी ग्रोवर।

–**कै मातुराम शर्मा**, मत्री

आर्यसमाज सैक्टर ६ पंचकूला का चुनाव

प्रधान–श्री रामप्यारा कौष्यप, वरिष्ठ उपप्रधान–श्रीमती जगदम्बा गुप्ता उपप्रधान–श्री अविनाश चन्द्र, श्री के के अग्रवाल, श्री यशपाल आर्य, श्रीमती वेदवर्मा, श्री मनोहर लाल मनचन्दा, मन्त्री–श्री धर्मवीर बत्तरा, उपमत्री–श्री ज्ञान प्रकाश रहेजा श्री बलदेव विग श्रीमती उषा गुप्ता, श्रीमती पामीला काकडिया, श्री सुनील बत्रा, कोषाध्यक्ष–श्री महेन्द्र चौहान, सहकोषाध्यक्ष–श्री मनोहर लाल, पुस्तकाध्यक्ष–श्रीमती कृष्णा चौधरी, सहपुस्तकाध्यक्ष–श्रीमती सुदर्शन चौहान, लेखा निरीक्षक–श्री ब्रह्मदत्त बाली।

–**धर्मवीर बत्तरा**, मत्री

आर्यसमाज के उत्सव की सूची

[illegible] (झज्जर)

व्यायाम एव सदाचार प्रशिक्षक शिविर	१५ से १७ जून
आर्यसमाज कनीना (महेन्द्रगढ)	२५ जून से १ जुलाई

–**डॉ० सुदर्शनदेव आचार्य**, वेदप्रचाराधिष्ठाता

ये पढ़े-लिखे अनपढ़ लोग

कोई भी व्यक्ति अपने चारो तरफ दृष्टि डालकर यह भलीभाति समझ सकता है कि आज के पढे-लिखे व्यक्ति किस श्रेणी के प्राणी हैं ? अपनी किस्म के पढे लिखे ये अनपढ प्राणी स्वय के मा-बाप परिवार या समाज की भलाई के काम नहीं आ सकते, तब तक घास चरने वाले जगली जानवर और पढे-लिखे स्वार्थ मे डूबे भ्रष्टाचारी, पेटू व्यक्ति मे अतर किस बात का ?

सच्चे अर्थो मे कहा जाये तो इन पढे लिखे अनपढो ने ही आज समाज व देश की दुर्गति कर दी है। पूर्व मे जहा मनुष्य अशिक्षित या कम शिक्षित था उस समय उसमे मर्यादा कूट-कूटकर भरी हुई थी। तब एक इसान और जानवर मे बहुत फर्क था पर दुर्भाग्य कि आज वह दूरी कम होती जा रही है इसका श्रेय इन पढे लिखे अनपढो को ही जाता है। अधिकाशत अधिक पढे लिखे शिक्षित व्यक्ति ही येन केन प्रकारेण धन कमाने में जुटे हुए हैं। कुटिल बुद्धि के द्वारा कानून का प्रयोग अपने लिए रक्षा कवच के रूप मे किया जा रहा है। कम शिक्षित या अर्धशिक्षित व्यक्ति अपराध करने से डरता है या उसे स्वय को एक इज्जतदार इसान बने रहने का गर्व रहता है। इसके विपरीत अधिक शिक्षित व्यक्तियो के लिए इस बात से कुछ लेनदेन नहीं है कि जो कुछ वह कर रहे हैं इसका उनके परिवार समाज और देश पर क्या प्रभाव पड रहा है। उन्हे तो केवल सिर्फ केवल धन कमाने से मतलब है।

एक विशेष तथ्य यह है कि जिस कार्य से अपराधी धन कमा रहे हैं पढे लिखे भी वही सब कुछ बडी सफाई से कर धन कमा रहे हैं। अतर बस इतना है कि अपराधियो के पास कोई उचित कानून सम्मत ठौर नहीं है जबकि पढे लिखे अपने कानून के ठौर बनाये हुए हैं।

अपराधियो के कार्यो के तरीके एक दम से लठ छाप होते हैं। जबकि पढे-लिखो के कार्य कानून की गिरफ्त से बचकर चलने व पकड मे ना आने की नीति पर चल रहे हैं। उद्देश्य दोनो का एक ही कमाओ, खाओ जब तक देश है तब तक उसके धन को खाते रहो क्योकि यह उनके खाने की चीज है यदि किसी कारण से यहा के लोग नहीं खा पायेगे तो बाहर के लोग आकर खा जायेगे। अत सबसे पहली अनिवार्यता तो यही है कि देश को चरोखर बनने से रोका जाये और मैं समझता हू कि यह काम वर्तमान पढी लिखी अनपढ पीढी किसी भी स्थिति मे नहीं कर सकती है क्योकि चरोखर का चारा खा-खाकर यह पीढी साड हो गई है। उसे इसी व्यवस्था मे मजा आ रहा है। तब क्यों वह इस व्यवस्था को बदलेगी इस हेतु देश की नयी पीढी को ही आगे आना होगा। अन्यथा देश का भविष्य अन्धकारमय होता चला जाएगा। क्योकि हमारे देश के साडो से भी अधिक शक्तिशाली साड (अन्तर्राष्ट्रीय कम्पनिया) देश मे प्रवेश कर रहे हैं। वैसे भी हमारे पढे-लिखो ने देश को घटिया बनाकर विदेशों को सर्वोत्कृष्ट करार दे दिया है। एक समय ऐसा आने वाला है जब देशी (अर्थात् भारत के निवासी) केवल मूक दर्शक बने रहेंगे और उन्हीं की आखो के सामने विदेशी कम्पनिया ठीक उसी तरह जहाज पर धन लादकर ले जायेगी जैसा कि १८वीं सदी मे लेकर जाती थी।

हम नहीं चाहते कि ऐसा पुन हो पर सदेह केवल मुझे ही नहीं देश के करोडो नागरिको को है। दुर्भाग्य से यदि ऐसा होने लगे तब हम अपने पढे लिखे कर्णधारो को अनपढ की श्रेणी मे इतिहास मे दर्ज कर सकते हैं।

सन् १९४७ की स्वतन्त्रता के बाद से तो अभी तक यही सिद्ध हो रहा है कि स्वतन्त्रता के बाद देश को जिन हाथो मे जाना था उन लोगो मे वह पहुच नहीं पाया है वरना उसे बीच मे ही चापलूस कुटिल व घटिया वर्ग ने झटक लिया है और देश मे वही लूटपाट मची है जो अग्रेज व विदेशी शासको के समय मे चली थी। इसी वर्ग का साथ आधुनिक पढा लिखा वर्ग भी दे रहा है। तब आप किस स्थिति मे इस वर्ग को पढा लिखा कह सकते हैं ? प्रत्येक क्षेत्र मे कानून का उल्लघन, अधिकारों का स्वविवेक बनाम कुविवेक से उपयोग, सरकारी धन की लूट, देश पर बढता कर्ज साथ ही रचनात्मक कार्यो के लिए धन का नहीं बच पाना और वेतन भत्तों के नाम पर दिवालिया होता देश। एक तो वेतन भत्तो पर मोटी रकम और साथ मे मुद्रा कोष की लूट की छूट। इन सभी पढे लिखे अनपढो के लिए तो हाथ घी मे और सिर कढाई मे है। देश मे अभी तक करोडो कर्मचारियो मे से किसी के मुह से यह निकला कि हमारे अतिरिक्त देश मे और भी हमारे भाई-बहन हैं उन्हे भी कुछ मिलना चाहिए। यही तो मानवता है यही तो हमारी सास्कृतिक धरोहर है और इसी से हम और हमारा देश विश्व का पूजनीय है। यही हमारे लिए गौरव की बात है। पता नहीं भारत व उसके अपने सपूत कितने सहनशील और समझते-देखते हुए जहर के कडवे घूट पीने वाले हैं।

जितने गैर कानूनी कार्य आज के पढे-लिखे कर रहे हैं उसका १० प्रतिशत भी बिना पढे व्यक्ति नहीं कर रहे हैं अधिकाश गैर कानूनी कार्य पढे लिखे व कानून की समझ रखने वाले व्यक्तियो द्वारा ही किये जा रहे हैं और चूकि उन्हे अपराध करने व उसके परिणाम से बचने की कला आती है। तभी तो जनता की आखो के सामने कानून की धज्जिया उडती रहती हैं। एक पढे लिखे अपराधी को गैर जमानती कार्य में भी जमानत मिल जाती है जबकि उसी प्रकार के ही अपराध मे अशिक्षित को जेल की यात्रा करनी होती है।

भारत जिसे सत शिरोमणि की उपाधि प्राप्त थी उसके चरणों में पूरा विश्व नतमस्तक होता था दु:ख की बात है कि आज वही दूसरों की नकल करते हुए अपना सर्वस्व खोता जा रहा है। पाप कर्मो की कमाई से लोग अपना घर व पेट दोनो भरे जा रहे हैं। इसका सीधा सा अर्थ है कि मानवता समाप्त हो रही है तभी तो हम सभी घरों मे कैद होकर वर्ल्ड कप का आनन्द लेते रहते हैं और बार्डर पर सेना युद्ध के घमासान मे फसी रहती है। पढे लिखे व्यक्ति मे स्वार्थ अधिक होता है वह अपने हित का ध्यान अधिक रखता है। अत आम जनता जो सामान्य पढी लिखी व जागरूक है वह सर्वप्रथम मतदान में ही ऐसे व्यक्तियो को चुने जो स्वार्थी व कपटी न हो। ऐसे व्यक्तियो को चुने जो सच का साथ दे व सत्य कहने व करने का साहस एवं दृढता रखते हो। अन्यथा ये पढे लिखे अनपढ देश के कर्णधारों पर देश के भाग्य को छोडना इस भोली देश की जनता को बहुत महगा पडेगा। देश के कई निगम, सस्था व विभागो को यह पढा लिखा वर्ग खाने के बाद डकार भी नहीं ले रहा है। अब बारी जिला राज्यो से होती हुई पूरे देश पर आनेवाली है। पता नहीं कब कौन-सा अनुबध कमीशन खाकर दिया जाये। हे मेरे देशवासियो आधुनिक पढे लिखे बनाम कुटिल कपटी शकुनि व्यक्तियों की चालों को समझो पहचानो और उन्हे उनकी शक्ति से च्युत करो। इतनी समझ व बुद्धि तो इस देश की आबादी मे है। (विफी)

—पी ए. सिंगरोली

दैनिक 'हरिभूमि' से साभार

आर्यसमाज बहल जिला भिवानी का चुनाव

प्रधान–डॉ० एन पी गौड (अवकाश प्राप्त) उपप्रधान–श्री श्रीराम जी गिगनाऊ, मन्त्री–श्री भोलाराम जी सैनी, उपमन्त्री–महाशय श्री रामकुमार जी सैनी, कोषाध्यक्ष–श्री फूलचन्द जी मित्तल मिठीवाला, प्रचारमन्त्री–श्री नरसी जी मित्तल।

—भोलाराम सैनी, मन्त्री–आर्यसमाज बहल

आर्य-संसार

आर्यसमाज लंदन का वार्षिक गायत्री महायज्ञ

आर्यसमाज लंदन के वन्देमातरम् भवन के प्रागण में बडे हर्ष के साथ गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ। जिसके प्रमुख यजमान डॉ० मदनलाल बहल और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती प्रतिभा बहल एव परिवार था। यज्ञ का ब्रह्मत्व क्रमश प्रो० सुरेन्द्रनाथ जी भारद्वाज, प० रामचन्द्र शास्त्री, श्री बलदेव मोहन मेहता जी, श्रीमती वेदमती शर्मा और श्री सहदेव मल्होत्रा जी ने बडे ही सरल और सारगर्भित विचार रखें। यज्ञ प्रात ११ बजे से आरभ होकर साय ५ बजे पूर्णाहुति से सम्पन्न हुआ।

यज्ञ का सुन्दर आयोजन वेदपाठ के साथ बहनों ने किया जिसमें श्रीमती कैलाश जी, श्रीमती यशाजी आदि थे। लोग प्रात से निरन्तर आते रहे और यज्ञ मे आहुति, दान, प्रसाद ग्रहण करते रहे। भोजन की व्यवस्था यज्ञ के मुख्य यजमान ने की। श्री प्रधानजी ने सभी के सहयोग के लिए धन्यवाद किया।

आर्यसमाज लन्दन का वार्षिक चुनाव सम्पन्न

प्रधान–प्रो० सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज, उपप्रधान–डॉ० मदन बहल, श्री प्रियव्रत चोपडा, मंत्री–श्री मदन आनन्द उपमत्री–श्रीमती कैलाश भसीन, श्री अमृतलाल भारद्वाज, कोषाध्यक्ष–श्रीमती प्रतिभा बहल, उपकोषाध्यक्ष–श्री सुभाषमित्र वर्मा, प्रचारमत्री–श्री धर्मजय सन्धु, पुस्तकालयाध्यक्ष–श्री भूपेन्द्र सन्धु। –मदन आनन्द, मन्त्री

साप्ताहिक यज्ञ सम्पन्न

रोहतक २७ मई। भगवान् परशुराम सेवादल जिला रोहतक के तत्त्वावधान मे साप्ताहिक यज्ञ शृखला का १०५वा यज्ञ आज मुख्य सरक्षक श्री ओम्प्रकाश भारद्वाज पूर्वमत्री, हरयाणा सरकार के निवास पर श्रद्धा और उल्लासपूर्वक सम्पन्न हुआ। जिसमे हजारों की सख्या में रोहतक जिला के लगभग सभी बिरादरियो के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित हुए।

प्रेस को दिए गए एक वक्तव्य में श्री करणसिंह फौगाट ने बताया कि भगवान् परशुराम सेवादल रोहतक विद्यादान, औषधिदान, कन्यादान, कारगिल युद्ध रक्षा कोष, उडीसा चक्रवात त्रासदी, राजस्थान सूखा राहत तथा गुजरात भूकम्प पीडितों की सहायतार्थ पाच लाख रुपये से अधिक की राशि अब तक दे चुका है।

यह संगठन सर्वजातीय और अराजनीतिक है। यह न किसी की निन्दा करता है और न कोई चन्दा लेता है। यह यज्ञ शृखला कारगिल युद्ध के समय शहीदो की आत्मा की शान्ति के लिए शुरू की गई थी जो लगातार चल रही है।

पिछले हवन तथा आज के हवन की पूजा की थाली मे एकत्रित हुई धनराशि एवम् साडिया एक निर्धन कन्या के विवाह के उपलक्ष्य मे दी गई। इसके अतिरिक्त आज एक मेधावी छात्र को इन्जीनियरिंग कॉलेज जीन्द मे प्रवेश मिलने पर ११०० रुपये की राशि पुस्तक खरीदने के लिए दी गई। यज्ञ में पुरुषो के साथ मे महिलाओ की भागीदारी बढ रही है। विग कमाडर श्री सुनील कुमार शर्मा विशेष अतिथि के रूप मे अपने परिवार सहित शामिल हुए।

–**कर्णसिह फौगाट**, प्रेस प्रवक्ता, भगवान् परशुराम सेवादल, जिला रोहतक

हरयाणा की आर्यसमाजों तथा आर्यशिक्षण संस्थाओं की सेवा में आवश्यक निर्देश

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा स्थापित हरयाणा राष्ट्रभाषा समिति की तरफ से सर्वहितकारी मे दिनांक ७ मई, २००१ को दो पत्रो के प्रारूप प्रकाशित किए गए थे और निवेदन किया गया था कि इन पत्रों को अपनी सस्था की तरफ से सम्बन्धित महानुभावों को शीघ्र ही भेज दिया जाए। अब तक निम्नलिखित संस्थाओ से पत्र भेजे जाने की सूचना प्राप्त हुई है–

१ आर्यसमाज गोहाना मण्डी। २ आर्यसमाज पाढा जिला करनाल।
३ आर्यसमाज गोहाना शहर। ४ आर्यसमाज धामड जिला रोहतक।
५ आर्यसमाज मानपुर जिला फरीदाबाद।
६ आर्यसमाज मिर्जापुर बाछौद जिला महेन्द्रगढ।
७. आर्यसमाज रेलवे रोड यमुनानगर। ८ आर्यसमाज बुडाना जिला हिसार।
९ आर्य वेदप्रचार मण्डल अम्बाला। १० आर्य वरि० मा० वि० पानीपत।
११ आर्य कन्या गुरुकुल पाढा जिला करनाल।

जिन आर्यसमाजों और शिक्षण सस्थाओं ने अभी तक ये पत्र नहीं भेजे हैं उनसे पुन आग्रहपूर्वक निवेदन किया जाता है कि वे शीघ्र ही ये पत्र भेजकर एक प्रति हरयाणा राष्ट्र भाषा समिति को भेजने की कृपा करें। आप सबके सहयोग से ही हरयाणा राष्ट्र भाषा समिति द्वारा हाथ में लिए गए पांच सूत्री कार्यक्रम को सफलता तक पहुचाया जा सकेगा।

आपसे यह भी निवेदन है कि पाच सूत्री कार्यक्रम के बारे में अपने उत्सवों में सम्मेलन, गोष्ठी, भाषण इत्यादि के कार्यक्रम भी अवश्य रखें। इसके लिए वक्ताओं का सहयोग आपको समिति की तरफ से प्रार्थना पर मिल सकता है।

पांच सूत्री कार्यक्रम नीचे दिया गया है–

१ हरयाणा प्रदेश में प्रथम कक्षा से अनिवार्य अग्रेजी को समाप्त कराना।
२ हरयाणा सरकार के कामकाज में राजभाषा हिन्दी का शतप्रतिशत व्यवहार सुनिश्चित कराना।
३ राज्य के चारो विश्वविद्यालयो एव हरयाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड से अग्रेजी के गैरकानूनी वर्चस्व को समाप्त कराना।
४ हरयाणा उच्च न्यायालय मे हिन्दी मे काम की अनुमति दिलाना।
५ सैनिक अफसरों की भर्ती परीक्षाओं राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (एन डी ए), तथा सम्मिलित रक्षा सेवा (सी डी एस) से अग्रेजी की अनिवार्यता को समाप्त करना।

निवेदक

स्वामी इन्द्रवेश, अध्यक्ष **श्यामलाल**, सयोजक
हरयाणा राष्ट्रभाषा समिति, दयानन्दमठ, रोहतक

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के नेतृत्व में धर्मरक्षा महाभियान के बढ़ते कदम

गत ९ मई को ग्राम जोगी सरडा जिला बलागीर में धर्मरक्षा महाभियान के अन्तर्गत शुद्धि का एक महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम श्री प० विशिकेसन जी शास्त्री (उपप्रधान उत्कल आर्यप्रतिनिधि सभा) के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुआ। इस समारोह मे आसपास के ७-८ गाव के ईसाई बन्धु तेज धूप मे भी चलकर भाग लेने के लिए आये थे। इन दिनो उडीसा मे भयकर गर्मी पड रही है और पानी का भी अभाव है, फिर भी लोगो म उत्साह एव भावना थी। गत १ वर्ष से यहां के लोग शुद्धि सस्कार करने के लिए आग्रह कर रहे थे जो अब पूर्ण किया जा सका। दीक्षा के पश्चात् गुरुकुल आश्रम आमसेना के मुख्याध्यापक श्री ब्रह्मचारी कुजदेव जी मनीषी एव श्री कुलमणि जी आर्य ने दीक्षित बन्धुओ का स्वागत किया और उन्हे वैदिक धर्म की महत्ता समझाई। इस अवसर पर ९० परिवारो के ३०० से अधिक लोगो ने यज्ञ में आहुति और यज्ञोपवीत धारण कर वैदिक धर्म को ग्रहण किया।

ग्राम कटंगझरिया सुन्दरगढ़ में ४५० लोगों ने वैदिक धर्म ग्रहण किया

गत १३ मई को ग्राम कटगझरिया जिला सुन्दरगढ मे भी धर्मरक्षा महाभियान के अन्तर्गत २०० से अधिक परिवारो के ४५० से भी अधिक ईसाइयों ने विधिवत् यज्ञ में आहुति दी और यज्ञोपवीत धारण कर वैदिक धर्म को ग्रहण किया। इस दीक्षान्त समारोह मे भाग लेने के लिए पहले दिन सायकाल ही लोग दूर-दूर से आकर जमा हो गए थे। उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी व्रतानन्द जी सरस्वती किसी कारणवश नहीं जा सके, अत गुरुकुल आश्रम आमसेना के मुख्याध्यापक ब्र० कुजदेव जी मनीषी और साथ मे गुरुकुल के ब्रह्मचारी व्यवस्था के लिए गए थे। इस क्षेत्र के अनेक गणमान्य व्यक्ति तथा मुण्डाजाति के मुखिया भी आशीर्वाद देने के लिए आये थे। उस क्षेत्र के प्रमुख कार्यकर्ता श्री डलेश्वर जी पटेल ने पताका उत्तोलन किया, तथा गुरुकुल पानपोस के प्रबन्धक श्री सुशील कुमार जी सिंघल ने दीक्षितो को नये वस्त्र प्रदान किये। यह सारा कार्यक्रम भी प० विशिकेसन जी शास्त्री (उपप्रधान उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा) के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुआ।

यह धर्मरक्षा महाभियान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधिसभा के प्रधान पूज्य स्वामी ओमानन्द जी, महामन्त्री श्री वेदव्रत जी शर्मा की प्रेरणा पर सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री स्वामी धर्मानन्द जी चला रहे हैं। सभी स्थानो पर विशाल प्रीतिभोज की व्यवस्था होती है, इसका सारा खर्च गुरुकुल आमसेना की ओर से किया जाता है।

–ब्र० सुदर्शनदेवार्य, उपमन्त्री उत्कल आर्यप्रतिनिधि सभा, गुरुकुल आश्रम, आमसेना

आर्यसमाज रेलवे रोड, जीन्द जंक्शन का वार्षिक चुनाव

प्रधान–रामनिवास आर्य, उपप्रधान–अश्विनी कुमार, मन्त्री–सहदेव शास्त्री उपमन्त्री–मूलसिह राठौड, कोषाध्यक्ष–जयदेव आर्य, आडिटर-जगरूपसिह एडवोकेट, पुस्तकालयाध्यक्ष–श्यामलाल आर्य, प्रचारमन्त्री–प्रेमचन्द शर्मा।

–सहदेव शास्त्री, मन्त्री आर्यसमाज

आर्यसमाज हुनमान रोड, नई दिल्ली का निर्वाचन

प्रधान–श्री राममूर्ति कैला, उपप्रधान–श्री हसराज चोपडा डॉ० अमर जीवन, श्री वेदव्रत शर्मा, श्री वीरेश कुमार बुग्गा, मत्री–श्री अरुण प्रकाश वर्मा उपमत्री–श्री राजीव भाटिया, श्री विजय मनोचा, कोषाध्यक्ष–श्री सुभाष चन्द्र गण्डोत्रा, आन्तरिक लेखा निरीक्षक–श्री नरेन्द्र सिह हुड्डा, पुस्तकाध्यक्ष–श्री सुशील कुमार महाजन।

–अरुण प्रकाश वर्मा, मन्त्री

आर्य केन्द्रीय सभा करनाल का वार्षिक चुनाव

प्रधान–श्री वेदप्रकाश आर्य (डी सी एम), महामत्री–श्री लोकनाथ आर्य, कोषाध्यक्ष–श्री अनिल आर्य। –प्रो० चन्द्रप्रकाश शर्मा

गैट के माध्यम से खेती पर विदेशी हमला

अप्रैल १९९४ मे जब गैट समझौता पूरा हुआ और विश्व व्यापार सगठन (डब्ल्यू टी ओ) बनाने वाली सधि पर भारत सरकार के प्रतिनिधि के दस्तखत किये थे तब यह सब्जबाग दिखाये गये थे कि भारत के किसानो को दुनिया के बाजार मे अपना अन्न निर्यात करने का मौका मिलेगा। दुनिया के देश अपना बाजार खोलेगे तो भारत का कृषि उत्पादन विदेशों में जाएगा और भारत के किसान माला-माल हो जाएगे।

पिछले छह साल के बाद यह साबित हो गया कि भारत के साथ धोखा हुआ है। समझौते के समय भारत के कृषि मत्री बलराम जाखड थे। वे अब खुलकर कह रहे हैं कि बहुत बडी भूल हई थी। उनके शब्दो में "अब मुझे स्पष्ट हो गया है कि हम आर्थिक गुलामी की ओर तेजी से बढ रहे हैं।"

विश्व बैंक और मुद्रा कोष के दबाव में १९९१ मे भारत सरकार ने देश को विदेशी कम्पनियों के लिए खोल दिया। डब्ल्यू टी ओ पर दस्तखत करके इस काम पर कानूनी मोहर लग गई। पहले विदेशी कम्पनियो का निशाना देश के उद्योगो पर कब्जा करना होता है फिर सेवा क्षेत्र जैसे दूर सचार, बैंक, बीमा, परिवहन पर अधिकार करना और उसके बाद अपनी पूरी ताकत लगाकर देश की खेती किसानी को अपनी कब्जे मे करना चाहती है।

विदेशो से होने वाले आयात से भारत देश की खेती किसानी चौपट होने की आशका है अमरीका की एक कम्पनी की शिकायत पर भारत सरकार के ऊपर विश्व व्यापार सएगठन की अदालत मे मुकदमा चला जिसमे भारत के किसानों के लिए अपने बाजार १ अप्रैल २००१ से खोलने पडे हैं। इन सामानो के आयात के लिए भारत सरकार से इजाजत लेने की जरूरत नहीं है और वर्तमान सरकार की असहाय स्थिति समझ में आती है। काश इस असहाय स्थिति के जिम्मेवार विषैले वृक्ष के बीज १९९१ तथा १९९४ के गैट समझौते के दौरान न बोये होते। १४२९ सामानों की लम्बी सूची मे हर तरह के सामान हैं और ज्यादातर सामान ऐसे हैं जिनकी भारत को या तो जरूरत नहीं है या भारत स्वय जिनका निर्यात कर सकता है। इनमे सबसे ज्यादा सामान खेती किसानी से सम्बन्धित है। गेहू, चावल, दूध, किस्म-किस्म के मास, अचार, चटनी सभी का तो आयात होगी इस देश के किसानों ने कठोर मेहनत करके हमारी जरूरत से ज्यादा अनाज पैदा कर दिखाया है। उसका पैदा किया हुआ गेहू गोदामो में सड रहा है और आस्ट्रेलिया से आया हुआ ३० लाख टन गेहू धडल्ले से बिक रहा है। हॉलैण्ड, डेनमार्क से ६ रुपये लिटर वाला दूध भारत मे आ रहा है जिसके कारण पजाब, हरयाणा, महाराष्ट्र, गुजरात, म प्र के किसान ग्वाले और डेयरी उद्योग के लोग परेशानी मे पड रहे हैं।

यूरोप और अमेरिका की सरकारें अपने किसानो को फसल पैदा करने के लिए और सामानो को निर्यात करने के लिए भारी सब्सिडी देती हैं जिससे उनका सामान सस्ता पडता है। भारत जैसे गरीब देश में पहले ही किसानो को अमीर देशो के मुकाबले बहुत कम सब्सिडी मिलती है और अब वह भी विश्व बैंक, मुद्राकोष और विश्व व्यापार सगठन के दबाव मे और कम की गई है।

भारत अपने ६५ करोड किसानों को अप्रत्यक्ष सब्सिडी करीब एक अरब डालर देता है जबकि अमेरिका (६५ करोड किसानों की बजाय) अपने ९० लाख किसानो को २६ अरब डालर अतिरिक्त सब्सिडी देता है। सबसे धनी २९ देश जिनकी आबादी भारत की आबादी के आधी से भी कम है अपने किसानों को ३६३ अरब डालर सब्सिडी देते हैं। अर्थात् इनमे कोई शक नहीं है कि हमारा देश विदेशी खाद्य सामग्री से पटेगा और हमारा किसान मिटेगा सस्ते विदेशी पाम तेल और सोयाबीन के तेल से इस देश के मूगफली, नारियल, सरसों तेल का धंधा नष्ट होगा।

हमारी जमीन विदेशियों के कब्जे की आशका वास्तविकता मे बदलती दिखाई दे रही है। अबानी ने कर्नाटक में ५०,००० एकड जमीन किसानों से लीज पर ली। पेप्सी कोला ने पजाब में १६,००० एकड जमीन किसानों से लीज पर ली है। जमींदारी प्रथा के चगुल से आजादी के बाद देश बाहर आया था परन्तु आज फिर ये नए जमींदार पैदा हो रहे हैं। १९९८ के अत तक भारत सरकार को ६०० से ज्यादा ऐसे आवेदन मिले हैं जिनको २००० एकड से ज्यादा जमीन चाहिए। विदेशी कम्पनियों के दबाव में कई प्रदेशों में भूमि हदबंदी कानूनी समाप्त किया गया है। अदर ही अदर लीज पर खोलने का काम चल रहा है। व्यावसायिक खेती को बढावा देने की बात इस बार सरकार ने राष्ट्रीय नीति में की है और यह भी सरकार ने स्पष्ट कर दिया है कि कोई भी व्यवसायी (प्रतिष्ठान, कम्पनी) किसान से जमीन पर पट्टा लेना चाहे उस पर कोई प्रतिबध नहीं होगा। इसका सीधा अर्थ है कि कोई भी बडा किसान या कपनी का मालिक जितना बडा मर्जी फार्म चाहे बनाकर खेती व्यवसाय कर सकेगा।

कल को अमेरिका, इग्लैण्ड व जापान की कम्पनी कितना भी बडा फार्म हाउस बनाने को स्वतन्त्र होगी। जापान के तीन बैंको के बारे मे कहा जाता है कि अगर उन तीनो की पूजी जोड दी जाए तो भारत की एक-एक इच जमीन का पैसा चुका सकते हैं। इन बहुराष्ट्रीय कम्पनियों रूपी बहुमुखी राक्षसों से हमे अपनी जमीन को बचाना होगा।

मुद्दा : विश्व व्यापार संगठन का कृषि क्षेत्र में दखल कितना घातक

हमारे देश के किसानो के साथ जो बडी साजिश चल रही है वह है उनके हाथों से बीज छीनना और बीज के लिए उन्हें विदेशी कम्पनियों का मोहताज होना। इसलिए हमारे पेटेंट कानून मे बीजो पर पेटेंट करने का प्रावधान नहीं है। लेकिन डब्ल्यू टी ओ के पेटेंट कानूनों में बीजों पर पेटेंट किया जा सकता है अनेक विदेशी कम्पनियों ने हमारे देश मे बीजों पर पहले ही पेटेट करा रखे हैं और अब उन बीजों पर उनकी मालकियत हो गई है।

आधुनिक खेती और हरितक्रान्ति के नाम पर खेती का जो ढाचा देश में खडा हो गया है, उसमें कृषि मे लागत सामग्री जैसे खाद, बीज, कीटनाशक बिजली और डीजल सब लगातार इतने महंगे होते जा रहे हैं कि उसके विपरीत कृषि उत्पादों का दाम उतना नहीं बढा है।

नतीजन किसान कर्ज मे फस रहा है और जगह-जगह पर कृषि आत्महत्या करती प्रतीत हो रही है। जैसे आन्ध्र प्रदेश के कपास उत्पादक किसान या पंजाब के गेहू चावल उत्पादक किसान कर्जे में डूबते तथा कृषि को त्यागने पर मजबूर हो रहे हैं।

विदेशी कम्पनियो जहा-जहा किसानो की जमीन लीज पर ले रही हैं वहा-वहा पर उनके कब्जे हटाने का प्रयत्न करना चाहिए।

—प्रो० किरण कम्बोज

साभार दैनिक जागरण २४-५-२००१

प्रवेश सूचना

साबी नदी के किनारे पर पर्वतो की छटा से सुरम्य तडाग उद्यानो से सुशोभित सडक व रेलवे लाइन से जुडा हुआ शहर-गाव से दूर शान्त एकान्त स्वस्थ जलवायु युक्त आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया में छठी कक्षा से प्रवेश प्रारम्भ है तथा प्रथमा से आचार्य तक गुरुकुल पद्धति से महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सम्बन्धित पाठ्यक्रम नि शुल्क पढाया जाता है। गुरुकुल मे योग्य प्राचार्य अनुभवी प्राध्यापिकाये अध्यापन कार्य मे दत्त हैं। सुन्दर छात्रावास, गोशाला, यज्ञशाला, पुस्तकालय, व्यायामशाला के प्रबन्ध के साथ आर्ष पद्धति पर आधारित इस गुरुकुल में आचार व्यवहार स्वास्थ्य चरित्र निर्माण देशभक्ति तथा धार्मिक शिक्षा योगाभ्यासादि द्वारा स्वर्णिम विकास करवाया जाता है। प्रवेश प्रारम्भ है, तुरन्त सम्पर्क करे। स्थान सीमित।

सम्पर्क करे—प्राचार्य आर्ष कन्या गुरुकुल
दाधिया, ज़िला अलवर (राजस्थान)-३०१४०१

चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

नन्दगाव (भिवानी) का समापन समारोह गाव की प्राथमिक पाठशाला के प्रागण में दिनाक २७-५-२००१ को बडी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। यह शिविर २७-५-२००१ से २७-५-२००१ तक चला। शिविर में विभिन्न गावों के आर्यवीरों ने भाग लिया। उन्होंने योगासन, प्राणायाम, जूडो-कराटे, दण्ड-बैठक, सर्वांगसुन्दर व्यायाम, सैनिक शिक्षा, सूर्य नमस्कार एव विविध भारतीय खेलों का प्रशिक्षण लिया। चादसिंह आर्य झोंझूकला एव सुनील आर्य धारणवास व अन्य व्यायाम शिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण दिया गया।

समापन समारोह की अध्यक्षता महाशय जगदीश जी ने की तथा अध्यापक शेरसिह आर्य द्वारा सभी आर्यवीरों को जीवनोपयोगी पुस्तकें भेंट की गई।

—जगदीश चन्द्र आर्य, नन्दगांव जिला भिवानी

आर्यसमाज शाहबाद मारकण्डा (कुरुक्षेत्र) का चुनाव

प्रधान—श्री चौ० जयदयाल कक्कड, उपप्रधान—देवेन्द्र शर्मा, महामत्री—श्री सुभाष चन्द, उपमत्री—श्री निहालचन्द, प्रचारमत्री—श्री राममूर्ति, कोषाध्यक्ष—श्री वेदभूषण।

मन्त्री, आर्यसमाज शाहबाद मारकडा

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ७६८७४, ५७७७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, पं० जगदेवसिह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ७७७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०२
पंजीकरणसंख्या टैक/एच.आर./४९/रोहतक/९९ ☎ ०१२६२-७७७२२

प्रधानसम्पादक : प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक :- डा० सुदर्शनदेव आचार्य

वर्ष २८ अंक २८ १४ जून, २००१ वार्षिक शुल्क ६०) आजीवन शुल्क ६००) विदेश में १० पौंड एक प्रति १-२५

आर्यसमाज का विकास कैसे हो ?

❑ **हरिश्चन्द्र वर्मा वैदिक, मु.पो. मुरारई, जिला वीरभूम (प० बंगाल)**

आज से ५० वर्ष पूर्व जो आर्यसमाज की गति थी वह क्रमश ह्रास होते-होते अब बहुत संकुचित होगई है। जो पहिले से सक्रिय कार्यकर्ता थे वे अब नहीं रहे। इसका प्रचार-प्रसार बन्द जैसा होगया है। दिल्ली, हरयाणा, लखनऊ कुछ ही राज्यो मे थोडा आर्यसमाज का प्रचार होता रहता है, अन्य सब राज्यो मे नहीं के बराबर है। आज तक टी०वी० चैनल पर आर्यसमाज का प्रचार के लिए कोई भी आचार्य महात्मा अथवा सन्यासी नहीं देखा गया। जितना प्रचार दूरदर्शन द्वारा किया जासकता है उतना प्रचार सभा द्वारा नहीं हो सकता। मैंने सुना है कि जहा आर्यसमाज का प्रचार होता है वहा बहुत कम श्रोता पहुचते हैं। कुछ श्रोता तो ऐसे होते हैं कि भाषण सुनते-सुनते कान झाडकर बाहर चले जाते हैं। कोई प्रभावशाली भाषण नहीं होता है तो यह समाज नीरस होता है इसमे कोई बनावटी पौराणिक सृष्टिक्रम के विरुद्ध बाते नहीं होती।

हा तो हम कह रहे थे कि यदि आर्यसमाज की विचारधारा वैदिक सिद्धान्त को मानव के हृदय तक पहुचना है तो दूरसचार मत्री के साथ बात करनी होगी। देखिये दूरदर्शन पर जैसे अन्य मत वाले बापू आशाराम जी सब विषय के बारे मे अथवा पौराणिक समाजवाले गुरु आदि के बारे में मुस्लिम सम्प्रदायवाले उन पर अपना प्रचार करते रहते हैं, वैसे ही आर्यसमाज को भी करना चाहिए। यदि ऐसा नहीं होगा तो कुछ वर्षो मे जो भी है वह भी नहीं रहेगा। कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का स्वप्न साकार कभी नहीं हो पावेगा।

जिस प्रकार अन्य मतवाले बिना किसी के बुलाये प्रत्येक जिले में जाकर अपने-अपने मतों का प्रचार करते हैं और शिष्य बनाते हैं वैसे ही आर्यसमाज को भी करना होगा। इसके लिए सभी आर्य मंदिरों से चंदा इकट्ठा करके एक स्वय समाज की गाडी बस द्वारा स्थान-स्थान पर दो दिन रहकर प्रचार का केन्द्र बनाए जहा जाना होगा वहा के किसी माने-जाने व्यक्ति से सम्पर्क करके प्रचार का माध्यम बनाना होगा।

पत्र-पत्रिकाओं और पुस्तको के माध्यम से एक जगह बैठकर सफलता प्राप्त नहीं हो सकेगी। जिस प्रकार ऋषि दयानन्द भारत के प्रत्येक स्थान मे जाकर वैदिक धर्म के ज्ञान से सबको अवगत कराये थे, उसी प्रकार आर्यसमाज के वक्ता स्वामी और आचार्य लोगों को वैसे ही करना होगा।

जिस प्रकार जहा प्राकृतिक दुर्माग भूकम्प होता है से वहा उनकी सहायता के लिये आर्यसमाजी तुरंत पहुच जाता है उसी प्रकार जहा वैदिक ज्ञान से जो राज्य अपरिचित हैं वहा तुरत पहुचकर उन्हे सत्यज्ञान से परिचय कराना होगा और ऋषि दयानन्द का सन्देश सत्यार्थप्रकाश मुफ्त मे वितरण करना होगा।

हम देख रहे हैं जहा अन्य मतवालो की सख्या दिन-प्रतिदिन बढ रही है वहा आर्यसमाज की सख्या घटती जारही है। आनेवाली पीढी जिस परिवार मे केवल एक आर्य सिद्धान्त को माननेवाले यज्ञ-हवन सन्ध्या करते हैं, उनके बाद उनकी सतति वह भी नहीं कर पायेगे। जनसख्या बढ रही है और आर्यो की सख्या घटती जारही है। विदेशों मे प्रचार होता है ठीक लेकिन अपने देश को पहिले देखना है। इसमे प्रचार की और पुरोहितो की बडी कमी आ गई है। बहुत से राज्यों में जहा एक-दो आर्य सिद्धान्ती हैं, वे लाचार होकर पौराणिक ब्राह्मणो से ही विवाह और अन्त्येष्टि संस्कार करवा लेते हैं। उनके पुरोहित भी सब जगह होते हैं। किन्तु हाय रे आर्यसमाज तूने १२५ वर्ष में कुछ नहीं कर पाया। केवल पत्र-पत्रिकाओं और भक्तो की सख्या बढी है। क्या कारण है कि बापू आशाराम जी आदि का दूरदर्शन पर प्रतिदिन प्रात ७ बजे से उनका प्रवचन होने लगता है और हजारों लाखों की सख्या में श्रोताजन बडे प्रेम भाव से उनका भाषण सुनते हैं और लाखो की सख्या मे उनकी पत्रिका बिकी हो जाती है और, यह एक आर्यसमाज है जिसका कुछ पता नहीं कि वह कहा है बहुत से आर्य मंदिर मे सप्ताह में एक बार मत्रीगण आते हैं और बहुतो मे ताला लगा रहता है। इस पर विचार करना चाहिये। अगर आर्यसमाज की तरफ कोई ध्यान देता भी है तो वही जो उसके क्योंकि उनके आपस मे द्वन्द्व के कारण ही उनकी प्रगति रुकी हुई। एक इस्लाम मत है कि वह मत भले ही विज्ञान सम्मत न हो पर उन लोगों में अपने मजहब की आलोचना तर्क वितर्क नहीं करते जो बात हजरत मोहम्मद ने लिख दी वही उनके लिए खुदा की वाणी होगई। वे लोग अपने मजहब का पूरी मुस्तैदी के साथ पालन करते हैं किन्तु हिंदुओ मे बडी अनेकता है, बडी भिन्नता है, इनमें अनेको मत फैले हुए हैं। कोई राम कृष्ण को ईश्वर मानता है, कोई शैवमत वाले हैं। कोई राधा-कृष्ण को और कोई गुरु ग्रथ अन्य देवी देवताओ को माननेवाले होते हैं। इन सबका सुधार एक आर्यसमाज ही कर सकता है किन्तु उसके लिए धन और बौद्धिक वक्ताओ के परिश्रम की आवश्यकता है। आर्य सिद्धान्त मे इस्लाम जैसा एक कुरान और अदीस नहीं है। आर्यो का इतिहास बहुत प्राचीन है। चार वेदों को जानना उपनिषदो को जानना और भी अन्य वैदिक ऋषि सम्बन्धी ग्रन्थो को जानना कोई साधारण बात नहीं है फिर भी ज्ञानी ध्यानी और तीव्र बुद्धिवाले जिस किसी की शकाओ का समाधान कर सकते हैं। बाहर के दौरे पर जानेवाले प्रवक्ताओ को २-३ भाषाओ की जानकारी अवश्य होनी चाहिए। जैसे जहा राम, कृष्ण, राधा, काली, दुर्गा आदि को जो पूजते हैं यदि उनकी मडली मे गये तो उनमे किस प्रकार आर्य सिद्धान्त का प्रचार करना है, यह वहा के वातावरण पर निर्भर करता है, परन्तु सर्वप्रथम उनके हाथ मे सत्यार्थप्रकाश देकर यह कहना होगा कि इसे आप अवश्य पढे, आपके सभी प्रश्नों के उत्तर और आप लोग जिसे ईश्वर जानकर पूजन करते हैं, इन सबका ज्ञान इसके स्वाध्याय से हो जायेगा और यज्ञ करने का महत्त्व प्रकट करे कि इससे वायुमडल का शोधन और शुद्ध वातावरण फैलेगा। यज्ञ से सभी देवी देवता प्रसन्न होंगे, हवन करके वायु के अणु शुद्ध होने लगेगे यदि नित्य हवन करे तो यह सर्वोत्तम पूजा होगी और देवी देवताओ के सामने जो बलि देते हैं यह निषिद्ध कर्म है, क्योकि कोई भी देवी देवता जीवन लेने के पक्ष मे नहीं है, जीवन देने के लिए उनकी सृष्टि हुई है। किसी भी धर्मशास्त्र अथवा वेदो मे निरपराध प्राणियो को मारने की आज्ञा नहीं है। देखिये-महर्षि व्यास कहते हैं कि- **'सुरा मत्स्यान्मधमासमासव कृशरोदनम्। धूर्तै. प्रवर्तितं ह्यो तन्नैतद्-वेदेषु कल्पितम्।।**

अर्थ—सुरा, मछली, मधु, मास, आसव और इनका भक्षण करना धूर्तो ने चलाया है, वेदो मे इनकी चर्चा तक नहीं है।

उन्हें सर्वप्रथम यह बताना है कि हिन्दुओं का मूल ग्रन्थ वेद है, जैसा वेद कहता है वैसा ही आप लोगो को करना चाहिये। वेदो को मानना पढना-पढाना और सुनना-सुनाना हिन्दुओ का परमधर्म है और उसके बीजात्मक ज्ञान से जहा तक होसके ज्ञान और विद्या का विकास करे।

वेद एव शास्त्रो मे राम, कृष्ण, राधा, गोविन्द, हनुमान, शिव, ब्रह्मा, विष्णु, काली, दुर्गा, भवानी आदि को ईश्वर जानकर पूजन करने के लिये नहीं कहा गया है, यह सब नाम तो सृष्टि की शक्तियो के हैं वे कुछ समझ नहीं सकते उनकी मूर्ति जो बनाई जाती है वे जड है केवल ओम् ही सत्य है विद्या है जिसे सृष्टि के प्रारम्भ मे आदि काल से एक उसी का नाम लिया जाता रहा है।

आप लोग जहा कई प्रकार के मूर्ति बनाते हैं वहा केवल ओम् का प्रतीक बनाए और उसके अर्थ को समझकर वहीं पूजा के स्थान पर यज्ञ का आयोजन करे। यज्ञ की सामग्री विविध प्रकार की जडियो से तैयार की जाती है जो अतीव सुगन्धित होती है तथा कीटाणुनाशक और रोग निवारक होते हैं ऐसे आयुर्वेदिक चिकित्सा को छोडकर आप लोग धर्मविरुद्ध बलि का आयोजन

(शेष पृष्ठ आठ पर)

वैदिक-स्वाध्याय

भद्र—शा०—आत्मसमर्पण से कल्याण

ओ३म् यदंग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि।
तवेत् तत् सत्यमंगिरः।। (ऋ० ११६)

शब्दार्थ—(अग) हे प्यारे! (अंगिर) मेरे जीवनसार (अग्ने) प्रकाशक देव! (यत् त्व) जो तू (दाशुषे) आत्मबलिदान करनेवाले का (भद्र) कल्याण (करिष्यसि) करता है (तत्) वह (तव) तेरा (सत्यं इत्) सच्चा, न टलनेवाला नियम है।

विनय—हे प्रकाशमय देव! यह सच है कि स्वार्थत्यागी का कल्याण ही होता है। पर दुनिया में ऐसा दिखाई नहीं देता। दुनिया में तो दीखता है कि स्वार्थमग्न लोग ही आनन्द मौज उड़ा रहे हैं और स्वार्थत्यागी पुरुष सताये जारहे हैं। परन्तु हे मेरे प्यारे देव! हे मेरे जीवनसार! आज मैं तेरी परम कृपा से सूर्य की तरह यह साफ देख रहा हूं कि आत्म-बलिदान करनेवाले का तो सदा कल्याण ही होता है। इसमें कुछ संशय नहीं रहा, यह अटल है, बिल्कुल स्पष्ट है। दुनिया की ये प्रतिदिन की उल्टी दिखाई देनेवाली घटनायें भी आज मेरी खुली आखों के सामने से इस प्रकाशमान सत्य को छिपा नहीं सकती हैं कि आत्मसमर्पण करनेवाले के लिए कल्याण ही कल्याण है। मैं देखता हूं कि दुनिया में चाहे कभी सूर्य टल जाय, ऋतुएं बदल जायें, पृथ्वी उल्टी घूमने लग जाय और सब असभव सभव होजाये पर यह तेरा सत्य अटल है कि आत्म-बलिदान करनेवाले का अकल्याण कभी नहीं हो सकता—'न हि कल्याणकृत् कश्चित् दुर्गतिं तात गच्छति' {हे प्यारे! कल्याण करनेवाला कभी दुर्गति को प्राप्त नहीं होता'} कृष्ण भगवान् के गाये हुये ये सान्त्वनामय शब्द परम सच्चे हैं।

हे जीवन के जीवन! जब मनुष्य स्वार्थ को त्यागता है, आत्म-बलिदान करता है तो उस त्याग व बलिदान द्वारा हे कल्याणस्वरूप! वह केवल तेरे और अपने बीच की रुकावट का ही त्याग करता है, निवारण करता है और तेरे कल्याण स्वरूप को पाता है। भला, आत्म-बलिदान में अकल्याण की गुजाइश ही कहां है? सचमुच, स्वार्थशून्य पवित्र पुरुषों पर आये हुए कष्ट, दु ख आपत् सब क्षणिक होते हैं। उनके सम्बन्ध मे जो अक्षणिक है, सत्य है, अटल है वह तो उनका कल्याण है।

किसकी बात मानोगे

सांसारिक लोगो की मुक्ति के लिये, जो छोडकर आया १८ घण्टों की समाधि,
त्यागा अपना मोक्ष, कर्म क्षेत्र में उतरा, ऐसे आदर्श परम हितैषी योगी,
की बात नहीं मानोगे तो किसकी बात मानोगे।।१।।

माता-पिता, घर-बार, धन-सम्पत्ति व मान-सम्मान को त्याग कर,
सच्चे शिव की खोज में, कष्टों को सहा, जगलों की खाक छानी, बनकर जोगी,
उसकी बात नहीं मानोगे तो किसकी बात मानोगे।।२।।

देश से अज्ञान, पाखण्ड, अन्धविश्वास का अन्धकार मिटाने के लिये,
पत्थर, ईंटें खाई, जहर पीया, गालिया सुनी, कितने ही कष्ट, तकलीफे भोगी,
उसकी बात नहीं मानोगे तो किसकी बात मानोगे।।३।।

देश में कुरीतिया, कुप्रथाए थीं उनको मिटाया, गोरक्षा के लिये किया प्रयत्न,
असहायों का बना सहारा, नारी, शूद्रों को दिलवाया सम्मान, ऐसे कर्मयोगी,
की बात नहीं मानोगे तो किसकी बात मानोगे।।४।।

ब्रह्मचर्य, सदाचार, सयम और देश व समाज की सेवा का पाठ पढाकर,
स्वामी श्रद्धानन्द, अमीचन्द जैसों को लाया सत्पथ पर जो थे दुर्व्यसनों के रोगी,
उसकी बात नहीं मानोगे तो किसकी बात मानोगे।।५।।

सच्चाई के पावन पथ से हटाने के लिये, कितने ही दिये गये लालच व प्रलोभन,
पर ठुकरा दिये उस लगोटधारी फकीर ने, ऐसे सन्त, महात्मा, निर्लोभी,
उसकी बात नहीं मानोगे तो किसकी बात मानोगे।।६।।

हमको आया था, जगाने देवदयानन्द, लेकर वेदों का संदेश, पूरा करने गुरुवर का आदेश,
अब तो चेतो, जागो और उठो, ऐ! भोली मानव जाति, क्यों मुह ढककर सोगी,
उस जोगी की बात नहीं मानोगे तो किसकी बात मानोगे।।७।।

एक त्यागी, तपस्वी, परोपकारी, विद्वान् इस धराधाम पर युगों बाद अवतरित हुआ,
उसने देखा हमारा बुरा हाल, बनाया हमें 'खुशहाल' भगाकर धूर्त्त, पाखण्डी और ढोंगी,
उस योगी की बात नहीं मानोगे तो किसकी बात मानोगे।।८।।

—**खुशहालचन्द्र आर्य,** १८० महात्मा गाधी रोड (दो तल्ला) कलकत्ता-७०००0७

आर्यसिद्धान्त-शिक्षा

इन्द्रसिंह आर्य, आरजैड-६०, ब्लाक-ओ, नया रोशनपुरा, नजफगढ़, दिल्ली-४३

(गतांक से आगे)

विभीषण पत्नी सरमा के शब्दों में

(विदुषी मन्दोदरी वंश की एक झलक)

मैं सबको बतलाऊंगी।
कुछ नहीं छिपाऊगी।।
एक वीरागना के सौन्दर्य के सम्मुख।
मुझ सरमा का सर्वांग सुन्दरी होने का स्वप्न आज गिरा है अधोमुख।।
दुनिया वालो कभी न करना अपने जीवन में अभिमान।
क्योंकि ईश्वर के इस जगत् में एक से एक बढकर है सुन्दर, पराक्रमी और ज्ञानवान्।।(१)
जिनकी चर्चा है उनका नाम है मन्दोदरी।
उत्तम कुल श्रेष्ठ वर्ग से सुशोभित अप्सरा हेमा की सुपुत्री।।
सौम्य कजरारे नयनोंवाली का मुखड़ा है, चन्द्रमा के तुल्य प्रकाशमान।।(२)
पहिने हुई है वह विद्या का प्रतीक सुवर्णमयी कटिसूत्र।
उस निरभिमानी का हृदय है गंगा की तरह पवित्र।।
बातें करती है तब उसके होठों पर उभर आती है हल्की सी मुस्कान।। (३)
पिताश्री जिनके हैं विश्वकर्मा सुप्रसिद्ध अभियन्ता।
शब्द, अर्थ सहित जिनको कण्ठस्थ हैं चारों वेदसंहिता।।
वे ज्ञान-विज्ञान से देदीप्यमान ऋषि हैं, वेद विद्याओं का नित्य करते हैं दान।।(४)
वह ललित-कला अर्थात् नृत्य, गायन, कला-कौशल मे मुझसे है कहीं बढकर।
सच पूछिए तो मैंने वीणा को भी नहीं देखा है कभी छूकर।।
यू कहिये कि उसकी हस्त उगलियों मे जगत् की समस्त विद्याए हैं विद्यमान।।(५)
वह मेरी दिल से है प्रश्रय।
वस्तुत उनका आचरण है अति प्रशस्य।।
रावण का समस्त कुल विनष्ट नहीं होता, यदि वह अपनी भार्या की नेक सलाह लेते मान।।(६)
इन्द्रसिह आर्य किसी कार्य के आरम्भ करने से पहिले उस पर कर लेना चाहिए विचार।
किसी के दिल को दुख व मन को हानि न पहुचे सत्य की कसौटी पर खरा उतरे आपसी व्यवहार।।
सदैव याद रखे! जीओ और जीने दो की अभिप्रेरणा मे ही छिपा हुआ है, प्राणिमात्र का कल्याण।।(७) (क्रमश.)

युवक निर्माण प्रशिक्षण शिविर

हरयाणा आर्य युवक परिषद् की जिला इकाई फरीदाबाद के तत्त्वावधान मे २४ जून रविवार २००१ से १ जुलाई रविवार तक युवक निर्माण प्रशिक्षण शिविर का आयोजन आर्य केन्द्रीय सभा पलवल के प्रधान श्री धनपतराय आर्य के सान्निध्य मे आर्यसमाज जवाहरनगर (कैम्प) पलवल में किया जाएगा।

वेद प्रचार मण्डल फरीदाबाद के प्रधान राजेन्द्रसिह विधायक २४ जून को साय ४ बजे शिविर का उद्घाटन करेंगे। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अन्तरग सदस्य महाशय श्रीचन्द जी, शिवराम विद्यावाचस्पति, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के मुख्य अधिष्ठाता भगत मगतूराम, आर्यसमाज सैक्टर-१९ फरीदाबाद के प्रधान लक्ष्मीचन्द आर्य उद्घाटन समारोह मे विशिष्ट अतिथि होगे।

—**धनसिंह योगाचार्य,** शिविर सयोजक

सर्वहितकारी (साप्ताहिक) की मूल्यवृद्धि की सूचना

कागज एव छपाई तथा डाक शुल्क की मूल्य वृद्धि के कारण १ जुलाई, २००१ से सर्वहितकारी (साप्ताहिक) का वार्षिक शुल्क ६० रुपये तथा आजीवन शुल्क ६०० रुपये के स्थान पर ८० रुपये व ८०० रुपये कर दिया गया है। पुराने तथा नये ग्राहक बननेवालो से निवेदन है कि ३० जून २००१ तक वार्षिक शुल्क ६० रुपये तथा आजीवन शुल्क ६०० रुपये भेजकर इस सुविधा का लाभ उठावे। पत्रिका के स्तर मे सुधार के लिए सम्पादक मण्डल प्रयत्नशील है।

आशा है सुधी पाठक मूल्यवृद्धि के लिए क्षमा करेंगे। —सभामन्त्री

पुराना सामूहिक परिवार

❑ मा० शिवराम आर्य प्रभाकर सतनाली बास

आज से अब से ८०-९० वर्ष पूर्व विशाल सामूहिक परिवारो मे और आजकल के छोटे-छोटे परिवारो मे आकाश पाताल का अन्तर है। सामूहिक परिवारो मे कम से कम ५०-६० व्यक्ति होते थे। वे सब एक ही चूल्हे पर और आवश्यकतानुसार अधिक चूल्हे भी जला लेते थे। वे भोजन करने के लिए आपाधापी नहीं करते थे। वे व्यवस्था और अनुशासन के बडे पक्के होते थे। परिवार का एक मुखिया होता था। उसका आदेश भगवान् का आदेश माना जाता था। फिर भी मुखिया अपने परिवार मे से पाच समझदार व्यक्तियो की एक परिषद् (ससद्) बना देता था। आवश्यकता होने पर मुखिया परिषद् से सलाह-सम्मति ले लेता था। अलबत्ता तो परिवार मे कोई समस्या-झगडा होता ही न था और यदि छिटपुट हो भी जाता था तो मुखिया का आदेश तो सबको मान्य था ही, फिर भी मुखिया परिषद् से और अन्य परिवार के सदस्यो स्त्री-पुरुषो से पूछताछ कर जनतान्त्रिक विधि से निर्णय करता था। असली लोकतन्त्र अथवा जनतन्त्र तो यही था। गाधी जी की कल्पना का लोक तो यही था। अब तो लोक या जन को पाच साल के लिए कहीं गुम या रूहपोश कर देते हैं, केवल तन्त्र (लठ) पाच साल घूमता है। जिसको चाहे मारे चाहे छोडे। जो व्यक्ति वोट के समय जन को पकडता, हाथ जोडता था, वही व्यक्ति कुर्सी पर बैठते ही जनता का मालिक बन जाता है। चुनाव के समय असली चेहरे को छिपाकर, फरिश्तो मे आज कुछ शैतान शामिल होगए हैं। कल पैर पकडता तो आज शैतान होगया है। आज लोकतन्त्र कानों सुनते हैं, मगर आखो नहीं देखते।

व्यवस्था—परिवार मे ६० व्यक्ति हुए तो १५-२० व्यक्तियो को खेती-बाडी का काम सौंप देते, ६-७ को पशुओ को चराना-सम्भालना होता, परिवार में ३०-४० गाये होती थीं, १५-२० ऊट होते थे, भेड-बकरिया भी रखते थे। ४-५ व्यक्तियों का काम बाहर से सामान लाना और बाहर भेजना होता था। स्त्रियो की जिम्मेदारी आटा पीसना, भोजन बनाना, बाल-बच्चो को सभालना-पालन-पोषण करना तथा घर की सफाई-जचाई होती थी। मुखिया का काम सब के कार्यों की देखभाल निगरानी व अन्य परिवारो से सम्पर्क आदि साधना होता था। इस प्रकार सब कार्य बडे सुचारु रूप से चलते थे। उनके अन्दर समाई सहनशीलता का बडा मादा होता था। योग्यता और शक्ति के अनुसार काम सौपा जाता था तथा आवश्यकता के अनुसार सब वस्तुए मिल जाती थीं। इस प्रकार परिवार मे सब प्रकार सुख-चैन होता था। साम्यवादी देशो की या डा० लोहिया, फिरोज गाधी की समाजवादी पार्टी की पूरी व्यवस्थाए होती थी। इस प्रकार स्वतन्त्र परिवार व्यवस्था थी। वे परिवार स्वावलम्बी होते, किसी के मोहताज नहीं होते थे।

उन परिवारो की स्वतन्त्रभावना तथा स्वावलम्बन, स्वाभिमान की उत्कृष्ट अभिलाषा-विचारो को अग्रेजो ने पसन्द नहीं किया, क्योकि उनको रास नहीं आता था। अन्तत अग्रेज सरकार ने अपने प्रतिकूल समझ उन सामूहिक परिवारो को छिन्न भिन्न करने की योजना बनाकर, परस्पर फूट डलवाना आदि हथकण्डो को आरम्भ किया। धीरे-धीरे परिवार बिखरने लगे। परन्तु फिर भी बहुत समय तक सामूहिक परिवार अग्रेज की चाल को विफल करते रहे। वे लोग स्वावलम्बी, स्वाभिमानी और हट्टे-कट्टे तथा निडर होते थे। क्योकि उनका खानपान, रहन-सहन बडा सादा था। घी, दूध, दही, छाछ आदि पौष्टिक पदार्थ खाते-पीते थे। घर का उत्पन्न किया अन्न बाजरा, ज्वार, मूग, मौठ आदि खाते थे। उस समय चाय, शराब आदि नशे की वस्तुए न के बराबर थीं। एक परिवार दूसरे परिवार से मिलकर बडे प्यार-प्रेम से रहते थे। दूसरे का दुख-दर्द अपना दुख-दर्द समझते थे। प्रत्येक कार्य में परस्पर सहानुभूति रखते थे। इस एकता के कारण ही बहुत दिनो तक अग्रेज उनमे फूट न डाल सके थे। लेकिन अग्रेज ने अपनी योजना जारी रखी। उनका उद्देश्य समूह को तोडकर एकल भावना को उभारना था।

जल-व्यवस्था—कई परिवार मिलकर कुआ खोद लेते थे। सम्पन्न तो अकेला भी खोद लेता था। बणिया बडी लम्बी चौडी होती थी। उन बणियों मे तालाब भी होते थे, जो पशुओ के पीने के काम आता थे। वहा चरने का बडा साधन बणिया थीं।

पढने का साधन—दो-चार या कई परिवार मिलकर एक पण्डित को रख लेते थे। वह उनके बच्चो को पढाता था और विवाह-शादी, लग्न लिखना, लग्न लेना, हिसाब आदि सब कार्य करता था या उसका मासिक बान्ध देते थे या उसके बच्चो का खाने-पीने आदि का प्रबन्ध कर देते थे। उस पण्डित जी की बडी इज्जत करते थे। उसको अपना धार्मिक गुरु मानते थे। परिवार के कार्यो मे भी उसकी सलाह-सम्मति लेते थे। कूओ से बैलो द्वारा पानी निकालते थे और कभी-कभी डोल बरही (निजू) से भी पानी खींचते थे, पर पानी की कोई परेशानी न होती थी। उन परिवारो का धनी व्यक्ति भी भाइयो से मिलकर रहता था। अहकार की कोई भावना नहीं होती थी। आजकल तो जिसकी आट मे दो चार हजार रुपये हुये कि ऐठा-ऐठा चलता है, लेकिन उस समय सब समान होते थे।

वृद्धों का सम्मान-सेवाशुश्रूषा—वृद्ध व्यक्तियो की बडी सेवा होती थी। उसका थूक हथेली पर ओटने के लिए तैयार रहते थे। जब वृद्ध खाट पकड लेता था तो दो चार व्यक्ति उसके पास सेवा के लिए, मन लगाने के लिए बैठे रहते थे। लेकिन आजकल बूढा खटिया पकड लेता है तो ७०-८० प्रतिशत बूढे अकेले तडपते रहते हैं। सामूहिक परिवार मे वृद्ध को देवता-तीर्थ समझते थे, आजकल बूढो को बोझ समझते हैं। कई घरो मे तो बूढो को यहा तक भी कहते सुना है—दुनिया मर गई, यह बूढा पता नहीं कहा से अमर पट्टा लिखवा लाया है। भला हो चौ० देवीलाल जी का, जिसने वृद्धो का कुछ तो ध्यान किया था। वे आज के वृद्धो का सहारा थे।

आधुनिक आज के छोटे-छोटे एकल परिवार

इस लेख से पूर्व सामूहिक परिवार के विषय मे लिखा गया था, जिसमे उस परिवार का रहन-सहन, खान-पान, खेती-बाडी, पशु-धन का महत्त्व, जल-व्यवस्था, बच्चो की पढाई का साधन, घर-गृहस्थी की व्यवस्था, अनुशासन-महत्त्व, परिवार का मुखिया, मुखिया द्वारा परिवार के सदस्यो का कार्य-विभाजन, एक परिवार द्वारा दूसरे परिवारों से सहानुभूति, दुख-दर्द में सहायता, वृद्धो का मान-सम्मान, स्वावलम्बन, स्वाभिमान का विशेष ध्यान, सादा खानपान, उच्च विचार उनका आधार स्तम्भ था। अब आज के एकल छोटे परिवारो के विषय पर लिखा जाएगा तथा अन्त मे तुलनात्मक समीक्षा भी दी जाएगी।

छोटा परिवार—आजकल सरकार की ओर से बडा आकर्षक प्रेरित नारा है—"छोटा परिवार, सुख का आधार" यह नारा बाहर से तो कवितामय मनमोहक लगता है, परन्तु इसके अन्तर मन मे गोता लगाकर, तलहटी तक पहुचते हैं तो निरा ककर-पत्थर कीचड ही दिखाई देता है। जितना छोटा परिवार, उसकी मानसिकता उतनी ही छोटी होगी, सकुचित दृष्टिकोण होगा।

दृष्टान्त—एक तालाब जितना लम्बा-चौडा-विशाल होगा उसकी गहराई भी उतनी ही डूगी होगी और एक तलैया जितनी छोटी होगी, उसकी गहराई भी उतनी ही उथली (कम) होगी। छोटे परिवारो पर तलैया का दृष्टान्त शतप्रतिशत 'फिट' बैठता है। छोटे परिवार की समझ-दृष्टिकोण सकुचित ही होगा, उसकी भावना-विचार स्वार्थमय होगे उसके विचारो का दायरा सीमित-एकान्तिक होगा तथा समाज से सम्पर्क कम होगा। व्यक्ति समाज का अग है, समाज के बिना अकेला व्यक्ति चाहे कितना ही साधन सम्पन्न हो, सफल नहीं हो सकता। समाज से कटा व्यक्ति मानसिक रूप से पगु होगा। अपनी अहमन्यता तथा सकुचित विचारो के कारण व्यक्ति पडोसी से भी मधुर सम्बन्ध नहीं बना सकता। आज समाज छोटे-छोटे परिवारो मे विभाजित है। "अपनी-अपनी डफली, अपना-अपना राग" राग चाहे बेस्वरा हो अथवा बेसुरा अर्थात् लाभदायक हो या हानिप्रद, परन्तु अकेला ही तबले पर थपी मारता है—"गाव गिने न गुण्डा को गुण्डा गिने न गाव को" छोटे परिवार की यह छवि या औकात होती है। छोटे परिवारो मे दूसरे के प्रति सहानुभूति नहीं होती सहानुभूति तो दूर रही, दूसरे को दुखी देखकर प्रसन्न होते हैं। उसका तो अपनी चारदीवारी के अन्दर का ही ससार होता है। आज के मनुष्य की तस्वीर ऐसी होगई है—"आज का मानव बाहर दानव, अन्दर से चूहा" चूहे की तरह अन्दर ही अन्दर कुतरता-काटता रहता है। आज मित्र हैं, कल शत्रु बन जाते हैं—तनिक भी स्थायीत्व नहीं है। मन मे मैल (धोखा) और बाहर से घनिष्ठ मित्र बनकर विश्वासघात करते हैं—"जहन पत्थरों की फसले हैं, गुल खिलाने की बाते करते हैं।" आज घर-घर मे आग लग रही है—"घर को आग लग गई घर के चिराग से" अपने ही पराये होते देर नहीं लगती। आज तो—"दुश्मन को दोस्त बनाना तो दूर रहा, अपनो को ही दुश्मन बनाते देर नहीं लगती।"

छोटे परिवार मे वृद्धों का मान-सम्मान सेवा नहीं होती, क्योकि छोटे परिवार मे ४-५ सदस्य होते हैं, वे घर पर कम ही रह पाते हैं। उनमे से एक-दो नौकरी या किसी धन्धे मे लगे होते हैं। कोई बालक होता है, वह स्कूल मे चला जाता है। अकेला बूढा रह जाता है। वह हुक्का-पानी के लिए तरसता रहता है। पडोस से कोई सम्बन्ध नहीं होता, जो सेवा करते और पडोसी की भी ऐसी स्थिति होती है। दो मिया-बीबी होते हैं, वे नौकरी पर जाते हैं और कोई खेत मे काम करते हैं। यदि बडा परिवार होता तो २-४ घर पर अवश्य रहते। कई छोटे परिवारो मे बूढा, अकेला तडपता रहता है, वृद्धो के प्रति लोगो मे श्रद्धा भी नहीं रही।

अन्तर—सामूहिक परिवार मे और छोटे परिवार मे अन्तर-भेद निम्न प्रकार है—

पुराना सामूहिक परिवार

१ सामूहिक परिवार मे कम से कम ५०-६० व्यक्ति होते थे।

२ सामूहिक परिवार मे एक मुखिया होता था। उसका आदेश भगवान् का आदेश माना जाता था।

३ उस समय पशु धन को बहुत महत्त्व दिया जाता था। घी दूध, दही, छाछ खाने-पीने का ठाठ रहता था अत शरीर बलिष्ठ होता था।

४ वे लोग बात के-वायदे के पक्के होते थे अत लेन-देन जबानी होता था क्योकि परस्पर विश्वास होता था।

५ सामूहिक परिवारो मे व्यवस्था और अनुशासन पर विशेष ध्यान होता था।

६ सामूहिक परिवारो मे वृद्धो का बडा सम्मान था। उनकी सेवा खूब होती थी। वृद्धो को तीर्थ-देवता के समान माना जाता था।

७ वे लोग स्वावलम्बी और स्वाभिमानी होते थे गुलामी से घृणा करते थे।

८ सामूहिक परिवारो मे एक-दूसरे के दुख-दर्द को अपना दुख-दर्द मानते थे।

(शेष पृष्ठ चार पर)

पटवारी भक्त फूलसिंह बने

❑ लेखक : हरिदत्त विद्याप्रभाकर

भक्त फूलसिंह जी

आर्यसमाज पानीपत (हरयाणा) के सन् १९२२ के वार्षिकोत्सव पर दो सज्जन एक पटवारी को साथ लेकर पधारे। प्रात काल यज्ञ प्रारम्भ हुआ। ब्रह्मा थे स्वामी श्रद्धानन्द जी। उन्होंने आहुति देने के इच्छुक महानुभावों से यज्ञोपवीत धारण करने को कहा। उपरोक्त दोनों सज्जनो ने यज्ञोपवीत लेकर पटवारी के गले मे पहना दिया।

व्यसनो का त्याग—

पटवारी ने उनसे यज्ञोपवीत धारण करने के नियमो के विषय मे पूछा, तो उन्होने बताया कि सत्य को ग्रहण करना, नशीले पदार्थो—शराब, तम्बाकू, मास और बेईमानी, रिश्वत आदि का परित्याग तथा सदाचार को अपनाना मुख्य नियम है। यह सुनकर पटवारी ने निश्चय किया कि वह अब से उपरोक्त दुर्गुणो और दुर्व्यसनो का त्याग करेगा।

पटवारी की कायापलट होने लगी। पटवारी का नाम था फूलसिह, जो जिला रोहतक (वर्तमान सोनीपत) के गाव माहरा का निवासी था। उसने लोगो से खूब रिश्वत ली थी। एक बार उसने एक मोची से जूते की मरम्मत कराई थी और पैसे मागने पर उसने मोची को दो जूते मारे थे।

कठोर प्रायश्चित्त—

पटवारी ने अपनी भूमि बेचकर ली हुई सारी रिश्वत लौटाई और मोची के पास जाकर उसे जूता दिया और उससे स्वय को दो जूते मारने को कहा। मोची घबरा गया कि आज पटवारी को क्या होगया। अन्तत मोची को उसे जूते मारने पर बाध्य होना पडा। तभी से पटवारी बन गया भक्त फूलसिह।

आर्यसमाज का रग चढता गया और भक्त जी को गुरुकुल खोलने की धुन सवार होगई। आसपास के गावो मे घूमकर गुरुकुल के लिए भूमि की खोज शुरू की। "जिन ढूढा तिन पाइया" के अनुसार गाव भैंसवाल कला जिला रोहतक (वर्तमान सोनीपत) के पास जगल का चयन किया और समीपवर्ती गावों—भैंसवालकला, आवली, रिवाडा, करनाल के लोगो को इकट्ठा किया और गुरुकुल खोलने की इच्छा प्रकट की।

गुरुकुल भैंसवाल की स्थापना—

उन दिनो गुरुकुल की धूम मची हुई थी। स्वामी श्रद्धानन्द जी को लोग 'गुरुकुल आया' कहकर परिचित कराते थे। गाववाले राजी हुए और सैकडो बीघे भूमि गुरुकुल के लिए दान मे दी। गुरुकुल की स्थापना के लिए भक्त जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी से प्रार्थना की, जिसे स्वामी जी ने स्वीकार कर लिया।

फसल कटाई के बाद ज्येष्ठ मास मे गुरुकुल स्थापना का निश्चय हुआ। निश्चित तिथि पर स्वामी जी प्रात सोनीपत रेलवे स्टेशन पर पहुचे। उपस्थित जनसमूह ने स्वामी जी का भव्य स्वागत किया। स्वामी जी को भैंसवाल ले जाने के लिए बैलगाडी का प्रबन्ध किया गया था, क्योंकि उन दिनों बसें बहुत कम थीं। स्वामी जी ने बारह मील पैदल चलकर तय किया और लोगों की भीड साथ चल पडी। रास्ते मे आनेवाले गावो मे लोगो ने दूध की प्याऊ लगा रखी थी और गावों को खूब सजाया गया था।

दस बजे स्वामी जी गुरुकुल भूमि पहुचे। यज्ञ के बाद स्वामी जी ने विधिवत् गुरुकुल की स्थापना की। अपील पर धन और अन्न पर्याप्त मात्रा में एकत्र होगया। घास-फूस की तीन झोपडिया भी बना दी गई। जो सज्जन भक्त जी को आर्यसमाज पानीपत के वार्षिकोत्सव पर ले गये थे, उन्होंने सबसे पहले अपने बच्चो को गुरुकुल मे प्रविष्ट कराया, जिनके नाम आचार्य जी ने विद्यानिधि, हरिश्चन्द्र और सत्यवीर रखे। शिक्षा नि शुल्क थी, अत थोडे ही समय में ब्रह्मचारियो की सख्या पर्याप्त होगई। विद्याध्यापन के लिए ब्रह्मचारी युधिष्ठिर (बाद मे स्वामी व्रतानन्द जी), स्वामी ब्रह्मानन्द जी तथा आचार्य विश्वनाथ जी की सेवाए ली गई। और गुरुकुल धडल्ले से चलने लगा। दस वर्ष मे हालत यह होगई कि बच्चो को गुरुकुल मे प्रवेश मिलना कठिन होगया।

गुरुकुल की उन्नति—

झोपडियो के स्थान पर पक्के भवन बन गये थे। गुरुकुल के सचालन के लिए एक समिति का गठन किया गया था, जिसका एक सौ रुपये देकर कोई भी आजीवन सदस्य बन सकता था। उस समय के एक सौ रुपये वर्तमान के दस हजार रुपये के बराबर थे। भक्त जी ने गुरुकुल को आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के साथ सम्बद्ध नहीं किया था, क्योकि उस समय के आर्यो का चरित्र बहुत उत्कृष्ट था, इसीलिए विश्वास कर गुरुकुल चलता रहा।

स्नातको ने गुरुकुल संभाला—

१९३२ मे स्नातको का पहला दल दीक्षा लेकर गुरुकुल से निकला, जिन्हे देखने के लिए भारी सख्या में नर-नारी वार्षिकोत्सव पर एकत्रित हुए थे। स्नातक होने पर तीनो ही ने गुरुकुल मे अध्यापन कार्य आरम्भ किया था। कालान्तर मे तत्कालीन आचार्य और अध्यापको के चले जाने के बाद आचार्य का पद श्री आचार्य हरिश्चन्द्र जी को सौंपा गया। श्री विद्यानिधि जी विश्वेश्वरानन्द शोध सस्थान होशियारपुर चले गये और सत्यवीर जी ने अपने गाव में ही आयुर्वैदिक औषधालय खोलकर जनसेवा आरम्भ की। बाद मे स्नातक बननेवालो ने गुरुकुल को सभाल लिया।

लेखक

कन्या गुरुकुल—

भक्त जी को अभी पूर्ण सतोष नहीं हुआ था। वह कन्या गुरुकुल भी स्थापित करना चाहते थे। लोगो ने साथ दिया और कुछ वर्ष बाद खानपुर गाव के पास कन्या गुरुकुल की स्थापना की और अपनी दोनो कन्याओं—सुभाषिणी और गुणवती को गुरुकुल मे प्रविष्ट कराकर कन्या गुरुकुल चालू कर दिया, जो आज सारे देश मे सबसे बडा कन्या गुरुकुल होने का गौरव प्राप्त कर चुका है, जिसमे चार हजार के लगभग कन्याए विद्याध्ययन कर रही हैं। इसका श्रेय बहिन सुभाषिणी जी पद्मश्री की सतत और कठोर तपस्या और साधना को है।

भक्त फूलसिह जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के शुद्धि के कार्य को भी सभाला था और उसी में आततायी के हाथो शहीद हुए थे।

गुरुकुल भैसवाल श्री कपिलदेव जी शास्त्री (भूतपूर्व सासद) के नेतृत्व मे अपने चरमोत्कर्ष पर पहुच गया था, परन्तु शास्त्री जी के देहावसान के बाद लोगो ने बहुमत के आधार पर गुरुकुल पर कब्जा कर लिया और गुरुकुल को उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बनाकर गुरुकुलीय प्रणाली को समाप्त कर दिया और गुरुकुल की भूमि तथा गोशाला आदि को ठेके पर दे दिया। सध्या-हवन आदि कार्यक्रम बद होगये। क्या आर्यसमाज की कोई सस्था या अधिकारी इस ओर ध्यान देगा और गुरुकुल की पुन प्राणप्रतिष्ठा कर भक्त फूलसिह जी की स्मृति को चिरस्थायी कर सकेगा ?

सौजन्य से
आर्यसमाज प्रशान्त विहार, ए-ब्लाक, दिल्ली-११००८५

श्री चन्द्रभान जी पहुजा
विशाखा एन्कलेव, दिल्ली-३४

चरित्र-निर्माण शिविर का समापन १७ जून को

आर्ययुवक समाज हरयाणा द्वारा आयोजित सात दिवसीय राज्य स्तरीय शिविर का समापन समारोह १७ जून को प्रात ८ से १२ बजे तक मानव कल्याण वृद्धाश्रम उचानामण्डी (जीन्द) में आयोजित किया गया है जिसमें वैदिक विद्वान्, सन्यासी, भजनोपदेशक, आर्यनिता युवा शक्ति का मार्गदर्शन करेंगे। इस अवसर पर कार्यकर्त्ताओ को सम्मानित किया जाएगा। इसके अतिरिक्त हरयाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के नवनियुक्त सचिव चौ० महेन्द्रसिह मोर का सार्वजनिक अभिनन्दन किया जाएगा।

—**ओमदर्शन**, शिविर सयोजक

पुराना सामूहिक परिवार (प्रथम तीन का शेष)

९ उनका सादा खानपान, सादा रहन सहन और उच्च विचार होते थे।

१० उस समय उन परिवारो मे अलबत्ता तो कोई झगडा होता नहीं था और यदि कभी कोई समस्या हो भी जाती थी तो सब मुखिया मिलकर सुलझा लेते थे। परन्तु अदालतो मे नहीं जाते थे।

११ सामूहिक परिवारो मे स्त्री-पुरुष मे इसानियत का मादा होता था, सहनशील, गम्भीर प्रवृत्ति के होते थे।

आधुनिक—एकल परिवार

१ आजकल का छोटा होता है। बीच के परिवार मे ५-७ व्यक्ति होते हैं।

२ आज घर मे सब चौधरी होते हैं— चौधर के लिए बाप-बेटा की भी नहीं बनती। आपस मे कसमकसा रहती है। चौधरी का हुक्म झगडे की जड होता है।

३ छोटे परिवारो मे अलबत्ता तो पशु होता नहीं और होता है तो नाममात्र का परिवार के लोग चाय के चूसू होते हैं या तो एक बकरी रखते हैं या पाउडर की चाय।

४ आज व्यक्ति पग-फेर मे बदल जाते हैं। कहते हैं—मनुष्य की जबान और घोडे की लगाम फिरती अच्छी है—आज जबान की कोई कीमत नहीं।

५ आज देश मे तीनो—व्यवस्था, अनुशासन, विश्वास की कमी के कारण ही कुराफात हफरा तफरी मची हुई है। इन तीनो के अभाव मे बर्बादी।

६ आज इसान की शक्ल तो है, पर इसानियत नहीं, अत वृद्धो की सेवा १०-२० की ही होती है। जब इसानियत नहीं तो सेवा कैसी।

७ स्वावलम्बन, स्वाभिमान और विश्वास हवा होगए। धन-माया मिल जाए, चाहे सौ चमचा गिरी-चापलूसी करनी पडे। सब फोकट का माल चाहते हैं।

८ आज दूसरे के दु ख-दर्द मे सहायक होना तो दूर रहा, खुश होते हैं।

९ आज के खानपान की मत पूछो—चाय, शराब, मास अडे सब हजम होते हैं। उच्च विचारो की तो बात स्वप्न मे भी नहीं आती होगी।

१० आजकल तो थाना, अदालत मे बात-बात मे भागे जाते हैं। जहा खूब अपमान होता है, धन लुटाई होती है, पर भाई की बात नहीं मानते।

११ आजकल कम ही लोगो मे मानवता गम्भीरता होती है। छोटीसी बात पर सिर फुडा लेते हैं—बात-बात पर उच्छृखलता नाचती है।

हरयाणा सरकार का महत्त्वपूर्ण आदेश

१९६९ के हरयाणा राजभाषा अधिनियम की धारा ३ तथा ४ के अनुसार हरयाणा के सब सरकारी विभागो, जिला अदालतो तथा विश्वविद्यालयों आदि का समस्त कामकाज, पत्रव्यवहार आदि हिंदी में किया जाना अनिवार्य है। सरकार बार-बार कार्यालयो को हिदी में काम करने का आदेश भेजती है। परन्तु अधिकारी हिंदी में काम प्राय नहीं करना चाहते। इस कारण हरयाणा के कार्यालयो, अदालतों तथा विश्वविद्यालयो मे अग्रेजी का गैरकानूनी वर्चस्व समाप्त नहीं हो रहा। अग्रेजी मे काम होने से किसानो, मजदूरो तथा साधारण पढे-लिखे लोगो को भारी परेशानी होती है।

अग्रेजी की गैरकानूनी दादागिरी को समाप्त करने के लिए हरयाणा की जनता को जागरूक होना पडेगा। इसके लिए नीचे हरयाणा सरकार के मुख्य सचिव का एक महत्त्वपूर्ण आदेश दिया गया है। इस आदेश मे हिदी में काम न करने वाले कर्मचारियो के विरुद्ध कार्यवाही करने को भी कहा गया है।

समस्त बुद्धिजीवी जनता से अनुरोध है कि जब-जब वे हरयाणा के दफ्तरो, अदालतो और विश्वविद्यालय आदि मे अग्रेजी मे काम होते हुए पाये या सरकार की तरफ से कोई पत्र या अन्य प्रकार के कागज अग्रेजी में मिले तो इसका विरोध लिखित रूप मे सम्बन्धित अधिकारी को करे तथा इसकी फोटो प्रति मुख्यमन्त्री तथा हरयाणा राष्ट्रभाषा समिति को भी अवश्य भेजे।

सरकार को पत्र लिखते समय नीचे दिए गए मुख्य सचिव के पत्र का हवाला जरूर दे। आप चाहे तो अग्रेजी में प्राप्त सरकारी पत्रो की फोटो प्रतिया अपने पास रखकर उन्हे जहा से पत्र आया है वहा वापिस भी भेज सकते हैं और लिख सकते हैं कि क्योकि यह पत्र अग्रेजी मे भेजा गया है इसलिए गैर कानूनी है। जब तक इसे हिन्दी मे नहीं भेजा जाएगा हम इस पर अमल करने के लिए बाध्य नहीं हैं।

–श्यामलाल, सयोजक
हरयाणा राष्ट्रभाषा समिति, दयानन्दमठ, रोहतक

हरयाणा के मुख्य सचिव का ६-१०-९९ का आदेश

क्रमाक 62/37/98-जी एस T
प्रेषक
मुख्य सचिव, हरियाणा सरकार
सेवा मे,
1 सभी विभागाध्यक्ष एव आयुक्त, अम्बाला, हिसार, रोहतक एव गुडगाव मण्डल
2 रजिस्ट्रार, पजाब एव हरियाणा उच्च न्यायालय, चण्डीगढ।
3 सभी जिला एव सत्र न्यायाधीश, हरियाणा राज्य।
4 सभी उपायुक्त एव उप-मण्डल अधिकारी (नागरिक) हरियाणा।

दिनाक चण्डीगढ 6-10-1999

विषय . हरियाणा राज्य मे हिन्दी का प्रचलन।
महोदय,

मुझे निदेश हुआ है कि मैं उपर्युक्त विषय पर आपका ध्यान सरकार के क्रमाक 12/45/93-6 जी एस I दिनांक 25-5-93 तथा क्रमाक 62/37/98-6जी एस दिनाक 3-7-1998 की और दिलाते हुए सूचित करू कि जैसा कि आपको यह विदित है कि हरियाणा की राज्यभाषा हिंदी है और समय-समय पर सरकारी कार्यालयों मे हिन्दी में कार्य करने बारे निर्देश भी जारी किये जाते रहे हैं, परन्तु बडे खेद के साथ कहना पडता है कि सामान्य रूप से अभी तक भी सरकारी कार्यो में अग्रेजी का काफी प्रयोग किया जा रहा है। सरकार इस बात को गम्भीरता से देखती है। सरकार ने कहा है कि भविष्य मे सभी प्रशासनिक विभाग राष्ट्रभाषा हिन्दी में ही। सरकारी टिप्पणिया एव पत्राचार करे। सरकार ने यह भी चाहा है कि अग्रेजी का प्रयोग केवल उन कानूनी मामलों मे किया जाये जो कि माननीय सर्वोच्च न्यायालय, उच्च न्यायालय या अन्य न्यायालयो से सम्बन्धित हों। इस तरह से भारत सरकार या दूसरी राज्य सरकारो से पत्राचार भी हिन्दी मे किया जाए, परन्तु अगर आवश्यक हो तो एक अग्रेजी रूपान्तर साथ मे भेजा जाए।

इन हिदायतो की अवहेलना करने पर दोषी अधिकारियो/कर्मचारियो के विरुद्ध कार्यवाही की जायेगी। आपसे अनुरोध है कि इन हिदायतों की अनुपालना कडाई से करवाए।

भवदीय
हस्ता/- स सिह
सयुक्त सचिव, सामान्य प्रशासन,
कृते मुख्य सचिव, हरियाणा सरकार।

एक प्रति सभी वित्तायुक्तो एव प्रशासकीय सचिवो को सूचनार्थ एवं अनुपालनार्थ प्रेषित की जाती है।

हस्ता/- स. सिह
सयुक्त सचिव, सामान्य प्रशासन,
कृते . मुख्य सचिव, हरियाणा सरकार।

सेवा में,
सभी वित्तायुक्त एव प्रशासकीय सचिव,
हरियाणा सरकार।

अशा०क्रमाक 62/37/98-6जी एस I दिनाक 6-10-1999
पृ०क्रमाक 62/37/98-6जी एस I दिनाक 6-10-1999

एक प्रति हरियाणा राज्य के बोर्ड/निगमो के सभी प्रबन्ध निदेशको को इस अनुरोध के साथ भेजी जाती है कि उपरोक्त हिदायतो की दृढतापूर्वक अनुपालना करवाई जाए।

हस्ता/- स सिह
सयुक्त सचिव, सामान्य प्रशासन
कृते मुख्य सचिव, हरियाणा सरकार।

हरयाणा राष्ट्रभाषा समिति की बैठक की रिपोर्ट

आगामी राष्ट्रभाषा सम्मेलन भिवानी में

हरयाणा राष्ट्रभाषा समिति की एक आवश्यक बैठक रविवार १० जून, २००१ को, अग्रसेन भवन, हालू बाजार, भिवानी मे श्रीमान ला० जगदीश प्रसाद जी सर्राफ, प्रधान आर्यसमाज नया बाजार, भिवानी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई। बैठक मे रोहतक, हिसार, बुडाना, तोशाम तथा दिल्ली के प्रतिनिधियो के अतिरिक्त भिवानी के गणमान्य बुद्धिजीवियों, आर्यसमाज के अधिकारियों, अध्यापको, प्रोफेसरो वकीलो, समाजसेवियो, सरकारी अधिकारियों, पत्रकारो तथा युवा कार्यकर्ताओ को मिलाकर ४० से अधिक महानुभावो ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

अध्यक्ष तथा अतिथियो के स्वागत के बाद गत बैठक (८-४-२००१) की कार्यवाही की सम्पुष्टि की गई। समिति के सहसयोजक डॉ० जगदेव विद्यालकार तथा सयोजक श्री श्यामलाल ने समिति के गठन के उद्देश्यो तथा समिति द्वारा स्वीकार किए गए ५ सूत्री कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की तथा निवेदन किया कि इसि कार्यक्रम को सफल बनाने मे भिवानी जिले से पूरा सहयोग मिलना चाहिए।

अध्यक्ष श्री सर्राफ जी ने बैठक मे पधारे लोगो का स्वागत किया तथ सभा द्वारा बनाई गई इस समिति को एक ठोस कदम बताया। ५ सूत्री कार्यक्रम का पूरा समर्थन करते हुए उन्होने भिवानी के सब वर्गो और सब विचारो के लोगो के पूरे सहयोग की घोषणा की तथा कहा कि अगस्त २००१ मे भिवानी मे बहुत अच्छे और प्रभावशाली स्तर पर राष्ट्रभाषा सम्मेलन रखा जाएगा।

बैठक में प्रसिद्ध समाजसेवी श्री राधाकृष्ण अग्रवाल, श्री रघुनाथ, दैनिक चेतना भिवानी के सम्पादक श्री देवव्रत वशिष्ठ, प्रियदर्शी (हिसार), प्रो० भूपसिह, श्री सुरेश गर्ग, श्रीमती निर्मला सर्राफ, श्री रामगोपाल गुप्ता तथ सिह आर्य ने पचसूत्री कार्यक्रम की सफलता के लिए अपने सुझाव दिए। मुख्य सुझावो मे डी ए वी सस्थाओ मे हिदी माध्यम चालू कराना, हिदी के प्रति हीन मानसिकता मे परिवर्तन, अपने दैनिक कार्यो मे हिदी के प्रयोग का सकल्प, विज्ञान, इजीनियरिग, मेडिकल आदि की पुस्तको का हिन्दी मे अनुवाद हिदी मे प्रोत्साहन के लिए राज्यपाल, मुख्यमन्त्री, विश्वविद्यालयो मे कुलपतियो तथा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष से मुलाकात आदि से सम्बन्धित थे।

विचार विमर्श के बाद बैठक मे सर्वसम्मति से निम्नलिखित निश्चय किए गए–

१ भिवानी जिले मे समिति के काम की प्रगति तथा मार्गदर्शन के लिए श्रीमान् ला० जगदीश प्रसाद सर्राफ को समिति का उपाध्यक्ष मनोनीत किया जाये।

२ अगस्त २००१ मे किसी सुविधाजनक तिथि को भिवानी मे राष्ट्रभाषा सम्मेलन का प्रभावशाली स्तर पर आयोजन किया जाए।

३ सम्मेलन को सफल बनाने के लिए निम्न प्रकार से १४ सदस्यीय सयोजन समिति का गठन किया गया।

सरक्षक–श्री जगदीश प्रसाद जी सर्राफ भिवानी, अध्यक्ष–श्री राधाकृष्ण जी अग्रवाल भिवानी, सयोजक–श्री सुरेन्द्र कुमार जी एडवोकेट भिवानी, पदेन सदस्य–स्वामी इन्द्रवेश जी रोहतक, श्री श्यामलाल दिल्ली सदस्य–डॉ० जगदेव विद्यालकार, रोहतक।

अन्य ८ सदस्यों का मनोनयन अध्यक्ष तथा सरक्षक परस्पर विचार-विमर्श से करेगे।

४ हरयाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड मे हिन्दी को प्रोत्साहन दिलाने के लिए, बोर्ड के अध्यक्ष से समय लेकर समिति का एक शिष्टमण्डल मिलने का प्रयास करे।

बैठक का सचालन श्री सुरेन्द्र कुमार जी एडवोकेट ने दक्षतापूर्वकह किया। श्री सुरेश जिन्दल ने धन्यवाद ज्ञापन किया। शाति पाठ के बाद बैठक की कार्यवाही उत्साहपूर्ण वातावरण मे सम्पन्न हुई।

बैठक के बाद अग्रसेन भवन के प्रबधको की तरफ से भोजन की सुन्दर व्यवस्था की गई। बैठक के सुचारू सचालन सुन्दर व्यवस्था तथा हर प्रकार के सहयोग के लिए हरयाणा राष्ट्रभाषा समिति की तरफ से श्री जगदीश प्रसाद सर्राफ तथा उनके सब सहयोगियो का आभार प्रकट किया जाता है।

–श्री श्यामलाल, सयोजक
हरयाणा राष्ट्रभाषा समिति दयानन्दमठ, रोहतक

गोसंवर्धन और महर्षि दयानन्द

❑ **प्रतापसिंह शास्त्री**, एम ए, पत्रकार, २५ गोल्डन विहार, गगवा रोड, हिसार

गताक से आगे–

इन्हीं दिनो किसी प्रमुख पादरी साहब से भी गोरक्षा के विषय मे महर्षि की बातचीत हुई थी तथा महर्षि ने गाय के लाभ बताकर उसकी रक्षा की आवश्यकता के विषय मे पादरी साहब को सहमत कर लिया था। उदयपुर नरेश महाराणा सज्जनसिह ने स्वामी जी को अपने यहा आमन्त्रित किया। महर्षि दयानन्द ११ अगस्त सन् १८८२ को उदयपुर पहुचे। महाराणा ने स्वामी जी के आवास के लिए गुलाब बाग स्थित अपना नौलखा महल दिया। (यहा यह उल्लेखनीय है कि २८ नवम्बर सन् १९९२ को यह नौलखा महल राजस्थान सरकार ने विधिवत् आर्यसमाज को सौंप दिया है) महाराणा सज्जनसिह नियमित रूप से प्रतिदिन स्वामी जी के पास मनुस्मृति राजधर्म आदि पढने के लिए, समझने के लिए नौलखा महल मे आया करते थे। उस दिन स्वामी जी स्वय महाराणा सज्जनसिह के दरबार मे जा पहुचे। दशहरा के अवसर पर चढाई जाने वाली पशुबलि से द्रवीभूत होकर स्वामी जी ने महाराणा से निवेदन किया–"आप राजा हैं, न्यायासन पर विराजमान हैं। मैं इन गौ आदि मूक प्राणियो का वकील बनकर आपके सामने अभियोग लेकर उपस्थित हू। बताइये इनका क्या अपराध है जो देवताओ के नाम पर इन्हे प्राणदण्ड दिया जा रहा है। महाराणा सज्जनसिह ने चिरकाल से चली आ रही इस पशुबलि की कुप्रथा को तुरन्त बन्द करने का आदेश दे दिया।

महर्षि दयानन्द ने उदयपुर नरेश महाराणा सज्जनसिह से जोधपुर नरेश महाराणा जसवन्तसिह को पत्र लिखवाकर अपने जोधपुर राज्य मे गोवध बन्द करने की प्रेरणा दी। जोधपुर नरेश ने अपने राज्य मे गोवध बन्द कर दिया था।

महर्षि दयानन्द ने '**गोकरुणानिधि**' लघुग्रन्थ को प्रथम बार हजारो प्रति के रूप मे सन् १८८० ई० मे आगरा मे रहकर प्रकाशित किया। स्वामी जी २५ नवम्बर सन् १८८० से १० मार्च १८८१ तक आगरा क्षेत्र मे रहे उन्हीं दिनो यह लघु ग्रन्थ लिखा गया और प्रकाशित किया गया। रामरतन नामक एक पुजारी ने इसकी कई सौ प्रतिया आम जनता तक पहुचाई और ६७/- रुपये प्राप्त किये और यहीं आगरा मे ही महर्षि ने "**गोकृष्यादि रक्षिणी सभा**" स्थापित की और उसके नियम उपनियम भी बनाए। गोकरुणानिधि मे दोभाग हैं–प्रथम भाग मे गौ आदि पशुओ को मारकर खाने की अपेक्षा उनकी रक्षा करके उनके घी दूध द्वारा अत्यधिक मनुष्यो को लाभ पहुचाना है। यह बात गणित द्वारा स्पष्टतया दर्शाई व समझाई गई है। मासाहार के दोषो तथा निरामिष भोजन के महत्त्व का भी वर्णन किया है। दूसरे भाग मे गोरक्षार्थ स्थापित होनेवाली सभाओ के नियमो उपनियमो का उल्लेख है। उस समय इस "गोकरुणानिधि" का मूल्य पाच या छ पैसे था और रामतन पुजारी ने इसी हिसाब से ६७/- रुपये की ये पुस्तके बेची थी इससे प्रतीत होता है कि प्रथम बार प्रथम सस्करण की हजारो प्रतिया प्रकाशित हुई थीं।

'गोकरुणानिधि' के लिखने से पूर्व 'गोरक्षा आन्दोलन' के क्रम मे महर्षि दयानन्द के प्रयत्न से उदयपुर और जोधपुर तथा बूदी राज्यों में गोहत्या बन्द होगई। २४ सितम्बर सन् १८७८ से ९ जनवरी सन् १८७९ तक महर्षि दयानन्द हरयाणा प्रान्त के **रिवाडी** नगर मे पधारे थे। राव युधिष्ठिरसिह पुत्र राव तुलाराम जो ८५ ग्रामो के जमींदार थे। दिल्ली के शाही दरबार मे गये थे। वहीं स्वामी जी का विज्ञापन देख उनसे मिलने गये। दर्शन और बातचीत के पश्चात् उनसे प्रार्थना की कि आप हमारे यहा पधारे, मैं आपका उपदेश सुनना चाहता हू। राव साहब को सत्य धर्म का अधिक इच्छुक देख स्वामी जी ने कहा कि हम आपको स्थिर बुद्धि देखेगे तो वैदिक धर्म की शिक्षा अवश्य देगे। तत्पश्चात् बहुत समय तक परस्पर पत्रव्यवहार होता रहा। अन्तत सत्यधर्म की खोज के प्रति उनका बहुत अधिक अनुरोध देखकर जयपुर से तार दिया कि हम रिवाडी आते हैं। सवारी और निवास स्थान का प्रबन्ध करदे। राव साहब ने तलापुरियो के बाग मे जो नगर से आधा मील पूर्व की ओर है, स्वामी जी के ठहरने का प्रबन्ध किया। बडे आदर-सत्कार से स्वामी जी को लाये। स्वामी जी इन दिनों वेदभाष्य कर रहे थे। कई पण्डित स्वामी जी के साथ थे। स्वामी जी ने विभिन्न विषयों पर प्रवचन करते हुए गोरक्षा पर भी विशेष व्याख्यान दिये और हरयाणा प्रदेश मे सबसे पहली गोशाला जो आधुनिक गोशाला है स्वामी जी की प्रेरणा से स्थापित हुई।

३१ दिसम्बर सन् १८८१ से २ जून सन् १८८२ तक महर्षि दयानन्द बम्बई मे वेदप्रचार करते रहे। २ मार्च सन् १८८१ को आर्यसमाज बम्बई का वार्षिकोत्सव स्वामी जी की उपस्थिति मे हुआ और लाहौर मे सशोधित किए हुए आर्यसमाज के १० नियम भी इसी आर्यसमाज द्वारा स्वीकार किये गये। यहीं २२ जनवरी १८८२ को बम्बई के फ्रामजी कावसजी इस्टीटयूट के भवन मे दो हजार से अधिक की उपस्थिति मे स्वामी जी ने कहा कि विदेशियो की सख्या अत्यधिक होजाने से हिंसा बढ गई है। इसी प्रसग मे उन्होने गोहत्या के अनौचित्य को भी सिद्ध किया और लोगो से अपील की कि वे गोरक्षा गोपालन को अपनाए। **क्रमश**

सूचना–डाक दरों में वृद्धि

सभा से सम्बद्ध सभी आर्यसमाजों तथा सर्वहितकारी साप्ताहिक के पाठकों को सूचित किया जाता है कि १ जून २००१ से डाक दरों मे निम्नलिखित प्रकार से वृद्धि की गई है। सभा कार्यालय मे प्रतिदिन बैरग पत्र प्राप्त हो रहे हैं। इससे सभा को आर्थिक रूप से हानि हो रही है। आप सभी से अनुरोध है कि आप अपने पत्रो पर पूरी राशि की टिकटे लगाकर भेजे।

	वर्तमान दर	बढी हुई दर
पोस्टकार्ड	२५ पैसे	५० पैसे
अन्तर्देशीय	२-००	३-०
लिफाफा	३-००	४-००

–**प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास**, सभामंत्री

संन्यास-दीक्षा

दयानन्दमठ दीनानगर की पवित्र यज्ञशाला में दिनांक २०-५-२००१ रविवार को सन्त शिरोमणि, वैदिक यतिमण्डल के अध्यक्ष, पूज्य स्वामी सर्वानन्द सरस्वती जी ने उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले के जमनियां गांव के निवासी श्री गौरीशंकर जी को वैदिक विधि अनुसार संन्यास की दीक्षा देकर उनका शुभ नाम स्वामी सुकर्मानन्द सरस्वती रखा।

इस शुभावसर पर पूज्य गुरुदेव जी ने उपदेश देते हुए कहा कि अच्छे सन्यासी की तरह लोकैषणा, वित्तैषणा, पुत्रैषणा को त्याग कर मानवत्व के कल्याण के लिये कार्य करो। स्वामी सुकर्मानन्द जी ने दृढ संकल्प किया कि मैं वैदिक धर्म का प्रचार और प्रसार करूंगा तथा मानवता के कल्याण के लिये पूरा जीवन लगा दूंगा।

—**योगेन्द्रपाल शास्त्री**, दयानन्दमठ, दीनानगर

बरहाणा में सदाचार एवं व्यायाम प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

आर्यसमाज बरहाणा द्वारा दिनाक २८-५-२००१ से ३-६-२००१ तक आयोजित सात दिवसीय सदाचार एवं व्यायाम प्रशिक्षण शिविर सिद्धान्ती भवन बरहाणा में सम्पन्न हुआ जिसमें ७५ विद्यार्थियों ने भाग लेकर योगासन, प्राणायाम, दण्ड-बैठक आदि भारतीय व्यायामों का क्रियात्मक प्रशिक्षण लिया। यज्ञ-सत्सग व बौद्धिक कार्यक्रम का सचालन डॉ० राजपालसिंह ने किया। होनहार छात्रों को स्वामी ओमानन्द जी महाराज ने पुरस्कृत किया एवं प्रेरणाप्रद उपदेश व आशीर्वाद दिया तथा धर्मार्थ औषधालय बरहाणा ने स्वामी जी को कैंसर हस्पताल हेतु ११०००/- ग्यारह हजार रु० दानरूप मे भेंट किये। आर्यसमाज के कोषाध्यक्ष श्री टेकराम जी ने सभी को अपनी ओर से हलवा बनाकर प्रसाद रूप में वितरित किया। सभी ने उत्साह से भाग लिया तथा दान देकर सहयोग किया।

—**मन्त्री, आर्यसमाज बरहाणा**

केरल वैदिक मिशन का चुनाव

सरक्षक—महात्मा प्रेमप्रकाश वानप्रस्थ, धूरी (पजाब), प्रधान-श्री वासदेव आर्य, धूरी (पजाब), उपप्रधान-श्री बृजभूषण मगला, कालका (हरयाणा), श्री वीरेन्द्रकुमार सगरूर (पजाब), श्री जगदीश बंसल, हरगोविन्द एन्कलेब, दिल्ली, श्री जितेन्द्रकुमार एडवोकेट, बठिण्डा (पजाब), महामंत्री-डा० अशोक आर्य, मण्डी डबवाली (हरयाणा), प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु अबोहर (पजाब), श्री पवनकुमार आर्य बरनाला (पजाब), कोषाध्यक्ष-श्री प्रहलाद कुमार आर्य, धूरी (पंजाब), प्रचारमंत्री-श्री सतीश सिंघवानी, बरनाला (पजाब)।

—**डॉ० अशोक आर्य महामंत्री**

ओ३म् आश्रम कपाल मोचन में यज्ञ सत्संग समारोह

वेदप्रचार मण्डल जिला यमुनानगर की ओर से दिनांक ३ जुलाई २००१ को स्वामी विरजानन्द द्वारा प्रदत्त आश्रम में प्रात १० बजे विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ पूज्य स्वामी सदानन्द जी महाराज एव वैदिक विद्वान् प० इन्द्रजित्‌देव की देखरेख में सम्पन्न हुआ। क्षेत्र के आर्यबन्धुओ ने विशेष उत्साह से इसमे भाग लिया। प्रिंसिपल श्री लाभसिह जी प्रस्तोता आर्य विद्या परिषद् हरयाणा एव श्री रामधारी जी शास्त्री उपमत्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा एव प० शेरसिह जी ने सभा की ओर से इस समारोह में भाग लिया। वेदप्रचार मण्डल की बैठक की अध्यक्षता करते हुए वीरसिह जी आर्य ने इस आश्रम को वेदप्रचार का मुख्य केन्द्र बनाने का सकल्प दोहराया। श्री जयपाल जी आर्य ने हरयाणा सभा से आशा जताई कि इस क्षेत्र मे सभा की बहुत सम्पत्ति है उसकी सुव्यवस्था कर कार्य को बढाया जा सकता है। सभाभूमि बिलासपुर की भी प्रबन्ध व्यवस्था के लिए प्रार्थना की गई। मुस्तफाबाद स्कूल के विवाद को निपटाया गया। जो सभा अधिकारियो का प्रशसनीय कार्य रहा। बैठक में दोनों पक्षो ने मिलजुलकर कार्य करने एव आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को पूर्ण सहयोग देने का सभा में वचन दिया। श्री सिहराम जी गुन्दिया ने घोषणा की कि वह सबके सहयोग से कपालमोचन की भूमि की चारदीवारी कराकर मेला प्रचार में धूमधाम से सम्मेलन आयोजित किया करेगे। क्योंकि लाखो लोग उस अवसर पर यहा एकत्रित होते हैं। वेदप्रचार मण्डल का चुनाव १ जुलाई २००१ को साबापुर मे करने का भी निश्चय हुआ। अपने उद्‌बोधन में प्रिंसिपल साहब एव श्री शास्त्री जी ने कार्यों की प्रशसा करते हुए और अधिक उत्साह से कार्य को बढाने की प्रेरणा दी।

वेदप्रचार मण्डल के सहयोग से ही यह ओ३म् आश्रम पूज्य स्वामी विरजानन्द जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा रोहतक को प्रदान किया था। इसी की व्यवस्था के लिए श्री विजयमुनि जी वानप्रस्थी की यहा नियुक्ति की प्रार्थना सभा से की गई।

कार्यक्रम एवं बैठक अत्यन्त सफल रही यज्ञशेष एव प्रीतिभोज की बहुत सुन्दर व्यवस्था मण्डल की ओर से की गई थी।

—**सत्यकाम आर्य**, मत्री वेदप्रचार मडल, यमुनानगर

श्रद्धांजलि सभा

अत्यन्त दु ख का विषय है कि मेरे युवा पुत्र प्रो० हरिप्रकाश का एक सडक दुर्घटना में दिनांक ३ जून २००१ को निधन होगया है। वे एक प्रतिष्ठित समाजसेवी एव समर्पित आर्य कार्यकर्ता थे। श्रद्धाजलि सभा वीरवार, दिनांक १४ जून २००१ को सायं ४ से ५ बजे तक मेरे आवास गांव-डाकघर झगड़ोली (महेन्द्रगढ़) में आयोजित की जायेगी।

—**मास्टर बहादुरमल्ल**, गांव-डा०-झगड़ोली, जिला महेन्द्रगढ़, दूरभाष ४००२२

शोक-प्रस्ताव

'सर्वहितकारी' पत्र के माध्यम से हम एक शोक-प्रस्ताव सभी आर्यबन्धुओं तक पहुंचाना चाहते हैं।

हमारे प्रिय आर्य बन्धु रिटायर्ड पटवारी श्री मोतीराम जी धीमान (आर्यसमाज पानीपत के कोषाध्यक्ष) की धर्मपत्नी श्रीमती कौशल्या धीमान का निधन ३०-५-२००१ को होगया है, हम आर्यसमाज पानीपत के सभी सदस्य उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए यही कामना करते हैं कि परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति दे व पटवारी जी को सपरिवार इस दु ख से उभरने की शक्ति दे। ओ३म् शान्ति।

प्रधान व सभी सदस्य, आर्यसमाज (विरजानन्द भवन) पानीपत

आर्यसमाज शोभापुर जिला महेन्द्रगढ़ का चुनाव

प्रधान-श्री रोशनलाल आर्य, उपप्रधान-श्रीमती निहाल कौर, मंत्री-श्री राजेन्द्र आर्य, हवनमंत्री-श्री भैरुमल, प्रचारमंत्री-श्री विजयसिंह, कोषाध्यक्ष-श्री रामकिशन।

श्री भजनलाल आर्य भजनोपदेशक द्वारा सभा के धन का दुरुपयोग एवं गबन आर्यजनता सावधान

सभा से सम्बन्धित सभी आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि श्री भजनलाल आर्य भजनोपदेशक ३-६-९९ के बाद से ही सभा की सेवा में नहीं है।

तीन चार रजिस्टर्ड पत्र डालने के बाद तथा गाव औरगाबाद मितरौल आर्यसमाज के प्रधान, मंत्री, महा० किशोरसिह तथा सरपच को पत्र लिखने के बाद एव मौखिक सूचना देने के बाद भी सभा की रसीद बुक तथा राशि जमा नहीं कराई।

दिनांक २-६-२००१ को गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ मे मैं स्वय उनसे रसीद बुक लेकर आया पैसे फिर भी नहीं दिए। राशि का विवरण निम्नलिखित है—

क्र०सं०	रसीद न०	काटने की तिथि	किस नाम से कटी	राशि
१	१११५६	२७-९-९९	आर्यसमाज भाण्डवा (भिवानी)	५००-००
२	१११५७	४-१०-९९	आर्यसमाज कोण्डल (फरीदाबाद)	४९१-००
३	१११५९	१९-१०-९९	आर्यसमाज आदर्श कालोनी पलवल (फरीदाबाद)	१००-००
४	१११६०	२०-१०-९९	आर्य कन्या गुरुकुल हसनपुर (फरीदाबाद)	१५०-००
५	१११६१	२५-१०-९९	आर्यसमाज मरोली (फरीदाबाद)	२००-००
६	१११६२	तिथि नहीं लिखी	आर्यसमाज भमरोला जोगी (फरीदाबाद)	२७७-००
७	१११६३	१३-८-२०००	आर्य कन्या गुरुकुल हसनपुर (फरीदाबाद)	२५१-००
८	१११६४	२४-८-२०००	आर्यसमाज भाण्डवा (भिवानी)	५०१-००
९	१११६५	२६-८-२०००	आर्यसमाज खतोली जाट (महेन्द्रगढ)	६०-००
१०	१११६६	१४-९-२०००	प० राजकुमार आर्य बजरग फैंसी शोरूम, नागल चौधरी (महेन्द्रगढ)	६०-००
११	१११६७	४-१०-२०००	आर्यसमाज कोण्डल (फरीदाबाद)	४९१-००
१२	१११६८	१५-१०-२०००	शान्तनु कुमार आर्य निम्बी (महेन्द्रगढ)	६०-००
			योग =	३१४१-००
			इनके अतिरिक्त गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के लगभग देय हैं—	६५०-००
			कुल योग =	३७९१-००

इस प्रकार यह सभा की राशि का दुरुपयोग एव गबन है। श्री आर्य जी से बार-बार कहा गया कि जो आपका बनता है सभा से लेवे तथा जो सभा का बनता है उसे सभा मे जमा करावे, किन्तु उन्हे कोई परवाह नहीं है।

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की काटी गई रसीदो का भी लगभग ६५०/- रु० गुरुकुल मे जमा नहीं कराया है। यदि अब भी श्री आर्य जी ने पैसे जमा नहीं कराए तो सभा को विवश होकर कानून का सहारा लेना होगा। अत आर्यजनता ऐसे लोगो से सावधान रहे तथा सभा एव गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ से सम्बन्धित कोई भी लेनदेन इनसे न करे।

—सभामत्री

सुधीरकुमार आचार्य पी-एच.डी. उपाधि से विभूषित

सुधीरकुमार आचार्य

आर्यजगत् के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डा० सुदर्शनदेव आचार्य निदेशक-सस्कृत सेवा सस्थान हरिसिंह कालोनी रोहतक के कनिष्ठ पुत्र सुधीरकुमार आचार्य को गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरद्वार के कुलपति डा० धर्मपाल ने दिनाक २५ मई २००१ को भव्य दीक्षान्त समारोह मे पी-एच डी उपाधि से विभूषित किया है। **'महर्षिदयानन्दप्रतिपादितस्येश्वरवादस्य पर्यालोचनम्'** अर्थात् महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित ईश्वरवाद का पर्यालोचन नामक शोधप्रबन्ध विश्वविद्यालय के **'श्रद्धानन्द वैदिक शोधसस्थान'** के अन्तर्गत डा० महावीरप्रसाद अध्यक्ष सस्थान के अधीन सस्कृत भाषा मे लिखा गया प्रथम शोधप्रबन्ध है। इसमे ओम्, ईश्वर के १०० नाम, ईश्वरसिद्धि, सृष्टि-उत्पत्ति, वेदोत्पत्ति, उपास्य देव और शकराचार्य के अद्वैतवाद आदि विषयो का प्रतिपादन एव समालोचना की गई है।

—**वेदव्रत शास्त्री**, सम्पादक

आर्यसमाज का विकास................ (प्रथम पृष्ठ का शेष)

करते हैं जो देवी देवताओ को बिल्कुल स्वीकार नहीं होता। अन्य ग्रन्थो मे जो बलि प्रथा लिखी गई है, उसे मध्ययुग के वाममार्गियों ने इन कुप्रथाओ को चलाया है, वैदिक शास्त्रो मे गीता, रामायण मे इन सबकी चर्चा तक नहीं है, यह सब कार्य असुर और राक्षस लोग करते थे।

देवी देवताओ की पूजा करानेवाले ब्राह्मणों को चाहिये कि यह प्रथा रोक दे। क्योंकि आज विकास के युग मे यह मान्यता शोभा नहीं देती। यदि हिन्दू धर्म परिवर्तित करना है तो उन सबको वैदिक धर्म को अपनाना चाहिये।

जो हिन्दू गुरुमत्र ले लिये हैं और एक मण्डली बनाकर राधे-कृष्ण जयगुरु का नाम जप ध्यान करते हैं उन्हें समझाना बहुत कठिन है, जो स्थान खाली था वह सब किसी न किसी मतो से भर गया है, अब खाली स्थान नहीं है। अब आर्यसमाज को क्या करना चाहिये उनके जो वरिष्ठ नेतागण हैं, विचार करे। किन्तु इतना अवश्य कहूगा कि किसी के बुलाने पर आर्य नेतागण वहा जाकर प्रचार करेगे तो यह सभव नहीं क्योंकि सब कोई बुलाने में समर्थ नहीं है। कोई धनी अथवा आर्य को माननेवाले ही बुला सकते हैं। मैं एक बार कलकत्ता गया आर्यसमाज मंदिर में मैंने कहा आप लोग उठिये और हमारे यहा मुरारई मे प्रचार कीजिए उत्तर मिला कि जब कोई वैसा आयोजन कीजिएगा तब देखा जाएगा। इस प्रकार आर्यसमाज के सक्रिय नेता हो गये हैं कि जो जहा पर हैं वह वहीं से लग्गी से पानी पिलाने की चेष्टा कर रहे हैं, बाहर जाने के लिये प्रचार कार्य के लिये उनमें उत्साह नहीं है। हा एक कलकत्ता के प० प्रियदर्शन जी सिद्धान्तभूषण थे जो हमारे हिन्दी लेखो को बगला अनुवाद करके 'वेदमाता' पत्रिका मे प्रकाशित करते थे और वे हमारे यहा एक दिन के लिये आये भी थे अब वे सिद्धान्तभूषण जी हमारे बीच नहीं हैं।

हा तो जैसी परिस्थिति आर्यसमाज की हम देख रहे हैं, ऊपर उठने के बजाय, एक जगह बैठ जाना पसन्द करते हैं फिर बैठने के बजाय सो जाना अधिक पसन्द करते हैं, तो इस प्रकार आर्यों का इतिहास नहीं बन पायेगा।

(साभार-आर्यमित्र)

शंका-समाधान

(कुंवर श्रवणकुमारसिंह निर्वाण, कर्मसाना, जिला सिरसा)

शंका—वेदों में ईश्वर के नियम अटल बताये हैं जैसे कि वर्षा ऋतु में वर्षा होना तो नियम है, किन्तु कभी वर्षा ऋतु मे वर्षा नहीं होती, अन्य ऋतु में हो जाती है और वर्षा दिन-रात किसी भी समय हो सकती है इसका कोई निर्धारित नियम नहीं है?

समा०—वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त, शिशिर, ये छः ऋतु केवल भारतवर्ष में ही होती है, सब देशों में नहीं। वसन्त मे वृक्ष, लता आदि का फूटना, ग्रीष्म मे गर्मी होना, वर्षा में बरसना, शरद् में कुछ ठण्डक होना, हेमन्त में अधिक ठण्ड होना और शिशिर में पतझड होना ईश्वर के नियमानुसार प्रतिवर्ष होता है। अतिवृष्टि और अनावृष्टि आदि का सम्बन्ध प्राणियों के कर्मफल से है। अत प्राणियों के कर्मफल के अनुसार वृष्टि, अतिवृष्टि, अनावृष्टि और अवृष्टि होती है। इसका पूर्ण विवरण मनुष्य नहीं जान सकता क्योंकि वह अल्पज्ञ है। ईश्वर के लिये व्यावहारिक व्यवस्था है। ईश्वर अकाल है, काल के बन्धन से रहित है।

शंका—मृत्यु, रविवार, सोमवार, किसी दिन, किसी मास, वर्ष, दिन, रात्रि आदि मे होती है जबकि बच्चे का गर्भ में रहने का नियम ९ मास का निर्धारित कर रखा है।

समा०—बालक का शरीर माता के गर्भ मे ९ मास ९ दिन में पूरा होता है। जन्म के समय मानव को जाति, आयु और भोग पूर्वजन्म के आधार पर मिलते हैं। जाति—मनुष्य, पशु, पक्षी, रूप होती है जो बदलती नहीं है। आयु और भोग बदल जाते हैं। सदाचार से आयु बढती है और दुराचार एव दुर्व्यसन आदि से आयु घट जाती है। उत्तम पुरुषार्थ से भोग-जीवन के साधन बढते हैं और आलस्य-प्रमाद आदि से घट जाते हैं। प्रत्येक प्राणी की जीवन-मरण व्यवस्था पृथक्-पृथक् है अत कोई एक दिन वा समय निर्धारित होना सम्भव नहीं है। जब प्रत्येक प्राणी की दिनचर्या एवं रात्रिचर्या भिन्न-भिन्न है तो जीवन-मरणचर्या एक कैसे हो सकती है।

शंका—स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के ११वे समुल्लास मे लिखा है कि गुरु रामदास ढेढो का गुरु ढेढ था। इसमे जातिवाद और कठोरभाषण का दोष आता है।

समा०—सत्यार्थप्रकाश (समु० ११) का पाठ यह है—एक रामदास नामक जाति का ढेढ बडा चालाक था, उसके दो स्त्रिया थीं। वह प्रथम बहुत दिन तक औघड होकर कुत्तो के साथ खाता रहा। पीछे वामी कुण्डापथी। पीछे रामदेव का कामडिया बना। अपनी दोनो स्त्रियों के साथ गाता था। ऐसे घूमता-घूमता सीथल (ग्राम) मे ढेढों का गुरु हररामदास था, उससे मिला।

जो औघड होकर कुत्तो के साथ खाता-पीता है, दो स्त्रिया रखता है, जो कभी कुण्डापन्थी और कामडिया बन जाता है, उसे ढेढ लिखना कदापि अनुचित नहीं है। वह स्वय ढेढो का गुरु नहीं था। उनका गुरु तो हररामदास था। रामदास ने उसे अपना चेला बना लिया था।

नोट—आपका एक पत्र मिला। जिसमे सत्यपति जी के योगशिविर की चर्चा है। आपने जो प्राणायाम आदि सीखा है, उसकी विधि लिखकर भेजे, शिविर की कहानी नहीं।

—**सुदर्शनदेव आचार्य, वेदप्रचाराधिष्ठाता**

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ७६८७४, ५७७७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ७७७२२) से प्रकाशित।

पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। पत्र के प्रत्येक प्रकार के विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३   सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०२
पंजीकरणसंख्या टैक/एच.आर./४९/रोहतक/९९   ☎ ०१२६२-७७७२२

प्रधानसम्पादक : प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामन्त्री   सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री   सहसम्पादक :- डा० सुदर्शनदेव आचार्य
वर्ष २८   अंक ३५   ७ अगस्त, २००१   वार्षिक शुल्क ८०)   आजीवन शुल्क ८००)   विदेश में २० डॉलर   एक प्रति १.७०

वेदप्रचार-विशेषांक

भजन (प्रार्थना)

(हरयाणा के आदि वेदप्रचारक
प० बस्तीराम जी आर्योपदेशक)

धन तेरी कारीगरी हो करतार, धन तेरी० । ।टेक।।

अन्तरा-

जब निराकार और निर्विकार साकार बना दिया जग कैसे ?
जाग्रत स्वप्न सुषुप्त तू था फिर रचा मुक्ति का मग कैसे ?
क्या वस्तु लई, जिससे देह भई, फिर बना दई रग-गर कैसे ?
सबको धार रहा, रम सबमें रहा, फिर सबसे रहा अलग कैसे ?
जब सबमे तू, सब गुलों में बू, सब रूहों की रूह फेर सुमग कैसे ?
जब अपाणिपादो जवनो ग्रहीता फिर कोई पकडे पग कैसे ?
जब सृष्टिकर्ता भर्ता धर्ता हर्ता रहता अनहग कैसे ?
जब काशी काबे मे ना पता फिर जावे पता यहा लग कैसे जी।
वन पर्वत पृथ्वी नभ तारे सबको रहा तू कैसे धार।। धन० १।।
किये रंग बिरगे फूल और बादल रग की रैणी कहीं नहीं।
किये सूरज से चमकते पदार्थ चमक निराली कहीं नहीं।
नर तन-सा चोला सीम दिया सूई धागा हाथ मे कहीं नहीं।
पत्ते-पत्ते की कतरन न्यारी हाथ कतरनी कही नही।
बरसे जब भरदे जल जगल आकाश मे सागर कहीं नहीं।
दे भोजन कीडी कुजर को चढे दीखे भण्डारे कहीं नहीं।
दिन रात न्याय मे फर्क पडे नहीं लगी कचहरी कहीं नहीं।
कर्मों का फल दे यथायोग्य मिले रू और रिआसत कहीं नहीं!
अखण्ड ज्योति अपार लीला किनहू न पाया तेरा पार।। धन० २।।
जाने कौन विध गर्भ मे रहकर दे क्रीड़ा बालकपन की।
फिर जीवन जवानी आई कहा से कमी रही ना जोवन की।
फिर वृद्धपन देकर दिखावे सबको बनी सो एक दिन बिगडन की।
कोई पैसे-पैसे को मोहताज है कोई खोल रहा कोठी धन की।
कोई पी सग कामिन खेल करे कोई रो-रो राख करे तन की।
कोई भटकते-भटकते उमर गवावे कोई तृप्ति कर रहा मन की।
पर्वत भूमि टीबे पर टीबे कहीं-कहीं लहर हरे बन की।
कहीं ताल सुरगे जल से भरे कहीं चोटी चमक रही पर्वतन की।
कहीं सर्द समय के झोले बगें कहीं धूप गरद गर्मी घन की जी।
कहीं चतुर्मास घटा चढ आवे बरस के बहादे जलधार।। धन० ३।।
चाहे कितना ही बरसे ना निबडे जब देन लगे तू इतना माल।
नहीं दे जब चाहे दिन रात कमाओ फिर भी वह नर रहे कगाल।
अदना से आला करे पलक मे जब नर पर तू हो कृपाल।
राजों का राज, ताजों का ताज, तूही महाराज काल का काल।
तूही ब्रह्मा विष्णु महेश सुरेश नरेश महेश निराली चाल।
तू इतना जबर नहीं तेरी खबर मेरी सुन दिलवर मुझे कर निहाल।
रहूं तेरी शरण, गहूं तेरे चरण, मत दे तू मरण हम तेरे लाल।
ऐ सुखनिधान, रख मेरा मान, दे भक्ति दान होकर दयाल जी।
दीनबन्धु सुन हम दीनों की अहे प्रभु पतित उधारन हार।। धन० ४।।
तू अनन्त तेरी गति अनन्त तुझे देखें सन्त कर योग ध्यान।
है साधन तेरे अमित बडेरे प्रेरे रवि शशि से महान।
जाने कहा सीखे न देखे कीडी के बना दिये नाक कान।
नहीं छाया धरे रग इतने भरे किसी तरह न गिन सकता जहान।
सब जगह जोर, नहीं तुझसा और, सिर सबका मौड सबका प्रधान।
माया अनुगामी जीव के स्वामी अन्तर्यामी बलनिधान।
सच्चिदानन्द तू करुणाकन्द मै महामन्द मुझे अपना जान।
अति दुखी भया, तुझे कूक रहा, कर मुझपै दया दे अपना ज्ञान जी।
तू ही मित्र, तू ही सखा, तू ही स्नेही, तू ही है हमारा परिवार।। धन० ५।।
चार वेद छह शास्त्र पुकारे सारे गुन की सभार नही।
फिर ऋषि-मुनि और सन्त-महन्त थके गा-गा पर पार नहीं।
जो करदे सो नहीं बदल सके किसी और को यहा अख्त्यार नहीं।
जो करे सो ईश्वर आप करे किसी और की चहत सहार नहीं।
जो करनी चाहे सो कर गुजरे किसी काम में तू लाचार नहीं।
कर भक्ति रक गले लिपटे, बिन भक्ति भूप से प्यार नहीं।
जो प्रेम करे जिससे परचे, तेरे ऊच नीच की टार नही।
ये हरीसिह दरवाजे खडा क्यो इसकी सुनते पुकार नही जी।
शुभ स्वरूप दरशादे अपना खोल के अखण्ड द्वार।। धन० ६।।

(पाखण्ड-खण्डनी से)

वेद ऋचाओं से अभिषिक्त

—**राधेश्याम 'आर्य'** विद्यावाचस्पति, मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

आज धरित्री पर फैला है, असुर वृत्तियो का अति जाल,
अट्टहास कर रहा चतुर्दिक, वसुन्धरा पर काल कराल,
नृत्य यहा पर सर्वनाश का, करता है निश्चित मराल
चिन्तनीय है बना जगति के जन-जन का मर्मांतक हाल।

वेदालोक पडा धूमिल है सत्प्रवृत्तिया हुई मलीन,
शोषण उत्पीडन का ताडव होता है भू पर गमगीन
तडप रही है शुचिता-जल से निकली मानवता की मीन,
मनुज बना है महा स्वार्थी, स्वार्थ वृत्तियो मे है लीन।

अति-निनादो की ज्वाला मे, जलता है ऋषियो का देश,
घूम रहे हैं साधु वेश मे दानव के दल यहा विशेष
काप रहा आतकवाद से वीरो का यह देश-स्वदेश,
बचा नहीं है कहीं यहा पर, मनुज वृत्तियो का अवशेष।

पशुता निर्भय बढी जा रही, श्रेय-मार्ग अवरुद्ध हुआ,
मानव ही है आज यहा पर, मानवधर्म विरुद्ध हुआ,
वेदो की ही वसुन्धरा पर, वैदिक धर्म अशुद्ध हुआ,
किया प्रयास बहुत हमने पर, अपना गेह न शुद्ध हुआ।

ऋषि-मुनियों की मनीषियो की, धरा हुई है सत् से रिक्त,
अनय-अभाव तथा अज्ञान, बढा है धरती पर अतिरिक्त,
स्वर्ण बने फिर से यह धरती, मानवता से हो सम्पृक्त,
तो फिर सारी वसुन्धरा हो, वेद ऋचाओ से अभिषिक्त।

वैदिक-स्वाध्याय

इन्द्र-अभय !

इन्द्र आशाभ्यस्परि सर्वाभ्यो अभयं करत्।
जेता शत्रून् विचर्षणि ।। (ऋ० २ ४१ १२, अथर्व० २० ५७ १०)

शब्दार्थ–(इन्द्र) इन्द्र परमेश्वर, मुझे (सर्वाभ्य आशाभ्य परि) सब दिशाओ से, (अभय करत्) अभय करदे। (शत्रून् जेता) जो कि परमेश्वर शत्रुओ को जीतनेवाला है। (विचर्षणि:) और सब कुछ {हर एक प्राणी के हर एक कर्म को} पूरी तरह देखनेवाला है।

विनय–मैं डरता क्यो हू ? इस परमेश्वर की (इन्द्र की) सृष्टि मे रहते हुए तो किसी भी काल में, किसी भी देश मे भय का कुछ भी कारण नहीं है। क्या मैं अपने शत्रुओं से डरता हू ? मेरा तो इस इन्द्र की सृष्टि में कोई शत्रु नहीं होना चाहिये। मेरा कोई शत्रु है ही नहीं। हा, एक अर्थ में पाप करनेवाले मनुष्यो को शत्रु कहा जा सकता है, क्योकि पाप करना परमात्मा से शत्रुता करना है–पाप करना ईश्वरीय शासन का विद्रोह करना है। पर ऐसे पाप करनेवाले भाई से भी मुझे डरने की क्या जरूरत है ? यह ठीक है कि ऐसे पाप करनेवाले भाई तब मुझे अपना शत्रु समझ लेगे जब कभी कि उनके पाप का विरोध करना मेरा कर्तव्य हो जायेगा और तब वे मुझे अपना शत्रु मानकर नाना प्रकार से सताने–कष्ट देने–को भी उद्यत होगे। पर उस पापी भाई के सताने से भी मेरा क्या बिगडेगा, वह तो विचारा स्वय परमात्मदेव का मारा हुआ है। परमात्मा तो स्वभावत 'शत्रून् विजेता' है। उससे शत्रुता करके अर्थात् पाप करके कौन बचा रह सकता है ? यदि यह विश्वास पक्का हो जाय कि परमात्मा 'शत्रून् जेता' है तो अज्ञानी पापी पुरुषो की तरफ से आये हुए बडे से बडे सन्तापो का, घोर से घोर अत्याचारो का भी भय हट जाय। ऐसा विचार थोडी देर के लिये आने पर ही एकदम निर्भयता हो जाती है और फिर उसे सचमुच 'विचर्षणि' समझ लेने पर तो कोई भय रहता ही नहीं। देखो, वह 'विचर्षणि' परमेश्वर सब प्राणियो के सब कर्मो को ठीक-ठीक देखता हुआ पाप और पुण्य का फल दे रहा है। वह ठीक ढग से ठीक समय हरेक पाप का विनाश कर रहा है–पाप को परास्त कर रहा है। तो मुझे डरने की क्या जरूरत है ? मुझे तो कोई दु ख क्लेश तभी मिलेगा यदि मेरा ही कोई पापकर्म उदय होगा। नहीं तो किसी अन्य मनुष्य की चाहना से मुझे क्लेश कभी नहीं हो सकता है। और यदि मेरे अपने ही पापकर्मो के कारण कोई क्लेश आता है तो वह तो आना ही चाहिए। उसे मैं खुशी से सह-सहकर निष्पाप और उऋण होता जाऊगा। वह क्लेश उस 'शत्रु' का भेजा हुआ नहीं है, किन्तु मेरे प्यारे परमेश्वर का भेजा हुआ है, उसका तो मुझे स्वागत करना चाहिए एव इस ससार मे–चारो दिशाओ मे, मेरा अब कोई दु ख दे सकनेवाला शत्रु नहीं रहा है। जब से प्रभु को 'विचर्षणि' और 'शत्रून् जेता' जान लिया है तब से मैं अभय होगया हू–सब तरफ से अभय होगया हू–किसी दिशा से कोई भय नहीं। अभय, अभय।

(वैदिक विनय)

महिमा महान् है

❑ स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती (आयुर्वेदाचार्य)

वेदो के प्रचार की–वर्षा और बौछार की।
सलोने त्यौहार की–महिमा महान् है।।१।।
वृक्षो के चन्दन की–रेलगाडी इजिन की।
श्रावणी रक्षाबन्धन की–महिमा महान् है।।२।।
शादी मे दुलहिन की–ग्वाल और ग्वालिन की।
कृष्ण के जन्मदिन की–महिमा महान् है।।३।।
किसान के बैलो की–शहरो मे महलो की।
बृज मे मेलो की–महिमा महान् है।।४।।
गगा के नीर की–गाय के क्षीर की।
दयानन्द फकीर की–महिमा महान् है।।५।।

आर्यसमाज नरवाना (जीन्द) का चुनाव

प्रधान–श्री इन्द्रजीत, मत्री–श्री विजयकुमार, कोषाध्यक्ष-श्री कर्मवीर, पुस्तकालयाध्यक्ष–डॉ० बलवीरसिह।

सम्पादकीय—

श्रावणी और स्वाध्याय

श्रावणी उपाकर्म स्वाध्याय आरम्भ करने का पर्व माना जाता है। स्वाध्याय शब्द के अनेक अर्थ हैं किन्तु इसका मुख्य अर्थ वेदाध्ययन ही है। याज्ञवल्क्य स्मृति के टीकाकार विज्ञानेश्वर ने प्रायश्चित्ताध्याय के ४८वें श्लोक की मिताक्षरा टीका मे 'स्वाध्यायवान्' शब्द का अर्थ 'वेदाभ्यासरत.' किया है।

आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द ने वेद को सब सत्यविद्याओं का पुस्तक बतलाते हुए वेद का पढना-पढाना और सुनना-सुनाना सब आर्यो का परमधर्म प्रतिपादित किया है।

इससे पूर्व व्याकरण महाभाष्यकार पतञ्जलि ने ज्ञानपूर्वक षडङ्ग (१-शिक्षा, २-कल्प, ३-व्याकरण, ४-निरुक्त, ५-छन्द और ६-ज्योतिष) वेद का अध्ययन ब्राह्मण का निष्कारण (नौकरी आदि स्वार्थरहित) धर्म बतलाया था—

"ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्म· षडङ्गो वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्च"

मनु ने भी द्विजो (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) के लिए सरहस्य वेदज्ञान का विधान अपनी स्मृति में किया है—

"वेद· कृत्स्नोऽधिगन्तव्य सरहस्यो द्विजन्मना" (२।१६५) **"वेदमेव सदाभ्यसेत्"** (२।१६६) सदा वेद का ही स्वाध्याय करना चाहिए। जो द्विज वेद को न पढकर अन्य ग्रन्थो के अध्ययन मे परिश्रम करता है वह शीघ्र ही पुत्र-पौत्रादि कुलसहित शूद्र होजाता है—

योऽनधित्य द्विजो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम्।
स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वय ।।

(मनु० २।१६८)

जिन गृहस्थो के घर मे वेद का स्वाध्याय और यज्ञादि उत्तम कर्म नहीं होते ऐसे घरो से ब्रह्मचारी को प्रतिदिन सिद्धान्न भिक्षा भी ग्रहण नहीं करनी चाहिए आपत्काल को छोडकर।

वेदयज्ञैरहीनाना प्रशस्ताना स्वकर्मसु।
ब्रह्मचार्याहरेद्भैक्ष गृहेभ्य प्रयतोऽन्वहम्।।

(मनु० २।१८३)

महामति चाणक्य ने भी लिखा है—

न विप्रपादोदककर्दमानि, न वेदशास्त्रध्वनिगर्जितानि। स्वाहा-स्वाधा-कारविवर्जितानि, श्मशानतुल्यानि गृहाणि तानि।। (चाणक्यनीति०.१२।९)

जिन घरो के आगन मे विद्वानो के पाव प्रक्षालन के जल से कीचड न होगया हो, जहा वेद-शास्त्र के पाठ की ध्वनि न गूजती हो और जहा पर हवन मन्त्रो के अन्त मे प्रयुक्त **'स्वाहा'** और **'स्वधा'** (माता-पिता गुरुजनो के लिए भोजन प्रस्तुति पर) शब्द सुनाई न देते हो, ऐसे घर श्मशान भूमि के तुल्य हैं।

वेद के पढने-पढाने की परम्परा क्षीण होने पर ऋषि-मुनियो ने वेद के अग-उपागो की रचना की, ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक और उपनिषदादि बनाये और सस्कृत अग्रेजी, हिन्दी भाषा मे वेदों के अनुवाद भी उपलब्ध करवाये हैं। वेद के कुछ मन्त्रो को छोडकर अधिकतर मन्त्र बहुत सरल एव सुगम हैं। मैं यहा ऐसे ही सरल मन्त्रो के तीन सूक्त अथर्ववेद से उद्धृत करता हू जिनमे निर्भय बनने, आत्मसुरक्षा और बलप्राप्ति की प्रार्थना की गई है।

वेद में निर्भय बनने की प्रार्थना

अथर्ववेद के द्वितीय काण्ड के पन्द्रहवे सूक्त में ६ मन्त्र हैं। इनका ऋषि ब्रह्मा (ब्रह्माण्डवेत्ता) है और देवता है प्राण तथा गायत्री छन्द है। मन्त्रो की भाषा इतनी सरल है कि बिना कुछ जोडे, बिना अन्वय वा भावार्थ निकाले ही साधारण सस्कृतभाषा पढा व्यक्ति भी पाठमात्र से इनका अर्थ हृदयङ्गम कर सकता है।

यथा द्यौ च पृथिवी च न बिभीतो न रिष्यत ।
एवा मे प्राण मा बिभे· ।।१।।
यथाहश्च रात्री च न बिभीतो न रिष्यत.।
एवा मे प्राण मा बिभे.।।२।।
यथा सूर्यश्च चन्द्रश्च न बिभीतो न रिष्यत·।
एवा मे प्राण मा बिभे ।।३।।
यथा ब्रह्म च क्षत्र च न बिभीतो न रिष्यत ।
एवा मे प्राण मा बिभे·।।४।।
यथा सत्य चानृत च न बिभीतो न रिष्यत ।
एवा मे प्राण मा बिभे· ।।५।।
यथा भूतं च भव्य च न बिभीतो न रिष्यत ।
एवा मे प्राण मा बिभे.।।६।।

प्रथम मन्त्र में **द्यौ** और **पृथिवी** की उपमा देकर कहा है कि जिस प्रकार ये दोनों न किसी से डरते हैं न नष्ट होते हैं और न किसी की हिंसा करते हैं *अथवा* पीडित करते हैं, इसी प्रकार हे मेरे प्राण ! जीवनतत्त्व तू भी किसी से मत डर।

दूसरे मन्त्र मे **अह.** और **रात्री** (दिन और रात) की उपमा देकर उसी प्रकार निर्भय रहने का उपदेश दिया है।

तीसरे मन्त्र मे **सूर्य** और **चन्द्र** की उपमा से निर्भय बनने की भावना दी गई है।

चौथे मन्त्र मे **ब्रह्म** और **क्षत्र** (ब्रह्मज्ञान और क्षात्रबल) की उपमा देकर निर्भय रहने का उपदेश है।

पाचवे मन्त्र मे **सत्य** और **अनृत** (सच्चाई और झूठ) की उपमा देकर निर्भीकता की बात कही है।

अन्तिम छठे मन्त्र में **भूतकाल** और **भविष्यत्काल** के उदाहरण से सदा निर्भय रहने की प्रेरणा दी गई है।

प्रत्येक मन्त्र मे **'यथा, च, न बिभीत, न रिष्यत, एवा मे प्राण मा बिभे'** इन्हीं शब्दो की बार-बार आवृत्ति हुई है। प्रत्येक मन्त्र मे केवल दो-दो शब्द नये जोडे गये हैं, उपमा के लिए। वे शब्द भी अत्यन्त प्रसिद्ध और लोकविज्ञात हैं। जैसे—

पहले मन्त्र मे **द्यौ** और **पृथिवी**।
दूसरे मन्त्र मे **अह** और **रात्री**।
तीसरे मन्त्र मे **सूर्य** और **चन्द्र**।
चौथे मन्त्र मे **ब्रह्म** और **क्षत्र**।
पाचवे मन्त्र मे **सत्य** और **अनृत**।
छठे मन्त्र मे **भूत** और **भव्य**।

इस सूक्त के ६ मन्त्रो का यही भावार्थ है कि मनुष्य को वेदोक्त कर्त्तव्य-पालन निर्भय होकर करना चाहिए, किसी से डरने दबने सकोच करने वा भय मानने की आवश्यकता नहीं है।

इससे अगले १६वे सूक्त मे आत्मसुरक्षा के लिए प्रार्थना की गई है। इस सूक्त का भी ऋषि-ब्रह्मा है। देवता-आत्मा अथवा प्राण अपान और आयु हैं।

वेद में आत्मसुरक्षा की प्रार्थना

प्राणापानौ मृत्योर्मा पात स्वाहा।।१।।
द्यावापृथिवी उपश्रुत्या मा पात स्वाहा।।२।।
सूर्य चक्षुषा मा पाहि स्वाहा।।३।।
अग्ने वैश्वानर विश्वैर्मा देवै पाहि स्वाहा।।४।।
विश्वम्भर विश्वेन मा भरसा पाहि स्वाहा।।५।।

प्रथम मन्त्र मे प्रार्थना की गई है कि प्राण और अपान तुम दोनो मृत्यु से, शरीर छूटने के भय से मेरी रक्षा करो।

मनुष्य ब्रह्मचर्य, व्यायाम, प्राणायाम, सयमित आहार विहार के द्वारा प्राण और अपान को बलवान् बनाकर चिरजीवी-दीर्घायु हो सकता है। मृत्यु के भय से छूट सकता है। अथर्ववेद काण्ड ११ सूक्त ५ मन्त्र १९ मे कहा है—

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत।

इसी प्रकार अथर्ववेद काण्ड १ सूक्त ३५ मन्त्र २ मे दीर्घायु प्राप्ति के लिए दाक्षायण हिरण्य (ब्रह्मचर्य) धारण करने का उपदेश दिया है—

नैन रक्षासि न पिशाचा सहन्ते
देवानामोज प्रथमज ह्येऽतत्।
यो बिभर्ति दाक्षायण हिरण्य
स जीवेषु कृणुते दीर्घमायु.।।

दूसरे मन्त्र मे प्रार्थना की गई है कि आकाश और पृथिवी उपश्रुत्या=पूर्ण श्रवणशक्ति के साथ मेरी रक्षा करें।

"आकाशदेश: शब्द:" के अनुसार शब्द सदा आकाश में विद्यमान रहता है। शब्द का ग्रहण श्रोत्र=कान द्वारा ही होता है। मनुष्य को अपने शरीर को बलवान् बनाकर अपनी श्रवण शक्ति बढानी चाहिए।

तीसरे मन्त्र में सूर्य से नेत्र ज्योति बढाने की प्रार्थना है। चौथे मन्त्र में वैश्वानर अग्नि परमात्मा से समस्त दिव्य पदार्थों और इन्द्रियो द्वारा आत्मसुरक्षा की प्रार्थना की गई है।

पाचवे मन्त्र द्वारा विश्व का भरण पोषण करने वाले परमात्मा से प्रार्थना की गई है कि ससार की समस्त भरण पोषण शक्ति से मेरी रक्षा कर अथवा मुझे भरण पोषण योग्य बना।

अगले १७वे सूक्त में बलप्राप्ति की प्रार्थना की गई है। इस सूक्त का ऋषि-ब्रह्मा है और देवता-प्राण अपान और आयु है।

वेद में बलप्राप्ति की प्रार्थना

ओजोऽस्योजो मे दा स्वाहा।।१।।
सहोऽसि सहो मे दा स्वाहा।।२।।
बलमसि बल मे दा. स्वाहा।।३।।
आयुरस्यायुर्मे दा स्वाहा।।४।।
श्रोत्रमसि श्रोत्र मे दा स्वाहा।।५।।
चक्षुरसि चक्षुर्मे दा स्वाहा।।६।।
परिपाणमसि परिपाण मे दा स्वाहा।।७।।

इन सात मन्त्रों के द्वारा परमात्मा को ओज, सह, बल, आयु, श्रोत्र, चक्षु, परिपाण शब्दो से सम्बोधित करके **ओज**=कान्ति, **सह**=सहनशीलता, **बल**=शक्ति, **आयु**=दीर्घ जीवन, **श्रोत्र**=श्रवणशक्ति, **चक्षु**=दर्शनशक्ति और **परिपाण**=प्रजापालन का सामर्थ्य प्रदान करने की प्रार्थना की गई है।

इससे आगे १८ से २४ सूक्त तक के मन्त्रो द्वारा शत्रुनाश अथवा रोगनाश के उपायो का वर्णन किया गया है।

जिन सज्जनों को जिस भाषा का ज्ञान है उसी के माध्यम से वेद के स्वाध्याय मे प्रवृत्त होना चाहिए और अपनी योग्यता बढाकर मूल वेदमन्त्रो को समझने का प्रयत्न करना चाहिए।

अपनी सन्तान को महर्षि दयानन्द द्वारा 'सत्यार्थप्रकाश और सस्कारविधि मे लिखित पाठविधि के अनुसार शिक्षित करके वेदागो सहित मूल वेद के रहस्यो को समझने के योग्य बनावे।

जिनकी अपनी सन्तान (पुत्र-पुत्री) इस पाठविधि से पढाने योग्य न हो वे सज्जन ऐसे गुरुकुलो मे पढने वाले सुयोग्य छात्र-छात्राओ की अन्न-धन वस्त्र पुस्तकादि से सहायता करके पुण्य के भागी बनकर वेदज्ञान के प्रसार मे सहायक हो सकते हैं।

महर्षि दयानन्द के समय मे वेद-विरुद्ध अनेक मत-मतान्तर प्रचलित थे। सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवे समुल्लास मे शैव, शाक्त, वैष्णव, कबीर पन्थ नानक पन्थ दादू पन्थ आदि की समीक्षा के पश्चात् लिखा है—

"अच्छा तो वेदमार्ग है, जो पकडा जाय तो पकडो, नहीं तो सदा गोते खाते रहोगे।"

आप अपनी सन्तान को ससार की कोई भी उपाधि (डिग्री) और पद प्रयत्न करके दिलवा सकते है किन्तु वेदज्ञान के आलोक के बिना उनकी बुद्धि से अज्ञान अन्धकार को दूर नहीं कर पायेगे। बडे-बडे डॉक्टर इजीनियर वैज्ञानिक, नेता और अभिनेता इसके उदाहरण हैं जो प्रतिदिन मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारे और जड मूर्तियो के समक्ष माथा टेकते देखे जाते हैं।

—वेदव्रत शास्त्री

पदार्थ विज्ञान के आधार पर–

कार्बनडाइ ऑक्साइड और हवन-यज्ञ विज्ञान

–**आचार्य आर्यनरेश, वैदिक गवेषक**, उद्‌गीथ साधना स्थली (हिमाचल)

यज्ञ पर उठनेवाली आज सबसे बडी शका यह है कि यज्ञ के 'कार्बन डाइ-ऑक्साइड' उत्पन्न होती है। इसके उत्तर मे हम यह कहना चाहते हैं कि साधारणत किसी वस्तु के जलने तथा यज्ञ की अग्नि मे होनेवाली रासायनिक प्रक्रियाओ मे परस्पर काफी अन्तर है। सामान्यत जब भी हम किसी वस्तु को जलाते हैं तो वस्तु मे कार्बन तो होता ही है और वह वातावरण की ऑक्सीजन के साथ मिलकर कार्बन-डाइ-ऑक्साइड का निर्माण करती है। जो कि प्रदूषण को फैलाने के साथ-साथ 'ग्रीन-हाउस प्रभाव' को भी बढाती है।

सामान्यत यह भी माना जाता है कि यज्ञ में समिधा (लकडी) के जलने से कार्बन-डाइ-ऑक्साइड उत्पन्न होती है। परन्तु यह धारणा सर्वथा गलत है। रसायन विज्ञान के माध्यम से यह बात सिद्ध होती है कि आम चीजों को जलाने और यज्ञ के अनुष्ठान में काफी अन्तर है। यज्ञ मे डालने वाले गोघृत, चावल और मीठे पदार्थो मे बीटा कैरोटीन और कार्बोहाइड्रेट होते हैं। जब हम उन्हें यज्ञ में जलाते हैं तो ये पदार्थ कार्बन-डाई-ऑक्साइड गैस को रूपान्तरित (Convert) करके नेसेन्ट (Nascent) हाइड्रोजन को निकालते हैं जो अत्यन्त प्रक्रियाशील (reactive) होती है और वह कार्बन तथा ऑक्सीजन के साथ मिलकर फार्मेल्डिहाइड, इथाइल एल्कोहल और प्रोपिनोइक अम्ल बनाती है। यह तत्त्व हानिकारक नहीं हैं, अपितु विसक्रमणकारी (disintective) हैं और वातावरणीय प्रदूषण को नष्ट करते हैं। यहा फारमेल्डिहाइड के बनने से कार्बन व ऑक्सीजन के सयोग से बनी 'कार्बन-डाइ-ऑक्साइड' गैस को वातावरण प्रदूषित करने से पृथक् कर दिया जाता है। क्योकि फार्मेल्डिहाइड अस्थाई यौगिक (unstable compound) है जो कि जल्दी ही उत्पन्न होकर वाष्प के रूप मे उड जाता है। इसके विपरीत कार्बन डाइ ऑक्साइड गैस को भारी होने के कारण बनने मे अधिक समय लगता है। जिससे कि यह गैस वैदिक यज्ञ करने पर रूपान्तरित होने से कोई हानि नहीं पहुचाती, अपितु विसक्रमणकारी (disinfective) प्रभाव ही उत्पन्न करती है।

यज्ञ मे CO_2 गैस के द्वारा किसी भी प्रकार की हानि न होने का वैज्ञानिक कारण यह है कि यज्ञस्थली के चारो ओर पौधे रखने का विधान है। पौधो के रहने से सूर्योदय व सूर्यास्त के समय यज्ञ करने से प्रकाश-सश्लेषण (Phatosynthesis) की प्रक्रिया से CO_2 पौधो द्वारा अवशोषित करके ऑक्सीजन मुक्त होती है। CO_2 पौधो द्वारा अवशोषित (Absorb) होकर कार्बोहाइड्रेट्स का निर्माण करती है जोकि भोज्य पदार्थ के रूप मे मनुष्यो के ही काम आता है।

सच्चाई तो यह भी है कि मनुष्यों द्वारा भी श्वास-प्रश्वास की क्रिया में कार्बन-डाइ ऑक्साइड गैस पैदा होती है। पर साधारण बुद्धि के लोग यह नहीं जानते कि CO_2 गैस के स्थान पर कारखानों व वाहनो से निकलने वाली सल्फर-डाइ-ऑक्साइड (SO_2), और कार्बन-मोनो-ऑक्साइड (CO) गैस कहीं अधिक हानिकारक है। वर्तमान के भूमण्डलीय वातावरण में चिन्ता का सबसे बडा विषय 'ओजोन' की परत में छिद्रो की निरन्तर वृद्धि है। इसके लिए मुख्य दोषी 'क्लोरो फ्लोरो कार्बन एटम' (CFCI) है जो कि मुख्य रूप से स्प्रे, परफ्यूम, वातानुकूल उपकरणों तथा रेफ्रिजरेटर मे शीतकारक के रूप में प्रयुक्त गैसों से निकलते हैं। पर यज्ञ करने से यह हानिकारक गैसे निर्माण होने के स्थान पर नष्ट होती हैं। यज्ञ के अनुष्ठान से वातावरण में उपस्थित अम्लीय वर्षा प्रदूषण (Acid-rain pollution) नष्ट होकर प्राणिमात्र को जीवन मिलता है।

अत इन उपरोक्त दोनो वैज्ञानिक प्रक्रियाओं से यही सिद्ध होता है कि यज्ञ करने से किसी प्रकार की हानि नहीं होती अपितु पदार्थों के सूक्ष्म रूप से लेकर विभक्त और भेदक रूप धारण कर लेने से वातावरण की शुद्धि, वनस्पतियों की वृद्धि, भूमि की उर्वरा शक्ति का विकास तथा मानव समाज के गम्भीर रोगो का निराकरण होता है। इतना ही नहीं अपितु यज्ञ द्वारा हिंसा एव प्रदूषण का निराकरण होकर मानवमात्र को भूकम्पों तथा अकालो से बचाया जा सकता है।

१२५ वर्ष पूर्व महर्षि देव दयानन्द द्वारा दिये गये भारत के इस प्राचीन 'वैदिक यज्ञ विज्ञान' को आज अनेक देशो के लोगो ने स्वीकार ही नहीं किया अपितु वे प्रतिदिन यज्ञ करते हैं। वह अपनी चिकित्सा प्रणाली व कृषि उत्कृष्टता में भी इसका प्रयोग कर रहे हैं। भारत, चिली, पोलैण्ड, जर्मन, अमेरिका, आस्ट्रेलिया तथा हालैण्ड के वैज्ञानिक व बुद्धिजीवी जन इसका अनुकरण कर रहे हैं।

नोट – विशेष जानकारी हेतु हमारी तुरन्त छपने वाली पुस्तक 'यज्ञ विज्ञान द्वारा कृषि, चिकित्सा और पर्यावरण शुद्धि" पढने का कष्ट करे।

वेद में यज्ञ महिमा

❑ **स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती**, आर्ष गुरुकुल कालवा

यज्ञ को आर्यों के नित्य कर्त्तव्य कर्मों मे सर्वप्रथम माना है। यज्ञ के अनेक रूप हैं जिनमें ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, बलिवैश्वदेव यज्ञ व अतिथियज्ञ को पचमहायज्ञो की सज्ञा दी है। ब्रह्मयज्ञ को ही साधारण भाषा में सन्ध्या कहते हैं। ब्रह्म=परमात्मा और वेद हैं और इस प्रकार 'ब्रह्मयज्ञ' से तात्पर्य प्रभु का ध्यान वेदानुकूल पद्धति से करना विहित है। 'यज्ञ' शब्द 'यज' धातु से बना है जिसके अर्थ हैं देवपूजा, सगतिकरण और दान। अर्थात् देवजनो को यथोचित आदर सम्मान सत्कार परस्पर प्रेम, सगठन, मेल-मिलाप करना और दान देना ये सब कर्म यज्ञ कहलाते हैं जितने भी अच्छे कर्म हैं, यज्ञ कहलाते हैं। वैसे तो यज्ञ की विशालता बडी विशाल है क्योंकि जितने भी अच्छे कर्म हैं तथा जिन्हे कर्त्तव्य की कोटि मे ला सकते हैं वे सारे कार्य यज्ञ कहलाते हैं। अतएव श्री कृष्ण महाराज ने गीता में कहा है–

यज्ञशिष्टाशिन सन्तो मुच्यन्ते सर्पकिल्विषै।
भुञ्जते ते त्वघ पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्॥३।१३॥

अर्थात् यज्ञशेष खानेवालों को सब पाप छोड जाते हैं, किन्तु जो केवल अपने निमित्त भोजन पकाते हैं, वे निरा पाप खाते हैं। श्रीकृष्ण जी महाराज का यहा यज्ञशेष से तात्पर्य है कि मानव जो भी कार्य करता है उसी को यज्ञीय भावना से सभी के हित की इच्छा मन में लेकर करे तो जो इस प्रकार कर्म करते हुए धनोपार्जन होता है वह वास्तव में यज्ञ शेष है और इस भांति भी जीवनयापन करते हैं, उनको तो पाप छू भी नहीं सकता क्योंकि उन्होने तो स्वार्थ को तिरोहित कर दिया।

यज्ञ के विषय मे यजुर्वेद २।२३ में कहा है–

कस्त्वा विमुञ्चति स त्वा विमुञ्चति कस्मै त्वा विमुञ्चति।
तस्मै त्वा विमुञ्चति। पोषाय रक्षसा भागोसि॥

अर्थ–(क) कौन सुख देने वाला यजमान मनुष्य (त्वा) उस यज्ञ को (विमुञ्चति) छोड देता है? अर्थात् कोई नहीं और जो उस यज्ञ को (विमुञ्चति) छोड देता है, (त्वा) उसको (स) वह यज्ञ स्वरूप परमेश्वर भी त्याग देता है। यज्ञ करनेवाला मनुष्य (कस्मै) किस प्रयोजन के लिए (त्वा) उस हवन सामग्री को अग्नि मे (विमुञ्चति) डालता है? जिससे सभी सुखों की प्राप्ति एव (तस्मै पोषाय) जिससे सब प्राणियो का पोषण होता है, इसलिए (त्वा) उस हवन सामग्री को याजक (विमुञ्चति) अग्नि मे डालता है। किन्तु जो पदार्थ सबके उपकारक यज्ञ में प्रयुक्त नहीं होता, वह (रक्षसाम्) दुष्टजनों से (भाग) उपभोग करने योग्य (असि) होता है।

इस मन्त्र मे दो प्रश्नोत्तर हैं। वे इस प्रकार हैं–

प्रश्न–कौन यजमान यज्ञ का परित्याग करता है?

उत्तर–कोई नहीं और जो यज्ञ को छोड देता है उसे परमेश्वर भी छोड देता है जिससे वह सदा दुखी रहता है।

प्रश्न–यजमान किसलिये पदार्थों का अग्नि मे प्रक्षेप करता है?

उत्तर–सब सुखो की प्राप्ति के लिए तथा सब प्राणियो की पुष्टि के लिए जो पदार्थ सर्वोपकारक यज्ञ मे प्रयोग नहीं किया जाता वह राक्षसो का भाग है। जो यज्ञशेष पदार्थो का उपयोग करते हैं वे ईश्वर के आज्ञा पालक देवता हैं और जो ईश्वर की इस आज्ञा का पालन नहीं करते वे राक्षस हैं।

यजुर्वेद के प्रथम मन्त्र मे ही यज्ञ को श्रेष्ठतम कर्म कहकर वर्णन किया है तथा इसी आधार पर महर्षि याज्ञवल्क्य ने शतपथ ब्राह्मण ग्रन्थ मे यज्ञ को **'यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म'** अर्थात् यज्ञ ही श्रेष्ठत[illegible] है। [illegible] बात को योगिराज श्रीकृष्ण ने गीता में इस प्रकार वर्णन किया है–

सहयज्ञा प्रजा सृष्ट्वा पुरो[illegible]च प्रजापति।
अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्टकामधुक्॥३।१०॥

प्रजापति ने यज्ञ सहित प्रजा को सृष्टि को रचकर कहा कि इस यज्ञ कर्म को करते हुए तुम लोग वृद्धि को प्राप्त हो जाओ और यह यज्ञ तुम्हारी सभी इच्छित कामनाओ की पूर्ति करने वाला होवे। यह समस्त सृष्टि यज्ञ कार्य मे सलग्न है, सूर्य, चन्द्रमा, तारागण, पृथिवी, समुद्र, नदी-नाले, जगल-पर्वत सभी तो परोपकारमय-यज्ञ कर्म में रत हैं। अत मानव को तो यज्ञीय पद्धति जीवन अपनानी होगी क्योंकि वह इस सृष्टि मे श्रेष्ठतम प्राणी है। श्रेष्ठतम प्राणी को तो श्रेष्ठतम कार्य करने ही चाहिये वरना यह ससार का जितना भी कार्य-व्यवहार है ठप्प हो जायेगा। शतपथ ब्राह्मण मे ही **'यज्ञो वै विष्णु'** लिखा है, अर्थात् यज्ञ हीं विष्णु है और विष्णु नाम परमात्मा का है। **'वेवेष्टि व्याप्नोति चराचर जगत् सर्वमिति विष्णुरीश्वर'** जो चराचर जड चेतन समस्त जगत् मे व्यापक होकर सबकी रक्षा करता है वह विष्णु परमात्मा है और उसी परमात्मा से आदि सृष्टि मे चारो वेदों का ज्ञान ससार के कल्याण हेतु ऋषियों द्वारा प्राप्त हुआ। जैसे–

तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ।।

अर्थात् उस यज्ञस्वरूप परमात्मा से ही ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद चारों वेदों का ज्ञान प्रकट हुआ जिनमें सभी सत्यविद्याओ का समावेश है। इसीलिए वेदों का पढना-पढाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म कहा है।

शतपथ ब्राह्मण में 'यज्ञो वै पुरुष ' कहा अर्थात् यज्ञ ही पुरुष है जिसका तात्पर्य यही है कि यज्ञ नाम है कर्म का और कर्म करने से ही मनुष्य की सज्ञा पुरुष होती है। अपने पुरुषार्थ द्वारा मानव इस ससार को सुन्दर बनाता है। उसी ग्रन्थ मे लिखा **'यज्ञो वै विश्वस्य भुवनस्य नाभि'** यज्ञ ही सारे भुवन की नाभि है अर्थात् केन्द्र है। इससे स्पष्ट होता है कि बिना कार्य व्यवहार के यह ससार कैसे चल सकता है ? परन्तु सब कुछ करते हुए भी इसमे लिप्त नहीं होना, जैसा कि वेद भगवान् कहते है–

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत समा ।
एव त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।। यजु० ४०।२।।

अर्थात् यज्ञ कर्म करते हुए युक्त आहार-विहार से सौ वर्ष पर्यन्त जीने की इच्छा करे। हे मानव ! तेरे लिए यही मार्ग है अन्य कोई नहीं क्योंकि इस प्रकार कर्मों में मनुष्य लिप्त नहीं होते। अनासक्त भाव से कर्तव्यो को करते हुए जीवन यात्रा पूरी करना ही श्रेयस्कर है और यही यज्ञभावना कहलाती है। इसी बात को श्रीकृष्ण ने गीता में इस प्रकार कहा है–

'यज्ञार्थात् कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽय कर्मबन्धन ' उक्त यज्ञ के अर्थों से भिन्न जो भी कर्म किये जाते हैं उनका फल जन्म-मरणादि बन्धनकारक होता है। साराश यही है कि यज्ञादि श्रेष्ठ कर्मो के करने से मनुष्य की लौकिक एव पारलौकिक सभी इच्छायें पूर्ण होती हैं। यज्ञ सर्वोत्तम कर्म होने से उसका फल भी सर्वोत्तम होता है। यज्ञ से केवल स्वर्ग ही नहीं अपितु निष्काम भाव यज्ञीय जीवन से मोक्ष भी प्राप्त हो सकता है। इसके अतिरिक्त कुछ अभिचार यज्ञ भी होते हैं जैसे पुत्रेष्टि, वृष्टि, अजयमेघ, राजसूय, अश्वमेघ आदि-आदि। इस प्रकार के यज्ञो का आज के युग में ज्ञान नहीं के बराबर है। वास्तव में तो यज्ञ-विज्ञान एक महान् दर्शन है जिसको हमारे ऋषि-मुनियो ने भली प्रकार हृदयगम करके जीवन में उतारा था।

गोरक्षा राष्ट्ररक्षा

हिन्दू मुस्लिम और ईसाई गोरक्षा में सबकी भलाई

हिन्दू-मुस्लिम एकता पंचायत गोरक्षा हेतु

जिस देश में गाय बैल की हत्या होती है वहां पर राजा और प्रजा का विनाश हो जाता है। (महर्षि दयानन्द सरस्वती जी)

१ हम भारत में सैकडो वर्षों से हिन्दू-मुस्लिम इकट्ठे रहते हैं। शहर, कस्बे, देहात में मोहल्लों मे उनकी मिली-जुली आबादी निवास करती है। बाजारों-मण्डियों, शिक्षण-सस्थाओं, कोर्ट-कचहरी, चुनावों मे एक-दूसरे से मिलते-जुलते हैं व एक-दूसरे को जानते हुए सहायता करते हैं। यह कितने दु ख का विषय है कि एक देश के रहने वाले एक दूसरे की अवस्था उपासना विशेषताओ से ऐसे अनजान हैं जैसे प्राचीन समय में विदेशवासियों मे हुआ करती थी।

२ जबकि आज देश में सभी सुविधाए मौजूद हैं, परन्तु हर एक का ज्ञान दूसरों के प्रति दोषपूर्ण है अधिकतर सुनी-सुनाई बातें तथा कल्पनाओं के बारे में तीव्र भ्राति से ग्रस्त हैं अधिकतर घृणा फैलाने वाले पाठ्यक्रम किताबों व कहानियो के आधार पर अपने मन मस्तिष्क मे उनको एक गलत और घिनौनी तस्वीर कायम किए हुए हैं।

३ लेकिन हासी की बात नहीं बल्कि रोने की बात है कि सैकडो वर्षो से साथ रहने वाले हम एक दूसरे से अपरिचित हैं एक दूसरे की हम सुनना ही नहीं चाहते हैं इस नजर का दोष एक सम्प्रदाय पर ही नहीं सभी पर है देश से सच्चा प्रेम रखने और कर लेना चाहिए कि श्रद्धा-प्रेम का विश्वास और सुख-शाति के लिए सही पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है। आबादी के हर क्षेत्र मे हर सम्प्रदाय और हर मानव को ज्ञात होना चाहिए कि दूसरा सम्प्रदाय किन सिद्धान्तो पर खडा है।

४ प्रेम व प्यार के साथ रहने वाले जीवन का लाभ उठाने वाले एक दूसरे पर भरोसा करने वाले हैं परन्तु एक दूसरे की सभ्यता व पथ के प्रति आदर सम्मान की दौलत से वंचित रहते हैं। इसका नुकसान हिन्दू मुसलमान को समान ही पहुचाता है। देश को भारी हानि होती है अधिकतर नुकसान अल्पसख्यको को भोगना पडता है वह हिन्दू हो या मुसलमान या फिर ईसाई हो यह महान् दु ख की बात है इन मजहबों ने इन्सानों में कूट-कूटकर ऐसी कट्टरता व नफरत पैदा कर दी है जो सच्चाई है उसे भी मानने को तैयार नहीं हैं।

५ आओ आज हम सब मिलकर विचार करे कि आज भारत का प्रत्येक मुसलमान व ईसाई भारतीय रक्त का है उनका हम भारतीयो (आर्यो) के साथ खून का रिश्ता है। जितने भी भारत में मुसलमान हैं ये सब भारतीय नसल के हैं। विदेशी मुसलमान (अरब वालों) से पानी का मजहबी रिश्ता है। खून का रिश्ता पानी के वजन से ज्यादा वजन रखता है और करीब होता है। मेवात का हिन्दू मेव एक ही दादा की औलाद है आज से इस पीढ़ी पूर्व भारतीय पूजा पद्धति थी सबके रीति-रिवाज एक ही थे। यहा तक कि हिन्दू मेवों ने मिलकर विदेशी आक्रमणकारियों से लडाई लड़ी थी इतिहास साक्षी है।

६ वह कौन सी वस्तु है जो समाज में हिन्दू मुसलमानों में घृणा व नफरत बढाती है। वह है गौ हत्या क्योंकि गाय में हिन्दू की आस्था है। वह गाय को माता मानता है और गाय हिन्दुओं का मान बिन्दु है। इस मान बिन्दु के लिए हमेशा से भारत मे बडे-बडे झगडे हुए हैं। भविष्य में होने के आसार नजर आते हैं आज हम मिलकर इस बुराई से पीछा छुडाएं। अपने पुराने भाईचारे व प्रेम प्यार को फिर से कायम करें। हर सम्प्रदाय के बुद्धिजीवियों का फर्ज है कि जो दुष्कर्म मानव जाति को घृणित करता है उसे रोकने का चुनाव करे। गाय भारतीय संस्कृति की धरोहर निधि है। गाय की रक्षा के बिना सुख शान्ति प्राप्त नहीं हो सकती है गोरक्षा से सद्भावना और भाईचारे के लिए प्रेम प्यार की कड़ी सुदृढ होती है।

७ हमारी इबादत की पूजा पद्धति भिन्न-भिन्न हो सकती है। परन्तु हमारी सामाजिक पद्धति एक रहनी चाहिए हम एक कुए का पानी, एक खेत का अनाज खाते पीते हैं आज भी हिन्दू-मुसलमान एक मच पर बैठते हैं। जीवन-मरण, खुशी-गम मे व राजनैतिक क्षेत्र में कंधे से कधा मिलाकर चलते हैं। हमे अपने पूर्वजों की भांति एक दूसरे के साथ प्रेम-प्यार और सहानुभूति रखनी चाहिए। देश हमारा एक घर है और इस घर को पवित्र रखना हर एक नागरिक का फर्ज है। आर्थिक दृष्टि से भी गाय देश की रीढ की हड्डी है।

८ हमारा भारत कृषि प्रधान देश है। कृषि में गाय का बडा महत्त्व है। गाय का घी-दूध-छाछ-गोबर-मूत्र प्रत्येक मानव के लिए अत्यन्त लाभकारी है। भारत के प्राचीन ऋषि-मुनि पैगम्बरों ने गाय की भारी प्रशसा की है और इसकी रक्षा का आदेश दिया है। इस्लाम के प्रवर्तकह हजरत मोहम्मद साहब फरमाते हैं कि गाय पशुओ का सरदार है इसका ऐहतराम किया जाए। गाय का दूध दवा है।

९ जिस दिन गाय विश्व में नहीं रहेगी उस दिन धरती पर कोई भी प्राणी नहीं बचेगा। भारी मात्रा में देश से गोवश समाप्त किया जा रहा है। इन सब निर्दोष प्राणियो के साथ ही हम भस्म को जायेंगे। मेवात क्षेत्र की धरती भी कम्पायमान हो रही है। इस धरती पर भी अजाब आने के आसार बन रहे हैं। तूफान आते हैं ? जब अच्छे आदमी अपना काम छोड देते हैं। फिर भगवान् प्रकृति को आदेश देता है तब प्रकृति अपना काम करती है वह सबको समाप्त कर देती है। जब आग लगती है तो वह यह देखती है कि यह अच्छी चीज है या गरीब का घर है। इसे ना जलाऊ वह सबका हिसाब बराकर कर जाती है। आज सारे भारत में बूचड़खानों का जाल फैला हुआ है परन्तु हरयाणा की पावन पवित्र भूमि पर मेवात क्षेत्र की धरती पर भी प्रतिदिन लाखो निर्दोष प्राणियो को बुरी तरह से कत्ल किया जाता है और हम सब तमाशा देख रहे हैं क्या हमारा कुछ कर्त्तव्य नहीं बनता ? हम कुछ तो करें हम कम से कम गोवश को बचाने के लिए उपाय करे। विरादरान पचायत बुलाकर भाईचारे का प्रभाव ही डाले। आखिर मेवात मे रहने वाले भी तो हमारे भाई हैं। कानूनी पकड़ से बिरादरी की पचायत की बात अस्थाई होती है। मेव नेताओं से अपील है कि गोरक्षा के लिए आगे आयें।

आज आज मिलकर जनता जनहित की पंचायत करें और गोवंश की रक्षा का संकल्प लें। इसी में देश, धर्म व जाति की भलाई है।

–सुन्दर मुनि, सयोजक–गोरक्षा सघर्ष समिति, मेवात
कार्यालय रनसीका, तहसील हथीन, जिला फरीदाबाद (हरयाणा)

अनमोल वचन

प्रतिदिन एक नेक काम करो और खुश रहो।
जिस व्यक्ति मे उत्साह नहीं वह केवल पुतला मात्र है।
सुन्दर विचार जिसके पास हैं, वह कभी अकेला नहीं रहता।
जिसके पास स्वास्थ्य है, उसके पास सब कुछ है।
जितने बडे बने, उतने ही नम्र बनो।
शान्ति के समान कोई तप नहीं।
आलसी व्यक्ति कभी सफल नहीं होते।
वह काम करना ठीक है, जिसे करके पछताना न पड़े।
हमे हमेशा नेक आदमी की राय माननी चाहिए।
विश्वास प्रेम की पहली सीढी है।
विश्वासपात्र मित्र जीवन की एक अमूल्य औषधि है।

–आचार्य रामसुफल शास्त्री
वैदिक प्रवक्ता
लाल सडक, हासी (हिसार)-१२५०३३

विश्व को भारत की देन

❑ **विश्वम्भरप्रसाद 'गुप्तबन्धु'**

जर्मनी मे विश्व इतिहास से सम्बन्धित एक पत्रिका में 'भारत का योगदान' शीर्षक से नीचे लिखे हुए कुछ तथ्य प्रकाशित हुए थे। हमने कुछ और सुसगत तथ्य जोडकर इसे लेख का स्वरूप दे दिया है। यद्यपि सभी तथ्य इतने महत्त्वपूर्ण हैं कि एक-एक पर स्वतत्र निबध ही नहीं ग्रथ तक लिखे जा सकते हैं और लिखे भी गए हैं, फिर भी ज्ञान का प्रसार करने के विश्वमैत्री मडल के अनुरोध का सम्मान करते हुए यहा उल्लेखमात्र से ही सतोष किया जारहा है। तथ्य ये हैं -

- विश्व के ज्ञात इतिहास के पिछले १०,००० वर्ष की अवधि में भारत ने कभी किसी देश पर आक्रमण नहीं किया। प्रेम और सद्भावना से ही अपने विचार और विश्वास विश्व मे फैलाए हैं।
- ससार का प्रथम विश्वविद्यालय तक्षशिला मे ईसा से ७०० वर्ष पूर्व स्थापित हुआ था, जिसमे ससार भर के १०,५०० से अधिक विद्यार्थी ६० से अधिक विषयो का अध्ययन करते थे। ईसा पूर्व चौथी शती मे स्थापित नालदा विश्वविद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में प्राचीन भारत की महानतम उपलब्धि थी।
- हिमालय के प्रागण मे इसे प्रथम किरणो का दे उपहार।
  उषा ने हस अभिनन्दन किया और पहिनाया हीरक हार।
  जगे हम, लगे जगाने विश्व, लोक मे फैला फिर आलोक।
  सप्त स्वर सप्त सिन्धु मे उठे, अखिल ससृति हो उठी अशोक। —प्रसाद
- ५,००० वर्ष से भी पूर्व, जब बहुतसी सस्कृतिया खानाबदोषो और जगलियों की ही थी, भारतीयो ने सिन्धु घाटी मे हडप्पा सस्कृति (सिन्धु-घाटी-सभ्यता) विकसित की हुई थी।
- सभ्यता का प्रारम्भ सर्वप्रथम ईसा के भी कई हजार साल पहले भारत में ही हुआ था। उस समय के जो भी अवशेष मिलते हैं, उनसे सिद्ध होता है कि जो कुछ था, विलक्षण प्रतिभा और उत्कृष्ट वस्तु कौशल से आद्योपात परिपूर्ण था। ज्ञात इतिहास काल की ही कृतिया, यथा अजता एलौरा की गुफाए, देश भर में फैले विशाल मन्दिर, विजयस्तम्भ, चैत्य, स्तूप और स्मारक विश्व मे बेजोड हैं।
- आरम्भ से ही भारतीय जनजीवन नितान्त आडम्बरहीन किन्तु अत्यन्त समृद्ध उन्नत और श्रेष्ठ था।
- सस्कृत सभी यूरोपीय भाषाओ की मा है। फोर्ब्स पत्रिका (जुलाई १९८७ अक) के अनुसार कम्प्यूटर साफ्टवेयर के लिए सस्कृत सबसे अधिक उपयुक्त भाषा है।
- सस्कृत ज्ञान की, विद्वानो की भाषा है। सस्कृत से ही जनसामान्य के लिए 'हिन्दी' भाषा का वैज्ञानिक विधि से विकास किया गया है। अत यह भारत की राष्ट्रभाषा है और विश्वभाषा बनने की ओर बढ रही है। डा० जयन्तीप्रसाद नौटियाल के अनुसार "हिन्दी जाननेवालो की सख्या विश्व मे सबसे अधिक है। भाषा जाननेवालो की दृष्टि से हिन्दी का विश्व मे पहला स्थान है" (देखिए गृह मत्रालय, भारत सरकार की पत्रिका 'राजभाषा भारती' अक्तूबर-दिसम्बर १९९७ अक पृष्ठ ४०)। सस्कृत की भाति यह भी कम्प्यूटर के लिए सबसे अधिक उपयुक्त सिद्ध होगी।
- चिकित्सा का मनुष्य को ज्ञात सर्वप्रथम विज्ञान आयुर्वेद है। आयुर्वेद के पितामह 'चरक' ने २,५०० वर्ष पूर्व इस ज्ञान का सकलन किया था। आजकल आयुर्वेद सभ्य ससार मे तेजी से अपना न्यायसगत स्थान प्राप्त कर रहा है।
- सुश्रुत शल्यक्रिया के पितामह थे। २,६०० वर्ष पूर्व वे और उनके समय के चिकित्सक जटिल शल्य क्रियाए, यथा प्रसूतज (सीजैरियन), मोतियाबिन्द, कृत्रिमाग, अस्थिभग, पथरी और प्लास्टिक शल्य तथा मस्तिष्क की शल्यक्रियाए सम्पन्न करते थे। सुनकारियो (अनिस्थीसिया) के प्रयोग से वे भलीभांति परिचित थे। शल्यक्रिया के सवा सौ से अधिक उपकरणो का प्रयोग करते थे। शरीर रचना विज्ञान, शरीर क्रिया विज्ञान निदानशास्त्र भ्रूणशास्त्र, पाचनक्रिया, चयापचय, आनुर्वशिकी और असक्रमिता सम्बन्धी गहरी जानकारी भी बहुतसी पुस्तको मे मिलती है।
- भारत का चित्र आजकल गरीब और अविकसित देश के रूप में भले ही प्रस्तुत किया जारहा हो १७वीं शताब्दी के आरम्भ मे अग्रेजो के आक्रमण से पहले तक यह ससार का सबसे धनी देश था। कोलम्बस भारत की ओर इसके धन के कारण ही आकर्षित हुआ था।
- नौचालन की कला का जन्म ६,००० वर्ष पूर्व सिन्धु नदी मे हुआ था। सस्कृत शब्द नौगति से ही 'नैविगेशन' और नौ से ही 'नेवी' बने हैं।
- मोहन जोदडो और हडप्पा की खुदाइयो से मिले अवशेषो से भारतीय नगर नियोजन की उत्कृष्टता प्रकट होती है पुरानी से पुरानी सभ्यता का दम भरनेवाले देशों के पास भी ऐसा कुछ नहीं था जिसकी तुलना उन भारतीय नगरो से की जा सके।
- 'महिरावली (दिल्ली) का प्रसिद्ध लौह स्तम्भ न केवल आकार और वजन की दृष्टि से, बल्कि रचना की दृष्टि से भी अद्वितीय है कि एक हजार साल की सर्दी गर्मी वर्षा का प्रकोप सहन करने पर भी उसमें अभी तक जग भी नहीं लगा।
- वायुयानों का प्रयोग रामायण और महाभारतकाल तक भलीभांति होता था। दिव्य अस्त्र शस्त्र और ब्रह्मास्त्र तक न केवल ज्ञात थे, वरन् प्रयोग किये जाते थे। ब्रह्मास्त्र (सभवत अणु अस्त्र) का प्रयोग सामान्यतया वर्जित था।
- पृथ्वी को सूर्य की परिक्रमा करने में लगनेवाले समय की गणना खगोल विज्ञानी स्मार्ट के सैकडों साल पहले भास्कराचार्य ने करली थी। ५वीं शताब्दी में उसने यह समय ३६५ २५८७५६४८४ दिन निकाला था।
- भारत में अकगणित का आविष्कार हुआ था, आर्यभट्ट ने शून्य का आविष्कार किया था।
- 'पाई' (वृत्त की परिधि और व्यास के सम्बन्ध) का मान योरपीय गणितज्ञों से बहुत पहले ६ठी शताब्दी में बोधायन ने निकाल लिया था और पाइथागोरस की साध्य नाम से प्रसिद्ध सकल्पना की भी उसी ने व्याख्या करदी थी।
- बीजगणित, त्रिकोणमिति और कलनगणित (कैलकुलस) भारत की ही देन है। द्विघाती समीकरण श्रीधराचार्य ने ११वीं शताब्दी में हल किये थे। ईसा से ५,००० पूर्व वैदिक युग में हिन्दू लोग $१०^{५३}$ तक की बडी सख्याओ तक का प्रयोग करते थे और उन्होंने उनके अलग अलग नाम भी दे रखे थे, जबकि यूनानी और रोमन लोगों द्वारा बडी से बडी $१०^{६}$ तक की सख्याओं का प्रयोग होता था और आज भी बडी से बडी १० की १२ घात ($१०^{१२}$) तक की ही सख्याओं का प्रयोग होता है।
- स्थानीय मान और दशमिक प्रणाली ईसा से १०० वर्ष पूर्व भारत में विकसित की गई थी।
- शतरज या अष्टपाद का आविष्कार भारत मे हुआ था।
- अमेरिका के रत्न विज्ञान सस्थान के अनुसार १८९६ ई० तक हीरा भारत से ही ससार भर में जाता था।
- अमेरिकी सस्था आई ई ई ने सिद्ध कर दिया है कि रेडियो सचार की खोज प्रोफेसर जगदीशचन्द्र बोस ने की थी न कि मारकोनी ने। जैसी भ्रान्त धारणा एक शताब्दी तक वैज्ञानिको में फैली रही है।
- सिचाई के लिए बाधों और जलाशयों का निर्माण सबसे पहले सौराष्ट्र (भारत) में हुआ था।
- १५० ई० के राजा रुद्रदमन के अनुसार रैवतक पर्वत पर 'सुदर्शना' नाम की सुन्दर झील चन्द्रगुप्त मौर्य के जमाने मे बनाई गई थी।

(साभार—टंकारा समाचार)

आओ जागरणशील बनें

यो जागार तमृच: कामयन्ते यो जागार तमु सामानि यन्ति।
यो जागार तमयं सोम आह तवाहस्मि सख्ये न्योका:।। (सामवेद)

(यो जागार) जो जागता है उसको ही (तम् ऋच कामयन्ते) ऋग्वेद के मन्त्र चाहते हैं। (यो जागार) जो जागता है उसको ही (सामानि यन्ति) सामवेद के मन्त्र चाहते हैं। (यो जागार) जो जागता है उसको ही (अय सोम आह) सोमादि औषधिया भली प्रकार प्राप्त होती हैं। (अहम् न्योका) मैं नियत स्थानवाला (तव सख्ये अस्मि) तेरी मित्रता व अनुकूलता मे वर्तमान रहता हू।

जो मनुष्य जागरणशील (पुरुषार्थी) होते हैं उनको ही ऋक्-सामादि वेद फलीभूत होते हैं। सोम आदि औषधिया उस जागरणशील पुरुष (उद्यमी व्यक्ति) के सामने हाथ जोडे खडी रहती हैं कि हम सब आपके लिए प्रस्तुत हैं। किन्तु जो पुरुष निद्रा से बहुत प्यार करनेवाले आलसी, प्रमादी, उद्यमहीन होते हैं, उनको न तो वेदों का ज्ञान प्राप्त होता है और न ही औषधिया आदि भौतिक पदार्थों के सुखभोग प्राप्त होते हैं। जागरणशील पुरुषों अर्थात् जगी हुई आत्माओ के साथ रमात्मा की मैत्री होजाती है। जो व्यक्ति सचेत (सावधान) नहीं रहते उन्हें परमात्मा ही नहीं, अपितु सभी बन्धु-बान्धव एव सासारिक पदार्थ भी छोड देते हैं। पुरुषार्थी व्यक्ति जीवन मे सब कुछ प्राप्त कर सकता है। किसी कवि ने बडा ही सुन्दर लिखा है कि—

पुरुषार्थ ही इस दुनिया में हर कामना पूरी करता है।
मनचाहा सुख उसने पाया जो आलसी बनके पड़ा न रहा।।

इसलिए उठो! जागो! सम्भलो! जीवन में उन्नति के मार्ग की ओर अग्रसर होजाओ। आजकल जो जागरण होरहे हैं उनका कोई वैदिक महत्त्व नहीं है। वेदविरुद्ध जागरण से मनुष्य जीवन में कुछ भी हासिल नहीं कर सकता। रातभर जागना कोई समझदारी नहीं है। परमात्मा ने रात्रि में सोने का (निद्रा) पूरी करने का विधान बनाया है।

पवित्र सामवेद की ऋचा के मुताबिक (विदसन्देश) के आधार पर ही जागना सार्थक है, मानव जीवन की सफलता है। अत आओ वेद के पावन सन्देश को जीवन में हृदयगम करें, स्वय जागे (पुरुषार्थी) बनें और दूसरों को जगायें। यही मानव जीवन की सचेतना का मुख्य उद्देश्य है।

—**रामसुफल शास्त्री, 'वैदिक प्रवक्ता'** लाल सडक, हासी (हिसार)

सांस्कृतिक प्रदूषण कितना घातक है ?

❑ केदारनाथ वार्ष्णेय

फिल्मो और टी वी प्रसारणो में बढती अश्लीलता भारतीय सस्कृति को प्रदूषित कर रही है। बच्चों को समय से पूर्व ही वयस्क बना रही है। हमारे शास्त्रो के अनुसार **"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता"** अर्थात् जहा नारी की पूजा होती है, वहा देवता वास करते हैं। आज आधुनिक कहे जानेवाले समाज में पाश्चात्य सभ्यता पूरी तरह से हावी होती जारही है जिसने नारी को भोगविलास की आनन्ददायी वस्तु बना दिया जो भारतीय सस्कृति मे जहर घोल रही है। महामडलेश्वर स्वामी विद्यानद सरस्वती ने धर्मप्रेमी सज्जनो को इस नग्न सस्कृति से बचने की प्रेरणा दी है। उन्होने कहा कि हम बाहरी प्रदूषण की चर्चा आए दिन समाचार-पत्रों के माध्यम से या स्कूल, कालेजों में परिचर्चा कराकर करते रहते हैं। उसको दूर करने के लिए विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम घोषित करते हैं पर यह भूल जाते हैं कि सास्कृतिक प्रदूषण से समाज को बचाना भी हमारा परम कर्तव्य है। देश मे अच्छे नागरिक बनाकर ही कोई राष्ट्र उन्नति कर सकता है। देश में आज कानून-व्यवस्था ठप्पसी होगई है, चारों ओर कत्ल, बलात्कार, अपहरण और गुण्डागर्दी का बोलबाला है। इसके लिए केवल प्रशासन ही दोषी नहीं है, वरन् पूरा समाज भी उतना ही उत्तरदायी है। प्राय देखा जाता है कि सतो के प्रवचनों मे लाखो नर-नारी एकत्र होते हैं। प्रवचन सुनते हैं, समझते हैं, उनकी सभ्यता को स्वीकार भी करते हैं, पर सस्कारो के अभाव में वे सतवाणी को भी जीवन मे नहीं उतारते, जिनको व्यवहार मे लाने पर ही समाज में नैतिक सुधार हो सकता है, हमारे गुण तो हमको दिखाई देते हैं पर दोष नहीं। उन दोषो का ज्ञान एव उन्हे दूर करने का यथासभव प्रयत्न करें तभी प्रवचनो का श्रवण करना सार्थक हो सकेगा। चारो ओर भ्रष्टाचार, मिलावट, घूसखोरी, शराबखोरी एव नैतिक पतन के समाचारो से समाचारपत्र भरे रहते हैं, जिनमे चपरासी, अधिकारी, व्यापारी यहा तक कि राजनेता तक लिप्त पाये गये हैं। विभिन्न प्रकार के अनैतिक कार्य करने के पश्चात् प्रवचन सुनने का भी क्या औचित्य रह जाता है।

हमारे देश की सनातन सस्कृति महान् है फिर भी हम पाश्चात्य सस्कृति अपनाने की दौड मे क्यो लगे हैं, विदेशो मे लोग हमारी सस्कृति के गहन अध्ययन में लगे हैं, इसकी भूरि-भूरि प्रशसा ही नहीं कर रहे हैं, वरन् उनका अनुकरण भी ईमानदारी एव पूर्ण निष्ठा के साथ कर रहे हैं। उनकी ईश्वर मे आस्था जाग रही है। वे नियमपूर्वक पूजा-अर्चना करने के साथ-माथ भारतीय परिधान भी पहन रहे हैं। दूसरो की सस्कृति के गुणो को अपनाना बुरा नहीं है पर अन्धानुकरण सर्वथा निन्दनीय है।

भगवान् शिव के वाम भाग से विष्णु, दायें भाग से ब्रह्मा और हृदय से रुद्र की उत्पत्ति हुई। ब्रह्मा जी ने जब सृष्टि की रचना प्रारम्भ की, तब एक कन्या प्रकट हुई, जो बहुत सुन्दर थी जिसका नाम सध्या रखा गया, दूसरा एक सुन्दर पुरुष प्रकट हुआ, जिसका नाम कामदेव रखा गया। कामदेव का विवाह दक्ष की कन्या रति के साथ हुआ। यहीं से मानव जाति मे विवाह की प्रथा प्रारम्भ हुई। इसका उद्देश्य उच्छृखल काम को निग्रहित करना था, कात बहिर्मुखी है, उसके निग्रहण का सर्वोत्तम मार्ग विवाह है, जिससे असामाजिक प्रवृत्तियों को समाप्त किया जा सकता है, इसलिए चारो आश्रमो मे गृहस्थ आश्रम को सबसे उत्तम माना गया है।

भारत मे सनातन वैदिक सस्कृति प्रचलित रही है, जिसने मनुष्य के जीवन को चार आश्रमों मे विभाजित किया है–ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास, सामान्यत मनुष्य को एक आश्रम से दूसरे आश्रम मे जाने की व्यवस्था है। पर गृहस्थ आश्रम से सीधे संन्यास आश्रम मे जाने के पश्चात् वानप्रस्थ आश्रम मे जाने की आवश्यकता नहीं है। शकराचार्य जी ने चार पीठ तथा महामडलेश्वर व अखाडो का निर्माण कर समाज को सुरक्षित रखने की व्यवस्था बनाई। इससे सनातन वैदिक पद्धति चलती रही है। ब्रह्मा की मानसपुत्री ने घोर तपस्या की तब शिव भगवान् प्रकट हुए, तब सन्ध्या ने उनसे वर मागा, पहला 'रति और काम की मर्यादा निश्चित की जाये जिससे बालको में पैदा होते ही विकार पैदा न हों' दूसरा 'जिसे मैं पति के रूप मे स्वीकार करू, उसके अतिरिक्त कोई अन्य पुरुष मुझे बुरी भावना से देखे तो वह नपुसक होजाये' अर्थात् पति-पत्नी की परस्पर निष्ठा बनी रहे। इसीलिए भगवान् शिव ने शैशव अवस्था में काम के प्रवेश को रोक दिया, जिसके कारण यौवन के होने पर ही काम का आवेग आता है।

अब प्रश्न उठता है सनातन धर्म के अनुसार कन्यायें या स्त्रियां ही व्रत क्यो रखती हैं ? विदेशो मे तो ऐसा व्रत रखने की कोई प्रथा नहीं है। मार्डन नारी तो नारी के व्रत रखने की भी कडे शब्दों में निंदा करती है या आलोचना करती है, पर इसका कारण वह पाश्चात्य शैली में उनका लालन-पालन एव भारतीय सस्कृति के प्रति उनकी अज्ञानता ही है। वास्तविकता ये है कि अच्छे पति या पुत्र प्राप्त करने के लिए ही कन्यायें या नारियां व्रत-उपवास रखती हैं। जिससे केवल नारी का मन ही पावन नहीं होता वरन् गर्भ में पलनेवाले बच्चे में भी अच्छे सस्कारों का उदय होता है।

हमारी सनातन वैदिक सस्कृति आदिकाल से चलती आरही है, जबकि सहस्रो वर्षों तक, विदेशी एव विधर्मी शासकों ने इसको नष्ट करने मे कोई कसर नहीं छोडी थी, तब आज स्वतन्त्र भारत मे नागरिकों का पावन कर्तव्य है कि वे इसकी रक्षा तन-मन-धन से करें।

(साभार–टंकारा समाचार)

वेद के सम्बन्ध में महापुरुषों के विचार

–विद्यारत्न डॉ० नरेश सिहाग 'बोहल' गुगन निवास २६ पटेलनगर भिवानी-१२७०२१

मनु महाराज के विचार–

'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्' (मनु० २-६) अर्थात् सम्पूर्ण वेद तो धर्म का मूल आदि स्रोत है।

'धर्मजिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः' (२-१५) अर्थात् धर्म के सत्यस्वरूप को जानने की इच्छा रखनेवालों के लिए पवित्र श्रुति वेद ही परम प्रमाण है।

'नास्तिको वेदनिन्दकः' (मनु० २-११) अर्थात् नास्तिक वही कहलाता है जो वेद की निन्दा करता है।

'वेदश्चक्षुः सनातनम्' (मनु० १२-९४) अर्थात् सचमुच वेद ही भूत, वर्तमान और भविष्यगर्भित सत्य तत्वों का दर्शक-दर्पण है।

'सर्वज्ञानमयो हि स.' (मनु० २-७) अर्थात् वेद विविध ज्ञान का अक्षय कोष है।

कपिलमुनि के विचार–

महर्षि कपिल को पाश्चात्य एव उनका अन्धानुकरण करनेवाले तथाकथित भारतीय विद्वान् नास्तिक कहते हैं, यह खेद की बात है। क्योकि ईश्वर और वेद के विरोधी को नास्तिक कहा जाता है। महर्षि कपिल ईश्वर और वेद दोनो पर पूर्ण श्रद्धावान् दिखाई देते हैं, जैसा कि उनके साख्यशास्त्र के पचमाध्याय मे स्पष्ट लिखा है–**'स हि सर्ववित सर्वकर्ता।'** नि सन्देह वह ईश्वर सर्वज्ञ और समस्त लोक-लोकान्तरों का रचयिता है, पुन मुक्तिप्राप्ति के साधनों पर विचार करते हुए लिखा है कि **'ऋते ज्ञानान्नमुक्ति.'**। अर्थात् बिना ब्रह्मज्ञान के मुक्ति प्राप्ति सर्वथा असम्भव है। यह कथन आयुर्वेद अ० ३१, म० १८ **'तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय'** के अक्षरश अनुकूल है।

'न पौरुषेयत्वं तत्कर्तु. पुरुषस्याभावात्' (१५-१४) वेद अपौरुषेय-पुरुष विशेष की रचना नहीं, क्योंकि इसके रचयिता किसी पुरुष के नामोल्लेख का उस पर चिह्न तक नहीं मिलता।

'निजशक्त्यभिव्यक्तेः स्वत. प्रामाण्यम्' (१५-५) परमेश्वर की जो स्वाभाविक विद्या शक्ति है, उससे वेद प्रकट होने से यह नित्य और स्वत प्रमाण है।

महर्षि कणाद के विचार–

'तद् वचनादाम्नायस्य प्रामाण्यम्' (१-१-३) अर्थात् वेद ईश्वरीय वाणी होने के कारण नित्य एव स्वत प्रमाण है।

'बुद्धिपूर्वा वाक्यमति वेदे' वेदों की जो वाक्यरचना है, वह सर्वथा बुद्धि, विज्ञान और युक्तियुक्त है। क्योंकि वेदज्ञान दाता का परमेश्वर ज्ञानमय है।

महर्षि व्यास के विचार–

'शास्त्रयो नित्वात्' (१-१, १,३) अर्थात् सूर्यवत् सर्वसत्यार्थ प्रकाशक एव अनेक विद्याओं से युक्त ऋग्वादि वेदचतुष्टय का कारण सर्वज्ञादि गुण विशिष्ट परमेश्वर ही है।

गौतम मुनि के विचार–

'मन्त्रायुर्वेद प्रामाण्यवच्चत प्रामाण्माप्तप्रामाण्यात्' (२-१-३) ब्रह्म आदि सब आप्त जन वेदो को नित्य मानते आये हैं। अत वेदो को आयुर्वेद की भाति धर्माधर्म के विषय मे प्रामाणिक एव नित्य ही सब मनुष्यो को मानना व जानना चाहिए।

पुराण रचयिता की वेदविषयक धारणा–

'वेदे न विहितं कर्म तन्मन्ये मंगलापरम्, अवैदिक तु यत्कर्म तत् देशशुभमेव च' (ब्रह्मवैवर्तपुराण)। वेदविहित कर्मानुष्ठान ही मगलकारी है और जो वेद विरुद्ध कर्मानुष्ठान है, वह सर्वथा अशुभ और अहितकर है।

'न हि वेदात्परं शास्त्रम्' (गरुडपुराण) वेदो से उत्तम कोई अन्य शास्त्र नहीं है।

'सारभूताश्च शास्त्राणां वेदाश्चत्वार एव च' (भगवतपुराण) सब शास्त्रो मे साररूप कोई शास्त्र है तो वह केवल चार वेद ही है।

'परोक्षवादो वेदोऽयंबालानामन्' (शासनम् भागवत) जो यह कहते हैं कि वेदो मे केवल परोक्ष की बातें हैं, वे सर्वथा अज्ञानी हैं, वे वेदो की शैली व शिक्षा से अनभिज्ञ हैं।

उपनिषद् के विचार–

'वेदा हि रसा वेदा ह्यमृताः' (छान्दोग्य० ३-५-४) वेद ही रस है, वेद ही अमृत है।

(शेष पृष्ठ १० पर)

श्रावणी पर्व

श्रावणी के पर्व को मिलकर मनाए आज हम।
वेद के पठन-पाठन का क्रम बनाए आज हम।
हवन करके विशेष आहुति पर्व की दें लगा।
दूषित पर्यावरण को हम हवन से देवें भगा।
चातुर्मास्य ऋषि मनावे गावों के नजदीक आ।
कृत्य-कृत्य बने गृहस्थी ऋषियो का तर्पण करा।
इसीलिए इस पर्व का इक नाम ऋषि तर्पण भी है।
पौष के महीने तलक करना तुम्हे अर्पण भी है।
बृहद् यज्ञ रचा करें उपकार हम ससार मे।
जीवन की नैय्या लगाये पार है मझधार मे।
ज्ञान की ज्योति जलाकर देवे अन्तरतम घटा।
परस्पर नजदीक होना है नहीं रहना कटा।
हर पर्व पर व्रतबन्ध नूतन पहनने की है प्रथा।
दुरितानि को दूर कर जो घल रही गल मे वृथा।
वेद का पढना ऋषि जी परम धर्म बता गए।
सत्य को भी ग्रहण करना साथ में बतला गए।
सबसे मिलकर प्रीति का व्यवहार करना चाहिए।
पीडित दुखियों के हृदय मे प्यार भरना चाहिए।
रक्षा सूत्र पर्व पर हैं बान्धती भगिनी सुता।
विवाह के बाद ही फिर जल रही हैं क्यों चिता।
जाति बन्धन तोड दो ना किसी से अलगाव हो।
स गच्छध्व स वदध्व का ही सच्चा भाव हो।
मास मदिरा को छुडाने का करें प्रचार सब।
भारतभूमि को स्वर्ग कहने लगे ससार सब।
हिन्दी की रक्षा करण का प्रण करो इस पर्व पर।
सस्कृति इस देश की अब तक बची इस गर्व पर।
जीवन मे प्रयोग अपने देश की वस्तु करें।
बाहर की वस्तु को भूल से कभी ना क्रय करें।
जीवन में **'प्रह्लाद'** लाना चाहते हो गर सही।
ऋषिवर (दयानन्द) के सिद्धान्त से तुम दीप्तिमान करो मही।

—**मा० प्रह्लादमुनि आर्य,** आश्रम नगली, डा० भुंगारका,
जिला महेन्द्रगढ (हरयाणा)

"ऋषि दयानन्द ने भारत के शक्ति-शून्य शरीर मे अपराजेय शक्ति और स्थिरता का सचार किया था तथा सिह-पराक्रम फूक दिया।"

"ऋषि दयानन्द उच्चतम व्यक्तित्व के पुरुष थे। महर्षि कर्मयोगी, विचार और नेता के उपयुक्त प्रतिभा का दुर्लभ सम्मिश्रण थे। दयानन्द ने अस्पृश्यता व अछूतपन के अन्याय को सहन नहीं किया। भारत मे स्त्रियों की शोचनीय दशा को सुधारने में भी महर्षि दयानन्द ने बडी उदारता एव साहस से काम लिया। वास्तव मे राष्ट्रीय-भावना और जन-जागृति के विचार को क्रियात्मक रूप देने में सबसे अधिक प्रबल शक्ति उन्हीं की थी। भारत के पुनर्निर्माण और भारत की नवचेतना की जागृति मे उनका योगदान भारत के लिए सबसे बडा वरदान है।"

—**रोमां रोलां (फ्रांस)**

मानव सेवा प्रतिष्ठान, ६० बी, हुमायूंपुर नई दिल्ली की ओर से

अभिनन्दन एवं छात्रवृत्ति प्रदान समारोह

आप सभी को जानकर हर्ष होगा कि **दिनाक १९ अगस्त, २००१ रविवार को प्रात १० बजे से १२ बजे तक** ११९ गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली मे अभिनन्दन एव छात्रवृत्ति प्रदान समारोह का आयोजन किया जाएगा। इसके मुख्य अतिथि **डॉ० योगानन्द जी शास्त्री** मन्त्री दिल्ली सरकार होगे। उद्घाटन भाषण **श्री साहिबसिंह वर्मा** सासद दिल्ली करेगे। **आचार्या सुमेधा जी व आचार्या कामजित् जी** कन्या गुरुकुल चोटीपुरा (मुरादाबाद) का अभिनन्दन किया जाएगा। **श्री वीरेन्द्र जी शास्त्री** आर्यसमाज कोटला (दिल्ली) समारोह के सयोजक होगे। दोपहर १२-३० बजे से **मानव सेवा प्रतिष्ठान** की ओर से **श्री सोमदेव जी शास्त्री** की व्यवस्था मे ऋषिलगर मे प्रसाद वितरण होगा।

—**हरवीर शास्त्री, मंत्री**

करो वेदप्रचार

पं० नन्दलाल 'निर्भय' भजनोपदेशक

वैदिक पथ को भूलकर, व्याकुल है ससार।
आर्यकुमारो, विश्व में, करो वेदप्रचार।
करो वेदप्रचार जाग जाओ बलवानो।
आलस्य को दो त्याग, धर्म अपना पहचानो।
दुनिया में बढ गए, दुराचारी अन्यायी।
पनपाया पाखण्ड, मस्त पानी दु खदायी।
ईश समझ पाषाण, यहा पूजे जाते हैं।
धूर्त पुजारी कलाकन्द, पेडे खाते हैं।
बन करके भगवान्, घूमते हैं पाखण्डी।
सजती यहां दुकान, खलों की देखो मण्डी।
पांच मिनट में करा रहे दर्शन ईश्वर का।
मानो ईश्वर खास दास है, इनके घर का।
चेले-चेली बना लूटते हैं जनता को।
निर्दयता से दुष्ट कूटते हैं जनता को।
नरबलि और पशुबलि जगत् में दी जाती है।
गोहत्या हर जगह, जगत् में की जाती है।
चरित्रहीनता बढा रहे हैं जग में नेता।
गुण्डों को सिर चढा रहे हैं, जग में नेता।
धर्म कर्म की बात, कभी ना करते नेता।
जनता का धन लूट, तिजोरी भरते नेता।
दुखिया, दीन, अनाथ, रात-दिन चिल्लाते हैं।
भूखे-प्यासे तडप-तडप कर मर जाते हैं।
ऊचे-ऊचे भवन, व्योम को चूम रहे हैं।
कारों में शैतान, आजकल घूम रहे हैं।
त्याग-तपस्या, परोपकार की भूले बातें।
खाते अण्डे-मास, मद्य पी कटती रातें।
नारी जाति का आज, यहा हो रहा निरादर।
नचा रहे दैत्य, देवियों को सडकों पर।
उठो आर्यो, जोश दिखाओ, कदम बढाओ।
श्रीराम, श्रीकृष्ण बनो, तलवार उठाओ।
दानव दल का वंश मिटाओ, जगत् बचाओ।
वीर शिवा प्रताप, वीर बन्दा बन जाओ।
लेखराम, गुरुदत्त बनो, श्रद्धानन्द स्वामी।
करो वेदप्रचार, बनो उपदेशक नामी।
जगत् गुरु ऋषि दयानन्द की शिक्षा मानो।
करो विश्वकल्याण, बहादुर तुम मर्दानो।
वेद श्रावणी उपाकर्म का महत्त्व यही है।
'नन्दलाल' ली घेर, शठों ने एकल मही है।

ग्राम-पोस्ट बहीन, जिला फरीदाबाद (हरयाणा)

भिवानी में विशाल राष्ट्रभाषा सम्मेलन

रविवार १६ अगस्त, २००१ दोपहर ३ बजे

मुख्य अतिथि – **माननीय श्री बनारसीदास जी गुप्त,** ससद सदस्य
(भूतपूर्व मुख्यमन्त्री, हरयाणा)

मुख्य वक्ता – **माननीय डॉ० परमानन्द जी पांचाल,** नई दिल्ली
(राष्ट्रपति के पूर्व विशेष कार्याधिकारी)

सम्मेलन मे निम्नलिखित ५ सूत्री मागपत्र पर विचार करके आवश्यक निर्णय लिए जाएगे–

१ हरयाणा प्रदेश मे प्रथम कक्षा से जारी की गई अनिवार्य अगेजी को समाप्त कराना।

२ हरयाणा सरकार के कामकाज मे शत-प्रतिशत राजभाषा हिन्दी का व्यवहार सुनिश्चित कराना।

३ राज्य के चारों विश्वविद्यालयों एव हरयाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड से अग्रेजी के गैरकानूनी वर्चस्व को समाप्त कराना।

४ हरयाणा उच्च न्यायालय मे हिन्दी मे काम की अनुमति दिलाना।

५ सैनिक अफसरो की भर्ती परीक्षाओ एनडीए तथा सीडीएस से अग्रेजी की अनिवार्यता को समाप्त कराना।

समस्त आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण सस्थाओं, हिन्दी प्रेमी सगठनों, बुद्धिजीवियों तथा युवा छात्रो से निवेदन है कि सम्मेलन मे पधारने की अभी से तैयारी करे। अपने जिले में भी राष्ट्रभाषा सम्मेलन रखने की योजना बनाए।

निवेदक

स्वामी इन्द्रवेश	**ला. जगदीशप्रसाद सर्राफ,** भिवानी	**श्यामलाल**
अध्यक्ष	उपाध्यक्ष	सयोजक

हरयाणा राष्ट्रभाषा समिति, दयानन्दमठ, रोहतक

आर्यसमाज की स्थापना के १२५ वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में भारत की राजधानी नई दिल्ली में

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

विश्व आर्य महासम्मेलन

२३, २४, २५ नवम्बर, २००१ (शुक्रवार, शनिवार, रविवार)

सरक्षक– **स्वामी सर्वानन्द सरस्वती,** प्रधान–वैदिक यति मण्डल

अध्यक्ष– **स्वामी ओमानन्द सरस्वती,** प्रधान–सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा।

देश-विदेश से लाखों आर्यों का विशाल समागम

दक्षिण अफ्रीका के नस्लवाद के विरुद्ध संघर्ष के प्रतीक श्री नेल्सन मंडेला आमन्त्रित।

आर्यसमाज के भावी कार्यक्रम की घोषणा– राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय विषयों के अलावा सम्मेलन मे जातिवाद, नस्लवाद, शराब तथा अन्य नशे, शाकाहार, शोषण एव भ्रष्टाचार, दहेज उत्पीडन एव हत्याए, कन्या भ्रूण हत्या, विश्व बाजारवाद, नर-नारी समता आदि मुद्दो पर विश्व स्तर के आर्यनेताओ के भाषण होंगे तथा सघर्ष के कार्यक्रम मूलक प्रस्ताव पारित होगे।

- यज्ञ मे १२५ संन्यासियो, १२५ वानप्रस्थियों को दीक्षा देने का सकल्प।
- धार्मिक पाखण्ड पोपलीला के विरुद्ध पाखण्ड खण्डनी पताका फहराई जाएगी।
- आर्य महासम्मेलन में समस्त प्रतिनिधियो के ठहरने-भोजन आदि का सुन्दर प्रबन्ध होगा।
- इस अवसर पर विशेष प्रेरणादायक सस्ता आर्य साहित्य, विडियो, आडियो कैसेट्स तथा महर्षि के विशेष चित्र जारी होंगे।
- दिल्ली आने-जाने के लिए भारतीय रेलवे से ५० प्रतिशत की छूट का प्रयास।
- पजीयन (रजिस्ट्रेशन) सर्वथा नि शुल्क होगा।
- पधारने वाले महानुभाव अपनी अग्रिम सूचना दे ताकि समुचित व्यवस्था हो सके।

निवेदक

स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती	स्वामी अग्निवेश	वेदव्रत शर्मा
कार्यकारी प्रधान	मुख्य सयोजक	सभामन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली–११०००२

दूरभाष . ३२७४७७१, ३२६०९८५

गुरुकुल में यज्ञोपवीत-संस्कार एवं वन-महोत्सव सम्पन्न

कुरुक्षेत्र। गुरुकुल कुरुक्षेत्र मे नव प्रविष्ट ब्रह्मचारियो के 'यज्ञोपवीत-सस्कार एव वन-महोत्सव' के शुभ अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप मे शाहाबाद मारकण्डा के सुप्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी श्री बानूराम गुप्ता ने कहा कि मानव जीवन की उन्नति मे सस्कारो का विशिष्ट महत्त्व है। मानव की शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक उन्नति के लिए जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त भिन्न-भिन्न समय पर सस्कारो की व्यवस्था ऋषि-मुनियो ने बहुत ही सुन्दर ढग से की है, जिसमे यज्ञोपवीत (जनेऊ) सस्कार का विशेष महत्त्व है, क्योकि यह सस्कार अत्यन्त आवश्यक और पवित्र माना गया है।

उन्होने अपने कर-कमलो द्वारा गुरुकुल प्रागण मे वृक्षारोपण करते हुए कहा कि पर्यावरण सतुलन मे पेड ही सबसे बडी भूमिका निभा सकते हैं। बिगडते पर्यावरण को पटरी पर लाने के लिए हर व्यक्ति को एक वृक्ष अवश्य लगाना चाहिए। इस अवसर पर गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्राचार्य श्री देवव्रत ने कहा कि यज्ञोपवीत सस्कार बालक का दूसरा जन्म माना गया है, क्योकि यह उसके ब्रह्मचर्यव्रत एव विद्याध्ययन का प्रतीक है।

यज्ञोपवीत सस्कार को प्रसिद्ध शिक्षाविद् श्री देवव्रत शास्त्री, ओकार शास्त्री, श्यामदेव शास्त्री व नन्दकिशोर शास्त्री ने वैदिक मन्त्रोच्चारण के साथ सम्पन्न कराया। इसमे सभी ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारियो के माता-पिता, गुरुजन तथा अनेक अतिथिगण उपस्थित थे। सभी ने ब्रह्मचारियो पर पुष्प वर्षा करते हुए, उन्हे उत्तम स्वास्थ्य प्राप्त कर शिक्षा अर्जित करने का आशीर्वाद दिया।

गुरुकुल में आरोग्य ज्योतिधाम का शिलान्यास

कुरुक्षेत्र। गुरुकुल कुरुक्षेत्र की प्रबन्ध समिति ने गुरुकुल परिसर मे जन-कल्याणार्थ स्थापित स्वामी श्रद्धानन्द योग एवम् प्राकृतिक चिकित्सालय मे उपचारार्थ रोगियो के रहने के लिए '**आरोग्य ज्योतिधाम**' के निर्माण का निर्णय लिया है, जिसका शिलान्यास वैदिक मन्त्रोच्चारण के साथ आर्यसमाज की महान् विभूति व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (दिल्ली) के प्रधान त्यागमूर्ति, तपोनिष्ठ स्वामी श्री ओमानन्द सरस्वती ने आज अपने कर-कमलो द्वारा किया।

उन्होने अपने उद्बोधन में कहा कि प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति नहीं, बल्कि पूर्ण जीवन विज्ञान है। आज के वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी शत-प्रतिशत स्वस्थ जीवन के लिए इसे उपयोगी पाया गया है। इसलिए आवश्यक है कि लोगों में पनप रही घातक बीमारियो को जडमूल से नष्ट करने के लिए तथा गरीब जनता को सस्ते मे इलाज उपलब्ध कराने के लिए प्राकृतिक चिकित्सा का प्रसार-प्रचार बढाया जाए।

इस अवसर पर गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्राचार्य श्री देवव्रत ने बताया कि 'आरोग्य ज्योतिधाम' के निर्माण पर ७५ लाख रुपये व्यय करके तीन मजिले भव्य भवन का निर्माण किया जाएगा, जिसमे मरीजो व चिकित्सको के रहने के सुव्यवस्था होगी। इसके निर्माण से रोगी चौबीसो घण्टे चिकित्सीय सुविधा से लाभान्वित हो सकेगे।

शराब के ठेके पर धरना व आगामी रणनीति

उल्लेखनीय है कि बाढडा से उखडे खूनी ठेके को हसावास के सरपच ने हसावास खुर्द की सीमा मे भाण्डवा, बाढडा व हसावास के काकड मे धरवा दिया था जिसके विरोध मे आज दिनाक २० जुलाई को भाण्डवा कन्नी के बारह गावो के प्रधान श्री रामस्वरूप की अध्यक्षता मे तीनो गावो के सैकडों व्यक्तियो ने ठेके के सामने धरना देकर शराब की बिक्री बंद कराई। बारह गाव की ओर से मुखिया प्रतिनिधि सरपच हसावास खुर्द के पास भेजे जिसने सात दिन में ठेके को उठवाने का आश्वासन दिया। इस पर सबने विचार करके धरना समाप्त कर दिया और निर्णय किया कि यदि धोखा दिया गया तो बारह गाव की पचायत बुलाकर फिर धरना शुरू किया जाएगा। इस सघर्ष मे आर्यसमाज भाण्डवा प्रारभ से निरतर सक्रिय रूप से योगदान दे रहा है।

–**धर्मपाल आर्य 'धीर' शास्त्री,** मत्री आर्यसमाज भाण्डवा

प्रथम वर्ष का उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज ग्राम रिसालिया खेडा का आर्य महासम्मेलन आर्यसमाज सिरसा के सौजन्य से सम्पन्न किया गया जिसकी तिथिया जुलाई २, ३, ४ सन् २००१ थीं।

उत्सव मे आये हुए विद्वानो मे स्वामी ओमानन्द सरस्वती अध्यक्ष सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा दिल्ली, स्वामी सर्वदानन्द जी, स्वामी रुद्रवेशजी, प० रामनिवास पानीपत, बहन पुष्पा शास्त्री, जबरसिह खारी, महेन्द्रसिह आर्य, मच सचालक श्री श्रवणसिह आर्य कर्मशाना और यज्ञ के ब्रह्मा प० श्री रणधीर जी शास्त्री पुरोहित आर्यसमाज सिरसा थे। सभी विद्वानो का स्वागत सरूपा से श्री जगदीश जी सींवर प्रधान आर्यसमाज सिरसा ने किया और अतिथियो का आदर शाल भेंट करके किया गया। दानी महानुभाव श्री चौ० हरलाल जी ने ५०० रुपये आर्यसमाज रिसालिया खेडा को तथा ५००० रुपया गोशाला ग्राम रिसालिया खेडा को दान दिया। श्री जगदीश सेखुपुरिया ने ५०० रुपये आर्यसमाज रिसालिया खेडा को दान दिया। श्री बदलूराम आर्य मुकलान वाले आर्य समाज हिसार की ओर से ५००० रुपये आर्यसमाज रिसालिया खेडा को दान दिया। आर्यसमाज सिरसा के मन्त्री राजेन्द्र आर्य ने भी ५००० रुपया आर्यसमाज रिसालिया खेड को दान दिया। सभी विद्वानो ने विभिन्न विषयो पर प्रकाश डाला। ग्राम रिसालिया खेडा के श्रोताओ की भीड ने तीनो दिन मन्त्रमुग्ध होकर श्रवण किया। इस अवसर पर दर्शन विद्वानों और श्रोताओ मे एक अनोखा दृश्य था। ग्राम के लोगो ने अन्त मे प्रतिवर्ष उत्सव कराने का सकल्प लिया।

–**राजेन्द्र आर्य,** मन्त्री–आर्यसमाज, सिरसा

वेदप्रचार कार्यक्रम

❑ **डॉ० मनोहरलाल आर्य**, पूर्व अन्तरंग सदस्य, आ प्रतिनिधि सभा हरयाणा

वेदप्रचार कार्य एक श्रेष्ठतम कार्य है जिसको यज्ञ कार्य भी कहा जा सकता है, जो कि सारे ब्रह्माण्ड मे निरन्तर चल रहा है, सारी सृष्टि यज्ञ कर रही है, वेद कहता है **'पश्य देवस्य काव्यम्'** प्रभु की रचना को देखो जोकि एक यज्ञ का रूप है, आदि सृष्टि मे दो पुस्तको की रचना हुई। एक पुस्तक तो यह सारे विश्व की रचना है और दूसरी पुस्तक वेद का ज्ञान है जो प्रभु से पवित्र आत्माओ नि ग्रहण किया, जिसके द्वारा हमे सृष्टि की हर वस्तु के बारे मे जानकारी प्राप्त होती है, यह इसी प्रकार है जैसे विद्यालय मे विद्यार्थियों के सामने भारत का चित्र लगा हो और अध्यापक भूगोल की पुस्तक लेकर विद्यार्थियो को चित्र मे से नगरो, नदियो आदि की जानकारी करा रहा हो। इसी प्रकार हमे वेद भगवान् द्वारा सारे विश्व का ज्ञान प्राप्त होता है। इसीलिये तो आर्यसमाज के तीसरे नियम मे कहा है कि वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है, वेद का पढना-पढाना और सुनना-सुनाना अत उसके अनुसार आचरण करना सब मनुष्यो का परम धर्म है, वेद ईश्वरकृत हैं, पुरुषकृत नहीं हैं। वेद का ज्ञान परमेश्वरोक्त ज्ञान है, जोकि आदि सृष्टि मे ईश्वर ने चार ऋषियो–अग्नि, वायु, आदित्य तथा अंगिरा द्वारा मनुष्यो को दिया। हमारे सारे धर्म ग्रन्थ इसके साक्षी हैं, और दूसरे मतो वाले भी दबे मन से मानते हैं कि जैसा कि बाईबल मे भी एक जगह आता है–"In the beginning was the word, the word was with GOD The word was made Flash" अर्थात् आरम्भ मे शब्द था, शब्द परमात्मा के साथ था और शब्द ही परमात्मा रूप था, उससे ही स्थूल पदार्थ बने, इससे सिद्ध होता है कि परमात्मा ने ही आदि सृष्टि मे अपने शब्द प्रमाण का प्रकाश किया, गुण गुणी के साथ रहता है और परमात्मा इसी गुण के कारण ही ज्ञान स्वरूप कहलाता है, इस प्रकार बाईबल का यह कथन भी सत्य है। प्राचीनकाल से यह परम्परा चली आ रही है कि चैत्र मास मे ऋषि-मुनि पहाडी आश्रमो और कुटियो से उतरकर मैदानी क्षेत्रो मे आ जाते थे और गृहस्थी लोगो के सहयोग से वेदप्रचार कार्य करते थे पारिवारिक और धर्मस्थानो मे सत्सग आयोजित करके महात्माओ के प्रवचनो द्वारा वेद प्रचार कार्य चलता था और वर्षाकाल के समाप्त होने पर महात्मा लोग अपने स्थानो पर चले जाते थे। इससे दोनो कार्य अर्थात् महात्माओ का आदर सत्कार और वेद प्रचार इसी उद्देश्य को सामने रखकर स्वामी दयानन्द जी महाराज ने आर्यसमाज की स्थापना की थी क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज द्वारा ही मानवता का विकास सम्भव है। देव दयानन्द ने अनुभव किया कि जब तक ऐसे समाज की स्थापना न हो जिसमें वेद के ज्ञान द्वारा सत्य विकारों का प्रचार हो, **"कृवन्तो विश्वमार्यम्"** का उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता। भद्रपुरुषों के उत्साह और पुरुषार्थ से आर्यसमाजो की स्थापना होने लगी और देश विभाजन से पूर्व और बाद मे भी कई वर्षों तक आर्यसमाजो के वार्षिक उत्सवो और समय-समय पर आर्यविद्वानो और भजन उपदेशको तथा प्रचारको द्वारा वेदप्रचार कार्य पूरे जोर से चला और जनता ने भी पूरा सहयोग दिया। श्रावणी (रक्षा बन्धन) का त्यौहार भी बडे उत्साह से मनाया जाता था। उस दिन आर्यसमाजो मे ही सब आर्यसमाजी अपने यज्ञोपवीत बदलते थे और वेदप्रचार कार्य मे सहयोग देने के लिए व्रत लेते थे, वेदप्रचार कार्यक्रम निश्चित किये जाते थे और वेद प्रचार सप्ताह मनाये जाते थे। बाहर से विद्वान् और आर्य भजनोपदेशक बुलाकर पारिवारिक सत्सगों मे काफी हाजरी होती थी। मगर अब तो आर्यसमाजों मे नाममात्र की हाजरी होती है और तो और पद अधिकारी तक भी उपस्थित नहीं होते। सत्सग में जाने की लगन और उत्साह ही खत्म होता जा रहा है और नई पीढी तो धर्मज्ञान से वचित होती जारही है। पहले तो परिवार के बडे लोग और माता-पिता अपने बच्चो को सत्सग मे साथ ले जाते थे पर अब तो बच्चो को कोई प्रेरित ही नहीं करता। ज्यादा नुकसान तो केबल टी वी ने किया है जिसकी ओर बच्चे आकर्षित रहते हैं। बच्चे क्या बडे भी रात के १२ बजे तक टीवी देखते रहेगे पर आर्यसमाज मे सत्सग में जाने को तैयार नहीं होगे। इसी लिये आर्यसमाज के उत्सवो मे रात की हाजरी घटती जा रही है। अब तो आर्य प्रतिनिधि सभाओ को इस तरफ खास ध्यान देना चाहिये, सभा वेदप्रचार कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए सब आर्यसमाजो मे वेदप्रचार सप्ताह मनाने का कार्यक्रम निश्चित करके भेजे और उसी के अनुसार सभा के भजनोपदेशक और विद्वान् भी प्रचार कार्य के लिये पहुचे तभी यह वेदप्रचार पुन चालू हो सकेगा। सभा की सबसे बडी जिम्मेवारी वेदप्रचार की है।

चारो वेदो के मन्त्रो को कई भागों में बाटकर छोटे-छोटे भाग छपवाये जाये जिनकी कीमत भी ज्यादा न हो ताकि लोगो मे पढने की रुचि पैदा हो, बडे-बडे ग्रन्थ पढने का किसी के पास समय भी नहीं है, सस्ता साहित्य तो जनता को उपलब्ध नहीं कराया जाता, आज आर्यसमाज का जो साहित्य छपता है बडी-बडी कीमतें रखी जाती हैं, छोटी-छोटी पुस्तकें हो और प्रचारार्थ कम मूल्य पर उपलब्ध कराई जायें और सभा की ओर से आर्यसमाजो मे भेजी जायें। जैसा कि हम देखते है कि दूसरे मत-मतान्तरो वाले कितना साहित्य मुफ्त मे बाटते हैं। **सस्ता साहित्य ही प्रचार का सबसे बडा साधन है।** सभा इस ओर खास ध्यान दे।

५४७, सैक्टर १५ए, आर्य सदन, फरीदाबाद-१२१००७

वेदों के सम्बन्ध में......... (का शेष)

महाभारत के रचयिता के विचार :–

नास्ति वेदात्पर शास्त्र नास्ति मातृसमो गुरु । अ० १०६-६५

वेद से बढकर कोई शस्त्र नहीं, माता के समान कोई गुरु नहीं है।

यानीहागमशास्त्राणि याश्च काश्चित् प्रवृत्तय. ।
तानि वेद पुरस्कृत्य प्रवृत्तानि यथाक्रमम् । । अ० १२२-४

इस जगत् मे जितने भी शास्त्र और कोई भी प्रवृत्तिया हैं, वे सब वेद को ही सामने रखकर क्रमश प्रचलित हुए हैं।

अधीत्य सर्ववेदान् वै सद्यो दु.खाद् विमुच्यते । अ० ७-२०

जो सम्पूर्ण वेदो का अध्ययन कर लेता है, वह तत्काल दु ख से मुक्त हो जाता है।

अप्रामाण्य च वेदाना शास्त्राणा चाभिलड्घनम् ।
अव्यवस्था च सर्वत्र एतन्नाशनमात्मन. । । अ० ३७-११

वेदों को अप्रामाणिक मानना, शास्त्र की आज्ञा का उल्लघन करना तथा सर्वत्र अव्यवस्था फैलाना ये सब अपना ही नाश करने वाले हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की धारणा–

जो परमेश्वर वेदो का प्रकाश न करे तो कोई कुछ भी न कर सके, इसलिए वेद परमेश्वरोक्त हैं, इन्हीं के अनुसार सब मनुष्यो को चलना चाहिए। (सत्यार्थप्रकाश)

वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है। (आर्यसमाज का तीसरा नियम)

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

१	आर्यसमाज भाण्डवा जिला भिवानी	१० से १२ अगस्त
२	आर्यसमाज गगायचा अहीर बीकानेर (रेवाडी)	१ से २ सितम्बर
३	आर्यसमाज फेफाना तह० नोहर (राजस्थान)	५, से ७ अक्तूबर

–**डॉ० सुदर्शनदेव आचार्य**, वेदप्रचाराधिष्ठाता

श्रावणी एवं रक्षाबन्धन पर विशेष—

वेदों का महत्त्व एवं रहस्य

❑ सुखदेव शास्त्री 'महोपदेशक' दयानन्दमठ, रोहतक (हरयाणा)

प्राचीन वैदिक काल में सभी वर्ग के लोग वेदों का पठन-पाठन यथासमय सदैव करते रहते थे। किन्तु वर्षा ऋतु मे वेदपारायण यज्ञों का आयोजन विशेषरूप से किया जाता था। श्रावण के महीने में वर्षा आरम्भ हो जाती थी। वर्षा ऋतु के कारण सभी वर्ग के लोग अवकाश पा जाते थे। इस वर्षाकाल के चौमासे में सभी लोग वेदपान, धर्मोपदेश, ज्ञानचर्चा में चौमासा बिताते थे।

उधर ऋषि मुनि लोग अपने जंगल के आश्रमों से जनता को धर्मोपदेश देने के लिए नगरों मे आकर निवास करते थे। ऋषि-मुनियो के चरणों में बैठकर लोग धर्मचर्चा पाकर आनन्दित हो जाते थे, वे उन वैदिक ऋषि-मुनियों की चरण-शरण मे रहकर उनकी सेवा करके 'ऋषि-तर्पण' करते थे। उसी श्रावणी पर्व पर सभी लोग वेद पढने की वर्ष भर की प्रतिज्ञा करते थे। इसे ही 'श्रावणी उपाकर्म' कहते थे।

श्रावणी के पर्व के साथ ही विद्वान् ब्राह्मणो द्वारा 'रक्षाबधन' के त्यौहार को भी मनाने का उपक्रम किया जाता था, उसके मनाने का ब्राह्मण विद्वानों का इतना ही अभिप्राय था कि वेदप्रवचनों व यज्ञ समारोह मे आए हुए क्षत्रिय-वैश्य वेदवेत्ता ब्राह्मणों की रक्षा का भी प्रबन्ध करें, उन्हें किसी प्रकार का वेदप्रचार में सकट न खडा हो, अत एव वे क्षत्रियादि वर्णो को अपनी रक्षार्थ उन्हें याद दिलाने के लिए एक 'रक्षासूत्र' धागा बाधते थे, उसे ही 'रक्षाबंधन' कहा जाता था। जनता के सभी वर्गों के लोग वेद व ब्राह्मणो की रक्षार्थ सदैव तैयार रहते थे। उन्हे आदर के लिये सभी 'दादा' कहते थे। उन्हे 'खीर' का भोजन देते थे।

कुछ काल पश्चात् ब्राह्मणों ने वेद पढना छोडकर कई प्रकार के पाखण्ड शुरू कर दिये। वे अनपढ अशिक्षित होते हुए भी जन्मजात के आधार पर अपने को बडा बताकर जनता को ठगने लगे। वे कहने लगे **'ब्रह्मवाक्यं जनार्दन'** ब्रह्मवाक्य ही सर्वोपरि है। यह सब कुछ पाखण्ड महाभारत के युद्ध के बाद शुरू हुआ। वेदविद्या समाप्त होगई। हजारो वर्षो तक देश मे भयकर अविद्यान्धकार छाया रहा। ब्राह्मणो ने अपने अतिरिक्त सबका वेद पढना-पढाना बद कर दिया। वे बहकाने लगे कि वेदो को तो भस्मासुर पाताल लेकर चला गया। इसके साथ ही ब्राह्मणो का रक्षाबधन भी समाप्त होगया। यज्ञ-हवन करने के पहले अन्य वर्णो के हाथ पर 'लालसा धागा' बाधने लगे।

हमने यज्ञ के अवसर पर एक अनपढ से 'ब्राह्मण' से पूछा-पण्डित जी! ये हाथ पर धागा क्यो बाधते हो? उन्होने कहा, क्योंकि ब्राह्मण के अतिरिक्त 'जनेऊ' लेने का किसी का भी अधिकार नहीं है। हम इन्हें अपना 'यजमान' बनाए रखने के लिए ऐसा करते हैं। अपनी स्त्री का जनेऊ भी हम ही पहनते हैं। स्त्री का अधिकार नहीं।

इस रक्षाबधन के साथ एक ऐतिहासिक घटना भी है—कहते हैं कि चित्तौड की महारानी कर्णवती ने मुगल बादशाह हुमायू को गुजरात के बादशाह बहादुरशाह से अपनी रक्षार्थ राखी भेजी थी। किन्तु हुमायू के न मिलने पर उसने वह राखी सर्वखाप पंचायत सोरो उत्तरप्रदेश के अध्यक्ष को भेजी थी, सर्वखाप पंचायत की सेना ने चित्तौड पहुंचकर रानी की तुरन्त सहायता की थी। तब से ही यह प्रथा प्रचलित हो गई कि बहनें अपने भाइयों को व बेटियां अपने माता-पिता को श्रावणी के त्यौहार के दिन उनके हाथ पर राखी बाधती हैं। वे उन्हे कुछ उपहार व वस्त्र आदि देते हैं। कुछ बहनें किसी अन्य को भी अपना 'राखीबन्द' भाई बनाती हैं, जो उनकी सकट के समय मे रक्षा करते हैं। यह तो हुई 'श्रावणी' व 'रक्षाबधन' की प्रथा की बात।

अब श्रावणी के अवसर पर वर्षभर वेदो के पढने की प्रतिज्ञा भी की जाती थी। जनेऊ भी नए पहनते थे।

वेदों का महत्त्व एवं रहस्य—

वेदज्ञान विज्ञान के भण्डार हैं। वेदो की महिमा अपार है। अत एव वेद आर्यजाति के सर्वस्व हैं। वे मानवमात्र के प्रकाशस्तम्भ और शक्ति के आदिस्रोत हैं। वेद का प्रकाश ससारभर में फैलाकर मानव जीवन मे व्याप्त निराशा, अज्ञान, अन्धकार, दुर्विचार, अनाचार, व्यभिचार, बलात्कार, दुर्गुण, दुर्व्यसन एव मानसिक आधि-व्याधि और जीवन मे विचारों के दिशाभ्रम को दूर किया जा सकता है। वेदो के पठन-पाठन, स्वाध्याय एव सयम से पवित्र वैदिक सस्कृति एव सभ्यता का प्रकाश सर्वत्र फैल सकता है।

वेद आदिसृष्टि से ही विश्ववारा प्रथमा सस्कृति है। वे हमें पवित्र वैदिक आदर्शो पर चलने की शिक्षा देते हैं। वह वैदिक सस्कृति हमारी प्रथम वरुण मित्र अग्नि के समान बनने की प्रेरणा देती है। इस प्रकार धन और बल के दान की महिमा, पाप और असत्य के उन्मूलन की भावना एव विश्वमैत्री की भावना तथा विश्व में वेदज्ञान के प्रचार प्रसार की भावना, वैदिक सस्कृति इन सस्कारो से हमे पवित्र एव निष्पाप बना देती है, जिससे यह विश्ववारा वैदिक सस्कृति ससार मे प्रसार करने योग्य है *(यजुर्वेद ७।१४)*।

अत वेदो का स्वाध्याय प्रत्येक समाज, राष्ट्र और विश्व की उन्नति का साधन है। वेदज्ञान विश्वबन्धुत्व का प्रेरक है और विश्वधर्म का सस्थापक है। सारे ससार को ज्ञान-विज्ञान का पाठ पढाने का सर्वप्रथम श्रेय वेदो को ही है। जहा जनमानस मे वेदों की ज्योति जलती है, वहा ज्ञान-विज्ञान का प्रकाश है। वहा सर्वत्र शान्ति है। वहीं पर सर्वाङ्गीण उन्नति हे, सुख है, शान्ति है और सतत विकास की प्रक्रिया है।

वेद सनातन ईश्वरीय वाणी है। अत एव वेद सामाजिक क्रान्ति का सन्देहवाहक, राष्ट्रीय एकता का प्रचारक, विश्वधर्म, विश्ववैदिक सस्कृति का आदिम उपदेष्टा, मानवधर्म का सर्वप्रथम सस्थापक, उन्नति का विधायक है। ससार मे ऐसी कौनसी समस्या है जिसका समाधान वेदो मे न हो? एक छोटे से तिनके से लेकर पृथिवीपर्यन्त तथा सूर्य से लेकर चन्द्रतारागणपर्यन्त तथा च सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान् परमात्मा तक ज्ञान-विज्ञान वेदों मे भरा हुआ है। उसे ही प्राप्त करके मनुष्य मुक्ति के मार्ग पर अग्रसर हो सकता है—**नान्य पन्था विद्यतेऽयनाय।**

अज्ञान अविद्या का अधेरा भागना चाहिए और वेद के ज्ञान की ज्योति सर्वत्र फैलनी चाहिए। मनुष्यो को वेदज्ञान को प्राप्त कर धरती को स्वर्ग बनाना चाहिए। यह आज का अनिवार्य कार्य है और यह अत्यन्त आवश्यक भी है।

आज आपके देखते-देखते अज्ञान अविद्या का घोर अधकार बढ रहा है। विद्या-विज्ञान का अमर उजाला कहीं खोजने पर भी दिखाई नहीं देता। मिथ्या-पन्थो एव झूठे मत मतान्तरो के तेजी से बढते प्रचार के कारण आज चारो ओर पाखण्ड रूप धूवें के काले-काले बादल छाए जा रहे हैं। मार्ग दिखाई नहीं देता। हजारों वर्षो से वेद-विज्ञान का सूर्य इन अज्ञान-अन्धेरे के बादलो से बाहर निकलकर अपनी तेजस्वी प्रखर किरणो से अपना तेज प्रकट नहीं कर पा रहा।

हमे ऐसा लगता है, आज धरती से मनुष्यता समाप्त होती जारही है और जन्म ले रही है पशुता, दासता एव दानवता। इन सबसे छुटकारा पाने के लिए हमे वेदो का ही सहारा लेना पडेगा। परमात्मा ने भी आदिसृष्टि मे वेदों का ज्ञान मनुष्यमात्र के लिए इसलिये ही दिया, जिससे मनुष्य वेदमार्ग पर चलकर अपना उद्धार कर सके। अत एव सृष्टि के आरम्भ मे वेद का ज्ञान परमात्मा ने चार ऋषियो के हृदय मे प्रकाशित किया। इसे प्रमाणित करने के लिए ऋग्वेद मण्डल १०, सूत्र ७१, मन्त्र १ का प्रमाण प्रस्तुत है—

बृहस्पते प्रथम वाचो अग्र यत्प्रैरत नामधेय दधाना।
यदेषा श्रेष्ठ यदरिप्रमासीत् प्रेणा तदेषा निहित गुहावि ।।

अर्थ—बृहस्पते=वेद के स्वामिन् परमात्मन्! सबसे पूर्व सृष्टि के आरम्भ में विभिन्न पदार्थो के जानने की इच्छा करते हुए आदि ऋषियो ने जो वचन उच्चारण किये वह वाणी का प्रथम प्रकाश था। जो सर्गारम्भ मे ऋषियो मे श्रेष्ठ होता है और जो निर्दोष पापरहित होता है, इनके गुहा=हृदय गुफा मे रक्खा हुआ वह भाग तेरी ही प्रेरणा से और प्रेम से प्रकट होता है। **'यदेषा श्रेष्ठ यदरिप्रमासीत्'**—जो ज्ञान सबसे श्रेष्ठ और निर्दोष था, भ्रम आदि से रहित था, वह ज्ञान इन ऋषियो को दिया गया, अर्थात् ईश्वर सर्वव्यापक है उसने वह वेद का ज्ञान अपनी प्रेरणा और प्राणियो की हितकामना से ऋषियो के पवित्र हृदयों मे प्रकट किया। इसी प्रकार ऋग्वेद मण्डल १, सूक्त १४२, मन्त्र ९ को भी पढ लीजिए—

शुचिर्देवेष्वर्पिता होत्रा मरुत्सु भारती।
इळा सरस्वती मही बर्हि सीदन्तु यज्ञिया ।।

अर्थ—**शुचि**=शुद्ध, **देवेषु अर्पिता**=सृष्टि के आरम्भ मे अग्नि, वायु, आदित्य व अगिरा नामक देव विद्वानो मे स्थापित की गई, **होत्रा**=यह वेदवाणी, **मरुत्सु**=प्राणसाधक पुरुषो मे, **भारती**=भरण करनेवाली होती है। वेदवाणी मे किसी प्रकार की गलती न होने के कारण वह शुद्ध है, प्रभु इसे अग्नि आदि को प्राप्त कराते हैं। प्राणसाधक पुरुष इनके द्वारा पोषित होते हैं।

इस प्रकार परमात्मा सर्वज्ञ एव अन्तर्यामी रूप से ऋषियो के हृदयो मे ऋग्वेद के अनुसार (ऋग्० म० १०, सूक्त ८०, मन्त्र ४) **'अग्निर्ऋषिं सहस्रा सनोति'** मन्त्रद्रष्टा ऋषि को हजारो वेदवाणिया प्रदान करता है।

इसीलिए महर्षि दयानन्द सरस्वती आर्यसमाज के प्रथम नियम और तीसरे नियम मे वेदो के पढने के लिए प्रेरणा देते हुए लिखते हैं—

१ 'सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदिमूल परमेश्वर है।'

२ 'वेद सब सत्यविद्याओ का पुस्तक है। वेद का पढना-पढाना और सुनना-सुनाना सब आर्यो का परमधर्म है।'

इस प्रकार महर्षि ने वेदो के पढने की प्रेरणा देते हुए वेदो के महत्त्व एव रहस्यो को वेदो का भाष्य करके जनता के सामने रक्खा। महर्षि ने वेदोद्धार का महत्त्वपूर्ण कार्य किया।

महर्षि दयानन्द ने ही सबको वेद पढने का अधिकार दिया। वेद पढने के लिये स्त्री-पुरुषो का समान अधिकार बताया। उन्होने यजुर्वेद के २६वे अध्याय का मन्त्र **'यथेमा वाच कल्याणीमावदानि जनेभ्य'** के द्वारा वेदविद्या का अधिकार प्रदान किया। अपनी सस्कार-विधि के द्वारा 'वेदारम्भ-सस्कार' का आरम्भ किया, जिससे सभी जनता

के स्त्री-पुरुष वेद पढने लगे। गुरुकुलो की स्थापना की गई। इस प्रकार सर्वप्रथम यह कार्य महर्षि ने किया। सभी वर्गो के स्त्री-पुरुषो ने वेदाधिकार प्राप्त किया। महर्षि के आगमन से पूर्व तो वेद लोप किये जा चुके थे। केवलमात्र ब्राह्मणो ने ही अपने नाम पर वेदो का पेटण्टीकरण करवा रक्खा था।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के पूर्ववर्ती ऋषियो तथा विद्वानो ने भी वेदो को ईश्वरीय वाणी सिद्ध किया है। महर्षि मनु कहते हैं–**'भूत भव्य भविष्य च सर्व वेदात् प्रसिध्यति'** अर्थात् भूत, वर्तमान, भविष्यत् सब वेदो से ही सिद्ध होता है। महर्षि वेदव्यास ने महाभारत, अनु० ११२,४ मे कहा है–

यानीहागमशास्त्राणि याश्च काश्चित् प्रवृत्तय.।
तानि वेद पुरस्कृत्य प्रवृत्तानि यथाक्रमम्।।

अर्थात् लोक मे जितने भी आगम शास्त्र अर्थात् विभिन्न विषयो के आदिमूल ग्रन्थ हैं अथवा शास्त्र हैं और लोक में जो प्रवृत्तिया देखी जाती हैं वे कभी वेद के आधार पर ही आरम्भ हुई हैं। महर्षि याज्ञवल्क्य ने भी यही घोषणा की थी कि–

न वेदशास्त्रादन्यत्तु किञ्चिच्छात्र हि विद्यते।
नि सृत सर्वशास्त्र तु वेदशास्त्रात् सनातनात्।।

वेदशास्त्र से भिन्न कोई शास्त्र प्रमाण नहीं है। वेद ही सनातन हैं।

महर्षि कपिल ने भी साख्यदर्शन मे कहा है–**'निजशक्त्यभिव्यक्ते स्वत प्रामाण्यम्'** वेद परमात्मा की अपनी शक्ति से प्रकट हुआ है, अत स्वत प्रमाण हैं।

महर्षि गौतम भी अपने न्यायदर्शन मे कहते हैं–
'मन्त्रायुर्वेदप्रामाण्यवच्च तत्प्रामाण्यमाप्तप्रामाण्यात्।'

मन्त्र विचार तथा आयुर्वेदवत् वेदो का प्रमाण है, ऐसा ही सब आप्त विद्वानो ने माना है। इसी प्रकार पतञ्जलि, जैमिनि, वेदव्यास आदि सभी छह दर्शनो के कर्ता वेदों को ईश्वरीय ज्ञान मानते हैं। अत एव वेद स्वत प्रमाण हैं।

आर्यो के आदि देश भारत मे आदिसृष्टि से ही वेदो का पठन-पाठन, बालको के पाठ्यक्रम मे गुरुकुल मे प्रवेश होते ही आचार्य श्री आरम्भ कर देते थे। उनका विद्यार्थी को पहला ही उपदेश होता था–**'वेदमधीष्व'** अर्थात् वेदों को पढो।

ब्रह्मचारियो के वेदपाठ के विषय मे कविकुलशिरोमणि पण्डितप्रवर बाणभट्ट ने देश की तत्कालीन वेदपाठ की पवित्र परिस्थितियो का अपने ग्रन्थ मे वर्णन करते हुए लिखा था–

जगुर्गृहेऽभ्यस्तसमस्तवाङ्मयै,
ससारिकै पञ्जरवर्तिभि शुकै।
निगृह्यमाणा वटव पदे पदे,
यजूषि सामानि च यस्य शकिता।।

अर्थ–उस आश्रम-गृह मे समस्त वेदवाङ्मय के जाननेवाले पिजरे मे बैठे हुये तोता-मैनाओ द्वारा पद-पद मे अशुद्धि निकाल देने के कारण आश्रम के वेदपाठी ब्रह्मचारी यजुर्वेद-सामवेद के मत्रो का पाठ डरते-डरते कर रहे हैं कि कहीं ये तोता मैना हमारी कोई वेदपाठ मे अशुद्ध न निकाल दें?

इस सबका यही अभिप्राय है कि उस समय सारा ही वातावरण वेदमन्त्रो से गुञ्जित होता था। ऋषियो के पवित्र वैदिक आश्रमो मे प्रात साय पक्षी भी आम-जामुनो के वृक्षो पर बैठकर जो मधुर ध्वनि से कलरव करते थे, मानो, 'स्वस्तिवाचन' तथा 'शान्तिकरण' के ही मन्त्रों का पाठ कर रहे हो? श्रावण मास में वर्षा कालीन समय में मेंढक भी ऐसे बोल रहे थे, मानो वेटु ब्रह्मचारी वेदपाठ कर रहे हों? आश्रम के पीपल के वृक्ष पर कोयल की सुन्दर मधुर आवाज आश्रम पद को सुशोभित करती थी, जो श्रोताओं के मन को हर लेती थी। मन को मोह लेती थी। कुहू-कुहू करके वह मानो, पूछ रही हो कि हे प्रभो! तुम कहा हो?

इस प्रकार सभी राष्ट्रिय गुरुकुलीय आश्रमों मे बालको का वेदारम्भ सस्कार होता था। उन्हे सागोपाग चारों वेदों को पढने के लिए नियम धारण करना पडता था। वेदों के अग–शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष और उपाग–पूर्वमीमासा, वैशेषिक, न्याय, योग, साख्य और वेदान्त ये छह दर्शनशास्त्र पढाए जाते थे। इसी प्रकार उपवेद–आयुर्वेद, धनुर्वेद, गन्धर्ववेद और अर्थवेद अर्थात् शिल्पशास्त्र का अध्ययन कराया जाता था। इसके साथ ही ब्राह्मण ग्रन्थ–ऐतरेय, शतपथ, साम और गोपथ भी पढाए जाते थे। चारो वेद–ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद आदि का भी क्रमश अध्ययन कराया जाता था।

इस प्रकार आर्ष शिक्षा पद्धति से शिक्षित होकर राष्ट्र का निर्माण किया जाता था। नारियों का भी वेदादि पठन-पाठन में समान अधिकार होता था। वे भी विदुषी होती थीं।

ऐसा ही श्रावणी पर्व सर्वत्र ऋषि आश्रमो में मनाया जाता था। श्रावणी पर्व कुरुक्षेत्र के व्यास आश्रम मे भी धूमधाम से मनाया जाता था। महर्षि हजारो नवयुवक ब्रह्मचारियो को वेदपठन की दीक्षा देते थे। जनेऊ दिये जाते थे। बृहद् यज्ञ के पश्चात् महर्षि का वेदप्रवचन होता था। एक दिन श्रावणी पर्व के अवसर पर प्रभात वेला मे वेदप्रवचन करते हुए उन्होने बहुत ही भावविभोर होकर अपने वेदप्रवचन के अन्त मे कहा था–

वेदा मे परम चक्षु, वेदा मे परमं बलम्।
वेदा मे परम धाम, वेदा मे ब्रह्म चोत्तमम्।।

वेद मेरे परचक्षु हैं, वेद मेरे परम बल हैं, वेद मेरे परमधर्म हैं। वेद मेरे लिए उत्तम ब्रह्म हैं। महर्षि के इस प्रकार भावविभोर होकर वेदों की महिमा का गान करते देखकर हजारो ही शिष्यो ने हाथ ऊचे उठाकर बहुत ही जोरशोर से कहा–'वेद की ज्योति जलती रहे।'

इस प्रकार श्रावणी पर्व पर यज्ञवेदी पर उपस्थित अनेक विद्वानो ने महर्षि का समर्थन करते हुए महर्षि ने मनु की शैली मे कहा–

'भूत भव्य भविष्यच्च सर्वं वेदात् प्रसिध्यति।'

हे महर्षे! भूत, वर्तमान, भविष्यत् जो कुछ हुआ, जो कुछ हो रहा है और आगे जो होगा वह सब वेद से ही सिद्ध होता है।

इस प्रकार श्रावणी पर्व पर वेद पढने का प्रण लें। नए यज्ञोपवीत पहनें। बहनों से राखी बधवावें। उन्हें भेट मे दें। यही महत्त्व है–वेदों का, यही रहस्य है वेदों का, यही मान्यता है श्रावणी पर्व की। रक्षाबधन की। **इति शम्।**

श्री कृष्ण जीवन चरित अंक

सर्वहितकारी के लेखकों से निवेदन है कि सर्वहितकारी साप्ताहिक का आगामी अक योगिराज श्रीकृष्ण चरित अक प्रकाशित किया जाएगा। अत उनके आदर्श जीवन विषयक लेख/कविता आदि भेजकर अनुग्रहीत करें।

–सुदर्शनदेव आचार्य, सहसम्पादक

वेदवाणी

नाज सोनीपती

वेदवाणी हैं सरस भगवान् की।
पुस्तके हैं ज्ञान की, विज्ञान की।।
मुख से ऋषियों के जो सुनवाए गए।
विश्वहित ख़ातिर ये दर्शाए गए।।
रचना सृष्टि की हुई तो वेद थे।
तब न आपस में कोई मतभेद थे।।
'ऋग्, यजु, साम और अथर्व' भी।
चारो वेदो पर है सबको गर्व भी।।
दार्शनिकता के बडे भण्डार हैं।
वास्तविकता के ये मूलाधार हैं।।
धर्म-कर्म और मर्म की गहराइया।
इन मे हैं अच्छाइया, सच्चाइया।।
स्रोत हैं ये सत्य के प्रकाश का।
स्तम्भ हैं यह तो अविद्या नाश का।।
वेदमन्त्रो की हैं ताने बे-शुमार।
आओ सब, मिलकर करें इन पर विचार।
अस्ल मे मानव का यह है परमधर्म।
खुद मिटा सकता है मन के सब भ्रम।
वेद का प्रचार हो प्रसार हो।
महर्षि स्वामी की जय-जयकार हो।
वेद पढने और पढाने चाहिए।
'नाज' सुनने और सुनाने चाहिए।।

कार्यालय गढ़ी घसीटा, सोनीपत

वेदों का पथ

वेदों का है पथ निराला!
इस पथ पर जो भी चलता है,
वह नये रूप से ढलता है,
जग हितकारी सत्य बिहारी,
वेदो का है पथ निराला!
कर देता है दूर अधेरा,
ला देता है नया सवेरा,
सुखी बनाता मगल गाता,
वेदो का है पथ निराला!
है सबका यह जीवन दाता,
घर-घर को है स्वर्ग बनाता,
शत्रु दनुज का मीत मनुज का,
वेदों का है पथ निराला!
ज्ञान सुधा बरसाने वाला,
जीवन को सरसानेवाला,
सबका प्यारा, सबसे न्यारा,
'बोहल' का है पंथ निराला।

–विद्यारत्न डॉ. नरेश सिहाग 'बोहल'
सम्पादक 'प्रभु मिलन' गाव व पत्रालय बौन्दकला
तहसील-चरखी दादरी, जिला भिवानी-१२७०२५

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ७६८७४, ५७७७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, पं० जगदेवसिह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ७७७२२) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। पत्र के प्रत्येक प्रकार के विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०२
पंजीकरणसंख्या टैक/एच आर./49/रोहतक/99 ☎ ०१२६२-७७७२२

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र रोहतक

प्रधानसम्पादक : प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक :- डा० सुदर्शनदेव आचार्य

वर्ष २८ अंक ३६ १४ अगस्त, २००१ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

सभा से सम्बन्धित सभी आर्यसमाजो के लिए आवश्यक सूचना

प्रतिनिधि फार्मों की सामान्य जांच

त्रैवार्षिक चुनाव के लिए सभा कार्यालय मे प्राप्त प्रतिनिधि फार्मो की प्रारम्भिक जाच करते समय पाया है कि सार्वदेशिक सभा द्वारा स्वीकृत उपनियमो का अनेक फार्मो मे पूर्ण पालन नहीं हुआ है। जैसे–

उपनियम धारा-३ (आर्य सदस्य)

जो व्यक्ति आर्यसमाज मे नाम लिखवाना चाहे और समाज के उद्देश्यो के अनुकूल आचरण स्वीकार करे वह आर्यसमाज मे प्रविष्ट हो सकता है, परन्तु उसकी आयु १८ वर्ष से न्यून न हो। इस प्रकार जो आर्यसमाज मे प्रविष्ट हो वह "आर्य सदस्य" कहलाएगा। उपनियम धारा-४ (आर्य सभासद्)

(क) "जिसका नाम किसी आर्यसमाज में सदाचार पूर्वक दो वर्ष तक अकितह रहा हो और वह अपनी आय का शताश मासिक वा वार्षिक अथवा २५० रुपये वार्षिक वा अधिक धन समाज को देता रहा हो और जिसकी उपस्थिति साप्ताहिक सत्सगो मे कम से कम २५ प्रतिशत तक हो वह "आर्य सभासद्" माना जा सकता है।"

(ख) "आर्यसमाज मे २ वर्ष भर नाम अकित रहने का नियम समाज की स्थापना के तीसरे वर्ष से लागू होगा।"

(ग) "सम्मति (वोट) देने का अधिकार केवल 'आर्य सभासदो' को होगा (देखिए क भाग)"

उपनियम धारा-१७ अधिकारी

(क) "आर्यसमाज का प्रधान, मन्त्री अथवा आर्यसमाज की किसी भी सस्था का प्रमुख अधिकारी अथवा उसकी प्रबन्धकारिणी समिति का अध्यक्ष, मन्त्री अथवा प्रबन्धक बनाए जाने से पूर्व वह व्यक्ति न्यूनातिन्यून ३ वर्ष तक निरन्तर 'आर्य सभासद्' रहा हो।"

(ख) "प्रधान एव मत्री के अतिरिक्त अन्य अधिकारी एव अन्तरग सभा का साधारण सभासद् बनाए जाने से पूर्व वह व्यक्ति न्यूनातिन्यून दो वर्ष तक निरन्तर "आर्य सभासद्" रहा हो।

(ग) "अधिकारियों एवं अन्तरग सदस्यों के लिए आवश्यक होगा कि आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्सगो मे उसकी उपस्थिति न्यूनातिन्यून ३३ प्रतिशत रही हो।" आदि।

इस वर्ष सभा के विधान "नियम एव नियमावली" शीर्षक की सशोधिता धारा-१ की अन्तिम पक्ति के अनुसार "पहले से सम्बद्ध आर्यसमाज को सभा चुनाव पूर्व के तीन वर्ष अथवा अधिक का देय शुल्क जमा कराना होगा।"

नवीन आर्यसमाजो पर भी ये नियमोपनियम लागू होंगे।

इस प्रकार प्रतिनिधि फार्मों की स्वीकृति हेतु चुनाव पूर्व के तीन वर्ष ९८-९९, ९९-२००० तथा २०००-२००१ का देय शुल्क (दशाश) जमा कराना आवश्यक है। बहुत से आर्यसमाजों के जिनके १९९८ के चुनाव मे १,२ या ३ प्रतिनिधि थे अब उनके ७ से लेकर १६ तक प्रतिनिधि हैं। उन्होने केवल अन्तिम वर्ष २०००-२००१ का दशाश तो ठीक जमा करा दिया है, किन्तु ९८-९९ तथा ९९-२००० का बहुत कम जमा कराया है।

यदि उनके सदस्यो का एक वर्ष का ही शतांश आया है तो वे केवल "आर्य सदस्य" हैं। उन्होने यदि दो वर्ष का शताश दे दिया था तो सभा मे जमा कराना था। मताधिकार केवल आर्य सभासद् को ही है "आर्य सदस्य" को नहीं। ध्यान रहे अन्तिम २ वर्षो का सभा का देय दशाश लगभग एक समान होगा। दशाश पूरा देने पर ही फार्म मे लिखित प्रतिनिधि स्वीकार्य होंगे। फार्मों के आधार पर कार्यालय केवल देय दशाश की ही जाच कर सकता है। अन्य शर्तों का पालन तो समाज के अधिकारियों ने देखना है। साथ ही यह भी सुनिश्चित करें कि नई समाजो को छोडकर आर्यसमाज का प्रधान व मन्त्री वही आर्य बन सकता है जो लगातार तीन वर्ष से आय का शताश देकर आर्य सभासद् बन चुका हो। अन्यथा स्थिति मे सारा चुनाव अवैध होने का भय है। सभा किसी भी आर्यसमाज के कार्यवाही रजिस्टर, कैशबुक एव सदस्यता रजिस्टर को मगाकर इस बात की जाच करने का अधिकार रखती है। इसके लिए सभा ने जाच उपसमिति गठित कर दी है।

आशा है आप सभी इस सूचना के आधार पर प्रतिनिधि फार्मो की जाच मे सभा का सहयोग करेगे।

–प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामन्त्री

क्या देश को आर्यसमाज की आवश्यकता है ?

तीर्थयात्रा और आर्यसमाज

प्रो० चन्द्रप्रकाश आर्य, अध्यक्ष–स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग दयालसिंह कॉलेज करनाल

देश में तीर्थस्थानों की कमी नहीं है। यहा बारह महीनो तीर्थ यात्रायें चलती रहती हैं। कभी कुरुक्षेत्र की तो कभी हरिद्वार की, कभी उज्जैन की तो कभी नासिक की। दक्षिण मे अनेक तीर्थस्थल हैं जहा श्रद्धालु लोग जाते हैं परन्तु यहा कुछ तीर्थयात्राओ एव तीर्थस्थलो का ही मैं उल्लेख कर रहा हू।

पहली तीर्थयात्रा अमरनाथ की है। यहा भारत के कोने-कोने से हजारो की सख्या मे श्रद्धालु चौदह हजार फीट की ऊचाई पर स्थित अमरनाथ गुफा मे जान हथेली पर रखकर जाते हैं। इस बार यह यात्रा ५ जुलाई, २००१ से प्रारम्भ होकर ४ अगस्त २००१ तक जारी रही। इस यात्रा के लिए ४ जुलाई से २२ जुलाई तक जम्मू से एक लाख यात्री रवाना हुए। यहा अमरनाथ की गुफा मे हिम की बूदो, हिमलिग या शिवलिग बनते हैं। बस इन्हीं बर्फ के शिवलिगों को देखने के लिए श्रद्धालु यहा आते हैं। कडी सुरक्षा के बीच तीर्थ श्रद्धालु यहा आते हैं। फिर भी 'दैनिक भास्कर' (चण्डीगढ २२/७/०१) के अनुसार आतकवादियों ने अन्धाधुन्ध गोलीबारी करके चौदह तीर्थयात्रियो को मार डाला। पिछले वर्ष भी सेना और सुरक्षा बलो की कडी पहरेदारी मे श्रद्धालुओ ने यात्रा की थी फिर भी १-२ अगस्त २००० को आतकवादियो ने ३०-३२ तीर्थयात्रियो को बेरहमी से मार डाला था। भला ऐसी तीर्थयात्रा से क्या लाभ ? क्या इससे अमरत्व मिल जायेगा ?

२ इसी प्रकार कुरुक्षेत्र मे 'दैनिक जागरण' (नई दिल्ली १०-८-१९९९ पृ० ३) के अनुसार १९९९ मे सूर्य ग्रहण मेले के अवसर पर दस लख लोग इकट्ठे हुए तथा अमर उजाला "चण्डीगढ १२-८-९९ पृ० एक) के अनुसार सूर्यग्रहण के अवसर पर लाखो लोगो ने कुरुक्षेत्र के ब्रह्मसरोवर मे डुबकी लगाई परन्तु इससे क्या वे पवित्र हो गए ? या पाप मुक्त हो गए ?

३ हरिद्वार देश का सबसे बडा तीर्थस्थान माना जाता है वहा की हर की पौडी पर बारह महीनो लाखो/करोडो लोग स्नान करते हैं परन्तु क्या वे सब पापमुक्त हो गए ? मनुस्मृति मे लिखा है कि जलो से केवल शरीर की शुद्धि होती है किन्तु मन की शुद्धि सत्य से होती है, बुद्धि की शुद्धि ज्ञान से होती है और आत्मा की शुद्धि विद्या और तप से होती है–

अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति मन सत्येन शुध्यति।
विद्यातपोभ्या भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति।।

४ कावड यात्रा मे प्रतिवर्ष लाखो श्रद्धालु हरिद्वार से या गोमुख से गगाजल लाकर

(शेष पृष्ठ दो पर)

वैदिक-स्वाध्याय

सर्वोपरि परमेश्वर

आ त्वा रम्भ न जिव्रयो ररम्भा शवसस्पते।
उश्मसि त्वा सधस्थ आ।। (ऋ० ८ ४५ २०)

शब्दार्थ–(शवस पते) हे सब बलो के स्वामी ! (जिव्रय) बुड्ढा पुरुष (रम्भ न) जैसे डडे को (त्वा) उस तरह तुझको मैंने (आररम्भ) अवलम्बन कर लिया है। और अब मैं (त्वा) तुझे (सधस्थ) अपने समान स्थान मे (आ) आमने-सामने–आखो के सामने (उश्मसि) चाहता हूँ–देखना चाहता हूँ।

विनय–हे भगवान् ! मै बुड्ढा हू और तुम मेरी लाठी हो। तुम मेरे सहारे हो। मेरा इस जन्म का यह देह चाहे वृद्ध न दीखता हो, पर मै सच्चे अर्थ मे जीर्ण हू, पुराना हू अतएव अनुभवी हू। मैं न जाने कितनी योनियो मे फिरा हू–सब ससार भोग चुका हू। पर अब मैं तुम्हे 'शवसस्पते' करके सम्बोधन करता हू। क्योकि मैंने सुदीर्घ अनुभव से जान लिया है कि सब बलो के स्वामी तुम्हीं हो। मैंने कभी बडा धनाढ्य होकर धनबल का अभिमान किया है, किसी समय यह समझा है कि मेरे साथ इतना बडा भारी दल है, सो जो मैं चाहू कर सकता हू इसतरह दलबन्दी के बल को भी आजमाया है, कभी अपने बुद्धि-बल, चतुराई-बल के मुकाबिले मे सब दुनिया को हेच समझा है। शरीर-बलो और शस्त्र-बलो का तो कहना ही क्या है ? पर इतने लबे, अनगिनत योनियो के सुदीर्घ अनुभवो के बाद जीर्ण होकर-पुराना होकर अब समझा है कि सब बलो के स्वामी तो तुम हो। इसलिए अब और सब बलो का सहारा छोडकर एक तुम्हारा सहारा पकड लिया है। हे मेरे एक-मात्र बल ! तुम मुझ से अब क्षणभर के लिये भी मत दूर होओ। अब मैं यदि क्षण भर के लिए भी तुमको भूल जाता हू–अपने मानसिक विचार नेत्र के सामने से क्षण भर के लिए भी तुम्हे ओझल पाता हू–तो मैं व्याकुल हो जाता हूँ–एक दम निस्सहाय हो जाता हू। अत अब तो यही सतत कामना है कि तुम सदा ही मेरे सामने और मेरे साथ ही बने रहो। बुड्ढे की लाठी जब आखो के सामने पडी हो–पर उसकी पहुच के परे पडी हो–तब तो उसका सहारा न पा सकते हुए उसका दीखना बुड्ढे के लिए और भी दु खदायक हो जाता है। इसलिए हे मुझ वृद्ध की लाठी ! हे मुझ निर्बल के बल, हे मेरे एकमात्र सहारे ! तुम अब सदा मेरे साथ रहो–सधस्थ बने रहो। तुम से जरा भी दूर होकर अब मैं नहीं रह सकता।

(वैदिक विनय से)

तीर्थयात्रा और आर्यसमाज......... (प्रथम पेज का शेष)

शिव की मूर्तियो पर जल चढाते हैं। दैनिक ट्रिब्यून, चण्डीगढ, १५ जुलाई २००१ धर्म सस्कृति पृष्ठ के अनुसार श्रावण मास मे हरिद्वार से निकलने वाले रास्तो मे सिर्फ कावडे ही नजर आती हैं। मेरठ के ऐतिहासिक पुरामहादेव के मन्दिर मे बीस लाख से अधिक कांविडये प्रतिवर्ष जल चढाते हैं। हरियाणा के मन्दिरो मे भी काविडये भारी सख्या मे शिव की मूर्ति पर जल चढाते हैं। लगातार पैदल चलने से इन कावडियो के पैरो मे सूजन आ जाती है, तलवे लहूलुहान हो जाते हैं। इनकी आस्था प्रशसनीय है किन्तु इन जलो से इनकी आत्मा का कल्याण नहीं हो सकता। फिर असली शिव तो परमात्मा है। उसकी उपासना से मनुष्य का कल्याण होता है। कैवल्य उपनिषत् कहती है–

स ब्रह्मा स विष्णु स रुद्रस्स शिवस्सोऽक्षरस्स परम स्वराट्। स इन्द्रस्स कालाग्निस्स चन्द्रमा।।

अर्थात् वही परमात्मा ब्रह्मा है, वही विष्णु है, वही रुद्र है, वही शिव है, वही अक्षर आदि है।

५ एक तीर्थयात्रा नदादेवी राजजात यात्रा है। यह २१ अगस्त से दो सितम्बर तक चलने वाली २८० कि०मी० लम्बी धार्मिक पदयात्रा है। यह नौटी (चमोली) से रूपकुड तक दुर्गम पहाडी रास्तो से होकर नदादेवी के शिखर तक पहुचती है। इसमे पौराणिक मान्यता के अनुसार नदादेवी को मायके से ससुराल भेजा जाता है। अगस्त २००० की यात्रा का विवरण पढते हुए 'दैनिक ट्रिब्यून' चण्डीगढ (५-२-२००० धर्म सस्कृति पृष्ठ) ने लिखा है कि पदयात्रियो को देखकर स्थानीय गाववासी हैरान थे, वहीं हर पडाव पर पुजारियों का व्यवहार अशोभनीय रहा। पुजारी लोग असली डोली का आभास कराकर भेट चढवाने का प्रयास करवा रहे थे। वह एक अशोभनीय कृत्य था।

६ तीर्थराज प्रयाग/इलाहाबाद का जिक्र किए बिना यह तीर्थयात्रा अधूरी रहेगी। इस बार यहा महाकुभ नो जनवरी २००१ से २१ फरवरी २००१ तक इलाहाबाद में लगा। लाखों लोग वहा इकट्ठे हुए। मकर सक्रान्ति, मौनी अमावस्या तथा माघ पूर्णिमा एव शिवरात्रि के दिनो में पांच करोड (५ करोड) लोगों ने वहा सगम मे स्नान किया। किन्तु क्या वे सब तर गए ? मुक्त हो गए ? इस बारे में अग्रेजी के अखबार 'टाइम्स ऑफ इण्डिया' (नई दिल्ली २३/१/२००१ पृ० १२) ने अपने सम्पादकीय मे लिखा है कि भारत विदेशियो के लिए अजीबोगरीब/चमत्कारो का देश है। यहा भस्म लगाये नग्न साधु नाचते जा रहे हैं। उनके कदम चिलम की कश लगाने के लिए ही सरकते हैं। उनके लिए ये शारीरिक क्रियाये ही आध्यात्मिकता है इस कुभ के बारे मे 'दॉ हिन्दू' (२६-१-२००१) में राजीव धवन ने लिखा है कि इस मेले में चकित करने वाले भाति-भाति के लोग इकट्ठे हुए। इसमे लेटिन अमेरिका से आई एक महिला ने अपना पूरा शरीर कीचड मे लीपा हुआ था और वह रेत मे बैठी सूर्यदेव से प्रार्थना कर रही थी।

इस महाकुभ के बारे में अग्रेजी 'ट्रिब्यून' (चण्डीगढ २८-१-२००१ पृ० १०) ने लिखा कि यहा विभिन्न प्रकार के साधु आए हुए थे। १ एक वे थे जो अपनी एक भुजा को निरन्तर ऊपर खडा रखते थे, भले ही वह बेकार और रुग्ण हो जाये। या फिर वे गगा के बर्फीले पानी मे खडे रहकर घण्टो सूरज की ओर दृष्टि लगाये ध्यान लगाते थे। दूसरे वहा नागा साधु भी थे जो सदा बिल्कुल नग्न रहते हैं। तीसरे वे साधु थे जो सारा दिन घटिया बजाते थे। चौथे मौनी साधु थे जो चुप रहते थे। पाचवे शीर्षासनी साधु थे जो सिर के बल खडे होकर ध्यान लगाते थे। वे खभे से ही सिर लगाकर खडे-खडे सोते थे। वहा और भी कई प्रकार के साधु थे। इन साधुओ की क्रियाओ को आध्यात्मिकता का प्रतीक बताया गया है।

किन्तु इन क्रियाओ मे किसी प्रकार की आध्यात्मिकता नहीं है। गीता मे इस प्रकार के तप को, ऐसी क्रियाओ को तामसिक एव आसुरी तप कहा है। गीता कहती है, कि जो लोग दम्भ तथा अहकार से युक्त होकर शास्त्रविधि से विपरीत घोर तप करते हैं तथा जो हठपूर्वक, मूढतापूर्वक मन, वाणी और शरीर को पीडा देकर तप करते हैं, वह तामसिक तप कहलाता है–

अशास्त्रविहित घोर तप्यन्ते ये तपो जना ।
दम्भाहकारसयुक्ता कामरागबलान्विता.।। (गीता १७/५)
मूढग्राहेणात्मनो यत्पीडया क्रियते तप ।
परस्योत्सादनार्थं वा तत्तामसमुदाहृतम्।। (गीता १७/१९)

इसी प्रकार की ये तीर्थयात्राये हैं चाहे वे अमरनाथ की या नदादेवी राजजात यात्रा या कावडयात्रा या अन्य किसी स्थान की यात्रा हो। इन यात्राओ से यात्रियो को भारी शारीरिक एव मानसिक पीडा होती है। कई-कई दिनो तक यात्री पीडा का शिकार रहते हैं। फिर इनसे मिलता क्या है ? जैसे अमरनाथ के यात्री प्रतिकूल मौसम और आतकवादी हमलो के बीच अमरनाथ गुफा तक पहुचते हैं। किसलिए ? हिम से बने शिवलिगो को देखने के लिए किन्तु इस बार हिन्दी 'हिन्दुस्तान' (२७-७-२००१ पृ० १) के अनुसार शिवलिग के छोटे आकार के कारण श्रद्धालु भक्त निराश हो गए। कारण इस बार व्यास पूर्णिमा को इसकी ऊचाई साढे ५ और ६ फुट के बीच थी किन्तु इसकी आकृति लबत रूप मे न होकर चौडाई लिए हुए है जबकि पूर्ण आकार मे इसकी ऊचाई सात फुट से अधिक होती है।" श्रद्धालु, भक्त लोग इसे किसी भावी अनिष्ट का सूचक मानते हैं। यह है देश के लोगो की अन्ध श्रद्धा किन्तु इनसे मुक्ति नहीं हो सकती। तो फिर वास्तविक तीर्थ क्या हैं ?

'सत्यार्थप्रकाश' के ११वे समुल्लास मे महर्षि दयानन्द ने लिखा है कि, वेदादि सत्यशास्त्रो का पढना, पढाना, धार्मिक विद्वानों का सग, परोपकार, धर्मानुष्ठान, योगाभ्यास, निर्वैर, निष्कपट, सत्यभाषण, सत्य का मानना, सत्य करना, ब्रह्मचर्य, आचार्य, अतिथि, माता पिता की सेवा, परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना, शान्ति, जितेन्द्रियता, सुशीलता, धर्मयुक्त, पुरुषार्थ, ज्ञानविज्ञानादि, शुभगुणकर्म दु खो से तारनेवाले होने से तीर्थ हैं और जो जल स्थलमय हैं वे तीर्थ कभी नहीं हो सकते क्योकि 'जना. यैस्तरन्ति तानि तीर्थानि' मनुष्य जिनको करके दु खो से तरे उनका नाम तीर्थ है। जल स्थल तरानेवाले नहीं किन्तु डूबाकर मारनेवाले हैं।" और जो वेदादि शास्त्र और सत्यभाषणदि धर्म लक्षणो मे साधु हो उसको अन्नादि पदार्थ देना और उनसे विद्या लेनी इत्यादि तीर्थ कहाते हैं। मुक्ति किन बातो से होती है ? इसका उत्तर देते हुए महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के नौवें समुल्लास मे लिखा है कि 'परमेश्वर की आज्ञा पालने, अधर्म, अविद्या, कुसग, कुसस्कार, बुरे व्यसनो से अलग रहने और सत्यभाषण, परोपकार, विद्या, पक्षपातरहितन्याय, धर्म की वृद्धि करने, पूर्वोक्त प्रकार से परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना अर्थात् योगाभ्यास करने, विद्या पढने, पढाने और धर्म से पुरुषार्थ कर ज्ञान की उन्नति करने सबसे उत्तम साधनो को करने और जो कुछ करे वह सब पक्षपातरहित न्याय धर्मानुसार ही करे। इत्यादि साधनों से मुक्ति और इनसे विपरीत ईश्वराज्ञा भग करने आदि काम से बन्ध होता है।

इन सब बातो से देश के लोगों को कौन परिचित करायेगा ? केवल आर्यसमाज ही यह कार्य कर सकता है। इसके लिए आर्यसमाज को विद्वानों, लेखको, उपदेशकों, भजनोपदेशकों तथा धर्मप्रचारको की व्यवस्था करनी होगी। समाजे तथा प्रतिनिधि सभाये अन्य कार्यों मे धन खर्च कर रही हैं किन्तु इन पर इनकी व्यवस्था के लिए धनराशि खर्च करना नहीं चाहती ? इस तरह विद्वान्, उपदेशक, लेखक, धर्मप्रचारक आदि कैसे उपलब्ध होंगे ? उनके बिना आर्यसमाज का प्रचार कैसे होगा ?

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य

—**दुलीचन्द शर्मा**, अध्यक्ष वेदप्रचार मण्डल जिला महेन्द्रगढ

कवि के शब्दों में—

शिक्षा का सचार अविद्या का निष्कासन,
मातृभूमि का प्रेम ज्ञान से हृदय प्रकाशन,
मानव का कल्याण जगत् मे ऊचा आसन,
करे आत्म प्रकाश सिखाये सच्चा अनुशासन।

अर्थात् शिक्षा उस ज्योति का नाम है जो अविद्या का नाश करती है। अब विचारणीय प्रश्न यह है कि शिक्षा जिस अविद्या का नाश करती है वह अविद्या क्या है ?

तद् दुष्ट ज्ञानम् वै०। अ०९। आ० २। सू० ७

जो दुष्ट अर्थात् विपरीत ज्ञान है उसको अविद्या कहते हैं। जिससे मातृभूमि के प्रति अनुराग और हृदय मे ज्ञान की धारा प्रस्फुटित होवे अर्थात् हर प्रकार मानव का कल्याण करके उच्चारण पर प्रतिष्ठित् करे, जो यह बताये कि शरीर जीवात्मा नहीं यह तो आत्मा के उपयोग करने का साधन मात्र है अर्थात् आत्मा क्या है ? इसका सच्चा स्वरूप जानना शिक्षा से ही उपेक्षित है। साथ ही शिक्षा अपने पर शासन करने की कला में भी पारगत करती है।

इसी तथ्य की पुष्टि करते हुए महर्षि दयानन्द ने स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश मे शिक्षा के उद्देश्य का वर्णन यू किया है—

"जिसमे विद्या, सभ्यता, धर्मात्मा, जितेन्द्रियता की बढती होवे और अविद्यादि दोष छटे उसको शिक्षा कहते हैं।"

महर्षि कणाद प्रणीत वैशेषिक दर्शन के अ० ९। आ० २। सूत्र ८ मे विद्या क्या है की ओर सकेत किया गया है—

"**अदुष्ट विद्या।**" जो अदुष्ट अर्थात् यथार्थ ज्ञान है उसको विद्या कहते हैं।

"शिक्षा का अन्तिम उद्देश्य है उन्नति या विकास एकागी नहीं प्रत्युत शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक है।'

—मो०क० गाधी

मानव स्वभावत उन्नति के सर्वोच्च आयामो को छूने के लिए जहा निरन्तर प्रयासरत रहता है वहीं तथाकथित उन्नति के माध्यम से सुखो की प्राप्ति की मनोहारी कल्पना भी करता है। किन्तु उसे यह विशेष परिज्ञान नहीं कि उन्नति का मौलिक सुखदायी स्वरूप क्या है ? जब तक हम उन्नति के सुखदायी रूप से परिचित नहीं मात्र भौतिक उन्नति से सुखो की कल्पना भी व्यर्थ सिद्ध होगी। आइए तो सर्वप्रथम यह विचार करे कि उन्नति का वास्तविक स्वरूप क्या है ?

"उन्नति को भौतिक या तकनीकी प्रगति की दृष्टि से नहीं मापा जा सकता, अपितु मन और आत्मा के जगत् में सृजनात्मक परिवर्तनो की दृष्टि से आका जाना चाहिए। आध्यात्मिक मूल्यो के प्रति आदर, सत्य और सौन्दर्य के प्रति प्रेम, धर्मपरायणता, न्याय और दया, पीडितो के साथ सहानुभूति और मनुष्य मात्र के भ्रातृत्व मे विश्वास ही उन्नति का परिचायक है।"

—स० राधाकृष्णन

इसी सदर्भ मे यह भी विचारणीय है कि विकास का वास्तविक स्वरूप क्या होना चाहिए—

"मनुष्य से मनुष्य जुडता जाए अर्थात् उसमे सामुदायिक जीवन पद्धति विकसित हो ऐसी प्रक्रिया खोजना और उसे निरन्तर सुदृढ करने रहना ही विकास है।" अथवा

"मनुष्य सामाजिक प्राणी है। अत समाज जितना सुदृढ होगा उतना ही मनुष्य अपने को स्वय नियन्त्रित करेगा जिससे समाज मे समस्याए नहीं होगी। अत समाज बनाना और उसे सुदृढ करना ही विकास है।" —मदन मोहन व्यास

अत. शिक्षा ही एकमात्र साधन है जो हमें उन्नति एवम् विकास का उपादेय रूप समझाने में सक्षम है। उसी के माध्यम से हम एकांगी नहीं प्रत्युत शारीरिक, मानसिक एवम् आत्मिक उन्नति के लक्ष्य की प्राप्ति कर सकते हैं।

आज देश मे शासन की प्रजातान्त्रिक प्रणाली कार्यरत है। इस प्रणाली के अन्तर्गत चरित्र की कुछ अविकसित मौलिक विशेषताए जो प्रजातान्त्रिक जीवन पद्धति के लिए अनिवार्य हैं उनको विकसित करने वाली शिक्षा ही है।

प्रोफेसर के०जी० सयदीन ने इसका दिग्दर्शन यू कराया है—

"Education is so oriented that is will develop the basic qualities of character which are necessary for the function of a democratic life These qualities are:

(1) Passion for social justice. (2) Quickening of social conscience. (3) Tolerance of intellectual & cultural differences, (4) A systematic cultivation of critical intelligence. (5) Development of love for work & a deep & true love for the country

अर्थ—शिक्षा एक ऐसा उज्ज्वल रत्न है जो चरित्र की मौलिक विशेषताओ को विकसित करता है जो प्रजातान्त्रिक जीवन पद्धति के लिए अनिवार्य है। यह विशेषताए निम्न प्रकार हैं—

(१) सामाजिक न्याय की उत्कण्ठा, (२) सामाजिक सद्विवेक को उत्तेजित करना (३) बौद्धिक और सास्कृतिक मतभेदो का सहन करना। (४) आलोचनात्मक बुद्धि का यथाक्रम विकास, (५) काम के लिए प्यार का विकास एवम् देश के लिए गहन एवम् सच्चा प्यार।

किन्तु आज हम शिक्षा के इस कल्याणकारी मार्ग से भटक गए। जो शिक्षा हमे सामाजिक न्याय की ओर उन्मुख रहने की प्रेरणा देती है आज हम सच्चे न्याय की अपेक्षा अपने दोषो को ढापने की प्रक्रिया मे लीन होते जा रहे हैं अर्थात् स्वार्थ मे अधे हो गए।

"वास्तव मे अधा वही नहीं जिसकी आखे फूट गई हो, अधा वह है जो अपने दोष ढांकता है।" —गाधी

"कर्म की प्रेरणा के पीछे सत् और असत् को निर्मित करने वाली नैतिक दृष्टि मनुष्य के भीतर है। उसी को विवेक कहते हैं।" उसी को उद्दीप्त करनेवाली शिक्षा के हम विमुख हो रहे हैं।

प्राचीन परम्पराओं के अनुसार—

हम खिजा मे भी बहारो का पता देते हैं,
नफरतो को भी मुहब्बत का सिला देते हैं।

किन्तु आज के वातावरण में—

हिल जाते हैं हम दर्द की एक जुम्बिश से,
जिद्द पे आए तो जमी को हिला देते हैं।

आज हम दूसरो के गुणो को ग्रहण कर लाभ उठाने की अपेक्षा दोषारोपण मे ही अधिक उत्साहित रहते हैं। 'काम ही उपासना है' के सिद्धान्त को छोड शिक्षा के उद्देय को नकारते हैं वहीं **'प्रिय देश देश रटते यह प्राण तन से निकले'** को भी दृष्टि विगत कर शिक्षा के मन्तव्य को समझने मे असफल रहे हैं।

वास्तव में—

"भारतीय परम्पराओ के अनुसार शिक्षा न केवल जीविका कमाने के लिए है न केवल विचारो को ही प्राथमिकता देने वाली अथवा नागरिकता के लिए ही अपितु आध्यात्मिक जीवन मे प्रारम्भिकता तथा सत्य की खोज में मानवात्माओ का प्रशिक्षण और गुणों को कार्य रूप मे परिणत करने वाली है। सूक्ष्म शब्दो मे यह द्वितीय जन्म है अर्थात् सभी बन्धनो से मुक्ति दिलाने वाली है।" —**राधाकृष्णन शिक्षा आयोग**

शिक्षा का उद्देश्य प्रकटीकरण मे विदेशियो के विचार—

'Education is the deliberate & systematic influence, exected by nature persons upon immature, through instruction, discipline & harmonious development of physical, intellectual, aesthetic, social & spiritual powers of humanbeing, according to individual & social news & directed towards the union of educated with his creater as the final end" —**Raddens**

अर्थ—शिक्षा एक यथाक्रम विचारपूर्वक प्रभाव है, जो मानव की शारीरिक, बौद्धिक, आस्तिक, सामाजिक एवम् आत्मिक शक्तियो का, अनुशासनिक नियमो के अनुरूप व्यक्तिगत एवम् सामाजिक आवश्यकताओ के दृष्टिगत परिपक्व व्यक्तियो के माध्यम से अपरिपक्व व्यक्तियो पर अर्थात् विद्यार्थी समूह एवम् उनके निर्माता सहित अन्तिम लक्ष्य के रूप मे विकास करे।

"Read not to contract & confute, nor to believe & take for grauted nor to find talk & discourse. but to weigh & consider"

—**Bacon : studies**

अर्थ—अध्ययन न तो तर्क या विरोध के लिए हो, न विश्वास और स्वीकृति के लिए, न बात करने या बात बनाने के लिए हो, प्रत्युत यह प्रत्येक व्यक्ति के विचारशीलता तथा निर्णायक बुद्धि का विकास करे।

किन्तु हम यदि प्रचलित शिक्षा प्रणाली का मूल्याकन करे तो क्या शारीरिक, मानसिक एवम् आत्मिक विकास के लक्ष्य की पूर्ति के दायित्व निर्वाह मे खरी उतरती है ? निश्चित रूप से नहीं। हम शारीरिक विकास पर विहगम दृष्टि डालते हैं—

किसी भी कॉलेज मे जाइए, पचास प्रतिशत छात्रो की आखो पर चश्मा होगा, मुख मे सिगरेट होगी, मुख की तेजहीनता श्वेत अगराग (पाउडर) से मिलकर एक रूप होगई होगी, हाथ मे रूमाल लिए या तो खासते होगे या बहती हुई नाक को शरण देते होगे, कोई मोटर की भी ध्वनि सुनाई पडी तत्काल कान बन्द कर लेने पडे, एक मील चलना है तागा चाहिए, गरमी है लू लग गई, वर्षा है ज्वर आ गया जाडा है निमोनिया हो गया। कहो ब्रह्मचारी, तुम तो इक्के के घोडे को भी जीत गये, सीकिया पहलवान हो या वायुजीवी तपस्वी। हमारे एक मित्र यूनिवर्सिटी परीक्षा मे प्रथम आये थे, परन्तु उनकी बौद्धिक सौम्यता अ ज तक शारीरिक विकरालता के सामने ठहर न पाई सदा अपच रहता है और शायद छुट्टी के दिन भी ईश्वर को दो-बार कोस लेते होगे। उनके मन मे उत्साह नहीं धमनियों मे रक्तप्रवाह नहीं, जीवन मे रग नहीं, ससार मे सार नहीं।

(क्रमश.)

दयानन्दमठ रोहतक का तेईसवां वैदिक सत्संग सम्पन्न

दयानन्दमठ, रोहतक। पिछले लगभग दो वर्षो से प्रारम्भ किया गया वैदिक सत्सग लगातार प्रगति पर अग्रसर है। आज ५ अगस्त २००१ रविवार को दयानन्दमठ रोहतक का तेईसवा वैदिक सत्सग समारोह सम्पन्न हुआ। इस सत्सग के सयोजक श्री सन्तराम आर्य ने बताया कि दयानन्दमठ आर्यसमाज की गतिविधियो का मुख्य केन्द्र है। पूरे प्रदेश के कार्यो को अन्जाम यहीं से दिया जाता है। इस वैदिक सत्सग का मुख्य उद्देश्य यह है कि सामाजिक कुप्रथाओ धार्मिक अन्धविश्वासो, छुआछूत, अशिक्षा, अन्याय एव शोषण के बारे मे वैदिक धर्म की मान्यताओ का प्रचार-प्रसार करना है। इस सत्सग के कार्यक्रम के बारे मे श्री आचार्य सन्तराम ने बताया कि प्रात ९-०० बजे से १०-०० बजे तक यज्ञ हुआ फिर १० बजे से १०-३० बजे तक यज्ञ प्रसाद बाटा गया। फिर गीतो व भजनो का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम छात्र विनय ने अपना गीत इस प्रकार से प्रारम्भ किया **"हम कभी माता-पिता का ऋण चुका सकते नहीं"** एक छोटी सी बालिका दिव्या ने गीत प्रारम्भ किया। इसके बाद बहन दयावती प्राध्यापिका ने रक्षाबन्धन पर एक गीत गाया जिसके भाव इस प्रकार थे-**"यही है इनाम मेरी राखी की बधाई का, लाईये ना पैसा घर मे बेईमानी की कमाई का।"**

इसी प्रकार उ०प्र० से पधारे स्वामी मस्तराम ने अपनी विशेष सगीत की शैली में भजन इस प्रकार से शुरू किया-**"धिक्कार तेरा ये जीना, पत्थर का बना लिया सीना, तूझे बहुतेरा समझाया, पर तू ना बन्द हुआ नादान।"** दूसरा भजन **"ओ ऋषि दयानन्द स्वामी ने, महारा किया है बहुत उपकार रै महारी बन्ध छुडाई।"** इसी कडी को पूरा करते हुए युवा सगीतज्ञ रमाकान्त आर्य ने इस प्रकार अपने स्वरो को प्रस्तुत किया-**"जी रहे हैं लोग कैसे, आज के वातावरण मे।"** प० सुखदेव शास्त्री ने श्रावणी उपाकर्म पर अपने विचार रखे। श्रावणी का सुनना व उपाकर्म का अर्थ प्रारम्भ करना। श्रावण मास मे अच्छी-अच्छी कथाए व प्रवचन सुनने की व्यवस्था करना। मुख्य वक्ता के रूप मे पधारे डॉ० सुरेन्द्र कुमार म०द०वि०वि० रोहतक ने अपने वक्तव्य का विषय बनाया "विद्या और अविद्या की विवेचना" उन्होने बताया कि ज्ञान दो प्रकार से होता है। स्वाभाविक और नैतिक ज्ञान। स्वाभाविक ज्ञान पशुओ मे ज्यादा पाया जाता है जबकि मनुष्य को सिखाना पडता है। जैसे बिल्ली चाहे अमेरिका की हो या पाकिस्तान की म्याऊ-म्याऊ कहकर ही बोलती है। कौआ अपने बच्चो को चाहे कोयल के पास पालन-पोषण के लिए छोड देता है लेकिन आवाज कव्वे की ही बोलते हैं। वेदज्ञान बिना अर्थात् विद्या के बिना मनुष्य का कल्याण सम्भव नहीं है। जैसे-जैसे ज्ञान का विस्तार होगा मनुष्य का भय खत्म हो जाता है। अविद्या का अर्थ है जड वस्तु अर्थात् जड वस्तु के उपयोग लेने को अविद्या कहा जाता है।

विद्या-चेतन वस्तु व उसके उपयोग को व्यवहार मे लाना। यदि चेतन होने के बाद भी व्यवहार मे चेतनता का उपयोग नहीं किया तो वह व्यक्ति गहरे अन्धकार मे भ्रमण कर रहा है। कावड जैसे विषय को डॉ० साहब ने प्रोजैक्टिड पाखण्ड की सज्ञा दी तथा ऊर्जा का दुरुपयोग बताया। अन्त मे पाखण्ड रूपी सामाजिक प्रदूषण को समाप्त करने के लिए सभी आर्यजनो का आह्वान किया और कहा कि पानी सिर से उतर गया तो श्वास लेना भी मुश्किल होगा। अन्त मे स्वामी इन्द्रवेश जी ने अध्यक्षीय भाषण मे कहा कि प्रतिदिन वेद के स्वाध्याय का सकल्प करना चाहिये। अन्त में सयोजक श्री सन्तराम आर्य ने शान्ति पाठ के बाद सभी को ऋषि लगर मे भोजन के लिए आमन्त्रित किया तथा अगले महीने २ सितम्बर २००१ के लिए निमन्त्रण दिया।

—रविन्द्र आर्य, कार्यालय मन्त्री दयानन्दमठ, रोहतक

आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् का राष्ट्रीय अधिवेशन १९ अगस्त २००१ रविवार को बिट्ठल भाई पटेल भवन, रफी मार्ग, दिल्ली में होगा जिसमे परिषद् के सभी व्यायामशिक्षको को सम्मानित किया जायेगा।

—सन्तराम आर्य, दयानन्दमठ, रोहतक

आर्यसमाज भऊ-अकबरपुर में चतुर्वेद महायज्ञ

आर्यसमाज भऊ-अकबरपुर (रोहतक) मे ११ से १५ अगस्त २००१ तक वैदिक विद्वान् आचार्य वेदमित्र के ब्रह्मत्व मे चतुर्वेद महायज्ञ हो रहा है। वेदपाठी गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारी होगे। यज्ञ के यजमान श्री महेन्द्रसिह धनखड डी०आर०ओ० रोहतक होगे। यज्ञ का समापन श्री अनिल मलिक उपायुक्त रोहतक करेगे।

इसी दिनाक १५ अगस्त को आर्यसमाज के भव्य मन्दिर निर्माण मे सहयोग देने वाले दानियो को सम्मानित किया जायेगा।

—जगदेवसिह आर्य, मन्त्री-आर्यसमाज भऊ-अकबरपुर

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

१	आर्यसमाज मुआना (जीन्द)	१५ से १९ अगस्त
२	आर्यसमाज भऊ-अकबरपुर (रोहतक) (चतुर्वेद महायज्ञ)	११ से १५ अगस्त
३	आर्यसमाज गगायचा अहीर बीकानेर (रेवाडी)	१ से २ सितम्बर
४	आर्यसमाज बेगा (सोनीपत)	१४ से १६ सितम्बर
५	आर्यसमाज जलियावास (रेवाडी)	२२ से २३ सितम्बर
६	आर्यसमाज गोहाना मण्डी	२३ से २७ अक्तूबर
७	आर्यसमाज फेफाना तह० नोहर (राजस्थान)	५, से ७ अक्तूबर

—डॉ० सुदर्शनदेव आचार्य, वेदप्रचाराधिष्ठाता

कैसा यह स्वराज्य है आया ?

—राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति, मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

है अन्याय-अनय का ताण्डव,
करता कण-कण हाहाकार।
भारत की धरती पर होता,
असुर दलो का अत्याचार।
हत्या तथा डकैती का है,
निर्भय होता कारोबार।
रावण युग सा ही फैला है,
अनाचार व अति व्यभिचार।।
उग्रवाद-आतकवाद से, भारत का कण-कण थर्राया।
रोज सहस्रों लोग मर रहे, कैसा यह स्वराज्य है आया ?

गाव-गाव मदिरा बिकती है,
होता नष्ट जनो का जीवन।
हुए अराजक युवक हमारे,
हुआ प्रदूषित उनका अभिमान।
चरित्रहीनता बढती जाती,
करते बच्चे आज व्यसन।
जीवन है बर्बाद कर रहे,
कायर तथा कर्महीन बन।।
गावो से लेकर दिल्ली तक, फैली भ्रष्टाचार की छाया।
घूस ले रहे सब अधिकारी, कैसा यह स्वराज्य है आया ?

स्वतन्त्रता के लिए असख्यक,
युवको ने थे प्राण गवाए।
स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर,
लाखो ने थे शीश चढाए।
भगत-सुभाष तथा बिस्मिल ने,
बलि के पथ पर कदम बढाए।
अमर शहीदो के शोणित से,
जननी के कण-कण हर्षाए।
आज हमारी करतूतो से, लहू शहीदो का शरमाया।
कर्णधार भी भ्रष्ट बने हैं, कैसा यह स्वराज्य है आया ?

सुख और दु:ख कर्मों का फल है

कर्म तीन प्रकार के होते हैं प्रथम कर्म परमार्थ के लिये किया जाता है जैसे ईश्वरोपासना, योगाभ्यास, यम-नियम का पालन करना। दूसरा कर्म धनोपार्जन के लिये किया जाता है जिससे अपने और अपने परिवार को भोजन कपडा और मकान उपलब्ध हो सके और तीसरा कर्म हिंसा से उत्पन्न होता है, जिससे एक दूसरे को सताया जाता है अथवा मार दिया जाता है, इन तीनो कर्मों का स्वभाव मनुष्य के अन्दर रहता है, मनुष्य मे जब सतोगुण उदय होता है तब शुभ चिन्ता अच्छे कर्म करता है। जब रजोगुण प्रधान होता है तब धनोपार्जन का कर्म करने लगता है और जब तमोगुण ऊपर होता है तब वही मनुष्य क्रोध हिंसा से एक दूसरे को हानि पहुँचाने लगता है।

सुख-दुख भोगने का कुछ और भी कारण है यथा-शरीर, मन और अर्थ के द्वारा ही सुख दु ख भोगा जाता है। इस सब दु ख का अनुभव चेतना कराता है, पञ्चतत्त्वों के प्रभाव से ही शरीर को सुख दु ख प्राप्त होता है। अमुक के कारण ही सुख दु ख होता है तथा अपने परिवार और समाज के कारण भी मनुष्य सुखी और दु खी होता रहता है, अतएव सुख -दु ख कर्म के कारण अनेको प्रकार के होते हैं किस कारण से मनुष्य दु खी और सुखी होता है इस सम्बन्ध मे कुछ पूर्व जन्म का भी सस्कार होता है जिनसे प्रेरित होकर मनुष्य भला बुरा कर्म करता रहता है।

कर्म की गति बडी विचित्र है-पूर्व जन्म से केवल स्वभाव और शरीर का गठन मिलता है। क्योकि जितने बच्चे जन्म लेते हैं उन सबका एक विशेष जन्मगत स्वभाव रहता है और बच्चा जैसे-जैसे बडा होता है वैसे-वैसे उनके जन्मगत स्वभाव मे माता-पिता का भी सस्कार उस पर पडने लगता है और फिर थोडा बडा होता है तो उस पर समाज और सगत का भी प्रभाव पड जाता है, इस मिश्रित स्वभाव सस्कार के द्वारा ही वह विचित्र अनेक प्रकार का तन-मन वचन के कर्म करता रहता है और उसका फल उसे तो प्राप्त होता ही है उसके साथ रहने वाला भी कुछ सुख दु ख का साथी बन जाता है।

यह कर्मक्षेत्र बडा ही विचित्र है-निरपराध भी हिसा के शिकार हो जाते हैं यह उसे किस कर्मका फल मिलता है? जैसे एक परिवार है उसके जवान लडके लडकियाँ है। एक लडकी के विरोध मे कोर्ट मे साक्षी दे दी फलत जिसके विरुद्ध मे साक्षी दी वह उसका शत्रु बन गया, उसने उसे जान से मार दिया तदुपरान्त उसकी लडकी के साथ बलात्कार भी कर दिया, यह कैसा किस कर्म का फल हुआ जो उस निरपराध लडकी को भी दु ख का फल भोगना पडा। जिस प्रकार कीचड मे ढेला फेकने से वह कीचड चारो तरफ छिटक जाता है उसी प्रकार जब हम जानते हैं किउसके विरुद्ध साक्षी देने से हमे और हमारे परिवार को खतरा है तो उसे ऐसी साक्षी नहीं देनी चाहिये। अत माता-पिता के कर्मों का फल उसकी सतान को भी भोगना पडता है। जैसे पिता ने किसी कारण वश किसी महाजन से ऋण लिया और वह नहीं दे सकता, उसका देहान्त हो गया तो उस ऋण का ऋणी उसकी सतान हो जाती है, वह दे या न दें यह दूसरी बात है।

दैव योग से ऐसे सुख दु ख प्राप्त हो जाते हैं जिनका वर्तमान मे भोक्ता का कोई कर्मयोग नहीं रहता। जिस प्रकार एक रोगी का रोग उत्पन्न होने का कोई दोष त्रुटि नहीं दिखता लेकिन वह रोगी हो जाता है तो उसे पूर्व जन्म का ही शेष भोग कहा जायेगा। जैसे-जन्मान्ध गूगा, बहरा, अपग आदि इन सबका वर्तमान जन्मके कर्मों का फल नहीं है इसे तो उसके पूर्व जन्म के ही सस्कार का प्रभाव कहा जायेगा। जिसके द्वारा उसके शरीर का गठन वैसा हुआ।

आज साइस के विकास से जलवायु इतना दूषित हो गया है कि कोई स्वस्थ नहीं रह गया है, गर्भवती महिला के बच्चे पर भी बुरा प्रभाव पड रहा है। इसे कहते हैं एक का कर्मफल दूसरे को भोगना।

जिसके माध्यम से जो दु ख भोगना होता है उसे भोगना ही पडता है। उस निरपराधनी को किस बात का फल था जो उसे भोगना पडा। तो इसका उत्तरदायी कुछ समाज भी है और साक्षी देने वाला भी हो जाता है। एक का अन्याय कर्मफल उसके सम्बन्धी को भी भोगना पड जाता है।

जैसे एक घटना हमे स्मरण है-हरदेव एक भला ईमानदार व्यक्ति था किन्तु उसका छोटा भाई सहदेव दो नम्बरी काम करता था। एक दिन छोटे को पकड कर थानेदार ने थाना मे डाल दिया। उसकी स्त्री घर मे रोने लगी और बडे भाई को थाना भेजने के लिये प्रेरित किया। बडा भाई थाना गया और पुलिस ने उससे पूछा कि आप उसके कौन हैं? हरदेव जी बोले, मैं उसका भाई हू। बस उन्हे भी थाना मे डाल दिया गया। किन्तु दैवयोग से उस थाने मे दो ऐसे व्यक्ति पहले से किसी काम से मौजूद थे जो हरदेव को जानते थे। उन दोनो जाने माने व्यक्तियों ने थानेदार से कहा कि अभी हरदेव को बन्दी बनाये हैं वह एक भला आदमी है वह उसके जैसा नहीं है उसे हम लोग अच्छी तरह जानते हैं, ऐसे कुछ कहने के पश्चात् थानेदार ने हरदेव को छोड दिया। लेकिन उस छोटे भाई की वजह से बडे भाई को भी बदनाम होना पडा। तो जो जिसके साथ रहता है उसके कर्म की वर्षा से उसे भी भीगना पडता है। ऐसे ही उस निरपराधनी की घटना है, कर्म किया किया किसी ने और उसका दुष्परिणाम भोगा उस लडकी ने। यहा कुछ अगले जन्म का भी प्रभाव माना जा सकता है।

देखिये मास खाने वाला केवल पाप का भागी नहीं होता,

"अनुमन्ता विशसितो निहन्ता क्रमविक्रयी। सस्कर्त्ता चोपहर्त्ता च खादकश्चेति-घातका ।।(मनु अ ५ श्लोक ५१)

अर्थ-अनुमति-मारने की सलाह देने, मास के काटने, पशु आदि के मारने, उनको मारने के लिये लेने और बेचने, मास पकाने, परोसने और खाने वाले ८मनुष्य, घातक हिंसक अर्थात् ये सब पापकारी हैं।"

इससे सिद्ध हो जाता है कि कर्म करने वाला तो फल का भागी होता ही है साथ मे रहने वाले को भी सुख-दु ख का परिणाम भोगना पडता है।

जो कर्म किया जाता है उसका काल दो प्रकार का होता है-एक स्थूल दूसरा सूक्ष्म। स्थूल फल धन, सम्पत्ति, स्त्री पुत्र आदि को यहीं मिल जाता है किन्तु कर्म का सूक्ष्म सस्कार जिस मनोवृत्ति से किया जाता है, कर्म करने वाले के मानस पर पडता है जो धीरे -धीरे मनुष्य के विचार और कर्म को बदलती रहती है यही सस्कार आत्मा को आच्छादित करता रहता है जिससे उसको दूसरी योनि मे उसके सस्कार के अनुसार नया रूप और स्वभाव, आयु आहार-विहार आदि प्राप्त होता है।

पाप और पुण्य क्या है? निरपराध को कलकित करना, उस पर आक्रमण करना और उसे मार देना पाप कर्म है उसकी रक्षा करना, उपकार करना, सुपात्र को दान देना और उसे काम पर लगाना पुण्य कर्म है।

बलात्कार करने वाले को उसके पाप का फल अवश्य मिलता है। ससार मे पाप कर्म अधिक और पुण्य कर्म न्यून हो गया है इसलिये अत्याचार भी काफी बढा है। दु खो और रोगो की मात्रा भी सर्वाधिक हुई है। नारियो पर होने वाले अत्याचार बहुत बढ गये हैं।। इस सम्बन्ध मे अपने समाज को सुधारना होगा, ताकि सब परस्पर एक दूसरे के हित की भावना से कर्म करें। जो अपराधी हो उसी को दण्ड मिले अन्य को नहीं, अपने समाज को बिगडने से बचाना प्रत्येक का धर्म है। वैदिक समाजवाद मे लिखा है कि-

समाज के व्यक्ति जब समाज के आदर्शो से पतित हो जाते हैं और सार्वजनिक तथा सर्वोदयी भावनाओ को त्याग कर स्वार्थ परायण हो जाते हैं, तभी असत्य, अविश्वास, छल, कपट, कूटनीति, भ्रष्टाचार, कलह, अशान्ति, लूट, युद्ध आदि का जन्म होता है और सम्पूर्ण समाज और राष्ट्र एक कारागार मे अपने को आबद्ध पाता है अत समाज का इन सब दोषो से पृथक् रखने के लिये आचार को समाज का परमधर्म मानना चाहिये।

पुन देव व्यवहार के सम्बन्ध मे आगे लिखा है कि-

येन देवा न वियन्ति नो च विद्विषते मिथ ।
तत्कृण्मो ब्रह्म वो गृहे सज्ञान पुरुषेभ्य ।।
(अथर्व का ३ सू ३०। म ४)

हे स्त्री पुरुषो! अच्छी तरह समझो, सोचो और देखो कि इस सृष्टि की रचना अनेक देवो-सृष्टि के दृश्य एव अदृश्य तत्त्वो से हुई है। परन्तु वे देव-तत्त्व कभी आपस मे विरोधी बन कर सृष्टि का सहार नहीं करते।

इस सृष्टि के जल और अग्नि दोनो परस्पर विरुद्ध गुण धर्म वाले हैं। परन्तु वे एक-दूसरे पर कभी आक्रमण नहीं करते। इसी प्रकार चैतन्य सृष्टि मे भी पुरुषो मे जो देव कोटि के विद्वज्जन हैं, वे अपनी दिव्यता, विद्वत्ता एव उपकारी शुभ गुणो से समाज या राष्ट्र के जनो को सुपथ पर ले जाते हैं। उसी प्रकार से तुम सबको भी उनका अनुसरण करते हुए अपने अपने घरो मे सर्वत्र वैर-विरोध भाव से रहित प्रीतिपूर्वक यथोचित बर्तना चाहिये। इस प्रकार यह मत्र प्रेमपूर्वक व्यवहार करने के लिये परस्पर मिलकर रहने के लिये मानव जाति को उपदेश दे रहा है।

यदि मनुष्य वैदक विद्या और ज्ञान का अनुसरण करे तो उसके कर्म मे बहुत सुधार हो सकता है वह अन्याय कर्म कभी कर ही नही सकता। क्योकि वेदो मे यज्ञ करने की बडी महानता है और यज्ञ करने से अथवा मत्रो का अर्थसहित पाठ करने से जो शान्ति मिलती है वह मानव को उचित और शुभ कर्म करने मे बहुत सहायक होती है। (टकारा पत्रिका से उद्धृत)

-मु पो मुरारई जिला-वीरभूम (प बगाल)

राष्ट्रीय एकता के लिये महर्षि के प्रयास

प्रताप सिंह शास्त्री, एम ए पत्रकार, गोल्डन विहार, गगवा रोड, हिसार

भारत मे जो राष्ट्रीय पुनर्जागरण, राष्ट्रीय एकता और स्वतत्रता सग्राम के परिणामस्वरूप देश स्वतत्र हुआ इसमे महर्षि दयानन्द ने प्रबल शक्ति के रूप मे काम किया। उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज ने आवश्यकता अनुसार हर मोर्चे पर, हर क्षेत्र मे वैचारिक क्रान्ति का सूत्रपात किया। महर्षि दयानन्द ने अथवा आर्यसमाज ने सार्वजनिक रूप से भले ही यह घोषणा की हो या करे कि उनका आर्यसमाज अराजनीतिक है पर अग्रेज सरकार का मत उससे भिन्न था। दयानन्द राष्ट्रीय सगठन और पुनर्निर्माण का सर्वाधिक उत्साही मसीहा था। सुप्रसिद्ध इतिहास लेखक रोम्या रोला कहता है -"मैं समझता हू-राजनीतिक जागरण को बनाये रखने मे महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज का प्रमुख हाथ रहा।'

महर्षि दयानन्द का विश्वास था कि- "विभिन्न मतवाले विद्वानो के विरोध ही ने सबको विरोध जाल मे फसा रखा है। यदि ये लोग अपने अपने प्रयोजन मे न फसकर सबके प्रयोजन को सिद्ध करना चाहे तो अभी एकमत हो जाए।" 'सन् १८५७ की क्रान्ति और महर्षि दयानन्द' इस विषय मे सर्वखाप पचायत शोरम (उत्तर प्रदेश) स्व० चौ० कबूलसिह आर्य प्रधान द्वारा सुरक्षित ऐतिहासिक सामग्री व कई बार उनके द्वारा सप्रमाण लिखे गये लेखो तथा प्रस्तुत किये दस्तावेजो से भिन्न भिन्न विद्वानो ने पुस्तके लिखकर यह सिद्ध किया है कि उनका तथा उनके दण्डी गुरु विरजानन्द का इस क्रान्ति का सूत्रपात करने मे प्रेरणा देने मे सक्रिय योगदान था।

सन् १८५७ की क्रान्ति के बाद अग्रेजो ने अच्छी तरह भाप लिया था- भारतीयो की शक्ति और साहस का केन्द्र इनकी धार्मिक आस्थाओ से जुडा है। जब तक उसकी जडे न हिले तब तक हमारी जडे नहीं जमेगी। क्रान्ति को दबाने की आड मे अग्रेजो की क्रूरता पराकाष्ठा को पहुच चुकी थीं। जबानो पर ताले पडे हुए थे और कलमे रगड दी गई थी। लोगो को ईसाई बनाने के षड्यन्त्र जारी थे। भारतीय मन्दिरो मे अग्रेजो के गुप्तचर बैठते उठते थे। भारतवासी अपने ही धर्म से घृणा करने लगे थे तथा अग्रेजो से बडे डरते थे। अन्धविश्वास विविध मतमतान्तर मे फसा भारत का बहुसख्यक समाज " कि कर्त्तव्यम् इस विवेक से शून्य हो रहा था। उसने अपने आपको भाग्य के हाथो मे सौंप दिया था। स्वतत्रता व स्वराज्य का नाम तक लेना इन दिनो अपनी मृत्यु को स्वय निमत्रण देना था। यदि महर्षि दयानन्द का और आर्यसमाज का अवतरण न होता तो भारत का राष्ट्रीय स्वरूप क्या होता इसकी कल्पना करना कठिन है।

वर्तमान भारत में स्वतत्रता आन्दालेन का प्रारम्भ

ग्रन्थ मे विपिन चन्द्रपाल ने लिखा है- 'यह दयानन्द ही था जिसने उस आन्दोलन की आधारशिला रखी जो बाद मे धार्मिक राष्ट्रीयता के नाम से जाना गया। उनके आन्दोलन ने उन हिन्दुओ मे एक नवीन राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न की जो शताब्दियो से आत्महीनता के गर्त मे पडे थे। और साथ ही देश की जनता को वेद के आधार पर स्वतत्रता, समानता, भ्रातृत्व की भावना प्रदान की।"

मार्डन रिव्यू के यशस्वी सम्पादक श्री रामानन्द चटर्जी ने अपने लेख मे लिखा था-"स्वामी दयानन्द भारत को राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक रूप से एक सूत्र मे बाधना चाहते थे।" भारत को एक राष्ट्र का रूप देने के लिये उन्होने भारत को विदेशी शासन से मुक्त कराना चाहा। सामाजिक दृष्टि से देशवासियो को एक करने के लिये उन्होंने जात पात और वर्ग भेद को मिटाना चाहा।"

देशवासियो की पराधीनता के कारणो का आभास कराने के लिए महर्षि ने लिखा स्वायभव राजा से लेकर पाण्डव पर्यन्त आर्यों का चक्रवर्ती राज्य रहा। तत्पश्चात् वे आपस के विरोध से लडकर नष्ट हो गए क्योकि इस परमात्मा की सृष्टि मे अभिमानी अविद्वान् लोगो का राज्य बहुत दिन नहीं चलता।"

स्वराज्य, स्वदेशी, स्वभाषा(हिन्दी की प्रेरणा देते हुए सर्वप्रथम सन् १८७४ मे सत्यार्थ प्रकाश मे लिखा था- "माता पिता के तुल्य विदेशी राज्य के होते हुए भी वह स्वराज्य अच्छा कदापि नहीं हो सकता।"

राष्ट्रीय दृष्टि से महर्षि दयानन्द का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण कार्य यह था कि उन्होने मानसिक पराधीनता को दूर किया। मानसिक पराधीनता शारीरिक पराधीनता से भी अधिक घातक वस्तु है।

जहा अन्याय और अत्याचार होता है, वहा उसका प्रतिरोध करने वाले भी पैदा हो जाते हैं। देश मे व्याप्त असतोष के फलस्वरूप यत्र तत्र पुन सन् १८५७ के बाद विद्रोह के अकुर फूट रहे थे। कहीं ब्रह्मसमाज था, कहीं प्रार्थनासमाज था किन्तु आर्यसमाज और ऋषि दयानन्द की वैचारिक क्रान्ति के अभाव मे ये सगठन भी स्वय राष्ट्रीय एकता मे बाधक बनकर ईसाइयत के प्रचार व प्रसार मे लगे दिखाई दे रहे थे। ऐसे विकट समय मे महर्षि दयानन्द अकेला ही राष्ट्रीय एकता मोर्चा पर खडा दिखाई देता है। सन् १९०१ मे जनसख्या के अध्यक्ष बर्न ने लिखा था-'दयानन्द को आशका थी कि ईस्लाम और ईसाइयत जैसे विदेशी मतो को अपनाने से देशवासियो की राष्ट्रीय भावनाे को जिन्हें वे जाग्रत करना चाहते थे, हानि पहुचेगी।"

वेदिक धर्म मे राष्ट्रीय भावना और सार्वजनिक हित योजना प्रमुख होने के कारण मातृभूमि के प्रति अत्यन्त आदर का भाव होना स्वाभाविक है। आर्यसमाज के सिद्धान्तो मे स्वदेश प्रेम की प्रेरणा है, इसमे कोई सन्देह नहीं बल्कि यह कटु सत्य है।

महर्षि दयानन्द अपने समय मे यह देख रहे थे कि बगाल के ब्रह्मसमाजी लोगो को समझाया जाए बम्बई के प्रार्थनासमाजी लोगो को विचार विमर्श से मार्ग पर लाया जा सकता है, मुसलमान लोग भी सत्य के सुनने के इच्छुक हैं। यत्र तत्र ये जो लोग थोडा थोडा सुधार करने के प्रयास मे हैं इन्हे एक मच पर इकट्ठा करके बुराइयो को दूर करके क्यो न सारी मनुष्य जाति को एक सूत्र मे पिरोया जाए। इसके लिए उन्होने भिन्न-भिन्न धार्मिक नेताओ को प्रेरणा देने की इच्छा से एकता का प्रयास किया। जनवरी सन् १८७७ मे भारत के तत्कालीन गवर्नर जनरल और वायसराय लार्ड लिटन ने महारानी विक्टोरिया को भारत की साम्राज्ञी घोषित किये जाने के उपलक्ष्य मे दिल्ली मे एक शानदार दरबार का आयोजन किया। उस दरबार मे यद्यपि ब्रिटिश सरकार की शक्ति का प्रदर्शन था किन्तु इस दरबार मे राजकुल और शासन से सम्बन्ध रखने वाले प्रमुख व्यक्तियो के अतिरिक्त भारत के प्रमुख समाज सुधारक नेता जी पधारे थे। सौभाग्यवश इन समाज सुधारको से विचार विमर्श तथा राष्ट्रीय एकता के प्रयास की इच्छा से ऋषि दयानन्द भी यहा पहुच गये। स्वामी दयानन्द ने इन समाज सुधारको को दिल्ली मे जहा महर्षि ठहरे हुए थे वहा अपने निवास पर आमत्रित कर प्रथम एकता सम्मेलन किया। भारत के इतिहास मे ऐसा एकता सम्मेलन स्वामी दयानन्द से पूर्व कभी किसी ने न बुलाया और न बुलाने का विचार ही किया। "कलकत्ता आर्यसमाज का इतिहास"के अनुसार १४ जनवरी १८७७ के अक मे कलकत्ता से प्रकाशित "इण्डियन मिरर"ने लिखा था-"प० दयानन्द सरस्वती के निवास पर एक कान्फ्रेस इसलिए हुई कि भारत के वर्तमान सुधारको मे एकता सम्बन्ध स्थापित किया जाए। हमारे मिनिस्टर श्री केशवचन्द्र सेन भी मौजूद थे। यदि भिन्न-भिन्न स्थानो के सुधारको मे एकता का सम्बन्ध सच्ची और व्यावहारिक नींव पर स्थिर हो जाए तो इसमे सदेह नहीं कि बहुत भारी और नेक परिणाम पैदा होंगे। हम इसकी सफलता की प्रार्थना करते हैं। "इस सम्मेलन मे आमंत्रित नेताओ मे प्रमुख थे- ब्रह्मसमाज के श्री केशवचन्द्र सेन कलकत्ता से,लाहौर के प्रमुख ब्रह्मसमाजी श्री नवीनचन्द्र राय, मुसलमानों के सर्वाधिक प्रतिष्ठित नेता सर सैयद अहमदखा, रायबहादुर श्री गोपालराव हरिदेशमुख पूना से, प्रसिद्ध वेदान्ती मुंशी कन्हैयालाल अलखधारी लुधियाना पजाब से, मुशी इन्द्रमणि मुरादाबाद आर्यसमाज से, बाबू हरिशचन्द्र चिन्तामणि बम्बई आर्यसमाज से और पडित मनफूल आदि। स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती सत्यार्थ भास्कर में अपनी टिप्पणी मे लिखते हैं कि स्वामी दयानन्द के साथ राजा जय कृष्णदास सी० आई० ई० (क्लैक्टर पद पर आसीन) प्रथम सत्यार्थप्रकाश के प्रकाशक आदि अनेक प्रमुख लोग भी थे, परन्तु वे इस सभा मे सम्मिलित भी हुए थे या नहीं, यह ठीक ठीक नहीं कहा जा सकता, इस सभा का पूरा विवरण कहीं नहीं मिलता, परन्तु इतना निश्चय है कि उसमे बडी स्पष्टता और उदारता के साथ विचार हुआ था। स्वामी दयानन्द ने अपना विचार रखा था कि यदि हम सब लोग एक मत हो जाए और एक ही रीति से देश के सुधार की दिशा मे काम करे तो देश शीघ्र सुधार कर सकता है। देश की एकता और सुधर सम्बन्ध मे सब एक मत थे। देश का लोकमत भी उनके साथ था।"

लाहौर के "बिरादरे हिन्द" ने भी इस बारे मे लिखा था- "हम दिल्ली मुसर्रत के साथ इस बात का इजहार करते हैं कि दिल्ली दरबार की तकरीर मे हिन्दुस्तान के मशहूर और लायक रिफार्मर्स (इसलाह कुनन्दगान) ने पडित दयानन्द सरस्वती के मकान पर एक जलसा खास इस गरज से मुनक्कद किया था कि हमारी असल अलगताई इन मजहब से एक ही है। बेहतर हो कि आइन्दा से बजाय अलहदा अलहदा काम करने के कुल मुताफिक होकर कौम की इसलाह मे मसरूफ हो और आपस मे अगर किसी तरह का इख्तलाफ हो तो उसका भी बाहमी तन्कीह के साथ फैसला कर ले।" (बिरादरे हिन्द, लाहौर जनवरी १८७७)

इतना सब प्रयास करने पर भी यह सभा एकमत न हो सकी। उसकी सफलता के बारे मे इस सभा के एक सभासद बाबू नवीनचन्द्र ने ८वर्ष बाद अपने पत्र 'ज्ञान प्रदीप' मे लिखा था- "फिर हमारी मुलाकात स्वामी दयानन्द सरस्वती जी से दिल्ली मे कैसरे हिन्द के दरबार मे हुई। वहा उन्होंने बाबू केशवचन्द्र और हरिश्चन्द्र चिन्तामणि को आमंत्रित किया और हम लोगो से प्रस्ताव किया कि हम लोग अलग-अलग धर्मोपदेश न करके एकता के साथ काम करें तो अधिक फल होगा, पर मूल विश्वास मे हम लोगों का उनके साथ मतभेद था। इसलिए जैसा वह चाहते थे, एकता न हो सकी।-(ज्ञानदीप भाग- ४ न० ३१ जनवरी १८८५)

(क्रमश)

आर्य-संसार

आवश्यक सूचना

आपको यह जानकर अति प्रसन्नता होगी कि चिरकाल प्रतीक्षा के पश्चात् तथा अनेक आर्य लोगो की प्रेरणा से प्रेरित होकर **वैदिक डायरी** २००२ प्रकाशित कर रहे हैं। इस डायरी मे ईस्वी सन् की तारीख, शक सम्वत्, विक्रमी सम्वत् की तिथियाँ तथा दयानन्दाब्द आदि भी मुद्रित होगा।

इस **वैदिक डायरी** २००२ मे आर्यसमाज के जीवित सन्यासी, विद्वान्, उपदेशक, आर्य भजनोपदेशक, आर्यनेता तथा पदाधिकारियो के अतिरिक्त वैदिक धर्मावलम्बी समाचार पत्र-पत्रिकाओं के नाम व पता आदि प्रकाशित करने का परामर्श मिला। राजनैतिक आर्य नेताओ के नाम तथा पते भी नि शुल्क प्रकाशित किए जायेगे।

अत कृपया आप अपना केवल नाम और पता ही प्रकाशनार्थ १५ सितम्बर २००१ तक भेजिए। सधन्यवाद।

–व्यवस्थापक मधुर लोक,
२८०४, गली आर्यसमाज बाजार सीताराम, दिल्ली-११०००६

विश्वनाथ जी आर्य 'आजीवन-उपलब्धि-सम्मान' से सम्मानित

श्री विश्वनाथ जी जो आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एव डी ए वी कॉलेज प्रबन्धकत्री के उपप्रधान, ला० दीवानचन्द ट्रस्ट के प्रधान और भिन्न-भिन्न आर्यसमाजो और उनसे जुडी सस्थाओं के अधिकारी एव प्रतिष्ठित समाजसेवी हैं उन्हे भारतीय प्रकाशन मण्डल की ओर से 'आजीवन-उपलब्धि-सम्मान' से शनिवार दिनाक १४-७-२००१ को सम्मानित किया गया।

–रामनाथ सहगल, मन्त्री

युशक्ति का आह्वान
स्वामी अग्निवेश द्वारा ई०टी०सी० चैनल पर प्रतिदिन

विश्व आर्यमहासम्मेलन के मुख्य सयोजक स्वामी अग्निवेश के ओजस्वी प्रवचन पहली अगस्त २००१ से ई०टी०सी० चैनल पर प्रतिदिन प्रात ७ से ७-३० बजे तक अवश्य सुने। महर्षि दयानन्द की क्रान्तिकारी विचारधारा से प्रभावित होकर पिछले ३५वर्षो से सघर्षशील आर्य सन्यासी का जो चिन्तन और कर्म भारत के गरीब बन्धुआ मजदूरो की मुक्ति से लेकर विश्व के अनेकानेक विश्वविद्यालयो, अन्तर्राष्ट्रीयह धर्म सम्मेलनो तथा यू०एन० के मानवाधिकार आयोग के मच पर गूजता है–उसी को पहली अगस्त से लगातार धारावाहिक विचारोत्तेजक वाणी मे देखिये अपने टी०वी० के ई०टी०सी० चैनल पर भक्ति सुधा कार्यक्रम के अन्तर्गत।

प्रतिदिन आधा घण्टे के इस कार्यक्रम का प्रसारण भारत के हर प्रान्त और दुनिया के १२० देशो मे देखा जा सकेगा। करोड़ों लोगो तक जाने वाले इस कार्यक्रम की निरन्तरता के लिये चाहिये आपका सहयोग–प्रति एपिसोड मात्र १०,००० रु० मासिक ३,००,००० रुपये। पचास हजार रुपये या अधिक देने वालो को १०-१० सैकिण्ड के २० विज्ञापनो की सुविधा। दान और सहयोग के लिए शीघ्र सम्पर्क करे–

–धर्म प्रतिष्ठान, ७ जतर-मतर रोड, नई दिल्ली।
फोन ०११-३३६६७६५/३३६७९४३

वृक्षजीव-मीमांसा

आपने १८ जून के साप्ताहिक मुख पत्र मे "वृक्षों मे जीव है या नहीं" इस विवादास्पद विषय पर अपना मन्तव्य भेजने का आग्रह किया था। थोडी देरी के लिए क्षमा करे। लेकिन मुझे विश्वास है कि आप इस मन्तव्य को अपने साप्ताहिक मुख पत्र मे जरूर शामिल करेंगे जो इस रहस्यमय भजन से शुरू होगा–

अजी एजी वृक्षो मे कोई मत जीव बताओ,
पक्षपात को छोडो आप इस भजन को सुनते जाओ।
घटने और बढ़ने से कभी जीव ना माना जावे,
गर्मी और सर्दी से जड चीज घटती बढती जावे।
बढें चने चावल जब कुछ दुनिया राध-राध खावे,
सर्दी मे नमक बढे शीशे मे पसीना आवे।।
पहाड़ पर नजर दौडाओ
बाहर से बढता है पत्थर बहुत ऐसे गाते गीत,
अन्दर से बढता है भाई पत्थर अन्दर शिलाजीत।
ऐसा होता नही बेटा बाप के होवे विपरीत,
भीतर ही से जल मे बढे काई की यही है रीत।।
हो कोई प्रश्न उठाओ
बहुतसे कह हैं पेड जमीन से खुराक खाता,
लेकिन ऐसा करने से भी जीव नहीं माना जाता।
लोहे को भी अपने पास चुम्बक पत्थर खींच लेता,
कपडे के जरिये से तेल मिट्टी का ऊपर चढ जाता।।
जो चाहो आजमाओ
अलाबू और करकन्धु को प्राणी बतलाया गया,
करकन्धु के बेर तुम्बा अलाबू के लटकाया गया।
नहीं नमक मिर्च अपनी ओर से लगाया गया,
श्री स्वामी दयानन्द का ऐसा भाष्य पाया गया।
यह लघु कौमुदी मे पाओ
जड मे जीवन मानने वाले तेरी नहीं बात चले,
गठे के प्रमाण से तू खडा-खडा हाथ मले।
तेरा पक्ष फला नहीं, नहीं कभी आगे फले,
कहे पृथ्वीसिह तेरी कहीं भी ना दाल गले।
मत दुनिया को बहकाओ।

इस प्रमाण का एक और उदाहरण प्रस्तुत हैं–

सत्यार्थप्रकाश के एक समुल्लास मे वर्णित है कि एक बार इसा मसीह चले जा रहे थे। काफी सफर करने के बाद उनको भूख लगी। रास्ते मे उनको एक गूल्लर का वृक्ष दिखायी दिया। "क्यो ना गूल्लर खाकर भूख शात की जाए।" यह सोचकर वे गूल्लर के पेड के समीप गये। लेकिन गूल्लर पर गूल्लर न लगे देखकर गुस्से मे उन्होने श्राप दे दिया और कुछ समयोपरात गूल्लर का पेड सूख गया। इस पर श्री देव दयानन्द का मत है कि वो वृक्ष तो एक जड चीज है, वो श्राप के कारण नहीं सूखा। जड चीज श्राप को क्या माने ? उसमे कोई जहरीली चीज डाल दी जाये तो दूसरी बात है नहीं तो परिवर्तन ही ससार अथवा प्रकृति का नियम है, उसमे कभी ना कभी तो बदलाव आयेगा ही।

मेरा पता **श्री केहरसिह आर्य, सु० श्री मागेराम**
गाव व डा० दहकोरा जिला झज्जर

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में गुरुकुल कुरुक्षेत्र ने प्रथम स्थान प्राप्त किया

कुरुक्षेत्र। कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड व हरियाणा वन विभाग ने सयुक्त रूप से श्री कृष्ण सग्रहालय की दसवीं वर्षगाठ के अवसर पर 'महाभारत', 'श्रीकृष्ण' व 'दृश्य चित्र' विषय पर प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया, इसमे ग्यारह विद्यालयो के विद्यार्थियो ने भाग लिया। जिसमे गुरुकुल के ब्रह्मचारी मनोज एव वेदपाल ने वरिष्ठ वर्गमे ७५ अक प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त अर्जित किया तथा चित्रकला प्रतियोगिता मे ब्र० प्रदीप ढुल ने द्वितीय स्थान प्राप्त कर गुरुकुल कुरुक्षेत्र का नाम रोशन किया। भिवानी के सासद एव युवा इनेलो के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अजय चौटाला ने अपने करकमलो द्वारा उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले सभी विजेता विद्यार्थियो को प्रशस्ति पत्र व पारितोषिक प्रदान कर पुरस्कृत किया।

–उपप्रधानाचार्य, गुरुकुल कुरुक्षेत्र (हरयाणा)

अतीत के 125 वर्षों में आर्य-समाज के उल्लेखनीय कार्य

आर्यसमाज के सामाजिक कार्य—

सन् १९१६ ई० मे समालखा गाव मे अथक मेहनत करके जन समुदाय को साथ लेकर महात्मा भक्त फूलसिह ने गोहत्या स्थल (हत्थे) को बद करवाया, उस समय अग्रेजो से टक्कर लेकर हत्थे को बन्द करवाना आर्यसमाज का महान् कार्य था, हत्थे को बन्द करवाने के कारण भक्त जी पर मुकदमा चला जिसकी पैरवी दीनबन्धु छोटूराम ने की तथा महात्मा भक्त फूलसिह को जेल से छुडवाया।

सन् १९२८ ई० मे जीन्द जिला के ललितखेडा की गोचर भूमि को छुडवाना तथा गाव-गाव जाकर उपदेश देना कि प्रत्येक गृहस्थी के घर मे कम से कम एक गाय होनी चाहिए। यह पवित्र कार्य आर्य श्रेष्ठ महात्मा भक्त फूलसिह ने १९ दिन का कठोर अनशन व्रत करके पूर्ण करवाया। इससे बडा सामाजिक कार्य क्या होगा ?

रोहतक मे गोरक्षा सम्मेलन हुआ जिसकी अध्यक्षता महात्मा फूलसिह ने की तथा मदन मोहन मालवीय जी को हाथी पर बैठाकर जुलूस निकाला गया तथा आर्यवीरो ने गोरक्षा के महत्त्व का सन्देश जन मानस तक पहुचाया।

ससार के इतिहास मे यह अद्भुत घटना है कि महात्मा भक्तफूलसिह ने पटवारी रहते जो रिश्वत ली उसे अपनी जमीन बेचकर वापिस लौटा दिया। मनुष्य रिश्वत लेना तो छोड सकता है। लेकिन वापिस लौटाना आर्यसमाज ही कर सकता है।

शुद्धि आन्दोलन को चलाना—

हरयाणा मे शुद्धि आन्दोलन को प्रोत्साहन दिया भक्त जी ने। सन् १९२८ ई० मे होडल, पलवल, गुडगावा, दोदवा (सोनीपत) मे हजारो हिन्दुओ को पुन आर्य बनाया तथा सन् १९२९ ई० मे केहरसिह नामक युवा को पुन वैदिक धर्म मे दीक्षित किया। इस प्रकार आर्यसमाज ने हजारों की शुद्धि की। जाटी गाव की लडकी नेकीराम की पुत्री मुसलमान राघड गाव गूगा हेडी वालो ने उठा ली थी, जो महात्मा भक्त फूलसिह जी ने पचायत करके यवनो पर दबाव डालकर उनके चगुल से छुडवाया।

शिक्षा का प्रचार-प्रसार—

शिक्षा के प्रचार-प्रसार मे जो योगदान आर्यसमाज का है, उतना किसी भी समाज का नहीं। ऋषि दयानन्द ने गुरुकुल खोलने की प्रेरणा दी, पुनर्विवाह, स्त्रियो की शिक्षा पर ज्यादा ध्यान दिया। महात्मा हसराज, स्वामी श्रद्धानन्द, प० गुरुदत्त विद्यार्थी आदि ने डी.ए.वी. कॉलेज एव विद्यालयों को खोलकर जो कार्य आर्यसमाज ने किया सो उल्लेखनीय है। सन् १९२० ई० मे लडको की शिक्षा के लिए गुरुकुल भैंसवाल की स्थापना की, जिसमे हजारो आर्यपरिवारो ने शिक्षा ग्रहण की तथा सन् १९३६ ई० मे कन्या गुरुकुल खानपुर कला की स्थापना करके, लाखो लडकियो को शिक्षित किया आर्यसमाज ने, आयुर्वैदिक कॉलेज खानपुर कला मे हजारो महिलाए डॉक्टर बनकर समाज सेवा कर रही हैं। इसका सारा श्रेय महात्मा भक्त फूलसिह एव उनकी सुपुत्री पद्मश्री सुभाषिणी देवी को जाता है।

स्वतन्त्रता आन्दोलन—

स्वतन्त्रता आन्दोलन मे भाग लेने वाले तथा भारत माता को आजाद कराने वाले ८० प्रतिशत आर्यसमाजी ही थे। गाधी जी को प्रेरणा देने वाले तथा महात्मा बनाने वाले स्वामी श्रद्धानन्द जी, प० लेखराम, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज, महात्मा भक्त फूलसिह, प० गुरुदत्त विद्यार्थी, चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद, शहीद भगतसिह, राजगुरु आदि सभी आर्यसमाजी थे।

दलितों की सेवा—

सन् १९४० ई० मे दलितो के सच्चे सेवक ने २३ दिन का कठोर अनशन व्रत करके मोठ (नारनौंद) मे कुआ खुदवाया तथा दलितों की प्यास बुझाई ये थे आर्यसमाजी, आर्यसमाज के महान् सेनानी महात्मा भक्त फूलसिह जी महाराज।

लोहारू काण्ड—

सन् १९४० ई० मे पजाब की लोहारू रियासत मे आर्यसमाज का उत्सव कराया गया, जिसमें नवाब ने अपने सिपाही भेजकर उत्सव करने तथा जुलूस पर पाबन्दी लगा दी। लोहारू के अन्दर बडा सघर्ष हुआ नवाब ने लाठिया बरसाई जिसमे स्वामी स्वतन्त्रानन्द महाराज, महात्मा भगत फूलसिह, चौ० नोनदसिह आदि आर्यसमाजी घायल हुए। लेकिन उसके बावजूद आर्यो ने वहा उत्सव मनाया तथा जुलूस भी निकाला। इस प्रकार ऋषि दयानन्द के स्वप्नो को साकार करने वाले आर्यो ने राष्ट्रीय सामाजिक, साहित्यिक, शिक्षा, चिकित्सा, स्वतन्त्रता सत्याग्रह आन्दोलनो मे जो सेवा की है वह अवर्णनीय है।

—महेन्द्र शास्त्री, न्यात

ज्ञान

ज्ञानस्य लाभं परम वदन्ति। (शा०प० ३०३-२)
ज्ञान के लाभ को ही परम लाभ कहते हैं।
विज्ञानमुपास्व। (छान्दोग्य उपनिषद् ७-७-१)
विशेष ज्ञान की प्राप्ति करो।
ज्ञान-तृप्तो न शोचति। (शा०प० ३३७-२४)
ज्ञान से तृप्त हुआ पुरुष शोक नहीं करता।
मा कीं ब्रह्मद्विष वन। (सामवेद ७३२)
ब्रह्मज्ञान से द्वेष करने वालो की सगत मत कर।
एवमेव हि नोत्सेक कर्त्तव्यो ज्ञानसम्भव।
फल ज्ञानस्य हि शम प्रशमाय यतेत् सदा।। (महाभारत अ० ९६)
किसी को भी ज्ञान का अभिमान नहीं करना चाहिए। ज्ञान का फल है शान्ति, इसलिए सदा शान्ति के लिए ही प्रयत्न करे।
ज्ञान सर्वस्य योगस्य मूलमित्यवधारय। अनु० प० २४४-७४
सब प्रकार के योग का मूल कारण ज्ञान को ही समझो।
एषोऽणुरात्मा चेतसा वेदितव्य। मुण्डकउपनिषद् ३-१-९
यह सूक्ष्म ब्रह्म, ज्ञान से जानने योग्य है।
न चाप्यक्षीणपापस्य ज्ञान भवति देहिन।
ज्ञानोपलब्धिर्भवति कृतकृत्यो यदा भवेत्।। महाभारत अ० ९६
जिस देहधारी के पाप क्षीण नहीं हुए हैं, उसे ज्ञान नहीं होता। जब मनुष्य को ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है, तब वह कृत-कृत्य हो जाता है।
बृहस्पितिर्मे आत्मा। अथर्ववेद १६-३-५
ज्ञान मेरा आत्मा है। अथवा मेरा आत्मा महान् है।
मायाविनो ममिरे अस्य मायया। सामवेद ५९६
ज्ञान-प्रचारक के ज्ञान-प्रचार द्वारा बडे-बडे ठग भी श्रेष्ठ और महान् बन जाते हैं।
विरक्तो ज्ञानवान् भवेत्। शा०प० २०३-२६
ज्ञानी ही राग-हीन हो सकता है।
केतपू न केत पुनातु। यजुर्वेद ९-१
ज्ञान-शोधक धर्मात्मा लोग हमारे ज्ञान को पवित्र करें। विज्ञान के द्वारा पवित्र करनेवाला परमेश्वर हमारे ज्ञान को पवित्र करे।

—डॉ० नरेश सिहाग 'बोहल', गुगन निवास-२६, पटेल नगर, भिवानी

आर्यसमाज सुन्दर नगर कालोनी का चुनाव

आर्यसमाज सुन्दर नगर कालोनी का त्रिवार्षिक चुनाव आर्यप्रतिनिधि सभा, हिमाचल प्रदेश के महामन्त्री आचार्य रामानन्द जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ।

इस चुनाव मे सर्वसम्मति से आचार्य भगवान्देव 'चैतन्य' जी को प्रधान चुनाव गया तथा उन्हीं को अन्य धिकार एव कार्यकारिणी के सदस्यो को मनोनीत करने का अधिकार दिया गया। श्री चैतन्य जी ने निम्नलिखित अधिकारी एवम् कार्यकारिणी गठित की—

सरक्षक—प० केदारनाथ शर्मा, प्रधान—आचार्य भगवान् देव 'चेतन्य', मन्त्री—श्री रघुवीर सिह आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री बलवन्तसिह।

—मन्त्री, आर्यसमाज सुन्दर नगर कालोनी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिग प्रेस, रोहतक (फोन ७६८७४, ५७७७४) मे छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, प० जगदेवसिह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष ७७७२२) से प्रकाशित।
पत्र मे प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। पत्र के प्रत्येक प्रकार के विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १,९६,०८,५३,१०२
पंजीकरणसंख्या टैक/एच आर/४७/रोहतक/९९ ☎ ०१२६२-७७७२२

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र रोहतक

प्रधानसम्पादक : प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक :- डा० सुदर्शनदेव आचार्य

वर्ष २८ अंक ३७ २१ अगस्त, २००१ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

योगिराज श्री कृष्ण अंक

श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर श्री कृष्ण के जीवन से राष्ट्र की समस्याओं के समाधान पर विशेष :--

यदि आज भारत राष्ट्र का नेतृत्व श्री कृष्ण कर रहे होते

सुखदेव शास्त्री महोपदेशक, दयानन्दमठ, रोहतक (हरयाणा)

कोई भी राष्ट्र सशक्त नेतृत्व के कारण ही विश्व में शिरोमणि हो सकता है। सशक्त नेता ही राष्ट्र को सभी प्रकार के शत्रुओं से मुक्त कराकर विश्व में चक्रवर्ती राज्य स्थापित कर सकता है। राष्ट्र की आन्तरिक सुरक्षा तथा बाह्य शत्रुओ से सुरक्षा करने में समर्थ होता है।

सृष्टि के आदिकाल से ही आर्यावर्त भारत मे अनेक ऐसे चक्रवर्ती सम्राट् हुए हैं जिन्होंने सारे ससार में अपना चक्रवर्ती राज्य किया है। ऐसे सम्राट् सृष्टि से लेकर महाभारत पर्यन्त भारतवर्ष में ही हुए हैं। इन स्वायम्भुवादि चक्रवर्ती राजाओं के नाम स्पष्ट मनुस्मृति, महाभारतादि ऐतिहासिक ग्रन्थों में लिखे हैं। भरत जैसे चक्रवर्ती सम्राटों के कारण इस देश का नाम आर्यावर्त से "भारत" पडा था।

राष्ट्र की सीमाए भी आर्यावर्त के वैधानिक ग्रन्थ मनुस्मृति के २, २२ के अनुसार इस प्रकार थी--

आसमुद्रात्तु वै पूर्वादासमुद्रात्तु पश्चिमात्।
तयोरेवान्तरं गिर्योरार्यावर्त्तं विदुर्बुधाः।
सरस्वतीदृषद्वत्योर्देवनद्योर्यदन्तरम्।
त देवनिर्मित्त देशमार्यावर्त्तं प्रचक्षते।।

इन श्लोको के आधार पर महर्षि दयानन्द सरस्वती सत्यार्थ प्रकाश के आठवें समुल्लास में राष्ट्र की सीमाओं के बारे में लिखते हैं--"उत्तर में हिमालय, दक्षिण में विन्ध्याचल, पूर्व और पश्चिम में समुद्र। तथा सरस्वती नदी पश्चिम में अटक नदी, पूर्व में ब्रह्मपुत्र नदी और रामेश्वर पर्यन्त विन्ध्याचल के भीतर जितने देश हैं उनको आर्यावर्त्त कहा जाता है।

इन सीमाओं के लिखने का इतना ही अभिप्राय है कि श्री कृष्ण के समय मे भी राष्ट्र की सीमाए सुरक्षित थी। इतना अवश्य है कि आपस में कलह, वैर के कारण छोटे-छोटे राज्य जरूर पैदा हो गए थे। किन्तु राष्ट्र की सीमाओ को कोई खतरा नहीं था। श्रीराम के काल मे लका के रावण ने भारतीय सीमाओं का उल्लघन किया था। श्री राम ने उसी समय लका में जाकर युद्ध मे उसका वध किया था। रावण के ही भाई विभीषण को लका राज्य देकर वापिस लौटे थे। ऐसे ही सदा सभी भारतीय सम्राट् राष्ट्र के रक्षक होते आए हैं।

किन्तु आज भारत की आन्तरिक सुरक्षा और सीमा सुरक्षाए खतरे में हैं। वास्तव में देखा जाये तो भारत की सीमाए ही समाप्त हो चुकी हैं, केवलमात्र आज उन्हे सीमा रेखा ही कहा जाता है। है कोई व्यक्ति जो राष्ट्र की सीमाए बता सके। साधारण व्यक्ति की तो बात ही क्या है आज बडेसे बडा नेता भी भारतीय सीमाओं के बारे में नहीं बता सकता। विश्व में सभी देशों की सीमाए हैं केवल भारत ही एक ऐसा देश है, जिसकी कोई सीमाए ही नहीं हैं। उन सीमा रेखाओ पर ५४ वर्षों से आतकवाद फैलाकर भारत को नष्ट करने का षड्यन्त्र चल रहा हे। यह सब कुछ कर रहा है पाकिस्तान। प्रतिदिन सीमा पर हत्याएं, अपहरण, सीमाओं का उल्लंघन निरन्तर जारी है।

विशेषतया कश्मीर तो आतकवाद की भयकर आग में जल रहा है। प्रतिदिन आतकवादी गुटो द्वारा निरपराध लोगो की हत्याए हो रही हैं। यदि इन हत्याओ का विवरण दिया जाये तो आपको पता लगेगा कि ऐसा क्यों हो रहा है ? जैसे--

२९ जनवरी को राजौरी जिले के डरहाल में एक महिला और उसके दो बेटों की हत्या। ३ फरवरी को श्रीनगर के महजूर नगर मे छ सिक्खों की गोली मारकर हत्या। १२ फरवरी को राजौरी जिले के मंजकोट मे १५ पुलिस कर्मियों और दो डॉक्टरो की हत्या। २ मार्च को राजौरी जिले के मजकोट मे गुज्जर जाति के १५ लोगो की हत्या। १७ मार्च को पुछ जिले के सुखकोट में दो सिक्खों की गर्दन काटकर हत्या। १५ अप्रैल को ऊधमपुर जिले के महारे क्षेत्र मे ५ ग्रामीणों की हत्या। ८ मई को पुछ जिले के सागला क्षेत्र के एक परिवार के पाच लोगो की हत्या। ११ मई को डोडा जिले के किस्तवाड में आठ लोगो की हत्या। २१ जुलाई को अनन्तनाग जिले के शेष नाग मे १३ लोगों की हत्या। २२ जुलाई को डोडा जिले की किस्तवाड में १२ लोगों की हत्या। ४ अगस्त को डोडा जिले के क्षेत्र मे १५ ग्रामीणो की हत्या।

यह है वर्ष २००१ मे कश्मीर मे नरसहार का सक्षिप्त सा विवरण।

आतकवादी हिंसा में मारे गए--इसके अतिरिक्त १९८८ से १९९८ तक इन दस वर्षों का भी विवरण सुन लीजिए--

कुल मृतक १९८८ से १९९१ तक २६९३ मारे गए। १९९२ में १९०२ मारे गए। १९९३ में २५६७ मारे गए। १९९४ मे २८६७ मारे गए। १९९५ मे २७६८ मारे गए। १९९६ में २८५८ मारे गए। १९९७ मे २१९९ मारे गए। १९९८ में १७६५ मारे गए। कुल योग = १९६२६ मारे गए।

इसके अतिरिक्त अब तक १९६५० रायफलें जब्त की गई। ग्रेनेड ३२४५० पकडे गए।

पाकिस्तान अपने सीमा क्षेत्र मे आतकवादियो के अड्डे बनाकर आतकवाद को निरन्तर बढावा दे रहा है। आगरा शिखर सम्मेलन में आए पाकिस्तान के राष्ट्रपति ने इन्हे कश्मीर के स्वतन्त्रता सेनानी भी कहा है। पाकिस्तान इनकी धन से, हथियारो से पूर्ण रूप से सहायता कर रहा है। वार्ता विफल होने के बाद कश्मीर में आतकवादी गतिविधिया जोरो से शुरू हो गई हैं। प्रधानमन्त्री वाजपेयी ने लाहौर घोषणा पत्र को भी स्वीकार कर लिया था लेकिन विश्वासघाती वर्तमान मे राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ ने पीछे से कारगिल पर आक्रमण करवा दिया। भारत के हजारो सैनिक मारे गए, सैनिको ने वीरतापूर्वक अपने प्रदेश को वापिस लिया। भारत ने सघर्ष विराम करके भी देख लिया। किन्तु पाकिस्तान के आतकवादियो पर उसका कोई प्रभाव नहीं पडा।

अब क्या हो ? अब तो केवलमात्र एक ही उपाय बचा है, पाकिस्तान को युद्ध मे पराजित कर सारा ही कश्मीर फिर से अपने मे मिलाया जावे। आतकवादियो को मृत्युदण्ड दिया जाये। पिछली लडाइयो मे जीत होने पर भी भूल से पाकिस्तान के ऊपर विश्वास करके अपनी विजय को भूल मे बदला गया।

इस सारी ही भयानक परिस्थितियो मे आज हम योगेश्वर श्री कृष्ण सुदर्शन चक्रधारी को उनके जन्मदिन पर पुन स्मरण करते हैं। यदि भारत आरम्भ से ही

(शेष पृष्ठ दो पर)

वैदिक-स्वाध्याय

आलस्य प्रमाद त्यागपूर्वक यज्ञ

इच्छन्ति देवा: सुन्वन्त न स्वप्नाय स्पृहयन्ति।
यन्ति प्रमाद अतन्द्रा.।। (ऋ० ८।२।१८।। अथर्व० १०।१८।३)

शब्दार्थ–(देवा) देव लोग (सुन्वन्त) यज्ञ कर्म करते हुवे की (इच्छन्ति) इच्छा करते हैं। (न स्वप्नाय स्पृहयन्ति) निद्राशील सुस्तों को नहीं चाहते। (अतन्द्रा) स्वय आलस्यरहित ये देव लोग (प्रमाद) गलती, भूल करने वाले का (यन्ति) नियमन करते हैं।

विनय–आलस्य मनुष्य का बहुत बड़ा शत्रु है। हम जो नित्य पाप करते हैं उनमे से बहुतो का कारण मन की कुटिलता नहीं होता बल्कि बहुत बार केवल हम आलस्य व सुस्ती के कारण पापी बनते हैं। एव बहुत से अत्यन्त लाभकारी कार्यो को शुरू करके केवल आलस्य से हम उन्हें छोड देते हैं और आत्मकल्याण से वचित हो जाते हैं। अत आलस्य करनेवाले लोग कभी परमात्मा के प्यारे नहीं हो सकते। यों कहना चाहिए कि परमात्मा के देवता आलसियो को नहीं चाहते, क्योंकि आलसी लोग देवो के चलाये इस ससार-यज्ञ मे उनको सहयोग नहीं दे सकते। परमात्मा अपने इन देवों द्वारा जगत् मे परिपूर्ण व्यवस्था रखते हैं–इन द्वारा पूरा नियमन, अनुशासन (Discipline) चला रहे हैं। भूल, गलती, अनुचितता, अपराध, पाप का ठीक नियमानुसार हमे दण्ड मिलता रहता है–बेचैनी, रोग, व्यथा, वेदना क्लेश, मृत्यु आदि द्वारा हमें शिक्षा दी जाती है कि हम परमात्मा की आज्ञाओं का उल्लंघन न करें। ये देवता इस अनुशासन को बिल्कुल अतन्द्र होकर बिल्कुल भूल-चूक से रहित होकर-कर रहे हैं। ये सृष्टि के देव उस सत्त्वगुण के बने हुए हैं जो कि तम को जीतकर रज को अपने वश मे किये हुए हैं। अत आलस्य प्रमाद करनेवाले तमोगुणी (तमोगुण से दबे हुए) मनुष्य देवो के प्यारे कैसे हो सकते हैं ? अत उन्हे देव बार-बार प्रमादो के लिये दण्ड दे देकर–उन्हे पुन पुन ठोकरे मारते हुए–जगाते रहते हैं। परमात्मा के देव जो यह जगत् रूपी यज्ञ चला रहे हैं उसी के अनुसार उसकी अनुकूलता मे–जो भी कुछ कर्म मनुष्य करता है वह सब यज्ञ-कर्म ही हैं। मनुष्य को इस यज्ञार्थ-कर्म के सिवाय और कोई कर्म नहीं करना चाहिए। वही कर्म शुभ है, पुण्य है, यज्ञिय है, जिस द्वारा इस ससार के कुछ अच्छे, ऊचे और पवित्र बनने मे सहायता व सहयोग मिलता है। इस तरह का कोई भी कर्म करना इस ससार-यज्ञ के लिये सोम-रस का सेवन करना है। जरा देखो–इन देवो के प्यारे लोगो को देखो–जो कि अपने प्रत्येक कर्म द्वारा ससार यज्ञ के सवर्द्धक, पोषक इस सोम-रस को पैदा करते हुए अपने इस कर्त्तव्य मे सदा जागृत, कटिबद्ध, सनद्ध रहते हुए देवतुल्य जीवन बिता रहे हैं।

(वैदिक विनय से)

यदि आज राष्ट्र का नेतृत्व......... (प्रथम पेज का शेष)

श्रीकृष्ण की नीतियों पर चलता तो भारत का विभाजन भी न होता। श्री कृष्ण के समय मे भी राज्य के विभाजन की बात कौरव और पाण्डवों मे चली थी। यह राष्ट्र का विभाजन नहीं था, आपस मे भाइयो मे ही राज्य के विभाजन का प्रश्न था। श्री कृष्ण ने इसमें कौरव व पाण्डवो को आपस में समझाने का प्रयास किया था, वे समझौता कराने के लिए कौरवो की सभा में हस्तिनापुर गए थे। श्री कृष्ण ने पाण्डवो को सिर्फ ५ गाव ही देने के लिए प्रार्थना की थी, किन्तु दुष्ट दुर्योधन ने सभा के अन्दर ही श्री कृष्ण को उत्तर देते हुए कहा था–"**सूच्यग्र नैव दास्यामि बिना युद्धेन केशव**।" हे कृष्ण ! सूई की नोंक टिकने जितनी भी भूमिका नहीं दूगा, बिना युद्ध के। दुर्योधन उस समय तीन सहायक साथी भी थे, वे थे–दु शासन, कर्ण और शकुनि मामा, इस चाण्डाल चौकडी ने देश का सर्वनाश किया था।

श्री कृष्ण अपने बाल्याकाल में ही सब नीतियों मे पारगत हो गए थे। उनके भाई बलराम व कृष्ण ने १७ वर्ष की आयु के चाणूर और मुष्टिक जैसे कस के पहलवानों को कुश्ती में मार गिराया था। कस को भी सिहासन से पटककर मारा था, अनेक राजाओं को कैद से छुडाया था, जरासघ को भी भीम के द्वारा कुश्ती में मरवाया था। शिशुपाल को भी स्वय मारा था। श्री कृष्ण व बलराम ने गुरु सांदीपनी से शास्त्रास्त्र विद्या सीखी थी, सुदर्शन चक्र भी उनसे प्राप्त किया था। कृष्ण का जीवन राजनीतिक सघर्ष का जीवन था, उन्होंने महाभारत के युद्ध में पाण्डवो का नेतृत्व करके युद्ध मे विजय दिलाई थी। दादा भीष्म, गुरु द्रोण, कर्ण आदि योद्धाओं को अपनी कुशल नीति से पराजित करके यमलोक पहुचा दिया था। अन्त में दुर्योधन को भी भीम द्वारा गदा युद्ध में मरवाया था। अन्त में महाभारत के युद्ध में श्री कृष्ण के कुशल नेतृत्व में पाण्डवों की विजय हुई।

श्रीकृष्ण ने गीता के सन्देश को अर्जुन को देते हुए यही तो कहा था–"**युद्धयस्व, मामनुस्मर**" युद्ध कर, मेरी बात मान। "**युद्धाच्छ्रेयो क्षत्रियस्य नान्यत् विद्यते**" युद्ध से बढकर क्षत्रिय के लिए और कुछ भी श्रेष्ठ नहीं है। कुन्ती माता ने अपने बेटे अर्जुन को अन्तिम सन्देश देते हुए श्री कृष्ण के द्वारा यही सन्देश भिजवाया था। "**यदर्थं क्षत्रिया सूते तस्य कालोऽयमागत**।" जिस लिए क्षत्राणी अपने बच्चों को जन्म देती है वह समय आ गया है। (समझौता वार्ता तो बहुत हो चुकी, युद्ध में कश्मीर को विजय करो।) आज सचमुच वही समय आगया है। कृष्ण ने गीता मे ठीक ही कहा है–

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे-युगे।।

राष्ट्र के सज्जन लोगों की रक्षा के लिए, दुष्टो के विनाश के लिए और धर्म की स्थापना के लिए मैं युग-युग मे जन्म लेना चाहता हूं। तो आज आओ ! दुबारा जन्म लेकर भारत का उद्धार करो। राष्ट्र का नेतृत्व करते हुए आतंकवादियों का सर्वनाश करते हुए पाकिस्तान को तोडकर राष्ट्र की प्राचीन सीमाओं की स्थापना करते हुए इस राष्ट्र को संग्राम में पूर्ण विजय दिलाओ। नपुंसक तथा कथित नेताओं से राष्ट्र को बचाओ। आपने ही तो कहा था–"**यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।**" इस अपने वचन को पूरा करने के लिए राष्ट्र मे शक्ति भरो। हमें तो गीता के अन्त में संजय के द्वारा आपके सम्बन्ध मे कहे गए श्लोक पर पूरा विश्वास है।

सजय ने कहा था–

यत्र योगेश्वर. कृष्णो, यत्र पार्थो धनुर्धर:।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।

जहा योगेश्वर कृष्ण हैं, जहा धनुर्धर अर्जुन हैं, वहीं थी विजय, वैभव, निश्चित मति है।

राष्ट्रवासियों को श्री कृष्ण के राजनीतिक जीवन से पाकिस्तान की हार होगी। शिक्षा लेकर युद्धों से न घबराना चाहिए। समझौते कभी भी सफल नहीं होते।

सम्पादकीय :—

योगिराज श्री कृष्ण का गीता-उपदेश

(एक जीवन-दर्शन)

श्रीमद्भगवद्गीता संस्कृत साहित्य की एक अनुपम निधि है। इसका प्रत्येक शब्द मोतियों के तोल तुला हुआ है। इस पवित्र ग्रन्थ में मानव जीवन को सर्वांग पूर्ण बनाने का रहस्य भरा हुआ है। गीता मानव को वह जीवन पथ दिखलाती है जिस पर चलकर मानव ससार में रहता हुआ भी निर्लेप रह सकता है। कर्म करता हुआ भी भव-बन्धन से मुक्त हो सकता है। जैसा कि यजुर्वेद में कहा गया है–

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतऽसमा: ।
एव त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।। (यजु० ४० ।२)

यह वेद मन्त्र मानव के लिये एक आदर्श कर्मयोग का उपदेश करता है कि हे मानव ! तू शुभ कर्म करता हुआ ही इस संसार में सौ वर्ष तक जीने की इच्छा कर, मानव जीवन का इससे उत्तम कोई मार्ग नहीं है। शुभ कर्मों के आचरण से तुझ नर में बुरे कर्मों का लेप नहीं रहता है। बुरे कर्मों का संस्कार एव वासना रूप लेप ही जन्म जन्मान्तर का कारण बनता है। जिससे पुरुष, अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश नामक पाच क्लेशों के भंवर में गिरता है।

सम्पूर्ण गीता इसी वेदमन्त्र का व्याख्यान प्रतीत होती है। प्रत्येक मानव के सामने कर्म-अकर्म का एक जटिल प्रश्न आकर खडा होता है–**"कि कर्म किमकर्मेति कवयोऽप्यत्र मोहिता:"** कर्म अकर्म के विवेक में विद्वान् भी विचलित हो जाते हैं।

अर्जुन के सामने भी यही प्रश्न उपस्थित हो गया था कि मैं इस पारिवारिक सग्राम मे भाग क्यों लूं ? अर्जुन के इसी मनोभाव को चित्रण करने के लिए व्यास जी ने गीता का प्रथम अध्याय लिखा है। अर्जुन क्षत्रिय था और उसका अपने वर्णानुसार कर्त्तव्य कर्म सग्राम था। अर्जुन ने जब इसके फल की ओर ध्यान दिया तब उसे वह बडा भयकर प्रतीत हुआ। संग्राम से राजलक्ष्मी का लाभ तुच्छ दिखाई देने लगा। भगवान् कृष्ण ने देखा कि अर्जुन पर तमोगुण का जादू चल गया है इसके चित्त पर पारिवारिक मोह का आवरण आ चुका है और यह क्षत्रिय धर्म को भूल गया है। अर्जुन के उस मोहावरण को हटाने के लिए भगवान् कृष्ण ने सांख्ययोग का उपदेश किया। नित्य-अनित्य और आत्मा-अनात्मा के विवेक ज्ञान का नाम साख्य है। इस विवेचन के द्वारा श्री कृष्ण ने आत्मा को नित्य और शरीर को अनित्य बतलाकर अर्जुन के मोह को दूर किया कि–

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैन दहति पावक ।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो नैनं शोषयति मारुत ।।

अर्थ–इस नित्य आत्मा को शस्त्र काट नहीं सकते, अग्नि जला नहीं सकती, जल गला नहीं सकता और पवन उसे सुखा नहीं सकती। मानव की आत्मा अजर-अमर है। शरीर का आत्मा के साथ सम्बन्ध बतलाते हुए कहा–

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय, नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि सयाति नवानि देही।।

अर्थ–जैसे मानव फटे-पुराने वस्त्रो को छोडकर नये वस्त्रो को धारण कर लेता है, वैसे यह देह का स्वामी आत्मा पुराने शरीरो को छोडकर नये शरीर धारण करता रहता है। इसके पश्चात् अर्जुन की कर्म-फल की ओर दृष्टि को ध्यान में रखकर भगवान् कृष्ण ने गीता के तीसरे अध्याय में अर्जुन को निष्काम कर्म करने का उपदेश किया है–

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।।

अर्थ–हे अर्जुन ! कर्म को कर्त्तव्य बुद्धि से करो। फल की कामना का सर्वथा बहिष्कार कर दो। फल का सम्बन्ध टूट जाने पर किये हुए कर्म, बन्धन का कारण नहीं होते हैं। यद्यपि कर्म से फल की कामना का सम्बन्ध तोड देना बडा कठिन है, किन्तु यह असम्भव नहीं है। अनेक फलों के झमेले से निकालकर बुद्धि को यदि एक लक्ष्य पर स्थिर कर दिया जाये और उसमे सुख-दु ख, हानि-लाभ, मान-अपमान आदि द्वन्द्वों को सहन करे हुए सब अवस्थाओं में समान रहने की शक्ति पैदा कर ली जाये तो बिना फल की कामना से कर्म करना कोई कठिन बात नहीं है।

अपने जीवन मे इस प्रकार का आचरण करने वाले मानव की कैसी अवस्था हो जाती है, इस विषय को स्पष्ट करने के लिए योगिराज श्रीकृष्ण ने गीता के चौथे अध्याय में उस पुरुष को **'स्थित प्रज्ञ'** कहा है कि ऐसे पुरुष के राग और द्वेष छूट जाते हैं। विषयों से उपेक्षा हो जाती है। चित्त निर्मल हो जाता है, दु ख छूटने लगते हैं और बुद्धि स्थिर हो जाती है।

गीता के पाचवें अध्याय में श्रीकृष्ण ने कर्म सन्यास की आवश्यकता पर बल दिया है। मानव के लिए कर्मों को छोड देना असम्भव है। यदि बलपूर्वक शारीरिक कर्म छोड भी दिये जायें तो मानसिक कर्म होते रहते हैं। इस प्रश्न के समाधान मे श्री कृष्ण ने गीता के छठे अध्याय में यज्ञ-कर्म का उपदेश किया है। हे अर्जुन ! यदि कर्मफल की कामना का सर्वथा परित्याग नहीं किया जा सकता तो तुम यज्ञ अर्थात् लोकहित की कामना से कर्म करो। इस यज्ञ के लिये किया हुआ कर्म भी भवबन्धन का कारण नहीं होता है।

अर्जुन के द्वारा संग्राम कराने में अन्याय और अत्याचार का दमन कराना ही लोकोहित था। वह एक महान् यज्ञ था। इसके पश्चात् श्री कृष्ण ने गीता के सातवें अध्याय में ज्ञानमार्ग का उपदेश किया है क्योंकि ज्ञानपूर्वक कर्म करने से ज्ञानी पुरुष को पाप नहीं लगता है क्योंकि वह ज्ञान के कारण कर्मफल की कामना नहीं करता है। फल की कामना के बिना मानव पाप-पुण्य का भागी नहीं बनता है। यदि ज्ञानी पुरुष कर्म छोड देवे तो उसके दृष्टान्त से अज्ञानी पुरुष भी कर्म छोड देंगे। अत ज्ञानी पुरुष को कर्म करना ही चाहिये।

सब लोग जानते हैं कि यह धर्म है और यह अधर्म है। फिर वे जानते हुए भी पाप कर्म क्यों करते हैं। इस प्रश्न के उत्तर में आठवें अध्याय मे भगवान् कृष्ण ने अर्जुन को बतलाया है कि उसके मन में रजोगुण की मात्रा अधिक है। रजोगुण काम और क्रोध का जनक (पिता) है। काम ओर क्रोध मानव को पाप कर्म की ओर बलपूर्वक खैंच ले जाते हैं।

क्या कभी मानव कर्म छोड़ सकता है ? इसके उत्तर में श्री कृष्ण ने नौवें अध्याय मे बतलाया है कि कर्म सन्यास (कर्म का त्याग) तो यही है कि कर्म अपना कार्य न कर सके अर्थात् मानव को भवबन्धन में न डाल सके। फल की कामना को छोडकर किया हुआ कार्य नपुसक बन जाता है, जाति, आयु, भोग, रूप, फल को उत्पन्न करने के योग्य नहीं रहता है।

श्रीकृष्ण ने ज्ञानी पुरुष के लिये यज्ञकर्म की आवश्यकता बतलाई है। गीता के दसवे अध्याय में उन्होंने द्रव्ययज्ञ, तपोयज्ञ, योगयज्ञ और ज्ञानयज्ञ इन चार प्रकार के यज्ञो में ज्ञानयज्ञ को श्रेष्ठ बतलाया है। कर्मयोग और कर्मसन्यास में कर्मयोग श्रेष्ठ है क्योकि फल की कामना छोडकर कर्म किया जा सकता है, कर्म को सर्वथा छोडना सभव नहीं है। कर्म सन्यास अथवा कर्मफल की कामना का त्याग करने के लिए भगवान् ने गीता के बारहवे अध्याय में समता-योग का उपदेश किया है। जो मानव-सुख-दुख, शत्रु-मित्र और लाभ-हानि आदि को एक दृष्टि से देखता है, दोनो अवस्थाओं मे समदृष्टि रहता है, उसे फल की कामना किसलिये होगी। उसकी फल की इच्छा समाप्त हो जायेगी। यह समता-योग ध्यान-योग से उत्पन्न होता है। इससे एक पन्थ दो काज सिद्ध होते हैं। ध्यान-योग जहां समतायोग को उत्पन्न करता है वहा प्रकाशस्वरूप भगवान् के भी दर्शन करा देता है। ध्यानयोग के प्रसग में भगवान् कृष्ण ने गीता के तेरहवे अध्याय में भक्ति योग का वर्णन किया है क्योकि भक्ति योग से ध्यान की उत्पत्ति होती है। भक्ति योग यम और नियम के बिना सिद्ध नहीं हो सकता है। इसलिये भगवान् कृष्ण ने गीता के चौदहवें अध्याय में ज्ञानयोग का उपदेश किया है। पतञ्जलि के अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह नामक यम और शौच सन्तोष तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान नामक यम को ही गीता मे ज्ञानयोग कहा गया है।

सत्त्व, रज और तम ये तीनो गुण ही मानव जीवन के समस्त कार्यकलाप का सचालन करते हैं। इन तीनों मे से जिस गुण की प्रधानता होती है, मानव वैसे ही कर्म किया करता है। इन गुणों की विशेषताओ को समझाने के लिये श्री कृष्णने गीता के पन्द्रहवे अध्याय मे गुणो के कार्यो का विवेचन किया है। यह विज्ञान योग का ही एक अग है। इस अध्याय मे इन तीन गुणो से ऊचा उठने का उपदेश किया गया है क्योकि अर्जुन के हृदय मे सत्त्व गुण का उदय हो चुका था। अत वह दैवी सम्पत्ति का अधिकारी था। इसलिए श्रीकृष्ण ने सोलहवे अध्याय मे दैवी और आसुरी सम्पत्ति का उपदेश किया है और सतरहवे अध्याय मे यह भी बतलाया है कि जो लोग शास्त्रविधि के बिना ही यज्ञ करते हैं, उनकी सत्त्वगुणी, रजोगुणी और तमोगुणी कौन सी निष्ठा होती है। इस प्रकार गुण-निष्ठा के रहस्य को समझाया है और अन्त मे अठारहवे अध्याय मे कर्मयोग तथा कर्म-सन्यास का सत्त्वगुण रजोगुण और तमोगुण की दृष्टि से भी विवेचन किया गया है।

अन्त में अर्जुन की यह समझ मे आ जाता है कि मेरे अन्दर तमोगुण तो है नहीं। रजोगुण और सत्त्वगुण दोनो विद्यमान हैं। श्रीकृष्ण के उपदेश से मोह का आवरण हट गया है और उसका क्षात्रधर्म रजोगुण की सहायता से धर्मयुद्ध की प्रेरणा करने लग गया है। अर्जुन यह भी समझ गया है कि मैं सत्त्वगुण की सहायता से इस धर्मयुद्ध को निष्कामभाव से कर सकता हू और भवबन्धन से भी मुक्त हो सकता हू।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के मास मे सबको श्रीमद्भगवद्गीता का पारायण करना चाहिये।

–सुदर्शनदेव आचार्य, वेदप्रचाराधिष्ठाता

महर्षि दयानन्द सरस्वती उन महापुरुषो मे से थे जिन्होने आधुनिक भारत का (धार्मिक, सामाजिक व राजनैतिक) निर्माण किया। हिन्दू समाज का उद्धार करने मे आर्यसमाज का बहुत बडा हाथ है। यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण न होगा कि पजाब का प्रत्येक नेता आर्यसमाजी है।

–नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य

–दुलीचन्द शर्मा, अध्यक्ष वेदप्रचार मण्डल जिला महेन्द्रगढ

गताक से आगे–

अत आधुनिक शिक्षा, **"शरीरमाद्य खलु धर्म साधनम्"** के उच्चादर्श अर्थात् शरीर सब धर्म की जड है या यू कहिए सब कर्त्तव्यों के निर्वाह में सहायक है, इसके विकास के लिए चिन्तित नहीं।

अब आधुनिक शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में मानसिक विकास का भी सिहावलोकन कर लें–

आज जब उद्धरणों पर उद्धरण और लेखकों के नाम पर नाम सुनाकर तोते या टाइपिस्ट का स्वाग करने वाले, 'विद्यार्थियों' को हम देखते हैं तो हमारे मन में यह आता है कि इनसे पूछें कि "मित्रवर, आप इतने विद्वान् हैं, क्या आप यह जानते हैं कि जीवन का उद्देश्य क्या है ? और अपने इस पशुवत् जीवन से आप कुछ देश का भी भला कर सकते हैं क्या ?

किन्तु हमे साहस नहीं होता, क्योंकि इनकी लटकती हुई टाई और स्फूर्तिमय आनन को देखकर हमे जीभ निकालकर हापते हुए कुत्ते और बधन तोडकर भागनेवाले बैल का ध्यान आ जाता है। मानसिक विकास स्वतन्त्रविषयों की उद्भावना, नवीन अन्वेषण, विषय को समझ उसका वर्गीकरण, विभाजन तथा सुगमीकरण आदि बातो का द्योतक है।" जो गर्मी में भी कोट और जाडों मे भी द्वार पर पर्दे चाहते हैं, उनमें गाठ की भी कुछ है यह मानने को मन नहीं करता। अस्तु, विश्वविद्यालयजनीन शिक्षा का एक महान् उद्देश्य यह होना चाहिए कि स्वतन्त्र उद्भावना द्वारा मानसिक दासता को विदा कर हम अपनी मानसिक क्षमता को बढा सकें।

अब तनिक आत्मिक विकास का भी चिन्तन कर ले–आध्यात्मिक शिक्षा से हमारा तात्पर्य यह नही है कि विद्यार्थियों को मिल (J S Mill) का उपयोगितावाद (utilitenanism) डेकार्ट (Descarte) का भौतिकवाद (Materialism) या काट (Kant) का विशुद्ध शासन (cafegorical imperative) सिखाया जाए, न हम शंकर का अद्वैतवाद, बौद्धों का शून्यवाद, जैनों का स्याद्वाद सिखाकर उनको दार्शनिक बनाना चाहते हैं। हम तो उनमें चरित्र की प्रवृत्तिया विकसित करना चाहते हैं जिनसे वे अपने व्यक्तित्व की एक छाप दूसरो पर छोड सके। प्रत्येक व्यक्ति प्रारम्भ से ही एक गलत मार्ग पर चलकर अपने निर्जीव को भुला देता, वह यह भी नहीं जानता कि वह भी ससार में कुछ कर सकता है। उसकी आत्मशक्ति या इच्छाशक्ति (Will power) इतनी शक्तिशालिनी नहीं होती कि दूसरों के सामने डट सके या स्वयमेव आपत्तियों में अविचलित रहसके। उसमें विपत्ति में धैर्य, उन्नति मे क्षमा, युद्ध मे शूरता, सभा मे वाकपटुता आदि गुण अपने आप ही स्थित रहने चाहिए। जो छोटी-छोटी बातो पर असत्य बोलते हैं, चापलूसी से अपना काम निकालते हैं, रिश्वत का पैसा कमाते हैं, सौंदर्य पर डिग जाते हैं, उनकी आत्मा मरी नहीं तो सोई अवश्य है। जिसको कर्त्तव्यपालन में तत्परता, उत्तरदायित्व की पूर्ति, सत्य में निर्भयता आदि का अभ्यास न हो, उसको आत्मिक दृष्टि से उन्नत न माना जावेगा। "आचार शास्त्र (Ethics) के नियमों के अनुसार चरित्र की उन्नति करते हुए एक सजीव जीवन बिताकर उच्च आदर्शों की प्राप्ति का प्रयत्न करना ही छात्रों का आत्मिक विकास है।" भारत की यही भारतीयता है और उच्च शिक्षा का यही उद्देश्य है।

प्रचलित शिक्षा प्रणाली के मूल्याकन से हम इस निष्कर्ष पर पहुचे कि शिक्षा के अन्तिम उद्देश्य अर्थात् शारीरिक, मानसिक एवम् आत्मिक विकास के लक्ष्य प्राप्ति में विफल रहे। इस विफलता मे भौतिक उन्नति का अधानुकरण भी सहायक सिद्ध हुआ। आज हमारी आस्थाए विज्ञान पर टिकी हैं। इसमें संदेह नहीं विज्ञान अपने आविष्कारों से जनता को अनेक सुविधाए प्रदान कर सकता है। भौतिक सुखों की व्यवस्था कर सकता है। बटन दबाकर हवा दे सकता है, प्रकाश दे सकता है, रेडियो का संगीत सुना सकता है, पर उसमें यह क्षमता नही कि मानव का नैतिक स्तर ऊपर उठा दे। विज्ञान वेश्या वृत्ति का निराकरण कर सकता है। उसके निराकरण के साधन प्रस्तुत कर सकता है, पर हर स्त्री को हर पुरुष की बहन बना देने की क्षमता उसमें नहीं। विज्ञान जीवन का बाहरी नक्शा बदल सकता है, पर भीतरी नक्शा बदलना उसके बश की बात नहीं।

शस्त्र-सत्ता में आस्था भी हमें भटकाव की दिशा में ले जाती है–शस्त्र- सत्ता से, पुलिस के वैटन से, फौज की बन्दूक से, एटम बम्ब से, हाइड्रोजन बम्ब से जनता को आतंकित किया जा सकता है, उसे निर्भय नहीं बनाया जा सकता। डडे के बल से लोगों को जेल में डाला जा सकता है, उन्हें मुक्त नहीं किया जा सकता। शस्त्र शक्ति से हिंसा को दबाने की चेष्टा की जा सकती है, पर उसमें अहिंसा की प्रतिष्ठा नहीं की जा सकती।

चोरी करने पर सजा और जुर्माने की व्यवस्था कानून से की जा सकती है, हत्या करने पर फासी का दण्ड दिया जा सकता है, पर कानून से किसी को इस बात के लिए विवश नहीं किया जा सकता कि सामने कोई भूखा बैठा है, तो रन्तिदेव की तरह सामने परोसी थाली उठाकर उसे दे दो और स्वय भूखे रहने मे भी प्रसन्नता का अनुभव करे।

कहने का भाव यह है–

बाईबल के अनुसार शिक्षा–"In lifes vast ocean diversity we sail, reason is the cord but passion is the gale"

अर्थ–शिक्षा वह ज्योति स्तम्भ है, जो जीवन विशाल सागर में विविध-कुत्सित धारणाओं से घिरकर, अज्ञान अंधकार के चक्रवात में फंसी हुई दिग्भ्रमित जीवन-नौका को सही दिशा दिखाकर सद् विवेक के मस्तूल द्वारा खेकर डूबने से बचाते हुए गन्तव्य पर पहुचा निर्णायक तर्क शक्ति के लगर द्वारा सुरक्षित रखे।"

अन्त में–"जो शिक्षा, मेरे लाखों निर्धन भाई-बहन जिन्होंने कभी भरपेट खाना नहीं खाया, जो प्रत्येक बौद्धिक गुण से सम्पन्न हैं, जो भारत माता की रीढ की हड्डी हैं, जिनकी पञ्चशील या विकेन्द्रीकृत आधार पर, वैज्ञानिक एवम् आध्यात्मिक मनोवृत्ति उद्दीप्त कर, बाह्य एवम् आन्तरिक उन्नति नहीं कर सकती, वह शिक्षा अपने उद्देश्य में तो पूर्णतया विफल है ही। उस शिक्षा के माध्यम से भारत एक इंच भी प्रगति नहीं कर सकता।"

–विनोबा

यहां स्वर्ण मत खोज, यहां मानव ढलता है,
यह मन्दिर है जहां, ज्ञान दीपक जलता है।

–दिनकर (नए सुभाषित)

भक्त फूलसिंह

हरयाणा की पवित्र भूमि पर अनेक महापुरुष, सन्त, महात्मा पैदा हुए हैं। स्वामी सर्वानन्द, स्वामी ओमानन्द, स्वामी सुमेधानन्द, भगत फूलसिह का नाम भी उल्लेखनीय है। भगत फूलसिह का जन्म हरयाणा प्रान्त के गाव माहरा जिला सोनीपत मे २४ जनवरी, १८८५ को साधरण किसान श्री बाबरसिह के घर में हुआ।

इसराना जिला करनाल में आप सन् १९०८ में पटवारी लगे। वहा आपका परिचय श्री प्रीतसिह पटवारी से हुआ। वे आर्यमाजी थे। आप भी इनके साथ पानीपत के कार्यसमाज मन्दिर में प्रत्येक रविवार सत्सग सुनने आने लगे। सत्संग के प्रभाव से आप भी आर्यसमाजी बन गए और समाज-सुधार व आर्यसमाज के कार्यों को पूरा समय देने के लिए आपने नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। आपने अपनी ५० बीघे जमीन महर्षि दयानन्द के उद्देश्य को पूरा करने के लिए आर्यसमाज को दान में दे दी। आप अपने गाव में गुरुकुल खोलना चाहते थे, परन्तु आपको गाव भैंसवाल के जगल में गुरुकुल के लिए स्थान मिल गया। भैंसवाल गाव के लोगो ने गुरुकुल के लिए आपको १३० बीघे भूमि दान कर दी। १९१९ ई० में स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल भैंसवाल की आधारशिला रखी।

गुरुकुल में छात्रों से शुल्क आदि नहीं लिया जाता था। जिस कारण गुरुकुल पर कर्जा हो गया। तब आपने व्रत लिया कि जब तक एक लाख रुपया सग्रह न होगा तब मैं सूर्योदय से सूर्यास्त तक खडा रहूंगा, बैठूगा नहीं। केवल एक समय पाव भर जौ के आटे का भोजन करूगा। आपकी इस तपस्या व लगन का बहुत प्रभाव पडा और जल्दी ही एक लाख रुपया सग्रह हो गया। यह घटना सन् १९२८ की है। लोहारू में आर्यसमाज के सत्याग्रह, हैदराबाद धर्मयुद्ध में आपने बहुत कार्य किया। हरयाणा के मूले जाटो व दलितो की शुद्धि के लिए अनशन तक किये। सम्वत् १९९२ तदनुसार १४ अगस्त १९४९ को भगत फूलसिह जी को कन्या गुरुकुल खानपुर (सोनीपत) में चार मुसलमानों ने गोलिया मारकर शहीद कर दिया। उनकी पुण्य आत्मा को शत-शत नमन।

–डॉ० नरेश सिहाग 'बोहल',
गुगन निवास, २६ पटेल नगर, भिवानी-१२७०२१ (हरयाणा)

कोई और नहीं वह दयानन्द था

रचयिता–स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती (आयुर्वेदाचार्य)

किसने सच्चे शिव की आन तलाश की।
किसने रचना की सत्यार्थप्रकाश की।।
किसका सीधा ईश्वर से सम्बन्ध था।
कोई और नहीं वह दयानन्द था।।१।।

किसने नारी जाति का दु:ख दूर किया।
किसने स्वागत सत्कार इन्हें भरपूर दिया।।
किसने खोला जो दरवाजा बन्द था।
कोई और नहीं वह दयानन्द था।।२।।

किसने प्रथम बोला मिले स्वराज्य है।
किसने कायम कीना आर्यसमाज है।।
किसको आजादी का अमन पसन्द था।
कोई और नहीं वह दयानन्द था।।३।।

किसने सत्रह बार जहर का पान किया।
किसने हत्यारे को जीवन दान दिया।।
कौन स्वरूपानन्द पूर्ण का चन्द था।
कोई और नहीं वह दयानन्द था।।४।।

गोपालन से समृद्धि

श्री कृष्ण : एक आदर्श गोपाल

श्री कृष्ण गायें रखते थे। यह सत्य है योगेश्वर श्री कृष्ण जी वेदादि सभी विद्याओं को जाननेवाले थे वह जानते थे कि गोसेवा में अत्यन्त महान् उपकार निहित है। गाय केव एक पशु ही नहीं अपितु मानव शरीर व जीवन की रक्षा करनेवाली भी है, जो जीवन दे वही मातृ तुल्य है। गाय को माता इसलिए ही कहा जाता है। श्री कृष्ण गाय की उपयोगिता जानते थे इसलिए उस समय गायों को पालने का कार्य बृहत्तर रूप में था। गायों की संख्या अधिक होती थी प्रत्येक घर में गाय होती थी। सहस्रों गायें किसी किसी के पास होती थीं। बिना गाय के कोई घर न होता था। प्रत्येक व्यक्ति गोसेवा अपना कर्त्तव्य समझता था।

गाय का दूध—गाय का दूध शरीर के लिए पुष्टिकारक होता है, बुद्धि को बढाता है, कान्ति व ओज बढता है। इसे पीने से बल तो मिलता ही है स्फूर्ति बनी रहती है। शरीर निरोगी रहता है, बलवान् होता है। गाय का दूध सात्त्विक व पवित्र भोज्य पदार्थ है। गाय के दूध में औषधीय गुण होते हैं। शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को बढाता है, जिससे अनेक रोग पास ही नहीं आते और शरीर निरोगी रहता है।

गोमूत्र की उपयोगिता—गाय का मूत्र भी कम लाभकारी नहीं होता। गोमूत्र अधिकाशत. आयुर्वेदिक औषधियों में उपयोगी होता है। अनेक रोगों, काली खांसी, पुरानी खांसी, उदर रोगों, पीलिया आदि अनेक रोगों में युक्ति अनुसार देते हैं। गोमूत्र से कैंसर जैसे रोग पास नहीं आते। कई वैद्य आदि तथा इसका उपयोग जाननेवाले गोमूत्र को औषधि रूप में देते हैं। एक सज्जन तो इसका आसवन कर रोगियों को कैंसर जैसे रोगों के उपचारार्थ देते हैं और इससे अत्यन्त लाभ हुआ है।

गोबर भी उपयोगी—इसी प्रकार गाय का गोबर अत्यन्त उपयोगी है। एक ओर जहां कृषि कार्यों में कीटनाशक, खाद आदि में रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग बढकर अनेक रोगों को जन्म दे रहा है। शरीर को हानि हो रही है। गाय के गोबर से बनी देशी खाद अत्यन्त उपयोगी एवं लाभकारी होती है तथा हानिरहित होती है। गाय के गोबर की खाद से मिट्टी की उर्वराशक्ति बढती है गाय के गोबर से चूल्हा जलानेवाली गैस भी बनाई जा सकती है। यदि इस गैस का उपयोग हर स्थान पर होने लगे तो भारत की विदेशी निर्भरता से कुछ मुक्ति अवश्य मिलेगी।

प्रदूषण निवारण—गाय के श्वास में गुग्गुल की सुगन्ध होती है। गाय के पास रहने से ही अनेक रोगों की निवृत्ति होती है तथा रोग होते ही नहीं। वायु के रोग गठिया, वाम, पक्षाघात तथा कफज रोग, पुराना नजला एव श्वास आदि रोगों, हृदय रोगों से बचा जा सकता है। गाय को पास रखना ही अत्यन्त हितकर होता है। गाय की श्वास आदि से वायुमण्डल का प्रदूषण दूर होता है। स्वच्छता व पवित्रता आती है जो लोग गायों के पास रहते हैं, टी वी कैंसर आदि भयानक रोगों से अधिकतर दूर ही रहते हैं। उनकी आयु व बल की वृद्धि होती है।

गाय को प्राचीनकाल में यूं ही नहीं पाला जाता था। गाय की इतनी अधिक उपयोगिताएं व लाभ हैं जिन्हे संक्षेप में ही कहा जा सकता है। गाय के लाभ यहा अवर्णनीय हैं। श्री कृष्ण गाय के महत्त्व को जानते थे उनके समय मे गाव-गाव, नगर-नगर में सहस्रों-सहस्रों गायें पाली जाती थीं। प्रत्येक घर में एक से अधिक गायें होती थीं और गाय की सेवा में अपना कर्त्तव्य व समाज व्यक्ति तथा राष्ट्र का भला समझते थे। गाय की रक्षा राष्ट्र की रक्षा है आज भी सभी जनों को गाय के महत्त्व को समझना चाहिए और सभी को गाय पालनी चाहिए। तब लोग धन-धान्य व वैभव सम्पन्न थे।

गोदान—महर्षि दयानन्द ने वर्णन किया है कि एक गाय के जीवन भर के दूध से २४९६० चौबीस हजार नौ सौ साठ व्यक्ति एक बार में तृप्त हो सकते हैं। आर्यों ने गाय को भी महत्त्व दिया है। गाय की उपयोगिता का शास्त्रों में भी वर्णन है। रामायण में भी स्थान-स्थान पर सहस्रों गायों के दान करने का वर्णन है। प्राचीन काल में गाय को अत्यधिक महत्त्व दिया जाता है। विवाह व अन्य शुभ अवसरों पर गाय दान में दी जाती थी।

श्री कृष्ण ने गायों को महत्त्व दिया। उस समय गाय की अत्यधिक सेवा होती थी। सवर्द्धन होता था, गायों का विकास व संरक्षण होता था। सभी गोदुग्ध पीते व हृष्ट-पुष्ट रहते थे। रोग पास नहीं आते थे। आज भी गाय मानव जीवन हेतु अत्यन्त उपयोगी है।

अत्यन्त दु.ख की बात यह है कि जहां पहले घर-घर में गायों की सेवा होती थी आज पाश्चात्य संस्कृति के प्रवाह में आकर कुत्ते व कुतिया पालने आरम्भ कर दिए हैं और इसमें वे बड़ा गर्व समझते हैं। अधिकतर लोगों के घरों में कुत्ते-कुतिया पाले जाते हैं और बहुत से लोग तो उन्हें अपने साथ खिलाते, पिलाते व सुलाते भी हैं। जबकि कुत्ते आदि जानवरों को पालने से अनेक रोगों का जन्म होता है। उसकी मल मूत्रादि से गन्दगी होती है। कुत्ता अपने मुंह से गन्दा आदि उलटकर पुनः खा जाते हैं। मल आदि को जल आदि से नहीं साफ करते। कहीं भी मूत्र विसर्जन कर देते हैं। यदि काट लें तो १४ सूचिका वेध पेट मे लगवाने पड़ते हैं। कुतिया का दूध मल मूत्रादि किसी उपयोग में भी नहीं आता परन्तु आज के पाश्चात्य जीवन में ढले लोग कुत्तों को रखना अपना गर्व समझते हैं। यह उनकी भूल व भ्रम है तथा रोगादि गन्दगी को बढावा ही है।

गोपालन से राष्ट्र समृद्धि—गाय जैसा पवित्र लाभकारी परम उपयोगी पशु है ऐसा अन्य कोई भी नहीं। गाय का पालना ही अत्यन्त उपयोगी व लाभकारी है। गाय का गोबर दुग्ध मूत्र श्वास सभी उपयोगी होता है। अत गाय का पालन व सवर्धन करना व्यक्ति के शारीरिक व मानसिक विकास हेतु अत्यन्त उपयोगी है। गाय की सेवा राष्ट्र की सेवा है। इसीलिए श्री कृष्ण गायो के पालन व सवर्द्धन पर बल देते थे। उस समय राष्ट्र धन, ज्ञान वैभव से परिपूर्ण होता था। गाय की सेवा को सब अपना कर्त्तव्य समझते थे। आओ आज हम सब मिलकर गाय पालने व रखने का विचार बनाए और आशा करे कि हर घर मे एक गाय तो अवश्य हो ही यही हमारी सुख व समृद्धि का मार्ग है।

—डॉ० बिजेन्द्रपाल सिह चौहान
चन्द्रलोक कालोनी, खुर्जा-२०३१३१

पाखण्ड का खण्डन

श्री कृष्ण जी का पाखण्ड खण्डन—महाभारत के कर्ण वध प्रसग पर ध्यान देनेसे ज्ञात होता है कि कर्ण की युक्तियो का बडे कडे शब्दों मे खण्डन करते हुए योगिराज ने कर्ण वध के लिए श्री अर्जुन को प्रेरित किया था।

स्वामी शंकराचार्य द्वारा पाखण्ड खण्डन—एक बार शकर जी कर्नाटक प्रान्त में गये, वहां अन्तुमल ग्राम मे जाकर वहा के ब्राह्मणों से पूछा कि आप लोग किसकी पूजा करते हो ? उन्होंने उत्तर मे कहा कि महाराज हम "मल्लारी देवी" की पूजा करते हैं। शकर जी ने कहा तुम्हारी देवी का नाम किसी प्रसिद्ध पुस्तक मे लिखा नहीं मिलता। यह देवी तुम्हारी कल्पनामात्र है। तुम ब्राह्मणो को ब्राह्मणो के कर्म करने चाहिए। वेद को पढना ब्राह्मण का प्रथम कर्म है।

गुरुनानक जी द्वारा पाखण्ड खण्डन—

१ पत्थर ले पूजहिं मुगध गवार।
ओहिजा आपि डूबे तुम कहा तरनहार।।

२ बुत पूज-पूज हिन्दु मुए तुरक मुए सिखनाई।
ओह ले जारे ओह ले गाडे तेरी गति दुहु न पाई।।

३ पूजि शिला तीरथ बनवासा।
भरमत डोलत भये उदासा।।

४ आइआ गइआ मुइआ नाउ। पिछे पत्तल सादेहु काव।
नानक मन सुख अन्ध पिआर। वाझ गुरु डूबा ससार।।

संत कबीर का पाखण्ड खण्डन—

१ दुनिया कैसी बावरी, पत्थर पूजन जाई।
घर की चक्की क्यों नहीं पूजे जेका पीसा खाई।।

२ मूर्त घड धन्दा रचा पत्थर का जगदीश।
मोल लिया बोले नहीं खोटा बीसों बीस।।

३ दिन में रोजा रखत है रात हनत है गाय।
इतै खून उत बन्दगी कैसे खुशी खुदाय।।

सज्जनों और सन्तों के भी बहुत उदाहरण हैं। स्थान की कमी के कारण नहीं दे सकते। उपरोक्त युक्तियों को ध्यान मे रखते हुए हमे यह नहीं भूलना चाहिए कि हम वेद प्रचारक हैं। जगत् गुरु महर्षि दयानन्द के शिष्य हैं जिसने सारे पाखण्डों की भाषणो द्वारा और लेखनी द्वारा बडे जोरदार शब्दों में धज्जियां उडाई थीं। आज उस गुरु की तपस्या का हम क्या अर्थ लेते हैं ? उनके द्वारा निर्मित आर्यसमाजों के पदाधिकारी गण यह कहते नहीं थकते कि खण्डन मत करना जी। क्यों ? क्योंकि उनका अपना दिल, आत्मा कमजोर है। उन्होंने ऋषि की जीवनी व उनके द्वारा लिखित ग्रन्थों का स्वाध्याय नहीं किया। मैं उनसे निवेदन करता हू कि स्वाध्यायशील बने, आत्मा को मजबूत बनाएं। उपदेशकों को भी मैं विनम्र शब्दों में कहना चाहता हूं कि आप लोग दर्जी का कार्य करें। कपडे को फाड़कर एक सभ्य मनुष्य के पहनने योग्य वस्त्र बनाएं। बन्दर न बनें जो कपडे को फाड़कर बेकार कर देता है। हमें उस डाक्टर की तरह समाजरूपी शरीर के गन्दे भाग को आपरेशन द्वारा निकालकर बाहर करना है जो मरीज की दीर्घायु की कामना रखता हुआ उसे सुखी बनाने हेतु उसका आपरेशन करता है।

सुगनचन्द आर्य, प्रधान—आर्यसमाज सत्य सदन पुनहाना, गुडगांवा (हरयाणा)

बीडी, सिगरेट, शराब पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, इनसे दूर रहें।

दयानन्दमठ, रोहतक का चौबीसवां वैदिक सत्संग एवं सुमेरसिंह आर्य का ४४वां शहीदी दिवस

दयानन्दमठ रोहतक। आर्यसमाज की प्रमुख कार्यस्थली दयानन्दमठ, रोहतक का चौबीसवा मासिक वैदिक सत्संग ०२ सितम्बर, २००१ रविवार को बड़ी धूमधाम से मनाया जायेगा। इस सत्सग के सयोजक एव व्यवस्थापक सन्तराम आर्य ने बताया कि इस बार सत्सग की विशेषता इसलिए बढ गई है क्योंकि इसी अवसर पर १९५७ के हिन्दी आन्दोलन के शहीद श्री सुमेरसिह जी का ४४वा शहीदी दिवस भी मनाया जायेगा। उन्होंने बताया कि सन् १८५७ ई० मे क्रान्तिकारियों की प्रथम बगावत की शृखला में ठीक सौ वर्ष बाद १९५७ के हिन्दी आन्दोलन में अपनी शहादत देकर सुमेरसिह आर्य ने आर्यसमाज के लिए एक प्रेरणा का कार्य किया है। जैसा पाठकगण जानते हैं कि आजादी के दस वर्ष बाद जिस समय सयुक्त पजाब होता था उस समय आर्यसमाज द्वारा राष्ट्रभाषा हिन्दी के लिये हिन्दी आन्दोलन चलाया गया था उस दौरान नयाबास (सापला) के एक युवक सुमेरसिंह आर्य शहीद हुये थे। उनकी स्मृति में यह दिन मनाया जायेगा। श्री आर्य ने बताया कि पिछले दो वर्ष से यह कार्य चल रहा है। ०२ अप्रैल २००१ को दो वर्ष पूरे होने जा रहे हैं। इस अवसर पर सत्सग के खाते का पूरा विवरण तथा सभी गतिविधियों का विवरण तथा भावी योजना की एक झलक प्रस्तुत की जायेगी। सत्सग के उद्देश्य का वर्णन करते हुए बताया कि यह सत्सग कुप्रथाओ, धार्मिक अन्धविश्वासों, छुआछूत, अशिक्षा, अन्याय एव शोषण के बारे मे वैदिक धर्म की मान्यताओ का प्रचार-प्रसार करना है।

श्री आर्य ने बताया कि इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा व हरयाणा सभा के प्रधान गुरुकुल झज्जर के सचालक एव आर्यजगत् के त्यागी, तपस्वी, सन्यासी स्वामी ओमानन्द सरस्वती आर्यजनता को प्रेरणा देंगे। उनके साथ आर्यसमाज के प्रसिद्ध सगठनकर्ता एव मूर्धन्य सन्यासी व पूर्व सासद स्वामी इन्द्रवेश जी भी होंगे। जो युवाओं को प्रेरणा देगे। इनके अलावा अनेक समाजो, युवा सगठनों एव महिला सगठनों तथा धार्मिक व राजनैतिक सगठनो के नेता भी पधारेंगे। इसलिए सभी आर्य सज्जनों, बहनों एव भाइयों से निवेदन है कि दलबल सहित अपने परिवार के सभी सदस्यों के साथ पधारें। बहिनें केसरियो रग का परिधान तथा आर्यबन्धु केसरिया पगडी बाधकर समारोह में उपस्थित हों तो सगठन शक्ति को चार चाद लग सकते हैं। अन्त में कहा कि आज,

"हर आदमी भयभीत और परेशान नजर आता है।
दनदनाता सब जगह शैतान नजर आता है।।"
देश पर विपत्ति के बादल मण्डराये हैं।
कहीं बाढ कहीं सूखा कहीं उग्रवादी छाये हैं।।
चारो तरफ फैली है अशान्ति, स्वार्थी फैला रहे हैं यह मजहबी भ्रान्ति।
मैं कहता हू वैदिक व्यवस्था ही इन सबका इलाज है।
देश और धर्म का रक्षक आर्यसमाज है।।

आइये उत्सव मे इन बातो पर विचार करे तथा कर्त्तव्यपालन करते हुए जीवन का उद्धार करे और श्रद्धाजलि समारोह मे अवश्य पहुचे।

–रविन्द्र आर्य, कार्यालय मन्त्री, दयानन्दमठ, रोहतक

भगवान् श्रीकृष्ण उवाच

(गीतामृत)

–हरिदेव आर्य

- यह आत्मा अमर है। न यह कभी जन्मता और मरता ही है। यह अजन्मा, नित्य, सनातन तत्त्व है। शरीर के नाश होने से भी इसका नाश नहीं होता। २/२०
- जिस प्रकार मनुष्य फटे पुराने वस्त्र उतारकर नए वस्त्रों को ग्रहण कर लेता है, उसी प्रकार जीवात्मा जीर्ण शरीर छोड़कर नए शरीर को प्राप्त करता है। २/२२
- इस जीवात्मा को शस्त्र काट नहीं सकते, इसको आग जला नहीं सकती, पानी इसको गला नहीं सकता, वायु इसको सुखा नहीं सकती। २/२३
- जो पैदा हुआ है उसकी मृत्यु निश्चित है, जो मर गया है उसका जन्म अवश्य होगा। इसलिए जो टाली नहीं जा सकती उस पर शोक करना ठीक नहीं। २/२७
- कर्म करने में ही तुम्हारा अधिकार है उसके फलो में कभी नहीं। तुम कर्मफल के हेतु मत बनो, इस प्रकार तुम्हारी अकर्मों में प्रीति नहीं होनी चाहिए। २/४७
- 'ओ३म्' यह एक अक्षर ब्रह्म है अर्थात् ब्रह्म का बोधक है। इस 'ओ३म्' का स्मरण करता हुआ जो मनुष्य देह त्यागता है वह परम गति को प्राप्त होता है। ८/१३
- जो सर्वत्र एकरस रूप से विद्यमान ईश्वर को देख रहा है वह फिर कोई ऐसा काम नहीं करता जो आत्मा का हनन करनेवाला हो। इस यथार्थ ज्ञान के अनन्तर वह मुक्ति को प्राप्त होता है। १३/२८
- मनुष्य अपने भाग्य का विधाता है–जैसे कर्म करता है वैसा ही फल पाता है। पुण्य कर्म का निर्मल सात्त्विक फल होता है, रजोगुणी कर्म का फल दुख होता है तथा तमोगुणी का फल अज्ञान होता है। १४/१६
- मैं 'ईश्वर' तथा उसके 'वेदज्ञान' की प्रतिष्ठा हू-यह ज्ञान मोक्ष को दिलानेवाला अमृत है– कभी भी नष्ट न होनेवाला है। ईश्वरीय ज्ञान के अनुसार चलनेवाले जीव को जो सुख- आनन्द प्राप्त होता है, उसकी भी मैं प्रतिष्ठा हू।
- ब्रह्म परमात्मा के नाम का जाप 'ओ३म्-तत्-सत्' इन शब्दों से किया जाता है। जिस ब्रह्म के ये तीन प्रकार के नाम हैं उसने पूर्वकाल मे वेदज्ञान दिया–वेदवेत्ता ज्ञानी तथा यज्ञ जीवो के कल्याण के लिए दिए। १७/२३
- ब्रह्म के प्रति कृतज्ञता प्रकाशनार्थ ब्रह्मवादियो द्वारा सदा यज्ञ, दान, तप की सब सत्क्रियाए 'ओ३म्' का उच्चारण करके प्रारम्भ की जाती हैं। १७/२४
- प्राणिमात्र को अपनी रचना शक्ति द्वारा यन्त्रारूढ करके घुमाता हुआ ईश्वर सब प्राणियो के हृदय मे स्थित है। १८/६१ (सार्वदेशिक साप्ताहिक से)

स्वामी दयानन्द सरस्वती : क्रान्तिकारियों की नजर में

- स्वामी दयानन्द मेरे गुरु हैं। मैंने ससार मे केवल उन्हीं को गुरु माना है। वे धर्म के पिता हैं और आर्यसमाज मेरी धर्म की माता है। इन दोनो की गोदी मे पला। मुझे इस बात का गर्व है कि मेरे गुरु ने मुझे स्वतन्त्रता का पाठ पढाया। **–लाला लाजपत राय**
- महर्षि दयानन्द के क्रान्तिकारी विचारो से युक्त 'सत्यार्थप्रकाश' ने मेरे जीवन के इतिहास में एक नया पृष्ठ जोड दिया। **–क्रान्तिकारी रामप्रसाद बिस्मिल**
- महर्षि दयानन्द एग्लो वैदिक (डी ए वी) स्कूल में हम सब भाइयों को पढने का अवसर मिला। हमारे विचारो और मानसिक उन्नति के निर्माण मे सबसे बडा हाथ आर्यसमाज का ही है। हम इसके लिए आर्यसमाज के ऋणी हैं। **–शहीद भगतसिह**
- महर्षि का लिखा अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश हिन्दू जाति की रगो में उष्ण रक्त का सचार करनेवाला है। सत्यार्थप्रकाश की विद्यमानता में कोई विधर्मी अपने मजहब (धर्म) की शेखी नहीं बघार सकता। **–वीर सावरकर**
- भारत मे अग्रेजी प्रभुत्व और पाश्चात्य सभ्यता के प्रवेश के कारण उत्पन्न हो गये खतरे को दूर करने तथा राष्ट्रीयता को सुरक्षित करने मे महर्षि दयानन्द का स्थान बहुत ऊचा है। **–श्यामाप्रसाद मुखर्जी**
- वह (महर्षि दयानन्द) दिव्य ज्ञान वेद का सच्चा सैनिक, विश्व को प्रभु की शरण मे लानेवाला योद्धा और मनुष्य व सस्थाओं का शिल्पी तथा प्रकृति द्वारा आत्मा के मार्ग में उपस्थित की जाने वाली बाधाओं का वीर विजेता था। **–योगी अरविन्द घोष**

–डॉ० नरेश सिहाग 'बोहल'

पुरोहित प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

आर्यसमाज भाण्डवा (भिवानी) के तत्त्वावधान में तथा पं० धर्मवीर शास्त्री की अध्यक्षता में दिनांक २४ जुलाई से ४ जून तक पुरोहित प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया जिसमें २० नवयुवकों तथा सेवानिवृत्त आर्यजनों ने भाग लिया। डॉ० सुदर्शनदेव आचार्य रोहतक तथा प० भरतसिंह शास्त्री पंजाब आदि ने शिक्षार्थियों को प्रशिक्षण प्रदान किया। शंका-समाधान तथा सन्ध्या आदि के मन्त्रों का व्याख्यान भी किया गया। शिक्षार्थियों को प्रमाण-पत्र प्रदान किये गये। शिविर की स्मृति में मन्दिर के परिसर में डॉ० सुदर्शनदेव आचार्य ने एक पीपल का तरुवर लगाया। शिविर सफल रहा।

मा० रामफल आर्य, प्रधान–आर्यसमाज भाण्डवा, भिवानी

शंका-समाधान

(स्वरूपलाल आर्य ग्राम शामदो जिला जीन्द)

शंका–सार्वदेशिक पत्र १५ जुलाई के अंक में पेज नौ कॉलम पहला पर लिखा है कि परमात्मा हम सबको प्राप्त है हम उसी के अंश हैं। यदि वह प्रभु से मिलना भूल जायें तो प्रभु अपने भक्त से आकर मिल लेते हैं। मैं ७१ वर्ष का हो चुका हूं किन्तु मुझे यह लेख नहीं मिला कि हम प्रभु के अंश हैं। यदि प्रभु के अश हैं तो दुःखी क्यों हैं ?

समाधान–सार्वदेशिक पत्र का ऊपरलिखित लेख वैदिक मान्यता के विरुद्ध है। वैदिक सिद्धान्त यह है कि ईश्वर, जीव और प्रकृति ये तीनों पृथक्-पृथक् स्वतन्त्र सत्तायें हैं। शकराचार्य मत के अनुयायी नवीन वेदान्ती लोग जीव को ब्रह्म का अंश मानते हैं। ब्रह्म का कोई अश मानने पर ब्रह्म अखण्ड नहीं रहसकता। कारण के गुण कार्य में भी आते हैं। अत ईश्वर के समस्त गुण जीव में भी होने चाहिए। इस सिद्धान्त में अनेक दोष आ खडे होते हैं। आपका मन्तव्य सत्य है। प्रभु सर्वव्यापक है। वह कहीं आता-जाता नहीं। योग समाधि आदि साधनों से ऋषि-मुनि जन उसका दर्शन प्राप्त करते हैं।

–सुदर्शनदेव आचार्य, वेदप्रचाराधिष्ठाता

आर्यसमाज जुरहरा जिला भरतपुर (राज०) का वार्षिक चुनाव सम्पन्न

संरक्षक–श्री लेखराज जी साहू, प्रधान–श्री प० मंगलदेव आर्य, उपप्रधान–श्री डालचन्द आर्य, श्री गजराज आर्य, मंत्री–श्री ओम्प्रकाश खण्डेलवाल, कोषाध्यक्ष–श्री गोविन्द प्रसाद आर्य। –ओम्प्रकाश खण्डेलवाल, मन्त्री–आर्यसमाज जुरहरा

आर्यसमाज मन्दिर, अशोक विहार, फेज-२, दिल्ली का चुनाव संपन्न

सरक्षक–श्रीराम शरणदास सलूजा जी, प्रधान–श्री सत्यपाल गाधी जी, मन्त्री–श्री जगदीश चन्द्र कुमार जी, कोषाध्यक्ष–श्री बलवीर श्रीवास्तव जी।

–सत्यपाल गांधी, प्रधान

श्री हरिदत्त जी शास्त्री नहीं रहे

आचार्य हरिदत्त जी शास्त्री प्राचार्य डी ए वी नैतिक शिक्षा संस्थान का दिनांक ३-८-२००१ को हृदय गति रुक जाने से देहावसान हो गया। १९३८ को पानीपत जिले के डिडवाडी नामक गाव में आपका जन्म हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा गाव में प्राप्त करने के पश्चात् गुरुकुल घरोण्डा (करनाल) से आपने शिक्षा प्राप्त की और शास्त्री की उपाधि प्राप्त करने के पश्चात् आर्यमाज कालका में पुरोहित के पद पर १९६१ से ६५ तक कार्य किया। तत्पश्चात् १९६९ से १९७५ तक आर्यसमाज माडल टाउन, लुधियाना मे धर्माचार्य के पद पर १९७५ से १९८० तक गुरुकुल कुरुक्षेत्र मे आचार्य व १९८० से १९९४ तक आर्यसमाज करोल बाग में धर्माचार्य के पद पर कार्य किया।

आपके निधन से आर्यसमाज डी ए.वी एव आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा ने एक कुशल वेदप्रचारक खो दिया है, जिसकी पूर्ति होना कठिन है।

–सरस्वती देवी (पत्नी हरिदत्त शास्त्री)

शोक समाचार

१. आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यालयाधीक्षक श्री शेरसिह जी के दादा श्री किशनलाल सैनी का दिनाक ७ अगस्त २००१ को ९२ वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन हो गया। परमात्मा दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा उनके परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

२ मा० बलदेवसिंह आर्य प्रधान आर्यसमाज दयानन्दमठ, रोहतक की धर्मपत्नी श्रीमती कृपोदेवी का ८४ वर्ष की आयु में दिनाक १२-७-२००१ को आकस्मिक निधन हो गया। परमात्मा दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा उनके परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। –सभामन्त्री

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

१	आर्यसमाज गगायचा अहीर बीकानेर (रेवाडी)	१ से २ सितम्बर
२.	आर्यसमाज बेगा (सोनीपत)	१४ से १६ सितम्बर
३.	आर्यसमाज जलियावास (रेवाडी)	२२ से २३ सितम्बर
४	आर्यसमाज गोहाना मण्डी	२३ से २७ सितम्बर
५.	आर्यसमाज फेफाना तह० नोहर (राजस्थान)	५, से ७ अक्तूबर
६.	आर्यसमाज सैक्टर-१४, सोनीपत	५ से ११ नवम्बर

–डॉ० सुदर्शनदेव आचार्य, वेदप्रचाराधिष्ठाता

यज्ञ और पर्यावरण

लेखक रामनिवास बसल, प्रवक्ता (से नि)

यज्ञ हवन और दान-पुण्य मानव का सत्कर्म,
आदिकाल से चल रहा, वैदिक सनातन धर्म।
वैदिक सनातन धर्म यज्ञ नित्य करे करावे,
समिधा सामग्री शुद्धि हो जो सुगन्ध फैलावे।
कह 'बसल' गोघृत मत्र वैदिक ऋचाए सर्वज्ञ,
पर्यावरण शुद्धि करे, रोग निरोधक यज्ञ।।

'पर्यावरण सजीवनी' पत्रिका मे श्री प्रतापचन्द्र शास्त्री का लेख 'यज्ञ और पर्यावरण' प्रकाशित हुआ था जिस पर दैनिक समाचार पत्रो मे इसके विपक्ष-पक्ष में अनेक समाचार छपे। रा व मा वि मिसरी (भिवानी) कुछ प्राध्यापकों का मत था-१ किसी भी पदार्थ के जलने से वातावरण प्रदूषित होता है। २ तेल के जलने से कार्बन छोडता है। ३ घी के दीपक से काजल स्वास्थ्यवर्धक गैस नहीं निकलती। ४ घृत के जलने से जो गैस पैदा होती है वह ऐरोमैटिक हाइड्रोकार्बन के कारण वातावरण प्रदूषक हैं। ५ वैज्ञानिक इतिहास में अभी तक ऐसी कोई खोज नहीं हुई है हवन वातावरण से बीमारी के कीटाणुओ को नष्ट करता हो। ६ पीपल, बड, आम आदि लकडियो के जलने से ऑक्सीजन खर्च होती है तथा कार्बन डाइऑक्साइड निकलती है आदि-आदि।

मुझे ऐसा लगता है कि लेखकगण पूर्वाग्रह से ग्रसित होकर यज्ञ हवन आदि सनातन वैदिक परम्परा का योजनाबद्ध तरीके से विरोध कर रहे हैं। यहा यज्ञ-हवन परम्परा के विद्वानो को तर्कपूर्ण प्रत्युत्तर देकर आदिकाल से प्रचलित वैदिक परम्परा की रक्षा करनी चाहिये अन्यथा इस प्रकार का अनर्गल प्रचार हमारे प्राचीन वैदिक धर्म को हानि पहुचायेगा तथा पर्यावरण शुद्धिकरण की कल्याणकारी यज्ञ परम्परा को क्षति पहुचेगी। मैं आपके पत्र द्वारा उपरोक्त शकाओं का समाधान प्रकाशित कराना चाहता हू। मुझे आशा है कि आप इसे प्रकाशित करके धर्म कार्य के प्रचार-प्रसार मे सहयोग देगे।

सर्वप्रथम यज्ञ-हवन मे जो सामग्री व समिधा तथा ऋचाए-मन्त्र आदि का उच्चारण होता है वह वातारण शुद्ध करता है। प्राचीनकाल से सन्त, महात्मा,साधु, सन्यासी यज्ञ करते आये हैं। उससे वर्षा होती है अन्न-धन लकडी आदि अनेक उद्योगो का कच्चा माल मिलता है और रोजगार प्राप्त होता है। यज्ञ-हवन एक वैज्ञानिक देन है जो ऑक्सीजन उत्पन्न करती है। वृक्षो के द्वारा कार्बन-डाइ-ऑक्साइड लेना और ऑक्सीजन देना यज्ञ-हवन का प्रमुख कारण है। यह मुख्यत सामग्री-समिधा ऋचाओ और मन्त्रोच्चारण पर निर्भर है। समिधा में पीपल, बड, गूल्लर, जाड, आम, अशोक, बेल, आवला, मौलश्री, पारिजात, तुलसी, कनेर आदि की लकडी लाभदायक है। सामग्री मे गाय अथवा अन्य वनस्पति खाने वाले पशुओ का शुद्ध घी, चावल, जौ, इन्द्रजौ, सुगन्धित फूल, धूप, अगरबत्ती, गुग्गल, नारियल आदि प्रयोग होते हैं। यज्ञ करते समय वैदिक ऋचाओं, मत्रो, गायत्री मत्र, ओ३म् ध्वनि, षोडश मत्र, पचाक्षर मत्र, वर्षा कराने वाले मन्त्रो का प्रयोग होता है जिससे पर्यावरण शुद्ध होता है। अशुद्ध वातावरण को शुद्ध करने के लिए यज्ञ किये जाते रहे हैं, जो आलोचक भाई-बहनो के घरो में निश्चित होते हैं। जब घर में बच्चा पैदा होता है, पशु ब्याता है, घर मे कोई मौत होती है तो दुर्गन्ध फैल जाती है जिसकी शुद्धिकरण हेतु हवन-यज्ञ-अगरस्ती धूप आदि जलाते हैं और वेद के मन्त्रो का उच्चारण करते हैं। यह यज्ञ नहीं तो क्या है ?

जहा तक काजल, गैस और कार्बन का प्रश्न है जब भोपाल गैस काण्ड हुआ तो एक पुस्तक छपी थी जिसमें गाय के उपले की आग में गाय के घी में चावल डालकर धूमनी देने का प्रावधान लिखा था। यज्ञ से कभी विषैली गैस उत्पन्न नहीं होती वरन् नष्ट होती है। घी या तेल का काजल आखों में डालने की प्रथा है जो नेत्र ज्योति बढाता है। हवन यज्ञ से वर्षा होती है और फसले, पेड-पौधों का जन्म होता है जिससे कार्बन समाप्त होता है और ऑक्सीजन प्रसारित होती है। कुछ वृक्ष दिन-रात ऑक्सीजन देते हैं। पेड-पौधो के सुगन्धित पुष्प अनेक तेल-फूलेल उत्पादक हैं। गुलकन्द के गुण को कौन नहीं जानता, जो प्रत्यक्ष या परोक्ष हवन-यज्ञों के कारण है। नीम, पीपल आदि वृक्षों की छाल पत्ते रोगानिरोधक हैं। हल्दी, मेहदी, नारियल, सरसों, आवला, त्रिफला, त्रिकुटा आदि सब यज्ञों के कारण हैं। आज वैज्ञानिक प्रयोगोंसे पृथ्वी तल नग्न होता जा रहा है। जनसख्या बढ रही है और धर्म कार्य लुप्त हो गये हैं। परिणाम है भूकम्प, तूफान, अकाल, अनावृष्टि, असाध्य रोग जिसकी आज कोई दवा नहीं है। यज्ञ और पर्यावरण शुद्धिकरण आज के परिप्रेक्ष्य में जरूरी है।

"सर्वे भवन्तु सुखिन, सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दु.खभाग्भवेत्।।"

ओ३म् शान्ति-ओ३म् शान्ति-ओ३म् शान्ति।

क्रान्ति के अग्रदूत और महामानव श्री कृष्ण

-वेदप्रकाश साधक, दयानन्दमठ, रोहतक

आत्मिक बल से भरपूर, शूरवीर, धर्मज्ञ, नीतिमान्, राजनीति के मर्म को जानने वाले थे। जिसने अपनी कर्मवीरता से धर्मात्माओ की रक्षा की और दुष्टो का नाश किया। इसलिए इतिहासकारों ने इनको युगपुरुष कहा है।

द्वापर के अन्तिम काल में मथुरा नगरी के राजा कस जो अत्याचारी था। प्रजा कर्मचारी उससे पीडित थे। उसने श्री वसुदेव और देवकी को कारागार में बद कर रखा था। श्री कृष्ण का जन्म जेल में ही हुआ। पिता जी ने अपनी बुद्धिमत्ता से कृष्ण की रक्षा की और अपने मित्र नन्द के पास पहुचा दिया। यशोदा ने उसका पालन-पोषण किया। किशोरावस्था मे ही श्री कृष्ण मे अलौकिक बल था जिसके बल पर मथुरा में जाकर कस को चोटी से पकडकर पटक दिया और प्रजा को अत्याचारों से मुक्ति दिलाई।

महर्षि दयानन्द जी के अनुसार मानव उसी को कहते हैं जो अन्यायकारी बलवान् से भी न डरे और धर्मात्मा, निर्बल से भी डरता रहे। धर्मात्मा चाहे कितना निर्बल हो उसकी रक्षा, उन्नति और प्रियाचरण सदा किया करे और अन्यायकारी चाहे चक्रवर्ती राजा हो उसका नाश, अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करे। इतना ही नहीं चाहे प्राण की बलि भी देनी पडे तो उसका सामना अवश्य करना चाहिए।

मानवता की इस परिभाषा के अनुसार जरासध, शिशुपाल, बकासुर आदि राजा शक्तिशाली थे परन्तु अन्यायकारी थे। उनको श्री कृष्ण ने अपनी सूझ-बूझ से काल का ग्रास बनाया। उनका सिद्धान्त था व्यर्थ किसी को छेडो नहीं और आतताई को छोडो नहीं। आतताई का प्राण हरण उनकी दृष्टि में शुद्ध अहिंसा है।

इतनी बडी क्रान्ति के बाद स्वय राजा नहीं बने परन्त उग्रसेन और जरासध के पुत्र को उनका राज्य उनके [illegible] कर दिया।

ज्ञान और कर्म, श्रेय और प्रेय प्रवृत्ति और निवृत्ति के समन्वय का उत्तम उदाहरण पेश किया। यही भारतीय तत्त्व दर्शन है। इसो भूला कर हम सदियों परतन्त्र रहे। धर्म से ही मनुष्य की इहलौकिक और पारलौकिक उन्नति होना सम्भव है। सत्य, न्याय और सद्भाव ही धर्म है। उस समय ऐसा राजा नहीं था जो धर्म का पोषक हो और निर्बलों का सहायक हो। यह अभाव उसे खटक रहा था।

यदुवशी राज मे पाण्डवों और कौरवों में सत्ता का झगडा था। पाण्डवो का पक्ष धर्मयुक्त था इसलिए पाण्डवो के सहायक बने और एकमात्र अखण्ड राज स्थापित करने के लिए सघर्ष किया।

कौरवो और पाण्डवों के मध्य सन्धि कराने मे दाम दण्ड भेद आदि प्रत्येक नीति असफल रही। तब विवश होकर युद्ध का नाद बजाया। अर्जुन ने जब मोहवश युद्ध करने के लिए इनकार कर दिया तब श्री कृष्ण ने मार्मिक उपदेश दिया। अर्जुन ! तू आर्य है आर्यों मे ऐसी कायरता नहीं होती। मैदान छोड़ने पर तेरी निन्दा होगी। शस्त्र कहते हैं कि अधर्मी पापी को शस्त्र से दण्ड देना क्षत्रिय का धर्म है। इससे स्वर्ग की प्राप्ति होती है। शकुनी ने छल से पाण्डवो का राज छीना और द्रोपदी को भरी सभा मे अपमानित किया। इस अधर्म की कुचालों को याद दिलाकर अर्जुन की कायरता को दूर किया और वीर बनाकर जागृत कर दिया। इसके अतिरिक्त आत्मा की अमरता का उपदेश दिया कि मनुष्य का यह कर्त्तव्य नहीं है कि शरीर की रक्षार्थ अपना धर्म कर्म छोडकर ममता के वशीभूत हो जाये। जो लोग धर्म का त्याग कर देत हैं वे बधन मे पड़ते हैं। जो निष्काम कर्म करत हैं वे बधन मुक्त हो जाते हैं। कृष्ण के उपदेशामृत से पाण्डवों की विजय हुई। युधिष्ठिर भारत भर के सम्राट बनाए गए और अश्वमेध यज्ञ किया गया। यहा आकर भारत एक शक्तिशाली राज्य बन गया। ऐसे प्रेरणादायक जीवन सारी मानवता के लिए आदर्श हैं। परमात्मा करे भारतवासी भी इससे प्रेरणा लेकर राष्ट्र की सस्कृति की रक्षा के लिए योग्य हो सकें।

पितृयज्ञ (श्राद्ध-तर्पण) अंक

आपके सर्वहितकारी पत्र का आश्विन मास के कृष्णपक्ष (पितृपक्ष) में पितृयज्ञ (श्राद्धतर्पण) अक प्रकाशित किया जा रहा है। इस विषय मे आर्य विद्वान् लेखको के सारगर्भित, सक्षिप्त लेख, कविता, कथा आदि सादर आमन्त्रित किये जाते हैं।

-सुदर्शनदेव आचार्य, सह-सम्पादक

श्रीकृष्ण के विषय में महर्षि दयानन्द का मत

देखो ! श्री कृष्ण का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म-स्वभाव, चरित्र आप्त पुरुषो के सदृश है। जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्री कृष्ण ने जन्म से मरण पर्यन्त बुरा काम किया हो, ऐसा नहीं लिखा और भागवत मे दूध, दही, मक्खन की चोरी, कुब्जा दासी से समागम, परस्त्रियो से रासमण्डल, क्रीड़ा आदि मिथ्या दोष श्री कृष्ण मे लगाये हैं। इसको पढ़-पढ़ा, सुन-सुना अन्य मतवाले श्री कृष्ण की बहुत सी निन्दा करते हैं। जो यह भागवत न होता तो श्री कृष्ण जी की झूठी निन्दा क्यो होती ?

(सत्यार्थप्रकाश समु० ११) -सुदर्शनदेव आचार्य

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिग प्रेस, रोहतक (फोन : ७६८७४, ५७७७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, प० जगदेवसिह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ७७७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०२
पंजीकरणसंख्या टैक/एच.आर./49/रोहतक/99 ☎ ०१२६२-७७७२२

प्रधानसम्पादक : प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक :- डा० सुदर्शनदेव आचार्य
वर्ष २८ अंक ३८ २८ अगस्त, २००१ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

हिन्दी के सम्मान के लिए आन्दोलन होगा—स्वामी इन्द्रवेश

राष्ट्रभाषा समिति हरयाणा के अध्यक्ष स्वामी इन्द्रवेश जी ने दिनांक १९ अगस्त को भिवानी के हिन्दी सम्मेलन में बोलते हुए कहा कि हिन्दी को उसका अधिकार दिलाने के लिए आन्दोलन चलाया जाएगा। पहले चरण में सभी जिलों में सम्मेलन करके जनजागृति की जाएगी। अंग्रेजी नौकरानी ने महारानी हिन्दी का सिंहासन कुपुत्रों से मिलकर छीन लिया है। भारत सुपुत्रों की माँ को सिहासन पर बैठाना ही होगा। मुख्य अतिथि के रूप में अपना वक्तव्य रखते हुए पूर्व मुख्यमन्त्री श्री बनारसीदास गुप्त ने कहा कि मेरे मुख्यमन्त्रित्व काल में सम्पूर्ण कार्य हिन्दी करने की बाध्यता रखी गई थी। यह अब भी की जा सकती है। हिन्दी को उसका सम्मान लौटाना निहायत जरूरी है।

हिन्दी विद्वान् व पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक श्री डॉ० हरिश्चन्द्र वर्मा ने कहा कि हिन्दी विश्व की सर्वसमर्थ भाषा है। इसमें हर विषय की शिक्षा सरलता से दी जा सकती है। देश का यह दुर्भाग्य ही है कि अंग्रेजी छोटे-छोटे बच्चों पर लादी जा रही है। भिवानी जिला समिति के संरक्षक श्री जगदीश प्रसाद सर्राफ ने कहा कि अंग्रेजी अनिवार्यता के कारण आत्महीनता की स्थिति युवाओं में पनप रही है जिससे पारिवारिक व सामाजिक कार्यों में भी विकृति फैल रही है। यहां तक कि विभिन्न निमन्त्रण-पत्र व हस्ताक्षर भी अंग्रेजी में किए जा रहे हैं। हमें इसके लिए चेतना लानी होगी।

हरयाणा राष्ट्रभाषा समिति के प्रदेश संयोजक कर्मठ हिन्दी सेवी श्री श्यामलाल ने चिकित्सा, अभियान्त्रिकी, वाणिज्य, भौतिकी व रसायन सम्बन्धी, हिन्दी में मूलरूप से लिखी गई हजारों पुस्तकों व पत्रिकाओं की सूची प्रस्तुत करके उन लोगों का मुंह बन्द कर दिया जो कहते हैं कि हिन्दी में अनेक विषयों पर पुस्तकें नहीं मिलती। उन्होंने सम्मेलन में बताया कि समिति विश्वविद्यालयों व शिक्षा बोर्ड में जाकर उच्चाधिकारियों से मिलकर हिन्दी में कार्य सुनिश्चित रूप से चलाने के लिए बात कर रही है। महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल भीमसिंह सिहाग से २७ जुलाई को बात हो चुकी है। उन्होंने हिन्दी में कार्य करने का पूरा आश्वासन दिया है। २४ अगस्त को कृषि वि वि हिसार के कुलसचिव व कुलपति जी से इस विषय में वार्ता होगी तथा इसी क्रम में माननीय राज्यपाल हरयाणा से चण्डीगढ में उनके कार्यालय में २७ अगस्त को बातचीत की जाएगी कि हिन्दी भाषी राज्य हरयाणा में बार-बार के आदेशों के बावजूद हिन्दी में कार्य क्यों नहीं हो रहा है ? विशेष रूप से विश्वविद्यालयों में।

नई दिल्ली से विशेष रूप से पधारे प्रमुख वक्ता, राष्ट्रपति के पूर्व विशेष कार्याधिकारी डॉ० परमानन्द पाचाल ने हरयाणा उच्च न्यायालय में संविधान के अनुच्छेद ३४८ के अन्तर्गत हिन्दी के प्रयोग की राष्ट्रपति द्वारा अनुमति देने का प्रयास करने पर बल दिया तथा कहा कि रक्षा सेवा की एन डी ए. जैसी प्रवेश परीक्षाओं में हिन्दी की अनुमति का न होना ससद के सकल्पों की खुली अवहेलना है।

श्री हीरानन्द आर्य पूर्व शिक्षामन्त्री ने कहा कि भारतीय भाषाएं शिक्षा का माध्यम हो तथा हिन्दी को सम्पर्क भाषा बनाया जाए। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री बनारसीदास गुप्त ने महावीर 'धीर' द्वारा लिखित सचित्र पुस्तक **'भारत वर्ष—अंग्रेजी की जेल में'** का विमोचन किया। श्री धीर ने इस अवसर पर द्रवित हृदय से जोशीले शब्दों में कहा कि—शहीदों की चिताओं से यह आवाज आ रही है कि भारत में आज भी अंग्रेजी में राजकाज क्यों चलाया जा रहा है ? इस प्रश्न का उत्तर आखिर हमें तलाशना ही होगा। शहीदों के सपने तभी पूरे हो सकेंगे।

अध्यक्षीय भाषण में श्री कैसान जी ने कहा कि हिन्दी हमारी जन्म से मरण तक की भाषा है। सास्कृतिक व धार्मिक धरोहर की रक्षा हिन्दी ही कर सकती है। यही हमारे लिए ज्ञानवर्द्धक भी सरलता से हो सकती है। हमें इसके प्रयोग में गौरव अनुभव करना चाहिए।

मच संचालन श्री सुरेन्द्र कुमार जैन एडवोकेट ने बड़ी कुशलता से किया। सम्मेलन में हरयाणा सरकार व केन्द्रीय सरकार को प्रस्ताव पारित कर भेजे गए, जिनमें कहा गया कि राज्य का समस्त कार्य शिक्षा परीक्षा सहित हिन्दी में किया जाए तथा हिन्दी को देश की सम्पर्क भाषा व राष्ट्रभाषा के रूप में अनिवार्य रूप से लागू किया जाए। सम्मेलन में सैंकडों स्त्री-पुरुषों, विद्वानों और छात्रों ने भाग लिया। डी ए.वी स्कूल के छात्रों ने स्वागत गीत व मातृभाषा प्रेम पर गीत प्रस्तुत किये। अनेक कवियों ने कविता पाठ भी किया।

—महावीर 'धीर', उपाध्यक्ष
राष्ट्रभाषा समिति, हरयाणा

अंग्रेजों की गुलामी समाप्त हुई।
परन्तु अंग्रेजी की गुलामी अभी बाकी है।

☆ हरयाणा सरकार के १९६९ के राजभाषा अधिनियम के अनुसार २६ जनवरी १९६९ से हरयाणा की राजभाषा (सरकारी भाषा) हिन्दी है।

☆ इस अधिनियम तथा हरयाणा के मुख्य सचिव और मुख्यमत्री के आदेशों के अनुसार हरयाणा के सरकारी दफ्तरों, तहसीलो, जिला व सत्र अदालतों, विश्वविद्यालयों तथा बैंकों आदि में सारा काम केवल हिन्दी में किया जाना अनिवार्य है। अंग्रेजी मे किया गया सरकारी काम इन आदेशों की अवहेलना के साथ ही अवैधानिक भी है।

☆ आदेशों के अनुसार सरकारी काम को हिन्दी के स्थान पर अंग्रेजी में करने वाले कर्मचारियों/अधिकारियो के विरुद्ध कार्यवाई की जासकती है।

☆ देश के संविधान के अनुसार भारत सरकार की राजभाषा भी हिन्दी है। भारत सरकार द्वारा १९७६ मे लागू किए गए, राजभाषा नियमों के नियम ३ के अनुसार हरयाणा समेत समस्त हिन्दी भाषी राज्यों के लोगों के साथ भारत सरकार के कार्यालयों की तरफ से सारा पत्र व्यवहार हिन्दी में किया जाना अनिवार्य है।

परन्तु इन सब नियमों के बावजूद

सरकार में ऊचे पदों पर कुडली मारकर बैठे हुए मुट्ठीभर काले अंग्रेजों-अधिकारियों, नेताओं-मंत्रियों, विधायकों-सासदों, वकीलों-बैरिस्ट्रों, डाक्टरों-इजीनियरों, कुलपतियों, प्रिंसिपलों, प्रोफेसरों, मैनेजरों-डायरैक्टरों, उद्योगपतियो तथा अन्य सफेदपोश अग्रजीदा लोगों ने **अपने स्वार्थ और दबदबे को बनाए रखने के लिए** सविधान, राजभाषा अधिनियमों, राजभाषा नियमों और सरकारी आदेशो की धज्जिया उडाकर भोली-भाली गरीब, अंग्रेजी कम जानने वाली ९० प्रतिशत हिंदी भाषी जनता पर अंग्रेजी को गैर-कानूनी रूप से जबरदस्ती लाद रखा है। इस अन्याय को दूर करने तथा सरकारी कामो मे हिन्दी को लागू कराने के लिए हरयाणा राष्ट्रभाषा समिति द्वारा छेडे गए इस जनहितकारी सघर्ष में तन-मन-धन से सहयोग दें–

☆ सरकारी कार्यालयों से अंग्रेजी में आने वाले पत्रों को उसी विभाग को वापिस कर दें।

☆ ऐसे पत्रों की फोटोस्टेट प्रतिया अपने पास रखें तथा हरयाणा राष्ट्रभाषा समिति को भी भेजें।

☆ हरयाणा तथा केन्द्र के सरकारी कार्यालयों के साथ पत्र व्यवहार हिन्दी में करे।

☆ अधिकारियों पर अपने पत्रों के उत्तर हिन्दी में ही देने का दबाव बनाए। अधिकारी आनाकारी करें तो यह बात ऊपर तक पहुचाए।

(शेष पृष्ठ दो पर)

वैदिक-स्वाध्याय

मृत्यु से त्राण करने वाली ईश्वरीय शक्तियां

जीवान्नो अभिघेतन आदित्यास. पुरा हथात् ।
कद्ध स्थ हवनश्रुत ।। (ऋ० ८.६७.५)

शब्दार्थ–(आदित्यास) हे आदित्यो ! (अभिघेतन) दौड़ो (जीवान् न) हम जीते रहतों के पास (हथात् पुरः) हमारे मारे जाने से पहिले ही दौडो। (हवनश्रुत) हे पुकार सुननेवालो ! (कद्ध स्थ) तुम कहां हो ?

विनय–हे आदित्य देवो ! दौडो। हमे बचाओ। मौत हमारे सामने मुंह खोले खडी है। अगले ही क्षण में हम उसके ग्रास होने वाले हैं। भोगों को भोगते हुए तो हमें मालूम न था कि ये आसानी से भोगे हुए भोग एक दिन भोक्ता बनकर हमे खाने के लिये आयेगे। उस समय हम खुशी से अपने को इन विषयो के बन्धनजाल में बांधते गये, यह न अनुभव किया कि हम मृत्यु के जाल में बध रहे हैं। पर अब इस समय का–यह मृत्यु मुख में जाने का–एक क्षण, पश्चात्तापमय यह एक क्षण, शेष सारे बीते हुए जीवन काल के मुकाबिले मे खडा है। बस यह ही एक क्षण है इस बीच, हे आदित्यो ! मैं तुम्हें पुकार रहा हू। सुना है तुम जगदीश्वर की अखण्डनीय शक्तिया हो, तुम बधन-जाल से छुडाने वाली शक्तिया हो, तुम प्रकाश देनेवाली शक्तियां हो। वो तुम कहां हो ? मेरी पुकार क्यों नहीं सुनते ? क्षण भर मे दम निकलना चाहता है। तुम तो 'पुकार सुननेवाले' (हवनश्रुत्) प्रसिद्ध हो। तुमने बडे-बडे पापियों के हार्दिक पश्चात्ताप के करुण-क्रन्दनों को सुना है और उन्हे अन्तिम समय में भी उबारा है। क्या यह मो इस समय का पश्चात्तापमय रुदन भी हृदय से निकला रुदन नहीं है ? तो फिर तुम क्यो नहीं सुनते, क्यो नहीं दौड कर मुझे बचाते ? क्या अगले क्षण जग मैं मर चुकूगा, मेरा विनाश पूर्ण हो चुका होगा, मेरी ही समाप्ति हो चुकी होगी, तब आओगे ? तब क्या बनेगा ? ओह ! यदि मेरा उबारना अभीष्ट हो तो ये जो जीवन के दो-चार पल शेष हैं इन्हीं मे आ पहुचो। दौडो, मुझे बचाओ, मुझे बचाओ। **(वैदिक विनय से)**

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

१	आर्यसमाज गगायचा अहीर बीकानेर (रेवाडी)	१ से २ सितम्बर
२	आर्यसमाज बेगा (सोनीपत)	१४ से १६ सितम्बर
३	आर्यसमाज महेन्द्रगढ	१५ से १६ सितम्बर
४	आर्यसमाज जलियावास (रेवाडी)	२२ से २३ सितम्बर
५	आर्यसमाज गोहाना मण्डी	२३ से २७ सितम्बर
६	आर्यसमाज फेफाना तह० नोहर (राजस्थान)	५, से ७ अक्तूबर
७	कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, पचगाव (भिवानी)	२० से २१ अक्तूबर
७	आर्यसमाज सैक्टर-१४, सोनीपत	५ से ११ नवम्बर

–डॉ० सुदर्शनदेव आचार्य, वेदप्रचाराधिष्ठाता

हिन्दी के सम्मान के लिए........ (प्रथम पेज का शेष)

☆ फिर भी बात न बने तो अपने सासद, विधायक और विभाग के मत्री के पास जाएं या उन्हें पत्र लिखें।
☆ हरयाणा राष्ट्रभाषा समिति को भी प्रमाण सहित सूचित करें।

याद रखें–जनता को सच्ची आजादी तभी मिलेगी जब जनता की सरकार, जनता से, जनता की भाषा हिंदी में ही बात करेगी, विदेशी भाषा अग्रेजी में नहीं।

हरयाणा राष्ट्रभाषा समिति दयानन्द मठ, रोहतक का पांच-सूत्री कार्यक्रम

१ हरयाणा के स्कूलों की प्राथमिक कक्षाओं से अंग्रेजी की अनिवार्य पढाई को समाप्त कराना।

२ हरयाणा के सरकारी कार्यालयों तथा जिला अदालतों के कामकाज में राजभाषा हिंदी का १०० प्रतिशत प्रयोग सुनिश्चित कराना।

३ हरयाणा के चारों विश्वविद्यालयों तथा हरयाणा शिक्षा बोर्ड, भिवानी से अग्रेजी के गैरकानूनी वर्चस्व को समाप्त कराना।

४ संविधान के अनुच्छेद ३४८ के अन्तर्गत हरयाणा के उच्चन्यायालय में हिंदी में काम करने की राष्ट्रपति से अनुमति प्राप्त कराना।

५ भारत सरकार की रक्षा सेवा परीक्षाओ राष्ट्रीय रक्षा आकादमी (एन डी ए) तथा सम्मिलित रक्षा सेवा (सी डी एस) से अग्रेजी की अनिवार्यता को समाप्त कराना तथा हिंदी में भी परीक्षा देने की अनुमति दिलाना।

कार्यक्रम को पूरा करने मे हरयाणा राष्ट्रभाषा समिति को तन-मन-धन से सहयोग दें।

महर्षि दयानन्द ने जिसे आर्यभाषा कहा, तथा देश की एकता के लिए महात्मा गाधी ने जिसका प्रचार-प्रसार दक्षिण-भारत तक किया उस

भारत-भारती हिंदी के लिए हम क्या कर रहे हैं ?

☆ क्या हम बैंक सहित सब जगह अपने हस्ताक्षर हिंदी में करते हैं ?
☆ क्या हमारी टेलीफोन डायरी हिंदी मे है ? क्या हमारा परिचय-पत्र हिंदी मे है ?
☆ फोन न० हिंदी के अकों–एक, दो, तीन मे बोलते हैं, वन-टू-थ्री आदि मे तो नहीं।
☆ क्या हम चैक और बैंक की जमा-पर्ची हिंदी में भरते हैं ?
☆ क्या हमारे घर, दफ्तर और दुकान के नाम-पट्ट हिंदी में हैं ?
☆ क्या हम समाचार-पत्र और पत्रिकाए हिंदी मे भी मगाते हैं ?
☆ क्या हम हिंदी मे भी पुस्तकें पढते हैं ?
☆ क्या हम अपने पत्र और उन पर पते हिंदी मे लिखते हैं ?
☆ क्या हम सरकारी दफ्तरों के साथ पत्र-व्यवहार हिंदी में करते हैं ?
☆ क्या हम अपना घरेलू या व्यापारिक हिसाब हिंदी मे तैयार करते हैं ?
☆ क्या हम बधाई, विवाह और अन्य निमन्त्रण-पत्र हिंदी मे छपवाते हैं ?
☆ क्या बातचीत में अग्रेजी के अनावश्यक शब्दो का प्रयोग तो नहीं करते ?
☆ यदि हम सरकारी कर्मचारी हैं तो क्या दफ्तर मे अपना काम हिंदी में करते हैं और औरों को ऐसा करने को प्रेरित करते हैं ?
☆ क्या हममें अपनी भाषा के प्रति हीन भावना तो नहीं है ?
☆ क्या हम अपनी भाषा के स्थान पर विदेशी भाषा अग्रेजी में गिटपिट करने वालो को अवाछित आदर तो नहीं देते ?

गभीरता से विचार करके अपने कर्त्तव्य का निश्चय करें।

हिंदी की जय हिंदी मे काम करने से होगी। केवल जयकारा लगाने से नहीं।

–**हरयाणा राष्ट्रभाषा समिति**, दयानन्दमठ, रोहतक। दूरभाष ०१२६२-७७७२२

समाज में नारी का स्थान

❑ सुगनचन्द आर्य, प्रधान आ० स० सत्यसदन पुनहाना

सदियों से इतिहास गवाही दे रहा है कि नारी का इस ससार में बडा महत्त्व है। ऋषियों ने भी इस विषय में बहुत कुछ लिखा है। मनु महाराज लिखते हैं कि-**"यत्र नार्यस्तु पूजन्ते रमन्ते तत्र देवता"** अर्थात् जहां नारी का सम्मान होता है वहा देवता निवास करते हैं। वहा हर प्रकार की प्रसन्नता, प्रफुल्लता बनी रहती है। उस घर मे सभी जन प्रसन्न रहते हैं। नारी ससाररूपी उपवन में बागवान का काम करती है। वह उपवन को हराभरा बनाने हेतु कोई कसर नहीं छोडती। उसके प्रयत्न से उपवन अच्छी तरह फलता-फूलता है। इस ससाररूपी चक्र की धुरी, जिस पर यह चक्र गति कर रहा है नारी ही तो है। जो इस चक्र को प्रदान करती है। नारी के विषय में आदरणीय कवि दिनकर जी लिखते हैं कि-

"सच पूछो तो प्रजा सृष्टि में क्या है
विशेष भाग पुरुष का
यह तो नारी ही है जो सब यज्ञ पूर्ण
करती है।"

नारी नर की जननी है नर को जन्म देकर अपना अमृतमय दूध पिलाकर उसे पालती है। जीवनभर नर की सेवा करती है। नारी माता व पत्नी के रूप में नर के लिए सुदृढ सहारा है। यदि सृष्टि में से नारी को निकाल दिया जाए तो शेष शून्य बचता है।

नर के जीवन मे नारी मुख्यत तीन रूपों मे आती है। जो उसके जीवन को सभालती है, उसमें उत्साह भरती है। उसे सही रूप में जीने के लिए प्रेरित करती है। १ माता, २ बहिन, ३ पत्नी।

माता-माता से बढकर इस ससार में और कोई हितैषी नहीं, इसीलिए माता के समान और कोई पूज्य नहीं। ऋषियों का कथन है कि **"माता निर्माता भवति"** माता वह है जो बालक का निर्माण करे जननी तो पशु पक्षी भी होते हैं। माता से ही बालक का जीवन उज्ज्वल बनता है। माता ही गर्भावस्था से जन्म तक और जन्म से आगे भी ७-८ वर्ष तक निर्माण करने मे अपनी पूरी शक्ति लगा देती है। इसी की ममता, दया और उदारता के सहारे नर बडा होता है।

जब बालक रोगी हो जाता है तो माता के प्राण सूख जाते हैं। उसे भूख प्यास कुछ नहीं लगती। जब तक बालक निरोग न हो जाए माता की आखो की नींद भी उड जाती है। यदि प्रभु कृपा से और अपने शुभ कर्मों के फल से सन्तान सपूत होती है तो माता अपने जीवन में में कुछ सुख का अनुभव करती है। यदि सन्तान कपूत होती है तो दुखों के गहरे कूप में डूब जाती है। वह एक टिमटिमाते दीप की तरह जीवन व्यतीत करती है। जो न जाने कब बुझ जाता है। राष्ट्र कवि श्री गुप्त जी के शब्दों में-

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आंचल में है दूध और आंखों में पानी।।

बहिन-बचपन मे नर को बहिन बडा सहारा देती है। उसे गोदी में उठाकर खिलाती है। बचपन में बहिन भाई साथ-साथ खेलते हैं, लडते हैं, झगडते हैं, फिर एक हो जाते हैं। पढाई में भी एक दूसरे के सहयोग से बडा लाभ मिलता है। शादी के बाद भी दोनों का प्रेम बना रहता है। तीज त्यौहारों पर भाई बहिन को लेने जाता है। बहिन भी राखी आदि पर्वों पर भाई के घर आकर उसे राखी बाधकर अपना प्रेम दर्शाती है। बहिन के घर भाई का बहुत सम्मान होता है। कहावत भी इस प्रकार है कि **"बहिन घर भाई, सास घर जमाई"**।

पत्नी-(१) **सुदृढ सहारा** -जवानी से लेकर वृद्धावस्था तक नारी नर के लिए सुदृढ सहारा है।

(२) नारी पत्नी के रूप में नर की सच्ची मित्र है। नर पर आपत्ति आने पर पत्नी पूरा सहयोग देती है। हौंसला बढाती है, उचित सलाह देती है।

(३) पत्नी प्रेम व स्नेह की अवतार-हसकर व मुस्कराकर नर को सम्मान देना। पत्नी की एक मुस्कराहट पति की सारी थकान दूर करने में सक्षम है। रोगी होने पर सारी-सारी रात जागकर पत्नी के रूप मे नारी का ही कार्य है। जिससे पति को नया जीवन मिलता है।

(४) पति को महान् बनाने मे सहयोगी-इतिहास गवाह है कि पत्नी ने अपनी सूझबूझ से, उदारता से और त्याग से अपने पति को देवता बनाया है। जैसे-श्रीमती रत्नावली ने अपने पति तुलसी को सत तुलसीदास में परिवर्तित कर दिया। श्रीमती शिवदेवी ने अपने पति वकील मुन्शीराम को स्वामी श्रद्धानन्द के रूप मे बदल दिया। श्रीमती विदुषी विद्योत्तमा ने अपने पति निरक्षर को सस्कृत का महान् कवि बनाकर ही दम लिया। जो विश्व मे कवि कालिदास के नाम से प्रसिद्ध हुआ। जिसने सस्कृत में कई महान् ग्रन्थ लिखे। नर के जीवन में चार चाद लगाकर उसको चमकाने में नारी की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता।

अति सक्षिप्त में नारी का महत्त्व लिखने के पश्चात् मुझे बडे दुख के साथ यह लिखना पड रहा है कि इतना होने पर भी नर आज नारी के वर्चस्व को मिटाने मे लगा हुआ है। जिस प्रकार आज तीव्र गति से देश में कन्याओं की जन्मदर मे कमी आई है वह सोचनीय है। आज बडे पैमाने पर कन्या भ्रूणहत्या हो रही है। यह अत्यन्त दुख का विषय है। यह अमिट सत्य है कि नारी को मिटाकर नर भी इस भूतल पर जीवित नहीं रह सकता।

आज मातृशक्ति के वर्चस्व को बचाने के लिए लगन से कार्य करने की आवश्यकता है। समाज के हर बुद्धिजीवी का यह परम धर्म है कि वह इस विषय में सोच-विचार कर समाज में इसके प्रति जागरूकता लाने के लिए लग्न और निष्ठा से कार्य करें जिससे मातृशक्ति के वर्चस्व को बचाने मे कुछ सहायता मिले। आप विचार करे कि जब नारी ही नहीं होगी तो नर कहा से जन्म लेगा।

प्राणायाम का महत्त्व

❑ स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा

अष्टाग योग मे चौथा अग प्राणायाम है। ज्ञान से श्वास-प्रश्वास के नियम रोकने को प्राणायाम कहते हैं। जो वायु बाहर से भीतर को आता है उसको श्वास और जो भीतर से बाहर जाता है प्रवास कहते हैं। ब्रह्ममुहूर्त मे उठ, शौच, दन्तधावन, मुख प्रक्षालन करके स्नान करें। पश्चात् एकान्त स्थल में जाके योगाभ्यासी की रीति से परमेश्वर की उपासना करनी चाहिए। उस समय दोनो हाथ धो, कान, आख, नासिका आदि का शुद्ध जल से स्पर्श करके शुद्ध देश मे पवित्र आसन पर श्वास-प्रवास के आने-जाने को शनै -शनै अभ्यास से रोकें। अगुली और अगुष्ठ से नासिका के छिद्र को बन्द करके जो प्राणायाम करते हैं वे अल्पज्ञ हैं। बुद्धिमान् पुरुषो को इस प्रकार प्राणायाम नहीं करना चाहिए। प्रारम्भ करते समय नाभि के नीचे से मूलेन्द्रियों को ऊपर सकोच करके जैसे अत्यन्त वेग से वमन होकर अन्न जल बाहर निकल जाता है वैसे प्राण हृदय के वायु को बल से बाहर फैंकके यथाशक्ति बाहर ही रोके तब तक मूत्रेन्द्रियो को ऊपर खींचकर रखे जब तक प्राण बाहर रहता है। इसी प्रकार प्राण बाहर अधिक ठहर सकता है। पुन जब घबराहट हो तब वायु को धीरे-धीरे लेके भीतर थोडासा रोके यह एक प्राणायाम हुआ। इसी प्रकार कम से कम तीन प्राणायाम करें। जितना सामर्थ्य और इच्छा हो वैसे ही करता जाय। प्राणायाम करते समय मन मे **'ओ३म्'** इसका जप करता जाय। इस प्रकार करने से आत्मा और मन की पवित्रता स्थिर होती है। मन और आत्मा को स्थिर करके आत्मा के बीच में जो अन्तर्यामी रूप से जो ज्ञानस्वरूप और आनन्दस्वरूप व्यापक परमेश्वर है उसमे अपने आपको मग्न करके अत्यन्त आनन्दित होना चाहिए। जैसे गोता खोर जल मे डुबकी मारके शुद्ध होके बाहर आता है, वैसे ही सब जीव लोग अपने आत्माओ को शुद्ध ज्ञानानन्द स्वरूप व्यापक परमेश्वर मे मग्न होकर नित्य शुद्ध करें। क्योकि जैसे अग्नि मे गलाने और तपाने से स्वर्ण आदि धातुओ के मल नष्ट हो धातु शुद्ध होजाते हैं, वैसे ही प्राणो के निग्रह अर्थात् प्राणायाम से मन आदि इन्द्रियों के दोष भस्मीभूत मन इन्द्रिय निर्मल हो जाते हैं। स्त्री भी इसी प्रकार योगाभ्यास करें। सन्यासी को उचित है कि ओकार पूर्वक सप्त व्याहृतियों से विधिपूर्वक प्राणायाम जितनी शक्ति हो उतने करें। परन्तु तीन से न्यून कभी न करें। यह प्राणायाम चार प्रकार का होता है।

बाह्य विषय-जब भीतर से बाहर को श्वास निकल जावे तब उसको बाहर ही अधिक रोकना। इसको प्रथम प्राणायाम कहते हैं।

आभ्यन्तर विषय-पुन जब बाहर से श्वास भीतर को आवे तब उसको जितना रोक सके भीतर ही रोकना। उसको द्वितीय प्राणायाम कहते हैं।

स्तम्भवृत्ति-एक ही बार जहा का तहा प्राण को यथाशक्ति रोक देना अर्थात् न प्राण को बाहर निकाले, न बाहर से भीतर लेजाये किन्तु जितनी देर सुख से होसके उसको जहा का तहा, ज्यो का त्यो, एकदम रोक देना। इसको तृतीय प्राणायाम कहते हैं।

बाह्याभ्यन्तरापेक्षी-जब श्वास भीतर से बाहर को जावे, तब बाहर से ही कुछ-कुछ रोकना और जब बाहर से भीतर आवे तब उसको भीतर से ही थोडा-थोडा रोकना अर्थात् जब प्राण भीतर से बाहर निकलने लगे, तब न निकलने देने के लिये उससे विरुद्ध श्वास बाहर की ओर प्राण को धक्का देकर रोक लेना। ऐसे एक दूसरे के विरुद्ध क्रिया करने से श्वास-प्रश्वास दोनो की अति रुककर प्राण अपने वश मे हो जाते हैं। इसको चतुर्थ प्राणायाम कहते हैं।

तृतीय और चतुर्थ प्रकार के प्राणायाम में यह भेद है कि तृतीय 'स्तम्भवृति' प्राणायाम 'बाह्यविषय' और 'आभ्यन्तर विषय' प्राणायाम के अभ्यासी की अपेक्षा नहीं करता, परन्तु चतुर्थ 'बाह्याभ्यान्तरापेक्षी' प्राणायाम 'बाह्य' और 'अभ्यान्तर' प्राणायाम के अभ्यास की अपेक्षा करता है।

इन चारो का अनुष्ठान इसलिए विदित है कि इनसे चित्त निर्मल होकर उपासना मे स्थिर होता है अर्थात् प्राण द्वार से उस परमात्मा को प्राप्त होके आनन्दित हो जाते हैं। (१) इस प्रकार प्राणायामपूर्वक उपासना करने से आत्मा के ज्ञान को टाकनेवाले अज्ञान का जो आवरण है वह नित्यप्रति नष्ट होजाता है और ज्ञान का प्रकाश धीरे-धीरे बढता जाता है। (२) जब प्राणायाम के अनुष्ठान के अभ्यास से यह फल भी होता है कि उपासक के मन मे ब्रह्म मे ध्यान लगाने की योग्यता बढती जाती है। (३) प्राणायाम के लाभ का क्रम इस प्रकार है कि श्वास प्रश्वास की गति रुककर प्राण अपने देश मे होने से मन और इन्द्रिय भी स्वाधीन होते हैं। मन इन्द्रिय वश मे होने से बल पुरुषार्थ बढकर बुद्धि तीव्र सूक्ष्म रूप हो जाती है जो फिर बहुत कठिन और सूक्ष्म विषय को भी शीघ्र ग्रहण करती है। इस प्रकार इससे मनुष्य शरीर मे वीर्य वृद्धि को प्राप्त होकर स्थिर बल, पराक्रम जितेन्द्रियता बढेगी और फिर वह सब शास्त्रों को थोडे ही समय में समझकर उपस्थित कर लेगा। यह प्राणायाम उपासना योग का चौथा अग है।

समाचार-पत्र और अश्लीलता

मनुष्य के दो पैर होते हैं यदि एक पैर टूट जाए या बेकार होजाए तो वह खाट पकड लेगा अथवा किसी के सहारे से लगडाता चलेगा। पशु की चार टागे होती हैं, अगर एक टाग खराब होजाए तो तीन टागो से बडी मुश्किल से झटके खाकर चलता है। खाट के चार पाए होते हैं, यदि एक पाया टूट जाए तो व्यक्ति उस पर सो नहीं सकता और सोएगा तो आराम से नहीं सो सकता। इसी प्रकार किसी देश की सभ्यता, उन्नति, सस्कृति, उत्तम, चरित्र और परिश्रम की आवश्यकता होती है। इन साधनो के अतिरिक्त चार पाए होते हैं जो अति आवश्यक होते हैं। किसी एक पाए साधन के विकृत होने पर देश की उन्नति की कल्पना भी नहीं कर सकते। वे चार पाए हैं -(१) न्यायपालिका (२) शासनतन्त्र (३) जनता (जनार्दन) (४) समाचारपत्र (मीडिया)। इनमे से किसी एक के भी भ्रष्ट होने पर देश में बेचैनी, हलचल, उथल-पुथल अफरा-तफरी, खराबी आजाती है। शास्त्रो के अनुसार चार वर्ण होते हैं - (१) ब्राह्मण (२) क्षत्रिय (३) वैश्य (४) शूद्र (जन्म से सब शूद्र होते हैं) गुण कर्म स्वभाव के आधार पर वर्ण माने गए हैं। मेरे अपने निजी मत कल्पना के अनुसार समाचार-पत्र ब्राह्मण, न्यायपालिका क्षत्रिय, जनता वैश्य और शासनतन्त्र शूद्र।

समाचार-पत्रो को ब्राह्मण की सज्ञा इसलिए दी क्योकि ब्राह्मण समाज का देश का अगुआ पथप्रदर्शक होता है। निर्भीकता पूर्वक सत्य मार्ग पर चलता है। इसी प्रकार देश मे समाज में जहा भी अन्याय, अत्याचार देखता है, उन पर खुलकर हमला करता है। भ्रष्टाचार अनाचार की आलोचना करके समाज को सही मार्ग पर चलाता है। समाचार पत्र मे बडी शक्ति होती है बडे-बडे तानाशाहो को धराशाही कर देता है। एक कवि का कथन है - **'खीचो न कमानो को न तलवार निकालो, गर तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो'** जिन कधो पर देश की अगुवाही करने का भार हो, देश के पहले पहरेदार हो देश के नेतृत्व के जिम्मेदार हो, जिनको ब्राह्मण पद का भार दिया गया हो यदि वही भ्रष्टाचार का प्रसारक होजाए तो अन्य वर्णों को क्या कहा जाएगा। समाचार पत्र सजग हो निजी स्वार्थ को अर्थ लाभ को त्याग कर देश के प्रति निष्ठावान् हो तो देश का नेतृत्व करने मे सक्षम हो सकते हैं। अखबार मे बडी शक्ति होती है। परन्तु आजकल तो अखबार टका कमाने के लालच मे स्वय भ्रष्टाचार अश्लीलता का जनक बन गया है। बहुत से अखबार बिके होते हैं। जो देश को सत्ता दिखाता था। वह स्वय रास्ता पूछकर चलता है। **"इस घर को आग लग गई घर के चिराग से। होवे कैसे बेगम फिर आए ऐसे दाग से"**। तो देश की रहनुमाई करनेवाला खुद ही फजीत बदनाम होजाए तो वह क्या खाक रहनुमा बनेगा ? इस समय देश को ऐसे जादूगर की आवश्यकता है, जो भवर मे फसी नैया को पार लगा दे ऐसा कभी अखबार ही था, जो गुमराह कौम को पटरी पर राह पर लाता था, रहबर, नेता, पीर, पैगम्बर बनकर नेतृत्व करता था परन्तु आजकल बिक्री के कवच में अपने मूल उद्देश्य से हटकर (जो देश के नवयुवको को नैतिक धार्मिक शिक्षा द्वारा आदर्श नागरिक बनाना था। अखबारो के साथ दो-चार पृष्ठो के एक दो कागज लगाए जाते हैं जो गदे अश्लील चित्र फोटो होते हैं, जिनको बाप बेटी, बेटी, भाई, बहिन इकट्ठे बैठकर देख नहीं सकते। फिल्मी ढग के गुथमगुत्था बचमबचा चुम्बन आदि नगे अश्लील होते हैं। यदि किसी गाव के बीच में ऐसे चित्र यानि दो स्त्री पुरुष ऐसा प्रदर्शन करें तो गाव के लोग ऐसा नगा चित्र देख नहीं सकते। पर देख रहे हैं अखबारो मे भारत की देश की सैंसरशिप पता नहीं नींद की गोली खाकर की कुम्भकर्णी नींद में सो गई है। इन अश्लील चित्रों से अखबारों की बिक्री मे तो बढोतरी हो गई है। परन्तु देश के भावी नागरिकों नवयुवको का पतन होता जारहा है। यह तो बाड ही खेत को, बाड ही बिटोडे को खारही है। रेवड का पाली ही भेडिया बन गया है। मिश्री मिलाकर दूध पिलानेवाले को ही नाग खारहा है।

मैं समाचार पत्र का बहुत समय तक ग्राहक रहा था, पर बाद मे उसमे अश्लील फोटो-चित्र आने लग गए। मैने सोचा पजाब केसरी मगा लेते हैं, क्योंकि सोचा था वह (पजाब केसरी) के सिद्धान्तो से कुछ मिलता जुलता है वह मगाया देखा तो वही कहावत याद आ गई। एक लडका खडा-खडा पेशाब कर रहा था किसी ने सोचा कि इसके बाप से शिकायत करूगा। बाप के पास गया तो वह चक्कर काटकर पेशाब कर रहा था। फिर अखबार बाधा मगाया तो वह उन दोनों से इक्कीस निकला। सोचा अब कहा से मगवाए। यहा तो कुएं मे ही भग पडी हुई है। सख्या बढाने का प्रभाव भावी पीढी पर तो पडेगा ही वर्तमान पीढी पर भी पड रहा है। जिसका परिणाम होगा देश के नागरिकों का नैतिक पतन। किसी का उत्थान केवल आर्थिक पैमाना ही सब कुछ नहीं होता, अपितु देश के नागरिकों का चरित्र, सभ्यता, सस्कृति, देशभक्ति, नैतिकता, एकता, त्याग भावना पर निर्भर करता है और उन सारे गुणों का उत्तरदायित्त्व को न निभाना उनकी कर्तव्य भावना का ही अभाव माना जाएगा।

समाचार पत्रों का केवल यही काम नहीं है कि फला पार्टी टूट गई, जीत गई, रेल भिड गई, नाव उलट गई आदि ही समाचार पत्रो के कर्तव्य की इतिश्री नहीं होती। गुप्ता जी के निम्न भावों पर ध्यान देना चाहिए,- **"हम क्या थे ,क्या हो गए और क्या होगे अभी।"** इन अवस्थाओं से समाज को, देश को परिचित करवाकर बिगडी को सुधारना और सुधरी अवस्था को और उन्नत करना करवाना समाचार पत्रो का परम कर्तव्य दायित्त्व है। लेकिन बडे खेद के साथ लिखना पड रहा है कि समाचारो से पहले मुख पृष्ठ पर तितलिया नाचती, फुदकती किसी के साथ गले मिलती चूमन आदि अश्लील क्रियाए होती हैं। ऐसी भैंडी क्रियाओ से देश के जनमानस पर और विशेषकर नवयुवकों पर क्या असर पडेगा क्या समाचार पत्रो को छापते समय सम्पादक मडल इन अश्लील चित्रो को देखकर शर्म महसूस नहीं करते होंगे और यदि शर्म महसूस नहीं करते हैं तो वह सब माया की मेहरबानी है। बेचारे लाचारी के वशीभूत होकर सब नाच नाचना पडता है। पर यह तो स्वार्थ हुआ देश का क्या बनेगा ? देश जाए भाड में।

अब अन्त में मैं सम्पादक मडल पत्रकारो से देशसेवक के रूप मे देश के चौकीदार के रूप मे निवेदन करता हू कि अपने-अपने समाचार पत्रों में नंगा अश्लील चित्र न दिया करें, बेशक आपको बेचुपडी रोटी भी खानी पडे। पर ऐसी आशा कम ही है क्योकि जिसको मालपूवा स्वाद त्याग सूखी रोटी से मसूडे कौन छिलवायेगा ? आप देश की नैया के खिवैया हो-देश के रहनुमा हो, आपकी छत्रछाया की बडी जरूरत थी, परन्तु आपने तो आशा को निराशा मे बदल दिया। शायर ने उचित कहा है - **"हम तो देखकर ही छाव रुके इस पेड के नीचे, क्या पता था कि यह हम पर ही गिर पडेगा।"** अब तो जैसे नेता लोग हैं, वैसी ही आप (पत्रकार मालिक) उन्हीं के आगे पीछे चलने लग गए हैं, मौकापरस्त बन गए हैं। समाचार पत्र तो वे थे, सम्पादक तो वे थे, जो अग्रेजो के जोर जुल्म और अत्याचारो से बडी निर्भिकता लिखते डाट-डपट, डडा ओर जेलो से नहीं डरते थे। अग्रेजो के नाक मे दम करते थे नाक मे नकेल डालकर झटका करते थे। ससार मे उस समय समाचार पत्रो की बडी प्रशसा होती थी क्योंकि उनके अन्दर देशभक्ति देशसेवा की स्पिरिट भावना होती थी। उस समय के समाचार पत्रो मे स्वार्थ-अर्थ लालच बिल्कुल नहीं होता था। उस समय के सम्पादको को मालपुवा तो कहा कभी-कभी तो सूखी रोटी भी नहीं मिलती थी। अत आज के समाचार पत्र उनसे प्रेरणा लेकर अपने समाचार पत्रो मे समाचार देकर आज के युवको के लिए नैतिकता की ठोस सामग्री देने की कृपा करे। दुनिया बदल रही है, कुछ आप भी बदले।

—मा० शिवराम आर्य, सतनाली बांस

महाभारत इतिहास है—काल्पनिक ग्रंथ नहीं

❑ स्वामी वेदमुनि परिव्राजक, अध्यक्ष वैदिक संस्थान, नजीबाबाद (उ०प्र०)

सन् १९७५ में डॉक्टर डी सी सरकार ने घोषणा की थी कि महाभारत हुआ ही नहीं। विचित्र बात यह है कि आपने अपने जिस वक्तव्य में यह घोषणा की और महाभारत को काल्पनिक ग्रंथ बताया, उसी वक्तव्य में यह भी कहा गया कि यह साधारण पारिवारिक झगडा था।

एक ओर तो किसी घटना के होने से नकार करना, उस घटना से सम्बन्धित ग्रथ को काल्पनिक बताना तथा दूसरी ओर गृह कलह या साधारण सा पारिवारिक झगडा बताकर उसके अस्तित्व को स्वीकार कर लेना न तो बुद्धिमानी है और न इतिहासवेत्ता होने का प्रमाण हां इससे एक लाभ अवश्य हुआ है कि डा० सरकार चर्चा का विषय बन गये। जो उन्हें नहीं जानता था, वह भी कम से कम उनका नाम तो जान ही गया फिर चाहे आलोचनात्मक और भर्त्सनात्मक भाषा में ही उन्हे स्मरण किया जाय। **"बदनाम अगर होंगे तो क्या नाम न होगा।"** यदि इस विचार से कोई अपने आपको सन्तुष्ट करना चाहे तो उसे कोई रोक नहीं सकता।

इतिहास विषय पर लेखनी उठाने, मुख खोलने और खोज करने से पहले-इतिहास ग्रन्थ कौन हो सकता है ? यह जान लेना आवश्यक है, जिसे इतिहास के लक्षण ज्ञात न हो, वह इतिहास ग्रन्थो को समझने की योग्यता नही रखता ? इतिहासवेत्ता होना तो दूर की बात है।

जिस ग्रथ मे वशावली दी हो, वह काल्पनिक कदापि नहीं हो सकता, वह इतिहास है। काल्पनिक ग्रंथो, उपन्यासों आदि में वशलिया नहीं होती तथा जिस ग्रन्थ का उसके पश्चात् लिखे गये ग्रथों में इतिहास के रूप में वर्णन हो और जिसके उदाहरण दे-देकर ऐतिहासिक दृष्टि से ही उसे अन्य स्थानों में चित्रित किया गया हो, वह काल्पनिक ग्रन्थ नहीं हो सकता। महाभारत के विषय मे यह दोनों बाते शतप्रतिशत ठीक है। महाभारत मे वशावली वर्णित है और महाभारत काल के पश्चात के भारतीय साहित्य के सहस्त्रश ग्रन्थों में-चाहे वह ऐतिहासिक ग्रन्थ पुराणादि हो अथवा इतिहासातिरिक्त साहित्य। महाभारत को इतिहास के रूप में उद्धृत व वर्णित किया गया है। लेख का कलेवर अधिक न बढ जाये, इस कारण हम उन सब प्रमाणों को यहा प्रस्तुत नहीं कर रहे, जिन्हे हमारी उक्त बातो की सत्यता प्रमाणित करना हो, वह इन दोनो आधारों को महाभारत और उसके पश्चात् के पाच सहस्त्र वर्ष तक लिखे गये भारतीय साहित्य में देखलें।

इसके अतिरिक्त इतिहास की सत्यता स्थानों से प्रमाणित हुआ करती है। महाभारत से सम्बन्धित समस्त स्थान आज भी भारत भू पर विद्यमान है।

दिल्ली स्थित पाडवों द्वारा इन्द्रप्रस्थ बनाये जाने का परिचय अपने भग्न अस्तित्व द्वारा दे रहा है। पुरूवंश की पुरानी राजधानी हस्तिनापुर उत्तर प्रदेश के मेरठ जनपद मे और उसके निकट ही गगा के दूसरे तट पर बिजनौर जनपद स्थित विदुर कुटी है ही। अभिमन्यु पुत्र परीक्षित द्वारा बसाया हुआ परीक्षितगढ और कौरवों द्वारा पाडवों का लाक्षागृह में जलाये जाने का स्थान बरनावा मेरठ जनपद में अवस्थित है तो काशीपुर जनपद उद्यमसिह नगर में द्रोण सागर भी है और बिजनौर जनपद के नगर नजीबाबाद से उत्तर 'मथुरा और हाल्ट' स्टेशन के निकट महाभारतकालीन मयूरध्वज राजा के दुर्ग के अवशेष अब भी है। और तो और स्वय महाभारत युद्ध का मैदान कुरूक्षेत्र भी हरियाणा प्रदेश में दिल्ली-अमृतसर रेलवे लाइन पा करनाल और अम्बाला के मध्य मीलों तक विस्तृत रूप में आज भी अपनी उपस्थिति का परिचय दे रहा है। जहा कुरुक्षेत्र तथा रेलवे जक्शन बने हुए हैं।

आधुनिक युग के महान् सुधारक महर्षि स्वामी दयानन्द ने अपने महान् ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास के अन्त में आर्य राजाओं की एक लम्बी सूची दी है। इस सूची का प्रारम्भ उन्होंने महाराजा युधिष्ठिर के नाम से किया है। सत्यार्थप्रकाश को स्वनामधन्य महर्षि ने डा० सरकार के जन्म से बहुत पहले लिखा है। सन् १८७५ में इस ग्रन्थ का प्रथम सस्करण प्रकाशित हुआ है। डा० सरकार और उनके समर्थक ध्यान से इस ग्रन्थ के उक्त स्थल को पढें। अब सन् २००० ईस्वी मे इस ग्रन्थ को प्रकाशित हुए १२४ वर्ष बीत रहे हैं। इस सूची में महर्षि ने महाराजा युधिष्ठिर की तीस पीढियों का राज्य करना दर्शाया है। युधिष्ठिर से लेकर क्षेमक पर्यन्त तीस राजाओं के नाम तो दिये ही हैं, साथ ही उनमें से प्रत्येक का राज्यकाल १७७० वर्ष ११ मास १० दिन का है। इनमें से अन्तिक तीसवे राजा क्षेपक को मारकर उसका प्रधान राज्याधिकारी विश्रवा राजा बन बैठा था।

इस सूची से महाभारत का काल निर्णय करने मे भी बडी सहायता मिलती है। यह सम्पूर्ण सूची महाराजा युधिष्ठिर से महाराजा यशपाल पर्यन्त ४१५७ वर्ष ९ मास १४ दिन के दीर्घकाल की है। यह यशपाल पृथिवीराज चौहान की पाचवीं पीढी मे वर्णित है। यदि यशपाल के राज्यकाल को बीते हुए एक सहस्त्र वर्ष भी मान लिये जाये तो भी महाभारत से वर्तमानकाल पर्यन्त ५१६० वर्ष के लगभग महाभारत का युद्ध हुए बीत चुके है। हम समझते हैं कि डा० सरकार के वक्तव्य से प्रसारित भ्रान्ति के निवारण के लिये यह इतनी पक्तिया ही पर्याप्त हैं। विचारक महानुभाव इतने से ही समझ लेगे कि अब से लगभग ५२०० वर्ष पूर्व कौरव- पाण्डवों में युद्ध हुआ था और महाभारत नामक ग्रन्थ में उसी का सत्य वर्णन है तथा महाभारत आर्यजाति का महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रन्थ है।

गाय का विनाश क्यों हुआ

याद रखिये जिस दिन गाय विश्व मे नहीं रहेगी, उस दिन विश्व मे कोई भी प्राणी नहीं बचेगा। जब तक 'आर्य' हिन्दू गाय को पूज्य मानता रहा देवी देवताओं का दिव्य मन्दिर मानता रहा। तब तक गौ माता के लिए मरता रहा है। परन्तु जब गाय को दूध देनेवाला पशु बताकर सामने खडा कर दिया तब से हिन्दुओ ने गोरक्षा से मुंह मोड लिया। दुनिया की सबसे प्राचीन पुस्तक हैं वेद और हिन्दुओ की भी आस्था है वेद मे। वेद को सर्वोपरि ग्रन्थ मानते हैं। वेद ने गाय को माता का स्थान दिया है वेद ने गोरक्षा व पालन का उपदेश दिया।

१-१६-४ अथर्ववेद मे लिखा है जो गाय को मारता है उसे शीशे की गोली से मार दो। हिन्दुओं के समस्त ग्रन्थ गाय की उपमा से भरे पडे हैं सबने गौ पालन व रक्षा का आदेश दिया है। भारत के ऋषि-मुनि साधु-सन्तो ने गाय की प्रशसा की है और समय-समय पर गौ वश बचाने का सदेश दिया है। राजा-महाराजाओ ने भी गाय की सेवा के लिये अनेको सघर्ष किये हैं। यहा तक है कि विदेशी मुसलमान बादशाहो ने भी गौ हत्यारो को कठोर दण्ड दिया है। अकबर बादशाह की विशाल गौशाला थी। मुस्लिम शासनकाल में कोई बूचडखाना भारत देश मे नहीं था। बाबरशाह का फरमान पढो।

देश मे चुटकी भर अग्रेज आये और अग्रेजो ने नीति बनाई फूट डालो और राज करो। हिन्दू-मुसलमानो के झगडे कराने का सस्ता रास्ता था कि गोहत्या को बढावा देना, अल्प मुसलमानों को उकसाते रहे और भोले-भाले हिन्दुओं को दबाते रहे। दोनो पक्षों को झगडो मे उलझा दिया। मुट्ठीभर चालाक अग्रेज देश पर राज करने लगा। देशवासियो का शोषण होने लगा देश मे जुल्म होने लगे।

इस जुल्मी अधकार मे देवदयानन्द जी आये जिन्होने गभीरता से विचार किया भारत माता की दुर्दशा को निहारा और सोचा कि आर्यो की सतान गुलामी के बधन मे पडा सिसक रहा है। सर्वप्रथम स्वराज की घोषणा की और कहा कि विदेशी शासन से स्वदेशी शासन अच्छा है। विदेशी शासन चाहे माता-पिता की तरह रखे तब भी बुरा है। स्वराज होना चाहिए। "सत्यार्थ प्रकाश" पढ़ें, और कहा जिस देश मे गाय-बैल की हत्या होती है वहा पर राजा और प्रजा दोनो का विनाश होता है। गौ वश के हितैषी द्वापर मे भी कृष्ण भगवान आये जिनका नाम गोपाल पडा और कलियुग मे महर्षि दयानन्द जी आये जिन्होने गौ माता की वकालत की **"गोकरणानिधि"** पुस्तक में आर्थिक आधार पर आकडे प्रस्तुत किये हैं। देश का दुर्भाग्य रहा देवदयानन्द जी को नहीं पहचाना देश दिवाने आजादी की बलिवेदी पर चढ गये और भारत देश आजाद हुआ। कुर्सी के भूखे नेताओ ने भारत मा का विभाजन ही कर दिया और गोरे अग्रेज चले गए काले अग्रेज पेट भरने लगे।

स्वतत्रता सग्राम मे लगे सभी नेताओ ने घोषणा की थी कि स्वतत्र देश मे एक कलम की नोक से गौ हत्या बद करा दी जाएगी। सन् १८५७ के गदर मे राजा-महाराजाओ को गोपनीय रूप से देवदयानन्द जी ने सबोधित किया था। गाय की लगी चर्बी के कारतूसो को लेकर मगल पाडे ने फौज मे क्रान्ति की बगावत की। आजादी के आन्दोलन मे आर्यसमाज की अहम् भूमिका रही है। यह बात काग्रेस के इतिहासकार ने भी स्वीकार किया है। गाधी जी ने कहा था कि आजादी रक्षा गाय के बिना असम्भव है। गाव गरीब बेरोजगार हो जाएगे जो आज आपके सामने आरहा है। कुर्सी मिलने पर क्या काग्रेस ने गाधी जी की बात को माना है, नहीं माना।

हिन्दुओ के पवित्र भावनाओ का दमन ७०० वर्ष तक मुस्लिम शासनकाल रहा वह खत्म न कर सका। २०० वर्ष तक अग्रजो का शासनकाल रहा वह भी हमारी सस्कृति का इतना विनाश न कर पाये। जितना भारी विनाश आजादी के इन ५० वर्षो मे हिन्दुओं मे ही स्वार्थ उत्पन्न होनेवाले नेताओ ने अपने हाथो से भारतीय सस्कृति का व गऊ वश का विनाश कर डाला। इससे बढकर शर्म और दु ख की बात क्या होगी। गहराई से विचार करें कि भारत का विभाजन हिन्दू-मुस्लिम नाम पर होगया तो क्या हक नहीं था कि भारतीय सस्कृति की रक्षा की जाये। परन्तु ऐसा नहीं किया गया। जिस गौ वश के नाम पर देश को आजादी मिली और जो सरकार गौ वश का सहारा लेकर चली वह सरकार गौ वश को मिटाने का प्रयत्न करने लगी। ५० वर्ष तक काग्रेस सत्ता पर छाई रही काग्रेस ने तो वह काम किया जिस डाल पर बैठी उसी को काट दिया। सर्वप्रथम भारत के प्रधानमत्री स्वर्गीय श्री जवाहरलाल नेहरू जी बने जिनका चुनाव निशान था दो बैलो की जोडी। नेहरू जी देखने मे भारतीय थे परन्तु अन्दर से अग्रेजों के हामी थे। क्योकि अग्रेजी शिक्षा मे पले पोसे थे। भारतीय सस्कृति का ज्ञान नेहरू जी को नहीं था। इसीलिए भारतीय सस्कृति का विनाश शुरू होगया। गोरक्षा के लिए देश के बुद्धिजीवी नेताओ ने विधेयक पास किये तो नेहरू जी ने पास न होने दिया और पद से त्याग की धमकी दी। पश्चिमी सभ्यता के कारण देश मे गौ हत्या के बूचडखानो का जाल बिछाने शुरू कर दिये। श्री नेहरू जी गौ रक्षक नहीं थे। इसलिए गौ वश का विनाश भारत मे होने लगा।

श्री जवाहरलाल नेहरू जी की पुत्री स्वर्गीय श्रीमती इन्दिरा गाधी देश की प्रधानमत्री बनीं जिनका चुनाव निशान था गाय बछडा। इन्दिरा जी ने भी उसी काम

(शेष पृष्ठ छह पर)

राष्ट्रीय एकता के लिये महर्षि के प्रयास

प्रताप सिंह शास्त्री, एम ए पत्रकार, गोल्डन विहार, गगवा रोड, हिसार

(गताक से आगे)

इस सम्मेलन की असफलता के कारण का स्पष्ट उल्लेख बाबू केशवचन्द्र सेन की जीवनी मे मिलता है- "बाबू केशवचन्द्र जब फिर दिल्ली मे स्वामी दयानन्द जी से मिले तो उन्होने कहा कि वे बहुत-सी बातो में उनसे सहमत हैं। किन्तु एक बात उनकी समझ मे नहीं आती कि वेद का सहारा लिये बिना धार्मिक शिक्षा कैसे दी जा सकती है।"

इस प्रकार इस सम्मेलन का जहाज वेद की अपौरुषेयता और निर्दोषता पर आकर अटक गया। इस बात की पुष्टि इससे भी होती है कि बाबू चन्द्रसेन ने एक बार महर्षि दयानन्द से कहा था कि यदि आप वेद की बात न कहकर यह कहें कि मैं जो कुछ कहता हू वह ईश्वर का संदेश है तो लोग आसानी से आपकी बात मान लेगे और आपको अपने एकता प्रयासों में सफलता मिल जायेगी।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने इसे स्वीकार नहीं किया। हजरत मुहम्मद व ईसामसीह की तरह वे अपने आपको खुदा का पैगम्बर कैसे मान सकते थे। सर सैय्यद अहमदखा स्वामी दयानन्द सरस्वती का आदर नहीं करते थे बल्कि यह भी मानते थे कि जिस प्रकार स्वामी जी वेदों का अर्थ करते हैं वही ठीक है। इतना ही स्वामी जी की अर्थ करने की नीति पर (शैली पर) उन्होंने कुरान का अर्थ किये जाने पर भी बल दिया। स्वामी विद्यानन्द जी ने सत्यार्थ भास्कर में आगे लिखा है-"तीन वर्ष बाद दिसम्बर सन् १८८० मे स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सेंट पीटर्स चर्च आगरा के बिशप महोदय से कहा कि यदि हम, आप तथा अन्य धर्मो (सम्प्रदाय) के नेता केवल उन बातों का प्रचार करे जिन्हे सब मानते हैं तो एकता स्थापित हो सकती है। फिर हमारे मुकाबले पर नास्तिक ही रह जाएंगे। यह उनका अन्तिम प्रयास था, क्योकि ३ वर्ष बाद सन् १८८३ मे वे अपने मोक्षधाम चले गये। किन्तु प्रयत्नो के विफल होने पर भी इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि वे ईमानदारी से भारत की एकता मे विश्वास रखते थे और इसके लिए वे धार्मिक नेताओं के परस्पर मतभेद को दूर करना आवश्यक समझते थे। स्वामी जी के सम्पर्क में आनेवाले सभी लोग उनकी सद्भावना से पूरी तरह अवगत थे। उन्होने गिरजे में जाकर बाइबल का खण्डन किया और जहा भी अवसर मिला कुरान का भी भरपूर सत्य निर्णयार्थ आलोचना की तथा अनेक प्रबुद्ध ईसाई और मुसलमान उनके भक्त थे। लाहौर में उनके प्रचार का केन्द्र डा० रहीम खा की कोठी बनी तो बम्बई मे आर्यसमाज मन्दिर के निर्माण मे एक मुसलमान ने उदारतापूर्वक सहयोग दिया।

इसी प्रकार की एक सभा का आयोजन स्वामी दयानन्द जी के गुरु दण्डी स्वामी विरजानन्द जी ने सन् १८६१ के प्रारम्भ में करना चाहा था। उस समय देशी रियासतो के राजाओं का एक दरबार आगरा में हुआ था, जिसमें बहुत से राजा महाराजा उपस्थित हुए थे। जयपुर के राजा रामसिह उनमें प्रमुख थे। दण्डी स्वामी गुरु विरजानन्द जी सरस्वती ने उनके सामने यह विचार प्रस्तुत किया था कि एक सार्वभौम सभा का आयोजन किया जाए जिसमें देशभर के पंडित आमंत्रित किये जायें। वे इस विषय पर विचार करे कि कौनसे ऐसे प्रामाणिक ग्रन्थ हैं जिन्हें सत्यासत्य एव धर्माधर्म का निर्णय करने के लिए प्रमाण माना जा सकता है। राजा जयसिह ऐसी सार्वभौम सभा का सारा खर्च उठाने को तैयार थे। परन्तु अनेक कारणों से इस सभा का आयोजन नहीं किया जा सका। इसके १६ वर्ष बाद गुरुवर विरजानन्द के शिष्य महर्षि स्वामी दयानन्द ने वैसा ही प्रयास किया, पर वे सफल न हो सके। एक धर्म की निश्चायक प्रक्रिया से अवश्यमेव आज भी राष्ट्रीय एकता अधिक सुदृढ हो सकती है। महर्षि ने अपने अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में सत्यासत्य निर्णयार्थ एक उपाय बताया है-एक जिज्ञासु ने किसी आप्त पुरुष के पास जाकर कहा-महाराज! अब सहस्रो सम्प्रदायों के बखेडों से मेरा चित्त भ्रान्त होगया है इसलिए आप मुझे उपदेश कीजिए जिसको मैं ग्रहण करू। आप्त पुरुष ने कहा-जिस बात में सब एक मत हों, वहा कल्पित झूठा, अधर्म, अग्राह्य है। जिज्ञासु ने पूछा कि इसकी परीक्षा कैसे हो ? आप्त पुरुष ने बताया-"तू जाकर इन-इन बातों को पूछ। सबकी एक सम्मति हो जाएगी। तब वह इन सहस्रों की मण्डली के बीच खडा होकर बोला-सुनो सब लोगो! सत्य भाषण में धर्म है वा मिथ्या भाषण में। सब एक स्वर होकर बोले-सत्यभाषण में धर्म और मिथ्या भाषण में अधर्म है। वैसे ही विद्या पढने में, ब्रह्मचर्य करने, पूर्ण युवावस्था में विवाह, सत्सग, पुरुषार्थ, सत्य व्यवहार आदि मे धर्म है वा अविद्या ग्रहण, ब्रह्मचर्य न करने, व्यभिचार करने, कुसग, असत्य व्यवहार, छलकपट, हिसा, परहानि करने आदि मे। सबने एकमत होकर कहा कि विद्यादि के ग्रहण में धर्म और अविद्या आदि के ग्रहण में अधर्म है। सत्यार्थप्रकाश के ११वे समुल्लास का यह उद्धरण धर्म के यथार्थ स्वरूप और सम्मेलन के दरबार के अवसर पर एकता की दिशा में किये गये महर्षि के प्रयास पर विचार बहुत कुछ साररूप में व्यक्त कर रहा है।

आज भारत सरकार तथा प्रान्तीय सरकारों में पचायत एक्ट लागू करके नारी जाति को काफी अधिकार दिए हैं जिससे स्त्री पुरुषों के समानता के अधिकार बल मिला है लेकिन महर्षि दयानन्द ने तो सन् १८७५ में ही आर्य स्थापना के साथ ही प्रजातान्त्रिक पद्धति को लागू कर दिया था और नारी उत्थान के प्रयत्न भी प्रारम्भ कर दिए थे जो राष्ट्रीय एकता के लिए सहायक सिद्ध हुए हैं। महर्षि ने लिखा है-स्त्रियों को भी शिक्षित प्रशिक्षित पुरुषों के समान किया जाना चाहिए। जिससे वे राजकार्य और न्याय प्रशासन आदि में पुरुषों के पीछे न रहें। राजाओं की स्त्रियों को चाहिए कि सब स्त्रियों को न्याय और अच्छी शिक्षा देवें और स्त्रियों का न्यायादि पुरुष न करें क्योंकि पुरुषों के सामने स्त्री लज्जित और भयमुक्त होकर बोल ही नहीं सकती। महर्षि के अनुसार रानी राजा से कहे-"जैसे आप पुरुषों के न्यायधीश हैं वैसे ही मैं स्त्रियों का न्याय करने वाली हू।" मैं आप से न्यून नहीं हू न्याय प्रकाशन जैसे कठिन कार्य में स्त्रियों की सहभगिता का उद्घोष तत्कालीन भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में एक अभूतपूर्व क्रान्ति का सूत्रपात था। उदयपुर नरेश को जो पत्र इस सम्बन्ध में महर्षि ने लिखे थे आज वे "ऋषि दयानन्द के पत्र व विज्ञापन" शीर्षक से पुस्तक रूप में प्रकाशित होकर पढने के लिए मिलते हैं नारी जाति को वे पढने चाहिए। वस्तुत ऋषि दयानन्द का सम्पूर्ण कार्य ग्रन्थों की रचना आदि कार्य भी, सन्ध्या, हवन आदि की परम्परा डालना आदि ये सब राष्ट्रीय एकता की श्रृखला में महत्त्वपूर्ण कदम हैं।"

ऋषि दयानन्द जात-पात छुआछूत असामानता आदि को राष्ट्रीय एकता मे बाधक मानते थे अत उन्होंने लिखा-"सबको तुल्य खानपान, वस्त्र व आसन दिया जाना, चाहे वह धनी हो चाहे निर्धन। वे लिखते हैं इसमें राजनियम और जाति नियम होना चाहिए कि ५वें अथवा ८वें वर्ष से आगे कोई अपने लडको और लडकियो को घर मे न रख सके। पाठशाला में अवश्य ही भेज देवें। जो न भेजे वह दण्डनीय हो। सहशिक्षा के पक्षधर ऋषि नहीं थे। अनिवार्य शिक्षा के पक्षधर थे। जो राष्ट्रीय एकता में सहायक है।

आर्यसमाज फतेहपुर (युमनानगर) का चुनाव

प्रधान श्री केहरसिह, मत्री-श्री प्रीतमलाल आर्य, कोषाध्यक्ष-श्री अमरसिह।

शोक समाचार

महाशय पूर्णसिह आर्य पूर्व मत्री आर्यसमाज सैनीपुरा रोहतक की धर्मपत्नी श्रीमती सरती देवी का दिनांक २४-८-२००१ को ८० वर्ष की आयु मे आकस्मिक निधन होगया। परमात्मा दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा उनके परिवार को इस दु ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—सभामंत्री

गाय का विनाश............(पृष्ठ पांच का शेष)

को पूरा किया जिसे श्री नेहरू जी अधूरा छोड गए थे। १ नवम्बर १९६६ निहत्थे गौ भक्तो को गोलियों से मरवा दिया गया। जो गौ भक्त गौ रक्षा के लिए सत्याग्रह कर रहे थे। सैंकडों गौ भक्त इस प्रदर्शन में बलिदान होगये। इस घटना में जलियांवाला बाग भी मात कर दिया। इस घटना का ऐसा बना कि आज तक ससद् के सामने गौ रक्षा को लेकर कोई प्रदर्शन का नाम नहीं लेता। गौ मास खाल का निर्यात भारत से विदेशों मे होने लगा।

जो भारत देश अहिसा का पुजारी था जो ससार को अहिसा का सदेश देता था। आज वहा पर गौ वश की हत्या को बढावा देकर भारत देश को खाल मास का सबसे बडा मडी व्यापार बना दिया गया है। इस काग्रेस पार्टी में खान-दान के आखिरी प्रधानमत्री श्री राजीव गाधी बने। जिसने भी मास आहार को प्रोत्साहन दिया। गौ रक्षा के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाया। गौ हत्या का शाप नेहरू वश को लगा तीनों की अकाल मृत्यु होगई। सदूर से लेकर तदूर तक की कांग्रेस यात्रा ने दूध दहीवाले देश में खून की नदियां बहा दी। गौ माता को पशु बना दिया, गंगा माता को पानी बना दिया और भारतमाता को भोग भूमि बनाने का विदेशी षड्यन्त्र देश में गौ घाती नेताओं द्वारा देश में जारी रहा है। श्रीमती सोनिया गांधी क्या देश धर्म जाति का भला कर पायेगी। जो देवी विदेशों मे जन्मी जिनका पालन-पोषण विदेशों में हुआ है। जो भारतीय सस्कृति से बिल्कुल अनभिज्ञ है। वह देश का भला कैसे सोच पायेगी। श्री मती सोनिया गाधी भी उन्हीं सपनो को सजाये हुये है जो पूर्वजों ने किये हैं भारतीय सस्कृति से प्रेम प्यार नहीं है देशवासियों को गभीरता से सोचना होगा। अनेकों बार करोडो हिन्दुओ ने हस्ताक्षर प्रस्ताव-आन्दोलन व अनशन सत्याग्रह किये लेकिन इस धर्मनिरपेक्ष राज से हिन्दुओ की अभिलाषा अधूरी ही रही और गौ हत्या का कलक आज भी भारतीयों के माथे पर लगा है। गौ हत्या का बढावे का मूल कारण ही श्री नेहरू जी और इन्दिरा जी रही हैं। यथा राजा तथा प्रजा आज सिद्ध हो चुका है। गौ हत्या की जड इतनी गहरी जम गई है कि कोई भी हिलाने का साहस नहीं कर सकता। भारतवासी दूध को तडफ रहे हैं। आज का नौजवान हिसक बन रहा है। भारत में अंग्रेजी शासन काल मे २८० कत्लखाने थे। आज देश मे लगभग ४००० कत्लखाने चल रहे हैं। आजादी के पूर्व तैंतीस करोड गौ वश था और आज सौ करोडवाले देश मे लगभग तीन करोड गौ वंश बचा है। वह भी कत्लखानों में पहुचाया जारहा है।

—सुन्दरमुनि, मेवात

आर्य-संसार

आर्यवन में योग शिविर

दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन में १९ अक्तूबर से २८ अक्तूबर २००१ तक १० दिन के योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें मातायें भी भाग ले सकेंगी। शिविरार्थी १८ अक्तूबर को सायकाल ४ बजे तक शिविर स्थल पर पहुच जावे।

शिविर में योगदर्शन के सूत्रों का अध्यापन तथा क्रियात्मक योग साधना सिखाने के साथ-साथ यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि, विवेक-वैराग्य-अभ्यास, जप-विधि, ईश्वरसमर्पण, स्वस्वामी सम्बन्ध ममत्व को हटाने जैसे अनेकों सूक्ष्म आध्यात्मिक विषयों पर विस्तार से प्रकाश डाला जायेगा।

शिविर शुल्क रु० ३००/- निर्धारित किया गया है। शिविर शुल्क राशि मनीआर्डर द्वारा ही व्यवस्थापक योग शिविर, आर्यवन के नाम से भेजे।

पत्रव्यवहार का पता-
दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन, रोजड़, पत्रालय-सागपुर,
जिला साबरकाठा (गुजरात) पिन-३८३३०७
दूरभाष (०२७७४) ७७२१७, ७७७१७, टेलीफैक्स (०२७७०) ८७४१७
E-mail · darshanyog@icenet net

भगवान् कृष्ण का जीवन संघर्षमय था

आर्य समाज में श्री कृष्ण जन्माष्टमी समारोह

कानपुर, भगवान् कृष्ण का जीवन सघर्षमय था। उन्होंने जन्म से लेकर सम्पूर्ण जीवन भर धर्म, न्याय और सच्चाई के लिए आततायों और अधर्मियों से सघर्ष किया। भगवान् श्री कृष्ण का जीवन हमें प्रेरणा देता है कि महान् बनने के लिए सघर्ष मय जीवन अपनाना पडता है। सन् १९४७ मे पाकिस्तान से आये शरणार्थी सघर्ष करके अब पुरुषार्थी बन गये और सब कुछ पुन प्राप्त कर लिया।

उपरोक्त विचार आर्यसमाज एव केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने आर्यसमाज मन्दिर गोविन्द नगर के सभागार मे आयोजित 'श्रीकृष्णजन्माष्टमी' समारोह की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किये।

-बाल गोविन्द आर्य, मन्त्री-आर्यसमाज गोविन्द नगर, कानपुर

श्रावणी पर्व सम्पन्न

श्री दयानन्दोपदेशक महाविद्यालय वैदिक साधना आश्रम, शादीपुर, यमुनानगर में ०५-०८-२००१ रविवार को श्रावणी पर्व बडी धूम-धाम से मनाया गया। जिसमे नवीन ब्रह्मचारियों को वेदारम्भ तथा उपनयन सस्कार श्री आचार्य वागीश्वर जी के ब्रह्मत्व में तथा आचार्य राजकिशोर जी की देख-रेख में सम्पन्न कराया गया। इस अवसर पर आर्यजगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री कल्याण सिह जी वेदी सहारनपुर, त्यागी तपस्वी श्री स्वामी सदानन्द जी फ्तेहपुर, श्री इन्द्रजीत देव जी यमुनानगर, श्री शेरसिह जी भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक श्री अमरनाथ सगीताचार्य सहारनपुर, श्री मनोहरलाल जी साहनी महामत्री आर्यसमाज माडल टाउन, यमुनानगर तथा विद्यालय के ब्रह्मचारीगण द्वारा भजन एव भाषणों को सुनकर लोगों ने खूब प्रशसा की।

-डॉ० गेदाराम आर्य, मन्त्री, उपदेशक महाविद्यालय, गुरुकुल शादीपुर, यमुनानगर

ऋषियों के विचारों की तरफ लौटता समाज-अनिल मलिक

आज वेद प्रचार सप्ताह के अन्तिम दिन अपने हाथों से यज्ञ की पूर्णाहुति उपायुक्त रोहतक ने की। यज्ञो से पर्यावरण व समाज सुधार के विषय में भी उन्होंने बताया। आर्यसमाज बहुअकबपुर की भव्य यज्ञशाला मे ६० यज्ञमानों ने आचार्य वेदमित्र के ब्रह्मत्व में वैदिक कर्मकाण्ड पूर्ण किया। उन्होने बताया कि भौतिक साधनों से स्वल्प सुख लेकर, परम आनन्द हेतु योगाभ्यास से मन शुद्ध करने का प्रयास करना चाहिए। यज्ञ को श्रेष्ठतम कर्म कहा है। **यज्ञ वै श्रेष्ठतमम् कर्म.।** अमेरिका जैसे राष्ट्र आज वैदिक सस्कृति से परिपूर्ण ४८४ एकड में वैदिक ग्राम बसा रहा है। जहा पर कृषि कार्य द्वारा सादा जीवन यापन तथा अन्न आदि की करैन्सी से आदान-प्रदान व प्रकृति के अनुरूप जीवनयापन की योजना है। आज वैश्वीकरण ने एक-एक आदमी को अपने पजे में जकड लिया है। लेकिन वैदिक सस्कृति Co-ordination की सस्कृति है। जो जीवन का परम लक्ष्य है।

भव्य यज्ञशाला में यज्ञमानो ने जोडे के रूप में हिस्सा लिया। श्री धर्मपाल मलिक (निदेशक आकाशवाणी रोहतक) ने यज्ञमान बनकर यज्ञारम्भ किया। समापन श्री अनिल मलिक उपायुक्त रोहतक व श्रीमती व श्री महेन्द्रसिह धनखड जिला राजस्व अधिकारी ने *यज्ञमान बनकर किया। सभी यज्ञमानों को आर्यसमाज की तरफ से सत्यार्थप्रकाश की प्रति* भेंट की गई। यज्ञ की पूर्णाहुति के बाद नेता जी सुभाषचन्द्र की स्मृति में स्मृति यज्ञ की आधारशिला श्रीमान अनिल मलिक उपायुक्त ने रखी। यज्ञ सम्मेलन में गाव में मेले जैसा वातावरण था।

-मन्त्री, जगदेवसिंह आर्य

आर्यसमाज नं० ३ एन.आई.टी. फरीदाबाद में जन्माष्टमी महोत्सव

आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद के सौजन्य से चलाए गए वेद प्रचार सप्ताह का समापन समारोह फरीदाबाद की सभी आर्यसमाजो ने सम्मलित रूप मे भगवान् श्री कृष्ण जन्मोत्सव बडी धूमधाम से मनाया गया जिसकी मुख्य झलकिया निम्न प्रकार हैं-

१ प्रात प० जयदेव शर्मा जी के निर्देशन मे जन्मोत्सव का यज्ञ हुआ जिसमे श्रीमती शीला अहुजा, अनिल आर्य देवेन्द्र अरोडा तथा नरेन्द्र आर्य परिवार मुख्य यजमान थे।

२ गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के मुख्य अधिष्ठाता आर्यत्व की प्रतिमूर्ति श्री भगत मगतूराम जी के करकमलो द्वारा ध्वजारोहण आर्यवीर दल तथा आर्य युवक परिषद् के सौजन्य से सम्पन्न हुआ। इसअवसर पर भगत जी ने वैदिक धर्म अर्थात् मानव धर्म का लाभ एव जानकारी अपने आदर्श व्यवहार के द्वारा विश्व के कोने-कोने मे पहुचाने के लिए प्रेरित किया।

३ सासद श्री रामचन्द्र बैंदा जी के कर-कमलो से आर्यसमाज के मुख्यद्वार तथा पुस्तकालय का शिलान्यास किया गया। इस अवसर पर उन्होने धर्म के नाम पर फैलती जा रही भ्रान्तियो के निवारणार्थ जन जागरण अभियान चलाने तथा आर्यसमाजो से बाहर निकलकर सार्वजनिक महासम्मेलन करने का आह्वान किया, जिसका सभी ने न केवल अनुमोदन किया अपितु २ दिसम्बर को दशहरा ग्राउण्ड में एक सौ एक कुण्डीय यज्ञ करने का निर्णय लिया।

-सुरेश गुलाटी, महामन्त्री आर्यसमाज न० ३, एन आई टी, फरीदाबाद

वैदिक विद्वान् आचार्य उमाकान्त उपाध्याय व आर्यश्रेष्ठ गजानन्द आर्य सम्मानित

हिण्डोन सिटी। आर्यसमाज हिण्डोन सिटी के अन्तर्गत रक्षाबन्धन से श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तक श्रावणी उपाकर्म के उपलक्ष्य मे यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया। आर्यसमाज हिण्डोन सिटी जहा साहित्य प्रकाशन मे महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रहा है वहीं वैदिक विद्वानो का सम्मान भी करता है।इसके अन्तर्गत इस वर्ष सोलहवा श्री घूडमल प्रह्लादपुर आर्य साहित्य पुरस्कार आर्यससार पत्रिका का ३९ वर्षो से लगातार सम्पादन कर रहे प्रतिष्ठित चिन्तक कोलकाता के आचार्य उमाकान्त उपाध्याय का उनके द्वारा लिखित **'सत्यार्थप्रकाश सन्दर्भ दर्पण'** को प्रतिनिधि मानकर सम्मान किया गया। *सम्मान के अन्तर्गत अभिनन्दन-पत्र, शाल, स्मृतिचिह्न, हिण्डोन से प्रकाशित चालीस* पुस्तको का सैट, तेरह हजार एक रुपये की राशि भेट की गई।

इसी अवसर पर महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा, अजमेर के प्रधान आर्यरत्न गजानन्द आर्य कोलकाता को दूसरा रक्तसाक्षी प० लेखराम स्मृति पुरस्कार द्वारा सम्मानित किया गया। इसके अन्तर्गत अभिनन्दन-पत्र, शाल, स्मृति-चिह्न, हिण्डोन से प्रकाशित चालीस पुस्तको का सैट, दस हजार एक रुपये भेट किये गये। आर्यपत्नी को भी पति का आत्मना सहयोग के लिए सम्मान किया गया। श्री आर्य ने सम्मान राशि परोपकारिणी सभा को भेट कर दी और कहा कि महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के माध्यम सेजो विश्वकल्याणकारी आन्दोलन आरम्भ किया, मेरी कामना है यह प्रभुकृपा व आपके सहयोग और विद्वानो के आशीर्वाद से हमेशा चलता रहे।

-प्रभाकरदेव आर्य

डॉ० सुदर्शनदेव आचार्य को पुत्रशोक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपमन्त्री एव वेदप्रचार अधिष्ठाता डॉ० सुदर्शनदेव आचार्य के नवयुवक सुपुत्र सजीव कुमार शास्त्री का दिनाक २०-८-२००१ को आकस्मिक निधन हो गया। उनका अन्तिम सस्कार वैदिक रीति से किया गया। उनके अन्तिम सस्कार मे सभा के कार्यकर्ता प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी, चौ० सूबेसिह जी सभा उपप्रधान, चौ० धर्मपाल जी, श्री वेदव्रत शास्त्री पूर्व सभामन्त्री तथा सभा कार्यालय के कर्मचारी शामिल हुए।

परमात्मा दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा उनके शोक सतप्त परिवार को इस विकट दु ख को सहन करने की शक्ति देवे। उनका शान्तियज्ञ दिनाक ३१-८-२००१ को निवास स्थान ७७६/३४ हरिसिह कालोनी सरकूलर रोड, रोहतक पर प्रात ९ बजे होगा।

-प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामन्त्री

शोक समाचार

आर्यसमाज सिरसा के उपप्रधान श्री हेतराम पूर्व बी डी ओ का दिनाक १०-८-२००१ को स्वर्गवास हो गया। उनके पैतृक गाव खारिया जिला सिरसा मे दिनाक २१-८-२००१ को शान्ति यज्ञ किया गया। परमात्मा दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा उनके परिवार को इस दु ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

-सभामन्त्री

पंजाब हिन्दी रक्षा आन्दोलन १९५७ में कैरोंशाही द्वारा प्रताड़ित एक परिवार के मुखिया का सभाप्रधान के नाम खुला-पत्र

चौ० देवीलाल, चौ० बदलूराम, प्रो० शेरसिह व 'हिन्दी रक्षा आन्दोलन' के पुरोधा स्वामी ओमानन्द सरस्वती को बदनाम करने का षड्यन्त्र-श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा, प्रधान काग्रेस उसके कोषाध्यक्ष प्रीतमसिह के द्वारा बहु अकबरपुर आर्यसमाज के फर्जी सम्मेलन में बदनामी–

श्रीमान् जी,

हिन्दी सत्याग्रह १९५७ जो उपरलिखित नेताओं ने चलाया था, इसमें १५ अगस्त १९५७ में श्री रणबीर सिह एम पी ने अपनी दुश्मनी निकालने के लिए रामसिह डी आई जी व प्रीतमसिह कोषाध्यक्ष काग्रेस से मिलकर लोगों तथा हमारे खानदान के सब आदमियों को पकडवाया व हमारे घर की महिलाओं तथा हमारी माता जी को बेरहमी से पिटवाया और बेइज्जती करके हमारे घर को ताला लगवा दिया। जिसका विवरण विस्तार से पुस्तक **'पजाब का हिन्दी रक्षा आन्दोलन'** १९५७ संलग्न में दिया गया है। इस पुस्तक के सातवा (सलग्न) अध्याय में स्पष्ट लिखा है कि श्री रणबीर सिह एम पी पिता श्री भूपेन्द्र सिह हुड्डा, प्रधान हरियाणा काग्रेस के मुखालफत की थी। उन्हीं लोगों ने इस जलसे का बहु अकबरपुर गाव में आयोजन करवाया। लोगों ने जब स्वामी ओमानन्द को बुलाने को कहा तो प्रीतमसिंह तथाकथित अठगामा प्रधान ने उन्हें गद्दार कहकर आमन्त्रित नहीं किया। यह कैसी विडम्बना है कि १५ अगस्त १९५७ के **'हिन्दी रक्षा आन्दोलन'** के कर्णधारों के साथ जुल्म करवा रहा था, उसी प्रीतम सिह (तथाकथित) प्रधान अठगामा को इस जलसे में समाज सेवा के लिए पुरस्कृत किया गया है। दैनिक जागरण, नई दिल्ली १६ अगस्त, २००१ की कटिंग सलग्न है। इसलिए जो असली आर्यसमाजी हैं उन्होंने इसका बहिष्कार किया। इस जलसे में प्रीतमसिंह ने सत्ताधारी इनेलो को बुरी भली बातें कही और उनको हिन्दी रक्षा आन्दोलन के विरुद्ध बताकर हरियाणा बनाने का श्रेय लेना चाहा। चौ० बदलूराम चौ० देवीलाल के आखिरी दम तक साथी रहे और चौ० बदलूराम व उसकी पार्टी के नाते श्री रणबीर सिह एम पी ने दुश्मनी निकालने के लिए उसके रिश्तेदार होने के नाते हमारे घर परिवार के सदस्य जो उस वक्त नई नौकरी में थे, उनको गिरफ्तार करवाया।

यदि आर्यसमाज ने भी ऐसे बहरूपिये व मौकापरस्त लोगो को पुरस्कृत करवाया तो यह आर्यसमाज की सबसे बडी बदनामी है। असल में मैं आपसे प्रार्थना करता हू कि इस बात की जाच करवाकर असल पीडित गाव बहुअकबरपुर के "हिन्दी रक्षा आन्दोलन" के कार्यकर्त्ताओं को हरियाणा स्तर के सम्मेलन में पुरस्कृत किया जाए।

आपका सेवक

हजारी
पु० चौ० किशन लाल

चौ० रामचन्द्र बल्हारा
पुत्र चौ० रामपत सिह पटवारी
गाव व डा० बहु अकबरपुर, रोहतक
हाल–बल्हारा निवास, आदर्श नगर, रोहतक

अत्यावश्यक सूचना

(प्रतिनिधि फार्मों की जांच)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के त्रैवार्षिक चुनाव हेतु भेजे गए प्रतिनिधि फार्मों की जांच के समय कुछ आर्यसमाजो के प्रतिनिधि फार्मों मे कुछ कमियां दृष्टिगोचर हुई हैं। सभी को यू पी सी पत्र द्वारा सूचित करके ७ दिन में आपत्तिया दूर करने के लिए लिखा गया है। देखने मे आया है कि ऐसे आर्यसमाज इस विषय को गम्भीरता से न लेकर आपत्तियां दूर नहीं करा रहे हैं। ऐसी स्थिति में प्रतिनिधि फार्म में भरे सभी प्रतिनिधि नियमानुसार स्वीकार नहीं हो सकेंगे। अत तत्काल सभा कार्यालय से सम्पर्क कर आपत्तियों का निराकरण करने में सभा को सहयोग देने की कृपा करें।

–प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामन्त्री

आर्यसमाज मन्दिर गोहाना शहर का चुनाव

प्रधान–श्री धर्मरत्न, सचिव–यश मल्होत्रा, व० उपप्रधान–खेमचन्द सिन्दवानी, क० उपप्रधान–भूषण हसीजा, सहायक सचिव–रामकिशन परुथी, कोषाध्यक्ष–जयचन्द मल्होत्रा, सहायक कोषाध्यक्ष–ओमप्रकाश कक्ड, निरीक्षक–सुरेश मल्होत्रा, सरक्षक–राजेन्द्र लाल मल्होत्रा, डॉ० रामलाल गुलाटी, डॉ० सदीप सेतिया।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी उत्सव सम्पन्न

दिनाक १२-८-२००१ को आर्यसमाज फतेहपुर (वैदिक संन्यास आश्रम, फतेहपुर) यमुनानगर के प्रांगण में स्वामी सदानन्द सरस्वती जी के सयोजन में योगीराज श्री कृष्ण जन्माष्टमी बड़े हर्षोल्लास से मनाई गई। प्रात. चार बजे (प्रभात फेरी) नगर कीर्तन किया गया जिसमें काफी सख्या में ग्रामवासी उपस्थित थे। तत्पश्चात् सामूहिक सन्ध्या, यज्ञ सत्संग हुआ। यज्ञोपरान्त श्री मद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय शादीपुर (यमुनानगर) से आमन्त्रित सुयोग्य विद्वान् डॉ० आचार्य श्री राजकिशोर जी से पूर्व ब्रह्मचारियों ने दो भजनों के माध्यम से ईश्वर स्तुति प्रार्थना की। तदोपरान्त आचार्य जी का ओजस्वी प्रवचन हुआ जिसमें उन्होंने पर्व, सत्सग आदि शब्दों की परिभाषा महिमा बताते हुए महात्मा कृष्ण जी के जीवन चरित्र का जो पौराणिक, हिन्दू न होकर अर्थात् आर्य थे। ब्रह्मचर्य का महत्त्व बताते हुए नौजवानों का उद्बोधन किया। योगेश्वर कृष्ण जी के श्रेष्ठ वेदानुयायी होने का प्रमाण देते हुए वेदानुकूल जीने वाले श्रेष्ठ व ज्येष्ठ पुण्य आत्माओ का गुणगान करते हुए वैदिक उद्घोष बुलवाये गये। सभी उपस्थित जन साधारण आचार्य जी के व्याख्यान से प्रभावित होकर वेदानुकूल आचरण करने का सकल्प लिया।

प्रीतम आर्य, मन्त्री–आर्यसमाज शादीपुर

शोक प्रस्ताव

बडे दु:ख के साथ यह सूचित किया जाता है कि राजभाषा हिन्दी के लिए आजीवन सघर्ष करने वाले ऋषिभक्त आर्यश्री जगन्नार्थ जी का दिनाक १८-०८-०१ को प्रात.४-३० बजे देहावसान हो गया। वे आर्यसमाज के सक्रिय सदस्य और वरिष्ठ आर्य नेता केन्द्रीय शिक्षा, कृषि और रक्षा राज्यमन्त्री प्रो० शेरसिह के निजी सहायक के रूप में आर्यभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण सहयोग देते रहे। उनकी महत्त्वपूर्ण सेवाएं प्राप्त कर केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद्, हिन्दी अकादमी, दिल्ली राजभाषा संघर्ष समिति, आर्यसमाज संदेश विहार तथा सरस्वती विहार, दिल्ली तथा कन्या गुरुकुल नरेला आदि अनेक सस्थाएं गौरवान्वित हुई हैं।

हरयाणा राष्ट्रभाषा समिति, दयानन्दमठ, रोहतक ऐसे कर्मठ और तपस्वी सत्याग्रही को खोकर अत्यन्त दु.खी हैं और ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि उनकी जलाई हुई ज्योति को चिर-प्रकाशित रखकर उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें और उनके शोकग्रस्त परिवार तथा सभी आत्मीयों-सहयोगियों को यह अपूरणीय क्षति सहन करने की क्षमता प्रदान करें।

ओ३म् शान्ति । ओ३म् शान्ति. । ओ३म् शान्ति ।

–श्यामलाल संयोजक

महम में ऋग्वेद पारायण यज्ञ व वेद-कथा सम्पन्न

विगत वर्षों की भांति आर्यसमाज महम में दिनाक ४ अगस्त श्रावणी से १२ अगस्त कृष्ण जन्माष्टमी तक ऋग्वेद पारायण महायज्ञ एव वेद कथा का आयोजन किया गया जिसमें वेदकथा एव यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य डॉ० प्रमोद जी शास्त्री एम ए, पी-एच डी प्राध्यापक व पुरोहित आचार्य रामसुफल शास्त्री हांसी थे। आर्यवीर दल महम के सदस्यों सहित प्रारम्भ से अन्त तक ११ यज्ञमान बनें। जिसमें मुख्य यज्ञमान श्री जयप्रकाश जी सुपुत्र श्री रत्नप्रकाश जी आर्य मत्री आर्यसमाज महम थे।

श्रावणी पर्व तथा वेदकथा

आर्यसमाज जीन्द शहर में श्रावणी पर्व तथा वेदकथा बडी धूमधाम से मनाया गया। महात्मा प्रेम प्रकाश जी धूरी वालों ने वेदकथा की तथा श्री रामकुमार जी की मण्डली ने मनोहर गीत गाए। यह कथा ३-८-२००१ से ५-८-२००१ तक चली। श्रावणी वाले दिन प्रात यज्ञ किया गया। उपस्थित आर्य-बहनों, भाइयों ने यज्ञोपवीत धारण किया। ५-८-२००१ को यज्ञ तथा भजन एव उपदेश हुआ और प्रीतिभोज किया गया जिसमें सभा के उपमन्त्री श्री रामधारी शास्त्री उपस्थित हुए।

–मोहनलाल, मन्त्री

आर्यसमाज भऊ-अकबरपुर (रोहतक) का चुनाव

प्रधान–श्री हवासिह, उपप्रधान–श्री रामकवार, जयसिह, मन्त्री–श्री जगदेवसिंह, रामपाल, कोषाध्यक्ष–श्री सुभाष, राजवीर, प्रचारमन्त्री–सुनील कुमार, धर्मवीर, पुस्तकाध्यक्ष–राजेश, रमेश कुमार, संरक्षक–श्री रामभज, मोहरसिंह, जिलेसिंह, रामेहर, धर्मपाल, रघबीर व महाबीर।

–जगदेवसिंह आर्य, मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिग प्रेस, रोहतक (फोन : ७६८७४, ५७७७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ७७७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०२
पंजीकरणसख्या टैक/एच.आर./49/रोहतक/99 ☎ ०१२६२-७७७२२

प्रधानसम्पादक : प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री स... आचार्य
वर्ष २८ अंक ३६ ७ सितम्बर, २००१ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) ... ७०

पितृयज्ञ (श्राद्ध-तर्पण) अंक

तीन सितम्बर से आरम्भ श्राद्ध व तर्पण पर विशेष :–

जीवित माता-पिता से दंगमदंगा, मरने पर उन्हें पहुंचावें गढ़गंगा ॥

❑ सुखदेव शास्त्री महोपदेशक,
दयानन्दमठ, रोहतक (हरयाणा)

तीज-त्यौहारो के मनाने मे प्रसिद्ध भारत मे कोई भी ऐसा दिन नहीं होता जिस दिन कोई तीज-त्यौहार व पर्व न होता हो। यह तीज-त्यौहारो का अन्धविश्वास पौराणिको द्वारा फैलाया गया। भ्रम अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए किया गया है। यही भ्रम श्राद्ध तर्पण के विषय मे भी फैलाया गया है।

महाभारत के युद्ध के पश्चात् जिस समय सब वैदिक विद्वान् ऋषि-महर्षि समाप्त होगए उसी समय से यह पाखण्ड प्रबल होगए थे। अन्धपरम्परा चली, आर्यमर्यादाए समाप्त होगई थीं। महर्षि वेदव्यास ने अपने वेदान्तदर्शन की समाप्ति पर घोषणा की थी कि–

'उपदेश्योपदेष्टृत्वात् तत्सिद्धि, इतरथाऽन्धपरम्परा'

अर्थात् जब सत्योपदेशक होते हैं जब तक सभी श्रेष्ठ कर्तव्य कर्मो की सिद्धि होती है, उनके न रहने से सर्वत्र अन्धपरम्परा ही प्रचलित होजाती है। जैसे कि आजकल सर्वत्र देश मे व्रत-त्यौहारो के नाम पर अन्धपरम्परा प्रचलित होरही है।

पर्व-त्यौहारो का बडा महत्त्व होता है। जनता मे उन-उन पर्वो के महत्त्व के कारण जनजागृति पैदा होती है। जैसे कि अभी गत सप्ताह श्रावणी का पर्व मनाया गया है, उससे सभी यह व्रत लेते हैं कि हम सब वेदादि शास्त्रों का स्वाध्याय करेगे। यज्ञोपवीत परिवर्तन का भी महत्त्व माना जाता है। उसी दिन रक्षाबधन का त्यौहार भी मनाया जाता है। इन सबका प्रजा के जीवन मे बडा महत्त्व होता है। इसी प्रकार विजयदशमी, दीपावली, होली का भी अपना महत्त्व होता है। ये चार पर्व तो मनाने के योग्य हैं।

श्राद्ध व तर्पण–

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने ग्रन्थो में पञ्चमहायज्ञों का विधान किया है, विशेषकर पचमहायज्ञ विधि में। इनके अतिरिक्त सत्यार्थप्रकाश के चतुर्थ समुल्लास मे इन यज्ञों के करने का विधान किया है। ये पाच हैं–(१) ब्रह्मयज्ञ, (२) देवयज्ञ, (३) पितृयज्ञ, (४) अतिथियज्ञ, (५) बलिवैश्वदेव-यज्ञ। इनमे तीसरे पितृयज्ञ के दो भेद हैं–एक श्राद्ध और दूसरा तर्पण। श्राद्ध अर्थात् श्रत् सत्य का नाम है–**'श्रद्धया यत् क्रियते तच्छ्राद्धम्'** जिस क्रिया से सत्य का ग्रहण किया जाय उसको 'श्रद्धा' और जो श्रद्धा से कर्म किया जावे उसका नाम श्राद्ध है और **'तृप्यन्ति तर्पयन्ति येन पितॄन् तत्तर्पणम्'** जिस-जिस कर्म से तृप्त अर्थात् विद्यमान माता-पितादि पितर प्रसन्न हो और प्रसन्न किये जाए उसका नाम 'तर्पण' है। परन्तु यह जीवितो के लिए है, मृतको के लिए नहीं। श्राद्ध व तर्पण जीवितों का ही सम्भव है, मरे हुओ का कभी भी नहीं। इनका प्रयोजन देव, माता-पिता, गुरुजन तथा ऋषि-मुनियो की सेवा करना है।

पचमहायज्ञविधि मे महर्षि दयानन्द ने स्पष्टरूप से बताया है–**'श्रद्धया तर्पण क्रियते विद्यमानानाम्। श्रद्धया यत्क्रियते तच्छ्राद्धम्। 'तृप्त्यर्थं यत् क्रियते तत्तर्पणम्'**। जो पितर विद्यमान हो, अर्थात् जो जीवित हो, उनको प्रीति से सेवादि से तृप्त करना तर्पण और श्रद्धा से प्रीतिपूर्वक सेवा करना है, वह श्राद्ध कहाता है।

पितृ-तर्पण–'पालयन्ति रक्षन्ति वा ते पितर' पालन-पोषण और रक्षण करनेवाले पितर कहाते हैं। गोपथब्राह्मण मे लिखा है–**'देवा वा एते पितर, स्विष्टकृतो वै पितर'** (गो०उ० १।२४,२५) अर्थात् सुख-सुविधाओ द्वारा पालने, पोषण करनेवाले और हितसम्पादन करनेवाले विद्वान् लोग पितर कहाते हैं। इन प्रमाणों से यह सिद्ध होता है कि दिवगत-मृतक लोगो को पितर कहना या मानना शास्त्र एव युक्तियो से भी विरुद्ध है। जीवित माता-पिता, पितामह, आचार्य आदि ही पितर सज्ञक हैं।

इस प्रकार अपनी स्त्री तथा भगिनी, सम्बन्धी और एक गोत्र के तथा अन्य कोई भद्रपुरुष वा वृद्ध हो, उन सब को अत्यन्त श्रद्धा से उत्तम अन्न, वस्त्र, सुन्दर यान आदि देकर अच्छे प्रकार से तृप्त करना, अर्थात् जिस-जिस कर्म से उनकी आत्मा तृप्त और शरीर स्वस्थ रहे, उस-उस कर्म से प्रीतिपूर्वक उनकी सेवा करनी, वह श्राद्ध और तर्पण कहाता है।

इससे यह सिद्ध हुआ कि जीवित माता-पिता की सेवा करना ही सच्चा श्राद्ध एव तर्पण है। क्योकि कोई भी मनुष्य मरे हुए जीव के पास किसी पदार्थ को न पहुचा सकता है और न कोई मरा हुआ जीव अपने पुत्रादि से पदार्थो-वस्तुओ को ग्रहण कर सकता है।

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के चौथे समुल्लास मे तथा उनके अतिरिक्त बृहद् पाराशर स्मृति मे भी पितरो का वर्गीकरण इस प्रकार से किया है वे १२ है–

(१) सोमसद, (२) अग्निष्वाता (३) बर्हिषद (४) सोमपा, (५) हविर्भुज, (६) आज्यपा, (७) सुकालिन (८) यमराज, (९) पितृपितामह प्रपितामहा, (१०) मातृ-पितामही-प्रपितामहा, (११) सगोत्रा, (१२) आचार्यादि-सम्बन्धिन। इन सबकी व्याख्या आप सत्यार्थप्रकाश मे पढे।

इस प्रकार इन मृतक श्राद्ध व तर्पण से प्रतिदिन मृतको का श्राद्ध करे तो केवलमात्र आश्विन महीने के पन्द्रह दिनो मे और इन दिनो मे भी एक पितर के लिए एक ही दिन के लिए श्राद्ध करते हैं तो शेष वर्षभर के ३६४ दिन वे भूखे-प्यासे पडे रहते हैं। वे हमारे मृतक माता-पिता पता नहीं आज जन्म लेकर कहा रहते हैं किस योनि मे जन्म लिये हुए हैं, उनके पास ये सामान कैसे पहुच जाएगा।

यह तो केवल मात्र अनपढ ब्राह्मणो ने अपना पेट भरने के लिए लोगो को उनके मृत माता-पिताओ की याद दिलाकर उनसे दान-दक्षिणा लेकर पाखण्ड चलाया है। इन्होने तो सब कुछ अपने लिए धर्म-कर्म पेटेट करवा रक्खा है। अत श्राद्ध तर्पण जीवितो का होना चाहिए। मृतको का तो होना सर्वथा असम्भव है।

अंग्रेजी में आए पत्रों को वापिस कर दें

हरयाणा और केन्द्र सरकार की तरफ से यदि आपको कोई पत्र अग्रेजी मे मिलते हैं तो वे गैर-कानूनी है। आप इन पत्रो पर कार्रवाई करने पर बाध्य नहीं हैं। ऐसे पत्रो को आप उसी विभाग को वापिस करदे और लिखदे कि पत्र हिन्दी मे भेजा जाएगा, तभी हम उत्तर देगे। क्योकि हरयाणा की राजभाषा हिन्दी है। अनेक लोग ऐसा कर रहे हैं और सरकार को ऐसे लोगो को पत्र हिन्दी मे भेजना पड रहा है। ऐसा करने से राष्ट्रभाषा और हरयाणा की राजभाषा (सरकारी भाषी) हिन्दी के प्रति जनता मे जागृति आरही है। आप भी ऐसा ही करे। वापिस किए गए अग्रेजी के पत्रो की एक फोटोप्रति अपने पास रखे तथा एक प्रति हरयाणा राष्ट्रभाषा समिति को भेजे ताकि हम सरकार का ध्यान इस ओर दिला सके।

–**श्यामलाल**, सयोजक, हरयाणा राष्ट्रभाषा समिति
दयानन्दमठ रोहतक।

वैदिक-स्वाध्याय

भगवत् स्तोता संसार महासागर से तरते हैं

तरत् स मन्दी धावति धारा सुतस्यान्धस ।
तरत् स मन्दी धावति ।। (ऋ० ९.५८.१। साम०पू० ६.१२.४)

शब्दार्थ–(मन्दी) जो भक्ति, स्तुति करनेवाला, स्वय तृप्त, आनन्दमग्न पुरुष होता है (स) वह (तरत्) तर जाता है (स) वह (सुतस्य) उत्पन्न की गई (अधस) अध्यानयुक्त प्राण व वाणी की (धारया) धारा के साथ (धावति) ऊपर वेग से उठता जाता है। (स मन्दी) वह आनन्दतृप्त (तरत्) तर जाता है, (धावति) ऊर्ध्वगति द्वारा ऊपर चढ जाता है।

विनय–हे दु ख और पाप से तरना चाहनेवाले भाइयो ! देखो, कोई हैं, जो कि तर गये हैं। इस दुस्तर दीखनेवाले ससार महासागर से तरा जासकता है–सचमुच तरा जासकता है। पर तरता वह है जो कि 'मन्दी' है। क्या तुम भगवान् की भक्ति-स्तुति मे रमनेवाले हो ? क्या इस भजनरस से तुम्हारा अन्त करण तृप्त होगया है ? तुम्हारा अपना आन्तर (अन्दर) आनन्द से परिपूर्ण होगया है अर्थात् तृप्त होकर तुम्हे ससार की अब अन्य किसी वस्तु की–किसी भी वस्तु की–कामना नहीं रही है ? क्या तुम ऐसे मस्त होगये हो ? ऐसे आत्माराम होगये हो ? 'मन्दी' होने के लक्षण तो ये ही हैं। देखो, ऐसे 'मन्दी' तरते जारहे हैं और तर गये हैं।

यह अवस्था कैसे प्राप्त होती है ? जब भजन करने से अन्दर सोई पडी हुई शक्ति जागती है तो वह प्राण, वाणी और मन को उज्जीवित करती हुई ऊपर की तरफ चढने लगती है। हठयोगियो की परिभाषा मे इसे कुण्डलिनी का जागरण और प्राणोत्थान कहते हे। इस कुण्डलिनी का वास्तविक जागरण ही 'तरना' शुरू करना है। प्राण की धारा मूलाधार से उठकर ऊपर चढने लगती है, हैमवती-शक्ति नाचती कूदती हुई, भजन-स्तुति करती हुई–मार्ग मे प्राण, वाणी, मन के अद्भुत चमत्कार दिखाती हुई–ऊपर, अपने शिवरूप स्वामी की तरफ चढने लगती है। यह आध्यान अर्थात् मानसिक चेतना से युक्त प्राणधारा के रूप मे क्रमश ऊपर जाती हुई अनुभूत होती है। यही उत्पन्न किये 'अन्धस्' (सोम) की धारा है जिसके साथ-साथ आत्मा ऊचा होता जाता है। इसी धारा के साथ 'मन्दी' नामक भक्त की ऊर्ध्वगति होती है। प्रसिद्ध सात लोक सब अन्दर है। उन्नत होता हुआ आत्मा इन सब लोको को पार करता हुआ सत्यलोक मे पहुचकर पूर्ण स्वतन्त्र होजाता है–बिल्कुल पार तर जाता है। शिर के सत्यलोक मे प्राण, वाणी, मन आदि शक्ति जाकर ठहर जाती है और समाधि होजाती है। इस प्रकार देखो ! 'मन्दी' (भगवान् का भक्त) दु खसागर को तर जाता है–ऊपर पहुच जाता है। अहो ! इस पुण्य घटना का विचार करना–इसे कल्पना की आखो से देखना–भी कितना ऊचा उठानेवाला है ! 'तरत् स मन्दी धावति', 'तरत् स मन्दी धावति।' **(वैदिक विनय से)**

श्री सुमेरसिंह आर्य का ४४वां शहीदी दिवस एवं संक्षिप्त जीवन-परिचय

–सन्तराम आर्य

रोहतक–आर्यसमाज की प्रमुख सस्था दयानन्दमठ, रोहतक में पिछले लगभग दो वर्ष से अनेक कार्यक्रम आयोजित हुए हैं। इसी शृखला मे १९५७ ई० के हिन्दी आन्दोलन में शहीद सुमेरसिह आर्य का ४४वा शहीदी दिवस २ सितम्बर २००१ को दयानन्दमठ रोहतक में मनाया गया। २४ अगस्त १९५७ का दिन अन्य आन्दोलनों की भांति हिन्दी रक्षा आन्दोलन का एक सर्वाधिक रोगटे खडे कर देनेवाला दिन था। हिन्दी आन्दोलन ऐसे वक्त पर चलाया गया था जब देश को आजाद (स्वतन्त्र) हुये मात्र दस वर्ष का समय हुआ था। उस समय वर्तमान हरयाणा भी नहीं बना था बल्कि सयुक्त पजाब था। इस आन्दोलन का नेतृत्व आचार्य भगवान्देव (स्वामी ओमानन्द सरस्वती) जी कर रहे थे।

सत्सग एव शहीदी दिवस सम्मेलन के सयोजक एव प्रेस प्रवक्ता श्री सन्तराम आर्य ने शहीद सुमेरसिह आर्य के जीवन के विषय मे जानकारी देते हुए बताया कि उनका जन्म सर छोटूराम जी के इलाके मे ग्राम नयाबास तह० सापला जिला रोहतक में हुआ था। इनके पिता का नाम प्रभुदयाल आर्य तथा माता का नाम ज्वालादेवी था। जो कि व्यवसाय से दर्जी (छिप्पी टाक राजपूत) का कार्य करते थे। शहीद सुमेरसिह के छोटे भाई श्री मेहरसिह ने बताया कि उनका जन्म लगभग १९३० ई० मे हुआ था। वे पाच भाई तथा दो बहने थीं। सापला स्कूल से उर्दू की मिडल कक्षा पास थे लेकिन विद्यार्थी काल से आचार्य भगवान्देव जी (स्वामी ओमानन्द जी) व प० बस्तीराम जी के प्रचार से काफी प्रभावित थे।

उन्होने अपने पैतृक धन्धे टेलरिंग का कार्य भी पूरी दक्षता के साथ सीख लिया था वे आर्यसमाज नयाबास के मन्त्री चुने गये। कुछ समय के लिए इनके भाई मेहरसिह आर्य व ओमप्रकाश तथा लक्ष्मणसिह ने मिलकर खतौली जिला मुजफ्फरनगर (उ०प्र०) मे टेलरिंग की दुकान चलाई। लेकिन फिर १९५७ के हिन्दी आन्दोलन मे सारा कार्य छोडकर रोहतक से प० जगदेवसिह सिद्धान्ती के जत्थे के साथ गये। पहले चण्डीगढ मे प्रदर्शन किया फिर इन्हे फिरोजपुर (पजाब) की जेल मे भेज दिया। २४ अगस्त १९५७ की सन्ध्या सवा चार बजे सत्याग्रहियो पर लाठी चार्ज हुआ। स्वामी नित्यानन्द जी के पास जाकर कुछ सत्याग्रही बैठ गये। उन्होने गायत्री का जाप करना शुरू कर दिया। इधर स्वामी करपात्री जी को बचाते हुए हाथ मे सत्यार्थप्रकाश लिये श्री सुमेरसिह आर्य गम्भीररूप से घायल होगये तथा शहीद होगये। अगले दिन २५ अगस्त १९५७ ई० को 'प्रताप' नामक अखबार मे मुखपृष्ठ पर खबर छपी। स्वामी अभेदानन्द जी नयाबास गाव पहुचे। पुलिस ने लाश (शव) का दाहसस्कार रात्रि मे करने का षड्यत्र रचा। एक हिन्दू सिपाही के विद्रोह करने पर शव को घरवालो को सौंप दिया। अत २६ अगस्त १९५७ ई० को स्वामी अभेदानन्दजी, महाशय अर्जुनदेव दहकोरा आदि अनेक आर्यसमाज के नेता दाहसस्कार में उपस्थित हुए।

आइये हम सब ऐसे वीरों से सबक ले तथा राष्ट्ररक्षा मे कर्त्तव्यपरायणता से जुट जायें। इस कहावत को जिन्दा रखे कि–

शहीदो की चिताओ पर लगेगे हर वर्ष मेले,
वतन पर मरनेवालो का यही बाकी निशा होगा।

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, (रजि०)

पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

त्रैवार्षिक चुनाव सन्–2001
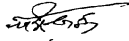
मुझे दिनांक 29.8.2001 की अन्तरग सभा की बैठक मे प्रस्ताव नं० 7 के अनुसार सभा का त्रैवार्षिक चुनाव कराने हेतु निर्वाचन अधिकारी नियुक्त किया गया है। प्रदत्त अधिकार का प्रयोग करते हुए निम्नलिखित चुनाव कार्यक्रम घोषित किया जाता है।

घोषित चुनाव कार्यक्रम

दिनांक 23-9-2001 हेतु

1 मतदाता सूची की सभा कार्यालय मे उपलब्धता दिनाक 6 9 2001

2 नामाकन पत्रो का वितरण एव नामाकन पत्र निर्वाचन अधिकारी के पास जमा कराना।

दिनाक 7.9.2001 प्रात 10 बजे से दिनाक 10 9.2001 समय दोपहर 12 बजे तक।

रविवार 9 9 2001 कार्यदिवस होगा। स्थान–सभा कार्यालय

3 निर्वाचन अधिकारी द्वारा नामाकन पत्रो की जाच।

दिनाक 10 9.2001 सोमवार समय 1 बजे से 2 बजे तक।

स्थान–सभा कार्यालय

4 नामांकन–पत्रो की वापसी।

दिनाक 10 9.2001 सोमवार समय दोपहर 2 बजे से 4 बजे तक

स्थान–सभा कार्यालय

5. चुनाव–चिह्न वितरण।

दिनाक 10 9 2001 सोमवार समय 4 बजे से 5 बजे तक

स्थान–सभा कार्यालय

6 चुनाव यदि आवश्यक हुआ तो।

दिनाक 23 9 2001 रविवार समय प्रात 8 बजे से 4 बजे तक

स्थान–सभा कार्यालय

7. मतगणना 24.9 2001 प्रात 8 बजे से। स्थान–सभा कार्यालय

आवश्यक ज्ञातव्य

1. प्रतिनिधि महानुभाव अपना पहचान पत्र, निर्वाचन पहचान पत्र, ड्राइविंग लाइसेस, पासपोर्ट, पूर्व एम०एल०ए०/एम०पी० परिचय पत्र, बिश्वविद्यालय/कालिज परिचय पत्र, मिलट्री कैन्टीन कार्ड, स्वतत्रता सेनानी/सेना/पुलिस पहचान पत्र व अन्य कोई पहचान हेतु प्रमाण अपने साथ लाने का कष्ट करे, जिससे सभा द्वारा जारी प्रतिनिधि प्रवेश पत्र/मतपत्र प्राप्त करने मे सुविधा रहे।
2 किसी प्रतिनिधि के नकली होने की जाच के लिए सभा कार्यालय मे 50/- रु० शुल्क अगाऊ जमा करवाना आवश्यक होगा।
3 नकली मतदान करनेवालो को पुलिस के हवाले किया जाएगा।
4 चुनाव कार्यक्रम मे परिवर्तन आदि का अधिकार निर्वाचन अधिकारी को है।
5 प्रवेश पत्र सभा कार्यालय से दिनाक 23.9.2001 को प्रात 7 30 बजे से प्राप्त करे।
6. प्रवेश पत्र के बिना मतदान मे भाग नहीं ले सकेगे।
7 मतदान गुप्त होगा।

धर्मचन्द
निर्वाचन अधिकारी

ओ३म्

डाक सेवा अधीन (U.P.C.)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, (पंजीकृत)

पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

क्रमाक. दिनाक 6 9 2001

साधारण सभा के माननीय प्रतिनिधियों की सेवा में त्रैवार्षिक चुनाव एवं साधारण अधिवेशन का एजेण्डा (कार्यसूची)

माननीय प्रतिनिधि महोदय।

नमस्ते।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की दिनाक 29 8 2001 की अतरग सभा की बैठक के प्रस्ताव सख्या–7 के अनुसार अतरग सभा के अधिकारियो, सदस्यो एव सार्वदेशिक सभा के लिए प्रतिनिधियो का त्रैवार्षिक निर्वाचन दिनाक 23 सितम्बर 2001 को प्रात 8 से 4 बजे तक सभा कार्यालय दयानन्दमठ, रोहतक मे होगा। अत आपसे निवेदन है कि यथासमय पहुचकर चुनाव मे भाग लेवे।

मतदाता सूची दिनाक 5 9 2001 को प्रकाशित होगी। 6 9 2001 को दोपहर 1 बजे तक आपत्तिया सुनी जाएगी। मतदाता सूची 100/- रु० देकर सभा कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है।

विचारणीय विषय

सभा के त्रैवार्षिक चुनाव के लिए सभा के 14 पदाधिकारियो (प्रधान–1, उपप्रधान–5, मत्री–1, उपमत्री–5, कोषाध्यक्ष–1, पुस्तकाध्यक्ष–1) अन्तरग सभा के लिए साधारण सभा द्वारा निर्वाचित 15 सदस्यो एव सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के लिए 15 प्रतिनिधियो का चुनाव होगा।

निर्वाचन अधिकारी द्वारा जारी निर्वाचन कार्यक्रम सलग्न है।

निर्विरोध चुनाव की दशा में साधारण अधिवेशन

दिनांक 23.9 2001 रविवार प्रात. 10 बजे
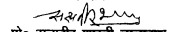
विचारणीय विषय

1 ईश–प्रार्थना
2. गत साधारण एव असाधारण अधिवेशन दिनाक 18 मार्च, 2001 की कार्यवाही की सम्पुष्टि।
3. सभा की गत तीन वर्ष की उपलब्धियो का विवरण।
4 जिला वेदप्रचारमण्डलो को सक्रिय करने पर विचार।
5. अन्य आवश्यक विषय सभाप्रधान जी की आज्ञा से।
6 निर्वाचन अधिकारी द्वारा निर्विरोध निर्वाचित अधिकारियो, अन्तरग सदस्यो एव सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए निर्वाचित प्रतिनिधियो के नामो की घोषणा।
7. स्वागत, धन्यवाद एव शान्तिपाठ।

विशेष–

1. सभी प्रतिनिधि महानुभाव प्रवेश–पत्र सभा कार्यालय से दिनाक 23.9.2001 को प्रात 7 30 बजे से प्राप्त करे।
2. बिना प्रवेश–पत्र के चुनाव मे भाग नही ले सकेगे।
3 सभी प्रतिनिधि महानुभाव अपना निर्वाचन का अथवा अन्य कोई पहचान–पत्र या पहचान का अन्य कोई प्रमाण अपने साथ लाने का कष्ट करे जिससे आपको प्रवेश–पत्र तथा मतपत्र प्राप्त करने मे सुविधा रहे।

भवदीय

प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास
सभामत्री

दयानन्दमठ रोहतक का २४वां सत्संग सम्पन्न

दयानन्दमठ रोहतक—आर्यसमाज की प्रमुख संस्था दयानन्दमठ गोहाना मार्ग रोहतक मे वैदिक सत्सग समिति का २४वा सत्सग समारोह एव हिन्दी आन्दोलन के शहीद सुमेरसिह आर्य का ४४वा शहीदी दिवस दिनाक २ सितम्बर २००१ रविवार को बडी धूमधाम से मनाया गया।

वैदिक सत्सग मे गीतो का शुभारम्भ बहिन दयावती आर्या प्राध्यापिका ने किया। इसके साथ ही पिछले दो वर्ष की गतिविधियों एव आय-व्यय का लेखा-जोखा सयोजक आचार्य सन्तराम आर्य ने सबके सामने सुनाया। तत्पश्चात् महाशय ईश्वरसिह ने एक भजन सुनाया। इसी शृखला में छात्रो का प्रतिनिधित्व किया छात्र विनयकुमार ने। भाव थे–'**नर तन को पा करके, यो ही ना गवाओ।**' इसी कडी को आगे बढाकर सभा के उपदेशक श्री सतपाल आर्य ने तथा चार चाद लगाये प्रसिद्ध रेडियो सगीतज्ञ चौ० हरध्यानसिह जी तथा मा० देवीसिह व श्री सत्यनारायण जी की टीम ने वातावरण को भक्तिमय बनाया। उनके भजन के भाव इस प्रकार थे-'**कैसा तूने ये जगत् रचाया, देख-देखकर अचरज आया**'। अन्तिम गीत बहिन दयावती का था जिसमे धन-दौलतवालो को चेताया गया है।

इस सम्मेलन मे मुख्यवक्ता के रूप मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान व त्यागी तपस्वी सन्यासी स्वामी ओमानन्द जी महाराज पधारे। उन्होने अपने प्रवचन मे कहा कि आनेवाले दीपावली पर्व पर एक लाख सत्यार्थप्रकाश घर-घर पहुचाने चाहिये। आर्यसमाज के तार्किक विद्वान् प० जगदेवसिह सिद्धान्ती ने १०० बार सत्यार्थप्रकाश को पढा था। प० लेखराम ने अपने रहते-रहते सत्यार्थप्रकाश छपवाया था। उन्होने कहा था कि जिस घर मे सत्यार्थप्रकाश है वह भाग्यवान् है। बुराइयों को खत्म केवल आर्यसमाज ही कर सकता है। स्वामी आत्मानन्द की प्रेरणा से ५० हजार आर्यसमाजी जेल में गये थे। गोरक्षा आन्दोलन व हिन्दीरक्षा आन्दोलन मे।

आध्यात्मिक प्रवचन के बाद सुमेरसिह आर्य का शहीदी दिवस प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम स्वामी इन्द्रवेश जी ने उद्घाटन किया। फिर चौ० राममेहर एडवोकेट ने अपने विचार रखे। शहीदो के प्रति आस्था जताई तथा 'स' सकार की विस्तृत व्याख्या की। सुमेरसिह आर्य तक सकार का प्रयोग किया। इसी के साथ शहीद सुमेरसिह आर्य के भाई मेहरसिह ने उनके बचपन पर प्रकाश डाला। सभामन्त्री प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास ने अपने वक्तव्य में कहा कि १९५७ के इतिहास को छपवाना हरयाणा सभा की विशेष उपलब्धि है।

इनके बाद स्वामी धर्ममुनि जी (आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ) ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा राष्ट्र उत्थान के लिए तीन साधनो की आवश्यकता बतलाई। स्वामी इन्द्रवेश जी ने कहा कि सभा के चुनाव के बाद सात दिन की वेदकथा शुरू करेंगे। अन्त मे स्वामी ओमानन्द जी ने नारा दिया–आर्यो यदि सुख चाहते हो तो गाव की ओर लौट चलो। हर गाव में प्रचार-प्रसार की व्यवस्था करो। अन्त मे शान्तिपाठ के बाद सभी ने मिलकर ऋषिलगर मे भोजन किया तथा अगले मासिक सत्सग ७ अक्तूबर २००१ रविवार के लिए सयोजक ने आमन्त्रित किया तथा सम्मेलन सम्पन्न होगया।

—**सन्तराम आर्य**, वैदिक सत्सग समिति दयानन्दमठ, रोहतक

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

१	आर्यसमाज बेगा (सोनीपत)	१४, १५, १६ सितम्बर
२	आर्यसमाज जलियावास (रिवाडी)	२२, २३ सितम्बर
३	आर्यसमाज गोहाना मण्डी	२३ से २७ सितम्बर
४	आर्यसमाज सैक्टर-१९, फरीदाबाद	२३ से ३० सितम्बर
५	आर्यसमाज सैक्टर-९, गुडगाव	१ से ७ अक्तूबर
६	आर्यसमाज बसई, जिला गुडगाव	१९ से २१ अक्तूबर
७	कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, पचगाव (भिवानी)	२० से २१ अक्तूबर
८	आर्यसमाज नसोपुर जिला अलवर (राज०)	३०, ३१ अक्तूबर
९	आर्यसमाज सैक्टर-१४, सोनीपत	५ से ११ नवम्बर

नोट—आर्यसमाज फेफाना (राजस्थान) का ५, ६, ७ अक्तूबर का कार्यक्रम स्थगित होगया है।

—**डॉ० सुदर्शनदेव आचार्य**, वेदप्रचाराधिष्ठाता

रेगिस्तान को उपजाऊ बनाने का तरीका

रेगिस्तान को हरा-भरा बनाने के लिए विनाशकारी अल-नीनो (मौसम प्रणाली) का उपयोग किया जासकता है। हॉलैंड के शोधकर्ताओ का कहना है कि अल-नीनो से ऐसी भूमि ठीक की जा सकती है, जो मरुभूमिकरण तथा बहुत अधिक चराई के कारण खराब हो गई है।

शोधकर्ताओ का कहना है कि कुछ शुष्क क्षेत्र इस तरह खराब होगए हैं कि वे अपने आप तो कभी ठीक नहीं हो सकते। यदि हम चरनेवाले पशुओ को हटा दे तो भी वे ठीक नहीं हो सकते। लेकिन जब अल-नीनो आता है तो इन क्षेत्रो को ठीक किया जासकता है। देखा गया है कि अल-नीनो के समय सामान्यत शुष्क क्षेत्रो मे वर्षा ज्यादा होती है। अल-नीनो हर तीन से छह वर्ष बाद आता है। भारी वर्षा के कारण बजर भूमि को उपजाऊ बनाया जा सकता है। वैज्ञानिक शेफर का कहना है कि यह किसानों के लिए खराब समाचार होसकता है, जो अपनी भूमि को चरागाह बना देते हैं। लेकिन अच्छा समाचार यह है कि कभी आप थोडा परिवर्तन करे और आप दूसरी स्थिति मे आ जाते हैं। उनका विश्वास है कि किसान अल-नीनो की शक्ति का उपयोग कर अपनी भूमि को उपजाऊ बना सकते हैं। यदि अल-नीनो के समय किसान अपनी भूमि से केवल एक सीजन में मवेशियों को हटा दे, तो ज्यादा वर्षा तथा कम चराई के सयुक्त प्रभाव से भूमि एक नई स्थिति मे आजाएगी और फिर धीरे-धीरे मवेशियो को चराया जासकता है।

शोधकर्ता उत्तरी चिली मे अपने शोध परिणामो की परीक्षा कर रहे हैं। शेफर के अनुसार हम जानना चाहते हैं कि पूर्वकाल में अल-नीनो के कारण वन फिर उपज आए थे। हम जलवायु परिवर्तन देखने के लिए पेडो पर पडे गोलो (रिंग) की परीक्षा करेंगे। ओहायो स्टेट यूनीवर्सिटी के पर्यावरणविद् मोहन बाली का कहना है कि हॉलैंड के वैज्ञानिको का विचार सिद्धाततः अच्छा है, लेकिन यह कैसे कह सकते हैं कि यह व्यवहार मे ठीक उतरेगा। एक समस्या यह है कि अल-नीनो का विश्वास नहीं किया जा सकता। यह बहुत अनिश्चित रहता है। उन्होने कहा कि आपको कुछ सप्ताह की ही चेतावनी मिल सकती है और इतने समय मे आप क्या कर सकते हैं। हम बात कर रहे हैं भूमि के बहुत विशाल क्षेत्र की। नेवादा ने मरुभूमि अनुसधान सस्थान के एक वैज्ञानिक मेरी काबिक ने अपनी सहमति प्रकट करते हुए कहा कि नई नीति को व्यवहार मे लाने मे अनेक चुनौतियो का सामना करना पड सकता है।

—**हरीश अग्रवाल**
(कान्ति से साभार)

भजन वेदप्रचार

टेक—वेदप्रचार बिना बढती जारही बुराई।
और भी बढती गई जबसे आजादी आई।।१।।
बुराई करने लगे छुटती जा रही भलाई।।२।।
छोड एक ईश्वर को जड मुर्दे दिए जलाई।।३।।
वैर इतना बढ गया भाई का दुश्मन भाई।।४।।
मुकदमेबाजी ने घर धरती तक बिकवाई।।५।।
बाप और बेटो मे रहती नित रोज लडाई।।६।।
सास और बहू लडे लड रही नणन्द भौजाई।।७।।
डूब रहे न्यायकारी रिश्वत खावे अन्यायी।।८।।
वजीर क्या एम०एल०ए० रहे चौडे लूट मचाई।।९।।
गिरदावर पटवारी तहसील थानेदार सिपाई।।१०।।
कौन किसको रोके आपस मे मिली असनाई।।११।।
न खालिस चीज मिलै सबमे हो रही मिलाई।।१२।।
स्वाग और सिनेमा आज दिया व्यभिचार बढाई।।१३।।
साथ सह-शिक्षा ने और लगी मे आग लगाई।।१४।।
नगे सिर फिरती और छोरियो न लाज गवाई।।१५।।
जनेऊ चोटी तजके छोरो ने जुल्फ रखाई।।१६।।
और नई बात सुनो दो पुच्छड वाली लुगाई।।१७।।
हुक्का, सिगरेट, बीडी उपदेशक रहे उडाई।।१८।।
मरज बढता जाता ज्यू-ज्यू दे रहे दवाई।।१९।।
डरामे सागो मे मरदो की वीर बनाई।।२०।।
रहो चुप '**नित्यानन्द**' तेरी करता कौन सुनाई।।२१।।

—**स्वामी 'नित्यानन्द' के शिष्य श्री मोहब्बतसिंह**,
गाव आर्यनगर, वाया बाढडा (भिवानी) हरियाणा

जल-रोग निवारक और पुष्टिवर्धक है

❑ टुकीराम भारद्वाज, मन्त्री आर्यसमाज ब्रह्मपुरी दिल्ली-५३

ससार मे पाच भौतिक तत्त्व हैं यथा–आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी। इन्हीं के आपस के विभिन्न योगों से सृष्टि की रचना और पालना होती है, परन्तु हम इनकी उपयागिता नहीं जानते।

सामान्यत कहा जाता है कि मनुष्य अन्न और जल का कीडा है। कुछ लोगो के अनुसार जल ही जीवन है। ये दोनों ही कथन सत्य हैं, परन्तु वेद के निम्न मत्र के अनुसार जल स्वय रोगनिवारक और पुष्टिवर्धक है।

अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषजम्।

अपामुत प्रशस्तिभिरश्वा भवथ वाजिनो गावो भवथ वाजिनी।। अथर्व० १-४-४

मत्र का देवता 'आप' है जिसका अर्थ परमेश्वर, विद्वान् और जल है। अत देवता अर्थ को ध्यान मे रखते हुए मत्र के तीन अर्थ है। वर्तमान मे जल का ध्यान रखते हुए, इस मत्र का अर्थ निम्न है-

"**(अप्सु अन्त अमृतम्)** जल मे रोगनिवारक रस है और **(अप्सु भेषजम्)** जल मे भय जीतनेवाली औषधि है। **(उत अपाम् प्रशस्तिभि)** और जल के उत्तम गुणो से **(अश्वा वाजिनीः भवथ)** घोडे वेगवाले होते हैं, **(गाव. गाजिनी भवथ)** गाए वेगवाली होती हैं। उक्त मन्त्र मे दो शिक्षाए हैं मनुष्य के लिए जल मे रोगनिवारक तत्त्व तथा भय दूर करने की शक्ति है। दूसरे अश्व और गाय आदि पशुओ को यदि जल से उत्पन्न घास चारा दिया जाए तो वे ज्यादा उपयोगी सिद्ध होगे।

(क) बुखार में जल का प्रयोग

यदि आपको मौसम की गर्मी से बुखार आगया है तो आप ताजा-ताजा जल घूट-घूट करके पीए। आध घटे बाद यही प्रक्रिया जारी रखे। रोगी को हल्की हवा करे तथा रोगी छाया मे रहे। बुखार करीब एक घण्टे मे जरूर उतर जाएगा।

(ख) दस्तों के बाद शरीर का टूटना, चटकना और अधिक प्यास

जब मनुष्य को दस्त लगते हैं तो लोग दस्त जाते रहते हैं तथा खाना खाते रहते हैं पर पानी नहीं पीते। फलत शरीर बहुत कमजोर होजाता है। शरीर टूटता है, घुटने चट-चट करते हैं तथा प्यास बहुत लगती है। कभी-कभी रोगी का प्राणान्त भी होजाता है। डॉक्टर ग्लूकोज की बोतल चढाता है। अत दस्त के रोगी को परामर्श है कि खाना, खाना तुरन्त बन्द करदे। जितनी बार दस्त जाए उतनी बार ज्यादा से ज्यादा पानी पीए। यदि ऐसा नहीं किया और शरीर टूट रहा है और प्यास बढ रही है तो कृपया ठण्डा जल घूट-घूट करके पीए। हर आध घण्टे बाद ऐसा करें छाया मे रहे तथा आराम करे। करीब दो घण्टे मे ठीक हो जाएगे।

(ग) खुजली में जल का प्रयोग

शरीर के जिस अग मे खुजली होरही है, उसी अग को ठण्डे पानी मे डुबोदे। ऐसा करीब आधा घण्टा करें। फिर दूसरे दिन ऐसा करें। नमक-मिर्च कम खाए तथा होसके तो एक दिन खाना न खाए। खुजलीवाले अग को पानी मे न डुबो सके तो उस अग पर सूती कपडा बाध दे तथा ठडा पानी डालते रहे। खुजली दो दिन मे खत्म होजाएगी।

(घ) फोडे-फुन्सी में जल का प्रयोग

फोडे और फुन्सी के स्थान पर पुराना सूती कपडा बाधे तथा उसे करीब दो-तीन दिन जल से लगातार तर रखे। सूजने मत दे। फोडा और फुन्सी वहीं बैठ जाएगे।

(ङ) छाती में कफ होजाने पर जल का प्रयोग

प्राय जुकाम होने पर रोगी डॉक्टर से एलोपैथिक की दवाई लेते हैं तथा शीघ्रातिशीघ्र उसे अशुद्धि से बचाता है। शरीर शीघ्र स्वस्थ होने के लिए डॉक्टर से निवेदन करते हैं। फलस्वरूप डॉक्टर अधिक तेज दवा देता है जिससे छाती मे कफ जमा होजाता है। जोर से सास लेने पर पेट की नसे तनती हैं तथा रोगी मरणासन्न होजाता है। कृपया ऐसे रोगी को साधारण गर्म जल घूट-घूट कर पिलाए। १०-१५ मिनट मे ठीक हो जाएगा।

(च) हृदयरोग में जल का प्रयोग

जिन्हें हृदयरोग होता है, उनका प्राय खून गाढा होजाता है और यह गाढा खून हृदय पर जोर डालता है। ऐसे रोगियो को प्यास कम लगती है। अत खून के प्रवाह को सूचारु रखने और खून को प्राकृतिक रूप से पतला करने के लिए खूब पानी पीना चाहिए तथा चाय पान बन्द करदे क्योंकि चाय भूख और प्यास को कम करती है।

(छ) पित्तप्रधान रोगी जल पीएं

कुछ व्यक्ति सदैव गर्म चीजो का प्रयोग करते हैं जिससे पित्त के रोगी बन जाते हैं। ऐसे रोगियो को चाहिए कि वे पानी ज्यादा से ज्यादा पीए।

(ज) उच्च रक्तचाप में जल का प्रयोग

उच्च रक्तचाप के रोग मे ठण्डा जल घूट-घूट कर पीए। कम से कम दो गिलास पीएं। रक्तचाप यथाशीघ्र सामान्य होजाएगा। भोजन मे नमक, मिर्च मसाले कम खाए।

(झ) निम्न रक्तचाप में जल का प्रयोग

निम्न रक्तचाप के रोगी को तथा उसकी अशुद्धि बचाता है। गर्म जल घूट-घूट कर पीना चाहिए। पानी की मात्रा रोग की स्थिति व व्यक्ति की शारीरिक अवस्था पर भी निर्भर करती है। भोजन मे नमक मिर्च कम खाए परन्तु गर्म मसालो का प्रयोग करे।

(ञ) गैस रोग में जल का प्रयोग

गैस के पीडित रोगी, जल मे नींबू, नमक और हींग मिलाकर घूट-घूट कर पीए। इस प्रक्रिया को आधा अथवा एक घण्टा बाद पुन दोहराए। जल पीकर बाईं करवट से लेट जाए अथवा धीरे-धीरे टहले। ऐसा करने पर शीघ्र लाभ मिलेगा।

(ट) नाक के छिद्र बन्द होने पर जल का प्रयोग

कुछ स्त्री-पुरुषों व बच्चो की नाक के दोनो छिद्र बन्द होजाते हैं तथा किसी-किसी का एक छिद्र बन्द होजाता है। परिणामस्वरूप नाक के आस-पास के क्षेत्र मे भयकर पीडा होती है तथा रात को रोगी सोने मे बेचैनी महसूस करता है। ऐसे रोगी रात को सोते समय नाक के दोनो छिद्रो मे देशी घी या सरसो का तेल लगाए। प्रात काल नहाते समय हल्का गर्म पानी ले तथा नाक से पानी पीए। मुह पर ओक बनाकर हाथ रखे। नाक मे बहुत धीरे-धीरे सास ले तथा गर्दन को, सास लेते समय, आसमान की तरफ तानकर रखे। पानी की मात्रा कम से कम एक गिलास हो। इस प्रक्रिया को कम से कम तीन दिन लगातार करते रहे। ऐसा करने पर नाक खुल जाएगी।

(ठ) बिच्छू के काटने पर जल का प्रयोग

बिच्छू के काटने के तत्काल पश्चात् रोगी को पानी से स्नान कराए तो दर्द ऊपर नहीं चढेगा तथा काटे स्थान को पानी मे डुबोकर रखे।

(ड) लू से बचने के लिए जल का प्रयोग

गर्मी मे घर से प्रस्थान करते समय पानी पीए। मार्ग मे भी थोडा-थोडा पानी पीए। ऐसा करने से लू नहीं लगेगी।

(ढ) एडियों की कठोरता दूर करने के लिए जल का प्रयोग

जिन स्त्री-पुरुषो के पैरो मे कठोरता तथा बिवाई हो कम से कम मिर्च खाए। रात्रि को सोते समय गर्म जल से पैर धोकर और पोछकर सरसो का तेल लगाए। ऐसा लगातार करते रहे जब तक पैर ठीक न होजाए।

(ण) दमे के रोग में जल का प्रयोग

दमे के रोग मे कफ छाती मे जमा रहता है। इससे सास लेने मे बहुत परेशानी होती

है। ऐसे रोगी रात्रि मे गर्म पानी पीकर सोए तथा दौरा पडने पर गर्म पानी पीए। यदि होसके तो रोगी के हाथ और पैरो को गर्म पानी मे कुछ समय तक डूबाकर रखे। यदि होसके तो रोगी को अधिक पानी पिलाकर रोगी को उल्टी करवादें। ऐसे रोगी को गर्म जल के साथ कुञ्जर योग करना चाहिए।

(त) पेशाब की जलन में जल का प्रयोग

ज्यादा धूप मे घूमने अथवा कार्य करने पर अथवा गर्म प्रकृति की चीजे खाने से पेशाब मे जलन पैदा होजाती है। अत रोगी अधिक मिर्च-मसाले व तेल-घीवाले पदार्थों का सेवन तुरन्त बद करदे। ब्रह्मचर्यव्रत का पालन करे तथा अधिक से अधिक ठण्डा ताजा जल पीना शुरू करे।

(थ) पांवों में थकान होने पर जल का प्रयोग

कभी-कभी ज्यादा चलने पर या ऊचाई पर चढने से पैरो मे थकान महसूस होती है। पैरो की थकान दूर करने के लिए गर्म पानी लेकर, उसमे कुछ नमक डालकर पैरो को कुछ समय डुबोए। शीघ्र राहत मिलेगी।

(द) मोटापा दूर करने के लिए जल का प्रयोग

जिन्हे मोटापा है तथा वे इसे दूर करना चाहते हैं, उन्हे चाहिए कि भोजन से पहले एक अथवा दो गिलास गुनगुना पानी पीए। दिन मे भी गुगुना पानी पीते रहे। लगभग दो महीने मे रोग ठीक होजाएगा, यदि वे अधिक चिकनाईवाले पदार्थ मास व अडा न खाए। कुछ शारीरिक श्रम भी नियमपूर्वक करते रहे तथा भोजन के बाद न सोए। ठण्डा पानी बिल्कुल न पीए तथा कम से कम पानी पीए तथा नमक कम खाए। जहा तक होसके खाली पेट पानी खूब पीए।

(ध) मोच गुम चोट में जल का प्रयोग

मोच अथवा गुम चोट लगने पर यदि चोट हाथ या पैर में है, तो प्रथम आवश्यकतानुसार बहुत-सा जल गर्म करवाले। जल न ज्यादा गर्म हो जिसे शरीर सहन न कर सके और जल न ज्यादा ठण्डा हो। गर्म पानी को बडी पैंदेवाली बाल्टी अथवा दूध की बाल्टी या भगौने मे ले। जल मे चम्मच से नमक डाले (अर्थात् ज्यादा नमक)। चोटिल अग को पानी मे पूर्णतया डूबोदे। अग को डुबाये रखना-करीब आधे घटे से लेकर एक घटे तक करें। फिर जल को साफ और सूखे तौलिए से शीघ्रता से पोछे। अग को गर्मी या सर्दी दोनो से बचाए। फिर अग पर सरसो का गर्म तैल शीघ्रता से मले। इसके बाद अग पर पुराना सूती वस्त्र विशेषतया पुरानी साफ धोती कसकर लपेट दे। ये सब क्रियाए प्रात स्नान के पश्चात् करें। खाने मे दही, चावल, छाछ, बर्फ का अथवा कूलर का पानी लस्सी का परहेज रखे। ये क्रियाए लगातार प्रात सायम् दोनो समय नियमपूर्वक करे। दो या तीन दिन मे ठीक होजाएगा। पखे की अथवा कूलर की हवा से दूर रहे। यदि अग की पानी मे डूबने की स्थिति नहीं है तो चोटिल अग पर सूती धोती बाधकर गर्म पानी के तरडे देवे।

पानी पीने में सावधानी

जहा जल का उचित और समय पर प्रयोग अमृत है, वहीं जल का कुसमय पर प्रयोग हानिकारक है तथा रोग उत्पन्न करता है। अत जल पीने मे निम्न सावधानिया बरते –

१ अगूर खाने के बाद पानी न पीए।
२ भोजन के अत मे जल विष समान है। करीब एक घण्टा बाद जल पीए।
३ शौच जाने के बाद जल न पीए।
४ धूप मे चलकर आने के बाद जल न पीए।
५ शारीरिक श्रम करने पर पसीना आता है। अत पसीना आने पर पानी न पीए।
६ व्यायाम करने के बाद पानी न पीए।
७ केला खाकर पानी न पीए।
८ गर्म दूध व चाय पीने के तुरन्त पश्चात् न नहाए।
९ भोजन के तुरन्त पश्चात् न नहाए।
१० मूली खाने के बाद पानी न पीए।
११ पतले आदमी खाली पेट पानी न पीए।
१२ खीरा, खरबूज और ककडी खाकर पानी न पीए।
१३ सम्भोग के तुरन्त पश्चात् पानी न पीए।
१४ नजला-जुकाम के रोगी गर्म जल का उचित मात्रा मे प्रयोग करें अन्यथा आतो मे फसकर भयकर रोग उत्पन्न करेगा।

निम्न अवस्थाओं में जल खूब पीएं–

(क) भोजन करने के एक घण्टे बाद। (ख) जिन्हे खुश्की रहती है, वे अपनी प्रकृति के अनुकूल ठण्डा व गर्म जल पीए तथा नमक, मिर्च, मसाले व चाय-काफी कम प्रयोग करे। (ग) जिन्हे गर्मी मे गर्मी लगती है और सर्दी मे सर्दी लगती है, ठण्डा अथवा गर्म जल अपनी प्रकृति के अनुकूल पीए। (घ) जो व्यक्ति चाय पीकर शौच जाते हैं, वे कृपया चाय का पान शौच से पूर्व बन्द कर दे अन्यथा भयकर रोग उन्हें लग जाएगा। शौच से पूर्व ऐसे व्यक्ति गर्म जल, नमक, नींबू व हींग की शिकजी घूट-घूटकर पीए। शिकजी पीकर चहलकदमी करें। (ड) प्रात उठकर कम से कम एक गिलास और अधिक से अधिक दो गिलास पानी पीए।

अन्त मे यह जिज्ञासा होती है कि हम सारे दिन मे (प्रात उठने के समय से रात्रि को सोने के समय तक) कितनी मात्रा मे पानी पीए। शरीर के किन अगो को पानी की आवश्यकता होती है ? पानी का शरीर मे क्या कार्य है ? इन प्रश्नो का सक्षिप्त उत्तर यह है कि समस्त शरीर को पानी की आवश्यकता है क्योकि यह शरीर के तापक्रम को नियत्रित करता है तथा उसे अशुद्धि से बचाता है। शरीर मे खून के प्रवाह को जारी रखता है। कम से कम दिन मे प्रत्येक मनुष्य ढाई लीटर से लेकर तीन लीटर तक पानी पीए। एक अनुमान के अनुसार गुर्दो से १५०० ग्राम, त्वचा से ६५० ग्राम, फेफडो से ३२० ग्राम और गुदा मार्ग से १३० ग्राम पानी शरीर से प्रतिदिन निकल जाता है। अत उसकी सतत पूर्ति के लिए २६०० ग्राम पानी अनिवार्य है। जल की कुछ पूर्ति, भोजन के साथ लेनेवाले पेयपदार्थों-दूध, दही, मट्ठा और सब्जियो मे होनेवाले जल से होती है तथा कुछ सीधा जल हम पीते हैं।

सक्षेप मे जल के अनेक गुण हैं तथा 'जल ही जीवन है' की यह उक्ति प्रमाणित करती है। आशा है पाठक, लेख मे दी गई जानकारियो का लाभ उठाकर अन्यों को भी इसका लाभ देगे।

आवश्यक सूचना

आप सभी आर्य धर्मप्रेमी सज्जनों को सूचित किया जाता है कि आर्यसमाज के उत्सवो, जलसो मे आर्य-भजनोपदेशिका बुलाने के लिए सम्पर्क करे–

–सुदेशार्या शास्त्री धर्मपत्नी जगदीशचन्द्र

गाव व डाकखाना–चिडौद, मण्डल–हिसार–०१६६२(फोन न० २८६३३)

हरयाणा राज्य गोशाला संघ व वेदप्रचार मण्डल मेवात द्वारा

राष्ट्रिय गोरक्षा महासम्मेलन

७ अक्तूबर २००१ को पुन्हाना जिला गुड़गांव में लाखों गोभक्तों का भारी जनसमूह

गोमाता की असहनीय दुर्दशा प्रत्येक देशवासी गोभक्त को महासम्मेलन द्वारा ठोस निर्णय कर ऋषि-मुनियो की वीर पवित्र भूमि हरयाणा के मेवात क्षेत्र मे प्रतिदिन हजारो गायो की हत्या के कलक को समाप्त करने के लिए बाधित कर रही है। प्रत्येक गोभक्त के हृदय की यही आवाज निकलती है कि पूर्णतया गोमाता के खून से बहती नदियो को रोकने के लिए निम्न नियम लागू हों–

१ गोहत्यारे को वही दण्ड दिया जाये जो मनुष्य हत्यारे को दिया जाता है। अर्थात् (क) ३०२ की धारा के अन्तर्गत दण्ड मिले। (ख) सेशन ट्रायल लागू हो।
२ गोहत्यारो को पकडने के लिए पुलिस का स्पेशल दस्ता लगाया जाये।
३ माछरोली काण्ड के १०५ गायों के गोहत्यारे अब तक भी नहीं पकडे गये हैं। ५ जुलाई २००० को २५००० लोगों की गुडगाव मे भीड के सामने एक मास का उपायुक्त महोदय गुडगाव का वचन कब पूरा होगा। इसके सम्बन्ध मे विशेष विचार।
४ गोसेवा आयोग हरयाणा का गठन।
५ प्रत्येक घर मे एक पालो गाय बचालो के लिए आन्दोलन।
६ मेलो तथा पीठो मे बैल-बछडे आदि गोवश न बेचा जाये।
७ ट्रको द्वारा गो तस्करी तथा गो तस्करो पर नियत्रण।
८ गोनिकासी बन्द करने के लिए सीमाओ को सील करना।
९ पचायतो द्वारा गोशालाओ को प्रदत्त भूमि गोशालाओ के नाम करना।
१० गोचर भूमि गोशालाओ को दी जाये।
११ गोवश को राष्ट्रिय (पशु) माता घोषित किया जाये।
१२ हजारो गोरक्षा सैनिक तैयार किये जाये।

अनेक आगन्तुक धार्मिक व राजनेता गोहत्या के दुखद पाप को समाप्त करने के लिए अपने धार्मिक, ओजस्वी तथा विचारणीय विचार रखे। पधारनेवाले गोभक्त अपने-अपने सगठन के बैनर सहित बीच मे गोमाता की जय बोलते हुये ९ बजे पुन्हाना पधारे। पहुचने की सूचना शीघ्र भेजे जिससे व्यवस्था मे सुविधा हो।

निवेदक–

आचार्य बलदेव	अध्यक्ष
प्रधान हरयाणा राज्य गोशाला सघ	वेदप्रचार मण्डल, मेवात

आर्यसमाज पृथला के प्रधान नहीं रहे

आर्यसमाज पृथला के प्रधान श्री बदलेराम आर्य का आकस्मिक निधन होगया। ७० वर्षीय स्वर्गीय बदलेराम जी आर्य ने अपने जीवन में निष्काम व नि स्वार्थभाव से आर्यसमाज एव गुरुकुल गदपुरी की बहुत लम्बे समय तक सेवा की। उनकी मृत्यु से आर्यसमाज की अपूरणीय क्षति हुई है। स्वामी सिहमुनि, स्वामी धर्मानन्द परिव्राजक, स्वामी विद्यानन्द सहित जनपद फरीदाबाद के सैकडों लोगो ने उनकी मृत्य पर दुख व्यक्त किया है।

श्री देशमुनि वानप्रस्थी का निधन

आर्यसमाज पृथला के सरक्षक श्री देशमुनि वानप्रस्थी का ७२ वर्ष की आयु मे निधन होगया। उनके निधन से शराब, अग्रेजी, मांसाहार, पाखण्ड व अश्लीलता विरोधी आन्दोलन को गहरा धक्का लगा है। शान्ति यज्ञ मे आर्यसमाज के श्री रामजीत योगाचार्य, शिवराम विद्यावाचस्पति, मा० मोहनलाल जी, श्री काशीराम, महाशय किशनसहाय, श्री रणजीतसिह आर्य, श्री अमरसिह आर्य, आचार्य ओंकारदेव, गुरुदत्त शर्मा, प० ताराचन्द आदि ने भाग लिया। —**शिवराम आर्य**

श्रद्धांजलि शान्तियज्ञ

श्रीमती मनभावतिदेवी का श्रद्धाजलि शान्तियज्ञ श्री सु० मनोहरसिह के घर पर ग्राम माकली मे श्री स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती प्रधान यतिमण्डल दक्षिणी हरयाणा की अध्यक्षता मे श्री सुखदेव आर्य शास्त्री पुरोहित इन्द्रमुनि प्रचारमन्त्री यतिमण्डल दक्षिणी हरयाणा ने यज्ञ वैदिक विधि से करवाया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ, रोहतक को ५०/- रु० दान दिया। —**रामपाल**, कोषाध्यक्ष, वेदप्रचार मण्डल, कोसली (रेवाडी)

आर्यसमाज सैक्टर-६, ६ए का प्रथम वार्षिक उत्सव

दिनाक १-१०-२००१ सोमवार से ७-१०-२००१ रविवार तक धूमधाम से मनाया जावेगा जिसमें उच्चकोटि के विद्वान् डा० आचार्य सत्यव्रत राजेश हरद्वार एव साधु-सन्यासी महात्मा एव भजनीक पधारेंगे। सयोजक–**अमीरचन्द श्रीधर**

मण्डी आदमपुर में आर्यसमाज की स्थापना

२६ जून २००१ को आचार्य श्रीराम शर्मा वेदप्रचाराधिष्ठाता सिरसा का अपने एक रिश्तेदार के पास कारणवश २-४ दिन के लिए जाना हुआ था। यहा के हम दो-चार आदमपुर मण्डी निवासी आपके नाम से परिचित थे, आर्यसमाज के विषय मे शका समाधान और उपदेश के लिए मिले।

जब आपको पता चला कि यहा मण्डी आदमपुर में आर्यसमाज नहीं है तो आपके हृदय में एक लगन पैदा हुई कि इतनी बडी जनसख्यावाले स्थान पर आर्यसमाज का होना अत्यावश्यक है। अत यहा आर्यसमाज की स्थापना अवश्य करेगे। आपने सिरसा आर्यसमाज के पुरोहित को बुला लिया। उनके भजन होते और आचार्य जी का नित्यप्रति उपदेश होता रहा। इस प्रकार एक-एक घर मे यज्ञ होने लगे। इस तरह ३३ दिन तक यज्ञ चले और चौंतीसवा बृहद् यज्ञ श्रावणी पर्व पर हुआ। अनेक लोगो ने यज्ञोपवीत धारण किये और हर्षोल्लासपूर्वक आर्यसमाज की स्थापना की गई जिससे आचार्य श्रीराम शर्मा जी की तपस्या सफल हुई।

इस कार्य के लिए श्रद्धेय स्वामी ओमानन्द जी महाराज, श्री स्वामी इन्द्रवेश जी कार्यकर्ता प्रधान, कुलपति गुरुकुल धीरणवास और चौ० महेन्द्रसिह अध्यक्ष गुरुकुल धीरणवास व हिसार आर्यसमाज के वेदप्रचार अध्यक्ष, आर्यनगर गुरुकुल को आमत्रित किया गया था जिनमे से श्री महेन्द्रसिह जी एव चौ० बदलूराम जी अध्यक्ष वेदप्रचार मडल हिसार आदि सज्जनो ने पधारकर अपना पूरा सहयोग दिया। इस अवसर पर चौ० बदलूराम जी ने तन, मन, धन से पूर्ण सहयोग का आश्वासन ही नहीं, अपितु प्रण किया।

चुनाव इस प्रकार हुआ–प्रधान-चौ० जयपाल बैंदा, सुपुत्र श्री स्वामी धर्मानन्द सरस्वती आचार्य गुरुकुल आबूपर्वत, उपप्रधान-श्री महेन्द्र जी शास्त्री, मन्त्री-श्री सत्यनारायण जी सुपुत्र सेठ रामविलास जी, कोषाध्यक्ष-श्री महेन्द्र जी अग्रवाल मडी आदमपुर।

हिसार कृषि विश्वविद्यालय में हिंदी में काम होगा–कुलसचिव

रोहतक–चौ० चरणसिह हरयाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलसचिव महोदय ने कहा कि विश्वविद्यालय के प्रशासनिक कामकाज मे राजभाषा हिदी का अधिक से अधिक प्रयोग करने के हरसभव उपाय किये जायेगे। उन्होने यह बात २४ अगस्त को हरयाणा राष्ट्रभाषा समिति, दयानन्दमठ, रोहतक के एक शिष्टमण्डल के साथ भेट के दौरान कही। समिति के शिष्टमडल ने कुलसचिव तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारियो को स्पष्ट किया कि हरयाणा की राजभाषा २६ जनवरी १९६९ से हिदी है तथा मुख्यमत्री और मुख्य सचिव के भी हिंदी मे काम करने के आदेश हैं। अत विश्वविद्यालय के प्रशासन मे हिन्दी मे काम न होना अवैधानिक तथा अनुचित है। समिति ने यह भी स्पष्ट किया कि कृषिविज्ञान पशुचिकित्सा-विज्ञान, गृहविज्ञान तथा बागवानी जैसे पाठ्यक्रमो की शिक्षा मे हिदी का विकल्प होना आवश्यक है। ऐसा न होने से हिदीभाषी छात्रों के साथ भेदभाव होरहा है। इस बारे मे राष्ट्रपति के आदेश भी हैं तथा पाठ्यपुस्तके भी उपलब्ध है। बातचीत के अनन्तर कुलसचिव महोदय ने निम्नलिखित बिन्दुओ पर तत्काल कार्यवाई करने का आश्वासन शिष्टमडल को दिया–

१ विश्वविद्यालय के समस्त बोर्ड तथा अधिकारियो के नामपट्ट द्विभाषी अर्थात् हिंदी-अग्रेजी दोनो मे बनवाये जायेगे। हिंदी को ऊपर बडे अक्षरो मे लिखा जाएगा।
२ अग्रेजी के टाइपराइटर भविष्य मे नहीं खरीदे जायेगे।
३ अग्रेजी के वर्तमान टाइपिस्टो तथा आशुलिपिको को हिदी मे काम करने का प्रशिक्षण दिया जाएगा। अग्रेजी की टाइप मशीनो को हिंदी मे बदलवाया जाएगा।
४ अधिकारियो तथा कर्मचारियो को फाइलो पर हिदी मे टिप्पणिया तथा आदेश लिखने को प्रोत्साहित किया जाएगा।
५ छात्रो से सम्बन्ध रखनेवाले सूचना-पत्र, प्रोस्पैक्टस, आवेदन-फार्म, अकतालिका प्रमाणपत्र, परीक्षासमयसारिणी आदि हिदी मे प्रकाशित किये जाएगे।
६ पाठ्यक्रमों मे हिंदी की वैकल्पिक सुविधा के लिए एक समिति का गठन किया जाएगा। इस समिति मे हरयाणा राष्ट्रभाषा समिति की तरफ से डा० ओमप्रभात अग्रवाल को सम्मिलित किया जाएगा।
७ उपर्युक्त निर्णयो की घोषणा तथा शुभारभ के लिए १४ सितबर (हिदी दिवस) के अवसर पर विश्वविद्यालय मे एक समारोह आयोजित किया जाएगा।

कुलसचिव महोदय के साथ यह बातचीत अत्यन्त सौहार्दपूर्ण वातावरण मे हुई अधिकारियों ने शिष्टमडल को पूरा सम्मान दिया। यह समिति सभी का आभार प्रकट करती है।

शिष्टमडल मे समिति के उपाध्यक्ष श्री महावीर शास्त्री धीर के अतिरिक्त सयोजक श्री श्यामलाल, प्रो० ओमप्रभात अग्रवाल, सहसयोजक डा० जगदेवसिह विद्यालकार छात्र प्रतिनिधि श्री मनोज दूहर, हिसार के प्रतिनिधि श्री शिवनाथ राय तथा श्री रघुनाथ प्रियदर्शी सम्मिलित थे।

—**स्वामी इन्द्रवेश**, अध्यक्ष, हरयाणा राष्ट्रभाषा समिति, दयानन्दमठ, रोहतक

पोपलीला के विनाश का उपाय

(सत्यार्थप्रकाश के ११वें समुल्लास से उद्धृत)

एक जाट था। उसके घर मे एक गाय बहुत अच्छी और बीस सेर दूध देनेवाली थी। दूध उसका बडा स्वादिष्ट होता था। कभी-कभी पोप जी के मुख मे भी पडता था। उसका पुरोहित यही ध्यान कर रहा था कि जब जाट का बूढ़ा बाप मरने लगेगा तब इसी गाय का सकल्प करा लूगा। कुछ दिन मे दैवयोग से उसके बाप का मरने का समय आया। जीभ बद होगई और खाट से भूमि पर ले लिया अर्थात् प्राण छोडने का समय आपहुचा। उस समय जाट के इष्ट-मित्र और सम्बन्धी भी उपस्थित हुए थे। तब पोप जी ने पुकारा कि यजमान ! अब तू इसके हाथ से गोदान करा। जाट ने १०/- रुपया निकाल पिता के हाथ मे रखकर बोला पढो सकल्प। पोप जी बोला–वाह-वाह ! क्या बाप बारम्बार मरता है ? इस समय तो साक्षात् गाय को लाओ, जो दूध देती हो, बूढ़ी न हो, सब प्रकार उत्तम हो। ऐसी गौ का दान करना चाहिए।

जाट जी–हमारे पास तो एक ही गाय है उसके बिना हमारे लडके-बालो का निर्वाह न होसकेगा इसलिए उसको न दूगा। लो २० रुपये का सकल्प पढ देओ और इन रुपयो से दूसरी दूधारू गाय ले लेना।

पोप जी–वाह जी वाह ! तुम अपने बाप से भी अधिक गाय को समझते हो ? क्या अपने बाप को वैतरणी नदी मे डुबाकर दु ख देना चाहते हो। तुम अच्छे सुपुत्र हुए ? तब तो पोपजी की ओर सब कुटुम्बी होगए क्योकि उन सबको पहिले ही पोपजी ने बहका रखा था और उस समय भी इशारा कर दिया। सबने मिलकर हठ से उसी गाय का दान उसी पोप्जी को दिला दिया। उस समय जाट कुछ भी न बोला। उसका पिता मर गया था और पोपजी बछडासहित गाय और दोहने की बटलोही कौं ले अपने घर मे गाय बछडे को बाध बटलोही धर पुन जाट के घर आया और मृतक के साथ श्मशान भूमि मे जाकर दाहकर्म कराया। वहा भी कुछ-कुछ पोपलीला चलाई। पश्चात् दशगात्र सपिडी आदि कराने मे भी उसको मूडा। महाब्राह्मणो ने भी लूटा और भुक्खडो ने भी बहुतसा माल पेट मे भरा अर्थात् जब सब क्रिया हो चुकी तब जाट ने जिस किसी के घर से दूध माग-मूग निर्वाह किया। चौदहवे दिन प्रात काल पोपजी के घर पहुचा। देखा तो पोप जी गाय दुह, बटलोही भर, पोप जी की उठने की तैयारी थी। इतने ही मे जाट जी पहुचे। उसको देख पोप जी बोला, आइये ! यजमान बैठिये।

जाट जी–तुम भी पुरोहित जी इधर आओ।

पोप जी–अच्छा दूध धर आऊ।

जाट जी–नहीं-नही, दूध की बटलोही इधर लाओ। पोप जी विचारे जा बैठे और बटलोई सामने धरदी।

जाट जी–तुम बडे झूठे हो।

पोप जी–क्या झूठ किया ?

जाट जी–कहो तुमने गाय किसलिये ली थी ?

पोप जी–तुम्हारे पिता के वैतरणी नदी तरने के लिए।

जाट जी–अच्छा तो तुमने वहा वैतरणी के किनारे पर गाय क्यो नहीं पहुचाई ? हम तो तुम्हारे भरोसे पर रहे और तुम अपने घर बाध बैठे। न जाने मेरे बाप ने वैतरणी मे कितने गोते खाए होगे ?

पोप जी–नही-नहीं वहा इस दान के पुण्य के प्रभाव से दूसरी गाय बनकर उसको उतार दिया होगा।

जाट जी–वैतरणी नदी यहा से कितनी दूर और किधर की ओर है ?

पोप जी–अनुमान से कोई तीस क्रोड कोश दूर है, क्योकि उञ्चास कोटि योजन पृथिवी है और दक्षिण नैर्ऋत दिशा मे वैतरणी नदी है।

जाट जी–इतनी दूर से तुम्हारी चिट्ठी वा तार का समाचार गया हो, उसका उत्तर आया हो कि वहा पुण्य की गाय बन गई। अमुक के पिता को पार उतार दिया, दिखलाओ ?

पोप जी–हमारे पास गरुडपुराण के लेख के बिना डाक वा तारवर्की दूसरा कोई नहीं।

जाट जी–इस गरुडपुराण को हम सच्चा कैसे माने ?

पोप जी–जैसे सब मानते हैं।

जाट जी–यह पुस्तक तुम्हारे पूर्वजो ने तुम्हारी जीविका के लिए बनाया है, क्योकि पिता को बिना अपने पुत्र के और कोई प्रिय नहीं। जब मेरा पिता मेरे पास चिट्ठी, पत्री वा तार भेजेगा तभी मैं वैतरणी नदी के किनारे गाय पहुचा दूंगा और उनको पार उतार, पुन गाय को घर मे ले आ दूध को मै और मेरे लडके बाले पिया करेगे। लाओ ! दूध की भरी हुई बटलोही, गाय, बछडा लेकर जाट जी अपने घर को चला।

पोप जी–तुम दान देकर लेते हो तुम्हारा सत्यानाश होजाएगा।

जाट जी–चुप रहो ! नहीं तो तेरह दिन लो दूध के बिना जितना दु ख हमने पाया है, सब कसर निकाल दूगा। तब पोप जी चुप रहे और जाट जी गाय बछडा ले अपने घर पहुचे।

जब ऐसे ही जाट जी के से पुरुष हो तो पोपलीला ससार में न चले।"

—मनजीत शास्त्री, बालन्द (रोहतक)

श्राद्ध परम्परा की वास्तविकता

❑ वेदप्रकाश साधक, दयानन्दमठ, रोहतक (हरयाणा)

महर्षि दयानन्द जी ने मनु के आधार पर गृहस्थियो के लिए पांच महायज्ञ नित्यप्रति करने का विधान किया है। उनमे एक पितृयज्ञ भी है जिसका अर्थ है पितरों का यजन करना अर्थात् पितरो का घी, दूध, फल मेवा, मिष्ठान्नादि पौष्टिक पदार्थों से सत्कार करना। पितरो की श्रद्धापूर्वक सेवा करना श्राद्ध कहलाता है और मान, प्रसन्नता के द्वारा जो तृप्ति की जाती वह तर्पण कहलाता है।

परन्तु पितर कौन है ? यह एक प्रश्न है जिसका उत्तर है कि पितर पाच प्रकार के होते हैं–(१) जन्म देनेवाले माता-पिता, (२) यज्ञोपवीत देनेवाले आचार्यादि, (३) विद्या देनेवाले ज्ञानी, (४) अन्नदाता, (५) सकट मे रक्षा करनेवाले सैनिक लोग आदि।

अब प्रश्न पैदा होता है कि पितर जिसका श्राद्ध किया जाता है वे जीवित हो सकते या मृत ? पितर वह है जो पालन करता है। मृत पालन-पोषण नहीं कर सकता। मनुस्मृति मे लिखा है कि 'अहरह श्राद्ध कुर्यात्' अर्थात् गृहस्थी प्रतिदिन श्राद्ध करे। प्रतिदिन श्राद्ध केवल जीवित पितरो का होसकता है। इससे यह सिद्ध होता है कि श्राद्ध करने के लिए कोई समय नियत नही है।

हमारे माता-पिता महान् क्लेश और कष्ट सहन करके भी हमारा पालन करते हैं इसलिए हमारी सेवा सत्कार आदि के पात्र हैं। उनकी सेवा न करना हमारे लिए कृतघ्नता का पाप होगा। पुम् नाम है नरक का नरक अर्थात् दु ख से पितरों का त्राण करता है वह पुत्र कहलाता है।

आजकल केवल पन्द्रह दिनों को ही श्राद्ध काल माना है। वह भी मृतक के लिए। यदि सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाये तो ये पन्द्रह दिन भी जीवित पितरो के लिए हैं। प्राचीन समय मे ऋषि-मुनि वन मे जप-तप योगाभ्यास करते थे। वर्षा ऋतु मे वनो को छोडकर शहरो और ग्रामो मे आजाते थे। लोगो को धर्मोपदेश देते थे और ज्ञान चर्चा भी करते थे। जब वनो मे वापस जाने लगते थे। तो सब लोग उनकी विदाई के समय लगभग पन्द्रह दिन भोजन आदि पदार्थो मे सत्कार करते थे, उस समय ऋषियो मुनियो को पितर कहा जाता था। इससे यह सिद्ध होता है कि पितर जीवित को कहा जाता है।

मृतक श्राद्ध ईश्वरीय नियमो के विरुद्ध है। ईश्वर का नियम यह है कि जो जैसा कर्म करेगा उसको वैसा ही फल मिलेगा। यदि श्राद्ध करने से किसी की सद्गति हो तो वह नियम भग होजाता है।

मानो एक धनवान् बडा पापी है, वह मर गया। उसका पुत्र लाखो रुपये का का दान देकर श्राद्ध करता है। यदि इस श्राद्ध के फल से उसकी सद्गति हो तो बडा अन्याय होगा। इसके विपरीत निर्धन चाहे वह शुभकर्म करता है परन्तु उसका पुत्र श्राद्ध नहीं करता तो वह सद्गति को प्राप्त नहीं हो सकता यह भी अन्याय है। अत मृतक श्राद्ध ईश्वर के नियम के विरुद्ध है। वैदिक मान्यतानुसार प्रतिदिन पितृयज्ञ का अनुष्ठान करना चाहिए। यही जीवित पितरो का श्राद्ध है।

आर्यसमाज नरेला का वेदप्रचार पखवाड़ा

(१.८.२००१ से २०.८.२००१ तक)

हर वर्ष की भाति इस वर्ष भी आर्यसमाज नरेला दिल्ली-४० का वेदप्रचार पखवाडा दिनाक १-८-२००१ से २०-८-२००१ तक बडे ही उत्साह से उल्लासपूर्वक मनाया गया। विशेष दिनो पर एक-एक दिनो मे चार-पाच स्थानों पर यज्ञ किये गए, जिसमे हर वर्ग के काफी लोगो ने लाभ उठाया। यजमानो ने दिल खोलकर दान दिया। श्रीमान् मास्टर अमनसिह जी व ईश्वरसिह जी राठी ने ११००/-, ११००/- रुपये और श्रीमान् राजेन्द्र सिघल जी ने ५०१/- रु० का शुभदान दिया। इस प्रकार ४३३१/- रुपये दान से प्राप्त हुये और २७ स्थानो, घरो पर यज्ञ हुये। सभी जनसाधारण पर अच्छा प्रभाव रहा।

मन्त्री, आर्यसमाज नरेला दिल्ली-४० (दूरभाष ७२८२२२६)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिग प्रेस, रोहतक (फोन : ७६८७४, ५७७७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, प० जगदेवसिह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ७७७२२) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। पत्र के प्रत्येक प्रकार के विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ · सृष्टिसंवत् १,९६,०८,५३,१०२
पंजीकरणसंख्या टैक/एच.आर./49/रोहतक/99 · ☎ ०१२६२-७७७२२

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र · रोहतक

प्रधानसम्पादक : प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामन्त्री · सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री · सहसम्पादक :- डा० सुदर्शनदेव आचार्य

वर्ष २८ · अंक ४० · १४ सितम्बर, २००१ · वार्षिक शुल्क ८०) · आजीवन शुल्क ८००) · विदेश में २० डॉलर · एक प्रति १.७०

१४ सितम्बर को हिन्दी दिवस पर विशेष :—

अंग्रेजी के विश्व-भाषा होने का भ्रम

□ डॉ० वैदिक प्रताप 'वैदिक'

यह कहा जाता है कि यदि हिन्दुस्तान से अंग्रेजी चली गई तो सारी दुनिया से भारत का सम्पर्क टूट जाएगा। अंग्रेजी ऐसी खिडकी है जिससे झा[illegible] दुनिया की तरफ देखता है। [illegible] विश्व भा[illegible] है। अंग्रेजी को हटाने वा[illegible] लोग भारत को एक संकुचित देश बना देंगे, [illegible]बन्द देश बना दे[illegible]।

इस प्रकार का तर्क वही [illegible], जिन्होने इग्लैड और अमरीका के अलावा कोई दूसरा देश देखा तक नहीं है या अपने जीवन मे अंग्रेजी के अलावा कोई भी अन्य भाषा पढी तक नहीं है। बेचारे कुए के मेंढक की दुनिया आखिर कितनी बडी होगी? कुए से बाहर निकले तो दुनिया का कुछ पता भी चले। हिन्दुस्तान का एक औसत पढा लिखा आदमी अंग्रेजी तालीम की देन है। पिछले दो सौ साल से वह अंग्रेजी के कुए मे पडा पडा टर्रा रहा है। उसे पता ही नहीं कि इस कुए से बाहर फ्रासीसी, जर्मन, रूसी,चीनी, हिस्पानी, जापानी और फारसी आदि भाषाओं की एक समृद्ध और रग बिरंगी दुनिया भी बसी है।

अंग्रेजी के प्रति एकागी प्रेम का परिणाम यह हुआ कि भारत अपने पुराने मालिक इग्लैड से और उसके नये उत्तराधिकारी अमेरिका से (एक पिछलगू की हैसियत मे) काफी अच्छी तरह से जुड गया लेकिन बाकी दुनिया से उसके सीधे रिश्ते कायम नहीं हो पाए। अंग्रेजी कुछ पुराने गुलाम देशो जैसे पाकिस्तान, बर्मा,लका,घाना आदि तथा जहा अंग्रेज जाकर बस गये, ऐसे देशो जैसे अमेरिका, कनाडा, आस्ट्रेलिया आदि को छोड़कर दुनियो के किसी भी देश मे अंग्रेजी का इस्तेमाल नहीं होता। और पुराने गुलाम देशों में भी अंग्रेजी का इस्तेमाल सिर्फ नौकरशाह और अंग्रेजी-तालीम याफ्ता लोग करते हैं। उनकी सख्या प्राय. २ प्रतिशत से भी कम होती है। ऐसी स्थिति मे अंग्रेजी को विश्व-भाषा कहना तथ्यों को झुठलाना है।

अंग्रेजी को विश्व-भाषा मान लेने का दुष्परिणाम यह हुआ कि दुनिया के हर देश के साथ हम अंग्रेजी मे व्यवहार करते हैं, चाहे उसकी भाषा जर्मन हो, रूसी हो, चीनी हो, या फारसी ! हर रोग का हमारे पास एक ही इलाज है, जमालगोटा ! इसी का नतीजा है श्रीमती विजयलक्ष्मी पडित जब राजदूत का पद ग्रहण करने रूस गईं ता उनके अंग्रेजी मे लिखे परिचय पत्र को स्तालिन ने उठाकर फेक दिया और पूछा क्या आपकी अपनी कोई भाषा नहीं है? इसी का परिणाम है कि जिन देशो मे हमारे राजदूतों को नियुक्त किया जाता है, वे उन देशो की भाषा नहीं सीखते और अंग्रेजी मे काम चलाने की असफल कोशिश करते रहते हैं। उस देश के राजनीतिज्ञ क्या सोचते हैं, उस देश की जनता का विचार प्रवाह किधर जा रहा है, उस देश के अखबार क्या लिख रहे हैं, यह हमारे राजदूतो को तभी पता चल सकता है और जल्दी और ठीक-ठीक पता चल सकता है जबकि वे स्थानीय भाषाए जानते हो।

प्राय होता यह है कि या तो दुभाषिये के जरिये सूचनाए और गुप्त जानकारिया इकट्ठी करते हैं या तब तक हाथ पर हाथ धरे बैठे रहते हैं जब तक कि लन्दन और न्यूयॉर्क के अंग्रेजी अखबार उन्हे पढने को न मिलें। घटनाए हगेरी और चेकोस्लोवाकिया मे घटें, उनकी आंख के सामने घटे और बुदापेस्त और प्राहा में बैठे हमारे राजदूत उन घटनाओं पर तब तक अपनी रपट नई दिल्ली नहीं भेजें जब तक कि उन्हें 'लन्दनिया' विवरण प्राप्त नहीं हो तो इससे बढ़कर विडम्बना क्या होगी? ऐसा इसलिए होता है कि वे भाषायी तौर पर अपाहिज हैं। वे अंग्रेजी की बैसाखी के सहारे चलते हैं। नकली बैसीखिया असली पैरों से भी अधिक प्यारी हो गई हैं। जो कौम बैसाखियों पर चलती है, वह हजार साल की यात्रा के बावजूद भी सवय को उसी स्थान पर खडा हुआ पाती है, जहा से उसने पहला कदम उठाया था।

अंग्रेजी को विश्व भाषा मानने के भ्रम के कारण हमारे देश के बौद्धिको को दुनिया में क्या चल रहा है. इसका पता बहुत देर से चलता है। और कभी-कभी गलत ढग से पता चलता है। उसका कारण हमारा अंग्रेजी पर निर्भर रहना है। लातीनी अमेरिका मे अगर कोई क्रांति होती है तो उसे हम बोलिविया या क्यूबो से निकलने वाले हिस्पानी अखबारो के द्वारा नहीं जानते बल्कि अंग्रेजी भाषा के विदेशी समाचार-पत्रों और पत्रिकाओ के द्वारा जानते हैं। जब तक अंग्रेजी अखबार उन घटनाओ की रपट न छापे, हम अज्ञान में रहने के लिए विवश हैं क्योंकि अंग्रेजी के पत्रकार के हिन्दुस्तान का आदमी हिस्पानी या गोरानी भाषा तो सीखता नहीं है इसके अलावा विदेश का अंग्रेजी अखबार जब लातीनी अमेरिका या किसी अन्य देश की खबर छापता है तो उसे अपने देश के हित के मुताबिक तोडता मरोडता है।

चीन के बारे में हमारे देश मे बहुत सी गलतफैमिया क्यों फैली? इसी कारण से हम चीनी अखबार और पत्रिका तो पढते ही नहीं, हा, चीन के बारे मे लन्दन और न्यूयॉर्क के अखबार जो कुछ छापते हैं, उसे हम ज्यो का त्यो निगल जाते हैं। अंग्रेजी के एकाधिकार के कारण सारी दुनिया को हमे अमेरिका या ब्रिटिश चश्मा चढाकर देखना पडता है। हमारी अपनी स्वतत्र और निष्पक्ष राय किसी भी मामले पर बन नहीं पाती। जब दुनियां के देशों के बारे में मिलने वाली हमारी मूलभूत सूचनाए ही रंगी-पुती होती हैं तो हम एक साफ-सुथरी विदेशी नीति कैसे बना सकते हैं?

अंग्रेजी को विश्व-भाषा मानने का एक नतीजा यह भी होता है कि दुनिया का सारा ज्ञान अंग्रेजी मे है जबकि कई ऐसे क्षेत्र हैं जिनमे दुनिया की अन्य भाषाओ मे अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य हुए हैं, अनुसधान हुए हैं। हम उन सबसे या तो वचित रह जाते हैं। या उन्हें अंग्रेजी अनुवाद के जरिये ही पढते हैं। आज विज्ञान की जितनी पुस्तके रूसी भाषा मे हैं, दुनिया की किसी भी भाषा मे भी नहीं हैं। जर्मन भाषा मे जितने ऊचे स्तर के दार्शनिक हुए हैं-कान्ट, हीगल,मार्क्स जैसे- अंग्रेजी भाषा मे नहीं हुए। दुनिया के बडे-बडे अखबार जापानी और रूसी भाषा मे निकलते हैं-असाई शिम्बून और प्रावदा, न कि अंग्रेजी मे। कला, सगीत चित्रकारी पुरातत्त्व आदि विषयो पर आज भी फ्रासीसी भाषा मे जितना गहन और प्रचुर साहित्य उपलब्ध है, उसकी तुलना मे अंग्रेजी साहित्य पासग के बराबर भी नहीं है।

दुनिया के इतिहास को सबसे अधिक प्रभावित करने वाली पुस्तकें-वेद, उपनिषद्, गीता, बाइबल, कुरान, धम्मपद, जिन्दावेस्ता, दास कापिटल आदि-भी अंग्रेजी मे नहीं लिखी गईं। उनको खेत और खलिहान मे कोई फर्क दिखाई नहीं पडता। उनके लिए चर्चिल अगर अंग्रेज था तो नेपोलियन भी अंग्रेज ही होगा। जॉन स्टुअर्ट मिल अगर अंग्रेजी मे लिखता था तो प्लेटो और अरस्तू भी अंग्रेजी मे ही लिखते होगे। दुनिया का सारा ज्ञान, साहस, शौर्य, प्रतिभा सब कुछ अंग्रेजी मे है, ऐसा सोचने वाला दिमाग एक छोटा और सकुचित दिमाग है। वह विश्व-स्तर पर सोचनेवाला दिमाग बन ही नहीं सकता।

जो विश्व के साथ खुला सम्पर्क रखना चाहता है, उस दिमाग की सिर्फ एक खिडकी

(शेष पृष्ठ २ पर)

वैदिक-स्वाध्याय

सुवीर की महती महिमा

नयसीद्वति द्विषः कृणोष्युक्थशंसिनः।
नृभि सुवीर उच्यते।। (ऋ० ६ ४५ ६)

शब्दार्थ–हे इन्द्र तू (**द्विषः**) द्वेष करनेवाले के द्वेषभाव को (**इत् उ**) निश्चय से (**अति नयसि**) निकाल डालता है। (**तान्**) तू उन्हें (**उक्थशंसिनः**) अपना प्रशसक (**कृणोषि**) बना देता है (**नृभि.**) सच्चे मनुष्यों से तू (**सुवीर उच्यते**) सुवीर कहाता है।

विनय–"सुवीर"–सर्वश्रेष्ठ वीर–किसे कहना चाहिये ? अन्त में तो प्रत्येक ही गुण की पराकाष्ठा भगवान् मे है, परिपूर्ण वीरता का निवास भी उन्हीं मे है। उनकी वीरता का अनुकरण करनेवाले मनुष्य, नर लोग, सच्चे पुरुष उन भगवान् को ही 'सुवीर' नाम से पुकारते हैं। पर उनकी वीरता कैसी है ?

अज्ञानी लोग समझते हैं कि अपने शत्रु, द्वेषी को नुकसान पहुंचाने में सफल हो जाना ही बहादुरी है। यह निरा अज्ञान है। क्रोध के वश में आ जाना तो हार जाना है। क्रोधवश होकर मनुष्य केवल अपने को विषयुक्त करता है और जलाता है। एव क्रोधी अपने शत्रु का नाश क्या करेगा ? वह तो अपना नाश पहिले कर लेता है। ज्यो-ज्यो हम अपने द्वेषी के लिये अनिष्ट-चिन्तन करते हैं, त्यो-त्यो उसमे हमारे प्रति द्वेष और बढता जाता है, उसका द्वेष, उसका शत्रुपना बढता जाता है। उसे हानि पहुचा लेने पर, उसके शरीर को चोट दे लेने पर, यहा तक कि उसे मार डालने तक पर भी उसकी शत्रुता नष्ट नहीं होती, वह तो और बढती जाती है। शत्रु के शरीर का, धन का, मान का एव उसकी अन्य सब चीजो का हम बेशक नाश करने मे सफल हो जायें पर उतना ही उतना वह शत्रु (असली शत्रु) बढता जाता है, उसका शत्रुपना बढता जाता है। यह क्या हुआ ? अत वीरता (परमात्मदेव से अनुकरणीय सच्ची वीरता) इसमे है कि हम उसकी बाहरी किसी चीज का नाश न करे। (और क्रोध से हम अपना भी नाश न करे) किन्तु किसी तरह उसका–उसकी शत्रुता का–नाश कर दे। उसके अन्दर हम ऐसे घुसे कि वह हमारा शत्रु न रहे, वह मित्र हो जाय। बहादुरी इसी मे है कि हम क्रोध को जीतकर, धैर्य रखकर अपने द्वेषी के द्वेषभाव को बिल्कुल निकाल डाले, ऐसा निकाल डाले कि वह हमारी निन्दा करना तो दूर रहा, वह हमारी प्रशसा के गीत गाने लगे। यह है शत्रु पर विजय पाना। पर ऐसी विजय जाने के लिए अपने मे बडा भारी बल चाहिये–अपने मे बलिदान न खत्म होने वाली शक्ति चाहिये–बडा धैर्य चाहिये, बडी भारी वीरता चाहिये। हम भी परिमित अर्थ मे बोला करते हैं कि वीर वह है जिसकी शत्रु भी प्रशसा करे, पर हमे तो अपरिमित अर्थ में उस भगवान् का सुवीरता का आदर्श अपने सामने रखना चाहिये जिनके विषय मे भक्त लोग समझते हैं कि आज ससार मे जो लोग बिल्कुल उल्टे रास्ते पर जा रहे हैं वे भी एक दिन लौटकर भगवद्भक्त–भगवान् के प्रशसक–बनेगे और मुक्त होगे। भगवान् की उस अपरिमित वीरता मे से, हृदय-परिवर्तन करने की उनकी इस अनत शक्ति मे से और उनके अनन्त धैर्य मे से हम भी कुछ ले लेवे, हम भी वीर बनें।

(वैदिक विनय से)

अंग्रेजी के विश्व-भाषा.......... (पृष्ठ १ का शेष)

ही खुली,नहीं होगी, सिर्फ अंग्रेजीवाली खिड़की। अंग्रेजीवाली खिडकी खुली रहे, इसमें हमें कोई आपत्ति नहीं है। लेकिन क्या एक अच्छे मकान मे सिर्फ एक ही खिडकी होती है? मकान वह अच्छा होता है, जिसमें कई खिड़कियां हों। चारों तरफ से खुली हवाए आयें। अगर एक खिडकी से बदबू आ रही हो तो दूसरी खिडकी भी खोली जा सके। लेकिन हिन्दुस्तान की भाषा के भवन में हमारे समझदार शासकों ने सिर्फ एक ही खिडकी बनाई है। उस खिडकी से अच्छा दृश्य दिखता हो या बुरा, सुगध आती हो या दुर्गन्ध, वह हमें खोले रखनी पडेगी।

मजबूरी इतनी ही नहीं है, इससे भी ज्यादा है। इस भवन में न केवल एक ही खिडकी है बल्कि कोई दरवाजा भी नहीं है। बिना दरवाजे के मकान में कोई सभ्य आदमी कैसे रह सकता है? वह मकान भी क्या मकान है, जिसमें आने-जाने के लिए बन्दरो की तरह खिडकी से कूदना-फादना पडे। लेकिन हमारे शासकों ने सारे हिन्दुस्तान को पिछले चालीस साल में बदरी सभ्यता में ढालने का प्रयत्न किया है। केवल अंग्रेजी के जरिये ही हम दुनिया को जान सकते हैं, केवल अंग्रेजी के जरिये ही भारत में कोई ऊचा पद प्राप्त कर सकते हैं। अपनी भाषा के दरवाजे से हम न तो दुनिया तक जा सकते हैं और न ही अपने देश की ऊची मजिलों पर चढ सकते हैं। ऊची मंजिलों पर तो चढना दूर रहा, **इस देश मे हिन्दी का टाइपिस्ट बनने के लिए भी अंग्रेजी जानना जरूरी है।**

एक खिडकी वाले मकान, मकान क्या कोठरी, इस एक खिडकी वाली कोठरी मे पनपी हुई बन्दरी सभ्यता के कारण देश का प्रमुख बौद्धिक वर्ग नकलची बन गया है। उसकी धारणाए उसके अभिमत, उसकी विश्व-दृष्टि पश्चिमी साहित्य निर्धारित करता है। उसका अपना मौलिक चिन्तन कुठित हो गया है, उसकी सृजन शक्ति को लकवा मार गया है। यदि पश्चिमी विशेषज्ञ भारत को 'पिछडा' राष्ट्र कहते हैं तो हमारे विशेषज्ञ भी तोते की तरह उसी बात को दोहराते हैं। आजकल अमरीकी विशेषज्ञों ने भारत को 'नया राज्य' कहना शुरू किया है। उनकी देखा-देखी भारतीय नकलची विद्वान् भी भारत को नया राज्य कहने लगे हैं। उन्हे क्या यह पता नहीं है कि जब पृथ्वी पर अमरीका नाम की कोई चीज नहीं थी और लन्दन मे जगली कबीले जानवरों की तरह मार-धाड करते घूमते थे। उस समय भी याने आज में लगभग २ हजार साल पहले भी भारत में विक्रमादित्य की शानदार राज्य-व्यवस्था चल रही थी और चाणक्य जैसे महान राजनीतिज्ञ ने राज्य व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए 'अर्थशास्त्र' नामक अद्वितीय ग्रन्थ की रचना की थी।

यह सब जानते हुए भी हमारे विद्वानों को दर्शन में, इतिहास में, अर्थशास्त्र में, राजनीतिशास्त्र में पश्चिमी शब्द-रचना को स्वीकार करना ही पडता है, क्योंकि उनका सारा चिन्तन और चिन्तन को निर्मित करने वाली अधिकाश सूचनाए पश्चिम से आती हैं, सिर्फ अंग्रेजी वाले देशों से आती हैं। यह नहीं हो सकता कि वे अंग्रेजी चिन्तन-पद्धति को स्वीकार करें और उससे निकले हुए कुछ खतरनाक शब्दों या खतरनाक धारणाओं को मानने से इन्कार कर दें। **जो गुड खाता है, उसे गुलगुले खाने ही पडेंगे।**

हिन्दुस्तानी बुद्धिजीवी अगर अंग्रेजी को गुड़ की तरह खाये तो शायद वह उसे भी पचा भी ले, लेकिन उसे वह अफीम की तरह खाता है। अफीम उसके लिए ब्रह्म है। सार्वभौम सत्य है। एकोऽहं द्वितीयो नास्ति ! दूसरा सब कुछ मिथ्या है। इसका नतीजा यही होता है कि वह आलसी और कामचोर बन जाता है। वह हमेशा दूसरे के बनाए गुरों और सूत्रो पर अपना जीवन चलाना चाहता है। वह पिछलग्गू बन जाता है। अपना मार्ग स्वयं नहीं खोजना चाहता। अपना दीपक स्वयं नहीं बनना चाहता। उसकी सृजनशील, आलोचनात्मक बुद्धि निष्क्रिय हो जाती है। वह दुनिया की विभिन्न भाषाओं और साहित्यों से सामग्री का आकलन करके, उसमें से दाने और भूसे को अलग-अलग करने की क्षमता नहीं रखता। उसका नीर,क्षीर विवेक समाप्त हो जाता है। इसीलिए पिछले दो सौ सालो से हमारे विश्वविद्यालयो मे अंग्रेजी का घोटा लगाए जाने के बावजूद भी आज तक कोई शेक्सपियर, कोई मिल्टन या कोई वर्ड्सवर्थ पैदा नहीं हुआ। शेक्सपियर को तो जाने ही दीजिए, वह तो ५००० साल भी घोटा लगाते रहें तो पैदा नहीं हो सकता। शेक्सपियर या तुलसीदास या सूर या कालिदास जैसे गुलाब अपनी जमीन, अपनी आबो,-हवा, अपनी भाषा मे ही खिलते हैं।

हा जिसे आप विश्व-भाषा समझते हैं, उसमे क्लर्क खूब पैदा किए जा सकते हैं। जो बहुत दम मारने पर 'कॉन्वेन्ट' का गुदना गुदवाकर जी हजूर अफसर बन जाते हैं। अगर भारत के बुद्धिजीवी अंग्रेजों को एक दबदबेदार विश्व-भाषा मानकर उसके बोझ के नीचे नहीं दबते और उसे अन्य विदेशी भाषाओं के समान एक उपयोगी विदेशी भाषा मानकर सीखते तो शायद भारत का अधिक भला होता।

(अंग्रेजी हटाओ . क्यो और कैसे ? से साभार)

आर्यसमाज गांधीधाम के पदाधिकारियों का चुनाव

प्रधान–श्री पुरुषोत्तमभाई पटेल, उपप्रधान–श्री मुकुन्दत्त शर्मा, महामन्त्री–श्री वाचोनिधि आर्य, मन्त्री–श्री मोहनभाई जागिड़, कोषाध्यक्ष–श्री अशोकभाई कक्कड

–वाचोनिधि आर्य, महामन्त्री

चुनाव के लिए प्रत्याशी तथा उनके चुनाव निशान

	प्रत्याशी का नाम		चुनाव-निशान
१. प्रधान पद के प्रत्याशी–			
१	भगत मंगतुराम	सूची गुड़गांव/४	गाय
२	स्वामी इन्द्रवेश	सूची रोहतक/३९	हाथी
२. मन्त्री पद के प्रत्याशी–			
१	बलराज आर्य	सूची रोहतक/१४६	उगता सूर्य
२	महेन्द्रसिंह शास्त्री	सूची सोनीपत/११६	हल
३	प्रो० सत्यवीर शास्त्री	सूची भिवानी/२०	हाथी
३. कोषाध्यक्ष पद के प्रत्याशी–			
१	केदारसिंह आर्य	सूची सोनीपत/६८	तराजू
२	बलराज	सूची पानीपत/३२	हाथी
४. उपप्रधान (५) के प्रत्याशी–			
१	जयपालसिंह आर्य	सूची यमुनानगर/७	ऐनक
२	बलबीरसिंह	सूची सोनीपत/२५	कुर्सी
३	डॉ० रणधीरसिंह सागवान	सूची सिरसा/१	घोडा
४	रामधारी शास्त्री	सूची जीन्द/२९	साईकिल
५	विमला महता	सूची फरीदाबाद/३२	गुलाब का फूल
६	सूबेसिंह	सूची झज्जर/६३	हाथी
५. उपमन्त्री (५) के प्रत्याशी–			
१	आचार्य विजयपाल	सूची झज्जर/७०	हवनकुण्ड
२	चन्द्रपाल	सूची रोहतक/३०	गाय
३	जयवीर	सूची सोनीपत/१४८	तराजू
४	प्रेमवती	सूची रोहतक/१३८	घोडा
५	योगेन्द्रसिंह	सूची सोनीपत/२६	कुर्सी
६	रामकुमार आर्य	सूची जीन्द/७०	ऐनक
७	हरिश्चन्द्र शास्त्री	सूची फरीदाबाद/६६	हाथी
६. पुस्तकाध्यक्ष पद के प्रत्याशी–			
१	वेदव्रत शास्त्री	निर्विरोध	
७. अन्तरंग सदस्य (समुदाय द्वारा) के १५ पदों के प्रत्याशी–			
१	आजादसिंह	सूची सोनीपत/१२	अलमारी
२	किशनचन्द सैनी	सूची गुडगाव/३१	घोडा
३	गेदाराम आर्य	सूची यमुनानगर/१४	तराजू
४	जगदीश	सूची सिरसा/२४	बैलों की जोडी
५	जयवीर आर्य	सूची फरीदाबाद/९	दीपक
६	देवेन्द्रसिंह	सूची जीन्द/३१	हाथी
७	प्रतापसिंह आर्य	सूची सोनीपत/१३०	रिक्शा
८	पूर्णसिंह	सूची झज्जर/२६	घडा
९	पृथ्वीसिंह	सूची जीन्द/६७	पखा
१०	बलवानसिंह	सूची सोनीपत/१४९	हवनकुण्ड
११	भगत मगतुराम	सूची गुड़गाव/४	कुर्सी
१२	यशवीर आर्य	सूची गुडगाव/४	कुर्सी
१३	रामनिवास	सूची महेन्द्रगढ/३४	बकरी
१४	रामस्वरूप आर्य	सूची सोनीपत/१६६	कार
१५	विजयकुमार	सूची झज्जर/१७	साइकिल
१६	श्रीचन्द	सूची फरीदाबाद/५२	ट्रैक्टर
१७	शमशेरसिह	सूची सोनीपत/२७	वायुयान
१८	सत्यवीर आर्य	सूची भिवानी/१३	उगता सूरज
१९	सन्तराम आर्य	सूची रोहतक/१८	पुस्तक
२०	सुखवीरसिंह	सूची रोहतक/८५	रेल का इजन
२१	सुभाषचन्द्र	सूची कुरुक्षेत्र/१०	ऐनक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के १५ (प्रतिनिधि) पदों के प्रत्याशी

१	स्वामी अग्निवेश	सूची रोहतक/२७	गाय
२	जगवीरसिंह एडवोकेट	सूची रोहतक/२८	पुस्तक
३	जयवीर	सूची सोनीपत/१४८	हवनकुण्ड
४	देशबन्धु आर्य	सूची फरीदाबाद/३०	घोडा
५.	प्रकाशवीर विद्यालंकार	सूची झज्जर/१२	मोर
६.	प्रभात शोभा	सूची झज्जर/५२	तराजू
७.	बलबीरसिंह	सूची सोनीपत/२५	हल
८	बलराज मुदगिल	सूची अम्बाला/२	कुर्सी
९.	बारूराम	सूची हिसार/२९	तीरकमान
१०	भगत मगतुराम	सूची गुड़गाव/४	कार
११	रामचन्द्र शास्त्री	सूची सोनीपत/६२	उगता सूर्य
१२	रामधारी शास्त्री	सूची जीन्द/२९	बैलों की जोडी
१३	लाभसिंह	सूची पानीपत/१७	साईकिल
१४	वेदव्रत शास्त्री	सूची झज्जर/६७	हाथी
१५	प्रो० शेरसिंह	सूची झज्जर/५१	ऐनक
१६	स्वामी इन्द्रवेश	सूची रोहतक/३९	बस
१७.	प्रो० सत्यवीर शास्त्री	सूची भिवानी/२०	छतरी
१८	सूबेसिंह	सूची झज्जर/६३	ट्रैक्टर
१९	आचार्य हरिदेव	सूची फरीदाबाद/६९	वायुयान

—**धर्मचन्द,** निर्वाचन अधिकारी
(त्रैवार्षिक चुनाव २००१)
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का त्रैवार्षिक चुनाव के लिए मतपत्रों के कागज का रंग निम्नलिखित होगा

१	प्रधान	– गेरुआ	२	उपप्रधान	– गुलाबी
३	मन्त्री	– पीला	४	उपमन्त्री	– हरा
५	कोषाध्यक्ष	– सफेद	६	अन्तरग सदस्य	– नीला
७	सार्वदेशिक प्रतिनिधि	– सफेद			

प्रतिनिधि का परिचय-पत्र

१ नाम

२ पिता का नाम

३ निवास का पता

४ आर्यसमाज का नाम व पता

यहा सत्यापित पासपोर्ट आकार की फोटो गोद से चिपकाएं। फोटो के ऊपर अपना व पिता का नाम लिखे

५ प्रतिनिधि के हस्ताक्षर

६ सत्यापित करने वाले राजपत्रित अधिकारी का पूरा नाम

७ राजपत्रित अधिकारी के हस्ताक्षर

मोहर

८ दिनाक

नोट फोटो व परिचयपत्र एक ही अधिकारी से सत्यापित होना चाहिए।

श्रद्धालु आर्य का देहान्त

गढी बोहर (रोहतक) निवासी चौ० सूबेसिह आर्य का ८५ वर्ष की आयु मे शनिवार ८ सितम्बर २००१ को देहान्त होगया। आपका अन्त्येष्टि कर्म सर्वहितकारी के सम्पादक श्री वेदव्रत शास्त्री ने वैदिक विधि से उनके गाव की श्मशान भूमि मे सम्पन्न करवाया।

आप अनपढ होते हुए भी अत्यन्त श्रद्धालु और पक्के आर्यसमाजी थे। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रतिनिधि रहे और गाव के आर्यसमाज के सरक्षक थे।

स्वामी ओमानन्द सरस्वती गुरुकुल झज्जर के परम श्रद्धालु भक्त होने के कारण अपने दोनो पुत्रो को गुरुकुल झज्जर मे और तीनो पुत्रियो को कन्या गुरुकुल नरेला मे आर्षपाठविधि के अनुसार शिक्षित दीक्षित करवाया।

सामाजिक कुरीतियों को दूर करने और आर्यसमाज के प्रत्येक कार्य उत्सव वा आन्दोलन मे सदा सक्रिय भाग लेते थे। हिन्दीरक्षा आन्दोलन, गोरक्षा आन्दोलन शराबबन्दी आन्दोलन मे जेल में भी रहे।

हरयाणा में हिन्दी की दुर्दशा के लिए सरकार दोषी

आजादी के ५४ वर्ष बाद भी देश में अंग्रेजी का वर्चस्व जारी है। यद्यपि संविधान मे हिन्दी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त है किन्तु अंग्रेजी को १९६५ तक सरकारी कामकाज में जारी रखने का प्रावधान किया गया था। परन्तु आश्चर्य की बात तो यह है कि अब सरकारी कामकाज में अंग्रेजी का ही वर्चस्व है। हिन्दीभाषी प्रान्तो में भी जिनकी सरकारी भाषा हिन्दी है–अंग्रेजी का प्रयोग जारी है और १९६९ के हरयाणा राजभाषा अधिनियम की धारा ३-४ के आधीन राज्य के सभी सरकारी विभागो, प्रशासनिक कार्यों तथा जिला अदालतों आदि में समस्त कार्य हिन्दी में किया जाना अनिवार्य है किन्तु यहा भी अंग्रेजी का वर्चस्व जारी है। जिला लघु सचिवालय से लेकर राज्य सिविल सचिवालय तक अधिकाश प्रशासनिक एव सरकारी कामकाज अंग्रेजी मे ही होता है। सरकारी कार्यालयो मे बोर्ड हिन्दी मे लगे हैं किन्तु पत्राचार एव कार्यालय का सभी कार्य अंग्रेजी में ही होता है।

यद्यपि राज्य सरकार/हरयाणा सरकार के मुख्य सचिव ने राज्य के अम्बाला, हिसार, रोहतक, गुडगाव मडल के सभी विभागाध्यक्षों, आयुक्तो, उपायुक्तो एव उपमडल अधिकारियों (नागरिकों) को हिन्दी मे काम करने के आदेश जारी किये हैं। देखिए मुख्यसचिव, हरयाणा पत्र क्रमांक ६२/३७/९८ जी एस टी चण्डीगढ ६/१०/९९। यह पत्र हरयाणा के सभी न्यायालयो एव जिला तथा सत्र न्यायालयो को भी भेजा गया है। इस पत्र में कहा गया है कि सरकार इस बात को गम्भीरता से देखती है कि अभी तक भी सरकारी कार्यो मे अंग्रेजी का प्रयोग किया जारहा है। सरकार ने कहा है कि भविष्य मे सभी प्रशासनिक विभाग राष्ट्रभाषा हिन्दी मे ही सरकारी टिप्पणिया एव पत्राचार करें। सरकार के पत्र मे यह भी कहा गया है कि इन आदेशो की अवहेलना करने पर दोषी अधिकारियो एव कर्मचारियो के विरुद्ध कार्यवाही की जाएगी। इससे पहले भी हरयाणा सरकार के मुख्य सचिव ने हिन्दी मे काम करने के आदेश/निर्देश जारी किये है। देखिए पत्र क्रमाक ६२/३७/९८जी एस दिनाक ३-७-१९९८ तथा पत्र क्रमाक १२/८५/९३-६ जी एस टी दिनाक २५/५/९३ किन्तु सरकारी आदेश फाइलों तक सीमित होकर रह गए हैं। अधिकारी तथा कर्मचारी इस ओर ध्यान नहीं देते क्योंकि सरकार इनका सख्ती से पालन नहीं करवाती।

हरयाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के कामकाज मे भी अंग्रेजी का प्रयोग जारी है। उधर हरयाणा सरकार ने पहली कक्षा मे स्कूलो मे अंग्रेजी को अनिवार्य घोषित कर दिया है जबकि दसवीं तथा बारहवीं कक्षा तक भी छात्रों को अंग्रेजी मे भारी कठिनाई आती है। हरयाणा में स्थित बहुत से पब्लिक स्कूलों में तो दसवीं तथा बारहवीं कक्षाओं में हिन्दी विषय तक लेने की अनुमति नहीं होती। हरयाणा के चारों विश्वविद्यालयों मे समस्त प्रशासनिक कामकाज, पत्राचार आदि अंग्रेजी में होता है। कुरुक्षेत्र एव महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय से सम्बद्ध कालेजों में सारा कामकाज अंग्रेजी में होता है। महाविद्यालयों में टाइम टेबल तथा सूचनापट्ट तक अंग्रेजी में होते हैं। छात्रों को समझ में आए या न आए किन्तु सूचनाए अंग्रेजी में ही होगी। अधिकाश कालेजों मे न तो हिन्दी के टाइपराइटर हैं और न ही लिपिक हैं क्योकि सरकार उनके लिए स्वीकृति या अनुदान ही नहीं देती।

हरयाणा के विभिन्न कालेजों में हिन्दी प्राध्यापकों के पद विज्ञापित ही नहीं होते। जो पद खाली पडे हैं, सरकार उनको भरने की स्वीकृति नहीं देती। इससे विद्यार्थियों की भारी हानि होरही है। हिन्दी अनिवार्य कक्षाओं मे छात्रो की भारी भीड होती है। कई जगह एक सैक्शन मे छात्रो की सख्या १००-१२५ तक होजाती है, ८०-९० की सख्या तो आम बात है।

हरयाणा के कालेजो मे बी ए कक्षाओं में हिन्दी अनिवार्य विषय को अंग्रेजी अनिवार्य के बराबर पीरियड नहीं दिए जाते। यह अन्याय हिन्दी के साथ कई वर्षो से चल रहा है। कालेजो मे हिन्दी अनिवार्य भी १०० अक की है और अंग्रेजी अनिवार्य भी १०० अक की है किन्तु हिन्दी अनिवार्य को प्रति सप्ताह चार पीरियड का समय दिया जाता है जबकि अंग्रेजी अनिवार्य को प्रति सप्ताह नौ से बारह पीरियड का समय दिया जाता है। करनाल, पानीपत, कैथल, अम्बाला, सढौरा, पेहवा, जीन्द, हिसार स्थित कालेजो मे यही स्थिति है। हरयाणा के अन्य कालेजो मे भी यही व्यवस्था की हुई है। यह हिन्दी तथा हिन्दी पढनेवाले छात्रो के प्रति भारी अन्याय है। इसी कारण कालेजो मे अंग्रेजी के प्राध्यापको की सख्या हिन्दी के प्राध्यापको से दोगुणा होती है। जैसे करनाल स्थित राजकीय महाविद्यालय तथा दयालसिह कालेज करनाल मे अंग्रेजी विभाग मे प्राध्यापको की सख्या १२-१२ है, जबकि हिन्दी विभाग मे ६-६ प्राध्यापक हैं। जबकि दोनो ही कालेजो में हिन्दी तथा अंग्रेजी विषयों मे एम ए कक्षायें हैं। आखिर हिन्दी तथा हिन्दी प्राध्यापको के साथ यह भेदभाव क्यो ?

कालेजो मे हिन्दी अनिवार्य को अंग्रेजी अनिवार्य के बराबर पीरियड क्यों नहीं दिए जाते ? इस बारे मे शिक्षामत्री हरयाणा को कई बार लिखा गया। माननीय मुख्यमत्री हरयाणा तथा राज्यपाल महोदय हरयाणा को भी ज्ञापन भेजे गए। इन ज्ञापनों मे ३००-३०० विद्यार्थियों के हस्ताक्षर हैं। देखिए (I) रजि० पत्र स० ९१५८० ता० १३-४-९८ मुख्यमत्री हरयाणा (II) रजि० पत्र स० ९१५९० १३-४-९८ राज्यपाल हरयाणा (चण्डीगढ)। दूसरा ज्ञापन २०-४-९८ को राज्यपाल एव मुख्यमंत्री हरयाणा (चण्डीगढ) को भेजा गया। देखिए रजि० पत्र स० २५३४ ता० २०-४-९८ तथा रजि० पत्र स० २०३३ ता० २०-४-९८। किन्तु हरयाणा सरकार ने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया। उसके बाद भी सरकार को ज्ञापन भेजे जाते रहे हैं किन्तु सरकार ने इसे अनसुना कर दिया है। इस तरह हिन्दी के साथ हरयाणा में अन्याय एव भेदभाव जारी है।

हरयाणा के न्यायालयों में भी हिन्दी की घोर उपेक्षा है। यहा का सारा कामकाज अंग्रेजी मे होता है। यहा की जनता को न्याय भी अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी मे नहीं मिलता। जिला न्यायालय से लेकर सत्र न्यायालय तक सारी कार्यवाही अंग्रेजी में होती है। पजाब एव हरयाणा उच्च न्यायालय में भी अंग्रेजी का वर्चस्व है। हिन्दी में काम करने की अनुमति नहीं ? हरयाणा का अलग से उच्च न्यायालय भी नहीं है।

इस तरह हरयाणा मे विभिन्न प्रशासनिक, शैक्षिक एव न्यायिक आदि क्षेत्रो में अंग्रेजी का गैर कानूनी वर्चस्व कायम है और इस कारण हिन्दी की भारी उपेक्षा हो रही है। इसके लिए हरयाणा सरकार, सरकारी अधिकारी एव कर्मचारी दोषी हैं। जनता तथा प्रबुद्ध वर्ग भी इसके लिए दोषी है। इस बारे में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रोहतक) ने हरयाणा राष्ट्रभाषा समिति का गठन कर एक सराहनीय कदम उठाया है। इस बारे में आर्यसमाज के इलावा अन्य स्वैच्छिक संस्थाओं, संगठनों तथा शिक्षण संस्थाओं को भी सहयोग देना चाहिए ताकि हिन्दी के प्रति हो रहे अन्याय एव भेदभाव को समाप्त किया जासके। जिला स्तर पर राष्ट्रभाषा सम्मेलन आयोजित करने की आवश्यकता है। हरयाणा के राज्यपाल एव मुख्यमत्री को इस बारे में ज्ञापन भेजने चाहिए कि–

(१) पहली कक्षा से अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त की जाए।

(२) हरयाणा सरकार के कार्यालयो तथा कामकाज में हिन्दी का पूर्णतया प्रयोग किया जाए।

(३) हरयाणा के चारो विश्वविद्यालयों में सारा कामकाज हिन्दी में हो।

(४) कालेजों में हिन्दी अनिवार्य को अंग्रेजी अनिवार्य के बराबर पीरियड/समय दिया जाए।

(५) कालेजो में हिन्दी के रिक्त प्राध्यापक पद भरे जाए।

(६) कालेजों में हिन्दी के लिपिक रखे जाए।

(७) हरयाणा के न्यायालयों मे हिन्दी मे काम करने की अनुमति दी जाए।

–प्रो० चन्द्रप्रकाश आर्य, अध्यक्ष,
स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
दयालसिह कालेज, करनाल

राजभाषा प्रयोग बढ़ाने के लिए जनता को जागृत करना होगा—बाबू परमानन्द

हरयाणा सरकार द्वारा बार-बार हिन्दी राजभाषा में ही सभी कार्य करने के लिए आदेश दिये जाने पर भी प्राय कर्मचारी व अधिकारी भी अग्रेजी का प्रयोग कर रहे हैं। उनके मन में राष्ट्रभाषा व मातृभाषा के बारे में स्वाभिमान व आत्मगौरव नहीं रह गया है बल्कि उलटा अंग्रेजी प्रयोग के बारे में मिथ्या अभिमान पैदा होगया है। इसे मिटाकर स्वभाषा के प्रति सच्चा स्नेह व गौरव उत्पन्न करने के लिए हमें मिलकर समाज के हर वर्ग को जागृत करना होगा। यह बात हरयाणा के राज्यपाल माननीय श्री बाबू परमानन्द ने हरयाणा राजभवन में 'हरयाणा राष्ट्रभाषा समिति' के शिष्टमडल से बातचीत करते हुए कही। माननीय राज्यपाल महोदय ने विश्वविद्यालयो के कार्यालयो, परीक्षा व शिक्षा आदि में हिन्दी प्रयोग बढाने के लिए पुन सभी विश्वविद्यालयों में निर्देश जारी करने पर भी सहमति जताई।

माननीय राज्यपाल जी के निर्देश पर समिति का शिष्टमडल मुख्य सचिव सहित अनेक मत्रालयों में भी सम्बन्धित मत्रीगणो व सचिवों से मिला और उन्हे राज्य मे हिन्दी प्रयोग बारे समिति का ज्ञापन सौंपा। मुख्य सचिव हरयाणा श्री ललितमोहन गोयल ने राष्ट्रभाषा समिति के शिष्टमडल से खुलकर गम्भीरता से बातचीत की। उन्होने सभी विभागो मे राजभाषा में कार्य करने के विषयक निर्देश पत्र जारी करने का आश्वासन समिति को दिया तथा अपनी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए सभी उपाय करने का सुझाव भी समिति को दिया। उन्होने सचिवालय 'प्रवेशानुमति-पत्र' को हिन्दी मे तैयार करने के लिए कम्प्यूटर मे हिन्दी सॉफ्टवेयर बदलवाकर कार्य आरम्भ करने का आश्वासन दिया। धीरे-धीरे सभी विभागों में हिन्दी सॉफ्टवेयर लाए जायेगे। शिष्टमडल मे श्री श्यामलाल सयोजक, महावीर धीर उपाध्यक्ष, डा० जगदेवसिह सहसचिव व डा० सुरेन्द्रकुमार सदस्य सम्मिलित थे।

इससे पहले समिति कृषि विश्वविद्यालय हिसार व म०द०वि० रोहतक के उपकुलपति व कुलसचिव से मिलकर हिन्दी प्रयोग बढाने पर उन्हे सहमत कर चुकी है।

प्रत्याशियों की आवश्यक बैठक १७-६-२००१ को प्रात: ११ बजे

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक के त्रैवार्षिक चुनाव २००१ में भाग लेनेवाले सभी प्रत्याशियों को सूचित किया जाता है कि उनकी एक आवश्यक बैठक १७-९-२००१ को प्रात ११ बजे सभा कार्यालय में होगी। इस बैठक में चुनाव सम्बन्धी आवश्यक सूचनाए दी जा जाएगी।

बैठक में अवश्य ही सम्मिलित होने का कष्ट करें।

धर्मचन्द
निर्वाचन अधिकारी,
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

आर्यसमाज पुष्कर (अजमेर) में नि:शुल्क एक्यूप्रेशर शिविर का आयोजन

आर्यसमाज पुष्कर द्वारा दिनाक २ अक्तूबर २००१ से ८ अक्तूबर पर्यन्त नि शुल्क एक्यूप्रेशर महर्षि दयानन्द निर्वाण न्यास अजमेर के विशेषज्ञ (एक्यूप्रेशर) प्रसिद्ध चिकित्सक डॉ० रामचरण गोयल के नेतृत्व में शिविर का आयोजन किया गया है। इससे पूर्व भी समय-समय श्री गोयल दो शिविरों का सफल सचालन कर चुके हैं।

यह शिविर आयुर्वेद चिकित्सा विज्ञान मर्मस्थल सुश्रुतोक्त वर्णित चिकित्सा पद्धति पर आधारित है जो बिना किसी औषध के मनुष्य को रोगों से बचाती है।

शिविर प्रतिदिन प्रात ८ से ११ पर्यन्त आर्यसमाज भवन पुष्कर मे शिक्षण चलेगा।

इच्छुक सज्जन दिनाक १ अक्तूबर तक पत्र लिखकर स्थान सुरक्षित करवा लें। शिविर में शिविरार्थी निजी व्यय से सम्मिलित होगे। सस्था किसी प्रकार का व्यय नहीं उठायेगी।

गुरुकुलीय आयुर्वेद के क्षेत्र मे रुचि रखनेवालों के लिये श्री पाठ्यक्रम उपयोगी रहेगा। आयुर्वेद का क्रियात्मक ज्ञान प्राप्त करने के अभिलाषी भी पत्र व्यवहार करे।

—वैद्य मुनिदेव उपाध्याय, आचार्य, आर्यसमाज पुष्कर

पुरस्कार प्राप्त कीजिये

सत्यार्थप्रकाश की प्रतियोगिता मे भाग लेकर २००/-, १००/- और ५०/- रुपये का प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार प्राप्त करे।

कृपया निम्न प्रश्नो के उत्तर पत्र मे छपने के बाद बीस दिन के अन्दर नीचे लिखे पते पर साफ-साफ लिखकर भेजे। अपना नाम, पिता जी का नाम और पूरा पता पिनकोड सहित अवश्य लिखे—

१ तीन बार ओ३म् शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!! कहने का प्रयोजन समझाओ ?
२ किन-किन प्रमाणो से सत्य असत्य की परीक्षा की जा सकती है ?
३ तीन एषणाओ का उल्लेख करते हुए सन्यासी के कोई पाच विशेष कर्त्तव्य बताओ ?
४ क्रोध से उत्पन्न होने वाले दुर्गुणो को बताकर शमन और दमन के अर्थ समझाओ ?
५ सिद्ध करो कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है ? (सक्षिप्त उत्तर)
६ स्वामी दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द मे कोई पाच बडे अन्तर बताओ ? (आवश्यक)

सयोजक **देवराज आर्य मित्र**, आर्यसमाज कृष्णा नगर, दिल्ली-५१

दयानन्दमठ दीनानगर में द्विमासिक वैदिक कथा सम्पन्न

एक जुलाई, सन् २००१ को दयानन्दमठ दीनानगर मे आचार्य स्वामी सदानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता मे गत वर्ष की भाति इस वर्ष भी वैदिक कथा आरम्भ हुई। जिसका शुभारम्भ १०१ वर्षीय वीतराग सन्त शिरोमणि स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने किया। इस कथा मे निम्नलिखित विद्वानो ने वेदमन्त्रों तथा ऋषिकृत ग्रन्थों पर व्याख्यान दिया जिसमे शास्त्री बहादुरसिह जी रेवाडी, अनिरुधकुमार शास्त्री आर्यसमाज माडल टाउन लुधियाना, शास्त्री जोगिन्दरपाल जी धारीवाल, शास्त्री शिवनारायण जी दिल्ली, शास्त्री विजयकुमार जी उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब, डॉ० रविन्द्रकुमार जी शास्त्री दयानन्दमठ, दीनानगर, स्वामी चन्द्रवेश जी मेरठ, भरतलाल जी शास्त्री, हासी (हरयाणा), आचार्य स्वामी सदानन्द जी सरस्वती दयानन्दमठ दीनानगर आचार्य धर्मवीर जी विद्यालकार, वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर आदि विद्वानो ने समय-समय पर इस दयानन्दमठ दीनानगर की पवित्र तप स्थली मे स्थानीय दीनानगर शहर तथा दूर-दराज क्षेत्रो से आये श्रद्धालुओं का मार्गदर्शन किया। रमेशकुमार जी योगाचार्य ने प्रात कथा के उपरान्त दीनानगर शहर से आये हुए योग के जिज्ञासुओ को योगासन व्यायाम प्राणायाम के माध्यम से मन की एकाग्रता का अभ्यास कराया।

—ब्र० रामदास आर्य, दयानन्दमठ, दीनानगर (पजाब)

महाशय रघुवर आर्य दिवंगत

महाशय रघुवीर आर्य जिनका नाम आर्यजगत् मे बडी श्रद्धा एव आदर के साथ स्मरण किया जाता है। उनका दु खद निधन उदर कैंसर की लम्बी बीमारी से सघर्ष करते हुए हो गया। दिवगत आर्य जी ने आजीवन श्रेष्ठ विचारो को न केवल आत्मसात् किया अपितु आजीवन उन विचारो के प्रचार-प्रसार के लिए अथक परिश्रम किया।

उन्होंने अपने एकमात्र पुत्र श्री तपेन्द्र कुमार जिनकी माता का देहान्त २ वर्ष की आयु मे हो गया था उनको माता एव पिता दोनो का प्यार देते हुए वैदिक रीति से सुसस्कारित भी किया। आज उनकी ही तपस्या का फल है कि श्री तपेन्द्र कुमार जी कोटा विभाग मे आयुक्त के गरिमामय पद पर पदस्थ हैं। एव अपने पिता द्वारा दिए गए मार्गदर्शन के अनुकूल आज एक कर्त्तव्यनिष्ठ एव ईमानदार अधिकारी के रूप मे जाने जाते हैं।

ईश्वर से यही प्रार्थना है कि शोकाकुल परिजनो को असह्य दु ख सहने की क्षमता दे।

आवश्यकता है

गुरुकुल उच्च विद्यालय धीरणवास जिला हिसार में धर्मशिक्षक का पद रिक्त है, जिसकी योग्यता निम्न प्रकार से हो–(१) आर्ष पद्धति से शास्त्री अथवा आचार्य। (२) आर्षग्रन्थों का विद्वान्। (३) उपदेशक एव अच्छा वक्ता। वेतन योग्यतानुसार। आवास एव भोजन नि शुल्क। आवेदन की अन्तिम तिथि २० सितम्बर २००१। साक्षात्कार तिथि २५ सितम्बर २००१

—सर्वदानन्द, कुलपति गुरुकुल धीरणवास, जिला हिसार (हरयाणा)

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

१	आर्यसमाज बेगा (सोनीपत)	१४, १५, १६ सितम्बर
२	आर्यसमाज जलियावास (रेवाडी)	२२, २३ सितम्बर
३	आर्यसमाज गोहाना मण्डी	२३ से २७ सितम्बर
४	आर्यसमाज सैक्टर-१९, फरीदाबाद	२३ से ३० सितम्बर
५	आर्यसमाज रसूलपुर जिला महेन्द्रगढ	२२, २३ सितम्बर
६	आर्यसमाज सैक्टर-९, गुडगाव	१ से ७ अक्तूबर
७	आर्यसमाज बसई, जिला गुडगाव	१२ से २१ अक्तूबर
८	कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, पचगाव (भिवानी)	२० से २१ अक्तूबर
९	आर्यसमाज नसोपुर जिला अलवर (राज०)	३०, ३१ अक्तूबर
१०	आर्यसमाज सैक्टर-१४, सोनीपत	५ से ११ नवम्बर

—डॉ० सुदर्शनदेव आचार्य, वेदप्रचाराधिष्ठाता

हिन्दी दिवस–१४ सितम्बर पर विशेष–

विज्ञान की पढ़ाई और अंग्रेजी

–डॉ० वेदप्रताप वैदिक

अग्रेजी के कुछ अधभक्त लोगों ने देश में यह विचार भी फैलाया कि अग्रेजी के बिना विज्ञान की पढाई नहीं हो सकती। विज्ञान की सब ऊची पुस्तकें अग्रेजी में हैं। अगर अग्रेजी हट गई तो विज्ञान भी हट जाएगा।

सच पूछा जाए तो बात उल्टी ही है। अग्रेजी शिक्षा और विज्ञान मे तो छत्तीस (३६) का आकडा रहा है। एक का मुह इधर तो दूसरे का मुह उधर! ऑक्सफोर्ड और केम्ब्रिज विश्वविद्यालय के पुराने बही-खाते निकालकर देखे तो मेरी बात समझ मे आ जाएगी।

अग्रेजी शिक्षा के इन गढो में विज्ञान और गणित की पढाई की बडी उपेक्षा होती थी, क्योकि विज्ञान तर्क करना सिखाता है और तर्क मजहब का दुश्मन है और मजहबी लोग ही इन शिक्षा-केन्द्रो को अपने अनुदान से जीवित रखते थे। ऐसी स्थिति मे विज्ञान और गणित की पढाई घरो मे ही चलती थी। जॉन स्टुअर्ट मिल जैसे प्रसिद्ध दार्शनिक और गणितज्ञ ने विश्वविद्यालय जाने के बजाय घर मे बैठकर पढना-लिखना ज्यादा अच्छा समझा। आपने माइकेल फेराडे का नाम सुना होगा, जिसने बिजली का आविष्कार किया। इस आदमी ने कभी ऑक्सफोर्ड या केम्ब्रिज का मुह तक नहीं देखा।

ऑक्सफोर्ड और केम्ब्रिज का, यह विज्ञान की उपेक्षावाला रुख भारत मे भी आया, क्योकि बम्बई मद्रास और कलकत्ता मे अग्रेज ने जो विश्वविद्यालय कायम किये, वे उन्ही की नकल पर थे। इन भारतीय शिक्षा-केन्द्रो मे भी ज्यादा जोर अग्रेजी भाषा, साहित्य और धर्मशिक्षा' को पढाने पर था। यहा भी विज्ञान, गणित आदि विषयो की उपेक्षा की गई। अग्रेज को इससे कोई मतलब नहीं था, खासकर हुकूमत करनेवाले अग्रेज को, कि भारतीय प्रतिभा का विकास हो। वह तो अग्रेजभक्त नकलचियो की फौज खडी करना चाहता था। इसके बावजूद भी भारत में जैसे-तैसे विज्ञान की कुछ न कुछ प्रगति हुई ही। प्रगति करते रहने की मनुष्य की अदम्य इच्छा को आखिर कहा तक दबाया जा सकता है?

अगर भारत की प्रयोगशीलता को दबाया नहीं गया होता, अग्रेजो के द्वारा, मुगलो के द्वारा तथा अन्य आगन्तुको के द्वारा तो मेरा विश्वास है कि चाद पर आदमी को भेजने का काम सबसे पहले भारत ही करता। भारत मे तो आदि काल से इस बात का ज्ञान और यह मान्यता रही है कि इस पृथ्वी के अलावा अन्य ग्रहों में भी जीवन है। 'विमानशास्त्र' नामक प्राचीन ग्रन्थ को देखकर मैं दग रह गया। उसमे ध्वनि की गति से उडनेवाले विमानो का, उनकी बनावट का, उनके सिद्धान्तो का विशद वर्णन किया गया है।

मैं कहानी-किस्सो की बात नहीं कर रहा हू। पोगापन्थ और गप्पो मे मेरा जरा भी विश्वास नहीं है। मैं आपसे आर्यभट के गुरुत्वाकर्षण सिद्धान्त और लीलावती के गणित की बात कर रहा हू, जिन्हे सारी दुनिया ने मान्यता दी है। चरक और सुश्रुत की बात कर रहा हू, वागभट्ट की बात कर रहा हू। पिछले दिनो डॉ० रघुवीर के पुत्र डॉ० लोकेशचन्द्र ने जावा बाली, सुमात्रा साइबेरिया आदि स्थानों से लाए हुए अनेक ग्रन्थ, चित्र और पदार्थ दिखाए। मैं यह देखकर चकित होगया कि भारतीय शल्य-चिकित्सा का प्रचार इन सारे इलाको मे था। आज से कई हजार वर्ष पूर्व भारतीय शल्य-चिकित्सा काफी विकसित थी। इसी तरह रसायन शास्त्र और भौतिक विद्या मे भी भारतीयो ने उल्लेखनीय प्रगति की थी। इसे उल्लेखनीय इसलिए कहता हू कि उसी काल मे अन्य देशों की तुलना मे, खासकर ब्रिटेन की तुलना मे भारत हजारो मील आगे था। लेकिन मुख्य प्रश्न यह है कि इस प्रगति को लकवा क्यों मार गया? यह प्रगति अपने तर्कसंगत मार्ग पर क्यों नहीं चल सकी?

इसके कई कारण हो सकते हैं, लेकिन एक प्रमुख काराण है–बाहरी शासकों द्वारा हमारे देश में चलनेवाली शिक्षा और शोध की परम्परा को नष्ट-भ्रष्ट करना। दूसरे आततायियों की बात यहां छोड दें। अग्रेजों के प्रयत्नो के बारे मे मैं पहले ही कह चुका हूं। अग्रेजों ने अंग्रेजी को ज्यादा महत्त्व दिया और विज्ञान को कम। अगर अंग्रेजों के मन में अग्रेजी के प्रति विशेष आग्रह नहीं होता, विज्ञान की पढाई और प्रयोगों पर अधिक जोर दिया जाता। जब विज्ञान पर अग्रेजी लाद दी गई तो बच्चों ने विज्ञान कम पढा और अग्रेजी ज्यादा।

जब किसी विदेशी भाषा के जरिये बच्चों को विज्ञान पढाया जाता है तो वह बोझिल, नीरस और अरुचिकर होजाता है। विज्ञान क्या है? प्रयोग का दूसरा नाम ही विज्ञान है। जब बच्चा प्रयोग करता है तो उसके और उपकरणो के बीच भाषा की कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए। भाषा को दासी की तरह सेवा करनी चाहिए। भाषा को साधने की जरूरत नहीं होनी चाहिए। लेकिन जब अग्रेजी में विज्ञान पढाया जाता है तो एक विद्यार्थी प्रयोग प्रारभ करे, उसके पहले उसे अग्रेजी से कुश्ती लडनी पडती है। पहले भाषा समझे, फिर प्रयोग करे।

एक पाचवीं कक्षा के बच्चे को अगर अंग्रेजी में कहा जाए कि "होल्ड द टेस्ट-ट्यूब अपराइट" तो इस आदेश का पालन करने के पहले उसे समझना पडेगा कि 'होल्ड' का मतलब क्या है, 'टेस्ट-ट्यूब' का मतलब क्या है और 'अपराइट' का मतलब क्या है तथा इन सब शब्दों को एक साथ रखने पर क्या मतलब निकलता है? यह सब ठीक-ठीक समझे बिना वह प्रयोग नहीं कर सकता जबकि दूसरी कक्षा के बच्चे से आप उसकी मातृभाषा मे कहें कि 'परख-नली को सीधा पकडो' तो वह तत्काल, बिना किसी कठिनाई के, उस आदेश का पालन करेगा और प्रयोग कर लेगा। ऐसा क्यो होता है?

ऐसा इसलिए होता है कि जब वह एक-डेढ साल का था, तभी से उसने अपनी मा के मुख से इसी भाषा में इसी तरह के कई वाक्यो को सुना है और उसका पालन किया है। उसे भाषा को साधने की जरूरत नहीं है। वह तो उसे जन्मघुट्टी में पिलाई गई है। अब आप ही बताइये, प्रयोग या शोध किस भाषा मे आसानी से हो सकता है? मातृभाषा मे या विदेशी भाषा मे?

विडम्बना यह है कि विज्ञान के बगीचे तक पहुचने के लिए एक छात्र को अग्रेजी का जलता हुआ मरुस्थल पार करना पडता है। कुछ सी वी रमन और कुछ हरगोविन्द खुराना और कुछ नार्लीकर जैसे अदम्य साहसी लोग तो उस मरुस्थल को भी हसते-हसते पार कर जाते हैं और अपना जौहर दुनिया को दिखा देते हैं लेकिन एक औसत विद्यार्थी या तो फल पाने की इच्छा ही नहीं करता है या रास्ते मे ही दम तोड देता है या अपनी पूरी जिन्दगी मरुस्थल पार करने में ही लगा देता है। स्वयं रमन जैसे वैज्ञानिकों ने स्पष्ट शब्दो में कहा है कि यदि भारत में विज्ञान मातृभाषा के जरिये पढाया गया तो आज भारत दुनिया के अग्रगण्य देशों में होता।

जो दुनिया के देश आज विज्ञान में आगे बढे हुए हैं, क्या वहा विदेशी भाषाओं के जरिये विज्ञान की पढाई होती है? कतई नहीं। इगलैंड और अमेरिका में अग्रेजी में, जर्मनी में जर्मन में, फ्रास मे फ्रांसीसी में, रूस में रूसी में और जापान में जापानी भाषा में विज्ञान पढ़ाया जाता है। रूस के बड़े-बड़े वैज्ञानिक अंग्रेजी का एक काला अक्षर भी नहीं जानते। फिर दूसरे देशों में होनेवाली वैज्ञानिक प्रगति के बारे में उन्हें जानकारी कैसे मिलती होगी? उस जानकारी को प्राप्त करने के लिए ये वैज्ञानिक अंग्रेजी या अन्य दर्जनों विदेशी भाषाए सीखने में अपना समय बर्बाद नहीं करते।

हर देश में अनुवादको का एक समूह होता है जो न केवल एक भाषा से बल्कि अनेक भाषाओं से विज्ञान की सामग्री देशी भाषाओं में ले आता है। यदि वैज्ञानिक स्वय विदेशी भाषाएं सीखना भी चाहें तो वे कितनी विदेशी भाषाए सीख सकते हैं जबकि अनुवादक तो कई भाषाओं के हो सकते हैं। इसलिए यह तर्क तो बिल्कुल थोथा है कि अंग्रेजी के बिना विज्ञान की पढाई को धक्का लगेगा। बल्कि मैं तो उल्टी बात कहता हू। वह यह कि अंग्रेजी के कारण विज्ञान की पढाई को धक्का लग रहा है।

(अंग्रेजी हटाओ . क्यों और कैसे ?' से साभार)

ऐ मेरे देश के वीरो

(तर्ज है–ऐ मेरे वतन के लोगो)

टेक–ऐ मेरे देश के वीरो, तुम बन जाओ सेनानी।
पथ भूल गये क्यों अपना, होती है यह हैरानी।।

१ इतिहास बताता सब कुछ, उसको पढ करके देखो,
यह देश है शूरवीरों का, क्यों खून हो गया पानी।
ऐ मेरे देश के ।।

२ जरा याद करो वीरो को, कैसे थे वो बलिदानी,
स्वदेश की रक्षा हेतु, निकले बनकर तूफानी।
ऐ मेरे देश के ।।

३ अब देश धर्म की नैया, तूफा मे फसी है भैया,
यदि नहीं बचाया इसको, मिट जाएगी सभी निशानी।
ऐ मेरे देश के ।।

४ लगर लगोट अब कस लो, मत देर लगाओ जवानो,
आओ तोड के बधन सारे, देशहित में लगादो जवानी।
ऐ मेरे देश के ।।

५ मुश्किल से मिली आजादी, वो खतरे में पडी है साथी,
मत लडो परस्पर भाई, बन जाये न अजब कहानी।
ऐ मेरे देश के ।।

–देवराज आर्य मित्र, आर्यसमाज कृष्णनगर दिल्ली-५१

हिन्दी के हित ले संकल्प

इस स्वराज्य में भी हिन्दी है, आज हो रही अति अपमानित,
आसू बहा रही है हिन्दी, जिसको होना था सम्मानित,
क्रन्दन गूज रहा हिन्दी का, गावों से लेकर दिल्ली तक-
है वर्चस्व बढा अंग्रेजी, वही हो रही है गौरवान्वित।

यद्यपि संविधान में हिन्दी, अपनी बनी राष्ट्र की भाषा,
पर अग्रेजी मे ही होता है, शासन का सब खेल तमाशा,
हिन्दी के प्रति उदासीन है, आज राष्ट्र के जन-गण सारे-
धूल-धूसरित हुई हमारे, राष्ट्रनायकों की सब आशा।

हिन्दी के प्रति उदासीनता से, संस्कृति का ह्रास हो रहा,
अग्रेजी के प्रति लगाव यह, बीज कलह का यहा बो रहा,
गाव-गाव में आज खुल रहे, अग्रेजी माध्यम विद्यालय-
राम-कृष्ण-गांधी का बच्चा, अग्रेजी का भार ढो रहा।

राष्ट्रभक्ति की दिव्य भावना, शेष अभी हो यदि अत्यल्प,
हिन्दी के प्रति यदि मन में हो, भाव पवित्र अभी भी स्वल्प,
राष्ट्रवासियो! तो फिर आओ! शुद्ध मनोभावों से हम सब-
गौरव वृद्धि करें हिन्दी का, हिन्दी के हित ले सकल्प।।

–राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

श्री कृष्ण जन्माष्टमी उत्सव सम्पंन्न

आर्यसमाज रेलवे रोड, यमुनानगर में दिनाक ११८-२००१ से १२-८-२००१ शनि, रविवार को श्री कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व बडे धूमधाम से मनाया गया मुख्य समारोह दिनाक १२-८ को हवनयज्ञ से शुभारम्भ हुआ। जिसमें आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री डॉ० ओमप्रकाश वर्मा, डॉ० सूर्यपाल शास्त्री और श्री पं० ज्योतिस्वरूप जी ने योगिराज श्रीकृष्ण के जीवन और उनके द्वारा किये गए कार्यों पर विस्तार से प्रकाश डाला। जिसमें यमुनानगर के सभी समाजों से तथा आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों से काफी सख्या मे आर्यजनो ने उपस्थित होकर विद्वानों के विचार सुनें।

—कृष्णचन्द्र आर्य, प्रधान

शोक प्रस्ताव

ता० २-८-२००१ को बड़ी दुःखित मौत भूतपूर्व कौंसलर चौधरी रामसिह डबास (गाव कन्झावला दिल्ली) का हिन्दुरावा, होस्पीटल में दिल का दौरा (हार्ट अटैक) होने से स्वर्गवास हो गया उनका दाहसस्कार उसके गाव कझावला मे किया गया। उनकी तेहरामी १२-८ को कंझावला मे यज्ञ श्री रणवीर शास्त्री (आसन गाव) निवासी ने करवाया भारी भीड में शास्त्री जी ने उनको समाजसेवी निडर नेता बताया। ये भरा पूरा परिवार छोडकर चले गये भगवान् उनकी आत्मा को शान्ति दे।

—श्री राममेहरसिंह, प्रधान—आर्यसमाज भदानी (झज्जर)

महाशय भरतसिंह आर्य की धर्मपत्नी का देहान्त

बाढडा क्षेत्र के नामी आर्य महाशय भरतसिह गाव आर्यनगर (भिवानी) की धर्मपत्नी श्रीमती रजवणदेवी क देहान्त लगभग ८८ वर्ष की आयु मे दिनाक २६ अगस्त २००१ को हो गया। दिवगत वृद्धा महिला ने आर्यसमाज के प्रचार आदि कार्यो मे स्वनामधन्य अपने पति श्री भरतसिह महाशय की आजीवन सहायता करके सहधर्मिणी नाम को सार्थक बनाया। वे अपने पीछे भरा पूरा (सम्पन्न) व बडा प्रगति पथारूढ तथा आर्यसमाज से प्रभावित परिवार छोड़कर गई हैं। उन्हें अपनी मृत्यु का आभास हो गया था। कुछ दिन पहले कहा था कि अब चोला बदलना है।

—धर्मशास्त्री, मन्त्री—आर्यसमाज भाण्डवा (भिवानी)

आर्यसमाज खैल बाजार, पानीपत का चुनाव

सरक्षक—प्रो० उत्तमचन्द शरर, डॉ० बिहारीलाल जी, श्री आत्माराम आर्य, प्रधान—सेठ रामकिशन जी, कार्यकर्त्ता प्रधान—श्री हरचरणदास अरोडा, उपप्रधान—श्री धर्मवीर भाटिया, श्री मुनीशचन्द्र, श्री कृष्णलाल जी, श्री देसराज जी, मन्त्री—श्री जयकिशन जी, उपमन्त्री—श्री राजेन्द्रकुमार पाल, प्रचारमन्त्री—श्री कस्तूरीलाल जी, कोषाध्यक्ष—श्री कृष्णलाल एलावाधी, आडीटर—श्री मगलसैन एलावादी, पुस्तकाध्यक्ष—श्री जगदीशचन्द्र जी (शिक्षक), यज्ञव्यवस्थापक—श्री देवीदास आर्य।

निःशुल्क टी०बी० औषधालय

प्रबन्ध—श्री बलराज एलावाधी, कोषाध्यक्ष—श्री राजीवकुमार जी।

—जयकिशन आर्य, मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के बढ़ते कदम

दयानन्दमठ, रोहतक—आर्यसमाज का युवा सगठन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद राष्ट्र की भावी पीढी को शारीरिक दृष्टि से पुष्ट करते हुए उन्हें मानसिक रूप से तथा बौद्धिक आधार पर ईमानदार व कर्तव्यपरायण बनाने का प्रयास कर रही है। इसी उद्देश्य को ध्यान मे रखते हुए विभिन्न स्कूल एव कालेजो में योगासन एव ध्यानयोग शिविरो का आयोजन किया गया।

परिषद् का राष्ट्रीय अधिवेशन १९ अगस्त २००१ को विट्ठलभाई पटेल भवन रफी मार्ग दिल्ली मे सम्पन्न हुआ था, जिसमें अगले तीन वर्षों के लिए श्री जगवीरसिह एडवोकेट को प्रधान बनाया गया तथा समस्त प्रदेशो के प्रदेश अध्यक्षों की नियुक्ति व राष्ट्रीय कार्यकारिणी के गठन का अधिकार भी उन्हें दिया गया। अगले तीन वर्षों मे परिषद् एक लाख युवको को प्रशिक्षित करके संगठन के कार्यकर्ता तैयार करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के व्यायाम-शिक्षक तथा परिषद की जिला झज्जर इकाई के पूर्व प्रधान ब्र० वीरदेव आर्य ने निम्न गावो मे प्रशिक्षण शिविरो का आयोजन किया है। १८ अगस्त २००१ तक ग्राम खेडीजट्ट वाया बादली (झज्जर) मे लगभग ५५ युवको ने शिविर की दिनचर्या मे भाग लिया। इसमे मुख्य सहयोगी रहे स्कूल के मुख्याध्यापक जी, जिन्होंने ५००/- रु० का सहयोग देकर सगठन की आर्थिक मदद की है। इसी प्रकार जितेन्द्र उर्फ जीतू सुपुत्र श्री धर्मवीर आर्य व वेदप्रकाश तथा दलवीर उर्फ लाला का विशेष सहयोग मिला। अन्तिम दिन परिषद् की इकाई का गठन किया गया जिसमें सोमदेव सुपुत्र श्री हवासिह प्रधान, विक्रम सुपुत्र रणधीरसिह मन्त्री, राकेश सुपुत्र महावीरसिह को कोषाध्यक्ष चुना गया।

इसी प्रकार ग्राम खेडी खुमार (झज्जर) मे २२ अगस्त से २९ अगस्त तक प्रशिक्षण शिविर लगाया गया जिसमे लगभग ७५ युवको ने भाग लिया। खेडी खुमार में भी हैडमास्टर बलवीरसिह जी ने २००/- रु० देकर सगठन का मनोबल बढाया। अन्तिम दिन हरिश्चन्द्र सुपुत्र सुभाषचन्द्र को प्रधान तथा उपप्रधान श्री अरविन्द सुपुत्र श्री सत्यवीरसिह तथा मन्त्री योगेशकुमार सुपुत्र श्री राजसिह तथा सदीपकुमार सुपुत्र श्री बिजेन्द्रसिह को कोषाध्यक्ष चुना गया।

इसी क्रम में ग्राम तलाव (झज्जर) मे ३० अगस्त से ५ सितम्बर २००१ तक लगभग ८५ युवको को प्रशिक्षण दिया गया। अन्तिम दिन श्री सौरभप्रकाश को प्रधान तथा सजयकुमार को उपप्रधान और बलराजकुमार को मन्त्री चुना गया तथा कोषाध्यक्ष मनजीतकुमार सुपुत्र धर्मवीर को चुना गया। इस शिविर में जिन युवकों का विशेष सहयोग रहा उनके नाम इस प्रकार है—श्रीभगवान्, वीरेन्द्र, सजय, मनजीत व बलराज आदि। परिषद् की ओर से सहयोगियो का धन्यवाद करते हुए युवको को आर्यसमाज व वैदिक विचारधारा को अपनाने की अपील की। धन्यवाद।

—**सन्तराम आर्य**, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्
कार्यालय पूर्व प्रदेशाध्यक्ष दयानन्दमठ, रोहतक

सावधान ! कोका कोला/पेप्सी में अनेक स्वास्थ्यनाशक तत्त्व

अमेरिका की 'दि अर्थ आईलैंड जरनल' के अनुसार हर कोका कोला/पेप्सी की एक बोतल में ४० से ७२ मिलीग्राम तक नशीले तत्त्व ग्लिसरीन, एल्कोहल, ईस्टरगम, साइट्रिक एसिड व पशुओं से प्राप्त ग्लिसरोल पाए जाते हैं। यह साइट्रिक एसिड आदि रसायन शरीर को कितनी हानि पहुचाते हैं, इसका अनुमान आप निम्न तथ्यो से लगा सकते हैं—

१ **यदि शौचालय मे एक घण्टे के लिए सॉफ्ट ड्रिक डाल दें तो वह फिनाइल की तरह उसे साफ कर देगा।**

२. **यदि सॉफ्ट ड्रिंक मे कपड़ा भिगोकर रगड दे, तो कपडे पर लगा जग हट जाएगा।**

३ **यदि साबुन से मिश्रित कोल्ड-ड्रिक मे वस्त्रो को भिगो दे, तो वस्त्रो पर लगी चिकनाई-ग्रीस आदि उतर जाएगी।**

४ **आदमी की लाश की हड्डियो व दांतो को गलाने मे पृथ्वी को भी कई वर्ष लग जाते हैं, जबकि सॉफ्ट ड्रिंक मे डाल देने से केवल १० दिनो मे ही गल जाती है।**

ऐसा खतरनाक कोला पीकर क्या हम रसायन ही पेट मे इकट्ठे नहीं कर रहे हैं और अपनी अतडियो, यकृत् आदि को नुकसान नहीं पहुचा रहे ?

सॉफ्ट ड्रिक से होनेवाले भारी नुकसान का प्रत्यक्ष उदाहरण दिल्ली विश्वविद्यालय की एक प्रतियोगिता मे हुई घटना से भी पता चलता है इस प्रतियोगिता मे **'सर्वाधिक कोला कौन पी सकता है ?'** मुकाबले मे एक छात्र आठ बोतल तो पी गया पर परिणामस्वरूप उसके पेट मे कार्बन डाई ऑक्साइड की मात्रा इतनी अधिक होगई कि उसकी घटना स्थल पर ही मृत्यु होगई।

सोचिए क्या कोका कोला/पेप्सी की हानिकारक बोतले स्वय पीकर या अपने बच्चो/मेहमानों को पिलाकर हम कहीं ऐसे हादसो को बुलावा तो नहीं दे रहे ?

१५६, ए०जी०सी०आर० एन्कलेव, दिल्ली-९२

हिन्दी माध्यम से आयुर्विज्ञान शिक्षण

भारत के स्वतत्र होने पर, स्वतत्र देशो की परम्परा के अनुसार भारतीय सविधान का निर्माण किया गया। इसके अनुच्छेद ३४३ द्वारा हिन्दी को राजभाषा घोषित करके अनुच्छेद ३५१ द्वारा केन्द्र एव राज्य सरकारो को हिन्दी के प्रचार प्रसार व उन्नयन के निर्देश किये गये थे। विश्व के सभी स्वतत्र राष्ट्र सोमानिया, मिश्र, डेनमार्क आदि अपनी ही भाषा मे आयुर्विज्ञान विषय पढाते हैं। भारत के स्वतत्र होने के ५३ वर्ष बाद भी देश मे आयुर्विज्ञान हिन्दी मे १६७ मेडिकल कॉलेज मे नहीं पढाया जाता है। जबकि सविधान मे प्रावधान है, राष्ट्रपति के आदेश हैं, केन्द्र सरकार के निर्देश हैं।

भारत प्राचीन काल से ही एक उन्नत राष्ट्र था, यहा के तक्षशिला, नालन्दा व काशी विश्वविद्यालय मे दूर-दूर देशो के छात्र विद्याध्ययन के लिए आते थे। तब यहा का धातु विज्ञान, गणित, ज्योतिष, स्वास्थ्य एव चिकित्सा, कृषि एव पशु विज्ञान आदि सारे विश्व मे अग्रणी था, परन्तु परतत्रता के समय देश के कुलीन वर्ग मे विदेशी शासको मे भारत की भाषा वस्तुए व सस्कृति के प्रति जो उनमे हीन भावना भर दी उसी के कारण धीरे-धीरे आम जनता मे भी मानसिक गुलामी व्याप्त हो गई है। आज सब तरफ अग्रेजीयत का साम्राज्य व्याप्त है।

स्वतत्रता से पूर्व देश के कुछ भागो मे भारतीय भाषाओ मे उच्च तकनीकी शिक्षण प्रदान किया जाता था। जैसे निजाम हैदराबाद के शासन काल मे उस्मानिया विश्वविद्यालय मे उर्दू माध्यम से एम बी बी एस पढाई होती थी। गुरुकुल कागडी हरिद्वार मे भी हिन्दी माध्यम से मैडिकल शिक्षा दी जाती थी परन्तु अब तो हर जगह अग्रेजी ही व्याप्त हो गयी।

मानव शब्दावली—वैज्ञानिक तथा तकनिकी शब्दावली आयोग नई दिल्ली द्वारा आयुर्विज्ञान के ५०,००० मानक हिन्दी शब्दो का निर्माण प्रकाशन व डेटा बेस बना दिया है, यह इन्टरनेट सी डी एव इलैक्ट्रानिक डायरी मे उपलब्ध है। यह शब्दावली आयुर्विज्ञान के प्राध्यापको, लेखकों व अनुवादको को निशुल्क प्रदान की जा रही है।

पुस्तकें—पाच हिन्दी राज्यो की हिन्दी ग्रन्थ अकादमियो, वैज्ञानिको तथा तकनीकी शब्दावली आयोग नई दिल्ली एव कई प्रकाशको द्वारा आयुर्विज्ञान की स्तरीय मौलिक पुस्तको का प्रकाशन कर दिया है। इसी तरह सन्दर्भ ग्रन्थो का हिन्दी अनुवाद भी प्रकाशित कर दिया है।

अब केन्द्र सरकार जब भी हिन्दी माध्यम के शिक्षण के आदेश को लागू कर देगी तभी हिन्दी प्रेमी आयुर्विज्ञान प्राध्यापक और पुस्तको का प्रणयन कर देगे। क्योकि जब माग होती है तभी वस्तु का निर्माण किया जाता है। अत सरकार की इस मामले मे पहल जरूरी है। आवश्यक पुस्तके उपलब्ध हैं।

अध्यापक—विज्ञान परिषद् प्रयाग, केन्द्रीय हिन्दी सस्थान आगरा पाच राज्यो की हिन्दी-ग्रन्थ अकादमिया, भारत सरकार का राजभाषा विभाग, उ०प्र० हिन्दी साहित्य सम्मेलन एव कई हिन्दी सेवी सस्थाओ ने हिन्दी मे आयुर्विज्ञान की पुस्तक लिखने वाले प्राध्यापकों को सम्मानित किया है, ये प्राध्यापक बोलचाल की हिन्दी मे अभी शिक्षण प्रदान कर सकते हैं व कुछ समय तक तकनीकी शब्दों को रोमन लिपि मे लिखने की इजाजत देकर शिक्षण शुरू किया जा सकता है।

इन्दौर के डॉ० मनोहर भण्डारी, वर्धा के डॉ० अशोक झा, कागड़ा के डॉ० जवाहर लाल अग्रवाल, लखनऊ के डॉ० गोयल, झासी के डॉ० एस०पी० सिह व अन्य कई हिन्दी प्रदेश के मेडिकल कॉलेज के प्राध्यापक हिन्दी मे पढा सकने मे सक्षम हैं, बस उनके थोडी सी झिझक हैं, जिसके तहत व पहल नहीं करना चाहते हैं।

रिपोर्ट—भारत सरकार के स्वास्थ्य मत्रालय द्वारा गठित चिकित्सा शिक्षा हिन्दी माध्यम समिति जो कि लखनऊ के डॉ० मुकुलचन्द पाण्डे की अध्यक्षता मे बनी थी, ने वर्ष १९९१ मे अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत कर दी थी। परन्तु यह रिपोर्ट स्वास्थ्य विभाग की अलमारियो मे धूल फाक रही है। इस पर जान बूझकर कार्यवाही नहीं की जा रही है। इससे ऐसा लगता है कि आयुर्विज्ञान की पुस्तको के विदेशी प्रकाशको की लॉबी व अग्रेजी के हितो की रक्षा के लिए जनभाषा को उपेक्षित किया जा रहा है।

सरकारी आदेश—ससदीय राजभाषा समिति के प्रथम प्रतिवेदन पर राष्ट्रपति जी के आदेश दिनाक ३०-१२-१९८८ को जारी कर दिये गये थे, जिसके तहत केन्द्र सरकार के स्वास्थ्य मत्रालय को हिन्दी माध्यम से आयुर्विज्ञान शिक्षण शुरू करना था।

सरकारी निर्देश—सचिव स्वास्थ्य विभाग, भारत सरकार ने सभी राज्यों के सचिव स्वास्थ्य मंत्रालय को उनके पत्र क्रं. ई ११०१७/४/८९-एम.ई. (पी) दि० १५-११-८९ द्वारा राज्यों को हिन्दी माध्यम से मेडिकल शिक्षा प्रदान करने के निर्देश जारी किये थे। परन्तु ११ वर्षों के उपरान्त भी इसकी पालना नहीं की जा रही है।

मानसिकता—भारत का कुलीनवर्ग यही सोचता है कि विश्व का सारा ज्ञान सिर्फ अग्रेजी मे ही है जो पूर्णत असत्य है, ऐसी ही दशा एक समय इग्लैण्ड की थी, वहा का कुलीन वर्ग फ्रैंच भाषा एवं फ्रासीसी सभ्यता का दिवाना था व अग्रेजी को अनपढ श्रमिको की हेय भाषा मानते थे। जनभाषा उपेक्षित थी परन्तु जनता की मांग के सम्मुख अग्रेजी राजभाषा बन गयी।

आज डाक्टरी पेशा कुछ परिवारों की बपौती बन गया है, ये डाक्टर गाव नहीं जाना चाहते, विदेश अवश्य चले जाते हैं। जनता के धन से पढे लिखे ये डाक्टर भारतीयों की सेवा करने की जगह विदेशियों की करते हैं। भारतीय वैज्ञानिक सोचते तो स्वभाषा मे हैं परन्तु कार्य विदेशी भाषा मे करते हैं। अत उनका ज्यादा समय व श्रम अनुवाद मे खर्च हो जाता है इसलिए मौलिक शोध की कमी आ रही है।

—दर्शनसिह रावत
जे-१०, सैक्टर ५, हिरण मगरी,
उदयपुर (राजस्थान)-३१३ ००२

अंग्रेजी में आए पत्रों को वापिस कर दें

हरयाणा और केन्द्र सरकार की तरफ से यदि आपको कोई पत्र अग्रेजी मे मिलते हैं तो वे गैर-कानूनी हैं। आप इन पत्रों पर कार्रवाई करने पर बाध्य नहीं हैं। ऐसे पत्रो को आप उसी विभाग को वापिस करदे और लिखदे कि पत्र हिन्दी मे भेजा जाएगा, तभी हम उत्तर देगे। क्योकि हरयाणा की राजभाषा हिन्दी है। अनेक लोग ऐसा कर रहे हैं और सरकार को ऐसे लोगों को पत्र हिन्दी मे भेजना पड रहा है। ऐसा करने से राष्ट्रभाषा और हरयाणा की राजभाषा (सरकारी भाषी) हिन्दी के प्रति जनता मे जागृति आरही है। आप भी ऐसा ही करे। वापिस किए गए अग्रेजी के पत्रो की एक फोटोप्रति अपने पास रखे तथा एक प्रति हरयाणा राष्ट्रभाषा समिति को भेजे, ताकि हम सरकार का ध्यान इस ओर दिला सके।

—**श्यामलाल**, सयोजक , हरयाणा राष्ट्रभाषा समिति, दयानन्दमठ, रोहतक।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिग प्रेस, रोहतक (फोन . ७६८७४, ५७७७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, प० जगदेवसिह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ७७७२२) से प्रकाशित।
पत्र मे प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। पत्र के प्रत्येक प्रकार के विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ ... १,९६ ...
पंजीकरण संख्या टैक/एच.आर./49/... ० १२६२ – ७७७२२

प्रधानसम्पादक : प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक :- डा० सुदर्शनदेव आचार्य

वर्ष २८ अंक ४२ २८ सितम्बर, २००१ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

अमरीका पर इस्लामी आतंकवादी हमले के कारण

विश्वयुद्ध के आसार बनते जा रहे हैं

❑ **सुखदेव शास्त्री**, महोपदेशक, दयानन्दमठ, रोहतक (हरयाणा)

असल मे इस्लामी आतकवाद के मामले में अमेरिका सदियो से काफी हद तक अपनी कुछेक देशो के प्रति किये गए षड्यन्त्रो का ही फल भोग रहा है। वह आतकवादियों को प्रशिक्षण और हर प्रकार की सहायता देकर दूसरे देशो मे भेजता रहा है। उसने भारतीय प्रदेश कश्मीर मे तो इस्लामी आतकवादियो को प्रशिक्षण, हथियार और धन देने के मामले मे पाकिस्तान के खिलाफ भारत द्वारा अनेकों प्रमाण देने के बाद भी अमेरिका मौन साधे रहा। जैसे–बम्बई को भीषण हमलो से हिला देने वाला दाउद इब्राहिम अपने आतकवादी गिरोह के द्वारा पाकिस्तान में जमा बैठा है, लेकिन भारत द्वारा उसके सौंपने की अनेको कोशिशो के बाद भी आज तक अमेरिका ने पाकिस्तान को कुछ भी नहीं कहा है। पिछले दिनो पाकिस्तान के राष्ट्रपति परवेज से भी भारत ने दाउद को सुपुर्द करने की माग की थी, उसका भी कोई नतीजा नहीं निकला। अमेरिका सदैव पाकिस्तान के साथ हुए भारत के युद्धो मे सदैव पाकिस्तान का ही साथ देता रहा है।

सारी दुनिया जानती है कि जो इस्लामी आतकवादी ओसामा बिन लादेन आज अमेरिका का एक नम्बर का शत्रु घोषित कर दिया गया है, वह लादेन भी उसी का बनाया हुआ है। कभी अस्सी के दशक में शुरू-शुरू मे सऊदी अरब के इस महाभयकर आतकवादी को अमेरिकी गुप्तचर सस्थान ने सैनिक प्रशिक्षण देकर और हथियारो से लैस करके अफगानिस्तान मे तत्कालीन रूसी फौजों से लडने के लिए भेजा था। लेकिन खाडी युद्ध में सऊदी अरब को सैनिक अड्डा बनाकर इराक के खिलाफ युद्ध छेडने की अमेरिकी कार्यवाई के कारण लादेन अमेरिका का कट्टर दुश्मन बन गया है।

ये कौन है ओसामा बिन लादेन :- १९५८ में अरब में जन्मा सऊदी अरब के सबसे धनी और प्रभावशाली भवन निर्माता के कुल ५२ पुत्रो में से लादेन १७वां है। बिन लादेन के परिवार की कुल आय ३० अरब डालर (१४१० अरब रुपये) की सम्पत्ति में से उसका हिस्सा ५ अरब डालर (करीब ३५ अरब रुपये) है। बिन लादेन ने कट्टरपथी इस्लाम को बढावा देने के लिये अपनी सारी सम्पत्ति दाव पर लगा दी है। उसका विचार है कि सारी दुनिया में इस्लामी झण्डा लहराने के लिये आतकवाद का सहारा लेना न्यायोचित है। उसका कहना है कि अमेरिक दुनिया भर मे आतकवादी गतिविधियो को सदैव सहारा देता रहा है। उसने जापान के नगरो नागासाकी और हिरोशिमा पर बमबारी की थी। इराक हो, चाहे फिलिस्तीन का मामला हो, इसलिए आज उसे सबक सिखाना है।

लादेन का कहना है कि ईसाई व यहूदी इस्लाम के सबसे बडे दुश्मन हैं और अमेकिा को काफिरों की दुनिया का सरगना कहता है। उसने कसम खाई है कि जब तक वह अमेरिका का सिर नहीं कुचल देता, वह चैन से नहीं बैठेगा। उसने दुनिया मे इस्लाम का झण्डा गाडने के लिये अपनी सम्पत्ति व अपनी आयु भी दाव पर लगा दी है। अमेरिका ने भी इस दुश्मन को मृत अथवा जीवित पकडने के लिए ५० लाख डालर का इनाम घोषित किया है। क्योकि लादेन अमेरिका और ईसाई धर्म, इजरायल और यहूदी धर्म, भारत और हिन्दू धर्म को अपना घोषित शत्रु मानता है। पिछले दिनो उसने कहा था कि हम भारत के दस बडे शहरों को घण्टे में भर में नष्ट कर सकते हैं। भारतीय गुप्तचर विभाग मानता है कि कश्मीर और देश मे अन्यत्र नए पैमाने पर हो रही आतकवादी घटनाओं में लादेन का हाथ है।

यहा तक कि भारत का एक मुस्लिम आतकवादी सगठन 'सिमी' अर्थात् 'स्टुडेन्ट इस्लामिक मूवमैंट ऑफ इण्डिया' की नजरो मे इस्लामिक आतक का पर्याय बना 'ओसामा बिन लादेन' जेहाद को बिल्कुल सही तरीके से क्रियान्वित करने वाला सच्चा मुजाहिद है। 'सिमी' यह आतकवादी इसलाम सगठन लादेन को अपना आदर्श मानता है। लादेन के अलावा 'सिमी' कन्धार विमान अपहरण काण्ड की सौदेबाजी मे रिहा किये गए आतकी और 'जैश-ए-मुहम्मद' के सस्थापक मौलाना अहजर मसूद को भी अपना नेता प्रणेता मानता है। 'आई.बी.' अर्थात् इटलीजेंस ब्यूरो की रिपोर्ट मे 'सिमी' के सम्बधो और उसकी गतिविधियो को लेकर ऐसे ही कई अन्य उत्तेजक आपत्तिजनक तथ्यो का उल्लेख है, जैसे कि 'सिमी' का सविधान भारत के सविधान लोकतन्त्र एव राष्ट्रीयता को चुनौती देता है। सिमी के सविधान मे मुस्लिम कार्यकर्ताओ के उद्देश्य के बारे मे कह गया है कि–वह इस्लाम के तीन अवधारणा 'जेहाद, उन्माद, खिलाफत' को एकीकृत रूप मे लागूकर भारत मे इस्लाम के प्रभुत्व को बहाल करने के लिए सक्रिय रहे।

इस प्रकार इस सिमी अर्थात् 'स्टुडेट इस्लामिक मूवमैंट ऑफ इण्डिया' का सम्बन्ध लादेन तथा विश्व के सभी इस्लामिक आतकवादी सगठनो के साथ है।

अभ पिछले दिनों सी.आई.डी. की रिपोर्ट के अनुसार इस सगठन पर पाबन्दी लगाने की बात गृहमन्त्री आडवानी ने कही तो इसका विरोध 'सिमी' ने किया था। सिमी ने देश मे इस्लामी मदरसों का जाल बिछा रखा है। यहा भारत मे भी यह सगठन ओसामा बिन लादेन को अपना नेता मान चुकी है। सिमी पत्रिका के मुख पत्र 'इस्लामिक मूवमैंट ऑफ इण्डिया' के जनवरी २००० के अक में लादेन की प्रशसा मे एक गीत छापा गया है। वह भी सुन लीजिये–

इस्लाम के गाजी कुफ्र शिकन, मेरा शेर ओसामा बिन लादेन।
इस्लाम पर वारा तन, मन, धन, ये शेर उसामा बिन लादेन।।
अमरीका साहब जल्दी करो, हरमैन से निकलो घर जाओ,
दो राहे मैंने छोडी हैं, या घर जाओ, या मर जाओ।
मैं अरब के तपते सेहरा को, गोरों का बना दूगा दफन,
इस्लाम का गाजी कुफ्र शिकन, मेरा शेर उसामा बिन लादेन।
कल रूस का सूरज डूबा था, अमरीका की अब बारी है,
दुनिया मे बिन लादेन के लिये, अमरीका ने फौज उतारी है,
अकरीकी सफीरो गौर करो, नहीं पहने हुए हमने कफन,
इस्लाम का गाजी कुफ्र शिकन, मेरा शेर उसामा बिना लादेन।
मेरे अरब मुजाहिद ना घबरा, कर देगे तुझ पर जान फिदा,
अमरीका उलटा लटक जाए, तुम्हे हमसे कर नहीं सकता जुदा,
तू मुस्लिम है हम मुस्लिम हैं, मजबूत हमारा बन्धन,
इस्लाम का गाजी .

गृह मन्त्रालयो के आंकडो के अनुसार जम्मू-कश्मीर मे आतकवादी गतिविधियो का थोडा सा विवरण १९९० से लेकर १९९९ तक इस प्रकार है– १ घटनाओ की सख्या ५०२३७, २ मारे गए नागरिको की सख्या ९४४०, ३ घायल नागरिको की सख्या

(शेष पृष्ठ २ पर)

वैदिक-स्वाध्याय

सर्वत्र रक्षक परमेश्वर

बृबदुक्थ हवामहे, सृप्रकरस्नमूतये।
साधु कृण्वन्त अवसे।। (ऋ० ८ ३२ १०)

शब्दार्थ–(**बृबदुक्थ**) स्तुति करनेयोग्य इन्द्र को (**ऊतये**) रक्षा के लिये (**हवामहे**) हम पुकारते हैं जो इन्द्र (**सृप्रकरस्न**) सब जगह फैली हुई भुजाओ वाला है (**अवसे**) जो पालन पोषण के लिये (**साधु कृण्वन्तम्**) कल्याण ही करनेवाला है, उस इन्द्र को।

विनय–हे परमेश्वर ! हम तुम्हे रक्षा के लिये पुकारते हैं। इस ससार मे बहुत से क्लेश, दु ख और आपत्ति हम पर आत हैं, बहुत से भय उपस्थित होते रहते हैं उस समय मे हे परमेश्वर ! हम तुम्हे ही याद करते हैं। तुम्हारे सिवा क्लेश मे हम और किसे पुकारे ! क्योकि हम जानते हैं कि तुम ही एकमात्र रक्षक हो, जब तुम रक्षा करना चाहते हो तो सैकडो विपत्तियो के बादलो को एक क्षण भर मे उडा देते हो, सैकडो बन्धन एकदम से काट देते हो, जहा कोई भी रक्षा का उपाय नहीं नजर आता, अन्तिम नाश ही दीख रहा होता है, बच जाने की हम कोई कल्पना तक नहीं कर सकते होते, वहा पर भी तुम्हारे अदृश्य हाथ पहुचे हुए हमारी रक्षा कर देते हैं। तुम्हारे रक्षा करनेवाले हाथ हर जगह और हर वक्त पहुचे हुए हैं। इसलिए हे सृप्रकरस्न ! हम कभी भी आशा नहीं छोडते कि तुम हमे बचा न लोगे। अत हम तुम्हे पुकारते जाते हैं। आखिर तुम यदि नहीं भी रक्षा करते तो भी हम अशान्त नहीं होते क्योकि हम जानते है कि तुम्हारी अरक्षा मे भी रक्षा छिपी होती है। हे देव ! अटल विश्वास है कि तुम कल्याण ही करनेवाले हो। तुमसे अकल्याण कभी हो ही नहीं सकता है। हम नही समझ पाते हैं कि स्पष्ट दीखनेवाली अमुक आपत्ति किस तरह कल्याण के रूप मे बदल जायेगी, कैसे हमारा विनाश भलाई के लानेवाला होगा, पर अनुभवो द्वारा अन्तस्तल पर यह विश्वास निहित है कि तुम अपनी हर एक घटना द्वारा हम लोगो का भला ही कर रहे हो और आखिर तुम हमारी पालना करोगे, हमे बचा लोगे। हमारा अत्यन्त विनाश तुम कभी नहीं होने दे सकते। अत हम तुम्हे ही रक्षा के लिये पुकारते हैं। सदा ऐसे विलक्षण ढग से सब का कल्याण करते हुए तुम हमारी निश्चित रक्षा करनेवाले हो, हमारे कल्याण के लिए अपने रक्षक बाहुओ को प्रत्येक क्षण मे और प्रत्येक स्थान मे फैलाए बैठे हो, तुम्हारे सिवाय मनुष्य के लिये और कौन स्तुत्य है ? मनुष्य और किसके गीत गावे ? तुम्हारी ही स्तुति कर वह अपनी वाणी को कृतकृत्य कर सकता है।

(वैदिक विनय से)

मुंह के छाले और उपचार

मुह में छाले उत्पन्न होने के कई कारण हैं, यदि मुह मे अचानक कोई छाला उत्पन्न हुआ है तो यह मुह मे किसी प्रकार की चोट यानि दातो की चोट से घाव हो गया या टूथब्रश के ब्रिस्लस से घाव हो गया होगा। अत्यधिक गर्म भोजन या पेय पदार्थ के सेवन से भी मुह के अन्दर फफोले पड जाते हैं जो फूटकर छाले का रूपधारण कर लेते हैं। ऐसे छाले एकाध दिन मे अपने आप ठीक हो जाते हैं। कभी-कभी मुह के अन्दर गोलाकार आधा से मी या उससे बडे छाले दिखाई देते हैं। जो काफी तकलीफ देते हैं। इनकी स्थिति पीली या परिधि लाल होती है। महिलाओ के मासिक धर्म के पहले भी होठ, तालु, गाल, जीभ के निचले हिस्सो पर छाले दिखाई देते हैं। यह महिलाओ मे हार्मोन परिवर्तन की वजह से होते हैं।

कुपोषण के शिकार बच्चो के मुह मे भी सफेद रग के छाले दिखाई देते हैं। यदि जीभ पर सफेद रग के छाले दिखाई दे तो समझना चाहिए कि शरीर मे रक्त की कमी है। हरपीज के सक्रमण से भी मुह के भीतर और बाहर छोटे-छोटे दानेदार छाले दिखाई देते हैं। इससे पीडित व्यक्ति को बुखार भी आता है तथा जबडे के नीचे गाठ भी महसूस होती है। लोगो के मुह के दोनों कोनो मे कट जाता है। यह भी मुह के छाले का स्वरूप है। यह मुह के बैक्टीरिया के सक्रमण से होता है और यह अधिकतर बच्चो या बूढो के मुह मे दिखाई देता है।

इसके अलावा भी मुह के छाले होने के कारण हैं। पेट में किसी प्रकार की खराबी होना, एटिबायटिक दवाइयों का अधिक दिनों तक सेवन करना, पेचिस, दातो में खराबी होना, नकली दातों की वजह से मुह में छाले हो जाना।

अत्यधिक धूम्रपान करना, पान, तम्बाकू, गुटखा की वजह से छाले अधिक होते हैं। शरीर में विटामिन बी काम्पलैक्स की कमी, रक्त में लाल कोशिकाओं का कम होना, रक्त कैंसर, क्षयरोग, स्टीरॉयड दवाओ, मिरगी की दवाओ का सेवन तथा औषधि के रिएक्शन की वजह से मुह में छाले उत्पन्न हो जाते हैं। आयुर्वेद के पारा, गधक तथा जस्ता के योग वाली दवाओ के सेवन से भी मुह के छाले की समस्या उत्पन्न होती हैं। खान-पान की एलर्जी भी मुह मे छाले उत्पन्न करती है। फफूदी सक्रमण, कैंसररोधी दवाइयो का सेवन, मलेरिया आदि की वजह से भी मुह मे छाले उत्पन्न हो जाते हं, पेप्टिक, अल्सर, आत का रोग, कब्ज, अपचन भी मुह मे छाले उत्पन्न करता है।

मुह के छाले दूर करने के लिए सबसे पहले उसके उत्पन्न होने के कारण को जानना जरूरी है, तभी इसका उपचार किया जा सकता है। मुह के छाले उत्पन्न होने पर सबसे पहले तम्बाकू, गुटखा, धूम्रपान का सेवन बद कर दे, मसालेदार भोजन का सेवन न करें। पानी अधिक मात्रा मे पीये। यह छालो को जल्दी भरने में मदद करता है। जिस वजह से मुह मे छाले उत्पन्न हुए हैं उससे दूर रहे।

मुह मे अधिक छाले होने पर बर्फ चूसें, साथ ही शहद भी चूस सकते हैं। इनके अलावा दर्दनाशक मरहम, या गोलिया ली जा सकती हैं। इनको छाले पर लगाने से दर्द व जलन से तुरन्त निजात पायी जा सकती है। इन दवाइयों को चिकित्सक की सलाह पर ही दे। मुह के छाले अधिक दिनो तक दिखायी दे या बार-बार मुह मे निकले तो डॉक्टर से सलाह लेकर उचित कदम उठाये।

–डॉ० एस. कुमार

विश्वयुद्ध के आसार.......... (पृष्ठ १ का शेष)

१३५४१, ४ मारे गए सुरक्षाकर्मी २८३६, ५ घायल सुरक्षाकर्मियो की सख्या ७९४७, ६ मारे गए आतकवादियो की सख्या १३४८८ यह आतकवाद भारत दो दशक से ढो रहा है।

इस इस्लामिक आतकवादी पृष्ठभूमि मे विश्व के सभी मुसलमानो के लिए लादेन का आदेश है कि गैर मुस्लिमो को इस्लाम के सच्चे मार्ग पर लाना प्रत्येक मुसलमान का कर्त्तव्य है। पूरी दुनिया को इस्लाम मे लाना ही इस्लाम का अन्तिम लक्ष्य है। हमारे सामने काफिरो के प्राणो का कोई मूल्य नहीं है। जो काफिर इस्लाम मे नहीं आता उसे जीने का कोई अधिकार नहीं है। इस जिहाद मे हिस्सा लेना प्रत्येक मुसलमान का कर्त्तव्य है। लादेन द्वारा स्थापित आतकवादी सगठन 'अल कायदा' अफगानिस्तान व कश्मीर तक ही सीमित नहीं रहा है, आज वह इण्डोनेशिया, मलेशिया, फिलीपिन, सिक्याग चीन, लेबनान, फिलीस्तीन चेचेन्या, कोसावो, बोस्निया, साईप्रस जैसे अनेक देशो में आतकवादी गतिविधिया फैला रहा है।

११ सितम्बर को अमरीका पर आतकवादी जो हमला हुआ, वह अत्यन्त ही मानवता की सीमाओ को लाघ गया। उसने अमेरिका का महाविध्वस कर दिया। अमरीका का एकमात्र सैन्य मुख्यालय पैन्टागन दुनिया की सबसे बडी कार्यालय की इमारतो मे से एक है। यह इतना बडा है कि इस एक के अन्दर ही पूरी अमेरिकी राजधानी समा सकती है।

द पैन्टागन सैनिक मुख्यालय के आसपास के इलाको से यहा रोजाना २३००० लोग ३० मील की दूरी से काम करने आते हैं। यह इमारत बहुत बडी है। इस इमारत को बनाने मे १६ महीने लगे थे, इसके निर्माण का खर्च था लगभग ८३ मिलियन डालर। इस इमारत को बिल्कुल नष्ट कर दिया गया। इसका कुल क्षेत्रफल ५८३ एकड है। ऊचाई ७९ फुट, ३ ५ इच है।

दूसरा है वर्ल्डट्रेड सैन्टर। इस इमारत मे १६ एकड के क्षेत्र मे पेर्ट अथोरिटी ऑफ न्यूयार्क एण्ड न्यूजर्सी द्वारा बनवाए गए इस कॉम्पलैक्स मे ७ इमारते हैं, इस सैन्टर की ऊचाई १००० फुट है। इसमे अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के सलग्न १००० से ज्यादा एजेसिया काम करती हैं। इसमे प्रतिदिन अनेक कार्यालयो ने ५० हजार के लगभग कार्यकर्ता कर्मचारी कार्य करते हैं। १ लाख लोग यहा पर प्रतिदिन अपने व्यापारिक काम के लिये आते हैं। इस वर्ल्ड सैन्टर के बनने मे कुल लागत आई थी १ ५ बिलियन डालर। यह दुनिया की सबसे ऊची इमारतो मे से है। ११ सितम्बर के इस्लालिम आतकवादी हमले में लगभग २० हजार आदमी मारे गए।

महाशक्ति राष्ट्र अमेरिका शोक सागर मे डूब गया। अनेकों देशों के कार्यकर्ता भी मारे गए। सर्वत्र शोक छा गया। सभी आतकवाद मे ग्रस्त राष्ट्रों की सहायता से यह काम करना सरल होग। भारत इसमे पूरी सहायता देगा। सभी राष्ट्रो को आतकवादी जिहाद की विचारधारा को मिटाना होगा। इसकी सफलता के लिए युद्ध अनिवार्य है। विजय भी होगी।

ओ३म् शम्।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के नवनिर्वाचित पदाधिकारी

प्रधान–स्वामी इन्द्रवेश

मन्त्री–प्रो० सत्यवीर शास्त्री

कोषाध्यक्ष–बलराज

पुस्तकाध्यक्ष–वेदव्रत शास्त्री

उपप्रधान–चौ० सूबेसिह

उपप्रधान–जयपालसिंह

डॉ० आर.एस. सांगवान

उपप्रधान–रामधारी शास्त्री

उपप्रधान–विमला महता

उपमन्त्री–आ. विजयपाल

उपमन्त्री–चन्द्रपाल राणा

उपमन्त्री–प्रेमवती आर्या

उपमन्त्री–रामकुमार आर्य

उपमन्त्री–हरिश्चन्द्र शास्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का त्रिवार्षिक निर्वाचन घोषित

(नोट : स्वामी ओमानन्द सरस्वती के पैनल के सभी प्रत्याशी भारी बहुमत से विजयी हुए। जबकि पुस्तकाध्यक्ष पद पर वेदव्रत शास्त्री निर्विरोध चुने गए।)

क्र.सं.	पद	नाम	प्राप्त मत
1	**प्रधान–**	स्वामी इन्द्रवेश	923
2	**मन्त्री–**	प्रो० सत्यवीर शास्त्री	872
3.	**कोषाध्यक्ष–**	बलराज	884
4	**पुस्तकाध्यक्ष–**	वेदव्रत शास्त्री	**निर्विरोध**
5	**उपप्रधान–**	1. जयपालसिह	880
6	" "	2 डॉ० रणधीरसिह सागवान	841
7.	" "	3. रामधारी शास्त्री	891
8.	" "	4 विमला महता	841
9.	" "	5 सूबेसिह	912
10.	**उपमन्त्री–**	1. आचार्य विजयपाल	802
11.	" "	2. चन्द्रपाल	778
12.	" "	3 प्रेमवती	788
13.	" "	4. रामकुमार आर्य	775
14.	" "	5. हरिश्चन्द्र शास्त्री	808
15.	**अन्तरंग सदस्य–**	1 आजादसिह	649
16.	" "	2. किशनचन्द सैनी	681
17.	" "	3. गेदाराम आर्य	669
18.	" "	4. जगदीश	680
19.	" "	5. जयवीर आर्य	669
20.	" "	6 देवेन्द्रसिह	683
21.	" "	7 प्रतापसिह आर्य	662
22.	" "	8 पूर्णसिह	657
23.	**अन्तरंग सदस्य–**	9 पृथ्वीसिह	645
24	" "	10 रामनिवास	674
25	" "	11 रामस्वरूप आर्य	636
26	" "	12 विजयकुमार	642
27	" "	13 सत्यवीर आर्य	652
28	" "	14 सन्तराम आर्य	643
29	" "	15 सुभाषचन्द्र	635
30	**सार्वदेशिक प्रतिनिधि–**	1 अग्निवेश स्वामी	793
31	" " "	2 जगवीरसिह एडवोकेट	780
32.	" " "	3 देशबन्धु आर्य	580
33	" " "	4 प्रभातशोभा	775
34	" " "	5 बलराज मुद्गिल	648
35	" " "	6 बारूराम	738
36	" " "	7. रामचन्द्र शास्त्री	748
37.	" " "	8 रामधारी शास्त्री	762
38.	" " "	9. लाभसिह	748
39	" " "	10 वेदव्रत शास्त्री	788
40	" " "	11 प्रो० शेरसिह	765
41.	" " "	12 स्वामी इन्द्रवेश	761
42.	" " "	13. प्रो० सत्यवीर शास्त्री	739
43.	" " "	14 सूबेसिह	743
44	" " "	15. आचार्य हरिदेव	747

दिनांक : 25-9-2001

–धर्मचन्द, निर्वाचन अधिकारी

स्थापित १९०८
रजिस्टर्ड १९१४

तार–सार्वदेशिक (Sarvdeshik)
फोन 3274771
3260985

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान,
नई दिल्ली-११०००२
(International Aryan League)
Ramlila Ground, New Delhi-2

संख्या 6/2001 **दिनांक 30-4-2001**

सेवा मे,

श्री वेदव्रत शर्मा,
मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
नई दिल्ली।

विषय – न्याय सभा के गठन को निरस्त करने बारे।

महोदय,

नमस्ते।

उपर्युक्त विषय के सदर्भ मे मुझे सार्वदेशिक सभा के अनेक साधारण सदस्यो ने सूचित किया है कि न्याय सभा का गठन साधारण सभा के निर्णयानुसार नहीं किया गया है।

१८ ३ २००१ की बैठक मे न्याय सभा के गठन का अधिकार श्री रामफल बसल अध्यक्ष न्यायसभा तथा सभा प्रधान को दिया गया था। अत हम दोनो मिलकर ही न्याय सभा का गठन करेगे।

अत सार्वदेशिक पत्रिका मे प्रकाशित न्यायसभा के गठन की सूचना को मै निरस्त करता हूँ।

सधन्यवाद।

भवदीय
[हस्ताक्षर]
सभा प्रधान

प्रति –
१ स्वामी सुमेधानन्द जी, कार्यकर्त्ता प्रधान

सभा चुनाव में हारनेवाले विपक्षी प्रत्याशियों को वोट निम्न प्रकार मिले

पद	प्रत्याशी	मत
प्रधान–	भगत मगतुराम	21
मन्त्री–	बलराज आर्य	10
"	महेन्द्रसिह	26
कोषाध्यक्ष–	केदारसिह आर्य	55
उपप्रधान–	बलवीरसिह	98
उपमन्त्री–	जयवीर–	65
"	योगेन्द्रसिह	64
अन्तरग सदस्य–	भगत मगतुराम	54
" "	बलवानसिह	55
" "	यशवीर	86
" "	श्रीचन्द	74
" "	शमशेरसिह	75
" "	सुखवीरसिह	77
सार्वदेशिक प्रतिनिधि–	भगत मगतुराम	79
" "	जयवीर	89
" "	प्रकाशवीर विद्यालकार	98
" "	बलवीरसिह	99

कुल मत : 1320 मतदान हुआ : 955

स्थापित १९०८
रजिस्टर्ड १९१४

तार–सार्वदेशिक (Sarvdeshik)
फोन 3274771
3260985

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान,
नई दिल्ली-११०००२
(International Aryan League)
Ramlila Ground, New Delhi-2

संख्या 17/2001 **दिनांक 18-9-2001**

आदेश

मैंने अपने पत्र दिनांक 6-9-2001 के द्वारा श्री रामफल बसल अध्यक्ष न्यायसभा के आदेश दिनांक 4-9-2001 को इस आधार पर निरस्त किया था कि उन्होंने सार्वदेशिक न्याय सभा के उपनियमो (6, 10 (1, 3, 4) का उल्लंघन किया था और अपने पद का दुरुपयोग करते हुए पक्षपातपूर्ण एव मनमाना आदेश जारी किया था।

मेरे पास कई आर्य महानुभावो का सुझाव आया कि न्यायसभा के उपनियमों का जानबूझकर उल्लंघन करानेवाले व्यक्ति को तुरन्त सार्वदेशिक न्यायसभा के अध्यक्ष पद से हटाना चाहिए। उनका यह सुझाव पूर्णतया मान्य है। कोई भी व्यक्ति जो न्यायसभा के नियमो एव उपनियमो का मनमाने ढग से उल्लघन करता है वह सार्वदेशिक न्यायसभा का सदस्य बनने की योग्यता खो देता है।

अत मै श्री रामफल बसल को सार्वदेशिक न्यायसभा के अध्यक्ष पद के अयोग्य मानते हुए उनको सार्वदेशिक न्यायसभा के अध्यक्ष पद से तुरन्त प्रभाव से अपदस्थ करता हूं।

[हस्ताक्षर]
–स्वामी ओमानन्द सरस्वती
प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

प्रति सूचनार्थ एवं उचित कार्यवाही हेतु प्रेषित :

1. अध्यक्ष न्यायसभा
2. स्वामी सुमेधानन्द, कार्यकर्त्ता प्रधान
3. मत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली
4. सभी प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाए

महर्षि निर्वाण अंक

दीपावली के अवसर पर महर्षि निर्वाण अक प्रकाशित किया जा रहा है। लेखक महानुभाव उसके लिए सक्षिप्त एव सारगर्भित लेख और कविता आदि भेजने की कृपा करे।

–आचार्य सुदर्शनदेवाचार्य, सहसम्पादक

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

क्र.	आर्यसमाज	तिथि
१	आर्यसमाज सैक्टर-९, गुडगाव	१ से ७ अक्तूबर
२	आर्यसमाज बसई जिला गुडगाव	१९ से २१ अक्तूबर
३	आर्यसमाज नसोपुर जिला अलवर (राज०)	३०, ३१ अक्तूबर
४	आर्यसमाज सेक्टर-१४, सोनीपत	५ से ११ नवम्बर

–डॉ० सुदर्शनदेव आचार्य, वेदप्रचाराधिष्ठाता

श्री रामफल बंसल सीनियर एडवोकेट नई दिल्ली द्वारा बलवानसिंह सुहाग एडवोकेट रोहतक को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का चुनाव अधिकारी एवं प्रशासक नियुक्त करने का दिनांक ४-६-२००१ का आदेश सार्वदेशिक सभा के प्रधान द्वारा निरस्त

तार—सार्वदेशिक (Sarvdeshik)
फोन : 3274771 3260985

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-११०००२

(International Aryan League) Ramlila Ground, New Delhi-2

16/2001

दिनांक . 6 . 9 . . . 2001

प्रिय श्री सत्यवीर जी, हिन्दी आ०प्र०सभा रोहतक।

श्री रामफल बन्सल ने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मामलों में, लोगों से सभा के विरुद्ध स्वयं आरोप पत्र लिखवा कर औरउसे आधार बना कर, तरह-तरह से दखलन्दाजी करते हुए "प्रशासक" नियुक्त करने का आदेश दिया है । न्याय सभा के नियमों एवं उपनियमों के आधार पर तोला जाए तो यह आदेश सर्वथा असंवैधानिक अवैध तथा नियमविरुद्ध है । इस सन्दर्भ में निम्नांकित कारण प्रस्तुत हैं ।

1. सार्वदेशिक न्यायसभा के उपनियम 10{3} के अनुसार जब तक न्यायसभा के गठन की प्रक्रिया पूरी न हो जाए तब तक न्यायसभा किसी याचिका पर कार्रवाई नहीं कर सकती ; क्योंकि सार्वदेशिक न्यायसभा का विधिवत गठन अभी तक सम्पन्न नहीं हुआ । अत: न्यायसभा सक्रिय ही नहीं हो सकती तोसुनवाई कैसी ?

2. इसके अतिरिक्त यदि गठन हो भी जाता है तो भी किसी याचिका की सुनवाई के लिए उपनियम 10{4} के अनुसार न्यायसभा के चार सदस्यों का कोरम होना अनिवार्य है ।

3. सार्वदेशिक न्याय-सभा के उपनियम 6 के अनुसार याचिका दायर होने के पश्चात प्रतिपक्ष के उत्तर और प्रार्थी के पुन: प्रत्युत्तर आने के बाद दोनों पक्षों को अपने-अपने पक्ष की पुष्टि के लिए आवश्यक अभिलेखों को प्रस्तुत करने के लिए समय देना अनिवार्य है । परन्तु श्री बन्सल ने आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा अवसर की मांग करने के बावजूद अभिलेख प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान नहीं किया ।

4. उपनियम 10{1} के अनुसार विपक्ष व पक्ष के उत्तर-प्रत्युत्तर प्राप्त होने तथा अभिलेखों की प्रस्तुति के पश्चात पक्ष या अध्यक्ष सदस्यों का सामति गठित होगी और मामले को सम्बन्धित सदस्यों को भेज दिया जायेगा ।

लेकिन श्री बन्सल ने उक्त सभी नियमों का खुल्लमखुल्ला उल्लंघन किया । उनके इस पक्षपातपूर्ण रवैये एवं अवैध तरीकों से काम करने की शैली ने प्रमाणित कर दिया है कि वे न्याय करने की अपेक्षा षड्यन्त्र तथा जोड़ तोड़ करना ही अपना कर्तव्य मान बैठे हैं । किसी निष्पक्ष, तटस्थ एवं न्यायप्रद पद के लिए वे नितान्त अयोग्य और अनुपयुक्त साबित हुए हैं ।

दिल्ली हरयाणा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान इत्यादि प्रदेशों में अनेक आर्यबन्धुओं ने श्री बन्सल के आचरण के विरुद्ध रोष प्रकट करते हुए उन्हें न्याय सभा के अध्यक्ष पद से तत्काल हटाने का आग्रह किया है और आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के विरुद्ध इरादतन की गयी अवैध कार्रवाई को तुरन्त निरस्त करने का भी अनुरोध किया है ।

अत: परिस्थिति की गम्भीरता को देखते हुए मैं श्री बन्सल के उक्त अवैध आदेश को एतद्द्वारा निरस्त करता हूँ ।

{स्वामी ओमानन्द सरस्वती}
{प्रधान}

गोहत्या एक कलंक

ऋषि-मुनियों के देश में आज गो-माता को हजारो की सख्या मे प्रतिदिन कत्ल किया जा रहा है। हरयाणा के मेवात क्षेत्र मे प्रतिदिन इनके खून की नदी बह रही है। हमे जीवन-भर दूध, दही मक्खन, घी आदि-आदि देनेवाली मा की आज यह दुदर्शा है ? आयुर्वेद का मूल आधार गाय ही है। मानव के लिए सबसे उपयोगी गाय मा का यह हाल है। हम पर यह एक कलक है। इस कलक को मिटाने हेतु हमे गौ माता की रक्षा के लिए आगे आना चाहिए। अत जो राष्ट्रीय गोरक्षा सम्मेलन दिनाक ७ अक्तूबर २००१ को ग्राम पुन्हाना जिला गुड़गाव मे पूज्यपाद आचार्य बलदेव जी महाराज प्रधान-हरयाणा राज्य गोशाला सघ व सचालक राष्ट्रीय गोशाला घड़ौली (जीन्द) की अध्यक्षता मे व वेदप्रचार मण्डल मेवात द्वारा किया जा रहा है। सर्व कल्याण धर्मार्थ न्यास (पजी०) पानीपत इसका जोरदार समर्थन कर रहा है और इसमे तन-मन-धन से बढ चढ कर अपना सहयोग करेगा। और हरयाणा सरकार से माग करता है कि शीघ्र मेवात मे गोहत्या बन्द हो। "गौ हत्यारो को कठोर से कठोर दण्ड दिया जाए" तथा गौ सेवा आयोग का गठन भी शीघ्र किया जाए।

—वेदपाल आर्य, अध्यक्ष
सर्वकल्याण धर्मार्थ न्यास (पजी०) पानीपत

राव हरिश्चन्द्र आर्य चेरीटेबल ट्रस्ट द्वारा अनुकरणीय दान

वर्ष १ अप्रैल २००० से ३१ मार्च २००१ मे राव हरिश्चन्द्र आर्य चेरिटेबल ट्रस्ट नागपुर उपकार्यालय बीगोपुर द्वारा विभिन्न शिक्षण सस्थाओ व सामाजिक संस्थाओ तथा छात्र-छात्राओ को नीचे उल्लेखित सहायता राशि प्रदान की गई। स्वामी सर्वानन्द शताब्दी समारोह ११,००० । आर्यसमाज भाडवा २१,००० । गुरुकुल महाविद्यालय शान्तिधाम बगलौर २१,००० । यादव सेवक समाज दिल्ली छात्रवृत्ति कोष ३६,००० आर्यसमाज बीगोपुर २१,००० । गुरुकुल महाविद्यालय खानपुर ७,००० । वैदिक सेवाश्रम पिपगली ५,००० । गुरुकुल होशगाबाद ५,००० । अहीर समाज [illegible] ५१,००० । गुरुकुल महाविद्यालय [illegible] ५,००० । कन्या गुरुकुल वाराणसी ५,१०० । सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ११,००० । गुजरात भूकम्प ५,[illegible] । [illegible] अनेक छात्र-छात्राओ को छात्रवृत्ति का दिया।

न्यास अपने सीमित साधनो से स्थापना काल से ही जरूरतमद सस्थाओ, छात्रछात्राओ तथा आकस्मिक आपदाओ के समय सहयोग करता आरहा है।

शराब या सर्वनाश

—महाशय राधेलाल, धतीर (फरीदाबाद)

गनाक से आगे–

४ अपने लडको को शराबियो से दूर रखे, विशेषकर धनी सम्पन्न लोग। क्योकि जिनके पास शराबी लोग पैसा देखते हैं उन्हे अपने जाल मे फास कर, शराबी बना कर, उनसे शराब पीते रहते हैं। शराबियो की यारी शराब से होती है, आदमी से नहीं। **'शराबी यार किसके, घूट लाई और खिसके'।**

५ जो भाई शराब पीना नहीं छोडते, कम से कम वे दूसरे भाइयो को तो उल्टा उपदेश करके शराब पीना न सिखाये। अपने पडोसी इष्टमित्र, बच्चो पर तो दया करे। 'आ पूत तुझे भी लेकर आ बैठू' वाली बात न करे। कितने महापापी हैं वे लोग जो स्वय तो डूबे ही, दूसरे को भी ले डूबते हैं।

६ हुक्का, बीडी, सिगरेट आदि धूम्रपान करना न सीखे। प्राय देखने मे आता है कि जिसको तम्बाकू पीने की आदत होती है, उसी के मन मे शराब पीने की आती है। धूम्रपान से ही मनुष्य मद्यपान तक आता है। वैसे भी तम्बाकू पीना स्वास्थ्य के लिये काफी हानिकारक है।

७ जो गरीब लोग अपने भूखे बच्चो का अन्न आदि से पेट नहीं भर सकते और अपनी कमाई के पैसे की शराब पी जाते हैं। वे शराब नहीं, अपने बच्चो का खून पीते हैं। क्योकि अन्न आदि के बिना भूखे पेट बच्चो के शरीर मे जो खून की कमी होती है, उसका कारण शराब है। इसलिए शराब से दूर रहकर अपना व अपने बच्चो का पोषण करे।

८ जो धनी सम्पन्न लोग गरीब और दुखियो के दुख मे सहायता नहीं करते, शराब पीकर अय्याशी करते हैं, वे निश्चय ही निर्दयी हैं। क्योकि जो उनकी आत्मा मे दया होती तो शराब मे धन का नाश न करके गरीब और दुखी लोगो की दु ख मे सहायता करते। इसलिए मद्यपान छोडकर गरीब और दु खी लोगो का सहारा बने।

दो शराबी और एक बुद्धिमान्

दो शराबी एक होटल मे बैठे थे। उनके पास एक शराब की बोतल थी। उसे खोलकर शराब पीने ही वाले थे कि इतने मे उनकी जान पहचान का एक बुद्धिमान् लडका उनके सामने से होकर गुजरता हुआ निकला। उन दोनो शराबियो मे एक कुछ चालाक तथा 'नारायणदर्शी नकटो' की तरह शराबियो की सख्या बढाने का बहुत शौकीन था। अच्छे घरो के लडको को शराबी बनाने और अपना नाश करने के साथ-साथ उनका भी नाश करने मे उसे बहुत आनन्द आता था। उस बुद्धिमान् लडके को देखकर वह खडा हुआ, और उसके पास जाकर बोला-अरे भाई! आजा-आजा, आज तो बहुत दिनो मे देखा है। लगता है कहीं ज्यादा ही कमेर मे फसा रहता है। अधिक कमा कर क्या करोगे सब कमाई यहा ही धरी रह जायेगी। कभी तो दम ले लिया कर। आजा बैठ जा, तू भी शमिल हो जा पार्टी मे। ठीक समय पर आये हो, आ दारू पीले।

बुद्धिमान् – (खडा होकर) नहीं भाई मैं तो चल रहा हू। मुझे शराब अच्छी नहीं लगती। मैं नहीं पिया करता इसे।

शराबी – अरे मैं कह रहा हू पीले। कौन से तेरे जेब से पैसे जा रहे हैं। पार्टी मैं दे रहा हू।

बुद्धिमान् – नहीं भाई, इसको पीकर बुद्धि उल्टी हो जाती है। पीने वाला होश मे नहीं रहता। झगडेबाजी गाली-गलौच करता है। और इसकी आदत पड गई तो हम तो बरबाद ही हो जायेगे। आदत पडने के बाद कोई नहीं पिलाता, अपने घर मे आग लगानी पडती है।

शराबी:– एक दिन पीने से कोई आदत नहीं पडती। इसके पीने से कोई बुद्धि मे फर्क नहीं आता। जो शराब पीकर बखवासबाजी करते हैं, लडते झगडते हैं। वे जान बूझ कर फैल बिखेरते हैं। ये दिखाते हैं कि मैंने शराब पी है। शराब मे कोई दोष नहीं है. मैं डेली पीता हू। किन्तु कभी बकवासबाजी नहीं करता।

बुद्धिमान् – क्या तुम शराब पीकर उसके नशे मे धर्म उपदेश करते हो? यदि तुम कहो कि शराब का नशा मुझे नहीं होता, तो तुम इसे पीते ही क्यो हो, इस नशे को करते ही किसलिये हो ? इसलिए यह सत्य है कि नशीला पदार्थ पीने पर सबको नशा होता है। नशा होना एक पागलपन है, और बुद्धि के नाश होने का नाम 'नशा' है। कोई पागल अधिक शरारत करता है (पागलपन) करता है, कोई कम। किन्तु पागल तो पागल ही होता है। इसी प्रकार नशे मे होश रहे तो नशा कौन कहे। शराब पीने वाले लोग ही क्यो दिखाते हैं कि "मैंने शराब पी है।" दूध, घी, फल, मेवा, मिष्ठान खाने पीने वाले लोग क्यो नहीं दिखाते, "मैंने उत्तम भोजन किया है।" वे उत्तम भोजन करके बकवास बाजी, लडाई झगडा बखेडा क्यो नहीं करते ? इससे सिद्ध होता है कि निकृष्ट पदार्थ खाकर बुद्धि निकृष्ट और उत्तम भोजन करने पर बुद्धि उत्तम रहती है। शराब पीकर किसी को धर्म की बात नहीं सूझती। फिर मैंने यह कह दिया कि मुझे शराब अच्छी नहीं लगती। जितने शराबी लोगो को शराब पीने की आदत है, यदि वे पहले दिन शराब न पीते तो उन्हे आदत ही नहीं पडती।

शराबी – जब तुमने शराब कभी पीकर ही नहीं देखी तो तुम्हे अच्छी बुरी का ज्ञान कैसे हो गया ? मेरे कहने पर आज पीकर देख नशा होने पर ऐसा लगता है, कि 'मानो स्वर्ग मे झूल रहे हो।' जब तक नशा रहता है आदमी सब चिन्ताओ से छूट कर, मौज मस्ती मे रहता है। आज आज तू मेरा विश्वास करके पीले, और फिर देख कितना आनन्द आता है। कुछ स्वाद न आये तो फिर कभी मत पीना।

बुद्धिमान् – मैं मूर्ख नहीं हू, जो आख मीचकर विश्वास करके कुए मे गिरू। शराबी को स्वर्ग तो दूर, 'स्वर्ग का द्वार' भी नहीं मिल सकता। बुद्धिमान् लोग जहर को पीकर नहीं देखते। जहर पीकर मरने वाले लागो को देखकर ही उन्हे 'जहर का ज्ञान' हो जाता है। शराब पीकर अनेक लोगो की तरह-तरह की दुर्गति होते देखकर, मुझे शराब से सख्त घृणा है। शराबियो को स्वर्ग मे झूलते तो तुमने ही देखा होगा, तू भी स्वर्ग मे झूलता होगा। किन्तु हमने तो शराब से होने वाली बरबादी और रोज रोज की झगडेबाजी क्लेशो से तग होकर शराबियो को फासी पर झूल कर मरते हुए देखा है। न ही हमने किसी शराबी को चिन्ताओं से मुक्त होते देखा है। यदि पागल होने से चिन्ता और दु खो से मुक्ति होती तो लोग पागल का इलाज क्यों कराते ? शराब पीने से धन और बुद्धि नष्ट होने, शरीर मे रोग बढने, किसी झगडे फिसाद आदि होने पर मनुष्य की चिन्ताए ब्याज समेत खडी मिलती हैं।

शराबी – अच्छा जा जा, मुझे धर्म उपदेश नहीं सुनना। मैं तुम्हे अपना प्यारा आदमी समझता हू। अन्यथा हमारे पास इतने फालतू पैसे कहा जो दुनिया को पिलाते फिरे।

बुद्धिमान्.– भाई बुरा तो मैं भी तुम्हारा नहीं चाहता। धर्म उपदेश सुनना तुम्हारे भाग्य मे है ही कहा ? प्यारे आदमी को जहर पीला कर आदर करते हो कैसा अजीब है तुम्हारा प्रेम ?

शराबी:– अच्छा जा, बहुत सुन लिया तेरा उपदेश अब जा, अपना काम करें, इतने में ही दूसरा शराबी अपने शराबी दोस्त से इस प्रकार बोला।

दूसरा शराबी – अरे भाई आजा, क्यों खामखा इसके मुह लगता है। आजकल भलाई का बख्त नहीं है। तूं तो इसके लिए अपनी जेब से पैसा खर्च कर रहा है और अगला ऐसा कृतघ्नी है कि ऐहसान मानना तो दूर, उल्टा तुम्हारे सिर पर चढा आ रहा है। आ बैठ, टेबल पर स्पेशल खाना लग गया है। चार बज गये, सवेरे से कुछ नहीं खाया है। सारा मजा किरकिरा कर दिया। ये क्या जाने दारू का स्वाद ? पता नहीं आज सवेरे-सवेरे किस मनहूस का मुह देखा है। कोई काम ठीक से नहीं हो रहा।

बुद्धिमान् – (मन ही मनमें) अब क्या कहे तुमसे ? उलटे लिये जाओ ना सुलटे। कोई जूते वाला होता तो सारी समझ भी आ जाती। सब काम ठीक होते। धन्य हो शराबियो की अक्ल।

इतना कह कर बुद्धिमान् अपने घर चला गया, और दोनों शराबी अपनी शराबबाजी मे लग गए। यदि ऐसे बुद्धिमान् लडके हो तो शराबी लोग भले ही सिर पीट कर मर जाये, किन्तु कोई शराबियो के चक्कर मे न फसे।

शराब कहती है ?

सब लोग जानते हैं कि जड पदार्थ है, वह कुछ नहीं बोलती। किन्तु यहा इसका भावार्थ यही है कि शराब मे इतने भारी दोष होते, हुए भी जो मनुष्य इसे पीता है। तुझे धिक्कार है।

बहुत पदार्थ बुरे जगत् मे मुझ से बुरा न कोय।
जो मेरा सेवन करे, दुष्ट आत्मा होय।।१।।
दुष्ट आत्मा होय ना कोई शिक्षा सीख सुहाय।
सुख सम्पत्ति रहे ना घर मे बेशक पियो निभाय।।२।।
मेरे प्रेमी बुरा न मानो, आदत मेरी खराब।
सर्वनाश करके छोडू मै मेरा नाम शराब।।३।।
जिस घर जाति मैं, आई मैं, करके छोडा नाश।
मुगल, मराठे, राजपूत पढ लो सबका इतिहास।।४।।
जैसे भी हो एक बार कोई लीजे गले उतार।
फिर तो मैंने जानी, हो जाऊगी उसके सिर सवार।।५।।
कुकर्म करने से जो डरे दो घूट पियो बस काफी।
पीकर बनो पिशाच, निशाचर, दयाहीन, महापापी।।६।।
सड-सड कर बनती हू मैं, फिर क्यों ना सडन फैलाऊ।
क्यो नहीं करू शरारत, अपने दोष कहा ले जाऊ।।७।।
मैं तो जन्म-जात से पैदा हू, डायन बदकार।
मगर अचम्भा मनुष्य करे क्यो, अपनी क्रिया ख्वार।।८।।
उत्तम एक से एक पदार्थ, भोगे सब नर नार।
मगर नीयत के हारे मानव, बार-बार धिक्कार।।९।।

शराबी

—नाज 'सोनीपती'

जिन के लिए है मय भी इक सराया-ए-हयात,
जैसे कि उनको मिल गई हो एक कायनात।
आपस मे छीना-झपटिया करते हैं, इस कदर,
सुनते नहीं हैं, रिन्द किसी पारसा की बात।
आपे से बाहर हो गए, कुछ सूझता नहीं,
बकते हैं मुह से गालिया, वे ऐसी वाह्यात।
क्या पूछते हो हाल, मयकशों का दोस्तो ?
दिन को कहें न दिन कभी, न रात को वे रात।
अजान तक जाती नहीं मयनोश की नजर,
होते हैं कितने रूनुमा, संगीन वाक्यात।
नशे में चूर है मगर पहचानते नहीं,
कैसा खुदा है और है कैसी खुद की जात।
इतरा रहे हो चन्दरोजा जिन्दगी पे 'नाज',
यह जानते नहीं हो ? कि दुनिया है बे सबात।।

आर्य-संसार

आरक्षण और हिन्दी राजनीति में उलझ गई—देवीदास आर्य

कानपुर। आरक्षण और हिन्दी राजनीति मे उलझ गई, इसलिये स्वतन्त्रता की स्वर्ण जयन्ती की समाप्ति के बाद भी हिन्दी दिवस मनाना पड रहा है। क्या विश्व में अन्य कोई देश ऐसा हो सकता है कि आजादी के ५४ वर्ष बाद भी उसे राष्ट्रभाषा को उचित स्थान प्रदान करने के लिये प्रयास करना पडे। उपरोक्त विचार केन्द्रीय आर्यसभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने आर्यसमाज हाल गोविन्दनगर कानपुर मे आयोजित हिन्दी सप्ताह की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किये।

श्री आर्य ने आगे कहा कि राष्ट्र के निर्माण मे भाषा का ही अधिक योगदान होता है परन्तु आज हम अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी की उपेक्षा कर अग्रेजी बोलने मे गौरव का अनुभव करते हैं जो शर्म की बात है। वास्तव में विदेशी भाषा को महिमा मंडित करना राष्ट्र के प्रति कृतघ्नता है।

समारोह की अध्यक्षता श्री देवीदास आर्य ने की तथा सचालन बाल गोविन्द आर्य ने किया, इसके अतिरिक्त सत्यकेतु शास्त्री, शिवकुमार आर्य, श्रीमती दर्शना कपूर, कैलास मोगा आदि ने विचार व्यक्त किये।

—**बालगोविन्द आर्य**, मन्त्री आर्यसमाज गोविन्द नगर, कानपुर

निमन्त्रण पत्र

वैद्य धर्मपाल यज्ञ समिति, खानपुर कलां (सोनीपत)

निवेदन है कि पूर्व वर्षो की भांति इस वर्ष भी वैद्य धर्मपाल यज्ञ समिति खानपुरकला राष्ट्र कल्याण व इष्ट मित्रो की मंगलकामना हेतु १५ अक्तूबर, २००१ से २१ अक्तूबर २००१ तक यजुर्वेद ब्रह्मपारायण यज्ञ करवा रही है जिसकी पूर्णाहुति दिनाक २१-१०-२००१ को प्रात ८ बजे होगी।

यज्ञ के ब्रह्मा वैदिक विद्वान् स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती आर्ष महाविद्यालय गुरुकुल कालवा, जीन्द होगे। वेदपाठी आचार्य आत्मप्रकाश जी एव ब्रह्मचारी राजेन्द्र जी होंगे। इस शुभावसर पर प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशको को भी वेदप्रचार हेतु आमन्त्रित किया गया है। इसके अतिरिक्त अनेक राजनैतिक एव प्रतिष्ठित सामाजिक व्यक्तियो को भी आमन्त्रित किया गया है। यज्ञ मे अनेक सम्मेलनो का भी आयोजन होगा। आपसे सादर प्रार्थना है कि सपरिवार यज्ञ मे सम्मिलित होकर विद्वानो के उपदेशो से लाभ उठावें।

कार्यक्रम – १५ अक्तूबर, २००१ से २० अक्तूबर २००१ तक प्रात ६-०० से ९-०० बजे तक एव सायं ३-०० से ६-०० बजे तक यज्ञ एव प्रवचन होगे। २१ अक्तूबर, २००१ को प्रात ८-०० बजे पूर्णाहुति होगी, तत्पश्चात् दक्षिणा समारोह होगा।

निवेदक **वैद्य धर्मपाल यज्ञ समिति (रजि०)**, खानपुरकला

वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज बडा बाजार 'शहर' सोनीपत का ८५वा वार्षिकोत्सव १० से १६ सितम्बर तक सोल्लास सम्पन्न हुआ। सुप्रसिद्ध विद्वान्, सन्यासी, योगनिष्ठ तपोमूर्ति स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक के 'सरल योग से ईश्वर साक्षात्कार' विषयक प्रवचनों से धर्मप्रेमी जनसमूह ने मार्गदर्शन प्राप्त किया। ईश्वर स्तुति, प्रार्थना, उपासना विषयक आध्यात्मिक उपदेशो के अतिरिक्त सामाजिक व राष्ट्रीय समस्याओ के निवारणार्थ वैदिक विचारधारा से ओतप्रोत हृदयग्राही प्रवचन भी हुए। —सुदर्शन आर्य

शोक समाचार

१ मेरी चाची श्रीमती चमेलीदेवी धर्मपत्नी चौ० बनवारीलाल जी छिक्कारा पूर्व सरपच ग्राम जुआ जिला सोनीपत का दिनाक १७ सितम्बर २००१ को रात्रि को ६५ वर्ष की आयु मे निधन होगया। वे काफी दिनो से बीमार थी। आप आर्यसमाज के कार्यों मे सहयोग देती थी। अतिथि सत्कार करने मे उनकी बहुत रुचि थी। १७ सितम्बर को ग्राम मे शान्तियज्ञ तथा शोक सभा सम्पन्न हुई।

—**केदारसिंह आर्य**, प्रधान–आर्यसमाज जुआ (सोनीपत)

२ दिनांक १७-९-२००१ को कप्तान महाशय हरिसिंह आर्य (चन्देनी) का अकस्मात् दिनाक ६-९-२००१ को अपने गाव में देहान्त होगया। प्रात काल ९ बजे स्नान करने के पश्चात् वह सन्ध्या कर रहा था उसी वक्त उनके प्राण पखेरू उड गये। वह बैठे के बैठे ही रह गये। उनकी आयु लगभग ७२ वर्ष

थी। सेना मे देश की सेवा निवृत्ति के पश्चात् इन्होने हरयाणा मे आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत भजनोपदेशक के पद पर कार्य किया। कन्या गुरुकुल के प्रचारमत्री के पद पर अन्त तक कार्य किया। दादरी आर्यसमाज के सदस्य भी थे। पूर्वमन्त्री श्री शीशराम ओला सासद के साथ रहकर काफी धार्मिक कार्य किये हैं। सेना मे धर्मगुरु रहते हुए २६ वर्ष तक जाट रेजिमेंट मे सेवारत रहते आनरेरी कप्तान व विभिन्न सेवा मैडल भी प्राप्त किये हैं। इनके गुरु श्री स्व० महाशय मनसाराम आर्य थे। इनकी आवाज आखिर तक कोयल की तरह से थी। दादरी मे आर्यसमाज द्वारा प० गुरुदत्त शताब्दी समारोह मे इन्होने तन, मन, धन से कार्य किया था जो कि भुलाया नहीं जा सकता। वह अपने पीछे धर्मपत्नी तीन पुत्र एव पुत्रिया छोड गये हैं। इनके गाव मे ही नहीं बल्कि इस इलाके मे पूर्ण रूप से इनके जाने के बाद इस रिक्त स्थान की भरपाई होना अति दुर्लभ है। दिनाक १७-९-२००१ को आर्यसमाज चरखी दादरी की ओर से शान्ति यज्ञ किया गया। यह परिवार प्रारम्भ से ही दानी है तथा आज इस उत्सव पर आर्यसमाज दादरी, चन्देनी तथा गुरुकुल पचगाव को भी दान दिया है।

—**हरिश्चन्द्र लाम्बा**, मन्त्री–आर्यसमाज

३ महाशय हुकमचन्द आर्य का दु खद निधन उदर की बीमारी से सघर्ष करते हुए दिनाक १५-९-२००१ को हो गया। उनकी आयु लगभग साठ वर्ष की थी। दिवगत आर्य जी ने आजीवन श्रेष्ठ विचारो को न केवल आत्मसात् किया अपितु आजीवन उन विचारो के प्रचार-प्रसार के लिये अथक परिश्रम किया। आर्यसमाज चरखीदादरी के मन्त्री पद पर काफी सालो तक कार्य किया है। चरखीदादरी मे शास्त्रार्थ तथा प० गुरुदत्त विद्यार्थी शताब्दी आदि भी इन्हीं के मन्त्रीकाल मे हुई थी। इनके सहयोगी श्री हरिश्चन्द्र लाम्बा ने पूर्ण सहयोग दिया तथा वह अब भी मन्त्री के रूप मे कार्यरत हैं। दिनाक १५-९-२००१ को अन्तिम सस्कार आर्यसमाज ने वैदिक मन्त्रो के साथ किया। शवयात्रा मे शहर के गणमान्य व्यक्तियो ने भाग लिया जिसमे आर्यसमाज के प्रधान डॉ० रामनारायण चावला, पूर्व प्रधान प्रतापचन्द्र शास्त्री तथा पुरोहित श्री नेमराज आर्य तथा सभी सभासदगण आदि थे। वह अपने पीछे तीन पुत्र एव दो पुत्रिया तथा धर्मपत्नी छोड गये हैं। बडे पुत्र श्री नरेशकुमार आर्य हरयाणा पुलिस विभाग मे कार्यरत हैं। ईश्वर से यही प्रार्थना है कि शोकाकुल परिजनो को यह असह्य दु ख सहन करने की क्षमता दे। —हरिश्चन्द्र लाम्बा, मन्त्री–आर्यसमाज

दु:ख निवृत्ति के उपाय

मनुष्य का जीवन सर्वश्रेष्ठ है। मानव किसी कार्य को बडे सूझबूझ के साथ करता है। जो विवेक से काम लेता है वही व्यक्ति अपने जीवन मे सफल भी होता है। मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन दर्शन है। परन्तु मानव अपने अज्ञान से स्वय के साथ धोखा करता है और अपनी मजिल का रास्ता भूलता हुआ भूल जाता है। अत कहा गया है कि मनुष्य का जीवन दार्शनिक होना चाहिए। जिस मनुष्य के जीवन में दर्शन की झलक नही है वह मनुष्य आध्यात्म विकास की ओर उन्मुख नहीं हो सकता है। जो व्यक्ति वास्तविक दार्शनि [illegible] ता है वह सर्वदा परमात्मा के चिन्तन एव सत्य के अ [illegible] मे ध्यानमग्न रहता है। दृश धातु से दर्शन शब्द की निष्पनि होती है। दृश्यते अनेन इति दर्शनम् अर्थात् जो गहराई से देखा जाये वह दर्शन है। जो व्यक्ति अपनी आत्मा की गहराई भावनाओ से प्रभु का चिन्तन करते हुए एव सत्य की परख करते हुए स्वय को परमात्मा के तुल्य बना लेता है वही दर्शन है। दर्शन मानव सस्कृति के मूल स्तम्भो, विज्ञान, दर्शन और धर्म मे प्रमुख स्थान रखता है। मानव सस्कृति के मूल स्तम्भो मे तीन वस्तुओ का उल्लेख किया गया है। पहला विज्ञान दूसरा एव तीसरा धर्म है। मनुष्य के जीवन के विकास के लिए इन तीनो का घटित होना आवश्यक है। इसके बिना मनुष्य का विकास कदापि नहीं हो सकता है। धर्माचार के रूप मे सस्कृति का जो बाहरी स्वरूप दिखाई पडता है उसका आधार दर्शन ही होता है और जो सस्कृति का आन्तरिक स्वरूप होता हुआ धर्माचार के रूप मे अपनी अभिव्यक्ति पाता है सम्प्रति यद्यपि दर्शन के स्वरूप का सघटन अपने समय मे सिद्ध विज्ञान पर आधारित तर्कों के द्वारा प्राप्त किये गये निष्कर्षो के रूप मे होता है और इस प्रकार दर्शन अपने समय के सिद्ध विज्ञान को अपना आधार बनाता है। किन्तु वह अपने निष्कर्षो के रूप विज्ञानार्थ परीक्षण के योग्य सामग्री भी उपस्थित करता है। अत आगे के साध्य विज्ञानार्थ वह आधार भी बनाता है। और इसलिए उसको विज्ञानो की माता या दर्शन भी कहा गया है। दर्शन विज्ञानो का विज्ञान है।

साख्यकारिकाकार का कथन है–

इन्द्रियैरुपलब्ध यत् तत् तत्त्वेन भवेद्यदि।
जातास्तत्त्वविदो वालास्तत्त्वज्ञानेन कि तदा।।

अर्थात् मनुष्य ससार के तात्त्विक स्वरूप को जानने की कोशिश करता है और उस प्रयास के फलस्वरूप जानकारी होने वाले तात्त्विक स्वरूप के निर्देश में व इन्द्रियोपलब्ध रूप की व्याख्या प्रस्तुत करता है। यह व्याख्या समझने की बात है। एक दर्शन या दर्शन शास्त्र का स्वरूप ग्रहण करती है।

निरीश्वर साख्य केवल दो तत्त्व मानता है। पहला जडतत्त्व और दूसरा चित्त। जडतत्त्व जगत् का उपादान कारण है। साख्य उपादान कारण के लिए मुख्य रूप से प्रकृति शब्द का ही प्रयोग करता है। अत प्रकृति शब्द साख्याभिमत जडतत्त्व का रूढ अभिधान होगया है। चित्त तत्त्व को साख्य मुख्य रूप से पुरुष शब्द से अभिहित करता है। अन्य दर्शनो ने चेतन तत्त्व के लिए आत्मा एव पुरुष आदि विभिन्न शब्दो का प्रयोग किया है। साख्याभिमत जड तत्त्व एव चित्त तत्त्व अपने रूढ अभिधानो से अभिहित होकर प्रकृति और पुरुष कहे जाते हैं। प्रकृति और पुरुष साख्य के प्रमुख प्रमेय में भी दो तत्त्व हैं। अन्य प्रमेय जैसे– विकृति बन्ध और मोक्ष आदि। ये दोनो तत्त्व मूल तत्त्व हैं। प्रकृति विकारशील होने पर भी विभिन्न विकृतियो को प्रस्तुत करती है और पुरुष प्रकृति रहित होने के कारण निर्विकार रहता है। यह किसी भी विकृति को जन्म नहीं देता है। सम्प्रति प्रकृति विकारशील एव पुरुष निर्विकार है।

समस्त जड जगत् प्रकृति का ही परिणाम होने के कारण प्रकृति की ही विकृति है और सम्प्रति प्रकृति की अनन्त विकृतिया होती है। साख्य के अनुसार तेईस विकृतिया मानी गई हैं। ये तेईस विकृतिया इस प्रकार हैं–

महत् या महतत्त्व, अहंकार पञ्च सूक्ष्म भूत या तन्मात्राएं (शब्द तन्मात्रा, स्पर्श तन्मात्रा, रूप तन्मात्रा, रस तन्मात्रा, गन्ध तन्मात्रा) पञ्च महाभूत या स्थूल भूत (आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी) एव एकादश इन्द्रिया (श्रोत्र, त्वक्, नेत्र, जिह्वा एव नासिका) ये पांच ज्ञानेन्द्रिया और वाक् पाणि, पाद, पायु या गुदा एव उपस्थ या जननेन्द्रिय) ये पाच कर्मेन्द्रिया तथा मन।

इन विकृतियों का भी जब तत्त्व के रूप मे परिगणन किया जाता है, तब दो मूल तत्त्वों प्रकृति और पुरुष के साथ इन विकृति रूप तेईस तत्त्वो को परिगणित करते हुए निरीश्वर साख्य मे कुल पच्चीस तत्त्व माने जाते हैं। सेश्वर साख्य मे इन पच्चीस तत्त्वो के साथ ईश्वर को और मानते हुए छब्बीस तत्त्व माने जाते हैं। प्रकृति कारण है और स्वरूपत अव्यक्त है। समग्र जड जगत् या उसके घटक भूत उक्त तेईस विकृति रूप तत्त्व उसके कार्य एव स्वरूपत व्यक्त हैं। अव्यक्त प्रकृति का समग्र जड जगत् परिणाम या विकार है। इस प्रकार प्रकृति और जड जगत् मे जो कारण भाव है वह प्रकृति भाव है। वह प्रकृति विकृति भाव के रूप है।

जगत् के प्रत्येक व्यक्त पदार्थ के विषय मे अनुभूत होता है कि वह सुख दु ख एव मोह स्वभाव वाला भी सुख आदि देनेवाला है। अत सिद्ध होता है कि वह ऐसे परस्पर भिन्न तीन घटकों का सघात रूप है। जो सुख दु ख और मोह स्वभाववाले है। साख्य इन घटको को ही गुण कहता है और सत्त्व, रजस एव तमस नामो से अभिहित करता है। इस प्रकार व्यक्त पदार्थ सुख-दु ख एव मोह स्वभाव वाले होने के कारण त्रिगुणात्मक है। इनकी यह त्रिगुणात्मकता इस प्रकार अनुभव सिद्ध है कि एकही पदार्थ भिन्न-भिन्न व्यक्तियों को सुख-दु ख एव मोह देता है। सत्त्व, रजस एव तमस ये तीन गुण क्रमश प्रीति या सुख अप्रीति या दु ख और विषाद या मोह स्वभाव वाले हैं। अर्थात् सुख दु ख एव मोह देने वाले हैं और इन रूप में ये सुख दु:ख मोहात्मक है। जिस प्रकार मनुष्य के जीवन में सत्त्व, रज और तम गुण विद्यमान रहता है उसी प्रकार मनुष्य के जीवन के साथ तीन प्रकार का दु.ख भी संयुक्त रहता है। साख्याकारिकाकार ईश्वर कृष्ण लिखते हैं–

दु.खत्रयाभिघातजिज्ञासा तदपघातके हेतौ।
दृष्टे साऽपार्था चेन्नैकान्तात्यन्ततोऽभावात्।।

अर्थात् आध्यात्मिक, आधिभौतिक एव आधिदैविक के द्वारा किये गये आघात के कारण दु.खों के विनाशक हेतु या उपाय के विषय में जिज्ञासा उत्पन्न होती है। यदि ऐसा कहा जावे कि प्रत्यक्ष गोचर (हेतु या उपाय) के वर्तमान होने पर उक्त जिज्ञासा व्यर्थ है तो ऐसा कहना उचित नहीं है क्योंकि प्रत्यक्ष गोचर उपाय से ऐकान्तिक या अनिवार्य रूप से तथा आत्यन्तिक या पूर्णतया अन्तिम रूप से दु ख निवृत्ति नहीं होती है। दु ख निवृत्ति के उपाय की जिज्ञासा वैयक्तिक विषय है। किसी को जब व्यक्तिगत रूप से या स्वात्मासवेद्य रूप मे दु:ख का अनुभव होगा और वह उस दु ख को दूर करना चाहेगा तभी उसे दु ख निवृत्ति के उपाय की जिज्ञासा होगी। यद्यपि इस ससार मे दु ख प्रत्यात्मवेदनीय अर्थात् प्रत्येक प्राणी के द्वारा अनुभूयमान है और प्रतिकूल वेदनीय अर्थात् प्रतिकूल रूप में अनुभूय मान होने के कारण प्रत्येक प्राणी इससे छुटकारा चाहता है और इस प्रकार दु ख निवृत्ति के उपाय की जिज्ञासा प्रत्येक को स्वाभाविक रूप से होनी चाहिए। किन्तु फिर भी यदि किसी को यह सग दु खालय न प्रतीत होकर कुल मिलाकर सुखालय प्रतीत हो या दु खानुभूति होने पर भी दु ख का ही मजा लेने के कारण या अन्य किसी कारण से वह दु ख को दूर न करना चाहे तो वह दु ख निवृत्ति के उपाय की जिज्ञासा क्यो करेगा ? ऐसे व्यक्ति को न तो यह समझाना उचित प्रतीत होता है कि वह ससार के सुखालय के स्थान पर दु खालय मानकर या अपने सुख को दु ख मानकर दु:ख को दूर करने के उपाय की जिज्ञासा करे और न ऐसा समझने का उस पर कोई प्रभाव नहीं पडेगा। इस प्रकार यद्यपि दु ख निवृत्ति के उपाय की जिज्ञासा ही वैयक्तिक विषय है।

–डॉ० रवीन्द्रकुमार शास्त्री
दयानन्दमठ, दीनानगर (पजाब)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ७६८७४, ५७७७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ७७७२२) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। पत्र के प्रत्येक प्रकार के विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक होगा।

भारत सरकार प्रेस रजि० नं० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०२
पंजीकरणसंख्या टैक/एच.आर./49/रोहतक/99 ☎ ०१२६२-७७८०१

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र रोहतक

प्रधानसम्पादक : प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामन्त्री | सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष २८ अंक ४३ ७ अक्तूबर, २००१ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

शहीद शिरोमणि सरदार भगतसिंह

(जन्म २८-०९-१९०७ शहादत २३-३-१९३१)

❑ **हरिसिंह दहिया,** ६/७६, टीचर कालोनी, बहादुरगढ (झज्जर)

जीवन की अन्तिम सास तक क्रान्ति की मशाल को प्रज्वलित रखनेवाले और मातृभूमि की बलिवेदी पर हसते हुए शीश अर्पित करनेवाले अमर बलिदानी सरदार भगतसिह का जन्म ७ अप्रैल, १९०७ को वीरभूमि पंजाब के बगा (जालधर) गाव मे सरदार किशनसिह के घर माता विद्यादेवी की कोख से हुआ। आपका पूरा परिवार देशभक्तो और समाजसेवियों का था। आपके दादा सरदार अर्जुनसिह पक्के आर्यसमाजी तथा कर्मठ समाजसुधारक थे। परिवार के इस देश प्रेमको के वातावरण की बालक भगतसिह के हृदय पर अमिट छाप पडी। लाहौर के डी०ए०वी० स्कूल में आपका विद्याध्ययन आरम्भ हुआ। १९१९ में जब आप सातवीं कक्षा के छात्र थे, अमृतसर में जलियावाला बाग का बर्बर हत्याकाण्ड हुआ। अगले दिन भगतसिह स्कूल न जाकर अमृतसर पहुचे और साम्राज्यवादी अत्याचार का नग्न दृश्य अपनी आखो से देखा। निहत्थे, निरापराध देशवासियो के खून से रगी मिट्टी को माथे से लगाया और एक बोतल में वहां की पवित्र मिट्टी भर ली। आंखों में खून के आंसू और चेहरे पर विषाद को लिए सायंकाल घर लौटे। भोजन नहीं किया। बहन ने उनका मनचाहा फल आम खाने को दिया, किन्तु भगतसिह ने मना कर दिया। रात को मिट्टी की बोतल बहन को दिखाई और शहीदों की मिट्टी को नमस्कार करने को कहा। इस बोतल को वर्षों तक भगतसिंह ने अपने पास रखा।

१९२१ में महात्मा गाधी ने असहयोग आन्दोलन आरम्भ किया। भगतसिह उस समय नौवीं कक्षा के छात्र थे। भगतसिह ने गांधी जी के आह्वान पर स्कूल छोड दिया। १९२२ में चोरा-चोरी की घटना से खिन्न गांधी जी ने आन्दोलन स्थगित कर दिया। युवकों के सामने अंधकार छा गया। किन्तु भगतसिंह को अपनी प्रखर बुद्धि के बल पर नवीं कक्षा पास किए बिना ही सीधा नेशनल कॉलेज मे प्रवेश मिल गया। यहीं पर उन्हे भाई परमानन्द, आचार्य जुगलकिशोर और जयचन्द विद्यालकार जैसे देशभक्त गुरुओ तथा यशपाल, सुखदेव, भगवतीचरण जैसे सहपाठियों का सान्निध्य प्राप्त हुआ। यहा भगतसिह ने अनेक क्रान्तिकारी और प्रगतिशील भारतीय और विदेशी विचारको की पुस्तकें पढी। यशपाल के साथ मिकर देश पर बलिदान होने की प्रतिज्ञा की। १९२३ मे एफ०ए० की परीक्षा पास करके घर लौटे तो घरवालो ने विवाह के लिए दबाव डाला। परन्तु भगतसिह ने तो मृत्यु से विवाह रचाने का निश्चय किया हुआ था। दबाव बढने पर घर त्याग कर कानपुर आगए। गणेश शकर विद्यार्थी से परिचय हुआ। यहीं पर विद्यार्थी जी ने चन्द्रशेखर आजाद से मुलाकात कराई। दोनों में प्रगाढता बढना स्वाभाविक था। दादी जी के बीमार होने पर घर लौटे और दादी जी की सेवा मे जुट गए। पिता जी की आज्ञा पाकर बगा गांव से गुजर रहे गुरु का बाग आन्दोलन चला रहे सत्याग्रहियो की इतनी सेवा, सहयोग और स्वागत किया कि सत्याग्रही निहाल हो गए। यशपाल, सुखदेव, भगवतीचरण वोहरा और दुर्गा भाभी जैसे साथियो से मिलकर 'हिन्दुस्तान नौजवान सभा' का गठन किया जिसे बाद में भारी सफलता और सहयोग मिला।

९-८-१९२५ को काकौरी केस मे बन्द क्रान्तिकारियों, रामप्रसाद बिस्मिल, ठाकुर रोशनसिह, राजेन्द्र लाहडी और अशफाक उल्ला खा को काल कोठरी से निकालने की योजना बनाई जो सफल नहीं हो सकी। भगतसिह फिर भी निराश नहीं हुए। १९२८ में सितम्बर मास की ८/९ तारीखों को दिल्ली मे फिरोजशाह कोटला के खण्डहरो मे क्रातिकारियों की सेवा की। पार्टी का नाम बदलकर हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातान्त्रिक सघ रखा। नेता भगतसिह तथा सेनापति चन्द्रशेखर आजाद बने।

२७ अक्तूबर १९२८ को साइमन कमीशन लाहौर पहुचा। लाला लाजपत राय के नेतृत्व मे समाजवादी सघ ने भारी विरोध प्रदर्शन किया। बर्बर लाठी चार्ज हुआ। अग्रेज डी०एस०पी० सान्डर्स ने स्वय लाला लाजपत राय पर लाठिया बरसाई। लाला जी की छाती मे गभीर चोटे आई। साय की सभा मे लाला जी ने कहा **'मेरे शरीर पर पडा लाठी का एक-एक प्रहार ब्रिटिश शासन के कफन की कील बनेगा।'** लाला जी का बूढा शरीर इस अपमान को सहन न कर सका। १७ नवम्बर १९२८ को लाला जी ने देह त्याग किया। धारा १४४ का उल्लघन करते हुए डेढ लाख नरनारियो ने अश्रुपूर्ण नेत्रो से लाला जी को अन्तिम विदाई दी। सभा में उपस्थित स्वर्गीय चितरजनदास की विधवा बसन्ती देवी ने देश की युवा शक्ति की गैरत को ललकारते हुए सिह गर्जना की **"क्या देश मे कोई ऐसा नौजवान नहीं जो लाला लाजपत राय की शहादत का बदला ले सके ? क्या वह गोरा हत्यारा यो ही सीना ताने घूमता रहेगा ? यदि इस देश के नौजवानो का खून इतना ही ठण्डा पड गया है तो मैं देश की कन्याओ का आह्वान करूगी। नौजवान घरो में चूडिया पहनकर बैठ जाए। देश की रक्षा अब अबलाए करेगी। लाला जी के कातिल को सजा अब स्त्रिया देगी।"** खून खौल उठा वीर भगतसिह का। खडा होकर माता बसन्ती को आश्वस्त किया कि लाला जी की शहादत का बदला महीने भर में ले लिया जाएगा। ऐसा ही हुआ। १७ दिसम्बर को हत्यारे डी०एस०पी० सान्डर्स को गोलियों से भूनकर भारत माता के मस्तक के कलक को धो डाला। बडी चतुराई से पग-पग पर बिछाई सी०आई०डी० की आखो मे धूल झोककर कलकत्ता जा पहुचे। अन्य क्रान्तिकारी भी लाहौर से निकल भागने मे सफल रहे।

क्रान्तिकारी अपनी शक्ति को निरन्तर बढा रहे थे। हथियारो का जखीरा जमा कर रहे थे। भगतसिह तथा अनेक क्रान्तिकारी बम बनाना सीख चुके थे। बम बना रहे थे। निश्चय हुआ कि असेम्बली हाल पर बम फैंका जाए। अवसर की तलाश थी। अवसर भी आ पहुचा। सैन्ट्रल कमेटी की मीटिंग मे ट्रेड डिसप्यूट बिल और पब्लिक सेफटी बिल पास करने के समय बम फैंका जाए, यह निर्णय हुआ। उस समय भगतसिह सभा मे उपस्थित थे। भगतसिह का नाम बम फैंकनेवालो मे नहीं था क्योंकि सान्डर्स हत्या केस में वह पहले ही वाछित था। जब भगतसिह पहुचा तो सुखदेव ने उसे जली कटी सुनाई। भगतसिह ने सैण्ट्रल कमेटी के निर्णय को उलटवाया। वे स्वय बम फैंकने के लिए तैयार हुए। साथ मे बी०के० दत्त को लिया। बम फैंककर स्वय को गिरफ्तार कराने का निर्णय भी स्वय भगतसिह ने करवाया। २८-४-१९२९ को जब दोनो बिलो को सदस्यो ने भारी बहुमत से नकार दिया तो वायसराय अपने विशेष अधिकार का प्रयोग करते हुए बिल पारित होने की घोषणा करने खडे हुए। भगतसिह ने बिजली की फुर्ती से बम फैंका। वायसराय डेस्क के नीचे छुप गया। दूसरा बम बी०के० दत्त ने फैंका, हाल धुए से भर गया। भगदड मच गई। भगतसिह ने पिस्तौल से दो फायर किए। हाल में केवल मोतीलाल नेहरू, सरदार पटेल, मदनमोहन मालवीय और श्री जिन्नाह बैठे रहे। लाल रग के पर्चे फैंके गए।

(शेष पृष्ठ २ पर)

वैदिक-स्वाध्याय

सर्वत्र रक्षक परमेश्वर

चोदयित्री सूनृतानां चेतन्ती सुमतीनाम्।
यज्ञं दधे सरस्वती।। (ऋ० १ ३ ११)

शब्दार्थ–(सूनृताना) सच्ची और प्यारी वाणी को (चोदयित्री) प्रेरित करती हुई (सुमतीना) और अच्छी बुद्धियो को (चेतन्ती) चेताती हुई (सरस्वती) सरस्वती (यज्ञ) यज्ञ को (दधे) धारण किये हुए है।

विनय–जिन्होने अपने जीवन को यज्ञ बनाया है वे जानते हैं कि इस जीवन-यज्ञ को जहा अन्य (परमेश्वर के शक्तिरूप) देवों ने धारण कर रखा है वहा सरस्वती देवी ने भी इसे धारण किया हुआ है। यह देवी दो कार्य कर रही है। यह एक तो 'सूनृता' वाणी को प्रेरित करती है और दूसरा सुमतियो को जगाती रहती है। सूनृता उस वाणी का नाम है जो कि सच्ची और प्यारी होती है। केवल प्रिय वाणी तो किसी काम की है ही नहीं किन्तु केवल सच्ची वाणी बोलना भी अधूरा है। सत्य के साथ वाणी मे अहिंसा भी रहे तभी वाणी पूरी होती है और तब वाणी मे प्रेम भी आ जाता है। सरस्वती देवी हम लोगो मे ऐसी सत्यमयी और मधुर वाणी को प्रेरित करती रहती है। इस कारण हमारा जीवन-यज्ञ अभग्न चलता है और इसके अतिरिक्त यह सरस्वती देवी इस यज्ञ के एक ऐसे अन्य गहरे और सूक्ष्म अग को भी निवाहती है, जबकि यह हममे निरन्तर श्रेष्ठ, सुन्दर, कल्याणकर, बुद्धि (ज्ञान) को जगाती है। यह जीवन-यज्ञ ठीक चल रहा होता है तो अन्दर सरस्वती देवी हममे शुभ, सबकी कल्याणकारी, हितकारी, बुद्धियो को ही उत्पन्न करती हुई और हमार वाणी से सच्चे और प्रेममय वचनो का ही प्रवाह बहाती हुई होती है। अत जब कभी हमारे मन मे कोई दुर्मति उत्पन्न होवे, हमारा मन किसी के लिए अहित व अनिष्ट सोचे तो समझ लो कि सरस्वती देवी ने हमे छोड दिया है। जब कभी हम अनृत या कठोर (हिसक) वचन बोले तो समझ लो कि सरस्वती देवी हमारे जीवन की यज्ञशाला से उठ गई है। हमे फिर सुमति और सूनृता वाणी का सकल्प करके अपने हृदयासन मे सरस्वती देवी को बिठलाना चाहिए, और इस यज्ञ-भग के लिए प्रायश्चित्त करना चाहिए।

हम प्राय समझते हैं कि सरस्वती देवी का प्रसाद पढना-लिखना आ जाना है। पर यह नहीं है। यदि किसी के हृदय मे निरन्तर सुमति की ही धारा बहती हो और उसकी वाणी से सत्यमय और मधुर वचनो का ही अमृत झरता हो तो वह मनुष्य चाहे बिल्कुल निरक्षर हो तो भी उसमे निश्चय से सरस्वती का वास है, जो कि उसके जीवन-यज्ञ को धारे हुए चला रही है।

(वैदिक विनय से)

शहीद शिरोमणि सरदार भगतसिंह.......... (पृष्ठ १ का शेष)

लिखा था गूगी, बहरी साम्राज्यवादी सरकार के कानों में आवाज पहुंचाने के लिए बमों के धमाके किए गए। चाहते तो आराम से भाग सकते थे किन्तु उनका निश्चय न्यायालय के माध्यम से देश को अपने विचारों से अवगत कराना था। पिस्तौल फैंककर शान्तिपूर्वक गिरफ्तारी दी। नई दिल्ली थाने लाया गया। कारण पूछने पर कहा कि 'हम केवल न्यायालय में ही ब्यान देंगे।' श्री मिलटन की अदालत मे पेश किया गया। क्रान्तिकारियों ने बम फैंकने की बात स्वीकारी। पुलिस और गवाहों की झूठ की पोल खोलकर रख दी, कहा कि 'हमने किसी की हत्या करने के उद्देश्य से बम नही फैंका।' हम आतकवादी नहीं मानवतावादी हैं। हमारा उद्देश्य शोषक उत्तरदायित्व-विहीन, दमनकारी सरकार को बताना है कि भारतीय इतने असहाय और निरूपाय नहीं हैं। हमारा उद्देश्य जनविरोधी गूगी साम्राज्यवादी सरकार के कानों तक यह विचार पहुचाना है कि व्यक्तियों के दमन से विचार नहीं मरते। बोस्टाइल जेल की प्राणघाती यातनाओं से फ्रास की क्रान्ति नहीं दबी। देशभक्तो को फासी पर लटकाने तथा देश निकाला देने से रूस की क्रान्ति नहीं दबी। इसी प्रकार कुछ क्षुद्र प्राणियों के मारे जाने से भारत का स्वाधीनता आन्दोलन दब नहीं सकता। दोनो को जेल भेज दिया गया। जेल के अत्याचारों का जमकर विरोध किया। १०-६-१९२९ को सुनवाई आरम्भ हुई। १२-६-१९२९ को दोनो को आजीवन काला पानी की सजा सुनाई गई। साडर्स हत्या केस की सुनवाई लाहौर मे आरभ हुई। जब दोनो को स्टेचर पर न्यायालय लाया गया तो देश के कोने-कोने से देखने आये लोग रो पडे। लाहौर जेल मे भी अव्यवस्था के विरुद्ध भूख हडताल आरम्भ की। ४ दिन के बाद यतीन्द्रनाथदास भी भूख हडताल मे शामिल हो गए। ६३ दिन की हडताल के बाद १३-९-१९२९ को दिन के एक बजकर ५ मिनट पर यतीन्द्रनाथ दास ने प्राण त्याग दिए। देश मे हा-हाकार मच गया। भगतसिह मर्मान्तक पीडा से तडप कर रह गया। ११४ दिन के बाद भगतसिह ने भूख हडताल समाप्त की। हडताल समाप्त करते समय रस नहीं केवल दाल और फुलका लिया।

लाहौर केस के सुखदेव सहित अन्य क्रान्तिकारी भी पकडे जा चुके थे। लाहौर षड्यन्त्र केस की सुनवाई के लिए वायसराय इरविन ने १-५-१९३० को तीन जजों का विशेष ट्रब्यूनल बनाया। भगतसिह और साथियों ने उस न्यायालय का बहिष्कार किया। कारण था हर पेशी पर अभियुक्तो पर अमानुषिक अत्याचार होते थे। तीन महीने की अवधि में अभियुक्तों के बहिष्कार के बावजूद सुनवाई का नाटक ३०-८-१९३० को पूरा हो गया। दिखावे के लिए सफाई का अवसर भी दिया गया। क्रान्तिकारियों ने सफाई पेश नहीं की। अजीब ढग से ५-९-१९३० को ट्रब्यूनल के सन्देशवाहक ने निर्णय सुनाया। भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव को फांसी का दण्ड मिला, विजय कुमार, कमलनाथ तिवाडी, जयदेव कपूर, शिव वर्मा, गयाप्रसाद, किशोरीलाल और महावीरप्रसाद को आजीन काला पानी, कुन्दनलाल को ७ वर्ष तथा प्रेमदत्त को तीन वर्ष सख्त कैद की सजा हुई। सरकार ने फैसला गुप्त रखने का प्रयास किया। पजाब भर में दफा १४४ लागू कर दी गई। लोगो को भनक लग गई। भारी विरोध और प्रदर्शन हुए। सारा देश भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव के नारों से गूंज उठा। डिफैंस कमेटी ने मुकदमें की पैरवी करते हुए प्रीवी कोन्सिल मे अपील की। अपील रद्द हो गई। सारा देश दुखी किन्तु भगतसिह और साथियो के चेहरो पर विषाद की रेखा नहीं की। ३ मार्च को तीनो अन्तिम बार अपने परिजनों से मिले। भगतसिह धैर्य की मूर्ति बने थे। सबको सान्त्वना दी।

२३-३-१९३१ को चारो ओर मातमी सन्नाटा छाया था। भगतसिह लेनिन का जीवनचरित्र पढने मे लीन था। सायकाल ७ बजकर ३५ मिनट फासी का समय निश्चित किया गया था। समय पर जल्लाद ने पुकारा। क्रान्तिकारी काल कोठरियो से बाहर आए। गले मिले, बीच में भगतसिह दाय बाय राजगुरु, सुखदेव। समवेत स्वर फूट पडा–

न निकलेगी मर कर भी वतन की उलफत।
हमारी मिट्टी से भी खुशबुए वतन आएंगी।।

मस्ती से गाते झूमते हुए फासी के फन्दे तक पहुचे। इन्कलाब जिन्दाबाद का नारा लगाया। फन्दा स्वय गले मे डाला। जल्लाद ने कापते हाथो से फन्दा ठीक किया। चरखी घूमी तख्ता गिरा और मतवाले शहादत का जाम पी गए। भयभीत जेल अधिकारियो ने पीछे की दीवार तोडकर शहीदो के शव ट्रको मे डाले। हुसैनी वाला के समीप मिट्टी का तेल डालकर शवो को अधजला किया और सतलुज में फैंक दिए।

प्रात काल गाववासियो को सब कुछ ज्ञात हो गया। उन्होने शवो को नदी मे से ढूढ निकाला और सम्मान सहित पुन दाह सस्कार किया। सारे देश में शोक की लहर दौड गई। देशवासियो ने अश्रुपूर्ण नेत्रो से क्रान्ति के महानायको को श्रद्धाजलि दी। इन वीरों की शहादत से साम्राज्यवाद विरोधी जो ज्वाला धधकी वह साम्राज्य को भस्मासात् करके ही शान्त हुई।

बीडी, सिगरेट, शराब पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, इनसे दूर रहें।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ, रोहतक त्रैवार्षिक चुनाव २००१ के विषय में दायर दो याचिकाओं के सम्बन्ध में दिनांक २२ सितम्बर, २४ सितम्बर तथा २५ सितम्बर २००१ को सिविल जज रोहतक द्वारा दिए गए महत्त्वपूर्ण निर्णय

In the Court of Miss, Madhu Khanna HCS, Civil Judge (Jr Divn) Rohtak
Civil Suit No 407 of 2001
Date of Instt - 7-9-2001
Date of Destition - 25-9-2001
Copy of Order :- 22-9-2001
Next & due of Hearing 25-9-2001
Dipender Kumar Shastri son of Sh Tara Chand resident of Village Bajana Kalan, District Sonepat

Plaintiff

Vs

1. Pardhan, Arya Partinidhi Sabha Haryana, Pt, Jagdev Sidhanti Bhawan, Dyanand Math, Rohtak
2 Arya Partinidhi Sabha Haryana through its Secretary professor Satbir Shastri Dalawas, Pt, Jagdev Sidhanti Bhawan, Dayanand Math, Rohtak.

defendants

Suit for declaration with consequential relief of manadatory injunction

★ ★ ★

Present .- Sh R S Hooda, Adv for the plaintiff
Sh C.S Dalal, Adv for the defendant

Argument heard on the application under order 39 rules 1 and 2 CPS To come upon 25-9-2001 for order

Till then defendants are restrained from declaring the result of the elections to be held tommorw i e 23-9-2001 It is further clarified that he validity of the said election will be subject to the order of this court

Sd/-
CJ(JD) Rohtak, 22 9 2001

In the Court of Miss, Madhu Khanna HCS, Civil Judge (Jr Divn) Rohtak.
Civil Suit No. 342 of 2001
Date of Instt - 21-7-2001
Copy of Order - 24-9-2001
Date of Decision - 24-9-2001
Kedar Singh Arya son of Sh Hari Singh resident of Hanuman Colony, Gohana Road, Rohtak

Plaintiff

Vs

1 Pardhan, Arya Partinidhi Sabha Haryana, Pt, Jagdev Sidhanti Bhawan, Dyanand Math, Rohtak.
2 Arya Partinidhi Sabha Haryana through its Secretary professor Satbir Shastri Dalawas, Pt Jagdev Sidhanti Bhawan, Dayanand Math, Rohtak

defendants

Suit for manadatory injunction.

★ ★ ★

Present - Sh R.S Hooda, counsel for the plaintiff
Sh. C.S. Dalal, counsel for the defendant.

File taken up today on oral request of learned counsel for the plaintiff. In view of separately recorded statement of Mr. R.S. Hooda Advocae appearing on behalf of plaintiff, suit is dismissed as withdrawn. File be consigned to record room

Annourjced :-
Dt 24-9-2001

Sd/-
Civil Judge (Jr Divn.),
Rohtak.

In the Court of Miss, Madhu Khanna HCS, Civil Judge (Jr. Divn) Rohtak.
Civil Suit No. 407 of 2001
Date of Instt .- 7-9-2001
Copy of Order - 25-9-2001
Date of Destition - 25-9-2001
Dipender Kumar Shastri son of Sh Tara Chand resident of Village Bajana Kalan, District Sonepat

Plaintiff

Vs

1 Pardhan, Arya Partinidhi Sabha Haryana, Pt, Jagdev Sidhanti Bhawan, Dyanand Math, Rohtak
2 Arya Partinidhi Sabha Haryana through its Secretary professor Satbir Shastri Dalawas, Pt Jagdev Sidhanti Bhawan. Dayanand Math, Rohtak

defendants

Suit for declaration with consequential relief of manadatory injunction

★ ★ ★

Present - Sh R S Hooda, Adv for the plaintiff
Sh C S Dalal, Adv for the defendant

Order not announced as Learned counsel for the plaintiff has sought permission with draw the case Heard In view of the said statement, recorded separetely the suit of the plaintiff is dissmissed as with drawn File be consigned to the record room The staygranted earlier stands vocated

Annourjced -
Dt 25-9-2001

Sd/-
Civil Judge (Jr Divn).
Rohtak

।। ओ३म्।। दूरभाष ४०७२२

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्–सारे संसार को आर्य बनाओ

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

(सन् १८६० के एक्ट २१ के अनुसार पंजीकृत)
प० जगदेवसिह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक (हरयाणा)

पत्र सख्या १४६८ दिनाक २-१०-२००१

प्रेषक –
प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, मन्त्री,
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक।

सेवा में
श्रीमान् उपायुक्त महोदय,
रोहतक।

विषय : आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्य में पुलिस हस्तक्षेप रोकने बारे

मान्यवर !

सुश्री मधु खन्ना सिविल ज्ज (जूनियर डिविजन) रोहतक के आदेश से दिनाक २३-९-२००१ को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के त्रैवार्षिक चुनाव प्रशासन की देखरेख में शान्तिपूर्वक सम्पन्न हो चुके हैं। कोर्ट द्वारा स्टे हटाने के बाद ता० २५-९-२००१ को चुनाव परिणाम भी घोषित हो चुके हैं।

सभा के प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी ने पत्र सख्या ३०६ ता० २८-९-२००१ के द्वारा पूर्व ही आपका धन्यवाद ज्ञापन भी कर दिया है।

विरोधी पक्ष ने कोर्ट में स्टे के लिए दो दावे भी डाले थे, किन्तु अपनी हार होती देख दोनों कोर्ट केस वापिस ले लिए। विरोधी पक्ष अब पुलिस के माध्यम से तथाकथित नई दिल्ली की न्याय सभा के अदेश से कोर्ट के फैसलो की अनदेखी करके सभा कार्यालय पर नाजायज कब्जा करना चाहता है। अभी दिनाक १-१०-२००१ को ऐसा प्रयत्न हुआ है।

आपसे प्रार्थना है कि कोर्ट से वैधानिक ढग से चुनी गई कार्यसमिति के कार्य मे पुलिस के माध्यम से हस्तक्षेप रोका जावे।

किस को कोई आपत्ति है तो कोर्ट के द्वारा न्यायसंगत ढंग से आगे की कार्यवाही की जानी चाहिए। अन्यथा स्थिति में वाद-विवाद अधिक बढ सकता है।

सधन्यवाद

भवदीय
प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास
सभामन्त्री

संलग्न : कोर्ट के ता० २२, २३ एव २५ सितम्बर के फैसलों की फोटो प्रति

।।ओ३म्।। दूरभाष . ४०७२२

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्–सारे संसार को आर्य बनाओ

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

(सन् १८६० के एक्ट २१ के अनुसार पंजीकृत)

प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक (हरयाणा)

पत्र सख्या १४६९ दिनाक २-१०-२००१

प्रेषक –

प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास,

मन्त्री,

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक।

सेवा मे

श्रीमान् वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक महोदय,

रोहतक।

विषय आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्य में पुलिस हस्तक्षेप रोकने बारे

मान्यवर !

सुश्री मधु खन्ना सिविल जज (जूनियर डिविजन) रोहतक के आदेश से दिनाक २३-९-२००१ को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के त्रैवार्षिक चुनाव प्रशासन की देखरेख मे शान्तिपूर्वक सम्पन्न हो चुके हैं। कोर्ट द्वारा स्टे हटाने के बाद ता० २५-९-२००१ को चुनाव परिणाम भी घोषित हो चुके हैं। सभा के प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी ने पत्र सख्या ३०७ ता० २८-९-२००१ के द्वारा पूर्व ही आपका धन्यवाद ज्ञापन भी कर दिया है।

विरोधी पक्ष ने कोर्ट मे स्टे के लिए दो दावे भी डाले थे, किन्तु अपनी हार होती देख दोनो कोर्ट केस वापिस ले लिए। विरोधी पक्ष अब पुलिस के माध्यम से तथाकथित नई दिल्ली की न्यायसभा के आदेश से कोर्ट के फैसलो की अनदेखी करके सभा कार्यालय पर नाजायज कब्जा करना चाहता है। अभी दिनाक १-१०-२००१ को ऐसा प्रयत्न हुआ है।

आपसे प्रार्थना है कि कोर्ट से वैधानिक ढग से चुनी गई कार्यसमिति के कार्य मे पुलिस के माध्यम से हस्तक्षेप रोका जावे। किस को कोई आपत्ति है तो कोर्ट के द्वारा न्यायसंगत ढग से आगे की कार्यवाही की जानी चाहिए। अन्यथा स्थिति मे वाद-विवाद अधिक बढ सकता है।

सधन्यवाद।

भवदीय

सलग्न कोर्ट के ता० २२, २४ एव २५ सितम्बर के फैसलो की फोटो प्रति

प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास
सभामन्त्री

आर्यसमाज एन.एच. ४ फरीदाबाद का चुनाव

प्रधान–श्री ओमप्रकाश गोयल, वरिष्ठ उपप्रधान, श्री कुलभूषण सखूजा, उपप्रधान–श्री बलवानसिंह एव योगेन्द्र कुमार, मत्री–श्री कर्मचन्द शास्त्री, उपमन्त्री–श्री ओमसिंह तोमर व के सी पालीवाल, कोषाध्यक्ष–श्री ओमप्रकाश भाटिया, प्रचारमत्री–श्री अर्जुनदेव गुलाटी।

महिला आर्यसमाज.एन.एच. ४ फरीदाबाद का गठन

प्रधान–श्रीमती स्वदेश सत्यार्थी, उपप्रधान–श्रीमती स्वर्ण सखूजा, मत्री–श्रीमती सन्तोष चौधरी, उपमत्री–श्रीमती नर्वदा शर्मा।

–कर्मचन्द शास्त्री, मंत्री

सम्मान समारोह सम्पन्न

आर्यसमाज मन्दिर साधी मे गाधी व लालबहादुर जयन्ती २ अक्तूबर पूर्णिमा को मन्दिर मे विशाल यज्ञ किया गया और यज्ञ के बाद दानी महानुभावों का जिन्होने ११००-११००० या इससे अधिक धन आर्यसमाज साधी को दिया था उनको स्वामी योगानन्द के द्वारा १ साल, १ गीता स्वाध्याय करने हेतु व १ मानपत्र देकर ७० दानी महानुभावों में दान श्रद्धा बढाने हेतु सम्मानित किया और बाद मे बहिन सुमित्रा वर्मा रोहतक के द्वारा आर्यजनो का मधुर भजनो द्वारा मनोरजन किया गया। फिर शान्ति पाठ के बाद सभी को भोजन करवाके विदाई दी। **–ओमप्रकाश आर्य**

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

१	आर्यसमाज बसई, जिला गुडगाव	१९ से २१ अक्तूबर
२	आर्यसमाज नसोपुर जिला अलवर (राज०)	३०, ३१ अक्तूबर
३	आर्यसमाज सेक्टर-१४, सोनीपत	५ से ११ नवम्बर

–रामधारी शास्त्री, वेदप्रचाराधिष्ठाता

।।ओ३म्।। दूरभाष . ४०७२२

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्–सारे संसार को आर्य बनाओ

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

(सन् १८६० के एक्ट २१ के अनुसार पंजीकृत)

प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक (हरयाणा)

पत्र सख्या १४७० दिनांक २-१०-२००१

सेवा में,

श्रीमान् वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक,

रोहतक।

विषय : दिनांक १-१०-२००१ को सायं लगभग २-३० बजे पुलिस द्वारा सभा कार्यालय के घेराव बारे रिपोर्ट दर्ज करने हेतु।

महोदय,

नमस्ते।

निवेदन है कि दिनाक १ १० २००१ को साय लगभग २ ३० बजे श्री बलवान सिह सुहाग एडवोकेट ने श्री प्रकाशवीर विद्यालकार, श्री केदारसिह आर्य व अन्य दो तीन व्यक्तियो के साथ तथा पुलिस बल के लगभग ५० कर्मचारियों के साथ महम के डी एस पी श्री राजेन्द्र सिह के नेतृत्व मे सभा कार्यालय को बिना किसी सूचना के घेर लिया।

सभा प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी कुछ देर पहले ही अपने निवास दयानन्दमठ में भोजन करने गये थे, स्वामी जी का निवास कार्यालय के बहुत समीप है। सभा कर्मचारियों ने श्री बलवान सिह सुहाग एव पुलिस के अधिकारियो से निवेदन किया कि सभा प्रधान जी को यहा बुला लिया जावे, किन्तु उन्होंने इस बात पर ध्यान नहीं दिया और सभा कार्यालय के अधीक्षक को एक लिखित आदेश देकर कहने लगे कि इस पर हस्ताक्षर कर दो। सभा अधीक्षक ने उस आदेश पर हस्ताक्षर करने से इनकार करते हुए कहा कि सभा प्रधान जी के उपस्थित रहते उन्हे ही यह आदेश देना उचित होगा। किन्तु उन्होने शेरसिह अधीक्षक की बात पर कोई ध्यान न देते हुए उलटा उसे धमकिया देनी आरम्भ कर दी। किन्तु कार्यालय अधीक्षक ने उनके आदेश को मानने से इनकार करते हुए पुन सभा प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी से सम्पर्क करने को कहा। उसके बाद उन्होने सभा की कार्यवाही का रजिस्टर अधीक्षक से मांगा, इस पर अधीक्षक ने कहा कि कार्यवाही रजिस्टर तो सभामन्त्री के पास है। इसी दौरान श्री वेदव्रत शास्त्री पुस्तकाध्यक्ष सभा कार्यालय मे जाने लगे तो मेन गेट पर पुलिस वालों ने उन्हें रोक दिया तथा दफ्तर मे नहीं जाने दिया। उन्होंने इस बात की सूचना सभा प्रधान जी को आ करके दी। इस घटना के बारे मे उसी दिन स्वामी इन्द्रवेश, चौधरी सूबेसिह व चौधरी धर्मचन्द आदि ने आपसे मिल करके पूरी जानकारी आपको दे दी थी। अन्त मे चलते हुए श्री बलवान सिह सुहाग ने डाक डिस्पेच रजिस्टर में अपने हाथ से कुछ अंकित किया किन्तु उस पर अपने हस्ताक्षर नहीं किए।

उन सभी के ३ ३० बजे सभा कार्यालय से चले जाने के बाद स्वामी इन्द्रवेश, चौधरी सूबेसिह, चौधरी धर्मचन्द तथा श्री वेदव्रत शास्त्री सभा के अधिकारी कार्यालय मे गए तथा वहा से विस्तृत जानकारी लेकर उसी समय आप से मिलकर आपको सारे घटना चक्र से अवगत कराते हुए बतलाया कि इस प्रकार बिना कारण बतलाये तथा बिना किसी आदेश के पुलिस द्वारा सभा कार्यालय के अचानक घेराव से सभा की प्रतिष्ठा को गहरा धक्का लगा है एव भय तथा आतक का वातावरण पैदा हुआ है। दिनाक २३-९-२००१ से २५-९-२००१ तक कोर्ट के आदेश से जिला प्रशासन की देखरेख मे सभा का विधिवत् चुनाव सम्पन्न हुआ था। चुनाव के तत्काल बाद इस प्रकार के छापो का कोई औचित्य समझ मे नहीं आता। अत आपसे निवेदन है कि इस नाजायज कब्जे की घटना के बारे मे पुलिस मे एफ आई आर दर्ज कराके उचित कार्यवाही करने की कृपा करे।

सधन्यवाद।

भवदीय

प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास
सभामन्त्री

योग और आज का मानव
(योग कक्षा प्रारम्भ)

आर्यसमाज देवास (मध्य प्रदेश) में पूज्य स्वामी रामानन्द जी सरस्वती के संरक्षण में प्रतिदिन योग, आसन, प्राणायाम, जूडो-कराटे, भारोत्तोलन एवं लाठीचालन का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। स्वामी जी के कथनानुसार वर्तमान समय में युवाओं को सही मार्गदर्शन की चारित्रिक उत्थान हेतु परमावश्यकता है। इसी तथ्य को दृष्टिगत रखे हुए शारीरिक, आत्मिक एव सामाजिक उन्नति के साथ राष्ट्रीय भावना की अभिवृद्धि के लिए यह आवश्यक है कि युवावर्ग ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए आध्यात्मिक साधना करें ताकि प्राच्य वैदिक संस्कृति के माध्यम से मानव धर्म विकसित हो सके। जब मानव का दृष्टिकोण प्रेमपूर्वक धर्माचरण के माध्यम से बदलेगा तभी महर्षि दयानन्द के सपने साकार हो सकेंगे। समय-समय पर स्वामी जी के बौद्धिक प्रवचनों का लाभ भी प्राप्त होता रहेगा। समय प्रात ६ बजे।

मंत्री–आर्यसमाज मन्दिर, दयानन्द चौक, देवास (म०प्र०)

आर्य प्रतिनिधिसभा हरयाणा की नवगठित अन्तरंग सभा की प्रथम बैठक में लिए गए महत्त्वपूर्ण निर्णय

दिनांक 5 अक्तूबर 2001 को दयानन्दमठ, रोहतक में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की नवगठित अन्तरंग सभा की प्रथम बैठक, स्वामी ओमानन्द सरस्वती के सरक्षकत्व मे एव नवनिर्वाचित सभा प्रधान स्वामी इन्द्रवेश की अध्यक्षता में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई।

बैठक में प्रो० शेरसिंह, स्वामी अग्निवेश, स्वामी सुमेधानन्द, माता प्रभातशोभा आदि तथा अन्य 250 के लगभग हरयाणा की आर्यसमाजों के प्रमुख कार्यकर्त्ता उपस्थित थे।

अन्तरग सदस्यों एव विशेष आमन्त्रित सदस्यों की सयुक्त बैठक मे ईश प्रार्थना के बाद दिवगत आर्य महानुभावों के प्रति शोक प्रस्ताव पारित करने के बाद एव गत अन्तरंग सभा दिनाक 29-8-2001 की कार्यवाही सम्पुष्टि के बाद निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण निर्णय लिये गए–

1 सर्वप्रथम सभामत्री ने 23 सितम्बर 2001 के चुनाव में नव निर्वाचित सभा अधिकारियों एव अन्तरग सदस्यों के बारे मे सदन को सूचित किया।

तत्पश्चात् अगस्त 1998 में निर्वाचित स्वामी ओमानन्द सरस्वती की अध्यक्षता वाली अन्तरग सभा के प्रति धन्यवाद ज्ञापन किया गया एवं उनके तीन वर्ष के कार्यों की सराहना की गई। साथ ही आशा प्रकट की गई कि पूज्य स्वामी ओमानन्द जी का आशीर्वाद पूर्व की भांति सभा को प्राप्त रहेगा।

2 सभा प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी द्वारा चुनाव मे सफलता के लिए सभी प्रतिनिधि महानुभावों को धन्यवाद के पश्चात् नवगठित अन्तरंग सभा ने सभा के विधान के अनुसार निम्नलिखित दस प्रतिष्ठित सदस्यों का सर्वसम्मति से चयन किया–

(1) प्रि० लाभसिह, पानीपत (2) श्री जगदीशप्रसाद सर्राफ, भिवानी, (3) डॉ० योगानन्द शास्त्री भदानी (झज्जर), (4) श्री महेन्द्रसिह एडवोकेट, पानीपत, (5) श्री महेन्द्रसिह डी आर ओ, रोहतक, (6) प्रो० श्योताजसिह, रेवाडी, (7) श्री रामचन्द शास्त्री, रोहणा सोनीपत, (8) डॉ० सत्यवीर विद्यालकार, चण्डीगढ, (9) श्री बलवानसिह टिटौली, रोहतक (10) श्री मामनसिह सैनी, रोहतक।

इससे पूर्व सभा प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी ने निम्नलिखित 6 महानुभावो को अन्तरग सभा के लिए अपने कोटे से मनोनीत कर दिया था–

(1) स्वामी ओमानन्द सरस्वती–सरक्षक, (2) प्रो० शेरसिह–सरक्षक, (3) स्वामी अग्निवेश, नई दिल्ली, (4) माता प्रभातशोभा, नई दिल्ली, (5) डॉ० रणजीतसिह, फरीदाबाद, (6) चौ० धर्मचन्द, रोहतक।

3. अन्तरग सभा ने सर्वसम्मति से आर्य विद्या परिषद् के प्रस्तोता पद पर प्रि० लाभसिह पानीपत को तथा वेदप्रचाराधिष्ठाता रामधारी शास्त्री जी को नियुक्त करने का निर्णय लिया।

4 सभा विरोधी गतिविधियो, घोर अनुशासनहीनता एव सभा को मुकदमेबाजी मे सलिप्त कर सभाहितो को अपूरणीय क्षति पहुचाने के फलस्वरूप निम्नलिखित चार प्रतिनिधियो के नाम प्रतिनिधि (मतदाता) सूची से काटने एव पूर्ण सामाजिक बहिष्कार के साथ सदस्यता वाली आर्यसमाजो को इन्हे आर्यसमाज की प्राथमिक सदस्यता से निष्कासन हेतु निर्देश देने का सर्वसम्मत निर्णय लिया गया।

निष्कासन आदेश का पालन न करनेवाले आर्यसमाज के विरुद्ध उचित कार्यवाही करने का निर्णय सुरक्षित रखा गया।

काटे गए नामवाले प्रतिनिधियो की सूची–

(1) श्री केदारसिह आर्य, आर्यसमाज जूआ (सोनीपत)

(2) आचार्य यशपाल, आर्यसमाज गुरुकुल मटिण्डू (सोनीपत)

(3) डॉ० प्रकाशवीर विद्यालकार, आर्यसमाज माण्डोठी (झज्जर)

(4) श्री भगत मगतुराम, आर्यसमाज जाटौली (गुडगाव)

5 आर्यसमाज हरिसिह कालोनी रोहतक के अधिकारियो की सभाविरोधी गतिविधियों के कारण तत्काल प्रभाव से आर्यसमाज का छह वर्ष के लिए सभा के साथ सम्बन्ध समाप्त करने का निर्णय लिया गया।

6 पुलिस के सहयोग से सभा कार्यालय पर तालाबन्दी करने वाले लोगो की घोर निन्दा का प्रस्ताव पास करते हुए सभी वक्ताओ ने कहा कि आर्यसमाज ऐसे समाज घातक तत्त्वो को कभी क्षमा नहीं करेगा। चौ० बलवानसिह सुहाग एडवोकेट जिला झज्जर के इनेलो अध्यक्ष से अपील की गई कि वे स्वय को आर्यसमाज के इस आपसी विवाद से दूर रखें तथा कोर्ट के फैसले का सम्मान करे।

7 स्वामी ओमानन्द सरस्वती के नेतृत्व मे पूर्ण आस्था प्रकट करते हुए 21 अक्तूबर, 2001 को प्रात 11 बजे भावी रणनीति तैयार करने के लिए सम्पूर्ण हरयाणा के आर्यसमाज के कार्यकर्ताओ का एक महत्त्वपूर्ण सम्मेलन गुरुकुल झज्जर मे आयोजित करने का निश्चय किया।

सभी वक्ताओ ने सकट की इस घडी मे नेतृत्व के प्रति आस्था प्रकट करते हुए एकता का परिचय देने का आह्वान किया।

स्वामी ओमानन्द जी के आशीर्वाद तथा सभा प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी के धन्यवाद के साथ सभा विसर्जित हुई।

प्रात काल नौ बजे से ही पुलिस छावनी बने दयानन्दमठ परिसर मे जिला प्रशासन को समझाकर बैठक आयोजित कराने के लिए सभा के वरिष्ठ उपप्रधान चौ० सूबेसिह एव चौ० धर्मचन्द अन्तरग सदस्य प्रमुख भूमिका निभाने के लिए बधाई के पात्र हैं।

प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास
सभामत्री

विशेष सूचना

सभा कार्यालय पं० जगदेवसिह सिद्धान्ती भवन, रोहतक पर ताले लगाकर प्रशासन ने पुलिस तैनात कर रखी है। अत वर्तमान में **सभा कार्यालय दयानन्दमठ के भवन** मे चल रहा है। अत. सभी पत्रव्यवहार आदि दयानन्दमठ के पते पर करें। मठ स्थित कार्यालय का फोन न० ७७८०१ है।

–सभामंत्री

ओ३म्

भगवती कन्या गुरुकुल जसात का वार्षिकोत्सव २-३ नवम्बर २००१ को होगा। आप सभी सपरिवार आमन्त्रित हैं। –आचार्या

आर्य बनना और आर्य बने रहना

जब हम 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' की बात सोचते और कहते हैं, तब उसमें यह अर्थ निहित रहता है कि ससार मे सब लोग आर्य नहीं हैं और जो लोग आर्य नहीं हैं, हमे उन्हे आर्य बनाना है। आर्य का आशय भले, सदाशयी, श्रेष्ठ व्यक्ति और अनार्य का आशय दुष्ट, दुराचारी, व्यक्ति से है।

कितने लोग आर्य हैं ?

यदि हम अपने इस सकल्प को पूरा करने के लिए गम्भीर हैं, तो हमे यह सोचना होगा कि हमारा कार्य कितना बडा है ? अर्थात् ससार मे अधिकाश व्यक्ति आर्य हैं और कुछ थोडे से गिने चुने लोग अनार्य हैं ? या अधिकाश लोग अनार्य हैं और आर्य तो केवल आटे मे नमक जितने ही हैं ?

यदि इनमे से पहली बात सत्य हो, अर्थात् सौ मे से केवल पाच व्यक्ति अनार्य हों, हमारा कार्य बहुत आसान हो जाएगा। ९५ आर्य ५ अनार्यों को आर्य बना पायेगे। परन्तु यदि स्थिति दूसरी हो, अर्थात् आर्य केवल ५ प्रतिशत हो, तो ९५ आनार्यों को आर्य बनाने का कार्य बहुत बडा और कठिन होगा।

पाच प्रतिशत की बात केवल विचार के लिए कही गई है। जितने प्रतिशत आर्य अधिक होगे, सबको आर्य बनाना उतना ही सरल होगा।

आर्य की कसौटी

आर्य की कसौटी क्या होगी ? सत्यवक्ता हो, बडे से बडे प्रलोभन मे पड कर असत्य न बोले। परोपकारी हो। दूसरो को सुखी करने के लिए कष्ट सहने को उद्यत रहे। न्याय के लिए लडने को तैयार हो। किसी से दबे नहीं। इन्द्रियों का दास न हो। पेटू, लोभी, व्यसनी न हो।

कुछ लोग जोडना चाहेंगे - ईश्वरभक्त हो, किन्तु मूर्ति पूजक न हो। सध्या अग्निहोत्र करता हो, पचमहायज्ञ करता हो। धनी हो, समाज को दान देता हो। अन्धविश्वासी न हो। यह मानता हो कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है, जो सृष्टि के आदि में चार ऋषियो के माध्यम से मनुष्य जाति को दिया गया था, आदि।

क्या अपूर्ण आर्य भी होता है?

प्रश्न यह उठेगा कि कोई व्यक्ति आधा अधूरा आर्य भी हो सकता है या नहीं? या हर व्यक्ति पूरा आर्य या पूरा अनार्य ही होगा? एक व्यक्ति मे आर्यत्व के अन्य गुण तो हैं, परन्तु उसे बीडी पीने का व्यसन है, उसे वह छोड नहीं पाता। उसकी स्थिति क्या होगी ?

छद्म आर्य

दूसरी ओर एक व्यक्ति नित्य प्रात साय अग्निहोत्र और सध्या करता है, कभी इसमें चूकता नहीं है, पर साथ ही आर्यसमाज के विरुद्ध न्यायालयों मे दावे करता है, उसकी स्थिति क्या होगी? दान में मिली आर्यसमाज की भूमियों को बेचने और हडपने वाले की स्थिति क्या होगी? उसे आर्य माना जायेगा या अनार्य, इसका निर्णय कौन करेगा?

दो गुट

यदि आर्य लोग ही दो गुटो में विभक्त हो जायें, तो कौन आर्य होगा, कौन अनार्य? उदाहरण के लिए, मांसाहार के प्रश्न पर यदि दो गुट बनते हैं, तो क्या निर्णय होगा? बहुकुडी यज्ञो को पाखण्ड मानने को लेकर भी दो गुट बन सकते हैं।

समस्या तो यह है कि हर आर्य मे अनार्य और अनार्य में आर्य घुसा रहता है। कह पाना कठिन हो जाता है कि उसे आर्य कहे या अनार्य। प्राय सुनने को मिलता है कि 'आदमी तो बहुत अच्छा है, लेकिन '। कोई न कोई दोष बता दिया जाता है। इस प्रकार बुरे आदमी की भी कोई अच्छाई ऐसी निकल आती है, जो विरोधियो को भी स्वीकार करनी पड जाती है।

आर्यत्व का प्रतिशत

इससे यह प्रतीत होता है कि जैसे समाज मे अच्छे और बुरे लोगो का कुछ प्रतिशत होता है, वैसे ही प्रत्येक व्यक्ति में आर्यत्व और अनार्यत्व का कुछ प्रतिशत रहता है।

यह प्रतिशत भी सदा एकसा नहीं बना रहता। घटता बढता रहता है। वही व्यक्ति कभी बहुत उदार और दयालु बन जाता है और कभी बडा कजूस और क्रूर बन जाता है। कुछ लोग छिपे रुस्तम होते हैं, अर्थात् वे सहसा कोई ऐसा प्रशसनीय कार्य कर डालते हैं, जिसकी किसी ने उनसे आशा नहीं की होती। इसलिए आर्य और अनार्य का निर्णय कर पाना बहुत कठिन कार्य है।

अनार्य को आर्य बनाना कठिन

अनार्य को आर्य बनाना बहुत कठिन काम है। 'स्वभावो दुरतिक्रम:' (स्वभाव को बदल पाना मुश्किल काम है)। फिर, यदि सदा टेढी रहने वाली कुत्ते की पूछ को किसी तरह सीधा कर भी लिया जाये, तो इस बात की क्या गारटी है कि वह भविष्य में सीधी ही रहेगी ? अनार्य, आर्य बनने के बाद आर्य बना रहे, फिर अनार्य आचरण न करने लगे, यह कार्य, 'कृण्वन्तो विश्मार्यम्' से भी बडा है।

फूलन देवी

उदाहरण के लिए फूलन देवी को लें। वह पूर्वी उत्तर प्रदेश के एक छोटे से गांव में एक पिछडी जाति माने जानेवाले मल्लाह परिवार में पैदा हुई। बाबू गुजर ने उसका अपहरण कर लिया और उसकी इच्छा के विरुद्ध उससे अनाचार किया। इस पर उसके ही साथी विक्रम मल्लाह ने बाबू गुजर की हत्या कर दी और फूलन देवी उसके साथ रहने लगी। बाबू गूजर और विक्रम मल्लाह दोनों डाकू थे। फूलनदेवी भी डाकुओं के गिरोह में सम्मिलित हो गई। बहमई गाव में फूलन देवी के गिरोह ने एक डाका डाला। जिसमें ऊची जाति कहे जाने वाले २२ ठाकुरो की हत्या कर दी गई। फूलन देवी का पूरे इलाके मे आतक छा गया। फूलन देवी ने यह प्रचारित किया कि उसने बहमई गाव मे हत्याये अपने साथ किये गये बलात्कार का बदला लेने के लिए की हैं। एक ही झटके मे वह डकैत से क्रांतिवीर बन गई। अपहरण और बलात्कार की शिकार हुई अनगिनत युवतिया बेबस और असहाय, अपमानित और लांछित जीवन बिताती हैं। फूलन देवी तेजस्विनी नायिका के रूप मे आगे आई, जिसकी लाछना ठाकुरो के खून से धुल गई।

विनोबा भावे और जयप्रकाश नारायण के प्रयत्नों से जिन अनेक डाकुओ ने आत्म-समर्पण किया था, उनमे फूलन देवी भी थी। आत्मसमर्पण की शर्त यह थी कि उन्हें फासी नहीं दी जायेगी।

रूपान्तरण

११ साल ग्वालियर जेल मे बिताने के बाद श्री मुलायमसिह यादव की कृपा से रिहा हुई। वह उनकी धर्म पुत्री बन गई। पत्रकारो के लिए बढिया मसाला तैयार था फूलनदेवी की सत्यकथा काल्पनिक कहानियों से भी अधिक रोचक थी। फूलनदेवी की जीवनी 'बैंडिट क्वीन' (डाकुओं की रानी) नाम से लिखी गई और खूब बिकी। इस पुस्तक पर फिल्म भी बनी। इन दोनों से फूलनदेवी को यश और धन दोनों की प्राप्ति हुई। उसने दलित तथा शोषित वर्गों का मसीहा बनने का बाना पहन लिया। वह मिर्जापुर से लोकसभा के लिए सासद चुनी गई। उसके बाद एक बार चुनाव हारी भी, किन्तु अगली बार फिर चुनी गई। अपहृता, बलात्कार की शिकार, हत्याओं की दोषी, ११ साल अपराधी के रूप मे जल में रही फूलनदेवी जनता की प्रतिनिधि के रूप में सासद बनी। धन और यश के अलावा उसे प्रभुत्व भी प्राप्त हो गया। उसकी सुरक्षा के लिए सुरक्षा गार्ड रहते थे। अपने काम निकलवाने की इच्छा से बीसियो लोग उसके आगे पीछे घूमते थे। कहा जा सकता है कि वह अनार्य दस्यु से परोपकारी आर्य बन गई। यह रूपान्तरण अद्‌भुत इतिहास बन जाता। जैसे दन्तकथा मे डाकू वाल्मीकि क्रौंच वध को देखकर अचानक सहृदय कवि बन गये, वैसे ही फूलनदेवी भी शायद दूसरी झासी की रानी लक्ष्मीबाई, स्वातंत्र्य सेनानी बन जाती।

हत्या

परन्तु २५ जुलाई २००१ को नई दिल्ली में, दोपहर डेढ बजे (दिन दहाड़े) उसके अपने सरकारी बगले के फाटक पर गोली मारकर उसकी हत्या कर दी गई। हत्या करने वाले तीन थे। वे उसके सुपरिचित, विश्वस्त लोग थे। उन्होंने उस पर नौ गोलियां चलाई। जिससे फूलनदेवी की तत्काल हत्या हो गई।

मुखौटा उतरा

पकडे गये हत्या के अभियुक्तों में से एक ने कहा कि फूलनदेवी ने उससे दस लाख रुपये यह कह कर लिये कि वह उसे एक पैट्रोल पम्प दिला देगी। पैट्रोल पम्प कमाई का अच्छा साधन समझा जाता है। परन्तु फूलनदेवी ने न पैट्रोल पम्प दिलाया, न रुपये लौटाये।

अधिक सभव यह है कि इस प्रकार ली गई यह एक ही राशि नहीं होगी। न जाने किस किस से कितनी राशिया ली गई होंगी। फूलनदेवी ने मजिस्ट्रेट के यहा रिवाल्वर का लाइसेंस लेने के लिए आवेदन किया था। उसका कहना था कि उसकी जान को खतरा है, इसलिए उसे रिवाल्वर की जरूरत है। रिवाल्वर का लाईसेस इसलिए नहीं दिया गया, क्योंकि वह डाकू रह चुकी थी और कई हत्याओ में अभियुक्त रही थी।

फूलनदेवी का दलितो और पीडितों का मसीहा बनना केवल मुखौटा था। हर उपकार के लिए वह प्रतिफल लेती थी। ऊपर से आर्य बन गई दीखने पर भी वह भीतर से दस्यु ही थी। इसीलिए वह भयभीत थी और हत्यारों की गोली का शिकार हुई।

कितने फूलनदेव

फूलनदेवी का उदाहरण हमने केवल इस प्रसग में दिया है कि अनेक फूलनदेव आर्यत्व का मुखौटा पहने आर्य नेता बने हुए हैं। जैसे राजनीतिक और सरकारी क्षेत्र में ऐसा आदमी ढूढ पाना कठिन हो गया है, जो किसी घोटाले, भ्रष्टाचार में लिप्त न हो, वैसे ही आर्यजगत् में भी फूलनदेवों की बाढ आ गई है।

अनार्यत्व एक क्षण में आता है

आर्यत्व लम्बी साधना से प्राप्त होता है, परन्तु अनार्यत्व क्षणिक आवेश मे व्यक्ति पर हावी हो जाता है। सत्य के व्रत की साधना जीवन भर करते रहो। जैसे कि युधिष्ठिर ने की थी, और एक बार कठिन अवसर पर झूठ बोल दो, तो सब किया धरा व्यर्थ हो जाता है। वर्षों का ब्रह्मचर्य दुर्बलता के एक क्षण में खंडित हो जाता है। क्रोध के आवेश में एक पल में व्यक्ति हत्या कर बैठता है, चोरी कर लेता है।

इसलिए समस्या लोगों को आर्य बनाने की तो है ही, जो आर्य हैं, उनको आर्य बनाये रखने की भी है। अनार्य व्यक्ति स्वयं को आर्य के रूप में प्रचारित न कर सके, इसका उपाय ढूंढना आवश्यक है। केवल हजार या दस हजार या एक लाख रुपये देकर कोई 'अघशंस' (पाप की कमाई करने वाला) हमारा कर्ताधर्ता न बन जाये। धन आर्यत्व का निर्णायक न बन जाये, इसका कोई उपाय खोजना आवश्यक है।

(आर्यजगत् से साभार)

आर्य-संसार

गुरुकुल गौतमनगर के वार्षिकोत्सव पर चारों वेदों के ब्रह्मा स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती

आर्यजनो को यह जानकर हर्ष होकर कि प्रतिवर्ष की भाति इस वर्ष भी श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय (गुरुकुल गौतमनगर) नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव सोमवार २६ नम्बर से रविवार १६ दिसम्बर २००१ तक समारोहपूर्वक आयोजित किया जारहा है। इस अवसर पर चतुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया जायेगा। इन चारो वेदो के यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती होगे। इसके अतिरित अनेको विद्वानो के सारगर्भित प्रवचन होंगे। समस्त आर्यजनों से प्रार्थना है कि इन तिथियो को अकित कर लेवें और अधिक से अधिक सख्या मे उत्सव मे पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढाने की कृपा करे। कार्यक्रम मे भाग लेने के लिए आये दिल्ली से बाहर के आर्यजनो के आवास एव भोजन की सुव्यवस्था गुरुकुल की ओर से की जायेगी।

—आचार्य हरिदेव, श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय, गौतमनगर, नई दिल्ली

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया का वार्षिकोत्सव

आर्यजनो को यह जानकर हर्ष होगा कि आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया, जिला अलवर, राजस्थान जो कि दिल्ली से जयपुर जाते हुए लगभग १२० कि०मी० पर बहुत ही रमणीय स्थान पर स्थित है, का वार्षिकोत्सव प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी २६, २७, २८ अक्तूबर, २००१ (शुक्रवार, शनिवार, रविवार) को समारोह पूर्वक आयोजित किया जा रहा है। समारोह से एक सप्ताह पूर्व यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया जाएगा।

—रामनाथ सहगल, मन्त्री

भूकम्प पीड़ित असहाय बालक-बालिकाओं के लिये तथा विधवा बहनों के आश्रय स्थल 'जीवन प्रभात' का गांधीधाम में शिलान्यास

कच्छ जिले में आए विनाशक भूकम्प के कारण अनाथ हुए बालको एव विधवा बहनों को योग्य आश्रय प्राप्त हो तथा सस्कारी वातावरण प्राप्त हो सके इस आशय से आर्यसमाज गाधीधाम द्वारा सचालित असहाय बालको एव विधवाओ के आश्रय स्थल 'जीवन प्रभात' का शिलान्यास केंद्रीय जहाजरानी मत्री श्री वेदप्रकाश गोयल एव केन्द्रीय कानून मन्त्री श्री अरुण जेटली के शुभ हाथो से किया गया।

समाजसेवा के कार्य मे सर्वदा अग्रसर रहने वाली गाधीधाम आर्यसमाज ने कच्छ जिले मे आए भूकम्प के बाद सामाजिक सेवा के विविध कार्य किये। मृतदेहो को बाहर निकालना, जीवित बचे लोगो को निकालना, घायलो की सहायता करना, सार्वजनिक रसोई का सचालन, तबू, कबल, दवाई, अनाज व कपडो का वितरण करने जैसी विविध प्रवृत्तिया की। समाज सेवा का कार्य न मात्र नगर विस्तार मे अपितु गाव-गाव मे जाकर भी किया गया तथा गावो मे माता-पिता से विहीन हुए बालको तथा विधवा हुई बहनो की दशा देखकर उनके लिये कुछ करने का विचार आर्यसमाज गाधीधाम ने किया। इस चिन्तन को साकार रूप देने के लिये इस भगीरथ कार्य मे काण्डला पोर्ट ट्रस्ट ने दो एकड जमीन देकर अपना अमूल्य योगदान किया है।

१२वां वार्षिक महोत्सव

आपके अपने प्रिय गुरुकुल भैयापुर लाढोत (रोहतक) का बारहवां वार्षिक महोत्सव २०-२१ अक्तूबर, २००१ शनिवार, रविवार, २००१ को हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। कृपया सपरिवार एव इष्ट मित्रों सहित पधारे।

कार्यक्रम

महायज्ञ प्रातः ८-०० से ९-३० बजे तक।
भोजन : ९-३० से १०-३० बजे तक।
व्याख्यान, भजन एवं उपदेश १०-३० से ४-०० बजे तक।
व्यायाम प्रदर्शन ४-०० बजे ५-०० बजे तक।

निवेदक : प्रबन्धक समिति

सत्यार्थप्रकाश निबन्ध प्रतियोगिता २००२

सभी आर्यजनो को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि सत्यार्थप्रकाश को भूमण्डल मे प्रसारित करने के उद्देश्य को लेकर, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर के तत्त्वावधान मे प्रतिवर्ष आयोजित की जाने वाली निबध प्रतियोगिता इस वर्ष भी आयोजित की जा रही है। इस प्रतियोगिता मे भाग लेने वाले प्रतिभागियो की सख्या प्रतिवर्ष बढ रही है। पिछले वर्षो मे कुछ स्वाध्यायशील आर्यजनो का कहना था कि वे तो सूचित नहीं हो पाये, अतएव इस बार सूचना काफी पहले प्रकाशित की जा रही है, कृपया अधिकाधिक संख्या मे भाग ले।

विषय : ईश्वर तथा वेद के विषय में महर्षि दयानन्द द्वारा उद्घाटित सत्य (सत्यार्थप्रकाश सप्तम समुल्लास के आधार पर)
पुरस्कार–प्रथम ३१००/- रुपये, द्वितीय पुरस्कार २१००/- रुपये, तृतीय पुरस्कार १५००/- रुपये एव पाच सान्त्वना पुरस्कार प्रत्येक १००/- रुपये (लेखिका वर्ष में दो विशिष्ट सान्त्वना पुरस्कार)

प्रतियोगिता के नियम–

१ प्रतियोगिता मे किसी भी आयु वर्ग के स्त्री पुरुष भाग ले सकते हैं।

२ निबध फुलस्केप कागज मे लगभग १५ पृष्ठो मे हो। कागज के एक ही तरफ सफाई से टकित या हस्तलिखित हो। निबध आसानी से निर्णायको द्वारा पढा जा सके। इस हेतु टकित हो तो अच्छा है। हस्तलिखित भी स्वीकार्य।

३ निबध की भाषा आर्यभाषा (हिन्दी) व लिपि देवनागरी होगी। अन्य भाषाओ मे उद्धरण दिये जा सकेगे।

४ निबध लेखक/लेखिका अपना नाम, पता आदि अलग से एव कागज पर निबध के साथ भेजेगे। निबध वाले पृष्ठो मे कहीं भी अपना नाम/पहचान चिह्न हस्ताक्षर आदि नहीं होने चाहिए।

५ सत्यार्थप्रकाश न्यास को निबध प्राप्त होने की अतिम तिथि ३१ दिसम्बर २००१ होगी तत्पश्चात् प्राप्त निबध प्रतियोगिता मे शामिल नहीं किये जायेगे।

६ पुरस्कार प्राप्तकर्ताओ को इसकी सूचना दी जावेगी। पुरस्कार वितरण २६ से २८ फरवरी २००२ मे उदयपुर मे आयोजित सत्यार्थप्रकाश समारोह के अवसर पर होगा।

७ पुरस्कार के सबंध मे परीक्षको का निर्णय अन्तिम व मान्य होगा।

८ प्राप्त सभी निबधो के प्रकाशनादि के सबध मे सर्वाधिकार सत्यार्थप्रकाश न्यास उदयपुर को होगा।

९ उपरोक्त नियमो की पूर्ण अनुपालना न होने की स्थिति मे निबध अस्वीकृत किये जा सकेंगे। भवदीय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, गुलाब बाग

राजभाषा हिन्दी का सरकारी स्तर पर व्यवहार

सेवा मे

माननीय अटल बिहारी वाजपेयी,
प्रधानमन्त्री
भारत सरकार,
नई दिल्ली-११०००१

आदरणीय महोदय,

आज हिन्दी दिवस है। भारत के सविधानिक इतिहास का एक स्वर्णिम दिन। इस शुभ दिवस पर हार्दिक बधाई एव शुभकामनाए स्वीकार करे।

१४ सितम्बर १९४९ से आज तक गत ५२ वर्षो मे राजभाषा हिन्दी ने अनेक मजिलें तय की हैं अनेक उतार-चढाव भी देखे हैं। इन सबसे आप भलीभाति परिचित हैं। आप के मन-मस्तिष्क मे हिन्दी के प्रति गहरा अनुराग (नेता प्रतिपक्ष रहते हुए) हमेशा देखने को मिला है। अत प्रधानमन्त्री बनने पर इस मुद्दे पर भारत के करोडो जनो की, विशेषत हिन्दी-प्रेमी राष्ट्रभक्त बुद्धिजीवी वर्ग की आपसे कुछ आशा-अपेक्षाए रही हैं, जिन्हे समय-समय पर विविध माध्यमो से आप तक पहुचाने का प्रयास भी किया गया है। कह नहीं सकते आप तक हमारी आवाज पहुच पाई अथवा नहीं और आप इन पर ध्यान दे पाए या नहीं।

आज इस प्रतिवेदन के माध्यम से एक बार फिर आप महानुभाव का ध्यान निम्नलिखित बिन्दुओ की ओर दिलाना चाहते हैं। ये सब बिन्दु सावैधानिक मान्यता रखते हैं और सरकार से इनके अनुपालन की अपेक्षा रखना, जनता का न केवल कर्त्तव्य है अपितु वैधानिक अधिकार भी है। आपसे नम्र निवेदन है कि इनके अनुपालन के आदेश तुरन्त जारी किये जाए तथा जारी किये गये आदेशो पर की गई कार्यवाही की निगरानी के लिए अपने कार्यालय मे प्रभावशाली व्यवस्था भी कराई जाये।

१ राजभाषा अधिनियम, १९६३ के प्रयोजनो को कार्यान्वित करने के लिए इसकी धारा ८ (१) के अन्तर्गत बनाये गये राजभाषा नियमो, १९७६ विशेषकर नियम सख्या ३, ५ तथा १२ का अनुपालन समस्त सरकारी तन्त्र से सख्ती से कराया जाए। इन नियमो की अवहेलना करके हिन्दी भाषी जनता तथा राज्यो पर अवैधानिक रूप से अग्रेजी लाद दी गई है, इसे समाप्त किया जाए।

२ ससद मे १८ जनवरी, १९६८ को सर्वसम्मति से पारित सकल्प, विशेषत इसके अनुच्छेद ४ को क्रियान्वित कराया जाए। इसका अनुपालन न किए जाने से अनेक भर्ती परीक्षाओ मे अग्रेजी को माध्यम और विषय के रूप मे अनिवार्य रखा गया है। इससे सविधान मे प्रदत्त समानता के मौलिक अधिकारो की अवहेलना की जा रही है तथा हिन्दी भाषी वर्ग से भेदभाव किया जा रहा है। ससदीय सकल्पों का अनुपालन कराना सरकार का वैधानिक दायित्व है।

३ सरकारी भर्ती परक्षाओ की भाषा नीति, शिक्षण-प्रशिक्षण की भाषा नीति तथा अन्य विविध विषयो के सम्बन्ध मे ससदीय राजभाषा समिति (जिसके आप भी सदस्य रहे हैं) द्वारा प्रस्तुत सिफारिशो पर राष्ट्रपति महोदय ने समय-समय पर जो आदेश पारित किये हैं, उनका पालन न होना खेदपूर्ण एव वैधानिक दायित्व की चूक का मामला है। इन समस्त आदेशो का अनुपालन सुनिश्चित कराने की कृपा करे।

समिति के प्रतिवेदन के तीसरे तथा चौथे खण्डो मे की गई निम्नलिखित सिफारिशो पर आचरण तो तत्काल होना चाहिए–

(क) खण्ड ४ की सिफारिश स० २२ की

उपधारा (ग) – देश के सभी भागो मे शिक्षा सस्थानो में हिन्दी पढाने की सुविधा।

उपधारा (च) – भर्ती के लिए साक्षात्कार मे हिन्दी का विकल्प।

उपधारा (छ) – कृषि, इजीनियरिंग तथा आयुर्विज्ञान की भर्ती व प्रवेश परीक्षाओ मे हिन्दी माध्यम का विकल्प।

उपधारा (ज) – राजभाषा सकल्प १९६८ के परिप्रेक्ष्य मे विभिन्न भर्ती नियमो की समीक्षा।

उपधारा (झ) – सभी प्रकार का प्रशिक्षण हिन्दी माध्यम से सम्पन्न हो।

(ख) चौथे खण्ड की सिफारिश स० १५–भर्ती परीक्षाओ मे हिन्दी का विकल्प।

भारत सरकार गृहमन्त्रालय (राजभाषा विभाग) सकल्प स० १२०१९/१०/९१ रा भा (भा) २८-१-१९९२

४ सविधान के अनुच्छेद ३५१ द्वारा सघ सरकार पर एक महत्त्वपूर्ण दायित्व सौंपा गया है। यहा राजभाषा हिन्दी के विकास के लिए भारतीय भाषाओ और सस्कृत से शब्द-सम्पदा लेने का स्पष्ट आदेश है (केवल सुझाव नहीं)। इसके बावजूद अवैधानिक रूप से सरकारी तन्त्र, मन्त्रिमण्डल के अनेक सदस्यो तथा दूरदर्शन और आकाशवाणी ने अग्रेजी के अनावश्यक शब्दो, वाक्याशो तथा रोमन लिपि का हिन्दी और देवनागरी के साथ बेमेल घालमेल करके राजभाषा को ऊबाऊ, अप्राकृतिक, नीरस और अपरूप कर दिया है। ऐसा कहीं जानबूझकर किसी योजना के अधीन तो नहीं हो रहा है ? इसकी व्यापक जाच कराने के आदेश दिये जाए, तथा सरकार की ओर से सरल, सहज, स्वाभाविक, सुललित तथा गतिशील हिन्दी का (जैसा कि आप स्वय प्रयोग करते हैं) विकास अपने सभी मचो माध्यमों तथा तत्रो से किया जाये। घालमेल वाली हिन्दी पर तुरन्त प्रतिबध लगाया जाये।

५ यथा राजा तथा प्रजा। जल की तरह राजभाषा का प्रवाह भी ऊपर से नीचे की ओर बहता है। अत आप स्वय, मत्रिमण्डल के सदस्य तथा उच्च अधिकारी जितना और जैसा राजभाषा का प्रयोग ससद् मे, उसके बाहर, सरकारी समारोहो मे, दूरदर्शन पर प्रेस वार्ता मे तथा देशी-विदेशी प्रतिनिधि मण्डलो के साथ बातचीत मे करेगे उतना और वैसा ही प्रयोग बुद्धिजीवी, जनता उद्योगपति अध्यापक वकील, डॉक्टर, राजनेता और समाजसेवी आदि भी करेगे। इस सम्बन्ध मे मत्रिमण्डलके कुछ सदस्यों–विशेषत, विदेश, रक्षा, वित्त, पर्यटन, विनिवेश, कार्मिक, भारी उद्योग कृषि, सस्कृति विधि ससदीय कार्य तथा कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण विभागो के मत्रियों की छवि सुधारने की तुरन्त आवश्यकता है। इनके विभागो के मत्री अच्छी हिन्दी जानते हुए भी प्राय अग्रेजी ही बोलते हैं।

६ रक्षा सेवा की राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (एन डी ए) तथा सम्मिलित रक्षा सेवा (सी डी एस) की प्रवेश परीक्षाओ मे माध्यम तथा विषय के रूप मे भी अग्रेजी की अनिवार्यता का बने रहना तथा राजभाषा हिन्दी मे परीक्षा देने की अनुमति न होना दुर्भाग्यपूर्ण है। इससे हिन्दीभाषी प्रत्याशियो के साथ भेदभाव हो रहा है और सेना मे बडे अफसरो की भारी कमी भी हो रही है। इस सम्बन्ध में देश भर से कई हजार बुद्धिजीवियो ने आपको प्रतिवेदन भेजे हैं। कह नहीं सकते अब तक इन प्रतिवेदनो को आपके ध्यान मे लाया गया है या नहीं। अत इस विषय पर तुरन्त ही व्यक्तिगत रूप से ध्यान देने की कृपा करे। भेजे गए प्रतिवेदनो की एक प्रतिलिपि सदर्भ–सुविधा के लिए सलग्न है। इस विषय मे हम आपसे भेट भी करना चाहते हैं। कृपया अगले सप्ताह या अपनी सुविधा के अनुसार समय देकर हमे अनुगृहीत करे।

७ पिछले दिनो आपने अपने कार्यालय से राजभाषा के प्रयोग के विषय मे कुछ आदेश जारी किये थे। उनके अनुपालन की रिपोर्ट सब विभागो से मगवाई जाये। भारत सरकार गृहमन्त्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा समय-समय पर जारी आदेशो तथा वार्षिक कार्यक्रमो की समस्त सरकारी विभागो मे निरन्तर अवहेलना की जा रही है, इसे तुरन्त रोका जाए।

अन्त मे आपसे पुन अनुरोध है कि राजभाषा हिन्दी के विकास, प्रचार-प्रसार, सरकारी तत्र में इसके व्यवहार और प्रभावी प्रचलन, मत्रियो, उच्च अधिकारियों और रानेताओं द्वारा इसकी अवहेलना तथा इसी प्रकार के अन्य महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर शीघ्र ही ध्यान देकर, इस सम्बन्ध मे हमारी आप से जो आशाए-अपेक्षाए रही हैं, उन्हें पूरा कराने की कृपा करे। हम आपके आभारी होंगे, जनता आपका जयगान करेगी, अग्रेजी की अनिवार्यता से त्रस्त युवावर्ग राहत महसूस करेगा, गरीब पिछडा समाज आपके सामने नतमस्त होगा तथा हमारे प्रिय हिन्दीप्रेमी प्रधानमन्त्री जी की यशोगाथा अमर हो जायेगी।

कृपया की गई कार्यवाही से अवगत करवाकर कृतार्थ करे।

धन्यवाद सहित
हम हैं आपके
(प्रो० जयदेव आर्य)
सचिव, राजभाषा सघर्ष समिति तथा अन्य सब सदस्य।
दिनाक १४ सितम्बर, २००१

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ७६८७४, ५७७७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ७७८०१) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। पत्र के प्रत्येक प्रकार के विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक होगा।

प्रधानसम्पादक प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामन्त्री   सम्पादक वेदव्रत शास्त्री

वर्ष २८ अंक ४५ २१ अक्तूबर, २००१ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

...भाषा/राजभाषा और संस्कृति

आर्य (श्रेष्ठ) भाषा हिन्दी विश्वभाषा बनने योग्य है—

हिन्दी हमारी राजभाषा है। यह राष्ट्रभाषा भी है। राजभाषा से राष्ट्रभाषा का पद ऊंचा होता है क्योंकि राज्य की अपेक्षा राष्ट्र बड़ा होता है। राष्ट्र में बहुत से राज्य होते हैं, जिनकी भाषाएं अलग-अलग (हिन्दी से भिन्न) भी हो सकती हैं। राष्ट्र का क्षेत्र बहुत बडा (वेद के अनुसार) सारी पृथिवी का है क्योंकि राष्ट्रीयता में परिवारी भावना भी निहित है जिसकी व्यापकता का आदर्श सारी पृथ्वी ही है। ('वसुधैव कुटुम्बकम्' और 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' की भांति) और सचमुच हिन्दी विश्वभाषा बनने की ओर लगातार अग्रसर है जिस प्रकार पृथ्वी को विश्वमार्यम् (श्रेष्ठ विश्व) बनाने की ओर संयुक्त राष्ट्र संगठन अग्रसर है।

हिन्दी का उद्भव ही विश्वभाषा बनने की दृष्टि से हुआ है और विद्वान् लोग शताधिक वर्षों से इसे आर्य (श्रेष्ठ) भाषा कह रहे हैं। हिन्दी बोलने समझने वाले संसार में सबसे अधिक हैं ही इसलिए भारत सरकार के राजभाषा विभाग की पत्रिका 'राजभाषा भारती' अक्तूबर दिसम्बर १९७७ अंक के पृ० ४० पर डॉ० जयन्ती प्रसाद नौटियाल का लेख) यह 'सुभाषा' बल्कि विश्व की सर्वश्रेष्ठ भाषा भी है इसमें संदेह नहीं।

संस्कृत से सुधरी हुई भाषा है हिन्दी

हिन्दी सभी मनीषियों द्वारा पारस्परिक व्यवहार की, आपस में मिलने-जुलने की भाषा के रूप में विकसित होकर एक महान् राष्ट्र भारत की राष्ट्रभाषा राजभाषा, सम्पर्क भाषा, योजक भाषा के आसन पर प्रतिष्ठापित है। यह संस्कृत से भी आवश्यकतानुसार सुधरकर पुष्ट हुई है और सभी प्रकार से 'सुभाषा' कही जाने की अधिकारिणी है। संस्कृत से भी सुधरी हुई भाषा है हिन्दी जैसे संस्कृत का देवर शब्द जिसका अर्थ है 'पति का भाई (जेठा या छोटा)।' महाभारत के बाद भारतीय संस्कृति में आए परिवर्तन के फलस्वरूप, नियोग के लिए केवल छोटा भाई उपयुक्त समझा जाता है, जेठा वर्ज्य है (तुलना कीजिए 'अनुज-वधू, भगिनी, सुत-नारी, सुनु शठ कन्या सम ये चारी; इन्हहिं कुदृष्टि बिलोकइ जोई, ताहि बधे कछु पाप न होई —मानस)। अतएव हिन्दी में पति का छोटा भाई ही देवर होता है बड़ा भाई देवर नहीं जेठ कहलाता है (तुलना कीजिए 'जेठ स्वामि, सेवक लघु भ्राता')।

इस प्रकार व्याकरण में 'लिंग' और 'वचन' के प्रकरण भी हिन्दी में सुधरे हुए हैं। उदाहरण के लिए 'ते' सर्वनाम पुल्लिंग में बहुवचन है किन्तु स्त्रीलिंग और नपुंसक लिंग में द्विवचन है, और इनके विशेष्य (पूर्वपद, antecedent) दूर होने पर भ्रम की स्थिति पैदा होती है। हिन्दी में सर्वनाम लिंग से अप्रभावित रहते हैं और क्रिया प्रभावित होकर यह भेद खोलती है। संस्कृत में संख्यावाची शब्द 'एक' सदा एकवचन, 'द्वि' सदा द्विवचन 'त्रि' सदा बहुवचन, और 'चतुर्' भी सदा बहुवचन होते हैं; किन्तु इन सभी के तीनों लिंगों में अलग-अलग रूप होते हैं, जबकि विंशति (२०) से आगे केवल एकवचन में ही और सदा स्त्रीलिंग में ही रूप होते हैं। किन्तु हिन्दी किसी ऐसी विसंगति या जटिलताओं से मुक्त होकर श्रेष्ठ विश्वभाषा बनी है।

भारत में हिन्दी की स्थिति

हिन्दी का प्रयोग राष्ट्रभाषा के रूप में देश मे सर्वत्र होता आ रहा है राजभाषा के रूप में प्रयोग के लिए भी सरकार के प्रयास आदेश अनुदेश हैं जिनके कारण कहीं भी किसी काम के लिए भी संविधान-सम्मत प्रयोग में कोई अड़चन नहीं है। फिर भी इस आर्य (श्रेष्ठ) भाषा के प्रयोग पर भारत में ही झिझक है इसके कारणों पर प्रकाश डालते हुए भारत के गृहमन्त्री माननीय लालकृष्ण आडवानी ने १४ सितम्बर २००० को राजधानी दिल्ली में हिन्दी दिवस समारोह में कहा था कि आजादी मिलते ही इजराइल की भांति हम भी अपनी भाषा अपना लेते तो कोई कठिनाई न होती किन्तु हमने १५ वर्षों तक अंग्रेजी से चिपके रहने का निर्णय कर लिया और अब उसके शिकंजे में फस गए। यह हमारी भारी भूल थी। उन्होने बहुत ही सामयिक सलाह दी कि 'हम हीन भावना त्यागकर अपनी भाषा और संस्कृति पर गर्व करें। अपनी भाषा के उत्थान के लिए सांस्कृतिक चेतना पैदा करना जरूरी है।" (नवभारत टाइम्स का विद्या टाइम्स परिशिष्ट दिनाक ३-१०-२००० ई०)

बस हमें हीन भावना त्यागकर अपना खोया हुआ स्वाभिमान जगाना है। यह हमारी शिक्षा का लक्ष्य होना चाहिए। इसी से मानव ससाधन का अपेक्षित विकास/परिष्कार या मानव की संस्क्रिया/संस्कृति सम्भव है। हमारा भारत (विश्वभारत) कोई हजार दो हजार साल से गुलाम चला आ रहा है। एक आक्रान्ता गया तो उसकी जगह दूसरे ने ले ली। गुलामी का सीरियल चलता रहा। बीच-बीच सत्ता परिवर्तन के कई अवरोध भी हुए। अन्तत अंग्रेजो की गुलामी से १९४७ में हम आजाद हुए। अंग्रेज चले गए, लेकिन इसके बावजूद हमारी जीवन-शैली और आचार-विचार में अंग्रेजियत अभ भी समाई हुई है और हमें दिन में अनेक बार अंग्रेजियत का स्मरण कराती रहती है। हमे इससे पीछा छुड़ाना है। साक्षरता भी किसी विदेशी भाषा की नहीं श्रेष्ठ विश्वभाषा हिन्दी की चाहिए। हमारे विद्यालय फैलते जाते हैं उनसे निकलने वाले दिमाग सिकुड़ते जाते हैं भवन उठते जाते हैं आसमान में चरित्र गिरता जाता है गढे में। हमारी शिक्षा ऐसी सकीर्ण मानसिकता की नहीं उदार विश्व राष्ट्रीयता की होनी चाहिए।

देश के चारित्रिक पतन का कारण

चात्रिरिक पतन का कारण भी यही है कि श्रेष्ठ भारतीय (पर्यारण मैत्री वाली) संस्कृति मिटाने के लिए श्रेष्ठ भाषा हिन्दी को जडमूल से उखाडकर पर्यावरण-विरोधी भाषा अंग्रेजी रोपने की जी भर कोशिश हो रही है। सहसा कोई विश्वास नहीं करेगा कि कोई भाषा भी पर्यावरण को हानि पहुचा सकती है। किंतु पर्यावरण-विरोधी पश्चिमी अपसस्कृति का आक्रमण दु तरफा हुआ

(शेष पृष्ठ ६ पर)

वैदिक-स्वाध्याय

राजा सोमदेव

त्वं नः सोम विश्वतो रक्षा राजन् अघायतः।
न रिष्येत् त्वावतः सखा।। (ऋ० १९१८)

शब्दार्थ–(सोम) हे सोम ! (राजन्) हे राजा ! हे असली राजा। (त्वं नः) तू हमें (अघायत.) पाप चाहने वालों से (विश्वतः) चारों तरफ से (रक्षा) रक्षा कर। (त्वावत सखा) तेरे जैसे से मित्रता रखने वाला (न रिष्येत्) कभी नष्ट नहीं होता।

विनय–हे सोमदेव ! तुम्हीं वास्तव मे हमारे राजा हो। यद्यपि संसार के मनुष्य-राजा भी जान माल आदि की रक्षा करने के लिए ही होते हैं, पर वे अल्पशक्ति राजा चाहे जितनी हुकूमत की शक्ति रखते हों तो भी हमारी पूरी तरह रक्षा नहीं कर सकते हैं। पर मुझे अपने जान-माल की ऐसी परवाह नहीं है, इनको तो मैं धर्म के लिए खुशी से जाने दूंगा। अत. हत्यारों और लुटेरों के आक्रमण से रक्षा पाने की मुझे कोई चिन्ता नहीं होती। मुझे तो चिन्ता है पाप के आक्रमण से रक्षा पाने की। इस पाप के आक्रमण से ही बचने की मुझे सख्त जरूरत है। और इस आक्रमण से तो, हे मेरे अन्तरतम के राजा ! मुझ मे अन्दर से हुकूमत करने वाले स्वामी ! हे असली राजा ! तुम्हीं चारों तरफ से मुझे बचा सकते हो। बडे से बडा श्रेष्ठ राजा भी अपने बाहिरी सुप्रबन्ध से हमे पाप के आक्रमण से सर्वथा सुरक्षित नहीं कर सकता। इसीलिए हे राजाओ के राजा परमेश्वर ! तुम से हम प्रार्थना करते हैं कि तुम हमें पाप चाहने वालो से सब तरफ से रक्षित करो। हे सर्वशक्तिमान् ! मैं तो अन्दर तुमसे सम्बन्ध जोड चुका हू, तो मुझे अब किसका डर है ? तुझ जैसे से अपना सम्बन्ध जोडने वाला–तुझ सर्वशक्तिमान् राजा की मैत्री पाया हुआ तेरा सखा–कभी नष्ट नहीं हो सकता। तेरी सर्वशक्तिमान् शरण मे पहुचे हुए को नाश कर सकने वाली वस्तु कहा से आयेगी ? पर ऐसा तेरा सखित्व पाने के लिए–और ऐसा अमूल्य सखित्व पाकर उसको कायम रखने के लिए–बस, पाप से सुरक्षित रहने की जरूरत है। इसलिए हमारी बारम्बार यही प्रार्थना है कि हमें पाप से चारों तरफ से बचाइये–हमे पाप से सब तरफ से बचाइये।

(वैदिक विनय से)

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

१	आर्यसमाज नसोपुर जिला अलवर (राज०)	३०, ३१ अक्तूबर
२	भगवती कन्या गुरुकुल जसात	२ से ३ नवम्बर
३	आर्यसमाज सेक्टर-१४, सोनीपत	५ से ११ नवम्बर

–**रामधारी शास्त्री**, वेदप्रचाराधिष्ठाता

डॉ० अम्बेडकर ने कहा है–मनु ने जाति के विधान का निर्माण नहीं किया और न वह ऐसा कर सकता था।

मनुस्मृति मे जन्म से जाति व्यवस्था नहीं है अपितु गुण–कर्म–योग्यता पर आधारित वर्ण व्यवस्था है। **मनु** ने दलितों को शूद्र नहीं कहा, न उन्हे अस्पृश्य माना है। उन्होने शूद्रों को सवर्ण माना है और धर्म-पालन का अधिकार दिया है। **मनु** द्वारा प्रदत्त शूद्र की परिभाषा दलितो पर लागू नही होती। **मनु** शूद्र विरोधी नहीं अपितु शूद्रो के हितैषी हैं। **मनु** की मान्यताओ के सही आकलन के लिए पढ़िए, प्रक्षिप्त श्लोकों के अनुसधान और क्रान्तिकारी समीक्षा सहित शोधपूर्ण प्रकाशन :–

मनुस्मृति

(भाष्यकार एवं समीक्षक डॉ० सुरेन्द्रकुमार)
पृष्ठ ११६०, मूल्य २५०/-
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
४५५, खारी बावली, दिल्ली-६
दूरभाष : ३६५८३६०, फैक्स : ३६२६६७२

गुरुकुल आर्यनगर (हिसार) का
सैंतीसवां वार्षिक महोत्सव

२७ एवं २८ अक्तूबर २००१ (शनिवार व रविवार) को बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस शुभावसर पर २४ से २८ अक्तूबर तक सम्पन्न होनेवाले यज्ञ के ब्रह्मा ओजस्वी वैदिक प्रवक्ता **आचार्य डॉ० धर्मवीर जी** (मन्त्री, परोपकारिणी सभा अजमेर) होंगे। वेदपाठ गुरुकुल के ब्रह्मचारी करेंगे। यज्ञ एव उपदेश का समय पहले तीन दिन प्रातः ८-०० से १०-३० बजे तक तथा साय ४-३० से ६-३० बजे तक रहेगा। इस पावन अवसर पर यज्ञोपवीत धारण करके आप भी जीवन सफल बना सकते हैं। २८ अक्तूबर रविवार को प्रात.काल की बैठक में **सम्माननीय श्री बनारसीदास जी गुप्त** सांसद (पूर्व मुख्यमन्त्री हरयाणा) मेधावी एवं योग्य छात्रों को पारितोषिक प्रदान करेंगे। इस बैठक की अध्यक्षता दानवीर **सेठ श्री रामरिछपाल जी आर्य** (गुरेरा) करेंगे। २७ अक्तूबर शनिवार को दोपहर पश्चात् की बैठक की अध्यक्षता सम्माननीय **डॉ० हरिसिंह जी सैनी** (प्रधान आर्यसमाज हिसार) करेंगे। इस धार्मिक सम्मेलन में आप परिवार एवं इष्ट मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

–आजादसिंह मुनि, प्राचार्य

'पच्चीसवां वैदिक सत्संग सम्पन्न'

आर्यसमाज की प्रमुख संस्था दयानन्दमठ रोहतक में वैदिक सत्संग समिति का २५वां सत्संग समारोह ७ अक्तूबर २००१ रविवार को बडी धूमधाम से सम्पन्न हो गया। इस सत्संग के संयोजक आचार्य सन्तराम आर्य ने बताया कि इस सत्सग का उद्देश्य सामाजिक कुप्रथाओं, धार्मिक अन्धविश्वासों, छूआछात, अशिक्षा, अन्याय एव शोषण के बारे में वैदिक धर्म की मान्यताओं का प्रचार-प्रसार करना है। समारोह की विस्तृत जानकारी देते हुए उन्होंने बताया कि हर महीने के प्रथम रविवार को यह कार्यक्रम प्रात: ९-०० बजे देवयज्ञ से प्रारम्भ होता है तथा यज्ञ (हवन) के बाद मिष्टान्न के रूप में यज्ञ-प्रसाद बांटा जाता है, फिर पूरा वातावरण भक्तिमय गीतों एव भजनों के द्वारा आध्यात्मिक माहौल तैयार हो जाता है। इस संगीत कार्यक्रम में महिलाओ व पुरुषों के अलावा विभिन्न विद्यालयो के छात्रो को भी अपनी प्रतिभाओं को विकसित करने का अवसर दियाजाता है।

आज ७ अक्तूबर २००१ को पच्चीसवा सत्सग मनाया गया जिसमें दो छोटी बालिकाओं दीपिका आर्या तथा दिव्या आर्या ने अपने-अपने गीत गाये। इसके बाद मा० देवीसिंह आर्य व श्री सत्यनारायण जे०ई०'ने दो भजन रखे तथा फिर मागेराम आर्य खरमाण तथा बहिन दयावती आर्या प्राध्यापिका व बहिन फूलपति देवी ने अपने-अपने गीतों से वातावरण को आध्यात्मिक स्वरूप में ढाल दिया। इसी समय मुख्य वक्तव्य का समय हो आया। इस सत्सग में विषय था-'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन'। वक्ता थे आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के नवनिर्वाचित प्रधान व पूर्व सासद स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज। उन्होंने बताया कि मनुस्मृति में ब्राह्मण का धर्म वेद का पढना लिखा है लेकिन वेदों को आज लोग अन्य कारणों से पढते हैं। क्षत्रिय का धर्म है धर्म की लडाई लडे निर्बल की मदद। दो प्रकार के व्यक्ति मोक्ष को प्राप्त करते हैं। (१) योगाभ्यासी, प्राणायाम के द्वारा संयमी व्यक्ति द्वारा (२) युद्ध में सामने छाती में खाकर देश धर्म के लिए कुर्बानी देना।

वैश्य का धर्म—सारे देश को वैभवशाली व समृद्धिशाली बनाने के लिए अर्थात् अभावग्रस्त ना रहे।

शूद्र—चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी अर्थात् पूरी मेहनत के बाद भी पढाई नहीं कर सका। उसे शूद्र कहते हैं जिसका धर्म है तीनों के लिए कार्य करना।

इसी प्रकार मेहनत अथवा परिश्रम का नाम आश्रम है आ+श्रम। मनु महाराज ने तथा बाद में ऋषियों ने चार आश्रमों की व्यवस्था की है जैसे–

(१) ब्रह्मचर्य अर्थात् विद्यार्थीकाल

(२) गृहस्थ। (३) वानप्रस्थ। (४) सन्यास। उन्होने बताया कि दो वस्तुए हैं (१) वर्ण, (२) आश्रम। बिना वर्ण के कोई भी बच्चा नहीं रहना चाहिये। महर्षि दयानन्द के अनुसार भक्त किसे कहते हैं– जिसके पास अपने घर की अकल तो हो नहीं लेकिन बहका-बहका फिरे। जो लोग निठल्लेपन को मौज समझते हैं वे घाटे में हैं। बिना कर्म के आराम से बैठकर खाने वालों को धिक्कार है कार्य करते हुए जीने की इच्छा करो तो जीवन में सुख ही सुख मिलेगा। स्वामी जी ने कुरुक्षेत्र वि०वि० के डॉ० के०सी० यादव की पुस्तक का उदाहरण देते हुए बताया कि 'बेचारा किसान' नामक पुस्तक में लिखा है कि हे परमात्मा मेरे अन्दर (अर्थात् किसान के अन्दर) रजोगुण को पैदा कर।

अन्त मे स्वामी इन्द्रवेश जी ने बताया कि हर व्यक्ति को कार्य करने व बजट बनाना चाहिए कि कितना पैसा वेदप्रचार कार्य में लगाना है। कितना यज्ञ पर खर्च करेंगे। उपदेश करने वाले तथा सननेवाले नहीं होगें तो अन्धपरम्परा चल पडेगी। महर्षि दयानन्द का वेदप्रचार का कार्य भी इसीलिए रुका पडा है क्योंकि हम कार्य नहीं करना चाहते, ना चन्दा करते, ना सत्सग करवाते। जीवन के आखिर श्वास तक मेहनत करने की आदत बनाओ। वैदिक धर्म में निठल्लेपन का कोई स्थान नहीं है गीता में तथा वेद के ४०वे अध्याय में लिखा है कि यही शरीर आलस्य व निठल्लेपन से मनुष्य को गिराने का कार्य भी करता है। अन्त मे आने वाले तीन वर्षों मे हरयाणा के हर गाव मे आर्यसमाज का गठन करना है। तीन सगठन बनाओ, आर्यसमाज, महिला आर्यसमाज तथा आर्य युवक परिषदें बने। शान्ति पाठ के बाद सयोजक ने समारोह सम्पन्न करते हुए घोषणा की कि अगला सत्सग ४ नवम्बर २००१ को सभी सादर आमन्त्रित हैं। ऋषि लगर मे सभी ने मिलकर भोजन किया तब सम्पन्न हुआ।

—**सन्तराम आर्य**, समारोह सयोजक

सरकार की नजर आर्यसमाज की सम्पत्ति पर

गुरुकुल के संचाक और वयोवृद्ध आर्यसमाजी नेता स्वामी ओमानन्द ने आरोप लगाया है कि चौटाला सरकार की नजर आर्यसमाज की सम्पत्ति पर है। इसलिए उन्होने आर्यसमाज मे नया विवाद पैदा कर दिया है। उन्होने कहा कि आर्यसमाज के गठन के बाद भी उसमे कुछ लोगो के माध्यम से दुबारा चुनाव कराने का शगूफा सरकार के इशारे पर ही हो रहा है।

उन्होने प्रेस कांफ्रेंस मे सरकार पर आरोप लगाया कि सरकार के इशारे पर पहले खानपुर गुरुकुल पर एक तरह से कब्जा कराया है। अब उनकी नजर आर्यसमाज और उसकी सम्पत्ति पर लगी है। स्वामी ओमानन्द ने कहा कि आर्यसमाज जनहित की बात उठाता रहा है और यह बात सरकार को गवारा नहीं होती।

अपने विरोधियो को चुप कराने के लिए सरकार ओछे हथकडे अपना रही है। आर्यसमाज इनसे डरने वाला नहीं है और प्रदेश के लोगो के हित की बात करता है।

गुरुकुल में आयोजित सवाददाता सम्मेलन मे ओमानन्द ने कहा कि आर्य प्रतिनिधि सभा के नवनिर्वाचित पदाधिकारियो ने आर्यसमाज को मजबूत करने के लिए अपने इस्तीफे उन्हे दे रखे हैं। सभी पदाधिकारी सगठन को मजबूत करने के लिए कार्य कर रहे हैं। उन्हे पदो से मोह नहीं है। उन्होने कहा कि बलवानसिह सुहाग के माध्यम से दुबारा चुनाव कराने की प्रक्रिया अनैतिक है।

इसमे आर्य प्रतिनिधि सभा के १३५० मतदाताओ के भाग लेने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता। उन्होने इसे अनधिकृत कार्यवाई बताते हुए कहा कि अदालत के आदेशानुसार चुनाव प्रक्रिया पहले ही पूरी हो चुकी है। ओमानन्द ने यह भी कहा कि सरकार ने आर्यसमाज के रोहतक मुख्यालय पर कब्जा करवा दिया है।

साभार अमर उजाला
'१८-१०-२००१'

शिव संकल्पमस्तु

हे प्रभु ! मेरा मन शिव सकल्पी हो, ऐसी ही है, मेरी प्रबल अभिलाषा।
श्रेष्ठ मधुर-सत्य ज्ञान की, रश्मिया देकर पूर्ण करो मेर आशा।।
मन तो सब इन्द्रियो को सदा, ज्योति की रश्मिया करता रहता है प्रदान।
इन रश्मियो की ज्योति पाकर, ऋषि-मुनि, वीर-धीर कहलाते हैं महान्।।
ऐसे विचारशील मनीषी ही दूसरो को, प्रेरणा देकर दूर करते हैं उनकी निराशा।
हे प्रभु ! मेरा मन शिव सकल्पी हो, ऐसी ही है मेरी प्रबल अभिलाषा।।
मन जितना पवित्र व निर्मल होगा, उतनी शीघ्र होगी शिव सकल्पो की पूर्ति।
सात्विक आहार-व्यवहार से ही बनेगा, जीवन नम्रता व पवित्रता की मूर्ति।।
वैसे काम-क्रोधादि विकार तो, मानव-मानव का बना देते है तमाशा।
हे प्रभु ! मेरा मन शिव सकल्पी हो, ऐसी ही है, मेरी प्रबल अभिलाषा।।
मन अमृत भी है, जिसे पीकर-पाया, राम-कृष्ण-दयानन्द ने प्रबल विश्वास।
मन विष भी है जिस का पान करके, रावण-कंस-दुर्योधन ने किया जीवन का नाश।।
निस्सदेह सत्य है यथा सकल्प, वैसे ही पूर्ण होती है मन की आकाक्षा।
हे प्रभु ! मेरा मन शिव सकल्पी हो, ऐसी ही है, मेरी प्रबल अभिलाषा।।
प्रभु की शक्ति-भक्ति से विभोर होकर, शिव सकल्पो की होती है पुष्टि।
ज्ञान-विज्ञान, सुख-सौभाग्य की, जीवन शैली मे होती है वृद्धि।।
इसी दैवीवृष्टि के वरदान से, सर्वशक्तिमान् की अनुभूति की पूर्ण होती है आशा।।
हे प्रभु ! मेरा मन शिव सकल्पी हो, ऐसी ही है, मेरी प्रबल अभिलाषा।
श्रेष्ठ मधुर-सत्य ज्ञान की, रश्मिया देकर पूर्ण करो मेरी आशा।।

—**कृष्णा चौधरी**, ९०९, सैक्टर-१६, पचकूला (हरयाणा)

विशेष सूचना

सर्वहितकारी के ग्राहकों से निवेदन है कि यदि आपको **सर्वहितकारी** नहीं मिल रहा है तो नीचे लिखे पते पर अपना पूरा पता ग्राहक सख्या सहित लिखकर एक पोस्ट कार्ड भेजें। सर्वहितकारी के लिए सभी प्रकार की डाक लेख आदि भी इसी पते पर भेजने का कष्ट करे।

—**वेदव्रत शास्त्री**, सम्पादक सर्वहितकारी
आचार्य प्रिंटिंग प्रेस,
दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक

फोन : ०१२६२-७६८७४, ५७७७४

गुरु-आज्ञा

लेखक सोहनलाल शारदा, शाहपुरा, भीलवाडा (राजस्थान)

"लोग आधी पंक्ति मन्त्र सुनाकर गुरु बन जाते हैं और मैं पृष्ठों के पृष्ठ सुना देता हूं तो आप ही बताइये मैं गुरु क्यों नहीं ?" (महर्षि दयानन्द जीवनी लेखराम कृत उर्दू का आर्यभाषानुवाद पृष्ठ ६४३ प्रथम सस्करण)

ऐसे ही एक प्रसग पर परिहासात्मक विनोदपूर्ण शब्दों से उदाहरण स्वरूप कहते हैं कि–**"एक जाट महाशय जी ने एक गुरु कर लिया। तो घर पर श्रीमती जी विरोध स्वर से कहने लगी कि श्रीमान् जी ! आपने यह बहुत बुरा कार्य किया। दो धडी (१० किलो) अनाज का व्यर्थ ही भार व्यय का बढा लिया। प्रत्युत्तर में जाट महाशय जी ने कहा के–सुनो श्रीमती जी ! आप मुझे प्यारी हो। पुत्र-पुत्रिया भी प्रिय ही हैं और इसी प्रकार अन्य कुटुम्बी जन भी सभी प्रिय ही हैं। अत: मैं इनमें से किसी की भी सौगन्ध नहीं खा सकता। अत: मैंने सौगन्ध खाने निमित्त एक गुरु भी कर लिया। आप इस दश किलों अन्न की कोई चिन्ता नहीं करो।"** (पुस्तक वही पृष्ठ ६४८)

ऐसे ही वैदिक धर्म प्रचार हेतु अपने ही समाचार पत्रों में विज्ञापन प्रकाशित होते ही रहते हैं कि–**पुरोहित चाहिये**। इसके लिये आवास, पानी, बिजली की सुव्यवस्था के साथ-साथ दक्षिणा का भी प्रावधान योग्यतानुसार। हम हमारे अधिकारी वर्ग पुरोहित की व्यवस्था करके प्रचार कार्य हेतु सन्तुष्ट हो जाते हैं और ये महाशय पुरोहित जी सस्कार कराने सत्सग की व्यवस्था जमाने के साथ-साथ अन्य सभा सम्बन्धित सभी कार्य भी सम्पन्न कराते ही हैं। लेकिन जहा तक हमारा अनुभव है ये महाशय जी वास्तविक महर्षि की **'गुरु आज्ञा'** नई पीढी को आर्य बनाने का प्रयास करने में दूर ही रहते हैं।

महर्षि सस्कारविधि सामान्य प्रकरण में आदेश करते हैं कि–**"सब संस्कारों में मधुर स्वर से मन्त्रोच्चारण यजमान ही करे। न शीघ्र न विलम्ब। किन्तु मध्य भाग जैसा कि जिस वेद का उच्चारण है, वैसा ही करे।"** आगे आदेश करते हैं कि **यदि यजमान नहीं पढ़ा हो तो भी वह इतने मंत्र तो अवश्य पढ़ लेवे।** नित्य व विशेष यज्ञ के सभी मन्त्र। महर्षि ने इसी निमित्त व्यवस्था भी दी है। नई पीढी को पढाये बिना वैदिक धर्म में दीक्षित करना असम्भव नहीं भी कहे तो भी महाकठिन है अवश्य।

पुरोहित ही इस कार्य को सुचारू रूप से सम्पन्न कराने में समर्थ हैं। कहा गया है कि–**"वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिता:"** अर्थात् हम पुरोहित वर्ग ही समाज व राष्ट्रोत्थान मे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने मे समर्थ हैं।

अत अपने प्राणहरण महत्त्वपूर्ण गभीर रोग ग्रसित होने के मात्र ५ दिवस पूर्व ही ठाकुर नन्दकिशोरसिह जी जयपुर को लिखते हैं कि–**यह उपदेशक जी जहां-जहां भी जिन-जिन समाजों में जायेंगे और जितने दिन रहेंगे रात्रि में उपदेश करेंगे और दिन में यथोचित समय में पढ़ायेंगे।** (पत्र विज्ञापन पृष्ठ ७९३)

इस प्रकार राष्ट्र व समाजोत्थान निमित्त अति महत्त्वपूर्ण आदेश भी दे गये। महर्षिकृत ग्रन्थो के माध्यम से शिक्षा कार्य पुरोहित ही योग्य शिक्षक जो पुरोहित हैं, करने में समर्थ हैं।

इसी निमित्त ही वेदारम्भ सस्कार मे अथर्ववेद के प्रमाण से आचार्य को निर्देश करते हैं कि–

आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिणं कृणुते गर्भमन्त:।
तं रात्रिस्तिस्त्र उदरे बिभर्ति तं जातं द्रष्टुमभि संयन्ति देवा:।

(अथर्ववेद काण्ड **११ सूक्त ५ मंत्र ३**)

भावार्थ–आचार्य ब्रह्मचारी को प्रतिज्ञापूर्वक समीप रखके तीन रात्रि पर्यन्त गृहाश्रम सस्कार में लिखे नित्य सन्ध्या यज्ञ विधि व सत्संग यज्ञ विधि तथा सत्पुरुषो के आचरण की शिक्षा इस प्रकार के करे के वह उसके आत्मा के भीतर गर्भ रूप विद्या स्थापन हो जावे जिससे वह निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर होता ही रहे।

हमें इसी **गुरु आज्ञा** को शिरोधार्य कर नई पीढी को आर्य वैदिकधर्मी बनाने को कार्यरूप मे याने पढाना है। पढाने से ही शुद्ध उच्चारण होगा। इसी हेतु ही वेदांग प्रकाश की प्रथम पुस्तक वर्णोच्चारण शिक्षा लिखी। इसकी भूमिका मे वर्णन है कि–**"मुझको इस पुस्तक का प्रकाश करना इसलिए आवश्यक हुआ के जो देवनागरी व वर्णोच्चारण में जो-जो गड़बड़ हुई है और हो रही है, उसको छोड़कर यथायोग्य वर्णों का उच्चारण सर्व आर्यजन कर सकें। इससे ही उन्हें अशुद्ध अन्धपरम्परा नष्ट होकर शुद्ध परम्परा निश्चित हो जाये।"**

हमारे ही पण्डित वर्ग जो महर्षि से पूर्व के थे उन्होंने जो उच्चारण के सम्बन्ध में अन्धपरम्परा चलाई और तदनुसार वर्तमान में भी चला रहे हैं, उनको निरस्त करते हुए वर्णन है कि **"वे वेदपाठी जन अपाणिनीय शिक्षा को** मानकर **पाणिनि मुनिकृत पाठ किया करते हैं और इसको वेदांग में भी गिनते हैं क्या ये इतना भी नहीं जानते के वहां कहा गया है कि "अथ शिक्षां प्रवक्ष्यामि पाणिनीयम् मतं यथा।"**

इससे यह निश्चय विदित ही है कि यह पाणिनि मुनिकृत न होकर किसी अन्य का बनाया है।

हम आर्यों का शुद्ध उच्चारण वेदपाठ व व्यवहार में हो इसी निमित्त इस वर्णोच्चारण शिक्षा की पुस्तक का निर्माण किया गया। महाराज कृष्ण भी अशुद्ध उच्चारण की हानि का दिग्दर्शन कराते हुए गीता में कहते हैं कि–

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं तामसं परिचक्षते।

यहा फलश्रुति का भी वर्णन है कि–**अधो गच्छन्ति तामसा:।**

इसी पर ही महाभाष्यकार महर्षि पतञ्जलि जी महाराज सचेत करने निमित्त ही निर्देश फल सहित वर्णन कहते हैं कि–**दुष्ट: शब्द: स्वरतो वर्णतो वा मिथ्याप्रयुक्तो न तमर्थमाह। स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति। यथेन्द्रशत्रु: स्वरतोपराधात्।**

अर्थात्–शब्द जब अशुद्ध दोषयुक्त हो जाता है। याने (स्वरत) स्वर का दोष याने उदात्त अनुदात्त स्वरित के उच्चारण का दोष। एवम् वर्ण का दोष अक्षरों के उच्चारण में स्थान प्रयत्न का ध्यान नहीं देना। याने अक्षर तो क्या और उच्चारण कुछ अन्य ही। इस प्रकार से यह दोष भेद होकर यज्ञ कराने वाले को व यज्ञ करनेवाले को (हिनस्ति) सर्व प्रकारेण हीन कर देता है।

इससे लाभ न होकर हानि ही होती है। और हो भी रही है। प्रत्यक्ष ही समाजों मे शैथिल्य का होना।

अत इस वर्णोच्चारण शिक्षा के ग्रन्थ मे प्रथम में ही वर्णन करते हैं कि–

"ऐसे-ऐसे भ्रमों के निवृत्त्यार्थ ही बड़े परिश्रम से यह पाणिनि मुनिकृत शिक्षा का पुस्तक प्राप्त कर उन सूत्रों को सुगम भाषा में व्याख्या करके वर्णोच्चारण विद्या की शुद्ध सिद्धि करता हूं। कि जिससे आर्यजनों को थोड़े ही परिश्रम से वर्णोच्चारण विद्या की प्राप्ति होजाये।"

यहा ही महर्षिकृत ग्रन्थो में **'बड़े परिश्रम'** यह शब्द समूह का प्रयोग हुआ है। अन्यत्र अभी तक तो कहीं ऐसा शब्द देखने में नहीं मिला। इससे यह बोध होता है कि हमारा कर्त्तव्य यही है कि हम आर्यसमाज मे व्याप्त शैथिल्य दूर करने हेतु इस **'गुरु आज्ञा'** को शिरोधार्य कर पूर्णतया समर्पण भाव से इसे नई पीढी को आर्य बनाने हेतु पढाना है। जिससे कि शुद्ध उच्चारण कर अध पतन से बचा सकें।

साथ ही साथ महर्षिकृत सभी ग्रन्थो व जीवन की प्रमुख घटनाओं व पत्रों को जिसे महर्षि ने मानव मात्र की समस्याओं का समाधान है बताते रहना है।

जिससे ही नई पीढी यथासमय यथाविधि सन्ध्या यज्ञ की विधि महर्षिकृत सोच समझकर कार्य रूप में परिणत कर सके। पढाने के पश्चात् ही वह जन कुछ भी न्यूनाधिक नहीं कर सकेगा।

आगे जो योग्य हो उन्हें तीसरे समुल्लास में जिन-जिन पुस्तको को पढाने हेतु उल्लेख है उन-उन पुस्तकों को पढाकर राष्ट्र को संकट से मुक्त करना है। यह कार्य हम आर्य ही कर सकने में समर्थ हैं। अन्य स्वार्थी जन अपना ही पेट पेटी भरने मे ही रहेंगे।

दीर्घायु कैसे प्राप्त हो ?

१. जीवन में बहुत वस्तुएं और धन की प्राप्ति होने मात्र से सुखी और स्वस्थ हो जाएंगे, ऐसी भ्रामक कल्पना को आपने पाल रखा है तो आपने गलत राह पकड़ी है। ऐसी गलत कल्पना से या ऐसी आशा करने से अनेक व्याधियों का आप स्वयं आमंत्रण कर रहे हैं, क्योंकि वे आपको भ्रामक रास्ते पर ले जाकर दुःखी ही बनाएंगी।

२. यदि हमको रेल या बस से यात्रा करनी हो तो हम रेल के या बस के स्थान पर ठीक समय पर पहुंचने का भरसक प्रयत्न करते हैं। भाग दौड कर किसी प्रकार से ठीक समय पर पहुंच ही जाते हैं। इसी प्रकार कदाचित् हम भूल जाते हैं कि हमे एक दिन यह प्रिय परिवार, मित्र, हितैषी आदि सबको छोडकर जाना है। यदि हम ससार के सभी कामकाज यह मानकर करें कि यह जीवन का आखिरी दिन है, तो हम किसी भी व्यक्ति को अपने कार्य से दुःखी और पीड़ित करने का विचार पूर्णत त्याग देंगे। साथ ही अपने शरीर, मन, और आत्मा को लोक परलोक के विचार में लगाकर स्वस्थ, शान्त और आनन्दित रखने का प्रयत्न करना आवश्यक है। सांसारिक प्रपंच की व्यर्थ की बातो मे अपना समय गंवाने से एक दिन आपको बहुत पछताना पडेगा।

३ हमारे ऊपर कितना ही बडा संकट क्यों न आ पडा हो, तो भी निद्रा में हमको शान्ति मिलती है, क्योंकि कुछ समय तक हम व्यर्थ की चिंताओ से मुक्त हो जाते हैं। अत हम भी अपनी चिताओ को परम पिता परमात्मा को सौंप कर चिताओं से क्यों मुक्त नहीं हो सकते? वास्तव मे यह हमारा भ्रम है कि हमारे चिंतित और परेशान होने से ही हम अपनी समस्याओं पर विजय प्राप्त कर सकेगे। सच तो यह है कि पूर्व जन्मों मे किए गए कर्मों का फल भी प्रभु की इच्छानुसार हमको इस जीवन में भी भुगतना पड सकता है।

४. महानगरीय जीवन की जिदगी में हर व्यक्ति आज उच्च रक्तदाब का शिकार बना हुआ है। शुरु में हम इसकी भयावहता पर ध्यान नहीं देते पर जब हालत ज्यादा बिगड़ जाती है, तब हम डाक्टरों की ओर दौड लगाना शुरु करते हैं। परन्तु ऐसी स्थिति मे कभी भी हमारे मस्तिष्क की धमनिया रक्तदाब के कारण फट सकती हैं या हृदयघात हो सकता है, अत रक्तदाब से समय रहते ही बचे रहने में ही भलाई है। इसके लिए अतिभोजन, मास अंडों और अधिक मीठे चाय-काफी से बचना कहीं अधिक सरल उपाय है।

५ कुटुब, समाज व ईश्वर के प्रति हमारा सबसे पहला कर्तव्य यह है कि हम अपने शरीर और मन को निरोग, शान्त और प्रसन्न रखें।

६ गायन, वादन और नृत्य ये सगीत के तीन महत्त्वपूर्ण अंग है। संस्कृति में इन तीनों को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। सामवेद मे सगीत को उच्च स्थान दिया गया है। अन्यत्र वेद में कहा है-प्राञ्चो अगाम नृत्यते असाय अर्थात् हम नाचते हसते गाते आगे बढे।

७. जीवन मे दूसरो के दोष देखने की प्रवृत्ति से बचना ही कल्याण-कारी है। प्रत्येक मनुष्य मे कुछ सद्गुण भी रहते हैं। उसमे कुछ दैवी शक्तिया भी साधारणत रहती हैं। अत यदि हम मनुष्य मे विद्यमान उदारता, समता पूर्णता, मित्रता आदि पक्षो पर अधिक ध्यान दें तो हम अपना और दूसरो का विशेष भला कर सकते हैं।

८ मानव शरीर भगवत्प्राप्ति का ही नहीं परन्तु भगवान् का दिया हुआ श्रेष्ठ मन्दिर है। मन्दिर मे जाने पर जैसी प्रसन्नता और आनन्द प्राप्त होता है, वैसा ही इस को भगवान् की देन मानकर आनदित रहने और भगवान् के दूसरे बदो की सेवा में लगाने मे ही हमारी भलाई है।

–प्रो० इन्द्रदेवसिंह आर्य

(आर्यमित्र से साभार ३०-९-२००१)

तुम्हें प्रणाम

–राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

धर्म हेतु हे प्राण लुटाने वालो ! सादर तुम्हे प्रणाम।
देश-धर्म की रक्षा के हित, अपने प्राण लुटाते जो,
मां की बलिवेदी पर हर्षित, होकर शीश चढाते जो,
शोणित अपना बहा-बहाकर, मां का मान बढाते जो,
त्याग तथा बलिदानो से, किंचित् भी ना घबराते जो,
ऐसे वीर सपूतों का है, जीवन बनता दिव्य ललाम।
धर्म हेतु हे प्राण लुटाने वालो ! सादर तुम्हे प्रणाम।।

दयानन्द बनकर तुम आते, बनते हो तुम श्रद्धानन्द,
लेखराम बनकर निर्भय हो, तुम्हीं लुटाते अति आनन्द,
तेरी ललकारों से जीवनधारा, बहती सदा अमन्द,
शौर्य-शक्ति से पुण्य तुम्हारे, बनते तेजस्वी से छन्द।
तेरी गरिमा से गर्वित है, सागर-नगर-नदी-वन-ग्राम।
धर्म हेतु हे प्राण लुटाने वालो ! सादर तुम्हें प्रणाम।।

तुम्हीं बढ़े तो बढी धरा यह तुम्हीं बढे तो बढा हिमालय,
तेरे गर्जन से धरती पर, आती है घनघोर प्रलय,
तुम्हीं सुरभि हो सुमन दलों की, तुम्हीं सुशीतल वायु मलय,
देख तुम्हारी शक्ति अपरिमित, कपता रहता नील निलय,
आहुति देते जो जीवन की, करते कर्म सभी निष्काम।
धर्म हेतु हे प्राण लुटाने वालो ! सादर तुम्हें प्रणाम।।

वैदिक धर्म हुआ सकट से ग्रस्त, बढ़ो हे वीरो !
गहन तिमिर है घनीभूत, अब बढो तुम्हीं रणधीरो !
दानवता का ताण्डव नर्तन, देता आज चुनौती वीरो !
जय के पथ पर बढो अभय हो निर्भय आर्यप्रवीरो !
गूंज उठे फिर से धरती पर, अथर्ववेद-ऋग्-यजु व साम।
धर्म हेतु हे प्राण लुटाने वालो ! सादर तुम्हें प्रणाम।।

संसार के श्रेष्ठपुरुष एक हों

आर्य-बन्धुओ ! जैसा कि हम सब अनुभव करते हैं कि बहुत से विद्वानो एव प्रचारको के विषय मे अधिकांश आर्यजनता अपरिचित ही रहती है। जिससे इन विद्यमान महानुभावो से वह प्रेरणा एव लाभ नहीं प्राप्त कर पाती। इस कमी को पूरा करने के उद्देश्य से हमने वर्तमान विद्वानो तथा प्रचारको आदि के परिचय एवं कार्यक्षेत्र के विवरण-सम्बन्धी पुस्तक प्रकाशित करने का निश्चय किया है।

तदनुसार वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में संलग्न वर्तमान/विद्यमान विद्वान्, संन्यासी, वानप्रस्थी, नैष्ठिक-ब्रह्मचारी, उपदेशक, आर्य-भजनोपदेशक, लेखक, प्रकाशक, आचार्य, शिक्षक आदि सभी महानुभावो से विनम्र निवेदन है कि–

१ पासपोर्ट आकार के अपने फोटो के साथ-साथ अपना सक्षिप्त परिचय (फुलस्केप के लगभग दो पृष्ठों मे),

२ अपनी प्रचार, लेखन, शिक्षण आदि की गतिविधिया,

३ कार्यक्षेत्र/कार्ययोजनाओं का उद्देश्य,

४ अन्य विशिष्ट बाते;

५ वर्तमान पता एव दूरभाष-संख्या,

यह सब लिखकर निम्नलिखित पते पर कृपया यथासम्भव शीघ्र (नवम्बर के अन्त तक) भिजवा देवे, जिससे पुस्तक-रूप मे प्रकाशित होने पर आपके बारे में अपरिचित आर्य-जनता परिचित होकर प्रेरणा एव लाभ प्राप्त कर सके। तथा परस्पर के परिचय से संगठित होकर आर्यसमाज के छठे नियम के अनुसार अधिकाधिक उपयोगी कार्य कर सके।

विशेष–१. निकटतम परिचित अन्य सज्जन भी पूर्वोक्त महानुभावो का प्रामाणिक परिचय भेज सकते हैं।

२ अथवा इन महानुभावो का नाम एवं पता भेज सकते हैं।

३ इस परिचय-प्रकाशन में हमारा उद्देश्य इतिहास लिखना नहीं, अपितु विद्यमान/वर्तमान विशेष-योग्य एव वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार मे सलग्न महानुभावों के विषय मे अधिक से अधिक जनता तक जानकारी पहुचाना है।

निवेदक **आचार्य आनन्दप्रकाश**, आर्ष शोध-संस्थान
अलियाबाद, म० शामीरपेट, जिला रगारेड्डी (आन्ध्र) पिन–५०० ०७८

राष्ट्र, राष्ट्रभाषा/राजभाषा.......... (पृष्ठ १ का शेष)

है। भाषा 'संस्कृति' के प्रवाह का माध्यम होती है, इसलिए एक ओर पर्यावरण-मैत्री वाली भारतीय संस्कृति के प्रवाह के माध्यम संस्कृत/हिन्दी को ही मिटाने की कोशिश की गई शिक्षा मे इनको स्थान न देकर और बच्चों को बचपन से ही इनसे वचित रखकर, दूसरी ओर पर्यावरण-विरोधी भाषा अंग्रेजी लादकर बचपन से ही पर्यावरण-विरोधी-मानसिकता भी पैदा की गई।

हॉ, अंग्रेजी भाषा पर्यावरण-विरोधी है। इसकी कुछ गहराई से छानबीन करने की आवश्यकता है। 'भारत' की पहचान इसकी चारित्रिक और सास्कृतिक श्रेष्ठता के कारण ही है। इसलिए यह राष्ट्रीय गौरव और राष्ट्रीय अस्मिता का प्रश्न है। कोई भाषा जिनके द्वारा विकसित की जाती है, उनकी मानसिकता ही उसमे झलकती है और वह उसी मानसिकता का प्रसार भी करती है। सीखने वाले मे उसी का अध्यारोपण करती है। उदाहरण के लिए 'एक पथ दो काज' या 'नौ नगद न तेरह उधार' साधारण कामकाजी या महाजन लोगो की कहावते हैं, जिनके लिए दो ही अंग्रेजी अभिव्यक्तियां हैं 'टु किल टू बर्ड्स विद वन स्टोन' (to cill two birds with one stone) और 'ए बर्ड इन हैण्ड इन वर्थ टू इन दि बुश' (a bird in hand is worth two in the bush) ये अभिव्यक्तया साफ बताती हैं कि ये शिकारियों, बहेलियों, चिडीमारो की अभिव्यक्तिया हैं, जिनकी शिकार और मासाहार की मानसिकता भी इनसे साफ झलकती है, और यही मानसिकता इन्हे सीखने वाले की बन जाएगी। परपीडन और मासाहार स्वभाव ही हो जिनका, उनके द्वारा ऐसी ही भाषा की सृष्टि हो सकती है क्योकि (अमेरिकी सन्त एमेट फाक्स के शब्दों में) 'भोजन का हमारे जीवन मे सर्वाधिक महत्त्व है। यही हमारे जीवन-चरित्र का निर्धारण करता है'। अवधी मे तो कहावत ही है **'जैसा पिए पानी वैसी होए बानी' 'जैसा खाए अन्न वैसा होए मन।'** अत इमरती, खोया, गुलाब-जामुन, घेवर, जलेबी, बरफी, रसगुल्ला आदि भांति-भांति की स्वादिष्ट मिठाइया सब उन्हे मास ही दिखती हैं। कहा मिठाई और कहां मास ? पर हाय रे अंग्रेज ! 'स्वीट' पहिले जोडकर हर मिठाई को 'मास' (sweet-meet) बना दिया।

संस्कृति के ऊपर आक्रमण

सबको जोडने वाली हिन्दी विश्वमैत्री, पर्यावरण-मैत्री का प्रसार करके एक श्रेष्ठ विश्व का निर्माण करने का अनवरत प्रयत्न करती आ रही है, और अपनी सत्य-निष्ठा के कारण सभी बाधाओ-विरोधो का सफलतापूर्वक सामना करती रही है। डॉ० मैग्रेसर (इग्लैण्ड) के शब्दो मे "हिन्दी दुनिया की महान् भाषाओ मे से एक है। भा-रत को समझने के लिए हिन्दी का ज्ञान अनिवार्य है, क्योंकि भारत आज शिक्षा, उद्योग, तकनीकी के हिसाब से दुनिया का अग्रणी देश है।" भारत मे जब अंग्रेजी शिक्षा रोपी जा रही थी, तभी ब्रिटिश सरकार के विरोधी दल के सदस्य 'हागसन' ने इसे 'सस्कृति-अपहारक' प्रयास कहकर विरोध किया था। किन्तु चालाक 'मेकाले' ने एक कुचक्र रचा कि किसी तरह भारतीय अपना स्वत्व भूल जाए, अपना इतिहास भूल जाए, अपनी भाषा-सस्कृति भूल जाए, और वेशभूषा भी बदल ले। उसने बडी चतुराई से एक योजनाबद्ध शैक्षिक कुचक्र चलाया और सरकार से स्वीकृत भी करा लिया। ईसाई मिशनरियो ने हिन्दी मे इतिहास, भाषा-विज्ञान, लिपि-विज्ञान, पुरातत्त्व के ग्रन्थ लिखे-लिखाए। इनमे अधिकतर विद्वान् विदेशी अंग्रेज थे। इन लोगो ने एक मुहावरा उछाल दिया कि 'हिन्दी' शब्द विदेशी है। उन्होने आर्यो को विदेशी आक्रान्ता बताकर आर्यों अनार्यों के बीच भीषण सघर्ष की कहानी भी गढ़ दी। डॉ० हार्नले और ग्रियर्सन आदि विद्वानो ने आर्यभाषाओ का वर्गीकरण करते हुए आर्यमूल तथा द्रविडमूल के भाषा-परिवारो की सकल्पना कर उत्तर-भारत और दक्षिण-भारत मे भेदभाव तथा अलगाव पैदा करने का प्रयास किया।

दुर्भाग्यवश आजादी के बाद अंग्रेजों के मानव-पुत्रों ने इस विवाद को और गहराने का प्रयास किया। चोटी के कुछेक बडे-बडे राजनेता भी इस मृगमरीचिका के जाल में फस गए, जबकि वास्तविक्ता कुछ और थी। सन् १९८१ की जनगणना के अनुसार अंग्रेजी आधे प्रतिशत से भी कम भारतीयो की मातृभाषा है। यह भारतीय भाषा ही नहीं है। फिर भी हम इसके शिकंजे में कसे हुए हैं, यह हमारी दासता का अभिशाप है। पहिले यवन-आक्रान्ता आए थे और स्वभाषा भूल फारसी सीखना गौरवास्पद हुआ था, फिर अंग्रेज आए और अंग्रेजी थोपी गई, यही श्रेष्ठता की प्रतीक हुई, उन्नति का साधन बनी, देशी भाषाए गवारापन की निशानी (vernaucular अपवित्र भाषा, गाली की भाषा) हो गई, वेदो में उपलब्ध भारतीय ज्ञान के भ्रष्ट अंग्रेजी अनुवाद विश्व मे प्रचारित किए गए, वही पढा-पढाकर हमारे भी दिमागों में ठूंसा गया कि हम मूर्ख चरवाहों, गडरियों की सन्तान हैं; और अंग्रेजी-शासन हमें सभ्य बनाने आया है। हमें अपने साहित्य से, अपनी श्रेष्ठ संस्कृति से, अपनी उत्कृष्ट परम्पराओ से काटकर दरिद्र (poor), दीन-हीन घोषित करके हमारा स्वाभिमान नष्ट किया गया, और हम जर-खरीद गुलाम बने **'दिल्लीश्वरो वा जगदीश्वरो वा'** गाते रहे। इस प्रकार हमारी शिक्षा पर अधिकार करके, हमारा मत-परिवर्तन (brain-washing) करके, अंग्रेजी को हमारे लिए अर्थ-काम-सिद्धि का साधन बताकर हमे दासता-पाश में ऐसा कसा गया कि आजाद होकर भी हम उनके दासभक्त ही बने रहे। कवि ने ठीक ही कहा है,

"आक्रान्ता करता सदा, जन-संस्कृति का नाश।
शिक्षा पर अधिकार कर कसे दासता-पाश।" (अनल-प्रकाश पृ० ३००)

अंग्रेजी द्वेष बढ़ानेवाली भाषा

हिन्दी जोडने वाली भाषा है, मैत्री वाली भाषा है; इसके विपरीत अंग्रेजी भाषा के विकास में द्वेष-भावना ही उभरकर आई। उदाहरण के लिए 'जवान (युवा)' के लिए शब्द है 'एडल्ट (adult)', और उससे व्युत्पन्न है 'एडल्टरी (adultery)' इन्हे 'ब्रेव, ब्रेवर' (बहादुर, बहादुरी), 'ड्रज, ड्रजरी (चाकर, चाकरी), 'नेव, नेवरी' (धोखेबाज, धोखेबाजी), 'स्लेव, स्लेवरी' (गुलाम, गुलामी), 'राइवल, राइवलरी' (प्रतिद्वन्द्वी, प्रतिद्वन्द्विता) आदि की पंक्ति में रखकर 'एडल्टरी' का सीधा-सच्चा अर्थ 'जवानी (यौवन)' निकालना चाहिए था; किन्तु शब्द-कोश में इसका अर्थ है 'जार-कर्म, पर-स्त्री-गमन, व्यभिचार'। ऐसा क्यो है ? कारण यही है कि भारतीय सस्कृति ब्रह्मचर्य को जीवन का अनिवार्य तप मानकर वीर्य-नाश का और कामवासना का भरसक निषेध करती है (कल्याण के देवता, शिव 'कामारि' हैं)। इसीलिए हठी, दुराग्रही और वेद (सत्य-ज्ञान)-विरोधी मानसिकता ने आसुरी सस्कृति में इसके ठीक उल्टे अर्थ मे, जार-कर्म, पर-स्त्री-गमन औरा व्यभिचार को 'जवान' का स्वधर्म (सामान्य लक्षण) घोषित कर दिया।

देवभाषा/आर्यभाषा और उनकी ज्ञानमूलक संस्कृति के प्रति भीषण विद्वेषाग्नि मे जलते हुए अज्ञान-तमसान्ध ये लोग अर्थ-काम-प्रधान अपसस्कृति से चिपके रहकर व्यभिचार-जन्य फिरग (एड्स के नये नाम से कुख्यात) रोग पालने मे भी निर्लज्जतापूर्वक गर्व ही अनुभव करते हैं, इसे 'बडे लोगो की बीमारी' कहते हैं। हजारो साल से ससार भर मे फिरग और फिरगी शब्द यूरोपीय और योरोप के समानार्थी कुख्यात हो चुके हैं। कि बहुना, इस भाषा के जानकार एक 'रिचर्ड लैडरर महोदय' ने तो 'क्रेजी इंग्लिश' (अर्थात् पागलपन की भाषा 'अंग्रेजी') नाम का एक ग्रन्थ ही लिखाथा (जिसे १९६९ मे 'साइमन एण्ड शुस्टर', न्यूयार्क ने प्रकाशित किया था)। फिर भी भाषा मे सुधार के नाम पर कुछ विद्वानो ने सुधारने की कुछ कोशिश की, जेसे प्रोग्राम की वर्तनी programme (इंग्लैण्ड वाली वर्तनी) के बजाय program (अमेरिका वाली वर्तनी) सुझाई; किन्तु उनकी तूती भाषा के दुराग्रही कठमुल्लाओ के नक्कारखाने मे बोलकर ठप्प हो गई।

द्वेषभाव की ही उपज है अलगाववाद और यही आधार है अंग्रेजो की 'फूट डालो और राज करो' (divide and rule) नीति की सफलता का, जिसका शिकार भारत होता रहा है, और अपना क्षेत्र बराबर खोता रहा है। इतिहास साक्षी है कि राज्य, भाषा, धर्म, खान-पान, रीति-रिवाज की स्थान-स्थान पर विभिन्नता होने पर भी आचार-विचार से एकात्म, अर्थात् एक सामान्य संस्कृति के उपासको का यह 'भा-रत' (भा=ज्ञान की शोध और प्राप्ति में रत=लगा हुआ) वेद-काल से एक विशाल राष्ट्र ही था (जिसे अब 'बृहत्तर भारत' नाम दे सकते हैं)। इसी की प्रशसा मे विष्णु-पुराण के रचयिता ने पूरा एक अध्याय लिखा है। इसकी भौगोलिक सीमा बताते हुए (विष्णु-पुराण २/३/१ मे) ऋषि कहते हैं कि "जो भूखण्ड समुद्र (हिन्द-महासागर) के उत्तर मे और हिमाद्रि (हिमालय पर्वत श्रेणी) के दक्षिण मे है वह भारत है और उस भूमि की सन्तान भारती (भारतीय) है।" इस सीमा-रेखन के अनुसार पश्चिम मे गान्धार (वर्तमान अफगानिस्तान) और फारस या ईरान (आर्य–आर्यन्–ईरान) भारतीय (आर्यों के) देश थे। पूर्व मे ब्रह्मदेश (म्यांमार), दक्षिण में श्रीलंका (सिह–सिहल द्वीप–श्रीलंका या सीलोन) भी कभी भारत के ही भाग थे जिन्हें अंग्रेजों ने काटकर अलग किया। सुदूर पूर्व में स्याम, जावा (यव द्वीप), सुमात्रा, मलाया (मलय द्वीप), बाली-द्वीप तक भारतीय संस्कृति का प्रसार था। इसके बहुत से प्रमाण अब भी जगह-जगह मिलते हैं। यह बृहत्तर भारत 'एक विश्व श्रेष्ठ विश्व' की कल्पना साकार करने वाले 'भा-रत-जगत्' या 'विश्वभारत' की प्रगति का मानो एक पड़ाव था। अंग्रेजो ने फूट डालकर अपनी सत्ता स्थापित की और भारत छोडते भी विभंजन करके इसके तीन खण्ड कर दिए। **(क्रमशः)**

हार्दिक बधाई

श्री स्वामी इन्द्रवेश जी एवं पं० श्री सत्यवीर जी शास्त्री

सादर नमस्ते।

आशा है प्रभु कृपा से आप सभी स्वस्थ एवं प्रसन्न होंगे। सर्वहितकारी मे यह समाचार जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि आप हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एवं मंत्री निर्वाचित हुए हैं। इसके लिए कुलवासियों की ओर से अनेकश: हार्दिक बधाई।

आशा है आप दोनों के नेतृत्व में हरयाणा के ग्रामीण क्षेत्र में आर्यसमाज के प्रचार को अब विशेष गति मिलेगी। मेरा इतना निवेदन और है कि जैसे बने साम दाम से हरयाणा में आर्यसमाज का आपसी गतिरोध दूर हो सके। क्योंकि इन झगडे एवं केसों से आर्यसमाज का अधिक व्यय हो रहा है। आशा है आप दोनों इधर अधिक ध्यान देंगे। तथा हरयाणा के ग्रामीण क्षेत्र में आर्यसमाज के कार्य में जो शिथिलता आयई है उसमें नवजीवन का पुन: संचार हो। शेष प्रभु कृपा।

भवदीय : धर्मानन्द सरस्वती, गुरुकुल आश्रम आमसेना, उडीसा।

वैदिक भक्ति साधन आश्रम आर्यनगर रोहतक की स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष्य में

चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ

सभी यज्ञप्रेमियो को यह जानकर अतिप्रसन्नता होगी कि वैदिक भक्ति साधन आश्रम आर्यनगर रोहतक में स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष्य में आश्रम ट्रस्टी श्री दीपचन्द जी एव आश्रम प्रधान श्री उदयप्रकाश जी आर्य की प्रेरणा से चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ एव ५१ लाख गायत्री जाप का कार्यक्रम आश्रम अधिष्ठाता व्यासदेव जी की अध्यक्षता मे १ नवम्बर, २००१ से ३० नवम्बर २००१ तक होना निश्चित हुआ है।

कार्यक्रम

ऋग्वेद यज्ञ—१ नवम्बर सांयकाल से आरम्भ होकर १५ नवम्बर, २००१ सांयकाल तक

आमंत्रित विद्वान्—पूज्य श्री आचार्य सत्यव्रत राजेश पूर्व कुलपति, गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय, हरद्वार

वेदपाठ—गुरुकुल गौतमनगर के ब्रह्मचारीगण

यजुर्वेद यज्ञ—१६-११-२००१ प्रात से १८-११-२००१ प्रात तक

सामवेद यज्ञ—१८-११-२००१ साय से २०-११-२००१ सायं तक

आमंत्रित विद्वान्—आचार्या प्रियम्वदा जी गुरुकुल नजीबाबाद।

वेदपाठ—गुरुकुल नजीबाबाद की छात्राएं।

अर्थववेद यज्ञ—२१-११-२००१ प्रात से ३०-११-२००१ तक प्रात तक।

आमंत्रित विद्वान्—आर्य तपस्वी श्री सुखदेव जी महाराज, आचार्य नरेन्द्र जी मैत्रेयी रोहिणी, दिल्ली, डॉ० देव शर्मा जी रोहिणी, दिल्ली, पं० खुशीराम पानीपत।

वेदपाठ—गुरुकुल चोटीपुरा की छात्राएं।

योगसाधना—प्रात: ५ बजे से ५.४५ बजे तक ध्यान प्राणायाम, व्यायाम श्री ज्ञानमुनि जी (पूर्वनाम ज्ञानचन्द जी) के निर्देशन में होगा। तत्पश्चात् यज्ञ प्रात: ६ बजे से आठ बजे तक वेदपाठ भजन उपदेश आदि।

सम्मिलित गायत्री जाप—१०-३० से लेकर ११-३० बजे तक एवं सायंकाल ३ बजे से ६ बजे तक यज्ञ एवं वेदपाठ भजन उपदेश आदि।

महात्मा प्रभुआश्रित मेला—२५-११-२००१ (दिन रविवार) कुटिया गुरुकुल सुन्दरपुर।

गायत्री [illegible]—[illegible]-२००१ प्रात: ११ बजे से सायं २ बजे तक

पूर्णाहुति—३०-११-२००१ को दोपहर लगभग १२ बजे तक होगी।

निवेदक—वेदप्रकाश, मंत्री

आर्यसमाज हांसी का उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज हासी का वार्षिकोत्सव २८ से ३० सितम्बर २००१ को बडी धूमधाम से मनाया गया। जिसमे २८ सितम्बर को मुख्य अतिथि श्री कृष्ण बांगड़ जी (चेयरमेन हरयाणा पब्लिक सर्विस कमीशन) के द्वारा ध्वजारोहण समारोह के पश्चात् उत्सव की कार्यवाही आरम्भ हुई, जिसकी अध्यक्षता श्री हरिसिंह जी सैनी (प्रधान आर्यसमाज नागोरी गेट हिसार) ने की तथा विशिष्ट अतिथि श्री कुलवीरसिंह अहलावत (नगर पार्षद हासी) ३० सितम्बर को मुख्य वक्ता स्वामी अग्निवेश जी (आर्य सन्यासी, अध्यक्ष बन्धुआ मुक्ति मोर्चा) रहे इनके अलावा श्री सुभाष गोयल जी हरयाणा नगर विकास मत्री व सेठ श्री जगदीश आर्य मुकेश तथा श्री हरबसलाल जी कपूर (सहसचिव आर्य प्रादेशिक सभा मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली) का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया गया। उत्सव में भाग लेने हेतु विद्वान् स्वामी सर्वदानन्द जी कुलपति (गुरुकुल धीरणवास) डा वीरपाल, प० विश्वमित्र शास्त्री, श्री सहदेव बेधडक जी, श्री मामचन्द जी पथिक, जवरसिह खारी आदि भजनोपदेशको द्वारा तथा आर्यसमाज हासी के कुलपुरोहित यज्ञ के ब्रह्मा प० रामकिशोर जी शास्त्री ने तीनो दिन श्रद्धा से यज्ञ कराया तथा यजमानो को यज्ञोपवीत दिये गये एव वैदिक पथ पर चलने का मार्ग दर्शन दिया।

सतीशकुमार आर्य, मत्री
आर्यसमाज, हासी

आर्यसमाज मन्दिर 'बी' ब्लाक, सरस्वती विहार, दिल्ली में योग, ध्यान, साधना शिविर

आर्यसमाज मन्दिर 'बी' ब्लाक, सरस्वती विहार, दिल्ली मे आचार्य राजू वैज्ञानिक जी के पावन सानिध्य मे योग, ध्यान, साधना शिविर दिनाक २२ अक्तूबर से २८ अक्तूबर २००१ से प्रात ६ ३० बजे से ७ ३० बजे तक लगाया जायेगा। अत सभी भाई बहनो से प्रार्थना है कि इस कार्यक्रम मे सम्मिलित होकर आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त कर जीवन सफल बनाएं।

—कृष्णदेव, मन्त्री

अज्ञातवास क्यों ?

पाठकगण ! मूलशकर, (दयाराम तथा दयालजी) शुद्ध चैतन्य ब्रह्मचारी और तत्पश्चात् स्वामी दयानन्द सरस्वती ने २२ वर्ष की आयु में १८४६ में घर छोडा। सन् १८४७ मे नर्मदा पर चाणोद में स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती सम्भवत: कनखल से लगभग २३ वर्ष की आयु मे सन्यास लिया। तत्पश्चात् योगाभ्यास करते हुए आबू से सन् १८५५ मे हरद्वार पहुचे। यहा तक ८ वर्ष की योगसाधना हिमालय तक पूरी की। वह योग के प्रचण्ड प्रचारक थे। अत साधना को प्रचारित करने के लिए स्वामी जी ने 'अपना जन्म चरित्र में लिखा है, कि "जब तक मेला रहा, तब तक मैं चण्डी के पहाड़ के जगल मे योगाभ्यास करता रहा। जब मेला हो चुका, तक ऋषिकेश जा के योगियों से योग की रीति सीखता रहा।"

तत्पश्चात् स्वामी जी सन् १८५५ के अन्त मे मैदान मे आये। सन् १८५७ तक वह क्रान्ति युद्ध (गदर) काल मे गदरं के क्षेत्र हरद्वार से मेरठ, गढ, सम्भल, मुरादाबाद, काशीपुर, फर्रूखाबाद, इलाहाबाद, कानपुर, बनारस, चुनार से विन्ध्याचल होकर नवम्बर सन् १८५७ मे विफल गदर के पश्चात् नर्मदा पर पहुंचे। महाराज के ही शब्दो मे जो उन्होंने नर्मदा तटवासियों के अध्यक्ष के पूछने पर लिखे हैं। उसने पूछा, "आप कहा से आये हैं ? मैंने कहा, काशी से आया हू। नर्मदा के उद्‌गम स्रोत को जाता हू। तत्पश्चात् अध्यक्ष का भेजा हुआ, दूध पीकर सो गया। सूर्योदय तक सोया। सन्ध्या आदि से अवकाश प्राप्त करके, उठा और यात्रा के लिए चला।" यह 'अपना जन्म चरित्र', 'थियोसोफिस्ट' दिसम्बर सन् १८८० के अक में छपा है। यहां पर मैडम ब्लैवैस्ट्की पत्र की सम्पादिका के लिखे शब्दो मे "यहा पर आत्म-कथा समाप्त हो जाती है।"

इसके बाद स्वामी दयान्द सरस्वती महाराज जी नर्मदा के बीहंडों में ३ वर्ष तक कहा रहे ? और क्या करते रहे ? स्वामी दयान्द ने इस सम्बन्ध में कहीं भी और कोई भी विगत (रिकार्ड) नहीं छोडा। जबकि लगभग २३ सालों में ६६ ग्रन्थ लिखें हैं।

दि १४ नवम्बर सन् १८६० में नर्मदा के अज्ञात मौन के मथुरा पहुचने पर टूटने की पुष्टि भी '(१) आर्यसमाज का इतिहास' (डा सत्यकेतु विद्यालंकार डी.लिट्. पेरिस' कृत पृष्ठ ६७३)से ही होती है।

यहा धधकता प्रश्न यह होता है, कि महाराज ने सन् १८४६ मे घर छोड़ने से लेकर, सन् १८५७ में नर्मदा पर 'अपना जन्म चरित्र' में अज्ञात मौन ३ साल का क्यो धारण किया ? जबकि इसके विपरीत जन्म और चाणोद से लेकर, नर्मदा पहुंचने तक का ३३ वर्षों का जीवन वृत्तान्त निर्बाध गति से ३ बार में लिखा है ?

यहा (१) और यह प्रश्न पुन. होता है, कि गदर के ३ संयोजकों, स्वामी ओम्प्रानन्द (१६० वर्ष, क्रान्ति प्रसारक चिन्ह कमल पुष्प और रोटी और ३१ मई सन् १८५७ ' की सैनिक व जनक्रान्ति की तिथि सन् १८५५ के आरम्भ में हरद्वार की सभा में निर्धारित कर्ता-मौलवी जहीर अहमद सर्वखाप पचायत सौरम मुजफ्फरनगर के अनुसार) और इन्हीं के ११० वर्षीय शिष्य स्वामी पूर्णानन्द कनखल, और इन्हीं पूर्णानन्द के शिष्य प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द ७७ वर्ष अपने विद्यागुरु के सन् १८५५ से सौरम के रिकार्ड के अनुसार अग्रेजों के विरुद्ध गुप्त सभाओं में सम्पर्क में रहनेवाले स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज (३३वर्ष) ने नर्मदा पर ३ साल का अज्ञात मौन किस विवशता से विवश होकर, धारण किया ? यदि यहां कहा जाता है, के मौन किसी योग साधना को छिपाने को किया, तो यह अनुमान चाणोद से नर्मदा तक योग साधना का लिखा विस्तृत विवरण काट देता है। तो यह प्रश्न भी अनसुलझा ही खडा है। तो आइये इसका उत्तर खोजते हैं।

'१८५७ क्रान्तिजनक दयानन्द लोकतंत्र के सूत्रधार'

पाठकगण ! तनिक विचारिये तो सही। '१८५७ क्रान्तिजनक दयानन्द' गदर के संयोजक व स्वराज आधारित लोकतंत्र के सूत्रधार दयानन्द ने सन् १८५७ में प्रथम काशी सस्करण 'सत्यार्थ प्रकाश' में अंग्रेजी साम्राज्य की भारत से उपनिवेशी सरकार के उच्छेदक उपदेश सर्वप्रथम छठे समुलास में लिखे हैं। विशेषत: उल्लेखनीय यह बात है, कि स्वामी जी की प्रजातांत्रिक राजव्यवस्था भी वेद पर ही आधारित है। इसे देखने से स्वामी जी के राजनीति का दूसरा दिव्य चाणक्य होने का परिचय भी मिलता है। आप छठे समुल्लास का आरम्भ ऋग्वेद के म ३/सूक्त ३८/म. ३ 'त्रीणी राजना' से करते हैं। इसके अनुसार जिस वैदिक आधार पर आप अंग्रेजों के क्रूर दमनकारी विश्व व्यापी साम्राज्य के विरुद्ध, विश्वलोककल्याणकारी, स्वदेशी, सर्वतंत्र स्वतंत्र, स्वराज युक्त, विकेन्द्रित, प्रजातांत्रिक राजव्यवस्थापक जो सूत्र लोकतान्त्रिक व्यवस्था पर निर्भीकता से तर्कपूर्वक लिखते हैं। ज्ञातव्य है, ये सूत्र कांग्रेस के जन्म से भी १० वर्ष पूर्व सन् १८७५ में लिखे थे। बाद में जिन्हें सन् १८८५ में जन्मी कांग्रेस ने संविधान में अधिकांश में अपनाया। इस व्यवस्था के प्रचार से अंग्रेजों का एकछत्र साम्राज्य ध्वस्त होना सुनिश्चित था। ९० साल बाद १५ अगस्त १९४७ में ऐसा ही हुआ। अत: ऐसे लोकतंत्र का सूत्रधार दयानन्द अंग्रेजों के लिए गम्भीरतया संज्ञेय क्यों नहीं होता ? अत अंग्रेजों ने ऐसे अपने साम्राज्य के उच्छेदक, विचारक, लेखक, उपदेशक और प्रचारक के विरुद्ध त्वरित कडा संज्ञान क्यों नहीं लिया होगा ? क्योंकि यह राजधर्म पर लिखी सामग्री कोई छिपी तो थी नहीं। यह अंग्रेजों के विरुद्ध स्पष्ट रूप से कार्यालयीन प्रक्रिया पर आधारित व सुनियोजित घोषित रूप से विस्फोट नहीं, तो और क्या था ? यह खुला क्रान्तिकारी विद्रोह नहीं तो और क्या था ? अत: दयानन्द को अंग्रेजों ने "छठा कानून सन् १८५७" की सर्वोच्च प्राथमिकता वाली मारक व हिंसक सूची में सूचीबद्ध क्यों नहीं किया होगा ? इस दशा में अंग्रेजों से मिलने वाली सम्भावित यातना को देखने के कारण ही स्वामी जी ने लिखा है, कि "मेरी अंगुलियों को यदि कोई बत्ती बनाकर भी जलायेगा, तो भी, मैं सत्य लिखने से नहीं हटूंगा।"

आविष्कारक बिन्दु :– स्वामी जी ने सत्य सिद्धान्ती होने के कारण कर्तव्य सत्य को ही लिखा है। अत: ६, ८,१०-व ११वें समुल्लास में अंग्रेजी साम्राज्य को तत्कालीन भविष्य के कालान्तर में उखाड कर, फेंकने वाले उपदेशों ने सरकार को प्रतिशोध और प्रतिकार के लिए दयानन्द के विरुद्ध विचलित क्यों नहीं किया होगा ? यहां यह भी विचारणीय है, कि स्वामी जी के मस्तिष्क में इन क्रान्तिकारी उपदेशों के आविष्कारक बिन्दु कौन से थे ? इस प्रश्न के उत्तर में ध्यातव्य है, कि विफल गदर के काल मे स्वामी जी गदर वाले उस क्षेत्र मे चक्कर काट रहे थे, जहां 'सन् १८५७ के विद्रोहियों' को फांसी देने वाले 'छठा कानून' के द्वारा दमन से भारतीयों में हाहाकार मचा हुआ था। अत. इन क्रान्तिकारी उपदेशों का आविष्कारक पहला कारण बिन्दु '१८५७ का छठा कानून है। दूसरा कारण बिन्दु है 'विफल गदर'। स्वामी जी ने इन उपदेशों का इस ३ साल के उस मौन में मनन किया। वह मौन जिसे अंग्रेजों का ध्यान अपने ऊपर से हटाने को धारण किया। तत्पश्चात् मौन में ६, ८, १० व ११ वें समुल्लास मे स्वराज आन्दोलन वाहक क्रान्तिकारी उपदेशों को लिखने से पूर्व इनकी मारक क्षमता पर विचार किया था। तत्पश्चात् सन् १८७४ में 'सत्यार्थप्रकाश' में लिखा। यह सन् १८५७ मे काशी से प्रथम बार १२ समुल्लासों वाले सत्यार्थप्रकाश में प्रकाशित हुआ। यहा इतना विचारने पर स्पष्ट हुआ, कि विफल गदर के कारण मौन हुआ। विफल गदर और मौन दोनों के कारण 'सत्यार्थ प्रकाश' के क्रान्तिकारी उपदेश आर्यसमाज अस्तित्व में आये। ये दोनों ही दासता के विध्वसक सिद्ध हुये। ये न केवल भारतीय स्वाधीनता के ही वाहक बने, अपितु विश्वव्यापी साम्राज्य विध्वसंक बने। इन्हीं से परतंत्र राष्ट्रों ने उपनिवेशी साम्राज्य का प्रतिकार करने की ऊर्जावती प्रेरक व मारक शक्ति प्राप्त की। इसका प्रमाण यह है, कि 'सत्यार्थ प्रकाश' प्रकाशन सन् १८७५ के कारण विश्व के परतन्त्र देशों से साम्राज्य समाप्त हो गया। बुद्धिमान् स्वामी जी की महती बुद्धिमत्ता व कार्यकुशलता का प्रबल प्रमाण यह है, कि क्रान्ति यज्ञ के स्वयं संयोजक रहते हुए भी अपना नाम सरकारी इतिहास में कभी और कहीं भी नहीं आने दिया। अत: आर्यजगत् को एक स्वर में नि:शंक बोलना चाहिए, कि अंग्रेजी साम्राज्य के उच्छेदक निर्भीक उपदेशो के आविष्कारक उक्त बिन्दु 'छठा कानून १८५७', विफल गदर और ३ साल का अज्ञात वासित नर्मदा का सन् १८५७-६० का मौन ही है। अत: गदर के संयोजक ऋषि दयानन्द ही सिद्ध होते हैं।

स्वतंत्रता भारत के मंदिर में—ऐनीबिट ने कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में महर्षि दयानन्द के बारे में कहा था, कि स्वतंत्र भारत के मंदिर में बड़े-बड़े नेताओं की बड़ी-बड़ी मूर्तियां लगी होंगी। इन मूर्तियों में सबसे बड़ी मूर्ति स्मारक के रूप में गदर के संयोजक के रूप में महर्षि दयानन्द की मूर्ति होगी।

आर्यसमाज शेखपुरा खालसा का उत्सव

आर्य समाज शेखपुरा खालसा तह. घरौंडा जिला करनाल का वार्षिक उत्सव २७-२८-२९ अक्तूबर २००१ को होना निश्चित हुआ है।

—देवेन्द्र कुमार, मंत्री, आर्यसमाज शेखपुरा खालसा

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : [illegible]) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : [illegible]) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। पत्र के प्रत्येक प्रकार के विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० [illegible]/७२ सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०२
पंजीकरणसंख्या टैक/एस.आर./[illegible]/रोहतक/99 ☎ ०१२६२-७७८०१

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सर्वहितकारी
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र रोहतक

प्रधानसम्पादक : प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष २८ अंक ४६ २८ [illegible] २००१ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

आर्य प्रतिनिधि सभा सरकार के खिलाफ आर-पार की लड़ाई लड़ेगी

झज्जर। स्थानीय गुरुकुल में आर्य प्रतिनिधि सभा की आम सभा हुई जिसमें सभा के मामलों में सरकारी हस्तक्षेप के बाद सभा ने आम सहमति से सरकार के खिलाफ आरपार की लडने के प्रस्ताव पर मोहर लगा दी है।

प्रदेश भर से आये आर्य प्रतिनिधि सभा के सदस्यों ने आर्यसमाज की संपत्ति पर नजर रखने और सभा में हस्तक्षेप करने की कड़ी निंदा की गई। यही नहीं आर्य सभा ने मुख्यमंत्री ओम्प्रकाश चौटाला के साथ पंजाब के मुख्यमंत्री प्रकाशसिंह बादल को भी इसमें दोषी करार दिया है और इनके खिलाफ खुली जंग का ऐलान करते हुए सभा ने उनके खिलाफ सड़कों पर उतरने, सांझे पुतले जलाने व विरोध प्रदर्शन करने का फैसला लिया है। सभा ने एक अन्य महत्त्वपूर्ण फैसले में भगत मंगतुराम, केदारसिंह आर्य, आचार्य यशपाल और प्रकाशवीर विद्यालकार को सरकार के हाथों में खेलने और आर्यसमाज को तोडने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करने का दोषी करार देते हुए सर्वसम्मति से उनका आर्यसमाज से बहिष्कार करने की घोषणा की है। उनका बहिष्कार तब तक जारी रहेगा जब तक वे सार्वजनिक माफी नहीं मांगते। चुनावों के समय से ही आर्य प्रतिनिधि सभा के चुनाव के बाद सरकार का हस्तक्षेप बढने से आर्यसमाज के लोगों में रोष है।

सभा मे यह भी फैसला किया गया कि आर्यसमाज पहली नवंबर को प्रदेश के सभी गांव कस्बा एवं नगर के सार्वजनिक स्थानों पर मुख्यमंत्री ओम्प्रकाश चौटाला तथा पंजाब के मुख्यमंत्री प्रकाशसिह बादल के पुतले फूकेगे। आर्यसमाज के प्रतिनिधियों ने बैठक में कहा कि श्री चौटाला आर्यसमाज को इसलिए तोड़ना चाहता है कि आर्यसमाज हरयाणा की जीवन मरण रेखा एस वाई एल. के मुद्दे को उठाता रहा है जिसके कारण दोनों ही मुख्यमंत्री आर्यसमाज के पीछे पड़े हैं।

सभा की बैठक में यह भी निर्णय लिया गया कि पहली नवंबर के बाद प्रदेश के १०० बड़े गांवों में जनजागरण अभियान के तहत जन सभा की जायेंगी और प्रदेश सरकार का आर्यसमाज से हस्तक्षेप खत्म करने के लिए राज्यपाल को ज्ञापन सौंपा जाएगा। इसके बाद ९ दिसंबर को आर्यसमाज की ओर से प्रदेश स्तरीय महासम्मेलन जींद में होगा। आम सभा में पूर्व केन्द्रीय रक्षा राज्यमंत्री प्रो. शेरसिंह, हरयाणा निर्माण व सभा सदस्य जगदीशराय कौशिक तथा स्वामी इन्द्रवेश भी उपस्थित थे।

(दैनिक हरिभूमि से साभार)

बलवानसिंह सुहाग, प्रकाशवीर दलाल एवं केदारसिंह आदि के द्वारा आर्यसमाज की सम्पत्ति एवं संगठन का विनाश

प्रान्तीय कार्यकर्ता सम्मेलन गुरुकुल झज्जर मे श्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में इस बात पर गहरी चिन्ता और क्षोभ व्यक्त किया गया कि ये व्यक्ति आर्यसमाज की संस्थाओ में अन्धाधुन्ध हस्तक्षेप कर रहे हैं। सस्थाओं की संचालन समितियों को भंग करके नई समितिया बनाकर असामाजिक व्यक्तियो को संस्था मे घुसेड रहे हैं। इनकी इस प्रवृत्ति पर तुरन्त रोक लगाने के लिए रोहतक के न्यायालय में सभामन्त्री प्रो० सत्यवीर शास्त्री ने मुकदमा डाला है।

साथ ही यह भी आवश्यक है कि हर आर्यसमाज अपनी बैठक बुलाकर इनके खिलाफ निन्दा प्रस्ताव पारित करे और इनका बहिष्कार करे।

सभा के सभी पदाधिकारी अवैतनिक रूप मे समाज की सेवा करते हैं किन्तु श्री बलवानसिह सुहाग श्री रामफल बसल के नियुक्ति पत्र के अनुसार वेदप्रचार फंड की दानराशि मे से पन्द्रह हजार रुपये मासिक वेतन लेगा। यही नहीं, श्री सुहाग ने केदारसिह आर्य को सभा कार्यालय मे विशेष अधिकारी नियुक्त किया है और दीपेन्द्र शास्त्री को इसके अंगरक्षक के रूप मे लगाया है।

श्री बलवानसिंह सुहाग अपने आपको समाचार पत्रो मे तटस्थ घोषित करते रहते हैं। किन्तु सभा पर मुकदमे करनेवाले प्रमुख विपक्षी केदारसिह और दीपेन्द्र को सभा कार्यालय में नियुक्त करके पुलिस संरक्षण प्रदान किया हुआ है।

—स्वामी इन्द्रवेश

कृतघ्नता की घोर निन्दा

दिनाक १४-१०-२००१ को आर्यसमाज नरेला की अन्तरग सभा, एक ऐसे व्यक्ति के विरुद्ध भर्त्सना प्रस्ताव पास करती है जिसने पूज्य स्वामी ओमानन्द जी जैसे तपोनिष्ठ, स्वतन्त्रता सेनानी, आर्यसमाज के हर छोटे बड़े आन्दोलनों की रूहे-रवां, गुरुकुल शिक्षा के उद्धारक, आर्यसमाज के दीवाने, घर के इकलौते लडके, जिसने अपनी करोडों की सम्पत्ति आर्यसमाज और कन्या गुरुकुल नरेला को दान कर दी और असंख्य आर्यसमाज के कार्य किये हैं, ऐसे तपस्वी त्यागी मूर्धन्य आर्यसंन्यासी को श्री रामफल जैसे अभी तक गृहस्थ के कार्यो मे फसे हुए और झूठ का व्यापार व वकालत करनेवाला एक साधारण-सा व्यक्ति जो वकालत की चालाकी से ऐसे ही दूसरे लोगों से मिलकर विश्वासघात करनेवाला, तथाकथित प्रशासक जो कि नूरा कुश्ती के माध्यम से धोखा देकर प्रशासक बन गया है, ऐसा पदलोलुपव्यक्ति सार्वदेशिक सभा व आर्यसमाज की अपार सम्पत्ति और शोहरत को लूटने के लिए अपने जैसे ही कई लोगो को भागीदार बनाकर, स्वामी ओमानन्द जी जैसे मूर्धन्य सन्यासी को केवल सार्वदेशिक सभा प्रधान पद से नहीं हटाता है अपितु उनको आर्यसमाज की सदस्यता से भी निरस्त कर देता है, ऐसे व्यक्ति के खिलाफ यह सभा इस निन्दनीय घृणित कार्य की घोर निन्दा एवं भर्त्सना करती है और आर्यजगत् से ऐसे लोगों का सामाजिक बहिष्कार करने की अपील करती है।

—मा० पूर्णसिंह आर्य,
महामंत्री आर्यसमाज नरेला, दिल्ली-४०

वैदिक-स्वाध्याय

परमात्मा से प्रेम

प्रियं नो अस्तु विश्पतिर्होता मन्द्रो वरेण्यः।
प्रियाः स्वग्नयो वयम्।। (ऋ० १.२६.७। सा०उ० ८.१.१)

शब्दार्थ—वह (विश्वपतिः) हम प्रजाओं का स्वामी (**मन्द्रः**) आनन्द देनेवाला (**वरेण्यः**) और वरणीय (**होता**) दाता अग्नि (**नः**) हमें (**प्रियं अस्तु**) प्यारा हो जाय तथा (**वयं**) हम भी (**स्वग्नयः**) उत्तम अग्नियों वाले होकर (**प्रियाः**) उसके प्यारे होजाय।

विनय—हे मनुष्य भाइयो ! हम अपने परम आत्मा को, परम अग्नि को भूल गये हैं। हम यह भी भूल गये हैं कि हम स्वय भी वास्तव में आत्मा रूप हैं, आत्माग्नि हैं। इसीलिए हम इस ससार की परम तुच्छ धन, दौलत, माल, असबाब, पुत्र, वधू, सुख, आराम, शरीर तथा सौंदर्य आदि विनश्वर वस्तुओं से तो इतना प्रेम करने लग गये हैं, इनमे इतने आसक्त, लिप्त और अनुरक्त हो गये हैं कि हमें इस गन्दी दलदल मे से अब ऊपर उठना असम्भव-सा होगया है। पर जो हमारा असली स्वामी सखा और सब कुछ है, परम पवित्र प्रभु है, उसे हम दिन रात के चौबीसों घटों मे से कुछ क्षणों के लिए भी स्मरण नहीं करते। अब तो हम होश संभाले, जागे और अपने परम प्यारे अग्नि प्रभु को अपना लें। वही हम सब प्रजाओ का एकमात्र पति है, स्वामी है, वही हमें सब सुखो को देनेवाला 'मन्द्र' है, वही एकमात्र है जो कि हम सबका वरणीय है और वही है जो कि अपने परम यज्ञ द्वारा हम प्रजाओ को सब कुछ दे रहा है। अरे प्यारो ! हम उसे छोड़कर कहा प्रेम करने लगे ? सचमुच हमने अपनी प्रेमशक्ति का अभी तक घोर दुरुपयोग किया है। क्या प्रेम जैसी पवित्र वस्तु हमें इन अशुचि, तुच्छ, अनित्य वस्तुओ में रखने के लिए ही दी गई थी। आओ, अब तो हम अपने प्रेम के लक्ष्य को पा लेवे और उस मन्द्र 'विश्पति' को, वरेण्य 'होता' को अपना प्यारा बना लेवें, अपना प्रेम समर्पण कर देवें।

किन्तु इस तरह प्रेमपथ पर चल देने पर हे भाइयो ! हमें भी उसे रिझाना होगा, उसे प्रसन्न करना होगा उसके प्रेम को अपने प्रति आकर्षण करना होगा, अर्थात् हमे भी उसका प्यारा बनना होगा और उसके प्यारे तो हम तभी बन सकते हैं जब कि हम "स्वग्नि" बन जाये, उत्तम प्रकार की आत्माये बन जायें। अत आओ, हम सब मनुष्य अपने उस परम प्यारे के लिए अपनी आत्माओं को शुद्ध करे। उस बृहत् अग्नि के लिए अपनी अग्नियो को उत्तम प्रकार की बना लेवे। अब हमारी आत्माग्नि से विश्वप्रेम की सुदर किरणे ही प्रसारित होवे, हमारी बुद्धि अग्नि मे से सत्य की ज्योति ही निकले, हमारी मानसिक अग्नि सर्वकल्याण के उत्तम विचारों मे ही प्रकाशित हुआ करे और हमारी चित्ताग्नि से पवित्र इच्छाये व भावनाये ही उठे। इस प्रकार हम उत्तम अग्निवाले होजाये। क्योकि इसी प्रकार वह हमारा प्यारा हमसे प्रसन्न होगा। इसी प्रकार हमने अपने प्यारे को रिझाना है।

(वैदिक विनय से)

वेदप्रचार मंडल सोनीपत के तत्त्वावधान में

खानपुर कलां में वेदों की अमृत वर्षा

यज्ञ समिति खानपुर कलां १५-१०-२००१ से २१-१०-२००१ तक यज्ञ का कार्यक्रम गत वर्षों की भांति चला रही है। इन तिथियों में भारत के उच्च कोटि के विद्वान् पधार रहे हैं। इस प्रकार तिथि १८-१०-२००१ को सायं तीन से ६ बजे का सत्सग का कार्यक्रम निराला रहा जिसकी अध्यक्षता स्वामी इन्द्रवेश जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने की। कार्यक्रम तीन से चार बजे तक स्वामी वेदरक्षानन्द जी ने वेदों के मन्त्रों से यज्ञ कराया। पश्चात् महाशय गुणपाल जी आर्य का भजन हुआ। इसके उपरान्त गुरुकुल की दो छात्राओं ने ऋषि दयानन्द पर भजन रखा। इसी कडी को आगे बढाते हुए अ० प्रतापसिह आर्य प्रधान वेदप्रचार मण्डल सोनीपत का उपदश रहा।

इसके उपरान्त स्वामी इन्द्रवेश जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का उपदेश इस प्रकार रहा। सबसे अच्छा कर्म यज्ञ करना है यज्ञ से विचारों में शुद्धता आती है। आज यज्ञ न करने से विचारहीनता आ गई जो इस तमाम दुर्दशा का कारण है। चारो आश्रमो के कर्तव्यो को स्वामी जी ने ऐसे समझाया जिसको सुनकर जनता में नई चेतना आ गई। सबको उपदेश दिया कर्म करो, जो व्यक्ति कर्म नहीं करता वह व्यक्ति कमीन कहलाता है। इसलिए जिस आश्रम में आप हैं उसमें पूरा परिश्रम करें। विद्यार्थी अपना पूरा समय विद्याग्रहण एव शरीर के निर्माण में लगाएं यही पूंजी इन्हें आगे जीवन में काम आयेगी। गृहस्थी अपनी सन्तान को अच्छी बनाएं। वानप्रस्थी तप करे। सन्यासी हर समय उपदेश मे रहें। चारों आश्रमों में कर्म ही प्रधान है। न कर्म करनेवाला व्यक्ति हर क्षेत्र में मारा जाता है। बच्चों को आह्वान किया कि तुम अच्छे बनो। २० वर्ष के पश्चात् देश को चलानेवाले यही बच्चे होंगे। यदि तुम अच्छे होगे तो देश अच्छा बनेगा। इस प्रकार स्वामी जी का एक घंटे का उपदेश सुनकर सबने अपने मन में प्रतिज्ञा की हम सदैव कर्म करेगे। इस उपदेश को सुनने के लिए हजारों गुरुकुल की कन्याए, ग्रामवासी एव अन्य दूर-दूर ग्रामो के व्यक्ति एव गुरुकुल की अध्यापिकाए उपस्थित रही। स्वामी जी के उपदेश के पश्चात् बहिन ज्ञानवती प्रधानाचार्या ने स्वामी जी का धन्यवाद तमाम ग्रामवासियों की एव गुरुकुल की ओर से किया। इस प्रकार सन्ध्या के उपरान्त यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम को चलाने के लिए श्री इन्द्रसिह जी आर्य वकील उपप्रधान वेदप्रचार मण्डल सोनीपत पं० धर्मभानु जी, अ० ईश्वरसिंह व अध्यापक श्री जसवन्तसिह आर्य एव यज्ञ समिति के सदस्य प्रयत्न कर रहे हैं।

भारतवर्ष के उत्थान का मार्ग

महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका के प्रश्नोत्तर विषय अध्याय में लिखा है 'तथा यह भी जानना आवश्यक है कि जगत् का उपकार मुख्य करके दो ही प्रकार का होता है-(एक) आत्मा का और (दूसरा) शरीर का। अर्थात् विद्यादान से आत्मा का और श्रेष्ठ नियमों से उत्तम पदार्थों की प्राप्ति करके शरीर का उपकार होता है।'

१. शासन प्रणाली–

भारत की सबसे बडी समस्या है–गलत शासन प्रणाली। हमारा शासनतंत्र बहुत बडा है, बहुत महंगा है और बहुत भ्रष्ट है। हमारी शासन प्रणाली भ्रष्टाचार को जन्म देती है, पालती है और भ्रष्टाचार पर ही टिकी है और शासन से ही देश की प्रशासनिक, आर्थिक, सामाजिक और नैतिक स्थिति जुड़ी है। अत वर्तमान शासन प्रणाली को बदलकर 'राष्ट्रपति शासन प्रणाली' को अपनाया जायेगा।

प्रस्तावित 'राष्ट्रपति शासन प्रणाली' भारत की वर्तमान शासन प्रणाली के सभी दोषो से मुक्त होगी, बहुत सरल, सस्ती, स्थायी, सुदृढ और स्वच्छ होगी। भ्रष्टाचार को इसमें घुसने की गुंजाइश न होगी। यह शासकवर्ग को जनता के प्रति उत्तरदायी बनायेगी। कानून राष्ट्रहित में बनेंगे और राष्ट्र तेजी से उन्नति की ओर बढ़ेगा।

प्रस्तावित राष्ट्रपति शासन प्रणाली का स्वरूप–

संसद्–केन्द्र सरकार में संसद् के रूप में केवल एक सभा होगी। उसके सारे सदस्य सीधे तौर पर देश की जनता के द्वारा चुने जायेंगे जैसी हमारी लोकसभा है। संसद् का मुख्य कार्य राष्ट्र के लिए कानून बनाना तथा नीति निर्धारित करना होगा। राज्यसभा जैसी दूसरी सभा न होगी।

राष्ट्रपति–देश के एक राष्ट्रपति और एक उपराष्ट्रपति होंगे। उनका निर्वाचन देश की सारी जनता करेगी। राष्ट्रपति प्रशासन के मुख्य अधिकारी होंगे। वे सेना के तीनों अंगों–जल, थल, वायु के सर्वोच्च सेनापति होंगे। संसद् की स्वीकृति से वे विदेशों के लिए राजदूत की नियुक्त करेंगे।

भ्रष्टाचार, देशद्रोह आदि के दोष में संसद् दो तिहाई मतों के द्वारा राष्ट्रपति को पदच्युत कर सकेगी। पदमुक्त होने पर उन पर देश की साधारण अदालत में मुकदमा चलाया जा सकेगा।

उपराष्ट्रपति के पद के लिए अलग से वोट न डाले जायेंगे। राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव लडनेवाला प्रत्येक व्यक्ति चुनाव से पहले किसी एक व्यक्ति को अपना सहयोगी घोषित करेगा जो उपराष्ट्रपति पद के लिए उम्मीदवार माना जायेगा। राष्ट्रपति और उप-राष्ट्रपति पद का चुनाव जोड़े (Team) के तौर पर होगा। एक मतदाता दोनों के लिए एक ही वोट डालेगा।

उपराष्ट्रपति संसद् के अधिवेशनों की अध्यक्षता करेंगे। परन्तु उन्हे मतदान का अधिकार केवल समान मत (Tie) की स्थिति में ही होगा।

अलग और स्वतंत्र–ससद् और राष्ट्रपति दोनों एक-दूसरे से अलग तथा स्वतंत्र होंगे। इनमें से किसी एक का अस्तित्व दूसरे के सहारे न होगा। वे एक दूसरे की सद्भावना पर आश्रित रहे बिना काम कर सकेंगे। सांसदों का प्रशासन में और राष्ट्रपति का संसद् के काम में दखल न होगा।

संसद् कभी भी बीच में ही भंग न की जा सकेगी। अवधि पूरी होने पर तथा नई संसद् के आने पर ही पिछली संसद् भंग समझी जायेगी।

संसद् के द्वारा पास किया गया प्रस्ताव तभी कानून बनेगा जब राष्ट्रपति उस पर हस्ताक्षर करके अपनी स्वीकृति दे देंगे। यदि राष्ट्रपति उसे ठीक न समझें तो वे संसद् द्वारा पास किया गया प्रस्ताव फिर विचार करने के लिए वापिस संसद् में भेज सकेंगे। उस वापिस किए गए प्रस्ताव को अगर संसद् दो तिहाई मतों से पास कर दे तब वह बिना राष्ट्रपति की स्वीकृति के भी कानून बन जायेगा।

सचिव (Secretaries)–प्रशासन में राष्ट्रपति के सहायक के रूप में सचिव होंगे। सचिव आम जनता में से लिए जायेंगे, सासदों में से नहीं। एक सांसद सांसद ही रहेगा। उसे सरकार में कोई और पद अधिकार या आर्थिक लाभ न दिया जायेगा।

सचिवों की नियुक्ति संसद् की स्वीकृति से राष्ट्रपति करेंगे और वे राष्ट्रपति के ही उत्तरदायी होंगे। सचिव लेते समय राष्ट्रपति पर कोई भीतरी या बाहरी दबाव न होगा। उन्हे अपनी कुर्सी बचाने की चिन्ता न होगी। इसलिये योग्य व्यक्तियो को ही सचिव बनाया जायेगा। सचिवों की संख्या पंद्रह से अधिक न होगी। मत्री या प्रधानमत्री का कोई पद न होगा।

न्यायपालिका (Judiciary)–

न्यायपालिका को काम करने की पूरी स्वतंत्रता होगी। सासदों को और राष्ट्रपति को उसमे दखल देने का अधिकार न होगा। न्यायपालिका का काम विवादों का निपटारा करना, कानून के उल्लंघन के मामलो को देखना तथा कानून तोडनेवालो को दण्ड देना होगा।

अवधि (Term)–ससद् और राष्ट्रपति की अवधि चार वर्ष होगी। एक व्यक्ति लगातार दो से अधिक बार राष्ट्रपति न बन सकेगा।

चुनाव तथा पदग्रहण की तिथिया संविधान के द्वारा ही निश्चित करदी जायेंगी। किसी की भी अवधि एक मिनट भी कम या अधिक न होसकेगी।

उपचुनाव (By-elections)–

देश मे कहीं भी कोई भी उपचुनाव न होंगे।

ससद् का कोई स्थान खाली होने पर, चार वर्ष में से शेष रही अवधि के लिए उसी राजनैतिक दल द्वारा उसी हल्के का कोई व्यक्ति मनोनीत कर दिया जायेगा जिसके द्वारा वह स्थान खाली किया गया होगा।

राष्ट्रपति का पद खाली होने पर, चार वर्ष में से शेष रही अवधि के लिए उपराष्ट्रपति को ही राष्ट्रपति बना दिया जायेगा। उपराष्ट्रपति का स्थान खाली होने पर चार वर्ष मे से शेष रही अवधि के लिए, ससद् की स्वीकृति से राष्ट्रपति किसी व्यक्ति को उपराष्ट्रपति मनोनीत करेंगे।

सांसदों आदि के वेतन और भत्ते–सांसदों, राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, सचिवों के वेतन और भत्ते घटाने-बढ़ाने का अधिकार ससद् को होगा। परन्तु संसद् इस सम्बन्ध मे जब भी किसी परिवर्तन का निर्णय करेगी वह निर्णय उस संसद्, उस समय के राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति तथा सचिवों पर लागू न होगा। उनके बाद अगली अवधि में आनेवालों पर ही लागू होगा।

प्रान्तों, नगरों व ग्रामों में व्यवस्था–जो शासन प्रणाली केन्द्र सरकार में होगी वही व्यवस्था सभी प्रान्तों, नगरों व ग्रामों में होगी। प्रत्येक प्रान्त में एक विधानसभा तथा एक राज्यपाल (Governor) होगा। राज्यपाल का निर्वाचन प्रान्त की सारी जनता करेगी और वह प्रान्त का मुख्य प्रशासक होगा। राज्यपाल के सहायक के रूप में सचिव होंगे जिनकी सख्या पाच से अधिक न होगी। प्रत्येक नगर में एक नगर पालिका तथा एक नगर प्रमुख (Mayor) होगा। नगर प्रमुख का निर्वाचन नगर की सारी जनता करेगी। ग्रामो में पंचायतें तथा सरपच होगे। सरपच का चुनाव गांव की सारी जनता करेगी। उनके कार्य और अधिकारो का विभाजन केन्द्र की तरह ही होगा। प्रत्येक प्रान्त में अवधि चार वर्ष होगी, और नगर और ग्राम मे अवधि दो वर्ष रहेगी।

इस शासन प्रणाली की विशेषताएं–

१ चुनाव के पश्चात् सत्ता के लिए सघर्ष की कोई गुजाइश न रहेगी। चुनाव ही सभी के पद, कार्य, अधिकार और आर्थिक लाभ निश्चित कर देंगे। अत सभी राष्ट्रपति अपनी पूरी शक्ति राष्ट्रहित के कार्यों मे लगा सकेंगे।

२ सरकार का अस्तित्व संसद् मे किसी प्रस्ताव के पास होने या न पास होने पर निर्भर न होगा। इसलिए सरकार अपनी पूरी अवधि तक स्थायी बनी रहेगी।

३ सासदो को प्रशासन में दखल देने का कोई अधिकार न होगा। इस कारण से प्रशासन मे भ्रष्टाचार, रिश्वत, पक्षपात और अन्याय न होंगे।

४ सासदो को लूट-खसूट का कोई अवसर न मिलेगा। इसलिए धन के लालच मे कोई भी चुनाव नहीं लडेगा। चुनावो पर खर्च भी बहुत थोडा होगा।

५ सासद् ससद् में स्वतत्र रूप में अपनी और अपने मतदाताओ की भावनाओ के अनुरूप मतदान कर सकेगे। इसलिए देश के लिए अच्छे, व्यवहारिक तथा स्थायी कानून बनेगे।

६ सासदों को आपसी तालमेल से कोई भी लाभ न होगा। इसलिए सांसद जनता अभिमुख बने रहेगे।

७ उपचुनाव न होने से देश बहुत सारे अनावश्यक खर्च से, तनाव से, समय के नाश से तथा आन्तरिक संघर्ष से बचा रहेगा।

२. शिक्षा–पाच से पन्द्रह वर्ष की आयु के सभी बच्चों के लिए दसवीं तक की शिक्षा अनिवार्य तथा नि:शुल्क रहेगी।

शिक्षा के प्रसार से राष्ट्र मे आर्थिक विषमता, सामाजिक विषमता और शोषण कम होगे। बेरोजगारी और गरीबी घटेगी। जनसख्या वृद्धि पर नियत्रण लगेगा। करोडो बाल मजदूर तथा लाखो बाल वेश्याए नारकीय स्थिति से निकलकर अपने जीवन को सार्थक तथा देश के लिए उपयोगी बना सकेगी।

३. अर्थ व्यवस्था—अर्थ व्यवस्था का आधार निजी क्षेत्र रहेगा। उत्पादन के सभी साधन तथा सभी सेवाए जनता के निजी हाथो मे रहेगे। राष्ट्रनिर्माण मे जनता की भागीदारी अधिक से अधिक रहेगी और सरकार का दखल कम से कम।

भ्रष्टाचार मूलक कोटा, परमिट, लाइसैंस, सबसिडी, चुगी आदि व्यवस्थाए समाप्त होंगी। सारे देश में एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त मे अनाज आदि सभी वस्तुए लाने ले जाने पर कोई पाबन्दी, लाइसैंस या शुल्क न होगा। सारा देश एक इकाई के रूप में माना जायेगा।

गरीबी, बेरोजगारी, विषमता कम करने के लिए युद्ध स्तर पर काम किया जायेगा। व्यापारी वर्ग को तथा उद्योगपतियो को प्रोत्साहन दिया जायेगा कि वे रोजगार के साधन अधिक से अधिक जुटायें।

देश मे दस करोड से अधिक जो बाल मजदूर हैं तथा लाखों बाल वेश्याए हैं उन सबको पढाने के लिए बहुत से अध्यापको की आवश्यकता होगी। जहां पर ये बाल मजदूर काम कर रहे हैं उन स्थानो पर भी काम करने के लिए और बहुत से लोगो की आवश्यकता होगी। इस प्रकार करोडो बेरोजगार नौजवानो को काम मिलेगा।

करो के रूप मे जो धन जनता से सरकार वसूल करती है वह जनता की भलाई पर खर्च करने के लिए होता है। परन्तु होता यह है कि उसका बडा भाग हमारे राजनेता और अफसर अपने सुख-साधनो पर ही खर्च कर लेते हैं। बचा हुआ धन जो जनता के हित मे लगाया जाना होता है उसका भी बडा भाग रिश्वत और बेईमानी के रूप मे इन्हीं की जेबो मे जाता है। इस प्रकार देश के धन को राजनेता और अफसर ही लूटे जारहे हैं। भारतीय सुराज्य मच राजनेताओ पर तथा अफसरो पर बहुत ही थोडा खर्च करेगा और ज्यादातर धन जनता की भलाई के कामो पर लगाएगा।

सरकारी अफसरो और सासदों को निजी प्रयोग के लिए कार, कोठी, नौकर, माली, ड्राइवर, टेलीफोन आदि की सरकारी सुविधाए न मिलेगी। राष्ट्रपति और राज्यपाल भी इतनी ठाठ-बाठ न रख सकेगे।

सरकार का उत्तरदायित्व होगा कि वह ऐसे अवसर और हालात पैदा करे कि प्रत्येक देशवासी अपनी भौतिक आवश्यकताए पूरी कर सके। विकास और उन्नति के अवसर सभी को उपलब्ध हो। किसी भी परिवार की आर्थिक या सामाजिक स्थिति उस परिवार के बच्चो के विकास मे बाधा न बने।

४. जनता की आवाज—जनता की आवाज को प्रभावी बनाने के लिए आकाशवाणी, दूरदर्शन तथा समाचार पत्र पूर्णरूप से जनता के निजी हाथो मे रहेगे। समाचार पत्रो के लिए सरकारी कोटे से कागज की व्यवस्था समाप्त होगी।

सरकार के कामो का मूल्यांकन जनता करेगी, सरकार नहीं। सरकार जनता के लिए है, न कि जनता सरकार के लिए।

५. प्रशासनिक व्यवस्था—देश का प्रशासन स्वच्छ तथा सरल बनाया जायेगा। कानून कम से कम होगे। लोग सरकार का बोझ महसूस न करेगे। प्रजातत्र व्यवस्था मे अफसर, जनता के नौकर होते हैं और जनता उनकी मालिक। दफ्तरों मे चपडासी न होगे।

सभी प्रशासन स्थानीय तौर पर रहेगा—न केवल प्रान्तों तक ही, अपितु नगर और ग्राम स्तर तक भी। नगर के स्कूल, अस्पताल, पुलिस आदि नगर के लोगो के अधीन रहेगे। ग्राम के स्कूल, डिस्पेसरी, पुलिस आदि ग्राम के लोगो के अधीन रहेंगे।

६. योग्यता—देश में सभी क्षेत्रो मे योग्यता को ही प्राथमिकता दी जायेगी। यही व्यवस्था देश को आगे ले जा सकती है।

७. जनसंख्या नियंत्रण—देश की बढती जनसख्या को रोकने के लिए प्रभावी पग उठाये जायेंगे और ये पग सभी देशवासियो पर समान रूप से लागू होगे।

—**कृष्णचन्द्र गर्ग,**
अध्यक्ष, भारतीय सुराज्य मंच,
८३१ सैक्टर १०
पचकूला-१३४११३ (हरयाणा)

रामफल बंसल को चुनौती

रामफल बंसल एडवोकेट नई दिल्ली ने अपने आपको न्यायसभा का अध्यक्ष एव सार्वदेशिक सभा का प्रशासक मानकर श्री बलवानसिह सुहाग एडवोकेट जो कि हरयाणा में सत्तारूढ पार्टी जिला झज्जर इनेलो के अध्यक्ष हैं, को १५००० रु० मासिक पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का प्रशासक एवं निर्वाचन अधिकारी नियुक्त किया है। श्री सुहाग को आर्यसमाज के वेदप्रचार फड एवं आर्यसमाजो से प्राप्त दान से इस राशि का भुगतान किया जायेगा।

श्री रामफल बसल स्वयं एडवोकेट हैं, उनको मैं चुनौती देता हू कि वे यह बताये कि सार्वदेशिक सभा के विधान तथा न्यायसभा के नियम उपनियमों की कौनसी धारा के अन्तर्गत सुहाग को सभा का निर्वाचन अधिकारी एवं प्रशासक नियुक्त किया है ?

सार्वदेशिक सभा का प्रधान जाच के बाद अनियमितता पाये जाने पर धारा १०ग के अनुसार केवल तदर्थ समिति बना सकता है। प्रशासक एवं निर्वाचन अधिकारी लगाने का अधिकार सभाप्रधान को भी नहीं है।

सार्वदेशिक न्यायसभा का अभी तक गठन ही नहीं हुआ है। गठन होने पर भी न्यायसभा के अकेले प्रधान को तो किसी भी प्रकार की नियुक्ति करने का अधिकार नहीं है। पूरी न्यायसभा के अध्यक्ष सहित सात सदस्यो मे से प्रत्येक निर्णय अथवा आदेश के लिए कम से कम चार सदस्यों की सहमति अनिवार्य है।

साथ ही श्री बसल के ध्यान मे यह भी लाना चाहता हू कि उपनियम ४ के अनुसार किसी भी आर्यसमाज वा इकाई का अधिकारी बनने के लिए तीन वर्ष लगातार आर्यसमाज का सभासद होना आवश्यक है। श्री बसल द्वारा हरयाणा की ८०० आर्यसमाज के प्रकाशक श्री सुहाग आज तक किसी भी आर्यसमाज के प्राथमिक सदस्य तक नहीं हैं। —**सत्यवीर शास्त्री, सभामंत्री**

दीपमालिके ! तेरी जय हो

तिमिर फैलता चारों ओर,
घूम रहे हैं चहुंदिशि चोर,
तम के घन छाए घनघोर,
किंचित् दिखता नहीं अजोर,
घनीभूत है अब अंधियारा,
भू के कण-कण मे निर्भय हो।
दीपमालिके ! तेरी जय हो।।

घिरा धरा पर घना अन्धेरा,
तम के दिनमानो को घेरा,
दूर तलक न दिखे सबेरा,
रावण-कस लगाए डेरा,
दनुज वृत्तिया कदम बढ़ाती-
जातीं भू पर, आज अभय हो।
दीपमालिके ! तेरी जय हो।।

सहमा-सहमा है आलोक,
डरा हुआ है पूरा लोक,
अन्तर कम्पित दृश्य विलोक,
कैसे धरती बने अशोक,
भूमण्डल मे जागे चेतना-
ऐसा ही कुछ अब अभिनय हो।
दीपमालिके ! तेरी जय हो।।

आये फिर से नया विहान,
दनुज वृत्ति का हो अवसान,
उगे प्रभा का नव दिनमान,
सत् प्रवृत्ति का हो उत्थान,
बिखरे नव आलोक धरा पर-
घोर अन्धेरे का क्षय हो।
दीपमालिके ! तेरी जय हो।।

—राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति, मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

पाश्चात्य विद्वानों पर उपनिषदों का प्रभाव

डॉ० नरेश सिहाग 'बोहल' गुगन निवास २६ पटेल नगर भिवानी-१२७०२१

उपनिषदों के सिद्धान्त इतने गूढ और सार्वभौम हैं कि उनका विद्वानों पर, चाहे वे किसी भी देश के और किसी भी धर्म के अनुयायी क्यो न हों गहरा प्रभाव पडा है। हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि उपनिषद् हिन्दुओं के सर्वश्रेष्ठ धार्मिक ग्रन्थ हैं। प्रत्येक हिन्दू के धार्मिक विश्वास का आधार वेद हैं। वे अपौरुषेय हैं, अत एव उनमे भ्रम एव प्रमाद की तनिक भी सम्भावना नहीं की जा सकती। उपनिषद् वेदों के सार भाग हैं। उपनिषद् तो परब्रह्म, उसके स्वरूप, जीवात्मा के स्वरूप, ब्रह्म साक्षात्कार के उपाय तथा ब्रह्म साक्षात्कार के बाद जीवात्मा की स्थिति आदि के वर्णन से भरे पडे हैं। विदेशी विद्वान् उपनिषदों मे बहुत से ऐसे प्रश्नों का समाधान पाकर चकित रह गये हैं जिनका उत्तर अन्य धर्मों तथा दर्शनों में या तो उन्हें मिला ही न था और यदि मिला भी तो बहुत असंतोषजनक रूप में।

वेदान्त दर्शन की महिमा पर मुग्ध होनेवाले विदेशी विद्वानो में सबसे पहले थे अरब-देशीय विद्वान् अलबेरुनी। ये ग्यारहवीं शताब्दी में भारत में आयें थे। यहां आकर उन्होंने सस्कृत भाषा का अध्ययन किया और उपनिषदो की सारस्वरूपा गीता पर लट्टू होगये थे। मुगलसम्राट् शाहजहा का ज्येष्ठ पुत्र दाराशिकोह अपने भाई औरंगजेब के समान कट्टर मुसलमान नहीं था। उपनिषदों की कीर्ति सुनकर वह इतना प्रसन्न हुआ कि उसने कई उपनिषदों का फारसी में अनुवाद कर डाला। इस फारसी अनुवाद का फ्रासीसी भाषा में पुन अनुवाद हुआ। इस फ्रासीसी अनुवाद की एक प्रति जर्मनी के प्रसिद्ध विद्वान् शोपेनहार के हाथ लगी। वे कहते हैं–सम्पूर्ण विश्व में उपनिषदों के समान जीवन को ऊंचा उठाने वाला कोई दूसरा अध्ययन का विषय नहीं है। उनसे मेरे जीवन को शान्ति मिली है। उन्हीं से मुझे मृत्यु पर भी शान्ति मिलेगी।

शोपेनहार के इन शब्दों को उद्धृत करते हुए मैक्समूलर ने कहा है–शोपेनहार के इन शब्दों के लिए यदि किसी समर्थन की आवश्यकता हो तो अपने जीवन भर के अध्ययन के आधार पर मैं उनका प्रसन्नता पूर्वक समर्थन करूंगा। उपनिषदो में पाये जानेवाले अद्भुत सिद्धान्तों का उल्लेख करते हुए शोपेनहार ने फिर कहा–ये सिद्धान्त फिर ऐसे हैं जो एक प्रकार से अपौरुषेय ही हैं। ये जिनके मस्तिष्क की उपज हैं, उन्हे निरे मनुष्य कहना कठिन है। पाल डायसन (Paul Deussen) नामक जर्मनी के एक विद्वान् ने उपनिषदों का मूल सस्कृत मे अध्ययन करके उपनिषद्-दर्शन (Philosophy of the upanishads) नामक अपनी प्रसिद्ध पुस्तक का निर्माण किया। उन्होंने लिखा है कि उपनिषदों के भीतर जो दार्शनिक कल्पना है, वह भारत में तो अद्वितीय है ही, सम्भवत सम्पूर्ण विश्व में अतुलनीय है।

मैक्डानैल ने लिखा है–मानवीय चिन्तना के इतिहास में पहले-पहल बृहदारण्यक उपनिषद् में ही ब्रह्म अथवा पूर्ण तत्त्व को ग्रहण करके उसकी यथार्थ व्यंजना हुई है। फ्रासीसी दार्शनिक विक्टर कजिन्स् लिखते हैं–जब हम पूर्व की और उनमे भी शिरोमणि स्वरूपा भारतीय साहित्यिक एवं दार्शनिक महान् कृतियों का अवलोकन करते हैं, तब हमें ऐसे अनेक सत्यों का पता चलता है, जिनकी उन निष्कर्षो से तुलना करने पर जहा पहुंचकर यूरोपीय प्रतिभा कभी-कभी रुक गयी है। हमें पूर्व के तत्त्वज्ञान के आगे घुटने टेक देने पडते हैं।

पाश्चात्य विद्वानों द्वारा उपनिषदो की प्रशंसा के विषय में इस एक बात को समझ लेना आवश्यक है। उपनिषदो मे वैदिक देवताओ का उल्लेख भरा हुआ है तथा यह स्पष्ट लिखा है कि यज्ञों के अनुष्ठान से स्वर्ग की प्राप्ति हो सकती है और उनका निष्काम आचरण करके मन को शुद्ध एव भगवत्साक्षात्कार के योग्य भी बनाया जा सकता है।

फिर भी अनेक यूरोपीय विद्वानो का कथन है कि उपनिषदो के ऋषियो को वैदिक देवताओं की सत्ता अथवा वैदिक यज्ञो की फलवत्ता मे कोई विश्वास नहीं था। ऐसी उक्तियो से वेदों की निर्भ्रान्त सत्यता के सिद्धान्त को धक्का लगता है शोक इस बात का है कि आधुनिक भारतीय विद्वानों ने भी पाश्चात्यों के इन विचारो की बिना यथार्थ की उचित परीक्षा किये ही पुनरावृत्ति की है। अत एव अपने उपनिषदो का ज्ञान प्राप्त करने के लिए हमे पाश्चात्य विद्वानो के पास नहीं जाना चाहिए। उपनिषद् ग्रन्थो का अध्ययन करने के लिए ऐसे गुरु की सहायता लेनी चाहिये, जिसने विदेशी पद्धति पर स्थापित विश्वविद्यालयो मे नहीं, वरन् प्राचीन परिपाटी के अनुसार शिक्षा देनेवाली भारतीय सस्थाओ मे उपनिषदो का ज्ञान प्राप्त किया हो।

दयानन्दमठ का छब्बीसवां सत्संग

रोहतक–आर्यसमाज की प्रमुख सस्था दयानन्दमठ का छब्बीसवां वैदिक सत्सग समारोह ४ नवम्बर सन् २००१ रविवार को बडी धूमधाम से मनाया जाएगा। सत्संग के संयोजक ने बताया कि दयानन्दमठ वैदिक सत्संग समिति द्वारा सचालित यह समारोह हर महीने के प्रथम रविवार को मनाया जाता है। इस सत्संग के विषय में उन्होंने बताया कि इस बार आध्यात्मिक विषय रखा गया है–मन-1 मुख्यवक्ता के रूप में डा० बलवीर आचार्य को आमन्त्रित किया गया है। प्रात ९-०० बजे से प्रारम्भ होकर १२-०० बजे दोपहर तक चलेगा तथा १२-०० बजे वैदिक सत्सग समिति की ओर से ऋषिलगर की व्यवस्था की गई है। संयोजक ने सभी आर्य सज्जनो, बहनों एव भाइयो से दलबल सहित समारोह में पधारने की अपील की है। **–सन्तराम आर्य, संयोजक सत्संग**

दान लाखों पापों का छेदन करता है

दान की बडी महिमा वेद शास्त्रो व ग्रन्थो मे बतलाई है। जो मानव सच्चे श्रद्धाभाव से दान करता है वह स्वर्ग को जाता है।

हम इस दुनिया मे दान करने योग्य आज हैं शायद कल नहीं हो सकते। धन की गति धूप-छाया जैसी है धन की तीन गतिया–१-परोपकार में धन का दान करो। २-धन से सुख भोगो। ३-वरना दु ख देकर चला जायेगा। इसलिए धन के चले जाने पर मनुष्य दु खी होता है। जहा तक हो सके श्रद्धा भाव से ही दान करना चाहिए परन्तु अश्रद्धा और डर से भी दान शुभ कार्यों में अवश्य करना चाहिए। दान तीन प्रकार से होता है।

१. उत्तम दान–जो परोपकार की भावना से किया जाये इसमें गुप्त दान की अति विशेषता है।

२. मध्यम दान–जो यज्ञ भावना से परोपकार मे दिया जाये।

३. अन्य दान–जो दान भय भाव से दिया जाये। (दान न देने से हानि होती है)

धन चाहे तो दान कर,
सुख चाहे प्रभु भजन।

वेदों मे कहा गया है कि जो मनुष्य अकेला खाता है वह पाप खाता है। जो व्यक्ति नेक कमाई करता है और उसमे दान नहीं करता है उसके धन का हनन होता है। जैसे–आगजनी, चौरी, खोजाना, बीमारी और राजाधिकारियों द्वारा। मनुष्य कितने ही पाप कर्म काम, क्रोध, मोह, लोभ और अहकार के वशीभूत जाने, अनजाने मन, वचन और कर्मों द्वारा कर ही देता है। अत पापो के निवारण हेतु मनुष्य को धन का दान अवश्य ही जीवन में करते रहना चाहिए। जो व्यक्ति दो नम्बर की कमाई करते हैं, उन्हे धन की पवित्रता के लिए विशेष दान देकर यश तो ससार में कमा लेना ही चाहिए वरना समय निकल जाने के बाद पछताना ही शेष रह जाता है। दुनिया का धन लूट करके एक दिन यूनान के साहब सिकन्दर को भी पछताना पडा और दुनिया से विदा होने से पहले अपने हुक्मरानो को बुलाकर कहा कि ये मेरे हाथ अर्थी से बाहर कर देना जब मेरी अर्थी उठाई जाये ताकि ससार के लोगो को पता चले कि सिकन्दर बादशाह दुनिया से खाली हाथ गया। यदि राक्षसो मे दयाभाव आजाये और मानव में दान करने की भावना होजाये और देवताओ मे इन्द्रिय दमन की शक्ति हो जाये तो अवश्य ही राष्ट्र महान् बन जायेगा। देखने मे सभी एक सदृश हैं चाहे वह मनुष्य हो या दानव, केवल भाव परिवर्तन होने से गुण कर्म स्वभाव बदल जाने से, मनुष्य देवता और देवता से राक्षस भी हो जाते हैं।

दान सुपात्र को ही देना चाहिए

दान सुपात्र को ही देना चाहिए। कुपात्र को दान देने से दाता नरक का भागी भी बन जाता है। दान देते समय दाता को यह भी देखना चाहिए कि यह पात्र है या कुपात्र। पात्र और कुपात्र का विचार करना बुद्धिमत्ता है। जरा सोचिए गऊमाता सूखे तिनके खाकर भी मधुर अमृतमय दुग्ध देती है और विषधर (सर्प) दुग्ध पीकर भी विष वमन ही करता है। यह महान् अन्तर है। अत दानदाता का पात्र से सदुपयोग होता है इसका विचार करना दाता का अपना भी दायित्व है।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

रचनात्मक चिन्तन

आशापूर्ण एवं निश्चयात्मक रूप से चिन्तन करना एक ऐसा स्वभाव है जिससे मनुष्य जीवन के सुखी एवं सन्तोषप्रद बनने की ज्यादा सम्भावना है।

और प्रसन्नता की बात यह है कि यथार्थ रूप से सोचने का अभ्यास थोडे से उद्योग और सकल्प से प्राप्त किया जा सकता है। एक बार इसका फल चख लेने पर आप कभी भी फिसल कर पुरानी रीतियें में वापस जा गिरना न पसन्द करेंगे।

इसका प्रथम पग है–किसी भी प्रकार के अभावबोधन चिन्तन से कोई सम्बन्ध न रखने का दृढसंकल्प। ऋणात्मक चिन्तन के अन्तर्गत है किसी भी भेष मे निराशावाद, परेशानी, अपने दुर्बल स्वास्थ्य की विस्तार पूर्वक चर्चा करते रहना, व्यर्थ का पश्चात्ताप, दूसरों के प्रति ईर्ष्या, पराजय, डर, निराशा और आत्म-निन्दा।

यह कितना बुरा समूह है। इस पर भी लोग बहुधा स्थायी मेहमान बनाकर रखते हैं। क्या इनमें से कोई एक भी आपका कुछ हित कर सकता है ? उनका साथ छोड़ देने का आज ही, अभी और सदा के लिए दृढसकल्प कीजिए।

एक कार्ड लीजिए और उस पर मोटे अक्षरों में लिखिए, "मैं अब आज से इसके द्वारा सब प्रकार के ऋणात्मक चिन्तन का परित्याग करता हूं।" इसके नीचे अपने हस्ताक्षर कीजिए, दिनाक लिखिये और इसे ऐसे स्थान पर रख दीजिए जहां इस पर आपकी दृष्टि पडती रहे।

एक मोटा कार्ड बनाइये-निश्चयात्मक चिन्तन के सिवा कुछ भी नहीं-जिस कमरे में आप रहते हैं उसमें इसे लगाइये। हो सकता है आपके अपने जीवन के अतिरिक्त यह और कइयों के जीवन में क्रान्ति ला दे।

आइये, अब देखें कि यह नया अभ्यास दिनोदिन कैसे काम करता है।

प्रतिदिन जब आप उठें और आते हुए दिन पर विचार करें तो केवल निश्चयात्मक यथार्थ विचारों को ही मन में स्थान पाने दीजिए। आती हुई घटनाओं, कार्यों, कर्तव्यों और आनन्द की आशा तथा सुस्वाद के साथ चिन्तन कीजिए। मैं क्या खाऊंगा, क्या पीऊंगा, या कहां से वस्त्र लूंगा, इस फिक्र में न पड़कर प्रभु पर भरोसा रखिये। यह सब वस्तुए आपको अवश्य प्राप्त होंगी।

पल्ले रिजक न बांधते पंछी और दरवेश।
जिनका तकिया रब्ब का उन्हें रिजक हमेश।।

जो दिन अन्यथा निराशाजनक हो सकता है, यह अभ्यास उसका रूपान्तर कर देगा।

जब साझ आयेगी और आप दिन की घटनाओं का सर्वेक्षण करने बैठेंगे तो आपको यह देख मनोहर विस्मय होगा कि घटनाएं कैसे अच्छे ढंग से घटी हैं। अपने कार्य से आप अपने को सन्तुष्ट पायेंगे।

आपका मन जब खाली हो तो उसमें हर समय निश्चयात्मक विचार रखिये। यदि सम्भव हो तो किसी कार्य के वास्तविक सम्पादन-काल में भी यह काम कीजिए।

जैक डम्पसे नाम का विश्वविख्यात मल्ल था। उसका कहना है-"मल्ल युद्ध के काल में अपने साहस को बढ़ाए रखने के लिए मैं अपने मन से बात किया करता था। फिर्पो से कुश्ती के समय बार-बार अपने मन में कह रहा था-'कोई भी चीज मुझे रोक नहीं सकती। वह मुझे चोट पहुंचाने जारहा है। मैं उसके घूसों का अनुभव नहीं करूंगा। चाहे कुछ भी हो मैं बराबर लड़ता रहूंगा। अपने आप से ऐसी निश्चयात्मक बातें करने और धनात्मक रखने ने मेरी भारी सहायता की।"

इसके सदृश अपनी योग्यताओं के बारे मे निश्चयात्मक रूप से सोचिए। विख्यात एवं विशेषरूप से प्रतिभाशाली मनुष्यों के साथ अपनी तुलना करना बद कर दीजिए। आपके पास अपनी स्वाभाविक क्षमता का अच्छा आनुपातिक अंग है। वास्तव में, प्रोफेसर विलियम जैम्स के मतानुसार औसत मनुष्य जितनी योग्यता का अनुभव का उपयोग करता है उससे प्राय नब्बे प्रति सैंकड़ा अधिक उसमें होती है।

मन के अद्भुत विचार को रखते हुए, पहले मन को उस बात पर एकाग्र कीजिए, जो आप युक्तियुक्त रूप से अच्छी तरह कर सकते हैं, फिर वहा से, नई स्थितियों में से आपको पार ले जानेवाली अनेक अपनी सुप्त योग्यताओं में श्रद्धा के साथ, बाहर की ओर शाखाए फैलाइये।

अपनी विफलताओं के स्थान पर अपनी सफलताओं पर ध्यान लगाइये। यह स्मरण रखिये कि जो काम आप एक बार कर चुके हैं उसे दो बारा भी कर सकते हैं। अपने अतिरिक्त अनुभव तथा अभ्यास के प्रकाश में आप पहली बार से अधिक उन्नति कर सकते हैं।

अपने आपको "मैं किसी काम का नहीं, या मैं यह या वह नहीं कर सकता, कि मैं बहुत लज्जालु हूं या बहुत अनाड़ी, या बहुत अनुभवहीन, या बहुत विनम्र हूं कि मैं कभी भी उस काम के योग्य नहीं था, कि मेरी स्मरण शक्ति बहुत दुर्बल है।" कहने से सदा रोकते रहिए। ये सब अभाव सूचक सुझाव हैं। इनका स्थान आज से आगे सदा निश्चयात्मक उक्तियों को ही दीजिए-"मैं यत्न करूंगा, मैं अब भी उस काम को पहले से अच्छा करने लगा हूं, मेरा विश्वास तथा सन्तुलन बढ रहा है, मैं अधिक आदरणीय होता जारहा हूं मेरी स्मरण शक्ति सुधर रही है। मेरे भीतर सुप्त योग्यताएं हैं जो अपने को प्रकट करने के लिए सुयोग की प्रतीक्षा में हैं।"

विवेक बुद्धि की दृष्टि से बहुत थोड़ी चीजें ऐसी हैं, जिनकी यदि आप पर्याप्तरूप से कामना करें, तो वे आपकी पकड़ से बाहर रहें। किसी महापुरुष के ये उत्साहवर्धक शब्द स्मरणीय हैं, "मांगो और तुम्हें मिलेगा। खोजो और तुम पालोगे। खटखटाओ और तुम्हारे लिये द्वार खुल जायेगा।"

यह बात अवश्य पालने योग्य है कि हम अपने आपके विषय में, अपने चरित्र तथा प्रकृति के विषय में निश्चयात्मक रूप से सोचें। आपको अपने आपके साथ समझौता करना परम आवश्यक है। अपने आपको समाज का एक मूल्यवान् सदस्य मानिये जिसे जीवन को कोई निश्चित दान देना है, उसमें कोई बहुमूल्य वस्तु डालनी है। ज्योंही आप अपने विषय में यथार्थरूप से सोचने लगेंगे, तो जिस प्रकार का व्यक्ति बनने की कामना आप गुप्तरूप से करते हैं। उस प्रकार का बनना आपको पहले से अधिक सुकर जान पड़ेगा। इस आदर्श को निरन्तर अपने समीप रखना एक बहुत अच्छी योजना है।

जब आप सोने के लिए लेटें तो कल्पना कीजिए कि आप अपने आदर्श के सदृश ही बोल, देख और व्यवहार कर रहे हैं। इस रीति से आप अपने विषय में स्वप्न अविकलरूप से सत्य होंगे। "जैसा मनुष्य अपने विषय में सोचता है वैसा ही होता है।" अपने मन के भीतर रोष रखने के स्थान पर आध्यात्मिक रणचातुर्य का प्रयोग कीजिए। अपने शत्रु के लिए कुछ कीजिए। यह कार्य उसकी प्रशंसा करने और जितनी नीचता उसने आपके प्रति दिखाई है आपके उसके प्रति उतना ही आनन्दप्रद बनने से सम्पन्न होसकता है।

यदि आप उससे लड़ेंगे और ईंट का जवाब पत्थर से देंगे तो शत्रुता गहरी होती जाएगी। परन्तु इसके विपरीत यदि आप बुराई के बदले उसके साथ भलाई करेंगे, तो आप उसे मात दे देंगे और कालान्तर में हो सकता है कि आप उसे पूर्णरूप से जीत लें। "शत्रु के साथ जो बडी से बड़ी बात कर सकते हैं वह यह है कि आप उसे अपना मित्र बना लें।"

(प्रस्तुतीकरण डॉ० नार्मन विन्सेन्ट पील)
(सार्वदेशिक से साभार)

दान लाखों पापों......... (पृष्ठ ५ का शेष)

गौ दान महादान

गौ दान सभी दानों में श्रेष्ठ है। भारतीय संस्कृति में गऊ दान का बड़ा भारी पुण्य माना गया है इसलिए हमारे पूर्वज गऊ दान करते थे। गऊ माता के रोम-रोम में देवताओं का निवास है। आज हम गऊ वंश पालन में असमर्थ होते जारहे हैं जबकि गऊ पालन से लोक और परलोक का सुधार होता है इसलिए गऊ वंश की रक्षा तन, मन, धन से करनी ही चाहिए। गौ वश के लिए हम क्या कर सकते हैं। संकल्प करे–

आज गौ वंश पर भारी संकट है पूरे भारतवर्ष में बूचड़खानों का जाल बिछा हुआ है। हरयाणा प्रदेश की पावन पवित्र भूमि मेवात क्षेत्र में हजारों गाएं प्रतिदिन कत्ल होती हैं। आज हम सभी गौ हत्या का यह जुल्म सहन कर रहे हैं। यह जुल्म सहना भी महापाप है। उठो और जागो। धर्म का पालन करो। गऊरक्षा पहला और पवित्र धर्म है। 'धर्मो रक्षति रक्षितः' धर्म की रक्षा करो। धर्म तुम्हारी रक्षा करेगा। वरना मरा हुआ धर्म तुम्हें मार देगा। कर्म भोग चक्र से बचकर कोई व्यक्ति भाग नहीं सकता है परन्तु दुनिया को धोखा दे सकते हैं उस परम पिता परमात्मा को धोखा नहीं दे सकते। ईश्वर और मौत को हमेशा याद रखो। शुभ कर्म करो। दुष्कर्म बन्द करो। इसी में देश, धर्म और जाति की भलाई है।

–सुन्दर मुनि, गोरक्षा संघर्ष समिति
मेवात रसनिका, हथीन (फरीदाबाद)

आर्य-संसार

स्वामी इन्द्रवेश जी ने किया कैंसर अस्पताल का शुभारम्भ

झज्जर। देश भर में भारतीय चिकित्सा पद्धति से कैंसर जैसी घातक बीमारी का इलाज करके अनेक मरीजों को ठीक कर चुके आर्यसमाज के वयोवृद्ध नेता व स्थानीय गुरुकुल के सस्थापक स्वामी ओमानन्द के नाम से झज्जर में आर्यसमाज द्वारा बनाये गये स्वामी ओमानन्द परोपकारी कैंसर अस्पताल का शुभारम्भ पूर्व सांसद एव आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान स्वामी इन्द्रवेश ने ओ३म् का ध्वजारोहण कर किया। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता स्वामी ओमानन्द ने की। स्वामी ओमानन्द ने कहा कि इस अस्पताल के निर्माण पर करीब दो करोड की लागत आयेगी। जिसका पहला चरण ११ लाख की लागत से पूरा हो चुका है।

स्वामी जी ने बताया कि डाक्टरो को कैंसर की पहचान मे बहुत अधिक समय लग जाता है। तब तक रोगी मौत के कगार पर पहुच चुका होता है और ऐसे में एलोपैथी से इलाज संभव नहीं रहता। लेकिन आयुर्वेद द्वारा कैंसर का इलाज सम्भव है। उन्होंने बताया कि उनके पास कई मरीज कैंसर के इलाज के लिए आये। जिनकी स्थिति देखकर ग्रन्थो का अध्ययन किया जिसके बाद उन्होने कैंसर की दवा विकसित की। जिससे अमेरिका के मरीजों ने लाभ प्राप्त किया है। उन्होंने बताया कि उनके पास इलाज के लिए कनाडा, अफ्रीका, अमेरिका, पाकिस्तान आदि देशो से कैंसर के मरीज आये हैं। इस जहरीले रोग के सभी प्रकार के मरीजो का इलाज किया है। अमेरिका मे रह रहे भारतीय चिकित्सक भी उनकी इस चिकित्सा पद्धति को बढावा देने मे सहयोग दे रहे हैं। उन्होने कहा कि इस रोग के उपचार व अध्ययन में गुरुकुल के कई छात्र जुटे हैं ताकि अधिक से अधिक रोगियो को लाभ मिल सके। स्वामी जी ने दावा करते हुए कहा कि उनके पास हजारों कैंसर के मरीज आये। जिनमे अधिकाश को ठीक किया है। इस अवसर पर पूर्व रक्षाराज्यमंत्री प्रो शेरसिह, पूर्व एस डी एम सूबेसिंह, चौ० धर्मचन्द, रामधारी शास्त्री, मा पूर्णसिह नरेला, वेदव्रत शास्त्री, चौ० पूर्णसिह, डॉ विजयकुमार, अजयकुमर शास्त्री, आचार्य विजयपाल, सत्यवीर शास्त्री, मनुदेव शास्त्री, कप्तान छोटूराम खानपुर, किशनसिह गुडगाव सहित प्रदेश भर से आये आर्यसमाज के प्रतिनिधियो ने उद्घाटन समारोह मे भाग लिया।

स्वतंत्रता सेनानी और पूर्व सरपंच जगतराम का निधन

महम। जगत मुनि के नाम से जाने जानेवाले उपमडल के गाव भैणी सुरजन के स्वतत्रता सेनानी जगतराम का ९१ वर्ष की आयु में निधन होगया।

जगतराम का जन्म १९१० में भैणी सुरजन गाव मे ही हुआ। जगतराम १९ वर्ष की आयु मे समाज से जुड गए। फिर कांग्रेस से जुडे और कांग्रेस की जिला कार्यकारिणी के सदस्य तथा ब्लाक के अध्यक्ष भी रहे। १९३८ मे हैदराबाद आन्दोलन, १९६८ मे गोरक्षा आन्दोलन व १९५७ में हिन्दी आन्दोलन तथा आपातकाल के दौरान जेल यात्रा भी की।

जगतराम इस गाव के पहले व्यक्ति थे जिन्होंने दलितो के लिए सवर्णों के सांझे कुएं का निर्माण करवाया। जगतराम आजाद भारत में पहले पंचायत चुनावों से लगातार २० वर्ष तक गाव के सरपंच रहे और इस दौरान कभी भी गांव में फौजदारी का मामला नहीं बना तथा वनस्पति घी का गाव में प्रयोग नहीं होने दिया। जगतराम पूर्णतया अनपढ़ होते हुए भी एक अच्छे कवि और प्रचारक भी थे। वे १९८० से जगत मुनि के नाम से जाने जाने लगे।

वीरों का यह पर्व हमारा

—राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति,
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

विजय पर्व पर आओ वीरो ! ले हम यह पावन सकल्प,
उग्रवाद-आतकवाद का खोजेगे हम आज विकल्प।
निशिचरहीन मही करने का, किया राम ने किया था निश्चय,
अपनी शक्ति तथा साहस से, मिली उन्हे थी श्रेष्ठ विजय।

दली उन्होंने वृत्ति दानवी, दानव दल का किया दलन,
धरती पर विहंसी मानवता, मनुज वृत्ति होगई मगन।
रावण से राक्षस का वध कर, दिया धरित्री को नव त्राण,
नव आलोक दिया कण-कण को, फूका जन-जन मे नव प्राण।

स्वर्ग सदृश फिर बनी धरणी यह हुआ राष्ट्र का नव उत्कर्ष,
महीमण्डल मे सर्वोपरि फिर बना हमारा भारतवर्ष।
बढते चरण दनुजता के लख, कोटिक जन घबडाए हैं।

भ्रष्टाचार बढा अतुलित है, फैला है अन्याय-अनय,
भ्रष्ट आचरण हुआ हमारा, दानव घूम रहा निर्भय।
घने घिनौने चलचित्रो ने किया नारियों का अपमान,
रावण घूम रहे निर्भय हो, कैसे हो नारी उत्थान ?

वीरो-रणधीरो का भारत, बना हुआ जैसे असहाय,
दनुज वृत्तियो से टक्कर का दीख न पडता कहीं उपाय।
अपराजेय राम के पुत्रो उठो ! शक्ति सगठित करो,
दुष्ट दनुजता को ललकारो, सैन्य प्रबलतम गठित करो।

वीरो का यह पर्व हमारा, हमे जगाने आया है,
'आर्य' सपूतो को उनका कर्तव्य दिखाने आया है।

❖❖❖

आत्मा परमात्मा का अंश नहीं है

❑ **स्वामी वेदमुनि परिव्राजक,** अध्यक्ष-वैदिक सस्थान, नजीबाबाद (उत्तर-प्रदेश)

१५ जुलाई का 'सार्वदेशिक' साप्ताहिक मेरे सामने रखा है। इसके पृष्ठ ९ पर **"दु:ख मिटाने का अनन्त सामर्थ्य"** शीर्षक से श्री रामऔतार अग्रवाल का लेख प्रकाशित हुआ है। यह लेख उन्होने सार्वदेशिक मे प्रकाशनार्थ भेजा भी नहीं है अपितु यह तो **"साभार दैनिक जागरण"** से लेकर प्रकाशित किया गया है।

अन्य पत्र-पत्रिकाओ से लेख लेकर प्रकाशित किये जाते हैं, किये जाने भी चाहिये किन्तु वह लेख ऐसे होने चाहिये, उपयोगी हो। पाठको के ज्ञानचक्षु जिससे खुले और वास्तविक सिद्धान्तो का जिनसे प्रचार हो। यदि कोई लेख सत्य सिद्धान्तो के विरुद्ध हो, मात्र भ्रान्ति फैलानेवाला हो तो वह कदापि प्रकाशित नहीं किया जाना चाहिये। किसी अन्य पत्र से उद्धृत करके तो क्या ? सीधे पत्र-सम्पादक महोदय के नाम से भेजा गया हो, तब भी किसी आर्य पत्र मे नहीं छापा जाना चाहिये। जिस लेख की मैं चर्चा करने लगा हू उसका तो प्रथम परिच्छेद ही अनर्गल और सिद्धान्त विरूद्ध है। पाठकगण ध्यानपूर्वक पढे और मनन करे।

"परमात्मा हम सब को सदैव प्राप्त है, हम उन्हीं के अंश हैं, लेकिन ससार की ममता, कामना, आत्मशक्ति के कारण हमें उनकी विस्मृति हो गई है।"

प्रथम वाक्याश को ही लीजिए– **"परमात्मा हम सबको सदैव प्राप्त है"**। प्राप्ति अपने से पृथक् तत्त्व की होती है। इसका अर्थ यह है कि लेखक को यह स्वीकार है कि परमात्मा हमसे अर्थात् जीवात्माओ से पृथक् तत्त्व है। हमारा परमात्मा से पृथक् अस्तित्व है और परमात्मा का अस्तित्व हमसे पृथक् है। किन्तु वह हमसे पृथक् तत्त्व होते हुए भी हमारे इतना निकट है कि वह हमसे पृथक् कहो या दूर नहीं है, सहज ही स्वभाव से, स्वाभाविक रूप से ही अपने सर्वव्यापकत्व के कारण हमारे साथ है। परन्तु उपर्युक्त वाक्य के अगले भाग मे कहा गया है कि **"हम उन्हीं के अंश हैं।"** यह नवीन वेदान्तियो का मत हो सकता है। अंश-अंशी भाव का, वेद और वैदिक धर्मियो का नहीं। यह तो वेदविरुद्ध मान्यता है, अत अवैदिक है। जीवात्मा परमात्मा का अश है ही नहीं, किसी प्रकार भी वह परमात्मा का अश सिद्ध नहीं हो सकता। यदि जीवात्मा को परमात्मा का अश मान लिया जाय तो फिर यह भी मानना पडेगा कि परमात्मा प्रकृति का बना हुआ कोई पदार्थ या तत्त्व है पदार्थो मे ही अशा-अशी भाव होता है। वही टूटकर पृथक्-पृथक् हो जाने के कारण एक-दूसरे के अश या भाग होते हैं। भौतिक पदार्थ जड होते हैं, चेतन नहीं होते। परमात्मा ही क्या ? वह जीवात्मा भी जड नहीं चेतन है। हा, हमारी चेतना सीमित परिमित है। क्योकि हम अल्प, परिमित, सीमित,परिछिन्न हैं। परमात्मा यदि जड तत्त्व है तो वह सृष्टि की व्यवस्था न तो बना ही सकता है और न उसका सचालन कर सकता है। जीवों को उनके गुण- कर्मानुसार फल तो क्या प्रदान करेगा, सृष्टि का निर्माण भी नहीं कर सकता। हा सृष्टि का एक अश सृष्टि के अन्य पदार्थों की भांति किसी निर्माता द्वारा निर्माण किया हुआ पदार्थ सिद्ध हो जाएगा। तब वह सृष्टि का कर्ता भी सिद्ध नहीं हो सकता। सृष्टि का कर्ता तो चेतन तत्त्व, सार्वांगपूर्ण चेतनावाला, सर्वज्ञ तत्त्व ही हो सकता है। यदि ऐसा नहीं तो वह हम सबको सदैव प्राप्त भी नहीं हो सकता। जैसा कि उपर्युक्त लेख के लेखक महोदय का मत है। कारण यह है कि भौतिक पदार्थ या तत्त्व तो हमें वही सदैव प्राप्त रहते हैं, जो हमारे शरीर के अश (अणु-परमाणु) हैं, अन्य कोई भौतिक तत्त्व हमे प्राप्त नहीं हो सकता। हमें परमात्मा तो चेतनस्वरूप और सर्वव्यापक होने के कारण ही सदैव प्राप्त है। इतना प्राप्त है, इतना निकट प्राप्त है कि न केवल हमारे शरीर में अपितु हम में भी व्याप्त हो रहा है। यही परमात्मा की हमको सदैव प्राप्ति है।

आगे फिर लेखक महोदय लिखते हैं **"लेकिन संसार की ममता, कामना, आसक्ति के कारण हमें उनकी विस्मृति हो गई है।"** यदि हम परमात्मा के अश हैं तो संसार की ममता, कामना, आसक्ति के दोष परमात्मा में भी आरोपित होंगे तथा इन दोषों से युक्त हो जायेगा तो सर्वज्ञ नहीं रहेगा और सर्वज्ञता के अभाव में प्रलय काल अवस्थित, सलिलावस्था, तरलावस्था वाली प्रकृति में प्रक्षोभ उत्पन्न नहीं कर सकेगा और जड प्रकृति मे स्वत प्रक्षोभ [illegible] प्रक्षुब्धावस्था करनेवाला कोई चेतन तत्त्व न हो तथा प्रक्षोभ उत्पन्न न होने से वर्तमान काल के आप्त और प्रमाण पुरुष महर्षि दयानन्द के शब्दों में सृष्टि की प्रथमावस्था **"नित्यायाः सत्वरजस्तमसां साम्यावस्थाः प्रकृते-रुत्पन्नानां परमसूक्ष्मणां पृथक्-पृथक् वर्तमानानां तत्त्वपरमाणुनां प्रथम-संयोगारम्भः"** अर्थात् नित्य रहनेवाली सत्व, रज, तम की साम्य अवस्था सलिला-तरलावस्था प्रकृति से उत्पन्न हुए परम सूक्ष्म तथा पृथक्-पृथक् वर्तमान हो जानेवाले तत्त्व परमाणुओं का जो सृष्टि बनने में प्रथम संयोग होना चाहिये, वह भी नहीं होगा, जिसके परिणामस्वरूप यह उतनी विशाल स्थूलाकार सृष्टि तो क्या ? कोई स्वल्पसी वस्तु भी नहीं बन सकेगी।

लेख को अधिक विस्तार देना उचित नहीं समझता, अन्यथा इस विषय पर तो एक पृथक् ग्रन्थ ही बन सकता है। मेरा उद्देश्य पाठकों को उपर्युक्त लेख के भ्रान्त विचारो से सावधान करना मात्र है और आर्य पत्रों के सपादक महोदयो से मेरा विनम्र निवेदन है कि इस प्रकार के भ्रान्त लेखो को कदापि प्रकाशित न होने दें।

अलमति विस्तरेण बुद्धिमद्वरशिरोमणिषु।

किसकी पूजा धौक मारता

–रणसिंह पंघाल-प्रचारी

किसकी पूजा धौक मारता, ले खुद को पहचान।
अपने अन्दर टोहले बन्दे, खुद बैठे भगवान्।।टेक।।
इस सृष्टि को रचनेवाला, ईश्वर एक बताया।
पांच तत्त्व का बणा पुतला उसमे जीव घुमाया।
तरह-तरह की बणा मूरती अपणा रूप दिखाया।
कोये पतला कोये छोटा मोटा लाम्बा कोये बणाया।
न्यारी-न्यारी घडके काया, कर दिये सभी हैरान।।१।।
तू है पागल तूं है स्याणा, जामन और जुआरी।
तू है ज्ञानी घोर अज्ञानी, दानी तूं है भिखारी।
तू है ठाढा तूं है माडा, कायर और बलकारी।
तू है वैद्य और तूं है रोगी मोडा व घरबारी।
तू है अखण्ड ब्रह्मचारी और तू है क्रूर शैतान।।२।।
तूं है रक और राजा तूं है डाकू चोर सिपाही।
तूं है पकडै तू है छुटावै रक्षक और कसाई।
तूं है मारै तू है पालै गुस्सा तू है समाई।
तूं है जोगी तूं है भोगी दानव तूं है गोसाईं।
तूं है दुश्मन तूं है भाई, दुर्बल और बलवान।।३।।
तू है भ्रान्ति तूं है क्रान्ति, शान्ति तू है उजाला।
तूं है पुजारी तूं व्यभिचारी, काटै तूं है रुखाला।
तूं है सतवादी तूं है बर्बादी चाबी तू है ताला।
तू है बोलै तूं है रोकै, रोवै तूं है गावण आला।
रणसिंह पघाल खरकड़ी वाला वो ईश्वर एक महान्।।४।।

प्रेषक का पता–स्वामी दयानन्द माध्यमिक विद्यालय
ग्राम खरकड़ी माखवान त० तोशाम जिला भिवानी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ७६८७४, ५७७७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ७७८०१) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १,९६,०८,५३,१०२
पंजीकरणसंख्या टैक/एन.आर/49/रोहतक/99 ०१२६२-७७८०१

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र रोहतक

प्रधानसम्पादक : प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष २८ अंक ४८ १४ नवम्बर, २००१ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश मे २० डॉलर एक प्रति १.७०

वेद की उत्पत्ति का आधार ईश्वर

वैदिक-परम्परा में वेद को ईश्वरीय ज्ञान माना जाता है। वर्तमान में उपलब्ध वेदभाष्यकारो मे सायण और दयानन्द का नाम सर्वोपरि मानकर ही अन्य देशी और विदेशी विद्वानों ने वेदों पर उन्हीं के आधार पर भाष्य टीका टिप्पणियां की हैं। सायणाचार्य और महर्षि दयानन्द सरस्वती के वेदभाष्यों के अध्ययन से यही प्रतिपादित होता है कि वेद अपौरुषेय हैं, किसी पुरुष ऋषि महर्षि की कृति नहीं, अपितु सृष्टि के प्रारम्भ में ईश्वर की प्रेरणा से अग्नि वायु आदित्य और अगिरा महर्षियो के द्वारा वेदज्ञान मिला, अत वेद ईश्वरीय ज्ञान है मानवीय अथवा पौरुषेय नहीं।

स्वयं वेदमन्त्र इसमे प्रमाण हैं–

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋच सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ।। (यजुर्वेद ३१।७)

यस्मादृचो अपातक्षन् यजुर्यस्मादपाकषन्।
सामानि यस्य लोमान्यथर्वाङ्गिरसो मुखम्।
स्कम्भं त ब्रूहि कतम: स्विदेव स ।। (अथर्व० १०।७।२०)

शतपथ आदि ब्राह्मण और वेदमन्त्रो के प्रमाणों से यह सिद्ध होता है कि 'यज्ञ' शब्द से 'विष्णु' और विष्णु शब्द से सर्वव्यापक जो परमेश्वर है उसी का ग्रहण होता है। उसी सच्चिदानन्दस्वरूप परब्रह्म से (ऋच) ऋग्वेद, (यजु) यजुर्वेद, (सामानि) सामवेद और (छन्दांसि) अथर्ववेद, ये चारो वेद उत्पन्न हुए हैं।

(यस्मादृचो अपातक्षन्) जो सर्वशक्तिमान् परमेश्वर है, उसी से **(ऋच:)** ऋग्वेद, **(यजु:)** यजुर्वेद, **(सामानि)** सामवेद, **(अंगिरस)** अथर्ववेद ये चारो वेद उत्पन्न हुए हैं।

याज्ञवल्क्य महर्षि अपनी पत्नी मैत्रेयी को उपदेश करते हैं कि–**"एवं वा अरेऽस्य महतो भूतस्य नि:श्वसितमेतद्यदृग्वेदो यजुर्वेद: सामवेदोऽथर्वाङ्गिरस:।"** (शपथब्राह्मण १४।५।४।१०)

हे मैत्रेयि ! जो आकाशादि से भी बडा सर्वव्यापक परमेश्वर है, उससे ही ऋक् यजु साम और अथर्व ये चारों वेद उत्पन्न हुए हैं। और–

तेभ्यस्तप्तेभ्यस्त्रयो वेदा अजायन्ताग्नेर्ऋग्वेदो वायोर्यजुर्वेद: सूर्यात्सामवेद:। (शतपथब्राह्मण ११।५।८।३)

मनुस्मृति से भी इस शतपथ वाक्य की पुष्टि होती है–

अग्निवायुरविभ्यस्तु त्रयं ब्रह्म सनातनम्।
दुदोह यज्ञसिद्ध्यर्थमृग्यजु:सामलक्षणम्।। (मनु० १।२३)

अधिक ज्ञानवृद्धि और शका निवृत्ति के लिए महर्षि दयानन्दकृत ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका पढिये जो हमारे यहां दयानन्दमठ से उपलब्ध है।

वरिष्ठ साहित्यकार डा० पूर्णचन्द शर्मा की मान्यता है कि "वैदिक ऋचाओ का आधार जनश्रुति और लोकगीत ही हैं।" इस मान्यता का डा० प्रकाशवीर विद्यालंकार ने खण्डन किया है जो उचित और वैदिक मान्यताओं के अनुरूप है।

डा० पूर्णचन्द शर्मा की मान्यता वैदिक विचारधारा के ठीक विपरीत है। यदि वैदिक ऋचाओं का आधार जनश्रुति और लोकगीतों को माना जाये तो वेद अपौरुषेय न होकर मनुष्यकृत मानने पडेंगे और सृष्टि के आदि में न होकर (शेष पृष्ठ दो पर)

सब समस्याओं का समाधान

वेद की आज्ञा का पालन

सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, सर्वव्यापक परमेश्वर ने इस ससार की रचना जीवो के कल्याण के लिए की है। **'यतोऽभ्युदयनि:श्रेयससिद्धि स धर्म'** के अनुसार जिन विचारो कर्मो के द्वारा मनुष्य सुखी होता है और मरने के बाद परम सुख मोक्ष को प्राप्त होता है उसी का नाम धर्म है, वेद ईश्वरीय ज्ञान है। वैदिक विचारो के अनुसार जीवन बिताने से ही मनुष्य को सुख-शान्ति प्राप्त हो सकती है–**'नान्य पन्था विद्यते अयनाय'** इसको छोडकर और कोई मार्ग नहीं है। इसलिए महर्षि ने आर्यसमाज का सगठन बनाते समय लिखा–**'वेद का पढ़ना-पढाना और सुनना-सुनाना आर्यो का परमधर्म है।'** वेद के पठन-पाठन चिन्तन-मनन से मनुष्य का ससार के प्रति सही दृष्टिकोण बनता है। भौतिक पदार्थो के प्रति अन्धी आसक्ति की अपेक्षा परमेश्वर-प्राप्ति ही मनुष्य का जीवन लक्ष्य होजाता है।

आर्यो नौ दिसम्बर को जींद चलो

आर्यसमाज के सगठन को मजबूत बनाने के लिए ९ सिदम्बर को जींद अर्बन एस्टेट मे कार्यकर्ता सम्मेलन किया है जिसमे हरयाणा भर से आर्यसमाजी कार्यकर्ता सम्मिलित होगे। हरयाणा मे ९० विधानसभा क्षेत्र है। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की योजना है कि हर क्षेत्र मे वेदप्रचार मण्डल का गठन है जिसमे गाव-गाव तक व्यापक वेदप्रचार का कार्यक्रम चल सके। ९ दिसम्बर को जींद कार्यकर्ता सम्मेलन मे प्रत्येक क्षेत्र के सयोजको की नियुक्ति की घोषणा की जाएगी। अत प्रत्येक जिले के वेदप्रचार मण्डलो के अधिकारियो से निवेदन है कि वे तुरन्त वेदप्रचार मण्डल की बैठक बुलाये और क्षेत्र के कार्यकर्ताओ से विचार विमर्श करके सक्रिय सक्षम कार्यकर्ताओ की सूची तैयार करे। भी अवश्य ध्यान रखे कि सगठन मे युवा कार्यकर्ता, महिला कार्यकर्ता और दलित वर्ग के कार्यकर्ताओ को अवश्य स्थान दे।

संगठन में ही बल है

'संगच्छध्वं सवदध्वम्' वेद के आदेश के अनुसार सगठित होकर एक आवाज पर चलने से ही समाज मे बल पैदा होता है। आज आर्यसमाज को कुछ बाहर की शक्ति और कुछ अन्दर के तत्त्व छिन्न-भिन्न करना चाहते है और सच्चाई की आवाज को दबाने का प्रयास कर रहे हैं। ये सगठन की अग्नि परीक्षा की घडी है। आर्यसमाज ने सदा से डटकर अन्याय का विरोध किया है। अथर्ववेद का **'अद्य जिवानि मा श्व'** अन्यायी राजा आज जीवित है, कल नहीं रहेगा। यही हमारे सघर्ष का मूलमत्र है। अत आर्यो ! उठो सगठन शक्ति को पहचानो। ९ दिसम्बर २००१ रविवार को ११ बजे तक जीन्द कार्यकर्ता सम्मेलन मे अवश्य पहुचें।

–इन्द्रवेश

आत्मा प्रफुल्ल-स्वाध्याय

सच्चे सम्राट् वरुण द्वारा आत्म-साम्राज्य-स्वाराज्य-प्राप्ति

निषसाद धृतव्रतो वरुण· पस्त्यास्वा।
साम्राज्याय सुक्रतुः।। (ऋ० १ २५ १०)

शब्दार्थ–(वरुण.) वरुण (धृतव्रत·) अटल व्रतो के धारणकर्ता और (सुक्रतु) सदा शोभन कर्म ही करनेवाले होकर **(साम्राज्याय)** साम्राज्य के लिये (पस्त्यासु आ) प्रजाओ के अन्दर आकर **(निषसाद)** बैठा हुआ है।

विनय–वरुण सम्राट् हम प्रजाओ के अन्दर आकर बैठा हुआ है। यह कितनी विचित्र बात लगती है, पर यह उतनी ही सच्ची है। असली साम्राज्य अन्दर ही है। बाहिर भी सच्चा सम्राट् वही हो सकता है जिसने पहिले अपनी प्रजाओ के हृदयो मे सिहासन प्राप्त कर लिया है। प्रजाओ के हृदयो मे बिना घुसे कोई सच्चा सम्राट् नहीं बन सकता है। ठीक-ठीक सच्चा शासन अन्दर घुमकर ही किया जा सकता है। इसीलिए इन सब ब्रह्माण्ड के एकमात्र अखण्ड सम्राट् जो वरुण देव हैं, वे हम प्रजाओ के अन्दर आकर बैठे हुए हैं। उस असली सम्राट् के दर्शन के लिए यदि हम निकले तो हमे बाहिरी सम्राटो के पास पहुचने की तरह उनके पास पहुचने के लिए कहीं बाहिर नहीं फिरना होगा। वे तो स्वय हमारे अन्दर आकर बैठे हुए हैं और इसलिए आकर बैठे है कि हमे सामाज्य दे दे–'साम्राज्याय'। पर हम ऐसे मूर्ख हैं कि हमे कुछ खबर ही नहीं है। हम छोटी-छोटी बातो पर हकूमत पाने के लिए–राज्य पाने के लिए बाहिर घूमते फिरते है, लडते-झगडते, सत्यादि नियमो को भग करते, मारकाट करते फिरते हैं। पर यह नही जानते कि सर्वश्रेष्ठ (वरुण) राजा तो स्वय हमे सारे ससार का बादशाह बनाने के लिये विश्व का साम्राज्य देने के लिये अन्दर आकर बैठा हुआ है और प्रतीक्षा कर रहा है। हम उधर देखते ही नहीं।

पर जो उधर देखते हैं वे देखते हैं कि वे वरुण प्रभु 'धृतव्रत' और 'सुक्रतु' है–वे व्रतो को धारे हुए हैं, उनके व्रत अटल हैं, उनके नियम कभी टूट नहीं सकते और वे शोभन कर्म ही करनेवाले हैं, उनसे कभी बुरा कर्म हो ही नहीं सकता है। हम भी यदि सत्य नियमो का कभी भग न करनेवाले और सदा शोभन कर्म करनेवाले हो जायेगे तो उसी क्षण हमे वह सच्चा साम्राज्य मिल जाएगा। वे महात्मा उस साम्राज्य को भोग रहे हैं जिनके लिये सत्य व्रतो का उल्लघन और बुरा काम होना असभव हो गया है। वह साम्राज्य है जिसके प्रथम दर्शन होने पर सब कालो और सब देशो के इस महापद को प्राप्त [illegible]पुरुष चिल्ला उठते रहे हैं–"मैंने जो पाना था वह पा लिया[1]", "मैं बादशाह हो गया", "मैं तो अमृत हू।[2]"

सन्तो द्वारा प्राप्त किये गये इस महा साम्राज्य को 'धृतव्रत' और 'सुक्रतु' बनकर हम भी पा लेवे इसीलिए वे वरुण हमारे अन्दर बैठे हुए हैं और प्रतीक्षा को [illegible] रहे है।

(वैदिक विनय से)

हर् [1] योगदर्शन १-१६ व्यास-भाष्य। २–तै० उपनिषद् शिक्षाध्याय १०-१।

सहनशक्ति का फल

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्।
न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।।

सच बोलो, मीठा बोलो, ऐसा सच न बोलो, जिससे दूसरो के दिल में दु ख, क्रोध, कटुता आदि जाग उठे।

ऐसा वाणी बोलिये, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करे, आप भी शीतल होय।।

यह है तप और इसकी शक्ति महान् है। महर्षि दयानन्द जी ठहरे हुए थे फर्रुखाबाद मे, गंगा के किनारे एक कुटिया मे, कई दूसरे लोग भी आसपास रहते थे। इनमें एक साधु था वह प्रतिदिन प्रात काल महर्षि की कुटिया के आगे आकर उन्हे गालियां देता था। चिल्ला-चिल्लाकर बकता था–दयानन्द नास्तिक है, ईसाई है, हमारे धर्म का बेडा डुबाए देता है और तब वह सभी गालिया देता जो उसकी जीभ पर आती। वह प्रतिदिन घंटा-आधा घटा ऐसे ही कहता था। महर्षि गालियां सुनते, मुस्कराते रहते, कोई उत्तर नहीं देते।

एक दिन महर्षि से एक भक्त ने कहा–"आप आज्ञा दें तो हम उस दुर्वचन बोलनेवाले को सीधा करे।" महर्षि बोले–"उसे कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है। वह स्वय ही सीधा होजाएगा। कुछ दिन बाद किसी भक्त ने महर्षि के लिए फलों का एक बडा टोकरा भेजा। महर्षि ने टोकरे से अच्छे-अच्छे फल चुने और दूसरे टोकरे में रखकर एक आदमी से कहा कि ये फल उस साधु को दे आओ जो प्रतिदिन मुझे गालिया देता है। उस आदमी ने साधु के पास जाकर कहा–"ये फल स्वामी दयानन्द ने आपके लिए भेजे हैं।" साधु ने दयानन्द का नाम सुनते ही कई गालिया दीं। गर्जकर बोला–"किस दुष्ट का नाम ले लिया सुबह-सुबह। पता नहीं आज रोटी भी मिलेगी या नहीं। चला जा यहा से। तुझे गलती लगी है मैं तो प्रतिदिन उसे गालिया देता हू। मुझे वह फल क्यों भेजेगा। किसी दूसरे के लिए भेजे होगे। वह आदमी फल लेकर वापस महर्षि के पास आया। उन्हे साधु की बात सुनाई। महर्षि हंसते हुए बोले–नहीं उसी के पास ले जाओ उससे बोलो कि तुम्हारे लिए ही यह फल भेजे हैं। तुम प्रतिदिन इतना परिश्रम करते हो, फल को खाओ, इनका रस निकालकर पिओ ताकि तुम्हारी शक्ति बनी रहे।

यह आदमी फिर उस साधु के पास गया। उसे महर्षि की बात सुनाई और वह साधु फलो को एक ओर रखकर दौडा महर्षि की कुटिया की ओर दौडता हुआ वहा पहुचा और महर्षि के चरणो पर गिर पडा। बोला मैं क्षमा मागने आया हू। मैंने तो आपको मनुष्य समझा था किन्तु आप तो देवता हैं।

यह है सहनशक्ति का फल। जिन परिवारवालो मे सहनशक्ति है, वहा कभी दु ख और क्रोध की आग नहीं जलती, घृणा और शत्रुता का जन्म नहीं होता। जो लोग कष्टो से घबराते नहीं, सुख-दु ख और लाभ-हानि दोनों को एकसा समझकर अपने लक्ष्य की ओर आगे बढते चले जाते हैं वे लक्ष्य को प्राप्त अवश्य करते हैं।

–अजीतसिंह शास्त्री प्रथम वर्ष (कलवाका)

वेद की उत्पत्ति का.......................... (प्रथम पृष्ठ का शेष)

बहुत पीछे लोकगीतो के आधार पर वेदो की रचना माननी पडेगी। यदि ऐसा मान लिया जाए तो जनश्रुति और लोकगीतो के आधार पर वर्तमान मे डा० शर्मा जैसे साहित्यकारों को चार से आगे पाचवें छठे सातवे आठवें वेदो की रचना कर देनी चाहिए।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने युक्ति प्रमाणपूर्वक सिद्ध किया है कि वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है। वेद ईश्वरीय ज्ञान है। वेद सृष्टि के आदि मे उत्पन्न हुए। जिस प्रकार ईश्वर ने सूर्य का प्रकाश सभी के लिए दिया है उसी प्रकार वेदज्ञान भी मनुष्यमात्र के लिए दिया है। वेद ससार के पुस्तकालयों में सबसे प्राचीन पुस्तक है यह सभी देशी और विदेशी विद्वान् स्वीकार करते हैं।

वैदिक ऋचाओं का आधार जनश्रुति और लोकगीत नहीं अपितु जनश्रुति और लोकगीतो का आधार वेद है।

डा० पूर्णचन्द शर्मा से नम्र निवेदन है कि वे वेद और वैदिक वाङ्मय का अध्ययन मनन और चिन्तन वैदिक-परम्परा के परिप्रेक्ष्य मे करे, विदेशी विचारधारा को छोडकर।

वर्तमान समय में महर्षि दयानन्द ने वेद का भाष्य साधारण संस्कृतभाषा और आर्यभाषा (हिन्दी) मे करके वेद को जनसाधारण तक पहुचाने का प्रयास किया है उससे लाभ उठाना चाहिए।

दीपावली महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्वाण दिवस भी है। इससे वेदज्ञान के द्वारा ससार के अज्ञानान्धकार को मिटाने का सकल्प लेना चाहिए।

–वेदव्रत शास्त्री

राष्ट्र, राष्ट्रभाषा/राजभाषा और संस्कृति

गतांकों से आगे..........

भारत की दुर्गति और राष्ट्रीय शोक

अमेरिका सहित सारे पश्चिम को भरपूर विषाक्त करके भारत पर भी अंग्रेजी के विष-दन्त गड़ने लगे। सभी शिक्षा-शास्त्री, राष्ट्र-प्रेमी राजनेता और न्यायालय/उच्चतम-न्यायालय तक बार-बार कह चुके हैं कि बच्चों को शिक्षा उनकी मातृभाषा में ही दी जानी चाहिए। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने तो २७ दिसम्बर १९१७ को कोलकाता मे अंग्रेजी शिक्षा आरम्भ होते ही इसे 'दुर्गति' और 'राष्ट्रीय शोक' कह दिया था और आजादी मिलते ही इसे निकाल फेकने का आह्वान किया। किन्तु जो भयकर भूल अंग्रेजी से चिपके रहने की हो चुकी थी, उसका फल तो भुगतना ही है।

दुर्भाग्य तो यह है कि यही अग्रेजी भाषा भारत के दुधमुहे बच्चो को घुट्टी मे पिलाकर अपसस्कृति मे ही उन्हे दीक्षित किया जारहा है और अपनी भाषा से उन्हे वंचित रखकर उनका स्वस्थ विकास का अधिकार मारा जारहा है। पढाने का ढग और पाठ्य-पुस्तको की रचना भी ऐसी है कि वे भाषा-ज्ञान देने की अपेक्षा प्रच्छन्न मत-आरोपण अधिक सफलता पूर्वक कर सके। एक उदाहरण है छोटे बच्चो की वर्णमाला की सचित्र पुस्तक का। अग्रेजी वर्ण एफ् (F) से आरम्भ होनेवाले फैन (Fan), फॉक्स (Fox), फाउण्टेन (Fountain), फ्रेम (Frame), फोर (Four), फ्लो (Flow), फुट (Foot) आदि अनेक सरल शब्द हैं, जिनके चित्र देकर इस वर्ण का ज्ञान दिया जा सकता है। किन्तु तीन शब्द चुने गए फिस (Fish), फायर (Fire) और फ्राइ (Frying)', जिनको व्यक्त करता हुआ एक ही चित्र दिया गया जिसमें नीचे आग (फ़ायर) जलती है और ऊपर मछली (फिश) एक धागे से लटकी हुई भूनी (फ्राई की) जारही है। इसे देखकर सन् १८५७ के बावनी इमली जिला फतेहपुर (उ०प्र०) की डालो से लटकते शहीदों के शवों के चित्र याद आते हैं जिन्हे अन्य कोई अवस्था न होने के कारण गांव-बाहर इमली के पेड से ही लटकाकर सामूहिक फासी दी गई थी।

अबोधता का जामा पहिनाकर वर्ण परिचय के लिए प्रस्तुत जिस चित्र को देखकर किसी श्रेष्ठ (आर्य) पुरुष के मन में सामाजिक अन्याय, अन्यायी के प्रति रोष, घृणा, जुगुप्सा तथा उत्पीडित के प्रति करुणा और सहानुभूति के भाव ही मूर्त हो उठे वही चित्र मासूम बच्चो को सामान्य परिचय के रूप मे दिखाने से उनके कोमल मानस-पटल पर तो सामान्य स्वाभाविक निर्दयता, उत्पीडन अभक्ष्य-भक्षण और हत्या को दुनियावी दस्तूर समझ लेने के आसुरी भाव ही अकित होगे और इस प्रकार उन पर अपसंस्कृति का ही प्रच्छन्न प्रभाव पडेगा। फिर भी भाति-भाति के उपाय करके उसी पर्यावरण-विरोधी मानसिकता वाली अग्रेजी के प्रति सनक, ललक, आकर्षण और मोह बढाया जारहा है। इस पर तो तत्काल रोक लगनी चाहिए।

अंग्रेजी पढाएं पर कब, किसको?

उपर्युक्त छानबीन का उद्देश्य तथ्यों की जानकारी देना ही है विद्वानो/राष्ट्रप्रेमियों/न्यायाधीशो के मत की पुष्टि करने के लिए ताकि न्यायालय की उपेक्षा बन्द हो। पर-दोष-दर्शन या किसी के प्रति द्वेष फैलाने का उद्देश्य नहीं है। हमे भले-बुरे किसी से घृणा नहीं करनी चाहिए, क्योकि 'जड़-चेतन गुण- दोष-मय विश्व कीन्ह करतार।' अंग्रेजी भाषा के जानकार इसमें भी कोई गुण खोज सकते हैं। फिर भी हमे जब इसी दुनिया में रहना भी है तो जिन्हे अग्रेजी जाननी जरूरी हो, वे अवश्य उसे सीखें, किन्तु 'सन्त हंस गुन गहहिं पय, परिहरि बारि बिकार' की सलाह पर ध्यान देते हुए उसके विष-दन्त उखाडकर ही, अथवा पहिले अपनी सुभाषा का अमोघ मन्त्र पढकर उसे भलीभांति कीलित करदे, तब उस पर हाथ लगायें। युधिष्ठिर और विदुर ने भी तो कोई म्लेच्छ भाषा सीखी थी जिसका प्रयोग १२ वर्षीय वनवास हतु जाते समय युधिष्ठिर को भावी लाक्षागृह योजना के प्रति सतर्क करने के लिए विदुर ने किया था ताकि वह गुप्त राजकीय षड्यन्त्र कोई और न जान सके।

—विश्वम्भरप्रसाद 'गुप्त-बन्धु'
बी-१५४, लोक विहार, पीतमपुरा
दिल्ली-११००३४

स्वास्थ्य चर्चा—

त्राणदाता नींबू

जीवन में कभी-कभी ऐसी घटनाए होती हैं जिन पर एकाएक विश्वास नहीं होता। अपने साथ घटित ऐसी ही एक सच्ची घटना प्रस्तुत कर रही हू। आज से लगभग ९ वर्ष पहले मैं ऋषि मेले मे टकारा गई थी। वहा से लौटते समय जब बस कच्छ के समीप पहुची एक भौंरा उडता हुआ आया और मेरी बाह पर काटकर उड गया। मैंने उसी समय उस स्थान को खूब दबा-दबाकर डक निकालने का प्रयास किया, चाकू जो मेरे पास था रगडा, दियासलाई का मसाला लगाया और किसी सहयात्री की दी हुई दवाई भी लगाई। उसमे जलन होती रही और गुलाबी से रग का पानी भी रिसता रहा। इलाज भी काफी किया पर कुछ विशेष लाभ न हुआ। आश्रम मे ही एक माता ने बताया कि उनके साथ भी ऐसी घटना घटी थी, जिससे एक साल बाद आप्रेशन कराने पर पीछा छूटा। यह जानकारी होने पर मैं दिल्ली चली गई जहां आप्रेशन करके सफाई करदी। दवाइयों से जख्म भी भर गया एक दो महीने बीते कि फिर से पानी रिसना आरम्भ होगया। सदेह हुआ कि कहीं अन्दर ही अन्दर नासूर तो नहीं बन गया है या कैंसर है। बेहोश करके दुबारा आप्रेशन किया गया पहले से बडा पर निकला कुछ नहीं लेकिन फिर दो माह बाद रिसाव शुरू हो गया। बारिश के दिनो मे कुछ सूजन भी आजाती थी और दर्द भी बढ जाता था। एक दिन मैंने एक व्यक्ति को अपने साथी से कहते सुना कि यदि ततैया, मधुमक्खी या बिच्छू काट ले तो उस स्थान पर नींबू रगडने से डक गल जाता है और जहर का कोई प्रभाव नहीं पडता, मैंने घर पहुचते ही अपनी बाह पर नींबू रगडा थोडी देर बाद फिर लगाया तो मुझे जलन में कमी महसूस हुई। फिर तो दिन मे तीन-चार बार नींबू लगाने लगी जिससे चार-पाच दिन में पानी रिसना बद होगया। दर्द और जलन भी समाप्त होगई। इस प्रकार जो तकलीफ दो-दो बार आप्रेशन कराने, दवाइया खाने से ठीक नहीं हुई वह नींबू के लगाने से ठीक होगई। नींबू के जख्म उपचारक गुण से यह मेरा प्रथम परिचय था। दूसरी घटना भी कम आश्चर्यजनक नहीं है। मेरे बेटे का कान काफी दिनो से बह रहा था कुछ ऊचा भी सुनने लगा था। दिल्ली मे कई बडे डाक्टरो को दिखाया, सफाई भी कराई टैस्ट भी हुए और महगी से महगी एन्टीबाइटिक भी खाई पर कुछ न हुआ। बाद मे निदान किया गया कि कान मे इनफैक्शन है फगस होगई है। ठीक होना कठिन है। बेटा बडा परेशान था। मेरे से मिलने के लिए आश्रम मे आया। रात को अचानक ही दर्द बढ गया और पीव के साथ खून भी आने लगा, उसने अपने साथ लाई हुई डालने व खाने की दवाइया इस्तेमाल की। पर खून निकलना बन्द न हुआ। बार-बार रूई खून से भर जाती। अन्त में मैंने नींबू लेकर कान के ऊपर नीचे मुह पर गर्दन मे मल दिया। डर के कारण कान के भीतर तो उसने डालने न दिया पर ऊपर बार-बार मलती रही। आधे घटे के बाद खून आना कुछ कम हुआ। दर्द भी हल्का पडा और रात को २ बजे बेटे को नींद आ गई। आश्चर्य की बात है कि उस समय जो रूई लगाई थी, वह सुबह बिल्कुल साफ निकली उसका रोग जो डाक्टरो के मतानुसार लाइलाज था, नींबू के प्रयोग से ठीक होगया। सुनाई भी ठीक पडने लगा। इस प्रकार कान के रोगो मे भी नींबू के प्रभावकारी होने का प्रमाण मिला।

गले के रोगों की भी यह औषधि है। गले के खराश या टांसिल का बढना बडी आम पर कष्टसाध्य बीमारी है। टान्सिल तो आप्रेशन के बाद भी बढ जाते हैं। यदि नियमित रूप से कुछ दिन प्रयोग करे तो गला ठीक होगा ही हल्का बुखार भी छूट जाएगा।

(१) आधा गिलास पानी मे दो चम्मच चीनी, छोटा आधा चम्मच काला नमक और ३-४ काली मिर्च पीसकर डालें उसे ढाककर हल्की गैस पर पकाएं। जब ५-६ उबाल आ जाएं तो आधा नींबू निचोडकर गैस बन्द करदे और सुहाता पिये या पिलाए। रोग की तीव्रता में दिन में तीन बार दें। बाद में ४-५ दिन तक सायं प्रात: दे।

(२) यदि बुखार के साथ खांसी भी बहुत ज्यादा है तो आधा गिलास पानी मे, एक छोटा चम्मच अजवायन, आंवले के जितना गुड़, आधा नींबू बारीक काटकर डालें और धीमी गैस पर ढाककर पकाए। जब पानी आधा रह जाये तो छानकर, चुटकी भर काला नमक डालकर पियें। यह मलेरिया की अचूक दवा है।

(३) हाई ब्लड प्रेशर (बी०पी०) में एक गिलास पानी मे एक नींबू (यदि नींबू बडा हो तो आधा) २-३ बडे चम्मच बूरा, चुटकी भर काला नमक, पोदीना अथवा दही मे डालनेवाला मसाला डालकर अच्छी तरह मिलाकर छोटी-छोटी घूटो मे १५ मिनट तक पियें। इसको पीने से बी०पी० सामान्य होजाता है। जब भी बी०पी० बढता महसूस हो पियें। चार-पाच दिन में स्वस्थ हो जायेंगे।

(४) घुटनो में लगातार दर्द रहता हो, सूजन भी आगई हो, चलने फिरने में कष्ट होता हो तो प्रात: स्नान के उपरान्त आधा नींबू लेकर दोनों घुटनों पर बार-बार मलें, रगड़ें। सूजन तो उतरेगी ही चलने फिरने में परेशानी नहीं होगी, थकान भी दूर होगी। शरीर के किसी भी भाग में किसी भी अग पर यदि सूजन हो तो नींबू को छिलके सहित खूब मलें जब तक कि नींबू का छिलका भी बहुत मुलायम न होजाये। रोग की तीव्रता में दिन मे तीन-चार बार मलें।

नींबू अनेक रोगों का एक उपचार है जहां औषधि विज्ञान भी हार जाता है। वहा भी नींबू आश्चर्यजनक परिणाम देता है। आरोग्य की कुजी आपके पास है इसे जानिये, मानिये और अपनाइये।

—**सावित्री सिंघल**, कुटी २०४, वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर

ऋषि निर्माणोत्सव पर वैदिक कथा तथा आर्यवीर दल का शिविर आरम्भ

एक नवम्बर २००१ को दयानन्दमठ दीनानगर मे यह कथा आचार्य स्वामी सदानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता मे आरम्भ हुई। इस शुभावसर पर पूज्य गुरुदेव १०१ वर्षीय सन्तशिरोमणि स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने अपने प्रवचन मे कहा—ईश्वर ने मनुष्य को सौ वर्ष आयु दी है। सौ वर्ष आयु के साथ-साथ कुछ शर्तें भी रखी हैं। जो समय का सदुपयोग करता है वह सदा सुखी रहता है। जो कुछ भी हम प्राप्त करते हैं समय से प्राप्त करते हैं वह काल देता है। तीन बजे प्रकृति धन, विद्या, बल बाटना शुरू कर देती है। जो मनुष्य तीन बजे जागता है वह जो मागे वह फल पाता है। जो चार बजे जागता है वह दूसरे नम्बर पर आता है। ५-६ बजे जागनेवाला तो खाली ही रह जाता है। इसलिए जो समय पर नहीं जागता प्रकृति उसका धन, विद्या, बल नष्ट कर देती है।

भारत के लोग पुरुषार्थी नहीं माने जाते। इग्लैंड एक छोटासा मुल्क है उसने दुनिया पर राज किया। इसका कारण यह है कि वह समय पर सारे कार्य करते हैं। समय को नष्ट नहीं करते। इंग्लैंड मे सब मनुष्य इतने व्यस्त रहते हैं यदि उनसे रास्ता भी पूछा जाये तो वह कहते हैं—Go to police इसलिए समय सबसे मूल्यवान् है। शास्त्रों मे भी कहा गया है—'**अश्व: कालो वहति**' अर्थात् समय घोडे की तरह भागता जारहा है। वक्त से ज्यादा दुनिया में कोई चीज नहीं है। शास्त्रों में कहा है—

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समा:।
एवं त्वयि नान्यथेतो अस्ति न कर्म लिप्यते नरे।।

जिन कामों को हम नहीं करते वह काम ही हमे खा लेता है। हम लापरवाही मे सेहत गवा देते हैं। स्वस्थ शरीर ही सच्चा सारथी है जिसके लिए व्यायाम, योगासन आदि अति आवश्यक है। शास्त्रों मे भी कहा गया है—'**शरीरमाद्य खलु धर्मसाधनम्**'। मनुष्य को सयमी होना चाहिए। मनुष्य को अपने जीवन के नियम बनाने चाहिएं। इसके साथ-साथ पुरुषार्थी होना भी अत्यन्त आवश्यक है। पुरुषार्थी हमेशा अपने लक्ष्य मे सफल होता है।

कथा के पश्चात् वरिष्ठ व्यायामशिक्षक श्री हरिसिंह जी और नरेन्द्र मित्तल जी गगापुर सिटी राजस्थान ने आर्यवीर दल का शिविर आरम्भ किया। यह शिविर वरिष्ठ व्यायाम शिक्षक श्री हरिसिंह जी की अध्यक्षता मे शुरु हुआ। इसमे स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने ध्वजारोहण किया और अपने आशीर्वाद के अमृत वचनों में कहा—शारीरिक उन्नति करना बहुत आवश्यक है यदि शरीर स्वस्थ हो तभी अन्य कार्य हो सकते हैं। इसलिए व्यायाम योगासन, लाठी चलाना इत्यादि कला से मनुष्य निर्भय होता है।

—**ब्र० रामदास आर्य**, दयानन्दमठ दीनानगर, जिला गुरदासपुर (पजाब)

बाल कहानी श्रम का महत्त्व

❑ लालजी वाजपेयी

राघव बहुत कुशाग्र बुद्धि का बालक था। उसका जन्म एक निर्धन परिवार में हुआ था। उसके माता-पिता उसे बहुत प्यार करते थे, वह पढ़े-लिखे नहीं थे और न ही उनके पास खेती थी। इसलिए वह दूसरो के खेतों पर मजदूरी करके उससे जो पैसा मिलता उससे वह अपने परिवार का भरण-पोषण करते। राघव पढने में बहुत अच्छा था। गांव के स्कूल मे उसकी गिनती मेधावी छात्रों में होती थी। स्कूल के शिक्षक अक्सर राघव के पिता से उसके बेटे की तारीफ करते थे। अपने बेटे की बडाई सुनकर उनका मन आह्लाद से मचल उठता, वह राघव की मा से कहते–"राघव की मा ! देखना अपना राघव एक दिन नाम करेगा। पढ-लिखकर नौकरी करने लगेगा तो फिर अपना बुढ़ापा भी सुख चैन से कटेगा।"

बेटे की पढने मे रुचि के बारे में सोचकर दोनों भविष्य की कल्पनाओं में खो जाते। अनहोनी कौन जानता है ? एक दिन भयानक भूकम्प आ गया। कई गाव भूकम्प की भेट चढ़ गये। बहुत धनहानि हुई, जीव-जन्तु मारे गये। लोग बेघर होगये। प्राकृतिक आपदाओ पर किसका बस चलता है। राघव के पिता भी भगवान् को प्यारे होगये।

लाचार राघव की मां काम की तलाश में उसे लेकर शहर आगई। उसकी मां घरो में काम करके जीविका चलाने लगी। मा काम पर चली जाती तो राघव दिन भर घर के बाहर बैठा उसका इंतजार करता रहता। वह दरवाजे से जब बच्चो को स्कूल जाते देखता तो उसका मन भी स्कूल जाने को करता, किन्तु वह बेबस था। उसके घर के पास एक कापी किताबों की दुकान थी। दुकान के मालिक अवकाशप्राप्त शिक्षक थे। वह उसे पूरे दिन अकेला बैठा देखते थे। एक दिन उन्होंने राघव को बुलाकर पूछा, "बेटा ! तुम्हारा क्या नाम है ? यहां तुम किसका इंतजार किया करते हो ?" "जी ! राघव। अपनी मा का इन्तजार करता हू।" राघव ने नम्रतापूर्वक उत्तर दिया। वे बोले, "बेटा ! तुम स्कूल नहीं जाते क्या ?"

स्कूल का नाम सुनकर राघव सुबक पडा। फिर उसने उन्हे अपने बारे में विस्तार से बताया। राघव की बात सुनकर उन्होंने धैर्य देते हुए कहा, "बेटा ! कोई बात नहीं। पढना चाहते तो तो मैं तुम्हे पढाऊंगा।"

पढाई का नाम सुनकर राघव का मुरझाया चेहरा खिल उठा। शाम को मां वापस लौटी, तो राघव ने उसे अपनी पढाई के बारे मे बताया। उसका बेटा फिर पढेगा यह सुनकर उसकी सारी थकान दूर हो गई। अब मां काम पर चली जाती और राघव उनके पास पढने के लिए पहुच जाता। वे राघव को पढाते, कहानिया सुनाते और राघव उन्हें समाचार पत्र पढकर सुनाता तथा कापी किताबे रखने मे उनकी मदद करता। कुछ दिनो बाद उन्होने राघव को शहर के प्रसिद्ध स्कूल की प्रवेश परीक्षा मे बैठाया। उसने सबसे अधिक अक अर्जित कर परीक्षा उत्तीर्ण की।

स्कूल के प्रधानाचार्य ने बालसभा मे राघव को बुलाकर पुरस्कृत किया और उसे नि शुल्क शिक्षा ग्रहण करने की अनुमति प्रदान की। प्रधानाचार्य जी की घोषणा सुनकर सभागार मे बैठे सभी लोगो ने जोरदार तालिया बजाई। राघव की मा की आखे खुशी से नम हो गईं। उन्हे पुन आशा की किरण दिखाई देने लगी।

जीवन में कितनी भी कठिनाइयां आयें, हार नहीं मानना चाहिए। लगन से किया गया कार्य कभी व्यर्थ नहीं जाता। श्रम का प्रतिफल अवश्य मिलता है। जीवन में श्रम का बहुत महत्त्व है।

(दैनिक जागरण २८-१०-२००१)

अब हवा भी खरीदें

आक्सीजन की पूर्ति शारीरिक क्रिया-कलापों से करनी चाहिए। तेजी से चलने दौडने से सास तेज व गहरी होगी। ताजा स्वच्छ फेफडो मे भरेगी-निकलेगी। फेफडो को साफ और स्वच्छ बनायेगी। समूचे शरीर को ताजगी, ताकत व प्रफुल्लता देगी। यह हवा सचमुच अमृत का काम करेगी।" हैनरी ने बताया।

"तो क्या घूमना स्वास्थ्य रक्षा के लिए आवश्यक क्रिया है ?"

"बिल्कुल ! आप अपनी स्वास्थ्य सबंधी अनेक समस्याए तेजी से दो-तीन मील पैदल चलकर हल कर सकते हैं। मेरा मानना है कि प्रात भ्रमण करके तथा शाम को भोजन के बाद आदमी को नियमित रूप से दो-तीन मील धीमी चाल से जरूर टहलना चाहिए। जहा खुला वातावरण नहीं मिले, वहा पर आसपास ही चक्कर लगाकर भी इसकी पूर्ति कर लेनी चाहिए।"

"आजकल भागदौड के बावजूद भी बीमारो की भीड लगातार बढती चली जा रही है। ऐसा क्यो ?"

"बात यह है कि आजकल बैठने वालो का युग है। हम अपने काम के लिए बैठते हैं। सिनेमा, नाटक देखने या सगीत सुनने जाते हैं, तब भी बैठे ही रहते हैं। खेल प्रतिस्पर्धा देखना हो या दूरदर्शन के कार्यक्रम देखते समय भी हम बैठे ही रहते हैं। हम सब हवा की भूख से ही मर रहे हैं। हम अपने शरीर से पूरा कार्बन-डाई-ऑक्साइड नहीं निकाल पाते हैं। इसलिए नाना प्रकार की पीडाओ से परेशान रहकर समय से पहले ही बूढे हो जाते हैं। इन सबका कारण हमारी हर दर्जे की कोहिली ही है। हम पसीना निकालने वाले श्रमसाध्य कार्यो से जी चुराते हैं। सडक पर नजर दौडाकर आप जरा गौर से देखें तो आपको पीले चेहरे, थके-थके उदास चेहरे और अस्वस्थ स्त्री-पुरुषो की भीड नजर आयेगी। इस जीवन के प्रति निराशा का कारण है–स्वच्छ हवा का अकाल।"

स्वच्छ हवा के अकाल के कारण ही आज हवा बिकने भी लगी है। बाजार मे जाइये, पैसा अदा कीजिए और शुद्ध हवा प्राप्त कीजिए। आप सोचते होगे कि प्रकृति ने हवा और पानी को मानव के अधिकार क्षेत्र से बाहर रखा है फिर यह हवा की दुकानदारी कैसी ? किन्तु यह सच है। मैक्सिको शहर के निवासियो को अब शुद्ध हवा प्राप्त करने के लिए पैसे का भुगतान करना होता है। उक्त बात एन्वायरमेट न्यूज डायजेस्ट मे कही गई है।

मैक्सिको शहर मे अधिकतर स्थानो पर ऐसी दुकाने खुल रही हैं जो वहा के निवासियो को दो अमेरिकी डालर अर्थात् ९५ रुपये मे एक मिनट सास लेने के लिए शुद्ध ऑक्सीजन प्रदान करती हैं। मैक्सिको शहर मे शुद्ध हवा की आवश्यकता उस समय से महसूस की जाने लगी जबसे किसी अन्य बीमारी की अपेक्षा सास सबधी बीमारियो के सक्रमण से अधिक मृत्यु होने लगी। विश्व मे मैक्सिको शहर की पहचान सर्वाधिक प्रदूषित या गदी हवावाले शहर के रूप मे बन गई है।

अनेक कारखाने जिनमे दो तेल शोधक कारखाने भी शामिल हैं और लगभग एक करोड बीस लाख कारो द्वारा प्रदूषण पैदा करनेवाले तत्त्व शरीर की हवा को प्रदूषित करते हैं। ठड मे हालात और भी खराब हो जाते हैं जब ठडी हवा आसपास के पर्वतीय क्षेत्र के कारण शहर मे ही बधकर रह जाती है जो गदगी लिये होती है। अगर यही स्थिति रही तो भविष्य मे शुद्ध हवा मे सास लेना भी एक महगा सौदा बनकर रह जायेगा।

–रणवीरसिंह सेठी

(दैनिक ट्रिब्यून २८-१०-२००१ से साभार)

विशेष सूचना

एक अक्तूबर २००१ से सभा के कार्यालय पर स्थानीय प्रशासन के सहयोग से श्री बलवानसिह सुहाग ने सशस्त्र पुलिस की छाया मे ताले लगवा दिए थे। दो सप्ताह बाद ताले तोडकर चुनाव मे हारे हुए केदारसिह आदि को कार्यालय मे बैठा दिया है। दिन-रात २४ घण्टे सभा कार्यालय मे पुलिस के तीन-चार जवान तैनात रहते हैं। मेरे जैसे निर्विरोध चुने गये सभाधिकारी को सभा की चारदीवारी के भीतर जाने पर रोकते हैं।

मेरे पास सर्वहितकारी के ग्राहको की पूरी सूची नहीं होने से कुछ ग्राहको को सर्वहितकारी नहीं भेज सका हू जिसका मुझे खेद है। अत सर्वहितकारी के ग्राहकों से निवेदन है कि यदि आपको सर्वहितकारी नहीं मिल रहा है तो नीचे लिखे पते पर अपना पूरा पता ग्राहक सख्या सहित लिखकर एक पोस्ट कार्ड भेजें। सर्वहितकारी के लिए सभी प्रकार की डाक लेख मनीआर्डर आदि भी इसी पते पर भेजने का कष्ट करे।

–**वेदव्रत शास्त्री**, सम्पादक सर्वहितकारी

फोन . ०१२६२-७६८७४, ५७७७४

आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक

सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान रोकने के निर्देश

जनहित याचिका पर सुप्रीम कोर्ट का फैसला

नई दिल्ली, २ नवम्बर। उच्चतम न्यायालय ने सभी राज्य सरकारो और केंद्र शासित प्रदेशो को निर्देश दिए हैं कि सार्वजनिक स्थानो पर धूम्रपान पर तत्काल प्रभाव से रोक लगा दी जाए। यह फैसला जहा जनस्वास्थ्य के लिए लाभकारी है वहीं सिगरेट कपनियो के लिए जबर्दस्त धक्का है। कोर्ट मे महानगरो मे विज्ञापन के उल्लघन की रिपोर्ट पेश करने के लिए कमिश्नरो को निर्देश दिए हैं।

विश्व स्वास्थ्य सगठन (डब्ल्यूएचओ) ने भी तीन बडी सिगरेट निर्माता कपनियो के स्वैच्छिक मार्केटिंग कोड को अप्रभावी करार दिया है। सार्वजनिक परिवहन और रेलवे भी इसमे शामिल होगे। वैसे दिल्ली, गोआ और राजस्थान की सरकारे पहले ही सार्वजनिक स्थानो पर धूम्रपान पर रोक लगा चुकी हैं। इस मामले मे विधेयक ससद् के पास भेजा गया था जो अब ससदीय समिति के पास है।

धूम्रपान के खिलाफ काग्रेस नेता मुरली देवडा द्वारा दाखिल एक जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए यह फैसला दिया गया है। न्यायमूर्ति एम बी शाह और न्यायमूर्ति आर पी सेठी की खडपीठ ने दिल्ली, मुबई, चेन्नई कोलकाता, बगलोर और अहमदाबाद के पुलिस कमिश्नरो से विज्ञापन की आचार सहिता का उल्लघन करनेवाली सिगरेट कपनियो के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की रिपोर्ट पेश करने के लिए भी कहा है।

इस आदेश के तहत अस्पताल, स्वास्थ्य सस्थान, सार्वजनिक कार्यालय, सार्वजनिक परिवहन जिसमे रेलवे भी शामिल है, अदालतो के परिसर, शिक्षा सस्थाए, पुस्तकालय और सभागृहो मे सिगरेट पीना प्रतिबधित होगा। याचिकाकर्ता की वरिष्ठ वकील इदिरा जयसिह के सुझाव से एटॉर्नी जनरल सोली सोराबजी के सहमत होने के बाद पीठ ने यह आदेश पारित कर दिया। याचिकाकर्ता मुरली देवडा ने धूम्रपान के बुरे प्रभावों का जिक्र करते हुए माग की थी कि सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान पर रोक लगाई जाए और तबाकू से प्रभावित लोगों को मेडिकल सहायता देने के लिए एक कोष बनाया जाए। अदालत से कहा गया है कि वह तम्बाकू उत्पाद बनाने वाली कपनियो को ऐसे कोष मे सहयोग करने के निर्देश दे। जयसिह ने यह मुद्दा भी उठाया कि विज्ञापन के मामले मे सिगरेट निर्माता आचार सहिता का खुल्लमखुल्ला उल्लघन कर रहे हैं। सडकों के किनारे बोर्ड लगाए जारहे हैं और सभी माध्यमो मे विज्ञापन भी दिए जारहे हैं।

जयसिह ने कहा कि धूम्रपान के दुष्प्रभावो पर चेतावनी को एक निश्चित आकार मे दिया जाना चाहिए। उन्होने १८ साल से कम उम्र के बच्चो को तम्बाकू उत्पादन बेचने पर रोक लगाने की माग भी की। अदालत ने छह सप्ताह के लिए मामले को स्थगित कर दिया है। डब्ल्यूएचओ ने तंबाकू उत्पादों की तीन बडी निर्माता कपनियो ब्रिटिश अमेरिकन टोबैको, जापान टोबैको और फिलिप मॉरिस को लताड लगाई है और उनके स्वैच्छिक मार्केटिंग कोड को अप्रभावी करार दिया है। ये कपनिया स्वैच्छिक रूप से तैयार हुई थीं कि धूम्रपान नहीं करनेवाले लोग, विशेषकर नौजवानो को लक्ष्य बनाकर अपनी मार्केटिग नही करेगी। डब्ल्यूएचओ ने कहा है कि हर विज्ञापन बच्चो और किशोरो तक पहुंच रहा है। उसका मानना है कि सिगरेट के हर किस्म के विज्ञापनो पर रोक लगनी चाहिए। इन कंपनियो को किसी सास्कृतिक या खेल गतिविधियो का प्रायोजन भी नहीं करना चाहिए।

(साभार–अमर उजाला)

आर्यसमाज बरहाणा का सेवा के क्षेत्र में एक और कदम

आर्यसमाज बरहाणा (झज्जर) जहां कई वर्षों से सार्वजनिक पेयजल प्रबन्ध, श्री सिद्धान्ती पुस्तकालय, साप्ताहिक यज्ञ-सत्सग, वार्षिक शिविर व उत्सव तथा पूर्णतया नि:शुल्क श्री सिद्धान्ती धर्मार्थ आयुर्वेदिक औषधालय के संचालन द्वारा जनता की सेवा कर रहा था, वहां उसने दिनांक ४-११-२००१ को युवको को स्वस्थ, बलवान् व चरित्रवान् बनाने मे सहयोग की भावना से गाव में श्री मुसद्दीलाल आर्य व्यायामशाला का शुभारम्भ कर दिया। व्यायामशाला हेतु श्री पालेराम व श्री रामस्वरूप कसल ने अपने पिताश्री मुसद्दीलाल की स्मृति मे १४०० गज जमीन आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को दानस्वरूप मे दी है। रविवार ४-११-२००१ को प्रात ९ बजे यज्ञ-सत्सग के कार्यक्रम के पश्चात् श्री रामकवार कसल ने नवनिर्मित व्यायामशाला का उद्घाटन किया। स्थानीय आर्यसमाज बरहाणा ने इसके निर्माण व उद्घाटन पर ५००००/- रु० खर्च किये। उद्घाटन के उपलक्ष्य में इनामी कुश्तियो का आयोजन भी किया गया। गाव के सरपच सहित सभी गणमान्य व्यक्तियो ने इस कार्यक्रम मे सोत्साह भाग लिया तथा श्री हरपाल प्रधान, मा० हवासिह, वीरपालसिह, महेन्द्रसिह, मा० श्री ओम् उपप्रधान, सुरेन्द्रसिह, श्री रामेहरसिह, श्री टेकराम, श्री प्रतापसिह आदि का विशेष सहयोग रहा। समस्त कार्यक्रम का सचालन प्रो० राजपाल बरहाणा ने किया।

मन्त्री, आर्यसमाज बरहाणा (झज्जर)

दीये जगमगाओ

दीये जगमगाओ, दीवाली है आई।
हो सब को बधाई, दीवाली है आई।
ज्ञान दीप जलाओ, दीवाली है आई।

सत्य सकल्प-सत्य कर्म-सत्य ज्ञान मे
तन-मन-बुद्धि को लगाए।
स्वाध्याय-उपासना, स्तुति-प्रार्थना से
आत्मिक शक्ति को बढाएं।
इसी मे है सबकी भलाई,
ज्ञान दीप जलाओ, दीवाली है आई।
मान-मर्यादा, आचार-व्यवहार मे,
श्रेष्ठ नियमो को अपनाए।

काम-क्रोध, मद-लोभादि विकारो से,
स्वय बचे और दूसरो को बचाए।
चाहे सहने पडे कष्ट श्रीराम की नाई,
ज्ञान दीप जलाओ, दीवाली है आई।
मात-पिता, गुरु-अतिथि की सेवा द्वारा,
हम परिवार व समाज का यश बढाएं।
मित्र-अमित्र के साथ एक समान,
तन-मन-धन से सुखो को बाटते जाए।

जैसे महर्षि दयानन्द ने हत्यारे के साथ बन्धुता निभाई,
ज्ञान दीप जलाओ, दीवाली है आई।
प्रभु हमें भी असीम शक्ति करो प्रदान।
असत्य अधर्म की बुराइयों को हटाए।
आपकी अलौकिक शक्ति भक्ति का
ज्ञान अमृत पीयें और पिलाए।
अन्त में श्रद्धा-भक्ति ही होगी सहाई।
ज्ञान दीप जलाओ, दीवाली है आई।
दीये जगमगाओ

दीये जगमगाओ दीवाली है आई।
हो सब को बधाई, दीवाली है आई।
ज्ञान दीप जलाओ, दीवाली है आई।

–कृष्णा चौधरी, ९०९, सैक्टर-१६ पंचकूला (हरयाणा)

अंग्रेजी के रहते ईमानदारी भी आना असम्भव

❑ स्व० डॉ० राममनोहर लोहिया

अंग्रेजी जबान अब हिन्दुस्तान के सार्वजनिक मामलों से खत्म हो जानी चाहिए। इसमे देर करना न केवल भाषा के मसले को उलझा देना और बिगाड देना होगा बल्कि देश के दूसरे मसलों को भी उलझा देना होगा। भाषा से देश के सभी मसलों का सम्बन्ध है। जिस जबान में सरकार का काम चलता है, इससे समाजवाद तो छोड़ ही दो प्रजातंत्र भी छोडो, ईमानदारी और बेईमानी का सवाल तक जुड़ा हुआ है। यदि सरकार और सार्वजनिक काम ऐसी भाषा में चलाए जाए जिसे देश के करोडों आदमी न समझ सके तो होगा केवल एक प्रकार का जादू टोना। जिस किसी देश में जादू, टोना, टोटका चलता है वहा क्या होता है ? जिन लोगो के बारे मे मशहूर होजाता है कि वे जादू वगैरह से बीमारिया आदि अच्छी कर सकते हैं, उनकी बन आती है लाखो-करोडों उनके फंदे में फंसे रहते हैं। ठीक ऐसे ही जबान का मसला है। जिस जबान को करोडो लोग समझ नहीं पाते, उनके बारे मे यही समझते हैं कि यह कोई गुप्त विद्या है, जिसे थोडे लोग ही जान सकते हैं। ऐसी जबान में जितना चाहे झूठ बोलिये, धोखा दीजिए, सब चलता है, क्योकि लोग समझेगे ही नही। आज शासन मे लोगो की दिलचस्पी हो तो कैसे हो ? वह कुछ जान ही नहीं पाते कि क्या लिखा है क्या होरहा है। सब काम केवल थोडे से अंग्रेजी पढे लोगो के हाथ मे है। बाकि लोगों पर इन सबका यही असर पडता है-जो जादू-टोने या विद्या का।

अपने देश में पहले से ही अमीरी, गरीबी, जात-पात-धर्म और पढे-बेपढे के आधार पर एक जबरदस्त खाई है। यह विदेशी भाषा उस खाई को और चौडा कर रही है। अपनी भाषाए पढे-लिखे केवल दस फीसदी लोग हो सकते हैं। पर समझ सब सकते हैं। लेकिन अंग्रेजी तो अधिक से अधिक १०० में से एक आदमी समझ सकता है, वह भी मुश्किल से। मैंने जानबूझकर अपनी भाषा कहा है, हिन्दी नहीं कहा देश में और भी भाषाएं हैं, केवल हिन्दी नहीं और सभी एकसी हैं।

बेवकूफ हैं वे

झगड़े, हिन्दुस्तान की सभी भाषाओं और अंग्रेजी के बीच हैं, हिन्दी और दूसरी भाषाओं के बीच नहीं। मेरी समझ में वे लोग बेवकूफ हैं जो समझते हैं कि अंग्रेजी रहने पर प्रजातंत्र भी आ सकता है। हम तो समझते हैं कि अंग्रेजी के होते यहा ईमानदारी आना भी असम्भव है। थोडे से लोग इस अंग्रेजी के जादू द्वारा करोडों को धोखा देते रहेगे। आप कहेगे कि बेईमानी चलेगी। जब कोई किसी अफसर से मिलने जाता है तो उसका काम होना इस पर भी निर्भर करता है कि उसके कपडे कैसे हैं। सफेद कपडे पहनने वाले का काम वह जल्दी करता है क्योंकि आमतौर पर सफेद कपडेवाला ही अंग्रेजी जाननेवाला भी होता है।

दलालों का राज

इसी तरह हमारे अफसर आपसी बातचीत में भी अंग्रेजी का ही इस्तेमाल करते हैं। दूसरे उनके चारो ओर मातहत भी ऐसे ही लोग रह पाते हैं, जो अंग्रेजी जाने। हिन्दुस्तान के करोडो लोग इन अफसरो की बाते समझ ही नहीं पाते और उन्हे अंग्रेजी जाननेवाले दलालो की मदद लेनी पडती है। दूसरे के रिश्तेदारों की जो आमतौर पर ऊची जातवाले ही होते हैं, बन आती है और कुनबापरस्ती का बाजार गर्म होता है अपने रिश्तेदारो और सम्बन्धियो को ही वे अपने साथ नौकरी पर रखते हैं। इसका कारण यह है कि वे अंग्रेजी अच्छी तरह जानते हैं और उनसे काम चल जाता है। जो अंग्रेजी नही जानते उनका गुजारा नहीं होपाता। इसी तरह अफसरों की बातें हिन्दुस्तान के करोडो लोग नही समझ पाते और जो दलाल वगैरह होते हैं उन्हे पैसा बनाने का मौका मिल जाता है और अफसरो को अपना काम निकालने मे आसानी रहती है। कहने का मतलब यह है कि **जब तक अंग्रेजी की बीमरी बनी रहेगी, तब तक ईमानदारी कायम हो ही नहीं सकती। एकदम नामुमकिन है।** मेरा यह मतलब नहीं कि अंग्रेजी के खत्म होते ही ईमानदारी आ जाएगी। हा, इतना मेरा विश्वास है कि अंग्रेजी खत्म हो जाएगी तभी ईमानदारी कायम हो सकती है और हो भी जाएगी।

घातक उदासीनता

भाषा की वजह से सब बाते लोग समझ ही नहीं पाते और खुफिया तौर पर ही सब बेईमानिया चलती रहती हैं। खुफिया से मतलब यहा आम जनता से छिपी हुई है। इन सब कार्यवाहियो मे हिन्दुस्तान मे करीब तीस लाख अंग्रेजीदा लोगो के अलावा किसी को दिलचस्पी या शिरकत नहीं है। ४० करोड लोग इन ३० लाख के आपसी झगडे और तनाव से अपने को दूर रखते हैं और उनका केवल यही कहना रहता है कि हमे क्या कोई बने। सामान्य लोगो को न तो इतनी समझ ही है कि इस व्यापार को समझे और न दिलचस्पी ही। वही ३० लाख लोग आपस मे बटवारा कर लेते हैं और उन्ही के बीच सारी छीना-झपटी चलती रहती है। यह सब बाते ३० करोड तक पहुच पाने की पहली शर्त यही है कि सब काम ऐसी भाषा मे हो जिसे आम लोग समझ पाए। उस समय योग्यता का चुनाव भी केवल ३० लाख मे से नहीं बल्कि ४० करोड मे से होगा। योग्यता भी हिन्दी-उर्दू आदि भाषाओ के आधार पर देखी और जाची जाएगी।

प्रस्तुत लेख स्व० डॉ० राममनोहर लोहिया ने अपने जीवन काल में काफी वर्षों पूर्व लिखा था। वे अत्यन्त दूरदर्शी व्यक्ति थे उस समय व्यक्त किये गये हिन्दी भाषा सम्बन्धी उनके विचार वर्तमान समय में पूर्णतः सटीक बैठ रहे हैं। यदि उस समय उनकी बात पर ध्यान दिया जाता तो देश में हिन्दीभाषा की यह दुर्दशा नहीं होती जो आज हो रही है। —सम्पादक

पलटन में भी असन्तोष

इस भाषा के घपले की वजह से हमारी पलटन मे भी काफी असन्तोष है। हिन्दुस्तान मे पलटन की हालत कोई अच्छी नही चल रही है। अफसर काफी नाखुश हैं। देश की पलटन का असन्तुष्ट रहना कितना खतरनाक हो सकता है, खास तौर पर तब जब उस असन्तोष के कारण भी सही हो। असन्तोष का एक हिस्सा तो नौकरी और तनख्वाहो की वजह से है सो उसको तो मैं छोड देता हू।

पर एक दूसरा हिस्सा सबके ध्यान देने लायक है। हमारे यहां सिविल अफसर का ओहदा पलटनी अफसर से ऊंचा समझा जाता है। सिविल नौकरी का बाबू तक पलटनी बाबू से ऊचा रहता है। आप इससे इस चीज को समझ लीजिए कि जब रक्षा विभाग मे ऊचे पलटनी अफसरो की बैठक होती है तो उसका सभापतित्व एक सिविल अफसर, जो रक्षा सचिव होता है, करता है। यह भी नही कि रक्षामंत्री ही करले। पुराने वक्त से ही हमारे यहा यह चला आरहा है कि पलटन के ऊचे अफसरो की अंग्रेजी बहुत अच्छी होनी चाहिए। पहले ऊचे अफसर विलायत से पढकर ही आते थे तो सीख भी जाते थे, पर अभी यह हाल है कि बिना अंग्रेजी का बढिया ज्ञान हुए ऊची अफसरी मिलना मुश्किल है। अब भला बताइये पलटनी अफसरो की योग्यता इस बात से परखी जाएगी कि वह अंग्रेजी कैसी बोलता है या इस बात से कि वह दुश्मन का मुकाबला कितनी अच्छाई से कर सकता है और लडाई की कला कैसी जानता है। पिछली लडाई का सबसे बडा जनरल एक जर्मन था और अंग्रेजी का एक लफ्ज भी नहीं जानता था, हा, लडना जानता था। हिन्दुस्तान मे एक से एक वीर जातिया बसती है। वे लडाई की कला मे प्रतिभा दिखा सकती हैं। पर अफसरी के लिए उन्हे सीखनी पडती है अंग्रेजी न सीखे तो अफसर नहीं बन सकते। केवल भाषा की वजह से ही उनकी काबिलियत का इस्तेमाल नहीं होपाता। इसलिए मै कहता हू कि सार्वजनिक उपयोग से अंग्रेजी हटाए बिना कोई काम नही बन सकता। अंग्रेजी हट जाने पर ही ४० करोड को अपनी योग्यता दिखलाने का मौका मिलेगा।

जापान का उदाहरण

अब सवाल उठता है कि क्या हिन्दुस्तान मे ऐसी हालत है कि बिना अंग्रेजी काम चला सकते हैं। कुछ लोग कहते है कि कैसे करोगे ? हिन्दी मे शब्द नही है। इसके जवाब मे मैं जापान का एक किस्सा बता देता हू। यह किस्सा १९४५ का है, जब अमरीकी फोजों ने जापान पर कब्जा कर लिया था। उसी जमाने मे जापान से बहुत से लोग विज्ञान और दूसरी नयी चीजो की जानकारी के लिए विदेश पढने भेजे गए। जब ये लोग वापस आगए तो इनके सामने यह सवाल उठा कि किस भाषा मे काम चलाया जाए। उन लोगो ने कहा कि हमारे पास जापानी शब्द इतने नही है कि हम जिन शब्दो को पढकर आए है उनके बदले अपने शब्द इस्तेमाल कर सके।

सरकार ने उत्तर दिया कि सब काम जापानी मे होगा। अगर ऐसे लफ्ज आए जिनकी जापानी न हो सके तो उन्हे वैसे के वैसे ही इस्तेमाल किया जाए और धीरे-धीरे उनके जापानी पर्याय निकालने की कोशिश की जाए। इस तरह से उन्होंने किया और आज आप देखे कि उनका काम काज कितने मजे मे चल रहा है और अब तक कोई सवाल नहीं उठा। पर हमारे यहा मामला उल्टा है। कहते है जब शब्द बन जाएगे तब देशी भाषाए शुरू करेगे। यह कितनी खतरनाक हालत है कि अपनी भाषाए प्रतिक्रियावाद की और विदेशी भाषा प्रगति की प्रतीक समझी जाती है। कई लोग सिर्फ इसी वजह से खुलकर देशी भाषाओ की हिमायत नहीं कर पाते कि कही वह भी प्रगति के दुश्मन न समझ लिए जाए। इन सब बातों को फायदा उन लोगो ने उठाया, जो अंग्रेजी पढे-लिखे हैं और देश से अपने एकाधिपत्य को उठने देना नहीं चाहते।

एक षड्यन्त्र

देश के तीस लाख आदमी नहीं चाहते कि अंग्रेजी खत्म हो और ताकत घटे। इसके लिए उन्होने दुनियाभर के अडगे खडे किए। हिन्दुस्तान की दूसरी भाषाओ से हिन्दी की प्रतिद्वन्द्विता चलवायी। सरकार ने उनकी मदद की। हिन्दी और अंग्रेजी के असली झगडे को नजरअन्दाज कराने के लिए ये झूठे झगडे दूसरी भाषाओ से चले। सरकारी नीति रही कि अंग्रेजी की साम्राज्यशाही उन्हे खत्म नहीं करनी थी, तो उन्होने किया यह कि हिन्दी को भी उसी साम्राज्यशाही का एक छोटा हिस्सा दिलाने की कोशिश की। अंग्रेजी का कुछ हिस्सा दिलाने की कोशिश की। अंग्रेजी का कुछ हिस्सा हिन्दी को भी मिल जाए, यही सरकारी नीति रही।

अब यह साफ बात है कि हिन्दी साम्राज्यशाही नहीं चल सकती। गैर हिन्दी इलाके इसको कभी स्वीकार नहीं करेगे। सरकार की इस साजिश ने हिन्दी को बहुत नुकसान पहुचाया। गैर हिन्दी लोगो को अपनी नौकरियों वगैरह का डर लगा। सरकारी नीति के कारण ही कई बडे इलाको के लोग हिन्दी की कट्टर मुखालफत करने लगे। आपको जानकर ताज्जुब होगा कि महात्मा गाधी के बाद मैं पहला आदमी हू जो तमिलनाडु में लगातार २५ सभाओ मे हिन्दी मे बोला। लोगो ने मुझे क्यों सुना ? तमिलनाडु मे हिन्दी का घोर विरोध है। मै जानता हू कि मुझे लोगो ने इसलिए सुना कि मैं हिन्दी और तमिल को बराबरी देना चाहता हू।

अंग्रेजी नामपट

आज आप किसी बाजार मे निकल जाइए। दोनो तरफ सब नामपट मिलेगे अंग्रेजी मे। यहा तक कि नाई की दुकान पर भी बोर्ड होगा–फैंसी हेयर ड्रेसर, इसमे फायदा क्या ? कौन समझता है ? आप सबसे मेरी प्रार्थना है कि आप इस पर सोचे और दुकानदारो से कहे कि ये अंग्रेजी नामपट गुलामी का नक्शा हमारे दिमाग मे ताजा रखते हैं।

वे बेवकूफ हैं जो कहते हैं कि अंग्रेजी रहने पर जनतंत्र भी आ सकता है। हम तो समझते हैं कि अंग्रेजी के होते यहां ईमानदारी आना भी असम्भव है।

गुलामी की निशानियां

किस-किस बात का जिक्र किया जाए। चारो तरफ गुलामी की निशानिया बाकी है। अंग्रेजी अखबारो को ही लीजिए। ये गुलामी के सबसे बडे प्रतीक हैं। दुनिया के किसी भी देश मे आप दैनिक अखबार विदेशी भाषा मे नहीं पाएगे। हा, मासिक पत्र या साप्ताहिक पत्र ने जो विशेष विषयो से सम्बन्ध रखते है, कभी विदेशी भाषाओ मे भी निकाले जाते हैं। पूरे यूरोप से मैंने सिवाय पेरिस और कहीं विदेशी भाषा का दैनिक पत्र निकालते नहीं देखा। पेरिस मे एक है और वह अमरीकनो ने अपने लोगो के लिए जो लाखो की तादाद मे वहा हैं, निकाला है। हमारे यहा तो अखबार ज्यादातर अंग्रेजी मे है। नतीजा यह है कि आप लोगो को यह विश्वास होगया है कि अंग्रेजी के अखबार ज्यादा अच्छे हैं। हमारे यहा अंग्रेजी मे छपनवाले अखबारो की करीब आठ लाख प्रतिया निकलती हैं। थोडे से अखबार जो हिन्दी मे निकलते हैं, उनकी दशा ही खराब है और हो भी कैसे नहीं, आप लोग खुद भी विज्ञापन देना हो तो अंग्रेजी अखबार ही पसन्द करते है। सरकार खुद अधिक विज्ञापन अंग्रेजी अखबारो को ही देती है। ख्याल बन गया है कि अंग्रेजी अखबार अधिक लोग पढ़ते हैं और उनमे सूचनाए भी अधिक होती हैं। **असल बात यह है कि यदि आप और सरकार इन्हे विज्ञापन देना बन्द करदे तो ये अखबार दूसरे दिन बंद होजाए।** मैं तो आपसे कहना चाहता हू कि सरकार को यह नीति फौरन अपनानी चाहिए, नहीं तो हिन्दी के अखबार उठ ही नही सकते और मुल्क के ज्यादातर आदमी दुनिया की जानकारी हासिल नही कर सकते। सरकारी विज्ञापन केवल देशी अखबारों को मिले और दूर मुद्रक भी देशी कर दिए जाए तो यह मामला अपने आप सुधर जाएगा। आप लोगो से भी मेरी यही प्रार्थना है कि अंग्रेजी अखबार छोडकर अपनी देशी भाषा के अखबार पढें। तभी उनकी उन्नति होसकती है।

देशीय भाषाओं को प्रतिष्ठा मिले

हमारा कहना है कि सबसे पहले तो अंग्रेजी सब जगह से आज ही समाप्त कर दी जाए। यह पहली बात है। इसके बाद हिन्दी और दूसरी भारतीय भाषाओ का प्रश्न रह जाता है। इसके लिए हमारा कहना है कि केन्द्र की भाषा हिन्दी रहे और हर सूबे मे अपनी-अपनी भाषा चले। सूबे केन्द्र को अपनी भाषा मे लिखे और केन्द्र हिन्दी मे लिखे। बी०ए० तक पडाई और छोटी अदालतो का काम क्षेत्रीय भाषाओ मे चलाया जाए और एम०ए० की पडाई और हाईकोर्ट का काम हिन्दी मे हो। बी०ए० तक अपनी भाषा के साथ हिन्दी भी वैकल्पिक विषय रहे।

गलतफहमी

बहुत से लोग डरते हैं के मुल्क टूट जाएगा। मेरी तो समझ मे नहीं आता कि मुल्क अंग्रेजी से कैसे जुडा हुआ है ? इस गलतफहमी का बहुत बडा कारण यह भ्रम भी है कि अंग्रेजी विश्वभाषा है। मैं आपसे प्रार्थना करता हू कि आप इस भ्रम को दूर कीजिए। अंग्रेजी विश्व भाषा नहीं, अंग्रेजी तो क्या कोई भी भाषा विश्व भाषा नहीं हैं। जिस प्रकार अंग्रेजी दुनिया मे फैली उसी तरह उससे पहले सस्कृत, अरबी, लैटिन आदि भाषाएं भी फैल चुकी हैं। आज उनका साम्राज्य नहीं है और मैं कहता हू कि अंग्रेजी का भी नहीं रहेगा। **क्या आप समझते हैं कि चालीस करोड चीनी और बीस करोड रूसी कभी भी इस बात को स्वीकार करेगे** कि अंग्रेजी विश्वभाषा मानी जाए। सब बातो मे राष्ट्रीय आत्म सम्मान का प्रश्न आजाता है। मैं समझता हू कि यदि कभी भी कोई भाषा विश्व भाषा बन सकी तो वह किसी देश की भाषा नहीं होगी, बल्कि सभी देशो की भाषा का सम्मिश्रण होगी।

एक जरूरी विषय

दस साल मे भी अंग्रेजी हमारे यहा से गयी नहीं, घटी भी नहीं। इस तरह से घट भी नहीं सकती। आज स्कूलो व कालेजो मे अंग्रेजी एक जरूरी विषय है और उससे राष्ट्र का महान् नुकसान होरहा है। हमारे सत्तर-अस्सी फीसदी बच्चे औसत बुद्धि के होते है और अंग्रेजी भाषा का ज्ञान हासिल करने के प्रयत्न मे उनका इतना कचूमर निकल जाता है कि भूगोल, इतिहास, विज्ञान आदि विषय मे पर्याप्त ज्ञान प्राप्त नहीं कर पाते। मैं हिन्दुस्तान की जनता से और खास तौर से उनसे जो इस भाषा नीति को मानते हैं, अपील करता हू कि वे सारे देश मे सभाए करे और जुलूस निकाले और प्रतिज्ञा करे कि–'**हम प्रतिज्ञा करते हैं कि अंग्रेजी का सार्वजनिक इस्तेमाल हम खुद तो आज से ही बन्द करते हैं और सरकारी स्तर पर भी हर शान्तिपूर्ण तरीके से इसे बन्द करायेगे।**' नामपटो पर से अंग्रेजी भाषा व अक्षर मिटाने के लिए सीढी, रग व कूची समेत अभियान करे। स्कूल, कालेजो मे माध्यम विषयक नीति पर और अंग्रेजी को केवल ऐच्छिक विषय बनाने के लिए सबल आन्दोलन होना चाहिए। जहा अंग्रेजी दैनिको के वर्तमान पाठक अपनी आदतो को, चाहे कितनी ही कम सख्या मे क्यो न हों, बदलने को तैयार हो, वहा **अंग्रेजी दैनिकों की होली जलाई जाए।** अदालतो मे व फैसलो मे अंग्रेजी के प्रयोग का विरोध हो और जहां जनमत तैयार किया जा सके वहा सामूहिक अड़गा वाला जाए। तीन या चार महीने का नोटिस देकर अंग्रेजी मे खबर भेजनेवाले तार दूरमुद्रक मशीनो को तोडा जाए। ऐसी दुकानो का बहिष्कार कराए जो अपने नामपट से अंग्रेजी हटाने को तैयार नहीं हो।

(सार्वदेशिक से साभार)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन - ७६८७४, ५७७७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ७७८०१) से प्रकाशित।
पत्र मे प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। पत्र के प्रत्येक प्रकार के विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक होगा।